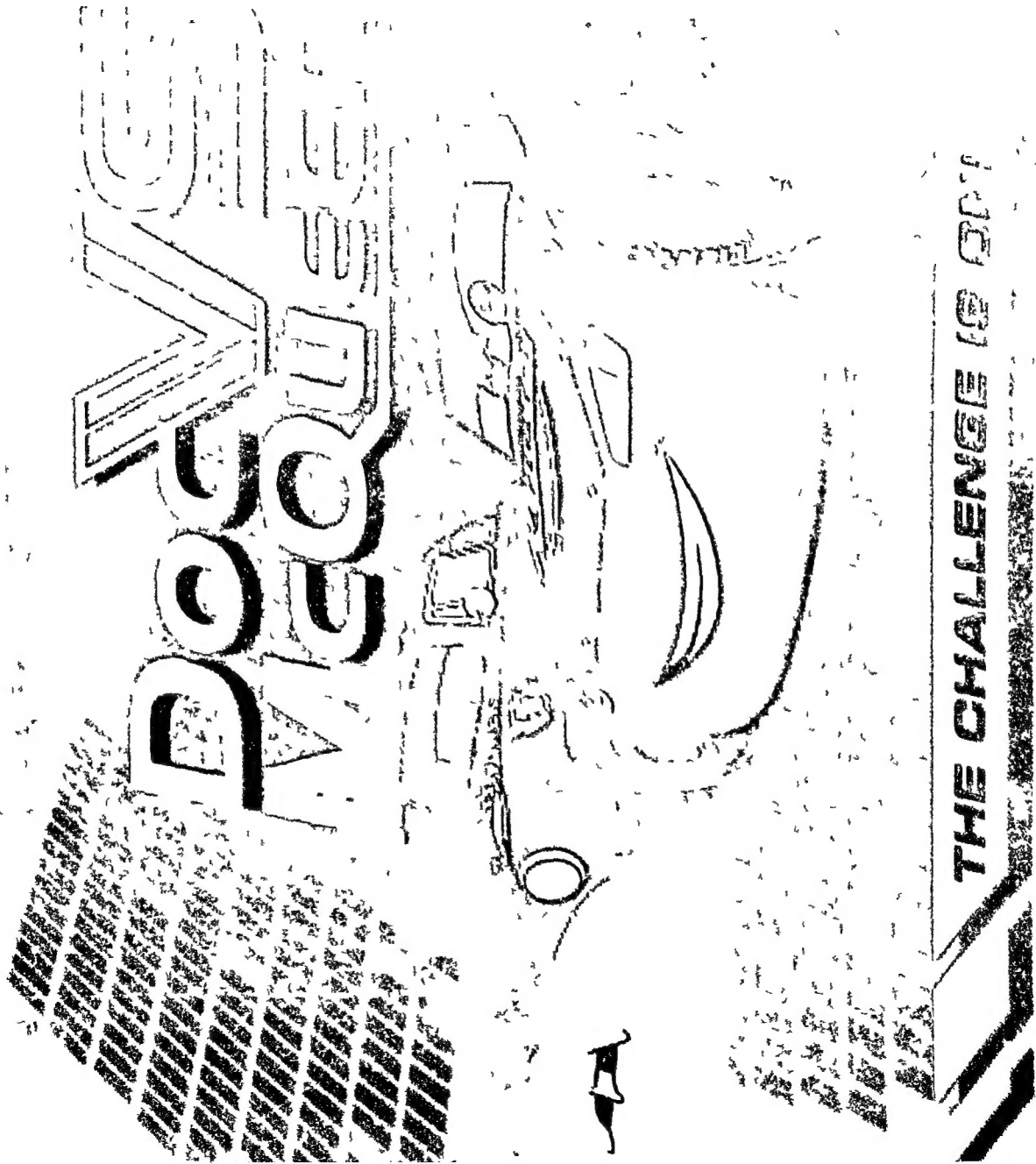


Regd No 1175059  
**VidyaARTHE**



**THE CHALLENGE IS ON!**

**Long Note Book**







॥ अथ टीकावार्त्तिकसंवलितं श्रीस्थानाख्यं तृतीयाङ्गं प्रारभ्यते ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे द्वापागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

नानकचदजली



## ॥ विज्ञापनम् ॥

श्रीमद्गङ्गोत्रजः पृथुयशाः श्रीवीरदासाभिध स्तुप्त्रोबुधसिंहजर्जितयशास्सूनुस्तदीयोगुणैः ॥ ख्यातः श्रीलप्रतापसिंहविजयीभार्यातुरीयासती तस्य  
श्रीमहतावनामविदिताकुक्षेस्तदीयादभूत् ॥ १ ॥ उद्यत्कीर्तिरुदारधर्मदृढधीर्दाताकनिष्ठः सुतः श्रीमद्रायबहादुरोधनपतिः सिन्धोगुणग्रामणीः ॥ श्रीजैना  
गमसग्रहंसमकरोक्तोकोपकृत्यैचिरं टीकावार्त्तिकसंयुतंसुलिपिभिः संमुद्रयित्वा शुभम् ॥ २ ॥ कृत्वा पचशतस्थलेषु च पुनस्तावत्त्यहोपुस्तका गाराख्येषु च पुस्तका  
निसकलान्यस्थापयत्सादरं ॥ कुर्वन्वागमपाठनचपठनं सत्साधवः श्रावकाः स्थित्यै श्रीजिनशासनस्य च पुनर्विज्ञानधर्मर्द्धये ॥ ३ ॥ भागस्तस्य तृतीयकोऽयमधुना स्था  
नांगसूत्राभिधो नानापुस्तकपाठभेदबहुलो लेखप्रमादादपि ॥ दुर्वाच्यः खलु वृत्तिवार्त्तिकघृतपाठतथाप्राक्तनं श्रीमत्पूजितरामचन्द्रगणिभिर्ज्ञातचबुध्वा मया । ४  
संशोध्यातिपरिश्रमेण नितरां चार्वाचरैर्मुद्रयते स्यात्तत्रापि च किंचिद्दीक्षणागतोन्मादादशुद्ध्यदि ॥ चांत्वा शोध्यमुदारबुद्धिविभवैर्विज्ञैः कृपादृष्टितो मिथ्यादुष्कृत  
मस्तुनम्रवचसासप्रार्थये सज्जनान् ॥ ५ ॥

\*                      \*                      \*                      \*                      \*

॥                      ॥                      ॥                      ॥                      ॥

\*                      \*                      \*                      \*                      \*



# ॥ विज्ञापनम् ॥



सकल समान धर्मी श्रावक महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन करता हूं कि दशविध दृष्टांत दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिससे जुझारी मध्वप चोर और व्यभिचारी इत्यादि दुष्कीर्ति और परभव में अंध पंगु कुष्टी काक कृमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकीर्ति और परजव में धनसंपत्ति सुख सुन्दर शरीरआरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख मोक्षसुख देने वाले कर्तव्य कर्म जाने जाते हैं । ज्ञानी से ज्ञान मिलता है । यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनों अनादि अनन्त है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से

परपर कार्य कारण सञ्चल्य सिद्ध है। क्योंकि ज्ञान विना ज्ञानी और ज्ञान होना असंभव है। ज्ञान होनेसे श्रुत व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य अन्य दर्शन उनका सङ्ग्रह अलम्बन अलम्बन से मनुष्यों को धारणाशक्त ऐसी विवक्षणा थी कि जिससे संखलावद्ध अनुक गुण उनको कंठाय रहने थे। अन्य मतसे उनके वंशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे देवे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और अथर्व मतसे पाठक, वाचक, वाचनाचार्य और उपाध्याय कहलाते हैं। प्रसिद्ध है कि उस समय अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु गृपकंठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम लघु समुक्त थे। और भी जो प्रथम गणधर श्री गौतम स्वामी तीर्थंकर महाशय के मुख से (उद्घनते देवा विगमे देवा धृते देवा) त्रिपदी घुन के १२ अंग की रचना कर देते थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके सिवाय और कोई कारण नहीं समझा जासकता। अधुनातन मनुष्यों को जो अद्वैतज्ञा अलम्बन भी गुण और उनका वा तय नहीं पाद रहता है ज्ञानावरणीय के सेवाय कौन कारण कहेंगे। ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुल एकही समय नहीं हुआ किन्तु कमसे जा जा देवा क्षेत्र काल और नाव विपरीत आते गये जाँ जाँ ज्ञानकी



भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से ८० वर्ष (ईसवी सन् ४५४।  
विक्रम स ५१०) वीत जाने पर देवर्हि गणिकुमाश्रमणने सोचा कि पुस्तक विनलिखे यह स्मरणशक्ति जा  
ती रहैगी इसलिये वल्लभी पुरमें साधु समुदायके कंठस्थ जी सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस  
समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होने के कारण ताडपत्रके ऊपर लोह लेखनी से खुदवाके पुस्तका  
लय स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नहीं हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास  
प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी  
कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद  
के ऊपर लिखने में कम मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रंथ  
चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रंथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहियें द्रव्य व्यय  
भी अधिक होगा तिसमें भी यदि कोई तरह का विघ्न आये पड़े कार्य पूर्ण नहो, क्योंकि एकतो श्रेयांसि बहुवि  
धानि, दूसरे मनुष्यायु अल्प, जब तक कार्य समाप्त नहो चिंता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म  
समाप्ति में है, ग्रंथ संग्रह किये विना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा

नष्ट हो जायंगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रंथ लुप्त होगये, और पीले से मुसलमानोंने नष्ट किये, जो बचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्तमान काल में पैतालीस आगम एक जगह नहीं मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (वाहरे काल महिमा) इस हेतु वर्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं देखा तो सर्वात्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से मेश मनोरथ (जो के ५०० ठिकाने ४५ आगमकों भंडार करनेका इच्छा है) शीघ्रही सिद्ध होगा लिखने लिखाने के परिश्रम से बचेंगे प्रायः लिखी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें शुद्ध होगी यदि कोई गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमको कृतार्थ करने को ही प्रचलित हुई है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुदर पृथ्वीपर इसके सेवाय नहीं है ग्रंथ छपवाना सुरूकिया। यह कला युरूप देशीय अन्य धर्मियों से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रंथ छपवाने में आशा तना होती है, इत्यादि असूया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहै कोई हो सर्वापकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तक शुभतादिक, महाकार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने में तथा पुस्तक छपवाने में बड़ा उपकार पुण्यवधन है दोष कुछ भी नहीं है, पक्षपात छोट के ग्रहण करें। यदि वस्तुके उत्पत्तिस्थान की ओर देखियेगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप

क्यों पढ़ते हैं? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है बहुतसी आपके परिजोग में आती है, कस्तूरी गोलीचनादि कहां पैदा होता है और किस काममें आप खरच करते हैं? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषकों छोड़ देना उचित है। इसलिए पुस्तक सुलभता, ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अत्यंत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नहीं करना चाहिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे विचारिये तो पूर्वाचार्योंने बड़े परिश्रम से परोपकारार्थ जो ग्रंथ बनाये हैं किसीके देखने में न आवें ऐसा गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीड़े खाजांय और ग्रंथ का नाममात्रही शेष रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे इसके सेवाय कोई अविनय और आशातना 'कर्मबंधका हेतु, नहीं है, वही ग्रंथ तपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोंको देना तद्द्वारा वह लोक ज्ञान पावें इससे अधिक कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नहीं है, यही सर्व कारण सोच मैं इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुआ हूं आप लोगभी यथाशक्ति प्रवृत्त होंय कि जिससे पुनर्जन्मत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ।

मकसूदाबाद

अजीमगंज

द० राय धनपतसिंह बहादुर

# भूमिका ।

यह ठाणांग तीसरा अंग परमकरुणावत श्रमण जगवंत श्रीमहावीरस्वामीके उपदेशसे धर्मरत्नरक्षक भगवंत गणधर श्रीगौतम स्वामी तथा श्री सुधर्मा स्वामीने चतुर्विध श्रमणसंघ भट्टारक और उनकी संतति के परम उपकारार्थ सूत्ररूपसे संकलित किया, स्थान यह, नाम १ स्थापना २ द्रव्य ३ क्षेत्र ४ अक्षा ५ ऊर्द्धता ६ उपरति ७ वसति ८ समय ९ प्रग्रह १० योध ११ अचलता १२ गणना १३ सधान १४ और ज्ञाव १५ भेदसे पंद्रह प्रकारका होता है, स्थानांग इस पदका समुदायार्थ यह है कि यथावत् स्वरूप कथन करके स्थापित किये हैं एक दो तीन इत्यादि दश सख्या पर्यंत विशेषित आत्मादि पदार्थ जिसमें अथवा स्थान शब्दसे एक दो इत्यादि सख्या का भेद इस ग्रंथमें कहा जाता है, आत्मादि पदार्थोंको एकसे लेके दश तक सख्या और यथायोग्य स्थिति कहने से वसति और गणनास्थान का अधिकार है इससे स्थान ऐसा कहा, वही स्थान द्वायोपज्ञामिक भावरूप प्रवचन पुरुषके अंगकी तरह है इससे स्थानांग नाम हुआ, इसमें ज्ञाव स्थानका भी अधिकार है, इस स्थानांग

के दस अध्ययन हैं, पहिले अध्ययनमे एक संख्या विशेषित पदार्थ कहे हैं, दूसरे में वही दो संख्या विशेषित इत्यादि दश अध्ययन हैं, इस स्थानांगके पदार्थोंका तात्पर्य शीघ्र ज्ञात होनेके लिये उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ चार अनुयोग अर्थात् सूत्रका अर्थसे संबंध, अथवा अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपण रूप क्रिया विशेष, कहे हैं, यही चारों जैसे नगरमें सुखसे प्रवेश करनेमें चार द्वार होते हैं वैसे इस प्रवचनमें प्रवेश करने के यह चार अनुयोग रूप द्वार (प्रवेश मुख) हैं, इन अनुयोग द्वारों से जीवा जीवादि पदार्थ नियमित संख्या विशेषित ज्ञात होने से तत्त्वज्ञान रूप परम पुरुषार्थ सिद्ध होता है इसलिये इस के पढ़ने पढ़ाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परंतु पढ़नेका अधिकारी वही है जो कि मोक्ष मार्ग का अभिलाषी गुरुका आज्ञाकारी और दीक्षा लिये आठ वर्ष जिसको व्यतीत भया होय । स्थानांग सूत्र देनेका अवसर भी वही है इति शम् ॥

मकसूदावाद

अजीमगंज

द२ राय धनपतसिंह बहादुर

## नकल चिठी १

॥ ८ ॥

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसङ्घुद्धिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधन पतिसिंहबहादुरेषु मविनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुना है आप की ऐसी इच्छा है कि पैंतालिसों जैनागम की पुस्तकें मूल टीका और ज्ञाषाटीका सहित पाच २ सौ कापी छपें और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पाचसौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित हो सो यह अति आनंदकी बात है, परंतु जिन महाशयों को द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा है उन लोगों के निमित्त जी यदि आप की आज्ञा हो तो बेचने के वास्ते पाचसौ कापी जैन बुक सुसाइटी की ओर से जी छपवा ली जावे यह पुस्तकें मे अजीमगंज से प्रकाश करुंगा अग्रे शुभम् ।

सबत् १८३३ मि० । चै० । शु० । ११

अजीमगंज

शहर मुरसीदाबाद

द० जैन बुक सुसाइटी  
कार्यसम्पादक  
सुबुद्धिसेठ

## नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटीकार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओर से पैंतालिसों जैनागम की पाचसौ पुस्तकें छपवा लने की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हू कि आप जैन बुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पाच २ सौ पुस्तकें बेचने के वास्ते छपवा लेवे, परंतु पाचसौ से अधिक छपानेकी आज्ञा मैं नहीं देता, यदि और कोई छपवाना चाहें तो उचित है कि पहले मुझ से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थों पर रजस्टरी हुई है, अग्रे शुभम् ।

स० । १८३३ । मि० । चै० । शु० । १३

अजीमगंज

शहर मुरसीदाबाद

द० रायधनपतिसिंह  
बहादुर

पत्र	पृष्ठ	स्थानांक	उद्देशांक	ग्रन्थसङ्ख्या	पत्र	पृष्ठ	स्थानांक	उद्देशांक	ग्रन्थसङ्ख्या	
३३	१	१	०	११८७	३६४	२	५	१		
५६	२	२	१		३८७	२	५	२		
६३	२	२	२		४०७	१	५	३	१६२५	
८९	२	२	३		४३५	२	६	१	७६५	
१०८	२	२	४	१६७५	४७४	२	७	१	८५०	
१३७	१	३	१		५०६	२	८	१	७२०	
१४६	१	३	२		५३५	२	८	१	७०७	
१७२	२	३	३		५६५	२	१०	१	१७१४	
१८८	१	३	४	२०७५						
२३२	२	४	१		ग्रन्थसङ्ख्या				सर्वसङ्ख्या २५०००	
२७०	२	४	२		मूल सूत्र—३७५०					
३१०	२	४	३		संस्कृत टीका—१४२५०					
३४३	२	४	४	२८३२	जाया टीका—७०००					

यह पुस्तक जिसको मोल लेनी हो मरूमूदाबाद प्रजीमगज जैनब्रू सुसाइटी कार्याध्यक्ष सुबुद्धिसेठ को लिखने से मिलेगी—

और राय धनपतिसिंह बहादुरकी तरफ से धर्मार्थ जडार की दुई पुस्तकोको अगर कोई बचे या सारीद करेगा श्रीचौबीसीजी का और श्रीसचका गुनहगार होगा सरकार से कानून मुताबिक सजा पावेगा ।

ठिकाना राय धनपतिसिंह बहादुर की कोठी ।

की पुस्तक दाम ३१॥७

द० सु० सुबुद्धिसेठ





॥ श्रीजिनेन्द्रायनमः ॥ अहं ॥ श्रीश्वोरंजिननाथं नत्वास्थानांगकतिपयपदानां प्रायोन्यशास्त्रदृष्टं करोम्यहं विवरणं किंचित् ॥ १ ॥ इह हि अमणस्य भगवतः श्री महावीरवर्धमानस्वामिन इत्वाकुलनन्दनस्य प्रसिद्धसिद्धार्थराजसूनो महाराजस्येव परमपुरुषकाराक्रान्तविक्रान्तरागादिशत्रोराज्ञाकरणदक्षमापति शतसततसेवितपादपद्मस्य सकलपदार्थसार्थसाक्षात्करणदक्षकेवलज्ञानदर्शनरूपप्रधानप्रणिध्यवबुद्धसर्वविषयग्रामस्वभावस्य सकलत्रिभुवनातिशायिपरमसाम्राज्यस्य निखिलनीतिप्रवर्तकस्य परमगम्भीरा अहार्था दुपदेशा त्रिपुणबुद्ध्यादिगुणगणमाणिक्यरोहणधरणीकल्पेन भाण्डागारनियुक्तेनेवगणधरेण पूर्व काले चतुर्वर्णश्रीअमणसङ्गभट्टारकस्य तत्सन्तानस्यचो पकाराय निरूपितस्य विविधार्थरत्नसारस्य देवताधिष्ठितस्य विद्याक्रियावल्लवतापि पूर्वपुरुषेण केनापि कुतोपि कारणा दनुमुद्रितस्या तएवच केषां चिदनर्थभौरूणा अनोरथगोचरातिक्रान्तस्य महानिधानस्येव स्थानाङ्गस्य तथाविधविद्यादिवलविकलैरपि केवलम्वार्थप्रधानैः स्वपरोपकारायार्थविनियोजनाभिलाषिभि रतएव चावगणितस्वयोग्यतैर्निपुणपूर्वपुरुषप्रयोगा नुपयित्य किञ्चित् स्वमन्यो त्येन्य तथा विधवर्त्तमानजना नापृच्छ्य च तदुपायान् द्यूतादिमहाव्यसनोपेतै रिव स्नाभिरुन्मुद्रणमिवा नुयोगः प्रारभ्यत इति शास्त्रप्रस्तावना । तस्य चानुयोगस्य फला दिद्वारनिरूपणतः प्रवृत्ति र्यतउक्तं तत्सफलजोगमगल समुदायत्यातहेवदाराद् तन्मेयनिरुत्तिक्रम पयोयणाश्चवच्चाइति ॥ १ ॥ तत्र प्रेक्षावतां प्रवृत्तये फल सवश्य म्वाच्य मन्यथा हि निष्प्रयोजनत्वमस्या शङ्कमानाः श्रोतारः कण्टकशाखामर्दनइव नप्रवर्त्तेरन्निति तच्चानन्तरपरस्परभेदात् द्विधा तत्रानन्तर मर्था वगम स्तत्पूर्वकानुष्ठानतश्चा पवर्गप्राप्ति र्यासा परस्परप्रयोजनमिति ॥ तथा योगः सम्बन्धः सचयद्युपायोपेयभावलक्षणो यदुतानुयोगउपायो ऽर्थावगमादि चोपेयमिति तदा सप्रयोजनाभिधानादेवा भिहित इत्यवसरलक्षणः सम्बन्धो स्यवाच्यः कोस्यदानेसंबन्धो ऽवसर इतिभाव योग्यो वा दाभेअस्यकइति तत्र भव्यस्य मोक्षमार्गाभिलाषिणः स्थितगुरूपदेशस्य प्राणिनो अष्टवर्षप्रमाणप्रव्रज्यापर्यायस्यैव सूत्रतोपि स्थानाङ्ग देयमिति अयमवसरोयोग्योपिवायमेवेति य

शीत तिरसिपदिसागस्तु अगारपक्षपणाममज्जयण पक्षयसिस्तस्यस्यो सुगमलंमामर्गमिति ॥ १ ॥ दसकपयवहारा संयच्छरपणगदिगियस्योय ठाणं  
 समवापोनिय अंगेतेवहवासस्यसि अस्तथादाने स्या आभक्षणदो धीवा इति ॥ १ ॥ तथा भोगोभूततया सगिपसग्ये तदुपहततयाः शिष्या नेमा ज्ञातस्यैरसि  
 ति तदुपगतया मङ्गलसपदर्शनीयं उक्तं गपुविग्याप्रसोयां तेणकायमंगलोवमारिणिं चेतस्योसोरुमहा निक्षिप्यजंमामहानिज्जति मङ्गलस्य शास्त्रस्यादिमङ्गा  
 वसानेषु कामेण शास्त्रार्थस्या पिप्पेमपरिसमाप्तये तस्यैव स्यैव तस्यैवा स्यवच्छेदाय भवतीति तदुक्तं तंमंगलमार्द्रं मङ्गोपज्जंतपयसलस्य पक्षमंसलयापि  
 यत्त पारमगणागनिधिं तस्सेवयथिज्जलं मज्जिममंअतिमपितस्सेव अज्जोष्ठित्तिनिमित्तं सिग्गपसिग्गाध्वंमस्तति तथादिमंगलं सुयंमेवाउसंतेणं भगवयेत्या  
 दिसूत्रंनवांतर्भूतत्वात्पुतशब्दस्यभगवत्तमानमर्भत्याजायायाताभगवतेत्यस्यनन्दीभगवत्तमानमोशमंग्यतेपपिमग्यतेवाहितमनेनेतिमंगलार्थस्य गृह्यमानस्या  
 दिति मङ्गमङ्गलंपंचमाऽप्यमनस्यादिसूत्रं पंचमज्जलपदत्वादि मङ्गाजतानांयागिकादिभावतया मङ्गलत्वा इति च यागिकादिभो भावो मङ्गलं यतउक्तं  
 मोभागमभोभावो सुतिसुहोलाध्याउति अथपयत्ताऽप्यमनादिसूत्रं उक्तिंतागेहिं सम्पत्ते अणगारे अरुभगणपरित्तपदत्वादि अनगारस्य परमेष्ठिपंचकायस्य  
 र्गतत्वेन मङ्गलत्वात् स्याभिपेयानो वा गणपरस्थानानां यागीपयमिकादिभावरूपतया मंगलत्वादिति अत्रमङ्गलस्य दशमाध्यायस्यान्यासूत्रं दसगणल  
 यत्तापोमलाअगंता पयस्ये सोद्या नस्याशब्दस्य उज्जिगद्वय मङ्गलत्वादिति सर्वमेवशास्त्रमंगलं निर्जगार्थत्वात् तपोवत् मङ्गलभूतस्यापि शास्त्रस्य सो मङ्गलत्वा  
 युवादः स पिणमतिमङ्गलत्वपरिग्रहार्थं मंगलतयाचि परिगृहीतं शास्त्र मङ्गलं स्या यथा साधु रित्यन्तप्रसङ्गेनेति अथच शास्त्रस्य मङ्गलादिनिरूपितम  
 पि तदसुगोमस्य द्रष्टव्यं तयोः कथंचि ददीदादिति अणेदानो ससदागार्थस्थिते तत्र श्वामाङ्गमितेतदुपशास्त्रमाम नामध गणार्थादिदेदा तिलिधं तवाया  
 यगार्थं मयगार्थं मर्थशून्यं च तत्र यथार्थं अदीपादि अयगार्थं माताशादि अर्थशून्यं उज्ज्यादि तत्र यगार्थं शास्त्राभिधानं भिद्यते तत्रैव समदागार्थपरिसमा

ते र्यतएव मत स्तन्निरूप्यते तत्र स्थान मङ्गं चेति पदद्वयं निक्षेपणीय मिति तत्र स्थान नाम स्थापनादिभेदात् पंचदशधा यदाह नामठवणादपि खेत्त  
 षाउड्डुउवरईवसही सजमपगहजोहे अचलगणणंसधणाभावेत्ति तत्र स्थानमिति नामैव नाम स्थानं यस्य वा सचेतनस्या चेतनस्य वा स्थानमिति नामकि  
 यते तद्वस्तुनाम्ना स्थाननाम स्थानमित्युच्यते तथा स्थाप्यत इति स्थापना ऽच्चादि साच स्थानाभिप्रायेण स्थानमप्यभिधीयते ततः स्थापनैव स्थान तथा द्रव्यं  
 सचित्ताचित्तमित्यभेद स्थान गुणपर्यायाश्रयत्वा ततः कर्मधारयइति तथा क्षेत्रमाकाश न्तच्च तत्स्थान च द्रव्याणामाश्रयत्वात् क्षेत्रस्थानं तथा अज्ञा कालः  
 सच स्थान यतो भवस्थितिः कायस्थिति च भवकाल कायकाल आभिधीयते स्थिति स्थानमेवेति उड्डुत्ति उड्डेतया स्थान मवस्थानं पुरुषस्यो ऽस्थानं कायो  
 त्सर्ग इति इह स्थानशब्दः क्रियावचन एवं निषन्न त्वग्वर्त्तनादिस्थान मपि द्रष्टव्य मूर्द्धशब्दस्योपलक्षणत्वादिति तथा उपरतिर्विरतिः सैव स्थानं विविध  
 गुणाना माश्रयत्वात् विशेषार्थो चेह स्थानशब्द स्ततो विरते स्थानविशेषो विरतिस्थान तच्च देशविरतिः सर्वविरतिश्चेति तथा वसति स्थानमुच्यते स्थीयते  
 तस्मिन्नितिक्रत्वेति तथा सयमस्य स्थान सयमस्थान मिह स्थानशब्दो भेदार्थः सयमस्य शुद्धिप्रकर्षाप्रकर्षकृती विशेषः संयमस्थान न्तथा प्रगृह्यते उपादीयते  
 आदेयवचनत्वा द्यः स प्रगृहो ग्राह्यवाक्यो नायक इत्यर्थः सच लौकिको लोकोत्तरश्चेति तत्र लौकिको राजयुवराजमहत्तरामात्यकुमाररूपो लोकोत्तरश्चा  
 चार्योपाध्यायप्रवर्त्तकस्थविरगणावच्छेदकरूप इति तस्य स्थान म्यद् अग्रहस्थान मिति तथा योधाना स्थान मालीढप्रत्यालीढवैशाखमण्डलसमपादरूप श  
 रौरन्यासविशेषात्मकं योधस्थान न्तथा अचलन्ति अचलतालक्षणोधर्मः सादिसपर्यवसितादिरूपः स्थान मचलतास्थानं तद्वागणन्ति गणनाविषय स्थानमेक  
 षादिशीर्षप्रहेलिकापर्यन्तं गणनास्थान तथा सन्धानद्रव्यत ञ्छिन्नस्य कंचुकादे रच्छिन्नस्य तु पद्मोत्पद्यमानतंत्वादे रिति भावतस्तु च्छिन्नस्य प्रशस्ताप्रशस्तभाव  
 स्य पुनः सन्धान मच्छिन्नस्य त्वपरापरोत्पद्यमानस्य प्रशस्तभावस्य सन्धान न्तदेव स्थान म्वस्तुनः सहतत्वेनावस्थान सन्धानस्थान भावेति भावाना मीदयिका

दीनां स्थान मवस्थिति रिति भावस्थान मिति एव मिह स्थानशब्दो ऽनेकार्थः इहच वसतिस्थानेन गणनास्थानेन चाधिकार इति दर्शयिष्यति इदानीं मङ्ग  
 निक्षेप उच्यते तत्र गाथा नामगण्ठवर्णं द्रव्यगंचेवहोदभावंग एसोखलुग्रंगस्स निखेवोचउव्विहोहोइति ॥ १ ॥ तत्र नामस्थापने प्रसिद्धे द्रव्यांगं पुनर्द्रव्यस्य  
 मद्योपधादे रग कारण मवयवो वेति द्रव्यांगं भावस्य चायोपशमिकादे रेव मेवाग भावांग मिति इहच भावांगेना धिकार इत्यपि दर्शयिष्यते तत्र तिष्ठ  
 त्यासने वसन्ति यथा वदभिधेयतयै कत्वादिविशेषिता आत्मादयः पदार्था यस्मि न्त तस्थानअथवा स्थानशब्देन हैकादिकः संख्याभेदो भिधीयते तत आत्मा  
 दिपदार्थगताना मेकादिदशाताना स्थानाना मभिधायकत्वेन स्थान माचाराभिधायकत्वा दाचारवदिति स्थानच तत् प्रवचनपुरुषस्य चायोपशमिकभाव  
 रूपस्यां गमिवाङ्ग वेति स्थानाङ्गमिति समुदायार्थः तच्च दशाध्ययनानि तेषु प्रथममध्ययनमेकादित्वा त्संख्यया एकसंख्योपेतात्मादिपदार्थप्रतिपादकत्वा  
 देकस्थान न्तस्यच मङ्गापुरुषस्येव चत्वार्यनुयोगद्वाराणि भवन्ति तद्यथो पक्रमो निक्षेपो नुगमो नयश्चेति तचानुयोजन मनुयोगः सूत्रस्यार्थेन सहसंबन्धनं अ  
 थवा अनुरूपो ऽनुकूलो वा यो योगो व्यापारः सूत्रस्यार्थप्रतिपादनरूपः सोनुयोगः इत्याहच अणुजो जणमणुजोगो सुयस्स नियण्णजमभिधेयेण वाकारोवा  
 जोगो जोअणुरूवोअणुजूलोपेति ॥ १ ॥ अथवा अर्थापेक्षयाअणोर्लघोः पञ्चाज्जाततया वा नुशब्दवाच्यस्य सूत्रस्य योभिधेयो योगो व्यापार स्तेन संबन्धो  
 वा सोणुयोगो नुयोगोवेति आहच अहवाजमत्यओघो वपच्छभावेहिंसुयमणुतस्स अभिधेएवाचारो जोगोतेणंचसबधेत्ति ॥ १ ॥ तस्य द्वाराणीव द्वाराणि तत्  
 प्रवेशमुखानि एकस्थानकाध्ययनपुरस्या र्थाधिगमोपाया इत्यर्थः नगरदृष्टान्तं यात्र यथाह्यकृतद्वारं नगरं मनगरं मेव भवति कृतैकद्वारमपि दुरधिगमं का  
 र्यातिपत्तयेय चतुर्मूलद्वारन्तु प्रतिद्वारानुगतं सुखाधिगमं कार्यानिधिपत्तयेय एव मेकस्थानकाध्ययनपुरं मध्यर्थाधिगमोपायद्वारशून्यमशक्याधिगमं भवति  
 एकद्वारानुगतं मपि च दुरधिगमं सप्रभेदचतुर्द्वारानुगतं न्तु सुखाधिगमं मित्यतः फलवान् द्वारोपन्यास इति ॥ तानिच द्विद्विद्विभिदानि क्रमेण भवन्ती



ष ष्विहनामेभावे खश्रीवसमिएसुयंसमोयरति जंसुयनाणावरणं खश्रीवसमजंतयंसञ्चति ॥ १ ॥ तथा प्रमाणं द्रव्यादिभेदा चतुर्विधं तत्र चायोप  
 शमिकभावरूपत्वा दस्य भावप्रमाणे अवतारो यतग्राह ॥ द्वादीचउभेय पमीयतेजेणतपमाणति इणमज्जयणभायो त्तिभावमाणेसमोयरतित्ति ॥ १ ॥  
 भावप्रमाणञ्च गुणनयसख्याभेदत स्त्रिधा तत्रास्य गुणप्रमाणसख्याप्रमाणयो रेवावतारः नयप्रमाणे तु नसम्प्रति यदाह मूढमइयसुयकालियतुननयासमोयर  
 तिइह अपुत्तसमोयारो नत्थिपुहत्तसमोयारोत्ति ॥ १ ॥ गुणप्रमाणन्तु विधा जीवगुणप्रमाणमजीवगुणप्रमाणञ्च तत्रास्य जीवोपयोगरूपत्वात् जीवगुणप्रमा  
 णे वतार स्तस्मिन्नपि ज्ञानदर्शनचारित्र्यभेदा त्थात्मके अस्य ज्ञानरूपतया ज्ञानप्रमाणेतत्रापि प्रत्यक्षानुमानोपमानागमात्मके प्रकृताध्ययनस्या सोपदेशरूपत्वा  
 दागमप्रमाणे तत्रापि लौकिकलोकोत्तरभेदे परमगुरुगणीतत्वेन लोकोत्तरे सूत्रार्थोभयात्मनि तथाचाह ॥ जीवाणन्नत्तणउ जीवगुणेचोहभावश्रीनाणे लो  
 उत्तरसुतत्थो भयागमेतस्सभायाश्री ॥ १ ॥ तत्राप्यात्मानन्तरपरम्परागमभेदत शिविधो र्थत स्तीर्यकरगणधरतददेवासिनः सूत्रत स्तु गणधरतच्छिष्यतग्रशि  
 यानुपेक्षयथाक्रम मात्मानन्तरपरम्परागमेष्व वतारः सख्याप्रमाण मन्वन्त गपञ्चित न्ततएवावधारणीय न्तन चास्य परिमाण सख्याया भवतार स्तत्रापि  
 कालिकश्रुतदृष्टियादश्रुतपरिमाणभेदतो द्विभेदायां कालिकश्रुतपरिमाणसख्याया कालिकश्रुतत्वा दस्येति तत्रापि श्रद्धापेक्षया सख्येयाचरपदायात्म  
 कतया सख्यातपरिमाणात्मिकाया मपर्यायापेक्षयात्वनन्तपरिमाणात्मिकाया मपर्यायत्वा दागमस्य तथाचाह ॥ अणतागमा अणतापज्जया इत्यादि ॥  
 तथा वक्तव्यता स्वसमयेतरोभयवक्तव्यता भेदा त्रिधा तत्रेद स्वसमयवक्तव्यताया मेवावतरति सर्वाध्ययनाना तद्रूपत्वात् तदुक्तं परसमश्रीउभयम्वा सम्म  
 दिष्ठिस्ससमश्रीजेण तासव्वज्जयणाइं ससमयवत्तव्वनिययाइंति ॥ १ ॥ तथा अर्थाधिकारी वक्तव्यता विशेषएव सचैकत्वमिष्टात्मादिपदार्थप्ररूपण लक्षण  
 इति तथा समवतारःप्रतिहार अधिकृताध्ययनसमवतारणलक्षणः सचानुपूर्व्यादिषु लाघवार्थ मुक्तएवेति नपुन रुच्यते तथाहि ॥ अहुणायसमोयारो जेण



समोयारियंपईदारं एगठ्ठाणमणुगओ सोलाववओणपुणवओ ॥ निचेपस्त्रिधा ओघनामसूत्रालापकनिष्पन्नभेदात् आहच भन्नइधेप्पइयसुहं निखेवपयाणसा  
रओसत्थं ओहोनामंसुत्त निखेत्तव्वंतओवस्सं ॥ १ ॥ तत्रौघः सामान्यमध्ययनादिनाम उक्तञ्च ओहोजसामन्नं सुयाभिहाणंचउव्विहत्तंच अज्झयणअज्झीणं  
आउज्झयणायपत्तेय ॥ नामादिचउभेयं वन्नेज्जणंसुयाणसारेण एगठ्ठाणजोज्ज चउसुविकमेणभावेसु ॥ २ ॥ तत्राध्यात्म मन स्तत्रशुभेअयनइमनमर्यादात्मनो  
भवति यस्मात् अध्यात्मशब्दवाच्यस्य वा मनसः शुभस्य आनयन मात्मनियतो भवति बोधादीना आधिक मयन यतो भवति तदज्झयणति प्राकृतशैल्या भ  
वतीति आहच जेणसुहप्पज्झयणंअज्झप्पाणयणमहियमयणवा वोहस्ससंजमस्सवमोक्खस्सवतोतमज्झयणति ॥ १ ॥ अधीयते वा पठ्यते आधिक्येनस्मर्यते गम्य  
ते वा तदित्यध्ययनमिति ॥ तथा यद्दीयमान न दधीयतेस्म तदधीण न्तथा ज्ञानादीना मायहेतुत्वा दायः तथा पापानां कर्मणां चपणहेतुत्वा त्चपणेति  
आहच अज्झीणंदिज्जतं अब्बोच्छित्तिनयइअलोगुव्व आओणाणाईणंज्झवणापावाणखवणंति नामनिष्पन्नेतु निचेपे ऽस्यैकस्थानकमितिनाम तत एकशब्दस्य  
स्थानशब्दस्यच निचेपो वाच्य स्तत्र एकस्य नामादिः सप्तधा तदुक्त नाम १ ठवणा २ दविण ३ माउयपय ४ सगहेक्कएचेव ५ ॥ पज्जव 'ई भावेय ७ तहा स  
त्तेतेएक्कगाहोति ॥ १ ॥ तत्रनामैको यस्यैक इति नामस्थापनेकः पुस्तकादिन्यस्तौककान्तः द्रव्यैकः सचित्तादि स्त्रिधा माटकापदैक सुउप्पन्नेइवाविगमेइवाधुवे  
इवत्ति एपां माटकावत्तकलवाप्पयमूलतया अवस्थिताना मन्यतर द्वियचित्त अकाराद्यच्चरात्मिकाया वा मातृकाया एकतरो अकारादिः सग्रहैको येनै  
केनापि ध्वनिना बहवः सगृह्यन्ते यथा जातिप्राधान्येन व्रीहिरिति पर्यायैकः शिविकादिरेकः पर्यायो भावैक औदयिकादिभावाना मन्यतमी भाव इति  
इह भावैकेनाधिकारो यतो गणनानामलक्षणस्थानविषयो य मेकी गणनाच सख्या संख्याच गुणो गुणश्च भाव इति स्थानस्यतु निचेपउक्त एव तत्रच गण  
नास्थाने नेहाधिकार स्तत एकलक्षणं स्थानं संख्याभेदः एकस्थान न्तद्विशिष्टजीवाद्यर्थप्रतिपादनपर मध्ययन मप्येकस्थान मिति ॥ उक्तावोघनामनिष्पन्न

निक्षेपो सम्प्रतिसूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेपः प्राप्तावसरः तत्स्वरूपञ्चेदं सूत्रालापकानां सूत्रपदानां श्रुतं सौ आयुषा त्रित्यादीनां निक्षेपो नामादिन्यासः सचा  
वसरप्राप्तोपि नोच्यते सतिसूत्रे तस्य सम्भवात् सूत्रञ्च सूत्रानुगमे सचानुगमभेद एवेत्यनुगमएव तावदुपवर्ण्यते द्विविधो नुगमो निर्युक्त्यनुगम सूत्रानुगमश्च  
तत्राद्यो निक्षेपनिर्युक्त्युपोद्घातनिर्युक्तिसूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगमविधानतः स्त्रिविधः तत्रच निक्षेपनिर्युक्त्यनुगमः स्थानाङ्गाध्ययनाद्येकशब्दानां निक्षेपप्रतिपाद  
ना दनुगत एवेति उपोद्घातनिर्युक्त्यनुगमस्तु उद्देशेनिर्देशेयनिगमे इत्यादि गायत्र्याद्वदाद्वसेय इति सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगमस्तु सहितादौ षड्विधे व्या  
ख्यालक्षणे पदार्थपदप्रियहचालनाप्रत्यवस्थानलक्षणव्याख्यानभेदचतुष्टयस्वरूपः सच सूत्रानुगमे सहितापदलक्षणव्याख्यानभेदद्वयलक्षणे सति भवतीत्यतः  
सूत्रानुगम एवोच्यते तत्र चालपग्रन्थमहार्थादिसूत्रलक्षणोपेत स्वलितादिदोषवर्जितं सूत्रं सुचारणीयं न्तर्चेद ॥ सुयमेइत्यादि ॥ अस्यच व्याख्या सहितादि  
क्रमेणेत्याह च भाष्यकारः सुत्त १ पय २ पयत्यो ३ सम्भवतोविगर्हो ४ विचारोय ५ चालनेत्यर्थः दूषित्यसिद्धौ ६ नयमय प्रित्तिसञ्ज्ञोनेयमणुष्ठुत्त १ ॥  
तत्र सूत्रमिति सहिता साचानुगतैव सूत्रानुगमस्य तद्रूपत्वा दित्याह च होइकयत्थोवोत्तु सपयत्थेयस्यसुयाणुगमोत्ति सूत्रे चास्वल्लितादिगुणोपेने उच्चारिते  
केविदर्थो अवगताः प्राज्ञानां भवन्त्यतः सहिता १ व्याख्याभेदो भवति अनधिगतार्थाधिगमाय च पदादयो व्याख्याभेदाः प्रवर्तन्त इति तत्र पदानिश्रुत

॥८॥ श्रीचर्हङ्गो नमः ॥ सुयमेष्वाउरंतेण जगवयाएवमस्कायं ॥

श्रीमद्वीरजिननत्वा । श्रीगुरुचमुदासदा स्थानांगाभिधसूत्रस्य । ट्वार्थलिख्यतेमया ॥ १ ॥ श्रीसुधर्मा स्वामी जवूस्वामीने कड़ेछे । जे में साभल्युंछे  
हे आयूखावत जवू । भगवत श्रीमहावीरें कछो एठाणाग सूत्रनो अर्थ तेकह तुम्हे साभलो ॥ \* \* \* \*

मया आयुष्मन् तेन भगवता एवं व्याख्यातमिति एव म्पदेषु व्यवस्थापितेषु सूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेपावसरस्तत्र चेयं व्यवस्था जल्यजंजाणेज्जा निक्खेव  
निक्खिवेनिरवसेस जल्यगियणजाणेज्जा चउक्कयमिनिक्खिवेतत्थत्ति ॥ १ ॥ तत्र नामश्रुतस्थापनाश्रुतप्रतीतद्रव्यश्रुतमधीयानस्यानुपयुक्तस्य पत्र  
कपुस्तकन्यस्तस्वाभावश्रुतन्तुश्रुतोपयुक्तस्येति इहच भावश्रुतेन श्रुतेन्द्रियोपयोगलक्षणेनाविकारः तथा आउसंति आयुर्जीवितन्तन्नामादिभेदतो दशधा  
तद्यथा नामठवणा २ दविण ३ ओहे ४ भव ५ तव्ववेय ६ भोगेय ७ । सजमे ८ जस ९ किच्ची १० जीवियचतंभन्नइंदसहा ॥ १ ॥ तत्र नाम  
स्थापनेक्षणे दविणत्ति द्रव्यमेव सचेतनादिभेदज्जीवितव्यहेतुत्वाज्जीवितं द्रव्यजीवित ओघजीवित नारकाद्यविशेषितायुर्द्रव्यमात्रसामान्यजीवित भवति  
नारकादिभवमिष्टं जीवित भवजीवित नारकजीवित मित्यादि ॥ तव्ववेयत्ति तस्यैव पूर्वभवस्य समानजातीयतया सम्बन्धिजीवितन्तद्भवजीवित यथा  
मनुष्यस्य सतो मानुषत्वेनोत्पन्नस्येति भोगजीवितञ्चक्रवर्त्यादौनां सयमजोपितसाधूनां यशोजीवितं कीर्त्तिजीवितञ्च यथा महावीरस्येति जीवितञ्चायु  
रेवेति इहच सयमायुषा ययः कीर्त्त्यायुषा चाधिकार इति एव शेषपदानां यथा सम्भवन्निक्षेपोवाच्य इति ॥ उक्तसूत्रालापकनिष्पन्ननिक्षेपः पदार्थः पु  
नरेव इहकिल सुधम्मस्वामी पचमोगणधरदेवो जम्बूनामानस्वशिष्यस्मृतिपादयाचकार श्रुतमाकर्णितमेमया आयुसति आयुः जीवितं तत्सयमप्रधानं  
तथा प्रशस्तं अभूतत्वा विद्यते यस्यासावायुष्मांस्तस्यामत्रण हेआयुष्मन् गिण्ण तेणत्ति यः सविहितव्यवहितसूक्ष्मवाद्गवाध्यात्मिकसकलपदार्थेष्वव्याह  
तवचनतयाप्तत्वेन जगति प्रतीतः अथवा पूर्वभवोपात्ततीर्थकरनामकर्मादिलक्षणपरमपुण्यप्राग्भारोविलीनानादिकालालीनमिथ्यादर्शनादिवासनः पविह  
तमहाराज्यो दिव्याद्युपसर्गससर्गाविचलितशुभध्यानमार्गोभास्करइव घनघातिकर्म्मघनाघनपटलविघटनोत्तसितविमलकेवलभानुमण्डलो विबुधपतिषट्प  
दपटलजुष्टपदपद्मो मध्यमाभिधानपुरीप्रथमप्रवर्त्तितप्रवचनो जिनो महावीरस्तेन भगवता एमहाप्रातिहार्यरूपसमग्रैश्वर्यादियुक्तेन एव मित्यमुना वक्ष्यमा

येनै कत्वादिना प्रकारेणा ख्यातमिति आमर्यादया जीवाजीवलक्षणासङ्कीर्णतारूपतया भिविधिना वा समस्तवस्तुविस्तारव्यापनलक्षणेन ख्यातं कथित मा  
 ख्यात मात्मादिवस्तुजात मितिगम्यते अत्रच श्रुतमित्यनेना वधारणाभिधायिना स्वय मवधारितमेवा न्यस्मै प्रतिपादनीय मित्याह अन्यथा भिधाने प्रत्यु  
 तापायसम्भवात् उक्तञ्च किंइत्तोपावयर समग्रणहिगयधम्मसम्भावो अत्रकुदेसणाए कडयरगमिपाडेइत्ति ॥ १ ॥ मयेत्यनेनो पक्रमद्वाराभिहितभावप्रमाण  
 द्वारगतात्मानन्तरपरम्परभेदभिन्नागमो य म्वक्ष्यमाणो ग्रन्थो ऽर्थतो अनतरागमः सूत्रतस्वात्भागम इत्याह आयुष्म त्रित्यनेनतु कोमलवचोभिः शिष्य  
 मनः प्रह्लादगता चार्यणी पदेशो देय इत्याह उक्तच धम्ममइएहिअइसु दरेहिंकारणगुणोवणीएहि पल्हायतोयमण सीसचोएइआयरिओत्ति ॥ १ ॥ आयुष्म  
 त्वाभिधानचा त्वत मालहादक आणिना मायुषो त्वतभीष्टत्वाद्यतउच्यते सव्वेपाणापियाउयाअप्पियवहा सुहासयादुक्खपडिकूला सव्वेजीविउकामा सव्वे  
 सिजीवियपियति तथा तृणायापिनमन्यन्ते पुत्रदारार्थसम्पदः जीवितार्थेनरास्तेन तेषामायुरतिप्रिय मिति ॥ १ ॥ अथवा आयुष्मत्रित्यनेन ग्रहणधारणा  
 दिगुणवते मिथ्याय शास्त्रार्थोदेय इति ज्ञापनार्थ सकलगुणाधारभूतत्वेना शेषगुणोपलक्षणेन चिरायुर्लक्षणगुणेन शिष्यामंत्रणमकारि यतउक्तं बुद्धेविदोणमेहे  
 नकन्हभूमोएलोद्वएउदयं गहणधरणसमत्थेइय देयमच्छित्तकारिस्मि ॥ १ ॥ विपर्ययहेतु दोप इति आहच आयरिएसुत्तमिय परिवाओसुत्तअत्यपलिम  
 थो अन्नेसिपियहाणी पुच्छाविनदुद्धदावंज्झत्ति ॥ १ ॥ तेने त्यनेनतु आसत्वादिगुणप्रसिद्धताभिधायकेन प्रस्तुताध्ययनप्रमाण माह वक्तुगुणापेक्षत्वाहचन  
 प्रामाण्यस्येति भगवतेत्यनेनतु प्रस्तुताध्ययनस्यो पादेयता माह अतिशययान् किलो पादेय स्त हचनमपि तथेति अथवा तेणति अनेनो पोद्धातनिर्युत्तयन्त  
 र्गत निर्गमद्वार माह योहि मिथ्यात्वतमः प्रभृतिभ्यो दोषेभ्यो निर्गतस्ततो निर्गतमिद मध्ययन क्षेत्रतो अपापाया कालतो वैशाखशुद्धैकादश्या म्पूर्वाङ्गे  
 भावे चायिके वर्त्तमाना दिति एवच गुरुपर्वकमलक्षणः सम्बन्धोस्य प्रदर्शितोभवति तथा तथाविधेनभगवता यदुक्तन्तत्प्रयोजनमेव भवतीति सामान्य

तः सप्रयोजनता चास्योक्ता नहि पुरुषार्थानुपयोगिभगवन्तो भाषन्ते भगवत्त्वहानेः अतएव चास्योपायोपेयभावलक्षणः सम्बन्धोपि दर्शित इदं हि भगवदाख्यात गत्यरूपापन्नमुपायः पुरुषार्थस्तूपेय इति अतएव चान्योत्तरः अत्र प्रवर्तिताः यतः सिद्धार्थसिद्धसम्बन्धं श्रोतुं श्रोताप्रवर्तते शास्त्रादीतेन वक्तव्यः सम्बन्धः सप्रयोजन इति ॥ १ ॥ एवमित्यनेन तु भगवद्वचनादात्मवचनस्यानुत्तीर्णता साह ॥ तएव स्ववचनस्य प्रामाण्यं सर्वज्ञवचनानुवादमात्रत्वात् दस्येति अथवा एवमित्येकत्वादिप्रकारो भिद्येतया निर्दिष्टः निरभिधेयताशङ्कया श्रोतृणां काकदन्तपरिच्छाया मिवा प्रवृत्तिरत्र माभूदिति आख्यातमित्यनेन तु नापौरुषेयवचनरूपमिदं न्तस्यासम्भवादित्याह यत उक्तं वेद्यवयवममाणं अपौरुषेयं न निश्चिन्त्यं जेण इदमक्षतं विरुद्धं वयवचनं अपौरुषेयं च ॥ १ ॥ जं बुद्धवृत्तिवयवमपूरिसाभावेऽनेवमेवति तातस्त्वेवाभावो नियमेण अपौरुषेयत्वे इति ॥ १ ॥ अथवा आख्यातभगवतेऽनकुड्यादिनिःसृतं यथा कश्चिदभ्युपगम्यते तस्मिन् स्थानसमापन्ने चिन्तारत्नवदास्थिते निःसरन्ति यथा कामकुड्यादिभ्योऽपि देशना ॥ इत्यस्यानेनाभ्युपगममाह ॥ यतः कुड्यादिनिःसृतानान्तु न स्यादाप्तोपदिष्टता विश्वासश्च न तासु स्यात्केनेमाः कीर्तिता इति ॥ १ ॥ समस्तपदसमुदायेन त्वात्मौल्यपरिहारेण गुरुगुणप्रभावनापरैरेव विनेयेभ्यो देशनाविधेयेत्याह ॥ एव हि तेषु भक्तिपरता स्यात् यथा च विद्यादेरपि सफलता स्यादिति यदुक्तं भक्तौ एजिणवयवमखिज्जतोपुष्पसच्चियाकम्पा आयरियनमोकारेण विज्जामंतायसिञ्जन्तिति ॥ १ ॥ नमस्कारश्च भक्तिरेवेति अथवा आउसतेणति भगवद्विशेषण आयुष्यता भगवता चिरजीविनेत्यर्थः अनेन भगवद्बहुमानगर्भेण मङ्गलं अभिहितं भगवद्बहुमानस्य मङ्गलत्वादिति चोक्तमेव यद्वा आयुष्यतेति परार्थप्रवृत्त्यादिना प्रशस्तमायुर्धरयता न तु मुक्तिमवाप्स्यापि तीर्थनिकारादिदर्शनात् पुनरिहायातेनाऽभिमानादिभावतोऽप्रशस्तं यथोच्यते कैश्चित् ज्ञानिनो धर्मतीर्थस्य कर्तारः परममदगत्वा गच्छन्ति भूयोऽपि भवन्तीर्थनिकारतः ॥ १ ॥ एवमनुमूलितरागादिदोषत्वात्तद्वचसोऽप्रामाण्यमेव स्यान्नः शेषोन्मूलने हि रागादीनां कुतः पुनरिहागमनसम्भव

इति अथवा आयुषता प्राणधारणधर्मवता ननु सदा सम्बुद्धेन तस्या करणत्वेना ख्यातत्वासम्भवा दिति यदिवा आवसतेणंति मयेत्यस्य विशेषण न्तत प्रा  
 डिति गुरुर्दयितमर्यादया वसता अनेन तत्वतो गुरुमर्यादावर्तिस्वरूपत्वात् गुरुकुलवासस्य तद्विधान मर्थत उक्तं ज्ञानादिहेतुत्वा तस्य उक्तञ्च नाणस्सहोद्  
 भागी विरगरप्रोदसणेचरित्त्येय धन्नाभावकहाण गुरुकुलवासनमुचति ॥ १ ॥ गीयावासोर्द्धधर्मे अणाययणवज्जग निगहोयकसायाण एवधोरस्ससासण  
 ति ॥ १ ॥ अथवा प्राउसतेण आमृशता भगवत्यादारविन्द अक्षितः करतलयुगलादिना सृशता नेनै तदाह अधिगतसकलशास्त्रेणापि गुरुविश्रामणादि  
 विनयकृत्य नमोक्तय मुक्तहि जहाहिअग्गीजलणणमसे णाणाहुतमतपयाहिसित्त एवायरीयउवचिठ्ठिएज्जा अणतनाणीवगओविसंतोति ॥ १ ॥ यद्वा ॥  
 प्राउसतेणति प्राजुषमाणेन श्रवणविधिमर्यादया गुरूनासेवमानेन अनेना प्येतदाह विधिनै वोचितदेशस्थेन गुरुसकाशा च्छीतव्यं नतु यथाकथंचित् आहव  
 निहायिकाहापरिव जिह्मिगुत्तेहिपजलिउडेहि भत्तिबहुमाणपुज्ज उवउत्तेहिंमुण्येयव्व मित्वादि ॥ १ ॥ एव मुक्तः पदार्थः पदविग्रहस्तु सामासिकपद  
 िपयः सचाएगात मित्वादिषु दर्शित इति ॥ इदानीं चालनाप्रत्यवस्थाने तेच शब्दतो ऽर्थत सतत्रशब्दतः ननु मे इत्यस्य मम मद्यचेति व्याख्यान मुचितं  
 षओचतुर्थो रेवै कपचनां तस्या स्मत्पदस्य मे इत्यादेशा दिति अत्रोच्यते मे इत्ययं श्विगतिप्रतिरूपको व्ययशब्द स्मृतौवैकवचनाताऽस्मच्छब्दार्थे वर्ततेइति  
 न दोषः अर्थतस्तु चालता ननु वस्तु नित्य म्वा स्या दनित्य म्वा नित्यचे त्त्विनित्यस्या प्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वरूपत्वा यो भगवतः सकाशे श्रोतृत्वस्वभावः स  
 एवच कथं शिष्योपदेशकत्वस्वभाव इति किंच शिष्योपदेशकत्वत्वस्य पूर्वस्वभावत्वागेयास्यादत्यागेवा यदित्यागे हत हत म्वस्तुनो नित्यत्व वस्तुनः स्वभावाच्चति  
 रिक्तत्वेन तत्तयेतत्त्वते रिति अपरित्याग इतिचे च विरुद्धयोः स्वभाजयो युगपदसम्भवा दिति अथवा नित्यमितिपक्ष स्तदपि न निरन्वयनाशेहि श्रोतुः श्र  
 वणकाल एव विनष्टत्वा कथनावसरे ऽन्यस्यैवोत्पन्नत्वा दकथनप्रसङ्गः यन्नदत्तश्रुतस्य देवदत्ताकथनव दिति ॥ अत्रसमाधि नयमतेनेति नयद्वारमवतरति

तत्र नैगमसंग्रहव्यवहारऋजुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूतानया स्तत्रचाद्या स्वयो द्रव्यमेवार्थो स्तीति वादितया द्रव्यार्थिके ऽवतरन्ति इतरेतु पर्याय एवार्थो स्ती  
ति वादितया पर्यायार्थिकनये तदेव सुभयमताश्रयणे द्रव्यार्थितयानित्य वस्तु पर्यायार्थितयात्वनित्य मिति नित्यानित्य म्वस्त्विति प्रत्येकपक्षोक्तदोषाभावो गुड  
नागरादिव दिति एव मेवच सकलव्यवहारप्रवृत्ति रिति उक्तच सव्वचियपदसमय उपपज्जतिनासएयनिच्चच एवचियसुहृदुक्ख बंधमोक्खादिसम्भावोत्ति ॥ १  
उक्तः सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगम स्तदेव अधिकृतसूत्र माश्रित्य सूत्रानुगमसूत्रालापकनित्येपसूत्रस्पर्शिकनिर्युक्त्यनुगमतया उपदर्शिता आराधितं च सक्रम आ  
थकारवचन न्तद्यथा सुत्तसुत्ताणुगमो सुत्तालावगकओयनिकखेवो सुत्तफासियनिज्जुत्ति नयायसमगतुवच्चतित्ति ॥ १ ॥ एतेपा ज्ञाय म्विषय उक्तो भाष्य  
कारेण होइकयत्थोवोत्तु सपयच्छेयंसुयंसुयाणुगमो सुत्तालावगनासो नामाइत्तासविनियोगं ॥ सुत्तप्पासियनिज्जुत्ति नियोगोस्सेसओपयत्थाइ पायंसोचियने  
गम नयाइमयगोयरोहोइत्ति ॥ २ ॥ एव म्प्रतिसूत्रं स्वय मनुसरणीय वयन्तु सत्तेपार्थं कचि क्किंचिदेव भणित्थाम इति यदाख्यात भगवता तदधुनो च्यते  
तत्र सकलपदार्थानां सम्यग्भिन्नान्नान्यज्ञानानुष्ठानैर्विषयीकरणेनो पयोगनयना दात्मनः सर्वपदार्थप्राधान्य मत स्तद्विचारं तावदादावाह ॥ एगेआया  
एको न ह्यादिरूप आत्मा जीव. कथञ्चि दितिगम्यते तत्र अतति सतत मवगच्छति अतसातत्यगमन इतिवचना दतधातो गत्यर्थत्वा इत्यर्थानांच ज्ञाना  
र्थत्वा दनवरत ज्ञानातीति निपातना दात्मा जीव उपयोगलक्षणत्वा दस्य सिद्धससार्यवस्थाद्वये प्युपयोगभावेन सततावबोधभावात् सततावबोधाभावे चा

॥ एगेआया ॥

जीव एकछेज्ञानदर्शन चारित्ररूप अथवा चेतनालक्षणजीव ॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥



जीवत्वप्रसङ्गात् अजीवस्यच पुन जीवत्वाभावात् भावेचा काशादीना मपि तथात्वप्रसङ्गात् एवंच जीवानादित्वाभ्युपगमाभावप्रसङ्ग इति अथवा अतस्ति स ततं गच्छति स्वकीयान् ज्ञानादिपर्याया नित्यात्मा नन्वेवमाकाशादीना मप्यात्मशब्दव्यपदेशप्रसङ्ग स्तेषामपि स्वपर्यायेषु सततगमना दन्यथा अपरिणा मित्वेना वस्तुत्व प्रसङ्गा दिति नैव व्युत्पत्तिमात्रनिमित्तत्वा दस्य उपयोगस्यै वच प्रवृत्तिनिमित्तत्वा जीवएवात्मा नाकाशादि रिति यद्वा संसार्यपेक्षया नानागतियु सततगमना च्युक्तापेक्षया च भूततज्ञावत्वा दात्मेति तस्य चैकत्व कथचिदेव तथाहि द्रव्यार्थितयै कत्व मेकाद्रव्यत्वा दात्मनः प्रदेशार्थतया त्वनेक त्व मसह्येयप्रदेशात्मकत्वा त्तस्येति तत्र द्रव्यच तदर्थयेति द्रव्यार्थं स्तस्यभावो द्रव्यार्थताप्रदेशगुणपर्यायाधारता अवयविद्रव्यते तियावत् तथा प्रकृष्टो देशः प्रदेशो निरवयवीऽशः सचासावर्थयेति प्रदेशार्थं स्तस्य भावः प्रदेशार्थता गुणपर्यायाधारावयवत्वचरणार्थते तियावत् नन्ववयविद्रव्य मेव नास्ति विकल्पद्वयेन तस्या युज्यमानत्वात् खरविषाणव त्तथा हि अवयविद्रव्य मवयवेष्वो भिन्न मभिन्न वा स्या न्न ताव दभिन्न मभेदेहि अवयविद्रव्यव दवयवाना मेकत्व स्या द वयवव द्वा ऽवयविद्रव्यस्या प्यनेकत्वं स्या दन्यथा भेदएव स्या द्विरुद्धधर्माध्यासस्य भेदनिबन्धनत्वादिति भिन्नंचे त्त त्तेभ्यः तदा कि मवयवि द्रव्य प्रत्येक मव यवेषु सर्वात्मना समवैति देशतो वेति यदि सर्वात्मना तदा वयवसंख्य मवयविद्रव्यम् स्यात् कथ मेकत्व न्तस्य अथ देशैः समवैति ततो यै देशे रवयवेषु तद्व र्त्तते तेष्वपि देशेषु तत्काथ प्रवर्त्तते देशतः सर्वतोवा सर्वत स्ते त्तदेवद्रूपेण देशतये त्तेष्वपि देशेषु कथ मित्यादि रनवस्था स्या दित्यत्रो च्यते यदुक्ता म्विकल्पद्वयेन तस्या युज्यमानत्वा दिति तदयुक्त मेकान्तेन भेदाभेदयो रनभ्युपगमात् अवयवा एवहि तथाविधैकपरिणामतया अवयविद्रव्यतया व्यपदिश्यन्ते त एव च तथाविधविचित्रपरिणामापेक्षया अवयवा इति अवयविद्रव्याभावेतु एते घटावयवा एतेच पटावयवा इत्येव मसङ्गीर्णावयवव्यवस्था न स्या त्तथाच प्रति नियतकार्यार्थिनां प्रतिनियतवस्तुपादानं नस्या त्तथाच सर्व मसमञ्जस मापनीपद्येत सन्निवेशविशेषा द्घटाद्यवयवाना प्रतिनियतता भविष्यतीति चेत् स

त्व केवलं स एव सन्निवेशविशेषो ऽवयविद्रव्य मिति यच्चोच्यते विरुद्धधर्माध्यासोभेदनिवन्धनमिति तदपि न सूक्त प्रत्यक्षसंवेदनस्य परमार्थापेक्षया भ्रान्तत्वेन  
 सव्यवहारापेक्षया त्वभ्रान्तत्वेनाभ्युपगमादिति यदिनामभ्रान्तत्वमभ्रान्तत्व कथं मित्येव मन्नापि यत्तु शक्यत्वा दिति किंच विद्यते अवयविद्रव्य मव्यभिचा  
 रितया तथैव प्रतिभासमानत्वा दप्यववन्नीलव द्वा नचाय मसिद्धो हेतु स्तथा प्रतिभासस्यानुभूयमानत्वा नाप्यनैकातिकत्वविरुद्धत्वे सर्ववस्तुव्यवस्थायाः प्र  
 तिभासाधीनत्वा दन्यथा न किञ्चनापि वस्तु सिद्धो दिति ॥ भवतुनामा वयविद्रव्य कोल मात्मा न विद्यते तस्य प्रत्यक्षादिभि रनुपलभ्यमानत्वा दिति तथा  
 हि न प्रत्यक्षग्राह्योसा वतीन्द्रियत्वात् नाप्यनुमानग्राह्यो ऽनुमानस्य लिङ्गलिङ्गिनोः साक्षा त्सम्बन्धदर्शनेन प्रवृत्ते रिति आगमगम्योपि नासा वागमाना म  
 न्योन्यविसम्वादा दित्यत्रोच्यते केय मनुपलभ्यमानता किमेकपुरुषाश्रिता सकलपुरुषाश्रितावा यदि एकपुरुषाश्रिता न तथा त्माभावः सिद्धति सत्यपि  
 वस्तुनि तस्या सभवात् न हि कस्यचित्पुरुषविशेषस्य घटाद्यर्थग्राहक म्माणं न प्रवृत्त मिति सर्वत्र सर्वदा तदभावो निर्णेतु शक्य इति नहि प्रमाणनिवृत्तौ  
 प्रमेय विनिवर्तते प्रमेयकार्यत्वात् प्रमाणस्य नच कार्याभावेकारणाभावोदृष्ट इत्यनैकान्तिकतानुपलभ्यहेतोः सकलपुरुषाश्रितानुपलभ्यस्त्वसिद्ध इत्यसिद्धो  
 हेतु र्नाशसर्वज्ञेन सर्वे पुरुषाः सर्वदा सर्वत्रात्मान नपश्यन्तीति वक्तुशक्य मिति किञ्च विद्यते आत्मा प्रत्यक्षादिभिरुपलभ्यमानत्वात् घटव दिति नचाय  
 मसिद्धो हेतु यतो ऽस्मदादिप्रत्यक्षेणाप्यात्मा तावद्भ्रम्यत एव आत्माहि ज्ञानाद नन्य आत्मधर्मत्वात् ज्ञानस्य तस्यच स्वसम्बिदितरूपत्वात् स्वसविदितत्व  
 च ज्ञानस्य नीलज्ञान मुत्पन्न मासी दित्यादिस्मृतिदर्शनात् नह्य स्वसविदिते ज्ञाने स्मृतिप्रभवो युज्यते प्रमात्रतरज्ञानस्यापि स्मृतिगोचरत्वप्रसङ्गा दिति त  
 देव न्तदव्यतिरिक्तज्ञानगुणप्रत्यक्षत्वे आत्मा गुणी प्रत्यक्ष एव रूपगुणप्रत्यक्षत्वे घटगुणिप्रत्यक्षव दिति उक्तञ्च गुणपञ्चवत्तणभ्रो गुणीविजाओ धडोव्वपञ्चखो  
 घडउव्वधिप्पइगुणी गुणमित्तगहणओजम्हा ॥ १ ॥ तथा अन्नोण्णोव्वगुणी होज्जगुणेहिंजइणामसोण्णो णाण्णगुणमेत्तगहणे पेप्पइजीवोगुणीसक्खं ॥ १ ॥

अहमस्मीति एवं गुणिणीनवडादयो विपश्चिता गुणमेतन्महणा भोजीयं भिक्षुतो विचारोयंति ॥ २ ॥ ये तु सकलपदार्थसार्थस्वरूपा विर्भावनसमर्थज्ञानवंतस्तेषां सर्वात्मनैव प्रत्यक्ष इति तथा इत्तमानगम्यो प्यात्मा तथाहि विद्यमानकर्तृक मिदं शरीरं भोगत्वा दीदनादिव पदोभक्तुसमं विपश्चिः सच कर्ता जीव इति न त्वोदनकर्तृवन्मूर्त्त आत्मा सिद्धातीति साध्यविरुद्धोच्चेतु रिति नैव संसारिणी मूर्त्तत्वेनाप्यभ्युपगमा दाहच जीकत्तासोजीवो सम्भविरुत्तीतिते मद्भोज्या मोक्ताप्रपसगाभो तत्तीससारिणीदोसोत्ति ॥ १ ॥ नचाय मेकान्तो यदुत लिङ्गविनाभूतलिङ्गोपलभ्यतिरेकेणा नुमानस्यै कान्ततोऽप्रवृत्ति रिति ऋसिता दिलिप्तविशेषस्य गृहाख्यलिङ्गविनाभावगृहणमन्तरेणापि गृहणमकत्वदर्शनात् नच देहएव गृही येनाग्यदेहे दर्शनमविनाभावगृहणनियामक भवतीति उक्तं सोनेगतोज्झा लिङ्गेहिंसमंशदिष्ठपुष्पो वि गृहलिङ्गदरिसणाभो गृहाणमेप्रोसरौरमिति ॥ १ ॥ आगमगम्यत्वंत्वात्मन एगेप्राया अतएवपचना न चास्यागमान्तरैर्विसंवादः सम्भावनीयः सुनिश्चितात प्रणीतत्वा दस्येति बहुवक्तव्यमन तत्तु स्थानांतरादयस्येयमिति किं चा त्माभाये जातिस्मरणादय स्थाया प्रेतोभूतपितृपितामहादिकृतानुग्रहो यथा तौ च न प्राप्नुयुरिति आत्मनस्तु सप्रदेशत्वमवश्यमभ्युपगन्तव्य ॥ निरवयवत्वे तु हस्ताद्यवयवानामेकत्वं प्रसङ्गः प्रत्यवयव स्याद्व्यनुपलब्धिप्रसङ्ग इति सप्रदेश आत्मा प्रत्यवयव चैतन्मलचगतद्गुणोपलब्धत्वात् प्रतिग्रीवाद्यवयवपलब्धमात्ररूपगुणघटनदिति स्थापितमेत प्रव्यार्थतयैक आत्मेति अथवा एक आत्मा कथमिदं इति प्रतिपण सभा दपरापरकालजतकुमारतकणनरनारकलादिपर्याये कृत्वादविनाशयोगेपि द्व्यार्थतयैकत्वा दस्य यद्यपि हि कालकृतपर्याये कृत्वाद्यते नशति च यस्तु तथापि स्वरपरपर्यागरूपानन्तधर्मात्मकत्वा तस्य न सर्वधानाशोयुक्त इति प्राक्तच नहि शब्दहाविणासोऽग्रद्वयज्जायमित्तनासंमि सपरपज्जायाणत धम्यणोवत्थुणोशुतोत्ति १ किंच प्रतिचण क्षयिणी भावा इत्येतस्मा इचना प्रतिपादस्य यत् क्षणभगविज्ञान सुपजायते तदसंख्यातसमयेरेव यावयार्थगृहणपरिणामा जायते नतु प्रतिपत्तुः प्रतिसमयं विनाशेसति यत एकैक मप्यचरं पदसत्त्वं सं

ख्यातीतसमयसभूतं संख्यातानि चाक्षराणि पदं संख्यातपदं च वाक्यं तदर्थग्रहणपरिणामाच्च सर्वं जगदभंगुरमितिसंविज्ञानं भवेत्तच्चायुक्तं समयनष्टस्येति  
 आहच कहवासव्वखणियं विनायजइमईसुयाओत्ति तदसखसमयसुत्तल्य गहणपरिणामप्रोजुत्तं ॥ १ ॥ नउपइसमयविणासे ज्जेणिकेक्कलरंपियपयस्स  
 सखाइ यसमाइयसखेज्जाइंपयताइं ॥ २ ॥ सखेज्जपयवक्क तदत्यगहणपरिणामप्रोहीज्जा सव्वक्खणभगणा एतदजुत्तंसमयनठ्ठस्सत्ति ॥ ३ ॥ तथा सर्वधीं  
 च्छेदे दृष्ट्यादयो न धटंते पूर्वसंस्कारानुवृत्तावेव तेषां युज्यमानत्वा दाहच तेत्तीसमोक्किलामोसारित्वविपक्वपञ्चयार्इणि अज्झयणज्झाणभावणा यकासख  
 नाससज्जनासंमिति १ ॥ तत्र दृष्टिर्धाणिः अमोऽध्वादिखेदः क्लमो ग्लानिः सादृश्यं साधर्म्यं विपक्षो वैधर्म्यं प्रत्ययोऽवबोधः शेषपदानि प्रतीतानि इ  
 त्यादि बहुवक्तव्यं तत्तु स्थानांतरादवसेय मिति तदेव आत्मा स्थितिभवनभगरूपापेक्षया नित्यो नित्यत्वाच्चैतो भवनभगरूपापेक्षया त्वनित्योऽनित्यत्वाच्चा  
 नेक इति आहच जमणतपज्जयमयवत्थुभवंविचित्तपरिणामं ठिइविभवभगरूव णिच्चाणिच्चाइतोभिमयति ॥ १ ॥ एवच सुहदुक्खवधमोक्खो उभयनयमया  
 णवत्तिणोजुत्ता एगयरपरिच्चाए सव्वब्बवहारवोच्छित्ति ॥ १ ॥ अथवा एकआत्मा कथंचिदेवेति यतो जैनानां नहि सर्वथा किंचिद्वस्तु एकमनेकं  
 चास्ति सामान्यविशेषरूपत्वाद्वस्तुनः अथ ब्रूयाद्विशेषरूपमेव वस्तु सामान्यस्यविशेषेभ्यो भेदाभेदाभ्या चिंत्यमानस्या योगात्तथाहि सामान्यं विशेषेभ्यो  
 भिन्नमभिन्नं वा स्यान्नभिन्नं सुपलंभाभावाच्चानुपलभ्यमानमपि सत्तया व्यवहर्तुं शक्यं खरविषाणस्यापि तथाप्रसंगात् अथाभिन्नमितिपक्षस्तथाच  
 सामान्यमात्रं वा स्याद्विशेषमात्रं चेति नह्येकस्मिन् सामान्यमेकं विशेषास्त्वेकारूपा इत्यसंकीर्णा वस्तुव्यवस्था स्यादिति अत्रोच्यते नह्यस्माभिः सामान्य  
 विशेषयो रेकान्तेन भेदोऽभेदोवाभ्युपगम्यते अपितु विशेषा एव प्रधानीकृताः तुल्यरूपा उपसर्जनीकृततुल्यरूपाः विषमतया प्रज्ञायमानाविशेषा व्य  
 पदिश्यन्ते तएवच विशेषा उपसर्जनीकृताः तुल्यरूपाः प्रधानीकृततुल्यरूपाः समतया प्रज्ञायमानाः सामान्यमिति व्यपदिश्यन्तइति आहच निर्विशेष

गृहीताश्च भेदाः सामान्यमुच्यते ततो विशेषात्सामान्यं विशिष्टत्वनयुज्यते ॥ १ ॥ वैषम्यसमभावेन ज्ञायमानाश्चेकिल प्रकल्पयन्तिसामान्य विशेषस्थिति  
 मात्मनीति ॥ २ ॥ तदेव सामान्यरूपेणात्मा एको विशेषरूपेण त्वनेको नचात्मनान्तुल्य रूपनास्ति एकात्मव्यतिरेकेण शेषात्मना मनात्मत्वप्रसगा  
 दिति तुल्यस्वरूप मुपयोग उपयोगलक्षणोजीवइतिवचना तदेव मुपयोगरूपैकलक्षणत्वा त्वं एवात्मानः एकरूपा. एवञ्च एकलक्षणत्वा देक आत्मेति ॥  
 अथवा जन्ममरणसुखदुःखादिसंवेदने ष्वसहायत्वा देक आत्मेति भावनीय मिति इह सर्वसूत्रेषु कथंचिदि त्यनुस्मरणीय कथंचिद्वादस्या विरोधे सर्ववस्तु  
 व्यवस्थानिबन्धनत्वात् उक्तंच स्याद्वादायनमस्तस्मै यविनासकलाः क्रिया लोकद्वितयभाविन्यो नैवसागत्यमासते ॥ १ ॥ तथा नयास्तवस्यात्पदसत्वलांकि  
 ता रसोपविद्धाश्चलोहधातवः भवन्त्यभिप्रेतफलायतस्ततो भवन्तमार्याः प्रणताहितैषिण इति ॥ २ ॥ आत्मन एकत्व मुक्तन्यायतो भ्युपगच्छद्भि रपि कैश्चि  
 त्त्रिष्वित्यत्व तस्या भ्युपगत मत स्तन्निराकरणाय तस्य क्रियावत्व मभिधित्सुः क्रियायाः करणभूत दण्डस्वरूपं प्रथमं ताव दभिधातुमाह एगेदडे एको वि  
 वक्षितविशेषत्वात् दृष्टते ज्ञानाद्यैश्वर्यापहारतो ऽसारीक्रियते आत्मा नेनेति दण्डः सच द्रव्यतो भावतश्च द्रव्यतो यष्टि र्भावतो दुःप्रयुक्त स्मनःप्रभृति ॥ तेन  
 चा त्मा क्रिया करोतीति तामाह एगाकिरिया एका अविवक्षितविशेषतया करणमात्रविवक्षणात् करणक्रिया कायिक्यादिकेति अथवा एगेदडे एगा  
 किरियन्ति सूत्रद्वयेना त्मनो ऽक्रियत्वनिरासेन सक्रियत्व माह यतो दण्डक्रियाशब्दाभ्यां त्रयोदश क्रियास्थानानि प्रतिपादितानि तचार्थदण्डानर्थदण्डहिंसा

॥ एगेदंठे एगाकिरिया ॥

माठें मने बचने कायायें दंडीये ते एकदड १। एक क्रियाके काया प्रमुखथी पापलागे ते क्रिया १ ॥

इहाकाहंउट्टिविषयसहंरूपः पंचविहीहः करमाचमहरचसचयी इहमनेनहरीत इहा जेवत्त जवसाजम्या हिति क्रियायनेनतु  
इहाहानप्रत्यवा यथात्मिकी मानप्रत्यवा मिचिहप्रत्यवा मायाप्रत्यवा सोभप्रत्यवा दिवापमिकीति अट्टविधा क्रियोत्ता तदेकत्वच करमाचसामाज्या  
ति इहमिवबोच स्वरूपविमिश्र मुपरिष्ठात् कखानएव वक्ष्याम इति अक्रियावत्वनिरासवा त्मन एव येः क्तिता क्रियावत्त्व मभ्युपगत मात्मन एव भोक्तृत्वं  
मभ्युपगत मतोभुजिक्तिवानिर्वर्त्तनसामर्थ्येति भोक्तृत्वं मुपपद्यते तदेवच क्रियावत्त्वं नामेति अत्र प्रकृतिः करोति पुष्टयसु भुंक्ते प्रतिबिंबव्याप्तेति  
तदुक्तम् अत्रचिक्तिवत्त्वमंतरैच प्रकृत्युपभोगयोगेपि प्रतिबिंबभावानुपपत्तेः प्रतिबिम्बस्य रूपान्तरपरिचयमनुरूपत्वात् अत्र प्रकृतिविकाररूपावाः पुष्टेरच  
सुखाद्यर्थप्रतिबिंबनं नात्मन स्पर्हि नास्वभोग स्तद् वक्ष्यत्वा तस्येति आचापि बहुवक्तव्य न्तु स्वानांतरादवसेय मिति ॥ उक्तरूपस्या त्मन चा  
धारस्वरूपनिरूपणावाह एगेलोएति एको अविवक्षितासंख्यप्रदेश अक्षिर्यगादिदिग्भेदतया लोक्ष्यते दृश्यते जेवलालोकेने तिलोकः धर्मास्तिकावादि  
द्रव्याधारभूत आकाशविशेष स्तदुक्तम् धर्मादीनां वृत्ति र्द्रव्याणां भवति यत्र तत् चेवं तै र्द्रव्यैः सह लोक स्तद्विपरीतं अलोकाल्पमिति अत्रवा लोको ना  
मादि रट्टधा आहच नामठवणाद्विए खेत्तेकालेभवेयभावेय पञ्जवलोएयतहा अट्टविहोलोयनिखेवोति ॥ १ ॥ नामस्थापने सुज्ञाते द्रव्यतो लोको  
जीवाजीवद्रव्यरूपः जेवतीलोक अत्रकायमात्र मनंतप्रदेशात्मकम् काललोकः समयावलिकादिः भवलोको नारकादय स्तस्मिन् २ भवेवर्त्तमानो यवाम

॥ एगेलोए ॥

॥ २ ॥ आत्माध नोक्तवृत्ति र्गर्भाधर्मास्त्रिकायोपगृहीतः सदृष्टः सक्रियश्च कर्मणावध्यत इति बन्धनिरूपणायाह [एगेबंधे] बन्धनम्बन्धः सकपायत्वात् जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानां दत्ते यत् स बन्धप्रतिभावः सच प्रकृतिस्थितिप्रदेशानुभावभेदात् चतुर्विधोपि बन्धसामान्या देकः सुतास्यसतः पुनर्बन्धाभावात् एको बन्ध इति अथवा द्रव्यतोबन्धो निगडादिभिर्भाषितः कर्मणा तयोश्च बन्धनसामान्या देकोबन्ध इति ननु बन्धो जीवकर्मणोः संयोगो ऽभिप्रेतः सत्त्वत्वादिमा नादिरहितोवा स्यादिति कल्पनात्तमं तत्र यथा दिमानिति पक्षस्तदा किं पूर्वमात्मा पश्चात् कर्म अथ पूर्वं कर्म पश्चादात्मा उत युगपत्कार्गत्मानो सम्प्रसूयेतामिति चयोविकल्पाः तत्र न तावत् पूर्वमात्मसंभूतिः सम्भाव्यते निर्हेतुकत्वात् खरविषाणयत् प्रकारणप्रसूतस्य वा ऽकारणत एवोपरमः स्यादद्या नादिरेवात्मा तथाप्यकारणत्वात् तस्य कर्मणो योग उपपद्यते नभोवत् अथाकारणेपि कर्मणो योग स्यात्तर्हि स सुतास्यापि स्यादिति प्रश्ना सा वात्मा नित्य सुताएव तर्हि किं योज्जिज्ञासया बन्धाभावेच सुताव्यपदेशाभाव एवाकाशवदिति नापि कर्मणः प्राक् प्रभूति रिति द्वितीयोपि कल्पः सङ्गच्छते कर्तुरभावात् नच क्रियमाणस्य कर्मव्यपदेशो भिन्नतः प्रकारणप्रसूते सा कारणत एवोपरमः स्यादिति युगपदुत्पत्तिस्त्वच्छान्तृतीयपक्षोपि नचमो ऽकारणत्वादेव नच युगपदुत्पत्तौ सत्या मय कर्त्ता कर्मद मिति व्यपदेशो युक्तरूपः सख्येपर गोविषाणवदिति अथादिरहितो जीवकर्मयोग इति पक्षस्ततश्च नादित्वादेव नात्मकर्मविधोगः स्यादात्माकाशसंयोगवदिति अनीच्यते आदिभूतसंयोगपक्षदोषाः अनभ्युपगमादेव गिरस्ताः यच्चादिरहितजीव

॥ एगेबंधे ॥

बंध एकस्मै कर्मरूपकपासयो बंधाये ॥

कर्मयोगो ऽभिधीयते अनादित्वा आत्मकर्मवियोग इति तदयुक्त मनादित्वेपि संयोगस्य वियोगोपलब्धेः कांचनोपलयोरिवेति यदाह जह्वेहकंचणोयल  
सजोगोणादिसतद्गओवि वोच्छिज्जइवोवायं तहजोगोजीवकम्माणति ॥ १ ॥ तथा अनादेरपिसन्तानस्य विनाशो दृष्टो बीजांकुरसन्तानवत् आह च अ  
नतरमणिव्वत्तिय कज्जवीयतराणिजविहियं तत्थहओसताणोक्कुडिअंडाइयाणवत्ति ॥ १ ॥ अनादिबन्धसद्भावेपि भव्यात्मनः कस्यचि न्मोक्षो भवतीति मो  
क्षस्वरूपमाह ॥ [एगेमोक्खे] मोचन कर्मपाशवियोजनं मात्मनो मोक्षः आह च कृतस्त्रकर्मक्षया न्मोक्षः । सचैको ज्ञानावरणादिकर्मापेक्षया ऽष्टविधोपि मोच  
नसामान्यात् मुक्तस्य वा पुन मोक्षाभावात् ईषत्प्राग्भाराख्यक्षेत्रलक्षणो वा द्रव्यार्थतयैकः अथवा द्रव्यतो मोक्षो निगडादितो भावतः कर्मत स्तयोश्च मोच  
नसामान्या देकोमोक्ष इति नन्वपर्यवसानो जीवकर्मसंयोगो नादित्वा जीवाकाशसंयोगव दिति कथ न्मोक्षस्तम्भव कर्मवियोगरूपत्वा दया नोच्यते अनादि  
त्वादित्यनैकांतिको हेतुः धातुकांचनसंयोगो ह्यनादिः सच सपर्यवसानो दृष्टः क्रियाविशेषादेवमय मपि जीवकर्मयोगः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र्यैः सपर्यवसा  
नो भविष्यति जीवकर्मवियोगश्च मोक्ष उच्यत इति ननु नारकादिपर्यायस्वभावः संसारो नान्यः तेभ्यश्च नारकत्वादिपर्यायेभ्यो भिन्नो नाम न कश्चि जीवो  
नारकादय एव पर्याया जीवाः तदनर्थान्तरत्वा दिति संसाराभावे जीवाभाव एव नारकादिपर्यायस्वरूपव दित्यसत् पदार्थो मोक्ष इति आह च जंनारगा  
दिभावो संसारो नारगा इभिन्नो य को जीवो तमन्नसि तस्मासे जीवनासोत्ति ॥ १ ॥ अत्र प्रतिविधीयते यदुक्तं नारकादिपर्यायसंसाराभावे सर्वथा जीवा

॥ एगेमोक्खे ॥

एक मोक्षे सकल कर्मक्षयरूप ॥



भायएवा नर्थान्तरत्वा न्नारकादिपर्यायस्वरूपं दिति अय मनैकांतिकोहेतुः हेम्नो मुद्रिकायाश्चा नर्थान्तरत्वंसिद्धं नच मुद्रिकाकारविनाशे हेमविनाश इति तद्वन्नारकादिपर्यायमात्रनाशे सर्वथा जीवनाशो नभविष्यतीति आहच नहिनारकादिपञ्जायमेतन्नासमिसव्वहानासो जीवदव्वस्समओ मुद्धानासेव्वहेम स्सत्ति ॥ १ ॥ अपिच कम्मकओससारो तन्नासेतस्सजुज्जएनासो जीवत्तमकम्मकय तन्नासेतस्सकोनासोत्ति ॥ १ ॥ मोक्षश्च पुण्यपापक्षया द्ववतीति पुण्यपा पयोः स्वरूपं वाच्यं नतत्रापि मोक्षस्य पुण्यस्यच शुभस्वरूपसाधर्म्यात् पुण्यं तावदाह [एगेपुण्ये] पुण्यशुभे इतिवचनात् पुण्यतिशुभीकरोति पुनातिवा पवित्रौ करोत्यात्मानमिति पुण्य शुभकर्मसद्देयादिविचत्वारिंशद्विधं यथोक्तं सायं १ उच्चागोय २ नरतिरिदेवाउ ५ नामएयाउ मणयदुगं ७ देवदुगं ८ पंचिदियजाइ १० तणपणग १५ ॥ १ ॥ अगोवंगतियपिय १ ८ सघयणं वज्जरिसहनाराय १० पढमचियसठाणं वन्नाइचउक्कसुपसत्थ २४ ॥ २ ॥ अगुरुलहु २५ पराघाय २६ उस्सास २७ आयवच २८ उज्जोयं २९ सुपसत्थाविहयगई ३० तसाइदसगच ४० णिन्नाण ४१ ॥ ३ ॥ तित्थयेणसहिया वायालापुन्नपगईओत्ति ॥ ४ ॥ एव विचत्वारिंश द्विधमपि अथवा पुण्यानुबन्धिपापानुबन्धिभेदेन द्विविधमपि अथवा प्रतिप्राणिविचित्रत्वा दनन्तभेदमपि पुण्यसामान्यादेकमिति अथ कर्मैव नविद्यते प्र माणगोचरातिक्रान्तत्वात् शशविषाणवदिति कुतः पुण्यकर्मसत्तेति असत्यं मेत द्यतो नुमानसिद्धं कर्मं तथाहि सुखदुःखानुभूते हेतु रस्ति कार्यत्वा दकुरस्येव वीज यस्य हेतुत्वं नतत्कर्मं तस्मादस्ति कर्ममिति स्यान्नतिः सुखदुःखानुभूते ईदृशेव हेतु रिष्टानिष्टविषयप्राप्तिमयो भविष्यति किमिह कर्मपरिकल्पनया नहि

॥ एगेपुम्मे ॥

युन्य एकके शुभकर्म ४२ प्रकृति रूप ॥

दृष्टं निमित्तमपास्य निमित्तान्तरान्वेषण युक्तरूप मिति नैवव्यभिचारात् इह योहि द्वयो रिष्टशब्दादिविषयसुखसाधनसमेतयोरेकस्य तत्फलेविशेषो दुः  
खानुभूतिमयो यश्चा निष्टसाधनसमेतयोरेकस्य तत्फलेविशेषः सुखानुभूतिमयो नासौहेतुमंतरेण सम्भाव्यते नच तद्धेतुक एवा सौ युक्तः साधनानां विषयां  
सादिति पारिशेष्या द्विशिष्टहेतुमानसौ कार्यत्वा दृष्टवत् यद्य समानसाधनसमेतयो स्तत्फलविशेषहेतुस्तत्कार्म तस्मा दस्तिकर्मेति आहच जीतुलसाहणा  
ण फलेविसेसोनसोविणाहेड कज्जत्तणओगोयम घडोव्वहेऊयसेकम्मति ॥ १ ॥ किच अन्यदेहपूर्वक मिदं बालशरीर इन्द्रियादिमत्वात् यदि हेंद्रियादिम  
त्तदन्यदेहपूर्वक दृष्ट यथा बालदेहपूर्वक युवशरीरमिन्द्रियादिमच्चेद बालशरीरक तस्मादन्यशरीरपूर्वक यच्छरीरपूर्वकं चेद बालकशरीरं तत्कार्म तस्मा द  
स्ति कर्मेति आहच बालशरीरदेह तरपुव्वइदियाइमत्ताओ जहबालदेहपुव्वो जुवदेहोपुव्वमिहकम्मति ॥ १ ॥ ननुकर्मसङ्गावेपि पापमेवैक विद्यते  
पदार्थो नपुण्यनामास्ति यत्तुपुण्यफल सुखमुच्यते तत्पापस्यैव तरतमयोगादपक्वष्टस्य फल यतः पापस्यपरमोक्त्वैषं त्यताधमफलता तस्यैव तरतमयोगा पकर्ष  
भिन्नस्य मात्रापरिहृदिहान्या यावत् प्रकृष्टापकर्षं स्तत्र या काचित् पापमात्रा अवतिष्ठते तस्या मत्यतशुभफलता पापापकर्षां तस्यैव पापस्य सर्वात्मना  
क्षयो मोक्षः यथा त्यंतापथ्याहारसेवना दनारोग्य तस्यैवापथ्यस्य किंचित्किंचिदपकर्षाद्यावत् स्तोकापथ्याहारत्व मारोग्यकर सर्वाहारपरित्यागाच्च प्राण  
मोक्षइति आहच पावुक्करिसेधमया तरतमजोगावकरिसवोसुभया तस्सेवखण्णमोक्खो अपत्यभत्तोवमाणाओत्ति ॥ १ ॥ अत्रोच्यते यदुक्त मत्यंतापचितात्  
पापात् सुखप्रकर्ष इति तदयुक्त यतो येय सुखप्रकर्षानुभूतिः सा खानुरूपकर्मप्रकर्षजनिता प्रकर्षानुभूतित्वात् दुःखप्रकर्षानुभूतिवत् यथाहि दुःखप्रकर्षां  
नुभूतिः खानुरूपपापकर्मप्रकर्षजनिते तित्वया भ्युपगम्यते तथेयमपि सुखप्रकर्षानुभूतिरिति खानुरूपपुण्यकर्मप्रकर्षजनिता भविष्यतीति प्रमाणफलमिति  
पुण्यप्रतिपक्षभूत पापमिति तत्स्वरूपमाह [एगेपावे] पाशयतिगुडयत्यात्मानपातयति चात्मन आनन्दरसशोषयति क्षपयतीति पाप तच्च ज्ञानावरणादिद्वय

शीतिभेदं यदाह नाणंतरायदसगं १० दंसणव १८ मोहनीयकृब्बीसं ४५ अस्त्रायं ४६ निरयाउ ४७ नीयागोएणअडयाला ४८ ॥ १ ॥ निरयदुग २ तिरि  
 यदुग ४ जाइचउक्कं च पचसवयणा १३ सठाणावियपचउ १५ वन्नाइचउक्कमएसत्थ २२ ॥ २ ॥ उवघाय २३ कुविहयगई २४ थावरदसगेणहीतिचोत्तीस ३४  
 सव्वावोमिलियाओ बासीईपावपगईओ ८२ ॥ ३ ॥ तदेव ह्यशीतिभेदमपि पुण्यानुबन्धिभेदा द्विभेदमपि वा अनन्तसत्त्वाश्रितत्वादनन्तमपि वा शुभसामा  
 न्यादेक मिति ननु कर्मसत्त्वेपि पुण्यमेवैक इक्ष्मनतत्प्रतिपक्षभूत म्याप इक्ष्मास्ति शुभाशुभफलाना पुण्यादेव सिद्धे रिति तथाहि यत्परमप्रकष्टं शुभफल मे  
 तत्पुण्योत्कर्षस्य कार्यं यत्पुन स्तस्मादवकष्टं भवकष्टतर भवकृष्टतमज्ञ तत्पुण्यस्यैव तरतमयोगापकर्षभिन्नस्य यावत्परमप्रकर्षज्ञानिः परमप्रकर्षहीनस्य च  
 पुण्यस्य परमावकृष्टतमं शुभफल या काचित् शुभमात्रेत्यर्थः दुःखप्रकर्षइति तात्पर्यं न्तस्यैवच परमावकष्टपुण्यस्य सर्वात्मना क्षये पुण्यात्मकबन्धाभावा न्नो  
 चइति यथा त्यतपथ्याहारसेवनात्पुनः परमारोग्यसुखं तस्यैवच किञ्चित् २ पथ्याहारविवर्जना दपथ्याहारपरिवृद्धे रारोग्यसुखज्ञानिः सर्वथैवाहारपरिव  
 र्जना काणमोच इति पथ्याहारोपमानचेह पुण्यमिति अनोच्यते येय दुःखप्रकर्षानुभूतिः सा स्वानुरूपकर्मप्रकर्षाभवा प्रकर्षानुभूतित्वा त्त्वौख्यप्रकर्षानुभूति  
 वत् यथाहि सौख्यप्रकर्षानुभूतिः स्वानुरूपपुण्यकर्मप्रकर्षजनितेति त्वया श्रुपगम्यते तथेयमपि दुःखप्रकर्षानुभूतिः स्वानुरूपपापकर्मप्रकर्षजनिता भविष्यती  
 ति प्रमाणफल मिति आह च कम्मपगारिसजणिय तदवस्संपगारिसाणुभूईओ सोक्खपगारिसभूइ जहपुनपगारिसप्पभवन्ति ॥ १ ॥ तदिति दुःखमिति ॥ इ

## ॥ एगेपावे ॥

पाप एकछे अशुभ ८२ कर्म प्रकृति रूप ॥

दानो मनन्तरोक्तयोः पुण्यपापकर्मणो बन्धकारणनिरूपणायाह [एगेआसवे] आयवन्ति प्रविसति येन कर्माण्यात्मनीति आयव. कर्मवन्धहेतु रितिभावः  
सचेन्द्रियकषाया ऽत्रतक्रियायोगरूपक्रमेण पञ्च चतुः पच पचविगति त्रि भेदः उक्तञ्च इन्द्रिय ५ कसाय ४ अव्यय ५ किरिया २५ पणचउग्रपचपणवीसा  
जोगातिस्त्रेवभवे आसवभेयाउवायालत्ति ॥ १ ॥ तदेव मय द्विचत्वारिणद्विधो अथवा द्विविधो द्रव्यभावभेदा तत्र द्रव्यायवो यज्जलांतर्गतनावादी तथा  
विधपरिणामेनच्छिद्रैर्जलप्रवेशन आवायव सु यज्जीवानाम्यच्चेन्द्रियादिच्छिद्रत, कर्मजलसञ्चय इति सत्वायवसामान्या देकएवेति ॥ अथायवप्रतिपन्नभूत  
सवरस्वरूपमाह [एगेसवरे] सत्रियते कर्म कारण आणातिपातादिनिरुध्यते येन परिणामेन स सवरः आयवनिरोध इत्यर्थः. सच समितिगुतिधर्मानुपेक्षा  
परीषहचारित्र रूपः क्रमेण पंच त्रि द्वा द्वाविगति पच भेदः आहच समिद्वे ५ गुत्ती ३ धम्मी १० अणुपेह १२ परीसहा २२ चरित्तच ५ सत्ता  
वन्नभेया पणतिगभेयाइसंवरणेत्ति ॥ १ ॥ अथवा यदिधा द्रव्यतो भावतय तत्र द्रव्यतो जलमध्यगतनावादे रनवरतप्रविशज्जलानां छिन्नाणा न्तथाविधद्रव्ये  
ण स्थगन संवरः भावतसु जीवद्रोण्या मायवक्कर्मजलाना मिन्द्रियादिच्छिद्राणा समित्यादिना निरोधन सवर इति सच छिन्निधोपि सवरसामान्या देक  
इति सम्वरविशेषेवा योग्यवस्यारूपे कर्माणा स्वेदनैव भवति नवन्ध इति वेदनात्तरूपमाह [एगावेयणा] वेदनवेदना स्वभावेनो दीरणाकरणेन चोदया  
वल्लिकाप्रविष्टस्य कर्मणो अनुभवन मितिभावः साचज्ञानावरणीयादिकर्मापेक्षया अष्टविधापि विपाकोदयप्रदेशोदयापेक्षया द्विविधापि अभ्युपगमिकी

॥ एगेआसवे एगेसंवरे एगावेयणा ॥

एक आयव जेणे कर्म वधाये ते ४२ भेटेके नव तत्त्व मांछे । एक संवरके जेणे पापयी रूधीये ५७ भेटेके । एक वेदना के आठ कर्मनु भोगविवो जीवने ॥

॥ शिरोलोचादिका औपक्रमिकी रोगादिजनिते त्वेवञ्च द्विविधापि वेदना सामान्यादेकैवेति अनुभूतरसकर्म प्रदेशेभ्यः परिश्रुतीति वेदनानन्तरं कर्मप  
रिश्रुतरूपा निर्जरां निरूपयन्नाह [एगाणिज्जरा] निर्जरणनिर्जरा विशरण परिश्रुतमित्यर्थः साचाष्टविधकर्मोपेक्षया ऽष्टविधापि द्वादशविधतपोज  
नितत्वेनच द्वादशविधापि अकामचुत्पिपासाशीतातपदशमशकसहनब्रह्मचर्यधारणाद्यनेकविधकारणजनितत्वेना ऽनेकविधापि द्रव्यतो वस्त्रादे भावत.  
कर्मणा मेव द्विविधापि वा निर्जरा सामान्या देकैवेति ननु निर्जरामोक्षयोः कः प्रतिविशेष उच्यते देशतः कर्मक्षयोनिर्जरा सर्वतस्तु मोक्ष इति इहच  
जोवो विशिष्टनिर्जराभाजन अत्येकशरीरावस्थाया मेव भवति नसाधारणशरीरावस्थाया मतः प्रत्येकशरीरावस्थस्य जीवस्य स्वरूपनिरूपणायाह [एगेजीवे  
इत्यादि] अथवा उक्ताः सामान्यतः प्रस्तुतशास्त्रव्युत्पादनीया जीवादयो नव पदार्थाः साम्प्रत जीवपदार्थं विश्लेषेण प्ररूपयन्नाह ॥ [एगेजीवेपाडिक्कणस  
रीरण] एकः केवलः जीवितवान् जीवति जीविष्यति चेति जीवः प्राणधारणधर्मा त्वेत्यर्थः एक जीव अतिगत यच्छरीर अत्येकशरीरनामकर्मोदया तत्र  
त्येक न्तदेवप्रत्येकक दीर्घत्वादिप्राकृतत्वा तेनप्रत्येककेन शीर्यत इति शरीर न्देह स्तदेवानुकम्पितादिधर्मोपेत शरीरक न्तेन लक्षितं तदाश्रित्य एको जीव  
इत्यर्थः अथवा एकारौ वाक्यालङ्कारार्थौ तत एको जीवः प्रत्येकके शरीरे वर्तत इतिवाक्यार्थः स्यादिति इहच पाडिलक्षणेण क्वचित्पाठोदृश्यते सच नव्या  
ख्यातो ऽनवबोधा दिहच वाचनाना मनियतत्वात् सर्वासा व्याख्यातु मशक्यत्वा क्वाचिदेव वाचना व्याख्यास्याम इति इह बन्धमोक्षादय आत्मधर्मा अन

॥ एगाणिज्जरा एगेजीवे पाडिक्कणं सरीरणं ॥

एक निर्जरा कर्मनो सोधविवो १२ भेदे तपे करीने । एक जीव प्राणधारी प्रत्येकशरीरनो धरणहार । इहा साधारणशरीरी जीव न लेवो कर्म निर्जरा

न्तर सुक्तास्तुत स्तदधिकारादेवा तःपर मात्मधर्मान् एगाजीवाणमित्यादिना एगेचरित्ते इत्येतदन्तेन ग्रन्थेनाह ॥ एगाजीवाण अपरियाइत्ताविगुव्वणा ॥  
 एगाजीवाणति प्रतीतं अपरियाइत्तत्ति अपर्यादाय परितःसमन्ता दग्ढहीत्वा वैक्रियसमुद्घातेन बाह्यान् पुद्गलान् या विकुर्वणा भवधारणीयवैक्रियशरीर  
 रचनालक्षणा स्वस्मिस्वस्मिद्रुत्पत्तिस्थाने जीवैः क्रियते साएकैव प्रत्येक मेकत्वा इवधारणीयस्येति सकलवैक्रियशरीर्यपेक्षयावा भवधारणीयस्यै कलक्षणत्वात्  
 कथंचिदिति या पुन वाह्यपुद्गलपर्यादानपूर्विका सोत्तरवैक्रियरचनलक्षणा साच चित्रा निप्रायपूर्वकत्वा द्वैक्रियलब्धिमत् स्थाविधशक्तिमत्वा चैकजीवस्था  
 प्यनेकास्या दिति पर्यवसित मथ बाह्यपुद्गलोपादानएवोत्तरवैक्रिय अवतीति कुतोऽवसीयते येनेह सूत्रे अपरियाइत्ता इत्यनेन तद्विकुर्वणा व्यवच्छिद्यते  
 इतिचे दुच्यते भगवतीवचना तथाहि देवेणभंतेमहड्ठिए जाव महाणुभागे बाहिरणपुगले अपरियाइत्ता पभूएगवन्नएगरूव विउव्वित्तए गो० नोद्वणमडेस  
 मडेदेवेणभते बाहिरण पोगले परियाइत्ता पभूहतापभूत्ति इहहिउत्तरवैक्रिय बाह्यपुद्गला दानाइवतीति विवक्षितमिति ॥ एगेमणेत्ति ॥ मननमनः औ  
 दारिकादिशरीरव्यापाराहतमनोद्रव्यसमूहसाचिव्याज्जीवव्यापारो मनोयोग इतिभावः मन्यतेवा अनेनेति मनो मनोद्रव्यमात्र मेवेति तच्च सत्यादिभेदा  
 दनेक मपि सज्जिना वा असख्यातभेद मप्येकमननलक्षणत्वेन सर्वमनसा मेकत्वादिति ॥ एगावयौत्ति ॥ वचनम्वाक् औदारिकवैक्रियाहारकशरीरव्यापारा  
 हतवाग्द्रव्यसमूहसाचिव्याज्जीवव्यापारो वाग्योग इतिभावः इयच सत्यादिभेदादनेका प्येकैव सर्ववाचा वचनसामान्येत्तर्भावादिति ॥ एगेकायवायामेत्ति

॥ एगाजीवाणं अपरियाइत्ताविगुव्वणा एगेमणे एगावयी एगेकायवायामे ॥

जीवने विकुर्वणा एकछे । देवता आश्री बाह्यपुद्गल गृह्या विना देवता भवधारणीय बांधे ते प्रत्येके एकज बांधे घणानथी । मनरूपयोग एकछे । वचन यी

कायगतइति शरीरं न्तस्य व्यायामो व्यापारः कायव्यायामः शरीरिकादिशरीरयुक्तस्यात्मनो जीर्यपरिणामेति शेष इति भावः स पुन शरीरिकादिशे  
 देन सप्तप्रकारोपि जीवानन्तत्वेनानन्तभेदोपि वा एकएव कायव्यायामसामान्यादिति यच्च कस्यैकदा मनः प्रभृतीनां मेकत्वं न्तत् सप्तपञ्च विभेदेण वदति  
 एगमणे देवासुरे ॥ त्यादिनेति सामान्याथय मेवेहैकत्वं व्याख्यातमिति ॥ उप्पत्ति ॥ प्राकृतत्वादुत्पादः सचैकसमये एवपर्यायापेक्षया नहि तस्ययुगपदुत्पा  
 ददयादि रस्ति प्रनपेक्षिततन्निशेषकपदार्थतया चैको साविति ॥ नियइत्ति ॥ विगति र्गितः साचेका उत्पादवदिति विकृति र्वितति रित्यादिश्याख्यांत  
 रमप्युचित मायोज्य मरमाभिस्तूत्पादसूचानुगुणतोव्याख्यातमिति ॥ नियइत्ति ॥ विगतेः प्रागुत्तत्वा दिहविगतस्य विगमवतो जीवस्य मृतस्येत्यर्थः अत्र  
 शरीरं विगतार्चा प्राकृतत्वादिति विचर्चानां विशिष्टोपपत्ति पठति र्विशिष्टभूषावा साचेका सामान्यादिति ॥ गइत्ति ॥ मरणानन्तरं मनुजत्वादेः सकाशा  
 चारकत्वादी जीवस्य गमन इति साचेकादेकस्यैकैव नरज्वादिका नरकगत्यादिका वा पुद्गलस्य वा स्थितिर्वैलक्षण्यमात्रतया चैकतयैकस्वरूपा सर्वजीवपुद्गलानां  
 मिति ॥ आगइत्ति ॥ आगमनमागति र्नारकत्वादेरेव प्रतिनिवृत्तिः तदेकत्वं गतेरिवेति ॥ चयणेत्ति ॥ व्युतिश्चयनं वैमानिकज्योतिष्काणां मरणं न्तरेक

एगाउप्पा एगावियती एगावियच्चा एगागती एगाञ्जागती एगेचयणे एगेउववाए एगातक्का एगासन्ना ए

ग एकछे । कायानो व्यापार एकछे यद्यपि शरीरिकादि ७ भेदेछे पणि सर्वते काया शब्दमा आख्या । उपजवो एकछे एक समये एकज । विगति ते वि  
 नाश एकछे । जीवो शरीर एकछे पर भवे उपजतां वैक्रिय तथा शरीरिका । गती एकछे मनुष्यमाथी नरकादिके जायानी । एक आगतिके नरका

मेकजीवापेक्षया नानाजीवापेक्षयाच पूर्ववदिति ॥ उववाएत्ति ॥ उपपतनमुपपातो देवनारकाणां जन्म सचैक श्यवनवदिति ॥ तक्कत्ति ॥ तर्कणतर्कोवि  
मर्थः अपायात्पूर्वा इहायाउत्तराः प्रायः शिरःकण्डूयनादयः पुरुषधर्मा इहघटन्तइति सम्प्रत्ययरूपा इहचैकत्वन्तु प्रागिवेति ॥ सन्नत्ति ॥ सज्ज्ञानसज्ज्ञा व्यञ्जनाव  
ग्रहोत्तरकालभवो मतिविशेषः आहारभयाद्युपाधिका वा ज्ञेयतासंज्ञा ॥ अभिधानम्वा सज्ज्ञेति ॥ मन्नत्ति ॥ प्राकृतत्वा न्नननम्भतिः कथचिदर्थपरिच्छित्तावपि  
सूक्ष्मधर्मालोचनरूपा बुद्धिरितियावत् आलोचनमितिकेचित् अथवा मन्नामन्नियव्य अश्रुपगमइत्यर्थः सूत्रद्वयेपि सामान्यत एकत्वमिति ॥ एगाविन्नत्ति ॥  
विद्वान् विज्ञोवा तुल्यबोधत्वादेकइति स्त्रोलिगत्वचप्राकृतत्वात् उत्पाद उपावत् लुपभावप्रत्ययत्वाद्वा एकाविद्वत्ता विज्ञताचेत्यर्थः ॥ वेयणत्ति ॥  
प्राग्वेदनासामान्यकर्मानुभवलक्षणात्ता इहतुपोडालक्षणैव साचसामान्यत एकैवेति ॥ अस्याएव कारणविशेषनिरूपणायाह ॥ छेयणेत्ति ॥ छेदन शरी  
रस्यान्यस्यवाखज्जादिनेति ॥ भेयणेत्ति ॥ भेदन कुंतादिना अथवा छेदन कर्मणः स्थितिघातः भेदनंतु रसघातः इत्येकताच विशेषाविवक्षणादिति वेदनादि  
भ्यश्च मरण मत स्तद्विशेषमाह ॥ एगेमरणेत्यादि ॥ मृतिर्मरण अतेभव मतिम चरम तच्च तच्छरीरचे त्यन्तिमशरीर तत्र भवाअन्तिमशरीरिकी उत्तरपद  
वृद्धि स्तद्वा तेषामस्तीति अतिमशरीरिका दीर्घत्वंच प्राकृतशैल्या तेषा चरमदेहानां मरणैकताच सिद्धत्वे पुन मरणाभावादिति ॥ अतिमशरीरश्च

गामन्ना एगाविन्नू एगावेयणा एगेत्तेयणे एगेत्तेयणे एगेमरणे अन्तिमशरीरियाणं एगेसंश्रुष्टे अहाभूते पत्ते

दिकमांथी मनुष्यमां आविवी । एक चवनछे देवतानो मरण । एक उपपातछे देवता नारकीनो जन्म । एक वितर्कछे । एक सज्ज्ञाछे । एक मति छे  
सूक्ष्मार्थ विचारवानी बुद्धि । एक पंडित पणोछे । १ पौडा प्रमुख वेदनाछे । १ छेदनछे खज्जादिके शरीरनो । १ भेदनछे भालादिके करी । मरण एकछे



स्नातकोभूत्वा म्रियते अतस्तमाह ॥ एगेसंसुहेइत्यादि ॥ एकः संशुद्धो अशयलचरणो अकषायत्वात् यथाभूतस्तात्त्विकः पात्रमिव पात्रमतिशयवत् ज्ञाना-  
 दिगुणरत्नानांप्राप्तो वा गुणप्रकर्षमिति गम्यते ॥ एगेदुःखे ॥ एकमेयांतिमभवग्रहणसम्भवं दुःखं यस्य स एकदुःख एगेअखेति पाठांतरे त्वेकधैवा ख्या संशुद्धा-  
 दिर्व्यपदेशो यस्य नत्वसंशुद्धसंशुद्धासंशुद्धइत्यादिकोपि व्यपदेशांतरनिमित्तस्य कषायादेरभावादिति सभवत्वेकधाख्य एकधा अचोया जीवो यस्य स  
 तथेति जीवानां प्राणिनामेकभूत एकद्रवात्मोपम इत्यर्थः एकांतहितवृत्तित्वा देकत्वचास्य बहूनामपि समस्वभावत्वादिति अथवा ॥ पत्तेइत्यादिसूत्रान्तरं ॥  
 उक्तरूपसंशुद्धादन्येषां स्वरूपप्रतिपादनापरं तत्र प्राकृतत्वात् प्रत्येकमेकदुःखप्रत्येकैकदुःखजीवानां स्वकृतकर्मफलभोगित्वात् किंभूतं तदित्याह ए-  
 कभूतमनन्यतयाव्यवस्थितप्राणिषु न सांख्यानमिव बाह्यमिति ॥ दुःखपुनरधर्माभिनिवेशादिति तत्स्वरूपमाह ॥ एगाअहमेत्यादि ॥ धारयति दुर्ग-  
 ती प्रपततो जीवान् धारयतिसुगती वा तान्स्थापयतीति धर्मः उक्ताच्च दुर्गतिप्रसृतान्जन्तून् यस्माद्धारयतेततः धत्तेचैतान् शुभेस्थाने तस्माद्धर्मइति स्मृ-  
 तः ॥ १ ॥ सचश्रुतचारित्र्यलक्षणस्तत्प्रतिपक्षस्वधर्मस्तद्विषया प्रतिमा प्रतिज्ञा अधर्मप्रधानंशरीरवा अधर्मप्रतिमा साचैकासर्वस्याः परिक्लेशकारणत-  
 येकरूपत्वादतएवाह ॥ जसेइत्यादि ॥ यत् यस्मात् से तस्याः स्वाम्यात्मा जीवो अथवा सेति सोऽधर्मप्रतिमावानात्मा परिक्लिश्यते रोगादिभिर्बाध्यते

एगेदुःखे जीवाणं एगेनूते एगाअहम्मपदिमा जंसेअयापरिकिलेसति एगाधम्मपदिमा जंसेअयापज्जावज्जाए

छेहला शरीरनो मुंक्वो तेभवेजमोक्ष । १ शुद्धचारित्र्यो तत्त्वनो जाण केवली तीर्थकर । तेहीज उत्तम पात्र । एकदुःखे छेहला शरीरी जीवने तेही  
 भवे मोक्ष जाय तेमाटे । सर्वजीवनो आत्मारूपस्वभावा १ छे । पापरूप अधर्मनो करणहार शरीर १ छे । जे अधर्मयो आत्मा क्लेश पावे दुःख भोगे ।

संक्षिप्तत इत्यर्थः जंसीतिपाठात्तरन्वा ततश्च प्राकृतत्वेन लिङ्गव्यत्ययात् यस्या मधर्मप्रतिमायां सत्यात्मा परिक्षिप्यते सा एकैवेति एतद्विपर्ययमाह  
 एगाधमेत्यादि ॥ प्राग्व अवर म्यर्थावा ज्ञानादिविशेषा जाता यस्यस पर्यवजातो भवतीतिशेषः विशुद्धातीत्यर्थः आहिताग्न्यादित्वाच्च जातशब्दस्योत्तरपद  
 त्वमिति अथवा पर्यवान् पर्यवेषु वा यातः प्राप्तः पर्यवयातो ऽथवा पर्यवः परिरक्षा परिरक्षणं स्वा शेषन्तथैवेति धर्माधर्मप्रतिमेव योगत्रयाद्भवत इति त  
 त्स्वरूपमाह ॥ एगेमणेइत्यादिसूत्रत्रय ॥ तत्र मनइति मनोयोगः तच्च यस्मिन् यस्मिन् समये विचार्यते तस्मिन् २ समये कालविशेषे एकमेव वीप्सानिर्देशेन न  
 कचनापिसमये तत्त्वादिस्वरूपसम्भवतीत्याह एकत्वञ्च तस्यै कोपयोगत्वात् जीवानां स्यादेतत् नैकोपयोगो जीवानां युगपच्छोतोष्णस्पर्शविषयसवेदनद्वयद  
 र्शना तथाविधभिन्नविषयोपयोगपुरुषद्वयवत् अत्रोच्यते यदिद शीतोष्णोपयोगद्वय तत्स्वरूपेण भिन्नकालमपि समयमनसो रतिसूक्ष्मतया युगपदिव प्रती  
 यते नपुन स्तद्युगपदेवेति आहच समयातिसुहुमयाओ मन्नसिजुगवंचभिन्नकालपि उष्णलदलसयवेह वज्रहवनमलाद्रचक्ववत्ति ॥ १ ॥ यदिपुन रेकत्वो  
 पयुक्त मनो ऽर्थान्तरमपि सवेदयति तदा कि मन्यत्र गतचेताः पुरोवस्थितं हस्तिनमपि नविषयीकरोतीति आहच अन्नहणिउत्तमन्न विणिओगलहद्रज  
 इमणोतेण हत्थिपिठियपुरओ किमन्नचित्तोनलक्खेइ ॥ १ ॥ इह बहुवक्तव्यमस्ति तत्तुस्थानान्तरादवसेयमिति अथवा सत्यासत्योभयस्वभावानुभयरूपा

एगेमणे देवासुरमणुष्माणं तंसितसिसमयंसि एगावयी देवासुरमणुष्माणं तंसितंसिसमयंसि एगेकायवायामे

धर्मनो शरीर १ के जेणे शरीरे धर्म करिये ते । जेणे धर्म आत्मा ज्ञानादिगुण पायें सुखी थाय । १ मननो योगके शुभ तथा अशुभ । देवता विमानवा  
 सी असुर भवनपती व्यतर ने मनुष्यने होय । तेणे तेणे समये । १ वचनयोग देवता असुर मनुष्यने । १ समये बे भाषान बोलाये १ भाषा बोलाये । तेणे

णां चतुर्णां मनोयोगानां मन्यतरएव भवत्येकदा ह्यादीनां विरोधेनासम्भवा दिति केषामित्याह ॥ देवासुरमणुयाणति ॥ तत्र दीव्यतीति देवा वैमा-  
 निकज्योतिष्का स्तेच न सुराअसुरा भवनपतिव्यतरा स्तेच मनोजाता मनुजा मनुष्या स्तेच देवासुरमनुजा स्तेषां तथा ॥ वागिति ॥ वाग्योगः सचैषामेक-  
 दा एकएव तथाविधमनोयोगपूर्वकत्वा तथाविधवाग्योगस्य सत्यादीनां मन्यतरभावाद्वा वक्ष्यतिच क्वहिठाणैहिण्यि जीवाण इद्दुद्वाजावपणिकमेद्वा-  
 त जीववाअजीव करणयाए अजीवजाजीवकरणयाए एग समएण दोभासाओ भासत्तिएत्ति तथा कायव्यायामः काययोग' सचैषामेकदा एकएव स-  
 तानां काययोगानामेकदा एकतरस्येव भावात् ननु यदाहारकप्रयोक्ता भवति तदौ दारिकस्या वस्थितस्य श्रूयमाणत्वात् कथमेकदा न काययोगद्वयमि-  
 त्यत्रोच्यते सतो षोडारिकस्य व्यायामाभावाद्दाहारकस्येव च तत्र व्याप्रियमाणत्वा दप्यौदारिकमपिव्याप्रियते तर्हि मिश्रयोगता भविष्यति केवल-  
 ससुद्धाते सप्तमषष्ठद्वितीयसमये षोडारिकमिश्रव तथा चाहारकप्रयोक्ता नलभ्येतैवच सप्तविधकाययोगप्रतिपादनमनर्थकस्यादित्येकएव कायव्या-  
 याम इत्येव कृतवैक्रियशरीरस्य चक्रवर्त्यादे रप्यौदारिक निर्व्यापारमेव व्यापारवत्वाच्चे दुभयस्य व्यापारवत्वे केवलिसमुद्धातव मिश्रयोगतेत्येव मध्येकयो-  
 गत्वमव्याहृतमेवेति तथाकाययोगस्याप्यौदारिकतया वैक्रियतयाच क्रमेण व्याप्रियमाणत्वे आशुवृत्तितया मनोयोगवद्यदियोगपद्यभ्रातिः स्यात्तदाको-  
 दोष इति एवच काययोगैकत्वे सत्यौदारिकादिकाययोगाहृतमनोद्रव्यवाग्द्रव्यसाचिव्यजातजीवव्यापाररूपत्वा अमनोयोग वाग्योगयो रेककाययोगपूर्वकत-  
 यापि प्रागुक्तमेकत्वमवसेयमिति अथचेदमेव वचनमात्रप्रमाणमाज्ञाग्राह्यत्वादस्य यतः आणागओअथो आणाएचेवसोकहेयब्बो दिठ्ठतादिठ्ठतिय क-  
 हणविहिविराहणाइयरत्ति ॥ १ ॥ दृष्टात दार्षातिकोऽर्थइत्यर्थः ननु सामान्याश्रयैकत्वे नैव सूत्रगमकमधिष्यतीति किमनेन विशेषव्याख्यानेनेति उ-  
 तेणे समये कायानो व्यापारश्चेदेवता असुरमनुष्येने । तेणे तेणे समये देवता असुरमनुष्येने उत्थान चेष्टा विशेषकर्म भ्रमणादि क्रिया बल शरीरसा

च्यते नैव सामान्यैकत्वे ऽस्य पूर्वसूत्रैरेवा भिहितत्वा दस्य पुनस्तत्त्वप्रसंगा देवादिग्रहणं समयग्रहणयोश्च वेद्यार्थप्रसंगाच्चेति इह च देवादिग्रहणं पिण्डित्वे  
 क्रियलब्धिसपन्नतयैषा मनेकशरीररचने सत्येकदा मनोयोगादीना मनेकत्वं शरीरवद्भविष्यतीति प्रतिपत्तिनिरासार्थं नतु तिर्यग्नारकाणा व्यवच्छेदार्थं  
 ननु तिर्यग्नारका अपि वैक्रियलब्धिमत् स्तेषामपि विक्रियाया शरीरानेकत्वेन मनः प्रभृतीना मनेकत्वप्रतिपत्तिः संभाव्यत एवेति तद्ग्रहणमपि न्याय्य  
 मिति सत्यं किंतु देवादीना विविष्टतरलब्धितया शरीराणा मत्यतानेकतेति तद्ग्रहणं तथा प्रधानग्रहणे इतरग्रहणं भवतीति न्यायाददोषं नारकादिभ्यश्च  
 देवादीना प्रधानत्वं प्रतीतं मेवेति एतेषां च मनः प्रभृतीना यथाप्राधान्यकृतं क्रमः प्रधानत्वच वक्ष्यन्त्यात्पतरकर्मजयोपशमप्रभवनाभकृतं मिति ॥ कायव्या  
 यामस्यैव भेदानां मेकतामाह ॥ एगेउष्ठाणे इत्यादि ॥ उत्थानच चेष्टाविशेषः कर्मच भ्रमणादि क्रिया जलच शरीरसामर्थ्यं वीर्यच जीवप्रभव पुरुषकारश्च  
 भिमानविशेषः पराक्रमश्च पुरुषकार एव निष्पादितस्त्वविषय इति विग्रहे द्वैकवद्भाव एते च वीर्यान्तराय जयजयोपशमसंज्ञा जीवपरिणामविशेषा एतेषु प्रत्ये  
 कशब्दो योजनीयो वीर्यान्तरायजयजयोपशमवैचित्पतः प्रत्येकं जघन्यादिभेदै रनेकत्वे प्येता मेकजीवस्यैकदा चयचयापशमसामानाया एकविधत्वा देक  
 एव जघन्यादि रेतद्विशेषो भवति कारणमात्राधीनत्वा कार्यमात्राया इति सूत्रभावार्यः शेषस्यैव इति ॥ पराक्रमादेव ज्ञानादिमोक्षमार्गो ऽवाप्यते यत  
 आह अम्बुष्ठाणे विष्णोः परक्रमे साहुसेवणा एव सन्महसणलभो विरयाविरडे एविरडे इति ॥ १ ॥ अतो ज्ञानादीना निरूपणार्थं साह । एगेनाणे इत्यादि । अ

देवासुरमनुयाण तंसि तंसि समयंसि एगेउष्ठाणकम्भवल वीरियपुरिसक्कारपरक्कमे देवासुरमनुयाणं तंसितंसि  
 मर्थं वीर्यं जीवप्रभव पुरुषात्कार अहकार विशेष पराक्रम अहकारयो उपनो स्वविषय एतत्ता १ हे एकै समये थाय । १ ज्ञानहे केवल ज्ञानावरणना

यथा धर्मप्रतिमाप्रागुदिता सा च ज्ञानादिस्वभावेति ज्ञानादीत्रिरूपयन्नाह । एगेनाणे इत्यादि । सूत्रत्रयं ज्ञायन्ते परिच्छिद्यन्ते अर्था अनेनास्मिन्समाप्तेति ज्ञान  
 ज्ञानदर्शनावरणयोः क्षयः क्षयोपशमो वा ज्ञातिर्वा ज्ञानमावरणद्वयक्षयादाविर्भूत आत्मपर्यायविशेषः सामान्यविशेषात्मको वस्तुनि विशेषांशग्रहणप्रवणः सा  
 मान्यांशग्राहकस्य ज्ञानपञ्चकाज्ञानत्रयदर्शनचतुष्टयरूपस्तत्त्वज्ञानैकमप्यवबोधसामान्यादेकमुपयोगापेक्षया वा तथाहिलब्धितो बहूनाम्बोधविशेषाणां मेकदास  
 भवेत्प्युपयोगत एक एव सम्भवत्येकोपयोगत्वात् जीवानामिति ननु दर्शनस्य ज्ञानव्यपदेश्यत्वमयुक्तं स्वियभेदादुक्ताश्च जंसामन्नग्रहणदसणमेयविसेसियणा  
 णंति अत्रोच्यत ईहावग्रहोहि दर्शनसामान्यग्राहकत्वात् दपायधारणे च ज्ञानं स्वियेगग्राहकत्वात् दयवो भयमपि ज्ञानग्रहणेन गृहीतं भागमे आभिणिवो  
 हियनाणे अष्टावीसत्त्वतिपयडो अति वचनात्तस्मादवबोधसामान्या दर्शनस्यापि ज्ञानव्यपदेश्यत्वमविरुद्धमिति ननु दर्शनपृथगेवोपात्तमुत्तरसूत्रे तत्कि  
 मिह ज्ञानशब्देन दर्शनमपि व्यपदिष्टमित्यत्रोच्यते तत्रहि दर्शनं अज्ञानं विवक्षितं ज्ञानादित्रयस्य सम्यक्शब्दलाञ्छितत्वे सति मोक्षमार्गत्वेन विवक्षित  
 त्वात् मोक्षमार्गभूतं चैतत्तत्र अज्ञानपर्यायेणैव दर्शनेन सहेति । दसणेति । दृश्यन्ते अर्जयते पदार्था अनेनास्मादस्मिन्नेति दर्शनं दर्शनमोहनीयस्य क्षयः क्षयो  
 पशमो वा दृष्टिर्वा दर्शनं न दर्शनमोहनीयक्षयादाविर्भूतं स्तत्त्वज्ञानरूप आत्मपरिणामस्तच्चीपाधिभेदादनेकविधमपि अज्ञानसाम्यादेक एकजीवस्य चै  
 कदा एकस्यैव भावादिति नन्ववबोधसामान्यात् ज्ञानसम्यक्तयोः कः प्रतिविशेष उच्यते रुचिः सम्यक्तं रुचिकारणन्तु ज्ञानं यथोक्तं नाणमयायविर्श्यो द

॥ समयसि एगेनाणे एगेदंसणे ॥

क्षयथौ । सामान्यं ज्ञाने ते दर्शनं ? के केवलं दर्शनावरणनाक्षयथौ ॥

सणमिडुजहोगहेहाओ तहतत्तरुईसमं रीतिज्जइजेणतंनाणं ॥ १ ॥ चरित्तेत्ति ॥ चर्यतेमुमुचुभि रासेव्यतेतदिति चर्यतेवा गम्यते अनेन निर्वृत्ताविति चारित्रं  
अथवा चयस्य कर्मणा रिक्तीकरणा चरित्र निरुक्तन्याया दिति चारित्रमोहनोयज्याद्याविर्भूत आत्मनो विरतिरूपः परिणाम इति तदेक वच्यमाणाना  
सामायिकादितद्भेदाना विरतिसामान्यातर्भावा देकस्य चैकदा भावादिति एतेषाञ्च ज्ञानादौना मयमेवक्रमो यतो नाज्ञात अवीयते नाश्रयित सम्यगनुष्ठी  
यंत इति ज्ञानादौनिह्युत्पत्तिविगतिस्थितिमति स्थितिश्च समयादिकेति समयप्ररूपयन्नाह । एगेसमये । समयः परमनिष्कृष्टकाल उत्पलपत्रशतव्यतिभेदह  
ष्टान्ताज्जरत्पटशाटिकापाटनदृष्टान्ताद्वा समयप्रसिद्धा देवबोद्धव्यः सचैकएव वर्तमानस्वरूपो तीतानागतयो विनष्टानुत्पन्नत्वेना भावात् अथवा सावेकः  
स्वरूपेण निरशत्वा दिति निरशवस्त्वधिकारा देवेद सूत्रद्वयमाह ॥ एगेपएसे ॥ एगेपरमाणू ॥ प्रकृष्टो निरशो धर्माधर्माकाशजीवानां देशो ऽवयवविशे  
पः प्रदेशः सचैकः स्वरूपतः सद्वितीयत्वादौ देशव्यपदेशत्वेन प्रदेशत्वाभावप्रसङ्गादिति ॥ परमाणुत्ति ॥ परमश्चासा वात्यन्तिको ऽणुश्च सूक्ष्मः परमाणुः  
द्व्यणुकादिस्त्वन्धानां कारणभूतः आहच कारणमेवतदस्य सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणुः एकरसवर्णगन्धो द्विसंशःकार्यलिङ्गश्चेति ॥ १ ॥ सच स्वरूपतः  
एकएवा न्यथा परमाणुरेवासौ नस्यादिति अथवा समयादौना मयमेकमनन्ताना मपि तुल्यरूपापेक्षयैकत्वमिति ॥ यथा परमाणो स्तथाविधैकत्वपरिणा

॥ एगेचरित्ते एगेसमए एगेपएसे एगेपरमाणु ॥

सामान्यवोले १ चारित्र्ये सर्वविरतिं देशविरति रूप । समय कालविशेष एक एहमा वोजोभेदनयो समययो सूक्ष्म कालमान नथी । धर्मास्तिकायादि  
कनो अवयवते प्रदेश एकके तेनो बीजोभाग नथाय । १ परमाणु पुनल १ नां वे भाग न थाय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मविशेषा देकत्व श्रयति ततएव अनन्ताणमयस्कंधस्यापि स्या दितिदर्शयन् सकलबादरस्तम्भप्रधानभूत भीषणागभाराभिधानपृथ्वीस्कंधं प्ररूपयन्नाह ॥  
 एगासिद्धी ॥ सिद्ध्यन्ति कृतार्था भवन्ति यस्यांसा सिद्धिः साच यद्यपि लोकाग्रं यतप्राह इहबुद्धीचइत्ताण तत्थगंतूणसिञ्जइत्ति तथापि तत् प्रत्यासत्तेषत्  
 प्राग्भारापि तथाव्यपदिश्यते आह च बारसहिंजोयणेहि सिद्धीसब्बइसिद्धाप्नोत्ति यदिवा लोकाग्रमेव सिद्धिः स्या तदा कथमेतदनन्तरमुक्त निम्नलदग  
 रयवन्ना तुसारगोक्खीरहारसरिवन्ने त्यादि तत्स्वरूपवर्णन घटते लोकागस्या मूर्तत्वादिति तस्मा दीषणागभारासिद्धि रिञ्चोचते साचैका द्रव्यार्थतया पञ्च  
 चत्वारिंश योजनलचप्रमाणस्तम्भस्यैकपरिमाणत्वा त्पर्यायार्थतयात्वनन्ता अथवा कृतकत्वत्वं लोकाग्रमणिमादिकावा सिद्धिरेकत्वञ्च सामान्यत इति ॥  
 सिद्धे रनतर सिद्धिमतमाह ॥ एगेसिद्धे ॥ सिद्धातिस्म कृतकृत्योभवेत् सेधतिवा स्माऽगच्छ दपुनरावृत्त्या लोकाग्र मितिसिद्धं सितं वा बडं कर्म भात दग्ध य  
 स्य स निरुक्तासिद्धः कर्मप्रपचनिर्मुक्तः सचैको द्रव्यार्थतया पर्यायार्थत स्वानंतपर्याय इति अथवा सिद्धाना मनंतलेपि तदागा देकत्वं अथवा कर्मशिल्प  
 विद्यामंत्रयोगागमार्थयानाबुद्धितपः कर्मजयभेदेना नेकत्वे यस्यैकत्व सिद्धशब्दाभिधेयत्वसाम्यादिति ॥ कर्मजयसिद्धस्य च परिनिर्वाणधर्मोभवतीति तदा  
 ॥ एगेपरिनिब्बाणे ॥ परिसमता त्रिर्वातीति निर्वाण सकलकर्मकृतविकारनिराकरणतः स्वस्थीभवन परिनिर्वाणं तदेकमेकदा तस्य संभवे पुनरभावा दि  
 ति ॥ परिनिर्वाणधर्मयोगात् सएवकर्मजयसिद्धः परिनिर्वृत उच्यते इति तद्दर्शनायाह ॥ एगेपरिनिब्बुए ॥ परिनिर्वृतः सर्वतः शारीरमानसास्वास्थ्यविरहित

॥ एगासिद्धी एगेसिद्धे एगेपरिनिब्बाणे एगेपरिनिब्बुए ॥

१ सिद्धिशिला ४५ लाख योजन प्रमाणे छे । एक सिद्धि सङ्गसरौखा माटे । सकल दुःखनाचयथी सुखनो थावो वली दुःख न आवे तेमाटे १ छे

इतिभावः तदेकत्वं सिद्धस्यैव भावनीयमिति ॥ तदेतावता ग्रन्थेनैते प्रायो जीवधर्मा एकतयानिरूपिताः इदानीं जीवोपग्राहकत्वा त्युद्गलानां तल्लक्षणा जीवधर्मा ॥ एगेसद्देइत्यादिना जाव लुक्वे इत्येतदनेन ग्रन्थेनैकतयैव दर्श्यते ॥ पुद्गलानां तु सत्ता केषांचिदनुमानतो ऽवसीयते घटादिकार्योपलब्धेः केषांचि त्सां व्यवहारिकप्रत्यक्षत इति तत्र शब्दादिसूत्राणि सुगमानि नवर शब्दयते अभिधीयतेनेनेति शब्दो ध्वनिः श्रोत्रेन्द्रिय विषयः । रूप्यते अवलोक्यत इति रूप माकारश्चक्षुर्विषयः । घ्रायते सिंध्यते इति गंधो घ्राण विषयः । रस्यते आस्वादयत इति रसः रसनेन्द्रियविषयः स्पृश्यते कुप्यत इति स्पर्शः स्पर्शनकरणविषयः । शब्दादीनां चैकत्व सामान्यतः सजातीयविजातीयव्यावृत्तरूपापेक्षया भावनीय शब्दभेदावाह सुभिसद्देति ॥ शुभशब्दो मनोज्ञइत्यर्थः ॥ दुभित्ति ॥ अशुभः मनोज्ञो यो न भवतीति एवञ्च शब्दान्तर मन्त्रान्तर्भूत भवसेय मेव रूपव्याख्यानेपि सुरूपादयश्चतुर्दश शुक्लान्तरूपभेदा स्तत्र सुरूप मनोज्ञरूप मितर दूरूपमिति दीर्घमायत ऋस्वन्तदितर वृत्तादयः पञ्चस्कवसंस्थानभेदा स्तत्र वृत्तसंस्थानमोदकवत् तच्चघनप्रतरभेदाद्विधा पुनः प्रत्येक समविषमप्रदेशावगाढ मितिचतुर्धा एवशेषाण्यपि ॥ तसेत्ति ॥ तिस्रो स्त्रयः कोटयो यस्मिं स्तत्=यस्त्र त्रिकोणं ॥ चउरंसेत्ति ॥ चतस्रो स्त्रयो यस्य तत्तथा चतुष्कोण मित्यर्थः ॥ तथा

एगेसद्दे एगेरूवे एगेगंधे एगेरसे एगेफासे एगेसुप्त्रिसद्दे एगेदुप्त्रिसद्दे एगेसुरूवे एगेदुरूवे एगेदीहे एगेरहरसे

सर्व प्रकारे शरीर मानसीदुखनो रहित पणुं ते मोक्षएकछे । शब्द काननो विषयते एकछे । नेत्रनो विषयरूप शरीरनो आकार तेएकछे । नासिकानो विषय गन्ध तेएकछे । जीभनो विषय रसते एकछे । फरस एकछे आठे मली नामयी कायानो विषय । एक भलो शब्द । एक खोटो कठिनशब्द । एक भ लोरूप । एक खोटोरूप । एक दीर्घ संस्थान । एक लघु संस्थान । एक वृत्त संस्थान लाडुवा जेहवो । एक त्रिखूणियो सिधाडाने आकारे । एक चोखूणियो



पिबुलेति ॥ पृथुलंविस्तीर्णं मन्यत्र पुन रिहस्थाने आयत मभिधीयते तदेवचेहदीर्घझस्वपृथुनशब्दै विभज्योक्तसायतधर्मत्वा देवां तच्चायत प्रतरघनश्रेणिमेदा  
 तिधा पुन रेकैकं समविषमप्रदेश मिति षोढा यच्चा यतभेदयो रपि ऋस्तदीर्घयो रादा वभिधान तद्भुत्तादिषु संस्थानेपायतस्यप्रायो वृत्तिदर्शनार्थं तथाहि  
 दीर्घायतः स्तभो वृत्त स्तास्र यतुरस्र सेत्यादिभावनीय विचित्रत्वा हा सूत्रगतरेवमुपन्यास इति ॥ परिमडलेति ॥ परिमडलसंस्थान वलयाकार प्रतरघनमे  
 दा द्विविध मिति रूपभेदो वर्णः सचकृष्णादि'पचधा प्रतीतएव नवर हारिद्रः पोत' कपिशादयस्तु ससर्गजा इति नतेषामुपन्यास. ॥ गंधोद्देधा सुरभिश्च  
 दुरभिश्च तत्र सौमुख्यकृतसुरभि र्वैमुख्यकृद्दुरभिः साधारणपरिणामी ऽस्येष्टो दुर्गहइति ससर्गजत्वादेवनीतः रस. पञ्चधा तत्र लेपनाशकृत्तितः १ ॥ वैशद्य  
 च्छेदनकृत्काटुकः २ ॥ अन्नरुचिस्तान्नकृ कषायः ३ ॥ आश्रयणक्षेदनकृ दस्त. ४ ॥ क्षादनवृत्तणकृ न्मधुरः ५ ॥ ससर्गजो लवणइति नीत इति स्पर्शोऽ  
 ष्टविध स्तत्र कर्कशः कठिनो अनमनलक्षणः । १ । यावत्कारणात् मृडादनः षडन्ये तत्र मृदुः सन्नतिलक्षणः । २ । गुरु रधोगमनहेतु । ३ । लघु. प्रायस्ति  
 र्गर्गुर्गमनहेतुः । ४ । शीतो वैशद्यकृत् स्तान्नस्वभावः । ५ । उष्णो मार्दवपाककृत् । ६ । स्निग्ध सयोगेसति सयोगिना वन्यकारण । ७ । रूज स्तथैवावन्य

एगेवहे एगेतंसे एगेचउरंसे एगेपिञ्जले एगेपरिमंजले एगेकिरहे एगेनीले एगेलोहिण एगेहालिहे एगेसुह्नि  
 ले एगेसुप्तिगधे एगेदुप्तिगधे एगेतिह्ने एगेकद्रुए एगेकसाए एगेष्णविले एगेमज्जरे एगेकश्कळे जावलुस्के

एक पृथुल संस्थान विस्तारवत । एक परिमडल संस्थान वलयाकारे हाधनी चूडीसरीखी । एक कालोवर्ण । एक नीलोवर्ण । एक रातोवर्ण । एक पी  
 लोवर्ण । एक सपेदवर्ण । अन्य जीवर्णान्तरके तेससर्गजके । एक सुगन्धके । एक दुर्गन्धके । १ तीखो रसके । १ कटुक रसके । १ कषाय रस के । १ खाटो

कारण मिति । ८ । उक्ताः पुद्गलधर्माणां मेकते दानीं पुद्गलालिङ्गितजोवाः प्रशस्तधर्माणां मष्टादशानां म्यापस्थानकाभिधानानां ॥ एगेपाणाइवाएइत्यादिना  
यथेन दसणसक्के इत्येतदन्तेन तामेवाह ॥ तत्र प्राणा उच्छ्वासादयः तेषां मतिपातन म्याणवतासह वियोजन म्याणातिपातो हिसेत्यर्थः, उक्तञ्च पञ्चेन्द्रि  
याणित्रिविधवलञ्च । उत्स्वासनिःश्वासमथान्यदायुः ॥ प्राणादशैतेभगवद्भिरुक्ताः । स्तेषां वियोजीकरणन्तुहिंसेति ॥ १ ॥ सच प्राणातिपातो द्रव्यभावभेदा  
द्विविधो विनाशपरितापसक्केशभेदात् त्रिविधोवा आहच तप्पज्जायविणासो दुक्खुप्पाओयसकिलेसोय एसवहोजिणभण्णिओ वज्जेयव्वोपयत्तेणति ॥ १ ॥  
अथवा मनोवाक्कायैः करणकारणानुमतिभेदा नवधा पुनः सक्रोधादिभेदात् षड्विंशद्विधोवेति । १ । तथामृषा मिथ्या वदन वादो मृषावादः सच द्रव्यभा  
वभेदाद्विधा अभूतोद्भावनादिभिः चतुर्धा वा तथाहि अभूतोद्भावनं यथा सर्वगतः आत्मा । भूतनिर्गन्धो यथा नास्त्यात्मा । दस्त्वन्तरव्यासो यथा गौरपिसन्न  
श्लोयमिति । निन्दाच यथा कुष्टीत्वमसीति । २ । तथा अदत्तस्य स्वाभिजीवतीर्यकरगुरुभिः रवितोर्णस्या नवज्ञातस्य सचित्ताचित्तमिच्छभेदस्य वस्तुनः आदा  
नं ग्रहण मदत्तादान चौर्यमित्यर्थः तच्च विविधोपाधिवशा द्नेकविध मिति । ३ । तथा मिथुनस्य स्त्रीपुंसलक्षणस्य कर्म्म मैथुन सन्नज्ञ तन्ननोवाक्कायानां  
कृतकारितानुमतिभिः रौदारिकवैक्रियशरीरविषयाभिः रष्टादशधा विविधोपाधितो बहुविधतरच्चेति । ४ । तथा परिगृह्यते स्त्रीक्रियते इतिपरिग्रहः वा  
ह्याभ्यन्तरभेदा द्विधा तत्र बाह्यो धर्मसाधनश्चतिरेकेण धनधान्यादि रनेकधा आभ्यन्तरस्तु मिथ्यात्वाविरतिकषायप्रमादादि रनेकधा परिग्रहण वा

॥ एगेपाणातिवाए जावएगेपरिग्गहे ॥

रसक्के । १ मीठो रसक्के । १ कठिन फरसक्के । यावत् १ लूखो फरसक्के । १ प्राणातिपात हिंसाक्के । यावत् १ परिग्रहक्के । १ क्रोध १ मान १ मायाकपट

परिग्रहो मूर्खेत्यर्थः । ५ । तथा क्रोधमानमायालोभाः कषायाः मोहनीयकर्मपुद्गलोदयसम्पाद्यजीवपरिणामा इति एतेचानंतानुबन्धादिभेदतो ऽसंख्याता ध्वसायस्थानभेदतो वा बहुविधाः । ६ । तथा ॥ पेञ्जति ॥ प्रियस्य भावः कर्मवा प्रेम तद्धानभिव्यक्तमायालोभलक्षणभेदस्वभाव मभिष्यन्नमात्रमिति । १० । तथा ॥ दोसोति ॥ द्वेषणद्वेषः दूषणवा दोषः सद्धानभिव्यक्ताक्रोधमानलक्षणभेदस्वभावो ऽप्रीतिमात्रमिति । ११ । जावति । कलहेप्रभकलाणे पिसुत्रे प्रत्यर्थः तत्र कलहो राटी । १२ । अभ्याख्यानं प्रकट मसद्दीपारोपण । १३ । पैशून्य म्पिशुनकर्म प्रकृन्नसदसद्दीषाविर्भाजनं । १४ । परेपां परिवादः पर परिवादो विकल्यन मित्यर्थः । १५ । अरतिश्च तन्मोहनीयोदयज शित्तविकार उद्देगलक्षणी रतिश्च तथाविधानदरूपा अरतिरतिप्रत्येकमेव विवक्षित यतः तत्तत्तद्विषये या रति स्तामेव विषयान्तरापेक्षया अरतिं व्यपदिशत्येव मरतिमेव रतिमित्यौपचारिक मेकत्व मनयो रस्तौति । १६ । तथा मायामोसति । मायाच निकृति मृषाच मिथ्यावादो माययावा सद् सृष्टा मायामृष्टा प्राकृतत्वा न्यायामोसं दोषद्वययोगः इदञ्च मानमृष्टादिसंयोगदोषोपलक्षणं वेषान्त रकरणेन लोकप्रतारणमित्यन्ये प्रेमादीनिच बहुविधानि विषयभेदेना ध्वसायस्थानभेदतो वा । १७ । मिथ्यादर्शनं विपर्यस्ता दृष्टि स्तदेवतोमरादिशून्य मित्र शूलं दुःखहेतुत्वात् मिथ्यादर्शनशून्यमिति मिथ्यादर्शनस्य पञ्चधा आभिग्राहिकानाभिग्राहिकाभिनिवेशिकानाभोगिकशंशयिकभेदा दुपाधिभेदतो

एगेकोहे जावलोन्ने एगेपेज्जे एगेदोसे जावएगेपरपरिवाए एगाअरतिरति एगेमायामोसे एगेमिच्छादंसण

यावत् १ लोभहे । १ रागहे प्रेम । १ दोषहे द्वेष । यावत् शब्दे कलह अभ्याख्यान खोटी आल पैशून्य चाडो परपरिवाद निदाहे । १ अरति ते उद्देग १ रति ते आनन्द हर्षहे । १ मायामृष्टा जे कपट खोटी बोलवो । १ मिथ्यात्व दर्शन शून्यनी परें दुखदायी मिथ्यात्वहे ते १८ पापस्थानक । १ जीव

बहुतरभेदं चेति । १८ । एतेषाञ्च प्राणातिपातादीना मुक्तक्रमेणा नेकविधत्वेपि वधादिसाम्या देकत्व मवगन्तव्य मिति उक्ता न्यष्टादश पापस्थानानी दा  
नीं तद्विपक्षाणा मेव ॥ एगेपाणाइवायवेरमणेइत्यादिभि ॥ रष्टादशभि सूत्रै रेकतामाह सुगमानिचैतानि नवर विरमण विरति स्तथा विवेकस्त्याग  
इति उक्तं सपुद्गलजीवद्रव्यधर्माणा मेकत्व मिदानीं कालस्य स्थितिरूपत्वेन तद्गुणत्वात्तद्विशेषाणां ॥ एगाओसप्पिणीत्यादिना सुसमसुसमेत्येतदंतेनै तदेवा  
ह ॥ अथ कालएव कथ मवसीयत इति चे दुच्यते बकुलचम्पकाशोकादिपुष्पप्रदानस्यनियमेन दर्शनात् नियामकश्च कालइति तत्र ॥ ओसप्पिणित्ति ॥ अवस  
र्पति हीयमानारकतया अवसर्पयतिवा ऽऽयुष्कशरीरादिभावान् हापयती त्यवसर्पिणी सागरोपमकोटाकोटी दशकप्रमाणः कालविशेषः सुष्टुसमा सुसमा  
अत्यन्तं सुसमा सुसमसुसमा अत्यन्तसुखस्वरूपा अस्याएव प्रथमारकइति एकत्वचावसर्पिण्याः स्वरूपेणै कत्वा देव सर्वत्र यावदिति सीमोपदर्शनार्थस्त  
तश्च सुसमसुसमेत्यादिसूत्र स्थानान्तरप्रसिद्धं तावदध्येय मिह ॥ जावदूसमदूसमेत्ति ॥ पदमित्यतिदेशो ऽयच्च सूत्रलाघवार्थं मित्येवं सर्वत्र यावदितिव्याख्येय

सल्ले एगेपाणाइवायवेरमणे जावपरिग्गहवेरमणे एगेकोहविवेगे जाव मि  
च्छादसणसल्लविवेगे एगाउसप्पिणी एगासुसमसुसमा जावएगादुसमदुसमा

हिसाथी विरमवो हिसानी छांडिवो । यावत् मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रहनो छांडिवो । १ क्रोधनो त्याग यावत् एमज १८ वोल लेवा । मिथ्यात्व  
त्याग ते सम्यक्त । १ उत्सर्पिणी काल जिहा आऊखा प्रमुखभाव चढता होय । वली जिहां हीन भाव होय ते अवसर्पिणी काल । एकेकनामे १ सुसमसु  
समाकाल पहिलो आरो । १ दुसमदसमाकाल छठो आरो । १ नारकीनी वर्णण । ७ तरकगत जीवने नारकी कहिये एतले नारकीनी समुदाय । एम १

मतिदेशलब्धानि च पदान्ये कश्चिदप्यपदान्येतानि ॥ एगासुसमा एगासुसमदुसमा एगादुसमसुसमा एगादुसमा एगादुसमदुसमेति ॥ आसां स्वरूप शब्दा  
नुसारतो ज्ञेय प्रमाण पुन रायानां तिसृणा समाना क्रमेण सागरोपमकोटीकोट्य चतु स्त्रि द्वि सख्या चतुर्थास्वेका द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्रोना अंत्ययोस्तु  
प्रत्येक वर्षे सहस्राण्येकविंशतिरिति तथा उत्सर्पति वर्द्धते अरकापेक्षया उत्सर्पयति वा भावाना युक्तादीन्वर्द्धयतीति उत्सर्पिणी प्रवसर्पिणी प्रमाणा सुष्टुसमा  
सुसमा दुःसमा दुःखरूपाप्रत्यतदुःसमादुसमदुसमायावत्करणा देगादुसमा एगादुसमसुसमा एगासुसमदुसमा एगासुसमसुसमेति दृश्य एतत्प्रमाणच पूर्वी  
क्तमेव नवर विपर्यासादिति कृताजोवपुहलकाललक्षणद्रव्यविविधधर्मविशेषाणा मेकत्वप्ररूपणा ऽधुना सप्ताहिसुतजोवपुहलद्रव्यविशेषाणां नारकपरमा  
णादोनां समुदायलक्षणवर्गस्य ॥ एगानेरइयाणवगणेत्यादिना एगाभ्रजहन्नुहोसगुणलक्ताण योगलाण वगणेत्येतदतेन यथेन तामेवाह । तच्च नेरइया  
णति निर्गत भविष्यमान अय मिष्टफल कर्म येभ्य स्ते निरया स्तेषु भवा नेरयिक्ताः क्लिष्टसत्त्वविशेषा स्तेषु पृथ्वीप्रस्तटनरकावासस्थितिभयत्वादिभेदा द  
नेकविधा स्तेषा सर्वेषा वर्गणा वर्गः समुदाय स्तस्याश्चैकत्वं सर्वत्र नारकत्वादि पर्याप्रसाध्यादिति तथा असुराश्च ते नम्रगोवनतया कुमारा स्तेत्यसुरकुमारा  
स्तेषा मेकावर्गणेति ॥ चउवीसदडउत्ति ॥ चतुर्विंशतिपदप्रतिबद्धो दण्डको वाक्यपद्धति चतुर्विंशतिदण्डकः सइह वाच्यइतिशेषः सचाय ॥ नेरइया १ असु  
राश्च १० पुटवाश्च ५ वेइन्द्रियादश्चोचेव ४ नर १ वतर १ जोतिसिया १ वैमानिक १ दडप्रोएव ॥ १ ॥ भवनपतयो दशवा असुरानागसुवन्ना विज्जूभगीय

### एगाणेरइयाणवगणा एगाञ्चसुरकुमाराणवगणा चउवीसदडउ

असुरकुमार भवनपती १० नौ वर्गणा । एम पृथिवी पाणी ५ वेइन्द्रियादि ४ तिर्यच मनुष्य व्यतर ज्योतिषी वैमानिक एम २४ दडकनी वर्गणा ।

देवउदहोय दिसिपवणधणियनामा दसहाएभवणवासिन्ति ॥ १ ॥ एतदनुसारेण सूत्राणि वाच्यानि यावच्चतुर्विंशतितम ॥ एगावेमाणियाणवग्गणत्ति  
 एष सामान्यदण्डकः ननु नारकसत्तैवदुरूपपादा आस्ता तद्धर्माभूताया वर्गणाया एकत्वं मनेकत्वं चेति तथाहि नसन्ति नारका स्तत्साधकप्रमाणाभावा  
 त् व्योमकुसुमवत् अत्रोच्यते प्रमाणाभावादित्यसिद्धोहेतु स्तत्साधकानुमानसद्भावा त्तथाहि विद्यमानभोक्तृक अकृष्टपापकर्मफल कर्मफलत्वात् पुण्यकर्म  
 फलवत् नच तिर्यग्गराएव प्रकृष्टपापफलभुज स्तस्यौदारिकशरीरवता वेदयितुं मशक्यत्वा द्विशिष्टसुरजन्मनिबन्धनप्रकृष्टपुण्यफलवत् आहच पावफलस्स  
 पगिष्ठ स्सभोद्धणोक्कम्मओवसेसव्वं सतिधुवेतिभिमया नेरइयाअहमईहोज्जा ॥ १ ॥ अच्चत्यदुक्खियाजे तिरियनरानारगत्तिर्तेभिमया तनजओसुरसोक्ख प्प  
 गरिससरिसनतदुक्खति ॥ २ ॥ ओवसेसव्वत्ति ॥ यथा नारकेभ्यो अन्ये तिर्यग्गरा इत्यथे अथ सुराणामपि पिवादास्यदीभूतत्वा द्विशिष्टसुरजन्मनिबन्ध  
 नप्रकृष्टपुण्यफलज दित्यसिद्धोदृष्टान्तः अत्रोच्यते देवइति सार्थकम्माद व्युत्पत्तिम च्छुद्धपदत्वात् घटाभिधानव दिति ततः सन्ति देवा इतिप्रत्येतव्य मथ मनु  
 येण गुणद्विं सम्पन्नेना र्थवद्भविष्यति देवपदमिति न विवक्षितदेवसिद्धि रिति अत्रोच्यते यदिदं नरविशेषे देवत्वं न्तदौपचारिक उपचारश्चा र्थसिद्धौ सत्या  
 भवति यथा निरुपचरितसिंहसद्भावे माणवके सिहोपचार इति आहच देवत्तिसत्ययमिदं सुद्धत्तणओघडाभिहाणच अहवमईमणओच्चिय देवोगुणरि  
 द्विसपन्नो ॥ १ ॥ तन्नजओतच्चत्ये सिद्धेउवयारओमयासिद्धौ तच्चत्यसौहसिद्धे माणवसौहोवयारोव्वत्ति ॥ २ ॥ अपिच देवेसुनसदेहो जुत्तोजंजोइसास

जावएगावेमाणियाणंवग्गणा एगान्नवसिद्धियाणवग्गणा एगाञ्जवसिद्धियाणंवग्गणा एगान्नवसिद्धियाणंणे

वैमानिक देवतालगे नामथी एकेकं बोलजाणिवो । एकनामं घणानो समुदाय ते वर्गणा । एकं जव्यजीवनी वर्गणाळे । जे अनंतजवे पणिमोक्षजास्ये

पञ्चकलं दोसंतितक्कयाचिय उववायाणुणहोजगओ ॥ १ ॥ आलयमेत्तंचमई पुरंचतव्वासिणीतहविसिद्धा जेतेदेवत्तिमया नयनिलयानिच्चपडिसुन्ना ॥ २ ॥  
 कोजाणइवकिमेय तिहोज्जनिस्संसयाविमाणाइ' रयणमयनभोगमणा दिहजहविज्जाहराईणं ॥ १ ॥ तेषा मसुरादिविशेषः पुन रासवचना दवसेयइति  
 अथपृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिकायिकाः कथमिवजोवत्वेन प्रतिपत्तया उच्छासादिप्राणिधर्माणा तेष्वप्रतीयमानत्वा दित्यत्रोच्यते आप्तवचनादनुमानतश्च  
 तत्राप्तवचन मिदमेवा नुमानत्विद वनस्पतयो विद्रुमलवणोपलादयश्च स्वाश्रये वर्तमानाः सात्मकाः समानजातीयांकुरसद्भावादर्थोविकाराद्भुरवत्  
 आहच मंसकुरुच्चसमाण जाइरूवंकुरोवलभाओ तरुणविद्रुमलवणो वलादयोसासयावत्पुत्ति ॥ १ ॥ इह समानजातिगृहण शृङ्गाकुरव्यवच्छेदार्थं सहिन  
 समानजातीयोभवतीति ॥ तथा सात्मक मभो भोम भूमिखनने स्वाभाविकसभवा इदुरवत् अथवा सात्मक मतरीचोदक स्वभावतो व्योमसभूतस्यपातात्  
 मत्स्यवत् आहच भूमिक्खयसाभाविय सभववोददुरोव्वजलमुत्त [सात्मकत्वेनेति] अहवामच्छोव्वसहा ववोमसभूयपायाओत्ति ॥ १ ॥ तथा सात्मको  
 वायु रपरप्रेरित तिर्यगनियमितदिग्नित्वा ज्ञोवत् ॥ इहचा परप्रेरित गृहणेन लेष्ठादिना व्यभिचारः परिहृतः एव तिर्यग्गृहणेनो ङ्गतिना धूमेन अनि  
 यमितगृहणेनच नियतगतिना परमाणुनेति तथा तेजः सात्मक माहारोपादाना त्तहद्विविशेषोपलब्धेः तद्विकारदर्शनाच्च पुरुषव दाहच अपरप्रेरिय  
 तिरिया नियमितदिग्मणओनिलोगोव्व अनलोआहाराओ विद्विविगारोवलभावोत्ति ॥ १ ॥ अथवा पृथिव्यप्तेजोवायवो जीवशरीराणि अभ्रविकार  
 वर्जित मूर्त्त जातीयत्वात् गवादि शरीर वदिति अभादिविकारोहि मूर्त्तजातीयत्वे सत्यपि न जीवतनव स्तेन तत्परिहारो हेतुविशेषणमाह तणवोप  
 भाइविगा रमुत्तजाइत्तऊणिलताइं [भूतानीतिप्रक्रमः] सत्यासत्यहयाउणि जीवसजीवरूवावोत्ति ॥ १ ॥ वनस्पतीनां विशेषेण सचेतनत्व भाष्यगाथाभि  
 रभिधीयते जम्भजराजीवणमरण रोहणाहारदोहलामयवो रोगतिगिच्छाईहिय गोखिस्सचेयणातरवो ॥ १ ॥ छिक्कप्परोइयाक्खिक्क मेत्तसकोयवोक्कुलिङ्गिब्व

आसयसंचाराओ वियत्तवल्लीवियाणाइं २ ॥ वियत्तत्ति ॥ गणधरामंत्रण मिति सम्मादयोवसप्पा यबोहसंकीयणादियोभिमया वउलादयोयसद्दा इविसयका लोवलभावोत्ति ॥ सम्मादयोत्ति शम्यादयः विसयकालोवलभावोत्ति विषयानां गीतसुरागडूषकामिनीचरणताडनादीनां कालोवसतादिरिति ॥ एगाभव सिद्धिइत्यादि ॥ भविष्यतीति भवा भावना सा सिद्धिर्निर्वृत्ति येषातेभवसिद्धिका भव्यास्तद्विपरीतास्त्वभवसिद्धिका अभव्या इत्यर्थः ननुजीवत्वे समानेसति को भव्याभव्ययो विंशेष उच्यते स्वभावकृतो द्रव्यत्वेन समानयो जीवनभसो रिवाहच द्वाइत्तेतुल्ले जीवणभाणसभाववो भेओ जीवाजीवाइमयोजहत हभव्वेयरविसेसोत्ति ॥ १ ॥ आभ्यांविशेषितो न्यो दडक. २ ॥ एगासम्मदिठ्ठियाणमित्यादि ॥ सम्यगविपरीतादृष्टि दर्शनरुचि स्तत्वानिप्रति येषाते सम्यग्द

रइयाणंवग्गणा एगाअजवसिद्धियाणं णेरइयाणंवग्गणा एवंजाव एगाजवसिद्धियाणं वैमाणियाण वग्गणा एगाअजवसिद्धियाणं वैमाणियाणं वग्गणा एगासम्मदिठ्ठियाणं वग्गणा एगामिच्छदिठ्ठियाणं वग्गणा एगा

ते जव सिद्धिया जीवनों समुदाय एक कहिये । एक अजव सिद्धिया जीवनी वर्गणा छे । जे अनंत जवे मोक्ष नहीं जास्ये ते अजवसिद्धिया कहिये । एक जवसिद्धिया नारकीनी वर्गणाछे । जेनरकमां जव्यजीवछे तेहनी समुदाय । एक अजव्यनारकीनी वर्गणाछे एम जावचौवीस दंडक कहिवा । एक जवसिद्धिया वैमानिक देवतानी वर्गणाछे । एक अजव्य वैमानिक देवतानी वर्गणाछे । जे मोक्ष नथी पामे तेहने अजव्य कहिये । एक सम्यग् दृष्टी जीव नी वर्गणाछे जे मिथ्यात्वमोहनी कर्मना क्षयोपशमथी जगवानना वचन सांचाकरी जाणे छे ते सम्यग् दृष्टी कहिवा । एक मिथ्यादृष्टी जीवनी वर्ग णाछे जे जगवंतना वचनथी विपरीत करणीना करनार । एक सम्यग्दृष्टी जीवनी वर्गणा जेहने भगवंतना वचन ऊपरि रागपणि नथी द्वेषपणि न



ष्टिका स्तेच मिथ्यात्व मोहनीयक्षयक्षयोपशमेभ्यो भवन्ति तथा मिथ्याविपर्यासवती जिनाभिहितार्थसार्थाश्रयानवती दृष्टि दर्शनं श्रयानं येषांते मिथ्यादृष्टिका' मिथ्यात्वमोहनीयकर्मोदया दुरुचितजिनवचना इतिभाव उक्तच सूत्रोक्तस्यैकस्या प्यरोचनादक्षरस्यभवतिनरः मिथ्यादृष्टिःसूत्रं हिनः प्रमाणं जिनाभिहितमिति ॥१॥ तथा सम्यग्मिथ्याचदृष्टि येषांते सम्यग्मिथ्यादृष्टिका जिनोक्तभावान् प्रत्युदासीनाः इहच गभीरभवोदधिमध्यविपरिवर्त्ती जतु रनाभोगनिर्वर्त्तितेन गिरिसरिदुपलघोलनकल्पेन यथा प्रवृत्ति करणेन सपादितातः सागरोपम कोटाकोटीस्थितिकस्य मिथ्यात्ववेदनीयस्य कर्मणः स्थिते रन्तर्मुहूर्त्तं मुदयक्षणादुपर्यतिक्रम्या पूर्वकरणानिवृत्तिकरणसंज्ञिताभ्या विशुद्धि विशेषाभ्या मन्तर्मुहूर्त्तकालप्रमाण मन्तरकरण करोति तस्मिन् कृते तस्य कर्मणः स्थितिद्वयं भवति अंतरकरणं दधस्तनी प्रथमस्थिति रन्तर्मुहूर्त्तमान्ना तस्मादेवोपरितनौ शेषा तत्र प्रथमस्थितौ मिथ्यात्वदलिक वेदना दसौमिथ्या दृष्टि रन्तर्मुहूर्त्तेनतु तस्या मपगतायामन्तरकरणप्रथमसमय एवौपशमिकसम्यक्त माप्नोति मिथ्यात्वदलिकवेदनाभावा यथाहि दवानल, पूर्वदग्धेधनमूष र वा देशमवाप्यविधायति तथा मिथ्यात्ववेदनाग्नि रन्तरकरण मवाप्य विधायतीति तदेवसम्यक्त मौषधविशेषकल्पमासाद्य मदनकोद्रवस्थानीय दर्शन मोहनीय मशुद्धं कर्मविधाभवति अशुद्धं मर्धविशुद्धं विशुद्धं चेति ३ त्रयाणांतेषा पुञ्जानामध्ये यदार्द्धं विशुद्धं, पुञ्जउदेति तदा तदुदयवशा दर्द्धं विशुद्धं मर्हदृष्टतत्वश्रयान भवति जीवस्य तेन तदा सौ सम्यग्मिथ्यादृष्टि भवति अन्तर्मुहूर्त्तं यावत् तत ऊर्ध्वं सम्यक्तपुञ्ज मिथ्यात्वपुञ्जम्वा गच्छतीति सम्यग्मि

सम्ममिच्छदिष्ठियाणं वग्गणा एगासम्मदिष्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा एगामिच्छदिष्ठियाणं णेरइयाणं वग्ग

यी । एक सम्यग् दृष्टी नारकीनी वर्गणा केतला एक नारकीने धर्म ऊपरि श्रद्धाछे । एक मिथ्याती नारकी नी वर्गणा छे । एक सम्यग् मिथ्याती

प्यादृष्टिः मिश्रविशेषितो न्योदण्डक स्तत्रच नारकादिष्वेकादशसु पदेषु दर्शनत्रय मस्ति अतउक्त मेव ॥ जावथणिएत्यादि ॥ पृथिव्यादीनां मिथ्यात्व मेवा  
त स्तेषां तेनैव व्यपदेशः उक्तञ्च ॥ चोद्दसतससेससयामिच्छति ॥ चतुर्दशगुणस्थानवन्त स्वसाः स्थावरास्तु मिथ्यादृष्टय एवेत्यर्थः । द्वौन्द्रियादीना मिश्रन्ना  
स्ति सज्जिनामेव तज्ज्ञावात् तत स्तेषु सम्यग्दृष्टिमिथ्यादृष्टितयैव व्यपदेशः एव ॥ तेइदियाणविचउरिदियाणविति ॥ द्वौन्द्रियव ह्यपदेशइयेन वर्गणैकत्व  
वाच्य पञ्चेन्द्रियतिर्यगादीना दर्शनत्रय मप्यस्ति तत स्त्रिधापि तद्व्यपदेशो त एवोक्त ॥ सेसाजहानेरइयति ॥ तथावाच्या इतिशेषः । दण्डकपर्यन्तसूत्र पुनरिदं ॥

णा एगासम्ममिच्छदिठियाणं णेरइयाणं वग्गणा एवंजावथणियकुमाराणय एगामिच्छदिठियाणं पुढविका  
इयाणं वग्गणा एवंजाववणस्सइकाइयाणं एगासम्मदिठियाणं वेइदियाणं वग्गणा एगामिच्छदिठियाणं  
वेइंदियाणं वग्गणा एवंतेइंदियाणवि चउरिदियाणवि सेसा जहानेरइया जाव एगासम्ममिच्छदिठियाणं

नारकीनी वर्गणाळे । एह त्रिण जेद नारकीमा ळे । एम जाव स्तनितकुमार लगे दश भवनपती मा एकेक वर्गणा कहिवी । एक मिथ्यादृष्टी पृथि  
वी कायना जीवनी वर्गणाळे । इम अप तेऊ वायु वनसपती नी एकेक वर्गणा एपाच थावरमा एक मिथ्यातळे । एक सम्यग्दृष्टी वेइंद्रीनी वर्गणा  
समकित वमतो वेइंद्रीमां आवे । तिवारे उपजती वेला सास्वादन गुणठाणो छ आवली प्रमाणे होय तेसम्यक्त कहिये । एक मिथ्या दृष्टी वेइंद्री नी  
वर्गणा वेइंद्री मां मिश्रपणो न होय समकित वर्माने मिथ्याती थायळे । एम तेइंद्री नी वर्गणा समकितानी मिथ्यात्वीनी एम चौरिंद्रीनी एक व  
र्गणा । बीजा जिम नारकी कहिआव्या तिम जाणिवा । समकित मिथ्यात्व मिश्र ए तीन भेदनी एकेकी वर्गणा जाणजी । गर्भज तिर्यच मनुष्य व्यं

एगासम्भदिष्ठियाणवेमाणियाणवग्गणा एवंमिच्छदिष्ठियाण एव सम्भमिच्छदिष्ठियाणं एतत्पर्यन्तमाह जावएगासम्भमिच्छेत्यादि ॥ एगाकिण्हपक्खियाण इत्यादि ॥ कृष्णपाच्चिकेतुरयो लंछण ॥ जेसिमवड्डोपोगल परियट्ठोसेसओउससारो ॥ तेसुक्कपक्खियाखलु अहिण्णपुणकिण्हपक्खिओत्ति ॥ १ ॥ एतद्विशेषितो ऽन्यो दण्डकः ४ ॥ एगाकिण्हलेसाणमित्यादि ॥ लिख्यते प्राणो कर्माणा यथा सा लेश्या यदाह श्लेषद्रववर्णबन्धस्य कर्मबन्धस्थितिबिधात्यः तथा कृष्णा दिद्रव्यसाचिव्यात् परिणामोयआत्मनः ॥ स्फटिकस्यैवतत्राय लेखाशब्दः प्रयुज्यतेइति ॥ १ ॥ इयञ्च शरीरनामकर्मपरिणतिरूपा योगपरिणतिरूपत्वात् योगस्यच शरीरनामकर्मपरिणतिविशेषत्वात् यतउक्त ॥ प्रज्ञापनावृत्तिकृता ॥ योगपरिणामो लेश्या! कथपुनर्योगपरिणामो लेश्या यस्मात् सयोगिकेवली

वेमाणियाणं वग्गणा एगाकरहपक्खियाणं वग्गणा एगासुक्कपक्खियाणं वग्गणा एगाकरहपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा एगासुक्कपक्खियाण णेरइयाण वग्गणा एवंचउवीसदण्ठं जाणियहो एगाकरहलेस्साणं व

तर जोतिषी जाव वैमानिक देवता लगे ए सर्वमा दर्शनना तीन जेद छे । सम्यक् मिथ्या मिश्र एक कृष्ण पाखिया जीवनी वर्गणा । जेहने अर्धपुदगल परावर्त थी अधिको संसार होय ते कृष्णपाखिया । एक सुकल पाखिया जीवनी वर्गणा छे । जेहने अर्ध पुदगल संसार वाकी छे । ते जीव सुकलपाखिया । अनंता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल जाय तिवारे एक पुदगल परावर्त होय तेहनो अर्ध । एक कृष्ण पाखिया नारकीनी वर्गणा । जेनारकीने घणो संसार फरवोछे । एक सुकलपाखिया नारकीनी वर्गणा । जेहने अर्ध पुदगल संसार छे । एम चौवीसे दंडके जाणिवा । नारकी अ सुरकुमार दश दंडक पृथिवी प्रमुख वेइद्री प्रमुख तिर्थच मनुष्य व्यंतर जोतिषी वैमानिक एव चौवीस । एक कृष्णलेश्या नी वर्गणा । मनना अशुभ

शुक्ललेश्यापरिणामेन विहृत्या न्तर्मुहूर्त्तं शेषे योगनिरोध इति ततो अयोगित्व मलेश्यत्व च प्राप्नोत्यतो ऽवगम्यते योगपरिणामो लेश्येति स पुन र्योगः शरीरनामकर्मपरिणतिविशेषः यस्मादुक्तं ॥ कर्महि कर्मणस्य कारण मन्येषां च शरीराणामिति तस्मादौदारिकादिशरीरयुक्तस्यात्मनो वीर्यपरिणति विशेषः काययोगः । १ । तथौदारिकवैक्रियाहारकशरीरव्यापाराहृतवाक् द्रव्यसमूहसाचिव्या जीवव्यापारोयः स वाग्योगः । २ । तथौदारिकादिशरीरव्यापाराहृतमनोद्रव्यसमूहसाचिव्याजीवव्यापारोयः स मनोयोग इति । ३ । ततो यथैव कायादिकरणयुक्तस्यात्मनो वीर्यपरिणति र्योगउच्यते तथैव लेश्यापोति ॥ अन्येतु व्याचक्षते कर्मनिष्पन्दो लेश्येति ॥ साच द्रव्यभावभेदा द्विधा तत्र द्रव्यतोलेश्या कृष्णादिद्रव्याण्येव भावलेश्या तज्जन्यजीवपरिणामइति द्वयञ्च षट्प्रकारा जम्बूफलखादकपुरुषषट्कट्टष्टान्ता द्नामघातकचौरपुरुषषट्कट्टष्टान्ताद्वा आगमप्रसिद्धा दवसेयेति तत्सूत्राणिसुगमानि न वर कृष्णवर्णद्रव्यसाचिव्यात् जाता ऽशुभपरिणामरूपा कृष्णा सालेश्या येषांते तथा एव शेषाण्यपि पदानि नवर नीलाईषत्सुन्दररूपा एवमित्यनेनैव क्रमेण यावत्करणात् ॥ एगाकावोयलेश्यामित्यादिसूत्रत्रयदृश्यं न्तत्र कापोतस्य पक्षिविशेषस्य वर्णेन तुल्यानि यानि द्रव्याणि धूम्राणीत्यर्थः तत्साहाय्या जाता कापोतलेश्या मनाक् शुभतरा सालेश्या येषांते तथा तेजो अग्निज्वाला तद्वर्णानि यानि द्रव्याणि लोहितानीत्यर्थः । तत्साचिव्याज्जाता तेजोलेश्या

गगणा एगाणीललेस्साणं वग्गणा एवंजावसुक्कलेस्साणं वग्गणा एगाकरहलेस्साणं जेरइयाणं वग्गणा जाव

परिणाम विशेष । एक नीललेश्या नी वर्गणा कांडंक कृष्णायी भलेरी जंबूवृक्षने दृष्टान्ते छ लेश्या । इम कापोतलेश्या नी वर्गणा एक । एक तेजोलेश्या नी वर्गणा । एक पदम लेश्या नी वर्गणा । एम एक सुक्ल लेश्यानी वर्गणा । एम प्रत्येकं पुदगल आश्री छ लेश्या कही । हिवे जीव आश्री

श्या शुभस्तभावा पद्मगर्भवर्णानियानि द्रव्याणि पीतानीत्यर्थः तत्साचिव्याज्जाता पद्मलेश्या शुभतरा शुक्लवर्णद्रव्यजनिता शुक्ता अत्यंतशुभेति एतासांचविशेष ॥ टीका  
 त' स्वरूपलेश्याध्ययनादवसेयमिति ॥ एव जस्सजइत्ति ॥ नारकाणांमिव यस्या सुरादे र्यां यावत्यो लेश्या स्तदुद्देशेनतद्गर्गैकत्व वाच्य ॥ भवणेत्यादिमा तस्मै  
 श्यापरिमाणमाह अत्र सग्रहणी काऊनीलाकिण्हा लेस्साप्रोतिनिहोतिनरएसु तद्वयाएकाऊनीला [पृथिव्यामित्यर्थः] नीलाकिण्हायरिहाए ॥ १ ॥ [पञ्च  
 म्यामित्यर्थः] किण्हानीलाकाऊ तेऊलेसायभवणवतरिया जोइससोहम्भोसा गेतेऊलेसामुण्येयव्या ॥ २ ॥ कप्पेसणकुमारे माहिदेचेवबभलोएय एएसुपम्हले

काउलेस्साणं नेरइयाणं वग्गणा एवंजस्सजतिलेस्सानं जवणवडुवाण मंतर पुढवि ञ्णाउ वणस्सइकाइयाणं ॥ ५  
 चत्तारिलेस्सानं तेऊ वाउवेदिय तेइंदिय चउरिदियाणं तिन्निलेवेइस्सानं पचिदियतिरिक्कजोणियाण मणु  
 स्साणं ठलेस्सानं जोइसियाणं एगातेउलेस्सा वेमाणियाणं तिन्निउवरिमलेस्सानं एगाकरहलेस्साण जवसि

कहेछे । एक रुणालेश्या ना नारकीनी वर्गणा एम जाव कापीतलेश्या ना नारकी वर्गणा । नारकी मां तीन पहिली लेश्याछे । एम जेह दंडकमां ॥ १  
 हि जेतली लेश्या होय तेतली एकेक नामे वर्गणा जाणवी । भवनपति व्यंतर पृथिवी पाणी वनस्पती कायमा छ ठेकाणे चारलेश्या होय । तेऊकाय  
 बायुकाय वेइंद्री तेइंद्री चौरिंद्री एतला माहे निण लेश्या छे । पचेंद्री तिर्यचने मनुष्यने छ लेश्या छे । जोतिषी चंद्र सूर्य गृह नक्षत्र तरा एहनेएक  
 तेजोलेइया । वैमानिक मा ऊपरली त्रिण लेश्या होय । सौधर्म ईशान देवलोके एक तेजोलेइया । ती जे चौथे पांचमै देवलोके एक पदमलेश्या ।  
 छठा देवलोकथी अन्नतरबिमान लगे सुकललेश्या होय । एक रुणालेश्या नां जव्यजीव नी वर्गणा । एक रुणालेश्या नां अजव्य जीवनी वर्गणा चो

सा तेणपरसुकलेसाओ ॥ २ ॥ पुढवीआउधणस्रइ वाधरपसेयलेसचत्तारि गभितिरियनरेसुं छल्लेसातिविसैसाणं ॥ ४ ॥ अयं सामान्यो लेश्यादण्डकः  
अयमेवभव्याभव्यविशेषादन्यः ॥ एगाकरहलेसाणभवसिद्धियाणवगणेत्यादि ॥ एवमिति कृष्णलेश्याया मिव ॥ कसुवित्ति ॥ कृष्णयासह षट्सु ग्रन्थया अ  
न्याः पञ्चैवा तिदेश्या भवन्तीति वेद्वे पदे प्रतिलेश्य भव्या ऽभव्यलक्षणे वाच्ये यथा ॥ एगानोललेसाणभवसिद्धियाणवगणेत्यादि ॥ ६ ॥ लेश्यादण्डकएवद  
र्शनत्रयविशेषितोऽन्यः ॥ एगाकरहलेसाणसम्मद्विष्टियाणमित्यादि जेसिजइदिष्टिओत्ति ॥ येपा नारकादीनां या यावन्त्यो दृष्टयः सम्यक्ताद्या स्तेपा ता वाच्या  
इति तत्र एकेन्द्रियाणा भित्थात्वमेव विकलेन्द्रियाणा सम्यक्तमित्यात्वे शेषाणांतिसोपि दृष्टय इति ॥ ७ ॥ लेश्यादण्डकएव कृष्णशुक्लपक्षविशिष्टो न्यः एगाकि

द्धियाणं वग्गणा एगाकरहलेस्साणं अजवसिद्धियाणं वग्गणा एवंलसुवि लेस्सासुदोदोपयाणिजाणियद्वाणि  
एगाकरहलेस्साणं जवसिद्धियाणं नेरइयाण वग्गणा एगाकरहलेस्साण अजवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा  
एवंजस्सजतिलेस्सानुं तस्सतत्तियाजाणियद्धानुं जाववेमाणियाणं एगाकरहलेस्साण सम्मदिद्धियाणं वग्गणा

देराजलोक प्रमाण संसारमां छै । इम ठ लेश्यानें विषे वेवे पद जव्य अजव्य ना जाणिवा । एकेकी वर्गणा कहिवी । हिवे चोवीस दंडके लेश्या  
कहैछे ॥ एक कृष्णलेश्या नां जवसिद्धिया नारकी नी वर्गणा । एक कृष्णलेश्या ना अजवसिद्धिया नारकी नी वर्गणा । एतले अजव्य नारकी । एम  
जे दंडक मा जेतली लेश्या होय तेतली वर्गणा कहिवी । एक जव्यनी एक अजव्यनी । एम जाव वेमानिक देवताना दंडकलगे वर्गणाछे । एक कृष्ण  
लेश्याना सम्यग् दृष्टी नी वर्गणा संसारमे केतलार्द्धक भव्य जीवछे । एक कृष्ण लेश्याना मिथ्यात्वी नी वर्गणा संसार मां केतलार्द्धक अभव्य जीवछे

यहलेसाणं किरहपक्वियाणमित्यादि ॥ ८ ॥ एते अठ्ठचउवीसदंडयत्ति ॥ ए तेचैवं १ ॥ भव्वाइहिंविसेसिओ । २ । दंसणेहिं । ३ । पक्खेहिं । ४ । लेसा हिं । ५ । भव्वा । ६ । दंसणे । ७ । पक्खेहिं । ८ । विसिठ्ठलेसाहिति ॥ इत' सिद्धवर्गणा अभिधीयते तत्र सिद्धा द्विधा अनन्तरसिद्धपरम्परसिद्धभेदात् तत्रानतरसिद्धा पञ्च दशविधाः तद्वर्गणैकत्व माह ॥ एगातित्थेल्यादिना ॥ तत्र तीर्थते ऽनेनेति तीर्थं न्द्रव्यतो नद्यादीनां समो नपायश्च भूभागो भौतादिप्रवचन म्वा तत्र द्रव्यती र्थतात्वस्याप्रधानत्वाद् प्रधानत्वञ्च भावत स्तरणीयस्य ससारसागरस्य तेन तर्तुं मशक्यत्वा त्वावद्यत्वा दस्येति भावतीर्थन्तु सङ्घी यतो ज्ञानादिभावेन तदि

एगाकरहलेस्साणं मिच्छदिठ्ठियाणं वग्गणा एगाकरहलेस्साणंसम्ममिच्छदिठ्ठियाणं वग्गणा एसुवंढविलेसासु जाववेमाणियाणं जेसिंजहिंदिठ्ठीणं एगाकरहलेसाणं करहपक्वियाणं वग्गणा एगाकरहलेसाणं सुक्कपक्वियाण वग्गणा जाववेमाणियाण जस्सजतिलेसाणं एण्ण्ठचउवीसदंडया एगातित्थसिद्धाणं वग्गणा एवंजा

एक कृष्ण लेइयाना सम्यग् मिथ्यादृष्टी नीं वर्गणा छे । एम नील कापोत तेज पदम सुकल लेश्याने विषे चौवीस दंडक वैमानिक लगे दर्शन तीन नीं वर्गणा कहवी जेहने जेतली दृष्टी होय तेहने तेतली वर्गणा एकेही पांवने मिथ्या दृष्टी । वेइद्री तेइद्री चोरिद्रीने वे दृष्टी मिथ्या दृष्टि अने सम्यग् दृष्टी वीजा सर्वजीवने त्रिण दृष्टी । कृष्ण लेइयाना कृष्णपाखिया जीव ते बहुल ससारी जीव तेहनी वर्गणा छे । सर्व ए जाति जीवनो स मुदाय कहैछे । एक समुदाय ससार मां वली कृष्ण लेइयाना सुकलपाखिया जीवनो छे एवर्गणा एम जाव वैमानिक ना दंडकलगे जाणवुं । जेदं डके जेतली लेश्याहोय तेतली एकेकी वर्गणा ए आठवोल चौवीस दंडके जाणवा । एक तीर्थ सिद्धनी वर्गणा संघ थापना कीधांपछे मुक्ति गया

पचादज्ञानादितो भवाच्च भावभूतात् तारयतीत्याहच ॥ जनाणदसणचरित्त भावओतव्विवक्खभावाओ भवभावओयतारेइ तेणउभावाओतित्यति ॥ १ ॥ त्रि  
 षुवा क्रोधाग्निदाहोपशमलोभट्ठणानिरासकम्भमलापनयनलज्जणेषु ज्ञानादिलज्जणेषुवा अर्थेषु तिष्ठतीति त्रिस्थ प्राकृतत्वात्तित्य आहच दाहीवसमादि  
 सुवा जतिसुवियमहवदसणाइसु तोतित्यसघोच्चिय उभयचविसेसणविसेसति ॥ १ ॥ विशेषणविशेष्यमिति तीर्थं सङ्गइति सङ्गोवातीर्थमिति त्रयोवा क्रोधा  
 ग्निदाहोपशमादयो ऽर्था फलानि यस्य तत्त्वर्थं तित्यन्ति पूर्ववत् आहच क्रोहग्निदाहसमणा दओवतेचेवतिन्निजस्सत्या ॥ होइतियत्थतित्यं तमत्थसणोफ  
 लत्थोय ॥ १ ॥ अथवा त्रयो ज्ञानादयो ऽर्था वस्तूनि यस्य तत्त्वर्थं आहच अहवासम्मइसणनाणचरित्ताइतिन्निजस्सत्या ततित्यपुब्बादियमिहमत्थोवत्थुप  
 ज्जाओत्ति ॥ १ ॥ तत्रतीर्थे सति सिद्धा निर्हत्ता स्तौर्थसिद्धा ऋषभसेनगणधरादिवत् तेषा वर्गणेति । १ । तथा अतीर्थेतीर्थान्तरे साधुव्यवच्छेदे जातिस्मर  
 णादिना प्राप्तापवर्गमार्गा मरुदेवौवत् सिद्धा अतीर्थसिद्धा स्तेषा ॥ २ ॥ एवकरणात् एगातित्यगरसिद्धाण वर्गणेत्यादि दृश्य । तीर्थमुक्तलक्षण तत् कुर्वन्त्या  
 नुलोभ्येन हेतुत्वेन तच्छीलतयाचेति तीर्थकराः आहच अणुलोमहेउतस्सो लयायजेभावतित्यमेयतु ॥ कुव्वतिपगासति तेओतित्यगराहियत्यकरत्ति ॥ १ ॥  
 तीर्थकराः सतोये सिद्धा स्ते तीर्थकरसिद्धाः ऋषभादिवत् तेषा । ३ । अतीर्थकरसिद्धाः सामान्यकेवलिनः संतो ये सिद्धाः गौतमादिव तेषा । ४ । तथा स्वय  
 मात्मबुद्धा स्तत्त्वज्ञातवतः स्वयबुद्धा स्ते सतोये सिद्धा स्तेतथा तेषा । ५ । तथा प्रतीत्यैक किञ्चित् वृषभादिक अनित्यतादि भावनाकारण वस्तु बुद्धाः बुद्धवन्तः  
 परमार्थमिति प्रत्येकबुद्धा स्तेसन्तो ये सिद्धा स्तेतथा तेषां । ६ । स्वयबुद्धप्रत्येकबुद्धानाच बोध्युपधिञ्चुतलिङ्गकृतोविशेषः तथाहि स्वयबुद्धाना बाह्यनिमित्तमन्त  
 ते पुंडरीकादि गणधर । एक अतीर्थ सिद्धनी वर्गणा तीर्थ थाप्या विना जाति स्मरणादिक ग्यान पामी मोक्ष गया मरुदेवी आदिक । इम तीर्थ  
 कर जगवंत सिद्धनी एक वर्गणा । अतीर्थकर सामान्य केवली सिद्धनी गौतमादिक नी वर्गणा । स्वयंबुद्ध पोतानी मेले तत्त्वग्यान पाम्यां । प्रत्येक



रूपं बोधिः प्रत्येकजुष्टानान्तु तद्वैचया करकण्ठादीनां भिवेति उपधिः स्वयंजुष्टानां भावादिज्ञादशधिः तदथा पत्तं । १ । पत्तापेधी । २ । पायडवणं च २ । पायजेसरिया । ४ । पडलाइ । ५ । पत्ताणं । ६ । गोत्थो । ७ पायनिज्जोगी ॥ १ ॥ तिन्नेवथपत्तागा स्वहरणं । ११ । चैवहीतिमुत्तपोत्तिति १२ ॥ २ ॥ प्रत्येकजुष्टानान्तु नवधिः प्रावरणवर्ज इति स्वयंजुष्टानां पूर्वाधीते पुत्तेप्रनियमः प्रत्येकजुष्टानान्तु नियमती भयत्थेय लिङ्गप्रतिपत्तिः स्वयंजुष्टानामाचार्यसन्निधाय पि भवति प्रत्येकजुष्टानांतु देशताप्रयच्छतीति गुणबोधिता पाचार्यादिबोधिताः संतोये सिता स्तेजुष्टबोधितसिद्धा स्तेवां ७ एतेषामेव स्त्रीलिङ्ग सिद्धानां ८ पुंलिङ्ग सिद्धानां ९ नपुंसकलिङ्गसिद्धानां १० स्वलिङ्गसिद्धानां रजोहरणावपेलया ११ अन्यलिङ्गसिद्धानां परित्राजकादिलिङ्गसिद्धानां १२ गृहिलिङ्गसिद्धानां मरुदेशोपभृतीनां १३ एकसिद्धानामेकैकस्मिन् समये एकैकसिद्धानां १४ अनेकसिद्धानामेकसमये प्रादीनां प्रष्टशतांतानां सिद्धानामेकावर्गणेति १५ तानि तसमयसिद्धानां प्ररूपणा गाथा जतीसापडवाला सहीवाचत्तरीयबोधजा चुलसीरेच्छमुउई दुरहियप्रहीतरसयंच एतदिपरणं यदा एक समयेन ए

व एगाएकसिद्धानं वर्गणा एगात्र्येकसिद्धानं वर्गणा एगापठमसमयसिद्धानं वर्गणा एवंजाव त्र्यणंत

बुद्ध वस्तु वृषजादिक देसी तत्त्व ग्यान पास्या । गुरुनां प्रतिबोधणी ग्यानपास्या ते बुद्धबोधितसिद्ध । स्त्रीलिङ्ग सिद्ध । नपुंसकलिङ्ग सिद्ध । पुरुष लिङ्ग सिद्ध । स्वलिङ्ग सिद्ध । ओषा मुंहपती सहित सीधाते । अन्यलिङ्ग तापस वेसें बलकलचीरी ने परें सीधा । गृहिलिङ्गसिद्ध मरुदेवी नी परें । एकसकथें एकज सीधा ते एकसिद्ध । एक समये एकसोआठ सीधा ते अनेकसिद्ध । तेहनी एक वर्गणा । इस सब ठिकाणे जाणिवी । एक प्रथम समये सीधा तेहनी वर्गणा जावबीजे समये त्रीजें समये चौथें समये जाव संख्याते समये असख्याते समये अनंते समये सीधा ते । सब ठिकाणें ए

कादयउत्कर्षेण हान्निशस्तिङ्गाति तदा द्वितीयेपि समये हान्निशदेवनैरतयेण अष्टौ समयान्याव हान्निशस्तिङ्गाति ततउर्ध्वमवश्यमेवातर भवतीति यदा पुन  
स्त्रयस्त्रिशादारभ्य अष्टचत्वारिंशदता' एकसमयेनसिङ्गाति तदानिरतरं सप्तसमया न्यावत् सिङ्गन्ति ततो ऽवश्यमेवातरभवतीति एव यदा एकोनप  
चाशतमादिङ्गत्वा यावत् षष्टिरेकसमयेन सिङ्गयति तदा निरतरंषट्समयान् सिङ्गाति तदुपरिश्रंतरसमयादिर्भवति एवमन्यत्रापि योज्य यावत् अष्ट  
शतमेकसमयेन यदा सिङ्गन्ति तदावश्यमेवसमयाद्यन्तर भवतीति ॥ अन्येतु व्याचक्षते अष्टौ समयान् यदा नैरतयेण सिङ्ग स्तदाप्रथमसमये जघन्येनैकः  
सिङ्गत्यु ल्कृष्टतो हान्निशदिति ॥ द्वितीयसमयेजघन्येनैकः । उल्कृष्टतो ऽष्टचत्वारिंशत्तदेव सर्वत्र जघन्येनैकः समय उल्कृष्टतो गायार्थीय भावनीयः वत्तीसे  
त्यादि एत्र मनतर सिङ्गाना तीर्थाविनाभूतभावेन प्रत्यासत्तिव्यपदेश्यत्वेन पचदशविधाना वर्गणैकत्व मुक्त सिद्धानीं परपरसिङ्गानामुच्यते तत्र अपढमसम  
यसिङ्गाणमित्यादि त्रयोदशसूत्रौ नप्रथमसमय सिङ्गाः सिङ्गत्वद्वितीयसमयवर्तिनः तेषामेवजावत्तिकरणात् ॥ दुसमयसिङ्गाणंति ॥ चउपचक्षुसत्तठ न  
वदससखेज्जसमयसिङ्गाणमितिदृश्यं तत्र सिङ्गत्वस्य तृतीयादिषु समयेषु द्विसमयसिङ्गादयः प्रीच्यन्ते यद्वा सामान्येना प्रथमसमयाभिधान विशेषतो द्विस  
मयाद्यभिधानमिति अत स्तेषां वर्गणा क्वचित् ॥ पढमसमयसिङ्गाणंति पाठ' ॥ तत्रअनन्तरपरपरसमयसिङ्गलक्षणभेदमकृत्वा प्रथमसमयसिङ्गअनंत  
रसिङ्गाएवज्ञातव्याः इत्यादिसमयसिङ्गा स्तु यथा श्रुता एवेति ॥ इतो द्रव्यजेवकालभावाना श्रित्य पुद्गलवर्गणैकत्व चित्यते ॥ एगापरमेत्यादि ॥ पूरणग

समयसिङ्गाणं वर्गणा एगापरमाणुपोग्गलाणं वर्गणा एवंजावएगाञ्चणंतपएसियाणंखंधाणं वर्गणा एगा  
केती वर्गणा जाणवी । एकपुद्गल परमाणु जे चरम दृष्टीये न देखिये तेहनी वर्गणा । इस वे परमाणु ना खंधनी वर्गणा । वे परमाणु मलियां  
थी सध कहिवायछे । इस तीन परमाणु चार परमाणु पांच परमाणु छ परमाणु सात परमाणु आठ परमाणु नव परमाणु दश परमाणु जाव सं

ननधर्माणः पुद्गला स्ते च स्वधा अपि स्यु रिति विशेषयति परमाण्वो निः प्रदेशा स्ते च ते पुद्गला श्चेति विग्रहः स्तेषां एव करणात् ॥ दुपएसियाणं खं  
 धाणति चउपंचळसत्तठुनवदससंखेज्जपएसियाणअसंखेज्जपएसियाणमिति दृश्यमिति ॥ कृता द्रव्यतः पुद्गलचिता अतः क्षेत्रतः क्रियते ॥ एगाएगपएसेत्वा  
 दि ॥ एकस्मिन्प्रदेशेक्षेत्रेऽवगाढाश्वस्थिता एकप्रदेशावगाढास्ते च परमाण्वादयो नतप्रदेशिकस्वधान्ताः स्यु रचित्यत्वात् द्रव्यपरिणामस्य यथा पारदस्यै  
 केनकर्षेण चारिताः सुवर्णस्य ते सप्ता प्येकीभवति पुनर्द्धामिताः प्रयोगतः सप्तैव तद्वति ॥ जावएगाअसंखेज्जपएसोगाढाणति ॥ अनतप्रदेशावगाहित्व तु ना  
 स्ति पुद्गलानालोकलक्षणस्यावगाहक्षेत्रस्या प्यसंखेयप्रदेशत्वादिति कालतआह ॥ एगाएगसमएत्वादि ॥ एक समय यावत्स्थितिः परमाणु त्वादिना एक  
 प्रदेशावगाढादित्वेन एकगुणकालादित्वेना वस्थान येषांते एकसमयस्थितिकास्तेषामिति इहच अनतसमयस्थितेः पुद्गलाना मभावा दसंखेज्जसमयठितिया

एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगाअसंखेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाण वग्गणा एगाएगसमय  
 ठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव असंखेज्जसमयठितिआणपोग्गलाणंवग्गणा एगा एगगुणकालयाणंपो

ख्याता असंख्याता प्रदेशना खधनी एक वर्गणा । एम अनता प्रदेशना खधनी वर्गणा जाणवी । हिवे क्षेत्रथी कहे छे । क्षेत्रनां एक प्रदेश अवगा  
 हीने रहिया एहवा पुद्गल तेहनी वर्गणा । इम बे क्षेत्रना प्रदेशावगाढ तीन क्षेत्रना प्रदेशावगाढ यावत् असंख्यात प्रदेश क्षेत्रने आश्री रहिया  
 तेहनी एकेकी वर्गणा कहिवी । पणि अनंत प्रदेशावगाढ नथी । जेमाटे चौदे राजलीक प्रमाण क्षेत्रना असंख्यात प्रदेश छे । अनंत प्रदेश नथी ।  
 हिवे कालथी कहे छे । परमाणु पणे तथा एक क्षेत्र प्रदेशाश्रितपणे एक समयनी स्थिति छे जेहनी तेहनी एक वर्गणा इम यावत् असंख्यात स

ए मित्युक्त मिति ॥ भावतः पुद्गलानाह ॥ एगाएगगुणेत्यादि ॥ एकेन गुणने गुणन ताडन यस्यस एकगुणः कालो वस्त्री येषां ते एकगुणकालकास्तारत  
स्येनकृष्णतरकृष्णतमादीनां येभ्यः आरभ्य प्रथममुत्कर्षवृत्तिर्भवतीति भावस्तेषामेव सर्वाण्यपि भावसूत्राणि षड्यधिकद्विशतप्रमाणानि वाच्यानि २६० विंश  
तेः कृष्णादि भावानां त्रयोदशभिर्गुणनादिति । सांप्रतभग्यतरेण द्रव्यादिविशेषितानां जघन्यादिभेदभिन्नानां वर्गणैकत्वमाह ॥ एगाजहन्नपएसियाणमि  
त्यादि ॥ जघन्याः सर्वाल्याः प्रदेशाः परमाणवस्तेसति येषांते जघन्यप्रदेशिकाः द्वाणुकादय इत्यर्थः स्क्ंधा अणुसमुदया स्तेषां उत्कर्षन्तीत्युत्कर्षाः उत्कर्षवं  
तः उत्कृष्टसंख्याः परमानन्ताः प्रदेशा अणव स्तेसति येषांते उत्कर्षप्रदेशिका स्तेषा जघन्याश्च उत्कर्षाश्च जघन्योत्कर्षा नतया येते अजघन्योत्कर्षा मध्यमा इ  
त्यर्थः ते प्रदेशाः सति येषांते अजघन्योत्कर्षप्रदेशिका स्तेषा मेतेषाचानतवर्गणत्वे प्यजघन्योत्कर्षशब्दव्यपदेश्यत्वादेकवर्गणत्व मिति ॥ जहन्नोगाहणगाणं

गगलाणंवर्गणा जाव एगा अ्संखेज्ज एगाअणंतगुणकालयाणंपोग्गलाणंवर्गणा एवं वस्सगंधरसफासान्नाणिय  
द्वा जावएगाअणंतगुणलुक्काणपोग्गलाणंवर्गणा एगाजहन्नपएसियाणंखधाणंवर्गणा एगाउक्कोसपएसिया

मयनी स्थितिना । अनंत समय स्थिति नो अज्ञाव छे । एक गुण काला पुद्गलनी वर्गणा । इम यावत् असंख्यातगुण काला पुद्गलनी एक वर्गणा  
इम अनंतगुण काला पुद्गल नी एक वर्गणा । एम पांचे वर्णनी वर्गणा कहिवी । एहज रीते पाच वर्ण दोय गंध छ रस आठ फरस नी  
एकेक वर्गणा कहिवी । जिहांलगे अनंत गुण लूखा पुद्गलनी एक वर्गणा छे । जघन्य प्रदेशनी एक वर्गणा । जेहमां परमाणुआ थोडा छे । ते दो  
परमाणु आदिकना खंध जाणिवा । एक उत्कृष्ट प्रदेशना खंधनी वर्गणा । जेहमां अनंता परमाणु प्रदेश छे उत्कृष्ट प्रदेशनी खंध कहिये । एक न

ति॥ अवगाहंते आसते यस्यांसा वगाहना क्षेत्रप्रदेशरूपा साजघन्यायेषांते सार्थिकप्रत्ययाज्जघन्यावगाहनकास्तेषा मेकप्रदेशावगाढानामित्यर्थः उत्कर्षा  
वगाहनकाना मसंख्यातप्रदेशावगाढाना मित्यर्थः अजघन्योत्कर्षावगाहनकानां संख्येयासंख्येयप्रदेशावगाढाना मित्यर्थः जघन्याजघन्यसंख्या समयापेक्ष  
या स्थितिर्येषांते जघन्यस्थितिका एकसमयस्थितिका इत्यर्थः तेषांउत्कर्षा उत्कर्षवत्संख्यासमयापेक्षया स्थिति र्येषांते तथा तेषा मसंख्यातसमयस्थि  
तिकाना मित्यर्थः तृतीय कथं जघन्येन जघन्यसंख्याविशेषेणैकेनेत्यर्थः गुणोगुणनंताडन यस्यस तथाविधः कालो वर्णो येषांते जघन्यगुणकालका स्ते  
षा मेव सुत्कर्षगुणकाना मनतगुणकालकाना मित्यर्थः तृतीयं कथं एव भाव सूत्राणि सर्वाण्यपि पट्टिर्भाषयानीति सामान्यस्कंधवर्गणैकत्वाधिकारा

णखंधाणं वग्गणा एगाञ्जहन्नुक्कोसपएसियाणखंधाणं वग्गणा एवं जहन्तोगाहणगाण उक्कोसोगाहणगाणं  
ञ्जहन्नुक्कोसोगाहणगाणं जहन्नठितियाणं उक्कोसठितियाणं ञ्जहन्नुक्कोसठितियाणं जहन्नगुणकालगाणं  
उक्कोसगुणकालगाणं ञ्जहन्नुक्कोसगुणकालगाणं एव वस्सगंधरसफासाणं वग्गणान्नाणियद्वा जावएगाञ्ज

थी जघन्य नथी उत्कृष्ट एहवा प्रदेशना खधनी वर्गणा ते मध्यमप्रदेश खधनी वर्गणा कहिये । एम जघन्य अवगाहना ना खंधनी उत्कृष्ट अवगाहना  
ना खधनी वर्गणा । एक नथी जघन्य नथी उत्कृष्ट एहवी अवगाहना ना खधनी वर्गणा । ते मध्यम प्रदेशावगाढ खधनी वर्गणा कहिये । कालथी  
जघन्य एक समय स्थितिना खधनी एक वर्गणा । उत्कृष्टी असंख्यात समय स्थितिना खंधनी वर्गणा । एक मध्यस्थितिना खधनी वर्गणा । एम  
जघन्य एकगुणकाला प्रदेश परमाणु नी वर्गणा । एक उत्कृष्ट अनतगुण काला पुद्गल नी वर्गणा । एक मध्यमगुण काला प्रदेश नी वर्गणा । एम

वा जघन्योत्कर्षं प्रदेशकस्या ऽजघन्योत्कर्षप्रदेशावगाठस्य स्तब्धविशेषस्यैकत्वं माह ॥ एगेजंबूद्दीवेत्यादि ॥ जंबूवा वृक्षविशेषेणो पलब्धितो द्वीपः जंबूद्वीप इति नाम द्वीप इति सामान्यं यावत्ग्रहणा देवसूत्रं द्रष्टव्यं सत्त्वभूतरेण सत्त्वखुड्डाएवष्टे तेल्लापूएसठाणसठिए एगजोयणसयसहस्र आयामविक्रभेण तिन्निजो यणसयसहस्राइं सोलसहस्राइं दोनिसयाइं सत्तावीसाइं तिन्निकोसा अठ्ठावीसंधणुसय तेरसअगुलाइ अडगुलच किंचिविसेसाहिया ए परिकखेवेणन्ति सुगममेतत् उक्तविशेषणञ्च जंबूद्वीप एकएव अन्यथा अनेकेपिते सतीति । अनतरं जंबूद्वीप उक्तः इति तत्परूपकस्य भगवतो महावीरस्यैकता माह ॥ एगे समणेत्यादि ॥ एगोअसहायो अस्यचसिद्धइत्यादिनासम्बन्धः गाम्यति तपस्यतीति अमणः भज्यत इतिभगः समगृश्वर्यादिलक्षणः उक्तचणेश्वर्यस्यसमगृस्य रूपस्ययशसःश्रियः धर्मस्यार्थप्रयत्नस्य प्रसांभगइतींगनेति ॥ १ ॥ स विद्यते यस्येति भगवान् तथा विशेषेण रयतिमोक्षप्रति गच्छति गमयतिवा प्राणिनः

हन्नुक्खोसगुण लुरकाणं पोग्गलाणं वग्गणा एगेजंबूद्दीवेसद्धदीवसमुद्दाणं जावअण्णंगुलगंचकिंचिविसेसेहिं प  
रिक्खेवेणं एगेसमणेजगवंमहावीरे इमीसेउसप्पिणीए चउवीसाएतित्यगराणं चरिमतित्ययरेसिद्धे बुद्धे मुत्ते

वर्णं गंधं रसं फरसं एहनीं एकेकं वर्गणां जाणवी । जिहांलगे मध्यमं लूखां पुंदगलनीं एकं वर्गणां होय । एकं जंबूद्वीपं नामा द्वीपं सर्वद्वीपं समुद्रं ना मध्यभागे छे । जंबू शासती वृक्षं तेसहितं सर्वद्वीपधीं नाहो वाटलो भूभाकेरो परिधीये एहवो जंबूद्वीप एकजं छे । वीजा जंबूद्वीप घणां छे पिण एहमाने नथी । तेलनां पूआने आकारे एकलाखं योजनं लांबो पिहुलो त्रिणं लाखं सोले हजारं विसे सत्तवीसं योजनं त्रिणं गाऊ एकसोअठाईसं धनुषं तेरे अंगुल ऊपर आधी अंगुल । एक अमण भगवंतं श्रीमहावीर एणी अव सर्पिणी काले आदि नाथादिक चौवीस तीर्थंकर मांहि छेहला

प्रेरयति वाक्यमाणि निरांकरोति वीरयति वा रागादिशत्रून् प्रति पराक्रमयतीति वीरः निरुक्तितो वा वीरो यदाह विदारयति यत्कर्म तपसा च विराजते  
 तपोवीर्येण युक्तश्च तस्माद्दीर इति स्मृतः ॥ १ ॥ इतरवीरापेक्षया महं श्वासी वीरश्चेति महावीरः भाष्योक्तं तु तिहुयणविक्रयजसो महाजसो नाम श्रीमहावी  
 रो विक्रंतो यकसायाश्च सत्तुसेनपराजयश्च ॥ १ ॥ ईरे इविसेसेण च खिवइकग्गाइगमयइसिवंवा गच्छइयतेण वीरो समहवीरो महावीरोति ॥ २ ॥ अस्या भयस  
 र्पिण्यां चतुर्विंशतेः तीर्थकराणामध्ये चरमतीर्थकरः सिद्धः कृतार्थो जातः बुद्धः केवलज्ञानेन बुद्धवान् बोध्य मुक्तः कर्मभि र्यावत्करणात् अतकडे अंतो भवस्य  
 कृतो येन सोतकृतः परिनिब्बुडे परिनिर्बृतः कर्मकृतविकारविरहात् स्वस्थो भूतः किमुक्तमभवति ॥ सम्बदुक्खप्पहीणे ॥ सर्वाणि शारीरादीनि दुःखानि प्र  
 क्षीणानि प्रहीणानि वा यस्य स सर्वदुःखप्रहीणो वा सर्वत्र बहुग्रीही कृतस्य यः परनिपातः स आहिताग्न्यादिदर्शना दिति इह च तीर्थकरेष्वेतस्यैवै कत्वं सोच  
 गमने न तु ऋषभादीना दशसहस्रादिपरिवृतत्वेन तेषां सिद्धत्वा दुक्तञ्च एगो भगव वीरो तेत्तोसाएसहनिब्बुओपासो । छत्तीसएहिपचहि सएहिंनेमीउसि  
 डिगओ इत्यादि ॥ १ ॥ एकाको वीरो निर्बृत इत्युक्तं निर्बृतिजेनासन्नानि चानुत्तरविमानानीति तन्निवासिदेवदेहमानमाह ॥ अनुत्तरेत्यादि ॥ अनुत्तर  
 त्वा दनुत्तराणि विजयादिविमानानि तेषु य उपपातो जन्म सविद्यते येषान्ते नुत्तरोपपातिका स्ते णङ्कारौ वाक्यालङ्कारे देवाः सुराः ॥ एगारयणिति ॥  
 हस्तयावत् क्रीश कौटिल्येन नदीतिवदिह द्वितीया ॥ उड्डुउच्चत्तेणति ॥ वस्तुनो ह्यनेकधोषत्वमूर्द्धस्थितस्यैक मपर न्तिर्यक्स्थितस्या ऽन्यत् गुणोन्नतिरूपं तत्रेत

जावसहदुक्खप्पहीणे अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं एगारयणी उहं उच्चत्तेणं पन्नत्ता । अहानरकत्ते एगत्तारे

तीर्थकरं सिद्धं यथा कृतार्थं यथा केवलं यी संसारना जाव पदार्थं जाण्या कर्मथी रहितं यथा यावत् सर्वदुःखथी प्रक्षीणं यथा एक लाहीज मोक्ष  
 गया । अनुत्तर विमान विजय । वैजयंत । जयंत । अपराजित । सर्वार्थसिद्ध । एह पाच अनुत्तर विमान ना देवतानी कायानो ऊंचपणो एकहाथ

रापोहेनो हस्थितस्य यदुच्चत तदूर्ध्वेच्च त्व मित्यागमे रूढ मिति तेनो र्ध्वेच्चत्वेना सुस्वारः प्राकृतत्वात् प्रज्ञप्ताः प्ररूपिताः सर्वविद्धि रिति अथवा अनुत्तरोप  
पातिकानां देवाना मूर्ध्वेच्चत्वेन प्रमाण मितिशेषः एकारत्रिः प्रज्ञप्तेति व्याख्येय मिति ॥ देवाधिकारादेव नक्षत्रदेवानां ॥ अहानकक्षत्तेइत्यादि ॥ कर्ण्येन  
सूत्रत्रयेण तारैकत्वमुक्तं ताराच ज्योतिर्विमानरूपेति कृतिकादिषुच नक्षत्रेष्विद न्तराप्रमाण छ ६ । पंच । ५ । तिन्नि । ३ । एग । १ । चउ । ४ । तिगं ।  
३ । रस । ६ । वेय । ४ । जुयल । २ । जुयलंच । २ । इंदिय । ५ । एग । १ । एगं विसय । ५ । गिउसमुह । ४ । बारसग । १२ ॥ १ ॥ चउरो । ४ । तिय  
३ । तिय । ३ । पच । ५ । सत्त । ७ । वेवे । २ । भवेतियातिन्नि । ३ । ३ ॥ रिक्खेतारपमाण जइतिहितुल्लहयकज्जति ॥ १ ॥ इह चैकस्थानकानुरोधा नक्ष  
त्रत्रयस्य ताराप्रमाण मुक्तं शेषनक्षत्राणान्तु प्रायो ज्येतेनाध्ययनेषु तद्व्यति यस्तु क्वचिद्विसम्बाद स्ताराप्रमाणस्य तथाविधप्रयोजनेषु तिथिविशेषस्य नक्षत्र  
विशेषयुक्तस्या शुभत्वसूचनार्थत्वेनोक्तगाथयो र्मतान्तरभूतत्वा न्नवाधक इति ॥ तारापुद्गलरूपेति पुद्गलस्वरूप मभिधातु माह ॥ एगप्पएसोवगाढेत्यादि ॥  
सुगम नवर मेकत्र प्रदेशे क्षेत्रस्यांशविशेषे अवगाढा आश्रिता एकप्रदेशावगाढाः तेच परमाणुरूपाः स्तान्धरूपा ज्येति एवं वर्ष ५ । गन्ध २ । रस ५ । स  
र्ग ८ । भेदविशिष्टाः पुद्गला वाच्याः अतएवोक्त ॥ जावएगगुणलुक्खेत्यादि ॥ तदेवं मनुगमोभिहितो धुना कथञ्चि अत्यवस्थानावसरे भणितमपि नयहार

पन्नत्ते चित्तानस्कत्ते एगतारे पन्नत्ते सातिणस्कत्ते एगतारे पन्नत्ते एगपएसोगाढा पोग्गला झणंता पन्नत्ता  
एवमेगसमयठितिया एगगुणकालगा पोग्गलाझणंता पन्नत्ता जावएगगुणलुक्कापुग्गलाझणंता पन्नत्ता ।  
नो छे । आर्द्रा नक्षत्रनो एकतारो छे । चित्रा नक्षत्रनो एक तारो छे । स्वाति नक्षत्रनो एकतारो छे । एक क्षेत्र प्रदेशने आश्री रहिया एहवा परमा  
णु रूपं संघरूप पुद्गल अनंता छे । इमं एक स्थितिनां पुद्गल । एक गुण काल पुद्गल अनंता जगवंते कहिया छे । जाव एक गुण लूखा पुद्गल



मनुयोगद्वारक्रमायात मिति पुन विश्लेषणीयते तत्र नैगमादयः सप्त नया स्तेच ज्ञाननये क्रियानये चान्त भवन्तीति ताभ्या मध्ययन मिदं विचार्यते तत्र ॥  
 ज्ञानाचरणा त्वके स्मिन्नध्ययने ज्ञाननयो ज्ञानमेव प्रधान मिच्छति ज्ञानाधीनत्वा त्वकलपुरुषार्थसिद्धे र्यतः ॥ विज्ञप्तिःफलदापुसां तत्क्रियाफलदामता ॥  
 मिथ्याज्ञानाग्रहत्तस्य फलप्राप्तेरसम्भवात् ॥ इत्यतः ऐहिकामुषिकफलार्थिना ज्ञानएव यत्नो विधेय इति क्रियानयसु क्रियामेवेच्छति तस्याएव पुरुषार्थसिद्धा  
 उपयुज्यमानत्वात् १ तथाचोक्तं ॥ क्रियैवफलदापुसा नज्ञानफलदंमत ॥ यतस्त्रीभक्ष्यभोगज्ञो नज्ञानात्सुषितो भवे दित्यत ऐहिकामुषिकफलार्थिना क्रियैव  
 कार्येति जिनमतेतु नानयोः प्रत्येक म्पुरुषार्थसाधनता यतउक्त ॥ हयनाणकियाहीणं हयाअन्नाणिणीकिया ॥ पासतोपगुलोदड्ढो धावमाणोयअधओत्ति  
 ॥ १ ॥ संयोगएव चानयोः फलसाधकत्व यतउक्तं ॥ सजोगसिद्धीयफलवयति नहुएगचकेणरहोपयाइ ॥ अंधीयपगूयवणेसमिञ्चा तेसपउत्तानगरंपविठुत्ति  
 ॥ १ ॥ भाष्यकृताप्युक्त ॥ नाणाहीणंसब्ब नाणेणओभणतिकिचिकिरियाए किरियाएकरणतओ तदुभयगाहोयसमत्तति ॥ १ ॥ अथवा सप्तापिनैगमादयः  
 सामान्यनये विशेषनये चान्तभवन्ति तत्र सामान्यनयः प्रक्रान्ताध्ययनोक्तः नामात्मादिपदार्थाना मेकत्वमेवा भिन्नन्यते सामान्यवादित्वा तस्य सहि ब्रूते  
 एकमित्य निरवयव निश्चियं सर्वगंच सामान्यमेवास्ति नविशेषो निःसामान्यत्वात् इह यद्विःसामान्य तत्रास्ति यथाखरविपाण यच्चास्ति न तन्निःसामान्य  
 यथाघटइति तथा सामान्यादन्ये नग्येवा विशेषाः प्रतिपद्येरन् यदन्ये तत्तूतामसन्त स्ते निःसामान्यत्वात् खपुष्पवत् अथानग्येन तदा सामान्यमात्रमेव चत  
 वा विशेषोपचारः नचोपचारेणार्थतत्व क्षिन्त्यत इति आहच एकनिश्चनिरवयव मक्रियंसव्वगचसामन्न ॥ नित्सामन्नत्ताओ नत्थिविसेसोखपुष्पव ॥ २ ॥  
 तथा सामन्नओविसेसो अन्नोनन्नेव्वहीज्जजइअनन्ने ॥ सोनत्थिखपुष्पपिव अन्नोसामन्नमेवतयति ॥ १ ॥ तदेव सामान्यनयाभिप्रायेणात्मादीना मेकत्वमेव  
 विशेषनयमतेनतु तेषा मनेकत्वमेव सहिब्रूते विशेषेभ्यः सामान्य भिन्नमभिन्नवा स्यात् नभिय मत्यन्तानुपलभात् खपुष्पवत् तथा न सामान्यम्विशेषेभ्यो

भिन्नमस्ति दाहपाकस्नानपानावगाहवाहदोहादिसर्वसम्यग्द्वाराभावात् गरविषाणवत् यथा भिन्नस्तदा विगेषमाणवन्तु ननाम सामान्यमस्ति तेषु नासा  
 सामान्यमात्रोपचार इति नचोपचारेणार्थतत्त्व चित्त्वं यादृच नचिसेमत्यतम्भू यमनिमानमन्माद्वयाद्वारा ॥ उपनभस्यद्वारा भावाधोपविमाणमिति  
 १ ॥ तदेवमात्मादोना मनेकत्व मेवेति ननु पञ्चदशेपि गुणितसंभवात् किन्तुलम्पतिपक्षे मिति उच्यते तत् स्यादेकत्व स्यादनेकत्व मिति ॥ तथाहि ॥  
 समविषयरूपत्वा इत्युक्तं समरूपापेक्षया एकत्व विषयरूपापेक्षया त्वनेकत्व मिति उक्तं ॥ यमुनयवममानः परिणामीयः स एव सामान्यः ॥ विपरीतान्  
 विशेषा वस्त्वेकमनेकरूपन्तदिति ॥ १ ॥ इति श्रीमद्भयदेवचरिपिरचिते ज्ञानाख्यतृतीयाध्यायपरिणामे प्रथममध्ययन मेकस्यानकाभिधान ननाम मिति ॥

॥ प्रथम मध्ययन मनामम् ॥ यद्यसंख्या ११८७ ॥

व्याख्यात मेकस्यानकाख्यं प्रथममध्ययन मतः सख्याक्रममवः मेव ज्ञानकाख्यद्वितीयमध्ययन सारभ्यते । पञ्चचायविशेषमस्य इह ज्ञेयता सामान्य  
 विशेषात्मक वस्तु तत्र सामान्यमात्रित्य प्रथमाध्ययने आमाद्विस्त्वेकत्वेन प्ररूपित मिदत्तु विशेषायवणा तदेव विविधत्वेन प्ररूप्यत इत्यनेन सर्वधेना या  
 तस्या स्याध्ययनस्य चत्वार्यनुयोगद्वाराख्यपक्रमादोनि भवति तानिच प्रथमाध्ययनात् द्रष्टव्यानि यद्य विशेषः स चतुर्धा ऽवगतयः केनसमस्य चतुरद्वे  
 यकात्मकस्याध्ययनस्य सूत्रानुगमे प्रथमोद्देशिकादिसूत्र मिदमुच्चारणीय ॥ जद्विणमित्यादि ॥ अथच पूर्वसूत्रेण सहाय मन्वन्त पूर्वं श्रुतनेतृगुणरुचाः पु

इतिश्री प्रथमं ठाणं सम्पत्तं ॥ प्रथमं ञ्जयणं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अनंता कहिया छे । इतिश्री द्वादशार्थं ठाणांग सूत्रतो प्रथम अध्ययनरूप एक ठाणो पूर्णययो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ जला अनन्ता स्तत्र किमनेकगुणरूपाः अपि पुद्गलाभवन्ति येन ते एकगुणरूक्षतया विशिष्यन्त इति उच्यते भवत्येव यतो यदत्यौल्यादिपरम्परसूत्रं सम्बन्धस्तु  
 श्रुतं मया युष्मता भगवतैव माख्यातं मेकआत्मेत्यादि तथेदं मपरमाख्यातं ॥ जदत्यौल्यादि ॥ संहितादिः पूर्ववत् यज्जीवादिकवस्तु अस्ति विद्यते एमित्य  
 लंकारे कचित्पाठो जदत्यिचणति तत्रानुस्वारआगमिकश्चशब्दः पुनरर्थ एवंचास्य प्रयोगः अस्यात्मादिवस्तु पूर्वाध्ययनप्ररूपितत्वा यच्चास्ति लोके पञ्चास्ति  
 कायात्मके लोक्यते प्रमीयते इति लोक इतिव्युत्पत्त्या लोकालोकरूपेवा तत्सर्वं निरवशेषं द्वयोः पदयोः स्थानयोः पञ्चयोर्विवक्षितवस्तु तद्विपर्ययलक्षणयो र  
 वतारो यस्यतत् द्विपदावतार मिति ॥ दुपडोयारति ॥ कचित्पठ्यते तत्र द्वयोः प्रत्यवतारोयस्य तत् द्विप्रत्यवतार मिति स्वरूपवत् प्रतिपञ्चव चेत्यर्थः तद्यथे  
 त्युदाहरणोपन्यासे ॥ जीवश्चेव अजीवश्चेवति ॥ जीवाश्चैव अजीवाश्चैव प्राकृतत्वात् सयुक्तपरत्वेनङ्गस्य चकारौसमुच्चयार्थौ एवकाराववधारणे तेनच राश्यन्त  
 रापोहमाह ॥ नोजीवाख्यराश्यन्तरमस्तीति चेन्नैव सर्वनिषेधकत्वे नोशब्दस्य नोजीवशब्देना जीवएव प्रतीयते देशनिषेधकत्वे तु जीवदेश एव प्रतीयते नच  
 देशो देशिनो त्यतव्यतिरिक्त इति जीवएवासा विति चेत्यद्वैतिवा एवकारार्थः चियच्चेयएवार्थ इतिवचनात् ततश्च जीवा एवेति विवक्षितवस्त्व जीवा एवे  
 तिच तत्प्रतिपञ्च इति एव सर्वत्र अथवा यद स्तीति यत् सन्नात्र यदित्यर्थः तत् द्विपदावतार द्विविध जीवाजीवभेदा दिति शेष तथैवच अथ वसेत्यादि

जदत्यि णलोगे तं० सत्त्वं दुपढाश्रारं तं० जीवश्चेव अजीवश्चेव तसश्चेव थावरश्चेव सजोणियश्चेव अजोणि

श्रीसुधर्मास्वामी जंबू स्वामीनें कहैं छे जे आलोकने विषे । जीवादि पदार्थ छे तेसर्व बेप्रकारे छैं । ते कहैं छे । एक चेतना लक्षण जीवछे । वीजो  
 अजीव चेतना रहित छे । जीवना बेजेद त्रस वे इंद्रियादिक । थावर पांच एकेंद्री पृथिवी आदिक । एक योनिसंहित जीव संसारी चौरासी लाख

नवसूत्र्या जीवतत्त्वस्यैव भेदान् संप्रतिपक्षा नुपदर्शयति तत्र असंज्ञानामकर्मादयः स्वस्थंतीति त्रसाः द्वीन्द्रियादयः स्थावरनामकर्मादया तिष्ठन्तीत्येवं शीलाः स्थावराष्ट्रिन्द्रियादयः सह योग्योत्पत्तिस्थानेन सयोनिकाः ससारिण स्तद्विपर्यासभूताः अयोनिकाः सिद्धाः सहायुषा वर्तन्त इति सायुष स्तदन्ये नायुषाः सिद्धाः एवसेन्द्रियाः ससारिणः अनिन्द्रियाः सिद्धादयः सवेदका स्त्रिवेदाद्युदयवन्तः अवेदकाः सिद्धादयः सहारूपेण मूर्त्या वर्तन्त इति समासांते इन्प्रत्यये सति सरूपिणः सस्थानवर्णादिमतः सशरीरादित्यर्थः न रूपिणो अरूपिणो मुक्ताः सपुद्गलाः कर्मादिपुद्गलवतो जीवाः अपुद्गलाः सिद्धाः संसारंभवंसमापन्नकाः आश्रिताः ससारसमापन्नकाः ससारिण स्तदितरे सिद्धाः शाश्वताः सिद्धाः जन्ममरणादिरहितत्वा दशाश्वताः संसारिण स्तद्युक्तत्वादिति । एवंजीवतत्त्वस्य द्विपदावतारत्रिरूप्या जीवतत्त्वस्य तनिरूपयन्नाह ॥ आगासेत्यादि ॥ आकाशं व्योम नोआकाश तदन्य धर्मास्तिकायादि धर्मा धर्मास्तिकायो गत्युपष्टंभ

अज्ञेव साउयज्ञेव अणाउयज्ञेव सइदियज्ञेव अणिंदियज्ञेव सवेयगज्ञेव अवेयगज्ञेव सरूविज्ञेव अरूविज्ञेव  
सप्पोगलज्ञेव अपोगलज्ञेव संसारसमावन्नगज्ञेव अससारसमावन्नगज्ञेव सासयचेव असासयचेव अ

जीवा योनिना । अयोनि योनिरहित जीव सिद्ध । आऊखा सहित जीव संसारी । आयु रहित सिद्ध । इंद्रीसहित संसारी जीव । इंद्रिय रहित असंसारी जीव । वेदसहित संसारी जीव । वेद रहित असंसारी जीव । शरीर सहित संसारी जीव । शरीर रहित असंसारी जीव । कर्म पुद्गल सहित संसारी जीव । कर्म पुद्गल रहित असंसारी जीव संसारमे ज्ञेते संसारी जीव । संसार रहित मोक्ष गया ते जीव । एक शासता जीव जनम मरण रहित ते असंसारी जीव एक अज्ञास्वता संसारी जीव जनम मरण करवाथी । एहजीव बे प्रकारे देखाया । हिवे अजीवना बेभेद देखाडे

गुण स्तदग्यो ऽधर्माधर्मास्तिकायः स्थित्युपष्टम्भाः सविपक्षवधादितत्त्वसूत्राणि चत्वारिप्राग्बुद्धिर्बन्धादयश्च क्रियायांसत्यामात्मनो भवतीति क्रियानि  
रूपणायाह ॥ दोकिरियेत्यादि ॥ सूत्राणि षट्त्रिंशत् करणक्रिया क्रियत इतिवा क्रियेति तेच द्वे प्रज्ञप्ते प्ररूपिते जिनै स्तत्र जीवस्य क्रिया व्यापारो जीव  
क्रिया तथा जीवस्य पुद्गलसमुदायस्य यत्कर्म्मार्थापथ तथापरिणमन सा अजीवक्रियेति इहचेयशब्दस्य चेशब्दस्यच पाठांतरे प्राकृतत्वा द्विर्भाव इतिचेवेत्यय  
च समुच्चयमात्रएवप्रतीयते अपिचेत्यादिवदिति ॥ जीवकिरियेत्यादि ॥ सम्यक्त तत्वग्रहण तदेवजीवव्यापारत्वात्क्रिया सम्यक्तक्रिया एवं मिथ्यात्वक्रियापि न  
वर मिथ्यात्वमतत्वग्रहण तदपि जीवव्यापारएवेति अथवा सम्यग्दर्शनमिथ्यात्वयोःसतो र्यभवतः तेसम्यक्तमिथ्यात्वक्रिये इति ॥ अजीवकिरियेत्यादि ॥ तत्र

गासेचेव नोऽग्नागासेचेव धम्मेचेव अधम्मेचेव बंधेचेव मोक्खेचेव पुब्बेचेव पावेचेव अग्नासवेचेव सवरेचेव  
वेयणाचेव णिज्जराचेव दोकिरियाणं पच्चत्ता तंजहा जीवकिरिणाचेव अजीवकिरियाचेव जीवकिरिणा

छे । आकाश ते व्योम । नथी आकाश ते धर्मास्तिकाय प्रमुख पांच । धर्मास्तिकाय चालता जीवने आधार आपें । अथवा विरति रूप धर्म । अधर्मास्ति  
काय जे थिरराखे । अथवा पाप ते अधर्म । कर्मनो आश्रव द्वारे करी सबध ते बध । मोक्ष ते सकल कर्मथी छूटवुं । पुण्यते दानादि करवुं पापतेजी  
वहिंसा । कर्म आविवानो मार्ग ते आश्रव । कर्म आविवाना मार्ग ने रोकवो ते संवर । वेदना जे दुखादि के करी पीडा । कर्मनो सोधवुं तेनिर्जरा  
करिये तेक्रिया कहिये तेहने जगवते बेप्रकारनी कहीछे । तेकहेछे जिहां जीवनी व्यापारछे तेजीव क्रियाकहिये । अजीव तेपुदल तेनो कर्म पणे प  
रिणमवो ते अजीवक्रिया जीवनी क्रिया बे प्रकारे कही जगवते तेकहे छे । एक सम्यक्त क्रिया साक्षात्तत्वेने सरदहनरूप व्यापार विशेष । एक

इरियावहियत्ति इरणमियां गमनं तद्विशिष्टः पंथा ईर्यापथ स्तत्र भवा ऐर्यापथिकी व्युत्पत्तिमात्र मिदं प्रवृत्तिनिमित्तत सु यत्किवलयोगप्रत्यय सुपशात मोहादित्रयस्य सातवेदनीयकर्मतया अजीवस्य पुद्गलराशे भवनं सा ऐर्यापथिकी क्रिया इह जीवव्यापारे पज्जीवप्रधानत्वविवक्षया जीवक्रियेय सुक्ता क र्मविशेषो वेर्यापथिकीक्रियोच्यते यतोभिहित ईरियावहियाकिरियादुविहा वज्जमाणावेइज्जमाणाया जापटमसमयेवहा बीयसमये वेइया सावडा पुडा वेइयाणिज्जित्ता सेयकालेअकम्मवाविभवइति तथासम्भाराया. कषायास्तेषु भवा साम्भारायिकी साहज्जीवस्य पुद्गलराशे. कर्मतापरिणतिरूपा जीवव्यापार स्या विवक्षणा दजीवक्रियेति साच सूक्ष्मसम्भारायान्ताना गुणस्थानकवता भवतीति । ३ । पुनरन्यथा द्वे दोकिरियेत्यादि । काइयाचेवत्ति । कायेन निर्वृत्ता कायिकी कायव्यापार स्तथा । आहिगरणियाचेवत्ति । अधिक्रियते आत्मा नरकादिषु येन तदधिकरण मनुष्ठानं वाह्य वा वस्तु इहव वाह्य विवक्षित ख

दुविहा पन्नत्ता तंजहा सम्मत्तकिरियाचेव मिच्छत्तकिरियाचेव अजीवकिरियादुविहा पन्नत्ता तंजहा ईरियावहियाचेव संपराइयाचेव दोकिरियात्त पन्नत्ता तंजहा काइयाचेव आहिगरणियाचेव काइया

मिथ्यात्वक्रिया खोटा तत्त्वनें सरदह्वुं जीवनो व्यापार । अजीव क्रिया वे प्रकारेकही जगवते तेकहै छे । मार्गे चालवा नी क्रिया ते ईर्यापथिकी क्रिया चालता कर्म बंधाये ते कर्म अजीव छे । चालवुं जीवनो व्यापारछे तो पणि अजीवनुं प्रधान पणुं इहां कहिवो । तेमाटे ए अजीव क्रिया इस सब ठेकाणे जाणवुं । संजलन कषाय थी उपजी क्रिया अजीव कर्म पुद्गलनी राशि ते सातमां दशमा गुणस्थाने होय । वली वे क्रियाछे तेकहैछे । कायाना व्यापारथी लागे ते कायिकी क्रिया । हल ऊखल खड्गादिके करी लागे ते अधिकरणिकी क्रिया । कायिकी वेप्रकारे छे तेकहैछे । पापथी

જાદિ તત્ત્વ મવાધિકરણિકીતિ । ૪ । કાયિકીતિધા । અણુવરયકાયકિરિયાચેવત્તિ । અણુપરતસ્યા વિરતસ્ય સાવચાત્ મિથ્યાદૃષ્ટે સમ્યગ્દૃષ્ટે વાં કાયક્રિ  
યોત્ષેપાદિલક્ષણા કર્મવન્ધનિવન્ધન મનુપરતકાયક્રિયા તથા । દુષ્પુત્તકાયકિરિયાચેવત્તિ । દુઃપ્રયુક્તસ્ય દુષ્ટપ્રયોગવતો દુષ્પ્રણિહિતસ્યે દ્વિયાણાણિ  
ત્યે ષ્ટાનિષ્ટવિષયપ્રાપ્તો મનાગ્ સ્વેદનિર્જ્વેદગમનેન તથા નિદ્રિયમાશિત્યા ડ્યુભમનઃસત્કલ્પદારેણા પયર્ગમાર્ગં અતિ દુર્બ્યવસ્થિતસ્ય પ્રમત્તસયતસ્યે ત્યર્થઃ  
કાયક્રિયા દુઃપ્રયુક્તકાયક્રિયેતિ । ૫ । પ્રાધિકરણિકીતિધા તત્ત્વ । સંયોજનાહિગરણિયાચેવત્તિ । યત્તૂર્વનિર્વર્તિતયોઃ સ્વદ્વત્ત્વમુષ્યાદિકયો રર્થયોઃ  
સંયોજનં ક્રિયતે સા સંયોજનાધિકરણિકો । તથા । ણિવ્વત્ત્વનાહિગરણિયાચેવત્તિ । યગાદિત સ્તયોઃ નિર્વર્તન સા નિર્વર્તનાધિકરણિકીતિ । ૬ । પુન ર  
ન્યથા હે ॥ પાઠસિયાચેવત્તિ ॥ પ્રદેષોમક્ષર સ્તેન નિર્હત્તા પ્રાદેષિકી તથા ॥ પારિયાવણિયાચેવત્તિ ॥ પરિતાપન ત્તાડનાદિદુઃસ્વવિશ્લેષલક્ષણ સ્તેન

કિરિયા દુવિહા પન્નત્તા તંજહા અણુવરયકાયકિરિયાચેવ દુષ્પુત્તકાયકિરિયાચેવ આહિગરણિયા કિ  
રિયા દુવિહા પન્નત્તા તંજહા સંયોજનાહિગરણિયાચેવ ણિવ્વત્ત્વનાહિગરણિયાચેવ દોકિરિયાણુ પન્નત્તા

નિવર્ત્યો નથી અવિરતી મિથ્યાત્વી અથવા સમ્યગ્ દૃષ્ટીનેં કાયા દલાવતે ચલાવતે પાપલાગે તે અણુપરતકાયિકી ક્રિયા । પાચૂં હટ્ટી આશ્રીનેં દૃષ્ટ અનિષ્ટ  
યસ્તુથી દુઃસુખ ઉપજે તે અથવા માંઠે મનના સકલ્પે કરે તે પ્રમત્ત સાધુનેં દુષ્પ્રયુક્ત કાયિકી ક્રિયા । અધિકરણિકી ક્રિયા । કાયાની ક્રિયા તે બેપ્ર  
કારે કહી મગવતે તે કહે છે । એક સંયોજનાધિકરણિકી જે સ્વદગને મુદ્ધિને જોડતી પાલીને હાથાની સંયોગ કરતી હિત્યાદિક । બીજી નિર્વર્તનાધિ  
કરણિકી જે સ્વદગાદિ અધિકરણકરાવી રાખવા ધરતી મૂસલ હલાદિક સજકરી રાખે । વલી વે ક્રિયા કહી મગવતે અજીવપુદગલતી તે કહે છે ।

निर्वृत्ता पारितापनिकी । ७ । आद्याद्विधा ॥ जीवपाउसियाचेवत्ति ॥ जीवे प्रद्वेषा जीवप्राद्वेषिकी तथा ॥ अजीवपाउसियाचेवत्ति ॥ अजीवे पाषाणादौ स्वलितस्य प्रद्वेषा दजीवप्राद्वेषिकीति । ८ । द्वितीयापि द्विधा ॥ सहस्यपारियावणियाचेवत्ति ॥ स्वहस्तेन स्वदेहस्य परदेहस्य वा परितापन इवतः स्वहस्तपारितापनिकी तथा ॥ परहथपारियावणियाचेवत्ति ॥ परहस्तेन तथैव तत्कारयतः परहस्तपारितापनिकीति । ९ । अन्यथा द्वे ॥ पाणाइवायकिरियाचेवत्ति ॥ प्रतीता तथा ॥ अपञ्चस्त्राणकिरियाचेवत्ति ॥ अप्रत्याख्यान अविरति स्तन्निमित्तकर्मबन्धो ऽप्रत्याख्यानक्रिया सा चाविरताना

तंजहा पाउसिञ्चाचेव पारियावणियाचेव पाउसियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीवपाउसियाचेव अजीवपाउसियाचेव पारियावणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सहस्यपारियावणियाचेव परहस्य पारियावणियाचेव दोकिरिञ्चान पन्नत्ता तंजहा पाणाइवायकिरियाचेव अप्पञ्चस्त्राणकिरियाचेव पा

प्रद्वेषिकी क्रिया जेकोई नो मत्सर अदेखाई करे ते । ताडनादि करी कोईने दुख दीये तेपरितापनिकी । प्रद्वेषिकी बेप्रकारे कही जगवंते ते कहैछे । एक जीव प्रद्वेषिकी जेकोई जीवथी द्वेषकरिवो । वीजी अजीव प्रद्वेषिकीजीते थांमे पापाणे अघडाये तिवारे ते थांभा प्रमुख ऊपरि द्वेषनो उपजिवो । परितापनिकी नां बे भेदछे ते कहैछे । पोताने हाथे पोताना शरीरनें तथा परना शरीरने दुखनो करिवो ते स्वहस्तपारियावणियाक्रिया । परहार्थे पोताने परनें परिताप करिवो ते परहस्तपारितापनिकी । वली क्रिया बे प्रकारे कही जगवंते ते कहे छे । प्राणातिपातिकी जे जीव हिंसाथी पापकर्म बंधायें । अविरतिथी पापकर्म बंधाये ते प्रत्याख्यानकी क्रिया अविरतिपातिकी क्रिया । प्राणातिपातकी क्रिया बे प्रकारे



॥

अयतीति ॥ १० ॥ आद्यादिधा ॥ सहत्यपाणाइवायकिरियाचेवति ॥ सहस्तेन स्वपाणा निर्वेदादिना परपाणा न्वा क्रोधादिना तिपातयतः सहस्तपा  
णातिपातक्रिया तथा ॥ परहृत्यपाणाइवायकिरियाचेवति ॥ परहस्तेन तथैव परहस्तपाणातिपातक्रियेति । ११ । द्वितीयापि द्विधा ॥ जीवप्रपन्न  
क्लाणक्रियाचेवति ॥ जीवविषये प्रत्याख्यानभावेन यो बन्धादि त्र्यापारः सा जीवाप्रत्याख्यानक्रिया तथा ॥ अजीवाप्रपन्नक्लाणक्रियाचेवति ॥ यद्  
जीवेण मयादिषु प्रत्याख्यानानां कर्मबन्धनं सा अजीवाप्रत्याख्यानक्रियेति । १२ । पुन रग्यथा हे ॥ आरंभियाचेवति ॥ आरम्भणमारम्भ स्तनभवा आर  
म्भिकी तथा ॥ पारिगृहियाचेवति ॥ परिग्रहे भवा पारिगृहिकीति । १३ । आद्या द्विधा ॥ जीवआरंभियाचेवति ॥ यज्जीवानां रभमाणस्यो प्रसूतः

पाइवायकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सहत्यपाणाइवायकिरियाचेव परहृत्यपाणाइवायकिरियाचेव अ  
पन्नस्काणकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीवपन्नस्काणकिरियाचेव अजीवपन्नस्काणकिरियाचेव दोकि  
रियानं पन्नत्ता तंजहा आरंभियाचेव पारिगृहियाचेव आरंभियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीवआ

कही ते कहै छे । पोताने हाथे पोतानां प्राणने अथवा क्रोधथी पर प्राणने ह्यो ते स्वहस्तप्राणातिपातकी क्रिया । इमज परहृत्य पोतानां प्राण  
ह्यो ते परहस्तप्राणातिपातकी क्रिया । अप्रत्याख्यानकी क्रिया बे प्रकारे छे ते कहै छे । जे वनस्पति सचित जीव सहितने विषे पचखाणाविना  
कर्म बंधायें ते अपचखाणकी क्रिया । मदिरादि अजीवने विषे पचखाण नही ते अविरति थी कर्मबंध ते अजीव अपचखाणकी क्रिया । वली छे क्रिया  
कही जगयते ते कहै छे । एक आरंभिकी । बीजी परिगृहिकी आरंभिकी छे प्रकारें कही जगयते ते कहै छे । जे सचित माटी प्रभुराना आरंभणी

कर्मबन्धन सा जीवारम्भिकी तथा ॥ अजीवारंभियाचेवत्ति ॥ यश्चाजीवान् जीव कलेवराणि पिष्टादिमयजीवाकृतींश्च वस्त्रादीन्वारभमाणस्य सा अजीवारम्भिकीति । १४ । एवपरिगृह्याचेवत्ति ॥ आरम्भिकीवद्विविधे त्वर्थः जीवाजीव परिग्रहप्रभवत्वा तस्या इतिभावः । १५ । पुनरन्यथाह ॥ मायावत्तियाचेवत्ति ॥ माया शास्त्र प्रत्ययो निमित्तंयस्याः कर्मवधक्रियाया व्यापारस्य सा तथा ॥ मिच्छादंसणवत्तियाचेवत्ति ॥ मिथ्यादर्शन मिथ्यात्व प्रत्ययो यस्याः सा तथेति । १६ । आद्या द्वेधा ॥ आयभाववकण्याचेवत्ति ॥ आत्मभावस्या प्रशस्तस्य वकनता वक्त्रीकरण प्रशस्ततलोपदर्शनतात्मभाववकनता वकनानाञ्च बहुत्वविवक्षाया भावप्रत्ययो न विरुद्धः साच क्रिया व्यापारत्वात् तथा परभाववकण्याचेवत्ति ॥ परभावस्य वङ्गनता वञ्चनता याकूटलेखक

रंजिष्णाचेव अजीवश्चारंजियाचेव एवंपारिगृह्यावि दोकिरियानु पन्नत्ता तंजहा मायावत्तिष्णाचेव मिच्छादंसणवत्तिष्णाचेव मायावत्तिष्णाकिरिष्णा दुविहा पन्नत्ता तंजहा ज्ञायज्ञाववकण्याचेव परज्ञाववकण्याचेव

कर्म बंधायें ते जीव आरंजिकी क्रिया । जीव रहित कलेवरनें अग्नि संस्कार तथा वस्त्रादि वणवानो आरंज तेथी कर्म बंधायें ते अजीवआरंजिकी किरिया । एम परिगृहिकीनां बे भेद जीव परिगृहिकी मनुष्यादिकनी अजीव परिगृहिया सुवर्ण गृहादिकनी । बली किरिया बेप्रकारे कही जग वंतें ते कहै छे । मायाप्रत्ययिकी जे कपट करिवाथीलागे । मिथ्यात्वदर्शनकी मिथ्याकरणीकरे तेथीकर्म बंधाये अदेवादिके देवादि बुद्धिनी धारवो ते मिथ्यात । माया प्रत्ययिकी नां बे भेदछे ते कहैछे । आत्मपरिणाम अभ्यंतर वांका बाहिर रूडाकरी देखाडे ते आत्मज्ञाव वकनता । कूटलेखादि के करी परनें बंचीये ते परज्ञाववकनता । मिथ्यादर्शन क्रिया बेप्रकारेछे ते कहैछे । पोताना शरीर प्रमाणथी जीवने ओळो अथवा अधिकोकरी

रणादिभिः सा परभावबंकनतेति यतीवदव्याख्येयं ॥ तंतंभायमायरइ जेणपरोवंचिज्जइकूडलेहकरणाईहिति ॥ १७ ॥ द्वितीयापिहेधा ॥ ऊणाइरित्त  
 मिच्छादंसणवत्तियाचेवत्ति ॥ ऊनं स्वपाणाद्धीन मतिरिक्तं ततोधिक मात्मादिवसु तद्विय मिथ्यादर्शनं तदेवप्रत्ययो यस्याः सा जनातिरिक्तमिथ्यादर्शन  
 प्रत्ययेति । तथाहि । कोपिमिथ्यादृष्टि रात्मान शरीर व्यापकमपि । अणुष्टपर्यमात्रं यवमात्र श्यामाकतदुलमात्रं चेति हीनतया चेति । तथान्यः पचध  
 नुः शतिक सर्वस्थापक चेत्यधिकतया भिमन्यते । तथा तव्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तियाचेवत्ति । तस्मादूनातिरिक्तमिथ्यादर्शना द्वातिरिक्ता मिथ्यादर्शन  
 नास्त्येवा त्मे त्यादिमतरूप प्रत्ययो यस्याः सा तथेति । १८ । पुन रन्यथा हे दिष्ठियाचेवत्ति । दृष्टे जीता दृष्टिजा अथवा दृष्टं दर्शनवस्तुवानिमित्ततयाय

मिच्छादंसणवत्तिआकिरिआ दुविहा पन्नत्ता तंजहा ऊणाइरित्तमिच्छादंसणवत्तियाचेव तव्वइरित्तमिच्छा  
 दंसणवत्तियाचेव दोकिरियाचेव पन्नत्ता तं० दिष्ठियाचेव पुठिआचेव दिष्ठियाकिरिया दुविहा प० तं०

मानें ते जनातिरिक्त मिथ्यादर्शन क्रिया जिमकोईक मिथ्याती शरीर प्रमाण आत्माने कहैं जे अगूठाना पर्वमात्र यव जेवडो सांजलिये धान्यकण  
 जेवडो आत्माळे । कोईकहैं पावसे धनुषयी पणि जीव तेहथी मोटोळे एह मिथ्यात्व बचन जगवतें जेहनूं जेवडो शरीर तेहनूं तेवडो जीव मान  
 कहिवो हाथीनं हाथीना शरीर प्रमाणं अनें कुंथुग्राने कुंथुग्राना शरीरप्रमाणे जीवळे । वली केतलाई मिथ्याती कहैंळे जे हीणो तथा अधिको  
 आत्मा अथवा जीव हीजनथी पंचजूत और जीव मिलाळे ते तदव्यतिरिक्त मिथ्यादर्शन क्रिया । वली बे क्रिया ते कहैं छे । दृष्टि जीवाथी कर्म  
 बंधार्ये जवाई प्रमुख जीतां ते दृष्टिकी । पापनूं प्रश्न पूछिवानी तथा फरसवूं तेहनी । दृष्टीनी क्रिया बेप्रकारेकही ते कहैं छे । जीव देखवानी

स्यामस्तिसादृष्टिका दर्शनार्थं या गतिक्रिया दर्शना द्वा यत्कर्मैति सा दृष्टिजा दृष्टिका वा । तथा पुष्टियाचेवति । पृष्टिः पृच्छा ततो जाता पृष्टिजाप्रश्न  
जनितो व्यापारः । अथवा पृष्ट प्रश्नः वस्तु वा तदस्ति कारणत्वेन यस्यां सा पृष्टिकेति । अथवा स्पृष्टिस्पर्शनं ततोजातास्पृष्टिजातयैवस्पृष्टिकापीति । १९ ।  
आद्याद्वेधा । जीवदिष्टियाचेवति । या अश्वादिदर्शनार्थगच्छतः । तथा अजीवदिष्टियाचेवति । अजीवानां चित्रकूर्मादीनां दर्शनार्थं गच्छतो या सा अजी  
वदृष्टिकेति २० । एवपुष्टियाचेवति । एवमिति जीवाजीवभेदेन द्विधैव । तथा हि । जीवमजीव वा रागद्वेषाभ्यां पृच्छतः स्पृशतो वा या सा जीवपृष्टिका जीव  
स्पृष्टिका वा अजीवपृष्टिका अजीवस्पृष्टिकावेति । २१ । पुन रन्यथाद्वे पाडुच्चियाचेवति । बाह्यवस्तु प्रतीत्याश्रित्य भवा सा प्रातीतिका तथा सामतोवणि  
वाइयाचेवति समतात्सर्वतः उपनिपातो जनमीलक स्तस्मिन् भवा सामतोपनिपातिकीति । २२ । आद्या द्वेधा जीवपाडुच्चियाचेवति । जीव प्रतीत्य यः क  
र्मबंधः सा तथा । तथा अजीवपाडुच्चियाचेवति ॥ अजीवंप्रतीत्य यो रागद्वेषोद्भवस्तज्जो योवधः सा अजीवप्रातीतिकीति । २३ । द्वितीयापि द्विधैवेत्यतिदिश्य न्नाह

जीवदिष्टियाचेव अजीवदिष्टियाचेव एवंपुष्टियावि दोकिरियात्तु प० तं० पाडुच्चियाचेव सामंतोवणिवाइया  
चेव पाडुच्चियाकिरिष्णादुविहा प० तं० जीवपाडुच्चिष्णाचेव अजीवपाडुच्चिष्णाचेव एवं सामंतोवणिवाइया

क्रिया जे हाथी घोडा जीवा जातां कर्म लागे । चित्रामण प्रमुख जीवा जातां पापबंधे ते अजीव दृष्टिका । इमज जीव आश्री स्पर्शकीक्रिया  
रागद्वेषे जीव अजीवनो प्रश्नपूछे तथा फरसते । वली बे क्रिया छे ते कहै छे बाहिरनी वस्तु आश्रीनें होय ते प्राणातिपातिकी । सर्व प्रकारे जनना  
मेलवाथी उपनी ते सामंतोपनिपातिकी । प्रातीतिकी बे प्रकारे छे ते कहै छे । जीव आश्री कर्म बंधे ते जीव प्रातीतिकी अजीव आश्री राग

एवं सामन्तोवणिवाइयस्ति ॥ तथाहि कस्यापि षंडो रूपवानस्ति तं च जनो यथायथाप्रलोकयति प्रशंसयति च तथा तथा तत्स्वामी हृष्यतीति जीवसामंतो प  
 निपातिकी तथा रथादौ तथैव हृष्यतः । अजीवसामतोपनिपातिकीति । २४ । अन्यथा हे साहलियाचेवत्ति । स्वहस्तेन निर्वृत्ता स्वाहस्तिकी । तथा णेसल्यि  
 याचेवत्ति । निसर्जननिसृष्ट चेपणमित्यर्थः । तत्र भवा नैसृष्टिकी निसृजतो यः कर्मबन्ध इत्यर्थः निसर्ग एव चेति । २५ । तत्राद्या द्वेधा । जीवसाहलिया  
 चेवत्ति । यत्स्वहस्तगृहीतेन जीव मारयति सा जीवस्वाहस्तिकी । तथा अजीवसाहलियाचेवत्ति । यच्च स्वहस्तगृहीतेनैवा जीवेन खज्जादिना जीव मार  
 यति सा अजीवस्वाहस्तिकीति । अथवा स्वहस्तेन जीवताडयत एका । अजीव ताडयतो न्येति । २६ । द्वितीयापि जीवाजीवभेदे वेत्यतिदिश न्नाह । एव  
 णेसल्यियाचेवत्ति । तथाहि । राजादिसमादेशाद्यदुदकस्य यत्रादिभिर्निसर्जन सा जीव नैसृष्टिकीति । यत्तु काण्डादीनाधनुरादिभिः सा अजीव नैसृष्टिकी

वि दोकिरियात्तु पन्नत्ता तंजहा साहलियाचेव णेसल्यियाचेव साहलियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा  
 जीवसाहलियाचेव अजीवसाहलियाचेव एवं णेसल्यियावि दोकिरियात्तु पन्नत्ता तंजहा अणवणियाचेव

द्वेषणी ऊपनी जेते अजीव प्रातीतिकी । सामंतोपनिपातिकी बे प्रकारे । कोई एक बलद रूपवंत देखी लोक वखाणे तेहनी शोजा वर्णवे तिमतिम  
 ते वैलनो धणी सुख पामे ते जीव सामतोपनिपातिकी । इमज अजीव सामंतोपनिपातिकी कहिवी । बे क्रिया कही जगवतं ते कहेंछे । पोताने  
 हाथणी ऊपनी ते स्वहस्तिकी । पाखाणादिक नांखवाणी ऊपनी ते नैसृष्टिकी । स्वहस्तिकी क्रिया बे प्रकारें कही ते कहेंछे । पोताना हाथे जाली  
 जीवें करी जीवने हणें ते जीव स्वहस्तिकी पोतानां हाथें अजीव खड्गादिके अजीवने हणें ते अजीव स्वहस्तिकी । इस राजादिकनी आग्याये यत्रने

ति । अथवागुर्वादी जीव शिष्यं पुत्रं वा निसृजती ददत एका अजीव पुन रेषणीय भक्तपानादिक निसृजती ददतीत्येति । २७ । पुनरन्यथा हि आणवणिया चेवति । आज्ञापनस्या देशनस्येय माज्ञापन मेवेत्याज्ञापनी सैवाज्ञापनिका तज्जः कर्मवन्ध, आदेशनमेववेति । आनायनवा आनायनी । तथावेयारणि याचेवति । विदारणविचारणवितारण वा स्वार्थिकप्रत्ययोपादाना द्वैदारणोत्यादिवाच्यमिति । २८ । एतेचदेअपिद्वेधाजीवाजीवभेदादिति<sup>१</sup> । तथाहि । जीवमाज्ञापयतअनायतोवा परेणजोवाज्ञापनी जीवानायनीवा एवमेवाजीवविषया अजीवाज्ञापनी अजीवानायनी वेति । २९ । तथावेयारणियति । जीवमजीववाविदारयतिस्फोटयतीति अथवा । जीवमजीववा असमानभागेषु यो विक्रीणाति द्वैभाषिकोविचारयति । परित्यक्त्वावेइत्तिभणितहोत्ति । अथवा जीवपुरुषवितारयतिप्रतारयति वञ्चयतीत्यर्थोऽसद्गुणैरेतादृशस्तादृशस्त्वमिति पुरुषादिवितारणबुद्धेववा जीवभणत्येतादृशमेतदिति यत्ता । जीववेयारणिया अजीववेयारणियावति । एतत्सर्वमतिदेशेनाह । जहेवणेसत्थियति । ३० । अथवा हेअणाभोगवत्तियाचेवति अनाभोगोज्ञानादि अज्ञान प्रत्ययो निमित्त य

वेयारणियाचेव जहेव णेसत्थिया दोकिरियानु पन्नत्ता तंजहा अणान्नोगवत्तियाचेव अणवकंखवत्तियाचेव  
अणान्नोगवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा अणाउत्तअायणयाचेव अणाउत्तपमज्जाणयाचेव अण

विषे पाणी नाखुं । वे क्रिया कही भगवंते ते कहैं छे । स्वामीनी आग्याथी कर्म बंधाये ते आग्यापनी । विदारवुं छेदवुं तेहथी कर्म बंधे ते वि  
दारिकी । नैसस्त्रिकीनी परे वे प्रकारे कही । यली वे प्रकारे क्रिया कही ते कहैं छे । उपयोगविना कर्म बंधे ते अणान्नोगवत्तिया । पोतानां शरी  
रनी अपेक्षा विना क्रिया लागे ते अनवकांक्षा । अणाभोगवत्तिया वे प्रकारे ते कहैं छे । उपयोग विना वस्त्रादिकनी लेवुं । उपयोग विना पुंजयुं

स्याः सा तथा प्रणाकंखवत्तियाचेवत्ति । अनाकांक्षास्वशरीरादनपेचत्वं सैव प्रत्ययी यस्याः सा नवकांक्षाप्रत्ययेति । ३१ । प्रायादिधा । प्रणाउत्तप्राश्न  
याचेवत्ति । अनायुक्ताअनाभोगवाननुपयुक्तप्रत्यर्थः तस्यादानता वस्तादिविषये गृह्यता अनायुक्तादानता ॥ तथा प्रणाउत्तपमज्जण्याचेवत्ति अनायुक्तस्यैव  
पातादिविषयाप्रमार्जनता अनायुक्तप्रमार्जनता प्रवृत्तताप्रत्ययः स्वार्थिक प्राकृतत्वेन प्रादानादीनां भावविवचयावेति । ३२ । द्वितीयापि द्विधा प्रायसरौरे  
त्यादि तनाकशरीरा नवकांक्षाप्रत्यया सा स्वशरीरचतिकाशिकर्माणि कुर्वतः तथा परशरीरचतिकाशितु कुर्वतो द्वितीयेति । ३२ । दोकिरियेत्यादिनीणि  
स्त्राणिकव्यानि नवरं प्रेमरागोमायालोभलक्षणः द्वेषः क्रोधमानलक्षण इति । ३४ । यदानव्याख्यातंतत्सुगमत्वादिति एताश्चक्रियाः प्रायोगर्हणीया इति गृही

वकंखवत्तिया किरिया दुविहा पन्नत्ता अणयसरौरणवकंखवत्तियाचेव परसरौरणवकंखवत्तियाचेव दो  
किरियानु पन्नत्ता तंजहा पेज्जवत्तिअचेव दोसवत्तिअचेव पेज्जवत्तियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा  
मायावत्तियाचेव लोन्नवत्तियाचेव दोसवत्तियाकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा कोहेचेव माणेचेव दुविहा

प्रमार्जितुं तेथी कर्म बंध । अणवकांक्षा क्रिया बे प्रकारे ते कहैं छे । पीताना शरीरथी पापलागे तेहवा कर्म करते । परनां शरीरथी पापकरतां  
किरिया लागे ते परशरीर अणवकंखवत्तिया । वली बे क्रिया कही ते कहैं छे । प्रेम स्नेहनी क्रिया द्वेष कोपनी क्रिया । प्रेमनी क्रिया बे प्रकारे  
कही ते कहैं छे । लोन्नघणी करवी ते लोन्ननी राग क्रिया लोभथी रागधरे । द्वेषनी किरिया बे प्रकारे छे ते कहैं छे । क्रोधथी कर्म बंधायें मानथी  
कर्म बंधाये जेम कोणिक राजायें विशाला नगरी जाजी । एसर्व क्रिया गर्हणीय छैं एहथी तेगर्हणा ते कहैं छे । पापनी निंदा तेगर्हणा । एकमने

माह ॥ दुविहागरिहेत्यादि ॥ विधानविधा द्वैविधेभेदीयस्याः साद्विविधागर्हणं गर्हा दुश्चरितं प्रतिकुत्सासाचस्वपरविषयत्वेन द्विविधा सापिमिथ्यादृष्टेरनुपयुक्त  
सम्यग्दृष्टेय द्रव्यगर्हाप्रधानगर्हेत्यर्थः द्रव्यशब्दस्याप्रधानार्थत्वादुक्तं च अप्याहनेविद्ब्रह्मकथ्यइदिष्टोद्बुद्धसद्बोत्ति अगारमद्ब्रोजहदब्बायरिओसयाभब्बोत्ति  
१ ॥ सम्यग्दृष्टेस्तूपयुक्तस्य भावगर्हेति चतुर्धागर्हणीयभेदाद्बहुप्रकारावासाचेहकरणपेक्षया द्विविधोक्ता तथाचाह ॥ मणसावेगेगरिहइत्ति ॥ मनसाचेतसा वा  
शब्दो विकल्पार्थोऽवधारणार्थोवा ततोमनसैवनवाचेत्यर्थः कायोत्सर्गस्थो दुर्मुखसुनुखाभिधानपुरुषद्वयनिंदिता भिष्टुतस्तद्वचनोपलब्धसामतपरिभूतस्वतन  
यराजवात्तोमनसासमारब्धपुत्रपरिभवकारिसामतसग्रामो वैकल्पिकप्रहरणक्षये स्वतीर्थकग्रहणार्थथापारितहस्तसस्पृष्टलुठितमस्तक स्ततःसमुपजातपश्चा  
त्तापानलज्वालाकलापदन्द्यमानसकलकर्मेन्धनोराजर्षिप्रसन्नचन्द्रइव एकः कोपिसाध्वादिर्गर्हितेजुगुप्सितेगर्हमिति गम्यते तथा वचसावा वाचा अथवा  
वचसैवनमनसाभावतो दुःश्चरितादिरक्तत्वाज्जनरञ्जनार्थङ्गर्हाप्रवृत्ताङ्गारगर्दकादिप्रायसाधुवत् एकोन्योगर्हतेइति अथवा ॥ मणसावेगत्ति ॥ इहअपिचसम्भा  
वनेतेनसम्भाव्यते अयमर्थोऽपिमनस्यैकोगर्हतेन्योवचसेति अथवामनसापिनकेवलंवचसाएकोगर्हते तथावचसापिनकेवलमनसाएकइति । सएवगर्हतेउभयथाप्ये  
कएवगर्हतइतिभावः अन्यथागर्हाद्वैविध्यमाह ॥ अहवेत्यादि ॥ अथवेति पूर्वोक्तद्वैविध्यप्रकारापेक्षया द्विविधागर्हाप्रज्ञप्तेति प्रागिव अपिः सम्भावनेतेन अपि

गरिहा पन्नत्ता तंजहा मणसावेगेगरिहइ वयसावेगेगरिहइ अहवागरिहा दुविहा पन्नत्ता तंजहा दीहंणगे

गर्हे जिम सुमुख दुमुखना बचनथी पापकरी निंदवो प्रसन्नचंद्रनी परे । एक लोक ने रींभविवाने अर्थे वचनें गर्हे पणि मनथी नथी अंगार सदे  
नकाचार्य नी परे । बली गर्हणा बे प्रकारे छे ते कहै छे । एक दीर्घ कालनी गर्हणा जन्म पर्यंत नां पाप एक एक निंदवो । एक प्राणी थोडा



दीर्घां बृहतीं अक्षां कालं यावदेकः कोपि गर्हते गर्हणीय माजन्मापी त्वर्थो न्यथा वा दीर्घत्वं विवक्षया भावनीय मापेक्षितत्वात् दीर्घङ्गस्त्वयो रिति एवम  
 पि ऋस्वामत्या यावदेकोन्य इति अथवा दीर्घामेव यावत् ऋस्वामेव यावदिति व्याख्येय मपेरवधारणार्थत्वा दिति एकएव वा द्विधा कालभेदेन गर्हते भावभेदा  
 दिति अथवा दीर्घं ऋस्व स्वा कालमेव गर्हत इति अतीते गर्ह्यं कर्मणि गर्हाभवति भविष्यतितु प्रत्याख्यान उक्तञ्च अद्रयनिदामि पडुप्पन्नंसवरेमि अणागय  
 पञ्चक्वामौति प्रत्याख्यानमाह ॥ दुविहेपञ्चक्वाणेइत्यादि ॥ प्रमादप्रातिकूल्येन मर्यादया ख्यानं कथनमप्रत्याख्यान स्विधिनिषेधविषया प्रतिज्ञेत्यर्थः तच्च द्रव्यतो  
 मिथ्यादृष्टेः सम्यग्दृष्टेर्वा नुपयुक्तस्य कृतचतुर्मासप्रत्याख्यानाया पारणकदिनमासदानप्रवृत्ताया राजदुहितु रेवेति ॥ भावप्रत्याख्यान सुपयुक्तसम्यग्दृष्टे रिति  
 तच्च देशसर्वमूलगुणोत्तरगुणभेदा दनेकविधमपि करणभेदा द्विविध माहच मनसाचैकः प्रत्याख्याति वधादिक निवृत्तिविषयीकरोति शेष प्रागिवेति प्रका  
 रान्तरेणापि तदाह ॥ अहवेत्यादि ॥ सुगम ज्ञानपूर्वकं प्रत्याख्यानादिमोक्षफल मतआह ॥ दोहिठाणेहिइत्यादि ॥ द्वाभ्या स्थानाभ्या गुणाभ्या सपत्नी युक्ती

अष्टं रहस्संएगेअष्टं दुविहे पञ्चस्काणे पन्नत्ते तंजहा मणसावेगे पञ्चस्काति वयसावेगेपञ्चस्काति अहवा  
 पञ्चस्काणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा दीहंएगेअष्टपञ्चस्काति रहस्संएगेअष्टपञ्चस्काति दोहिंठाणेहिं अणपरे

कालना कीधा पापनी गर्हणाकरे दश वर्ष नां पनरह बर्षनां कीधा पापनी निंदाकरै । अंतकालनी निदा । पचखाणना बे प्रकार छे ते कहै छे  
 एक मनथी जाव शुद्धे पचखाणकरे ते समकित दृष्टी जीव । एक वचने पचखाणकरे मन विना ते मिथ्यात्व । अथवा पचखाण बे प्रकारेछे ते कहै  
 छे । एक प्राणी दीर्घ अक्षाकाल नो पचखाणकरे । एक थोडा कालनो पचखाणकरे दशवर्षनो पनरह बर्षनो पचखाण करे । बे प्रकारे गुणसहित जे

नास्यागारङ्गेह मस्ती त्यनगारः साधु नास्यादिरस्ये त्यनादिकं तत् अवदग्रं पर्यन्त स्तत्रास्ति यस्य सामान्यजीवापेक्षया तदनवदग्रं तत् दीर्घा अद्वा कालो यस्य तदीर्घा इ न्तत् मकारआगमिको दीर्घावाध्वा मार्गो यस्मिन् स्तदीर्घाध्व तच्चतुरन्तं चतुर्विभाग न्नरकादिगतिविभागेन दीर्घत्व प्राकृतत्वा दिति ससारकान्तार भवारण्य व्यतिव्रजे दतिक्रमे तद्यथा विद्ययाचैव ज्ञानेनचैव चरणेनचैव चारित्र्येणचैवेति ॥ इहच ससारकान्तारव्यतिव्रजन प्रतिविद्याचरण यो यौगपद्येनैव कारणत्व मवगन्तव्य मेकैकशो विद्याक्रिययो रहिकार्ये स्वप्नकारणत्वात् नन्वनयोः कारणतया अविशेषाभिधानेपि प्रधान ज्ञानमेव न च रण अथवा ज्ञान मेवैक द्वारण न्तु क्रिया यतो ज्ञानफलमेवासौ किञ्च यथा क्रिया ज्ञानस्य फल न्तथा शेषमपि यत्क्रियानन्तर मवाप्यते बोधकालेपि य ज्ञेयपरिच्छेदात्मक यच्च रागादिविनिग्रहमय मेषा मविशेषेण ज्ञान कारण यथा मृत्तिका घटस्य कारण भवतीति तदन्तरालवर्तिनां पिण्डशावकस्था सकोशकुशूलादीना मपि कारणता मापद्यते तथेह ज्ञानमपि भावाभावस्य तदन्तरालवर्तिना च तत्त्वपरिच्छेदसमाधानादीनां कारणमिति यच्चा नुस्सर णमात्रमत्रपूतविषमक्षणनभोगमनादिक मनेकविधफल मुपलभ्यते साक्षा त्तदपि क्रियाशून्यस्य ज्ञानस्य यथाचैतत् दृष्टफल तथा अदृष्ट मप्यनुमीयत इति आहच आहपहाणनाण णचरित्तनाणमेववासुद्धं कारणमिह नउकिरिया साविहुनाणप्फलजम्हा ॥ १ ॥ जहसानाणप्फल तहसेसपितहवोहकालेवि

सपन्ने ण्णगारे ण्णार्इयं ण्णवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं विइवएज्जा तंजहा विज्जाएचेव चर

अणगार साधु तेहनी आदिनथी नदीर्घ मोटोकाल । जेहनो अंत छेहडो तथा मार्गछे जेहनो च्यार गति नरक देव मनुष्य तिर्यच एच्यारें करी दीर्घ मोटी ससार रूप अटवी उतरे अतिक्रमे साधु ते छे गुण भेदक ते कहैं छे । ग्यानेकरी ने जवने तरे । ग्यान क्रियाथी मोक्ष तथा चारित्र थकी

नेयपरिच्छेयमय रागादिविणिग्गहोजोय ॥ २ ॥ जंचमणोचिंतियमं तपूयविसमक्खणाइबहुभेयं फलमिहतंपच्चक्खं किरियारहियस्सनाणस्सत्ति ॥ ३ ॥ अ  
 चोच्यते यत्तावदुक्तं ज्ञानमेवप्रधानं ज्ञानमेव चैकं कारणं न क्रिया यतो ज्ञानफलमेवासाविति ॥ तद्युक्तं यतो यतएव ज्ञानात् क्रिया तत श्रेष्ठफलप्राप्ति  
 रतएवोभयमपि कारणं मिथ्यते अन्यथाहि ज्ञानफलं क्रियेति क्रियापरिकल्पनं मनर्थकं ज्ञानमेवहि क्रियाविकलमपि प्रसाधयेन्न च साधयति क्रियाभ्युप  
 गमात् ज्ञानक्रियाप्रतिपत्तौ च ज्ञानं परम्परयोः पकुरुते अनन्तरञ्च क्रिया यतस्तस्मात् क्रियैव प्रधानतरं युक्तं कारणं नाप्रधानं मकारणं चेति अथवा युग  
 पदपकुरुतस्तत उभयमपि युक्तं नयुक्तं मप्राधान्यं क्रियाया अकारणत्वं चेति यः पुनरकारणत्वं मेव क्रियायाः प्रतिपद्यते तं प्रतीदं विशेषेणीच्यते क्रिया  
 हि साक्षात् कारित्वात् कारणमन्य ज्ञानन्तु परम्परोपकारित्वाद्दमत्यमतः को हेतुर्यदत्यविहाया नत्य कारणं मिथ्यते अथ सहचारिताङ्गीक्रियते अ  
 नयो रतोपि ज्ञानमेव कारणं नक्रियेत्यत्र नहेतु रस्तीति यच्चोक्तं बोधकालेपीत्यादि ॥ तत्र ज्ञेयपरिच्छेदो ज्ञानमेवेति रागादिसमञ्चसयमक्रियैव ज्ञान  
 कारणाद्भवेदिति प्रतिपद्यामहे किन्तु तत्फले भववियोगाख्येयविचारो यदुत किं तत् ज्ञानस्य क्रियायास्तदुभयस्य वा फलमिति तत्र न ज्ञानस्यैव क्रियाफ  
 लत्वात्तस्य नापिकेवलं क्रियायाः क्रियामात्रत्वात् उक्तं क्रियावत् ततः पारिशेष्याज्ज्ञानसहितक्रियाया इति यच्चोक्तं अनुरमृतिज्ञानमात्रादीनां फलमु  
 पलभ्यते तत्र ब्रूमो मन्तेश्वपि परिजपनादिक्रियायाः साधनभावो न मन्त्रज्ञानस्य प्रत्यक्षविरुद्धमिति चेद्यतो दृष्टं हि क्वचित् मन्त्रान् स्मृतिमात्रज्ञानादि  
 ष्टफलमिति अचोच्यते न मन्त्रज्ञानमात्रनिर्वर्त्यं तत्फलं तज्ज्ञानस्या क्रियत्वात् इह यदक्रियं न तत्कार्यस्य निर्वर्तकं दृष्टं यथा काशकुसुमं यच्च निर्वर्तकं त  
 दक्रियं न भवति यथाकुलालः नचेदप्रत्यक्षविरुद्धं नहि ज्ञानं साक्षात्फलमुपहरेदुपलक्षते इति अथ यदि न मन्त्रज्ञानकृतं तत्फलं ततः कुतः पुनस्त  
 दिति तत्समयनिवृद्धदेवताविशेषेभ्य इति ब्रूम स्तेषां हि सक्रियत्वेन न क्रियानिर्वर्त्यमेतत् न मन्त्रज्ञानसाध्यमिति आह च तोतकत्तो [आचार्य] भण्ड

तस्ममयनिवद्धदेवओवहिय किरियाफलंचियजओ नसतणाणोवओगस्मत्ति ॥ १ ॥ ननु सम्यग्दर्शनं ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गं इति श्रूयते इह तु ज्ञानक्रियाभ्यां मसा वुक्त्त इति कथं न विरोधः अथ हि स्थानकानुरोधा देव निर्देशेऽपि न विरोधो नैव भवधारणगर्भत्वा निर्देशस्य अत्रोच्यते विद्याग्रहणेन दर्शनं सम्यग्विरुद्धं दृष्टव्यं ज्ञानभेदत्वात् सम्यग्दर्शनस्य यथा ह्यवबोधो धात्मकत्वे मति मतेरनाकारत्वा दवग्रहे हेतुदर्शनं साकारत्वा चाऽपायधारणे ज्ञानमुक्तमेव मध्यवसायात्मकत्वे सत्यं वायस्य रुचिरूपीशः सम्यग्दर्शनं भवगमरूपीशो ऽवाय एवेति न विरोधो भवधारणं तु ज्ञानादिव्यतिरेकेण नान्यउपायो भवत्यवच्छेदस्येति दर्शनार्थमिति विद्याचरणे च कथं मात्मन लभत इत्याह ॥ दोठाणा इत्यादि ॥ सूत्राख्ये कादश हे स्थाने देवसुनी ॥ अपरियाणित्तत्ति ॥ अपरिज्ञाय अपरिज्ञया यथैता वारम्भपरिग्रहा वनर्थाय तथा अल ममाभ्या मिति परिहाराभिमुख्यद्वारेण प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च ब्रह्मदत्तवत्तयो रनिर्विण्ण इत्यर्थः ॥ अपरिया इत्तत्ति ॥ क्वचित्पाठे स्तत्र स्वरूपत स्तावदपंर्यादाया ऽग्रहीत्यर्थः आत्मानो नैव केवलिप्रज्ञप्तं जिनोक्तं धर्मं लभेत श्रवणं तथा श्रवणभावेन श्रोतुमित्यर्थः तद्यथा आरम्भा कथादिद्वारेण पृथिव्याद्युपमर्द्दास्तान्परिग्रहा धर्मसाधनव्यतिरेकेण धनधान्यादयस्तानिह चैकवचनप्रक्रमेऽपि व्यक्त्यपेक्ष्य बहुवचनं भवधारणसमुच्चयो खबुद्ध्या ज्ञेयाविति केवला शुद्धा बोधि दर्शनं सम्यक्त्वं मित्यर्थो बुद्धेयता ऽनुभवेत् अथवा केवलया बो

णेणचेव दोठाणाई अपरियाणिता श्यायाणोकेवली पन्नत्तंधम्मं लभेज्जा सवणयाए तंजहा श्रारंजेचेव परिग्गहेचेव दोठाणाइं अपरियाइत्ता श्यायाणोकेवलं बोधिबुज्जिज्जा तंजहा श्रारंजेचेव परिग्गहेचेव दोठा

ग्यान चारित्र मोक्ष । वे यानक ग्यान बुद्धिये जायया विनां जे अनर्थनां हेतु परिहरेवा लाडवा एम जाययाविना आत्मा जीव केवलीनो जारयो

ध्येति विभक्तिपरिणामात् बोध्य जीवादीतिगम्यते बुध्येत अदधीतेति सुखो द्रव्यतः शिरोलोचन भावतः कषायाद्यपनयनेन भूत्वा सपद्य अगाराद्देहानि  
 प्क्रमेतिगम्यते केवला मित्यस्येह सम्बन्धा त्वेवलाम्परिपूर्णां म्विशुद्धा वा अनगारिता प्रव्रज्या प्रव्रजेत् यायादिति ॥ एवमिति ॥ यथा प्राक् तथोत्तर वा  
 क्येवपि ॥ दोठाणादित्यादि ॥ वाक्य पठनीयमित्यर्थः ॥ ब्रह्मचर्येणा ब्रह्मविरमणेन वासी रात्रौ स्वापः तत्रैव वा वासी निवासी ब्रह्मचर्यवासः तमावसे  
 कुर्यादिति सयमेन पृथिव्यादिरक्षणलक्षणेन सयमये दात्मान मिति सवरेणाश्रवनिरोधलक्षणेन सवृणुया दाश्रवद्वाराणीतिगम्यते केवल परिपूर्णं स  
 र्वस्वविषयग्राहक ॥ आभिणिबोद्धियणाण ॥ अर्थाभिमुखो विपर्ययरूपत्वान्नियतो ऽसशयस्वभावत्वा बोधोवेदन माभिणिनिबोध, स एवा भिनिबोधिक  
 तच्चतज्ज्ञान चेत्याभिनिबोधिकज्ञान मिद्रियानिद्रियनिमित्त ओघतः सर्वद्रव्यसर्वपर्यायविषय ॥ उप्पाडेज्जति ॥ उत्पादयेदिति तथा एवमित्यनेनोत्तरप

णाइं अन्नोकेवलमुन्नेनविज्ञा अगारात्तुणगारियपत्तेज्जा तंजहा अरंजेचेवपरिग्गहेचेव एवंणोकेवलं वं  
 नचेरवावि समावसेज्जा णोकेवलेण सजमेणंसंजमेज्जा नोकेवलेणंसंवरेण सवरेज्जा नोकेवलमाभिणिबोहि

धर्म न पावे । ते कहै छे । आरज अनर्थ जाणी ठाडे परिगृह अनर्थ जाणी ठाडे । एम बे थानक जाणया विना मुड लोचकरावी द्रव्यथी जावथी  
 कषाय मुड । केवल शुद्ध गृहस्थपणी मूकी अणगारपणी पाली नसके तेकहै छे । आरज न ठाडै । परिगृह न मूकै । तेप्राणी इम एह बे थानक  
 विना जाणया शुद्धशील पाली न सके सेवी न सके । एम शुद्ध सयम नपामे छकायरत्ता रूप सयम आरज परिगृह मूक्या विना । इम शुद्ध सयम  
 नपामे । एम आरज परिगृह मूक्या विना शुद्ध सर्ववस्तुग्राहक मतिग्यान पणि पामे नही । इम इग्यारह पद जांणिवा । श्रुतग्यान सिद्धातनु ची

देषु नो केवल उपाडेज्जन्ति द्रष्टव्यं ॥ सुवर्णाणति ॥ श्रूयते तदिति श्रुत शब्द एव सच भावश्रुतकारणत्वाज् ज्ञानं श्रुतज्ञानं श्रुतग्रन्थानुसारि ओघतः सर्वद्रव्य  
 सर्वपर्यायविषय मत्तरश्रुतादिभेद मिति ॥ तथा ओहिणाणति ॥ अवधीयते अग्नेनास्मादस्मिन्वे त्यवधिः अवधीयत इत्यधीधोविस्तृत स्मरिच्छिद्यते मर्या  
 दया वेति अवधिज्ञानावरणक्षयोपशम एव तदुपयोगहेतुत्वा दिति अवधानस्वा ऽवधि विषयपरिच्छेदनमिति अवधिश्चासौ ज्ञानञ्चेत्यवधिज्ञानं इन्द्रियस  
 नोनिरपेक्ष मात्मनो रूपिद्रव्यसाक्षात्कारणमिति ॥ तथा मणपज्जवनाणति ॥ मनसि मनसोवा पर्यव परिच्छेदः स एव ज्ञान मथवा मनस' पर्यवा. पर्या  
 यावा विशेषावस्था मन'पर्यवादय. तेषां त्तेषुवा ज्ञान स्मनःपर्यवज्ञान मेवमितरत्रापि समयक्षेत्रगतसज्जिमन्यमानमनोद्रव्यसाक्षात्कारोति ॥ केवलनाण  
 ति ॥ केवल मसहाय मत्यादिनिरपेक्षत्वा दकतङ्गत्वा वरणमलाभावात् सकतवा तत्प्रथमतयैवा येपतदावरणाभावतः सम्पूर्णीत्यक्ते रसाधारणंवा नन्यस  
 दृशत्वा दनन्तवा ज्ञेयानन्तत्वा तच्चतज्ज्ञानञ्च केवलज्ञानमिति ॥ कथं पुन ईर्मादीनि विद्याचरणस्वरूपाणि प्राप्नोतीत्याह दोष्ठाणा इमित्यादिकादशसूत्री

यणाणं उपाडेज्जा ११ पदं सुवर्णाणं उहिनाणं मणपज्जवनाणं केवलनाणं दोष्ठाणा इंपरियाइत्ता आयाकेवली  
 पन्नत्तंधम्मलजेज्जा सवणयाए तजहा आरजेचेव परिग्गहेचेव एवजावकेवलनाणमुपाडेज्जा दोहिठाणेहिं

दह पूर्वनी । अवधिग्यान मर्यादाये देखवी । मननाज्ञावजाणे ते मन पर्यय । इस केवलग्यान इग्यारह वोल न पामें आरज परिगूह सूक्या विना  
 इमज वे थानक अनर्थना कारण जांणी छांडे बुद्धियेकरी ते प्राणी एहवो होय ते केवली जाणित धर्म पावे । ते कहै छे । आरंज परिगूह एहवे  
 थानक इस यावत् केवल पावे एम इगारह पद पावे । बली वे थानक ना जीव केवली जासित धर्म पावे सांजलवाथी पावे । ते कहै छे । सिद्धां

सुगमा ॥ धर्मादिलाभएत पुनःकारणान्तरतय मात् ॥ दोहिमित्योदिसुगमं केवलं श्रवणतया श्रवणभावेन ॥ सोशचेवति ॥ कसत्वादिप्राकृतत्वादेव  
 शुला प्राकर्णं तस्यैवो पादेयता मितिगम्यते अभिसमेत्य समधिगम्य तामेवावबुजोत्यर्थः ॥ उक्तंच सद्यगंश्रवणादेव नरोधिगत किंलिपः ज्ञाततत्वोमहा  
 सत्ताः परसंयोगमागतः ॥ १ ॥ धर्मोपादेयतांज्ञात्वा सज्जातेच्छोभभावतः दृष्टस्वशक्तिमालोच्य गच्छणेसप्रयत्नतद्विधि ॥ २ ॥ एवं बीहिबुजोत्यादि ॥ यावत्कोव  
 लनाणंउपपाडेज्जति ॥ केवलज्ञानस कालविशेषे भवतीति तमाह ॥ दोसमाउद्गत्यादि ॥ समा कालविशेषः शेषं सुगमं ज्ञेयज्ञान मोहनीयोन्मादचयएव  
 भवत्यतः सामान्योन्मादं निरूपयन्नाह ॥ दुविहेउम्माएद्वत्यादि ॥ उम्मादोयतो बुजिविज्ञेय इत्यर्थः यच्चावेशोदेवाधिष्ठितत्वं ततो यः स यत्तावेश एवेत्येको

आयाकेवलपन्नत्तंधम्मलजेज्जा सवणयाए तंजहा सोच्चाचेव अजिसमच्चेचेव जावकेवलनाणं उप्पाहेज्जा  
 दोसमानं पन्नत्तानं तंजहा उसप्पिणिसमाचेव नसप्पिणिसमाचेव दुविहे उम्माए पन्नत्ते तंजहा जस्कावेसेचेव  
 मोहणिज्जस्सचेवकम्मस्सउदएणं तत्थणं जेसेजस्कावेसेरेणं सुहवेयतराएचेव सुहविमोयतराएचेव तत्थणं जेसे

त सांभलवाथी ते जाव सरदएवाथी धारवाथी यावत् केवल ग्यान पर्यंत दृग्यारे बोल पाळला सर्व पामे । वे थानक ना जाण पणाथी वे प्रकारे  
 काल कहियो ते कहैले । एक उत्सर्पिणी काल । बीजो उतरतो काल ते अवसर्पिणी । वेप्रकारे उन्माद उन्मत्त पणो होय ते कहैले । देवाधिष्ठित  
 उन्माद । बीजो मोहनीय कर्मना उदयथी चित्तनो भूम पुनने पुनीकहै तथा धन कुटुंबनी मूर्ख । तिहां जे यत्तावेशथी चित्तनो उन्माद ते सुरो  
 वेदिये मोहनीथी थोडोकष्ट आने सुखे मुंकाइये संवेकरी याक्षादि लागी होय ते । तिहां जे मोहनीय कर्मनां उदयथी चित्तनो उन्माद ते अभ्यंतर

मोहनीयस्य दर्शनमोहनीयादेः कर्मण उदयेन यः सोऽन्य इति तत्रेति तयो मध्ये योसौ यक्षावेशेन भवति स सुखवेद्यतरक एव मोहजनितग्रहापेक्षया  
 अकृष्टानुभवनीयतरएवा नैकान्तिकानात्यतिकभ्रमरूपत्वादस्येति अतिशयेन सुख विमोचते त्याज्यते यः स सुखविमोचतरक सैव मन्त्रमूलादिमात्रसा  
 ध्यत्वा दस्येति अथवा अत्यन्त सुखापेयः सुखापनेयः सुखापेयतरः यथा अत्यन्तसुखेनैव विमुञ्चति यो देहिनः स सुखविमोचतरक इति मोहस्तु तद्विपरी  
 तः एकांतिकात्यतिकभ्रमस्वभावतया त्यतानुचितप्रवृत्तिहेतुत्वेना नन्तभवकारणत्वात् तथांतरकारणजनितत्वेन मन्त्राद्यसाध्यत्वात् कर्मक्षयोपशमादिनैव  
 साध्यत्वा दित्यत एवोक्त ॥ दुहवेयतराएचेवदुहविमोयतराएचेवत्ति ॥ अतिशयेन दुःखवेद्यएव दुःखविमोच्यएव चासाविति ॥ उन्मादा व्याणी प्राणातिपा  
 तादिरूपे दण्डे प्रवर्तते दण्डभाजनवा भवतीति दण्ड निरूपयन्नाह ॥ दोदडेत्यादि ॥ दण्ड प्राणातिपातादिः सचार्थायेन्द्रियादिप्रयोजनाय यः सौर्धद  
 ण्डः निष्प्रयोजनस्त्व नर्थदण्डइति उक्तरूपमेव दण्ड सर्वजीवेषु चतुर्विंशतिदण्डकेन निरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ एवमिति नारकवदर्थदण्डानर्थद

मोहणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं सेणं दुहवेयतराएचेव दुहविमोयतराएचेव दोदंका पन्नत्ता तंजहा ण्णठादंकेचेव  
 ण्णठादंकेचेव नेरइयाणंदोदंका पन्नत्ता तंजहा ण्णठादंकेचेव ण्णठादंकेचेव एवंचउवीसदंऊन जाववेमाणि

दुःख जोगवीये अनंतजवभमाडे अने मंत्रादिके नछूटे कर्मना क्षयोपशमथी छूटे तेमाटे यक्षावेशेनो मोहनी ना उन्मादथी हलकी विपाक जे एक  
 मोहनी कर्मनोजोग सत्तर कोटाकोटि सागरोपम भमाडे । बे दंड कहिया ते कहै छै । पाच इंद्रिने अर्थ पाप करवूं ते अर्थ दंड । स्वार्थ विना नि  
 ष्फल पाप करवूं ते अनर्थ दंड । सातनारकीने विपे बे दंड कहिया ते कहै छै । अर्थ दंड जे पोताना शरीर राखवाने अर्थ परने हणो । द्वेषमा



एताभिलापेन चतुर्विंशतिदण्डको जेयो नवरं नारकस्य स्वशरीररक्षार्थं मारस्योपहननं मर्धदण्डः प्रहेपमात्रादनर्थदंडः पृथिव्यादीनां मनाभोगेनाप्याता  
 रगृहणे जीववधभावादनर्थदण्डोऽन्यथा त्वनर्थदण्डोऽथयोभयमपि भवान्तरार्थदण्डादिपरिणतेरिति सम्यग्दर्शनादित्रयवता मेव त्वदण्डो नास्तीति त्रितय  
 निरूपणेच्छु दर्शनं सामान्येन तावन्निरूपयति ॥ तत्रदुविहेदसणेत्यादि ॥ समसूनाणि सगमान्येव नवरं दृष्टिर्दर्शनं तत्त्वेषु रुचिस्तत्र सम्यगविपरीतजिनो  
 क्तानुसारि तथा मिथ्या विपरीतमिति ॥ सनादंसणेत्यादि ॥ निसर्गः स्वभावोऽप्रनुपदेश इत्यनर्थान्तरं प्रधिगमो गुरूपदेशादिरिति ताभ्यां यत्तत्तथा  
 क्रमेण मरुदेवीभरतवदिति ॥ निसणेत्यादि ॥ प्रतिपतनशीलं प्रतिपाति सम्यग्दर्शनं मौपशमिका चायोपशमिकां वा प्रतिपातिचायिकं न्तनैषा क्रमेण लक्षण  
 प्रह्वीपशमिकीं श्रेणि मनुप्रविष्टस्या नन्तानुबन्धिनां दर्शनगोहनीयनयस्य चोपशमा दीपशमिकं भवति योवाऽनादिमिथ्यादृष्टि रकृतसम्यक्तमिथ्यात्वमि

याणं दुविहेदंसणे पन्तहे तंजहा सम्मदंसणेचेव मिच्छादंसणेचेव सम्मदंसणेदुविहे पन्तहे तंजहा णिसग्ग  
 सम्मदसणेचेव अजिगससम्मदंसणेचेव णिसग्गसम्मदसणे दुविहे पन्तहे तजहा पफ़िवाईचेव अपफ़िवाईचेव

नथी उपजे ते अनर्थं दंड । इमं पृथिवीं गमुखने अनाजोगपणं आहारले जीव बंधाए छे ते अर्थं दंड । बीजो अनर्थं दंड । एमं चोवीस दंडको  
 कहिवो यावत् वैमानिक देवतालगे । हिवे दर्शनं करे छे ते बे प्रकारे छे । समकित दर्शनं जे जिनवचनानुसारो तत्त्वनी जाणिवो । बीजो मिथ्या  
 दर्शनं जे जिन वचनथी विपरीत जाणिवो । समकित दर्शनं बे प्रकारे कहियो भगवते ते कहै छे । स्वप्नावे जिनोक्त तत्त्वने विषे रुचि आवे ते नि  
 सर्गं समकित दर्शनी मरुदेवीनी परे । गुरूपदेशथी तत्त्वनी रुचिआवे ते अभिगमसमकितदर्शनी भरतादिकानी परे । निसर्गं समकितदर्शनं बे प्रकारे

आभिधानशुद्धाशुद्धोभयरूपमिथ्यात्वपुद्गलत्रिपुञ्जीक एवा चीणमिथ्यादर्शनो चपक इत्यर्थः सम्यक्तत्वात् अतिपद्यते तस्योपशमिक भवतीति कथमिह यदस्य  
मिथ्यादर्शनमोहनोय मुदीर्णं न्तदनुभवेनैवोपचीण मन्थच्च मन्दपरिणामतया नोदित मत स्तदतर्मुहूर्तमात्रं सुपश्नात मास्ते विष्टभितोदय मित्यर्थः ता  
वत काल मस्योपशमिकसम्यक्तलाभ इति आह च उवसामगसेटिगयस्स होतिउवसामियतुसम्मत्तं जोवाअकयतिपुञ्जे अखवियमिच्छोलहइसम्म ॥ १ ॥  
खीणमिउदिन्नमि अणुदिज्जतेयसेसमिच्छते अतोमुहुत्तकाल उवसमसम्मलहइजीवोत्ति ॥ २ ॥ अंतर्मुहूर्तमात्रकालत्वा देवास्य प्रतिपातित्वं यच्चा  
नन्तानुबध्युदये औपशमिकसम्यक्तात्प्रतिपतत सास्त्रादन मुच्यते तदौपशमिकमेव तदपिचप्रतिपात्येव जघन्यतः समयमात्रत्वा दुक्कृतस्तु पडावलिक  
मानत्वा दस्येति तथा इह यदस्य मिथ्यादर्शनदलिक मुदीर्णं तदुपचीणयच्चानुदीर्णं तदुपशांतं सुपश्नान्तनाम विष्टभितोदय सुपनीतमिथ्यास्वभाव च तदि  
ह चायोपशमस्वभाव मनुभूयमान चायोपशमिक मित्युच्यते नन्वौपशमिकेपि चय औपशमश्च तथेहापीति को नयो विशेषः उच्यते अयमेवहि विशे  
षो यदिह वेद्यते दलिकं नतत्र इहहि चायोपशमिके पूर्वशमित मनुसमय मुदेति वेद्यते चीयतेच औपशमिको तूदयविष्टभणसात्रमेव आह च मिच्छत्ते  
जमटिण तखीणअणुदियचउवसतं मौसौभावपरिणय वेइज्जतखओवसमन्ति ॥ १ ॥ एतदपिजघन्यतो न्तर्मुहूर्तस्थितिकत्वा दुक्कर्षतः षट्षष्टिसागरोपम

अभिगमसम्मदंसणे दुविहे पन्तत्ते तंजहा पण्णिवाईचेव अपण्णिवाईचेय मिच्छादंसणे दुविहे पन्तत्ते तंजहा

ते कहैछे । एक प्रतिपाती आवी जाय उपशम समकित आव्यो अंतर्मुहूर्त रहे चायोपशमिक द्वाखठ सागरोपम उत्कृष्टोरहे तेमाटे प्रतिपाती  
बीजो अप्रतिपाती न जाय ते चायिकजावे रहे चायिकसमकित मोक्ष पहुचे तिहां लगे रहै तेमाटे अप्रतिपाती । अभिगम समकित वे प्रकारे ते

स्थितिकत्वाच्च प्रतिपातीति यदपि चपकस्य सम्यग्दर्शनदलिकचरमपुद्गलानुभवनरूपं वेदक मित्युच्यते तदपि चायोपशमिकभेदत्वात् प्रतिपात्येवेति  
 तथामिथ्यात्वसम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्तमोहनीयक्षयात् चायिक मित्याह च खीणेदसणमोहे तिविहग्निविनवनियाणभूयन्मि निष्पञ्चवायमउलं सम्मत्तखाइय  
 होइत्ति ॥ १ ॥ इदत्तु चायिकत्वादेवाप्रतिपाति अतएव सिउत्वेयनुवर्त्तते ॥ मिच्छादसणेइत्यादि ॥ अभिगृहः कुमतपरिगृहः स यत्रास्ति तदाभिगृहिकं  
 तद्विपरोतमनाभिगृहिकमिति ॥ अभिगृहिइत्यादि ॥ आभिगृहिकमिथ्यादर्शन सपर्यवसित सपर्यवसान सम्यक्तप्राप्तौ अपर्यवसित मभव्यस्यसम्यक्ताप्राप्ते  
 स्तच्च मिथ्यात्वमात्र मप्यतीतकालतया नुवृत्त्या ऽभिगृहिक मिति व्यपदिश्यते ॥ ६ ॥ अनाभिगृहिक भव्यस्य सपर्यवसित मितरस्या पर्यवसित मिति  
 ॥ अतएवाह ॥ एवअणभौत्यादि ॥ ७ ॥ दर्शन मभिहित मय ज्ञानमभिधीयते तच्च ॥ दुविहेणाणे ॥ इत्यादीनि आवसगवइरिते दुविहे इत्यादि सूत्राव  
 सानानि त्रयोविशतिसूत्राणि सुगमानि नवर ज्ञानं विशेषावबोधः पश्चाति भुक्ते अश्रुते वाव्याप्नोति ज्ञानेनार्था नित्यच्च आत्मातप्रतियवर्त्तते इन्द्रियमनो  
 निरपेक्षत्वेनतत्प्रत्यक्ष मव्यवहितत्वेनार्थसाक्षात्करणादक्ष मिति ॥ आहच ॥ अक्खोजीवोअत्थ व्यावर्णभोयणगुणनिप्रोजेण तपइवट्टइणाण जपच्चक्खतमिह

अजिग्गहियमिच्छादंसणेचेव अणजिग्गहियमिच्छादसणेचेव अजिग्गहियमिच्छादसणे दुविहे प० तजहा  
 सपज्जवसिएचेव अपज्जवसिएचेव एवमणजिग्गहियमिच्छादसणेवि दुविहेनाणे पन्तत्ते तजहा पञ्चस्केचेव

कहैछे । प्रतिपाती आवी जाय उपशमभाव । अप्रतिपाती आवी न जाय समकित चायकजाव । मिथ्या दर्शन बे प्रकारे ते कहैछे । कुमति न मुंके  
 ते अभिगृहिक मिथ्यात हठ विना कुमतिनो परिगृह ते अनजिगृहिक । अभिगृहिक मिथ्या दर्शन बे प्रकारे ते कहैछे । जेहनी अतछे तेसपर्यवसित

तिविहन्ति ॥ १ ॥ परेभ्यो अक्षापेक्षया पुद्गलमयत्वेन द्रव्येन्द्रिय मनोभ्यो ऽक्षस्य जीवस्य यत्तत्परोक्ष निरुक्तिवशा दित्याह च अक्षस्सपीगलकया जद्वि  
 दियमणापरातेण तेहितोजणाण परोक्षमिहतमणुमाणवत्ति ॥ अथवा परैरक्ष सबन्धन जन्यजनकभावलक्षण मस्येति परोक्ष इन्द्रियमनोव्यवधाने ना  
 त्मनोर्यप्रत्ययकर्मसाक्षात्कारौत्यर्थः ॥ पञ्चकूल्यादि ॥ केवल मेक ज्ञान केवलज्ञानतदन्य नोकेवलज्ञान भवधिमनःपर्यायलक्षण मिति ॥ केवलेत्यादि ॥ भवत्य  
 केवलणाणेचेवत्ति ॥ भवस्थस्य केवलज्ञान यत्तत्तथा एव मितरदपि ॥ भवत्येत्यादि ॥ सहयोगै कायव्यापारादिभि र्यः सः सयोगी इन्समासातत्वा त्त्वा  
 सौ भवस्थस्य तस्य केवलज्ञान मिति विग्रहः नसन्ति योगा यस्य न योगीति वा योसा वयोगी शैलेशीकरणव्यवस्थितः शेषतथैव ॥ सजोगीत्यादि ॥ प्रथ

परोक्षेचेव पञ्चकनाने दुविहे पन्तत्ते तंजहा केवलनाणेचेव णोकेवलनाणेचेव केवलनाणे दुविहे पन्तत्ते  
 तजहा नवत्यकेवलनाणेचेव सिद्धकेवलनाणेचेव नवत्यकेवलनाणे दुविहे पन्तत्ते तंजहा सजोगिनवत्यके  
 वलनाणेचेव सजोगिनवत्यकेवलनाणेचेव सजोगिनवत्यकेवलनाणे दुविहे पन्तत्ते तजहा पढमसमयसजो

जेहनो अंतनयी ते अपर्यवसित अभव्य जीवने होय ते अपर्यवसित । एम अनभिगृहिक सपर्यवसित अपर्यवसित कहिये । नाणना बे भेदछे ते कहै  
 छे । प्रत्यक्ष जे पाच इंद्रीना सहाय रहित आत्माने उपजे । एक परोक्ष जे इंद्री मनना सहाययी उपजै । प्रत्यक्षना बे प्रकार ते कहैछे । केवलनाण  
 चौदह राजलोक देखे जाणो ते जीव प्रत्यक्ष । एक नोकेवलनाण प्रत्यक्ष अवधि मनःपर्यवनाण रूप । केवलनाण बे प्रकारे ते कहैछे । संसार मांहिरहिया  
 जीवनो एक । बीजो मोक्षना जीवनो । संसारमाहि रहिया जीवनो केवल नाण बे प्रकारे ते कहै छे । सयोगी मन वचन कायाना योग सहित

समयः सयोगित्वे यस्य स तथा एव प्रथमो द्वादिः समयो यस्य स तथा शेषतथैव ॥ प्रथमेत्यादि ॥ चरमोत्तमसमयो यस्य स योग्यवस्थायाः स तथा शेषतथैव च एवमिति सयोगिसूत्रवत् प्रथमाप्रथमचरमाचरमविशेषणयुक्त मयोगिसूत्रमपि वाच्यमिति ॥ सिद्धेत्यादि ॥ अनन्तरसिद्धो यः सम्प्रतिसमये सिद्धः सचैको ऽनेको वा तथा परम्परसिद्धो यस्य द्वादशः समयाः सिद्धस्य सोप्येकोनेकोवेति तेषां यत्केवलज्ञानं तत्तथाव्यपदिश्यत इति ॥ ओहिनाणे

गिज्ञवत्यकेवलणाणेचेव उपदमसमयसजोगिज्ञवत्यकेवलणाणेचेव अहवाचरिमसमयसजोगिज्ञवत्यकेवलना  
णेचेव अचरिमसमयसजोगिज्ञवत्यकेवलणाणेचेव एवंअजोगिज्ञवत्यकेवलणाणेवि सिद्धकेवलनाणे दुविहे प०  
तं० अणतरसिद्धकेवलनाणेचेव परंपरसिद्धकेवलणाणेचेव अणंतरसिद्धकेवलणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा एक्षा

तेरमा गुणठाणा ना जीवने । अयोगी चौदमा गुणठाणा ना जीवने पांच लघु अपार जाणिये एतली बेल तिरा जीव रहे । सयोगी नो केवल नाण बे प्रकारे ते कहै छे । प्रथम समयनो उपजती बेलानो तेरमा गुणठाणाना भवस्थ जीवनी एमज बीजा समयना जवस्थ सयोगीनो । अथ वा छेहला समयना चौदमे गुणठाणे जाताना सयोगी जवस्थ जीवनी एतले तेरमा गुणठाणाना छेहला समयनो । छेहलो समय नही एतले पहिलो समय ते अचरिम समय सयोगि जवस्थनो । एम अयोगी जवस्थ केवल नाण ना बे जेद जाणिया । सिद्धनो केवल नाण बे प्रकारे ते कहै छे सप्रति समयें सिद्धययो ते अनतरसिद्ध तेहनो । जेहने दो निण चार समय सिद्ध थया ते परंपरसिद्ध तेहनो केवल नाण । अनंतर सिद्धनो केवल नाण बे प्रकारे ते कहै छे । एके समये एकज सीधो ते अनतर सिद्ध तेहनो केवल नाण । एके समये अनेक सीधा ते अनेक अनतर सिद्ध

त्यादि ॥ भवपञ्चइएत्ति ॥ क्षयोपशमनिमित्तत्वे प्यस्य क्षयोपशमस्यापि भवप्रत्ययत्वेन तत्राधान्येन भवएव प्रत्ययो यस्य तद्ववप्रत्ययमिति व्यपदिश्यतइति  
 इदमेव भाष्यकारेण साक्षेपपरिहारमुक्तं तत्राक्षेपः श्रीहोखश्रीवसमिए भावेभणिश्रीभवोतहोदइए तोकिहभवपञ्चइओ वोत्तुजुत्तोवहीदोणहंति ॥ १ ॥  
 [देवनारकयो. अत्रपरिहारः] सोविहुखश्रीवसमओकिन्तुसएवक्खश्रीवसमलाभो तमिसइहोदइवस्सं भणइभवपञ्चओतोसो ॥ २ ॥ यतः । उदयक्खश्रीवसमोव  
 समाजच कम्मणोभणिया दव्वत्तेत्तकालभवंच भावचसम्पत्ति ॥ ३ ॥ तथा तदावरणस्य क्षयोपशमे भव क्षायोपशमिकमिति ॥ मणपज्जवेत्पादि ऋज्वीसा

णंतरसिद्धकेवलणाणेचेव ण्णेक्कानंतरसिद्धकेवलनाणेचेव परंपरसिद्धकेवलनाणे दुविहे पन्तत्ते तंजहा एक्का  
 परंपरसिद्धकेवलणाणेचेव ण्णेक्कपरंपरसिद्धकेवलणाणेचेव णोकेवलणाणे दुविहे पन्तत्ते तंजहा उहिनाणे  
 चेव मणपज्जवणाणेचेव उहिनाणे दुविहे पन्तत्ते तंजहा जवपञ्चइएचेव खण्णोवसमिएचेव दोरहंजवप  
 चइए पन्तत्ते तंजहा देवाणंचेव नारइयाणचेव दोरहखलुवसमिए पन्तत्ते तंजहा मणुस्साणंचेव पच्चिंदिय

तेहनो केवल नाण । परंपरसमयसिद्ध जेहनें मोक्ष गयां दो तीन चार समय थया होय ते परंपरसिद्धनो केवल नाण बे प्रकारे ते कहैं छे । एक एक  
 परंपर सिद्ध नो केवल नाण । बीजो अनेक परंपर सिद्ध नो केवल नाण । नो केवल नाण ना बे प्रकार ते कहैं छे । अवधि नाण । बीजो मनपर्यव  
 नाण । एह बे नोकेवल ग्यान छे । अवधि ग्यानना बे भेद ते कहैं छे । एक जवप्रत्ययी देवता नारकीने भवेहोय ते बीजो नाणा वरणी कर्मना  
 क्षयोपशमथी उपजे ते भवप्रत्ययी देवताने होय । तथा नारकीने होय । क्षयोपशमथीबेने होय ते कहैं छे । सनुण्यने तथा पंचेंद्रिय तिर्यच ने

मान्यग्राहिणी मतिः ऋजुमतिः घटीनेनचिन्तित इत्यध्यवसायनिबन्धनं मनोद्रव्यपरिच्छित्तिरित्यर्थः विपुला विशेषग्राहिणी मतिर्विपुलमतिर्घटीनेन चिन्तितः सच सौवर्णः पाटलिपुत्रकोऽद्यतनोमहानित्याद्यध्यवसायहेतुभूता मनोद्रव्यविजृम्भित इति ॥ आह च ऋजुसामन्त्रतन्मा तगाहिणीऋजुमद्रमणीणां पायविसेसविमुहं घडमेतच्चित्तिय मुण्ड ॥ १ ॥ विउलम्ब्यविसेसण माणंतगाहिणीमद्रविउला चित्तियमणसरइघडं पसंगओपज्जयसएहिं त्ति ॥ आभिणिबोहिइत्यादि ॥ श्रुतं कर्मतापन्ननिश्चित माणित मनेनेति श्रुतनिश्चित यत् पूर्वमेव श्रुतकृतोपकारस्ये दानीं पुन स्तदनुपेक्ष मेवानुप्रवर्तते तदवगृह्यादिलक्षण श्रुतनिश्चित मिति यत्पुनः पूर्वतदपरिकर्मितगतेः चायोपशमपटौयस्त्वा दौत्यत्तिक्वादिलक्षण सुपजायते अन्यथा ओनादिप्रभव नदश्रुतनिश्चित मिति आह च पुञ्जमुपपरिकर्मिय मइस्सजसंपयसुयातौय तन्निस्सियभियरपण अणिस्सियमइचउक्त ॥ १ ॥ सुयेत्यादि ॥ अ

तिरिस्कजोणियाणंचेव मणपज्जवणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा उज्जुमईचेव विउलमईचेव परोस्कणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा आभिणिबोहियणाणेचेव सुय्णनाणेचेव आभिणिबोहियणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा सुयनि

होय । मनपर्यव ग्यान बे प्रकारे ते कहैं छे । एक रिजुमती जे मननोज्ञाव जाणैं । बीजो विपुलमती बुद्धि विशेषथी जाणैं एणे मन मां घडो चितव्यो छे एम जाणैं ते रिजुमती । अनें तेहीज विशेषथी जाणे जे सोनानो घडो छे मोटो अथवा नाहो पाटली पुरनो आजनो कीधो अथवा कालनो अथवा घणा कालनो चितव्यो छे इम विशेष तथा जाणैं ते विपुलमती । परोक्ष ग्यान बे प्रकार ते कहैं छे । मतिनाण । बीजो श्रुतनाण मतीना बे भेद ते कहैं छे । एक श्रुतनिश्चित । बीजो अश्रुत निश्चित । श्रुतनिश्चितना बे भेद ते कहैं छे । प्रथम जे वस्तुनो सामान्य तथा गह्वो ते

लोभहेति ॥ अर्थतेधिगम्यते अर्थते वा त्विथत इत्यर्थः तस्य सामान्यरूपस्या शेषनिरपेक्षानिर्देशस्वरूपादे रवग्रहणं प्रथमपरिच्छेदन मर्यावग्रह  
 इति निर्विकल्पक ज्ञान दर्शनमिति यदुच्यते इत्यर्थः स नैश्चयिको य. स सामयिको यस्तु व्यावहारिकः शब्दोय मित्याद्युक्तेखवान् स आतमौहर्तिक इति  
 अयचेद्रियमनः सम्बन्धात् षोढा इति तथा व्यज्यते ऽनेनार्थ. प्रदीपेनेव घट इति व्यञ्जन तच्चोपकरणेद्रिय शब्दादित्वपरिणतद्रव्यसङ्घातो वा ततश्च व्यञ्जने  
 नोपकरणेद्रियेण शब्दादित्वपरिणतद्रव्याणां व्यञ्जनानां सवग्रहो व्यञ्जनावग्रह इति अथवा व्यञ्जनमिन्द्रियशब्दादिद्रव्यसम्बन्धः आह च वजिज्जइजे  
 णत्थो घडोव्वदीवेणवज्जणतोत उवगरणिदि यसद्दा इपरिणयदव्वसवधोत्ति ॥ १ ॥ अयंच मनोनयनवर्जेन्द्रियाणां भवतीति चतुर्धा नयनमनसोरप्राप्तार्थं प  
 रिच्छेदकत्वात् इतरेषाम्पुन रन्यथेति ननु व्यञ्जनावग्रहो ज्ञानमेव न भवति इन्द्रियशब्दादिद्रव्यसम्बन्धकाले तदनुभवाभावात् वधिरादीनां मिथेति नैव व्यञ्ज  
 नावग्रहान्ते तद्वस्तुग्रहणादेवोपलब्धिसङ्गात्वात् इह यस्य ज्ञेयवस्तुग्रहणस्यान्ते ततएव ज्ञेयवस्तुपादानात् उपलब्धिर्भवति तज्ज्ञानं दृष्टं यथार्थावग्रहपर्यन्ते  
 तत एवा र्थावग्रह ग्राह्यवस्तुग्रहणा दोहासङ्गात्वादर्थावग्रहज्ञानमिति आह च अन्नाणसोवहिरा इणवतक्कालमणुवलभाओ [आचार्यः] नतदंततत्तोच्चिय  
 उवलभाओतयनाणति ॥ १ ॥ किञ्च व्यञ्जनावग्रहकालेपि ज्ञानमस्त्येव सूक्ष्माव्यक्तत्वात्तुनोपलभ्यते सुप्ताव्यक्तविज्ञानवदिति ईहादयोपि श्रुतनिश्चिता एव न

र्सिसएचेव असुयनिर्सिसएचेव सुयनिर्सिसए दुविहे पन्नत्ते तंजहा अत्योग्गहेचेव वंजणोग्गहेचेव असुयनिर्सिस

अर्थावग्रह । दूरस्थी वस्तु देखी कहै जे कोईक वस्तुछे ते अर्थावग्रह । पछे ओलखे जे एह पुरुषछे अथवा स्त्रीछे ते व्यंजनावग्रह । इंद्रिने अने शब्दादि  
 द्रव्यने सवध ते व्यजना वग्रह । एम अश्रुतनिश्चितना बे भेद जाणिवा । श्रुतनाणना बे जेदछे ते कहैछे । इय्यारह अंग आचारागादिक उप्पनेवा



तूता'द्विस्थानकानुरोधादिति ॥ असुयनिस्सिएविण्वमेवत्ति ॥ अर्थावग्रहव्यञ्जनावग्रहभेदेनाश्रुतनिमित्तमपि द्विधैवेति इदञ्च श्रोत्रादिप्रभवमेव यत्तु श्रौत्य  
 तिक्यायश्रुतनिश्चितन्तत्रार्थावग्रहःसम्भवति यदाह किहपडिकुक्कुडहीणो जुज्जेविवेणउगहीईहा किसुसिलिठ्ठमवाओ दप्पणसकतजिवत्ति ॥ १ ॥ न  
 नुय्यञ्जनावग्रह स्तस्येन्द्रियाश्रितत्वात् बुद्धीनांतु मानसत्वा ततो बुद्धिभ्यो न्यत्र व्यञ्जनावग्रहो मन्तव्य इति ॥ सुयनाणेत्यादि ॥ प्रवचनपुरुषस्याङ्गानीवाङ्गर  
 नि तेषु प्रविष्ट तदभ्यतरं तत्स्वरूप मित्यर्थः तच्चगणधरकृतम् ॥ उप्पन्नेइवेत्यादि ॥ मातृकापदत्रयप्रभववा ध्रुवश्रुतवा आचारादि यत्पुनः स्थविरकृतमातृ  
 कापदत्रयव्यतिरिक्त व्याकरणनिबन्धमध्रुव श्रुतचोत्तराध्ययनादि तदङ्गवाह्यमिति आहच गणहर १ थेराइकय २ आएसा १ सुक्कवागरणओवा २ ध्रुव १  
 चलविसेसणाओ २ अंगणगेसुणाणत्तति ॥ १ ॥ अंगवाहीत्यादि ॥ अवश्यकर्त्तव्य मावश्यक सामायिकादिषड्विध आहच समणेणसावणय अवस्सकाय  
 व्यहवइजम्हा अंतोअहोनिस्सिस्सय तम्हाआवस्सयनामति ॥ १ ॥ आवश्यका द्वातिरिक्तां ततो यदन्यदिति ॥ आवस्समवइरित्तेत्यादि ॥ यदिह दिवसनिशा  
 प्रथमपश्चिमपौरुषीद्वयेएव पठ्यते तत्कालेननिर्घृत्त कालिक सुत्तराध्ययनादि यत्पुनः कालवेलावर्जं पठ्यते तदूर्ध्वङ्गालिकादित्युक्तालिक दशवैकालिकादीनि

एविण्वमेव सुय्णनाणे दुविहे पन्तत्ते तंजहा अंगपविठ्ठेचेव अंगवाहिरेचेव अंगवाहिरे दुविहे पन्तत्ते तंजहा  
 आवस्सएचेव आवस्सवइरित्तेचेव आवस्सवइरित्ते दुविहे पन्तत्ते तंजहा कालिण्वेचेव उक्कालिण्वेचेव दुविहे

एह त्रिपदी पामी गणधर रवे ते इग्यारह अंग अंगप्रविष्ट । उत्तराध्ययनादि अंगवाहिर । अंगवाहिरना वे प्रकारत्वे ते कहै छे । आवश्यक छप्रकारे  
 सामायिक । चौवीसत्थो । वदना । प्रतिक्रमण । काउसग्ग । पचखाण ॥ बीजो आवश्यक व्यतिरिक्त जे एथी जुओ सिद्धांत । आवश्यक व्यतिरिक्तना

॥ २३ ॥ उक्तज्ञान चारित्रप्रस्तावयति ॥ दुर्विहेत्यादि ॥ दुर्गतौ प्रपततो जीवान् सुगतौ चतान्धारयतीति धर्मः श्रुतं द्वादशाङ्गतदेव धर्मः श्रुतधर्मं अर्थ्यते आ  
 सेयते तत्तेनवाचर्यते गम्यते मोक्ष इति चारित्रमूलोत्तरगुणकलाप स्तदेवधर्मश्चारित्रधर्म इति ॥ सुयधम्मेत्यादि ॥ सूच्यते सूच्यंतेवा अर्थाअनेनेति सूत्रसु  
 स्थितत्वेन व्यापित्वेन च सुष्ठुत्वाद्वा सूक्त सुप्तमिव वा सुप्तमव्याख्यानेना प्रबुद्धावस्थत्वादिति भाष्यवचनत्वेव सिचद्वखरद्वजमत्यं तन्हासुत्तनिरुत्तविहिणावा सू  
 एदसवद्वसुवद्व सिव्वद्वसरएवजोअत्थ ॥ १ ॥ अविधरियसुत्तपिवसुद्वियवावित्तउसुचुत्तति ॥ २ ॥ अर्थ्यतेधिगम्यते अर्थ्यतेवायाचतेबुभुत्सुभि रित्यर्थी व्याख्या  
 नमिति आह च जोसुत्ताभिप्पाओ सोअत्थोअज्जएयजम्हति ॥ चरित्तेत्यादि ॥ अगारंगृह तद्योगा दागारा गृहिण स्तेपा य चरित्रधर्मः सम्यक्तमूलाणुप्र

धम्मे पन्नत्ते तंजहा सुअधम्मेचेव चरित्तधम्मेचेव सुअधम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा सुत्तसुअधम्मेचेव अत्थ  
 सुयधम्मेचेव चरित्तधम्मे दुविहे पन्नत्ते तंजहा अगारचरित्तधम्मेचेव अणगारचरित्तधम्मेचेव अणगार  
 चरित्तधम्मे दुविहे प० तं० सरागसंजमेचेव वीयरगसजमेचेव सरागसजमे दुविहे प० त० सुज्जमसंपरा

बे भेद ते कहै छे । एक कालिक कालबेलाये प्रथम छेहली पोरसी येज भणाइये उत्तराध्ययनादि । बीजो उत्कालिक काल बेलारहित भणायें ते  
 दशवैकालिकादि । बे प्रकारे धर्मछे दुर्गतिमां पडता जीवनेराखे तेधर्म तें कहै छे । द्वादशांगी रूप सिद्धांत तेहीज धर्म ते श्रुतधर्म । बीजो चारित्र  
 धर्म पच महावृत्तरूप धर्म । श्रुतधर्म बे प्रकारें छे ते कहै छे । जेहमा गणधरे अर्थ गूंथ्याछे ते सूत्र श्रुतधर्म कहिये । जे भगवते अर्थ प्ररूपण कियो ते  
 अर्थ श्रुतधर्म । चारित्रधर्म बे प्रकारे ते कहै छे । गृहस्थ जो सम्यक्त मूल बारेवृत्तरूप धर्म देशविरति चारित्रधर्म । जेहने घर नथी ते अनगार

तादिपालनरूपः सतथा एवमितरोपि नयर मगारंनास्ति येपांते नगाराः सावध इति चारित्रधर्माशसंयमी ऽतस्तमेवाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ सह रागेण्य  
 भिष्वंगेणमायादिरूपेण यः स सरागः सचासीसयमश सरागस्थवा सयमः इतिवाग वीतो विगतो रागो यस्मात् सचासी संयमश्चवीतरागस्थ वा संयम इति  
 वाक्य ॥ सरागेत्यादि ॥ सूक्ष्मो ऽसख्यातकिट्टिकावेदनतः सम्परायः कषायः सम्परेति ससरति ससारं जतु रनेनेति व्युत्पादना दाहच कोहाइसपराओ तेण  
 जओसपरीइससारंसच लोभकषायरूप ओपशमिकस्य क्षपकस्यवा यस्यस सूक्ष्मसम्परायः साधु स्तस्य सरागसंयमविशेषणसमासीवा भणनीयइति बादराः  
 स्थूलाः सम्परायाः कषायाः यस्य साधोर्यस्मिन्वा सयमे स तथा सूक्ष्मसपरायप्राचीनगुणस्थानकेषु शेषप्राग्वदिति ॥ सुहुमेत्यादि ॥ सूत्रद्वये प्रथमसमयादि

यसरागसजमेचेव वादरसंपरायसरागसंजमेचेव सुकुमसंपरायसरागसजमे दुविहे प० तं० पढमसमयसु  
 कुमसंपरायसरागसजमेचेव अ०पढमसमयसुकुमसंपरायसरागसंजमेचेव अ०हवा चरमसमयसुकुमसपरायसरा

साधु तेहनो धर्म पचमहावृतरूप । अनगारधर्म बे प्रकारे ते कहै छे । मायानो सगळे जिहां तेसररागसंयम । माया कपट रहित चारित्र ते वीत  
 रागसजम । सातमा गुणठाणा उपरात होय । सरागसयम बे प्रकारे ते कहै छे । जेणे लोजरूप कषायबोटी कुथुग्रा रूपकीधो ते उपशम श्रेणिनो  
 तथा क्षपक श्रेणीनो साधु दसमे गुणठाणे एह सुहुमसंपरायसरागसजम थाय । मोटा स्थूल कषायबे जिहां ते वादरसंपरायसरागसंयम क  
 हिये । सुहुमसपरायसरागसजम बे प्रकारे ते कहै छे । प्रथम समयनो सुहुमसंपरायसरागसजम जिम पहिले केवल नाणना बे भेद कहिया तिम जा  
 णिवा । दो तीन समयनो सुहुमसपरायसरागसजम । अथवा चरम छेहला समयनो जे पळे वीतरागसंयमयावे ते चरमसमयसुहुमसंपरायसरागसज

विभागः केवलज्ञानवदिति ॥ अहवेत्यादि ॥ संक्लिश्यमानकः सयमः उपशमश्रेण्याः प्रतिपततो विगुह्यमान स्तांउपशमश्रेणीं क्षपकश्रेणीं वा समारोहत  
इति ॥ वादरेत्यादिसूत्रद्वय ॥ वादरसपरायसरागसंयमस्य प्रथमाप्रथमसमयता सयमप्रतिपत्तिकालापेक्षया चरमाचरमसमयतातु यदनन्तरं सूक्ष्मसम्पराय  
ता असयतत्ववा भविष्यति तदपेक्षयेति ॥ अहवेत्यादि ॥ प्रतिपाती उपशमकस्या न्यस्यवा अप्रतिपाती क्षपकस्येति सरागसंयमउक्तो अतोवीतरागसंयममाह

गसंजमे अचरमसमयसुह्रमसंपरायसरागसंजमे अहवा सुह्रमसंपरायसरागसंजमेदुविहे प० तं० संक्लिसे  
माणएचेव विसुह्रमाणएचेव वादरसंपरायसरागसंजमे दुविहे प० तं० पढमसमयवादरसंपरायसरासंजमे  
अपढमसमयवादरसपरायसरागसंजमे अहवा चरमसमयवादरसंपरायसरागसंजमे अचरमसमयवादरसंप  
रायसरागसंजमे अहवा वायरसंपरायसरागसंजमे दुविहे प० त० पढिवातिएचेव अपढिवातिएचेव वीय

म । छेहलाथी पहिला समयनो ते अचरिससमयसुह्रमसंपरायसरागसंजम । अथवा वली सुह्रमसंपराय सरागसंजम वे प्रकारे कहियो ते कहै छे ।  
उपशम श्रेणीथी पडतानो सुह्रमसंपरायसरागसंयम ते संक्लिसेमाणा । अथवा उपशम श्रेणी क्षपक श्रेणी चढतानो सुह्रमसंपरायसरागसंयम ते वि  
शुद्धिमान कहिये । वादरसपरायसरागसंजम वे प्रकारे ते कहै छे । प्रथम समयनो वादरसंपरायसरागसंजम । बीजो बीजा त्रीजा समयनो । वली  
छेहला समयनो वादरसपरायसरागसंजम जे पछे सुह्रमसंपरायसरागसंजम आवे । अथवा असंजम आवे । एम छेहलाथी पहिला समयनो संय  
म । अथवा वली वादरसपरायसरागसंयमना वे भेद ते कहै छे । एक उपशम श्रेणीथी पडतानो संयम ते प्रतिपाती एकक्षपक श्रेणीनो ते अप्रति

वीयरार्येत्यादि ॥ उपशान्ताः प्रदेशतोष्यवेद्यमानाः कषाया यस्य यस्मिन्वा सतथा साधुः सवमोवेति एकादशगुणस्थानवर्त्तीति क्षीणकषायो द्वादशगुणस्थानवर्त्तीति ॥ उवसतेत्यादिसूनद्वयं प्रागिव ॥ खीणेत्यादि ॥ छादयत्यात्मस्वरूपं यत्तच्छृङ्गं ज्ञानावरणादिघातिकर्मं तनतिष्ठतीति कृद्गस्थो केवली शेषन्तथैव केवलमुक्तरूपं ज्ञानञ्च दर्शनञ्चास्यास्तीति केवलीति ॥ छउमत्येत्यादि ॥ स्वयम्बुधादिस्वरूपं प्रागिवेति ॥ सवगुणेत्यादि ॥ नवसूत्राणि गता

रागरांयमे दुविहे प० तं० उवसंतकसायवीयरारागसंजमेचेव खीणकसायवीयरारायसंजमेचेव उवसतकसायवीयरारायसजमे दुविहे प० तंजहा पढमसमयउवसतकसायवीयरारायसंजमेचेव अणपढमसमयउवसंतकसायवीयरारायसजमेचेव अणहवा चरमसमयउवरातकसायवीयरारायसजमे अणचरमसमयउवसंतकसायवीयरारायसंजमे खीणकसायवीयरारायसजमे दुविहे प० त० छउमत्यखीणकसायवीयरारायसंजमेचेव केवलखीणकसायवीयराराय

पाती । वीतरागसजमना वे भेद ते कहै छे । मूलयो उपशमाव्याखे कषाय जेणे ते उज्ञातकषायवीतरागसयम ग्यारमागुणठाणानां साधुने थाय । त्रयपास्याखे कषाय जेहना ते क्षीणकषायवीतरागसजम बारमा गुणठाणाना साधुने थाय । उपज्ञातकषायवीतरागसयम वे प्रकारे ते कहै छे । पहिला समयनो उपज्ञातकषायवीतरागसंयम । बीजो अग्रथम समयनो उपज्ञातकषायवीतरागसयम । अथवा चरम समयना अचरिम समयना वे भेद जाणिवा । क्षीणकषायवीतरागसंयम वे प्रकारे ते कहै छे । छउमत्य जे नाणावरणीयादि च्यार घाती कर्म सहितछे जेहनोसंयमते छउमत्यखीणकसायवीतरागसंयम । केवल नाण सहित केवली तेहनो सयम तेकेवलीक्षीणकषायवीतरागसंयम । छउमत्यखीणकसायवीतरागसंयम

संजमेचेव ठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे प० तं० सयंवुद्धठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजमे बुद्ध  
वोहियठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजमे सयवुद्धठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे प० तं० पढम  
समयसयवुद्धठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजमे अपढमसमयसयंवुद्धठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजमेचेव  
अहवा चरमसमयसयंवुद्धठउमत्यखीणकसायवीयरागसजमे अचरमसमयसयंवुद्धठउमत्यखीणकसायवीयरा  
गसजमे । बुद्धवोहियठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे पन्नात्ते तंजहा पढमसमयवुद्धवोहियठउम  
त्यखीणकसायवीयरायसंजमे अपढमसमयवुद्धवोहियठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजमे अहवा चरमसम  
यवुद्धवोहियठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजमे अचरमसमयवुद्धवोहियठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजमे

वे प्रकारे तेकहैछै । सयंवुद्ध पोताने मेले प्रतिबोध पामे तेसयवुद्धठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजम । आचार्यनां प्रतिबोधयी प्रतिबोध पामे तेवुद्ध  
वोधितठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजम । सयंवुद्धठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजम वेप्रकारे तेकहैछै । प्रथमसमयनो बीजो अप्रथमसमयनो अथ  
वा चरमसमयनो सयंवुद्धठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजम । अथवा अचरमसमयनो सयवुद्धठउमत्यखीणकसायवीयरायसंजम । बुद्धवोधितठउमत्य  
खीणकपायवीयरागसंयम वेप्रकारे तेकहैछै । प्रथमसमयनो बुद्धवोधितठउमत्यखीणकपायवीतरागसंयम । अप्रथमसमयनो बुद्धवोधितठउमत्यखीण  
कसायवीयरायसंजम । अथवा चरमसमयनो अचरमसमयनो । केवलीनीणकपायवीतरागसंयम वेप्रकारे तेकहैछै । सयोगी तेरमां गुणठाणां केव

थान्येवेति उक्तः संयमः सच जीवाजीवविषयइति पृथिव्यादिजीवस्वरूपमाह ॥ दुविहांपुढवीत्यादि ॥ अष्टाविंशति सूत्राणि तत्र पृथिव्येवकायो वेदान्ते

केवलिलिखीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे पन्तते तंजहा सजोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरायसंजमे अयो  
गिकेवलिलिखीणकसायवीयरायसंजमे सजोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरागसजमे दुविहे प० तं० पढमसमय  
सयोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरायसंजमे अपढमसमयसयोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरायसंजमे अहवा चर  
मसमयसयोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरायसजमे अचरमसमयसयोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरायसंजमे अ  
जोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरायसंजमे दुविहे प० त० पढमसमयअयोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरायसंजमे  
अपढमसमयअयोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरायसंजमे अहवा चरमसमयअयोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरा  
यसंजमे अचरमसमयअयोगिकेवलिलिखीणकसायवीयरायसजमे दुविहापुढविकाइया पन्तता तजहा सुज

लीनो क्षीणकपायवीतरागसंयम । अयोगी चौदमां गुणठाणाना केवलीनो क्षीणकपायवीतरागसंयम । वीतराग सयोगिकेवलीक्षीणकपायसंयम वेप्रका  
रें तेकहेछें । प्रथमसमयनों वीतरागसयोगिकेवलीक्षीणकपायराजस । अप्रथमसमय वीतरागसयोगिकेवलीक्षीणकपायसजम । अथवा चरमसमयनो  
अचरमसमयनों । अयोगिकेवलीक्षीणकपायसजम वे प्रकारें ते कहें छें । प्रथमसमयनो अप्रथमसमयनो । अथवा चरमसमयनो अचरमसमयनो ॥ वे  
प्रकारे पृथिवी कायना जीव कहिया । ते कहेंछें ॥ एक सर्वव्यापी पृथिवी कायना जीव बीजा दादर पृथ्वीकायना जीव पर्वतादिक । एमज पाणी

पृथ्वीकायिनः समासान्तविधे स्तएव स्वार्थिककप्रत्ययात् पृथ्वीकायिकाः पृथिव्येववा कायः शरीरं सोस्ति येषान्ते पृथ्वीकायिकाः ते सूक्ष्मनामकर्माद  
यात् सूक्ष्मा श्वैव ये सर्वलोकापन्ना बादरनामकर्मादयवर्तिनो बादरा ये पृथ्वीनगादिष्वेवेति तेषा मापेक्षिक सूक्ष्मबादरत्वमिति एवमिति पृथ्वीसूत्रवद  
मेजोवायूनांसूत्राणि वाच्यानि यावत्वनस्पतिसूत्र मतएवाह ॥ जावेत्यादि ५ दुविहेत्यादि ॥ पञ्चसूत्री तत्र पर्याप्तनामकर्मादयवर्तिनः पर्याप्ता येहि च  
तस्रः पर्याप्तीः पूरयन्तीति अपर्याप्तनामकर्मादयादपर्याप्तकाः ये स्वपर्याप्तीर्नपूरयन्तीति इहच पर्याप्तिर्नाम शक्तिः सामर्थ्यविशेषइतियावत् साच पुत्रल  
द्रव्योपचया दुत्पद्यते षट्भेदाचेय तद्यथा आहारसरौरिदिय पज्जतीआणुपाणु ४ भास ५ मणे ६ चत्तारिपंचळप्पिय एगिदियविगलसन्नीणंति ॥ १ ॥ तत्र  
एकेन्द्रियाणाञ्चतस्रो विकलेन्द्रियाणांपञ्च सज्जिनांषट् तत्र आहारपर्याप्तिर्नाम खलरसपरिणमनशक्तिः शरीरइन्द्रियपर्याप्तिः सप्तधातुतया रसस्यपरिण

माचेव वायराचेव एवं जाव दुविहावणस्सइकाइया पन्नत्ता तं० सुज्जमाचेव वायराचेव दुविहापुढविका  
इया प० तं० पज्जत्तगाचेव अपज्जत्तगाचेव एवं जाव वणस्सइकाइया दुविहा पुढविकाइया प० तं०

कायनां तेज वायु यावत् वनस्पति कायना बे जेद जाणिवा । ते कहैछे । सर्वलोकमां काजलनी कोपलीनीं परे भस्याछे । बादर जे दृष्टियें दीसे झाड  
वेली प्रमुख । बे प्रकारे पृथिवीकायिया कहिया ते कहैछे । एक पर्याप्ता जे छ पर्याय पूरीकरी मरे । बीजा अपर्याप्ता अहार शरीर इंद्रि आसो  
च्छासभाषामन एह छपर्याप्तिमा एकेद्रीने च्यार वेद्री तेद्री चोइद्री ने पांच सन्नीने छ असन्नीने पांच तेहमां आहारपर्याप्ति एक समयमां नीपजे  
बीजी पाच असख्यात समयमां नीपजे सवे अतमुहुर्तमानीपजे । अपर्याप्ति ते आसोआसकीधां बिनाज पहिली तीन पूरीकरी पर जवनो आयु



मनश्चक्तिः इन्द्रियपर्याप्तिः पञ्चानामिन्द्रियाणां योग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा अनाभोगनिर्वर्त्तितेन वीर्येण तद्भावनशक्तिः ३ आनप्राणपर्याप्तिः उच्छ्वासनिःश्वास  
 योग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा तथापरिणमय्या नप्राणतया निसर्जनशक्तिः ॥ ४ ॥ भाषापर्याप्तिर्वाचोयोग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा भाषात्वेनपरिणमय्य वाग्योगतयानि  
 सर्जनशक्तिः ॥ ५ ॥ मनःपर्याप्तिः मनोयोग्यान्पुद्गलान्गृहीत्वा मनस्तयापरिणमय्य मनोयोगतया निसर्जनशक्तिरिति ॥ ६ ॥ एताः पर्याप्तनामकर्म्मोदयेन  
 निर्वर्त्त्यन्ते तद्येषामस्ति ते पर्याप्तकाः अपर्याप्तनामकर्म्मोदयेनानिर्वृत्ताः येषा मेताः सन्ति ते पर्याप्तकाइति एताश्च युगपदारभ्यन्ते अन्तर्मुहूर्त्तेनच निर्व  
 र्त्त्यन्ते तत्र आहारपर्याप्ते निर्वृत्तिकालः समयएव कथमुच्यते यस्मात्प्रज्ञापनायासुक्त आहारपञ्जत्तीए अपञ्जत्तएण भते जीवे कि आहारए अणाहारए  
 गोयमानोआहारए अणाहारएत्ति सच विग्रहे आहारपर्याप्त्या अपर्याप्तको लभ्यते यदिपुन रूपातचेत्त्रप्राप्तोप्याहारपर्याप्त्या ऽपर्याप्तको भवेत् तदेव व्या  
 करणभवेत् गोयमा सियआहारए सियअणाहारएत्ति यथा शरीरादिपर्याप्तियु सियआहारए सियअणाहारएत्ति शेषाः पुनरसंख्यातसमया अन्तर्मुहूर्त्तेन  
 निर्वर्त्तन्तइति अपर्याप्तकासु उच्छ्वासपर्याप्त्या अपर्याप्ताएव म्रियन्ते नतु शरीरेन्द्रियपर्याप्तिभ्या यस्मादागामिभवायुष्कबध्वा न्नियन्ते तच्च शरीरेन्द्रिया  
 दिपर्याप्तापर्याप्तैरेव बध्यतइति एवमिति पूर्व्ववदेवेति ॥ १० ॥ दुविहापुढवौल्यादि ॥ षट्सूत्री परिणताः स्वकायपरकायशस्त्रादिना परिणामातरमापा  
 दिता अचिन्तीभूताइत्यर्थः तत्र द्रव्यतः क्षेत्रादिना मिश्रेण द्रव्येण कालतः पौरुषादिना कालेन भावतो वर्णगन्धरसस्पर्शान्यथात्वेन परिणताः क्षेत्रतस्तु

परिणयाचेव अपरिणयाचेव जाव वजरस्सइकाइया दुविहादद्या प० तंजहा परिणयाचेव अपरिणयाचेव  
 बांधीमरे ते अपर्याप्ता । एम यावत् वनस्पति लगे पाच थावर जाणिवा । वली पृथिवीकायना वे भेद ते कहै छे । एक परिणत जेशस्त्रादि

जोयणसयतुगंता णाहारेणतुभंडसंकती वायागणिधूमेणय विद्वत्थहोइलोणाई ॥ १ ॥ हरियालमणोसिल पिप्पलिखज्जूरमुहियाअभया आइन्नमणाइन्ना तेविहुएमेवनायच्चा ॥ २ ॥ आरुहणेंओरुहणे णिसियणगोणाइणचगाउण्हा भूमाहारच्छेदे उवक्कमेणेवपरिणामो ॥ ३ ॥ अणाहारेणति ॥ आदेशजाहाराभावेणेति भंडसंकतित्ति ॥ भाजनाझाजनान्तरसंक्रान्त्या खजूरादयोनाचारिताः अभयादयसु आचारिताइति परिणामांतरेपि पृथ्वीकायिकाएव तेकेवलमचेतना इति कथमन्यथा अचेतनपृथ्वीकायपिण्डप्रयोजनाभिधानमिदं स्यात् यथा घट्टवडगलगलेचोमाइपउयणवहुहत्ति ॥ एवमित्यादि ॥ प्रागिव तदेवमस्यैतानिसूत्राणि द्रवन्तिगच्छन्ति विचित्रपर्यायानिति द्रव्याणि जीवपुद्गलरूपाणि तानिच विवक्षितपरिणामत्वागेन परिणामातरापन्नानिपरिणतानि विवक्षितपरिणामवत्येवा परिणतानीति द्रव्यसूत्र षष्ठ ॥ १६ ॥ दुविहेल्यादि ॥ षट्सूत्री गतिर्गमन तासमापन्नाः प्राप्ता स्तद्धतो गतिसमापन्नाः येहि पृथ्वीकायिकाद्यायुष्कोदया तृथिवीकायिकादिव्यपदेशवन्तो विग्रहगत्या उत्पत्तिस्थानव्रजन्ति अगतिसमापन्नास्तु स्थितिमन्तो द्रव्यसूत्रे गतिर्गमन मात्रमेव शेषन्तथै

दुविहापुढविकाइया प० तं० गइसमावन्नगाचेव अणइसमावन्नगाचेव एवं जाव वणस्सइकाइया दुविहा

केकरी परिणत अचित्त थया । बीजा अपरिणत ते जीव सहित सचित्त । वे प्रकारें जीव और पुद्गल रूपद्रव्यछे । पर्यायांतरपामे तेद्रव्य तेकहैं छे । परिणाम पर्याय जेहना फिस्वा ते परिणत । नथी फिस्वा ते अपरिणत । बली पृथिवी कायना वे भेद ते कहैंछे । विग्रह गतिये करी ऊप जवाने थानके गमनकरे तेगति समापन्न । जे थानके रहियाछे ते अगति समापन्न । एमज यावत् अप् तेज वायु वतस्पतिलगे वेबे भेद जाणिवा । बली द्रव्यना वे भेद तेकहैंछे । गमनकरे ते गतिसमापन्न । ठेकाणेज रहे ते अगति समापन्न । बली पृथिवी कायना वे जेद ते कहैंछे ।

वेति ॥ २२ ॥ दुविहापुढवीत्यादि ॥ षट्सूत्री अनन्तरं संप्रत्येव समये कचिदाकाशदेश अवगाढा आश्रिता स्तएवानन्तरावगाढकायेषान्तु द्वादशः समया अवगा  
 ढानांतिपरंपरावगाढका अथवा विवक्षित क्षेत्रद्रव्यत्वा पक्षे अनन्तरमध्यवधानेनावगाढा अनन्तरावगाढा इतरेतु परम्परावगाढाः ॥ २८ ॥ अनन्तरं द्रव्यस्वरूप  
 मुक्त मधुना द्रव्याधिकारादेव द्रव्यविशेषयोः कालाकाशयोर्द्विसूत्र्याप्ररूपणमाह ॥ दुविहेकालेइत्यादि ॥ तत्र कथ्यते सख्यायते सावनेनवाकलनं वा कला  
 समूहोवेति कालः वर्तनापरत्वापरत्वादिलक्षणः सचा वसर्पिण्युत्सर्पिणीरूपतया द्विविधो द्विस्थानकानुरोधा दुक्तो न्यथा अवस्थितलक्षणी महाविदेहभो  
 गभूमिसम्भवौटतीयोप्यस्तौति ॥ आगासेत्ति ॥ सर्वद्रव्यस्वभावानाकाशयत्यादोपयति तेषा स्वभावलाभे अवस्थानदानादित्याकाशमाश्रयादाभिविधिव  
 ची तत्र मर्यादाया माकाशे भवतोपिभावाः स्वात्मन्येवा सतेनाकाशता यांतीलेव तेषामात्मसादकरणादभिविधीतु सर्वभावव्यापनादाकाशमिति तत्र

दद्या प० तं० गइसमावन्तगाचेव अणुगइसमावन्तगाचेव दुविहा पुढविकाइया प० तंजहा अणुंतरोगाढगा  
 चेव परंपरोगाढगाचेव जावदद्या दुविहेकाले प० तंजहा लसप्पिणीकालेचेव अवसप्पिणीकालेचेव दुविहे

जेहमणाज समये कोइक आकाश प्रदेशो आवीरहियो ते अनन्तरावगाढ । जेहने आकाश प्रदेशो रहियाने बे त्रण समय थयाछे ते परंपरावगाढ ।  
 हिवे कालनोस्वरूप कहैछे । बे भेदे काल ते कहैछे । एक उत्सर्पिणीकाल चढतो आरौ । बीजो अवसर्पिणीकाल उतरतो आरौ । पहिलो आरौ  
 सुसमसुसमा । बीजो सुसमा त्रीजो सुसमदुसमा चौथो दुसमसुसमा पाचमो दुसमा छठो दुसमदुसमा । अवसर्पिणीये एहथी फेरवी कहिये  
 ते उत्सर्पिणीकाल बे प्रकारें । आकाश जीवने द्रव्यने अवकाश आपे ते आकाश । जेहमां उद्रव्य धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय

लोकोयत्राकाशदेशेधर्मास्तिकायादिद्रव्याणांवृत्तिरस्ति स एवाकाशलोकाकाशमिति विपरीतमलोकाकाशमिति अनंतरं लोकालोकभेदेनाकाशद्वैविध्यमुक्तं  
लोकश्चशरीरिशरीराणांसर्वतश्चाययस्वरूपइति नारकादिशरीरदण्डकेनशरीरप्ररूपणमाह ॥ णेरद्रव्याणमित्यादि ॥ प्रायःकथ्यं नवरं शीर्यतेऽनुचणं चयाप  
चयाभ्यांविनश्यतीतिशरीरं तदेवसटनादिधर्मातया नुकम्पितत्वात् शरीरकं न्तेच द्वे प्रज्ञप्ते जिनेः अभ्यन्तर्मध्येभवमाभ्यतरं आभ्यन्तरत्वञ्च तस्य जीवप्रदेशैः  
सहक्षीरनीरन्यायेन लोलीभवनात् भवान्तरगतावपिच जीवस्यानुगतिप्रधानत्वादपवरकाद्यन्तःप्रविष्टपुरुषवदनतिशयिना सप्रत्यक्षत्वाच्चेति तथा वह्निर्भव  
म्बाह्यं बाह्यताचास्य जीवप्रदेशैः कस्यापि केषुचिद्द्रव्येष्वप्यन्तेर्भवान्तराननुयायित्वा त्रिरतिशयिनामपि प्रायःप्रत्यक्षत्वाच्चेति तत्राभ्यन्तरं ॥ कस्यएत्ति ॥  
कार्मणशरीरनामकर्मादयनिर्वर्त्यं मशेषकर्माणां अरोहभूमिराधारभूतं न्तथा ससर्वात्मनाद्भुतन्तरसद्भुतमणे साधकतमन्तत्कार्मणवर्गणास्वरूपं कर्माव  
कर्माकमिति कर्माकग्रहणेच तैजसमपिगृहीतद्रष्टव्यंतयोरव्यभिचारित्वे नैकत्वस्यविवक्षितत्वादिति एव ॥ देवाणभाणियव्वति ॥ अयमर्थः यधानैरयिकाणां

आगासे प० तं० लोगागासेचेव अलोगागासेचेव णेरद्रव्याणंदोसरीरगा प० तं० अण्प्रंतरगेचेव वाहिर  
गेचेव अण्प्रंतरएकम्मए वाहिरएवेउद्धिए एवंदेवाणंजाणियव्वं पुढविकाइयाणंदोसरीरगा प० तं० अण्प्रंतर

पुदगलास्तिकाय काल जीव एह छे ते लोकाकाश । एकलोकाकाश चौं दे राजप्रमाण जंचो सातमेनरकथी सिद्धलगे । अलोक जेहमां एकलो आका  
शछे । नारकीने वे शरीर होयछे ते कहै छे । अभ्यंतर जे जीवना प्रदेशथी मली रहियोछे क्षीर नीरनी परे वीजो प्रदेशथी अलगुं कोइक मलयूं  
साथे नजाय । अभ्यंतर ते कार्मण तैजस । वाहिर ते वैक्रियशरीर । एम देवताने पणि कहिवूं । पृथिवी कायना वे शरीर ते कहैछे । एक अभ्यं

शरीरद्वय अणितमेव देवानामसुरादीना म्बैमानिकान्ताना अणितव्यं कार्गणवैक्रिययोरेव तेषा भावाच्चतुर्विंशतिदण्डकस्यच विपक्षितत्वादिति ॥ पुढ वीत्यादि ॥ पृथिव्यादीनान्तुवाह्य मौदारिकशरीरनामकर्मादया दुदार पुद्गलनिर्घृत्त गौदारिक केवलमेकेन्द्रियाणा मस्थ्यादिविरहितं वायूनां वैक्रियं यत्त द्विवक्षित प्राधिकत्वात्तस्येति ॥ वेददियाणमित्यादि ॥ अस्थिमांसशोणितै बंधं यत्तत्तथा द्वीन्द्रियादीना मौदारिकत्वेपि शरीरस्यायविशेषः ॥ पचेदिएत्या दि ॥ पचेन्द्रियतिर्यप्पनुयाणा पुनरय विशेषो यदस्थिमांसशोणितसायुगिराबद्धमिति अस्थ्यादयस्तुप्रतीताइति प्रकारान्तरेण चतुर्विंशतिदण्डकेन शरीरप्र रूपणा मेवाह ॥ विग्रहेत्यादि ॥ विग्रहगति व्वक्रगति यदा विश्लेषणव्यवस्थितसुत्पत्तिस्थान गन्तव्यभवति तदा या स्या ता समापन्ना विग्रहगतिसमाप

गेचेव बाहिरगेचेव अण्प्रंतरएकम्मए बाहिरगेउरालिए जाव वणस्सइकाइयाणं वेदंदिद्याणं दोसरीरगा प० तं० अण्प्रंतरएचेव बाहिरएचेव अण्प्रंतरएकम्मए अण्ठिमंससोणितवद्धे बाहिरएउरालिए जावचउरिदिद्याणं पचदियतिरिक्कजोणियाणंदोसरीरगा प० तं० अण्प्रंतरगेचेव बाहिरगेचेव अण्प्रंतरगेकम्मए अण्ठिमंससो

तर । बीजो बाहिरलो । अभ्यतर तेकाम्मण तैजस । बाहिरलो ते औदारिक हाडमांसरहित । एम यावत् पनस्पतिकाय लगे बेबे शरीर जांणि वा । वेदंद्दी शखमुप्रखना जीवने बे शरीर होय तेकहेछे । एक माहिलो एक बाहिरलो । मांहि ते काम्मलतैजस । बाहिरलो ते हाडमांसलोहीये बाध्यो औदारिकशरीर । जाव तेइद्दी चौइंद्दी लगे जांणिवो । पचेद्रिय तिर्यचने बेशरीर होय । तेकहेछे । एक माहिलो एक बाहिरलो । मा हिलो ते काम्मणतैजस । बाहिरलो ते हाडमांसलोहीनाडीशिराये बाध्यो औदारिक । चौरिद्दीलगे नाडीशिरा नहोय । मनुष्यनें पिण बेशरीर

त्रा स्तेषां हे शरीरे इह तैजसकर्मण्यो भेदेन विवक्षेति एवं दण्डकशरीराधिकारा च्छरीरोत्पत्तिदण्डकेन निरूपयन्नाह ॥ नेरड्याणमित्यादि ॥ कण्ठ  
 किन्तु यारागद्वेषजनितकर्मणा शरीरोत्पत्तिः सारागद्वेषाभ्यामेवेति व्यपदिश्यते कार्यकारणोपचारादिति ॥ जाववेमाणियाणति ॥ दण्डकः सूचितः श  
 रीराधिकाराच्छरीरनिर्वर्तनसूत्रं तदथेव नभरमुत्पत्तिरारम्भमात्रं निर्वर्तनात् निष्ठानयनमिति शरीराधिकारा च्छरीरवतां राशिद्वयेन प्ररूपणा माह  
 दोकाद्येत्यादि ॥ त्रसनामकर्मोदया त्रस्यतीति त्रसा स्तेषां कायो राशिः त्रसकायः स्थावरनामकर्मोदयात् तिष्ठन्तीत्येव शैलाः स्थावराः तेषां कायः स्थाव

णियरहारुच्छिरावधे बाहिरए उरालिए मणुस्साणविएवंचेव विग्गहगतिसमावन्नगाणं नेरड्याणं दोसरी  
 रगा प० त० तेइएचेव कम्मएचेव निरंतरं जाव वेमाणियाणं नेरड्याणं दोहिठाणेहिं सरीरुप्पत्तीसिया  
 त० रागेणंचेव दोसेणचेव जाववेमाणियाणं नेरड्याणं दुठाणनिवृत्तिए सरीरगे प० तं० रागनिवृत्तिएचेव  
 दोसनिवृत्तिएचेव जाव वेमाणियाणं दोकाया प० तं० तसकाएचेव थावरकाएचेव तसकाएदुविहे पन्नत्ते

जाणिवो । बांकीगति करतां नारकीनें बेशरीर होय उपजिवाने थानके बांको चाली जायते । एक तैजस बीजो कर्मण । एम जाव आंतरारहित  
 चौबीसेदंडके वैमानिकलगे कहिवो । नारकीने बथानकेकरी शरीरनी उत्पत्तिखे शरीर बंधायखे ते कहैखे रागेकरी । द्वेषेकरी । एम जाव वैमानि  
 कलगे जाणिवो । नारकीनें बथानके करी शरीरनी निर्वर्तना छे । उत्पत्तिते प्रथम आरंभमात्र निर्वर्तनाते शरीरनां अवयवनों पूरो नीपजिवो ते  
 कहैखे । एक रागथी निर्वर्तना । बीजी द्वेषथी निर्वर्तना । राग द्वेषथी शरीर उपजै ते निर्वर्तना होय । एम जाव वैमानिकलगे । बेकाय ते राशि

रकाय इति नसस्थावरकाययो रेवहैविध्यप्ररूपणार्थं वसकायेत्यादिसूत्रद्वयं सुगमं चेति पूर्वसूत्रे भव्याः शरीरिण उक्ता इत स्तद्विशेषाणामेव यद्यथाकर्तुमुचितं  
तत्तथा दिष्टानकानुपातेनाह ॥ दोदिसाओइत्यादि ॥ हेदिशौकाष्ठे अभिगृह्णांगीकृत्य तदभिमुखीभूयेत्यर्थः कल्पते युज्यते निर्गता ग्रन्थावनादे रिति निर्ग  
न्याः साधय स्तेषां निर्गन्थः साध्य स्तासां प्रवाजयितुरजोहरणादिदानेन प्राचीन प्राचीं पूर्वाभित्यर्थः उदीचीन मुदीची मुत्तराभित्यर्थः उक्ताश्च पुत्रा  
मुहोउत्तर मुहोवदेजाहवापडिच्छेज्जा जाएजिणादप्रोवा हवेज्जजिणचेइयाप्रवत्ति ॥ १ ॥ एवमिति यथाप्रवाजनसूत्रं दिग्दयाभिलापेन अधीत मेवं  
मुण्डनादिसूत्राण्यपि षोडशाभ्येतव्यानीति तत्र मुण्डयितुं शिरोलुचनेन १ शिचयितुं गहणशिचापेक्षया सूत्रार्थो ग्राहयितुं मासेवनाशिचापेक्षया तु प्रत्यु  
पेक्षणादिशिचयितुं मिति २ उत्थापयितुं महान्नतपु व्यवस्थापयितुं ३ संभोजयितुं भोजनमण्डल्यां निवेशयितुं ४ संवासयितुं सस्तारकमण्डल्यां निवेशयि

तंजहा नवसिद्धिएचेव अन्नवसिद्धिएचेव एवं थावरकाएवि दोदिसाउ अग्निगिज्जकप्पइ निग्गंथाणंवा  
णिग्गंथीणंवा पट्ठावित्तए पाईणंचेव उदीणंचेव एवं मुंजावित्तए सिस्कावित्तए २ उवठावित्तए ३ संजुं

समूह तेकहैबै । वसकाय नसजीवनो समूह जे वस पाभै तेवस । थावरकाय थावरजीवसमूह । वसकाय बेप्रकारे तेकहैबै । एक नवसिद्धिया जेमो  
क्षजास्ये । एक अभवसिद्धिया जे कदापि मोक्ष न जास्ये । एम थावरकाय पिण नव्य अभव्य जाणिवा । जे तप्कायी चाली व्यापाये जावे तेवस ।  
जे थिररहे तेथावर । बेदिशिने साहमारहीने कल्पे सूक्ते साधुने तथा सध्वीने दीक्षादेवी ओचोप्रमुख वेशआपवो । पूर्वदिशि उत्तरदिशि साहमा  
रही दीक्षा देवी । एम बे दिशीये लोचकरवो । सूत्रार्थ श्रीरवो । ओठामणकरवो । पाचसहावृत थापवा जीमवो माडलीये एहीज वेदिशा साह

तु ५ सुष्टु आमर्यादया ऽधीयत इति स्वाध्यायो द्वादिस्तमुपदेष्टु योगविधिक्रमेण सम्यग्योगेनावीष्वेदमित्येवमुपदेष्टुमिति ६ समुद्देष्टु योगसमाचार्यैवस्थि  
 रपरिचितं कुर्विदमिति वक्तुमिति ७ अनुज्ञात तथैव सम्यगेतद्धारया ऽन्येपा च प्रवेदयेत्येव मभिधातुमिति ८ आलोचयितु गुरवे अपराधान् निवेदयितु  
 मिति ९ प्रतिक्रामितुं प्रतिक्रमण कर्तुमिति १० निन्दितु मतिचारान् स्वसमक्ष जुगुप्सितु ११ आहच सचरित्तपत्ययावो । निन्दतिगर्हितगुरुसमक्ष ताने  
 वजुगुप्सितुं १२ आहच अचरित्तपत्ययावो निन्दति गर्हित गुरुसमक्ष तानेव जुगुप्सितु १२ आहच गरहावितहाजातीय मेवनवर ॥ परप्पयासणयन्ति ॥  
 विउद्वित्तएत्ति ॥ व्यतिवर्त्तयितुं विन्नोटयितु विक्कुट्टयितु वा अतिचारानुबन्धि विच्छेदयितु मित्यर्थः १३ विशोधयितु मतिचारपङ्कापेक्षया त्मानविमलीक  
 र्तुं मिति १४ अकरणतया पुन न करिष्यामीत्येव मभ्युत्थातु मभ्युपगतु मिति १५ यथार्हं मतिचाराद्यपेक्षया यथोचित पापच्छेदकत्वात् प्रायश्चित्तवि  
 शोधकत्वाद्वा प्रायश्चित्त उक्तच पावच्छिद्वज्रजम्हा पायच्छिन्नतुभन्नएतेण पाएणवाविचित्त विसोहएतेण पच्छिन्नति ॥ १ ॥ तपः कर्म निर्विकृतिकादिकं

जित्तए ४ संवसित्तए ५ सज्जायंउद्विसित्तए ६ सज्जायंसमुद्विसित्तए सज्जायमणुजाणित्तए अलोइत्तए ७  
 पडिक्कमित्तए १० निदित्तए ११ गरहित्तए १२ विउद्वित्तए १३ विसोहित्तए १४ अकरणयाए १५ अण्णु

मोवेशीने । सिज्जाय तथा योग क्रियानो कहिवो एहीज दिशिये । योगनी समाचारी थिरकरवी परिचित करवी । तिमज योगक्रिया धारवी  
 बीजाने कहिवी । आलोचवू गुरूने आगलि अपराधनो कहिवुं । पडिकमणु करवू पापथो जसरवू । आत्माने साथे पापनिदवू । गुरूनी साथे पापनी  
 गर्हणाकरवी । पापपंकनो छेदिवू । अतीचारना मलयी आत्माने शुद्ध करिवू । बली पाप नकरवू तेहने अर्थे जतन करिवू । उजमालथावू । यथायोग्य



प्रतिपत्तुमभ्युपगन्तु मिति १६ सप्तदशं सूत्रं साक्षादेवाह ॥ दोदिसेत्यादि ॥ पश्चिमैवा मङ्गलपरिहारार्थं मपश्चिमा साचासौ मरणमेवयोक्त स्तत्रभवामा  
रणान्तिकी साचासौसलिख्यतेनयाशरीरकषायादीति संलेखनातपोविशेषः साचेति अपश्चिम मारणान्तिकसंलेखना तस्याः ॥ भूसृणन्ति ॥ जोषणा सेवा  
तया तल्लक्षणधर्म्मणेत्यर्थः ॥ भूस्रियाणन्ति ॥ सेविताना तद्युक्तानामित्यर्थः तया वा भूषिताना क्षपिताना क्षपितदेहानामित्यर्थः तथा भक्तपाने प्रत्याख्या ते  
यैस्ते तथा तेषां पादपव दुपगताना मचेष्टतया स्थितानामनशन विशेष प्रतिपन्नानामित्यर्थः काल मरणकाल मनवकांचिणा तन्नानुत्सुकाना विहर्तुं स्था  
तुमिति १७ एवमेतानिदिक्सूत्राण्या दितोऽष्टादश सर्व्वत्र यन्नव्याख्यातं तत्सुगमत्वात् इतिहिस्थानकस्य प्रथमोद्देशो विवरणतः समाप्तः ॥ १ ॥

ठित्तए अहारिहंपायच्छित्तंतवोकम्मं पफ़िवज्जित्तए १६ दोदिसाउ अग्निगिज्जकप्पइ णिग्गंथाणंवा णि  
ग्गथीणंवा अपच्छिममारणंतिय संलेहणा ऊसणाऊसित्ताणं नत्तपाणपफ़ियाइस्केत्ताणं पानुवगयाणं कालं  
अणवकखमाणणं विहरित्तए तंजहा पाईणंचेव उदीणंचेव ॥ वीयठाणस्सपढमोउद्देसउंसम्मत्तो १ ॥

अतीचारने अनुसारे प्रायश्चित्त पाप छेदवा टालवाने अर्थे तथा तपकर्म पडवजवाने अर्थे एतला बोल पूरबदिशि उत्तरदिशि सन्मुख रही आदरवा ।  
वली बे दिशिने सनमुखे रही ने कल्पे साधुने तथा साध्वीने छेहली मारणातिक मंगलीक पणा माटे अपश्चिम कही संलेखनानी सेवा ते प्रति सेवतां  
तेणे सहित देह सूकतां । जात पाणीनो जावजीव पचखाण करता । वृत्तनी काचीडालनी परे थिर रहियो । मरणने अणवाळवो एह रीते अजशन  
करवो ते बेदिशि सनमुखरही करवो ते कहेछे । पूर्व दिशिने तथा उत्तर दिशिने ॥ इति बीजाठाणानो पहिलो उद्देशो संपूरण थयो ॥ १ ॥

इहानन्तरोद्देशकेजीवाजीव धर्मादित्वविशिष्टाउक्ता द्वितीयोद्देशकेतु द्वित्वविशिष्टाएव जीवधर्मा उच्यन्त इत्यनेन सम्बन्धनायातस्योद्देशकस्येदमादिसूत्रं ॥ जेदेवेत्यादि ॥ अस्यचानन्तरसूत्रेण सहाय मभिसम्बन्धः प्रथमोद्देशकात्यसूत्रे पादपोपगमनमुक्त तस्माच्चदेवत्व केषांचिद्भवतीति देवविशेषभरणेन तत्त्व सम्बन्धवेदने प्रतिपादयन्नाह ॥ जेदेवेत्यादि ॥ येदेवाः सुराः वक्ष्यमाणविशेषणभ्यो वैमानिका अनशनादे रुत्पन्नाः किभूताः ॥ उडुत्ति ॥ उडुलोकस्तत्रोप पन्नका उत्पन्ना ऊर्ध्वोपपन्नका स्तेच द्विधा कल्पोपपन्नकाः सौधर्मादिदेवल्लोकोत्पन्नकास्तथा विमानोपपन्नकाः यैवेयकानुत्तरलक्षणविमानोत्पन्नाः कल्पा तीताइत्यर्थः तथापरे ॥ चारोववन्नगति ॥ चरन्ति भ्रमन्ति ज्योतिष्कविमानानियत्र स चारो ज्योतिश्चक्रक्षेत्र समस्तमेवव्युत्पत्त्यर्थमात्रानपेक्षणेन शब्दप्रवृत्ति निमित्ताश्रयणात् तत्रोपपन्नका चारोपपन्नका ज्योतिष्का नच पादपोपगमनादे ज्योतिष्कत्व नभवति परिणामविशेषादिति तेपिच द्विधैव तथा हि चारे ज्योतिश्चक्रक्षेत्रे स्थितिरेव येषांते चारस्थितिकाः समयक्षेत्रबहिर्वर्त्तिनो घटाकृतयइत्यर्थः तथा गतौ रति येषांते गति रतिकाः समयक्षेत्रवर्त्तिनइत्यर्थः गतिरतयश्च सततगतयोपि भवन्तीत्यत्राह गतिर्गमन समितिसन्तत मापन्नकाः प्राप्ता.गतिसमापन्नका. अनुपरतगतयइत्यर्थः तेषा देवानां द्विविधानां सदा नित्यसमित सतत यत्पाप ज्ञानावरणादि सततवन्धकत्वा जीवाना क्रियते वध्यते कर्मकर्मप्रयोगीय भवतिसम्पद्यतेइत्यर्थः ते देवा स्तस्यक

जेदेवा उडुववन्नगा तेदुविहा पन्नत्ता तंजहा । कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारठिइया

जदेवता ऊर्ध्वलोके ऊपनाछे ते बेप्रकारेछे ते कहैछे । कल्पते बादर देवल्लोकना ऊपना । विमाने ऊपना जे नवग्रैवेयकना पांच अनुत्तर विमानना ऊपना । चाले भमे ते जोतिषीदेवता अढीद्वीपना । थिरजोतिषी अढीद्वीपबाहिर । चालवानेविषे जेहनेरतिछे ते गतिरतिक मनुष्यक्षे

गणः आवाधाकालातिक्रमेसति ॥ तत्प्रगयावित्ति ॥ अपिरेवकारार्थं स्तस्यचैवंसंप्रयोगस्तत्रैव देवभवएव कल्पातीतानां चैत्रान्तरादिगमनासम्भवा दिह  
तत्रान्यत्रशब्दाभ्या भवएव विवदितो नक्षेत्रशयनासनादीनि गता वर्त्तमानाएको केचन देशा वेदना मुदयविपाकस्वेदयन्ति अनुभवन्ति ॥ अन्नत्यगयावित्ति ॥  
देवभवादत्यत्रैवभवान्तरे गता उत्पन्नादेवावेदनामनुभवन्ति केचित्तूभयत्रापि अन्ये विपाकोदयापेक्षया नोभयत्रापीति एतच्च विकल्पद्वय सूत्रेनाश्रितं हि  
त्वाधिकारादिति सूत्रोक्तमेष विकल्पद्वयं सर्वजीवेषु चतुर्विंशतिदण्डकेन प्ररूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ प्रायः सुगमं नवरं ॥ तत्प्रगयावि अन्नत्यग  
यावि ॥ एवमभिलापेनदण्डकोनेयो यावत् पञ्चेन्द्रियतिर्यचो अतएवाह ॥ जीवेत्यादि ॥ मनुष्येषु पुनरभिलापविशेषोदृश्यः यथा ॥ इहगयावि एगइयाइति ॥

गइरइया गइसमावन्तगा तेसिणंदेवाणं सयासमियं जेपावेकम्मे कज्जइ तत्प्रगयावि एगइया वेयणंवेयंति अ  
न्नत्यगयावि एगइया वेयणंवेयंति नेरइयाणं सयासमियं जेपावेकम्मेकज्जइ तत्प्रगयावि एगइयावेयणवेयति  
अन्नत्यगयावि एगइयावेयणंवेयति जावपचिदियतिरिक्कजोणियाणं मणुस्साणं सयासमियं जेपावेकम्मे

त्रना । गतिनेविषे पणवजा एतले ज्योतिषी । ते देवताने सदा जेपापकर्म उपजैल्ले बंधायेल्ले तेहीज देवताना भवनेंविषे केतलाएक देवता वेदैभो  
गवे । केतलाएक देवता भवांतरे जईने वेदे भोगवे । नारकी जे सदा सर्वदा निरतर पापकर्म करेल्ले बांधैल्ले तेपापना फल विपाक केतलाएक ति  
हाज नारकीमां रहिया वेदे भोगवे । अथवा बीजे जवातरे गया थका पणि केतलाएक नारकी ते पापना फल वेदै भोगवै । एम जाव पंचेन्द्रिय  
तिर्यचलगे जाणिवा जे भवे पापकरे तेहिजभवे जोगवे अने बीजै भवै पणि जोगवै । मनुष्य जे सदा पापकर्म करैल्ले तेपापना फल केतलाएक ते

सूत्रकारो हि मनुष्यो ऽतस्तत्रैव भूतपरोक्षानासन्ननिर्देशं विमुच्य मनुष्यसूत्रे दृष्टेयैव निर्दिशति स्म मनुष्यभवस्य स्वीकृतत्वेन प्रत्यक्षासन्नवाचिन इदमग्रदृश्य विषयत्वादिति अतएवाह ॥ मणुस्सवज्जासेसाएकगमत्ति ॥ शेषा व्यतर ज्योतिष्कवैमानिका एकगमाः तुल्याभिलापाः ननु प्रथमसूत्रेण ज्योतिष्क वैमानिकदेवानां विवक्षितार्थस्याभिहितत्वात् किंपुनरिह तद्वर्णनेनेति उच्यते तत्रानुष्ठान फलदर्शनं प्रसङ्गेन भेदतः शोक्तत्वा द्विहतु दण्डकक्रमेण सामान्यतः शोक्तत्वा दिति न दोषो भवति दृश्यते चेह तत्रतत्र विशेषोक्तावपि सामान्योक्ति रितरोक्तौ त्वितरेति तत्र गता वेदनां वेदयन्तौ त्युक्तमतो नारकादीनां गति तद्विपर्यय स्तामागतिश्च निरूपयन्नाह ॥ नेरइएत्यादि ॥ दण्डकः कण्ठो नवर नैरयिका नारका द्वयो र्मनुष्यगति तिर्यगगति लक्षणयो र्गंत्यो रधिकरण भूतयो र्गति र्येषांते तथा द्वाभ्यामेताभ्यामेवा वधिभूताभ्या मागति रागमनं येपाते तथा उदित नाकायु नारकएव व्यपदिश्यते अत उच्यते ॥ नेरइए नेरइए सुत्ति ॥ नारकेषु मध्ये इत्यर्थः इह चोद्देशक्रमश्चल्ययात् प्रथमवाक्येनागतिरुक्ता ॥ सेचेवणसेत्ति ॥ योमानुपत्तादिति नरकगतः स एवासी नारको नान्यो

कज्जइ इह गयावि एगइयावेयणं वेयति अन्तत्य गयावि एगइयावेयणं वेयति मणुस्सवज्जां सेसाएकगमा नेरइ यादुगइया दुयागइया पन्नत्ता तंजहा नेरइएनेरइए सुउववज्जमाणे मणुस्सेहितोवा पचिदियतिरिस्कजो

हिजजवे जोगवे । केतलाएक जवातरे जोगवे । मनुष्यवर्जा शोषवीजा दंष्ट्रक व्यंतर जोतिपी वैमानिक एकगमा सरीखा जांणिवा ॥ नारकीने जावानी वेगतिछै आवानी वेआगतिछै तेकहैछै । नारकीनो आऊखो जेणै बाध्यो तेहने नारकीज कहिये । ते नारकी नरकमां उपजैतो मनुष्यमाथी उपजै । अथवा पंचेद्री तिर्यचमाथी उपजै एह वे माहिथीज नारकीथाय बली तेज नारकी नारकीपणुं मूकैतो नरकमांथी नीसरी मनुष्यमा आवी

ॐ ने केकांतानित्यत्वं निरस्तमिति ॥ विष्णुजहमाणेति ॥ विष्णुजहन् परित्यजन् इहच भूतभावतया नारकव्यपदेशेऽनेनवाक्येन गतिरुक्ता इत्यस्य व्याख्या  
त तेजस्तायिकाया गतयस्तिर्यग्गणुष्यापेक्षया एकगतय स्तिर्यगपेक्षयेति वाक्यमुपजीव्येति ॥ एवमसुरकुमाराविति ॥ नारकवद्वक्तव्या इत्यर्थः, नवर के  
वल मयं विशेषः तिर्यक्तु नपंचेन्द्रियेष्वेवोत्पद्यते पृथिव्यादिष्वपि तदुत्पत्ते रित्यतः सामान्यतश्चाह ॥ सेचवणसे इत्यादि जाव तिरिक्त्वजोणियत्ता एवागच्छे  
ज्जति एवसब्बदेवति ॥ असुरवत् द्वादशापिदण्डकपदानिवाच्यानि तेषामप्येकेन्द्रियेषूत्पत्ते रिति ॥ नोपुढविकाएहिंतीति ॥ अनेन पृथ्वीकायिकनिषेधहा

णि एहिंतीवा उववज्जेज्जा सेचवणंसे नेरइयत्तं विष्णुजहमाणे मणुस्सत्ता एवा पचिंदियतिरिक्त्वजोणियत्ता  
एवागच्छेज्जा एवमसुरकुमाराणवि णवरं सेचवणंसे असुरकुमारत्तविष्णुजहमाणे मणुस्सत्ता एवा तिरिक्त्वजो  
णियत्ता एवा गच्छेज्जा एवसब्बदेवा पुढविकाइया दुगइया दुयागइया पन्नत्ता तंजहा पुढविकाइएपुढविका  
इएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतीवा णोपुढविकाइएहिंतीउववज्जेज्जा सेचवणंसे पुढविकाइयत्तंवि

उपजै । अथवा पंचेन्द्रीतिर्यक्त्वां आवी उपजै एवेठिकाणो जाय । एम नारकीनीपरं असुरकुमार जाणवा पणि एतलोविशेष जेते असुरकुमार देवता  
असुरकुमारपणो मूकेतो मनुष्य मां ऊपजै अथवा पंचेन्द्रीतिर्यक्त्वां मां पृथिवी पाणी वनस्पति एहमा पणि ऊपजै एतलोविशेष । एमसर्वदेवताना  
व्यतर जोतिषी सौधर्म ईशान लगे जाणवो । पृथिवीकायमां जीव बेगतीयेजाय बेमाथी आवे ते कहंछे । पृथिवी कायनो आयु वांधी पृथिवीकायमा  
उपजै अने पृथिवीकायमांथी पृथिवीकायमा उपजै । नारकी वजीने बीजा सर्वदण्डकमांथी आवी उपजै । पृथिवी प्रथमकही तेबिना बीजासर्व नोप

रेणाष्कायिकादयः सर्वे गृहीता द्विस्थानकानुरोधादिति तेभ्योवा नारकवर्जैः समुत्पद्येत ॥ नोपुढविकाइयत्ताएत्ति ॥ देवनारकवर्जाष्कायाऽदितया गच्छेदिति ॥ एवं जावमणुरसेत्ति ॥ यथा पृथ्वीकायिका दुग्इयाइत्यादिभि रभिलापै रक्ताः एवमेभिरेवाष्कायादयो मनुष्यावसाना. पृथ्वीकायिकशब्दस्था ने ऽष्कायादिव्यपदेश कुर्व्यद्विरभिधातव्याइति व्यन्तरादयस्तु पूर्वमतिदिष्टा एवेति २ जीवाविकारादेव भव्यादिविशेषणैः षोडशभि र्दण्डकप्ररूपणा माह तत्रभव्यदण्डकः कण्यः १ अनन्तरदण्डके ॥ अणतरत्ति ॥ एकस्मा दनन्तरमुत्पन्ना येते अनन्तरोपपन्नकाः तदन्यथातु परम्परोपपन्नका विवक्षितदेशापे क्षया वा ये ऽनन्तरतयोत्पन्ना स्ते आद्याः परंपरयावितरेइति गतिदण्डके गतिसमापन्नका नरकाइच्छत इतरेतु तत्र ये गता अथवा गतिसमापन्ना ना

प्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताएवा णोपुढविकाइयत्ताएवा गच्छेज्जा एवं जाव मणुस्सा दुविहाणेइया प० तजहा जवसिद्धियाचेव ज्ञवसिद्धियाचेव जाववेमाणिया दुविहा नेइया पन्नत्ता तजहा ज्ञंणंतरोववन्न गाचेव परंपरोववन्नगाचेव जाववेमाणिया दुविहाणेइया पन्नत्ता तजहा गइसमावन्नगाचेव ज्ञगइसमाव

थिवी कहिये । वली तेज पृथिवीकायना जीव पृथिवीकायणो मूके तो पृथिवीकायमां ऊपजै । अथवा नो पृथिवी ते बीजे सर्वथानके जाय देवता ना रकी जोगतिपी एतलामां नजाय । एम जाव मनुष्यलगे जाणवो । वली नारकी बे प्रकारे कहिया ते कहै छै । एकभव्यनारकी बीजा अन्नव्यनारकी । एम जाव वैमानिक चौबीस दंऊकै जाणवा । वली नारकी बे प्रकारे तें कहै छै । अनंतर ऊपना नारकी घणा एक उपना ॥ परंपराये ऊपना ते एकसमये एक बीजै समगे बीजो । एम जाव चौबीस दंऊकै वैमानिक लगे । वली नारकी बे भेदे ते कहै छै । एक नरकमां जाता अथवा नरक पणो पाम्या तुरत ते

रक्तल ग्रास्ताः इतरेतु द्रव्यनारका प्रथमा चलस्थिरत्वापेक्षया ते ज्ञेया इति प्रथमसमयदण्डके ॥ पठमेत्यादि ॥ प्रथमः समय उपपन्नानां येषान्ते प्रथमस  
मयोपपन्नका स्तदन्त्येअग्रमसमयोपपन्नका इति ॥ ४ ॥ आहारकदण्डके प्राहारकाः सदैव अनाहारकास्तु विग्रहगता वेका द्वौवा समयौ ये नाडीमध्ये  
गृत्वा तपेधोत्वयन्ते येलन्वया ते त्रीनिति उच्छासदण्डके उच्छासन्तीत्युच्छासका स्तत्पर्याप्तपर्याप्तका स्तदन्त्येतु नोच्छासकाः ॥ ६ ॥ इन्द्रियदण्डके सेंद्रिया  
इन्द्रियपर्याप्ता पर्याप्ताः तदपर्याप्तास्त्वनिन्द्रियाः पर्याप्तदण्डके पर्याप्ताः पर्याप्तनामकर्मादया दितरेत्वितरोदयादिति ॥ संज्ञिदण्डके सज्ञिनो मनःप

न्तगाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तं० पठमसमयउववन्नगाचेव अपठमसमयउववन्नगाचेव  
जाववेमाणिया दुविहानेरया पन्नत्ता तंजहा अाहारगाचेव अणहारगाचेव एवंजाव वेमाणिया दुविहा  
णेरइया पन्नत्ता तंजहा उरसासगाचेव नोउरसासगाचेव जाववेमाणिया दुविहाणेरइया पन्नत्ता तजहा  
सइंदियाचेव अणिंदियाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा पज्जत्तगाचेव अपज्जत्तगाचेव

गति समापन्न करिये । जे घणां कालना तिहां छे ते अगति समापन्न करिये ॥ एम जाव चौबीस दंरुके वैमानिक लगे जाणावा ॥ वली नारकी बे प्रकारे  
ते कहै छे । प्रथम समयना ऊपना बीजे समयना ऊपना । एम जाव चौबीस दंरुके वैमानिक लगे जाणावा । वली नारकी बे भेदे ते कहै छे ।  
सदैव आहार लेवे ते आहारक विगृह गतियें करी नरके उपजस्ये ते एकसमये बे समये अनाहारी । एम जाव चौबीस दंरुके वैमानिक लगे जा  
णावा । वली नारकी बे भेदे ते कहै छे । पर्याप्ता ते आसोआस ले । अपर्याप्ता आसोआस नधी लेता । एम जाव चौबीस दंरुके वैमानिकलगे

यांथा पर्याप्तका स्तया अपर्याप्तकास्तु येते असंज्ञिन इति एवं ॥ पंचेन्द्रियेत्यादि ॥ अस्यायमर्थः यथा नारकाः सद्भ्यसंज्ञिभेदेनोक्ताः ॥ एवंविगलेन्द्रियवज्ज  
 त्ति ॥ विकलान्यपरिपूर्णानि सख्येन्द्रियाणि येषान्ते विकलेन्द्रिया स्तान् पृथिव्यादीन् द्वित्रिचतुरिन्द्रियांश्चवर्जयित्वा ये अन्ये चतुर्विंशतिदण्डके पञ्चेन्द्रि  
 या असुरादयो भवन्ति ते सर्वेपि सद्भ्यसंज्ञितया वाच्या दण्डकावसानमाह ॥ जाववेमाणियत्ति ॥ वैमानिकपर्यवसाना अप्येववाच्या इति ॥ कृचिज्जाव  
 वाणमतरत्ति ॥ पाठ स्तत्रायमर्थः ये असंज्ञिभ्योनारकादितयोत्पद्यन्ते ते ऽसंज्ञिन एवोच्यन्ते असंज्ञिनश्च नारकादिषुव्यन्तरावसाने व्यपद्यन्ते न ज्योतिष्क  
 वैमानिकेष्विति तेषा मसंज्ञित्वाभावादिहग्रहणमिति ॥ ६ ॥ भाषादण्डके भाषका भाषापर्याप्त्युदये अभाषका स्तदपर्याप्तकावस्थायामिति एकैन्द्रियाणा

जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा सन्तीचेव असन्तीचेव एवंपंचिदियासहे विगलिंदियवज्जा  
 जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा आसगाचेव अजासगाचेव एवमेगिदियवज्जासहे दुविहानेर  
 इया प० तं० सम्मदिठियाचेव मिच्छदिठियाचेव एगिंदियवज्जासहे दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा परि

वली बेप्रकारे नारकी ते कहैछे । इंद्रीसहित ते पर्याप्ते करी पर्याप्ता । अपर्याप्ता हजी पूरी पर्याप्ति नथी थई । एम यावत चौबीस दंडके वै  
 मानिकलगे । वली नारकी बे प्रकारे ते कहैछे । पर्याप्तनाम कर्मथी एक पर्याप्ता बीजा अपर्याप्ता हजी पूरी पर्याप्ति नथी थई । एम जाव  
 चौबीस दंडके वैमानिकलगे । वली नारकी बे भेदे ते कहैछे सनी मन पर्याप्ति सहित असंजी मन पर्याप्ति नथी थई । एम सन्नी असन्नी पंचेद्री  
 सर्व जाणवा । विगलेद्री ढाडीने बेद्री चौरेद्री ढाडीने एहने मन नहोय । एम वैमानिकलगे लेवो । वली बे प्रकारे नारकी ते कहैछे । समकितदृष्टी



गापापर्याप्तिर्नास्तीत्यतः प्राह ॥ एवमित्यादि ॥ १० ॥ सम्यग्दृष्टिदण्डके सम्यक्तमेकैन्द्रियाणां नास्ति द्वीन्द्रियादीनान्तु सोखादनंस्था दपीत्युक्तं ॥ एगिंदिय  
 वज्जासञ्जेति ॥ ११ ॥ ससारदण्डके परित्तसंसारिकाः संचित्तभवा इतरेत्वितारे ॥ १२ ॥ स्थितिदण्डके कालः कृष्णोपिस्थात् समय आचारोपिस्था दतः  
 कालशासीसमयश्चेति कालसमयः सख्येयो वर्षप्रमाणतः सयस्यासा सख्येयकालसमया स्थितिरवस्थानयेपाते संख्येयकालसमयस्थितिका दशवर्षसहस्रादि  
 स्थितय इत्यर्थः इतरेतु पत्योपमासंख्येयभागादिस्थितयः ॥ सखेज्जकालठियत्तिक्काचित्पाठः ॥ सचसुगमएवेति ॥ एवमिति नारकवत् द्विविधस्थितिकाः द  
 ण्डकोक्ताः क्विसर्ज्येपि नेत्याह पञ्चेन्द्रिया असुरादयः किमुक्तं भवति एकोन्द्रियविकलेन्द्रियवर्जा एतेपांहि द्वाविशतिवर्षसहस्रादिकासख्यातैवस्थितिः पञ्चेन्द्रि  
 याप्रपि क्विसर्ज्ये नेत्याह यावद्द्वयान्तराः व्यंतरान्ता एतेहि उभयस्वभावाभपन्ति ज्योतिष्पावैमानिकासु असख्यातकालस्थितय एवेति ॥ १३ ॥ बोधिदण्डके

त्तसंसारियाचेव झणंतसंसारियाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्वत्ता तंजहा संखेज्जकालसमयठिइ  
 याचेव झसंखेज्जकालसमयठिइयाचेव एवंपचेंदिया एगिंदियविगलेंदियवज्जा जाव वाणमंतरा दुविहानेर

नारकी । मिथ्यादृष्टी नारकी । एम एकेद्री ठांडीने सर्व दंडके एकेद्रीमां सप्तकित नहोय । बे प्रकारें नारकी कहिया ते कहैछे । एक थोडा भव  
 शेष छे जेहना एहवो नारकी । बीजी अनत संसारी । एम यावत् वैमानिकलगे । नारकी बे प्रकारे ते कहैछे । एक संख्याता काल समयनी स्थि  
 तिना एतलें दशहजार वर्षना आजखानी स्थितिना । बीजा असंख्यात कालसमय स्थितिना । पत्योपम सागरोपमना आजखाना । एम पचेद्री  
 लगे । एकेद्री विगलेद्री ठांडीने एहने असंख्यातो आजखो नथी । एम जाव वाणव्यतरलगे जोतिभी वैमानिकना असख्याता आयु छे । बे प्रकारे

बोधि जिर्नधर्मः सा सुलभा येषान्ते सुलभबोधिका एवमितरेपि ॥ १४ ॥ पाक्षिकदण्डके शुक्लो विशुद्धत्वात्पक्षो भ्युपगमः शुक्लपक्षस्तेन चरन्ति शुक्लपा-  
 क्षिकाः शुक्लत्वच क्रियावादित्वेनेति आह च किरियावाद्भवे नोभवे सुक्लपक्षिणोकिण्हपक्षिणति शुक्लाना वास्तिकत्वेन शुद्धानांपक्षोवर्गः शु-  
 क्लपक्ष स्तत्रभवा शुक्लपाक्षिकाः तद्विपरीतासुक्लपाक्षिकाइति ॥ १५ ॥ चरमदण्डके येषां स नारकादिभवश्चरमः पुनस्तेनैव नीत्यत्स्यते सिद्धिगमना-  
 त्ते चरमा अन्येत्वचरमा इति ॥ १६ ॥ एवमेते आदितोऽष्टादशदण्डकाः ॥ प्राग्वैमानिकाश्चरमाचरमत्वेनोक्ता स्तेचावधिनाऽधोलोकादी न्विदित्यतस्तदेने-  
 जीवस्यप्रकारद्वयमाह ॥ दोहौत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय द्वाभ्या स्थानाभ्या प्रकाराभ्या आत्माजीवो ऽधोलोकज्ञानात्यवधिज्ञानेन पश्यत्यवधिदर्शनेन समवहतेन  
 वैक्रियसमुद्घातगतेनात्मना स्वभावेन समुद्घातान्तरगतेनवा असमवहतेन त्वग्यथेति एतदेव व्याख्याति ॥ अहोहौत्यादि ॥ यत्प्रकारो वधिरस्येति यथा वधिः

इया पन्नत्ता तंजहा सुलज्जवोहियाय दुल्लज्जवोहियाय जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा करह  
 परिकियाचेव सुक्लपस्त्रियाचेव जाववेमाणिया दुविहानेरइया पन्नत्ता तंजहा चरमाचेव अचरमाचेव जा-  
 ववेमाणिया दोहिंठाणेहिंश्याया अधोलोगं जाणइपासइ तंजहा समोहएणंचेव अप्पाणेणं श्याया अहेलो

नारकी छे ते कहैछे । एक सुलभ बोधीछे जेहने जिनधर्म पामवो सोहिलो छे । बीजो दुर्लज्ज बोधीछे जेहने जिनधर्मनो पामिवो दोहिलो छे । एम  
 जाव वैमानिकलगे जाणिवो । वली बे प्रकारे नारकी छे ते कहैछे । एकरुणापाखिया जे बहु कर्मा छे । बीजा शुक्ल पाखिया जेहना कर्म हलु  
 आ छे । एम जाव वैमानिकलगे जाणवा । नारकी बे प्रकार ते कहैछे । एक चरम जे फरी नारकीमां न जाय मोक्ष जाय ते । बीजो अचरम जे

आदिदीर्घस्वगाकृतत्वात् परमावधेर्वा अधोर्लघ्वधिर्यस्य सोधोवधि राज्ञा नियतत्वेनाविषया उपधिशान्ति सकदाचित् समवहतेन कदाचिदन्यथेति समवह  
ता समवहतेनेति एवमित्यादि एवमिति यथा ऽधोलोकः समवहतासमवहतप्रकाराभ्यां मवधेर्विषयतयोक्त एवतिर्यग्ग्लोकादयोपीति सुगमानिच तिर्यग्ग्लो  
कोर्ध्वलोक केवल कारणलोकसूत्राणि नवरं केवलः परिपूर्णः सचासौ स्वकार्यसामर्थ्यात्कारण्य केवलज्ञानमिवापरिपूर्णतयेति केवलकण्ठी अथवाकेवलकल्पः सम  
यभाषया परिपूर्णं स्वं लोकचतुर्दशरज्जात्मात्ममिति वैक्रियसमुदात्तानतरं वैक्रियशरीरं भवतीति वैक्रियशरीरमाश्रित्या ऽधोलोकादिज्ञाने प्रकारद्वयमाह ॥ दो  
होत्यादि सूत्रचतुष्टयं कांक्ष्यं अथ ॥ विउच्चएणन्ति ॥ कृतवैक्रियशरीरेणेति ॥ ज्ञानाधिकारएवेदमपरमाह ॥ दोहोत्यादि पञ्चसूत्रो स्थानाभ्यां प्रकाराभ्याम् ॥ देसे

गंजाणइपासइ असमोहएणंचेव अप्पाणेणं आया अहोलोगं जाणइपासइ अधोहिसमोहएसमोहएणंचेव  
अप्पाणेणं आया अहेलोगंजाणइपासइ एवतिरियलोगं उहूलोगं केवलकप्पं लोणं दोहिठाणेहिआयाअ  
होलोगंजाणइपासइ तंजहा विउच्चिएणंचेव अप्पाणेणं आया अहेलोगंजाणइपासइ अविउच्चिएणंचेव अ

वली नारकीमां जासे बीजां जवकरीने । एम जाव वैमानिकलगे वे प्रकारे जीव अधोलोकने जाणो देरो ते काहे छे । वैक्रिय समुदघाते जीव स्वप्ना  
वें करीने । अवधिनाशकरी अधोलोकने आत्मा जाणो देखे अवधि दर्शनेकरी । बीजे भेदै वैक्रिय समुदघात विनाज जीव अधोलोक प्रते जाणो देखे  
अवधिनाश अवधि दर्शनेकरी । अधोवर्ती अवधिनाशी जीव अथवा परमावधि नाशनी धर्मी वैक्रिय समुदघातेकरी अथवा वैक्रिय समुदघात विना  
पण जीवस्वप्नाये करीने अधोलोकप्रति जाणो देरो । इमज तिरछा लोकप्रते जाणो देखे । एमज ऊर्ध्वलोकप्रते जाणो देखे । एमज केवललोक ते चौदे

एविति ॥ देशेन शृणोत्येकेन श्रोत्रेणैकश्रोतोपघाते सति सर्वेणवानुपहतश्रोत्रेन्द्रियो योवा सभिन्नश्रोतोभिधानलब्धियुक्तः ससर्वैरिन्द्रियैः शृणोतीति सर्वेणेति व्यपदिश्यते एवमितियथाशब्दान् देशसर्वाभ्या एवरूपादीनपि नवरजिह्वादेशस्यप्रसुष्यादिनोपघाताद्देशेनास्वादयतीत्यवसेयमिति ॥ शब्दश्रवणादयो जीव परिणामा उक्ता स्त व्यस्त्वावात् तत्परिणामान्तराख्याह ॥ दोहीत्यादि ॥ नवसूत्राणि सुगमानि नवर अवभासते द्योतते देशेन खद्योतकवत् सर्वतः प्रदीपवत्

प्याणेणं श्यायाश्चहेलोगं जाणइ पासइ अहोहिविउह्वियाविउह्विएणंचेव अप्याणेणं श्यायाश्चहेलोगं जाणइ पासइ एवतिरियलोगं उह्ल्लोगं केवलकप्पलोगं दोहिंठाणेहिंश्याया सद्दाइं सुणेइ तंदेसेणवि श्याया सद्दाइं सुणेइ सव्वेणवि श्यायासद्दाइं सुणेइ एवरूवाइं पासइ गंधाइं श्याघायइ रसाइं श्यासाएइ फासाइं पल्लिसंवेएइ

राजप्रमाणप्रते जाणो देखै । केवलनाण केवल दर्शने करीने । वली बे प्रकारे जीव अधोलोकप्रते जाणो देखै शरीर आश्रीने । ते कहैछे । वैक्रिय शरीरे आत्मस्वभावे जीव अधोलोकप्रते जाणो देखै । वैक्रिय शरीर कीधां विनां पणि स्वभावेज अधोलोकप्रते जाणो देखै । परसावधि नाणनो धणी इमज वैक्रिय शरीर करीने अथवा अणकरीने स्वभावेज जीव अधोलोकप्रते जाणो देखै । इमज तिरट्ठालोक अने ऊर्द्धलोकना आस्तावा जाणिवा । बे थानके जीव शब्दप्रति सांजले ते कहैछे । देशथकी एकजकाने बीजा कानने उपघाते जीव शब्द शाजले एक कानने वहिरो । अथवा सर्वथी बे कानैकरी सामले संजिन्नश्रोतो लब्धिनो धणी सर्व प्रकारे सांजले । एम बे प्रकारे रूप देखै एक आखे कांणो होय ते देशथी । एम नासिकाथी गधलीये देशथी सर्वथी ए बे भेद एम जीजथी रसलीये देशथी पडजीभी प्रमुख रोग सर्वथी अन्यथालिये । एम फरशप णि देशथी सर्वथी कहिवू बे

अथवा अनभासते जानाति सच देशतः पटुकावधिज्ञानो सर्वतोभ्यन्तरावधिरिति एवमिति देशसर्वाभ्यां प्रभासते प्रकर्षेण व्योतते २ विकरोति देशेन ह  
 स्तादिवेक्रियकरणेन सर्वेण सर्वस्यैव कायस्येति ३ ॥ परियारेइति ॥ मैथुन सेवते देशेन मनोयोगादीनामन्यतमेन सर्वेण योगत्रयेणापि ४ भाषा भाषते देशे  
 न जिह्वादिना सर्वेण समग्रतात्वादिस्थानैः ५ आहारयति देशेन मुखमात्रेण सर्वेण ओजआहारापेक्षया आहारमेव परिणमयति परिणामत्रय  
 ति खलरसविभागेन भक्ताश्च देशस्य श्लोहादिनारुजत्वात् देशतः अन्यथा सर्वतः वेद्यति अनुभवति देशेन हस्तादिना अवयवेन सर्वेण सर्वावयवै रा  
 हारसत्त्वान् परिणमितपुद्गलान् दृष्टानिष्टपरिणामतः निर्ज्वरयति त्यजत्याहारितान् परिणामितान् वेदितान् आहारपुद्गलान् देशेन अपानादिना सर्वेण

दोहिंठाणेहिं ञ्णाया उंजासइ तंजहा देसेणवि ञ्णाया उंजासइ सहेणवि ञ्णाया उंजासइ एवंपजासइविउ  
 वइ परियावेइ जासजासइ आहारेइ परिणामेइ वेएइ निज्जारेइ दोहिंठाणेहिं देवेसद्दाइं सुणेइ तजहा

थानकेकरी जीव तेजैकरी दीपे ते कहै छे । देपथी खजुआनी परे दीपे । सर्वथी दीयानी परे दीपे एम प्रकर्षथी दीपे देशथी सर्वथी । एम विकुर्वे देशथी  
 हाथप्रमुख वैक्रियकरे सर्वथी काया । एममैथुन सेवे देशथी मनेकरी सर्वथी विधीये सेवे । एम जापा बोले देशे जीभथी सर्वथी तालु आदिकेकरी  
 एम आहार मुखमात्रे लीये सर्वथी पूर्ण आहार । एम परगमावे देशथी फीरे पेटमां होय तेणे सर्वथी राब आंगे । वेदे अनुजवे आहारने हस्ता  
 दिके अवयवे करी एकथी ते देशे । सर्व शरीरे भोगवे ते सर्वथी । देशथी छांडे अधोवात नीकले । सर्वरी आखे शरीरे परसेवनी परे । त्यजे छां  
 डे आहारने देणथी सर्वथी । बे थानके करीने देवता पणि शब्दप्रति साजले ते कहै छे देशथी एक शब्द मांथी कांडक साजले । सर्वथी जे बोले

शरीरेणैव प्रस्वेदवदिति अथचैतानि चतुर्दशापि सूत्राणि विवक्षितविषयवत्त्वापेक्षानियानि तत्र देशसर्वयोजना यथा देशेनापीति देशतोपिष्टुणोति ॥  
विवक्षितशब्दानांमध्ये कांश्चिच्छृणोति सर्व्वेणापीति सर्व्वतस्तु सामस्येन सर्व्वानेवेत्यर्थः एव रूपादीनपि तथा विवक्षितस्य देशसर्व्वत्वा विवक्षितमवभास  
यत्येवं प्रभासयत्येवंविकुर्वणीय विकुरुते परिचारणीय स्त्रीशरीरादिपरिचारयति भाषणीयापेक्षया देशतो भाषा भाषते सर्व्वतोवेति अम्यवहार्यमाहारय  
ति आहृतपरिणमयति वेद्यकर्मवेदयति देशतः सर्व्वतोवा एवनिर्जरयत्यपि ॥ देशसर्व्वाम्भ्यां सामान्यतः अवणाद्युक्तविशेषविवक्षाया प्रधानत्वात् देवा  
नां तानाश्रित्यतदाह ॥ दोहीत्यादि ॥ एतदपि विवक्षित शब्दादि विशेषापेक्षया सूत्रचतुर्दशक नेयमिति देशतःसर्व्वतोवेति अनन्तरोक्ताभावाः शरीरएवस  
ति सम्भवन्तीति देवानांच प्रधानत्वा तेषामेव व्यक्तितःशरीरनिरूपणायाह ॥ मरुयेत्यादि ॥ सूत्राष्टक कण्वम् नवरं मरुतो देवा लोकान्तिकविशेषै र्यत  
उक्त सारस्वता १ दिल्य २ वह्नि ३ वरुण ४ गर्दतीय ५ तुषिता ६ व्यावाध ७ मरुतो ८ रिष्टा ९ श्वेति तेचैकशरीरिणो विग्रहेकार्माणशरीरत्वात् तदन  
न्तरं वैक्रियभावात् द्विशरीरिणः द्वयोःशरीरयोः समाहारो द्विशरीर तदस्ति येषाते तथा अथवा भवधारणीयमेव यदा तदैकशरीराः यदोत्तरवैक्रियमपि  
तदा द्विशरीराः किन्नराद्या स्त्रयोव्यगतराः शेषा भवनपतयइति परिगणितभेदग्रहणञ्च भेदान्तरोपलक्षणं ननु व्यवच्छेदार्थं सर्व्वजीवानामपि विग्रहे एक  
शरीरत्वस्यान्यदाद्विशरीरत्वस्य चोपपद्यमानत्वादिति ८ अतएवसामान्यतआह ॥ देवादुविहेत्यादिकंण्वम् ॥ द्विस्थानकस्यद्वितीय उद्देशको विवरणतः स

देसेणवि देवेसद्दाइं सुणेइ सव्वेणविसद्दाइं सुणेइ जावणिज्जरेइ मरुयादेवा दुविहा पन्नत्ता तंजहा एगस

ते सर्व सामले । एम जाव निर्जरावे छाडे एवं सर्वभोल जाणिवा । मरुत देवता आठमां देव लोकांतिक देवता मांहि ते. वे प्रकारें कहिया ते

मातः ॥ २ ॥ उक्तो द्वितीयोद्देशको ऽथ तृतीय आरभ्यते । अस्य चानन्तरेण सहायमभिसम्बन्धो ऽनन्तरोद्देशको जीवपदार्थो ऽनेकधीकः प्रनतु तदुप-  
 ग्राहकपुद्गलजीवधर्मज्ञेन्द्रव्यलक्षणपदार्थप्ररूपणीच्यते इत्येवंसम्बन्धस्यास्येदमादिसूत्राष्टकं ॥ दुविहेत्यादि ॥ अस्य पूर्वसूत्रेणसहायमभिसम्बन्धः ग्रहानन्तरो-  
 द्देशकांलसूत्रे देवानां शरीरं निरूपितं तद्वांशशब्दादिग्राहकोभवतीत्यन शब्दस्तावन्निरूपत इत्येवं सम्बन्धस्यास्यव्याख्या साच सुकरैव नवरं भाषाशब्दो-  
 भाषापर्याप्तिनामकर्मादयो पादितो जीव शब्द इतर सु नोभाषाशब्दः अक्षरसम्बन्धोवर्णव्यक्तिमान् नोक्षरसम्बन्धः स्वितरइति २ आतीत्य स्मट्टादि स्तस्य

‘शरीरीचेव विसरीरीचेव एवंकिन्नरा किंपुरिसा गंधर्वा नागकुमारा सुवन्नकुमारा अग्निकुमारा वायुकुमारा  
 देवादुविहा पन्नत्ता तंजहा एगसरीरीचेव विसरीरीचेव ॥ बीजछाणस्सवीजंउद्देशं समप्रत्तो ॥ २ ॥  
 दुविहेसद्दे प० तं० ज्ञासासद्दे चेव नोज्ञासासद्देचेव ज्ञासासद्दे दुविहे प० तं० अस्सरसवस्सेचेव नोअस्सरसं

कहैं छे । एक शरीरी जिवारे भवधारणीय एक शरीर छे । जिवारे उत्तर वैक्रियकरैं तिवारैं बे शरीर । एग किन्नर देवता वली किम्पुरुष देवता  
 जाशिवा । एम गधर्व देवता नागकुमार देवता सुपर्ण कुमार देवता अग्निकुमार देवता वली वायुकुमार देवता लगैं बे बे शरीर जाणावा । वली  
 देवता बे प्रकार ते कहैं छे । एक शरीर जेहने भवधारणीय शरीर छे । बीजो उत्तर वैक्रिय शरीर धारी ॥ इति बीजा ठाणानो बीजो उद्देशो  
 पूरो थयो ॥ २ ॥ हिवे बीजो कहैं छे । बे शब्द छे । ते कहैं छे । एक ज्ञापा । एकनो ज्ञापा जे अजीवथी उपजैं अक्षर न जणाय ।  
 भाषा बे प्रकारे ते कहैं छे । अक्षर सहित । अक्षर रहित बोलतां अक्षर न जणाय । नो ज्ञापा बे प्रकारे ते कहैं छे । एक ताळनाये करी उपजैं ढोला

यः शब्दः सतथा नोआतोद्यशब्दोवंशस्फोटादिरवः ३ ततं यत्तन्त्रीवध्नादिवहमातोद्यं तच्च किंचित् घनं यथापिञ्जनकादिं किञ्चिच्छुषिरं यथा वीणापटहादिकं तज्जनितः शब्दस्ततो घनः शुषिरश्चेतिव्यपदिश्यते ५ विततततविलक्षणतन्यादिरहितं तदपि घनभाणकवत् शुषिरकाहलादिवत् तज्जः शब्दो विततो घनः शुषिरश्चेति चतुःस्थानके पुनरिदमेवभणियते । ततवीणादिकञ्जयविततपटहादिकं घनन्तुकांस्यतालादि वशादिशुषिरमतमिति १ विवक्षाप्राधान्याच्च नविरोधो मन्तव्यइति ६ भूषणं नूपुरादि नोभूषणं भूषणादन्यत् तालोहस्ततालः ॥ लत्तियत्ति ॥ कसिका स्ताहि आतोद्यत्वेन नविवक्षिता इति अथवा ॥ लत्तियासहेत्ति ॥ पार्णिप्रहारशब्दः ८ उक्ताः शब्दभेदा इतस्तत्कारणनिरूपणायह ॥ दोहीत्यादि ॥ दाभ्यांस्थानाभ्यां कारणाभ्यां शब्दो

वहेचेव णोञ्जासासहे दुविहे प० तं० ञ्णोञ्जासहेचेव णोञ्जासहेचेव ञ्णोञ्जासहेचेव दुविहे प० तं० ततेचेव विततेचेव ततेदुविहे पन्नत्ते तंजहा घणेचेव सुसिरेचेव एवविततेवि णोञ्जासहे दुविहे पन्नत्ते तंजहा नूसणसहेचेव नोनूसणसहेचेव नोनूसणसहे दुविहे पन्नत्ते तंजहा तालसहेचेव लत्तियासहेचेव दोहिं ठा

दिकनो । बीजो तारुना बिना उपजै जिम बास प्रमुख चीरतां थाय । तारुनाये जे थाय ते बे प्रकारे ते कहै छै । लोहनी तांतनों । बीजो तांत रहित । तत वादित्र बे प्रकारे ते कहै छै । एक घन ते निविठतालप्रमुख । एक वितत वादित्र पणि जाणवो । बिना ताडनार्ये उपजै ते बे प्रकारे ते कहै छै । भूषण नेउर भांभर प्रमुख । एक नूषण विनांनो । नो भूषण बे प्रकारे ते कहै छै । ताल ते हस्ततालनो । लातनो ते लापटपाटूनो प्रहार । बे प्रकारे शब्द उपजै ते कहै छै । संहन्यमान हणतां थका बादर पुदगलनो थाय ते घंटा अने लालार्ये बे थी उपजै । भांजतां बास प्रमुखथी



त्पादः स्या ज्ञेयं संज्ञन्यमानानां च संघातमापद्यमानानां सतां कार्यभूतः शब्दोत्पादः स्या तपश्चस्यर्थे वापद्यतीति संज्ञन्यमानेभ्यस्तत्पर्यः पुद्गलाणां बादरपरि  
णामानां यथाघण्टालालयो रेवंभिद्यमानानां च विद्युज्जमानानां यथावंशदलानामिति ॥ पुद्गलसंज्ञातभेदयोरेव कारणनिरूपणायाह ॥ दोहोत्पादि ॥  
सूत्रपक्षकं कंठ्या नवरं स्वयंचेति स्वभावेन वा भ्रमादिष्विव पुद्गलाः संज्ञन्यन्ते सम्बध्यन्ते कर्मकर्तृप्रयोगोऽयं परेण वा पुरुषादिना वा संज्ञन्यन्ते सज्ञताः क्रियन्ते  
कर्मप्रयोगोऽयं एव भिद्यन्ते विघटन्ते यथा परिपतन्ति पर्वतशिखरादेरिवेति परिशृण्वन्ति कुष्ठादेर्निमित्ता द्दुष्ट्यादिवत् विध्वस्यन्ते विनश्यन्ति घनपट

णेहिं सहुप्पाएसिया तंजहा साहन्ताणं चैव पुग्गलाणं सहुप्पाएसिया जिज्जांताणचैव पोग्गलाणं सहुप्पाए  
सिया दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहन्तांति सयंवापोग्गलासाहन्तांति परेणवा पोग्गला साहन्तांति दोहिं ठा  
णेहिं पोग्गला जिज्जाति तंजहा सयंवा पोग्गला जिज्जांति परेणवा पोग्गला जिज्जांति दोहिं ठाणेहिं पो  
ग्गला परिसस्रति सयंवा पोग्गला परिसस्रन्ति परेणवा पोग्गला परिसस्रति एव परिवस्रन्ति विस्संसन्ति दु  
विहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा जिन्नाचैव अजिन्नाचैव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा जिउरधम्माचैव नो

उपजै पुदगलनो । बे प्रकार पुदगल बंधाय छे ते कहै छे । एक स्वभावे पुदगल बंधाय बादल प्रमुख । परे करी पुदगल बंधाय मोरक परे  
एम बे प्रकारे पुदगल भेदाये ते कहै छे । एक पोतानी मेलें पुदगल सडीपडै छे । कोढथी आंगली प्रमुख । परथी पुदगल सडीपडै छे ।  
बे थानके करी पुदगल सडे ते कहै छे । पोतानी मेले पुदगल सडे छे । परथी । एम पडै छे पर्वतना शिखर । एम बिगसै छे बादल । बे

लवदिति ५ पुद्गलानेव द्वादशसूत्राणि निरूपयन्नाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ भिन्नाविघटिता इतरेत्वभिन्नाः स्वयमेवमिद्यन्ते इति भिदुरभिदुरत्व धर्मांयेषान्ते  
भिदुरधर्माणः अन्तर्भूतभावप्रत्ययोय अतिपक्षः प्रतीतएवेति २ परमाश्चते ऽणवश्चेति परमाणवः नोपरमाणवः स्तब्धाः सूक्ष्माः येषां सूक्ष्मः परिणामः  
शीतोष्णस्निग्धरूक्षलक्षणा श्रुतारण्यस्पर्शा स्तेच भाषादयः बादरा सु येषां बादरः परिणामः पञ्चादयश्चस्पर्शाः तेचोदारिकादयः ४ पार्श्वेनसृष्टाः देहत्व  
चाच्छुक्ता रेणुवत् पार्श्वसृष्टाः ततोवद्वाः गाढतरसस्निग्धा स्तनौतोयवत् पार्श्वतःसृष्टाश्च तेवद्वाश्चेति राजदन्तादित्वात् बद्धपार्श्वसृष्टाः आहच पुठरेणुव  
तणुमिवद्धमप्योकयपएसेहिति एतेच घ्राणेन्द्रियादिग्रहणगोचराः तथानोवद्वाः किन्तु पार्श्वसृष्टा इत्येकपदनिषेधे ओच्चेन्द्रियग्रहणगोचराः यतउक्त पुठं  
सुणेइसह रूवंपुणपासइअपुठतु गधरसंचफासं वद्धपुठवियागारेत्ति ॥ १ ॥ उभयपदनिषेधे ओच्चाद्यविषयाश्चक्षुर्विषयाश्चेति इयमिन्द्रियापेक्षया बद्धपार्श्व

जिउरधम्माचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा परमाणुपोग्गलाचेव नोपरमाणुपोग्गलाचेव दुविहा पोग्ग  
ला पन्नत्ता तंजहा सुज्जमाचेव वायराचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा वद्धपासपुठाचेव नोवद्धपासपु

प्रकारे पुदगल ते कहै छे । एक जुवाजुवा छे । बीजा एक मलिया छे । वली बे प्रकारे पुदगल ते कहै छे । पोताने मेले भेदायते जिदुर स्वभाव छे ।  
बीजा नोभिदुर स्वभाव छे वज्रादिक । बे प्रकार पुदगल ते कहै छे । परमाणु पुदगल जे नजर न आवे केवली जाणै । बंध पुदगल घणानो समूह  
ते नोपरमाणु । बे भेदै पुदगल ते कहै छे । एक सुहुम पुदगल ते भाषाना । बीजा बादर । बे भेदै पुदगल ते कहै छे । वद्धते बंधाणा घणूं सरीर  
ने एकपासे फरस्या नांक प्रमुख इंद्री गूहण योग्य । नोवद्ध ते बंधाणा नथी जे काने शब्द सांजलाय ते । एभेद इंद्री आश्रीने । बे भेदै पुदगल

सृष्टतापुद्गलाना व्याख्याता एवं जीवप्रदेशापेक्षया परस्परापेक्षयाच व्याख्येयेति ॥ परियादयन्ति ॥ विवक्षितपर्यायमतौताः पयाप्तावा सामस्यगृहीताः ॥  
 कर्मपुद्गलवत् प्रतिषेधः सुज्ञात आत्ता गृहीताः स्वीकृता जीवेन परिग्रहमात्रतया शरीरादितया वादयन्तेस्म अर्थक्रियार्थिभिरितौष्टाः कान्ताः कमनी  
 या विशिष्टवर्णादियुक्ताः प्रियाः प्रीतिकरा इन्द्रियालहादका मनसाज्ञायन्ते शोभना एत इत्येवम्बिकल्पमुत्पादयन्तः शोभनत्वप्रकर्षाद्येते मनोज्ञाः मनसो  
 मता वल्लभाः सर्वस्याप्युपभोक्तुः सर्वदाच शोभनत्वप्रकर्षादेव निरुक्तिविधिना मणामा इति १२ व्याख्यानान्तरन्त्वेवं इष्टा वल्लभाः सदैव जीवाना सामा  
 न्येन कान्ताः कमनीयाः सदैव तद्भावेनप्रिया अद्वेष्टा, सर्वेषामेव मनोज्ञाः कथयापिमनोरमाः मन आमा मनःप्रिया श्विन्तयापीति विपक्षः सुज्ञातः स  
 र्वत्रेति पुद्गलाधिकारादेवतर्मान् शब्दादीननन्तरोक्तसविपक्षतादिविशेषणषट्कविशिष्टान् ॥ दुविहेसद्वेत्यादि ॥ सूत्रत्रिशत्याह कण्ठाचेयमिति उक्ताः

ठाचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा परियादितच्चेव अपरियादितच्चेव दुविहापोग्गला पन्नत्ता तंजहा  
 अत्ताचेव अणत्ताचेव दुविहा पोग्गला पन्नत्ता तंजहा इठाचेव अणिठाचेव एवकंता पिया मणुन्ता म  
 णामा दुविहा सद्दा पन्नत्ता तजहा अत्ताचेव अणत्ताचेव एवमिठा जावमणामा दुविहा रूवा प० त०

ते कहैछे । पर्यायातीत जे समस्त गृहीया कर्म पुद्गलनी परे । समस्त गृहीया नथी ते । वली बे भेदे पुद्गल ते कहैछे । जीव परिग्रह तथा श  
 रीरपणे अगीकार कस्या । जे नथी अगीकार कीधा ते बीजा । वली बे प्रकारे पुद्गल ते कहैछे । एक इष्ट पुद्गल । एक अनिष्ट पुद्गल । एम  
 कांस जलावर्णादि सहित प्रिय इन्द्रियते सुखकारी । मनोहर देखतां मनने प्रिय लागे । बे प्रकारे शब्द छै ते कहैछे । एक जीवे गृहीया । एक नथी

पुद्गलधर्माः सम्प्रति धर्माधिकाराज्जीवधर्मानाह ॥ दुविहेआयारे इत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टयं कंठ्य त्रवरं आचरणमाचारो व्यवहारो ज्ञानं शुभज्ञानन्तद्विषयआचारः कालादिरष्टविधो ज्ञानाचारः आहच कालेविणयेबहुमा नवहाणेचेवतहयनिणहवणे वजणअत्यतदुभय अठ्ठविहीनाणमायारोत्ति ॥ १ ॥ नो ज्ञानाचार एतद्विलक्षणो दर्शनाचारइति दर्शनसम्यक्त तदाचारो निःशङ्कितारिष्टविधएव आहच निस्सकियनिकंखिय निव्वित्तिगिच्छाअमूढदिट्ठीय उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअठ्ठत्ति ॥ १ ॥ नोदर्शनाचार चारित्रादिरिति चारित्राचार. समितिगुप्तिरूपोष्टधा आहच पणिहाणजोगजुत्तो प चहिसमिद्धिगुत्तोहि एसचरित्तायारो अठ्ठविहीहोइनायव्वोत्ति ॥ १ ॥ नोचारित्राचार स्तपआचारप्रभृति तत्र तपआचारोद्वादशधा उक्तञ्च वारस

अत्ताचेव अणत्ताचेव जावमणामा एवंगंधा रसा फासा एव मिक्खिक्खे आलावगा जाणियत्ता दुविहे आया रे पन्तत्ते तजहा णाणायारेचेव नोणाणायारेचेव नोनाणायारेदुविहे पन्तत्ते तंजहा दंसणायारेचेव नोदंस णायारेचेव नोदंसणायारे दुविहे पन्तत्ते तंजहा चरित्तायारेचेव नोचरित्तायारेचेव णोचरित्तायारे दुविहे

गृहिया । एम इष्ट अनिष्ट जाव मनोहर अमनोहर जिम पूर्वे कहिआ तिम बे बे भेद जाणिवा । रूपना बे भेद ते कहैछे । एक चज्जुयें गहिया एक नथी गहिया । जाव मनोहरतांइ बे भेद कहिवा । एम गंध फरसनां पणि बे भेद जाणिवा । एम एकेकना ठ ठ आलावा भणिवा । आचारना बे प्रकार ते कहैछे । नाणाचार आठ प्रकारें कालै विणत्ते । नो नाणाचार एवीजो आचार दर्शनाचार । नो नाणाचार बे प्रकारे ते कहैछे । एक दर्शनाचार आठ प्रकारे निस्सकिय निकंखिय इत्यादि । बीजो नोदर्शनाचार ते चारित्राचार पणिहीणजोगजुत्तो । नोदर्शनाचार बे प्रकारे ते कहैछे

मिहमिवितवे अभितर बाहिरेकुसलदिडे अगिलाएअणाजीवी नायव्वोसोतवायारोति ॥ १ ॥ वीर्याचारस्तु ज्ञानादिष्वेव शक्तेरगोपन तदनतिक्रमश्चेति ॥ २ ॥ अणगूहियवलविरिओ परक्कमइजोजहुत्तमाउत्तो जुंजइयजहायाम नायव्वोवीरियायारोति ॥ १ ॥ अथवीर्याचारस्यैव विशेषाभिधानायषट् स्रोतोमाह ॥ दोपडिमेत्यादि ॥ प्रतिमाप्रतिपत्तिः प्रतिज्ञेति यावत् समाधान समाधिः प्रशस्तभावलक्षण स्तस्य प्रतिमा समाधिप्रतिमा दशाश्रुतस्कन्धोक्ता द्विभेदा श्रुतसमाधिप्रतिमा सामायिकादि स्मरित्रसमाधिप्रतिमा च उपधानन्तप स्तस्य प्रतिमा उपधानप्रतिमा द्वादशभित्तुप्रतिमा एकादशोपासक प्रतिमाद्येत्येवरूपेति विवेचन विवेक स्त्यागः सचान्तराणां कषायादीना बाह्याना गणशरीरभक्तपानादीनामनुचिताना तत्प्रतिपत्ति विवेकप्रतिमा व्युत्स

पन्तत्ते तंजहा तवायारेचेव वीरियायारेचेव दोपडिमाने प० तं० समाहिपडिमाचेव उवहाणपडिमाचेव दोपडिमाने प० तं० विवेगपडिमाचेव विउसगपडिमाचेव दोपडिमाने प० तंजहा नदेचेव सुनदेचेव

चारित्राचार आठ प्रकार पाच समिति त्रिण गुप्ति । नोचारित्राचार ते तपाचार प्रमुख । नोचारित्राचार बे प्रकार ते कहैछे । एक तपाचार बाहर भेदै । बीजी वीर्याचार धर्मने विषे बलनो फोरविओ । बे प्रतिमा एतले प्रतिग्या नियम विशेषछे ते कहैछे । एक समाधि प्रतिमा प्रशस्तरूप प्रतिमा मनना परिणाम चोखा होय ते । बीजी उपधान पडिमा तपविशेष साधुनी बारह पडिमा श्रावकनी इग्यारह । बली बे प्रतिमा ते कहैछे । विवेक प्रतिमा कषाय प्रमुख अयोग्य वस्तुनो त्याग करिवो छाडवो । काउसगनो करिवो ते व्युत्सर्गप्रतिमा । बली पडिमा बे प्रकारें ते कहै छे । भद्रा प्रतिमा पूर्व दिशिचे चार पहर लगे काउसगनो करिवो अथवा उपधान तप श्रावकने तथा साधुने योग्य तेहनो करिवो बे दिने पूरीथाय परीसहस्रमै

गंप्रतिमा कायोत्सर्गकरणमेवेति भद्रा पूर्वादिदिक्चतुष्टये प्रत्येकं प्रहरचतुष्टयकायोत्सर्गकरणरूपा अहोरात्रद्वयमानेति सुभद्राप्येवं प्रकारेणैवसम्भाव्यते  
 अष्टष्टत्वेनतु नोक्तेति महाभद्रापि तथैव नवर महोरात्रकायोत्सर्गरूपा अहोरात्रचतुष्टयमाना सर्वतोभद्रातु दशसुदिक्षु प्रत्येकमहोरात्रकायोत्सर्गरूपा  
 अहोरात्रदशकप्रमाणेति मोकप्रतिमा प्रश्रवणप्रतिमा साच कालभेदेन क्षुद्रिका महतीचभवतीति यतउक्तं व्यवहारे ॥ खुडियाणमोयपडिवन्नस्सेत्यादि ॥  
 इयञ्च द्रव्यतः प्रश्रवण विषया क्षेत्रतो ग्रामादेर्वहिः कालतः शरदिनिदाघेवाप्रतिपद्यते भुक्ताचेत्प्रतिपद्यते चतुर्दशभक्तेन समाप्यते अभुक्तातु षोडशभक्तेन  
 भावतस्तु दिव्याद्युपसर्गसहनमिति एवमहृत्यपि नवर भुक्ताचेत्प्रतिपद्यते षोडशभक्तेनसमाप्यते अन्यथात्वष्टादशभक्तेनेति यवस्यैवमध्य यस्याः सा यवम

दोपफिमानु प० तं० महाजदेचेव सवृतोन्नदेचेव दोपफिमानु प० तं० खुमियाचेव मोयपफिमा महलि

सुजद्रा प्रतिमा पणि इमज दश दिशि छे जे माटे बीजो प्रकार शास्त्रमां दीसतो नथी । वली बे प्रतिमा ते कहै छे । महाजद्रापफिमा पूर्वनी  
 परे एतलो विशेष एकेकदिशि अहोरात्रि काउसग एम च्यार अहोरात्रि प्रमाण । दशदिशि एकेक अहोरात्रि काउसग एतले दश अहोरात्रि मान  
 वली बे पफिमा ते कहै छे । एक नान्ही मोकपफिमा एतले प्रश्रवण पफिमा । बीजो मोटीमोकपडिमा कालथी नाहूी मोटी द्रव्यथी प्रश्रवण ल  
 घुनीत राखिवी क्षेत्रथी ग्रामादिकथी बाहिर रहिवूं कालथी शरद ग्रीष्म काले जमी आहारीने पडिवजें तो चौद जत्ते पूरीथाय । वली बे पडिमा  
 कही ते कहैछे । एक यवमध्यचंद्रपडिमा यवधान सरिखो छे मध्यजाग जेहनो अने चंद्रमानी परे बढती घटती कला अजुआली पडिवा दिने एक  
 कवल आहार करे तथा प्रतिदिन एकेक कवल धधारे इम पूनिमदिनें पनरह कवल ले पछै छंधारी पडिवा दिने पनरह कवल ले एम दिनदिन

ध्या चन्द्रव कलावृद्धि ज्ञानिभ्यां याप्रतिमा सार्चद्रप्रतिमा तथाहि शुक्लप्रतिपदि एकांकवल मभ्यवहृत्य ततःप्रतिदिनं कवलवृत्त्या पञ्चदशपूर्णमासां कणा प्रतिपदिच पञ्चदशभुक्ता प्रतिदिनमेकहान्या अमावास्यायामेकमेवगस्याभुंक्ते सा यवमध्याचन्द्रप्रतिमेति यस्यास्तु कणप्रतिपदि पञ्चदशभुक्ता एकेकहान्या अमावास्यायामेक शुक्लप्रतिपदिचैकमेव ततःपुनरेकेकवृत्त्यापूर्णमासांपञ्चदश भुंक्तेसायञ्चस्यैव मध्यं यस्या स्तन्वित्यर्थः सायज्जमध्या चन्द्रप्रतिमेति एषं भिं ज्ञादावपि वाच्यमिति प्रतिमाश सामायिकवतामेवभवन्तीति सामायिकमाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ समानां ज्ञानादीना मायो लाभः समायः सएवसामायि

याचेव मोयपङ्क्तिमा दोपङ्क्तिमानं पन्नत्तानं तंजहा जवमज्जेचेव चंदपङ्क्तिमा वड्ढरमज्जेचेव चंदपङ्क्तिमा दुविहे  
सामाइए प० तं० अणगारसामाइएचेव अणगारसामाइएचेव दोरहंउववाए प० तं० देवाणञ्चेव नेरइयणञ्चेव

एकेक कवल ओछो करे एम अमावस्याये एक कवल लीये एह यवमध्यचंद्रपङ्क्तिमा तप । बीजी वजूसध्यचंद्रपङ्क्तिमा वजूसरिखो मध्यछे जेहनों एम अधारी पडिवाये पनरह कवल लेई दिन दिन एकएक ओछो करतां अमावस्याये एक कवल लीये अजुआली पडवाये एक कवल लेई दिन दिन वधारे ते पूर्णमासीये पनरह कवल लीये एह रीते तप करिवो ते वजूसध्य तप । तातो पांणी पीजिये थांइ तो चौबिहार तथा त्रिविहार करे पूरी थाय आहार कीधा विना पडवजें तो सोलजत्ते पूरी थाय जावथी देवादि उपसर्ग सहै एह नाङ्गी मोकपङ्क्तिमा मोटी पिण इमज एतलो विशेष जे आहार लेईने पडिवजे तो सोलजत्ते पूरीथाय आहार विना पडिवजे तो अठार नत्ते पूरीथाय । बे प्रकारे सामायिक छे ते कहै छे । गृहस्थ आवकने सामायिक देश विरति रूप । साधुनो सामायिक सर्वविरति रूप । बे उपपात छे ते कहै छे । चार निकायना देवता

कमिति तद्विविधं अगारवदनगारस्वामिभेदादेशसर्वविरतीत्यर्थः जीवधर्माधिकारएत द्धर्मान्तराणि ॥ दोण्हंउववाए ॥ इत्यादिभि श्रुतुर्विंशत्यासूत्रैराह सुग  
मानिचैतानि नवर ॥ दोण्हति ॥ दयोर्जीवस्थानयो रूपपतनमुपपातो गर्भसम्पूर्णलक्षणजन्मप्रकारद्वयविलक्षणो जन्मविशेषइति दीव्यतीतिदेवा श्रुतुर्निका  
याः सुराः नैरयिका. प्राग्वत्तेषां उद्धर्तन मुद्धर्तना तज्जायान्निर्गमो मरणमित्यर्थः तच्चनैरयिकभवनवासिनामेवैवं व्यपदिश्यते अन्येषान्तु मरणमेवेति नैर  
यिकाणां नारकाणां तथा भवनेष्वधोलोकदेवावासविशेषेषु वस्तु शीलमेयामिति भवनवासिन स्तेषां २ श्रुतिश्च्यवन मरणमित्यर्थः तच्च ज्योतिष्कवैमानिका  
नामेव व्यपदिश्यते ज्योतिष्यु नक्षत्रेषु भवा ज्योतिष्काः शब्दव्युत्पत्तिरेवेव प्रवृत्तिनिमित्ताययणात्तु चन्द्रादयोज्योतिष्काइति विमानेषूर्ध्वलोकेषुभवा वैमा  
निकाः सौधर्मादिवासिनः स्तेषां गर्भगर्भाशये व्युत्क्रान्तिरुत्पत्ति गर्भव्युत्क्रान्ति मनोरपत्यानिमनुष्या स्तेषां त्तिरोच्चन्ति गच्छन्तीतितिर्यञ्च स्तेषां सस्वन्धि  
नीयोनिरुत्पत्तिस्थानं येषान्ते तिर्यग्योनिका. तेचैकेन्द्रियादयोपिभवन्तीति विशिष्यते पञ्चेन्द्रियाश्च तिर्यग्योनिकाश्चेति पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका स्तेषां तथा

दोण्हंउवहृणा प० तं० नेरइयाणंचेव जवनवासीणंचेव दोण्हंचयणे प० तं० जोइसियाणंचेव वेमाणिया  
णंचेव दोण्हंगल्लवक्कांती पन्नत्ता तंजहा मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्कजोणियाणंचेव दोण्हंगल्लत्याणं ण्णा

नो उपपात उपजिवो । सात नारकीनो उपपातळे गर्भस्थिति नथी । वे उद्धर्तनाळे उद्धर्तना तेनीकलवू मरण रूप ते कहैछे । एक नारकीने मरण  
रूप उद्धर्तना । वीजी जवनपती देवताने पणि उद्धर्तना कहिवी । वे ठिकाणे मरण ते च्यवन कहिवो ते कहैछे । चंद्रसूर्य जोतिपी देवतानो चवन  
चविवो । वैमानिकदेवतानो चविवो ऊर्ध्वलोकनां देवतानो । वेने गर्भमा उपजिवोछे ते कहैछे । मनुष्यने गर्भपणे उपजिवो छे । तथा पंचेन्द्रिय ति



द्वयोरेवगर्भस्थयो राहारी ऽन्येषां गर्भस्थैवाभावादिति ५ वृद्धिः शरीरोपचयः ६ निर्बृद्धि स्तब्धानि वातपित्तादिभि निर्णवदस्या भावार्थत्वात् निरुदराकन्ये  
 त्यादिवत् ७ वैक्रियलब्धिमतां विकुर्वणा १० गतिपर्याय चलन मृत्वावागत्यन्तरेगमनलक्षणो यच्चवैक्रियलब्धिमान्गर्भाभिर्गत्य प्रदेशतोवहिःसंग्रामयति सवा  
 गतिपर्यायः उक्तञ्च भगवत्यां जीवेणभतेगभगएसमाणेनेरद्रएसुउववज्जेज्जा गोयमा अत्थेगइए उववज्जेज्जा अत्थेगइएनोउववज्जेज्जा सेकेणठ्ठेण० गो० सेणंस  
 त्रिपचिदिए सव्वाहिंपज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउब्बियलद्धीए पराणीयमागयंसोच्चा निसम्मपएसे निच्छुभइ निच्छुभइत्ता वेउब्बियसमुग्वाएणं समो  
 हणइ चाउरगिणिसेत्रं विउव्वइ विउव्वइत्ता चाउरंगिणीएसेणाए पराणीएणं सद्धिं सगामसंगामेइ इत्यादि ॥ ८ ॥ समुद्घातो मारणांतिदादिः ॥ १० ॥  
 कालसंयोगः कालकृतावस्था ॥ ११ ॥ आयातिर्गर्भाभिर्निष्क्रमः ॥ १२ ॥ मरण प्राणत्यागः ॥ १३ ॥ दोषहंछविपव्वत्ति ॥ इयानामुभयेषां छवित्तिमतुप्लोपा

हारे पन्तत्ते तंजहा मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्कजोणियाणंचेव दोरहंगप्पत्याणंबुह्मी प० तं० मणुस्साणं  
 चेव पंचेंदियतिरिक्कजोणियाणंचेव एवंनिबुह्मीविगुह्वाणागइपरियाए सप्पुग्घाइकालसजोगे ण्णायाइमरणे दो  
 रहंछविपव्वा प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्कजोणियाणंचेव दोसुक्कसोणिअसंजवा प० तं० मणु

यंचनें एकेन्द्रियादिकनें नथी । बेनें गर्जमां आहारखे तेकहैखे । मनुष्यनें गर्भमां आहार । तथा पंचेंद्रिय तिर्यंचनें मातानां उदरसांज आहार लि  
 यैखे । बेने शरीरनी वृद्धि उपचय कहियो ते कहैखे । मनुष्य गर्भमांयकांज बधै । पंचेंद्रिय तिर्यंच पणि बधै । बेने शरीरनी हानिकही तेकहैखे  
 वात पित्त कफादिकैकरी । मनुष्यनें तथा तिर्यंचनें । एम विकुर्वणा वैक्रियलब्धिवंत । एम गतिपर्याय गर्भमाथी बाहिर गमन करे प्रदेश बाहिर

तु हविमति त्वग्वन्ति ॥ पञ्चन्ति ॥ पञ्चानि सन्धिवन्धनानि हविपञ्चानि क्वचित् ॥ हवियस्तत्तिपाठ स्तत्र हवियोगात् हविः स एव हविकः सचासी ॥  
 अत्तत्ति ॥ आत्मा च शरीरहविकात्मेति ॥ हविपञ्चत्तिपाठान्तरे ॥ हविःप्राप्ता जातेत्यर्थः गर्भस्थानामिति सर्वत्रसम्बन्धनीयः ॥ १४ ॥ दोसुकैत्यादि ॥ इयं  
 शुक्ररेतः शोणितमार्तवन्ताभ्यां सम्भवोयेषान्ते तथा ॥ १५ ॥ कायठिइत्ति ॥ कायेनिकाये पृथिव्यादिसामान्यरूपेण स्थितिः कायस्थितिः असंख्योत्सर्पि  
 ण्यादिका भवेभवरूपावा स्थिति भवस्थिति भवकालइत्यर्थः ॥ १६ ॥ दोणहति ॥ इयाना सुभयेषामित्यर्थः ॥ कायस्थितिः सप्ताष्टभवग्रहणरूपा पृथिव्यादी  
 नामपि सास्ति नचानेनतद्वावच्छेदःअयोगव्यवच्छेदपरत्वात् सूत्राणा मिति ॥ १७ ॥ दोणहेत्यादि ॥ देवनारकाणां भवस्थितिरेव देवादेः पुनर्देवादित्वे  
 ना नुत्पत्तेरिति ॥ १८ ॥ दुविहेत्यादि ॥ अद्वाकाल स्तत्रधान मायुःकर्मविशेषो ऽद्वायुर्भवात्ययेपि कालान्तरानुगामीत्यर्थो यथामनुष्मायुः कस्यापिभवा

रसाचेव पंचेंद्रियतिरिस्कजोणियाचेव दुविहाठिई प० तं० कायठिईचेव जवठिईचेव दोणहंकायठिई प०  
 तं० मणुरसाणंचेव पंचेंद्रियतिरिस्कजोणियाणंचेव दोणहंजवठिई प० तं० देवाणंचेव नेरइयाणंचेव दुविहे

काढी संग्राम करें एम भगवती सूत्रमां कहियोछै । एम मारणांतिक समुदघात छै । एम कालमरणांनी अवस्था छै । बेनें हविपर्व संधिबं धनछै ते  
 कहैछै । मनुष्यने तथा पंचेंद्रिय तिर्यंच जलचर थलचर खचरने होय । बे जीव शुक्र पित्तानो वीर्य शोणित मातानो रुधिर तेणैकरी उपजैछै तेक  
 हैछै । मनुष्य तथा पंचेंद्रिय तिर्यंच । जीवनी बेप्रकारे थितिकही तेकहैछै । पृथिवीप्रमुख ह कायमां रहिवूं । तथा भवनेबिषेरहिवूं । बेजीवने का  
 यथिति छै । मनुष्य मरीने सात आठ जवस्तगे मनुष्य थाय एह काय थिति । पंचेंद्रिय तिर्यंचने । बे जीवने भवस्थिति कही एक भवकरे ते कहै छै

त्ययएवनागच्छत्यपि १ सप्ताष्ट भवमाण कालमुत्कर्षतो नुवर्तवइति तथा भवप्रधानमायु र्भवायु र्यज्ञवात्ययेपगच्छत्येव भवान्तरमनुयाति यथादेवायु रिति ॥ २० ॥ दोषहमित्यादि ॥ सूत्रद्वयं भावितार्थमेव ॥ दुविहेकमीश्वत्यादि ॥ प्रदेशाएव पुत्रलाएव यस्यवेद्यते न यथावहोरस स्तब्धदेशमात्रतया वेद्यकर्म प्रदेशकर्म यस्यतु अनुभवो यथावत्परसोवेद्यते तदनुभावतो पेद्यंकर्मा नुभावकर्मेति ॥ २२ ॥ दोषत्यादि ॥ यथावत्प्रायु र्यथायुः पालयन्त्यनुभव न्ति नोपक्रम्यते तद्वितियावदिति देवानेरइयाविय असंखवासाउयातिरियमणया उत्तमपुरिसायतहा चरमसरीरानिरुवकमत्ति ॥ १ ॥ वचनेसत्यपि देव नारकयो रेवेह भयनविस्थानकानुरोधादिति ॥ २२ ॥ दोषहमित्यादि ॥ संवर्त्तनमपवर्त्तनं संवर्त्तः सण्यसवर्त्तकउपक्रमइत्यर्थः आयुषः सवर्त्तकप्रायुः संव

आउए प० तं० अष्टाउएचेव जवाउएचेव दोरहंअष्टाउए प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिस्कजोणियाणं  
चेव दोरहंजवाउए प० तं० देवाणंचेव नेरइयाणंचेव दुविहेकम्मे प० तं० पदेसकम्मेचेव अणुजावकम्मेचेव  
दोअष्टाउयंपालेइ तंजहा देवच्चेव नेरइयच्चेव दोरहंअष्टाउयसंवट्टए प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिस्क

देवताने अनें नारकीने नारकी मरी वली नारकी नथाय । बे प्रकारे आयु छे ते कहै छे । काल प्रधान आयु बीजो जवप्रधान आयु । बे जीवनो कालप्रधान आजखो कहियो ते कहै छे । मनुष्यनो । तखा पंचेद्रिय तिर्यंचनी । बे जीवनो भयप्रधान आजखो कहियो ते कहैछे । देवतानो । तथा नारकीनो । बे प्रकारे कर्मछे ते कहैछे । प्रदेशकर्म पुद्गलहीज वंदै । बीजो अनुभावकर्म कर्मनो रस भोगवीये । बे जीव जेतलो आजखो बां ध्योछे तेतलो भोगवे ते कहैछे । देवता पूरो आजखो पाली चवे । नारकी पणि पूरो आजखो भोगवे । बे जीवनो संवर्त्तक आजखो छे ते कहैछे

र्त्तइति २४ पर्यायाधिकारादेव नियतचेत्राश्रितत्वात् क्षेत्रव्यपदेशान् पुद्गलपर्यायानभिधितम् ॥ जंबुद्वीवेत्यादिना ॥ चेनप्रकरणमाह सुगमचतत् नवरमि  
 ह जम्बूद्वीपप्रकरण परिपूर्णमण्डनाकार जम्बूद्वीप तन्मध्येमेव उत्तरदक्षिणतः क्रमेणच वर्षाणिस्थापयित्वा तद्यथा भरतहेमवयतियहरिवासतियम  
 हापिदेहति रम्भाशमेरुत्रय एरव्यचेरासाइति ॥ १ ॥ तथा वर्षांतरेषु वर्षधरपर्वतान् कल्पयित्वा तद्यथा हिमवंत १ महाहिमवत २ पर्वत्यानि  
 सठनौलाताय ३ रूपो ५ सितरो ६ एए यासहरगिरोमुण्यञ्जति ॥ १ ॥ सर्वमेवंपोष्यमिति मंदरस्य मेरोरुत्तराच दक्षिणाच उत्तरदक्षि  
 णे तयो रुत्तरदक्षिणयोरिति वागो उत्तरदक्षिणेनेति स्यादेनप्रत्ययविधानादिति द्वेवर्षे क्षेत्रे प्रज्ञप्ते जिनेः समतुल्यगन्धः सदृशार्थः प्रत्यंतसमनुत्ये य  
 दुसमतुल्ये प्रमाणतः पविशेपेषपिशेपलक्षणे नगनगरनद्यादिज्ञतविशेषरहिते अनानाले अवमर्षिण्यादिज्ञतायुरादिभावभेदवर्जित किमुक्ताभावतीत्याह  
 पन्थोग्य परस्पर नातिवर्तते इतरेतरं नलक्ष्येत इत्यर्थः कौरिल्लाह पायामेनदैर्घ्येण विष्कभेन पृथुत्वेन संस्थानेनारोपितज्यधनुराकाणेन परिणाहेन परि  
 धिनेति इहच इन्द्रेणवद्भानः कार्यइति अथवा बहुसमतुल्ये पायामतः तथाहि भरतपर्यंतं जेणीं चोदसयसहस्राद्र सयाइं चत्तारिएगसयराइ भरतहुत

जोणियाणंचेव जंबुद्वीवेद्वीवे मंदरस्सपह्यस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासा प० तं० वज्जसमउल्ला अविसेगम

मनुष्यनो । तथा पंचेन्द्रिय तिर्यंचनो एकेदियादिरु पिण एतमांज आख्या जलगर यलगर रागर सर्वनो । परिपूर्णं चंद्रमंक्रणाकार जंबुद्वीप मेरुपर्वत  
 एक तास योक्तन ऊचो तेहनें उत्तरपासे तथा दक्षिणपासे जे वर्ष क्षेत्रे ते कहेंछे । प्रमाणणी प्रदुत सम वरागर रागिया ॐ पिउंय अश्विमां नयी  
 पंत नगर नदीनो विशेष नथी एकएकथी वधता नथी आरा प्रमुखनां भावेकरो लांयपण पिउलपण मंठाण आकार बढाया धनुषने आकर

रजीवा कृच्चकलाज्जिग्याकिचि ॥ १ ॥ कलाच योजनस्यैकोनविंशतितमोभाग इति । १४४७१ । ६ । १८ । ऐरवतेष्वेतथा अविशेषे विष्वांभत स्तथाहि  
 पचसएकब्बीसे कृच्चकलावित्थडभहरवासति । ५२६ । ६ । १८ । अयमेव चैरवतस्थापीति अनानात्वे सस्थानतः अन्योन्यं नातिवर्त्तते परिणाहतः परिणा  
 हश्च ज्याधनुःपृष्ठयोर्यत्प्रमाण तत्रज्याप्रमाणमुक्तान्वनुःपृष्ठप्रमाण त्विदं चोद्दसयसहस्राद् पंचेवसथाद् अठ्वीसाद् एगारसयकलाओ धणुपिठुत्तरदस्स ॥ १ ॥  
 ॥ १४५२८ ॥ । ११ । १८ । यथा भरतस्यैरवतस्यापि तथैवेति एकार्थिकानिचैतानिपदानि भृशार्थत्वाच्च नपुनरुक्तानि उक्तञ्च अनुवादादरवीप्सा भृशार्थवि  
 नियोगहेत्वसूयासु ईषत्सभ्रमविस्मय गणनास्मरणेष्टपुनरुक्तमिति ॥ १ ॥ तद्यथा ॥ भरहेचेवेत्यादि ॥ उत्तरदाहिणेणति ॥ एतस्यपाठस्य यथासंख्यन्याया  
 श्रयणा यथासत्तिन्यायाश्रयणाच्च जंबूद्वीपस्यदक्षिणेभागे भरत माहिमवत स्तस्यैवोत्तरे भागे ऐरवतं शिखरिणः परतइति एवमिति भरतैरवतवत् एते  
 नाभिलापेन जंबूद्वीवेदौवेमदरस्येत्यादिना उच्चारणेनापरसूत्रद्वय वाचं तयोच्चायविशेषः ॥ हेमवएचेत्यादि ॥ तत्रहेमवतदक्षिणतः हिमवन्महाहिमवतोर्मध्ये

णाणत्ता अन्तमन्त्रणाइवहंति आयामविस्कंजसंठाणपरिणाहेणं तं० न्नरहेचेव एरवएचेव एवमेणंअहिलावे  
 णंनेयहं हेमवएचेव एरस्सवएचेव २ हरिवरिसेचेव रम्मयवरिसेचेव जंबुद्वीवेद्वीवे मंदरस्सपट्टयस्स पुरच्छि

तथा परिधि इत्यादिकथी सरिखाछे । ते कहैछे । एक भरतक्षेत्र पांचसे छब्बीस योजन छ कलानो बिस्तारें योजननो एकवीसमो भाग ते कला  
 कहिये । बीजो एरवत क्षेत्र विस्तारथी भरत क्षेत्रथी बराबरि । एहरीते मान प्रमाण भाव सर्व इसज जाणिवा । तिम वली बे बे क्षेत्र सरिखा छे  
 हिमवंत क्षेत्र दक्षिणदिशि हिमवान महाहिमवानने विचालें । हैरण्यवत क्षेत्र उत्तरदिशि रुक्मीपर्यंत शिखरी पर्वतने विचालें हिमवंत अने हैरण्य

हेरणवतमुत्तरतः रुक्मिणिखरिणोरतः हरिवर्षं दक्षिणतोमहाहिमवन्निषधयोरतः रम्यकवर्षं चोत्तरतो नीलरुक्मिणोरन्तरिति ॥ जंबूद्वीवेत्यादि ॥  
पुरच्छिमपञ्चलिमेण पुरस्तात् पूर्वस्यादिगि पश्चात्पश्चिमायामित्यर्थः यथाक्रम पूर्वश्चासौविदेहश्चेतिपूर्वविदेह एव अपरविदेहइति एतेषांचायामादिग्रन्था  
न्तरादवसेयइति ॥ जंबूद्वीयादि ॥ दक्षिणेनदेवकुरवउत्तरेणउत्तरकुरव स्तत्राद्याः विद्युत्प्रभसौमनसाभिधानवक्षस्कारपर्वताभ्यां गजदन्ताकाराभ्या मा  
वृता इतरेतु गन्धमादनमाल्यवद्गामावृताः उभयेचामी अर्द्धचन्द्राकारा दक्षिणोत्तरतोविस्तृता स्तत्प्रमाणचैव अट्टसयावायाला एकारसहस्रदीकलात्रोय  
विश्वभोयकुरूण तेवन्नसहस्रजोवासि ॥ १ ॥ पूर्वापरायामाश्चैता इति ॥ महद्महालयत्ति ॥ महान्तौ गुरू अतीति अत्यत महसांतेजसा महानावोत्सवाना  
मालयावाययौ महतिमहालयौ महातिमहालयौ वा समयभाषयावा महातावित्यर्थः महाद्रुमी प्रशस्ततया आयामोदैर्घ्यं विष्कम्भो विस्तार उच्चत्व मुद्रय उच्चै

मपञ्चलिमेणं दोखित्ता प० तं० वज्रसमउल्ला अविसेसाजाव पुत्रविदेहेचेव अवरविदेहेचेव २ जंबूमंदरस्स  
पत्रयस्स उत्तरदाहिणेणं दोकुरानु प० तं० वज्रसमउल्ला अविसेसाजाव देवकुराचेव उत्तरकुराचेव तत्पणं

वत सरिसाद्धै । हरिवर्षं दक्षिणदिशि महाहिमवान निषधनें विचालै । रम्यक वर्ष उत्तरदिशि नीलपर्वत रुक्मी पर्वतने विचालै हरिवर्षं अने रम्य  
कवर्षं सरिखाद्धै । जंबूद्वीप तेलनां पूरुलाने आकारे तेहमां मेरु पर्वतयी पूरबदिशि अने पश्चिमदिशि बे क्षेत्र कहिया ते कहैछे । बहु सम बरा  
वरि प्रमाणथी विस्तारथी नगर पर्वत नदी एहथी विशेषनथी । जाव एक पूर्व विदेह । पश्चिम विदेह । जंबूद्वीपमां मेरुथी उत्तरदिशि तथा द  
क्षिणदिशि बे कुरु कहिया ते कहैछे । मान प्रमाण थी बहुसम बराबर जाव दक्षिणदिशि देवकुरु । उत्तरदिशि उत्तरकुरु । तिहा देवकुरु उत्तरकुरुमां

धो भुवि प्रवेशः संस्थानमाकारः परिष्ठाहः परिधिरिति तत्रानयोः प्रमाणं रयणमया पुष्पफला विक्लंभी अङ्गुष्ठ उच्चत ज्योत्स्नमनुवेहो खंधो दीज्योत्स्नविहो ॥  
 १ ॥ दोको साविच्छिन्नो विडिया कज्जो यणाणि जवू ए चाउद्विसिपिसाला पुच्छितेत्यसालमि ॥ २ ॥ भवणं को सपमाण सयणिज्जतत्यणादियसुरस्स तिसुपासाया  
 २ ॥ साले सुते सुसीहा सणारम्भति ॥ ३ ॥ शाल्मल्या मध्येवमेति कूटाकारा शिखराकारा शाल्मलीकूटशाल्मलीतिसन्ना सुष्टुदर्शनमस्या इति सुदर्शने तीयमपि सन्ने  
 ति ॥ तथ्यिति ॥ तयोर्महाद्रुमयो महेत्यादि महती ऋद्धि रावासपरिवाररत्नादिका ययोस्तौ महर्षिकौ यावद्ब्रह्मणात् महज्जुइया महाणुभागा महा  
 यसा महावला ॥ महासोक्खेत्ति ॥ तत्र द्युति, शरीराभरणदीप्ति रनुभागो ऽचित्थाशक्ति वैक्रियकरणादिका यशः ख्याति वलसामर्थ्यं शरीरस्य सौख्य

दोमहइमहालया महादुमा प० तं० बज्रसमउत्ता अविसेसमणाणत्ता अन्तमन्तंगाइवहंति आयामविस्कंजुञ्ज  
 तोव्वेहसंठाणपरिणाहेण तंजहा कूटसामलीचेव जवूचेव सुदसणा तत्थणं दोदेवामहद्विया जाव महासो  
 रका पलिनवमहिइया परिवसंति तं० गरुलेचेव १ वेणुदेवे अणादिएचेव २ जंवूदीवाहिवई जंवूमंदरस्सप

महा मोटा तेजवंत एहवा बे वृक्ष कहिया । मान प्रमाणथी सम बराबरि लांबपण विस्तार ऊंचाई उद्वेध उंडापण आकार परिधिथी सरिखा  
 माहोमाहि एकथीएक वधता नथी लावा पिहुला उंचा ऊंठा आकार परिधि थी सरिखाके रत्नमयके एहनो मानादिक गून्थातर थी जाणिवो  
 ते कहै के । एक शिखराकारे सामली वृक्ष । बीजो जवूवृक्ष सुदर्शन नामा जोइवा योग्य । तिहां दो देवता मोटी रिद्धिना धणी जाव मोटा  
 सुखना धणी एक पल्योपमना आजखाना धणी रहैके । सुपर्णकुमार जातिना । एक वेणुदेव । बीजो अणादिय । जवूदीपना अधिष्ठाता स्वामीके ।

मानन्दात्मक महेसकला इति क्वचित्पाठः महेसी महेश्वरावित्याख्या यथोक्ती महेशाख्याविति पत्योपमंयावत् स्थिति रायुर्ययोक्ती तथागरुड' सुपर्णकुमा  
रजातीयः वेणुदेवो नाम्ना ॥ अणाढिओत्ति नाम्ना ॥ जबूइत्यादि ॥ वर्षक्षेत्रविशेष धारयत व्यवस्थापयत इति वर्षधरौ ॥ चुल्लत्ति ॥ महदपेक्षया लघुहिम  
वान् चुल्लहिमवान् भरतानन्तर. शिखरी पुनर्य त्परमैरवत तौच पूर्वापरतो लवणसमुद्राववडा वायामतश्च चउवीससहस्राइ नवयसएजोयणाणवत्तीसं  
चुल्लहिमवंतजीवा आयामेणकलडच ॥ १ ॥ २४६३२ । ११ । १६ । एवशिखरिणोपि तथा भरतद्विगुणविस्तारौ योजनशतोद्वयौ पचविंशतियोजनान्यव  
गाढो आयतचतुरस्रसंस्थानसंस्थितौ परिणाहस्तु तयोः पण्यालोससहस्रा सयमेगन्नवयवारसकलाओ अडकलाएहिमवत परिरओसिहरिणोचेवत्ति ॥  
१ ॥ ४५१०६ । १२ । १६ । एवमिति यथा हिमवच्छिखरिणौ ॥ जबूइवित्यादिना ॥ भिलापेनोक्ताश्चैव महाहिमवदादयोपीति तत्रमहाहिमवान् लघ्वपे  
क्षया सच दक्षिणतः रुक्मोचोत्तरतः एवमेव निषधनीलवन्तौ नवरमेतेषा मायामादयो विशेषतः क्षेत्रसमासादवसेयाः किञ्चित्तु तद्वाथाभिरेवोच्यते प

द्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासहरपद्म्या प० तं० ब्रह्मसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्तमन्तंणाइवहंति  
आयामविस्कनुच्चतोव्हेहसंठाणपरिणाहेणं तंजहा चुल्लहिमवंतेचेव सिहरीचेव एवंमहाहिमवतेचेव रुप्पीचे

जबूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशिं दक्षिणदिशिं वे वर्षधर पर्वत छे क्षेत्रनी मयांदा करे ते वर्षधर । घणूं सरिखा छे विशेष नथी भेद नथी एकएकथी  
वधता नथी नाह्वा नथी लावपण पिहुलपण ऊंचपण ऊरुपण आकार परिधि एहथी सरीखाछे । नाह्वा हिमवत पर्वत सौ योजन ऊंचो । भरत  
क्षेत्रथी आगलि शिखरीपर्वत ऐरवतथी उरो । एम महाहिमवंत पर्वत मेरुथी आपासे । रूपीपर्वत मेरुथी पैलेपासे । एम निषध आपासे



चसएकञ्जीसे कञ्चकलावित्युभरहवासं दससयवावन्नहिया वारसयकलाओहिमवंते ॥ १ ॥ हेमवएपंचहिया इगवीससयाओपंचयकलाओ दसहियवा  
यालसया दसयकलाओमहाहिमवे ॥ २ ॥ हरिवासेइगवीसा चुलसीइसयाकलायएकाय सोलससहस्रअठ्य वायालादोकलानिसठे ॥ ३ ॥ तेत्तीसचसह  
स्सा कञ्चसयाजोयणाणचुलसीया चउरीयकलासकला महाविदेहस्सविक्रभो ॥ ४ ॥ जोयणसयमुविडा कणगमयासिहरिचुल्लहिमवंता रुप्पिमहाहिम  
वता दुसउच्चारूपकणगमया ५ चत्तारिजोयणसए उब्बिडानिसठनीलवताय निसहोतवणिज्जमओ वेरुलिओनीलवतगिरी ॥ ६ ॥ उस्सेहचउभागी ओ  
गाओपायसीनगवराणं वट्टपरिहीउतिगुणो किचूणकभायजुत्तोत्ति ॥ ७ ॥ चतुरस्रपरिधिसु आयामविष्कम्भद्विगुणइति ॥ जबूइत्यादिदीवट्टवेयडुपब्बयत्ति ॥  
द्वीहत्ती पल्याकारत्वात् वैताब्बी नामतः तौचती पर्वतीचेति विग्रहः सहस्रपरिमाणो रजतमयी तत्र हैमवतेशब्दापाती उत्तरतस्तुऐरण्यवतेषिकटापाती

व एवंगिसठेचेव णीलवंतेचेव जंबूमंदरस्सपट्टयस्स उत्तरदाहिणेणंहेमवएरन्तवएसुवासेसु दीवट्टवेयडुपट्टया  
पन्नत्ता तंजहा वज्जसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता जावसद्दावईचेव वियळावईचेव तल्यणं दीदेवामहहिया  
जावपलिवोवमठिइया परिवसंति तंजहा साइचेव पन्नासेचेव जंबूमंदरस्सउत्तरदाहिणेणं हरिवरिसरम्मएसु

नीलवंत पैलेपासे । जबूद्वीपना मेरुथी उत्तर दक्षिणादिशो हिमवंतक्षेत्र ऐरण्यवत क्षेत्रनेविषे बे वृत्त वाटला वैताढ्य पर्वत छे । ते कहैछे । पल्य  
ने आकारे घणू सरिखा विशेष भेद नथी शब्दापाती हैमवतमा । उत्तरे बिकटापाती ऐरण्यवतमा । तिहा बे देवता मोटी रिद्धिना धणी प  
ल्योपम आज्ञाना धणी रहैछे । तिहां तेहना भवनछे ते कहैछे । स्वातीनामे प्रभासनामे । जबूद्वीपना मेरुथी दक्षिणादिशिं हरिवर्ष रम्यकवर्ष

ति ॥ तत्पत्ति ॥ तयोर्वृत्तवैताद्वयोः क्रमेण स्वातिप्रभासौ देवौ वसत स्तद्भवन भावादिति एवं हरिवर्षेगन्धापातीक्रमेणैवेति ॥ जंबूद्व्यादि ॥ पुष्पावरपा  
 सेत्ति ॥ पार्श्वगच्छस्य प्रत्येक सवन्धात् पूर्वपार्श्वे अपरपार्श्वे च किंभूते ॥ एत्यत्ति ॥ प्रज्ञापकेनोपदर्श्यमानेन क्रमेण सीमनसविद्युत्प्रभौप्रज्ञप्तौ किंभूतावश्च  
 स्तद्धसदृसी आदौनिम्नौ पर्यवसाने उन्नतौ यतो निषधसमीपे चतुःशतोद्धितौ मेरुसमीपे च पचशतोद्धितौ इति आह च वासहरगिरीतेण रुद्रापचेवजोयणस  
 याइं चत्तारिसउब्बिडा ओगाढाजोयणाणसय ॥ १ ॥ पचसएउव्विडा ओगाढापचगाउयसयाइं अगुलअसखभागी विच्छिन्नामदरतेण ॥ २ ॥ वक्खारप  
 व्वयाण आयामोतीसजोयणसहस्सा दोन्निसयायनवहिया तच्चकलाओचउण्हति ॥ ३ ॥ अवद्धचदत्ति ॥ अपकृष्टमर्द्धं चद्रस्यापार्द्धचन्द्र स्तस्य यत्सस्थानमा  
 कारो गजदन्ताकृतिरित्यर्थः तेनसस्थिता अपार्द्धचद्रसस्थानसस्थितौ अर्द्धचद्रसस्थानसस्थिताविति क्वचित्पाठः तत्रार्द्धशब्देन विभागमात्र विवक्ष्यते नतु स

वासेसु दोवहवेयहपद्म्या पन्नत्ता तंजहा वज्जसमतुल्लाजाव गंधावर्द्धचेव मालवंतपरियाएचेव तत्पणंदोदेवा  
 महहियाचेव पलिन्नवमठिइया परिवसंति तंजहा अरुणेचेव पउमेचेव जंबूमंदरस्सदाहिणेण देवकुराएपुद्वा  
 वरेपासे एत्यणं अासखंधगसरिसा अ्वरुचदसंठाणसंठिया दोवरकारपद्म्या पन्नत्ता तजहा वज्जसमतुल्लाजाव

क्षेत्रनेविषे वे वृत्त वाटला वैताढरहे ते कहैछे । घणूं सम बराबर छे । गंधापाती हरिवर्षमां । मालवत पर्याय तिहां वे देवता मोटी रिद्धिना  
 धणी पल्योपम आऊखाना धणी बसे छे ते कहै छे । अरुणानामा पदमनाम । जंबूद्वीपना मेरुथी दक्षिणदिशिं देवकुरुथी पूर्वने पासे पश्चिमने पासे ।  
 इहा घोडाना खंध सरिखा आगलि नीचा छेहले ऊंचा निषधपासे चारसे योजन ऊंचो छे मेरुपासे पाचसे योजन अर्द्धचंद्राकार संस्थान सं

सप्रविभागेति ताभ्यां चार्द्धचद्राकारा देवकुरुव कृता अतएव वचाराकारक्षेत्रकारिणी पर्वती वचारपर्वताविति ॥ जंबूइत्यादि ॥ तथैव नवर मप  
रपार्श्वे गन्धमादन, पूर्वपार्श्वे माल्यवानिति ॥ दोदीहवेयडुति ॥ वृत्तवैताढ्यव्यवच्छेदार्थदौर्घग्रहण वैताढ्यो विजयाढ्यौचेति संस्कार, तीच भरतेरवतयो  
र्मध्यभागे पूर्वापरतो लवणोदधि स्पृष्टवन्ती पञ्चविंशतियोजनोद्धितौ तत्पादावगाढौ पचाशद्विस्तृतौ आयतसंस्थितौ सर्वराजता वुभयतो वहिः कांच  
नमडनाङ्गाविति ॥ आहच ॥ पणवीसउच्चिहो पणासजीयणाणिविच्छिन्नो वेयड्ढोरययमओ भरहक्खेत्तस्समज्झमिति ॥ १ ॥ भारहेणमित्यादि ॥ वैताढ्ये

सोमणसेचेव विज्जुप्पजेचेव जंबूमंदरस्सउत्तरेणं उत्तरकुराएपुद्वावरेपासे एत्थणंअसखंधगसरिसाअवचंद  
सठाणसठिया दोवरकारपद्दया प० तजहा वज्जसमतुल्लाजाव गधमायणेचेव मालवन्तेचेव जंबूमंदरस्सपद्द  
यस्स उत्तरदाहिणेणं दोदीहवेयहूपद्दया प० तजहा वज्जसमतुल्ला जाव नारहेचेव दीहवेयहे ऐरावएचेव  
दीहवेयहे नारहेणंदीहवेयहेदोगुहानं प० त० वज्जसमतुल्लानं अविसेसमणाणत्तानं अन्नमन्नणाइवहंति

स्थित बे वक्षस्कार पर्वतछे । देवकुरुमा अर्द्धआकार कीधो तेमाटे बे वक्षस्कार पर्वत कहिया ते कहैछे । घणूं सरिखा जाव सोमनस बीजो विज्जु  
प्पज । जंबूद्वीपना मेरुथी उत्तरदिशि उत्तरकुरुक्षेत्रने पूर्वनेपासे तथा उत्तरने पासे इहा अश्वनाखध सरिखा अर्द्धचंद्राकार गजदंताकार बे वक्षस्कार  
पर्वत छे ते कहैछे घणू जाव पूर्ववत् । पश्चिमने पासे गधमादन नाम पूर्वने पासे मालवत । जंबूद्वीपथी मेरुने उत्तर दक्षिण पासे बे दीर्घ लांबा  
वैताढ्य पर्वत छे ते कहै छे । घणू सम सरिखा छे । जरत क्षेत्रमा एक दीर्घ वैताढ्य परे पूर्व लवणसमुद्र फरस्यो छे पचीस योजन ऊंचो बीजो

अपरत स्तमिस्रागुहागिरिविस्तारायामा द्वादशयोजनविस्तारा अष्टयोजनोक्त्या आयतचतुरस्रसंस्थाना विजयद्वारप्रमाणद्वारा वज्रकपाटपिहितावहु  
मध्येद्वियोजनान्तराभ्या त्रियोजनविस्ताराभ्या मुक्ताग्ननिमग्नजलाभिधानाभ्या नदीभ्या युक्ता तद्वत्पूर्वतः खण्डप्रपातगुहेति ॥ तत्पणति ॥ तयो स्तमि  
श्यायागुहायां कृतमालक इतरस्यानृत्तमालकइति ॥ एरवण्ड्यादि ॥ तथैव जबूड्यादि हिमवद्वर्षधरपर्वते श्लोकादशकूटानि सिद्धायतन १ चुल्लहिमव

श्यायामविस्कन्धुत्तसंठाणपरिणाहेणं तंजहा तिमिसगुहाचेव खंरुगप्पवायगुहाचेव तत्पणं दोदेवामहद्विया  
जाव पलिउवमठिइया परिवसति तजहा कयमालएचेव णट्टमालएचेव ऐरावणंदीहवेयहे दोगुहा प०  
तंजहा जाव कयमालएचेव णट्टमालएचेव जंबूमंदरस्सपट्टयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंते वासहरपट्टए दोकूला  
पन्नत्ता तंजहा वज्जसमउल्ला जाव विस्कंनुत्तसंठाणपरिणाहेणं तजहा चुल्लहिमवतकूलेचेव वेसमणकूलेचेव

दीर्घ वैताढ्य ऐरवतमा । नरतना दीर्घ वैताढ्यमा बे गुफाछे ते कहैछे । घणी समी सरिखी एकएकथी विशेष भेद नथी । माहोसाही एकएक  
थी वधती नथी लांवपण पिहुलपण ऊंचपण एहथी सरिखी छे ते कहैछे । एक तिमिस्रागुफा बीजी खण्डप्रपात गुफा आठयोजन ऊची पचासयो  
जन लांबी वज्रमय कपाट मध्यभागे बेयोजन आतरुं एकएकने तीन योजन विस्तारे एहवी उमग्ना निमग्ना नामें बे नदीछे । तिहा बे देवता  
मोटी रिद्धिना घणी जाव पत्योपमना आऊसाना घणी एहवा बसे छे । तिमिस्रा गुफानो स्वामी कृतमाल खंडप्रपातनो स्वामी नृत्यमाल । ऐरव  
त क्षेत्रमा पणि दीर्घवैताढ्य तेहमा पणि बेगुफाछे । ते कहैछे । जाव कृतमाल नाट्यमाल । जबूड्दीपे मेरुथी दक्षिणे लघुहिमवत वर्षधर पर्वतना

त् २ भरत ३ इला ४ गङ्गा ५ श्री ६ रोहितांश ७ सिन्धु ८ सुरा ९ हैमवत १० वैश्रमण ११ कूटाभिधानानि भवन्ति पूर्वादिशि सिद्धायतनकूटमत'क्रमेणा  
 परतो न्यानि सर्वरत्नमयानि स्वनामदेवतास्थानानि पञ्चयोजनशतोक्त्याणि तावदेव मूले विस्तृतानि उपरि तदर्धविस्तृतानि आद्ये सिद्धायतन पञ्चा  
 शयोजनायामतदर्धविष्कम्भ षट्त्रिंशदुच्च अष्टयोजनायामेष्टतुर्योजनविष्कम्भप्रवेशे स्त्रिभिर्द्वारे रूपेत जिनप्रतिमाष्टोत्तरशतसमन्वित शेषेषुप्रासादाः  
 सार्धषष्ठियोजनोच्चा स्तदर्धविस्तृता स्तन्निवासिदेवतासिंहासनवन्तइति इहतु प्रकृतनगनायकनिवासभूतत्वा देवनिवास भूतानामेषां मध्ये आद्य  
 त्वाच्च हिमवत्कूट गृहीत सर्वान्तिमत्वाच्च वैश्रमणकूटमिति द्विस्थानकालुरोधेनेति आहच कथ्यइदेसगाहण कथ्यइधिप्पतिनिरवसेसाइ' उक्कमकमजुत्ता  
 इ' कारणवसओनिउत्ताइति ॥ १ ॥ कूटसग्रहद्याय वेयड्ड १ मालवंते ८ विज्जुप्पह ८ निसड १ नीलवतेय ८ नवनवकूडाभणिया एक्कारससिहरि ११  
 हिमवते ११ ॥ १ ॥ रूपि ८ महाहिमवते ८ सोमणस ८ गधमायणनगेय ७ अड्ड सत्तसत्तय वक्खारगिरीसुचत्तारित्ति ॥ २ ॥ जबूइत्यादि ॥ महा  
 हिमवति छष्टीकूटानि सिद्ध १ महाहिमवत् २ हेनवत ३ रोहिता ४ क्रौ ५ हरिकान्ता ६ हरि ७ वैश्र्यकूटाभिधानानि द्वयग्रहणेच कारणमुक्तमेव

जंबूमंदरदाहिणेणं महाहिमवते वासहरपव्णु दोकूला पन्नत्ता तंजहा बज्जसमतुल्ला जाव महाहिमवंत कूळे

बेकूटछे । ते कहैछे बहुसम जाव विष्कम्भपण ऊचपण संठाण परिधिथी सरिखा छै । ते कहैछै लघुहिसवंत कूट । ' तथा बीजो वैश्रमण कूट तिहा  
 प्रतिमा प्रासाद शास्वताछै । जबूद्वीपे मेरुथी दक्षिण दिशि महाहिमवत वर्षधर पर्वतछे । तेहना बे वर्ष कहिये क्षेत्र तेहनी सर्यादा करे ते वर्ष  
 धर कहिये । कूट ते शिखर ते कहै छे । बहुसम जाव एक महाहिमवत कूट । तथा बीजो वेरुलिय नामा कूट एम निषधवर्षधर पर्वतना बे कूटछे ते

इत्यादि एवंकरणात् जंबूइत्यादिरमितापोटशः निषधवर्षधरपर्वतेहि सिद्ध १ निषध २ हरिवर्ष ३ प्राग्विदेह ४ हरि ५ धृति ६ शीतोदा ७ उपरविदेह ८ रुचकाख्यानि ९ स्वनामदेवतानि नवकूटाणि इहापि द्वितीयान्त्ययोग्रहण प्राग्वत् व्याख्येयमिति ॥ जंबूइत्यादि ॥ नीलवर्षधरपर्वतेहि सिद्ध १ नील २ पूर्वविदेह ३ शीता ४ कौर्त्ति ५ नारिकान्ता ६ उपरविदेह ७ रम्यक ८ उपदर्शनाख्यानि नवकूटानि इहापि द्वितीयान्त्यग्रहण प्राग्वदिति ॥ एवमित्यादि ॥ रुक्मिवर्षधरे सिद्ध १ रुक्मि २ रम्यक ३ नरकान्ता ४ बुद्धि ५ रूपाकूला ६ हैरण्यवत ७ मणिकाञ्चनकूटाख्यानि अष्टकूटानि इयाभिधानच प्राग्वदिति ॥ एवमित्यादि ॥ शिखरिणिहि वर्षधरे सिद्ध १ शिखरि २ हैरण्यवत ३ गुरादेगो ४ रक्ता ५ लक्ष्मी ६ सुवर्णकूला ७ रक्तोदा ८ गन्धापाति ९ ऐरवत १० तिगिच्छिकूटाख्यानि एकादशकूटानि इहापि द्वयोर्ग्रहणतथैवेति ॥ जंबूइत्यादि ॥ इहच हिमवदादिषु षट्सु वर्षधरेषु क्रमेणैते पद्मादयः षडेवक्रदाः

चेव वेरुलियकूळेचेव एवनिसढेवासहरपद्मए दोकूळा प० तंजहा बज्रसमतुल्ला जाव निसढकूळेचेव रुयग कूळेचेव जंबूमदररसउत्तरेण नीलवंतेवासहरपद्मए दोकूळा प० तंजहा बज्रसमतुल्ला जाव नीलवंतकूळेचेव उवदसणकूळेचेव एवरूपिम्मिवासहरपद्मए दोकूळा पन्नत्ता तंजहा बज्रसमतुल्ला जाव तंजहा रूपिकूळेचेव

कहै छे । बहुसम जाव निषधकूट अने बीजो रुचकप्रज्ञ । जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशि नीलवंत वर्षधरपर्वते बेकूट ते कहैछे । बहुसम जाव नीलवंत कूट । उपदर्शनकूट । एम रूपीवर्षधर पर्वतना बेकूट ते कहैछे । बहुसम जाव रूपीकूट तथा बीजो मणिकाञ्चनकूट । एम शिखरी वर्षधर पर्वतना बेकूट ते कहैछे । बहुसम जाव शिखरीकूट । तिगिच्छिकूट । जंबूद्वीपना मेरुथी उत्तर दक्षिणे लघुहिमवत दक्षिणे शिखरी उत्तरे एह बे प

तयया पउमेय १ महापउमे २ तिगिच्छि ३ केसरि ४ दहेचेव हरएमहापुडरीए ५ पुडरिए ६ चेवयदहाओ ॥ १ ॥ हिमवतउपरि बहुमध्यभागे पद्म  
 ऋद' एवशिखरिणः पौण्डरीक स्तेच पूर्वापरायतौ सहस्रपञ्चशतविस्तृतौ चतुष्कोणी दशयोजनावगाढौ रजतकूलौवज्रमयपाषाणी तपनीयतली सुवर्ण  
 मध्यरजतमणिवालुकी चतुर्दशमणिसौपानौ स्वभावतारौ तोरणध्वजकूवादिविभूषितौ नौलोत्पलपुण्डरीकादितितौ विचित्रशकुनिमत्स्यविरचितरवौ षट्  
 पदपटलोपभोग्याविति ॥ तत्पणति ॥ तयोर्महाऋदयोर्देवते परिवसतः पद्मऋदे श्रीः पौण्डरीके लक्ष्मीः तेच भवनपतिनिकायाभ्यन्तरभूते पत्न्योपमस्थि  
 तिकृत्वात् व्यन्तरदेवीनाहि पत्न्योपमार्द्धमेवायु क्लृप्तोभवति भवनपतिदेवीना तूक्लृप्तो ऋपञ्चपत्न्योपमान्यायुर्भवतीति आहच अद्भुतपञ्चम प

मणिकंचणकूठेचेव एवंसिहरिमिवासाहरपद्मए दोकूठा पत्नता बज्रसमतुल्ला तंजहा सिहरिकूठेचेव ति  
 गिच्छिकूठेचेव जंबूमदरस्सउत्तरदाहिणेणं चुल्लहिमवंतसिहरीसु वासहरपद्मएसु दोमहदहा पत्नता बज्रस  
 मतुल्लाअविसेसमणाणत्ताअस्समस्संनइवदति आयामविस्संजउद्वेहसंठाणपरिणाहेणं तजहा पउमदहेचेव पुं  
 ऋरीयदहेचेव तत्पणंदोदेवयानु महिद्वियानु जाव पल्लिवमठिडयानु परिवसति तं० सिरीचेव लच्छीचेव

वर्तने ऊपरि बे मोटा द्रह कहिया ते कहैं छे । बहुसम सरिखा किस्यो विशेष नथी एक एकथी वधतो नथी घटतो नथी । लावपण पिडुलपण  
 ऊडापण ऊचपण संठाण परिधि थी सरिखा छे । ते कहैं छे । पदमद्रह । तथा पुंडरीकद्रह । तिहां बे देवताछे मोटी रिद्धिना धणी जाव पत्न्यो  
 पमना आजखाना धणी बसैं छे । ते कहैं छे । श्री देवता तथा बीजी लच्छीदेवता । एम महाहिमवत रूपी वर्षधर ऊपरि बे मोटा द्रह छे तेकहैंछे ।

लिओवमअसुरजुयलदेवौण सेसभवणदेवयाणय देसूणअइपलियमुक्कोसति ॥ १ ॥ तयोश्च महाहृदयोर्मध्ये योजनमाने पञ्चे अर्द्धयोजनबाहल्ये दशावगाहे जलान्तात् द्विक्रोशोक्रये वज्र १ रिष्ट २ वैडूर्य ३ मूल १ कन्द २ नाले ३ वैडूर्य १ जाम्बूनद २ मयवाह्याभ्यन्तर २ पत्रे कनककर्णिके तपनीयकनककेसरे तयो. कर्णिके ऽर्द्धयोजनमाने तदर्धबाहल्ये तदुपरिदेव्योर्भवनेइति ॥ एवमित्यादि ॥ महाहिमवति महापद्मो रुक्मिणितुमहापौण्डरीक स्तौचद्विसहस्रायामौ तद द्वेविष्कम्भौ द्वियोजनमानपद्मन्यासवन्तौ तयोर्देवते परिवसतो महापद्मेज्जी. पौण्डरीकेबुद्धिरिति ॥ एवमित्यादि ॥ निषधेतिगिच्छिद्रदे धृतिर्देवता नीलवतिके सरिद्रदे कीर्तिर्देवता तौचद्रदौ चतुर्द्विसहस्रायामविष्कम्भाविति भवतिचात्रगाथा एएसुसुरवह्नो वसतिपलिओवमद्वितीयाओ सिरिहिरिधीकिक्तीओ बुद्धीलच्छीसमाणाओत्ति ॥ १ ॥ जवूइत्यादि ॥ तत्ररोहिन्नदीप्रवाहे महापद्मद्रदा दक्षिणतोरणेन निर्गत्य षोडशपञ्चोत्तराणि योजनशतानि सातिरेका णिदक्षिणतो गिरिणागत्वा हाराकारवारिणा सातिरेकयोजनद्विशतकेन प्रपातेन मकरमुखप्रणालेन महाहिमवतो रोहिदभिधानकुण्डे निपतति मक

एवंमहाहिमवंतरुष्पीसु वासहरपद्मएसु दोमहद्रहा प० वज्रसमतुल्लाजावमहापउमद्देहेचेव महापौण्डरीयद्देहेचेव देवतानुहिरिच्चेव बुद्धिच्चेव एवंनिसहनीलवंतेसु तिगिच्छिद्रहेचेव केसरिद्रहेचेव देवतानुधिर्देचेव किक्तीचेव जंबूमंदरदाहिणेणं महाहिमवतानु वासहरपद्मयानु महापउमद्देहानु दोमहाणईनुपवहंति तंजहा

बहुसम जाव महा पदमद्रह बीजो महा पुंठरीक द्रह तिहां बे देवागना ह्री देवता तथा बीजो बुद्धि देवता । एम निषध नीलवंते तिगिच्छिद्रह । तथा केसरी द्रह । तिहां बे देवता बसै छे । धृति देवता तथा कीर्तिदेवता । जंबूद्वीपे मेरुथी दक्षिण दिशि महाहिमवंत वर्षधर पर्वतना महापदम द्रहथी



॥  
 रमुखजिह्वायोजनायामेन अर्द्धत्रयोदशयोजनानिविष्कम्भेन क्रोशबाह्व्येन रोहितप्रपातकुण्डाच्च दक्षिणतोरणेननिर्गत्य हैमवतवर्षमध्यभागवर्त्तिनं शब्दा  
 पातिवृत्तवैताव्य मर्द्धयोजनेनाप्राप्याष्टाविशत्यानदीसहस्रैः सयुज्याधोजगती विदार्य पूर्वतोलवणसमुद्रमभिगच्छतीति रोहिन्नदीप्रवहे ऽर्द्धत्रयोदशयोजन  
 विष्कम्भा क्रोशोद्देधा ततः क्रमेण वर्द्धमाना मुखेपञ्चविशत्यधिकयोजनशतविष्कम्भा सार्द्धद्वियोजनोद्देधा उभयतो वेदिकाभ्या वनखण्डाभ्यां युक्ता एव सर्वा  
 महानद्यः पर्वताः कूटानिच वेदिकादियुक्तानीति हरिकान्तातु महापद्मद्वादोत्तरेणतोरणेन निर्गत्य पञ्चोत्तराणिषोडशशतानि सातिरेकाणि उत्त  
 राभिमुखीपर्वतेन गत्वा सातिरेकयोजनशतद्वयप्रमाणेन प्रपातेन हरिकान्ताकुण्डे तथैव प्रपतति मकरमुखजिह्विकादिप्रमाण पूर्वोक्तद्विगुण न्ततः प्रपात  
 कुण्डादुत्तरतोरणेननिर्गत्य हरिवर्षमध्यभागवर्त्तिन गन्धापातिवृत्तवैताव्य योजनेनासम्प्राप्ता पश्चिमाभिमुखीभूत्वा षट्पञ्चाशता सरित्सहस्रैः समया स  
 मुद्रमभिगच्छति इयच्च हरिकान्ताप्रमाणतो रोहिन्नदीतोद्विगुणेति ॥ एवमित्यादि ॥ एवमिति जम्बूद्वीवेद्वत्याद्यभिलापसूचनार्थः हरिन्महानदीतिगिच्छिद्गद  
 स्य दक्षिणतोरणेननिर्गत्य सप्तयोजनसहस्राणि चत्वारिचैकविशत्यधिकानि योजनशतानि सातिरेकाणि दक्षिणाभिमुखी पर्वतेनगत्वा सातिरेकचतुर्यो  
 जनशतिकेन प्रपातेन हरिकुण्डेनिपत्य पूर्वसमुद्रे पतति शेषहरिकान्तासमानमिति शीतोदामहानदीतिगिच्छिद्गदस्योत्तरतोरणेन निर्गत्य तावत्येव योजन

रोहियन्नेव हरिकंतएचेव एवंनिसहान वासहरपट्टयान तिगिच्छिद्गहान दोमहानईउपवहति तं० हरिच्चेव

वे महा मोटी नदी नीकली बहै छे । ते कहै छे रोहिता तथा बीजी हरिकांता नदी एम निषधनामा वर्षधर पर्वतना तिगिच्छि दहथी वे नदी  
 नीकली छे ते कहैछे । हरिनदी तथा शीतोदा नदी । जम्बूद्वीपना मेरुथी उत्तरदिशि नीलवंत वर्षधर पर्वतना केसरीद्रहथी वे मोटी नदी नीकली

सहस्राणि गिरिणा उत्तराभिमुखी गत्वा सातिरेकचतुर्योजनशतिकेन प्रपातेन शीतोदाकुण्डे निपततीति जिहिका मकरमुखस्य चत्वारियोजनानि ग्राया  
मेन पचाशद्विष्कम्भेन योजनस्वाहल्येन कुण्डादुत्तरतोरणेन निर्गल्य देपकुरुन् विभजन्ती चित्रविचित्रकूटी पर्वतो निषधकदादीश्च पचकदान् द्विधा कुर्वन्ती चतु  
रशीत्यानदी सहस्रै रापूर्यमाणा भद्रशालवनमध्येन मेरु योजनद्वयेनाग्राया प्रत्यङ्मुखी आवर्त्तमाना अधोविद्युत्प्रभ वच्चारपर्वतंदारयित्वा मेरोरपरतोपर  
विदेहमध्यभागेन एकैकस्माद्विजया दृष्टाविशत्यानदो सहस्रै रापूर्यमाणा अधोजयन्तद्वारस्यापरसमुद्रं प्रविशतीति शीतोदादि प्रवाहे पञ्चाशद्योजनवि  
ष्कम्भा योजनोद्देवा ततो मात्रया परिवर्द्धमाना मुखे पञ्चयोजनशतानि विष्कम्भा दशयोजनोद्देधेति ॥ जमूइत्यादि ॥ शीतामहानदी केसरिह्रदस्य दक्षिण  
तोरणेन विनिर्गल्य कुण्डेपतित्वा मेरोः पूर्वतः पूर्वविदेहमध्येन विजयद्वारस्याव पूर्वसमुद्रं शीतोदासमानशेषवक्तव्या प्रविशतीति नारिकान्ता तु उत्तर  
तोरणेन निर्गल्य हरिश्महानदी समानवक्तव्या रम्यकवर्षमध्येनापरसमुद्रं प्रविशतीति ॥ एवमित्यादि ॥ नरकान्ता महापुण्डरीकह्रदा दक्षिणतोरणेन वि  
निर्गल्य रम्यकवर्षं विभजन्तीति हरिकान्ता तुल्यवक्तव्या पूर्वसमुद्रमधिगता रूप्यकूला तु तस्यैवोत्तरतोरणेन विनिर्गल्य ऐरख्यवर्षं विभजन्ती रोहिणदी

सीतोष्णञ्चैव जंबूमंदरउत्तरेण नीलवंतान् वासहरपट्यान् केसरिह्रदान् दोमहाण्डान् पवहन्ति तंजहा सीता  
चैव नारिकताचैव एवरूपीवासहरपट्यान् महापोंकरीयह्रदान् दोमहाण्डान् पवहन्ति तंजहा नरकंताचैव

छे ते कहै छे । शीतानदी तथा नारिकता नदी । एम रूपी वर्षधर पर्वतना महापुडरीक दहथी वे सोटी नदी बहै छे ते कहै छे । नरकंता तथा  
रूप्यकूला । जंबूना मेरुथी दक्षिण जगत क्षेत्रे वे प्रपात द्रहछे जेहमा पर्वतथी नदीनो प्रवाह पडै छे ते कहै छे । गंगा प्रपातकुंड तथा वीजो

तत्त्ववक्तव्या अपरसमुद्रं प्रच्छतीति ॥ जंबूद्वीपादि ॥ पवायद्देति ॥ प्रपतनप्रपातः तदुपलक्षितौ द्वौ प्रपातद्वौ इह यत्र हिमवदादेर्नगात् गङ्गादिका  
महानदी प्रणालेनाधोनिपतति सः प्रपातद्वयः प्रपातकुण्डमित्यर्थः ॥ गंगापवायद्देति चेति ॥ हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिपत्तिं पद्मद्वयस्य पूर्वतोरणेन नि  
र्गत्य पूर्वाभिमुखीपञ्चयोजनशतानि गत्वा गङ्गावर्त्तनकुटे आहतासती पञ्चययोविशत्यधिकानियोजनशतानि साधिकानि दक्षिणाभिमुखी पर्वतेन गत्वा गङ्गाम  
हानदी प्रश्नयोजनायामया सक्रोशषड्योजनविष्कम्भया अर्द्धक्रोशवाहल्यया जिह्विकया युक्तेन विष्टतमहामकरमुखप्रणालेन सातिरेकयोजनशतिकेन  
मुक्तावलीकलेन प्रपातेन यत्र प्रपतति यश्च पृष्टियोजनायामविष्कम्भः किञ्चिद्भूतनवत्युत्तरशतपरिधेपोदययोजनोद्देशो नानामणिनिष्ठो यस्य च पूर्वापर  
दक्षिणासु त्रयस्त्रिंशत्सोपानप्रतिरूपकाः सविचित्रतोरणाः मध्यभागे च गङ्गादेवीक्षीपो दृश्योजनायामविष्कम्भः सातिरेकपञ्चविंशतिपरिधेपः जलान्ता  
द्विक्रोशोच्छ्रितो वज्रमयो गङ्गादेवीभवनेन क्रोशायामेन तदर्पविष्कम्भेन किञ्चिद्भूतनक्रोशोश्च नानेकस्तम्भशतसन्निविष्टेनालङ्कितोपरितनभागः यतश्च दक्षिण  
तोरणेन विनिर्गत्य प्रवहते सक्रोशषट्गोजनविष्कम्भा अर्द्धक्रोशोद्देशा गङ्गाउत्तरभरतार्द्धविभजन्ती सप्तभिर्नदीसहस्रैः रापूर्यमाणा अधःखण्डप्रपातगुहाया  
वैताण्यपर्वतविदार्य दक्षिणार्द्धभरत विभजन्ती तन्मध्यभागेन गत्वा पूर्वाभिमुखी आहतासती चतुर्दशभिर्नदीसहस्रैः समग्रा मुखे सार्द्धद्विषष्टियोजनवि  
ष्कम्भा सक्रोशयोजनोद्देशा जगतीविदार्य पूर्वलवणसमुद्रं अविशतीति सगङ्गाप्रपातद्वय एतदनुसारेण सिन्धुप्रपातद्वयोपि व्याख्यातव्यं अतएवैतौ बहुसमा

रूपकूलाचेव जंबूमंदरदाहिणेणं नरहेवासे दोपवायद्देहा प० तं० बज्रसमतुल्ला जाव गंगप्पवायद्देहेचेव

सिन्धु प्रपातकुंड । एम जंबूद्वीपना मेरुयी उत्तर दिशाये हैमवत क्षेत्रमां ये प्रपातकुंड छे ते कहै छे । रोहिता प्रपातकुंड तेहमां मकरमुख

दिविशेषणा वायामविष्कम्भोद्देशपरिणाहे भविनीयाविति सर्वेव प्रपातद्गदा दशयोजनोद्देशा वक्तव्याइति यच्चेह वर्षधरनद्यधिकारे गङ्गासिन्धुरोहितां  
 शानां तथा सुवर्णकूलारक्तारक्तवतीना नाभिधान तत् द्विस्थानकानुरोधात् तासांहि एकैकस्मात्पर्वतात् त्रयत्रय प्रवहतीति द्विस्थानके नावतारइति एव  
 मित्यादि प्राग्वत् ॥ रोहियप्पवायद्देवेवन्ति ॥ रोहिदुक्तरूपा यत्रपतति यश्च सविशतिक योजनशतमायामविष्कम्भाभ्या किविन्धूनाशीत्यधिकानि त्रीणि  
 शतानि परिक्षेपेण यस्यच मध्यभागे रोहितद्वीपो षोडशयोजनायामविष्कम्भः सातिरेकपचाश योजनपरिक्षेपो जलान्ता द्विक्रीशीकृतो यश्चरोहिदेवता  
 भवनेन गङ्गादेवताभवनसमानेन विभूषितो परितनविभागः सरोहियपातद्गदइति ॥ रोहियसप्पवायद्देवेवन्ति ॥ हिमवद्वर्षधरोपरिवर्त्ति पद्मद्गदोत्तरतो  
 रणेननिर्गत्य रोहितांशामहानदीद्वेषटसप्तत्युत्तरेयोजनशते सातिरेके उत्तराभिमुखीपर्वतेन गत्वा योजनायामया अर्द्धत्रयोदशयोजनविष्कम्भया क्रीशवाह  
 ल्यया जिह्विकया विवृतमकरमुखप्रणालेन हाराकारेणच सातिरेकयोजनशतिकेन प्रपातेन यत्रप्रपतति यश्च रोहियपातकुण्डसमानमानः यस्यमध्ये रो  
 हितांशाद्वीपो रोहिद्वीपसमानमानः रोहिताशाभवनेन प्रागुक्तमानेनालङ्घ्यतः यतश्च रोहितांशानदी रोहिन्नदीसमानमाना उत्तरतोरणेननिर्गत्य पश्चिम  
 समुद्रम्प्रविशति सरोहिताशाप्रपातद्गद इति ॥ जंबूद्व्यादि ॥ हरिप्पवायद्देवेवन्ति ॥ हरिन्नदी प्रागुक्तलक्षणा यत्र निपतति यश्च द्वेशतेचत्वारिंशदधिके

सिधुप्पवायद्देवेव एवंहेमवण्णवासेदोपवायद्देहा प० बज्जसमतुल्ला तंजहा रोहियप्पवायद्देवेव रोहियं  
 सप्पवायद्देवेव जंबूमंदरदाहिणेणं हरिवासे दोपवायद्देहा पन्तत्ता बज्जसमतुल्ला तंजहा हरिप्पवायद्देवेव  
 प्रवाहे रोहिता नदी पडेच्छे । तथा बीजो रोहितासा प्रपात द्रहच्छे । जंबूना मेरुथी दक्षिणे हरिवर्ष क्षेत्रे ये प्रपात द्रहच्छे ते कहैच्छे । बहुसम जाव

आयामविष्कम्भाभ्यां सप्तशतानि एकोन पञ्चदशानि परित्यजेण यस्यच मध्यभागे हरिद्वीपः द्वानिशयोजनायामविष्कम्भः एकोत्तरशतपरित्येपः जलान्ता द्विकोशोच्छ्रितो हरिद्वीपः भवन विभूषितो परितनभागो सौहरितप्रपातः इति ॥ हरिकतप्पवायद्दहेचेवत्ति ॥ हरिकान्तोत्तररूपा महानदीयत्रनिपतति यद्य हरिकुण्डसमानो हरिद्वीपमानेन हरिकान्तादेवीद्वीपेन सभवनेन भूषितमध्यभागः स हरिकान्ताप्रपातः इति ॥ जंबूद्वीपादि ॥ सीयप्पवायद्दहेचेवत्ति ॥ यत्र नीलवतः शीतानिपतति यद्य चत्वार्यंशौल्यधिकानियोजनशतानि आयामविष्कम्भाभ्यां पञ्चदशाष्टादशोत्तराणि विशेषन्यूनानिपरित्येपेण यस्यच मध्ये शीताद्वीपः चतुष्पष्टियोजनायामविष्कम्भो द्वात्तरयोजनशतद्वयपरित्येप जलान्तात् द्विकोशोच्छ्रितः शीतादेवीभवनेन विभूषितोपरितनभागः सशीताप्रपातः इति ॥ शीतोदप्पवायद्दहेचेवत्ति ॥ यत्र निपधात् शीतोदा निपतति स शीतोदाप्रपातः शीताप्रपातः शीतादेवीद्वीपभवनसमानः शीतोदादेवीद्वीपभवनश्चेति ॥ जंबूद्वीपादि ॥ नरकाग्न्यनारिकान्ताप्रपातः च हरिकान्ताहरिप्रपातः स्वसमाननामद्वीप

हरिकतप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरउत्तरदाहिणेण महाविदेहेवासे दोप्पवायद्दहा प० तंजहा वज्रसमतुल्ला जाव सीयप्पवायद्दहेचेव सीनयप्पवायद्दहेचेव जंबूमंदरउत्तरेण रम्मएवासे दोपवायद्दहा प० वज्रसमतुल्ला जाव नरकतप्पवायद्दहेचेव नारिकतप्पवायद्दहेचेव एवंहेरन्तवएवासे दोपवायद्दहा प० वज्रसमतुल्ला जाव सुव

हरिप्रपातदह तथा हरिकाता प्रपातदह । जंबूनां मेरुयी उत्तरदिशि दक्षिणदिशि महाविदेह क्षेत्रे वे प्रपात दहछे ते कहैछे । बहुसम जाव शीता प्रपातकुल बीजो शीतोदा प्रपातकुल । जंबूद्वीपे मेरुयी उत्तरदिशि रम्यक्षेत्रे वे प्रपातकुल ते कहैछे । नरकाता प्रपातकुल बीजो नारिकांता

देवोकाविति ॥ एवमित्यादि ॥ सुवर्णकूलारूप्यकूलाप्रपातद्गद्दी रोहितांशारोहितप्रपातद्गद्दसमानवक्तव्यौ विशेषस्तूह्य इति ॥ जंबूद्वीत्यादि ॥ रक्तारक्तवती प्रपातद्गद्दी गङ्गासिन्धुप्रपातद्गद्दसमानवक्तव्यौ नवर रक्ता पूर्वादधिगामिनी रक्तवतीतु पश्चिमोदधिगामिनीति ॥ जंबूद्वीवेमदरस्तदाहिणेणभरहेवासेदोम हानईओइत्यादि एवमिति अनन्तरक्रमेण ॥ जहत्ति ॥ यथा पूर्वं वर्षेवर्षे द्वीद्वी प्रपातद्गद्दावुक्ता वेवन्नद्योवाच्या स्ताश्चैव गंगासिधूतहरो ह्रियंसरोहियनईय हरिकता हरिसलिलासीतोया सत्तेयाहुतिदाहिणओ ॥ १ ॥ सौयायनारिकांता नरकताचेवरूप्यकूलाय सलिलासुवर्णकूला रक्तवतीरत्तउत्तरओत्ति ॥ २ ॥ जम्बूद्वीपाधिकारात् क्षेत्रधर्मव्यपदेश्यपुद्गलधर्मधिकाराच्च जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतादिसत्काललक्षणपर्यायधर्माननेकधाष्टादशसूत्र्याह ॥ जंबूद्वीवेइत्यादि ॥

नक्तकूलप्पवायद्गद्देचेव रूप्यकूलप्पवायद्गद्देचेव जंबूमंदरउत्तरेणं एरवएवासे दोपवायद्गद्देहा प० वज्रसमतुल्लाजाव  
रत्नप्पवायद्गद्देचेव रत्नवज्रप्पवायद्गद्देचेव जंबूमंदरदाहिणेणं नरहेवासे दो महानईउ प० वज्रसमतुल्लाजाव  
गंगाचेव १ सिंधूचेव २ एवंजहापवायद्गद्देहा एवंणईउ नणियह्वाउ एवजहा एरवएवासे दोमहानईउ प०  
वज्रसमतुल्लाउ जावरत्ताचेव रत्नवईचेव जंबूद्वीवेदीवेनरहेरवएसुवासेसु तीताए उसप्पिणीए सुसमदुसमाए

प्रपातकुंड एम हैरण्यवत क्षेत्रे वे प्रपातकुंड तेकहैछे । बहुसम जाव सुवर्णकूला प्रपातकुंड तथा रूप्यकूला प्रपातकुंड । जंबूद्वीपना मेरुथी उत्तरदिशि  
ऐरवतक्षेत्रे वे प्रपातकुंड तेकहैछे । बसुसमजाव रक्ताप्रपातकुंड तथा बीजी रक्तवती प्रपातकुंड । जंबूद्वीपे मेरुथी दक्षिण भरत क्षेत्रे वे मोटीनदीछे  
तेकहैछे । बहुसम जाव गंगानदी तथा बीजी सिंधुनदी । एम जिण अनुक्रमे प्रपातकुंडकहिया तेम अनुक्रमे नदीपिण कहिवी । यावत् ऐरवत क्षेत्रे वे

सुगमानिचैतानि नवरं ॥ तीताएत्ति ॥ अतीता या उत्सर्पिणीप्रागव तस्यां तस्या वा सुखमदुःखमाया बहुसुखायाः समाया. कालविभागस्य चतुर्थार  
कलक्षणस्य ॥ कालोत्ति ॥ स्थिति' प्रमाण वा ॥ होत्यत्ति ॥ बभूवेति ॥ एवमिति जंबूद्वीवे २ त्यादि ॥ उच्चारणीय नवर ॥ इमीसेत्ति ॥ अस्या प्रत्यक्षायां वर्त्त  
मानाया मित्यर्थः अवसर्पिण्या मुक्तार्थाया ॥ जावत्ति ॥ सुसमदुसमाएसमाए त्तोयारक इत्यर्थः ॥ दोसागरोवमकोडाकोडीओ काले पन्नत्ते ॥ प्रज्ञप्तइति  
पूर्वसूत्रा विशेषः पूर्वसूत्रेहि ॥ होत्यत्ति ॥ भणितमिति ॥ एवमित्यादि ॥ आगमिस्साएत्ति ॥ आगमिथत्वा सुत्सर्पिण्यामिति भविष्यतीति पूर्वसूत्राविशेषः

समाए दोसागरोवमकोडाकोडीउ कालेहोत्या एवमिमीसे उसप्पिणीए जाव प० एवंआगमिस्साए उसप्पि  
णीए जाव नविस्सइ जंबूद्वीवेदीवे नरहेरवएसु वासेसु तीयाएउसप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दोगाउ  
याइउहं उच्चत्तेणं होत्या दोन्निपलिनवमाइ परमाउं पालयित्ता एवमिमीसेउसप्पिणीए जावपालयित्ता  
एवमागमिस्साए उसप्पिणीए जावपालइस्सति जंबूद्वीवेदीवे नरहेरवएसुवासेसु एगसमए एगजुगे दोअर

नदीछे । बहुसम जाव रक्ता नदी तथा बीजी रक्तवती । जंबूद्वीपना नरत तथा ऐरवत क्षेत्रे अतीत गई उत्सर्पिणीकाले सुसमदुसमानामे बे साग  
रोपमकोटाकोटिकाल प्रमाणे थयो । एम आ उत्सर्पिणीकाले सुसमदुसमा बीजो आरो बे कोटाकोटि कालप्रमाणथयो । एम आवतीउत्सर्पिणीये  
पणि सुसमदुसमा आरो बे कोटाकोटिनो थार्ये जंबूद्वीपना नरत ऐरवतक्षेत्रे गईउत्सर्पिणीये सुसमाआरे मनुष्ययुगलियानो बे गाउ प्रमाण ऊच  
पण थयो । बेपल्योपमनो उत्कृष्टो आज्ञोपालताहुआ एम आ वर्तमान उत्सर्पिणीये पणि युगलियानो बे गाऊनों शरीर बे पल्योपमनो



३ ॥ जंबूद्वीपादि ॥ सुखमायांपञ्चमारके ॥ होत्यति ॥ बभूवुः ॥ पालयत्यति ॥ पालितवन्तः पूर्वसूत्राद्विशेषः ॥ जंबूद्वीपादि ॥ एगजुगेति ॥ पञ्चाब्दिकः कालविशेषो युग तत्रैकस्मिन् स्तस्याप्येकस्मिन् समये ॥ एगसमये १ एगजुगे ॥ इत्येवम्पाठेपि व्याख्योक्तक्रमेणैवेत्यमेवार्थसम्बन्धा दन्वथावा भावनीयेति द्वावर्हतावशौ प्रवाहौ एकोभरतप्रभवो न्यऐरवत प्रभवइति ॥ दशारत्ति ॥ दशाराः समयभाषया वासुदेवाः ८ ॥ जंबूद्वीपादि ॥ सदा सर्वदा ॥ सुसमसुसमत्ति ॥ प्रथमारकानुभागः सुखमसुखमा तस्याः सम्बन्धिनी या सा सुखमेव तामुत्तमर्द्धिं प्रधानविभूतिमुच्चैस्त्वायुः वृक्षदत्तभोगोपभोगादिका आप्ता प्रत्यनु

६

हंतवंसा उप्यजिंसुवा उप्यज्जांति उप्यज्जिस्संतिवा एवं चक्रवर्तिवंसा दसारवंसा जावउप्यज्जिस्संतिवा जंबूदोसु कुरासु मणुया सया सुसमसुसमिहिंपत्ता पञ्चणुप्लवमाणा विहरंति तं० देवकुराएचेव उत्तरकुराएचेव जंबूद्वीपेदीवे दोसुवासेसु मणुया सयासुसमुत्तमिहिंपत्ता पञ्चणुप्लवमाणा विहरंति हरिवासेचेव रम्मगवासेचे

आजखो थयो । एम आवती उत्सर्पिणीये जाव वे पत्थोपमनो आजखोयासे । जंबूद्वीपे जरत ऐरवतक्षेत्रे एकैसमये एकैयुगे युगते पांच वर्षनो चंद्र चंद्र अजिवर्द्धित चंद्र अभिवर्द्धित थी थाय छे । वे अरिहंत ते पूज्य जगवंतना मोटा बंश उपना उपजेछै वर्तमान चौवीसी आश्रीने आव तेकाले उपजस्ये । एम चक्रवर्तिनावश एकभरते एकऐरवते । एम वे वंशवासुदेवना जंबूद्वीपे जरत ऐरवते एकसमये वे अरिहंत अतीतकालेऊपना वर्तमानकाले उपजेछै अनागतकाले उपजसे । एम चक्रवर्ति वलदेव वासुदेव एम जाव उपना उपजेछे उपजसे । जंबूद्वीपे वे कुरुने बिषे मनुष्य सदाई सुखमसुखमा पहिलाआरानी रिद्धि भोगता युगलिया बिचरेछै । ते कहैछे । देवकुरु तथा बीजो उत्तरकुरु एह वे क्षेत्रमां सदैव पहिलो



भवन्तो वेद्यन्तो नसत्तामात्रेणेत्यर्थः अथवा सुखमसुखमांकालविशेषं प्राप्ता अधिगताः उत्तमाष्टद्विम्बानुभवन्तो विहरन्ति आसते इति अभिधीयतेच ॥  
दोसुविकूरामणया तिमलपरमाउणोतिकोसुच्चा पिठकरंडसयाइं दोक्कपन्नाइंमणयाणं ॥ १ ॥ सुसमसुसमाणभाव अणुभवमाणेणवच्चगोवणया अउणापन्नदि  
णाइ अट्टमभत्तस्सआहारो ॥ २ ॥ देवकुरवो दक्षिणा उत्तरकुरव उत्तरा स्तेष्विति १४ ॥ जंबूइत्यादि ॥ सुसमति ॥ सुखमा द्वितीयारकानुभागः शेषतथैव पठ्य  
तेच ॥ हरिवासरम्मएसु आउपमाणंसरीरउस्सेहो पलिओवमाणिदोन्निय दोन्नियकोसुस्सियाभणिया ॥ १ ॥ छट्ठस्सयआहारो चउसट्ठिदिणाणुपालणातेसि  
पिठकरडाणसय अट्ठावीसमुण्येयब्बं ति ॥ १५ ॥ जंबूइत्यादि ॥ सुसमदुसमंति ॥ सुखमदुःखमाद्वितीयारकानुभाग स्तस्या या सा सुखमदुःखमाद्विः शेष  
तथैव ॥ उच्यतेच गाउयमुच्चापलिओ वमाउणोवज्जरिसहसघयणा हेमवएरन्नवण अहमिदनरामिहुणवासी ॥ १ ॥ चउसट्ठोपिठकरं डयाणमणयाणते

व जंबूदोसुवासेसु मणुया सया सुसमदुसमुत्तमिह्विंपत्ता पच्चणुप्पवमाणा विहरन्ति हेमवएचेव एरन्नवएचेव  
जंबूद्वीवेदीवे दोसुखित्तसु मणुया सया दुसमसुसमुत्तमिह्विंपत्ता पच्चणुप्पवमाणा विहरन्ति तंजहा पुह्वि  
देहेचेव एवरविदेहेचेव जंबूद्वीवेदीवे दोसुवासेसुमणुया छव्विहंपिकालंपच्चणुप्पवमाणा विहरन्ति तंजहा ।

आरो छे ॥ जंबूना बेत्तेत्रनें विषे मनुष्य सदैव सुखमा नामा बीजाआरानी रिद्धि पाम्यां सुखजोगता विचरेछे ॥ ते कहैछे ॥ हरिवर्षत्तेत्रे तथा  
रम्यकत्तेत्रे ॥ जंबूद्वीपना बे त्तेत्रे युगलिया मनुष्य सदाई सुखमदुखमा त्रीजा आराना सुखजोगता विचरेछे ॥ हेमवतत्तेत्रे तथा ऐरण्यवतत्तेत्रे ॥  
जंबूद्वीपमा बे त्तेत्रने विषे मनुष्य युगलिया नथी सदाई दुखमसुखमा चौथोआरो अनुजवता विचरेछे ॥ पूर्वमहाविदेहमा तथा पश्चिममहाविदेह





या इत्येव सर्वेनेति ॥ कृत्तिः इत्यादि ॥ गाथात्रयेण नक्षत्र सूत्रसंग्रहः कृत्तिकादीनामष्टाविंशते नक्षत्राणां क्रमेणाग्न्यादयो ष्ठाविंशति रेव देवता भवन्ति  
 ता प्राज्ञ द्वावग्नी १ । एवप्रजापती २ । सोमी ३ । रुद्रो ४ । अदितौ ५ । बृहस्पती ६ । सप्यौ ७ । पितरौ ८ । भगौ ९ । अर्यमणौ १० । सवितारौ ११ ।  
 त्वष्टारौ १२ । वायू १३ । इन्द्राग्नी १४ । मित्रौ १५ । इन्द्रौ १६ । निर्ऋतौ १७ । आपः १८ । विश्वौ १९ । ब्रह्माणौ २० । पिणू २१ । वसू २२ ।  
 वरुणौ २३ । अजौ २४ । विवृणौ २५ । अत्यान्तरे अहिर्बुध्नावुक्तौ पूषणौ २६ । अश्विनौ २७ । यमाविति २८ । अत्यान्तरे पुन रश्मिनोत्तर  
 भ्येता एव मुक्ता अश्वि १ । यम २ । दहन ३ । कमलज ४ । शशि ५ । शूलभृद् ६ । दिति ७ । जीवफणि ८ । पितरः ९ । योन्य १० । र्यम ११ । दिनकत्

सिर अद्वायपुणवसूयपुस्सोय । तत्तोविष्णुस्सलेसा महायदोफग्गुणीनुय ॥ १ ॥ हत्थोचित्तासाई यविसाहा  
 होंतिष्णुराहा । जेठामूलोपुह्वा असाढाउत्तराचेव ॥ २ ॥ अज्जिईसवणधणिष्ठा सयजिसयादोयहोंतिजद्द  
 वया । रेवइअस्सिणिजरणी णेयह्वाअणुपुह्वीए ॥ ३ ॥ एवगाहानुसारेणणायह्वं जाव दोजरणीनु दोअग्गी

पमा बेचद्रमा अजुआलो करताहुवा वर्तमानकाले करेछे अनागतकाले करस्ये ॥ तथा पणि बेसूर्य अतीतकाले तप्या वर्तमानकाले तपेछे अना  
 गतकाले तपस्ये ॥ वली बे कृत्तिका नक्षत्रे ॥ बे रोहिणी नक्षत्रे ॥ बे मृगशिर नक्षत्रे ॥ बे आर्द्रा नक्षत्रे ॥ एम अठावीस नक्षत्र गाथा  
 थी जाणिवा ॥ कृत्तिका । रोहिणी । मृगशिर । आर्द्रा । पुनर्वसु । पुष्य । तिवारपल्ली अश्लेषा । मघा । बे फाल्गुनी एक पूर्वाफाल्गुनी एक उत्त  
 राफाल्गुनी । हस्त । चित्रा । स्वाति । विशाखा । तिमज अनुराधा । ज्येष्ठा । मूल । पूर्वाषाढा । अने उत्तराषाढा । अजिजित् । श्रवण । धनि

१२ । त्वष्टृ १३ । पवन १४ । शक्रा १५ । मित्रा १६ । मित्रा १७ । ख्याः ॥ १ ॥ ऐन्द्रोनैर्ऋतितोयं विश्वोव्रह्माहरिर्वसुर्वरुणः अजपादोहिर्वृधः पूषाचेती श्वरा  
 भानाम् ॥ २ ॥ अङ्गारकादयो ऽष्टाशीतिर्ग्रहाः सूत्रसिद्धाः केवलमस्मदृष्टपुस्तकेषु केषुचिदेव यथोक्ता सख्यासम्बद्धातीति सूर्यप्रज्ञपत्यनुसारेणासा विहसवादनीया  
 तथाहि तत्सूत्रं तत्तत्खलुइमे अष्टासीदमहाग्रहा पञ्चत्ता तजहा इगाल १ विद्याल २ लोहियक्खे ३ सणिच्छरे ४ आहुणिए ५ पाहुणिए ६ कणे ७ कण  
 ए ८ कणकणए ९ कणविताणए १० कणसताणए ११ सोमे १२ सहिए १३ अस्सासणे १४ कज्जोयए १५ कव्वडए १६ अयकरे १७ दुदुभए १८ सखे १९ स

दोपयावई दोसोमा दोरुद्धा दोअइई दोवहस्सई दोसप्पी दोपिई दोनगा दोअज्जमा दोसविया दोतठा दोवा  
 ऊ दोइदग्गी दोमिक्का दोइदा दोनिरई दोअऊ दोविस्सा दोवम्हा दोविण्हू दोवसू दोवरुणा दोअया दोवि  
 विद्धी दोपुस्सा दोअस्सा दोयमा ॥ दोइगालगा दोवियालगा दोलोहियस्का दोसणिंचरा दोअऊणिगा  
 दोपाऊणिगा दोकणा दोकणगा दोकणकणगा दोकणगवियाणगा दोकणगसताणगा दोसोमा दोसहिया

ष्टा । शतभिषा । वली बे पूर्वाभाद्रपद । उत्तराभाद्रपद । रेवती । अश्विनी । भरणी । एतन् अनुक्रमेण बेवे जाणिवा ॥ एतन् गायाने अनुसारे जा  
 णिवा जाव भरणीलगे ॥ हिवे ताराना स्वामी कहैछे । अग्नी देवता प्राजापती सोम रुद्र अदिती बृहस्पति सपिर्ष पितर जग अर्यमा सवि  
 ता त्वष्टा वा यूद्धाग्नी मित्र इद निर्ऋती आप बृम्हा विश्व विष्णु वसु वरुण अज विवृद्धि पूषण अश्वि यम ॥ हिवे अठ्ठासी गृहना नाम  
 कहैछे । अङ्गारक तेमंगल व्याल लोहिताक्ष शनैश्वर आहुणिक प्राहुणिक कण कनक कनकनक कनकवितान कनकसंतानक सोम सहित अश्वास



खवन्ने २० सखवन्नाभे २१ कसे २२ कसवन्ने २३ कंसवन्नाभे २४ नीले २५ नीलाभासे १६ रूपी ३७ रूप्याभासे २८ भासे २९ भासरासी ३० तिले ३१ तिल  
 पुष्पवन्ने ३२ दगे ३३ दगपंचवन्ने ३४ काए ३५ कायबंभे ३६ इंदगी ३७ धूमकेऊ २८ हरी ३९ पिगले ४० बुहे ४१ सुक्के ४२ वज्रस्सई ४३ राह ४४ अगत्थी ४५  
 माणवगे ४६ कासे ४७ फासे ४८ धुरे ४९ पमुहे ५० वियळे ५१ विसंधी ५२ नियत्ते ५३ पयत्ते ५४ जडियाइलए ५५ अरुणे ५६ अगिल्लए ५७ काले ५८  
 महाकाले ५९ सोलियए ६० सोवलियए ६१ वत्तमाणगे ६२ पलवे ६३ निच्चालोए ६४ निम्बुज्जोए ६५ सयंपभे ६६ ओभासे ६७ सेयकरे ६८ खेमकरे ६९ आ

दोष्णासासणा दोकज्जोवगा दोकल्लुगगा दोष्णयकरगा दोदुंदुजगा दोसंखा दोसंखवन्ना दोसंखवन्नाज्जा दो  
 कंसा दोकसवन्ना दोकंसवस्साज्जा दोरुप्पी दोरुप्पाज्जासा दोनीला दोनीलाज्जासा दोजासा दोजासरासी दो  
 तिला दोतिलपुष्पवस्सा दोदगा दोदगपंचवस्सा दोकाका दोकायवज्जा दोइदग्गी दोधूमकेऊ दोहरी दोपिं  
 गला दोबुहा दोसुक्का दोबहस्सई दोराह ४४ अगत्थी दोमाणवगा दोकासा दोफासा दोधुरा दोपमुहा दो  
 वियळा दोविसंधी दोनियत्ता दोपइत्ता दोजडियाइलगा दोष्णरुणा दोष्णगिल्ला दोकाला दोमहाकालगा  
 दोसोलियया दोसोवलियया दोवत्तमाणगा दोपलवा दोनिच्चालोगा दोनिम्बुज्जोया दोसयंपज्जा दोनज्जासा

न कज्जोवग कर्बट अयस्कर दुदुभक शख शखवर्ण शंखवर्णाज्ज कस कंसवर्ण कसवर्णाभ रूपी रूप्याभ नील नीलाभास जस्स भस्मराशी तिल तिल  
 पुष्पवर्ण दक दकपंचवर्ण काक काकवभ इंद्राग्नी धूमकेतु हरि पिगल बुध शुक्र बृहस्पति राहु अगस्ति माणवक कास स्पर्श धुर प्रमुख विकट

भकरे ७० पभकरे ७१ अपराजिए ७२ अरए ७३ असोगे ७४ वीयसोगे ७५ विमले ७६ वितत्ते ७७ वितत्येय ७८ विसाले ७९ साले ८० मुञ्चए ८१ अणिय  
 टो ८२ एगजडो ८३ दुजडो ८४ करकरिए ८५ रायगले ८६ पुप्फकेऊ ८७ भावकेऊ ८८ ॥ इदतत्रैवसग्रहणीगाथाभिर्नियंत्रिततथाहि ॥ इगालएवियाल  
 ए । लोहियक्खेसणिच्छरेचेव ॥ आहुणिएपाहुणिए । कणगसनामाविपचेव ११ ॥ ३ ॥ सोमेसहिएआसा । सण्येयकज्जोयएयकव्वडए ॥ अयकरदुदुहएविय ।  
 सखसनामावितिन्नेव २१ ॥ २ ॥ तिन्नेवकसनामा । नीलारूपीयहोतिचत्तारि ॥ भासतिलपुप्फवन्ने । दगायदगवन्नकायवज्जेय ३६ ॥ ३ ॥ इदग्निधूमकेऊ  
 हरिपिगलएवुहेयसुक्केय ॥ वहसइराहुअगत्थी । माणवएकासफासेय ४८ ॥ ४ ॥ धुरएपमुहेवियडे । विसधिकप्पेतहापयल्लेय ॥ जडियालयअरुणे । अगिल  
 कालेमहाकाले ५९ ॥ ५ ॥ सोत्थियसोवत्थियए । वहमाणगतहापलवेय ॥ निच्चालोएनिच्चु । ज्जोएयसगपभेयओभासे ६५ ॥ ६ ॥ सेयकरखेमकर । आभकर  
 पभंकरेयवोधब्बे ॥ अरएविरएयतहा । असोगतहवोयसोगेय ७५ ॥ ७ ॥ विमलवितत्तवितत्ये । विसालतहसालमुञ्चएचेव ॥ अणियट्टोएगजडो । यहोइविज

दोसेयकरा दोखेमंकरा दोष्णजंकरा दोपन्नंकरा दोष्परजिया दोष्परया दोष्सोगा दोविगयसोगा दोविम  
 ला दोवितत्ता दोवितत्या दोविसाला दोसाला दोरुह्या दोष्णियट्टो दोएगजडो दोदुजडो दोकरकरिगा

विसधि नियल पइल जटितालक अरुण अगिल महाकाल स्वस्तिक सौवस्तिक वर्द्धमान [पूसमानक अंकुश एह वेगूहना नाम गून्थातरेच्छे] प्रलंब  
 नित्यालोक नित्योदयोत स्वयप्रभ उज्जस श्रेयंकर सेमंकर आभकर प्रभंकर अपराजित अरज अशोक विगतशोक विमल वितत विन्नस्त विशाल सा  
 ल मुत्तक अनीवर्त्त एकजटो द्विजटो करकरिक राजगल पुप्फकेतु भावकेतु एह सर्व अठ्यासी गूह वे वे जाणिवा ॥ जवूद्धीपनामा द्वीपनी वेदिका

डीयबोधवे ८४ ॥ ८ ॥ करकिरणरायगल । बोधवेपुष्पभावकेऊय ८८ ॥ अष्टासीद्गहाखलु । नेयत्वाआणुपुष्पीए ति ॥ ८ ॥ जंबूद्वीपाधिकारादेवेदमपरमाह  
 जंबूद्वीपादिकण्ठनवर वज्रमय्या अष्टयोजनोच्छ्रयाया शतुर्द्वादशोपर्यधोविस्तृताया जंबूद्वीपनगरप्राकारकल्पाया जगत्या द्विगव्यूतोच्छ्रितेन पचधनुःशतवि  
 स्तृतेन नानारत्नमयेन जालकटकेनपरिचिह्नाया उपरिवेदिकेति पञ्चवरवेदिकेत्यर्थं पचधनुः शतविस्तीर्णगवाक्षहेमकिङ्किणीघण्टायुक्त देवाना मासनश  
 यन मोहनविविधक्रीडास्थान सुभयतो वनखण्डवतीति जम्बूद्वीपवक्तव्यतान्तरत्वादेव लवणसमुद्रवक्तव्यतामाह ॥ लवणेणमित्यादि ॥ कण्व्य नवर चक्रवा  
 लस्यविष्कम्भः पृथुत्वे चक्रवालविष्कम्भ स्तेनेति सत्त्वेदिकासूत्रं जम्बूवेदिकासूत्रवदाचमित्यर्थाः चेन्नप्रस्तावा लवणसमुद्रवक्तव्यतान्तरं धातकौखण्ड व  
 क्तव्यतां ॥ धायइसडेइत्यादिना ॥ वेदिकासूत्रान्तेनग्रन्थेनाह कण्व्ययाय नवर धातकौ खण्डप्रकरणमपि जम्बूद्वीपलवणसमुद्रमध्य वलयाकृति धातकौखण्ड  
 मालिख्य हिमवदादिवर्षधरान् जंबूद्वीपात्सारेण चोभयतः पूर्वापरविभागेन भरतहेमवतादिवर्षाणिच व्यवस्थाप्य पूर्वापरदिशोर्वलयविष्कम्भमध्येभेदच  
 कल्पयित्वा ऽवबोद्धव्यं ग्रन्थेनैवक्रमेण पुष्करवरद्वीपाद्विमपीति तत्र धातकौना वृक्षविशेषाणां राण्डो वन समूहइत्यर्थो धातकौखण्ड स्तद्युक्तो योद्वीपः स

दोरायगगला दोपुष्पकेऊ दोन्नावकेऊ ॥ ८८ ॥ जंबूद्वीवरुसणंदीवरुसवेइया दोगाउच्छ्राइं उहंउच्छ्रतेण प०  
 लवणेणं समुद्रे दोजोयणसयसहरुसाइं चक्रवालविस्कंजेण पस्तते लवणरुसणसमुद्ररुस वेइया दोगाउच्छ्राइं

कोटसरिखी आठ योजनउची ते ऊपरि वली वेगाऊऊंची पानसे धनुष पिहली पदमवरवेदिका कहीछे । नानारत्नमय कहीछे ॥ लवणसमुद्र  
 वेलास योजन पिहुलपणे चक्रवालमऊल तेहनुं पिहुलपण्छे एतले पूर्वथी पश्चिमेने काठे दक्षिणथी उत्तरे वे लास योजनछे । लवणसमुद्रना को

धातकीखण्डएवोचते यथा दण्डयोगात्दण्डइति धातकीखण्डयासौद्वीपश्चेति धातकीखण्डद्वीप स्तस्य ॥ पुरत्यिमंति ॥ पौरस्त्यं पूर्वमित्यर्थो यद्वैविभाग  
 स्तद्धातकीखण्ड द्वीप पौरस्त्यार्द्धं पूर्वापराद्धं ताच लवणसमुद्रवेदिकातो दक्षिणत उत्तरतश्च धातकीखण्डवेदिका यावत् गताभ्या मिषुकारपर्वताभ्यां धात  
 कीखण्डस्य विभक्तत्वादिति उक्तच पंचसयजोयणुचा सहस्रमेगंचहोतिविच्छिन्ना कालोयणलवणजले पुष्ठातेदाहिणुत्तरओ ॥ १ ॥ दोउसुयारनगवराधा  
 यइखण्डस्समज्जयारठिया तेणदुहानिहिस्सइपुब्बइपच्छिमइवेवत्ति ॥ २ ॥ तत्र एमितिवाक्यालङ्कारे मन्दरस्यमेरो रित्येवं धातकीखण्डपूर्वाद्धं पश्चिमाद्धं प्रकर  
 णे प्रत्येक मेकोनसप्ततिसूत्रप्रमाणे जंबूद्वीपप्रकरणव दध्येतथ्ये व्याख्येये चातएवाह ॥ एव जहा जंबूद्वीवेतहेत्यादि ॥ नवरं वर्षधरादिस्वरूप मायामादिसम  
 ताचैव भावनोया पुब्बइस्सयमज्जे मेरुस्सपुणदाहिणुत्तरओ ॥ वासाइतिन्नितिन्नि विदेह वासचमज्जमि ॥ १ ॥ अरविवरसठियाइ चउरोलक्खाइता इं  
 खेत्ताइ [ दीर्घतया ] अतोसखित्ताइं रुदयराइं कमेणपुणपुठो ॥ २ ॥ भरहेमुहविक्खभो क्खावड्डिसयाइं चोइसहियाइं ॥ अउणत्ती सचसय वारसहियदु  
 सयभागेण ॥ ६६१४ अठारसयसहस्सापचेवसयाहवंतिसीयाला । पणवन्नअससयं वाहिरओ भरहविक्खभो ॥ १८५४७ चउगुणियभरहवासो [ व्यास १२८

उहंउच्चत्तेणं पस्सत्ता धायईखंठे णं दीवे पुरत्यिमद्धेणं मंदरस्सपव्यस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासा पस्सत्ता च

दनी ऊपरली वेदिका बेगाऊ ऊंचपणें कही धातकीखंड द्वीपनें पूर्वदिशि मेरुपर्वतथी उत्तरे तथा दक्षिणे बे सेत्रछै ते कहैछै । बहुसम जाव जरत  
 क्षेत्र अने ऐरवतक्षेत्र ॥ एम जिम जंबूद्वीप माछै तिम इहांपणि जाणिवू जाव बे खेत्रने विषें मनुष्य छप्रकारना कालप्रति जोगता बिचरेछै ते  
 कहैछे जरतक्षेत्र ऐरवतक्षेत्रे एतलो विशेष कूटसामली वृक्षछे बीजो धातकी वृक्षछे गरुडनामा देवताछै वेणुदेवता सुदर्शनदेवता । धातकीखंड



द्रत्यर्थः ] हेमवएतंचउगुणंतद्वयं [ हरिवर्षमित्यर्थः ] हरिवासंचउगुणियं महाविदेहस्यविक्रंभो ॥ १५५ २१२ ॥ ५ ॥ जहविक्रंभोदाहिणदिसा २१२ एतह  
 उत्तरेविवासति ॥ जहपुव्वसेसत्तओ तहअयरहेविवासाइ ॥ ६ ॥ सत्ताणउअसहस्सा सत्ताणउयाइअडयसयाइ । तिन्नेवयलक्खाइं कुरूणभागायवाण  
 उअ ॥ विक्रंभइति ॥ ३८७८७७ । ८२ । २१२ । अडवयसयंतेषी ससहस्सादोलक्खजीवाओ दोगहगिरीणायामो संखित्तोतंधणकुरूणं । ८ वासहर १२ गिरी  
 वल्लारपब्बया ३२ पुब्बपच्छिमसेसु । जंबूद्वीपगदुगुणा वित्थरओउस्सएतुत्ता ॥ ८ ॥ कंचणगजमगसुरकुरू नगाययेयडुवट्टदीघाय विक्रंभोव्वेहसमु स्सएणजहजं  
 बुदीविब्ब । लक्खाइंतिन्निदीहा विज्जुपहगंधमायणादोवि क्खण्णंचसहस्सा दोनिसयासत्तपीसाय ॥ ११ ॥ अउणडादोणिसया उणसत्तरिसहस्सलक्खाय ।  
 सोमणसमालवंता दीहाइदादससयाइ ॥ १२ ॥ सव्वाओविनईओ विक्रंभोव्वेहदुगुणमाणाओ । सीयासीओयाण वणाणिदुगुणाणिविक्रंभो ॥ १३ ॥ वन  
 सुखानीत्यर्थः । वासहरकुरूसुदहा [ वर्षधरेषुकुरूसुचयेक्रदाइत्यर्थः ] नईणकुडाइंतेसुजेदीवा उल्लेहस्सयतुत्ता विक्रंभायामओदुगुणा ॥ १४ ॥ जंबूद्वीपकापेच्चयेति  
 कियदूरं जंबूद्वीपप्रकरण धातकीखण्डपूर्वाक्षाभिलापेन वाच्यमित्याह ॥ जावदोसुवासेसु मणुये त्यादि ॥ एतस्माद्धि सूत्रात्परतो जंबूद्वीप प्रकरणे चन्द्रादि  
 ज्योतिषां सूत्राण्यधीतानि तानिच धातकीखण्डपुष्करार्धपूर्वाक्षादिप्रकरणेषु नसम्भवन्ति विस्थानकत्वा दस्साध्ययनस्य धातकीखण्डादीच चन्द्रादीनां बहु  
 त्वादिति आहच दीचंदाइहदीवे चत्तारियसायरेलवणतीये धायइखंडेदीवे वारसचदायसूरायत्ति ॥ १ ॥ चन्द्राणामदित्वेन नचन्द्रादीनामपि दित्व नस्यात्  
 ततोद्विस्थाने नवतारइति जंबूद्वीपप्रकरणादस्यविशेषंदर्शयन्नाह ॥ नवरमित्यादि ॥ नवरकोवलमयंविशेषइत्यर्थः कुरूसूत्रानन्तरं तनकुडसामलीचेज जंबूचेव सु

असमतुत्ता जाव नरहेचेव ऐरवएचेव एवजहा जंबूद्वीवे तथा एत्यन्नाणियह्वं जाव दोसुवासेसु मणुया त्व

दसणेति उक्तं च इहतु जंबूस्थाने धायईरुक्मेचेवति वक्तव्य प्रमाणच तयो जंबूद्वीपशास्त्राद्यादिवत् तयोरेवदेवसूत्रे अणाटिएचेव जंबूद्वीवाहिवद् इत्यत्रवक्त  
 ये ॥ सुदसणेचेवति ॥ इहवक्तव्यमिति धायईरुक्मेदेवेत्यादि पश्चिमाईप्रकरण पूर्वाईवदनुसर्त्तव्य अतएवाह ॥ जावळ्विहकालमित्यादि ॥ विशेषमाह नवरं  
 कूडसामलीत्यादि ॥ धातकीखडपूर्वाईत्तरकुरुषु धातकीवृक्षउक्त इहतु महाधातकीवृक्षोध्येतयो देवसूत्रे द्वितीयः सुदर्शनसूत्राधीत इहतु प्रियदर्शनोध्येतय  
 इति पूर्वाईपश्चिमाईमौलनेन धातकीखण्डद्वीपसम्पूर्णमाश्रित्य द्विस्थानकं ॥ धायईरुक्मेदेवेत्यादिनाह हेभरते पूर्वाईपश्चिमाईयोर्दक्षिणदिग्भागेतयोर्भावा

ब्रिहंपिकालं पञ्चणुप्लवमाणा विहरंति । तंजहा जरहेचेव ऐरवएचेव णवरं कूडसामलीचेव धायईरुक्मेचेव  
 देवा गरुलेचेव वेणुदेवे पियसुदंसणेचेव धायईरुक्मेदीवपच्छिमछे मंदररुस पल्लयरुस उत्तरदाहिणे णं दोवा  
 सा पल्लता बज्रसमतुल्ला जाव जरहेचेव ऐरवएचेव जाव ब्रिहंपिकालं पञ्चणुप्लवमाणा विहरंति । जरहे  
 चेव ऐरवएचेव णवरं कूडसामलीचेव महाधायईरुक्मेचेव देवा गरुलेचेव वेणुदेवे पियदंसणेचेव धायईरुक्मे

द्वीपना पश्चिमानें विषे मेरुपर्वतने उत्तरे दक्षिणे बे वर्षळें बहुसम जाव मान प्रमाणीयी सरिखा एक भरत बीजो ऐरवत जाव तिहाना मनुष्य  
 आराना सुखदुखप्रते भोगवे फिरताआरा आवें जरतखेत्र तथा ऐरवतखेत्र । एतलो विशेष छे तिहा कूडसामलीनामा वृक्षळें । बीजो महाधात  
 की वृक्षळें । तिहा गरुडदेवता वेणुदेव प्रीतिदर्शनछे ॥ धातकीखंडद्वीपना पश्चिमाईनेविषे बेभरतक्षेत्रळें । धातकीखंडद्वीपने विषे बे जरतक्षेत्र छे  
 बे ऐरवतक्षेत्र छे । बे हिमवतक्षेत्रळें । बे हिरण्यवतक्षेत्र छे । बे हरिवर्षक्षेत्र छे । बे रम्यकवर्षक्षेत्रळें । बे पूर्वमहाविदेह क्षेत्रळें जिहां सदैव ।

दिलेव सर्वत्रभरतादीनांस्वरूपंप्रागुक्तं ॥ दोदेवकुरुमहादुमत्ति ॥ द्वौ कूटशास्त्रलीवृक्षावित्यर्थः। होतृहासिदेवौ वेणुदेवावित्यर्थः ॥ दोउत्तरकुरुमहादुमत्ति  
धातकीवृक्षमहाधातकीवृक्षाविति तद्देवौ सुदर्शनप्रतिदर्शनाविति वृक्षहिमवदादयः षट्पर्वधरपर्वताः शब्दापातिविकटापातिमाल्यवत् पर्याया  
व्यवृत्तवैताद्याश्च तन्निवासिस्वातिप्रभासारुणपद्मनामदेवानां द्वयेनद्वयेन सहिताःक्रमेणद्वौद्वावुक्ताः ॥ दोमालवतत्ति ॥ मालवन्तावुत्तरकुरुतु पूर्वदिग्

ऋपच्छिमष्टे मंदरस्सपल्लयस्स धायइखंठे णं दीवे दोजरहाइं दोएरवयाइं दोहिमवंताइं दोहेरस्सवयाइं दो  
हरिवासाइं दोरम्मगवासाइं दोपुष्टविदेहाइं दोअवरविदेहाइं दोदेवकुरान् दोदेवकुरुमहदुमा दोदेवकुरुम  
हदुमावासा देवा दोउत्तरकुरान् दोउत्तरकुरुमहदुमान् दोउत्तरकुरुमहदुमावासा देवा दोचुल्लहिमवता दोमहा  
हिमवता दोनिसहा दोनीलवता दोरूपी दोसिहरी दोसद्दावई दोसद्दावईवासी साइदेवा दोबियळावई दोबि

चौथो आरोहें । बे पश्चिममहाविदेहहैं । बे देवकुरुहैं । बे देवकुरुनामें मोटा वृक्ष रत्नमय शास्वताहैं । बे देवकुरुमोटावृक्षना वासी देवताहैं  
वली तेज धातकीखडमा बे उत्तरकुरुहैं युगलियाना । तिहां उत्तरकुरुनामा मोटा वृक्षहैं । बे उत्तरकुरुमोटावृक्षना रहनार देवताहैं । बे लघु  
हिमवतपर्वतहैं । बे मोटाहिमवतपर्वतहैं । बे निषधपर्वतहैं । बे नीलवतपर्वतहैं । बे रूपीपर्वतहैं । बे शिखरीपर्वतहैं । बे शब्दापातीना  
मा वृक्षवैताढ्यहैं । बे शब्दापाती वैताढ्यनां वासी स्वातिदेवताहैं । बे विकटापाती वैताढ्यहैं । बे विकटापातीना रहनार प्रजासनामा देव  
ताहैं । बे गधापातीना वासी अरुणनामा देवताहैं । बे मालवतपर्याय नामा वृक्षवैताढ्य पर्वतहैं । बे मालवतपर्यायना वासी पदमनामा दे

र्त्तिनी गजदन्तकौस्त स्ततोभद्रशालवनतद्देदिका विजयेभ्यः परौ शीतोत्तरकूलवर्त्तिनी दक्षिणोत्तरायतौ चित्रकूटौ वजस्तारपर्वतौ ततोविजयेनान्त  
रनद्या विजयेनचान्तरिता वन्धौ तथैवान्धौ पुनस्तथैवान्धावितिपुनः पूर्ववनमुखवेदिकाविजयाभ्या मर्वाक् शीतादक्षिणकूलवर्त्तीनि तथैव चिकूटादीनां च  
त्वारिद्वयानि ततः सोमनसौ देवकुरुपूर्वदिग्दर्त्तिनी गजदन्तकौ ततो गजदन्तकावेव देवकुरुप्रत्यग्भागवर्त्तिनी विद्युत्प्रभौ ततोभद्रशालवनतद्देदिका  
विजयेभ्य परत स्तथैवाङ्गावत्यादीना चत्वारि द्वयानिशीतोदादक्षिणकूलवर्त्तीनि पुनरन्यानि पश्चिमवनमुखवेदिकांत्यविजयाभ्यां पूर्वतःक्रमेण तथैवच

यक्षावईवासी पन्नासीदेवा दोगंधावइवासी अरुणादेवा दोमालवंतपरियागा दोमालवंतपरियागावासी पउ  
मादेवा दोमालवंता दोचित्तकूठा दोपउमकूठा दोनलिनकूठा दोएगसेला दोतिकूठा दोवेसमणकूठा दो अं  
जणा दोमातंजणा दोसोमणसा दोबिज्जुप्पजा दोअंकावई दोपम्हावई दोआसीविसा दोसुहावहा दोचंद

वताछै । वे मालवतनामा गजदंतपर्वतछै । वे चित्रकूट पर्वतछै । वे पदमकूट पर्वतछै । वे नलिनकूट पर्वतछै । वे एकशील पर्वतछै । वे त्रिकू  
ट पर्वतछै । वे वैश्रमणकूटछै ॥ वे अंजनपर्वतछै । वे मातंजनपर्वतछै । देवकुरुथी पूर्वदिशिये सोमनस गजदंताकार पर्वतछै । देवकुरुपासे वे  
विद्युत्प्रभछै । तेहथी आगलि वे अंकावती नगरीछै । वे पदमावती नगरीछै । वे आशीविषा नगरीछै । वे सुखावहा नगरीछै एह च्यारपुरी  
सीतोदा नदीने जीमणे पासेछै । तिहाथी आगलि पूर्व वे चंद्रपर्वतछै । वे सूर्य पर्वतछै । वे नागपर्वतछै । वे देवपर्वतछै । तिवारपछी वे गं  
धमादन गजदंताछै । उत्तरकुरुने पश्चिमजार्गे एहसर्वे धातकीखड्गनां पूर्वाद्ध अने पश्चिमाद्ध मा छे तेमाटे बबे कहिया । वे इपुकार धातकीखं

॥ न्नपर्वतादीनांचत्वारित्यानि ततो गन्धमादनायुत्तरकुरुपश्चिमभागवर्तिनौ गजदन्तकाविति एते धातकीखण्डस्य पूर्वार्धपश्चिमार्धे च भवन्तीति द्वावुक्ता  
 णि पिति प्रयुक्तारौ दक्षिणोत्तरयोर्दिशोः धातकीखण्डविभागकारिणाविति ॥ दोषुल्लहिमवतकूडा इत्यादि ॥ हिमवदादयः षट्पर्वधरपर्वताः तेषु द्वे कू  
 टे जम्बूद्वीपप्रकरणे अभिहिते ते पर्वतानाद्विगुणत्वा देकैकशो स्यातामिवर्षधराणाद्विगुणत्वात् पद्मादिद्वादशपि द्विगुणा स्तद्व्योपेवमिति चतुर्दशानां गङ्गा  
 दिमहानदीनां पूर्वपश्चिमार्धपेक्षया द्विगुणत्वात् तत्प्रपातद्वादशपि द्वौ द्वौ स्यु रित्याह ॥ दोगङ्गपवायद्देत्यादि दोरोहियाग्रे ॥ इत्यादौ नव्यधिकारे गङ्गा

पद्मया दोसूरपद्मया दोणागपद्मया दोदेवपद्मया दोगधमायणा दोउसुगारपद्मया दोचुल्लहिमवतकूडा दोवेस  
 मणकूडा दोमहाहिमवतकूडा दोवेरुलियकूडा दोनिसहकूडा दोरुयगकूडा दोनीलवतकूडा दोउचदंसणकूडा  
 दोरुप्पिकूडा दोमणिकंचणकूडा दोरिहरिकूडा दोतिगिच्छिकूडा दोपउमद्दहा दोपउमद्दहवासिणीन देवीन

कूडा दक्षिणोत्तर भाग कीधोळे । बे लघुहिमवत पर्वतना कूटळे बे पर्वतना बेकूट एम सर्वत्र जाणवा । बे बैश्रमणकूट । बे महाहिमवत पर्व  
 तना कूट । बे बैहूर्यकूट । बे निषधपर्वतना कूट ते शिखरळे । बे रुचकना कूट । बे नीलवतपर्वतना कूटळे । बे उपदर्शनकूट । बे रूपकूट  
 बे मणिकंचणकूट । बे शिखरीना कूट । बे तिगिच्छिकूट ॥ एम बे पदमद्रह ले विमणा क्षेत्रमाटै । तिहा बे पदमद्रहनी वासी रहनारी श्री देवी  
 ले । बे महापदमद्रह ले । तिहा महापदमद्रहनी रहनारी बे ह्री नामें देवीले । एम जाव बेपुंठरीक द्रहळे । तिहां बे पुंठरीक द्रहनी रहनारी  
 लक्ष्मी देवताले । बे गंगाप्रपात द्रहळे । जिहा ऊचाथी गंगानो प्रवाहपडैले एम जाव बे रक्तवती प्रपात द्रहळे । बे रोहितानदी एम जाव रूप

दिमहानदीनां सदपिद्वित्वनोक्त जवूषीपप्रकरणोक्तस्य ॥ महाहिमवताओवासहरपव्वयाओमहापउमदहाओदीमहानईओ पवहतीत्यादि ॥ सूत्रक्रमस्या  
 अयणात् तत्रहि रोहितादय एवाष्टौश्रूयन्त इति चित्रकूटपद्मकूटवचस्कारपर्वतयो रन्तरे नौलवर्षधरपर्वतनितवस्थवस्थितत्वात् ग्राहवतीकुण्डाद्विण  
 तोरणविनिर्गता अष्टाविंशतिनदीसहस्रपरिवारा श्रोताविगामिनौ सुकच्छमहाकच्छविजययो विंभागकारिणी ग्राहवतीनदी एवंयथायोगदयोर्द्वयो वंच  
 स्कारपर्वतयो विजययो रन्तरेक्रमेण प्रदक्षिण्या द्वादशाप्यन्तरनद्यो योज्या स्तद्वित्वच पूर्ववदिति पङ्कवतीत्यत्र वेगवतीति ग्रन्थान्तरे दृश्यते चारोदे  
 त्यत्र चारोदेत्यत्र सिहस्रोताइत्यत्र शीतस्रोताइत्यपरत्र फेनमालिनौ गंजीरमालिनौचेति इह व्यत्ययश्च दृश्यतेइति मात्यवज्जदन्तकभद्रशालवनाभ्यामा

सिरिउ दोमहापउमदहा दोमहापउमदहवासिणीहिरीउदेवीउ एवंजाव दोपुंठरीयदहा दोपुंठरीयदहवा  
 सिणीउ लच्छीउ देवीउ दोगंगप्पवायदहा जाव दोरत्तवईपवायदहा दोरोहियाउ जाव दोरूप्पकूला दोगाहा  
 वईउ दोदहवईउ दोपंकवईउ दोतत्तजलाउ दोमत्तजलाउ दोउम्मत्तजलाउ दोखीरोयाउ दोसीहसोयाउ  
 दोअंतोवाहिणीउ दोउम्मिमालिणीउ दोफेणमालिणीउ दोगंजीरमालिणीउ दोकच्छा दोसुकच्छा दोमहा

कूला वेनदी । वे ग्राहवतीनदी । वे द्रहवती नदी । एह सर्वे पर्वतयो नीकली विजयमा आवीछै । वे पंकवती नदी । वे तप्तजला । वे उन्म  
 त्तजला नदी । वे चारोदा नदी । वे सिहस्रोता नदी । वे अतर्वाहिनी नदी । वे ऊर्मिमालिनी । वे फेनमालिनी नदी । वे गंजीरमालिनी  
 नदी ॥ वे कच्छ विजय । सुकच्छ विजय । महाकच्छ विजय । वे महाविदेहे वे धातकीखरुमा छै एकेकमा बत्तीस विजयछै एवं चौसठ विजयछै

रभ्य कच्छादीनि दानिंश विजयते च युगलानि प्रदक्षिणतो वगन्तव्यानीति तथा कच्छादिषु क्रीमेण जेमादि पुरीणां युगलानि दानिंश दवगन्तव्यानीति भद्र

॥

कच्छा दोकच्छगावई दोआवत्ता दोमंगलावत्ता दोपुस्कला दोपुस्कलावई दोवच्छा दोसुवच्छा दोमहाव  
च्छा दोवच्छगावई दोरम्मा दोरम्मगा दोरम्मणिज्जा दोमंगलावई दोपम्हा दोसुपम्हा दोमहापम्हा दोप  
म्हागावई दोसखा दोनलिणा दोकुमुदा दोनलिणावई दोवप्पा दोसुवप्पा दोमहावप्पा दोवप्पगावई दो  
वग्गु दोसुवग्गु दोगधिला दोगधिलावई दोखेमानं दोखेमपुराणं दोरिष्ठानं दोरिष्ठपुराणं दोखग्गीणं दो  
मंजूसानं दोअोसहीणं दोपुंरुगीणिणं दोसुसीमानं दोकुंरुलानं दोअपराइयानं दोपन्नंकरानं दोअंकाव

तेहना नाम बे थोके एकेक विजयमा बेबे नगरी छै। बे कच्छगावती महाविदेहमाछै। बे आवर्ता बे मंगलावर्ता। बे पुष्कला। बे पुष्कलावती। बे  
वच्छा। सुवच्छा। महावच्छा। वच्छगावती। रम्मा। रम्मगा। रम्मणिज्जा। मंगलावती। पदमा। सुपम्हा। महापम्हा। पम्हागाव  
ती। शखा। नलिना। कुमुदा। नलिनावती। बे वप्पा विजय। बे सुवप्पा विजय। बे महावप्पा विजय। बे वप्पगावती विजय। बे व  
ग्गु। सुवग्गु। गधिला विजय। गधिलावती विजय। रोमा विजय। रोमपुरा विजय। रिष्ठ विजय। रिष्ठपुरा विजय। बे राङ्गी विजय  
बे मंजूसा विजय। बे ओपधी विजय। बे पुंरुगीणि विजय। बे सुसीमा विजय। बे कुंडला विजय। बे अपराजिता विजय। बे प्रभंकरा  
विजय। बे अकावती विजय। बे पम्हावती विजय। बे शुभा विजय। बे रतसवया विजय। बे आसपुरा विजय। बे सिंहपुरी विजय। बे

शालादीनि मेरोयत्वारिवनानि भूमीएभदताल मेहलजुयलमिदोदिरम्माइ गदणसोमणसादं पंडगपरिमडियसिहरति वचनात् मेर्वीर्हित्वेवचनानां डित्व  
मिति शिलाश्चतस्त्रो मेरौपण्डकवनमध्ये चूलिकायाः क्रमेणपूर्वादिषु अत्रगाये पडगवणमिचउरोशिलाओचउसुविदिसासुचूलाए चउजोयणूसियाओ सव्व  
ज्जुणकचणमयाओ ॥ १ ॥ पचसयायामाओ मज्जेदौहत्तण्डरुदाओ चदइसठियाओ कुमदोयरहारगोराओत्ति ॥ २ ॥ मन्दरेमेरौ चूलिकाशिखरविशे  
षः स्वरूपमस्याः मेरुस्मउवरिचूला जिणभवणविभूसियादुवोसुच्चा वारसअट्टयचउरो मूलेमज्जुवरिरुदायत्ति ॥ १ ॥ वेदिकासूत्र जवूडीपवत् धातकौखडानत

ईउ दोपम्हावईउ दोसुज्जानु दोरयणसंचयानु दोष्णसपुरानु दोसीहपुरानु दोमहापुरानु दोविजयपुरानु  
दोष्णवराजियानु दोष्णवरानु दोष्णसोयानु दोविगयसोगानु दोविजयानु दोवेजयंतीनु दोजयंतीनु दोष्णप  
राजियानु दोचक्रपुरानु दोखग्गपुरानु दोष्णवज्जानु दोष्णनज्जानु दोनइसालवणा दोणंदणवणा दोसोमण  
सवणा दोपंढगवणा दोपांहुकंवलसिलानु दोष्णतिपांहुकंवलसिलानु दोरत्तकंवलसिलानु दोष्णइरत्तकंवलसि

महापुरी । बे विजयपुरी । बे अपराजिता विजय । बे अवरया विजय । बेअशोका विजय । बे विगतशोका विजय । बे विजया । बे वैजयंती विजय । बे  
जयती विजय बे अपराजिता । बे चक्रपुरा विजय । बे खड्गपुरा विजय । बे अवंध्या विजय । बे अयोध्या ॥ एम सर्व विजय बेबे जाणवी ॥ तिहां  
बे मेरुपर्वतछै तेमाटे बे भद्रसालवन धरतीछै । बे नंदनवन मेखलानें मध्येछै । बे सोमनसवन मेखलाइं पर्वतने मध्येछै । बे पाडकवन मेरुनें शिररे  
छै । बे एक वनमां चारच्यार शिलाछै तीर्थकरना जन्माभिषेक करवानी पांडुकंबला शिलाछै । बे अतिपाडुकंबला शिलाछै । बे रत्तकवला शि



रंकालोद' समुद्रोभवतीति तद्वक्तव्यतामाह ॥ कालोदेइत्यादि ॥ कण्ठ्यम् कालोदानन्तर मनन्तरत्वादेवपुष्करद्वीपस्य पूर्वार्द्धपश्चार्द्धतदुभयप्रकरणान्याह पु  
ष्करेत्यादि त्रीण्यप्यनिदेशप्रधानान्यतिदेशलभ्यश्चार्थं सुगमएव नवर पूर्वार्द्धपरार्द्धता धातकीखण्डवदिषुकाराभ्यामवगन्तव्या भरतादीनाचायामादिसमतै  
व भावनीया इगयालीससहस्रा पंचेवसयाहवन्तिउणसीया तेवत्तरमससय मुहविक्लभोभरहवासे । ४१५७८१७३ । २१२ । पन्नष्ठिसहस्राइ चत्तारिसयाहव  
तिष्ठायाला तेरसचेवयअसा वाहिरओभरहविक्लभो ६५४४६ । १३ । २१२ । चउगुणियभरवासो [ विस्तरइत्यर्थः ] हेमवएतचउगुणतइय [ हरिवर्षमि

लान् दोमंदरा दोमंदरचूलियान् धायइखंरुस्सणं दीवस्स वेइया दोगाउयाइं उहं उच्चत्तेणं पन्नत्ता कालोद  
स्सणं समुद्रस्स वेइया दोगाउयाइं उहं उच्चत्तेणं पन्नत्ता पुस्करवरदीवरुपुरच्छिमत्तेणं मंदरस्स पन्नयस्स  
उत्तरदाहिणेणं दोवासा पन्नत्ता बज्जसमतुत्ता जाव नरहेचेव एरवएचेव जाव दोकुरान् पन्नत्तान् देवकुरा  
चेव उत्तरकुराचेव तत्थणं दो महति महालया महहुमा पन्नत्ता तंजहा कूटसामलीचेव पउमरुस्सकेचेव देवा

लाळै ॥ बे अति रत्तकबला शिलाळै ॥ बे मेरुनी चूलिकाळै ॥ धातकीखडनामा द्वीपनी वेदिका काठरूप बेगाज जंची जचपणें कही ॥ कालोद  
धि समुद्रनी वेदिका बे गाजजंची जचपणें कही ॥ पुष्करार्धद्वीपथी पूर्वदिशि मेरुपर्वतथी उत्तरदिशि बे वर्ष क्षेत्र कहिया बहुसम जाव भरतक्षेत्र  
तथा बीजो एरवत क्षेत्र ॥ तिमज यावत् धातकीखडनी परे पुष्करार्धमा पणि जाणिवा ॥ जाव बे देवकुरुळे ॥ देवकुरु तथा बीजो उत्तरकुरु ॥ तिहां  
ते देवकुरुमा बेमोटा महालयळे मोटावृक्षकहिआळें तेकहेळे कूटसामलीवृक्ष बीजोपदमवृक्ष तिहादेवतावसेळे गरुलदेवता वेणुदेव बीजो पदमदेव

त्यर्थः] हरिवासचउगुणिय महाविदेहस्रविक्रंभी ॥ एवमैरावतादीनिमतव्यानि सत्तत्तरिसयाइं चोइसहियाइं सत्तरसलक्खा होइकुरुविक्रंभी अठ्ठयभा  
गाअपरिसेसा ॥ १ । १७०७७१४ । ८ । २८ ॥ चत्तारिलक्खत्तुत्तीस सहस्सानवसयायसोलहिया [एषाकुरुजीवा] ४३६८१६ । दोण्हगिरीणायामो सखित्तो  
तधण्णकुरुण सोमणसमालवता दीहावीसभवेसयसहस्सा ॥ १ ॥ तेयालीसमहस्सा अउणावीसायदोण्हसया ॥ २०४३२१८ सोलहियसयमेग छब्बीससहस्स  
सोलसयलक्खा विज्जुप्पभोनगोगं धमायणोचेवदीहाओ ॥ १६२६११६ महाद्रुमाजबूद्धीपकमहाद्रुमतुल्या' तथा धायइवरमिदीवे जोविक्रंभीयहोइउनगाण  
सोदुगुणोनायव्वो पुक्खरत्तेनगाणतु ॥ १ ॥ वासहरावक्खारादहनइकुडावणायसीयाइं दीवेदीवेदुगुणो वित्थरओउत्सएतुक्का ॥ २ ॥ उसुयारजमगकचण चि

गरुलेचेव वेणुदेवे पउमेचेव जाव त्वहिहंपि कालं पच्चणुप्लवमाणा विहरंति पुस्करवरदीवहपच्चत्थिमरुणेणं  
मंदरस्स पल्लयस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासा पन्नत्ता तंजहा तहेवणाणत्तं कूटसामलीचेव महापउमरुस्केचेव  
देवागरुलेचेव वेणुदेवे पुंठरीएचेव पुस्करवरदीवहणेणं दोजरहाइं दोएरवयाइं जाव दोमंदरा दोमंदरचूलि  
यानं पुस्करवरस्सणं दीवस्स वेइया दोगाउयाइं उहं उच्चत्तेणं पन्नत्ता सत्तेसिं पिणं दीवसमुद्धानं वेइयानं

यावत् तिहांसूधी जाणवू कएआरानासुखदुखओगवेळे सचलेत्तेने मलीने रहेळे पुष्करवरद्वीपयीपश्चिमे मेरुपर्वतइ उत्तरदक्षिणविचेबेवर्षत्तेत्रकहिआ ते  
कहैळे तिमजाणवू पूर्वनी परे एतलो विशेष जे वृक्ष कूटसामली बीजो पदम देवता गरुलनामे वेणुदेव बीजो पुडरीक ॥ पुष्करवरद्वीपमां बे जतरत्तेत्र  
बे एरवत्तेत्र एम यावत् बे मेरुपर्वत बे मेरुपर्वतनी चूलिका ॥ पुष्करवरद्वीपमां वेदिका बेगाऊ ऊंची ऊंचपणो कही ॥ एम सचला द्वीप समुद्रनी

તપિચિત્તાયવદ્વેયદ્વા દીવેદીવેતુલા દુમેહલાજેયવેયદ્વેત્તિ ॥ ૩ ॥ પુષ્કરવરદ્વીપવેદિકાપ્રરૂપણાનતરં શ્રેષ્ઠદ્વીપસમુદ્રવેદિકાપ્રરૂપણામાહ ॥ સઙ્ગેસિપિણમિ  
લાટિ ॥ કળ્યા એતેચ દ્વીપસમુદ્રા ઇન્દ્રાણામુત્પાતપર્વતાશ્ચા ઇતીદ્રવત્તચતામાહ ॥ દ્વીપસુરેત્યાદિ અષ્ટાવલેખેતદત સ્ત્રુ સુગમ ॥ નવર પ્રસુરાદીનાદશાના  
ભવનપતિનિકાયાના મેર્વપેચયા દક્ષિણોત્તરદિગ્વયાશ્રિતત્વેન દ્વિવિધત્વાદ્વિશતિરિન્દ્રા સ્ત્રુ ચમરોદાક્ષિણાત્મો વલી ત્વીદોચ્ય દ્વલેર્વં સર્વં એવચ્ચન્તરા

દોગાડયાઈ ઉહુ ઉચ્ચત્તેણં પન્નત્તાનં દોચ્ચસુરકુમારિંદા પન્નત્તા ચમરેચેવ વલીચેવ દોનાગકુમારિંદા પન્નત્તા  
ધરણેચેવ જૂયાણંદેચેવ દોસુવસકુમારિંદા પન્નત્તા તંજહા વેણુદેવેચેવ વેણુદાલીચેવ દોવિજ્ઞુકુમારિંદા પ  
તજહા હરિચ્ચેવ હરિસ્સહેચેવ દોચ્ચગ્નિકુમારિંદા પન્નત્તા તંજહા ચ્ચગ્નિસિંહેચેવ ચ્ચગ્નિમાણવેચેવ દોદીવ  
કુમારિંદા પન્નત્તા તંજહા પુન્નેચેવ વસિઠેચેવ દોઉદાધિકુમારિંદા પન્નત્તા તંજહા જલકંતેચેવ જલપ્પજેચેવ  
દોદિસાકુમારિંદા પન્નત્તા તજહા ચ્ચમિયર્ગર્દેચેવ ચ્ચમિયવાહણેચેવ દોવાડકુમારિંદા પન્નત્તા તંજહા વેલંવે

બેદિકા ફરના કોટકાગરા બિના તે બેદિકા કહિવી બે ગાજ ઝંચી ઝંચપણે કહી ॥ એહ સઘલા દ્વીપસમુદ્ર ઉત્પાદ પર્વત ઇંદ્ર આશ્રયીલે તેમાટે  
ઇંદ્રનો અધિકાર આવ્યો તે કહેલે ॥ બે પ્રસુરકુમારના ઇંદ્રલે તેકહેલે ॥ ચમરેંદ્ર બલેંદ્ર ॥ બે નાગકુમારજાતિના ઇંદ્ર ધરણેંદ્ર અને ભૂતાનેંદ્ર ॥ બે લુપર્ણ  
કુમારજાતિના ઇંદ્ર કહિયા વેણુદેવ અને વેણુદાલી ॥ બે વિદુપ્તકુમારજાતિના ઇંદ્ર કહિયા હરિકાત હરિસહ ॥ બે અગ્નિકુમારના ઇંદ્રલે તેકહેલે અ  
ગ્નિશિશ્વ અગ્નિમાણવ ॥ બે દ્વીપકુમારના ઇંદ્ર પૂર્ણ અને વશિષ્ઠ ॥ બે ઉદાધિકુમારેંદ્ર તેકહેલે જલકાત ધીજો જલપ્રજ ॥ બે દિશિકુમારેંદ્ર અમિતગતી

ચેવ પન્નજણેચેવ દોથણિયકુમારિંદાં પન્નત્તા તંજહા ઘોસેચેવ મહાઘોસેચેવ દોપિસાયંદાં પન્નત્તા તંજહા  
 કાલેચેવ મહાકાલેચેવ દોંજૂયંદાં પન્નત્તા તંજહા સુરૂવેચેવ પઠિરૂવેચેવ દોજરિકંદાં પન્નત્તા તંજહા પુસ  
 જદ્દેચેવ માણિજદ્દેચેવ દોરસ્કસિંદાં પન્નત્તા તંજહા જીમેચેવ મહાજીમેચેવ દોકિન્નરિંદાં પન્નત્તા તંજહા  
 કિન્નરેચેવ કિંપુરિસેચેવ દોકિપુરિસિંદાં પન્નત્તા તંજહા સપ્પુરિસેચેવ મહાપુરિસેચેવ દોમહોરગિંદાં પન્નત્તા  
 તંજહા ચ્ચંદ્રકાયેચેવ મહાકાયેચેવ દોગંધર્વિંદાં પન્નત્તા તંજહા ગીયરર્દેચેવ ગીયજસેચેવ દોચ્છણપન્નિંદાં  
 પન્નત્તા તંજહા સનિહિણેચેવ સમાણેચેવ દોપણપન્નિંદાં પન્નત્તા તંજહા ધાણેચેવ વિધાણેચેવ દોહસિવાંદાં

બીજો અમિતવાહન ॥ બે વાયુકુમારનામા ભવનપતીનાં ઇંદ્ર કહિયા તે કહેલે બેલંઘ અને પ્રભંજન ॥ બે સ્તનિતકુમારેદ્ર ઘોપ મહાઘોપ ॥ સહ બીસ  
 ભવનપતિ નિકાયનાં ઇદ્ર જાણિવા દશ નિકાયના મલીને ॥ હિવે વ્યતરનિકાયના આઠઇદ્ર કહેલે ॥ બે પિશાચના ઇંદ્ર કહિયા કાલ અને મહા  
 કાલ ॥ બે ભૂતેદ્ર સુરૂપ અને બીજો પ્રતિરૂપ ॥ બે યક્ષના ઇંદ્ર પૂર્ણજદ્ર બીજો માણિજદ્ર ॥ બે રાક્ષસના ઇદ્ર મીસ બીજો મહામીસ ॥ બે કિન્નર  
 દ્ર છે તેકહેલે કિન્નર કિપુરુષ ॥ બે કિપુરુષના ઇદ્ર છે તેકહેલે સુપુરુષ અને મહાપુરુષ ॥ બે મહોરગના ઇંદ્ર કહિયા તેકહેલે ॥ અતિકાય તથા બી  
 જો મહાકાય ॥ બે ગંધર્વના ઇદ્ર છે ગીતરતી બીજો ગીતયશા ॥ વલી બીજો આઠ વ્યતરની જાતિ છે હાથી દશ જોયનદેઠી બે અણપન્ની નિકા  
 યના ઇદ્ર તે કહેલે ॥ સન્નિક સમાન ॥ બે પણપન્ની નિકાયના ઇદ્ર છે ॥ ધાતી બીજો વિધાતી ॥ બેહસિવાય નિકાયના ઇદ્ર છે ॥ હસી હસિવાસી

॥ ॥  
णामष्टनिकाया ना द्विगुणत्वात् षोडशेन्द्राः तथा ऋणपत्रिकादीनामप्यष्टानामेवं व्यतर विशेषनिकायानां द्विगुणत्वात् षोडशेति जोतिषानां त्वसंख्यातच  
न्द्रसूर्यत्वेपि जातिमानाश्रयणात् द्वावेव चन्द्र सूर्याख्या विद्रावुक्तौ सौधर्मादिकल्पानान्तु दशेन्द्रा प्रत्येव सर्वेपि चतुर्धष्टिरिति देवाधिकारान्तनिवासभूतविमा

पन्नत्ता तंजहा इसिच्चेव इसिवालेचेव दोन्नूयवाइंदा पन्नत्ता तंजहा ईसरेचेव महेशरेचेव दोकंदिंदा प०  
तजहा सुवत्येचेव विसालेचेव दोमहाकंदिंदा पन्नत्ता तंजहा हासेचेव हासरईचेव दोकुंजफिंदा पन्नत्ता  
तजहा सेएचेव महासेएचेव दोपयगिंदा पन्नत्ता तजहा पयएचेव पयगवईचेव जोइसियाणं देवाणं दो  
इदा पन्नत्ता तंजहा चंदेचेव सूरेचेव सोहम्मीसाणेषुणं कप्पेसु दोइदा पन्नत्ता तंजहा सक्कोचेव ईसाणेचेव  
एवं सणकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु दोइंदा पन्नत्ता तंजहा सणकुमारेचेव माहिंदेचेव बंजलोयलंतगेदोइंदा

बे भूतवाई निकायना इंद्रकहिया ते कहेछे । ईश्वर बीजो महेश्वर ॥ बे कदी निकायना इद्र ते कहेछे । सुवच्छ बीजो विशाल ॥ बे महाकंदी नि  
कायना इद्र कहिया ते कहेछे । हास तथा बीजो हासरती ॥ जेकुमरु निकायना इद्र कहिया ॥ श्वेत महाश्वेत ॥ बे पतगेंद्र कहिया पतग प  
तगपती ॥ एह सोलह व्यतरना इद्र कहिया सर्वमिली वप्तीस थया ॥ जोतिषी देवताना बे इद्र कहिया ते कहेछे चद्रमा बीजो सूर्य ॥ सौधर्म  
प्रथम देवलोक बीजो ईशान देवलोक तिहां बे इंद्र ते कहेछे सक्केद ईशानेद्र ॥ इमज बे देवलोक सनत्कुमार माहेद्रे बे इद्र कहिया सनत्कुमारेद्र  
तथा बीजो माहेद्र ॥ बिना थोलमाटै बे देवलोक एकठा कहिया ॥ वृम्हदेवलोक पाचमुं लांतक छठु तिहा बे इद्र कहिया वृम्हेद्र बीजो लातकेंद्र

नवक्तव्यतामाह ॥ महासुकुल्यादि ॥ कथां नवरं हारिद्राणिपीतानि क्रमशाय सौधर्मादिविमानवर्णविषयो यथा सौधर्मेशानयो. पञ्चवर्णानि ततो द्वयोरक्ष  
णानि पुनर्द्वयोरक्षणीलानि ततोद्वयोः शुक्रसहस्रारामिधानयो. पीतशुक्लानि ततः शुक्लान्येवेत्याह ॥ सोहम्नेपचवन्ना एकगहाणीउजासहस्रारो दोदोतु  
क्ताकप्पा तेणपरंपुडरीयाइति ॥ देवाधिकारादेव विस्थानकानुपातिनौ तदवगाहनामाह ॥ गेविज्जगाणमित्यादि ॥ पूर्ववत् व्याख्येयमिति ॥ विस्थानकस्य

पन्नत्ता तंजहा वंनेचेव लंतएचेव महासुकुसहस्रारेसुणं कप्पेसु दोइदा पन्नत्ता तंजहा महासुकुचेव सह  
स्सारेचेव णायपाणयारणञ्चुतेसुणं कप्पेसु दोइदा पन्नत्ता तजहा पाणएचेव ण्णुएचेव महासुकुसहस्सा  
रेसुणं कप्पेसु विमाणंदुवस्सा पन्नत्ता तंजहा हालिदाचेव सुक्किलाचेव गेविज्जगाणं देवाणं दोरयणीनु

महाशुक्र सातमुं सहस्रार आठमुं देवलोक तेहमां वे इंद्र कहिया ते कहेछे महाशुक्रेद बीजो सहस्त्रारेद्र आनत नवमुं प्राणत दशमुं आरण इग्या  
रमुं अच्युत बारमुं एह च्यारदेवलोकमली वे इंद्र कहिया तेकहेछे । प्राणतेद्र नवमा दशमानो इंद्र अच्युतेद्र इग्यारमा बारमांनो इद्र ॥ देवतानो  
अधिकार आव्यामाटै विमाननो अधिकार कहेछे ॥ महाशुक्र सातमुं सहस्रार आठमुं देवलोक एह वे देवलोकने विषे विमान वे वर्णना कहिया  
पीलावर्णना तथा उजला स्वेतवर्णना ॥ इहा क्रम एहवोछे । सौधर्मईशान देवलोकै पाच वर्णना विमान सनत्कुमार माहेद्र देवलोकै रातानी  
ला वूम्ह तथा लातकै काला नीला नवगवैयकना विमान तथा पाच अनुत्तर विमान एक उज्वलवर्णछे ॥ नवगवैयकना देवतानी बेहायनी का  
या ऊचपणथी कही ॥ इति बीजाठाणानो त्रीजीउदेशो पूरोथयो ॥ ३ ॥ हिवे काल ते अजीव पणि जीवआअयीछे अजीव जेपुदगल

ततोयोद्देशः समाप्तः ॥ २ ॥ उक्तस्तृतीयोद्देशकः साग्नतं चतुर्थमारभ्यते प्रत्येक जीवाजीववत्तत्त्वताप्रतिबद्धस्य पूर्वसहायं सम्बन्धः पूर्वस्मिन्  
 हि पुद्गलजीवधर्मा उक्ता इत्तत् सर्वजीवाजीवात्मकमितिवाच्य मनेन सम्बन्धेनायातस्योद्देशकस्येमानि पञ्चविंशतिरादिसूत्राणि ॥ समयेत्यादि ॥ एपांचान  
 न्तरसूत्रेणायसम्बन्धः पूर्वज जीवविशेषाणां सुखत्वलक्षणधर्मोभिहितः इत्तत् धर्माधिकारादेव समयादिस्थितिलक्षणधर्मो जीवाजीव सम्बन्धी जीवाजीवतयै  
 व धर्मधर्मिणीरभेदेनोच्यतइति ॥ तत्र सर्वेषां कालप्रमाणानामाद्यः परमसूक्ष्मो ऽभेदो निरवयव उत्पलपञ्चतय्यतिभेदाद्युदाहरणो पलजितः समय स्तस्यचा  
 तीतादि विवक्षया बहुत्वा बहुवचनमित्याह ॥ समयाद्वाद्यादि ॥ इति शब्दउपदर्शनेवा शब्दोविकलो तथा ऽसंख्यातसमयसमुदयात्मिका प्रावलिका क्षुब्ध  
 कभवगहणकालस्य पट्पञ्चाशदुत्तरदिशततमभागभूता इति तत्रसमया इति वा प्रावलिका इति वा यत्कालवत्सु तद्विगानेन जीवाइतिच जीवपर्यायत्वात्

उहं उच्चतेणं पन्तत्ता ॥ तइथोउद्देशो ॥ ३ ॥ समयाइवा प्रावलियाइवा जीवाइवा अजीवा

तेहने स्थितिजावे आश्रयील्ले समयथी माझी पुद्गल तथा जीव सागरोपमताई एकस्थानके एकजावे रह्ये तेकालजीव । अजीव बेने आश्रिताल्ले ते  
 मांटे बेठाणामा एह कालमाननो अधिकार कहियो ॥ सर्वथी नाहो काल तेह समय कहिये । समयथी सोटी कालमान ते प्रावलिका काल अ  
 संख्यातसमयनो । एह काल जीवाश्रितमाटे जीव कहिये अजीव पुद्गलाश्रितमाटे अजीवपणि होय । आणापाणू ते सासोस्वाशनो काल । सा  
 सोस्वास एकथी प्राण प्राण सातै एक थोव थाय । एहने जीवाश्रितपणा मांटे जीवकालज अजीव तेमाटे अजीव तेमाटे विजभेद कहिया  
 क्षण संख्यातप्राणरूप । लव सातथोवथी थाय । एहने समज जीवकहिये । अजीवपणि कहिये । सम सुहूर्तवेगझीनो तीनहजार सातसे तिहो

पर्यायपर्यायिणीश्च कथंचिदभेदात् तथा अजीवानां पुद्गलादीनां पर्यायत्वाद् जीवा इति चकारौसमुच्चयार्थो दीर्घताच प्राकृतत्वात् प्रोच्यते अभिधीयत इति न जीवादिभ्यतिरेकिणः समयादयः तथाहि जीवाजीवानां सादिसपर्यवसानादिभेदा या स्थिति स्तद्भेदाः समयादयः साच तद्वर्मी धर्मश्च धर्मिणो नात्यत भेदवा नत्यन्तभेदेहि विप्रकृष्टधर्ममात्रोपलब्धौ प्रतिनियतधर्मधर्मि विषयएव सशयोनस्या तदग्न्येभ्योपि तस्यभेदविशेषात् दृश्यतेच यदा कश्चिद्विरिततरुत रुण शाखाविशरविवरान्तरतः किमपिशुक्लपश्यति तदा किमियपताका किवा वलाके त्येव प्रतिनियतधर्मिविषयसंशय इति अभेदेहि सर्वथा सशयानु त्यत्तिरेव गुणग्रहणतएव तस्यापि गृहीतत्वादिति द्रवत्वभेदनया श्रयणा जीवा इति वेत्याद्युक्तं द्रव्यच समयावलिकालक्षणार्थद्वयस्याजीवादि द्वयात्मकतया भ णना द्विस्थानकावतारो दृश्य एव मुत्तरसूत्राण्यपि नेयानि विशेषन्तु वक्ष्यामइति ॥ आणापाणू इत्यादि ॥ आनप्राणावित्युच्छासनिःश्वासकालः सख्याता वलिकाप्रमाणः आहच हृदस्त्रयवगल्लस्त्र निरुवकिद्वस्त्रजंतुणो एगेउस्त्रासनिस्त्रासे एसपाणुत्तिवुच्चई ॥ १ ॥ तथा स्तोकाः सप्तोच्छासनिःश्वासप्रमाणाः क्षणाः सख्यातप्राणलक्षणाः सप्तस्तोकप्रमाणा क्षवा एवमिति यथाप्राक्तनेसूत्रत्रये जीवा इति यद्वा अजीवा इतिच प्रोच्यंते इत्यधीत मेवं सर्वेषूत्तरसूत्रेष्वि त्यर्थः मुहूर्त्तां सप्तसप्ततिलवप्रमाणा उक्तञ्च सत्तपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाणिसेलवे लवाणंसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेवियाहिए ॥ १ ॥ तिन्त्रिसहस्त्रासत्तय

इवा पवुच्चइ आणापाणूइवा थोवाइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ खणाइवा लवाइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ एवंमुज्जताइवा अहोरत्ताइवा परकाइवा मासाइवा उऊइवा अयणाइवा संवच्छरा

तरसासोस्वासनी वेधनी थाय । त्रीसमुहूर्त्तनो एकअहोरात्रि थाय । पनर अहोरात्रिनो एकपक्ष थाय । वेपक्षनो एकमास थाय । वेमासनो



सयाइतेउत्तरिचउस्सासा एसमुहुत्तोभणिओ सवेहिंअणंतनाणीहिति ॥ २ ॥ अहोरात्रा स्विशन्मुहत्तप्रमाणाः पक्षाः पञ्चदशाहोरात्रप्रमाणाः मासा द्विपक्षा ऋतवोद्विमासमाना वसन्ताद्या अयनानि ऋतुत्रयमानानि सम्बत्सरा अयनद्वयमाना युगानि पञ्चसम्बत्सराणि वर्षशतादीनिप्रतीतानि पूर्वाङ्गानि चतुरशीतिवर्षलक्षप्रमाणानि ॥ पूर्वाणिपूर्वाङ्गान्येव चतुरशीतिवर्षलक्षगुणितानि इदञ्चैषामान पुञ्चस्सउपरिमाण सयस्सिखलुहोतिकोडि लक्खाओ छपन्नचसहस्सा बोधव्वावासकोडीण ७०५६०००००००००० पूर्वाणि चतुरशीतिलक्षगुणितानि त्रुटिताङ्गानिभवन्ति एवपूर्वस्यपूर्वस्य चतुरशीति

इवा जुगाइवा वाससयाइवा वाससहस्साइवा वाससयसहस्साइवा वासकोट्टीइवा पुव्वंगाइवा पुव्वाइवा तुफियंगाइवा तुफियाइवा अण्णंगाइवा अण्णयाइवा अवंगाइवा अववाइवा लल्लुअंगाइवा लल्लयाइ

एकरितुथाय । त्रिणारितुथी एकअयनथाय दक्षिणायन तथा उत्तरायण । वे अयनथी एकसंबत्सर बरस थाय । पांचबरसनो एकयुगथाय । एम सौबरस तेप्रसिद्धे बीसयुग । एह हजारबरस दशसौना हजारथाय । एम लाखबरस सौहजारथी एकलाखथाय । एम कोटिबरस सौ लाखथी एककोटिथाय । चौरासीलाखबरसनो एकपूर्वागथाय । पूर्वाग चौरासीलाख गुणांकीजै ते सत्तरलाखकोडिबरस छप्पनहजारकोडिबरसथी एकपूरबथाय । चौरासीलाखपूरबथी एकत्रुटितागथाय । ते चौरासीलाखगुणाथी एकत्रुटितथाय । त्रुटितागथी अडकागथाय । अड कागथी अडडथाय । अडडथी अपपागथाय । अपपागथी अपपातथाय । अपपातथी हुहुतागथाय । हुहुतागथी हुहुतथाय । हुहुतथी उत्पला गथाय । उत्पलागथी उत्पलथाय । तेहथी पदमागथाय । तेहथी पदमथाय । पदमथी नलिनाग कालमान थाय । नलिनागथी नलिन

लक्ष्मणेनोत्तरमुत्तरं सख्यान्भवति योवच्छीर्षप्रहेलिकेति तस्या चतुर्नवत्यधिकमङ्गस्थानशतभवति अन्नकरणगाथा इच्छियठाणेणगुण पणसुन्नचउरसी  
इगुणियच काज्जणतद्वारे पुव्वंगाङ्गमुणसंख ॥ १ ॥ शीर्षप्रहेलिकान्तः साव्यवहारिकः सख्यातः कालः तेनच प्रथमपृथिवीनारकाणा भवनपतिव्यन्तरा  
णा भरतऐरवतेषु सुखमदुःखमायाः पश्चिमेभागे नरतिरयांचायुर्मीयतइति किंच शीर्षप्रहेलिकायाः परतोप्यस्तिसख्यातः कालः सचानतिशायिनां नव्यव

वा उप्पलंगाइवा उप्पलाइवा पउमंगाइवा पउमाइवा णलिणंगाइवा णलिणाइवा अत्यणिउरंगाइवा अ  
त्यणिउराइवा अउअंगाइवा अउअाइवा णउअंगाइवा णउअाइवा पउअंगाइवा पउयाइवा चूलिअंगा  
इवा चूलियाइवा सीसप्पहेलियंगाइवा सीसप्पहेलियाइवा पलिउवमाइवा सागरोवमाइवा उरुसप्पिणी

थाय । नलिनथी अन्ननिकुरांगथाय । अन्ननिकुरांग चौरासीलाखगुणांकरें तिवारे अन्ननिकुरथाय । अन्ननिकुर चौरासीलाखगुणांकरे अयुतांग  
थाय । अयुतांग चौरासीलाखगुणाकरे तिवारे अयुतथाय । अयुत चौरासीलाखगुणाकरे तिवारे नियुतांगथाय । नियुतांगथी नियुतथाय ।  
नियुत चौरासीलाखगुणाकरे तिवारें प्रयुतांगथाय । प्रयुतांग चौरासीलाखगुणांकरे तिवारे प्रयुतथाय । प्रयुत चौरासीलाखगुणांकरे तिवारे चू  
लिकागथाय । चूलिकागथी चूलिकाथाय । चूलिकाथी शीर्षप्रहेलिकान थाय । शीर्षप्रहेलिकागथी शीर्षप्रहेलिका थाय । एम इहां एकसो चौ  
राणु अकलगे संख्याळें । एह व्यावहारिक संख्यातो कालनो मान शीर्षप्रहेलिकालगे छें एह उपरातपणि संख्यातोकालळें ते अनतिशायी पुरुषोके  
व्यवहारमा नथी आतो तेमाटे उपमितळें । तेकहेंछें । प्यारगाऊना कूआने माने पल्योगम थाय असंख्यातकोटिवरस थाय । दशकोडाकोडि प

हारविषय इति कालीपथप्रक्षिप्तो ऽतएवशीर्षमहेलिकायाः परतः पत्न्योपमाद्युपन्यासः तत्रपत्न्येनोपमायेषु तानि पत्न्योपमानि प्रसख्यातवर्षकोटीकोटीप्र  
माणानि वक्ष्यमाणलक्षणानि सागरेणोपमा येषु तानि सागरोपमानि पत्न्योपमकोटीकोटीदशकमानानीति दशसागरोपमकोटीकोट्य उत्सर्पिणी  
एवमेवावसर्पिणीति कालविशेषवत् ग्रामादिवस्तुविशेषाप्रपि जीवाजीवाएवेति द्विपदैः सप्तचत्वारिंशतासूत्रैराह ॥ गामेत्यादि ॥ इहच प्रत्येक जीवाएवे  
त्यादि आलापोध्यतश्चो गामादीनांच जोवाजीवताप्रतीतैव तत्रकरादिगम्याः ग्रामा नैतेषुकरोस्तीति नकराणि निगमा वणिग्निवासा राजधान्यो या  
सुराजानोभिषिच्यन्ते खेटानि धूलीप्राकारोपेतानि कर्बटानि कुनगराणि मडवानि सर्वतोर्ध्वयोजनात्परतोवस्थितिग्रामाणि द्रोणमुखानि येषां जलस्थल

इवा नृसर्पिणीइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्छइ ॥ गामाइवा णगराइवा निगमाइवा रायहाणीइवा  
खेळाइवा कव्वाइवा मळवाइवा दोणमुहाइवा पहणाइवा आगराइवा आसमाइवा संवाहाइवा संनि

पत्न्योपमथी एक सागरोपम थाय । दशकोडाकोडि सागरोपमथी एक उत्सर्पिणी काल थाय । एमज दशकोडाकोडि सागरोपमथी एक अवस  
र्पिणी थाय । एसर्व कालमान बेज वस्तुनें आश्रितलै जीवनें तथा अजीवने पुदगलादिकने एम जाणिवो । कालनीपरे ग्रामादिकपणि जीव अजीव  
बेबोलैजलै ॥ राजादिकनी जिहां कर लागे ते गाव । जिहा कर नलागे ते नगर । जिहा घणावाणिया वसै ते निगम । जिहां राजानो राज्याजि  
पेकथाय ते राजधानी । जिहां धूलनोकोट तेखेडा । कुनगर ते कर्बट कहिये । च्यारेदिशि जेहने बेगला गामहोय ते मटंव कहिये । जिहा जल  
थलनो मारग होय तेद्रोणमुख । जिहा जली रतनवस्तु उपजै तेपाटण । जिहा लोहादिकनी खानिहोय तेआकर, जिहां तीर्थस्नान थाय ते आ

पथा वुभावपिस्तः पत्तनानि येषु जलस्थलपथयोरन्यतरेण पर्याहारप्रवेश आकराः लोहाद्युत्पत्तिभूमयः आश्रमा स्तौर्यस्थानानि सम्वाहाः समभूमौ कृ  
षिं कृत्वा येषु दुर्गभूमिभूतेषु धान्यानि कृषीबला. सवहन्ति रक्षार्थमिति ६ सन्निवेशाः सार्थकटकादेः घोषाः गोष्ठानि ७ आरामाः विविधवृक्षलतो  
पशोभिताः कदल्यादिप्रच्छन्नगृहेषु स्त्रीसहितानां पुसां रमणस्थानभूता इति उद्यानानि पत्रपुष्पफलच्छायोपशोभितानि बहुजनस्य विविधवेपस्यो नत  
मानस्य भोजनार्थं यान गमनयेष्विति ८ वनानीत्येकजातीयवृक्षाणि वनखण्डा अनेकजातीयोत्तमवृक्षाः ९ वापी चतुरस्रा पुष्करिणी वृत्ता पुष्करवती  
चेति १० सरासि जलाशयविशेषाः सरः पत्तयः सरसापडतयः ११ ॥ अगडति ॥ अवटाः १२ तडागादीनि प्रतीतानि १३ पृथिवीरत्नप्रभादिका उदधिस्तद

वेसाइवा घोसाइवा आरामाइवा उज्जाणाइवा वणाइवा वणखंठाइवा वावीइवा पुष्करणीइवा सराइवा  
सरपतियाइवा अगठाइवा तडागाइवा दहाइवा नदीइवा पुढवीइवा उदहीइवा वातखंधाइवा उवासं

श्रम ॥ संवाध जिहां समीभूमि वावी कठिनभूमि राखै खाणिप्रमुखमां ॥ सन्निवेश जिहां साथ उतरे ॥ नदीना तटने पासे वसै ते घोपगाम ॥ जि  
हा घणीजातिना वृक्षवेलि होय केलिना घरहोय जिहा स्त्री पुरुष क्रीडाकरे ते आराम ॥ जिहां पत्रपुष्पफलफूल छायाये सोजित घणालोक उजा  
णीकरे ते उद्यान ॥ वन जिहां एकजातिना वृक्षहोय ॥ जिहा घणीजातिना वृक्षहोय ते वनखंड ॥ चौसूणी होय तैव वापी ॥ वाटली तथा पु  
ष्कर कमल जिहांहोय ते पुष्करिणी ॥ सरोवर जलाशय विशेष ॥ सरोवरनी पत्ति वे चारश्रेणि होय ॥ कूआ ते अगड कहिये ॥ तलाव क  
हिये ॥ द्रह जिहां ऊठोपाणी होय ॥ नदीगंगाप्रमुख ॥ पृथिवी रत्नप्रभादिक ॥ समुद्र उदधि घनोदधि ॥ वायुनाखंध घनवात तनवात प्रमुख ॥

धोघनोदधिः १४ वातस्तम्भाः घनवाततनुवाताः इतरेषा अवकाशान्तराणि वातस्तम्भानामवस्तादाकाशानि जीवताचेपा सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिजीवत्या  
 सत्वात् १५ वलयानि पृथिवीनां वेष्टनानि घनोदधिघनवाततनुवातलक्षणानोति विग्रहा लोकनाडोचक्राणि जीवताचेपापूर्ववत् १६ द्वीपाः समुद्राद्यप्र  
 तीताः १७ वेला समुद्रजलवृद्धिः वेदिकाः प्रतीताः १८ दाराणि विजयादौनि तोरणानि तेष्वेवेति १९ नैरयिका क्षिप्तसत्वविशेषाः तेषांच जीवता कर्म  
 पुद्गलाद्यपेक्षया तदुत्पत्तिभूमयो नैरयिकावासाः तेषांच जीवतापृथिवीकायिकाद्यपेक्षया इति एवचतुर्विंशतिदण्डकोभिर्धेयः ४३ प्रतएवाह यावदित्यादि  
 कल्पादेवलोका स्तद्देशाः कल्पविमानावासाः ४४ वर्षाणि भरतादिवेद्याणि वर्षधरपर्वता हिमवदादयः ४५ कूटानि हैमवतकूटानि कूटागाराणि तेष्वेव

तराइवा वलयाइवा विगाहाइवा दीवाइवा समुद्राइवा वेलाइवा वेइयाइवा दाराइवा तोरणाइवा  
 णेरइयाइवा णेरइयावासाइवा जाव वेमाणियावासाइवा कप्पाइवा कप्पविमाणावासाइवा वासाइवा

अवकाशांतर जिहा सूक्ष्म पृथ्वीना जीवज्ञस्याखे आकाशप्रदेश ॥ वलय जे पृथिवीना घनोदधि घनवातना वधइते ॥ विग्रह ते लोकनाडी नस  
 नाडी जीव ते जिहा रहियाखे ॥ द्वीप ते जबू द्वीपादि समुद्र लवण समुद्रादिक ॥ वेला समुद्रना जलनी ॥ वेदिका कोटकागरा रहित द्वीपनी ॥  
 द्वार विजयादिक जबू द्वीप प्रमुखना ॥ तोरण जेदरवा जाने ऊपर लगाक्रिये ॥ नारकी नरकमा रहेनार ॥ नारकीना रहवाना ठाम ते नरका  
 वासा ॥ एम यावत् चौवीसदण्डके वैमानिक देवतालगे ॥ जीव अने अजीव ते कर्मपुद्गलसहितखे ॥ देवताना उपजवाना विमान तेपृथिवी  
 कायनी अपेक्षाये जीव अजीव सचित्तपणामाटे ॥ कल्पते देवलोक ॥ तेहना अश ते कल्पविमानावासा ते जीव अजीव पणामाटे येभेद ॥ वर्षते ज

देवभवनानि ४६ विजया अक्रवर्त्तिविजेतव्यानि कच्छादीनि क्षेत्रखंडानि राजधान्यः क्षेमादिकाः जीवेत्यादीहोक्त सर्वत्र सम्बन्धनीयमिति ४७ येषिपुत्र  
लधर्मा स्तेपि तथेवेत्याह ॥ छायेत्यादि ॥ सूत्रपञ्चक गतार्थं नवर छाया वृक्षादीना मातपत्रादित्यस्य ॥ दोसिणातिवर्त्ति ॥ ज्योत्स्ना अन्यकाराणि तमां  
सि अवमानानि क्षेत्रादीनि उन्मानानि तुलाकर्षादीनि अतियानगृहाणि नगरादिप्रवेशे यानिगृहाणिप्रतीतानि अवलिवासणिष्पवायाय रूढितो वसेया  
इति किमेतत्सर्वमित्याह जीवाइतिच जीवव्याप्तत्वात् तदाश्रितत्वाद्वा अजीवाइतिच पुद्गलाद्यजीवरूपत्वात्तदाश्रितत्वादेति प्रोच्यतेजिनैः प्ररूप्यते इति इ

वासहरपत्र्याइवा कूठाइवा कूठागाराइवा विजयाइवा रायहाणीइवा जीवाइया अजीवाइवा पवुच्छइ  
छायाइवा आतवाइवा दोसिणाइवा अंधकाराइवा उन्माणाइवा पमाणाइवा उन्माणाइवा अतिताणगि  
हाइवा उज्जाणगिहाइवा अवलिंवाइवा सणिष्पवायाइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्छइ दोरासी प०

रतादिक्षेत्र ॥ वर्षधर हिमवंतादिपर्वत ॥ हिमवतादिकना कूट तेशिखर ॥ कूटागार ते जिहां देवतानाघरहैं ॥ विजयते कच्छमहाकच्छादिक वत्तीस  
क्षेत्रनाखंड महाविदेहमा ॥ राजधानी क्षेमादिकनगरी जिहा राजारहैं ॥ एम सघला बोलमा जीव अनें अजीव एह वेभेद कहिवा पुदगलाश्रितप  
णामांटे ॥ एहपुदगल स्वप्नावहैं तेषणि इमज वेभेदैं । छाया वृक्षादिकनी । आतप सूर्यादिकने । छाया ते अजीव वृक्षनी तेमाटें जीव अजीव  
एह वेभेद कहिवा । ज्योत्स्ना कांति अथवा तेज । अंधकार तमस । अवमान तेक्षेत्रादि । प्रमाण ते हाथ गज प्रमुख । उन्मान ते तुलादि  
कर्ष मासो वालादि । अतितानगृह तेप्रवेशना नगर । उदमानगृह तेबाडीना घर । अवलिंब देशविशेष । सणिप्रपात पणि एमज रूढिथी जा

हृच जीवाश्चेत्यादि सूत्रपत्रकोपि प्रलोकमध्येतव्यमिति ७ अथ समयादिवस्तुजीवाजीवरूपमेवकस्मादभिधीयते उच्यते तद्विलक्षणराश्यन्तराभावादतए  
वाह दोरासीत्यादि काण जीवराशिश्च द्विधा यत्तुमुक्तभेदात् तावद्धाना निरूपणायाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ प्रेमरागो मायालोभकषायलक्षणो द्वेषस्तु क्रोधमान  
कषायलक्षणो यदाह मायालोभकषाय शैत्येवद्रागसंज्ञितं ह्यनं । क्रोधोमानश्च पुनर्द्वेषइतिसमासनिर्दिष्ट इति प्रेम्णः प्रेमलक्षणचित्तविकारसम्पादकमोह  
नीयकर्मपुद्गलराशेर्वोधनं जीवप्रदेशेषु योगप्रत्ययतः प्रकृतिस्वरूपतया प्रदेशरूपतयाच सम्बन्धन तथा कषायप्रत्ययतः स्थित्यनुभागविशेषापादानंच प्रेम  
बन्ध एवं द्वेषमोहनीयसम्बन्धो द्वेषबन्धइति उक्तं हि जीवापयडिपएस ठिइअणुभागकसायप्रोक्तुणइति प्रेमद्वेषलक्षणाभ्यां कर्मभ्या मुदयगताभ्यां जीवाना  
मशभकर्मबन्धो भवतोत्याह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ अथवा पूर्वसूत्र मन्वथाव्याख्याय सम्बन्धान्तर मस्य क्रियते सामान्येन बधोद्विधा प्रेमतो द्वेषत येति  
सचा निवृत्ति सूक्ष्मसम्परायांता नगुणस्थानिनः प्रतीत्य द्रष्टव्यो यस्तूपशान्तमोहचीणमोहसयोगिनां सयोगप्रत्ययएव सतु बन्धत्वेन नयिवचितो बधस्यापि

तंजहा जीवरासीचेव अजीवरासीचेव दुविहेवंधे पन्नत्ते तंजहा पेज्जवंधेचेव दोसवंधेचेव जीवाणं  
दोहिंठाणेहिं पावकम्मवंधई तंजहा रागेणचेव दोसेणचेव जीवाणंदोहिं ठाणेहिं पावकम्मउदीरेइ तं०

गिावूं । एसघला बोल जीवाश्रितपणां मांटे जीव अने पुदगलमाटे अजीव कहिवा । ये राशिकही तेकहैलैं । एक जीवराशि बीजी अजीवराशि  
बेप्रकारे बंधकहियो तेकहैलैं । एक प्रेम ते रागनो बंध मायालोभरूप । द्वेषबध क्रोधमानरूप । जीवने बेयानकैकरी पापकर्मनो बधलैं पापव  
धायलैं तेकहैलैं । रागेकरी पापबधायलैं द्वेषेकरी पापबधायलैं । जीव योगानकैकरी पापकर्म उदीरैलैं अवसर प्राव्याविना उदये गारे ते उदी

तस्य शेषकर्मबंधविलक्षणतया अवन्धकल्पत्वात् यस्यहि कर्मणोसौतदल्पस्थितिकादिविशेषणं उक्तंच अप्यंवायरमउयं बहुचरुक्खंचमुक्किलंचेव मदंसहव्वयं  
 तिय सायावहुलंचककम्मंति । अल्पस्थित्या वादरपरिणामतः मृदुनुभावतो बहुप्रदेशैर्मन्दलेखतो वालुकावत् महाव्यय सर्वापगमात् एतदेवदर्शयन्नाह  
 ॥ जीवाणमित्यादि ॥ जीवाः सत्त्वाः ए वाक्यालङ्कारेद्वाभ्यां स्थानाभ्यां करणाभ्यां पापमशुभनिबन्धनत्वात् नतु निरनुबन्ध द्विसमयस्थितिक मत्यन्तं शुभ  
 तस्य केवलयोगप्रत्ययत्वादिति वक्षन्ति स्पृष्ट्याद्यवस्थ कुर्वन्ति रागेणचैव द्वेषेणचैव कषायैरित्यर्थः ननु मिथ्यात्वाविरतिकषाययोगा बन्धहेतव स्तत्कथं क  
 षायाएवेहोक्ता इत्युच्यते कषायाणां पापकर्मबंध प्रति प्राधान्याख्यापनार्थं प्राधान्य स्थित्यनुभागप्रकर्षकारणत्वात्तेषामिति अथवा अत्यन्तमनर्थकारित्वात्  
 उक्तच कोदुक्खपावेज्जा कस्सवसोक्खेहिंविन्हिओहोज्जा कोवनलहेज्जमुक्ख रागदोसाज्जनहोज्जति अथवा वधहेतुदेशग्राहकमेवेद सूत्रं द्विस्थानकानु  
 रोधादिति नदोषः उक्तस्थानद्वयवद्वपापकर्मणश्च यथो दीरणवेदननिर्जराः कुर्वन्ति देहिन् स्तथा सूत्रत्रयेणाह ॥ जीवेत्यादि ॥ गतार्थं नवर मुदीरयति अ  
 प्राप्तावसर सदुदये प्रवेशयन्ति अभ्युपगमेनाङ्गीकरणेन निर्वृत्ता तत्रवा भवाभ्युपगमिकी तथा शिरोलोचतपञ्चरणादिकया वेदनयापीडनया उपक्रमे  
 ण कर्मोदीरणकारणेन निर्वृत्ता तत्रभवा वा औपक्रमिकी तथा ज्वरातिसारादिजन्यया एवमिति उक्तप्रकारतएववेदयन्ति विपाकतोनुभवत्युदीरितंस

अप्पोवगमियाएचेव वेयणाएउवक्कमियाएचेव वेयणाएएवंवेदंति एवंणिज्जरेति अप्पोवगमियाएचेव वेय

रणा तेकहैछै । स्ववसे जाणीने शिरोलोचन तप चारित्रादिकै वेदना पीडा जोगवे । बीजी उपक्रमिकी उपक्रमथी उपजीवेदना ते ताप अती  
 सारादि रोगथी उपजी वेदना एमज वेप्रकारे वेदै जोगवै उदय आव्युं कर्म । एम वेप्रकारे निर्जरे छै क्षयकरेछै । जे जाणीने शिरोलोचनादि क्रि



दिति निर्जरयन्ति प्रदेशेभ्यः साटयन्ति इति निर्जरणेच कर्मणो देशतः सवथावा भवोन्तरे सिद्धीवा गच्छतः शरीरान्निर्याणंभवतीति सूत्रपञ्चकेन तदाह ॥ दोहीत्यादि ॥ कण्ठ्यं नवरं हाभ्यांप्रकाराभ्यां ॥ देसेणवित्ति ॥ देशेनापि कतिपयप्रदेशलक्षणेन केषांचिप्रदेशाना मिलिकागत्योत्पादस्थानं गच्छताजी वेन शरीरादह्निः क्षितत्वात् आत्माजीवः शरीरदेह सृष्ट्वा स्निष्टा निर्याति शरीरान्मरणकालेपि निस्सरतीति ॥ सब्बेणवित्ति ॥ सर्वेण सर्वात्मना सर्वेजीव प्रदेशैः कन्दुकगत्योत्पादस्थान गच्छता शरीरादह्निः प्रदेशाना मक्षितत्वादिति अथवा देशेनापि देशतोपि अपिशब्दः सर्वेणापीत्यपेक्ष आत्मा शरीर को र्थः शरीरं देश पादादिकं सृष्ट्वा अवयवान्तरेभ्यः प्रदेशसंहारा निर्याति सच ससारौ सर्वेणापि सर्वतयाप्यपिनिर्द्देशेनापीत्यपेक्षः सर्वमपि शरीर सृष्ट्वा निर्यातीतिभावः सचसिद्धो यत्त्यतिच पायणिज्जाणानिरएसुउववज्जतीत्यादि यावत् सब्बगनिज्जाणासिद्धेसुत्ति ॥ आत्मना शरीरस्यस्पर्शनेसति स्फुरण भवतीत्यत उच्यते ॥ एवमित्यादि ॥ एवमिति दोहिंठाणेहिं इत्याद्यभिलापसंस्चनार्थः तत्रदेशेनापि कियद्गिरप्यात्मप्रदेशै रिलिकागतिकाले ॥ सब्बेण वित्ति ॥ सर्वैरपिगेन्दुकगतिकाले शरीरं ॥ फुरित्ताणंति ॥ स्फोरयित्वा संस्पन्दप्लुत्वा निर्याति अथवा शरीरकं देशतः शरीरदेशमित्यर्थः स्फोरयित्वा पा दादिनिर्याणकाले सर्वतः शरीरंस्फोरयित्वा सर्वाङ्गनिर्याणायसरइति स्फुरणाच्च सात्मकत्वं स्फुटं भवतीत्याह ॥ एवमित्यादि ॥ एवमितितेष्वेव देशेनात्म

णाएउवक्कमियाएचेव वेयणाएदोहिंठाणेहिं ञ्णाया सरीरंफुसित्ताणं णिज्जाति देसेणविञ्णायासरीरंफुसि

यादिके वेदना वेदै । तेकहैछै । उपक्रमवेदनाइ ते रोगादिकन्ती वेदना । बेथानकै आत्मा जीव शरीरने फरसीने जवातरे अथवा मुक्तिये जाय छै ते देशथी तथा सर्वथी पगप्रमुख फरसी नीकलै ते देशथी सघलीकाया फरसै जीव नीकलता ते ठिकाणुं फरके जीवने शरीरने स्पर्शते थकै ते

देशेन शरीरक ॥ फुडित्ताणंति ॥ सचेतनतया स्फुरणलिङ्गतः स्फुटङ्कत्वा इलिकागतौ सर्वेणसर्वात्मना स्फुटङ्कत्वा गेदुकगताविति अथवा शरीरकदेशतः सात्मकतया स्फुटङ्कत्वा पादादिना निर्याणकाले सर्वतः सर्वाङ्गनिर्याणप्रस्तावदति अथवा स्फुटित्वा स्फोटयित्वा विशीर्णकृत्वा तत्रदेशतो ऽध्यादिविधा तेन सर्वतः सर्वविशरणेनदेवदोपादिजोववदिति शरीरक सात्मकतया स्फुटौकुर्वं स्तत्सवर्त्तनमपि कश्चिकरोतीत्याह ॥ एवमित्यादि ॥ एवमिति तथैव ॥ सवदृष्टत्ताणति ॥ सवर्त्यसकोच्य शरीरक देशेनेलिकागतौ शरीरस्थितप्रदेशैः सर्वेणसर्वात्मना गेन्दुकगतौ सर्वात्मप्रदेशाना शरीरस्थितत्वा निर्या तीति अथवा शरीरकं शरीरिण सुपचारा दण्डयोगादण्डपुरुषवत् तत्रदेशतः सवर्त्तन ससारिणोन्मियमाणस्य पादादिगतजीवप्रदेशसहारा त्वर्वत खु निर्वाणगंतुरिति अथवा शरीरक देशतः सवर्त्य हस्तादिसङ्कोचनेन सर्वतः सर्वशरीरसङ्कोचनेन पिपीलिकादिवदिति आत्मनश्च सवर्त्तनकुर्वन् शरीर स्यनिवर्त्तन करोतीत्याह ॥ एवनिवदृष्टत्ताणंति ॥ तथैव निवर्त्य जीवप्रदेशेभ्यः शरीरक पृथक्कृत्वेत्यर्थः तत्रदेशेनेलिकागतौ सर्वेण गेदुकगता वथवा प्र देशतः शरीरकं निवर्त्यात्मनः पादादिनिर्याणवत् सर्वतः सर्वाङ्गनिर्याणवानिति अथवा पञ्चविधशरीरसमुदयापेक्षया देशतः शरीरमौदारिकादि निवर्त्य तैजसकामंशेत्वादायैव तथा सर्वेण सर्वशरीरसमुदायं निवर्त्य निर्याति सिद्धातीत्यर्थः अनन्तरं सर्वनिर्याणमुक्तं तच्च परम्परयाधर्मश्रवणलाभादिषु

ज्ञाणं णिज्जाति सङ्खेणविञ्चायासरीरं फुसित्ताणं णिज्जाति एवंफुरित्ता एवंफुडित्ता एवंसंवहित्ता निवृद्धित्ता

सर्वथी । एम फरसै शरीर देशथी सर्वथी । एम शरीरनें फोडी जीव नीकली देशथी सर्वथी । एम संकोचीनें शरीरने देशथीसर्वथी ईलिकागते तथा दडानीगते । जीवप्रदेशथी शरीरअंगुलथाय ते देशथीसर्वथी । वेथानकै आत्मा केवलिज्ञापित धर्मप्रति पामै सांमलवाथी । ते कहैछै ।

तेच यथासु स्तथादर्शयन्नाह ॥ दोहीत्यादि ॥ कण्ठ्य अवरं ॥ खण्णचेवत्ति ॥ ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्यच कर्मण उदयप्राप्तस्य क्षयेण निर्जरे  
 णेन प्रनुदितस्य चोपशमेन विपाकाननुभवेन चायोपशमेनेत्युक्तं भवति यावत्करणात् केवल बोहिबुभेज्जा मुंढेभवित्ता अगाराओअणगारियपव्वएज्जा ॥  
 केवलवंभचेरवासमावसेज्जा केवलेण सजमेणं सजमेज्जा केवलेणं सवरेणं संवरेज्जा केवलमाभिणिवोहियनाणमुप्पाठेज्जा इत्यादिदृश्य ॥ यावन्मनः पर्य  
 वज्ञानमुत्पादयेदिति केवलज्ञानंतु क्षयादेवभवतीति तन्नोक्तं मिहच यद्यपि बोध्यादयः सम्यक्चारित्ररूपत्वा त्केवलेन क्षयेणोपशमेनच भवन्ति तथाप्येते  
 क्षयोपशमेनापि भवन्ति श्रवणाभिनिबोधिकादीनितु क्षयोपशमेन भवन्तीति सर्वसाधारणः क्षयोपशमउक्तः पदद्वयेनातः सएवव्याख्यात इति बोध्या  
 भिनिबोधिकं श्रुतावधिज्ञानानिच षट्षष्टिसागरोपमस्थितिकान्युत्कर्षतो भवन्ति सागरोपमाणिच पल्योपमाश्रितानि तद्धितयप्ररूपणायाह ॥ दुविहेअच्चा  
 इत्यादि ॥ उपमाओपमस्य तथा निर्वृत्तं मौपमिकं अजा काल स्तद्विषय मौपमिकमओपमिकं सुपमानमन्तरेण यत्कालप्रमाणं मनतिशयिना गृहीतु  
 नशक्यते तद्वौपमिकमितिभावः तच्चद्विधा पल्योपमचेव सागरोपमंचैव तत्र पल्यवत्पल्य स्तेनोपमा यस्मिं स्तत्पल्योपम तथा सागरेणोपमा यस्मिंस्तु

दोहिंठाणेहिं अथा केवलपिपन्तत्तंधम्मं लजेज्जसवणयाए तंजहा खण्णचेव उवसमेणचेव एवंजाव मणपज्ज  
 वनाणं उप्पाठेज्जा तंजहा खण्णचेव उवसमेणचेव दुविहे अओवमिये पन्नत्तेतंजहा पल्लिज्वमेचेव सागरो

नाणावरणी दर्शनमोहनीना क्षयथी अथवा उपज्ञमाव्यांथी अन्यथा सांजलवाथीपणिधर्मनपावे । एम यावत् मतिनाण श्रुतनाण अवधिनाण मनपर्य  
 वनाण उपजावे पां मे वेथानके तेकहेळे । नाणावरणीनां क्षयथी अथवा उपशमथी । मतिश्रुतअवधिनाणनी उत्कृष्टस्थितिं व्यासति सागरोपमनीळे

तसागरोपमं सागरवन्महापरिमाणमित्यर्थ इदं च पल्योपमसागरोपमरूप मौपमिकं सामान्यत उद्धाराद्वात्तेत्रभेदात् त्रिधा पुनरेकैकं संव्यवहारसूक्ष्मभेदा  
द्विधा तत्र सव्यवहारपल्योपमनाम यावता कालेन योजनायामविष्कंभी चत्वपल्यो मुडनानन्तरमेकादिसप्ताहोरात्रप्ररूढाणां वालाग्राणां भृतः प्रति  
समय वालाग्रीडारेसति निर्लेपोभवति सकालो व्यावहारिकपल्योपम मुच्यते तेषां च दशभिः कोटीकोटीभिः व्यावहारिकमुद्धारसागरोपम मुच्यते तेषा  
मेव वालाग्राणां दृष्टिगोचरातिसूक्ष्मद्रव्यासंख्येयभागमात्रसूक्ष्मपनकावगाहना दसख्यातगुणरूपखण्डोक्ततानां भृतः पल्योपेन कालेन निर्लेपोभवति तथै  
वोद्धारे तत्सूक्ष्ममुद्धारपल्योपम तथैव सूक्ष्ममुद्धारसागरोपम मनेन च द्वीपसमुद्राः परिसख्यायन्ते आह च उद्धारसागराण अड्डाद्विज्ञाणजेत्तियासमया दु  
गुणादुगुणपवित्यर दीवोदहिरज्जुएवइयति ॥ १ ॥ अद्धापल्योपमसागरोपमेपि सूक्ष्मवादरभेद एवमेव नवरं वर्षशते २ वालस्य वालासंख्येयखण्डस्य चो  
द्धारइति अनेन नारकादिस्थितयो मीयन्ते क्षेत्रतोपिते द्विविधे एवमेव नवरं प्रतिसमयमेकैकाकाशप्रदेशापहारे यावताकालेन वालाग्रसृष्टाएव प्रदेशा  
उध्रियन्ते सकालोव्यावहारिकइति यावता वालाग्रासंख्यातखडैः सृष्टाश्चासृष्टाश्चोध्रियन्ते सकालः सूक्ष्मइति एते च प्ररूपणामात्रविषयाएव आभ्यां च दृष्टि  
वादे सृष्टासृष्टप्रदेशविभागेन द्रव्यमानेप्रयोजनमिति श्रूयते वादरे च त्रिविधे अपि प्ररूपणामात्रविषयएवेति तदेवमिह प्रक्रमे उद्धारक्षेत्रोपमिकयो निरु  
पयोगत्वा दद्वीपमिकस्यैव चोपयोगित्वा दद्वेति विशेषण सूत्रे उपात्तमिति अतएवा द्वापल्योपमलक्षणाभिधित्वयाह सूत्रकारः ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथकित

वमेचेव सेकितं पलिनुवमे पलिनुवमे । जंजोयणविच्छिन्नं पल्लंगगाहियप्यरूढाणं । होज्जनिरन्तरणिचिइं नरि  
तेसागरोपमनो मान कहिवाने कहैछै ॥ बेप्रकारे कालनुं उपशम तेप्रमाणछै तेकहैछै । एक पल्योपमनुं मानछै बीजो सागरोपमनुं मानछै । तेस्युं

तप्योपमं यदङ्गोपमिकतया निर्दिष्टमिति प्रश्ने निर्वचनमेतदनुवादेनाह ॥ पलिविभवमिति ॥ पल्योपममेव भवतीति वाक्यशेषः ॥ जङ्गाहा ॥ किलयत्योज  
नविस्तीर्णमित्युपलक्षणत्वात्सर्वतो यत् योजनप्रमाणं पल्यधान्यस्थानविशेष एकाहएव एकाहिक स्तेन प्ररूढानां वृद्धाना मुडितेशिरसि एकेनाङ्गा याव  
त्योभवन्तीत्यर्थः एतस्यचोपलक्षणत्वा दुर्लभतः सप्ताहप्ररूढाणां बालाग्राणां कोटयोविभागाः सूक्ष्मपल्योपमापेक्षया असंख्येयखण्डानि बादरपल्योपमा  
पेक्षयातु कोटयः सख्याविशेषा स्तासां किंभवेत् भरित भृत ॥ कथमित्याह ॥ निरंतरं निश्चितं निविडतया निचयवत् कृतमिति ॥ १ ॥ वासगाहा ॥  
एकस्मात् पल्या द्वर्षशतेवर्षशते तिक्रान्तेसति प्रतिवर्षशतमित्यर्थः एकैकस्मिन्वालाग्रे असंख्येयखण्डेष्वपहृते सति यः कालोयावतौ अज्ञाभवति प्रमाण  
तः सतावान् कालोवोद्भव्यः किमित्याह उपमा उपमेयः कस्येत्याह एकस्यपल्यस्य इदमुक्तभवतिसः काल एकपल्योपम सूक्ष्म व्यावहारिकचोच्यत इति  
एएसिगाहा ॥ तेषां मेवोक्तरूपाणां सूक्ष्मवादराणां पल्यानां पल्योपमानां कोटीकोटीभवेत् दशगुणिता यदिति गम्यते दशकोटीकोट्य इत्यर्थः तदेकस्य  
सूक्ष्मरूपस्य बादररूपस्य वा सागरोपमस्यैव भवेत् परिमाणमिति एतैश्च तेषां क्रोधादीनां फलभूतकर्म्मस्थिति विरूप्यते तत्स्वरूपनिरूपणायह

इवालङ्गकोष्ठीण ॥ १ ॥ वाससएवाससए एक्केक्केण्वहणंमिजोकालो । सोकालोवोधव्वो उवमाएगस्सपल्ल  
पल्योपमनुमानं तेकहैहै । जे च्चार गाऊनुं ऊडो पिहुलो पालो कूओ होय एकदिनथी माडीसातदिनना जगया युगलिया तेहना मांथानाकेशथी  
कुओज्जरिये आतरारहित ठासीने जरिये तेवालाग् जे दृष्टिमापणिनआवे तेबालाग् सौसौबरसे एकेको निकालै तेकाढतेकाढते कूओजेतलैकालै खा  
लीथाय तेतलाकालनी उपमा जाणवी एक पल्योपमनो कालमान जाणिवो । एह पल्योपमनुंकालदशगुणुकीजे तिवारे सागरोपमनुं कालथाय एत  
ले दशकोडाकोठि पल्योपमै एकसागरोपमथाय । अंप्रकारेंकोध तेकहैहै । आत्मप्रतिष्ठित तं आत्माथी उपनो निष्कारणक्रोध अथवा जीतिप्रमुखै

॥ दुविहेकोहेइत्यादि ॥ आत्मापराधा दैहिकापायदर्शनादात्मनिप्रतिष्ठित आत्मविषयोजात आत्मनावा परमाक्रोशादिना प्रतिष्ठितो जनित आत्मप्रतिष्ठितः परेणाक्रोशादिना प्रतिष्ठित उद्दीरितः परस्मिन्वा प्रतिष्ठितो जात' परप्रतिष्ठितइति एवमिति यथा सामान्यतो द्विधा क्रोध उक्त एवं नारकादीनां चतुर्विंशते वाच्य नवर पृथिव्यादीना मसज्जिना मुक्तलक्षण आत्मप्रतिष्ठितत्वादिपूर्वभवसंस्कारात् क्रोधद्वयमवगन्तव्यमिति एवमानादीनि मिथ्यात्वातानि पापस्थानकान्यात्मप्रतिष्ठितविशेषणानि सामान्यपदपूर्वक चतुर्विंशतिदण्डकेनाध्येतव्यानि अतएवाह ॥ एवजावमिच्छादसणसंज्ञेति ॥ एतेषाच मानादीन स्वविकल्पजातपरजनितत्वाभ्या स्वात्मवर्त्तिपरात्मवर्त्तित्वाभ्या वा स्वपरप्रतिष्ठितत्वमवसेय मेव एते पापस्थानाश्रिता स्वयोदशदण्डका इति उक्तविशेषणा निच पापस्थानानि ससारिणामेव भवन्तीति तान् भेदत आह ॥ दुविहेत्यादि ॥ कण्ठं नतु ससारिणएवजीवा उतान्येपि सति सत्येवेति प्राय उभयदर्श

रस ॥ २ ॥ एतेसिंपल्लाणं कोलाकोलीहवेज्जदसगुणिया । तंसागरोवमस्सउ एगस्सज्जवेपरीमाणं ॥ ३ ॥ दुविहेकोहे पन्नत्ते तंजहा आयपइठिएचेव परपइठिएचेव एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं एवं जाव मिच्छादंसणसल्ले दुविहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा तसाचेव थावराचेव दुविहा सच्चजीवा पन्नत्ता

अचक्षाणु क्रोधे जीतिनें हणै । परप्रतिष्ठित जे परनावचन साजली क्रोधउपजै । एम नारकीआदिदेई वैमानिकताई चौवीसदंठकै बेप्रकारे क्रोध जाणिवुं । एम यावत् मिथ्यादर्शनशल्यादि अठारह पापस्थानकलगे आत्म अने परनेआश्रित । संसारनाजीव बेप्रकार तेकहैछै । तस वैइद्रियादि थावर पृथिव्यादिक एकेद्री ॥ अथवा बेप्रकारसर्वजीव तेकहैछै । एक सिद्ध जेमोक्षपाम्या बीजा असिद्ध जेमोक्षनथीपाम्या ॥ अथवा बेप्रकारसर्वजी

नाथ त्रयोदशसूत्री माह ॥ दुविहेत्यादि ॥ कण्ठ्याचेयं नवरं सेंद्रियाः संसारिणो ऽनिन्द्रिया अपर्याप्तककेयलिसिद्धाः ॥ एवंएसत्ति ॥ एवंसिद्धादिसूत्रोक्तक  
मेण दुविहासम्बजीवेत्यादि लक्षणेन एषावक्ष्यमाणा प्रस्तुतसूत्रसग्रहगाथा स्पर्शनीया अनुसरणीया एतदनुसारेण त्रयोदशाभि सूत्राख्ये तव्यानीत्यर्थ  
अतएवाह ॥ जावससरीरीचेव असरीरीचेवत्ति ॥ सिद्धगाहा ॥ सिद्धाः सेंद्रियाश्च सेतराउक्ता एवं ॥ कायेत्ति ॥ कायाः पृथिव्यादय स्नानाश्रित्य  
सर्वजीवाः सविपर्ययावाच्याः एवसर्वाणि व्याख्येयानि वाचनाचैव ॥ सकायश्चेव अकायश्चेव ॥ सकायाः पृथिव्यादि षड्विधकायविशिष्टाः संसारिणो  
ऽकाया स्तद्विलक्षणाः सिद्धाः सयोगाः संसारिणो ऽयोगा अयोगिनः सिद्धाश्च ४ ॥ वेदत्ति ॥ सवेदाः संसारिणः अवेदा अनिवृत्तवादरसम्परायविशेषा  
दयः पट्सिद्धाश्च ५ ॥ कसायत्ति ॥ सकषायाः सूक्ष्मसम्परायान्ताः अकषाया उपशान्तमोहादयश्चत्वारः सिद्धाश्च ६ ॥ लेसायत्ति ॥ सलेखाः सयोग्यन्ताः  
संसारिणोलेखाः अयोगिनः सिद्धाश्च ७ ॥ नाणेत्ति ॥ ज्ञानिनः सम्यग्दृष्टयो ऽज्ञानिनोमिथ्यादृष्टय आहच अविसेसियामद्रच्छिय सम्मदिद्विस्ससामइन्नाण

तजहा सिद्धाचेव असिद्धाचेव दुविहा सव्वजीवा पन्नाहा तजहा सइंदियाचेव अण्णिंदियाचेव एवएसगाहा  
फासेयत्ता जाव सरीरीचेव असरीरीचेव । सिद्धसइंदियकाए जोगेवेएकसायलेसाय । पाणुवत्तगाहारे ज्ञास

व तेकहैळै । इन्द्रियसहित एकेन्द्रियादिक बीजा अनिंदिय इंदियरहित सिद्धनाजीव ॥ एम गाथाने अनुसारे तेरहबोल जाण्णिवा । यावत् शरीरी सं  
सारनाजीव शरीररहित मोक्षनाजीव सिद्ध असिद्ध इन्द्रियसहित इन्द्रियरहित कायासहित कायारहित योगसहित योगरहित वेदसहित वेदरहित  
कषायसहित कषायरहित लेखासहित लेखारहित नाणसहित नाणरहित नाणोपयोगी दर्शनोपयोगी आहारी अनाहारी ज्ञापारहित ज्ञापारहि

मद्वयानांमिच्छा दिङ्मिच्छासुयपिमेवति ॥ १ ॥ अज्ञानताच मिथ्यादृष्टिवोधस्य सदसतोरविशेषणात् तथाहि संत्यर्थाइह तत्त्वं कथंचिदिति विशेषितं  
भवति स्वरूपेणेत्यर्थः मिथ्यादृष्टिस्तु मन्यते सतएवेति ततश्चापररूपेणापि तेषांसत्त्वप्रसङ्गः तथा नसत्यर्थाइह तदसत्त्व कथंचिदिति विशेषितं भवति पर  
रूपेणेत्यर्थः सतु नसत्येवेति मन्यते तथाच तत्प्रतिषेधकवचनस्याप्यभावः प्रसजतीति अथवा शशविषाणादयो नसन्तीत्येतत्कथंचिदिति विशेषणीयं यत स्ते  
शशमस्तकादिसमवेततयैव नसन्ति नतु शशश्चविषाणश्च शशस्यवा विषाणश्चिद्विपूर्वभवग्रहणापेक्षया शशविषाणं तद्रूपतयापि नसतीति तदेवं सदस  
तोः कथंचिदित्येतस्य विशेषणस्या नभ्युपगमात्तस्य ज्ञानमप्ययथार्थत्वेन कुत्सितत्वाद्दज्ञानमेव आहच जहदुब्बयणमवयणं कुच्छियसीलमसीलमसईए  
भनइतहनाणपिहु मिच्छादिङ्मिच्छाअन्नाणंति ॥ १ ॥ तथा मिथ्यादृष्टे रथ्यवसायो नज्ञानं भवहेतुत्वा मिथ्यात्वादिवत् तथायदृच्छोपलब्धे रत्नत्तव तथा ज्ञानफ  
लस्य सत्क्रियालक्षणभावा दन्वस्य'स्वहस्तगतदीपप्रकाशवदिति आहच सदसदविसेसणाओ भवहेजजइत्यिओवलभाओ नाणफलाभावाओ मिच्छादिङ्मि  
च्छाअन्नाणंति ॥ ८ ॥ उवओगिति ॥ सागारीवउत्तेचेवअणागारीवउत्तेचेवति ॥ सहाकारेण विशेषांशग्रहणशक्तिलक्षणेन वर्तते य उपयोगः ससाकारो ज्ञानो  
पयोग इत्यर्थः स्तेनोपयुक्ताः साकारोपयुक्ता अनाकारस्तु तद्विलक्षणे दर्शनोपयोग इत्यर्थो भिधीयतेच जसामन्नग्रहणं भावाणनेयकदुआगारं अविसेसिजणअ  
त्ये दसणमितिबुद्धएसमएति ॥ १ ॥ तेनोपयुक्ताअनाकारोपयुक्ताइति ८ ॥ आहारेति ॥ आहारका ओजोलोमकवलभेदभिन्ना आहारविशेषग्राहिण आहच  
ओयाहाराजीवा सव्वेअपजत्तगामुण्येव्वा पज्जत्तगायलोम पक्खेवेहोतिभइयव्वा ॥ १ ॥ एगिदियदेवाण नेरइयाणचनत्थिपक्खेवो सेसाणजीवाण संसारत्था  
णपक्खेवोति ॥ २ ॥ अनाहारकास्तु विगहगदमावन्ना केवलिणोसमूहयाअजोगीय सिद्धायअणाहारा सेसाआहारगाजीवति ॥ २ ॥ भासति ॥ भाषकाः  
भाषापर्याप्तिपर्याप्तका स्तन्निषेधादभाषका अयोगिसिद्धा एकेंद्रियाश्च ॥ ११ ॥ चरमति ॥ चरमा येषांचरमोभवोभविष्यति अचरमास्तुयेषां भव्येत्वेसत्यपि



चरमोभवो न भविष्यति ननिर्वास्यन्तीत्यर्थः ॥ १२ ॥ ससररीरत्ति ॥ सह यथासम्भवं पञ्चविधशरीरेण येते इन्समासान्तविधेः सशरीरिणः संसारिणो अशरीरिणस्तु शरीरमेवामस्तीति शरीरिण स्तन्निषेधादशरीरिणः सिद्धाः ॥ १३ ॥ एतेच ससारिणः सिद्धाश्च मरणाभरणधर्मका अप्रशस्तप्रशस्तमरणतथैते भवन्तीतिप्रशस्ताप्रशस्तमरण निरूपणाय नवसूचीमाह ॥ दोमरणाद् इत्यादि ॥ कण्ठाचेय नवर हेमरणे अमरणेनभगवतामहावीरेण आभ्यन्ति तपस्यन्तीति अमणा स्तेषा तेच शाक्यादयोपिस्तुः यथोक्तं निम्नथ १ सक २ तावस २ गेरुय ४ आजीव ५ पचहासमणाइति तदुच्यवच्छेदार्थमाह निर्गता अथाह्याभ्यन्तरादिति निर्गन्ताः साधव स्तेषा नोनित्ये सदावर्णिते ता स्तयोः प्रवर्तयितु मुपादेयफलतया नाभिहिते ॥ किञ्चित्तिद्याइति ॥ कीर्त्तिते नामतः सशब्दिते उपादेयधिया ॥ बुद्ध्याइति ॥ व्यक्तवाचोक्तेउपादेयस्वरूपतः पाठान्तरेणपूजितेवा तत्कारिपूजनतः प्रशस्ते प्रशसिते श्लाघिते शंसुस्तुतावितिवचनात् अभ्यनुज्ञाते अनुमतेयथा कुरुतेति ॥ वलयमरणेति ॥ वलतांसंयमान्विवर्त्तमानानां परीषहादिवाधितत्वा मरण वलन्मरण ॥ वसट्मरणेति ॥ इन्द्रियाणां

गचरिमेयससररीरी ॥ १ दोमरणाइं समणेणंजगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णोणिच्चं वस्सियाइं णो णिच्चं किञ्चित्तिद्याइं णोणिच्चं पूइयाइं णोणिच्चं पसत्याइ णोणिच्चं अण्णुन्नाइं ज्वन्ति तंजहा वलयमरणेचेव

त चरम तेजज्वेमोक्षजाय अचरम बीजा शरीरी अशरीरी ॥ शरीरीनें वेसरण तेमांटे मरणाधिकार कहैल्ले अमणतपस्वी जगवान श्रीमहावीरस्वामी अमण तपस्वी कर्मगाठिथी रहित साधुने नथीनित्यसदाई वर्णव्या बखायया नथी नित्यआदरवा कहयाथी । नथीनित्य पूजित एथी पूजा नपामे नथी प्रज्ञांस्या नथी आणादीधी जगवते । तेकहैल्ले वलन्मरण जे सयमथीपढतो परीसहथी जागी मरै । इन्द्रियने परवशपणे मरैते जिमदीघो

वशमधीनता मृतानांगतानां स्निग्धदीपकलिकावलोकनाकुलितपतगादीनामिव मरण वशात्तमरणमिति आह च संजमजोगविसन्ना मरंतिजेतंवलाय  
मरणतु इन्द्रियविसयवसगया मरतिजेतेवसदृतु ॥ १ ॥ एवनियाणेत्यादि ॥ एवमितिदोमरणाइसमणेणमित्याद्यभिलापस्योत्तरसूत्रेष्वपि सूचनार्थः ऋद्धिभो  
गादिप्रार्थनानिदान तत्पूर्वकमरण निदानमरणं यस्मिन् भवे वर्त्तते जतुस्तद्भवयोग्यमेवायुर्वध्वा पुनर्जियमाणस्य मरण तद्भवमरण एतच्च सख्यातायुष्कन  
रतिरश्चामेव तेषामेवहि तद्भवायुर्वधोभवतीति उक्तञ्च मोत्तुअकम्मभूमिग नरतिरिएसुरगणेष्वनेरइए सैसाणजीवाण तब्भवमरणतुकेसिचित्ति ॥ १ ॥  
सत्योवाडणेत्येति ॥ शस्त्रेण क्षुरिकादिना अवपाटन विदारण स्वशरीरस्य यस्मिन् च्छेत्तावपाटन ॥ ५ ॥ कारणेपुणेत्यादि ॥ शीलभगरक्षणादौ पाठातरितु  
कारणेन अप्रतिकुष्ठे वा अनिवारिते भगवता वृक्षशाखादा बुद्धत्वात् विहायसिनभसि भव वैहायस प्राकृतत्वेनतु वैहायस मित्युक्त मिति गृध्रैः स्पृष्ट

वसहमरणेचेव एवं णियाणमरणेचेव तप्पवमरणेचेव गिरिपङ्कणेचेव तरुपङ्कणेचेव जलप्पवेसेचेव जल  
णप्पवेसेचेव विसन्नरक्कणेचेव सत्योवाङ्कणेचेव दो मरणाइं जाव णोणिच्चं च्छप्पणुन्नाइं ज्वंति कारणेणं पुण  
च्छप्पणिकुठाइं तंजहा वेहाणसेचेव गिष्ठपिष्ठेचेव दोमरणाइं समणेणं जगवया महावीरेणं समणाणं निग्गं

देखी पतंगमरै । एम रिद्धीआदिकनों नियाणुं करीमरै ते माठुंमरण कहियो । तेहीजन्मने योग्य आऊखो बांधीमरै । पर्वतथी भैरुंभां प खाई  
मरै तेगिरिपङ्कणमरण । वृक्षथी पडी मरै तेतरुपङ्कणमरण । पाणीमां कपावी मरै तेजलप्रवेशमरण । अग्निमा पेसी मरै ते जलप्रवेशमरण ।  
विषखाई मरै तेमाठुमरण । शस्त्र कटारीप्रमुख खाईमरै ते । बली बेमरण जाव नथी आणा दीधी जगवतै ॥ पणि कारणे शीलादिराखिवाने

स्पर्शनं यस्मिन् तत् गृध्रस्पृष्टं यदिवा गृध्राणां भक्ष एष्टमुपलक्षणत्वा दुदरादिषु तद्वत् करिकरभादिशरीराणुप्रवेशेन महासत्त्वस्य सुसुधीं यस्मिंस्तत्  
 गृध्रस्पृष्टमिति गाथा च गजादिभक्षणंगह पद्मसुखंधणादिवेत्तास एतेदोत्रिविमरणा कारणजाएप्रगुणायन्ति ॥ १ ॥ अप्रशस्तमरणानंतरं तत् प्रशस्तं  
 भव्यानां भवतीति तदाह ॥ दोसरणाश्च इत्यादि ॥ पादपोषगमनं स्तस्यैवस्त्रिपतितसोपगमनं मत्वंतनिशेष्टतया ऽवस्थानं यस्मिंस्तत् पादपोषगमनं  
 भक्ता भोजनं तस्येव नचेष्टाया अपि पादपोषगमनप्रव प्रत्याख्यानवर्जनं यस्मिंस्तत् भक्ताप्रत्याख्यानमिति ॥ नीहारिमिति ॥ यद्वसते रेकदेशे विधीयते  
 तत्ततः शरीरस्य निर्हरणा विस्तारणा विह्वारिम यत् पुनर्गिरिकन्दरादौ तदनिर्हरणादनिर्हारिम ॥ णियमिति ॥ विभक्तिपरिणामा न्नियमा दप्रतिकर्म

थाणं णिच्चं वसियाइं जाव अण्णुत्ताइं जवन्ति तंजहा पातुवगमणेचेव जत्तपच्चरकाणेचेव पातुवगमणे  
 दुविहे पत्तत्ते तंजहा णीहारिमेचेव अण्णीहारिमेचेव णियमं अण्णफिक्काम्मे जत्तपच्चरकाणे दुविहे पत्तत्ते

वास्यानयी । तेकहैछे आकाशमरणा जे वृक्षानी शाखायें गलोबांधी मरें । गूढपृष्टमरणा ते ऊटप्रमुखना कलेवरमां पेसी गूढपंखिया पाइंपचरावे ए  
 सर्वमरणा शीलादिराखिवाने कारणें निषेध्यानयी अन्यथा निषेध्याळें । एह अप्रशस्तमरणा कहिया । बे प्रशस्तमरणा जव्यनेहोय ते कहैछे । श्रमण  
 जगवंत महावीरस्वामी श्रमणसाधुनें सदाईं वर्णव्या जाव पूर्वनीपरे आणा दीधीछे । एक पादपोषगमन वृक्षानी कापी ढालीनीपरे चोष्टारहित ।  
 बीजो भातपाणीनो जावजीव पचखाण करवुं पणिहाचाले । पादपोषगमन बेप्रकारे कहियो जगवते तेकहैछे । एक नीहारिम जे शरीरनी सार  
 नकरे सिंहादिकउपसर्ग आवेकरे । बीजो अणिहारिम गिरिगुफामां जई करे । ए बेपादपोषगमन निश्चे शरीरनी शुश्रूषा साररहितछे । जत्तप्रत्या

शरीरप्रतिक्रियावर्जं पादपोषणमनमिति भवतिचात्रगाथा सीहादिसुअभिभूओपायवगमणंकरेइधिरचित्तो आउम्भिवहुपते वियाणिओनवरगीयत्यो  
 त्ति ॥ १ ॥ इदमप्यथाघातवदुच्यते निर्व्याघाततु यत् सूत्रार्थनिष्ठितउत्सर्गतो द्वादशसमाः कृतपरिकर्मासन् कालएवकरोतीति तद्विधिश्चाय चत्तारिवि  
 चित्ताइ विगडेनिज्जूहियाइचत्तारि सवच्छरेयदुन्निउ एगतरियचआयामं ॥ २ ॥ नाइविगिद्योयतवो क्कम्मासेपरिमियंचआयामं अन्नेवियक्कम्मासे होइवि  
 गिठंतवोकम्म ॥ ३ ॥ वासंकोडीसहियं आयामकाउआणुपुब्बीए सघयणादणुरूवं एत्तोअद्वायनियमेण ॥ ४ ॥ यतः देहमिअसलिहिए सहसाधाओ  
 हिखिज्जमाणेहिं जाइयअट्टज्जाण सरीरिणोचरमकालमि ॥ ५ ॥ किंच भावमविसलिहेइं जिणप्पणीएणभाणजोगेणं भूयत्यभावणाहिय परिवट्टइवो  
 हिमूलाइं ॥ ६ ॥ भावेइभावियप्पा विसेसओनवरतम्मिकालमि पयईएनिगुणत्त ससारमहासमुदस्स ॥ ७ ॥ जन्मजरामरणजलो अणाइमवसणसावया  
 इन्नो जीवाणदुक्खहेज कठरुद्धोभवसमुद्धो ॥ ८ ॥ धन्नोहजेणमए अणोरपारमिनवरमेयति भवसयसहस्सदुल्लह लज्जसद्वम्भजाणति ॥ ९ ॥ एयस्सपभावेण  
 पालिज्जंतस्ससयपयत्तेण जन्मतरेविजीवा पावंतिनदुक्खदोहण ॥ १० ॥ चिंतामणीअउब्बो एसअपुब्बोयकप्परुक्खोत्ति एयपरमोमतो एयपरमामयएत्य  
 ॥ ११ ॥ इत्थवेयावडिय गुरुमाइंणमहाणभावाण जेसिपभावेण्यं पत्ततहपालियचेव ॥ १२ ॥ तेसिनमोतेसिनमो भावेणपुणोवितेसिचेवनमो अणुव  
 कयपरहियरया जेएयंदितिजीवाणमित्यादि ॥ १३ ॥ सलिहिऊणप्पाण एयपच्चप्पिणेतुफलगाइं गुरुमाइएयसग्ग खमाविओभावसुद्धीए ॥ १४ ॥ उववूहि  
 ऊणसेसे पडिबुद्धेतम्मिहतहविसेसेण धम्मेउज्जमियब्ब सजोगाइहविजोगंता ॥ १५ ॥ अहवदिऊणदेवे जहाविहिसेसएयगुरुमाइ पच्चक्खाइत्तुतओ तयतिए  
 सब्बमाहार ॥ १६ ॥ समभावम्मिठियप्पा सम्मसिद्धतभणियमग्गेण गिरिकदरमिगतु पायवगमणअहकरेइ ॥ १७ ॥ सब्बत्यापडिबद्धो द्ढाययमाइठाणमि  
 हठाउ जावज्जीवचिक्खइ निच्चिओपायवसमाणो ॥ १८ ॥ पढमिल्लुयसवयणो महाणभावाकरितिएवमिण पायंसुहभावच्चिय निच्चलपयकारणपरम ॥ १९ ॥

भक्तपरिभ्राणसणं चउव्विहाहारचायनिष्फन्नं सपडिक्कमनियमा जहासमाहीविणिहिड्ढत्ति ॥ २० ॥ इच्छितमरणंत्विह नोक्तं दिस्थानं कानुरोधात् तत्तत्क्षणं  
 चेद् इगियदेसमिसय चउव्विहाहारचायनिष्फन्नं उव्वत्तणाइजुत्तं नवेणउइगिणीयरणति ॥ २१ ॥ इदंचमरणादिस्वरूपं भगवता लोके प्ररूपितमिति लो  
 कस्वरूपप्ररूपणाय प्रश्नकारयन्नाह ॥ केअयमित्यादि ॥ केइतिप्रश्नार्थः अयमितिदेशतः प्रत्यक्ष आसन्नश्च यत्र भगवता मरणादिप्रशस्ताप्रशस्तसमस्तवस्तु  
 स्तोमतत्त्व मभ्यधाथि लोक्यतइतिलोक इतिप्रश्नो स्यनिर्वचन जीवाजीवायेति पचास्त्रिकायमयत्वा लोकास्त्र तेषांजीवाजीवस्वरूपत्वादिति उक्तच पंच  
 त्रिकायमइय लोगमणाइणिहणजिणक्खायति लोकस्वरूपभूतानांच जीवाजीवानां स्वरूपं प्रश्नपूर्वकेण सूत्रद्वयेनाह ॥ केअणतेइत्यादि ॥ के अनता लोके  
 इतिप्रश्नः अत्रोत्तरं जीवाअजीवायेति एतएवच शास्त्रताः द्रव्यार्थतयेति येचैतेअनताः शास्त्रताय जीवा स्तेवोधिमोइलचणधर्मयोगा हुडामूढाअभवन्तीति

तजहा णीहारिमेचेव अण्णीहारिमेचेव णियमं सपडिक्कम्मो के अयं लोए जीवच्चेव अजीवच्चेव अणंतालोए  
 जीवच्चेव अजीवच्चेव केसासयालोए जीवच्चेव अजीवच्चेव दुविहा वोही प० तं० णाणवोहीचेव दंसणवो

रयानमरण बेप्रकारछे तेकहेछे । एक नीहारिम बीजो अनाहारिम पणिए निश्चे शरीरशुश्रूपासहित होय एमरणादिवरूप जगवते लोकमां कह्यो  
 तेमांटे लोकनुस्वरूप कहेछे । कोण यह लोक कहिये जीव अने अजीव छ द्रव्यरूप लोकछे धर्मास्तिकायादि जेहना अतनथी तेलोक कहिये एहज  
 जीव अने अजीव एह छ द्रव्यनो अंतनथी । किम लोक शास्वतोछे । एहज जीवाजीवादि षड्द्रव्यरूपलोक शास्वतोछे । एह छद्रव्यमा जीवद्रव्य बी  
 धिपावे तेहना बेप्रकार कहिया । एक नाणबोधि ते जिनधर्मनीप्राप्ति बोधिते आमाटे बोधिस्वरूप कहेछे । अयधिनाणादिकनी प्राप्ति । सम्यक्त

दर्शनाय दिस्थानकानुपातेन सूत्रचतुष्टयमाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ बोधनबोधि जिनेधर्मलाभं ज्ञानबोधि ज्ञानावरणक्षयोपशमभूता ज्ञानप्राप्तिः दर्शनबोधि दर्शन  
 मोहनोय क्षयोपशमादिसम्पन्नः अज्ञानलाभइति एतद्वन्तो द्विविधा बुद्धा एतेच धर्मतएव भिन्ना नधर्मितया ज्ञानदर्शनयोरन्योन्याविनाभूतत्वादिति ॥ एवमोहे  
 मूढति ॥ यथा बोधि बुद्धाय द्विविधोक्ता स्तथा मोहेमूढाय बाध्याइति तथाहि ॥ दुविहेमोहेपन्नत्ते त० नाणमोहेचेव दसणमोहेचेव ॥ ज्ञानं मोहयत्या  
 च्छादयतीति ज्ञानमोहो ज्ञानावरणादयः एव दसणमोहेचेव सम्यग्दर्शनमोहादयइति ॥ दुविहामूढाप० त० नाणमूढाचेव ॥ ज्ञानमूढाउदितज्ञानावरणाः ॥ दंस  
 णमूढाचेव ॥ दर्शनमूढा मिथ्यादृष्टयइति द्विविधोप्ययमोहो ज्ञानावरणादिकर्मनिवन्धन मितिसम्बन्धेन ज्ञानावरणादिकर्मणा मष्टाभिः सूत्रैर्वैविध्यमाह ॥ नाणे  
 त्यादि ॥ सुगमानिचैतानि नवर ज्ञानमावृणोतीति ज्ञानावरणीय आह च सरउगयससिनिम्मल यरस्स जीवस्स कायणजमिह नाणावरणकम्मं पडोवमहोइए  
 वतु ॥ १ ॥ देशज्ञानस्याभिनिबोधिकादि मावृणोतीति देशज्ञानावरणीयं सर्वज्ञान केवलाख्य मावृणोतीति सर्वज्ञानावरणीय केवलज्ञानावरणं हि आदित्यकल्प

हीचेव दुविहा बुद्धा प० तंजहा णाणबुद्धाचेव दंसणबुद्धाचेव एवं मोहे मूढा णाणावरणिज्जे कम्मो दुविहे  
 पन्नत्ते तजहा देसणाणावरणिज्जेचेव सव्वणाणावरणिज्जेचेव दरिसणावरणिज्जेकम्मो एवंचेव वेयणिज्जे कम्मो

नीप्राप्ति ते दर्शनमोहनीना क्षयथी । नाणदर्शन सहितहोय तेबुद्ध कहिये ते बेप्रकारेछे । एक नाणबुद्ध बीजो दर्शनबुद्ध एक नाणदर्शनमांटे बेकहि  
 या पणि जीवआश्रितपणांमांटे एकज नाणदर्शन एकनेजहोय एससारीछे । एमज मोहेमूढ मूर्ख नाणमोह दर्शनमोह । मोहते नाणावरणथी बंधा  
 ये नाणावरणीना बेभेदछे एक देशनाणावरणी जे मतिनाणादिक ठांके । बीजो सर्वनाणावरणी जे केवलनाणढाके । दर्शनावरणपणि इमज देशथी

केवलज्ञानरूपस्य जीवस्याच्छादकतया सान्द्रमेघवृन्दकल्पमिति तत्सर्वज्ञानावरण मत्याद्यावरणन्तु घनाच्छादितादित्येषणभाकल्पस्य केवलज्ञानदेशस्य कटुतुष्यादिरूपज्ञानावरणतुल्यमिति देशावरणमिति पठ्यतेच केवलणाणावरण दसणकृकचमोहवारसग [अमन्तानुबन्धादीत्यर्थः] तासव्वधाइसना भवतिमिच्छत्तवीसइमंति ॥ १ ॥ अथवा देशोपघातिसर्वोपघातिपडुकापेक्षया देशसर्वावरणत्वमस्य यदाह मइसुयनाणावरणं दंसणमोहचतदुपघाईणि तप्पडगाइ दुविहा इदेशसव्वोवघाईणि ॥ १ ॥ सव्वेसुसव्वघाईसु हएसुदेशोपघाइयाणच भोगेहिमुत्तमाणी समएअणतेहि ॥ २ ॥ पढमलभइणगारं एके फंवन्नमेवमन्नति कमसोविसुज्जमाणी लहइसमत्तनमोक्कारं ॥ ३ ॥ तथा दर्शनसामान्यार्थबोधरूप मावृणोतीति दर्शनावरणीयं उक्तंच दंसणसीलेजीवे दंसणघायंकरेइजत्तम् तपडिहारसमाणं दंसणवरणभवेजीवेत्ति ॥ ४ ॥ एवंदेसत्ति ॥ देशदर्शनावरणीयं चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनावरणीयं सर्वदर्शनावरणीयं तु निद्रापञ्चकं केवलदर्शनावरणीयचेत्यर्थः भावनातु पूर्ववदिति ॥ २ ॥ तथावेद्यते अनुभूयते इति वेदनीयं सात सुख तद्रूपतयावेद्यते यत्तत्तथा दीर्घत्व प्राकृतत्वात् इतरदेतद्विपरोत आहच महलित्तनिसियकरवा लधारजीहाएजारिसलिहणं तारिसयवेयणिय सुहदुहउप्पायगमुणहत्ति ॥ १ ॥ मोहयतीतिमोहनीयं तथाहि जहमज्जपाणमूढो लोणपुरिसोपरव्वसोहोइ तहमोहेणविमूढो जोवोअपरव्वसोहोइत्ति ॥ १ ॥ दर्शनंमोहयतीति दर्शनमोहनीयं मि

दुविहे प० तं० सायावेयणिज्जेचेव असायावेयणिज्जेचेव मोहणिज्जे कम्मं दुविहे प० तं० दंसणमोहणिज्जे

चक्षु अचक्षु अवधिदर्शनावरण सर्वथी पांचनिद्रा केवलदर्शनावरण एवभेदः । एम वेदनीकर्म बेप्रकारे तेकहेछे । एक सातावेदनी तेसुख बीजो अज्ञा तावेदिनी तेदुखमध्ये खरडीखडगधारा जेहवु । मोहनीकर्म बेप्रकारे कहियो ते कहैछे । दर्शनमोहनी ते मिथ्यात्वमोहनी मिश्रमोहनी समकित

यथात्वमित्यसम्यक्तभेद चारित्रं सामायिकादि मोहयति यत्कषाय नोकषायभेदं तत्तथा एतिच यातिचे त्यायुः एतद्रूपच दुक्खंनदेइआउं नवियसुहंदेइच  
 उसुविगईसु दुक्खसुहाणाधार धरेइदेहद्वियंजीवंति ॥ १ ॥ अद्वायुः कायस्थितिरूपं भावनातुप्राग्वत् भवायु भवस्थितिरिति विचित्रपर्याये नमयतिप  
 रिणमयति यज्जीवं तन्नाम एतत् स्वरूपञ्च जहचित्तयरोनिउणी अणेगूवाइ कुणइरूवाइ सोहणमसोहणाइ चक्खुमचक्खेहिवमेहि ॥ २ ॥ तहनामं पिहुकमं  
 अणेगूवाइ कुणइजीवस्स सोहणमसोहणाइ इट्ठाणिट्ठालीयस्सत्ति ॥ २ ॥ शुभतीर्थकरादि अशुभमनादेयत्वादौति पूज्योऽपूज्यमित्यादि व्यपदेश्यरूपा  
 ङ्गां वाचंनयते इति गोत्र स्वरूपञ्चास्येद जहकुमारोभण्डाइ कुणइपुज्जेयराइलीयस्स इयगोयकुणइजियं लोएपुज्जेयरावत्थुति ॥ १ ॥ उच्चैर्गोत्रं पूज्यत्वनिवन्ध  
 न मितरत्तद्विपरीत ॥ ७ ॥ जीवञ्चार्यसाधन चान्तराएति पतती त्यन्तरायमिदचैव जहरायादाणाइं नकुणइभडारिएविकूलम्मि एंवजेणंजीवी कम्मंतं

चेव चरित्तमोहणिजेचेव आउकम्मोदुविहे प० तं० अद्वाउएचेव जवाउएचेव णामकम्मोदुविहे प० तंजहा  
 सुज्जणामेचेव असुज्जणामेचेव गोत्तेकम्मोदुविहे प० तं० उच्चागोएचेव णीयागोएचेव अंतराइएकम्मो दुविहे

मोहनी । चारित्रमोहनी ते सामायिकादिचारित्रने मूक्खवे कषाय नोकषायरूप । आऊखो कर्म बेप्रकारे कहियो हडसरिखुं तेकहैछे । अद्वायु  
 ते कायस्थितिरूप नरतिर्यंचने जवायु जवस्थितिरूप देवता नारकीने । नामकर्म बेप्रकारे कहियो चितारासरिखुं तेकहैछे । एक सुज्जनामकर्म ती  
 र्थकरादि बीजो असुज्जनामकर्म अनादेयनाम । गोत्रकर्म बेप्रकारे कुंजारसरिखुं तेकहैछे । उंचगोत्र ते पूजनीक नीचगोत्र ते निंदनीक । अंतरा  
 यकर्म ते बेप्रकारे भडारीसरिखो तेकहैछे । एक प्रत्युत्पन्नविनाशि जे उपनोअर्थ विणसाडै ते अंतराय । बीजुं आवतो अर्थलाज्जरुंधे ते पिहि



अंतरायंति ॥ १ ॥ पटुप्पन्नविणासिएचेवत्ति ॥ प्रत्युत्पन्नवर्धमानं लब्धं वस्तु इत्यर्थी विनाशित सुपहतं येन तत्तथा पाठान्तरेण प्रत्युत्पन्नं विनाशयतीत्ये  
वंशीलं प्रत्युत्पन्नविनाशि चैवसमुच्चये इत्येकमन्यच्च पिधत्तेष निरुणद्धिच आगामिनोलब्धव्यस्यवस्तुनः पन्था आगामिपथ स्तमिति क्वचिदागामिपथानि  
तिदृश्यते क्वचिच्च ॥ आगमपहंति ॥ तत्रच लाभमार्गमित्यर्थः इदंचाष्टविधं कर्म मूर्च्छाजन्यमिति मूर्च्छास्वरूपमाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं कण्ठ्य न  
वरं मूर्च्छामोहः सदसद्विवेकनाशः प्रेमरागो हृत्तिर्वर्त्तनरूपं प्रत्ययोवाहेतु र्यस्याः सा प्रेमवृत्तिका प्रेमप्रत्ययावा एवं द्वेषवृत्तिका द्वेषप्रत्ययावेति मूर्च्छोपात्त  
कर्मणश्च क्षयआराधनयेति तंसूत्रत्रयेणाह ॥ दुविहेत्यादि ॥ सूत्रं कण्ठ्यं नवरं आराधनमाराधना ज्ञानादिवस्तुनो ऽनुकूलवर्त्तित्वं निरतिचारज्ञाना व्यासे  
वेति यावत् धर्मेण श्रुतचारित्ररूपेण चरन्तीति धार्मिकाः साधव स्तेषामिय धार्मिकी साचासावाराधनाचेति निरतिचारज्ञानादिपालना धार्मिकाराधना

प० तं० पटुप्पन्नविणासिणेचेव पिहतियश्चागामिपहं दुविहामुच्छा प० तंजहा पेज्जवत्तियाचेव दोसवत्ति  
याचेव पेज्जवत्तियामुच्छा दुविहा प० तं० माएचेव लोजेचेव दोसवत्तियामुच्छा दुविहा प० तं० कोहेचेव  
माणेचेव दुविहा श्चाराहणा प० तं धम्मियाराहणाचेव केवलिश्चाराहणाचेव धम्मियाराहणा दुविहा प०

तत्रागामिअंतराय । एआठ कर्मथी मूर्च्छा तेमोह उपजे तेमाटे मूर्च्छानो स्वरूप कहैल्ले । बेप्रकारेमूर्च्छा एक प्रेम रागनी मूर्च्छा पुत्रधनादि द्वे  
षथी मूर्च्छा । प्रेमवर्त्तिमूर्च्छा बेप्रकारे एक माया कपटादि धीजी लोजथी धनादिकनीमूर्च्छा । द्वेषवर्त्तिकामूर्च्छा बेप्रकारे एक क्रोधथी एक  
मानथी । मूर्च्छादिकर्मनो क्षय धर्माराधनथी होय तेमाटे आराधना कहैल्ले । बेप्रकारे आराधनाकही । एक चारित्ररूप धर्मने आराधिवो ते

केवलानांश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलज्ञानिना मियं कैवलिकौ साचासावाराधनाचेति कैवलिकाराधनेति ॥ सुयधम्मेत्यादौ ॥ विषयभेदेना राधनाभेद उक्तः  
 केवलिआराहणेत्यादौतु फलभेदेनेति तत्र अंतोभवांत स्तस्य क्रियां तक्रिया भवच्छेद इत्यर्थं स्तडेतु र्या राधना शैलेशौरूपा सा अतक्रियेत्युपचारात् एषाच  
 चायिकज्ञानिकेवलिनामेव भवति तथा कल्पेषु देवलोकेषु नतुज्योतिश्चारे विमानानि देवावासविशेषा अथवा कल्पाश्च सौधर्मादयो विमानानिच तदुप  
 रिवर्ति ग्रैवेयकादीनि कल्पविमानानि तेषु उपपत्ति रुपपातो जन्म यस्याः सकाशात् सा कल्पविमानोपपातिका ज्ञानाद्वाराधना एषाच श्रुतकेवल्यादौ  
 ना भवतीति एवफलाचेय मनतरफलद्वारेणोक्ता परपरयातु भवांतक्रियानुपातिन्येवेति ज्ञानाद्वाराधनानतरमुक्ता तत्फलभूताश्च तीर्थकरा स्तैर्वा सासम्यक्त  
 तादेशितावेति तीर्थकरान् दिस्थानकानुपातेनाह ॥ दोतित्यगरेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय कण्ठ्य नवर पद्म रक्तोत्पल तद द्वौरौ रक्तावित्यर्थः तथा चन्द्रगौरौ चद्रशु

तंजहा सुयधम्माराहणाचेवं चरित्तधम्माराहणाचेव केवलिआराहणा दुविहा पन्तत्ता तंजहा अंतकिरियाचेव  
 कप्पविमाणोववत्तियाचेव दोतित्यगरानीलुप्पलसमावन्नेणं प० तं० मुणिसुव्वएचेव अरिठ्ठणेमीचेव दोतित्य

धार्मिकीआराधना केवलीनें श्रुत अवधि मनपर्यव केवलनाणरूप श्रुताराधना । धार्मिकीआराधना बेप्रकारें कही श्रुतधर्म ते सिद्धांतनी आरा  
 धना चारित्रधर्म पचमहावृतादिकनी आराधना सेवना । केवलीनी आराधना बेप्रकार तेकहेछे । अंतक्रिया तेतवनो उच्छेद मोक्षजाय ज्ञायिक  
 केवलनाणी जेहथी नवग्रैवेयक अनुत्तरविमाने उपजे ते कल्पविमानोववत्तिया श्रुतकेवली प्रमुखने । बे तीर्थंकर नीलाकमलसरीखा वर्णेकरी ॥  
 मुनिसुव्वत बीसमां तथा अरिष्टनेमि बावीसमां । बेतीर्थंकर प्रियंगुवृक्षसम वर्णथी नीला कहिया मल्लिनाथ उगणीसमां तथा पार्श्वनाथ तेवीस

भावित्यर्थः गाथापयं पउमाभवासुपुजा रत्नाससिपुष्पदंतससिगोरा सुत्वयनेमीकाला पासोमणीपियंगामति ॥ १ ॥ तीर्थकरस्वरूपमनंतरशुभां तीर्थकर्तृ  
 लाभ तीर्थकरा स्तोत्रं च प्रवचन मतः प्रवचनेकदेशस्य पूर्वजिज्ञेयस्य दिष्टानकावतारायात् ॥ सप्तपवाएत्यादि ॥ सप्तो जीवेभ्यो हितः सत्यः संगमः सत्यवच  
 नया सया समीहः सप्रतिपद्य सप्रार्थनोप्यते ऽभिधीयते तत् सत्यप्रवादं तच्च तत् पूर्वज्ञ सकलश्रुतात् पूर्वजिज्ञेयमाणत्वादिति सत्यप्रवादपूर्व न्यायवष्टं  
 तत्परिमाणं च एकापदकोटी षट्पदाधिका तस्यां त्वेवसुनी यस्तु च तत्प्रभागविशेषो ऽध्ययनादिवदिति अनन्तरं षष्टपूर्वस्वरूपं मुक्ता मधुना पूर्वशब्द  
 साम्यात् पूर्वभद्रपदानवयस्वरूपमाह ॥ पुष्येत्यादि ॥ कथं नक्षत्रास्तावा नक्षत्रात्सरस्वरूपं सूत्रायेणाह ॥ उत्तरेत्यादि ॥ कथं नक्षत्रवन्तश्च धीपाः सप्त

गरा पियंगुसमावशेणं प० तं० मल्लीचेव पासेचेव दोतित्यगरापउमगोरा वशेणं प० तं० पउमप्पहेचेव  
 वासुपुज्जेचेव दोतित्यगराचंदगोरा वशेणं प० तं० चंदप्पजेचेव पुष्पदंतचेव सच्चप्पवायपुह्रस्सणं दुवेवत्थू  
 प० पुह्रजद्वयानस्कत्ते दुतारे प० उत्तरजद्वयानस्कत्ते दुतारे प० एवंपुह्रफग्गुणी उत्तरफग्गुणी अंतोणं

मा ॥ बेतीर्थकर कमलसरिरागोरा वशीकरी तेकहेळे । पदमप्रज लठा वासुपूज्य बारमां ॥ बेतीर्थकर चंद्रसरिरागौर कहिया वशीकरी । तेकहेळे  
 चद्रप्रज आठमा तथा पुष्पदंत बीजुं नाम सुविधिनाथ नवमांजिनवर ॥ एह तीर्थकर तीर्थना करनार तेतीर्थकर सत्यप्रवाद पूर्ववक्तुं जिज्ञां स  
 त्यवादळे तेप्रवचन तेहनीं एकप्रदेश तेचउदहळे तेवतीपूर्वना अधिकार कहेळे तेसत्यप्रवादपूर्वना जेअध्ययनकारिया । पूर्वशब्दमांटे पूर्वाज्ञाद्रप  
 दनक्षत्रना बेताराळे । एमज उत्तराज्ञाद्रपद नक्षत्रना बेताराळे ॥ एम पूर्वाफाल्गुनी तथा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रना बेतारा कहिया ॥ नक्षत्र

द्राष्टेति समुद्रद्विस्थानकमाह ॥ अंतोणमित्यादि ॥ अंतर्मध्ये मनुष्यक्षेत्रस्य मनुष्योत्पत्त्यादिविशिष्टाकाशखण्डस्य पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाणस्य शेष  
 कण्ठमिति मनुष्यक्षेत्रप्रस्तावा इतरक्षेत्रोत्पत्तीत्तमपुरुषाणां नरकगामितया द्विस्थानकावतारमाह ॥ दोचक्कवटीत्यादि ॥ द्वौ चक्रेण रत्नभूतप्रहरणविशे  
 पेण वर्त्तितुशीलं ययोस्तौ चक्रवर्त्तिनौ ॥ कामभोगति ॥ कामौच शब्दरूपे भोगाश्च गन्धरसस्पर्शाः कामभोगाः अथवा काम्यतद्वतिकामा मनोज्ञादित्यर्थः तेचते  
 भुज्यतइति भोगाश्च शब्दादय इति कामभोगाः नपरित्यक्ता स्ते यकाभ्यां तौ तथा ॥ कालमासेति ॥ कालस्य मरणस्य मास उपलक्षणंचैत त्वच्चाहोरात्रादे  
 स्ततश्चकालमासे मरणावसर इतिभावः कालमरण कृत्वा ऽधःसप्तम्यां पृथिव्यां तमस्तमायामित्यर्थः अधोग्रहणविना सप्तमी उपरिष्ठा चिन्त्यमानारत्नप्रभा  
 पि स्या दित्यधोग्रहण अप्रतिष्ठाने नरके पञ्चानां मध्यमे नैरयिकत्वेनोत्पन्नौ सुभूमोष्टमो ब्रह्मदत्तश्चद्वादश स्तत्रच तयो स्तयस्त्रिंशत्सागरोपमानि स्थितिरि  
 ति नारकानाञ्च सख्येयकालापि स्थिति र्भवतीति भवनपत्यादीनामपि ता न्दर्शयन् पञ्चसूत्रीमाह ॥ असुरेत्यादि ॥ असुरेन्द्रौ चमरवली तद्वर्जितानान्तत्वा

मणुस्सखेत्तस्स दोसमुद्दा प० तं० लवणेचेव कालोदेचेव दोचक्कवटी अपरिचत्तकामजोगा कालमासे का  
 लंकिच्चा अहेसत्तमाएपुढवीए अप्पइठाणेनए नेरइयत्ताए उवयन्ता तंजहा सुन्नूमेचेव वंजदत्तेचेव असुरिं

सहित द्वीपसमुद्रच्छे तेमाटे पैतालीसलाख योजन मनुष्यक्षेत्रच्छे तेहमां बेसमुद्रच्छे तेकहेछे । एक लवणसमुद्र वीजो कालोदधि समुद्र ॥ मनुष्य  
 क्षेत्रमा वेचक्रवर्त्तिना प्रस्तावथी इतरक्षेत्रमां ऊपना उत्तमपुरुष वे नरकमां गया कामजोग छाड्याविना कालकरी आयुपूर्णकरी हेठे सातमी  
 नरकपृथिवीये अप्रतिष्ठाननाम नरकावासाने विषे नारकीपणे ऊपना तेतीससागरना आज्ञानेविषे । एक सुभूम चक्रवर्त्ति वीजो ब्रह्मदत्त

मानिकवर्जितानान्तद्वयेषां च भवनवासिना म्देवाना मसुरेन्द्रवर्जना नागकुमारादीन्द्राणामित्यर्थः उत्कर्षतोऽपेक्ष्योपमेकिस्त्रिदूनेस्थितिः प्रज्ञप्ता उक्तच चम  
रवलि सारमहिय सेसाणसुराणआउयवुच्छ दाहिणदिवडुपलिय दोदेसुणत्तरिक्खाण ॥ १ ॥ उत्कर्षत एवैतत् जघन्यतस्तु दशवर्षसहस्राणीति आह च दसभव  
णवणयराण वाससहस्राठिईजहन्नेण पलिओवममुक्कोसं बतरियाणविद्याणेज्जन्ति ॥ १ ॥ शेष सुगम नवर सौधर्मादिष्वियस्थितिः दोसाद्विसत्तसाहिय ४ दस  
५ चोहस ६ सत्तरेव ७ अयराइ' सोहम्माजासुक्को तदुवरिइक्किक्कारोवित्ति ॥ १ ॥ इयमुत्कृष्टा जघन्यातु पलियअहिय २ दोसा २ ३ साहिया ४ सत्त ५  
दसय ६ चोहसय ७ सत्तरससहस्रारे ८ तदुवरिइक्किक्कारोवित्ति ॥ १ ॥ देवलोकप्रस्तावात् स्थादिद्वारेण देवलोकद्विस्थानकावतारं सप्तसूत्राह ॥ दोसुद

दवज्जियाणं जवणवासीणं देवाणं देसूणाइं दोपलिनुवमाइं ठिई प० सोहम्मेकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दोसा  
गरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ईसाणेकप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं दोसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता सणंकुमारे  
कप्पे देवाणं जहन्नेणं दोसागरोवमाइं ठिई पणत्ता माहिदेकप्पे देवाण जहन्नेणं साइरेगाइं दोसागरोव

आरमो चक्रवर्ति ॥ नारकीनी असख्यातकालनी स्थितिहै तिम जवनपतीनी पणि तेकहैहै । असुरेन्द्र ते चमरेद्र बलेद्र बर्जाने बीजा नागकुमा  
रेद्रादिकनी उत्कृष्टो देशेऊणीं बे पल्योपमनी आऊखो कहियो जघन्य दशहजारवर्षनी चमरेद्र तथा बलेद्रनी उत्कृष्टी सागरोपमनी भाभेरीथिति  
है ॥ एम सौधर्मदेवलोके देवतानी उत्कृष्टी बेसागरोपमनी थितिकही ॥ ईशानदेवलोके उत्कृष्टी भांजेरी बेसागरोपमनी थितिकही ॥ सनत्कु  
मार तीसरेदेवलोके देवताने जघन्य बे सागरोपमनी थितिकही ॥ माहेद्रदेवलोके देवतानी जघन्य भाभेरी बे सागरोपमनी थितिकही ॥ देव

त्यादि ॥ कल्पयो देवलोकयो स्त्रिय' कल्पस्त्रियो देव्य परतो नसन्ति शेषं कण्वमिति नवरं ॥ तेजलेसन्ति ॥ तेजोरूपा लेख्याः येषान्ते तेजोलेख्या स्तेच सौध  
 र्मेशानयोरेव नपरतः तयोश्च तेजोलेख्याएव नेतरे आहच किण्वानीलाकाज तेजलेसायभरणवंतरिया जोडरासोहम्मीसाणे तेजलेसामुण्यव्वत्ति ॥ १ ॥  
 ॥ कायपरियारगत्ति ॥ परिचरन्ति सेवते स्त्रियमिति परिचारकाः कायतः परिचारका, कायपरिचारका एवमुत्तरत्रापि नवर स्पर्शादिपरिचारकाः  
 स्पर्शादे रेवोपशान्तवेदोपतापा भवंतीत्यभिप्राय. आनतादिषु चतुर्षु कल्पेषु मनःपरिचारका देवा भ नोति वक्तव्ये विद्वानकानुरोधात् दोइन्देत्युक्त

माइंठिई प० दोसुकप्पेसु कप्पत्थियानं पप्पत्तातं तं० सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दोसुकप्पेसुदेवा तेजलेस्सा  
 पप्पत्ता तंजहा सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दोसुकप्पेसुदेवा कायपरियारगा पप्पत्ता तंजहा सोहम्मेचेव ईसाणे  
 चेव दोसुकप्पेसुदेवा फासपरियारगा पप्पत्ता तंजहा सणकुमारेचेव माहिदेचेव दोसुकप्पेसुदेवा रूवपरि  
 यारगा पप्पत्ता तंजहा वंजलोएचेव लतएचेव दोसुकप्पेसुदेवा सहपरियारगा पप्पत्ता तंजहा महासुक्कोचेव

ताना अधिकारमांटे देवीनो अधिकार कहैछै ॥ वे देवलोकने विषे देवलोकनीस्त्री देवागनाछै सौधर्मदेवलोकै ईशानदेवलोकै । वेदेवलोकै देवताने  
 तेजोलेख्या कह्यी सौधर्मदेवलोकै तथा ईशानदेवलोकै ॥ वेदेवलोकै देवताने कायायेकरी देवागनानो जोगछै मनुष्यनीपरे । सौधर्मदेवलोकै ईशान  
 देवलोकै । वे देवलोकै देवताने फरसथी आलिंगनादिकथी स्त्रीनोजोग कहियो सनत्कुमार तीसरे देवलोकै माहेद्र चउथे देवलोकै । वेदेवलोकै देवता  
 नेरूपदीठाथी जोगपूर्णथाय वून्ह पाचमैदेवलोकै लातकछठेदेवलोकै ॥ वेदेवलोकै देवता देवागनाना शब्दथी जोगसेवेछै महाशुक्र सातमैदेवलोकै

प्राणतादिषु द्वाविन्द्राविति गाथा च दोकायणवियारा कप्पाफरिसेणदीन्द्रिदोरूवे सहेदोचउरोमणे उवरिंपरियारणानत्थिति ॥ १ ॥ इयच्च परिचार  
णा कर्मत, कर्मच जीवाः स्वहेतुभिः कालत्रयेपि चिताद्यास्यं कुर्वन्तोत्याह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ सूत्राणिषट् सुगमानि नवरं जीवा जंतवो खंयाक्खाल  
क्कारे द्वयोः स्थानयो रात्रययोः त्रसंस्थावरकायलक्षणयोः समाहारो द्विस्थानं तत्रमिथ्यात्वादिभिरेवनिवर्त्तिताः सामान्येनोपार्जिताः वक्ष्यमाणावस्थाषट्  
कथोग्योक्तताः द्वयोर्वास्थानयो निर्हन्ति र्येषान्ते द्विस्थाननिर्वृत्तिका स्तान् पुद्गलान् कार्मणान् पापकर्मधातिकर्मसर्वमेववा ज्ञानावरणादि तद्भावस्तत्ता  
तया पापकर्मतया तद्रूपतयेत्यर्थः चित्तवन्तोवा अतीते काले चिन्वति वा सम्प्रति चेषन्तिवा अनागते काले केचिदिति गम्यते चयनं कपायादिपरिणतस्य  
कर्मपुद्गलोपादानमात्रं उपचयनतु चित्तस्या पाधाकाल मुक्ता ज्ञानावरणीयादितया निषेकः सचैव प्रथमस्थितौ बहुतरं कर्मदलिकं निषिञ्चति ततो द्विती

सहस्रारेचेव दोइंदामणपरियारगा पणत्ता तंजहा पाणएचेव ञ्जुएचेव जीवाणंदुष्ठाणनिवृत्तिए पोग्ग  
ले पावकम्मत्ताए चिणंसुवा चिणतिवा चिणिरुसंतिवा तजहा तसकायनिवृत्तिएचेव थावरकायनिवृत्तिए

सहस्रार आठमैदेवलोकै ॥ बेइद्रने मनथी देवागनाना जोगनी सेवाळे प्राणतेद्र नवमा दसमां देवलोकनो धणी अच्युतेद् इग्यारमा बारमानोधणी  
नवमा दशमा इग्यारमा बारमा देवलोकै मनथीजोगवेळे पणि बेठाणाना अधिकारमांटे इंद्र कहिया ॥ एजोगादिकनी इच्छा ते जीवने वे  
थानकै ऊपना कर्मथी ऊपनाजेळै तेमांटे पापकर्मनुं स्वरूप कहैळै । राजा मिथ्यात्वादिकै करी पापकर्मपणे पुदगलनो लेवुं चिणवु कहिये चिणता  
हुया अतीतकाले वर्तमानकाले चिणेळै आगामिकाले चिणस्ये । तेरुहैळै । तसकायनिवर्तित जे बेइद्रियादिक तसकायमा उपजीने पापकर्मनो जो

यायां विशेषहीनमेव ॥ जावुक्कोसियाएविसेसहीणनिसिचइन्ति ॥ वन्धनन्तु तस्यैव ज्ञानावरणादितया निषिक्तस्य पुनरपि कषायपरिणतिविशेषा त्रिकाचन  
मिति उदीरणंतु अनुदयप्राप्तस्य करणेनाकृष्योदये प्रक्षेपणमिति वेदन मनुभवः निर्जरा कर्मणी ऽकर्मताभवनमिति कर्मच पुद्गलात्मकमिति पुद्गलान् द्रव्य  
त्रैककालभावे द्विस्थानकावतारेण निरूपयन्नाह ॥ दुपएसौत्यादि ॥ सूत्रत्रयोविंशतिः सुगमाचेय नवरं एवं यावत्कारणात् दुसमयद्विएद्रत्यादिसूत्राण्येकवि  
ंशति र्चांचानि कालं पंचद्विपचाष्टभेदा वर्णगन्धरसस्पर्शाश्चा श्रित्येति वाचनाचैव ॥ दुसमयद्वियापोगलेत्यादि ॥ द्विस्थानकस्यचतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥

चेव उवचिणसुवा उवचिणंतिवा उवचिणिस्सतिवा वंधिसुवा वंधंतिवा वंधिस्संतिवा उदीरिसुवा उदीरं  
तिवा उदीरिस्संतिवा वेदिसुवा वेदिंतिवा वेदिस्संतिवा णिज्जारिसुवा णिज्जारिंतिवा णिज्जारिस्संतिवा दु  
पएसियाखंधा ञ्णंता पस्सत्ता दुपएसोगाढा पोग्गला ञ्णंता प० एवंजाव दुगुणलुस्कापोग्गला ञ्णंता

गिवुं तथा थावरकायनिवर्तित जे पृथिव्यादि पांचथावरमां अवतरी पापकर्मनो जोगिवुं एहवाकर्मपुदगल गृहैछै ॥ एम गहिया कर्मनो आवाधा  
कालमुंकीनें धापवुंविशेषथी तेमाथी हीनकरवुं एतले आवाधाकाल जेतलुंओळु तेउपचय अतीतकालेकीधा तेकर्मनुं कषायथी त्रिकाचवुं तेबंध तेवां  
धताहुया बांधैछै बाधस्ये । एमज त्रसथावरपणांमै उदीरण जेउदयनथीआव्या तेकारणथी बलात्कारे उदयआणै उदीरताहुया उदीरैछै उदीरसे वे  
दवु तेजोगिवुं वेदताहुया वेदैछै वेदसे निर्जरा जे जोगव्यांपळी कर्मते अकर्मथाय निर्जरताहुया निर्जरेछै निर्जरसे त्रिणकालै एजीव त्रसथावरपणै ॥  
कर्मते पुदगलरूपछै तेपुदलनुं स्वरूपकहैछै । बेप्रदेसियापुदगलनाखंध अनंतछै । बेआकाशना प्रदेशने अवगाही आश्रयीरहियाछै एहवा अनंतापुद



तत्समाप्तीच श्रीमदभयदेवसूरिविरचिते स्थानाख्यतृतीयाष्टविवरणे द्वितीयमध्ययनं द्विस्थानकाभिधानं समाप्तमिति ॥ श्लोका. १६७५ ॥ २ ॥  
द्विस्थानकानन्तरं द्विस्थानकमेवभवति सख्याक्रमप्रामाण्यादित्यनेन सर्वधेनायातस्य चतुरनुयोगंदारस्य चतुरद्वेषकस्यास्य तत्रापि द्वितीयाध्ययनात्योदेशके  
जोवादिपर्यायाउक्ता अस्याप्यध्ययनस्य प्रथमोद्देशके तएवाभिधीयतइत्येवं सर्वधस्यै तत् प्रथमोद्देशकस्य तत्राप्यनतरीदेशकात्यसूने पुन्रलधर्माउक्ता एतत्  
प्रथमसूनेतु जोवधर्माउच्यत इत्येवसर्वधस्यै तदादिसूनस्य ॥ तत्रोद्देशेत्यादे ॥ व्याख्या साच सुकरैव नवर मिंदनादेश्वर्या दिद्रः नामसच्चा तदेव यथार्थं मिं  
द्वेत्यक्षरात्मक मिंद्रोनामैद्रो ऽथवा सचेतनस्या चेतनस्यवा यस्यैद्रइत्ययथार्थं नामक्रियते सनामनामवतीरभेदोपचारात् नामचासाविंद्रस्येति नामैद्रो ऽथवा  
नामैवेद्र इन्द्रार्थं शून्यत्वानामैद्रइति नामलक्षणं पुनरिदं यद्वस्तुनोभिधानं स्थितमन्यार्थतदर्थनिरपेक्षः पर्यायानभिधेयं चनामयादृच्छिकज्ञतथेति ॥ १ ॥  
प्रथमार्थः यद्वस्त्वित्यादिना यथार्थं मिद्रइत्याद्युक्तं स्थित मित्यादिना त्वयथार्थं गोपालादा विंद्रेत्यादि यादृच्छिक मनर्थकं डित्यादीति अथवा यदिन्द्रनामार्थं  
निरपेक्षं गोपालादिवस्तुन इन्द्रइत्यादिक मभिधानं यथार्थतया शक्रादा वन्यवार्थं स्थितं तन्नामेति इन्द्रादिवस्तुनोवा अभिधानं मिंदनामार्थनिरपेक्षं सन्नो  
पालादा वन्यवार्थं स्थितं नामेति तथा इन्द्राद्यभिप्रायेण स्थाप्यतइति स्थापना लेख्यादिकर्म सैवद्रः स्थापनेन्द्र इन्द्रप्रतिमा साकारस्थापनेन्द्रः अज्ञादिन्यास

पण्यत्ता ॥ दुष्ठाणंसम्यत्ता ॥ २ ॥ तच्च इदापण्यत्ता तजहा णामिंदे ठवणिंदे दद्विंदे

गलत्वे । एम यावत् वेगुणलूखा पुदगल अनंता कहिया जगवंतें ॥ इति द्विस्थानकनामै बीजुअध्ययन पूरोथयी ॥ २ ॥  
नामथी इद्र जे वस्तुनो नाम इंद्र । इद्रनी प्रतिमा ते थापना इद्र । जे जव्यजीव आवतेभवे इंद्र थाय ते द्रव्येद्र । अक्षरथी इंद्रसिंह अथवा वस्तुनो

स्वितरइति स्थापनालक्षणमिदं यत्तुतदर्थवियुक्तं तदभिप्रायेणयच्चतत्करणि लेप्यादिकर्मतत्स्था पनेतिक्रियते ल्पकालचेति ॥ १ ॥ तथा लेप्यगह्वरीहृत्यिति  
 एस सम्भावियाभवेठवणा होइअसभावोपुणहृत्थितिनिरागिइअक्खोत्ति तथा द्रवतिगच्छति तांस्तान् पर्यायान् द्रूयतेवा तैस्तैः पर्यायै द्रौर्वासत्ताया अवयवो  
 विकारोवा वर्णादिगुणानां द्रावः समूहइतिद्रव्य तच्च भूतभावंभाविभावचेति आहच दवएदुयतेदीरव यवोविगारोगुणाणसदावो दब्बंभवंभाव स्सभुयभाव  
 चजजोगति ॥ १ ॥ तथा भूतस्यभाविनोवा भावस्यहिकारणंतुयत्तोके तत्द्रव्यतत्वज्ञैः सचेतनाचेतनगदित ॥ २ ॥ तथा अनुपयोगो द्रव्य मप्रधानंचेति तत्र  
 द्रव्यचासाविन्द्रश्चेति द्रव्येन्द्रः सच द्विधा आगमतो नोआगमतश्च अत्रागमतः खल्वागममधिकृत्य ज्ञानापेक्षयेत्यर्थः नोआगमतस्तु तद्विपर्यय माश्रित्यतत्रा  
 गमतइन्द्रशब्दोध्येता नुपयुक्तो द्रव्येन्द्रो ऽनुपयोगो द्रव्यमितिवचनात् अयमेवार्थो मगल माश्रित्य भाष्येउक्तं स्तथाहि आगमओणुवउत्तो मगलसद्वाणुवासिओ  
 वत्ता तन्नाणलङ्घिजुत्तो विणोवउत्तोत्तिनोदब्बंति ॥ १ ॥ तथा नोआगमत स्तिविधो द्रव्येन्द्र स्तद्यथा ज्ञशरीरद्रव्येन्द्रो भव्यशरीरद्रव्येन्द्रो ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यति  
 रित्तो द्रव्येन्द्रश्चेति तत्रज्ञस्य शरीर ज्ञशरीरमेव द्रव्येन्द्रः ज्ञशरीरद्रव्येन्द्र एतदुक्तमभवति इन्द्रपदार्थज्ञस्य यच्छरीर मात्मरहित न्तदतीतकालानुभूत तद्भावानुवृत्त्या  
 सिद्धशिलातलादिगतमपि घृतघटादिन्यायेन नोआगमतो द्रव्येन्द्रइति इन्द्रज्ञानशून्यत्वाच्च तस्येह सर्वनिषेधएवनीशब्दः तथा भव्यो योग्य इन्द्रशब्दार्थं ज्ञास्यति  
 योनतावद्विजानाति सभव्यइति तस्य शरीर भव्यशरीर न्तदेवभव्येन्द्रो भव्यशरीरद्रव्येन्द्र अयमत्रभावार्थो भाविनीवृत्ति मङ्गीकृत्ये न्द्रोपयोगाधारत्वा न्मधुघ  
 टादिन्यायेनैव तद्वालादिशरीर भव्यशरीरद्रव्येन्द्रइति नोशब्दः पूर्ववत् उक्तञ्च मङ्गलमधिकृत्य मगलपयत्यजाणय देहोभव्यस्सवासजीवोवि नोआगमओ  
 ऽब्ब आगमरहितओत्तिजभणियति ॥ १ ॥ ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तद्रव्येन्द्रो भावेन्द्र कार्येष्व व्यापृत आगमतो नुपयुक्तद्रव्येन्द्रवत् तथा यच्छरीर मात्मद्र  
 व्यम्वा तीतभावेद्रपरिणाम न्तच्चोभयातिरिक्तद्रव्येन्द्रो ज्ञशरीरद्रव्येन्द्रवत् तथा योभावेन्द्रपर्यायशरीरयोग्यः पुद्गलराशि र्यच्च भावीद्रपर्याय मात्मद्रव्य तदप्युभया

तिरिक्तोद्भेदः भव्यशरीरद्रव्येन्द्रवत् सचा वस्थाभेदेन विविध स्वरूपा एक भविको वक्ष्यायुक्तो ऽभिमुखनामगोत्रेति तत्रैकस्मिन् भवेत्तस्मिन् त्रैवातिप्रान्ते भावो एकभविको योनन्तरएव भावेन्द्रतयो त्यस्यतेइति सचोक्तार्थत स्त्रीणि पण्योपमानि भवन्ति देवकुर्वादिमिथुनकस्य भवनपत्यादीन्द्रतयो त्यतिसंश वादिति तथा सएवेन्द्रायुर्वन्धानन्तर स्वप्नमायुरनेनेति वक्ष्यायुक्त्यते सचोक्तार्थतः पूर्वकोटिचिभाग यावद स्मात्परतः आयुक्तवन्धाभावात् तथा आभिमुखे सन्मुखे जघन्योत्कर्षाभ्यां समयान्तर्मुहूर्त्तानन्तरभावितयानामगोत्रे इन्द्रसम्बन्धिनी यस्यस तथा तथा भावेश्वर्ययुक्ततीर्थकरादिभावेन्द्रापेक्षया ऽप्रधानत्वा कृतादिरपि द्रव्येन्द्रएव द्रव्यशब्दस्या प्रधानार्थेपि प्रवृत्तेरिति भावेन्द्रस्त्वह विस्थानकानुरोधा न्नोक्त स्तत्रक्षणक्षेद भाव मिन्दनक्रियानुभवनलक्षणपरिणा म माणित्येन्द्रः इन्दनपरिणामेन भवतीतिवा सचासाविन्द्रयेति भावेन्द्रो यदाह भावोविवक्षितक्रिया नुभूतियुक्तोहिवैसमाख्यातः सर्वत्रैरिन्द्रादिव दिहे दनादिक्रियानुभवात् ॥ १ ॥ सच द्विधा आगमतो नोआगमतश्च तत्रागमत इन्द्रज्ञानोपयुक्तो जीवो भावेन्द्रः कथं मिहेन्द्रोपयोगमात्रा तन्मयता वगम्य ते नह्यग्निज्ञानोपयुक्तो माणपको ग्निरेव दहनपचनप्रकाशनाद्यर्थक्रियाप्रसाधकत्वाभावादितिचेन्मा भिप्रायापरिज्ञानात् संचिदुज्ञानमवगमो भाव इत्य नर्थान्तर न्तत्रार्थाभिधानप्रत्यया सुग्यनामधेयाइति सर्ववादिना भविसंवादस्थानं यथाकोयंघटः किमयमाह घटशब्दकिमस्यज्ञानघटइति अग्निरितिच यज्ज्ञानं तदव्यतिरिक्तो ज्ञाता तत्रक्षणो गृह्यते अन्यथा तज्ज्ञाने सत्यपि नोपलभ्येता ऽतन्मयत्वात् प्रदीपहस्तान्धवत् पुरुषान्तरवद्वा नचानाकारं त त्पदार्थान्तरव द्विवक्षितं पदार्थापरिच्छेदप्रसङ्गात् वन्धाव्यभावश्च ज्ञानाज्ञानसुखदुःखपरिणामान्यत्वात् आकाशव द्वाचानलः सर्वएव दहनाद्यर्थक्रियाप्र साधको भस्मच्छन्नाग्निना व्यभिचारादिति क्तप्रसङ्गेन नोआगमतो भावेन्द्र इन्द्रनामगोत्रे कर्मणीवेद्यन् परमैश्वर्यभाजनं सर्वनिधेधवचनत्वा न्नोश ब्दस्य यत स्तत्र नेन्द्रपदार्थज्ञान मिन्द्रव्यपदेशनियन्धनतया विवक्षित मिन्दनक्रियायाएवच विवक्षितत्वात् अथवा तथाविधज्ञानक्रियारूपोयपरिणामः

सनागमएव केवलो नचानागम इत्यतो मिथ्यवचनत्वा न्नोशब्दस्य नोआगमत इत्याख्यायतइति ननु नामस्थापना द्रव्येष्विन्द्राभिधान विवक्षितभावशू  
न्यत्वात् द्रव्यत्वंच समान वर्त्तते ततश्च कण्ठाविशेषः आहच अभिहाणंदब्बत्तंतदत्यसुत्तत्तणचतुल्लाहं कोभाववज्जियाण नामाईणपद्विसेसोत्ति ॥ १ ॥  
अत्रोच्यते यथाहि स्थापनेन्द्रेखलु इन्द्राकारो लक्ष्यते तथाकर्तुं सङ्गतेन्द्राभिप्रायो भवति तथा द्रष्टुं स्तदाकारदर्शना दिन्द्रप्रत्यय स्तथा प्रणतिकृतधियश्च  
फलाधिः स्तोतुं प्रवर्त्तते फलच प्राप्नुवन्ति केचिद्देवतानुग्रहा न्नतथा नामद्रव्येन्द्रयोरिति तस्मात् स्थापनाया स्तावदित्य भेदइति आहच आगारा  
भिप्पाओ वुद्धीकिरियाफलचपाएण जहदौसइठवणिदे नतहानामिंददब्बिदेत्ति ॥ १ ॥ यथाच द्रव्येन्द्रो भावेन्द्रकारणता प्रतिपद्यते तथोपयोगा  
पेक्षाया मपि तदुपयोगतामादय त्यवाप्तवांश्च नतथा नामस्थापनेन्द्रा वित्ययं विशेषइति आहच भावस्तकारणं जह दब्बभावीयतस्सपज्जाओ उवओगप  
रिणइमओ नतहानामतवाठवणत्ति ॥ १ ॥ उक्तानामस्थापनाद्रव्येन्द्राः इन्द्रानी आवेन्द्र त्रिस्थानकावतारेणाह ॥ तओइदेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर ज्ञानेन ज्ञा  
नस्य ज्ञानेवा इन्द्रः परमेश्वरो ज्ञानेन्द्रो अतिशयवत् श्रुताद्यन्यतरज्ञानवशविवेचितवस्तुविशरः केवलीवा एवंदर्शनेन्द्रः क्षायिकसम्यग्दर्शनी चारित्रेन्द्रो यथा  
ख्यातचारित्रः एतेषाच भावेन सकलभावप्रधानक्षायिकलक्षणेन विवक्षितक्षायोपशमिकलक्षणेनवा भावतः परमार्थतो वेन्द्रत्वात् सकल संसार्यप्राप्तपूर्वगु  
णलक्ष्मोलक्षणपरमैश्वर्ययुक्तत्वात् भावेन्द्रतावसेयेति उक्त माध्यात्मिकैश्वर्यापेक्षया भावेन्द्रत्रैविध्य मथवा ह्यैश्वर्यापेक्षयातदेवाह ॥ तओइदेत्यादि ॥ भावितार्थ

॥ तनु इंदा पस्सत्ता तंजहा णाणिंदे दंसणिंदे चरिन्तिदे ॥

धणी गोपेद्र जूमीन्द्र इत्यादि नाम ॥ वली त्रिण प्रकारे इद्र कहिया तेकहैछै । नाणेद्र केवली पूर्ण नाणवंत । दर्शनेंद्र ते क्षायिक समकितनोधणी

नवरं देवा वैमानिकाः ज्योतिष्कवैमानिकावा रूढेः असुरा भवनपतिविशेषा भवनपतिव्यन्तरावा सुरपर्युदासात् मनुजेंद्र चक्रवर्त्त्यादिरिति त्रयाणामप्येषा वै  
 क्रियकरणादि शक्तियुक्ततये द्रत्वमिति विकुर्वणानिरूपणायात् ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रत्रयीकण्ठ्या नवरं बाह्यान् पुद्गलान् भवधारणीयशरीरा नवगाढत्वेन  
 प्रदेशवर्त्तिनो वैक्रियसमुपातेन पर्यादाय गृहीत्वै काविकुर्वणा क्रियतइति शेष स्तानपर्यादाय यातु भवधारणीयरूपैव सा न्या यत्पुन भवधारणीयस्यैव कि  
 च्चिद्विशेषापादनं सा पर्यादाया प्यपर्यादायापीति तृतीया व्यपदिश्यते अथवा विकुर्वणा भूषाकरण तत्र बाह्यपुद्गला नादाया भरणादौन् अपर्यादाय केश

तत्त इन्दा पस्सत्ता तंजहा देविंदे असुरिंदे मणुस्सिंदे तिविहा विगुव्वाणा पस्सत्ता  
 तंजहा वाहिरएपोग्गले परिष्साइत्ता एगाविगुव्वाणा वाहिरएपोग्गले अपरिष्साइत्ता  
 एगा विगुव्वाणा वाहिरएपोग्गले परियाइत्तावि अपरियाइत्तावि एगाविगुव्वाणा

घरित्रेंद्र यथाख्यातचारित्र ॥ वली त्रिणा इद्र कहिया तेकहेछे । देवेद्र जोतिषी वैमानिक ना । असुरेद्र भवनपती व्यंतर ना । मनुष्येद्र चक्रवर्त्त्यादि  
 एह त्रिणने वैक्रियविकुर्वणा होय तेमाटे विकुर्वणानो गधिकार कहेछे । त्रिणप्रकारे विकुर्वणा कही तेकहेछे । भवधारणी जे मूलशरीर अवगाही  
 जेतलुत्वेन रहियोछे तेहथी अलगा क्षेत्रनां पुद्गल वैक्रियसमुदधाते करी गृहीने जे नवारूपनी विकुर्वणा करे ते एक विकुर्वणा ॥ जे बाह्यक्षेत्रना  
 पुद्गल अणालीधे मूलगाज शरीरमाहिला पुद्गल विशिष्ट गृहीने विकुर्वणा करे ते बीजी विकुर्वणा । बाह्यपुद्गल गहीने तथा अणगहीने एतले  
 काईक बाह्यपुद्गल गहीने केतलाएक मूलशरीरना लिये एम विकुर्वणा ते तीजी विकुर्वणा ॥ वली त्रिणप्रकारे विकुर्वणा कही तेकहेछे । अभ्यतर

નલસમારચનાદિના ઉભયતસૂ ભયથેતિ અથવા અપર્યાદાવેતિ લક્ષલાસસપ્પાદોના રક્તલ્પણાદિકરણલક્ષણેતિ એવ દિતીયસૂત્રમપિ નવર મભ્યત્તરપુદ્ગલા ભવધારણીયેનો દારિકેનવા શરીરેણ યે લેત્રપ્રદેશમવગાઢા સ્તેષ્વેવ યે વર્તન્તે તે અવસેયા વિભૂષાપક્ષેતુ નિષ્ઠૌવનાદયો મ્યતરપુદ્ગલાદિતિ ॥ તતીયન્તુ વાહ્યા મ્યતરપુદ્ગલયોગેન વાચ્ય તથાહિ ઉભયેષા મુપાદાના જ્ઞવધારણીયનિષ્પાદન તદનન્તર ન્તસ્યૈવ કૈશાદિરચનચ્ચ અનાદાના ચિરવિકુર્ચિતસ્યૈવ મુખાદિવિકારકરણ મુભયતસુ વાહ્યામ્યતરાણા મનભિમતાના માદાનતા ન્યેષાચ્ચા નાદાનતો ઽનિષ્ટરૂપભવધારણીયેતરરચનમિતિ અનન્તર મ્વિકુર્ચ્વણોક્તા સાચ નાર

તિવિહા વિઝઘ્ણા પન્નત્તા તંજહા અપ્પંતરપુોગ્ગલે પરિયાહત્તા ણગા વિઝઘ્ણા અપ્પંતરપુોગ્ગલે અપરિયા  
હત્તા ણગા વિઝઘ્ણા અપ્પંતરપુોગ્ગલે પરિયાહત્તા વિ અપરિયાહત્તાવિ ણગા વિઝઘ્ણા તિવિહા વિઝઘ્ણા  
પન્નત્તા તંજહા વાહિરપ્પંતરપુોગ્ગલે પરિયાહત્તા ણગા વિઝઘ્ણા વાહિરપ્પંતરેપોગ્ગલે અપરિયાહત્તા ણગા  
વિઝઘ્ણા વાહિરપ્પંતરપુોગ્ગલે પરિયાહત્તા વિ અપરિયાહત્તા વિ ણગા વિઝઘ્ણા તિવિહા નેરહયા પન્નત્તા

પુદગલ તે જવધારણી તથા ઔદારિક શરીરે લેત્રપ્રદેશે અવગાહી જે પુદગલ તેમાહિજ વિકુર્વણા કરે તે એક વિકુર્વણા । અમ્યંતર પુદગલ અણગહી એક બીજી વિકુર્વણા । એમ અમ્યંતર પુદગલ કાર્ડક ગહીને કાર્ડક અણગહીને ત્રીજી વિકુર્વણા ॥ વલી ત્રિણપ્રકારે વિકુર્વણા કહી તેકહેલ્લે । વાહ્ય અને અમ્યંતર પુદગલ ગૃહીને એક વિકુર્વણા । વાહ્ય અમ્યતર પુદગલ અણગહીને એક બીજી વિકુર્વણા । વાહ્ય અમ્યંતર પુદગલ ગહીને કાર્ડક અણગહીને એક ત્રીજી વિકુર્વણા । હહા કેતલાએક જાવ બહુશ્રુત ગમ્યલ્લે । વિકુર્વણા નારકીને પણ હોઈ તેમાડે નારકીનો અધિકાર કહેલ્લે ॥ ત્રિણ

काणामप्यस्तीति नारका निरूपयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ कंठ्य नवरं कतीत्यनेन संख्यावाचिनो ह्यादयः संख्यावन्तो ऽभिधीयन्ते अयच्चा न्यत्र प्रणविशि  
ष्टसंख्यावाचकतया रूढोपीह सख्यामात्रे द्रष्टव्यः तन्नारकाः कतिकतिसख्याता एकैकसमये येउत्पन्नाः सतः सञ्चिता कल्युत्पत्तिसाधर्म्या हुङ्गा राशी  
कृता स्ते कतिसञ्चिता स्तथा नकति नसख्याता इत्यकति असख्याता अनन्तावा तत्रये अकल्यकति असख्याता असंख्याता एकैकसमये उत्पन्नाः संत स्त  
थैव सञ्चिता स्ते अकतिसञ्चिता स्तथा यः परिणामविशेषो नकतिनाप्यकतीति शक्यते वक्तु सोऽवक्तव्यकः सचैक इति तत्सञ्चिता अवक्तव्यकसञ्चिताः स  
मयेसमये एकतयो त्पन्नाइत्यर्थ उत्पद्यन्ते हिनारका एकसमये एकादयो ऽसख्येयान्ता उक्तंच एगेवदीवतित्रिव सखमसंखायएगसमएण उववज्जतेचइया  
उब्बट्ठताविएमेवति ॥ १ ॥ एतदेव परिमाण मेतदेवनारकाणामपि यतउक्तं सखापुणसुरवरतुल्लत्ति कतिसञ्चितादिकमर्थमसुरादीनां दंडकोक्ताना मति

तंजहा कतिसंचिया अकतिसंचिया अवत्तव्वगसंचिया एवमेगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया । तिविहा परि  
धारणा पस्सत्ता तंजहा एगेदेवे अन्तेदेवे अन्तेसिंदेवाणं देवीनुय अज्जिजुंजियअज्जिजुंजिय परियारेइ । अप्प

प्रकारे नारकी कहिया ते कहेछे । एक समय केतला संख्याये उपना छे ते कति सञ्चिता । एक समय असख्याता उपजे ते अकति सञ्चिता समये  
एकेको उपजे ते अवक्तव्य सञ्चिता कहिये । उपजवानी सख्याये एकठा थया ते कति सञ्चिता नारकी । एक समय एक वे त्रिण उपजै सरयाता  
पणि उपजै असंख्याता पणि उपजै एक समय त्रिण प्रकारे ॥ इम, एकेद्री वजीने चौबीस दडक वैमानिक ताइ एकेद्रीमा एक समये असख्या  
ता अनता उपजै पणि एक वे तथा सख्याता न उपजै तेमाटे अतिशब्द एकज आवे ॥ त्रिण प्रकारे परिचारणा ते देवमैथुन सेवा ते कहिये ।

दिशन्नाह ॥ एवमिति ॥ नारकवक्षेष्वा शतुर्विंशतिदण्डकोक्ता वाच्या एकेंद्रियवर्जाः यत स्तेषु प्रतिसमयमसंख्याता अनन्तावा अकतिशब्दवाच्याएवोत्प  
यन्ते नत्वेकः संख्यातावाइति आहच अणुसमयमसखिज्जा सखिज्जाओयतिरियमणुयाय एगिदिएसुगळे आराईसाणदेवाय ॥ १ ॥ एगोअसखभागो  
वट्टइउव्वट्टणोववायन्मि एगनिगोएनिच्च एवसेसेसुविसएवत्ति ॥ १ ॥ अनन्तरसूत्रे कतिसञ्चितादिको धर्म्मो वैमानिकाना देवाना मुक्तो ऽधुना देवाना सा  
मान्येन परिचारणाधर्मनिरूपणायह ॥ तिविहापरौल्यादि ॥ कंठ्य न्नवर परिचारणा देवमैथुनसेवेति एकः कश्चिद्देवो नसर्वोऽप्येवमिति कि ॥ अन्नेदेवेत्ति ॥  
अन्यान्देवा नत्पार्जिकान् तथा न्येषा देवानां सत्का देवौच्चा भित्थुज्या २ श्लिष्याश्लिष्य वशीकृत्यवा परिचारयति परिभुंक्ते वेदवाधोपशमायेति नच नसम्भव  
ति देवस्य देवसेवा पुंस्त्वेने त्याग्रङ्गनीय मनुष्येष्वपि तथाश्रयणा न्नाचा नार्थे नरामरयोः प्रायो विशेषोस्ती त्येकएवाय प्रकारो देवदेवौना मन्यत्त्वसामान्या  
दतएव इयोरपि पदयो रेकः क्रियाभिसम्बन्धइति एव मात्मीया देवौः परिचारयतीति द्वितीय स्तथा त्मानमेव परिचारयति कथ मात्मनः विक्तत्यविक्तत्य

णिजित्तानं देवीनं अग्निजुंजिय अग्निजुंजिय परियारेइ । अण्णाणमेवअण्णाणं विउव्विअविउव्विअ परिया  
रेइ । एगेदेवे णोअन्तेदेवे णोअन्तेसिंदेवाणं देवीनं अग्निजुंजियअग्निजुंजिय परियारेइ । अण्णणिजित्तानं  
देवीनं अग्निजुंजियअग्निजुंजिय परियारेइ । अण्णाणमेवअण्णाणं विउव्विय विउव्विय परियारेइ । एगेदेवे

एक कोईक देवता सघला नथी थोडी रिद्धिना देवताथी अनेरा देवतानी देवीने वशकरीने भोगवे । एतले पारकी देवांगनाने जोगवे । कोईक  
पोतानीज देवांगनाने आश्लेषी आलिगी आलिगीने जोगवे । एतले देवता पोतानी स्त्रीने जोगवे । अथवा पोतेज आत्माने विकुर्वि विकुर्विजो



परिचारणायोग्यं विधायेति तृतीयः एवं प्रकारत्रयरूपा येकेयं परिचारेणा प्रभविष्णूत्कटकामैकपरिचारकवशादिति अथा न्योदेव आद्यप्रकारपरिचारे  
णा न्यप्रकारद्वयेन परिचारयतीति द्वितीयेय माप्रभविष्णूचितकामपरिचारकदेवविशेषा तथा न्योदेव आद्यप्रकारद्वयवर्जनेना न्यप्रकारेण परिचारयतीति  
तृतीया नुत्कटकामाल्पक्षिकदेवविशेषस्वामिकत्वादिति परिचारणेति मैथुननिशेष उक्तो धुनातदेवमैथुन सामान्यतः प्ररूपयन्नाह ॥ तिविहेमेहुणेत्यादि ॥  
काण्य नवर मिथुनं स्त्रीपुंसयुग्मं तत्कर्ममैथुन नारकाणां तन्नसम्भवति द्रव्यतइति चतुर्थं नारस्त्र्येतिनोक्तं, मिथुनकर्मणएव कारकानाह ॥ तत्रोइत्यादि ॥

णोऽन्तेदेवे णोऽन्तेसिंदेवाणं देवीन णोऽप्पणिज्जियानु णप्पाणमेवऽप्पाणं विउद्वियविउद्विय परियारेइ  
तिविहे मेऊणे पसत्ते तंजहा दिव्वे माणुस्सए तिरिस्कजोणिए । तउ मेऊणं गच्छंति तंजहा देवा मणुस्सा  
तिरिस्कजोणिया । तउ मेऊणं सेवंति तंजहा इत्थी पुरिसा णपुंसगा । तिविहे जोगे पसत्ते तंजहा मणो

ग योग्य शरीर करें देवागनानु अने पळे जोगवे ए तीन बोल मली एक परिचारणा ॥ कोइक एक देवता बीजीथी रिद्धिवंत बीजा देवतानी दे  
वीने वशकरीने जोगवे । एतले प्रकारें नथी बीजो प्रकार पणि बे रीति जोगवे पोतानी देवांगनाने जोगवे अने आत्माथी पणि विकुर्विने जोगवे  
ते बीजी परिचारणा । एकदेवता अन्यदेवतानी देवीने जोगिवानें प्रसमर्थ पोतानी पणि जोगिवाने समर्थ नथी एतले बे जेदनथी आत्माथी  
विकुर्वणाकरी देवागनाने जोगवे एह तीजी परिचारणा मैथुनसेवाकही ॥ देवताना मैथुनना अधिकार माटे तेहीज मैथुन कहैछे । त्रण प्रकारे  
मैथुन देवतानुं मनुष्यनुं तिर्यचनुं नारकीने मैथुन नथी नपुसक माटे । नणि मैथुनना सेवनारछे । देवता मनुष्य तिर्यच । त्रणि मैथुननां सेव

कण्ठं तेषामेवभेदानाह ॥ तत्रोमेहुणमित्यादि ॥ कंठ्यं श्वरं स्यादिलक्षणमिदं माचक्षते विचक्षणाः योनिर्मृदुत्वमस्यैवं । सुगन्धताक्तीवतास्तनौ ॥ पुष्कामितेति  
 लिङ्गानि । सप्तस्त्रीत्वेप्रचक्ष्यते ॥ १ ॥ मेहनंखरतादार्यं । सौण्डीर्यंस्मयुष्टता ॥ स्त्रीकामितेतिलिङ्गानि । सप्तपुस्त्वेप्रचक्ष्यते ॥ २ ॥ स्तनादिस्त्रयुक्तेषादि । भा  
 वाभावसमन्वित ॥ नपुसकस्वधाःप्राहुः । मीहानलसुदौपित ॥ ३ ॥ तथा ग्यत्राप्युक्तं स्तनकेगपतोस्त्रीम्या द्रोमशःपुरुषःस्मृतं उभयोरन्तरयश्च तदभावेनपुमक  
 मित्यादि एतेच योगवन्तो भवन्तीति योगप्ररूपणायाह ॥ तिविहेजोएइत्यादि ॥ इहच वीर्यान्तरायचयनयोपशमसमुत्थलब्धिविशेषप्रत्यय मभिसन्ध्य नभि  
 सन्धिपूर्वं मात्मनो वीर्यं योगः आहच योगोविरियशामो उच्छाहपरक्लमोतहाचिद्धा सत्तोसामत्यतिय जोगस्मत्तवतिपज्जायत्ति ॥ १ ॥ सच द्विधा सकरणो  
 ऽकरणश्च तत्रालेश्यस्य केवलिनः क्लृप्तयो ज्ञेयदृश्ययो रर्थयोः केवलज्ञान दर्शनञ्चो पयुञ्जानस्य योसा वपरिस्यदो प्रतिघो वीर्यविशेषः सोकरण. सच नेहा  
 धिक्क्रियते सकरणस्यैव त्रिस्थानकावतारित्वा दत्तं स्तयैव व्युत्पत्ति स्तमेव चाश्रित्य सूत्रव्याख्या युज्यते जीवः कर्मभि र्येन कर्मयोगनिमित्तवज्जइतिवचनात्  
 युक्तेवा प्रयुक्तेय पर्याय सयोगो वीर्यान्तरायचयनोपशमजनितो जीवपरिणामविशेषइति आहच मणसावयसाकाये णवाविज्जुत्तस्सविरियपरिणामो  
 जीवस्सअप्पणिज्जो सजोगसन्नोजिणक्खाओ ॥ १ ॥ तेओजोगेणजहा रत्तत्ताइधडस्सपरिणामो जीवकरणप्पओगे विरियमविअप्पपरिणामोत्ति ॥ २ ॥  
 मनसा करणेन युक्तस्य जीवस्य योगो वीर्यपर्यायो दुर्बलस्य यष्टिकाद्रव्यव दुपटम्भकरो मनोयोगइति सचतुर्विधः सत्यमनोयोगो मृषामनोयोगः सत्यमृषा  
 मनोयोगो ऽसत्यमृषामनोयोगश्चेति मनसोवा योगः करणकारणानुमतिरूपो व्यापारो मनोयोग एव वाग्योगोपि एव काययोगोपि नवरससप्तविधः औ  
 दारिकौदारिकमित्यवैक्रियवैक्रियमित्याहारका ५ हारकमित्य ६ काम्भेण ७ काययोगभेदादिति तत्रौदारिकादयः शुद्धा. सुबोधा औदारिकमित्यस्तु औदारि  
 क एवा परिपूर्णमित्य उच्यते यथा गुडमित्यन्धे नगुडतया नापिद्वितया व्यपदिश्यते तत्ताभ्या मपरिपूर्णत्वादेव मौदारिकमित्य ह्याम्भेणेन नौदारिक

तथा नापिकार्ष्णतया व्यपदेष्टुं शक्यं मपरिपूर्णत्वादिति तस्य मिश्रव्यपदेशः एवं वैक्रियाहारकमिश्रावपीति शतकटीकालेशः प्रज्ञापनाध्याख्यानांश्च स्त्वे  
व मौदारिकाद्याः शृङ्गा स्तत्पर्याप्तकस्य मिश्रा स्वपर्याप्तकस्येति तत्रोत्पत्ता वौदारिककायः कार्मणेन औदारिकशरीरिणश्च वैक्रियाहारककरणकाले वै  
क्रियाहारकाभ्यां मिश्रोभवतीति एवमौदारिकमिश्रं स्तथा वैक्रियमिश्रो देवाद्युत्पत्तौ कार्मणेन कृतवैक्रियस्य वौदारिकप्रवेशाद्धाया मौदारिकेण आहार  
कमिश्रस्तु साधिताहारककायप्रयोजनः पुनरौदारिकप्रवेशे औदारिकेणेति कार्मणस्तु विग्रहे केवलिसमुद्घातेनेति सर्वेवा ययोगः पञ्चदशधेति सग्रहोस्य  
सच्च १ मोस २ मौसं ३ असच्चमोस ४ मणोवएचेव काओउराल १ विक्रिय २ आहारग ३ मोस ४ कम्मए गोत्ति ॥ १ ॥ सामान्येन योग प्ररूप्य विशेषतो  
नारकादिषु चतुर्विंशतौ पदेषु तमतिदिशन्नाह ॥ एवमित्यादि ॥ कण्ठ नवर मतिप्रसगपरिहारायै दमुत्तं ॥ विगलिदियवज्जाणति ॥ तत्रविकलेन्द्रिया अप  
चेन्द्रिया स्तेषा ह्येकेन्द्रियाणां काययोगएव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणांतु काययोगवाग्योगाविति मनःप्रभृतिसम्बन्धेनै वेदमाह ॥ तिविहेपओगेइत्यादि ॥ क  
ण्ठ नवरं मनःप्रभृतौनां व्याप्रियमाणानां जीवेन हेतुकर्तृभूतेन यद्वापारण प्रयोजनं सप्रयोगो मनसः प्रयोगो मनः प्रयोगएव मितरावपि जहेत्या

जोगे वयजोगे कायजोगे । एवं णेरइयाणं विगलिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं । तिविहे पण्णे पण्णत्ते

नारह्यै । स्त्री पुरुष नपुंसक । एह त्रणि योगवंतं ह्ये ते माटै योग कह्यैह्यै । त्रणि प्रकारे योग मनोयोग मननो व्यापार वचनयोग वचननो व्या  
पार काययोग कायानो व्यापार आत्मवीर्यने योग कहिये । एम नारकीने त्रणियोग कहिवा विगलेद्री वेद्री तेद्री चउरिंद्री वरजीने एहने मननो  
योग नथी थाय यावत् वैमानिक चौवीस दडके कहिवा ॥ त्रणि प्रकारे प्रयोग प्रयुंजवारूप फोरवुं तेकह्यैह्यै । मनप्रयोग वचनप्रयोग कायप्रयोग

द्यतिदेशसूत्रं पूर्ववद्भावनीयमिति मनःप्रभृतिसम्बन्धेनै वेदमपरमाह ॥ तिविहेकरणेइत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं क्रियतेयेनतत्करणं मननादिक्रियासु प्रवर्त्त  
 मानस्यात्मन उपकरणभूत स्तथा तथापरिणामवत् पुद्गलसङ्घातइतिभाव स्तत्र मनसएव करणं मनः करण मेवमितरेअपि एवमित्याद्यतिदेशसूत्रं  
 पूर्ववदेवभावनीयमिति अथवा योगप्रयोगकरणशब्दाना अमनःप्रभृतिकमभिधेयतया योगप्रयोगकरणसूत्रे श्वभिहितमिति नार्थभेदोन्वेषणीय स्तथाणाम  
 पेषामेकार्थतया आगमे बहुशः प्रवृत्तिदर्शनात् तथाहि योगः पचदशविधः शतकादिषु व्याख्यातः प्रज्ञापनायान्वेवमेवायमयोगशब्देनोक्त स्तथाहि क  
 तिविहेणभंतेपओगेपसत्ते गीयमा पसरसविहेत्यादि तथा आवश्यके अयमेव करणतयोक्त स्तथाहि जुजणकरणतिविह मणवइकाएयमणसिसच्चाइ सठा  
 णेतिसिभेओ चउचउहासत्तहाचेवत्ति ॥ १ ॥ प्रकारान्तरेण करणत्रैविध्यमाह ॥ तिविहेइत्यादि ॥ आरम्भणमारम्भःपृथिव्याद्युपमईन न्तस्य कृतिः करण

तंजहा मणपण्णे वयपण्णे कायपण्णे । जहा जोगो विगलिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं तहा पण्णोवि  
 तिविहे करणे पसत्ते तंजहा मणकरणे वयकरणे कायकरणे । एवं णेरइयाणं विगलिंदियवज्जाण जाववेमा  
 णियाणं । तिविहे करणे पसत्ते तंजहा झारंजकरणे सरंजकरणे समारंजकरणे । णिरंतरं जाव वेमाणियाणं

जिम योग तिम प्रयोग पणि जाणिवा विगलेद्री वरजीनें चौवीस दंडके कहिवा ॥ त्रणिप्रकारे करण जेहथी क्रियादि करियें ते कहैछे । मनकर  
 ण मनकरे तेपुन्यपाप । वचनेकरे ते वचन करण कायाथीकरे ते कायकरण ॥ एमज विगलेद्री वरजीने यावत् वैमानिक ताई चौवीस दंडके कहि  
 वा ॥ बली त्रणि प्रकारे करण कहिया तेकहैछे । आरंज जे छ कायनो हणवुं तेहनुं करवुं । सरंज पृथिव्यादिकने हणवानो संकल्प । समारंज जे

सएववा करणमित्यारम्भतरण मेव मितरेअपि वाण्ये नवर मयविशेषः संरम्भकरणं पृथिव्यादिविषयमेव मनःसंक्लेशकरणं समारम्भकरणं तेषामेवसंताप  
करणमिति आत्तच सकप्पोसंरम्भो परितावकरोभवेसमारम्भो प्रारम्भोउद्दवप्पो सुद्धनयाणतुसब्जेसिति ॥ १ ॥ इदमारम्भादिकरणत्रयं नारकादीना वैमा  
निकान्ताना भवतीत्यतिदिशन्नाह ॥ निरतरमित्यादि ॥ सुगमं केवलं सरम्भकरणं मसज्जिनां पूर्वभवसंस्कारानुवृत्तिमात्रतया भावनीयमिति प्रारम्भादिक  
रणस्य क्रियान्तरस्यच फलमुपदर्शयन्नाह ॥ तिहिठाणेहीत्यादि ॥ त्रिभिः स्थानैः करणैर्जीवाः प्राणिनः ॥ अप्पाउअत्ताएत्ति ॥ अल्पं स्लोक मायु जीवि  
तयस्य सोल्पायु स्तज्जावस्तत्ता तस्यै अल्पायुष्कतायै तदर्थं तन्निवन्धनमित्यर्थः कर्मायुष्कादि अथवा अल्पमायु जीवितं यत् आयुष स्तदल्पायु स्तज्जा  
व स्तत्ता तया कर्मायुर्लक्षणं प्रकुर्वन्ति वधन्तीत्यर्थः तद्यथा प्राणान् प्राणिनो ऽतिपातयितेति श्रीलार्थेद्वन्नग्नमिति कर्मणिद्वितीयेति प्राणीनां विनाशन  
श्रीलइत्यर्थः एवंभूतो योभवति एवं मृषावादम्बगा यद्य भवति तथा तद्वकार रूप स्वभावो नेपथ्यादिर्वा यस्य सतथारूपो दानोचितइत्यर्थं स्तत्राम्यति तप

तिहिठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेन्ति तजहा पाणे अइवाइत्तान्नवइ मुसवइत्तान्नवइ तहारूवं

कायाने मनथी संताप करवुं । एह त्रण करण आतरा रहित चौवीसदंडकै वैमानिकलगै असन्नीने पाछला जवनी अपेक्षाये थाय ॥ आरजादिक  
नु फल कहिवाने कहेंछे । त्रणिथानकै करीने जीव अल्प थोडुं आऊखानु कर्म बाधे मोटु आयु नपागै तेकहेछे । प्राणातिपात करतो जीवहणतो  
मृषावाद बोलतो भूतुंबोलतो तथारूप शुद्ध अमण माहण हिंसाथी निवर्त्यो एहवा साधुने अपासू सचित्त जीवसहित एषणाशुद्धनथी अकल्प अ  
चित्तपणि प्रसूभतो एहवा अज्ञान पान खादिम स्वादिम वोहरावै पापै एह त्रणि थानकैकरी जीव अल्प आयु कर्म बाधे एतले थोडुं आयु बाधे ॥

स्यतीति श्रमण स्तपोयुक्त स्तस्माहनइत्याचष्टे य'परम्पति स्वयहनननिवृत्तः सन्निति समाहनो मूलगुणधर स्त वाशब्दौ विशेषणसमुच्चयार्थौ प्रगताश्रमो  
 ऽसुमतः प्राणिनो यस्मा तत्प्रासुकं तन्निषेधा दप्रासुक सचेतनमित्यर्थः तेन एष्यते गवेष्यते उद्गमादिदोषविकलतया साधुभि र्यत्तदेष्टव्यं कल्प तन्निषेधा द  
 नेष्टव्यं तेन अश्रयते भुज्यते इत्यशन चोदनादि पीयतइति पानञ्च सौवीरकादि खादन खाद स्तेननिवृत्तं खादनार्थं तस्य निर्वर्त्यमानत्वादिति खादिम  
 च भक्तोषधादि खादनखाद स्तेननिवृत्तं खादिमच दन्तपावनादि इति समाहारद्वन्द्व स्तेन गाथाश्चात्र असंश्रयणसत्तुग मुग्गजगाराइखज्जगविहीय खी  
 राइसूरणाइमडगपभिइइविन्नेयं ॥ १ ॥ पाणसोवीरजवो दगाइवित्तसुराइयचेव आउक्काओसब्बो कक्कडगजलाइयचतहा ॥ २ ॥ भत्तोसदताइ खज्ज  
 रनालिकेरदक्खाइ' कक्कडिअंगगफणिसा इवहुविहखाइमनेयं ॥ ३ ॥ दंतवणतवालं चित्तअज्जगकुहेडगाइयं महुपिप्पलिसुंठाइ अण्णगहासाइमंहोइत्ति  
 ४ ॥ प्रतिलभयिता लाभवन्त करोती त्येवंशौलीयश्चभवति ते ऽल्पायुष्कतया कर्मकुर्वन्तीतिप्रक्रमः ॥ इच्चेएहिंति ॥ इत्येतैः प्राणातिपातादिभि रूक्तप्रकारै  
 स्त्रिभिः स्थानै र्जीवा अल्पायुष्कतया कर्मप्रकुर्वन्तीति निगमनमिति इहच प्राणातिपातयित्रादिपुरुषनिर्देशेपि प्राणातिपातादीना मेवा ल्पायुर्वन्धनिबन्ध  
 नत्वेन तत्कारणत्वमुक्तं द्रष्टव्यमिति इयं चास्य सूत्रस्यभावना ऽध्यवसायविशेषेण एतत्तय यथोक्तफलंभवतीत्यथवा योहि जीवो जिनादि गुणपक्षपातितया  
 तत्पूजाद्यर्थं पृथिव्याद्वारम्भेण न्यासपहारादिनाच प्राणातिपातादिषु वर्त्तते तस्य सरागसयमनिरवद्यदाननिमित्तायुष्कापेक्षये य मल्पायुष्टासमवसेयेति  
 अथनैतदेव निर्विशेषणत्वात् सूत्रस्या ल्पायुष्कस्य क्षुब्धकभवग्रहरूपस्यापि प्राणातिपातादिहेतुतो युज्यमानत्वा दतः कथं मभिधीयते सविशेषणप्राणाति  
 पातादिवर्त्ती जीव आपेक्षिको चाल्पायुष्कतेति उच्यते अविशेषणत्वेपि सूत्रस्य प्राणातिपातादे र्विशेषणं भवश्य वाच्यं यत इत स्तृतीयसूत्रे प्राणातिपा  
 तादितएवा शुभदीर्घायुष्टां वक्ष्यति नहि समानहेतोः कार्यवैषम्यं युज्यते सर्वत्रा नाश्वासप्रसङ्गात् तथा समणोवासयस्सण भते तहारूव समणवा माहणवा

अफासुण्णं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाएमसारमेणं पडिलाभे माणसा किंजज्ज गोयमा नद्धतरिवासे निज्जराकज्ज एवंपतराएसे पावे कम्मे कज्ज इति ॥  
 भगवतीवचनश्रवणा दयसीयते नैवेद्य क्षुत्तकभययच्छणरूपा इत्यायुष्टा नहिस्सत्पपापनञ्जनिर्जरानियन्तनस्या नुष्ठानस्य क्षुत्तकभययच्छणनिमित्तता सम्भाव्यते  
 जिनपूजायानुष्ठानस्यापि तथाप्रसङ्गात् अथवा ऽप्राप्तुकदानस्य भवतूत्ताल्पायुष्टा प्राणातिपातमुपायादयोस्तु क्षुत्तकभययच्छणमेव फलमिति नैतदेव मेक  
 योगप्रवृत्तत्वा दतिविरुद्धत्वाच्चेति अथमिथ्यादृष्टिश्चमणवाच्यणानां यदप्राप्तुकदानगततो निरुपचरितेवात्पायुष्टा युज्यते इतराभ्यान्तु कोविचारइति नेव  
 मप्राप्तुकेनेति तत्र विशेषणस्या नर्थकत्वात् प्राप्तुकदानस्याप्यल्पायुष्टा फलत्वाविरोधा दुक्तश्रमभगवत्या समणोपासयस्स णं भते तच्चारूप असजयश्च  
 विरयश्चपडिहयश्चपययपावकम् फासुएणवा अफासुएणवा एसणिज्जेणवा अणेसणिज्जेणवाअसण ४ पडिलाभेमाणस्त किंजज्ज गोयमा एगतेसे  
 पावेकम्मेकज्ज नोसेकाइनिज्जराकज्जइति यत्र पापकर्म्मणएव कारण तदल्पायुष्टाया अपि कारणमिति नन्वेयं प्राणातिपातमुपायादापप्राप्तुकदानच  
 कर्त्तव्य मापगमिति उच्यते आपत्तातांनाम भूमिकापेक्षया को दोषो यत्र अधिकाश्रित्या ज्जास्ते धर्मसाधनसंस्थिति र्थाधिप्रतिक्षिप्ताहृया विज्ञेया शु  
 णदीपयो स्तथा च गृह्णिण प्रतिजिनभवनकारणफनमुत्तं एतद्विद्भायज्ज. सद्धृष्टिणोजगफलमिदपरमं अभ्युदयाशुच्छित्वा नियमादपवर्गगीजमिति  
 १ ॥ तथा भगवज्जिणपूयाए कायागीजइविहोइउ त्तिहि तद्धयितइपरिसुतो मित्रीणकूयाइरणजोगा ॥ १ ॥ समदारभपवत्ता जचगिहीतेणतेसिगिनेया  
 तन्निज्जित्तिफलजिय एसापरिभायणीयमिदं ॥ २ ॥ दानाधिकारित्वा गृह्यते तेहि दिविधाः जमणोपामका. सग्निभाविता लुअकट्टयान्तभावितायेति य  
 योक्तं सविग्गभायियाण लोअयदिइतभायियाणंच सुत्तण्णेत्तकाने भावचत्तिहिसुइत्यमिति ॥ १ ॥ तत्र गुधकट्टयान्तभाविता यथाकथंति उदति सपि  
 ग्नभाविता स्त्वोचित्वेनेति तमेदं संवरणंमिअसुं दोग्गदिगिणत्तदेतयाणत्थि आउरदिइतेण तंचेयइयपसवरणेति ॥ १ ॥ तथा नायगयाण कण णि

ज्जाण अन्नपाणाइण दव्वाण देसकालसद्दासकारजम्भजुयमित्यादि कवित्पाणे अइवाइत्ता सुसंवदत्ताइत्येवं भवति शब्दवर्ज्यावाचना तत्रापि सएवार्थः  
क्ताप्रत्ययान्तता व्याख्या प्राणानतिपात्यमृषोक्ता अमण प्रतिलभ्य अल्पायुष्टया कर्मवध्नतीति प्रक्रमः शेष तथैव अथवा प्रतिलभन् स्थानकस्यै वेतरे विशेष  
णे तथाहि प्राणानतिपात्याधाकर्मादिकरणतो मृषोक्ता यथा भोसाधो स्वार्थसिद्धिर्माद भक्तादिकल्पनीय मकल्पनीयवा न शङ्काकार्येत्यादि प्रतिलभ्य  
तथा कर्म कुर्वतीति प्रक्रमः इहच द्वयस्य विशेषणत्वे नैकस्यविशेष्यत्वेन त्रिस्थानकत्वं भवगन्तव्यं गम्भीरार्थं चेद सूत्रं मतो ऽन्यथापि भावनीयमिति अल्पायु  
ष्कताकारणा न्युक्ता न्यधुनै तद्विपर्ययस्यै ताग्येव विपर्यस्ततया कारणान्याह ॥ तिहिइत्यादि ॥ प्राग्वदवसेयं नवरं ॥ दीहाउअत्ताएत्ति ॥ शुभदीर्घायुष्टा  
यै शुभदीर्घायुष्टयावेति प्रतिपत्तव्यं प्राणातिपातविरत्यादीनां दीर्घायुषः शुभस्यैव निमित्तत्वा दुक्तञ्च महव्वयअणुव्वएहिं वालतवाकामनिज्जराएय देवा  
उयनिबंधइ सम्मदिद्वीयजोजोओ ॥ १ ॥ तथा पयइएतणकसाओ दाणरओसीलसयमविहणो मज्झिमगुणेहिंजुत्तो मणुयाउयंवंधएजोवो ॥ २ ॥ देवमनु  
ष्यायुषीचशुभेइति तथा भगवत्यां दानमुद्दिश्योक्तं समणोवासयस्सण भंते तहारूव समणवा माहणंवा फासुएसणिज्जे णं असण ४ पडिलाभे माणस्स किं

समणंवा माहणंवा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलान्निहा नवइ । इच्चेएहिं  
तिहिंठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेति । तिहिंठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेति तं

तिम वली त्रणि थानकै जीव मोटुं आयुकर्म बाधे तेकहैछे । प्राणातिपात जीवहिंसा नकरतो मृषावाद भूतुं नथी बोलतो तेहवो महापुरुष अ  
मण माहणने फासू अचित्त एप्रणीय शुद्धमान निरवद अशन पान खादिम स्वादिम आहार आपे एह त्रणिथानकैकरी जीव दीर्घ मोटुं आयुवाधे



कज्जइ गोयमा एग तेसे निज्जरा कज्जइ णोसेकैइ पावेकम्मे कज्जइत्ति यच्च निर्जराकारणं तत् शुभदीर्घायुःकारणतया नविरुद्धं महाव्रतवदिति अनन्तर  
मायुषो दीर्घताकारणा न्युक्तानि तच्च शुभाशुभमिति तत्रादौ ताव दशभायुर्दीर्घता कारणान्याह ॥ तिहिइत्यादि ॥ प्राग्वत् नवरं अशुभदीर्घायुष्टायै इति  
नारकायुष्कायेतिभाव स्तथाहि अशुभच तत् पाप प्रकृतिरूपत्वात् दीर्घञ्च तस्य जघन्यतोपि दशवर्षसहस्र स्थितिकत्वा दुक्कृष्टतस्तु त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमरूप  
त्वात् अशुभदीर्घं न्तदेवभूत मायुर्जीवितं यस्मा कर्मण स्तदशुभदीर्घायु स्तद्भावस्तत्ता तस्यै तथावेति प्राणान् प्राणिन इत्यर्थो ऽतिपातयिता भवति मृषा  
वादञ्च वक्ता भवति तथा अमणमाहनादीनां हीलनादि क्त्वा प्रतिलम्भयिता भवती त्यचरघटना हीलनंतु जात्याद्युद्धनतो निन्दन मनसाखिसन  
जनसमच्च गर्हणं तमत्सत्त्वं अपमानन मनभ्युत्थानादिभि रग्यतरेण वह्मनां मध्ये एकतरेण कचि त्वग्यतरेणेति नदृश्यते अमनोज्ञेन स्वरूपतो शोभनेन

जहा णोपाणे अइवाइत्ता जवइ णोमुसंवइत्ता जवइ तहारूवं समणंवा माहणंवा फासुएसणिज्जेणं असण  
पाण खाइम साइमेणं पफिलान्नेत्ता जवइ । इच्चेणहिं तिहिंठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति ।  
तिहिंठाणेहिं जीवा असुजदीहाउअत्ताए कम्म पगरेंति तंजहा पाणे अइवाइत्ता जवइ मुसंवइत्ता जवइ

वली त्रिणयानकै जीव अत्रुज दुखनुं मोटुं आयु वाधै ते कहैछै । प्राणातिपातकरतो मृषा भूतुं बोलतो तथारूप अमणमाहननी वचनेकरी हीलना  
करतो जातिउघाळतो मनथी खिसना करतो लोकसमक्षे दोष उघाडतो अपमानकरे साधुने देखी ऊजो नथाय तथा अन्यतर कोई जातिनो अम  
नोग्य रूपथी माठो अप्रीति असंतोषनुंकरनार नागसिरीयें साधुने कडुबु तुंबो आप्यो एहवा अशन पान खादिम स्वादिम ओहरावे एह त्रिण

कदम्बादिना अतएवा प्रीतिकारकेण भक्तिमत स्वमनोज्ञमपि मनोज्ञमेव तत्फलत्वा दायैचन्दनायाइव आर्यचन्दनया हि कुल्माषाः सूर्यकोणकृता भगवते महावीराय पञ्चदिनोन्मेषासिकक्षपणपारणके दत्ता स्तदैवच तस्या लोहनिगडानि हेममयनूपुरौ सम्पन्नौ केशाः पूर्ववदेव जाताः पञ्चवर्णविविधरत्नराशिभिर्गृह भृत सेन्द्रदेवदानवनरनायकै रभिनन्दिता कालेना वाप्तचारित्राच सिद्धिसौधशिखर मुपगतेति इहच सूत्रे अशनादिप्रा सुकाप्रासुकत्वादिना न विशेषित हीलनादिकर्तुः प्रासुकादिविशेषणस्य फलविशेषं प्रत्यकारणत्वा अक्षरजनितहीलनादिविशेषणानामेव प्रधानतया तत्कारणत्वादिति प्राणातिपातमृषावादयो दर्शनविशेषणपक्षव्याख्यानमपि घटत एव अवज्ञादानेपि प्राणातिपातादे दृश्यमानत्वादिति भवतिच प्राणा तिपातादे नैरकायु र्यदाहच मिच्छादिद्विमहारं भपरिणहोतिब्वलोहनिस्त्रीलो नरयाउयंनिबधइ पावमईरुहपरिणामोत्ति ॥ १ ॥ उक्तविपर्ययेणा धु नेतरदाह ॥ तिहिठाणेहिंइत्यादि ॥ पूर्वव न्वरं वन्दित्वा सुत्वा नमस्थित्वा प्रणम्य सत्कारयित्वा वस्त्रादिना सन्मानयित्वा प्रतिपत्तिविशेषेण कल्याणं

तहारूवं समणंवा माहणंवा हीलेत्ता निंदेत्ता खिंसेत्ता गरिहिता शुवमाणित्ता शुन्नयरेणं शुमणुन्नेणं शु पीइकारणं शुसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा पफिलान्नेत्ता न्वइ । इच्चेणहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा शु सुजदीहाउच्छत्ताए कम्मं पगरंति । तिहिंठाणेहिं जीवा सुजदीहाउच्छत्ताए कम्मं पगरंति तंजहा णोपाणे शु इवाइत्ता न्वइ णोमुसवइत्ता न्वइ तहारूवंसमणवा माहणवा वंदित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता

यानकै करी जीव अशुजदीर्घ आयुकर्म बांधै ॥ त्रणि यानकै जीव शुजदीर्घ आयुकर्म बांधै ते कहैबै । प्राणातिपात जीव हिंसा नकरतो मृषा

समृद्धिं स्तुतेतुत्वा साधुरपि कल्याणमेव मङ्गलं विप्रचय स्तुत्यागा गङ्गल न्देवतमिथ देवतेव देवत सैवमिव जिनादिप्रतिमेव चैलं अमण मर्युपास उप  
 सेयेति श्लापि प्रासुकाप्रासकतया दान नविशेषित मूर्वसूत्रपर्ययत्वा दस्यपूर्वसूत्रसवा विशेषणतया प्रवृत्तत्वा दिति नच प्रासुकाप्रासुकदानयोः फल  
 म्प्रति नविशेषोस्ति पूर्वसूत्रयो स्तस्य प्रतिपादितत्वात् तस्मा दिह प्रासुकेषणीयस्य कलाप्राप्तावितरस्य चेदं फलमवसेयं अथवा भावप्रकर्षविशेषा दनेषणी  
 यस्यापी दम्फल नविरुध्यते अचिन्त्यत्वा चित्तपरिणतेः साहि याशस्या नुशणतयैव नफलाभि साधयति भरतादीना मिवेति श्लच प्रथम मण्यायुः सूत्रं  
 तृतीय न्तद्विपद्यस्तृतीय मशुभदीर्घायुः सूत्र चतुर्थ न्तद्विपद्यति नपुनरुत्ततेति प्राणानतिपातनादिव गुप्तिसंज्ञावे भवतीति गुप्तीराह ॥ तश्रीश्रुत्यादि ॥  
 कागळा अवरं गोपनंगुप्ति मैनःप्रभृतीनां कुशलानां अयर्त्तनं मकुशलानां च निवर्त्तनमिति आह च मणगुप्तिकाश्याश्री गुप्तीश्रीतिनिसमयकोश्रीहिं पवि

कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेत्ता मणुन्नेणं पीइकारणं अणपाणखाइमसाइमेणं पडिलानेत्ता न  
 वइ इच्चेएहिं तिहिंठाणेहिं जीवा सुहदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेति । तज गुप्तीन पणत्तानं तंजहा मणगु

वादफूठुं नयोलतो तथा रूप अमण माहणने वदनाकरीने नमस्कारकरी वरादिकथी सत्कार सन्मानदेई विनयकरीने कल्याणकारी मंगलकारी देव  
 अरिहतनीचैत्य प्रतिमानी जिम सेवाकीजे तिम साधुनी सेवाकरे बली मनोग्य प्रतिकारी अशन पान खादिम स्वादिमे करी पडिलाने वोहरावे  
 एह त्रिण थानकै करी जीव जुज दीर्घ आयुकर्मबांधे देवतानु प्ररतचक्रीनीपरे पाचसे साधुनें आहार आप्यो पूर्वज्वै ॥ जीवहिंसादिनकरे ते गुप्ति  
 ते मांटे गुप्ति कहैलै । अणगुप्ति मनोगुप्ति माठायोगथी मननीरोकिवुं । यचनगुप्ति पापयचन नयोलिवुं । कायगुप्ति पापमां कायानप्रवृत्तावे ॥

यारियररूवा निदिष्टाओजओभणियं ॥ १ ॥ समिओनियमागुत्तो गुत्तोसमइत्तणंमिभइयव्वो कुसलवयमुइरंती जंवयगुत्तोविसमिओवित्ति ॥ २ ॥ एता  
 अतुर्विंशतिदण्डके चिन्त्यमाना मनुष्याणामेव तत्रापि सयतानां नतु नारकादीना मित्यतआह ॥ संजयमणुस्साणमित्यादि ॥ कंठ्य मुक्ता गुप्तय स्तद्विप  
 र्ययभूता अथागुप्तीराह ॥ तओइत्यादि ॥ कण्ठ्यं विशेषत अतुर्विंशतिदण्डके एता अतिदिशन्नाह ॥ एवमित्यादि ॥ एवमिति सामान्यसूत्रव नारका  
 दोनां तिस्रो गुप्तयो वाच्याः शेषं कंठ्यं नवर मिहै केन्द्रियविकलेन्द्रिया नोक्ता वाङ्मनसो स्तेषां यथायोग मसम्भवात् संयतमनुष्या अपि नोक्ता स्तेषां  
 गुप्ति प्रतिपादनादिति अगुप्तय आत्मनः परेषा च दण्डनानि भवन्तीति दण्डा त्रिरूपयन्नाह ॥ तओदडेत्यादि ॥ कंठ्य नवरं मनसा दण्डन मात्मनः

हो वयगुत्ती कायगुत्ती । संजयमणुस्साणं तनु गुत्तीनुं प० तं० मणवयकाए । तनु अगुत्तीनुं पणसज्ञानं तं०  
 मणअगुत्ती वयअगुत्ती कायअगुत्ती । एवं णेरइयाणं जाव थणियकुमाराणं पंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं  
 असंजयमणुस्साणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाणं । तनु दंढा प० तंजहा मणदंढे वयदंढे काय

चौवीसदंढकमाहि मनुष्यनेज तेमाहि संयमवंत मनुष्यने ए त्रिणि गुप्ति होय ते कहैछे । मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति ॥ एम तीन अगुप्ति  
 माठे पापनेयोगे प्रवर्त्तवुं ते कहैछे । मनअगुप्ति मनथी पापबंधाये । वचने पापबंधाये तेवचनअगुप्ति । कायाये पापबाधे तेकाय अगुप्ति । एम  
 चौवीस दंडकमां नारकीने यावत् स्तनितकुमार दश जवनपतीने ए तीन अगुप्तिहोय । पंचेद्री तिर्यंचने पणिहोय ॥ एकेद्री वेद्री तेद्री चउरिंद्री  
 ने नथी होय मन नथी ते मांटे पचेद्वियतिर्यंच असंयती मनुष्यने होय संयतने गुप्तिकहीछे । व्यंतर ज्योतिषी वैमानिकने अगुप्तिहोय ॥ अगु

परेपांवेति मनोदण्डः अथवा दण्डाते नेनेति दण्डो मनएव दण्डो मनोदण्डइति एव मितरावपि विशेषचिन्तायां चतुर्विंशतिदण्डके ॥ नेरइयाणंत  
 ओदण्डेत्यादि ॥ यायहैमानिकानामिति सूत्रं वाच्यं नवर ॥ विगलिंदियवज्जति ॥ एकद्विचतुरिन्द्रियान् वर्जयित्वेत्यर्थः तेषां हि दण्डनय नसम्भवति  
 यथायोग वाप्नसो रभावादिति दण्डस्य गर्हणीयो भवतीति गर्हा सूत्राभ्यामाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं गतार्थं नवरं गर्हते जुगुप्सते दण्ड स्वकीय पर  
 कीय मात्मानस ॥ कायसाविति ॥ सकारस्था गमिकत्वात् कायेनाप्येकः कथमित्याह पापानां कर्मणा मकरणतया हेतुभूतया हिंसाद्यकरणेनेत्य  
 र्थः कायगर्हा हि पापकर्मागवृत्त्यैव भवतीतिभावः उक्तस्य पापजुगुप्सातुतथा सम्यग्परिशुद्धचेतसासतत पापीद्वेगोकरण न्तदचिन्ताचेत्यनुक्रमतइति ॥ १ ॥  
 अथवा पापकर्मणा मकरणतायै च तदकरणार्थं त्रिधापि गर्हते अथवा चतुर्थे पक्षे ततः पापेभ्यः कर्मभ्यो गर्हते तानि जुगुप्सतइत्यर्थः किमर्थं मकरणतायै

दंढे । णेरइयाणं तनु दंढा पन्तत्ता तंजहा मणदंढे वयदंढे कायदंढे विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं  
 तिविहा गरिहा पन्तत्ता तंजहा मणसावेगेगरहइ वयसावेगेगरहइ कायसावेगेगरहइ पावाणकग्गाणं झुक

प्तिवंतने त्रणदड कहिया ते कहैछे । कर्म दंडाये तेदंड कहिये । मनोदंड वचनदण्ड कायदंड मनेकरीदंडाये वचनथी दंडाये कायथीदंडाये । ना  
 रकीने त्रणि दंडछे ते कहैछे । मनोदंड वचनदंड कायदंड विगलेद्री वर्जने एकेंद्री माहिज आव्या जाव वेमानिक लगे त्रणदंड जाणिवा ॥ दंडते  
 गर्हणीय तेमाटे गर्हा कहैछे । त्रणि प्रकारे गर्हाकही ते कहैछे । मनथी आत्माने तथा परनें गर्हे । एक वचनथी आत्माने तथा परने गर्हे ।  
 एक कायथी पापकर्ममा अणप्रवर्त्त । पापकर्मने अण करये तेगर्हणा पापकर्म नहीकरुं एमाहुछे । अथवा गर्हा तीन प्रकारे कही ते कहैछे । एक

माकार्षं महमेतानीति ॥ दीहं एगेअद्वंति ॥ दीर्घं क्कालं यावदित्यर्थः तथा काय मध्येकः प्रतिसंहरति निरुणद्धि कथा पापानां कर्मणा मकरणतया हेतु भूतया तदकरणेन तदकरणतायैवा तेभ्यो गर्हते काय वा प्रतिसंहरति तेभ्यो ऽकरणतायै तेषा मेवेति अतीतेदण्डे गर्हा भवति साचोक्ता भविष्यतिच प्रत्याख्यानमिति सूत्रद्वयेन तदाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ गतार्थं न्वरं ॥ गरहत्ति ॥ गर्हायां आलापकौ चेमौ ॥ मणसेत्यादि ॥ कायसावेगेपच्चक्खाइ पा वाणं कम्माण अकरणयाए इत्येतदन्त एकः अहवा पच्चक्खाणे तिविहे पन्नत्ते तजहा दीह एगेअइ पच्चक्खाइ ऋस्संएगे अइ पच्चक्खाइ काय एगेपडिसाहरइ पावाणं कम्माण अकरणयाए इतिद्वितीय सूत्रकाय मध्येकः प्रतिसंहरति पापकर्माकरणाय अथवा काय प्रतिसंहरति पापकर्मभ्यो ऽकरणतायै तेषामे वेति पापकर्मप्रत्याख्यातारश्च परोपकारिणो भवन्तीति तदुपदर्शनाय दृष्टान्तभूतवृक्षाणां तद्दृष्टान्तिकानांच पुरुषाणां प्ररूपणार्थमाह ॥ तओरुक्खेत्या

रणयाए । अहवा गरहा तिविहा पन्नत्ता तजहा दीहंवेगेगरहइ हस्सवेगेअण्णगरहइ कायंवेगेपडिसाहरइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए । तिविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते तजहा मणसावेगेपच्चक्खाइ वयसावेगेपच्चक्खाइ

घणा कालनी गर्हणाकरे एक थोडाकालनी गर्हणाकरे । एक वर्तमान कायाने पापने अणकरवे संहरराखे ए त्रण प्रकारे पापने अणकरवे अतीत कालनी गर्हणा होय तेकही ॥ अनागत पचखाणहोय ते कहैछे । त्रण भेदे पचखाण एक मनथी पचखाण करेछे । एक वचनथी पचखाण करेछे । एक कायार्थी पापकर्मने अणकरवे करी पचखाणकरेछे । एम जिमगर्हणा तिम पचखाणने विषे पणि बेआलावा कहिवा ॥ पापकर्मनुं पचखाण ते परोपकारीछे तेमांटे वृक्षनों दृष्टात सुघटैछे ते कहैछे । त्रणवृक्षकहिया एक पत्रसहित एक फूलसहित एक फलसहित । एहनीपरे त्रणि पुरुष

दि ॥ सूत्रद्वयं पत्राण्युपगच्छति प्राप्नोति पत्रोपग एवमितरौ एवमेवेति ॥ दार्ष्टान्तिकोपनयार्थः पुरुषजातेति पुरुषप्रकारा यथा पत्रादियुक्तत्वेनो पकारमा  
 नविशिष्टनिशिष्टतरोपकारकारिणो ऽर्थिषु वृत्ता स्तथा लोकोत्तरपुरुषाः सूत्रार्थोभयदानादिना यथोत्तर सुप्रकारविशेषकारित्वा तत्समाना मंतव्या एवं  
 लौकिका अपीति इहच पत्तोवगएद्व्यादौ वाच्ये पत्तोवाइत्यादि प्राकृतलक्षणवशा दुक्त समाणइत्यत्रापिच सामाणइति अथ पुरुष प्रस्तावात् पुरुषान्  
 सप्तसूत्र्या निरूपयन्नाह ॥ तत्रोइत्यादि ॥ कण्ठ नवरं नामपुरुषः पुरुषइति नामेव स्थापनापुरुषः पुरुषप्रतिमादि. द्रव्यपुरुषः पुरुषत्वेन य उत्पत्स्यते उत्प  
 न्नपूर्वोवेति विशेषो ऽत्रेन्द्रसूत्रात् द्रष्टव्यो भवत्यत्रभाष्यगाथा आगमत्रोणवउत्तो इयरोदब्बपुरिसोतिहातइओ एगभवियाइतिविही मुलुत्तरणिग्मिओवावि ॥  
 १ ॥ मूलगुणनिर्मितः पुरुषप्रायोग्यानि द्रव्याणि उत्तरगुणनिर्मितस्तु तदाकारवंति तान्येवेति भावपुरुषभेदाः पुन ज्ञानपुरुषादयः ज्ञानलक्षणभावप्रधान

कायसावेगेपञ्चरुकाइ एवंजहा गरहा तहा पञ्चरुकाणेवि दोष्णालावगा जाणियद्या । तज रुका पन्नत्ता तं०  
 पत्तोवा पुण्फोवा फलोवा । एवमेव तज पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा पत्तोवारुक्कसामाणे पुण्फोवारुक्कसा  
 माणे फलोवारुक्कसामाणे । तज पुरिसजाया पन्नत्ता तजहा णामपुरिसे ठवणपुरिसे दह्णपुरिसे । तिविहा

कहिया ते कहैछै । पत्रसहित वृक्षसरिखा ते विशेषउपकारी वचनादिकै सूत्रसिद्धांत सांजलावें । फूलसहितवृक्षसरिखा ते अर्थधर्मना आपनार । फ  
 लसहितवृक्ष सरिखा ते सूत्रार्थ बेनां आपनार ए लोकोत्तर पुरुष ॥ पुरुषनाप्रस्तावथी पुरुषनु सूत्र कहैछै । त्रण पुरुषनी जातकही एक नाम पुरु  
 प ते पुरुषनामे । स्थापनापुरुष जे पुरुष प्रतिमा । द्रव्यपुरुष जेपुरुषपणो उपजस्ये स्त्री पुरुष नपुसक ॥ वली त्रण पुरुष जातिकही तेकहैछै । नाण

पुरुषो ज्ञानपुरुष एवमितिरावपि वेदः पुरुषवेद स्तद्धनुभवनप्रधानः पुरुषो वेदपुरुषः सच स्त्रीपुंसनपुंसकसम्बन्धिषु त्रिष्वपिलिङ्गेषु भवतीति तथा पुरुषचि-  
 द्वैः श्मश्रुप्रभृतिभि रूपलक्षितः पुरुषश्चिह्नपुरुषो यथा नपुंसकश्मश्रुचिह्नमिति पुरुषवेदोवा चिह्नपुरुष स्तेनचिह्नाते पुरुषद्रति कृत्वेति पुरुषवेषधारीवा स्या-  
 दिरिति अभिलष्यतेनेत्यभिलापः शब्दः सएवपुरुषः पुल्लिङ्गतया मिधानात् यथा घटः कुटोवेति आहच अभिलावोपुल्लिङ्गा मिहाणमेत्तघडोब्बचिधेउ  
 पुरिसाकिर्द्धनपुंसो वेओवापुरिसवेसोवा ॥ १ ॥ वेयपुरिसोतिलिंगो विपुरिसवेयाणभूयकालम्मिति ॥ धम्मपुरिसत्ति ॥ धम्मः ज्ञायिकचारिणादि स्तदर्जन

पुरिसा प० तं० णाणपुरिसे दंसणपुंरसे चरित्तपुरिसे । तन्न पुरिसजाया पणत्ता तंजहा वेदपुरिसे चिंधपुरि-  
 से अजिलावपुरिसे । तिविहा पुरिसा प० तं० उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा जहन्नपुरिसा । उत्तमपुरिसा  
 तिविहा पणत्ता तंजहा धम्मपुरिसा जोगपुरिसा कम्मपुरिसा । धम्मपुरिसा अरिहंता जोगपुरिसा चक्कावही

पुरुष जे नाणसहित । दर्शन पुरुष जे समकित सहित । चारित्र पुरुष जेचारित्रसहित एह तीन जाव पुरुषहैं । बली त्रण पुरुषकहिथा ते कहैं  
 हैं । पुरुष वेदने अनुजवे ते वेदपुरुष ते स्त्री पुरुष नपुंसक तीनमा थायहैं । चिन्ह पुरुष ते दाढीमुंछ सहित स्त्री पुरुष वेसधरैं । अजिलाव पु-  
 रुष जे पुरुष शब्दे बोलाविये ते घडो कूवो आंबो इत्यादि ॥ बली त्रण पुरुष तेकहैंहैं । एक उत्तम पुरुष । बीजो मध्यम पुरुष । त्रीजु जघन्य  
 पुरुष ॥ उत्तमपुरुष त्रण प्रकारे तेकहैंहैं । एक धर्मपुरुष ज्ञायिक समकितना उपजावणहार । बीजा भोग पुरुष मनोहर जोगना जोगवनारा । त्री-  
 जा कर्म पुरुष महा आरजकारी नरकना जानार वासुदेवादि ॥ धर्म पुरुष ते अरिहत । जोगपुरुष ते चक्रवर्ति । कर्म पुरुष वासुदेव नियाणा



પરા: પુરુષા: ધર્મપુરુષા: ઉક્તાંચ ધર્મપુરિસોતદક્ષણ વાવારપરોજહાસાદુત્તિ ॥ ૨ ॥ ભોગા મનોજ્ઞા: શબ્દાદય સ્તત્પરા: પુરુષા: ભોગપુરુષા: શાહચ  
 ભોગપુરિસોસમજ્ઞિય વિસયસુહોચક્ષવદ્વિવત્તિ કર્મ્યાણિ મહારભાદિસંપાદ્યાનિ નરકાયુષ્કાદીનીતિ ઉગ્મા મગવતો નાભેયસ્ય રાજ્યકાલે યે આરક્ષિવા  
 પ્રાસન્ ભોગા સ્તત્રૈવ શુરવ: રાજન્યા સ્તત્રૈવ વયસ્યા સ્તદુક્તાં ઉગ્માભોગારાય ચ્ચક્ષિત્યાસગદોભવેચહા આરક્ષિયશુરુવયસા સેસાજેચક્ષિત્યાતેઉત્તિ ॥ ૧  
 તદંશજાપિ તદ્દાપદેયાદિતિ ઇષાંચ મધ્યમત્ત્વમનુકૃષ્ટત્વાજઘન્યત્વાભ્યામિતિ દાસા: દાસીપુત્રાદય: શ્રુતકા: સૂચ્યત: કર્મકરા: ॥ માદ્ભગત્તિ ॥ ભાગો  
 વિદ્યતે યેષાં તે ભાગવન્ત: શત્રુચાતુર્થિકાદયદ્વિતિ ઉક્તાં મનુષ્યપુરુષાણાં ત્રૈવિધ્ય મધુના સામાન્યત સ્તિરયાં જલચરચ્ચલચરચ્ચરવિશેષાણાં ॥ તિવિહામ  
 સ્ત્રેત્યાદિ ॥ સૂત્રૈ: હૃદયભિ સ્તદાહ સુગમાનિ ચૈતાનિ નવર અણ્ડાજ્ઞાતા: અણ્ડજા: પોત વસ્તં તદ્દજ્જરાયુવર્જિતત્ત્વા જ્ઞાતા: પોતાદિવવા બાહિત્યા જ્ઞા

કમ્મપુરિસા વાસુદેવા । મજ્ઞિમપુરિસા તિવિહા પક્ષત્તા તંજહા ઉગ્મા જોગા રાહ્નવા । જહન્નપુરિસા તિવિ  
 હા પક્ષત્તા તંજહા દાસા જયગા જાહ્નગા । તિવિહા મચ્છા પક્ષત્તા તંજહા ચંદ્રયા પોયયા સંમુચ્છિમા

વદ્ધ મહાઆરંભેકરી નરકેં જાય । મધ્યમ પુરુષ નણ પ્રકારે તે કહેહે । ઉગ્મ જે રિપજદેવે કોટવાલપણે થાપ્યા । જોગકુલના જે ગુરુ સ્થાનકેં થાપ્યા ।  
 રાજન્ય કુલના જ્ઞાત્રિય પોતા સરસા થાપ્યા ॥ જઘન્ય પુરુષ નણ પ્રકારે તે કહેહે । દાસ જે દાસીના પુત્ર । શ્રુતક જે મોલથી કામ કરે । ચોથો  
 જાગ આપીયે તે ચોથિઆ તે જાગવત કહિયે ॥ પુરુષનું ત્રિવિધપણું કહી હિવે તિર્યચ જલચરનું કહેહે । મચ્છ ત્રણ પ્રકારે કહિયા ઈંદ્રાથી ડપના  
 તે ચંદ્રજ । વસ્ત્રે વીંટળા ડપજે જરવિના તે પોતજ । સમૂર્ક્ષિમ જે ગર્જ વિના ડપજે ॥ અંડજ મચ્છ ત્રણ પ્રકારે તે કહેહે । સ્ત્રી પુરુષ નપુંસક ॥

ताः पोतजाः सम्भूर्च्छिमा अगर्भजा इत्यर्थः सम्भूर्च्छिमानां स्त्र्यादिभेदो नास्ति नपुंसकत्वात्तेषामिति स सूत्रे नदर्शित इति पक्षिणोऽण्डजाः हंसादयः पोतजा वल्गुलीप्रभृतयः सम्भूर्च्छिमाः खञ्जनकादयः उद्भिज्जत्वेपि तेषां सम्भूर्च्छजत्वव्यपदेशो भवत्येव उद्भिज्जादीनां सम्भूर्च्छनजविशेषत्वादिति ॥ एवमिति ॥ पक्षिवत् एतेन प्रत्यक्षेण भिलापेन ॥ तिविहा उरपरिसर्पे इत्यादि ॥ सूत्रत्रयलक्षणेन उरसा वक्षसा परिसर्पन्तीति उरःपरिसर्पाः सर्पादयस्तेपि भणितव्याः तथा भुजाभ्या वाहुभ्या परिसर्पन्तीति ये ते नकुलादयस्तेपि भणितव्याः ॥ एवमेवति ॥ यथा पक्षिणस्तथावेत्यर्थः इहापि सूत्रत्रयमध्येतच्चमितिभावः

अंशयामच्छा तिविहा प० तं० इत्यौ पुरिसा णपुंसगा । पोययामच्छा तिविहा प० तं० इत्यौ पुरिसा णपुंसगा । तिविहा परकी पस्सत्ता तंजहा अंशया पोयया संमुच्छिमा । अंशया परकी तिविहा पन्नत्ता तंजहा इत्यौ पुरिसा नपुंसगा । पोयया परकी तिविहा पस्सत्ता तंजहा इत्यौ पुरिसा णपुंसगा । एवमेणं अजिलावेणं उरपरिसर्पावि जाणियत्ता । नुयपरिसर्पावि जाणियत्ता । एवमेव तिविहानं इत्यौ पस्सत्तानं तंजहा

पोतज मच्छना त्रण भेद ते कहैछे । स्त्री पुरुष नपुंसक । सम्भूर्च्छिममा स्त्री पुरुष नथी नपुंसक हीज छे ॥ त्रण प्रकारे पत्नी कहिया ते कहैछे ॥ अंशज हंस प्रमुख । पोतज वागुल प्रमुख । सम्भूर्च्छिम सजन प्रमुख एह सर्व पचेद्री ॥ अडज पत्नी त्रण प्रकारे कहिया ते कहैछे । स्त्री पुरुष नपुंसक पोतज पत्नी वागुल प्रमुख त्रण प्रकारे स्त्री पुरुष नपुंसक ॥ सम एणे अजिलापे करी उरपरिसर्प हिये चाले ते सर्प ते पणि त्रणि प्रकारे कहिवा । समज भुजपरिसर्प जे भुजाथी चाले ते पणि जाणिया ॥ एणे प्रकारे त्रणि प्रकारनी स्त्री कही ते कहैछे तिर्यचनी स्त्री । मनुष्यनी स्त्री । देवनी

॥ उक्तं तिर्यग्विशेषाणां त्रैविध्यं द्रवानींस्त्रीपुरुषनपुंसकानां तदाह ॥ त्रिविहेत्यादि ॥ नवसूत्री सुगमा मयरं ॥ खहंति ॥ प्राकृतत्वेन खमाकाशमिति कृथादिक  
मप्रधानाभूमिः कर्मभूमिः भरतादिका पंचदशधा तजजाताः कर्मभूमिजा एव मकर्मभूमिजा नवर मकर्मभूमि भोगभूमिरित्यर्थः देवकुर्वादिका त्रिशद्विधा  
अन्तरे मध्ये समुद्रस्य द्वीपा येते तथा तेषु जाता आंतरद्वीपा स्त एवा न्तरद्वीपिकाः विशेषत्रैविध्यमुक्ता सामान्यत स्तिरथा न्तादाह ॥ त्रिविहेत्यादि ॥ कण्ठ्य स्या

तिरिस्कजोणित्थीन मणुस्सित्थीन देवित्थीन । तिरिस्कजोणित्थीन त्रिविहान पत्तत्तान तंजहा जलचरीन  
थलचरीन खहचरीन । मणुस्सित्थीन त्रिविहान पत्तत्तान तजहा कम्मजूमियान अकम्मजूमियान अंतरदी  
वियान । त्रिविहा पुरिसा पत्तत्ता तंजहा तिरिस्कजोणियपुरिसा मणुस्सपुरिसा देवपुरिसा । तिरिस्कजो  
णियपुरिसा त्रिविहा पत्तत्ता तजहा जलचरा थलचरा खहचरा । मणुस्सपुरिसा त्रिविहा प० तं० कम्मजू

स्त्री ॥ तिर्यचनी स्त्री त्रिणि प्रकारे कही ते कहैछे । जलचरी माछली प्रमुख । थलचरी गाय जैस घोड़ी प्रमुख । खचरी पत्ती चिडिया प्रमुख  
जे आकाशमा चाले । मनुष्यनी स्त्री त्रिणि प्रकारे ते कहैछे । पाच जरत पाच ऐरवत पाच महाविदेह एह पनरह कर्म भूमिमा जे स्त्री । जिहा  
अग्नि खड्गादि कर्म मसी ते लिखवानो कर्म कसी ते खेतीनो कर्म एह तीन कर्म नथी ते अकर्म जूमिमा जे स्त्री युगलिया मनुष्यनी स्त्री देवकुरु  
प्रमुख तीस अकर्म जूमिछे । अंतरद्वीप ते छप्पन समुद्रमाछे तिहा युगलिया छे तेहनी स्त्री ॥ त्रिणि पुरुष कहिया ते कहैछे । तिर्यच योनिना  
पुरुष । मनुष्य पुरुष । देवपुरुष ॥ तिर्यचयोनिनां पुरुष तीन प्रकारे जलचर मच्छप्रमुख । थलचर हाथी घोड़ा प्रमुख । खचर पत्ती हंस प्र

दिपरिणतिश्च जीवानां लेश्यावशतो भवतीति तन्निबन्धनकर्मकारणत्वात्तासा मिति नारकादिपदेषु लेश्या स्त्रिस्थानकावतारेण निरूपयन्नाह ॥ नेरइया  
णमित्यादि ॥ दण्डकसूत्र कण्ठ्य नवर ॥ नेरइयाणतओलेस्साओत्ति ॥ एतासामेव तिसृणां सङ्गावा दविशेषणो निर्देशो ऽसुरकुमाराणान्तु चतसृणां सङ्गावात्

मिया अकम्मन्नूमिया अंतरदीवया । तिविहा णपुंसगा पप्पत्ता तंजहा णेरइयणपुंसगा तिरिस्कजोणिय  
णपुंसगा मणुस्सणपुंसगा । तिरिस्कजोणियणपुंसगा तिविहा प० तं० जलचरा थलचरा खहचरा । मणुस्स  
णपुंसगा तिविहा प० तं० कम्मन्नूमिगा अकम्मन्नूमिगा अंतरदीवगा । तिविहा तिरिस्कजोणिया प० तं०  
इत्थी पुरिसा णपुंसगा । णेरइयाणं तनलेस्सानं प० तं० कणहलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । असुरकुमा  
राणं तन लेस्सानं संकिलिष्ठानं प० तं० कणहलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । एवं थणियकुमाराणं एवंपुढ

मुख ॥ मनुष्यपुरुष त्रण प्रकारे कर्म भूमिनां । अकर्मभूमिना अंतरद्वीपनां ॥ त्रण प्रकारे नपुंसक । नारकी नपुंसक सघलाई सात नरकनांमली ।  
तिर्यचयोनिना नपुंसक । मनुष्यनपुंसक । देवता नपुंसक नथाय ॥ तिर्यच योनिनां नपुंसक त्रण प्रकारे तेकहैछे । जलचर नपुंसक । थलचर  
नपुंसक । खचर नपुंसक ॥ मनुष्य नपुंसक त्रण प्रकारे तेकहैछे । कर्मन्नूमिनां । अकर्मभूमिनां । अंतरद्वीपनां ॥ त्रण प्रकारे सामान्यजावे  
तिर्यचकहिया तेकहैछे । स्त्री पुरुष नपुंसक ॥ स्त्री आदिकवेद जीव लेश्याथी बधाये तेमाटे लेश्याकहैछे चौवीस दडकै नारकीने त्रण लेश्याकही  
तेकहैछे । कृष्ण लेश्या । नीललेश्या । कापोतलेश्या । असुरकुमारने त्रणिलेश्या संकिलिष्ठमां कही चौथी तेउ लेश्या असुरकुमारने छे पणि ते

संक्लिष्टा इति विशेषित चतुर्थीहि तेषां तेजोलेश्यास्ति किन्तु सा नसंक्लिष्टेति पृथिव्यादि असुरकुमारसूत्रार्थमतिदिशन्नाह ॥ एवंपुढवीइत्यादि ॥ पृथिव्य  
 ब्वनस्पतिषु देवोत्पादसम्भवा चतुर्थी तेजोलेश्यास्तीति सविशेषणो लेश्यानिर्देशो ऽतिदिष्ट स्तेजोवायुद्वित्रिचतुरिन्द्रियेषुतु देवानुत्पत्त्यातदभावा त्रिविशेष  
 णइति अतएवाह ॥ तेओइत्यादि ॥ पञ्चेन्द्रियतिरथां मनुष्याणाञ्च षडपौति संक्लिष्टासंक्लिष्टविशेषणत चतुस्सूत्री नवर मनुष्यसूत्रे ऽतिदेशेनोक्तइति व्यन्तर

विकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाणवि तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिदियाणं  
 वि तनं लेस्सा जहा णेरइयाणं । पंचेंदियतिरिक्कजोणियाणं तनं लेस्सानं संकिलिष्ठानं प० तं० कणहलेस्सा  
 नीललेस्सा काउलेस्सा । पंचिदियतिरिक्कजोणियाणं तनं असंकिलिष्ठानं लेस्सानं प० तं० तेउलेस्सा पम्ह  
 लेस्सा सुक्कलेस्सा । एवमणुस्साणवि वाणमंतराणवि जहा असुरकुमाराणं । वेमाणियाणं तनं लेस्सानं प०

संकिलिष्ट नथी तेकहैँ ॥ कृष्णलेश्या । नीललेश्या । कापोतलेश्या ॥ एम यावत् स्तनित कुमारलगें एह तीन लेश्या संकिलिष्ट जाणवी ॥ एम  
 पृथिवीकाय वनस्पतिकायने त्रण लेश्या जाणवी देवता एहमां आवी उपजै तेमाटे तेजोलेश्या पणहैँ तेमाटे असुरकुमारना सूत्रमा कहियो । एम  
 तेउकायने । वाउकायने । बे इंद्रीने । तेइंद्रीने । चोइंद्रीने एहतीन लेश्याहोय । जिमनारकीने ॥ पंचेद्रीतिर्यच योनिनाने त्रणि लेश्या संकिलिष्ट  
 पापनी कही तेकहैँ ॥ कृष्णलेश्या । नीललेश्या । कापोतलेश्या । एह त्रण लेश्या पंचेद्री तिर्यचने ॥ त्रण लेश्या असंकिलिष्ट रूडी कही तेकहैँ ॥  
 तेजोलेश्या । पदमलेश्या । शुक्ललेश्या । चौवीसदडके कही । एम मनुष्यने पणि जाणवी व्यतरने तीन तेमांटे व्यंतरने जिम असुरकुमारनेकही

सूत्रे सल्लिष्टा वाचा अतएवोक्तं ॥ वाणमंतरेत्यादि ॥ वैमानिकसूत्रं निर्विशेषणमेव असंल्लिष्टस्यैव त्रयस्य सद्भावात् व्यवच्छेद्याभावेन विशेषणयोगादिति ज्योतिष्कसूत्रं नोक्तं न्तेषां न्तेजोलेश्याया एवभावेन त्रिस्थानकावतारादिति अनन्तरं वैमानिकानां लेश्याद्वारेणे हावतार उक्तो ज्योतिष्काणान्तु तथा तदसंभवाच्चलनधर्मेण तमाह ॥ तिहीत्यादितारारूपेति ॥ तारकमात्रं ॥ चलेज्जा ॥ स्वावस्थानं त्यजेत् वैक्रियं कुर्वन्वा परिचारयमाणवा मैथुनार्थं सरम्भयुक्तमित्यर्थः स्थानका द्वै कस्मात् स्थानान्तरं संक्रामन् गच्छदित्यर्थः यथा धातकौखण्डादि मेरु परिहरदित्यर्थः अथवा क्वचिन्महर्षिके देवादौ चमरव द्वैक्रियादि कुर्वन्ति सति तन्मार्गदानार्थं चलेदिति उक्तञ्च तत्प्रण जे से वाघाद्वय अंतरे से जहन्नेण दोन्निछावठेजोयणसए उक्कोसेण वारसजोयणसहस्साइति तत्र व्याघातिक मंतरं महर्षिकदेवस्य मार्गदानादिति अनन्तरं न्तारकदेवचलनक्रियाकारणा न्युक्ता न्यथ देवस्यैव विद्युत्स्तनितक्रिययोः कारणानि सूत्रद्वये नाह ॥ तिहीत्यादि ॥ कण्ठ्यं नवरं ॥ विज्जुयारति ॥ विद्युत् तडित् सैवक्रियतइतिकारः कार्यं विद्युतोवा करणं द्वारः क्रिया विद्युत्कार स्तं विद्युत कुर्यां

तंजहा तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा । तिहिठाणेहिं तारारूपेचलेज्जा विकुव्माणेवा परियारेमाणेवा  
ठाणाज्जा ठाणसंकममाणे तारारूपे चलेज्जा । तिहिंठाणेहि देवे विज्जुयारंकरेज्जा तं० विउव्माणेवा परि

तिम जाणिवी । वैमानिक देवनें त्रिणि असंल्लिष्ट जली लेश्या कही । ते कहेंछें । तेजो लेश्या । पदम लेश्या । शुक्ल लेश्या । चौवीस दडकें कही । जोतिषीनें तेजो लेश्या छे तेमाटे न कहिया तेहने चालिवा स्वजाव छे । ते कहेंछे । त्रिणि थानके जोतिषी तारा चलें बीजानथी स्वस्थानकथी चलें । वैक्रिय नथी विकुर्वणा करतो । तथा देवागनाथी मैथुनसेवा करवाने । पोताना थानकथी बीजे थानके जातो तारा रूप

॥ दित्यर्थः वैक्रियकरणादीनि हि सदर्प्यस्य भवन्ति तन्महत्तस्य दर्पोन्नासवत चलनविद्युद्गर्जनादी न्यपिभवन्तीति चलनविद्युत्कारादीनां वैक्रियादिकं कारणं तयोक्तमिति नृदि विमानपरिवारादिका द्युतिः शरीराभरणादीनां यशः प्रख्यातिर्बलशरीरं वीर्यजीवप्रभवः पुरुषकारस्याभिमानविशेषः स एव निश्चादितस्त्वविषयः पराक्रमश्चेति पुरुषकारपराक्रमसमाहारद्वन्द्वं स्तनितशब्दं सुपदर्शयमानमिति तथा स्तनितशब्दो मेघगर्जितं एवमित्यादि वचनं परिया रेमाणेवा तहारूवस्से त्याद्यालापकसूचनार्थमिति विद्युत्कारस्तनितशब्दा तुत्पातरूपा वनन्तरमुक्ता वथो त्यातरूपाण्येव लोकान्धकारादीनि पञ्चदशसूत्या तिहिंठाणेहिमित्यादिकया ॥ ग्राह कण्ठ्या चेत्यन्वर लोके क्षेत्रलोके न्यकारन्तमो लोकान्धकारस्याद्भवेत् द्रव्यतो लोकानुभावात् भावतोवा प्रकाशकस्वभा

यारेमाणेवा तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा इहि जुइं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुयारं करेज्जा । तिहिंठाणेहिं देवे थणियसदं करेज्जा तजहा विउव्माणे एवंजहा विज्जुयारं तहे

चले । अथवा कोईक महर्द्विक देवता वैक्रिय रूप करतानें मार्ग आपवाने चालें ॥ त्रिणि थानके देवता दर्पवन्त वीजलीनी परे उदयोत करे ते कहें हैं । वैक्रिय रूपादि विकुर्वणा करतो । देवागनाथी परिचारणा जोग करतो । तथारूप जे श्रमणा साधु माहण तेहने महानुज्ञावनें रिद्धि परिवार विमानादिकनी । द्युति शरीर आजरणानी दीप्ति । यश कीर्ति । बल शरीरनुं । वीर्य जीवनुं । पुरुषात्कार पराक्रम अजिमान उदयम एह सर्व देखाडतो वीजलीनी परे भात्कार ते विद्युत्कारप्रति करे ॥ त्रिणि थानके देवता स्तनित शब्द ते मोहनी परे ते गाजवुं ते प्रति करेहैं । विकुर्वणा करतो जिम धिजलीकरें तिमज स्तनितशब्द पणि त्रिणि प्रकारें जाणिवो । चलयो स्तनित विद्युत् इत्यादि उत्पातछे लोकसां

वज्रानाभावादिति तद्यथा अर्हन्त्य श्लोकाद्यष्टप्रकारा म्परमभक्तिपरसुरासुरविसरविरचितां जन्माग्नरमहालवालविरूढानवद्यवासनाजलाभिषिक्तपुण्यम  
हातरुकल्याणफनकल्यां महाप्रातिहार्यरूपा निखिलप्रतिपत्तिप्रक्षयात् सिद्धिसौधशिखरारोहणं चेत्यर्हतः उक्तञ्च अरहन्तिवन्दनम सणाणिअरहति  
पूयसक्कार सिद्धिगमणचअरहाअरहतातेणवुच्चति ॥ १ ॥ तेषु व्यवच्छिद्यमानेषु निर्वाणं गच्छत्सु तथा हर्षज्जमे धर्मे व्यवच्छिद्यमाने तीर्थव्यवच्छेदकाले तथा  
पूर्वाणि दृष्टिवादाङ्गभागभूतानि तेषु गत अविष्ट तदभ्यन्तरौभूत न्तत्स्वरूप यत् श्रुत तत्पूर्वगतं तेषु तत्र व्यवच्छिद्यमाने इहच राजमरणदेशनगरभङ्गा  
दावपि दृश्यते दिशा मन्थकारमात्र रजस्वलतयेति यत्पुनर्भगवत्सु अर्हदादिषु निखिलभुवनजनानवदनयनसमानेषु विगच्छत्सु लोकान्धकार भवति  
तत् किमद्भुतमिति लोकोद्योतो लोकानुभावात् मनुष्यलोके देवागमादा ॥ नाणुप्ययमहिमासु ॥ केवलज्ञानोत्पादे देवकृतमहोत्सवेष्विति देवानां भवनादि

व थणियसद्वपि । तिहिंठाणेहिं लोगंधयारेसिया तंजहा अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहंतपस्यत्तेधम्मे  
वोच्छिज्जमाणे पुव्वगएवोच्छिज्जमाणे । तिहिंठाणेहिं लोगुज्जोएसिया तंजहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं अ

उत्पात अंधकार रूप तेमांटे अंधकारनुं स्वरूप कहैछै । त्रणि थानकै लोकमां अंधकार ते कहैछै । अरिहंत अष्टमहाप्रातिहार्यवंत अतिशय  
वंत मोक्ष जाते लोकमां अंधकार थाय जावथी ग्यानी गया माटै । अरिहंतनो ज्ञाण्यो धर्म विच्छेद जाते । जरत ऐरवत आश्रीने पूर्वगत दृष्टि  
वाद विच्छेदजाते । सिद्धांत विच्छेदजाते । द्वयथी पणि राजा मरण देश नगरनां जंगादिथी अंधकार थाय ॥ एम त्रणि थानकै अजुआलुं पणि  
थाय मनुष्य लोकमां ते कहैछै । अरिहंतनो जन्मथातां । तथा दीक्षा लेतां । अरिहंतनें नाण उपजवानां उच्छवने विषे ॥ त्रणि थानकै दे





शीघ्रं ॥ सामाण्यति ॥ इंद्रसमानर्ह्यः ॥ तायत्तिंसति ॥ महत्तरकल्याः पूज्या लोकपालाः सोमादयो दिङ्निमुक्तका अग्नमहिष्यः प्रधानभार्याः परिष  
 त् परिवार स्तत्रोपपन्नका येते तथा अनीकाधिपतयो गजादिसैन्यप्रधाना ऐरावतादय आत्मरक्षा अगरक्षा राज्ञामेवेति ॥ माणुसलोयहव्वमागच्छतीति  
 प्रतिपदंसंबंधनीय ॥ १५ ॥ मनुष्यलोकागमने देवानां यानि कारणा न्युक्तानि तान्येव देवाभ्युत्थानादीना कारणतया सूत्रपञ्चकेनाह ॥ तिहीत्यादि ॥ कण्ठ्य  
 न्नवर ॥ अभुङ्क्षेति ॥ सिंहासना दभ्युत्तिष्ठेयुरिति आसनानि शक्रादीना सिंहासनानि तच्चलन लोकानुभावा देवेति सिंहनादचेलोत्तेपौ प्रमोदकार्यौ  
 जनप्रतीतौ चैत्यवृक्षा ये सुधर्मादिसभानां प्रतिद्वार पुरतोमुखमण्डपप्रेक्ष्यमण्डपचैत्यस्तूप चैत्यवृक्षमहाध्वजादि क्रमतः श्रूयन्ते लोकान्तिकाना प्रधानतरत्वे

हंतेहिंपव्यमाणेहिं अरहंताणंणाणुप्पयमहिमासु । एवं सामाण्या तायत्तीसा लोगपाला देवा अग्नमहि  
 सीनं परिसोववन्नगा देवा अणियाहिवई देवा आरक्कादेवा माणुसलोगं हव्वमागच्छंति । तिहिंठाणेहिं  
 देवा अश्रुठेज्जा तजहा अरहंतेहिंजायमाणेहिं जाव तंचेव । एवमासणाइं चलेज्जा सीहणायंकरेज्जा चेलु

महोत्सव दिवसे । तीर्थंकरनां दीक्षा महोत्सवमां । तीर्थंकरनां केवलनाणनी महिसानां महोच्छवमां । एम सामानिक देवता इंद्र सरिखी रिद्धि  
 ना धणी । त्रायस्त्रिंशक महत्तर सरिखा । लोकपाल ते सोम यम वरुण कुवेर । अग्नमहिषी ते इंद्राणी । त्रिणि पर्षदाना देवता । अनीक  
 कटकना अधिपति देवता । अंग रत्नक देवता एह सर्व इंद्रनो परिवार ए पूर्व कहिया ते त्रिणि कारणे मनुष्य लोकमा आवे ॥ त्रिणि थान्यो  
 देवता सिंहासनयो ऊठे ते कहैछे । अरिहतने जन्मथाते यावत् इमज एह त्रिणि कारणे आसन चले । एम सिंहनाद करै विमानमां पृथ्वीमां । तथा

न भेदेन मनुष्यक्षेत्रागमनकारणान्याह ॥ तिहिंदित्यादि ॥ कण्ठं नवरं लोकस्य ब्रह्मलोकस्यान्तः समीपं कृष्णराजीलक्षणं क्षेत्रं निवासो येषां ते लोकान्ते  
वौदयिकभावलोकावसाने भवा अनन्तरभवे सुक्तिगमनादिति लोकांतिकाः सारस्वतादयो ष्ठधा वक्ष्यमाणरूपादिति अथ किमर्थं भदन्ततेश्चागच्छन्तीति  
उच्यते अर्हता धर्माचार्यतया महोपकारित्वात् पूजाद्यर्थं मशक्यप्रत्युपकाराच्च भगवतो धर्माचार्या यतः ॥ तिणहेत्यादि ॥ तिणह त्रयाणां दुःखेन कृच्छ्रेण  
प्रतिक्रियते कृतोपकारेण पुसा प्रत्युपक्रियत इति खलप्रत्यये सति दुःप्रतिकर प्रत्युपकर्तुं मशक्यमितियावत् हेतुमण हेतुआयुष्मन् समस्तनिर्देशोवा हेतुमणायु  
ष्मन्निति भगवता शिष्यः सम्बोधितो ऽम्बयामात्रा सह पिता जनकः अम्बापिता तस्यैक स्थान जनकत्वेनैकत्वविवक्षणा तथा ॥ भट्टिस्सत्ति ॥ भर्तुः पोष

स्केवंकरेज्जा तिहिंठाणेहिदेवाणं चेइयरुस्का चलेज्जा तं० अरहंतेहिंजायमाणेहिं जाव तंचेव । तिहिंठाणेहिं  
लोगंतियादेवा माणुसलोगं हव्वमागच्छेज्जा तंजहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिंपव्वयमाणेहिं अरहंताणं  
णाणुप्पयमहिमासु । तिणहदुप्पफियारं समणाउसो तंजहा अम्मापिउणो न्हिस्स धम्मायरियस्स संपाउवि

वस्त्रनी वृष्टि करे ॥ त्रिणि थानकै देवताना चैत्यवृत्त चले सुधर्मादि सज्जाने बारणे बारणं होय ते कहैछे । अरिहंतनां जन्मादि त्रिणि कारणे ॥  
त्रिणि थानकै देवता लोकांतिकदेव मनुष्य लोकमा आवे पाचमुं ब्रम्ह देवलोकने पासे कृष्ण राजीमा बसेछे लोकांतिक देवता ते कहैछे । अ  
रिहतनो जन्मथाते । अरिहंतने दीक्षा लेते । अरिहंतने केवल नाशनी महिमाने विषे ॥ हिवे स्याने अर्थे ते जदत इहा आवेछे । महोपकारी  
धर्माचार्यनी पूजाने अर्थे धर्माचार्य महाउपकारी छे ते कहैछे । त्रिणि दुःप्रतीकार छे एतले तेहनो प्रत्युपकार करवामे नथी आतो ते कहैछे ।

कस्य स्वामिनद्रत्यर्थ इति द्वितीयं धर्मदाता चार्यो धर्माचार्यं स्वस्येति तृतीयं माह च दुःप्रतिकारीमाता पितरौ स्वामी गुरुश्च लोकेऽस्मिन् तत्र गुरुरिहामुच्यते  
सुदुष्करतरप्रतीकारइति ॥ १ ॥ तत्र जनक दुःप्रतिकार्यतामाह ॥ संपाउत्ति ॥ प्रातः प्रभात तेन समं संप्रातः संप्रातरपि च प्रभातसमकालमपि च यदैव प्रा-  
तः सवृत्त तदैवेत्यर्थो ऽनेन कार्यान्तराव्यग्रता दर्शयति संशब्दस्यातिशयार्थत्वाद्वा ऽतिप्रभाते प्रतिशब्दार्थत्वात् वास्य प्रतिप्रभातमित्यर्थः कश्चिदिति कुली-  
न एव न तु सर्वोपि पुरुषो मानवो देवतिरश्चो रेव विधव्यतिकरासम्भवात् शतं पाकानां मौषधिकाथानां पाके यस्य औषधिशतेन वा सह पच्यते यत् शतकृत्वो-  
वा पाको यस्य शतेन वा रूपकाणां मूल्यतः पच्यते यत्तच्छतपाक एव सहस्रपाकमपि ताभ्यां तैलाभ्यां ॥ अभिगित्ता ॥ अभ्यगकृत्वा ॥ गंधदृष्टि ॥ गंधाष्ट-  
केन गन्धद्रव्यक्षोदेन उद्धृत्योद्धलनं कृत्वा त्रिभिर्बुद्धकैर्गंधोदकोष्णोदकशीतोदकैर्भोजयित्वा स्नापयित्वा मनोज्ञं कलमोदनादि स्थाली पिठरी तस्यां पाको-  
यस्य तत्तथा अन्यत्र हि पक्कमपक्कं वा न तथा विधस्यादितोदविशेषणमिति शुद्धं भक्तदोषवर्जितं स्थालीपाकं च तच्छुद्धं स्थालीपाकेन वा शुद्धमिति विग्रहः अष्टा-

यणं केडपुरिसे अम्मापियरं सयपागसहरसपागेहिं तिल्लेहिं अण्णगेत्ता सुरज्जिणा गंधदृष्टि उद्धृत्ता तिहिं  
उदगेहि मज्जावेत्ता सव्वालंकारविज्जूसियं करेत्ता मणुत्तं थालीपागसुद्धं अण्णारसवंजणाउलं जोअणंजोअ

माता पिताने ओसिगल नथाय । जरण पोसण करै ते स्वामी तेहनो धर्माचार्य ते धर्मदाता एह तीनने नित्यं सदैव प्रजाते कई कुलवंतं पुरु-  
ष माता पिताने शतते सो अथवा हजार औषधे पाक्यो एहवे तेलेकरी मर्दनकरी स्नानकरी सुगंधयुक्त आठ द्रव्यथी उद्धर्तन करीने तीन प्रकार-  
ना पाणी सुगंध उष्ण शीतल जलथी । पळे मनोहर हांडलीमें पाक्यो शुद्ध नीपनुं दाधुं नथी एहवो अठार जातिनुं सालण तेणे सहितं भोजन-

दशभिर्लोकप्रतीतेर्व्यञ्जनैः शालनकैः सूपादिभिर्व्याकुलं सङ्कीर्णं यत्तत्तथा अथवा द्वादशभेदन्त द्वाञ्जनाकुलश्चेति अत्रभेदपदलोपेन समासः भोजन भोजयि  
 त्वा एतेचाष्टादशभेदाः सूत्रो १ दशो २ जवणं त्रिव्रियमसाइ ६ गोरसोजूसो ८ । भक्ता ९ गुललावणिया १० मूलफला ११ हरियगं १२ सागो १३ ॥ १ ॥ होइरसा  
 लूतहा १४ पाणं पाणीय १६ पाणगचेव १७ । अठारसमोसागो १८ निरुवहओलोइओपिडो ॥ २ ॥ मासत्रय जलजादिसत्त्वा जूषो मुद्रतदुलजीरककटुभांडादिर  
 सः भक्ष्याणि खण्डखाद्यादीनि गुललावणिका गुलपर्पटिका लोकप्रसिद्धा गुडधानावा मूलफलान्येकमेवपद हरितकं जीरकादिशाको वसुलादि भर्जिकारसा  
 लू मज्जिका तल्लक्षणमिदं दीघयपलामहुपलं दहिस्सअडाढयभिरियवीसा दसखडगुलपलाई एसरसालूनिवइजोगत्ति ॥ १ ॥ पानसुरादि पानीय जलं पान  
 कं द्राक्षापानकादि शाकं स्तकं सिद्धइति यावज्जीवो यावज्जीव यावत्पाणधारणं पृथौ स्कन्धे अवतसइवावतंसः शेखरं स्तस्य करणमवतसिका पृथ्यवतसिका  
 तथा परिवहेत पृथ्यारोपितमित्यर्थः तेनापि परिवाहकेन परिवहनेनवा तस्यांवा पितुं दुःप्रतिकरं मशक्यं प्रतीकारइत्यर्थः अनुभूतोपकारतया प्रत्युपकारका  
 रित्वा दाहच कयउवयारोजोहो इसज्जणोहोउकोगुणोतस्स उवयारवाहिराजे हवतितेसुदरासुयणत्ति ॥ १ ॥ अहेणसेप्रति ॥ अथचेत्तु णमित्तिवाक्या ल

वेत्ता जावज्जीवं पिठिवहंसिया तेपरिवहेज्जा तेणावि तस्सअम्मापिउस्स दुप्पज्जियारं जवइ । अहेणंसे  
 तअम्मापियर केवलपिपन्नत्तेधम्मो अघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता छाविता जवइ तेणामेव तस्सअम्मा

जिमाणी जावज्जीव जीवे तिहांलंगि वासे उपाडे चाले एतला वानाकरे तोपणि तेपुत्र माता पितानो ओसिंगल नथाय एहवो जगवंत कहियो  
 छे ॥ हिवे जो ते पुत्र माता पिताने कदापि केवलीनो जाण्यो धर्म कहै समझावे समझावीने प्ररूपीने जेद जेदातर कहीने धर्ममां थितकरे धर्मक

द्वारे सपुरुष स्तमम्बापितर धर्मं स्थापयिता स्थापनशीलो भवत्यनुष्ठानतः स्थापयतीत्यर्थः किञ्चुत्वेत्याह ॥ आघवइत्ता ॥ धर्ममाख्याय प्रज्ञाप्य बोधयित्वा  
 प्ररूप्य भेदतइति अथवा ख्याय सामान्यतो यथाकार्यो धर्मः प्रज्ञाप्य विगेषतो यथा सा वहिसादिलक्षण. प्ररूप्यभेदतो यथा शीलाङ्गसहस्ररूपइति शीला  
 र्थद्वन्नतानि चेतानीति ॥ तेणामेवत्ति ॥ तत स्तेनैव धर्मस्थापनेनैव न परिवहनेन अथवा तेनैव धर्मस्थापकपुरुषेण नपरिवाहिना तस्य प्रत्युपकरणीयस्य  
 स्वा पितुः ॥ सुपडियारत्ति ॥ सुखेन प्रतिक्रियते प्रत्युपक्रियतइति सुप्रतिकार भावसाधनोय तद्वति प्रत्युपकारः कृतोभवतीत्यर्थः धर्मस्थापनस्य महोप  
 कारत्वा दाहच सम्पत्तदायगाण दुप्पडियारभवेसुवहुएसु सच्चगुणमेलियाहिवि उवयारसहस्रकोडोहिति ॥ १ ॥ अथ भर्तुं दु.प्रतिकार्यतामाह कश्चित्  
 कोपि महतो ऐश्वर्यलक्षणा ऽर्चा ज्वाला पूजावायस्य अथवा महाश्वासावर्थपतितयार्चश्च पूज्यइति महार्चो महार्चोवा माहृत्यमहत्त्वतद्योगान्माहृत्योवा  
 ईश्वरइत्यर्थः दरिद्र मनीश्वरकञ्चनपुरुष मतिदुस्य समुत्कर्षयेत् धनदानादिनोत्कृष्टकुर्यात् ततः समुत्कर्षणा नन्तरं सदरिद्रः समुत्कृष्टो धनादिभिः ॥ समाणेत्ति  
 सन् ॥ पच्छत्ति ॥ पञ्चाळाले ॥ पुरचणत्ति ॥ पूर्वकालेच समुत्कर्षणकालएवेत्यर्थः अथवा पञ्चात् भर्तुं रसमक्षं पुरश्च भर्तुः समक्षं विपुलया भोगसमित्या भोग

पिउस्स सुप्पक्रियारंजवइ समणाउसो केइमहच्चे दरिद्रं समुक्कसेज्जा तएणं सेदरिद्देसमुक्किठेसमाणे पच्छा  
 पुरंचणं विउलज्जोगसमिइसमस्सागएयावि विहरेज्जा तएणंसेमहच्चे अन्नयाकयाइं दरिद्रीज्जएसमाणे तस्सद

रावे तेणे करीने ते पुत्र माता पितानो सुप्रतिकार ते ओसिगल थाय ॥ बीजो अधिकार कहैछे । हे अमण हे आयुष्मन् कोईक मोटो द्रव्यवंत ते  
 कोईक दरिद्री पुरुषने द्रव्य देवने उत्कृष्टकरे अर्थात् धनवानकरे पीछे ते दरिद्रीने उत्कृष्ट थया पछी ते पूर्वकाले धन पास्या पछी घणा जोग स

समुद्रयेन समन्तागतो युक्तो यः स तथा सचापि विहरेत् वर्त्तते ततो नन्तरं समहार्जोभर्त्ता ॥ सव्वरसंति ॥ सर्वेषु तत् स्वप्न द्रव्यं चेति सव्वरसं तदपि आस्ता  
मत्पन्निति ॥ दलमाणत्ति ॥ दंदन् नकृतप्रलुपकारोभवेदिति शेषः अत स्तेनापि सर्वसदानेन सर्वस्वदायकोनापि जा दुःप्रतिकरमेवेति अथ धर्माचार्यदुः  
प्रतिकार्यतामाह ॥ केदत्तादि ॥ आरियंति ॥ पापकर्मभ्य आराद्यातमिति आर्य मतएव धार्मिक मतएव सुवचनं श्रुत्वा श्रोत्रेण निश्रम्य मनसा स्वधार्य्य  
अन्यतरेषु देवलोकेषु न्यतरदेशानां मध्येत्यर्थः देवत्वेनोत्पन्नइति दुर्गमा भिच्चा यस्मिन् देशे सदुर्भिव स्तस्मा त्संहरेत् नयेत् कांतार मरणं निर्गतः कां

रिद्धरस अंतियं हव्मागच्छेज्जा तएणं सेदरिद्धे तस्सज्जहिस्स सव्वरसवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पहि  
यारं जवइ अहेणंसे तंजहिं केवलपिपन्नत्तेधम्मे अघवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता जवइ तेणामेव तस्सज्जहि  
रस सुपण्णियार जवइ । केइ तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अंतियमेगमवि अरियधम्मां सोच्चा नि

मुदाये करीने सहित विचरें रहैं तिवार पल्ली ते जर्हा स्वामी जेणे दरिद्रीने धन देईने धनवान कीधो ते एकदा समये दरिद्री थयो धनरहित  
थयो निर्गुनयई तें पोताना करेला धनवाननें पासे आवे तिवारे ते दरिद्री ते स्वामीनें सघलोई द्रव्य आपे पोते कांई नराखे तोपिण ते दरिद्री  
ते स्वामीनो ओसिंगल नथाय । तो किम ओसिंगल थाय ते कहैंछैं । ते दरिद्री ते स्वामीने केवलीनो जाण्यो धर्म कहैं कहीने ते आगलि  
प्ररूपीने समझावीने धर्ममां दृढकरैं तेहथी धर्म कराये तेथी त स्वामीनो ओसिंगल थाय । एतले धर्म पमाडे तो ओसिंगल थाय ॥ हिवे  
धर्माचार्यनी दुःप्रतिकार्यता कहैंछैं । कोईक पुरुष तथारूप मोटोअमण साधु माहनने पासे एक आर्य निष्पाप धर्मना शुभ्रवचन प्रति सांभली

તારા ત્રિઃકાંતાર સ્તં નિષ્ક્રામિતારંવા દીર્ઘઃ કાલો વિચ્યતે યસ્ય સઃ દીર્ઘકાલિક સ્તેન રોગઃ કાલસહઃ કુષ્ટાદિરાંતકઃ ક્ષક્ષ્જોવિતકારી સદ્યોષાતો  
ત્યર્થઃ શૂલાદિ રનયો હૃન્દૈકત્વે રોગાતક તેનેતિ ધર્મસ્થાપનેનતુભવતિ ક્ષતોપકારો યદાહ જોજેણજમિઠાણ મિઠાવિત્રોદસણેવચરણેવા સોતતત્રોચુયત  
મિચેવકાઙ મવેનિરિણોત્તિ ॥ ૧ ॥ શેષ સુગમત્વાત્ર સ્પૃષ્ટમિતિ ધર્મસ્થાપનેન ચાસ્ય ભવચ્છેદલક્ષણઃ પ્રત્યુપકારઃ કૃતઃ સ્યાદિતિ ધર્મસ્ય સ્થાન ત્રયાવતારણેન

સમ્મ કાલમાસે કાલંકિચ્છા ચન્તયરેસુદેવલોણસુ દેવતાણ ઉવવન્તે તણં સેદેવે તંધમ્માયરિયં દુપ્પિરકાનં  
વા દેસાનં સુન્નિરકદેસં સાહરેજ્ઞા કંતારાનં વા ણિક્કતારંકરેજ્ઞા દીહકાલિણં વા રોચ્ચાતકેણ ચન્નિનૂયં  
વિમોહજ્ઞા તેણાવિ તસ્સધમ્માયરિયસ્સ દુપ્પઠિયારં ત્તવહ્ અહેણંસે તંધમ્માયરિયં કેવલિપક્ષત્તાનંધમ્માનં  
ત્તઠંસમાણં ત્તુજ્ઞોવિ કેવલિપક્ષત્તેધમ્મે ચ્ચાઘવહ્ત્તા જાવ ઠાવહ્ત્તા ત્તવહ્ તેણામેવ તસ્સધમ્માયરિયસ્સ સુ

ને સમ્યક્ પ્રકારેં ધર્મકરી આજ્ઞાઓ પૂર્ણકરી કાલકરીનેં અન્યતર કોઈ એક દેવ લોકનેં વિપેં દેવતાપણે ઉપજે તિવારેં તે દેવતા તે ધર્માચાર્યનેં દુ  
ર્ભિન્ન દોહલી જિન્નાઢે જિહાં જે દેશમાં એતલે દુકાલ માથી સુજિન્ન જિહાં સુકાલ હોય તે દેશમાં આંણ મૂકે ॥ અથવા અટવીમાં પડ્યાહોય તિહાં  
થી વસતીમાં આણી મૂકે । અથવા ઘણા કાલનો રોગહોય રોગની પીઠાથી પરાજિત્તો હોય તે રોગથી મૂંકાવે દેવશક્તી થી એતલે પ્રકારેં પણ  
તે ધર્માચાર્યને ધર્મમા આપનારને દુઃપ્રતિકાર ઓસિંગલ નથાય તો કિમ થાય તે કહેઢે । જો કદાપિ તે ધર્માચાર્યને કેવલી જાણિત ધર્મથી પઠિ  
યા પ્રતિ ધર્મથી જૂઠ્ઠાથયો તો તે પ્રતિ ફરીને કેવલી જાણિત ધર્મ તે આગલિ કહી સમજાવી પાઢો ધર્મમાં થાપિયે આષાઢાચાર્યને જેમ ચેલે વા



ललक्षणा अचेतनद्रव्यधर्मा अनन्तरमुक्ता स्तत्साधर्म्यात्पुद्गलधर्मा निरूपयन् सूत्राणि पञ्चचतुरश दण्डकानाह ॥ तिहीत्यादि ॥ च्छिन्नः खट्वादिना पुद्गलः समुदायात् चलत्येवेत्यत आह अच्छिन्नपुद्गलइति ॥ आहारिज्जमाणेति ॥ आहारतया जीवेन गृह्यमाणस्वस्थाना चलति जीवेना कर्षणात् एवं विक्रियमाणोविक्रियकरणवशवर्तितयेति स्थाना तस्थानान्तर सक्तम्यमानो हस्तादिनेति उपधीयते पोष्यते जीवोनेनेत्युपधिः कर्मणो पधिः कर्मो

मज्जिमा जहन्ता । एवं ठप्पियसमानं ज्ञाणियव्वानं जाव दुसमदुसमा । तिविहा उस्सप्पिणी पस्सत्ता तंजहा उक्कोसा मज्जिमा जहन्ता । एवं ठप्पियसमानं ज्ञाणियव्वानं जाव सुसमसुसमा । तिहिंठाणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा तंजहा आहारिज्जमाणेवापोग्गले चलेज्जा विउव्वमाणेवापोग्गले चलेज्जा ठाणानंठाणंसंका मेज्जमाणेवापोग्गले चलेज्जा । तिविहा उवही पस्सत्ता तंजहा कम्मोवही सरीरोवही बाहिरज्जमत्तोवही ।

मा ते उत्कृष्ट उत्सर्पिणी काल पछें चौथा आरा ताई मध्यम पांचमो छठो ते जघन्य । एम त्रिणि प्रकारे उत्सर्पिणी काल कहियो तेकहैछें । उत्कृष्ट मध्यम जघन्य । एम जघन्य ए छरे आरा चढता चढता जाणवा । एक दो आरौ जघन्य त्रीजो चौथो पांचमो आरौ ते मध्यम काल । यावत् सुखम सुखमा छठो आरौ ते उत्कृष्टो काल कहिये । काल ते अचेतन कहियो सरखाईपणा माटे पुदगलधर्म कहैछें । त्रिणि थानकै खडगादिक अणछेदरो पोतानी मेले समुदायमांथी पुदगल चले तेकहैछें । जीव आहार पणो ले तेस्वथानकथी पुदगल चले जीव तासी ले । देवता मनुष्य वैक्रियने वशवर्ती पुदगलछे तेमाटे । अथवा एक थानकथी बीजे थानके सक्रामीने हस्तादिकै करीने मूकै ते पुदगल चले घणा होय तेहमाथी पुदगल ते उपधि गूहण रूप

भवच्छेदकारणतामाह ॥ तिहीत्यादि ॥ कण्ठा नवरं अनादिक मादिरहित मनवदग्र मनस्तं दीर्घाध्वं दीर्घमार्गं चत्वारिंशता विभागा नरकगत्याद यो यस्य तच्चतुरन्त न्दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् संसारएव कान्तार मरण्य संसारकान्तारं तद् व्यतिव्रजत् व्यतिक्रमेदिति अनादिकत्वादीनि विशेषणानि कां तारपक्षेपि विवक्षया योजनीयानि तथा ह्यनाद्यनन्तमरण्य मतिमहत्वा चतुरन्त न्दिग्भेदादिति निदानभोगर्हिप्रार्थनास्वभाव मार्त्तध्यान ग्त्व जिंतता अनिदानता तथा दृष्टिसम्पन्नता सम्यग्दृष्टिता तथा योगवाहिता श्रुतोपधानकारित्व समाधिस्थायितावा तयेति भविष्यतिव्रजनंच कालवि शेष एवस्यादिति कालविशेषनिरूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्राणि चतुर्दश कण्ठ्यानि नवर भवसर्पिणीप्रथमे अरके उत्कृष्टा चतुर्षु मध्यमा पश्चिमे ज घन्या एव सुखमसुखमादिषु प्रत्येकं त्रय त्रय कल्पनीय तथा उत्सर्पिण्यां दुःखमदुःखमादि तद्भेदाना चोक्तविपर्ययेणो त्कृष्टत्वं प्राग्वत् योज्यमिति का

प्यक्रियारं नवइ । तिहिंठाणेहिं संपन्नेष्णगारे ञ्णार्इयं ञ्णवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं विइव एज्जा तंजहा ञ्णिदाणयाए दिठिसंपन्नयाए जोगवाहियाए । तिविहा उसप्पिणी पस्सत्ता तंजहा उक्कोसा

त्यो देवता थईने तेणे प्रकारे ते धर्माचार्यने ओसिंगलथाय धर्मथी ससार तरिये अन्यथा नथाय ॥ हिवे संसार तरवानां भेद कहैछै । त्रणि था नके सहित अणगार साधु जेहनो आदिनथी अतनथी जेहनोमोटोमार्गछै चारमनुष्यादिगति ससाररूप अटवीप्रति उत्तरे अतिक्रमै ते त्रण बोल कहैछै । धर्मकरीरिद्धिनो नियाणो नकरे । समकित सहितहोय । योग उपधानतपकरै श्रुतसमाधि राखै ससारतरवो ते नवधितिकाल पूरोथये होय तेमाटे काल विशेषनू स्वरूप कहैछै । त्रणि प्रकारे उत्सर्पिणी कही । उत्कृष्ट मध्यम जघन्य । एणे प्रकारे छए आरा जाणवा । पहिलो आरो सुखमसुख

पधिः एव शरीरोपधि बाह्यशरीरवह्निर्वत्तो भाण्डानिच भाजनानि मृग्यानि मात्राणि मात्रायुक्तानि कांस्यादिभाजनानि भोजनोपकरणमित्यर्थः  
 भाण्डमात्राणि ताग्येवो पधि भाण्डमात्रोपधि रथवा भाण्डं वस्त्राभरणादि तदेव माना परिच्छेदः सैवो पधिरिति ततो बाह्यशब्दस्य कर्मधारयप्र  
 ति चतुर्विंशतिदण्डकचिन्ताया मसुरादीना त्रयोपि बाष्पाः नारकैकेन्द्रियवर्जा स्तेषा उपकरणस्याभावात् ह्रीन्द्रियादीना न्तूपकरण दृश्यते एव केपा  
 सिद्धिति ॥ असएवाह ॥ एजमित्यादि ग्रहवेत्यादि ॥ सचित्तोपधि यथा शैलभाजन सचित्तोपधि वस्त्रादिः मिश्रः परिणतप्रायं शैलभाजनमिवेति दण्डक  
 चिन्ता सुगमा नपर सचित्तोपधि नारकाणां शरीर अचेतन उत्पत्तिस्थान मिश्रः शरीरमेवो च्छासादिपुद्गलयुक्तं तेषा सचेतनाचेतनत्वेन मिश्रत्वस्य  
 पिवज्जणादिति एवमेवशेषाणामप्यय मूलमिति ॥ तिविहेपरिगृह्येत्यादि ॥ सूत्राण्यु पधिवत् ज्ञेयानि नवर अरिगृह्यते स्वीक्रियतइति परिगृहो

एव असुरकुमाराणं ज्ञाणियत्वं एवं एगिंदियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं । अहवा तिविहा उवही पसत्ता  
 तजहा सच्चित्ते अच्चित्ते मीसए । एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं । तिविहे परिगृह्ये पसत्ते तंज

परिगृह्ये ते उपधिनो स्वरूप त्रणि प्रकारे ते कहैछे । कर्मोपधि ते आठ कर्मनो परिगृह । शरीर उपधि ते औदारिकादिक पांचनी । बाहिर  
 परिगृह माटीना कासाना पात्रादिक अथवा वस्त्राभरणादिक उपधि । एम असुरकुमारादि दसने ए उपधि परिगृह होय । ते एहनी परे जा  
 रावो । एम चौबीस दण्डके एकेद्री नारकी लाडीने कोईक बेइन्द्रियादिकने दीसे तीन उपकरण । यावत् वैमानिक देव पर्यंत तीन उपधि कहौ ।  
 अथवा तीन प्रकारे उपधि ते कहैछे । सचित्त पाषाणादिक ज्ञाजन । अचित्त वस्त्रादिक । मिश्र ते एज शैलादि ज्ञाजन काईक सचित्त काईक  
 अचित्त । एम नारकादि चौबीस दण्डके सर्वने होय । नारकीने एम जाव वैमानिक चौबीस दण्डक लगे । तीन प्रकारे परिगृह कहियो ते कहै

मूर्च्छाविषयइति दूहचैषा मयमिति व्यपदेशभागे ग्राह्यः सचनारकैकेन्द्रियाणां कर्मादिरेव सम्भवति नभाण्डादिरिति पुद्गलधर्माणां त्रित्वं निरूप्य जीवधर्माणां ॥ तिविहेत्यादिभिः ॥ सूत्रे स्तदाह कण्ठ्यानि चैतानि नवर अणिहितः प्रणिधान मेकाग्रता तच्च मनः प्रभृतिसम्बन्धिभेदात् त्रिविधेति तत्र मनसः प्रणिधान मनःप्रणिधान एवमितरे तच्च चतुर्विंशतिदण्डके सर्वेषां पञ्चेन्द्रियाणं भवति तदग्न्येपान्तु नास्ति योगानां सामस्येना भावा दित्यत एवोक्तं

हा कम्मपरिगृहे शरीरपरिगृहे बाहिरज्जमत्तपरिगृहे । एवमसुरकुमाराणं एवं एगिंदियनेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं । अहवा तिविहे परिगृहे पस्सत्ते तंजहा सच्चित्ते अच्चित्ते मीसए एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं । तिविहे पणिहाणे पस्सत्ते तंजहा मणपणिहाणे वयपणिहाणे कायपणिहाणे । एवं पंचेन्द्रिया

हैं । कर्म परिगृह आठ प्रकारे । शरीर परिगृह पाच प्रकारे । बाहिर परिगृह ज्ञांड पात्र वस्त्रादिक । एम असुरकुमारादिकने जाणवो । एम चौवीस दण्डक माहि एकेद्री नारकी खांडीने एहने ज्ञाडादि परिगृह नथी तेमाटे यावत् वैमानिक ताई त्रणि परिगृह जाणिवा । अथवा तीन प्रकारे वली परिगृह कहियो ते कहैहैं । सचित्त परिगृह । अचित्त वस्त्रादि । मिश्र ते सचित्ताचित्त । ए त्रण परिगृह चौवीस दण्डक आ तरा रहित वैमानिकताई होय एकेद्री नारकीने पणि होय । ए प्रथम कहियो छे तिम पुदगलनू त्रिविध पणू कहैहैं । त्रण प्रकारे प्रणिधान क हियो मन प्रमुखनू एकाग्र पणू करवू ते प्रणिधान ते कहैहैं । मननू प्रणिधान ते मननू एकाग्रपणू । वचननू एकाग्रपणू ते वचन प्रणिधान । का यानू एकाग्रपणू ते काय प्रणिधान । एणे प्रकारे ए त्रण प्रणिधान पंचेद्रीने होय चौवीस दण्डक मांडी यावत् वैमानिक ताई । एकेन्द्रियादिकने ए

एवं ॥ પંચિન્દિયેલાદીનિ ॥ પ્રણિધાનંદિ શ્રમાશુભભેદ મથશુભમાત્ ॥ તિવિદેલાદિ ॥ સામાન્યસૂત્રં વિશેષ માનિત્વ ચતુર્થિશતિદ્વયજાચિગ્તાયાં મનુષ્યા  
 ણામેય તથાપિ સંગતાનામેવેદં ભવતિ ચારિત્રપરિણામરૂપત્વા દસ્યેતિ ॥ અતઃપચાત્ ॥ સંજણ્યાદિ ॥ ૨ દુઃપ્રણિધાન મશુભમનઃ પ્રવૃત્તાદિરૂપં સામાન્ય  
 પ્રણિધાનવત્ આસ્થેયમિતિ ૨ જોયપર્યાયાધિકારા ॥ તિવિદેલાદિના ॥ ગમ્'યક્ષમંતોત્યેતદંતેન ॥ ગૃથેન યોનિસારૂપમાત્ તથ શુચિત્તિ તેજસકાર્મણ  
 શરીરચક્ષુઃ સંતઃ શ્રીદારિકાદિશરીરેણ મિત્રીભવં ત્યસ્યા મિતિ યોનિર્જીવસો ત્પતિસ્થાનં શ્રોતાદિસ્પર્શવદિતિ ॥ એવંતિ ॥ યથા સામાન્યત સ્તિ

પં જાવ વેમાણિયાણં । તિવિદે સુપ્પણિહાણે પણત્તે તંજહા મણસુપ્પણિહાણે વચસુપ્પણિહાણે કાયસુપ્પ  
 ણિહાણે । સંજયમણુસ્સાણં તિવિદે સુપ્પણિહાણે પણત્તે તંજહા મણસુપ્પણિહાણે વચસુપ્પણિહાણે કાયસુપ્પ  
 ણિહાણે । તિવિદે દુપ્પણિહાણે પણત્તે તંજહા મણદુપ્પણિહાણે વચદુપ્પણિહાણે કાયદુપ્પણિહાણે । एवं पंचे

તીન પૂરી હોય । અશુભ શુભ હોય । શુભ કહેલે । તમા પ્રકારે શુભ પ્રણિધાન કહિયું તે કહેલે । એક મન સુપ્રણિધાન જે મન જતૂં ધર્મમાં ।  
 વચનનું સુપ્રણિધાન જે સત્યવચન । કાયસુપ્રણિધાન જેકાયાથી પાપ ન કરે ધર્મકરે ॥ સયમવત મનુષ્યને એતલે સાધુને તણિ સુપ્રણિધાન  
 કહિયા તેકહેલે । મનસુપ્રણિધાન । વચનસુપ્રણિધાન । કાયસુપ્રણિધાન । એ ચારિનિયાનેહોય ॥ તણિ દુપ્રણિધાન અશુભકહિયા તેકહેલે । મનદુ  
 પ્રણિધાનમાંદુમન । વચનદુઃપ્રણિધાન અસત્યવચનવોલે । કાયદુઃપ્રણિધાન જેકાયાથી પાપકરવો । એ પંચેંદ્રીને યાવત્ વૈમાનિકતાંઈ હોય । જીવના  
 અધિકારમાટે ત્રણિભેદે યોનિકરી તેકહેલે । શીતા ઉષ્ણા શીતોષ્ણા ॥ એણે પ્રકારે એકેદ્રી વિગલેન્દ્રી તે યેશંદ્રી તેણંદ્રી ચૌશંદ્રી એહતીનને

विधा स्तथा चतुर्विंशतिदण्डकचिंताया मेकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां तेजोवर्षाणां तेजसा मुण्योनित्वात् पञ्चेन्द्रियतिर्यक्पदेमनुष्यपदेच समूच्छ्र्णजानां  
 त्रिविधाशेषाणां त्वन्यथेति यतआह सीओसिणजोणीया सवेदेवायगभवकंतौ उसिणायतेउकाए दुहनिरएतिविहसेमाणति ॥ १ ॥ अन्यथा योनि  
 त्रैविध्यमाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर न्दण्डकचिंतायां एकेन्द्रियादीना सचित्तादि त्रिविधा योनि रन्नेषा न्वन्यथा यतउक्त अचित्ताखलुजोणी  
 नेरद्वयाणतहेवदेवाण मौसायगभवसहौ तिविहाजोणीयसेमाणति ॥ १ ॥ पुन रन्यथातामाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सम्वृत्ता संकटा घटिकालयवत् विवृता

दियाणं जाव वेमाणियाणं । तिविहा जोणी पस्यत्ता तंजहा सीञ्जा उसिणा सीञ्जसिणा । एवमेगिंदियाणं  
 विगलेंदियाण तेउकाइयवज्जाणं संमुच्छिमपंचेंदियतिरिस्कजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साणय । तिविहा जो  
 णी पस्यत्ता तेजहा सच्चित्ता अच्चित्ता मौसिया । एवमेगेंदियाण विगलेंदियाणं संमुच्छिमपंचेंदियतिरिस्क  
 जोणियाणं संमुच्छिममणुस्साणय । तिविहा जोणी पस्यत्ता तंजहा संवुक्का वियक्का संवुक्कवियक्का । तिविहा

थाय । तेउकाय ठांडीने एहने उष्णयोनिहोय । समूच्छिम पचेन्द्री तिर्यंचने देवताने गर्भजने शीतोष्णयोनिहोय । अग्निने उष्णा बीजाने  
 त्रणियोनिसमूच्छिम मनुष्यने । बीजीपणि त्रणियोनिकही ते कहैछे । सचित्तयोनि । अचित्तयोनि । शिग्रयोनि तेषचित्ताचित्तयोनि ॥ एकेंद्री  
 विगलेंद्रीने समूच्छिमतिर्यंच पचेंद्री समूच्छिममनुष्यने एतलाने त्रणयोनिहोय । देवता नारकीने एक अचित्तयोनिहोय । गर्जजमनुष्य तिर्यंचने  
 मिश्रयोनिहोय । समूच्छिम मनुष्यने मिश्रयोनिहोय ॥ यली त्रणयोनिकही । तेकहैछे । सवृतसाकडीयोनि घडीनाघरसरिखी । विवृतयोनि

विपरीता सम्भृतविद्यता तदुभयरूपेति एतत्प्रभागीयं एगिंदियनेरद्वया संवुडजोणीचयंतिदेवाय गिगनिंदियाणपियडा संवुडवियडायगभयकगिति ॥ १ ॥  
 कुम्मुन्नयेत्यादि ॥ कण्ठां नवर कूर्मः पाच्छप स्तदुन्नता कूर्मोन्नता शपस्तेवा चर्तो यसां सा शपाचर्ता वंशा वंशजात्या पचकमिय या सा वशीपतिता  
 ॥ गभंयकमंतित्ति ॥ गर्भे उत्पद्यन्ते बलदेववासुदेवानां सप्तचरत्नेने कालवियधयो तमपुरुषचैविध्यमिति ॥ बह्वेलादि ॥ योनित्वा जीवाः पुद्गलाश्च तत्  
 गहणमायोग्याः जिं व्युत्क्रामन्ति उत्पद्यन्ते व्युत्क्रामन्ति विनश्यति एतदेवव्याख्याति ॥ पिडाकमंतित्ति ॥ कोर्थः चयन्ति ॥ वक्कमंतित्ति ॥ किमुत्तां भव

जोणी पणत्ता तं० कुम्मुन्नया संखावत्ता वंसीवत्तिया । कुम्मुन्नयाणंजोणी उत्तमपुरिसमाऊणं । कुम्मुन्नया  
 णं जोणीए तिविहा उत्तमपुरिसा गप्पं वक्कमन्ति तंजहा अरहन्ता चक्कावही बलदेववासुदेवा । संखावत्ता  
 णं जोणी इत्थियरयणस्स संखावत्ताएणंजोणीए बह्वे जीवाय पोग्गलाय वक्कमन्ति विउक्कमन्ति चयन्ति

तेमोकली । संवृतविवृतयोनि तेषांकलीमोकली । एकेंद्रीनें नारकीनें संवृतयोनि देवताने विगलेंद्रीने विवृतयोनिकही । गर्भजनें संवृतयोनिकही ॥  
 वली नशयोनिकही तेकहैल्ले । कुर्मोन्नतायोनि तेकात्तवानीपरे उची । संखावर्तायोनि तेसंरानीपरे प्रावर्तहोय । वंशीपनायोनि वासनापतासरि  
 सी ॥ कुर्मोन्नतायोनि तेउची पुरुषनें उपजिवानों थानक तेकहैल्ले । कुर्मोन्नतायोनिनेविषे नशिप्रकारना उत्तमपुरुष गर्भमांउपजे तेकहैल्ले । परि  
 हंत चक्रवर्त्ति बलदेववासुदेव साधिउपजे तेमांटे एकठाकहिया । संखावर्तायोनि चक्रवर्त्तिनी सीने होय रीरत्तने होय । संखावर्तायोनिनेविषे  
 घणां जीव अनेपुदगल गृहिवानेयोग्य तेजीवपुदगल घणाउपजे । अनेविशासे । चवे अनेउपजे पशिनीपजेनथी जन्मनथाय ॥ वंशीपनायोनि बीजा

ति उत्पद्यन्तइति ॥ पिहज्जणस्सत्ति ॥ पृथग्जनस्य सामान्यजनस्यो त्याक्तकारणभवतीति अनन्तर योनितो मनुष्याः प्ररूपिता अधुना मनुष्यसधर्मणो वादरवनस्पतिकायिकान् प्ररूपयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ तृणवनस्पतयो वादराइत्यर्थः संख्यातजीविकाः संख्यातजीवा यथा नालिकावडकुसुमानि जाल्यादीनीत्यर्थः असंख्यातजीविकाः यथा निम्बाम्नादीनां मूलकन्दस्कन्धत्वक्शाखाप्रवाला अनतजीविकाः पनकादयइति इह प्रज्ञापनासूत्राण्यपीत्यं जेकेइ नालियावडा पुष्पासखेज्जजीविया णिहुयाअणतजोवा जेयावन्नेतहाविहा ॥ १ ॥ पउमुप्पलनलिणाण सुभगसोगंधियाणय अरविंदकोकणाण सयवत्तसह सवत्ताण ॥ २ ॥ विटवाहिरपत्ता यकन्नियाचेवएगजोवस्स अभिंतरगापत्ता पत्तेयकेसरमिजत्ति ॥ ३ ॥ तथा लिबंबजवुकोस वसालअकोल्लपीलुसल्लया सल्लइ मोयइमालुय वडलपलासेकरंजेयेत्यादि ॥ ४ ॥ एएसिणं मूलावि असंखिज्जजीविया कंदावि खदावि तयावि सालावि पवालावि पत्ता पत्तेयजीविया पुष्पा अण्णेगजीविया फला एगठियत्ति अनतरं वनस्पतय उक्ता स्तेच जलाश्रया बहवो भवतीति सवंधा जलाश्रयाणां तीर्थानान्निरूपणायाह ॥ जंबू

उववज्जंति नोचेवणं णिप्पज्जंति । बंसीपत्ताणंजोणी पिहज्जणस्स बंसीवत्तियाणुणं जोणीए बहवे पिहज्जणे गप्पंवक्कमंति । तिविहा तणवणस्सइकाइया प० तं० संखेज्जजीविया अणसंखेज्जजीविया अणंतजीवि

सामान्यपुरुष मनुष्यनेहोय । बंशीपत्रायोनिमां घणासामान्यपुरुष गर्जतयाउपजै ॥ एहत्रणयोनि मनुष्यनेकही मनुष्यनांस्वरूप सरखी वादर तृणवनस्पति कायळै तेकहैळै । त्रणप्रकारे वनस्पति संख्याता जीवनी एकजाईनोफूल । असंख्यातजीवनी कमलप्रमुखनोकंद मूलखंधळालमां असंख्यातजीवहोय । अनताजीवनी नीलफूलप्रमुख ॥ वनस्पती जलाश्रये बहुलयाय तेमांटे जलाश्रयतीर्थ कहैळै । त्रणितीर्थकहिया जंबूद्वीपनां जरत



द्दीवेत्यादि ॥ पंचदशसूती साचादतिदेशाभ्यां सुगमाच्च केवलं तीर्थानि चक्रवर्तिनः समुद्रशीतादिमहानद्यवतारलक्षणानि तन्नामकदेवनिवासभूतानि तत्र भरतैरवतयो स्तानि पूर्वदक्षिणापरसमुद्रेषु क्रमेणेति विजयेषु शीताशीतोदामहानद्योः पूर्वादिक्रमेणेयेति जंबूद्वीपादौ मनुष्यक्षेत्रे सति तीर्थानि प्ररूपितानि अधुना तत्रैव संत काल विष्टानोपयोगिन सूत्रपञ्चदशकेन साचा दतिदेशाभ्यां निरूपयन्नाह ॥ जंबूद्वीपेत्यादि ॥ सुबोधं कृतं ॥ पञ्चक्षेत्रेति ॥ अवसर्पिणीकालस्य वर्तमानत्वेना तीतोत्सर्पिणीवत् ॥ होत्यस्ति नक्षपदेशः कार्यो ऽपितु पणक्षेत्रेति कार्यं इत्यर्थः ॥ जंबूद्वीपेत्यादिना ॥ वास्तु

या । जंबूद्वीवेद्वीवे नारहेवासे तत्र तित्या पणक्षेत्रा तंजहा मागहे वरदामे पञ्चासे । एवं एरवण्वि । जंबूद्वीवेद्वीवे महाविदेहेवासे एगमेगे चक्रवर्तिविजय तत्र तित्या पणक्षेत्रा तंजहा मागहे वरदामे पञ्चासे । एवं धायइखंद्दीवे पुरच्छिमद्वेवि पञ्चत्यिमद्वेवि । पुरकरवरदीवहपुरश्चिमद्वेवि पञ्चत्यिमद्वेवि । जंबूद्वीवेद्वीवे

क्षेत्रमां तेकहेहै । मागध वरदाम प्रजास । एम एरवतक्षेत्रमापणि नक्षतीर्थकहिया । जंबूना महाविदेहक्षेत्रमा एकोक चक्रवर्तिविजयमा त्रिणतीर्थकहिया मागध वरदाम प्रजास । एम धातकीखड्दीपमा पूर्वदिशि तीनतीर्थकहिया । एम पश्चिमदिशि पणिजाणवुं । पुष्करार्द्धनेविपे पणिपूर्वार्द्धमां पश्चिमार्द्धमांपणि तीनतीर्थकहिया । एहतीर्थ मनुष्यक्षेत्रमाळे तीर्थ तेचक्रवर्तिना साधवाना तीर्थनामैज देवताप्रधिष्ठित ॥ मनुष्यक्षेत्रमा कालमानळै तेकहेहै । जंबूद्वीपमा भरतक्षेत्रे तथा एरवतक्षेत्रे गर्दुत्सर्पिणीनेविपे सुरामाप्रारो त्रणकोडाकोडिसागरोपममाननुं थयो । एमज अवसर्पिणीकाले पणिएतलो विशेषकहियो आद्यतीउत्सर्पिणीयेथासे । एम धातकीखड्मांहि पूर्वार्द्ध तथा पश्चिमार्द्धमापणि एम पुष्करवरद्वीपमां

नरहेरवएसुवासेसु तीञ्चाएउरसप्पिणीए सुसमाएसमाए तिन्निसागरोवमकोठाकोठीन कालो होत्या । एवं  
 सप्पिणीए णवरं प० आगमेस्साए उरसप्पिणीए नविस्सइएवधाइयखठे पुरच्छिमद्धेवि पञ्चत्थिमद्धेवि । एवं  
 पुस्करवरदीवहूपुरत्थिमद्धेपञ्चच्छिमद्धेविकालोत्ताणियत्तो । जंबूद्वीवे २ नरहेरवएसुवासेसुतीयाएउरसप्पिणी  
 ए सुसममुसमाएसमाए मणुयातिन्निगाउआइं उह् उच्चत्तेणं तिन्निपलिउवमाइं परमानुं पालइत्ता । एवं इमी  
 से नसप्पिणीए आगमेस्साए उरसप्पिणीए जंबूद्वीवेदीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया तिन्निगाउआइ उह् उ  
 च्चत्तेणं पन्तत्ता तिन्निपलिउवमाइं परमानुं पालयंति । एवं जाव पुस्करवरदीवहूपञ्चत्थिमद्धे । जंबूद्वीवेदीवे  
 नरहेरवएसुवासेसु एगमेगाए नसप्पिणीउरसप्पिणीए तनं वंसा उप्पज्जिंसुवा उप्पज्जिंतिवा उप्पज्जिस्सतिवा

पूर्वाद्धं तथा पश्चिमाद्धंमांपणि सुखमाआरो त्रणिकोडाकोडि सागरोपमनुंजाणवुं ॥ जंबूद्वीपना नरतएरवतत्तेत्रमां गर्इउत्सर्पिणीकाले सुखमसुखमा  
 काले मनुष्य त्रणिगाउना ऊंचाथया त्रणिगाऊनुंशरीरथयो ॥ त्रणपत्थोपमनुं उत्कष्टआयुपाले । एम आ वर्तमानअवसर्पिणी आवती उत्सर्पिणीये पणि  
 सुसमाकाले एहमानजाणवु । जंबूद्वीपना देवकुरु उत्तरकुरुत्तेत्रे युगलियामनुष्य त्रणिगाउ ऊंचाकहिया त्रणपत्थोपमनु उत्कष्टआऊखो सदैवपालेछे ।  
 एम यावत् धातकीखड पुष्कराद्धं पश्चिमाद्धंलगिकहिवुं । जंबूद्वीपना नरतएरवतत्तेत्रे एकेकी उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणीये त्रणिवशउपना  
 वर्तमानकाले उपजेछे आगामिकाले उपजस्ये । एकअरिहतनोवंश बीजो चक्रवर्तिवंश । त्रीजोदशारवश तेवलदेववासुदेववंश ॥ एम यावत्

देवेत्येतदन्तेन गंशेन कालधर्मानिगाल सुगमसायं किन्तु ॥ अहाउयंपालयति ॥ निरुपकमायुष्कत्वा आध्यमायुः पालयंति ह्यहत्वाभावा दायुष्पाधि  
कारा दिदं सूत्राय माह ॥ वादरेत्यादि ॥ स्पष्टं स्थित्यधिकारा देवेद मपरमाह ॥ अहेत्यादि ॥ अहभतेति ॥ अथ परप्रत्यर्थः भन्दतइति भदन्तः कल्या  
णस्य सुखस्यच हेतुत्वा कल्याणः सुखेति आहच भदिकलाणसुहृत्तो धाऊतस्यभदतसद्दोयं सभदंतो कलाणंसुहोयकलंकिलारोगइत्यादि ॥ १ ॥ अथवा

त० अरहंतबंसे चक्रवर्तिबंसे दसारबंसे एवं जाव पुष्करवरदीवहूपञ्चल्यिमद्धे । जंबूद्वीवे दीवे नरहेरवएसुवा  
सेसु एगमेगाए नसप्पिणी उरुसप्पिणीए तनं उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसुवा उप्पज्जातिवा उप्पज्जिस्संतिवा तं०  
अरहंता चक्रवर्ती बलदेववासुदेवा एवं जाव पुष्करवरदीवहूपञ्चल्यिमद्धे । तनंअहाउयं पालेति तंजहा अ  
रहता चक्रवर्ती बलदेववासुदेवा । तनं मज्झिममाउयं पालयंति तंजहा अरहता चक्रवर्ती बलदेववासु  
देवा वायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिन्निराइदियाइ ठिई पन्नत्ता । वायरवाउकाइयाण उक्कोसेणं तिन्निवा

पुष्करवरद्वीपना पश्चिमार्द्धलगे जाणिवुं ॥ नरत ऐरवतक्षेत्रमां एकेकी उत्सर्पिणी अवसर्पिणीकाले त्रणउत्तमपुरुष उपनाउपजैछे उपजस्ये तेकहैछे  
अरिहंत चक्रवर्ति बलदेववासुदेव । एम जाव पुष्करार्द्धद्वीपना पश्चिमार्द्धलगे ॥ त्रणियथा आज्ञाखोपूरुपाले निरुपक्रम तेकहैछे । अरिहंत चक्रव  
र्ति बलदेववासुदेव । त्रणिमध्यआज्ञाखोपाले गरडानथाय तेकहैछे । अरिहत चक्रवर्ति बलदेववासुदेव ॥ आज्ञाखाना अधिकारमाटे कहैछे । बा  
दरअग्निकाइयानी उत्कृष्ट त्रणारात्रिनी थितिकही । बादर वायुकाइयानी उत्कृष्ट त्रणहजारबरसनी थितिकही ॥ हिवे जगवंतप्रति गौतमपूछे

भजते सेवते सिद्धान् सिद्धिमा गंवा अथवा भज्यते सेव्यते शिवार्थिभिरिति भजंतः आह च अहवाभजसेवाए तस्मभयंतोत्तिसेवएजम्हा सिवगइणोसिवम  
गंसिब्बोयजओतदलीणति ॥ १ ॥ अथवा भाति दीप्यते भाजतेवा दीप्यतेवा ज्ञानतपोगुणदीप्येति भांतोभाजंतोवेति आह च अहवाभाभाजोवा दित्ती  
एहोइतस्मभतोत्ति भाजंतोवायरिओ सोणाणतवोगुणजुईएत्ति ॥ १ ॥ अथवा भांतोपेतो मिथ्यात्वादे स्तत्रानवस्थित इत्यर्थः इति भ्रान्त अथवा भगवानै  
श्वर्ययुक्तइति आह च अहवाभतोवेओ जमिच्छत्ताइवधहेओ अहवेसरियाइभगो विज्जइसीतेणभगवतो ॥ १ ॥ भवस्यवा संसारस्य भयस्यवा त्रासस्यां तहे  
तुत्वा त्राशकारणत्वा इवान्तो भयान्तोवेति उक्तच नेरइयाइभवस्सव अतो जतेणसोभवतोत्ति अहवाभयस्सअतो होइभवंतोभयतोसोत्ति ॥ १ ॥ इह च भद  
न्तादीनां शब्दानां स्थानेप्राकृतत्वा दामत्रणार्थं भंतेत्तिपदं साधनीयमिति अतोभंतेत्ति महावीर मामंत्रयनुक्तवान् गौतमादिः शालीनां कलमादिकानामि  
ति विशेषः शेषाणां ब्रौहीणामिति सामान्यं यवयवा यवविशेषएवै तेषां मभिहितत्वेनप्रत्यक्षाणां कोष्ठे कुशूले आगुप्तानि प्रक्षेपणेन संरक्षितानि कोष्ठागु  
प्तानि तेषां मेवं सर्वत्र नवर पत्य वशकटकादिकृतो धान्याधारविशेषः मचस्थूणानां सुपरि स्थापितवंशकटकादिमयो जनप्रतीतो मालको गृहस्थोपरितन

ससहस्साइं ठिई पन्नत्ता । अहजते सालीणं वीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं एएसिणं धन्वाणं कोठा  
उत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं उलित्ताणं लित्ताणंलंठियाणं मुद्धियाणं पिहियाणं केवइयंकालं

छे सालि व्रीही जव जवजव तेयवविशेष ए सर्वेधांन कोठारमा घाल्याहुयें बांसप्रमुखनोपालो मांचो एकहेठें एकऊपरि तिहांराख्याहोय ।  
मालो घरनीऊपरलीभूमि तिहाराख्याहोय । धारदेईछांणो सघलेलिप्युं । रेखाथी लाठनकीधा तेमांटी प्रमुखनी मुद्राकीधी । सूधा ठांकाऊपरि

भागो ऽभिहितच अकुण्डोहोद्भवो मालोयधरोवरिहोद्भति ॥ ओलित्ताणति ॥ द्वारदेगे पिधानेन सह गोमयादिना ऽवनिष्ठानां ॥ लिताणति ॥ सर्वतः ॥  
लक्ष्याणति ॥ रेखादिभिः कृतलाञ्छनाना ॥ मुद्रिणाणति ॥ मृत्तिकादिमुद्रावता ॥ पिहियाणति ॥ स्थगिताना ॥ केवद्रयति ॥ क्रियतकाल योनि रंस्यामकुर  
उत्पद्यते तत, परयोनि, प्रस्त्रायतिवर्णादिना होयते प्रतिध्वयते विध्वसाभिमुखा भवति विध्वस्यते चोयते एवञ्च तद्वोज मवीज भवति उत्तमपि नाङ्कुरमुत्पादय  
ति किमुक्तभवति तत परयोनिव्यवच्छेदः प्रज्ञप्तो मया अन्यैश्च केवलिभिरिति शेष स्पष्ट स्थित्यधिकारादेवेद मपर सूत्रद्वयमाह ॥ दोषेत्यादि ॥ स्फुट नवर द्वितौ  
याया पृथिव्यां कि नामिकाया मित्याह यर्करप्रभाया मित्येव योजनौय सर्वपृथ्वीषु चेय स्थिति, सागरमेगतिवसत्त दससत्तरसतद्वयवावीसा तेत्तौसजावठिद्वे

जोणी सचिठइ जहन्नेणं अतोमुज्जत उक्कोसेणं तिन्निसंवच्छराइं तेणपरं जोणी पमिलायइ तेणपरं जोणी  
पविद्धंसइ तेणपर जोणी विद्धसइ तेणपरं वीए अवीए नवइ तेणपर जोणी वोच्छेदे पन्तते । दोञ्चा  
एण सङ्कारप्पजाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेण तिन्निसागरोवमाइं ठिडं पन्तत्ता । तच्चाएणवालुयप्पजाए

केतलाकालताइं एहधाननी योनिरहे अकुरोउपजै जगवानकरहेले । जपन्य प्रतरमुद्धूतं वेघनीपळे अचित्तजीवचवे । उत्तुष्ट त्रणिग्रसताईरहे वाव्य  
उपजै । तिवारपळी योनिस्नानथाय वर्णादिकथोहीनथाय । तिवारपळी योनिविणसवाने सन्मुसथाय । तिवारपळी योनिद्वयपासे । तिवार  
पळी बीजअवीजथाय वाव्याअकुरोनथाय । योनिविच्छेदथाय ॥ यितिना अधिकारमाटे कत्तेले । बीजी सर्करप्रजा पृथ्वीमा उत्तुष्ट नारकीनुत्रण  
सागरोपमनु आऊसू कहियु । बीजी वालुकप्रजा नरकमा जघन्य नारकीनी तणासागरोपमनी यितिकही । पाचमी धूमप्रजा नरकमा तणा

सत्तसु पुढवीसु उक्तीसा ॥ १ ॥ जापढमाएजेठा साविइयाएकणिठियाभणिया तरतमजोगीएसो दसवाससहस्ररयणायत्ति ॥ २ ॥ नरकपृथिव्यधिकारा  
नारकविशेषस्वरूपप्रकरणाय सूत्रत्रयमाह ॥ पंचमाएइत्यादि ॥ सुबोधं केवल ॥ उसिणवेयणत्ति ॥ तिसुणा मुणस्वभावत्वा तिसुणु नारका उणवेदना  
इत्युक्तापि यदुच्यते नैरयिका उणवेदना अत्यनुभवन्तो विहरन्तीति तत्तवेदनासातत्यप्रदर्शनार्थं नरकपृथ्वीना क्षेत्रस्वभावानां प्राक् स्वरूप मुक्त मथ क्षेत्रा  
धिकारात् क्षेत्रविशेषस्वरूपस्य त्रिस्थानकावतारिणी निरूपणाय सूत्रचतुष्टय माह ॥ तओइत्यादि ॥ त्रीणि लोके समानि तुल्यानि योजनलक्षप्रमाणत्वात्  
नचप्रमाणतएवात्र समत्वं मपितु औत्तराधर्त्यव्यवस्थिततया समन्वेणीतयापीत्यत्राह ॥ सपक्खिमित्यादि ॥ पचाणा दक्षिणवामादिपार्श्वानां सदृशता

पुढवीएजहन्नेणंणेइयाणं तिन्निसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । पंचमाएणंधूमप्पन्नाएपुढवीए तिन्निनिरया  
वाससयसहस्सा पन्नत्ता । तिसुणं पुढवीसु णेरइयाणं उसिणवेयणा पन्नत्ता तंजहा पढमाए दोच्चाए तच्चा  
ए । तिसुणंपुढवीसु णेरइया उसिणं वेयणं पच्चणुप्पवमाणा विहरति तं० पढमाए दोच्चाए तच्चाए । तउं लोगे  
समासपरिकंसपफिदिसिं पन्नत्ता तंजहा ण्णप्पइठाणेणए जंबूद्दीवेदीवे सव्वठसिद्धेमहाविमाणे । तउं लोगेस

लाख नरकावासा नारकीनां उपजवानाथानक कहिया ॥ पहली त्रणनरकमा उणवेदनाकही । रत्नप्रज्ञा शर्करप्रज्ञा बालुप्रज्ञा ॥ त्रणनरकना नार  
की उणवेदना जोगवता रहैछै । पहली बीजी त्रीजी । नरक क्षेत्रछे तेहथी क्षेत्राधिकार कहैछै ॥ त्रणिलोकमां समतुल्य लक्षयोजन प्रमाणथी  
सरिखा कहिया । अमतिष्ठान सातमी नरकना नरकावासाभा विचलो नरकावासू । तथा जंबूद्दीपनामाद्वीप । सर्वार्थसिद्धि विमान पांचमुं अ

समता सपक्षमित्यव्ययीभावः तेन समपार्श्वतया समानीत्यर्थः इकारस्तु प्राकृतत्वात् तथाच प्रतिदिशां विदिशां सदृशता सप्रतिदिक् तेन समप्रतिदि-  
 क्तयेत्यर्थः अप्रतिष्ठान सप्तम्यां पञ्चानां नरकावासानां मध्यम स्तथा जंबूद्वीपः सकलद्वीपमध्यमः सर्वार्थसिद्धिमानं पञ्चानां मनुत्तराणां मध्यममि-  
 ति सीमान्तकः प्रथमपृथिव्यां प्रथमप्रस्तटे नरकेन्द्रकः पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षाणि समयः कालः तत्सत्तोपलक्षित क्षेत्र समयक्षेत्र मनुष्यलोकइत्यर्थः  
 ईष दल्यो योजनाष्टकवाहन्यपञ्चचत्वारिंशत्क्षेत्रविष्कभत्वात् प्राग्भारः पुद्गलनिचयो यस्याः सा ईषप्राग्भारा ऽष्टमपृथिवी शेषपृथिव्योहि रत्नप्रभाया  
 महाप्राग्भारा अशीत्यादिसहस्राधिकयोजनलक्षवाहन्यत्वा तथाहि पठमासीद्सहस्रा वत्तीसाप्रद्वीसवीसाय अठारससीलग्रहय सहस्रालकखोवरिंकु  
 ज्जति ॥ १ ॥ विष्कम्भस्तु तासांक्रमेण एकाद्याः सप्तांता रज्जवद्वेति अथवे षट्प्राग्भारा मनागवनतत्वादिति प्रकृत्या स्वभावेनो दकरसेन युक्ताइति  
 क्रमेण चैते द्वितीयतृतीयातिमाः प्रथमद्वितीयान्तिमाः समुद्रा बहुलजलचरा अन्येतत्पलजलचराइति उक्तच जवणेउदगरसेसुय महीरयामच्छकच्छ

मासपरिकंसपद्भिदिसिं प० तं० सीमंतएणरए समयखेत्ते ईसिंपद्भारापुढवी । तन् समुद्रा पगईए उदगरसे  
 णं पन्नत्ता तंजहा कालोदे पुष्करोदे सयंजुरमणे । तन् समुद्रा बज्जमच्छकच्छ जाइन्ता पन्नत्ता तंजहा लवणे

नुत्तरविमान ॥ लोकमां त्रिणि सम तुल्य बरावरि कहिया । सीमांतक पहली नरकनां पाथक्रामां नरकेन्द्रक । समयक्षेत्र मनुष्यक्षेत्र । सिद्धिश्चिला  
 ईषट्प्राग्भारा पैतालीसलाख योजनना तेहथी सरिखा कहियाळै ॥ पृथ्वीसाथेज पाणीहोय तेथीकहैळै । त्रणसमुद्रना स्वजावथीज पाणीनारस  
 कहिया तेकहैळै । कालोदधि समुद्र पुष्करोदधि समुद्र स्वयभूरमण समुद्र छेहलोसमुद्र एह तीननां खारापाणीकह्या । त्रणिसमुद्रमा घणांमच्छ

हाभणिया अप्पासेसेसुभवे नयतेनिम्नच्छयाभणिया ॥ १ ॥ अन्यच्च लवणेकालसमुद्दे सयंभुरमणेयहुंतिमच्छाओ अवसेससमुद्देसु नहुंतिमच्छायमयरा  
वा ॥ २ ॥ नत्थित्तिपउरभाव पडुच्चनउसब्बमच्छपडिसेहो अप्पासेसेसुभवे नयतेनिम्नच्छयाभणिया इति ॥ १ ॥ चेत्ताधिकारादेवा प्रतिष्ठाने नरकत्तेवे  
य उत्पद्यते तानाह ॥ तओइत्यादि ॥ निःशीला निर्गतशुभस्वभावा दुःशीलाइत्यर्थः एतदेव प्रपंच्यते निर्व्रता अविरताः प्राणातिपातादिभ्यो निर्गुणा  
उत्तरगुणाभावात् ॥ निम्मेरत्ति ॥ निम्मेर्यादाः प्रतिपन्नापरिपालनादिना तथा प्रत्याख्यानंच नमस्कारसहितादि पौषधः पर्वदिन मष्टम्यादि तत्रो  
पवासो ऽभक्तार्थकरणं सच तौनिर्गतौ येषांते निःप्रत्याख्यानपौषधोपवासाः कालमासे मरणमासे काल मरणमिति ॥ नेरइयत्ताएत्ति ॥ पृथिव्यादित्वव्यव  
च्छेदार्थं तत्र ह्येकेन्द्रियतया तदन्ये प्युत्पद्यतइति तत्रराजान शक्रवर्त्तिवासुदेवाः माण्डलिकाः शेषराजानः येचामी महारत्नाः पचेन्द्रियादिव्यपरोपण

कालोदे सयंभुरमणे । तउलोगे णिस्सीला णिह्या णिगुणा णिम्मेरा णिपच्चरकाणपोसहोववासा कालमासे  
कालं किच्चा अहे सत्तमाएपुढवीए अप्पइठाणेणए णेरइयत्ताए उववज्जांति तंजहा रायाणो मंळलियाजेय

कच्छप कहिया बीजामां थोडा मच्छळे ते कहैछे । लवणसमुद्र । कालोदधिसमुद्र । स्वयंभूरमणसमुद्र । अप्रतिष्ठान नरकावासां जे उपजै छे  
तेकहैछे । त्रिणिलोकनेविषे शीलरहित वृतरहित उत्तरगुण तथा दानादिगुण रहित मर्यादा विनयादिरहित नवकारसी प्रमुख पचखाणरहित पौष  
ध उपवासरहित एहवा कालमासे कालकरीने हेठें सातमी नरकपृथ्वीमा अप्रतिष्ठान नरकावासां नारकीपणें उपजै तेकहैछे । राजा चक्रवर्त्ति  
वासुदेव । मंडलीक बीजाराजा । वली मोटा आरंजना करनार । कुटुंबी कुटुबनाधरी ॥ त्रिणि लोकनेविषे शीलवंत वृत्त पांचमहावृत्त सहित



प्रधानकर्मकारिणः कुटंविनइति ऐषं कण्ठं अप्रतिष्ठानस्य स्थित्यादिभिः समाने सर्वार्थेय उत्पद्यन्ते तानाह ॥ तत्रोदित्यादि सुगमं केवलं राजानः  
 प्रतीताः परित्यक्तकामभोगाः सर्वविरताः एतच्चोत्तरपदयोरपि सम्बन्धनीय सेनापतयः सैन्यनायकाः प्रशस्तारो लेखाचार्यादयः धर्मशास्त्रपाठका इ  
 ति क्वचित् अथा नन्तरीकसर्पार्थसिद्धविमानसाधर्म्यां द्विमानान्तर निरूपणायाह ॥ बभेत्यादि ॥ इहच किण्वहानीलालोहियन्ति ॥ पुस्तकेष्वे वंचैविध्य दृ  
 श्यते स्थानान्तरेच लोहितपीतशुक्लत्वेनेति यतउक्त सोहम्पचवन्ना एकगङ्गाणीउजासहस्रार दोदोकप्पातुत्ता तेषपरपुडरीयात्रोइति ॥ १ ॥ अनन्तर  
 विमाना न्युक्तानि तानिच देवशरीराश्रयाप्रति देवशरीरमान त्रिस्थानकानुपात्याह ॥ आणएत्यादि ॥ भवं जन्मापि यावद्वार्यन्ते भववादेवगतिलक्षणं

महारंजाकोहुंयो । तनुलोए ससीला सद्य्या सगुणा सम्मेरा सपच्चरकाणपोसहोववासा कालमासे कालं  
 किच्चा सद्य्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववतारो जवति तंजहा रायाणोपरिचत्तकामजोगा । सेणावई  
 पसत्यारो । वंजलोगलंतएसुणंकप्पेसु विमाणा तिवन्ता पन्तत्ता तंजहा किण्हा नीला लोहिया । आणय  
 पाणयारणच्चुएसु णंकप्पेसु देवाण जवधारणिज्जसरीरगा उद्धोसेणं तिन्तिरयणीन उह्वउच्चत्तेणं प० । तनु पन्न

गुणवत मर्यादावंत पचखाण सहित पौषध उपवास सहित मरणावसरे कालकरी सर्वार्थसिद्ध विमानमा देवतापणे उपजै तेकहैछे । राजाचक्रवर्ति  
 प्रमुख कामजोगना छाडनार । सेनापति सैन्यनायक । प्रशस्तार धर्मशास्त्रना जणनार । ब्रम्हदेवलोक लातक छठोदेवलोक तेहमा विमान त्रिणि  
 वरणाकहिया तेकहैछे । काला नीला राता ॥ आनत प्राणत आरण अच्युत नवमा दशमा इग्यारमा बारहमा देवलोकमा देवतानु जवधारणीय

धारयन्तीति धारणीयानि तानिच तानि शरीराणिचेति भवधारणीयशरीराणि उत्तरवैक्रियव्यवच्छेदार्थञ्चेद तस्य लक्षप्रमाणत्वात् ॥ उक्तोक्तेष्विति ॥  
उत्कर्षेण नतुजघन्यत्वादिना जघन्येन तस्यो त्यक्तिसमये झुलासंख्येयभागमात्रत्वादिति शेषकण्ठ्य मिति अनन्तरदेवशरीराश्रयवक्तव्यतोक्ता तत् प्रति  
वडाश्च प्रायस्तयो ग्रन्थाइति तत्स्वरूपाभिधानायाह ॥ तत्रोइत्यादि ॥ कालेन प्रथमपश्चिमपौरुषीलक्षणेन हेतुभूतेना धीयते व्याख्या प्रज्ञप्ति जम्बूद्वीप  
प्रज्ञप्तिश्च न विवक्षिता त्रिस्थानकानुरोधादिति शेष स्पष्टं ॥ इति त्रिस्थानकस्य प्रथमउद्देशको विवरणतः समाप्तः ३ ॥ १ ॥ व्याख्यातः  
प्रथमउद्देशक स्तदनन्तर द्वितीय आरभ्यते अस्यचाय मभिसम्बन्ध. प्रथमोद्देशके जीवधर्माः प्राय उक्ता इहापि प्राय स्तएवेति इत्थं सम्बन्धस्या स्ये द  
मादिसूत्र ॥ तिविहेत्यादि ॥ अस्यचाय मभिसम्बन्धो नन्तरसूत्रेण चन्द्रप्रज्ञप्त्यादिस्वरूप सुक्त मिहतु चन्द्रादीना मेवार्थाना माधारभूतस्य लोकस्य स्वरूप  
मभिधीयत इत्येव सवन्धवतो स्य सूत्रस्य व्याख्या लोच्यते ऽवलोक्यते केवलावलोकनेनेति लोको नामस्थापनेन्द्रसूत्रवत् द्रव्यलोकोपि तथैव नवरं च  
शरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्तद्रव्यलोको धर्मास्तिकायादीनि जीवाजीवरूपाणि रूष्यरूपीणि सप्रदेशाप्रदेशानि द्रव्याण्येव द्रव्याणि च तानि लोकश्चेति वि

तीन कालेणं ष्णहिजांति चंद्रपन्नती सूरपन्नती दीवसागरपन्नती । तिष्ठाणस्सपढमो उद्देशो सम्मत्तो ॥

शरीर मूलवैक्रियशरीर उत्कृष्ट त्रिणिहाथनुं ऊंचो ऊंचपणे कहियो ॥ देवता शरीराश्रय वक्तव्यताकही हिव तत्प्रतिवद्ध त्रिणिशास्त्रछे तेकहैछे ।  
त्रिणि पन्नती प्रथम पश्चिमपौरसी लक्षणं त्रिणाविये तेकहैछे । चंद्रपन्नती चद्रनुविचार सूर्यपन्नती सूर्यनुविचार द्वीपसागर पन्नती जेहमां द्वीपसा  
गरनु विचार ॥ एह त्रीजा ठाणानु पहिलो उद्देशो पूरोथयो ३ ॥ १ ॥ हिवे बीजो कहैछे । पिछाडी चंद्रपन्नती सूत्रकहियो

ग्रहः उत्तंच जीवमजीवेरूवम रूवीसपएसअप्पएसेय जाणाहिदव्वलीयं णिच्चमणिश्वंचजंदव्वंति ॥ १ ॥ भावलोकं त्रिधाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ भावल्लोको द्वि-  
विधः आगमतो नोआगमतश्च तत्रा गमतो लोकपर्यालोचनोपयोग स्तदुपयोगानन्यत्वात् पुरुषोवा नोआगमतस्तु सूत्रोक्तो ज्ञानादि नोशब्दस्य मिश्र-  
वचनत्वात् इदृहि त्रय प्रत्येक मितरेतरसव्यपेक्ष नागमएव केवलो नाप्यनागमइति तत्र ज्ञान चासौ लोकश्चेति ज्ञानलोकः भावल्लोकता चास्य चा-  
यिकचायोपशमिकभावरूपत्वात् चायिकादिभावानाच्च भावल्लोकत्वे नाभिहितत्वा दुक्तच उदर्द्वएउवसमिए खइएयखओवसमिएय परिणामसन्निवाए  
ह्विहोभावलोओउत्ति ॥ १ ॥ एव दर्शनचारित्रल्लोकावपीति अथ क्षेत्रल्लोक त्रिधाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ इहच बहुसमभूमिभागे रत्नप्रभाभागे मेरुमध्ये ऽष्ट-  
प्रदेशो रुचको भवति तस्यो परितनप्रतरस्योपरिष्ठा अवयोजनशतानि यावत् ज्योतिश्कस्यो परितल स्तावत्तिर्यग्लोक स्ततः परतजर्द्धभागस्थितत्वा दूर्द्ध-  
लोको देशोनसत्तरज्जुप्रमाणो रुचकस्या धस्तनप्रतरस्या धो नवयोजनशतानि यावत् ताव त्तिर्यग्लोक स्ततः परतो धोभागस्थितत्वा दधोलोकः सातिरेकः  
सत्तरज्जुप्रमाणो ऽधोलोको ऽधोलोकयो र्मध्ये अष्टादशयोजनशतप्रमाण स्तिर्यग्लोकस्थितत्वा त्तिर्यग्लोकइति प्रकारान्तरेण चायं गाथाभि र्व्याख्यायते अहवअ

तिविहेल्लोगे पन्नत्ते तंजहा णामल्लोगे ठवणल्लोगे दव्वल्लोगे । तिविहेल्लोगे पन्नत्ते तंजहा णाणल्लोगे दंसण

इहां चद्रादिक लोकमांछे तेहथी लोकनो स्वरूपकहैछे । त्रिणिलोक कहिया तेकहैछे । नामल्लोक चौदे राजल्लोक । थापनाल्लोक चौदेराजल्लोकनी  
थापना । द्रव्यल्लोक ते धर्मास्तिकायादि जीवाजीवरूप ॥ वली त्रिणिप्रकारेलोक ज्ञावल्लोक कहियो । नाणल्लोक केवलनाणादि । दर्शनल्लोक स-  
म्यक्तादि । चारित्रल्लोक सामायिकादि पांचप्रकारे कहिया ॥ वली त्रिणिप्रकारे लोक उर्द्धल्लोक तेदेशोन सातराज प्रमाण । अधोलोक देशोन सा

होपरिणामो खेत्तणुभावेणजेणओसन्नं असुहोअहोत्तिभणिओ दब्बाणंतेणहोलोगो ॥ १ ॥ उड्डुंउवरिंजंठिय सुभखेत्तंखेत्तओयदब्बगुणा ॥ उप्पज्जंति सुभावा तेणतओउड्डुलोगोत्ति ॥ २ ॥ मज्झणुभावखेत्त जंततिरियंतिवयणपज्जवओ भन्नइतिरियविसालं अओयतंततिरियलोगोत्ति ॥ ३ ॥ लोकस्वरूपनि रूपणानन्तर न्तदाधेयाना चमरादीना ॥ चमरस्सेत्यादिना ॥ अचुयलोगपालाणमित्येतदन्तेन ॥ ग्रन्थेन पर्षदो निरूपयति सुगमश्चाय नवर ॥ असुरिंद स्सेत्यादौ ॥ इन्द्र ऐश्वर्ययोगात् राजातु राजनादिति परिषत् परिवारः साच त्रिधा प्रत्यासत्तिभेदेन तत्र ये परिवारभूता देवा देव्यश्चा त्वंतगौरव्यत्वात् प्रयोजने प्याहता एवा गच्छन्ति साभ्यतरा परिषत् यत्वा हता अनाहूताश्च आगच्छन्ति सामध्यमा यत्वनानाहता अप्यागच्छन्ति सावाह्येति तथा यया सह प्रयोजन म्यर्यालोचयति साऽद्या ययातु तदेव पर्यालोचित सत्प्रपञ्चयति साद्वितीया यस्यास्तु तत्प्रवर्णयति सांत्येति अनन्तर म्यर्षदुपपन्नदेवाः प्ररूपिताः

लोगे चरित्तलोगे । तिविहेलोगे पन्नत्ते तंजहा उड्डुलोगे अहोलोगे तिरियलोगे । चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्तो तनुपरिसानु पन्नत्तानु तंजहा समिया चंढा जाया । अण्णंतरिया समिया मज्झमिया चंढा बाहिरयाजाया । चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्तो सामाणियाणं देवाण तनु परिसानु पन्नत्तानु तं०

तराजप्रमाण । तिरछोलोक अठारेसेयोजन प्रमाण ॥ लोकते असुरादिकनो आधारछे तेकहैछे । चमरेद्र असुरनोइंद्र असुरकुमारनुंराजा तेहनी त्रणि पर्षदाकही तेकहैछे । समिता चंढा जाया । अभ्यंतरपर्षदा समिता जेकामै तेढावी आवे । मध्यम पर्षदा चंडा कार्यथी तेढावी आवे । बाहिरली जाया अणतेडीपणि आवे ॥ चमरेद्र असुरेद्र असुरनां राजाना सामानिक देवताने त्रणि पर्षदाकही तेकहैछे । समिता एम जिम असुर

समिया जहेवचमरस्स । एवं तायत्तीसगाणविलोगपालाणं तुंबा तुफिया पच्चा । एवं अग्गमहिसीणवि । बलस्स वि । एवचेव जाव अग्गमहिसीणं । धरणस्सय सामाणियतायत्तीसगाणंच समिया चंफा जाया । लोग पालाण अग्गमहिसीणं ईसा तुफिया दढरहा । जहा धरणस्स तहा सेसाणं जवणवासीणं । कालस्सणं पिसाइंदस्स पिसायरन्नो तउं परिसाउं पन्नत्ताउं तंजहा ईसा तुफिया दढरहा । एवं सामाणिय अग्गमहि सीणंवि । एवजाव गीयरइ गीयजसाणं । चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो तउं परिसाउं पन्नत्ताउं तंजहा तुंबा तुफिया पच्चा । एव सामाणिय अग्गमहिसीणं । एवसूरस्सवि । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो तउं परि

कुमारनां राजाचमरेद्रनेकही तिम जाणवी । एम त्रायस्तिश देवतानेंपणि त्रणिपर्वदा कहिवी ॥ एम लोकपालनी अभ्यंतर पर्वदा तुंबा । मध्यम पर्वदा तुफिया । बाह्यपर्वदा पत्या ॥ एम अग्गमहिपीने त्रणिपर्वदा कहिवी ॥ एम बलेद्रनेपणि त्रणिपर्वदा कहवी यावत् अग्गमहिपी लागि ॥ धरणेद्र तथा सामानिक त्रायस्तिश देवताने त्रणिपर्वदा अभ्यतर पर्वदा समिता मध्यमपर्वदा चडा बाह्यपर्वदा जाता ॥ लोकपालने अग्गमहिसी इद्राणीने त्रणिपर्वदा अनुक्रमथी ईशा नुटिता दढरथा जाणवी ॥ जिम धरणेद्रने तिमज बीजा जवनपतीने कहिवी ॥ कालनामा पिशाचनोइद्र व्यतर पिशाचना राजाने त्रणि पर्वदाकही तेकहैछे । ईशा नुटिता दढरथा अनुक्रमथी जाणवी ॥ एमज एहनां सामानिक अग्गमहिसीने एम जाव गीतरती गीतजस व्यतरेद्रलगे त्रणिपर्वदा कहिवी ॥ चद्रमा जोतिपीनो राजा जोतिपीना इद्रने नणपर्वदाकही ते कहैछे । तुंबा नुटिता पत्या । एम एहना सामानिक अग्गमहिसीने पणि त्रणिपर्वदा कहिवी ॥ एम सूर्यने पणि कहवी ॥ शक्रदेवेद्र देवताना राजा पहिला देवलोकना इद्रने

देवत्वच कुतोपि धर्मा तत्प्रतिपत्तिश्च कालविशेषे भवतीति कालविशेषनिरूपणपूर्व न्तत्रैव धर्मविशेषाणा अप्रतिपत्तीराह ॥ तत्रोजामेत्यादि ॥ स्पष्ट केवलं यामो रात्रे दिनस्यच चतुर्थभागो यद्यपि प्रसिद्ध स्तथापीह त्रिभागएव विवक्षितः पूर्वरात्रमध्यरात्रापररात्रलक्षणो य माश्रित्य रात्रि स्त्रियामे त्युच्यते एवं दिनस्यापि अथवा चतुर्भागएवसः कित्विह चतुर्थो नविवक्षित स्त्रिस्थानकानुरोधा दित्येवमपि त्रयोयामा इत्यभिहित मेव यावत्तिकरणा दिदृ दृश्यं केवल वोहिवुक्तेज्जा मुडेभवित्ता आगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा केवलं बंभचेरवास मावसेज्जा एव सजमेण संजमेज्जा सवरेण संवरिज्जा आभिणि वोहियनाण उप्पाडेज्जा इत्यादि यथाकालविशेषे धर्मप्रतिपत्ति रेवं वयोविशेषेपीति तन्निरूपणत स्तत्र धर्मविशेषप्रतिपत्तीराह ॥ तत्रोवएत्यादि ॥ स्फुट

सानं पन्नत्तानं तंजहा समिया चंडा जाया । जहा चमरस्स एवं जाव अग्गमहिंसीणं । एवंजाव अञ्जुयस्स लोगपालाणं । तनं जामा पन्नत्ता तंजहा पढमेजामे मज्झिमेजामे पच्छिमेजामे । तिहिंजामेहिं अयाया के वलि पन्नत्तं धम्मं लजेज्ज सवणयाए तंजहा पढमेजामे मज्झिमेजामे पच्छिमेजामे । एवंजावकेवलनाणं

त्रणि पर्पदाकही तेकहैछे । समिता चंडा जाया ॥ एम जिमचमरेट्टनें तिम यावत् अग्महिंसीलणि त्रणपर्पदा कहिवी ॥ एम यावत् अच्युतेट्ट बारमां देवलोकना इंद्रना लोकपाल लागि त्रणपर्पदा कहिवी ॥ एह देवता कहिया तेधर्मथी थायळे तेधर्म कालविशेषमा होय तेमाटे कालविशेष कहैछे । त्रणियाम तेप्रहर कहिया तेकहैछे । पहिलो पहर । बीजो पहर मध्यम प्रहर । छेहलो प्रहर । इहा यदपि दिन तथा रात्रिनां चौथाजागने यामकहैछे । तथापि इहां त्रणनीज विवक्षाळे ॥ त्रणयामथी आत्मा केवलज्जापितधर्म पामे सुणवाथी तेकहैछे । पहलेयामें मध्यम

किन्तु प्राणिनां कालकृतावस्थावय उच्यते तत् त्रिधा बालमध्यमवृद्धत्वभेदादिति त्रयोलक्षण चेदं पापीडशास्त्रवेत्ताली यावत्चौरान्नवर्त्तकः मध्यमः सप्ततिं यावत् परतोष्ठउच्यतइति ॥ १ ॥ शेषं प्राग्वत् उक्तानेव धर्मविशेषां स्तिधा बोधिशब्दाभिधेयान् बोधिमतो २ बोधिविषयभूत मोहं ३ तदन्तरं ४ सूत्रचतुष्टये नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सुबोधं किन्तु बोधिः सम्यग्बोध इह च चारित्र्यं बोधिफलत्वात् बोधि रच्यते जीवोपयोगरूपत्वाद्वा बोधिविशिष्टाः पुरुषा स्तिधा ज्ञान

उप्पाद्वेजा पढमेजामे मज्झिमेजामे पच्छिमेजामे । तं वया पन्नात्ता तंजहा पढमेवए मज्झिमेवए पच्छिमेवए । तिहिवएहिं ञ्जाया केवल्लि पणत्तं धम्म लज्जेजसवणयाए तंजहा पढमेवए मज्झिमेवए पच्छिमेवए एसोचेव गमो णेयव्वो । जावकेवल्लनाणं । तिविहावोही पणत्ता । तंजहा णाणवोही दंसणवोही चरित्तवो ही । तिविहा बुद्धा पणत्ता तंजहा नाणबुद्धा दंसणबुद्धा चरित्तबुद्धा । एवमोहेमूढा । तिविहापण्णज्जा प०

यामें छेहलेयामें ॥ एम जाव केवल्लनाण उपाडें पहलेयामें मध्यमयामें छेहलेयामें ॥ त्रणि प्रवस्थाकही तेकहैछे । प्रथमवय वाल्यावस्था । मध्यम वय यौवनावस्था । छेहलीवय वृद्धावस्था । एह त्रणवयनेविषे आत्मा केवल्लिजापितधर्म पामें साजलवाथी तेकहैछे । पहली वयनेविषे मध्यमवय नेविषे छेहली वयनेविषे ॥ एहज वयमा प्रहरनीपरे केवल्लनाण पणि उपजें ॥ नणि प्रकारे बोधि धर्मनी प्राप्तिकही तेकहैछे । नाणबोधी । दर्शन बोधी । चारित्र बोधी ॥ चारित्र पामिये । त्रण बुद्धपुरुष कहिया तेकहैछे । बोधिसहित पुरुष तेषुद्ध कहिए । नाणबुद्ध । दर्शनबुद्ध समकित बुद्ध । चारित्रबुद्ध । एम तीन बोधिमोहे मूढपुरुष कहिया । त्रणजेदे प्रवृज्यादीक्षा चारिन पुरुष ॥ इह लोक प्रतिबद्ध तेहरा रिद्धादिक बाछे ।

बुडादयइति एव ॥ मोहे मूढत्ति ॥ बोधिव हुव्वच्च मोहेमूढाश्च त्रिविधा वाच्या स्तथाहि ॥ तिविहेमोहेपन्नत्ते तजहा नागमोहेइत्यादि तिविहामूढा पण  
 तातजहाणाणमूढेत्यादि ॥ चारित्रबुडाः प्रागभिहिता स्तेच प्रव्रज्यायां सत्या मतस्तां भेदतो निरूपयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय सुगम केवल प्रव्रज  
 न गमन पापा चरणव्यापारेष्विति प्रव्रज्या एतच्च चरणयोर्गमन मोक्षगमनमेव कारणे कार्योपचारात् तन्दुला न्वर्पति पर्जन्य इत्यादिवदिति उक्तच पव्वय  
 णपव्वज्जा पावाओसुडचरणजोगेसु इयमोक्खपइगमण कारणकज्जीवयाराओत्ति ॥ १ ॥ इह लोकप्रतिवडा ऐहलौकिकभोजनादिकार्यार्थिनां परलोक  
 प्रतिवडा जन्मान्तरकामार्थिनां द्विधा प्रतिवडा इहलोकपरलोकप्रतिवडा साचो भयार्थिनामिति पुरतो ऽग्रतः प्रतिवडा. प्रव्रज्यापर्यायभाविषु शि  
 थादि प्वाशसनतः प्रतिबन्धत्वात् मार्गतः पृष्ठतः स्वजनादिषु स्नेहाच्छेदात् तृतीया द्विधापीति ॥ तुयावइत्तत्ति ॥ तुदव्यथनेइतिवचनात् तोदयित्वा तो  
 द क्त्वा व्यथा मुत्पाद्य या प्रव्रज्यादीयते मुनिचन्द्रपुत्रस्य सागरचन्द्रेणैव सा तथोच्यते ॥ पुयावइत्तत्ति ॥ भुङ्गताविति वचनात् प्लावयित्वा न्यत्र

तंजहा इहलोगपणिविहा परलोगपणिविहा दुहणपणिविहा । तिविहा पव्वज्जा पसत्ता तंजहा पुरणपणिविहा  
 मगणपणिविहा दुहणपणिविहा । तिविहापव्वज्जा पसत्ता तंजहा तुयावइत्ता पुयावइत्ता बुयावइत्ता । तिवि

परलोक प्रतिवद्भ ते देवजोगादि वांल्लिये दीक्षापालै । इहलोक परलोक प्रतिवद्भ ते वे बांछे ॥ वली त्रणि प्रव्रज्याकही तेकहैछे । आगलि प्रतिवद्भ  
 ते जावचारित्रियो दीक्षाले । मार्गथी प्रतिवद्भ ते पाळलि जननेविषे स्नेह छेदकरवो । वे प्रकारे ते उज्जय प्रतिवद्भ ॥ वली त्रण प्रकारे प्रव्रज्या कही  
 तेकहैछे ॥ पीडा उपजावीने दीक्षादीजे जिम सेतार्थने देवताये पीडा उपजावी दीक्षा लेरावी ॥ पूजा महत्व देखाडिने ॥ धर्मकही धर्मसमझावी



नीत्वा ररचितवत् या दीयते सातथेति ॥ बुधावदस्ता ॥ संभाष्य गीतमेन कर्पकवदिति अवपातः सेवा सद्गुरुणांततो या सा अवपातप्रव्रज्या तथा प्राख्यातस्यवा प्रव्रज्ये त्वभिहितस्य गुरुभि र्या सा ख्यातप्रव्रज्या फलगुरचितस्ये वेति ॥ संगारत्ति ॥ सकेत स्तस्मा द्या सा संगारप्रव्रज्या मेतार्यादीना मिवेति अथवा यदि त्वं प्रव्रजसि तदा मया प्रव्रजितव्य मित्येव या सा तथा उक्त प्रव्रज्यावंतो निर्ग्रंथा भवन्तीति निर्ग्रन्थस्वरूप सूत्रद्वयेनाह ॥ तत्रो इ त्यादि ॥ निर्गता ग्रन्थात् सवाह्याभ्यंतरादिति निर्ग्रंथाः संयता नोनैव सज्ञाया माहा राद्यभिलाषरूपाया पूर्वानुभूतस्मरणानागतचिन्ताद्वारेणो पयु क्ता ये ते नोसञ्ज्ञोपयुक्ता स्तत्र पुलाकोलब्धुपजोवनादिना सयमासारताकारको वक्ष्यमाणलक्षणनिर्ग्रन्थ उपशान्तमोहः क्षीणमोहोवेति स्नातको घा तिकर्ममलचालनावाप्तशुद्धज्ञानस्वरूप स्तथा त्रयएव संज्ञोपयुक्ता नोसञ्ज्ञोपयुक्ताथेति संकीर्णस्वरूपा स्तथास्वरूपत्वा त्थाचाह ॥ सन्ननोसन्नोवउत्तत्ति ॥

हापवृज्जा पस्मत्ता तंजहा उवायपवृज्जा अस्कायपवृज्जा संगारपवृज्जा । तन्निगियंठा णोसस्मोवउत्ता प०  
तंजहा पुलाए णियंठे सिणाए । तन्निगियंठा सस्मसोसस्मोवउत्ता पस्मत्ता तंजहा वउसे पस्मिसेवणाकुसीले क

जिमगौतमें हालीनें धर्मसमझावी दीक्षालेरावी ॥ यली त्रणप्रवृज्याकही तेकहेंछे । गुरुनीसेवा प्रवृज्या । धर्मदेशनादेई दीक्षादेवी फलगुरचिते जिमकुटबने धर्मदेशनाकही दीक्षादीधी । सकेतप्रवृज्या जिवारे तूदीक्षालेइस तिवार हंपणि दीक्षालेइस । दीक्षाथी निग्रंथथाय तेकहेंछे । त्रणि निग्रथ नोसग्यासहित कहिया तेकहेंछे । पुलाक जेलविध नफोरवे । पुलाक ते पुलाकलविधवंत । निग्रंथ जेणे मोहसमाव्योहोय । अथवा क्षय कीधोहोय । स्नातक जेघातिकर्मना क्षयथी कर्ममल धोयाथी शुद्धनाणपाम्यो ॥ त्रणिनिग्रन्थ सन्नासहित सन्नारहित धेरीतनाहोय तेकहेंछे ।

संज्ञाचा हारादिविषया नोसंज्ञाच तदभावलक्षणा संज्ञानोसंज्ञे तयो रूपयुक्ता इतिविग्रहः पूर्वज्ञस्वता प्राकृतत्वादिति तत्र वकुशःशरीरोपकरण विभूषादिना श्वलचारित्रपटः प्रतिषेवण्या मूलगुणादिविषयया कुत्सित शील यस्य सतथा एवं कषायकुशीलइति निर्गन्था चारोपितव्रताः केचि ज्वन्ती ति व्रतारोपणे कालविशेषा नाह ॥ तओसेहेइत्यादि ॥ सुगम किन्तु ॥ सेहत्ति ॥ षिधूसराज्ञावितिवचनात् सेध्यते निष्पाद्यते यः ससेधः शिक्षांवा धीत इति शैच स्तस्य भूमयो महाव्रतारोपणकाललक्षणा अवस्था पदव्य इति सेधभूमयः शैचभूमयोवेति अयमभिप्राय उत्कर्षतः षड्भिर्मासै रृत्याप्यते न ता नतिक्रम्यते मध्यमतश्च चतुर्भिर्मासै रृत्याप्यते जघन्यत' सप्तभिरेवरात्रिदिवै गृहीतशिचत्वादिति उक्तंच सेहस्सतिन्निभूमी जहन्नतहमज्जिमायउ क्कोसा राइदिसत्तचउमा सगायळ्ळ्मासियाचेवत्ति ॥ १ ॥ आसुचाय व्यवहारो क्तो विभागः पुळ्वोवठ्ठपुराणे करणजयठ्ठाजहन्नियाभूमी उक्कोसादुम्मेह पडुच्च अस्सइहाणंच ॥ १ ॥ एमेवयमज्जिमगा अणहिज्जतेअसइहंतये भावियमेहाविस्सवि करणजयठ्ठाइमज्जिमगत्ति ॥ २ ॥ शैचस्य च विपर्यस्तः स्थविरो भ वतीति तदभूमिनिरूपणायाह ॥ तओथेरेइत्यादि ॥ कण्ठं नवरं स्थविरो वड स्तस्य भूमयः पदव्यः स्थविरभूमय इति जाति जंन्म श्रुत मागमः पर्या

सायकुसीले । तउसेहजूमोउ पस्सत्ताउ तंजहा उक्कोसा मज्जिमा जहम्मा । उक्कोसाठम्मासा मज्जिमाचउमासा

वकुश तेशरीर उपकरणनी शोभाकरवाथी चारित्रने मैलोकरे मूलगुणमां दोषलगाडै कुत्सितशील कषायेकरी कुत्सितशील आचार एह त्रीजो कषा यकुशील ॥ निगून्थ वृतसहितहोय तेहयी वृतआपवानोकाळ केहैळे । त्रणि सेहजूमिकही तेकहैळे । उत्कृष्टा मध्यमा जघन्या । वडी दीक्षादी धां पळी छमहीने ओठामणकरवी । मध्यम चारमहीने ओठामण करवी पंचमहावृत आरोपवा ॥ जघन्य सातरात्रीये ॥ वृतलीधांपळी स्थवि

यः प्रवज्या तैः स्थविरा वृक्षा येते तथोक्ता इति इह च भूमिकाभूमिकावतीरभिदा देव मुपन्यासः अन्यथा भूमिका उद्दिष्टा इति ता एव वाच्याः स्युरिति ॥  
 एतेषां नयाणां क्रमेणा नुकम्पापूजावन्दनानि विधेयानि यत उक्त व्यवहारे आहारे उवहीसिज्जा सथारे खेतसंकमे किइच्छंदाणवत्तीहि प्रणुकपइधेरंगं  
 १ ॥ उडाणासणदाणाइ जोगाहारप्पससणा नीयसेज्जाइनिदेस वत्तिएपूयएसुयं ॥ २ ॥ उडाणवदणचेव गहणदडगस्सय अगुरुणीवियनिदेसे तइयाएप  
 वत्तयत्ति ॥ ३ ॥ स्थविरा इति पुरुषप्रकारा उक्ता स्तदधिकारात् पुरुषप्रकारानेवाह ॥ तत्रोपुरिसेइत्यादि ॥ पुरुषजातानि पुरुषप्रकारा सुष्ठु मनो

जहन्तासत्तराइंदिया । तनुथेरन्तूमीनु पणत्तानु तंजहा जाइथेरे सुयथेरे परियायथेरे । सठिवासजाएसमणे  
 निग्गंथे जाइथेरे ठाणसमवायधरेणं निग्गंथेसुयथेरे वीसवासपरियाएणं समणेनिग्गंथे परियायथेरे । तनु  
 पुरिसजाया पणत्ता तंजहा सुमणे दुम्मणे णोसुमणेनोदुम्मणे । तनु पुरिसजाया प० तंजहा गताणामेगेसु

रक्खवाने नणस्थविर जूमिकहेल्ले जूमि तेअवस्था । जातिस्थविर । श्रुतस्थविर । पर्यायथविर । साठिवरपनो जेअमण साधुययो तेजातिथविर  
 ठाणाग समवायाग सिद्धातनो धरनार तेअवस्था । वीसवरस दीक्षादीधाथाय तेअमण पर्यायथविर । जातिथविरने उपधि शज्या सथारो  
 छदानुवृत्ति प्रमुखे जत्तिकरवी । श्रुतथविरने ऊठवुं आसनदेवुं आहारदेवुं प्रशंसाप्रमुखे पूजवु । पर्यायथविरने ऊठवुं ठादैचालवु । दाडोलेपुं  
 वदनाकरवी ॥ थविर तेपुरुष तेहथी पुरुषनो अधिकार कहैल्ले । कर्मवशथी पुरुष अनेक प्रकारनाल्ले । एकसुमन जलुंल्ले मनजेहनु । एक दुर्मन  
 माठोले मनजेहनु । एक सुमनपण्णिनथी दुमनपण्णिनथी मध्यस्थजावें समपरिणामीले । बली नणप्रकारे पुरुषकहिद्या कोईकपुरुष कोईकथानकै ज

यस्यासौ सुमना हर्षवान् रक्तद्रव्यार्थः एव दुर्मना दैन्यादिमान् द्विष्टद्रव्यार्थः नोसुमना नोदुर्मना मध्यस्थः सामायिकवानित्यर्थः सामान्यतः पुरुषप्रकारा उक्ता एतानेव विशेषतो गत्यादिक्रियापेक्षया ॥ तत्रोद्वेगादिभिः ॥ सूत्रै राह तत्र गत्वा क्वचि द्विहारचेत्तादौ नामेति सम्भावनाया मेकः कश्चित् सुमना भवति हृष्यति तथैवा न्यो दुर्मना शोचति अन्यः सामायिकवान् भवत्यतीतकालसूत्रमिव वर्त्तमानभविष्यत्कालसूत्रे नवरं ॥ जामीएगेइत्यादिषु ॥ इति

मणेन्नवइ गंताणामेगेदुम्मणेन्नवइ गंताणामेगे णोसुमणे णोदुम्मणे न्नवइ । तन्नपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा जामीएगे सुमणेन्नवइ जामीएगे दुम्मणेन्नवइ जामीएगे णोसुमणे णोदुम्मणेन्नवइ । एवंजाइस्सामीएगेसुमणेन्नवइ ॥ ३ ॥ तन्नपुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा ण्णगंताणा मेगे सुमणेन्नवइ ॥ ३ ॥ तन्नपुरिसजाया पस्सत्ता तजहा णजामि एगेसुमणेन्नवई ३ । तन्नपुरिसजाया पस्सत्ता तजहा णजाइस्सामि एगेसुमणेन्नवई ३ ।

ईने हर्षवंतथाय जेज्जलुंथयो हुइहाआव्यो । कोईकपुरुष कोईथानके जईने दुर्मनथाय दुखपामें । कोईकपुरुष जईने दुर्मनपणि नथाय सुमनपणि न थाय ॥ वली त्रण प्रकारे पुरुष कोई थानकें जाता सुमन होय । तथा जाता दुर्मन थाय । तथा जाता सुमन पणि नथी दुर्मन पणि नथी थाय ॥ एम थानकें हुंजाइस्स एमचित्तवतो सुमन थाय । एम त्रणिवोल जाणिवा ॥ वली त्रणपुरुष कहिया तेकहैछे । एह थानकें नथीजावुं एम विचारी सुमनहोय । एम त्रणवोल जाणिवा । वली त्रणप्रकारे पुरुष तेकहैछे । एह थानकें नथीजातो एमचित्तवतो सुमनथाय । एम त्रणिवोल जाणिवा । वली त्रणपुरुष तेकहैछे । एह थानकें नथीजावुं एम एकपुरुष सुमनहोय एम त्रणवोल कहिवा । एम एहथानकें आव्याथी

शब्दो हेत्वर्थः एवमगत्वत्यादि प्रतिषेधसूत्राणि आगमनसूत्राणिच सुगमानि एव मनेना नग्तरोक्तेना भिलापेन शेषसूत्राण्यपि वक्तव्यानि अथोक्तान्यनुक्ता  
निच सूत्राणि सङ्गृह्यन् गायपञ्चकमाह ॥ गताइत्यादि ॥ गता अगंता आगत्येवुक्त ॥ अणागतत्ति ॥ अणागंताना मेगे सुमणे भवइ अणागंतानामेगेदुग्म  
णे भवइ अणागताना मेगे नोसुमणे नोदुग्मणे भवइ एव नागच्छामीति ३ एव नआगमिस्सामीति ॥ चिठ्ठित्तत्ति ॥ स्थित्वाजर्णस्थानेनसुमनादुग्मनाअनुभयंच  
भवति ॥ एवचिठ्ठामीति ॥ चिठ्ठिस्सामीति ॥ अचिठ्ठित्ता ॥ इहापि कालंतः सूत्रत्रयमेव सर्वत्र नवर निषय उपविश्य ॥ नोचेवत्ति ॥ अनिषद्यानुपविश्य हत्वा  
विनाश्य किञ्चित् ३ अहत्वा अविनाश्य क्त्वा द्विधाक्त्वा अच्छित्वाप्रतीति ३ ॥ वुइत्तत्ति ॥ उक्ता भणित्वा पदवाक्यादिकं ॥ अवुइत्तत्ति ॥ अनुक्ता अनुवाक्या  
दिक ॥ भासित्तत्ति ॥ भाषित्वा सम्भाष्य कचन सम्भाषणीय ३ ॥ नोचेवत्ति ॥ प्रभासित्ता असम्भाष्य कंचन ३ ॥ दत्तत्ति ॥ दत्वा अदत्वा भुक्ता अभुक्ता ३

एवअणागंतानामेगे सुमणेजवइ ३ । एमीएगे सुमणेजवइ । एस्सामी एगे सुमणेजवइ ॥ ३ ॥ एवंएएणं अन्नि  
लावेणं गंतायअगंताय अणागंताखलुतहाअणागता । चिठ्ठित्तमचिठ्ठित्ता णिसिइत्ताचेवनोचेव ॥ १ ॥ हं  
तायअहंताय विदित्ताखलुतहाअविदित्ता । वुत्तित्ताअवुत्तित्ता ज्ञासित्ताचेवणोचेव ॥ २ ॥ दत्तायअद

एकसुमनहोय । इहां पणि त्रणबोल कहिवा । आवुंहुं एम एकसुमन होय एम त्रण बोलकहिवा । आवस्यु एम सुमनथाय एम त्रणबोल कहि  
वा । एम इणअनुक्रमे एहरीते पाचगाथानो अजिलाप जाणवो । एह पाचनु एकअर्थहे । गंता जावु अगंता नजावुं प्रागता आववु तिमज अणागता  
अणआववुं उजोरहिवो उजोनरहिवुं । एम त्रणकालना सूत्रसघले कहिवा येसवु नबेसवुं ॥ हणीने अणहणीने छेदीने अणछेदीने जणीने पदवचनादि

लब्ध्वा ३ अलब्ध्वा ३ पीत्वा ३ ॥ नोचेवत्ति ॥ अपीत्वा ३ सुप्त्वा असुप्त्वा ३ युध्वा ३ अयुध्वा ॥ जयित्ति ॥ जित्वा परं ३ अजित्वा परमेव ३ ॥ पराजिणि  
त्ता भृशजित्वा ३ परिभगवा प्राप्य सुमना भवति वर्द्धनकभाविमहावित्तव्ययविनिर्मुक्तत्वा त्पराजितान् प्रतिपादिन. सभाविता नर्थविप्रमुक्तत्वाद्वा ॥ नो  
चेवत्ति ॥ अपराजित्य ३ ॥ सहेत्यादि ॥ गाथा सूत्रतएव वोढव्या प्रपचितत्वा तत्रेवास्या इति ॥ एवमेकैत्यादि ॥ एवमिति गत्वादिसूत्रोक्तक्रमेण एकैक  
स्मिन् शब्दादौ विषये विधिप्रतिषेधाभ्या प्रत्येक त्रय स्वय आलापकाः सूत्राणि कालविशेषाश्रयाः सुमनाः दुर्मनाः नोसुमनानोदुर्मना इत्येतत् पद

ञाय जुञ्जित्ताखलुतहाञ्जुञ्जित्ता । लञ्जित्तायञ्जुञ्जित्ता पिवइत्ताचेवनोचेव ॥ ३ ॥ सुइत्ताञ्जुसुइत्ता जु  
ज्जित्ताखलुतहाञ्जुज्जित्ता जयित्ताञ्जुजयित्ता पराजिणिताचेवनोचेव ॥ ४ ॥ सद्वाख्वागंधा रसायफासा  
तहेवठाणाय । निस्सीलस्सगरहिया पसत्थापुणसीलवंतस्स ॥ ५ ॥ एवमेक्केक्के तिन्नितिन्नि आलावगा  
जाणियत्ता । सद्दंसुणेत्ताणामेगेसुमणेन्नवइ ३ । एवसुणेमीति ३ । सुणेस्सामीति ३ । एवंञ्जुसुणेत्ताणामेगेसु

अणञ्जणीने कोईने बोलावीने अणबोलावीने देईने अणदेईने जोगवीने तिमज अणजोगवीने काईकवस्तु पामीने अणपामीने रसादि पीईने अणपी  
ईने सुईने अणसुईने भूमीने सगामकलेश करीने अणभूमीने जीतीने अणजीतीने पराजय करीने अणपराजयकरी शब्द रूप रस गंध स्पर्श तिमज  
एह थानक शील आचारवंतने प्रशस्त जलाथाय । एणेप्रकारे एकेके बोलै । अणि आलावा कालथी अतीत अनागत वर्तमान जेदे । सुमना दु  
र्मना एत्रणि पदसहित जाणवा तेज दिखाडेछे ॥ शब्द सांजलीने एकसुमन थाय हर्षवत थाय त्रण बोललेवा । इमसाञ्जलुत्तु तेसुमनथाय त्रण बोल

अथर्वतो भणितव्या एतदेव दर्शयन्नाह ॥ सद्भित्यादि ॥ भावितार्थं एवं ॥ रूपाङ्गगन्धाङ्गत्यादि ॥ यथाशब्दे विधिनिषेधाभ्यां त्रय स्तय प्रालापका भ  
णिताः एवं रूपाङ्गपासितेत्यादय स्तय स्तयएव दर्शनीया एवंच यद्भवति तदाह ॥ एकेकेत्यादि ॥ एकैकस्मिन् विषये षडालापका भणितव्याः  
भवति तत्र शब्दे दर्शिता एवं रूपादिषु पुनरेव रूपाणि दृष्ट्वा सुमनाः दुर्गमाः अनुभवं पश्यामीति ३ एवं द्रष्टव्यामीति ३ एवमदृष्ट्वा नपश्यामीति  
नपश्यामीति ६ षट् एवं गधान् घात्वा ६ रसा नास्वाद्य ६ स्पर्शान् स्पृष्ट्वेति ६ ॥ तद्देयठानायत्ति ॥ यत्संग्रहगाथाया मुक्तं तद्भावयन्नाह ॥ तत्रो  
ठानाङ्गत्यादि ॥ त्रिणिस्थानानि निःशीलस्य सामान्येन शुभस्वभाववर्जितस्य विशेषतः पुनर्निर्वृतस्य प्राणातिपाताद्यनिर्धत्तस्या निर्गुणस्योत्तरगुणापेक्षया  
निर्मर्यादस्य लोककुलाद्यपेक्षया निष्प्रत्याख्यानपीषधोपवासस्य गरहितानि जुगुप्सितानि भवंति तद्यथा ॥ अस्मिति ॥ विभक्तिपरिणामादयलोकः

मणेजवइ ३ । नसुणेमीएणे । नसुणेस्सामीति ३ । एवरूवाइं गंधाइं रसाइं फासाइं एक्केक्के छळञ्जालावगा  
जाणियह्वा । तज्जठाणाणिरूसीलस्स णिव्वयस्स णिग्गुणस्स णिम्मोरस्स णिप्पच्चस्काणपोसहोववासस्स गरहिं  
याज्जवंति तंजहा अस्सिल्लोगे गरहिण्णवइ उववाएगरहिण्णवइ अयाइगरहियाज्जवइ । तज्जठाणा ससील

एम सांजलीस इमजाणी सुमनथाय । एम अणसाजली सुमनथाय जेतलोथयुं एनसांजलुं एमदुमनथाय एवं तीन बोल । नथीसांजलतो एमत्रणबो  
ल । नथीसाजलु एमत्रणबोल । एमदेखीने गंधलेईने रसस्पर्शने फरस फरसीने एक्केक्केबोलें छळञ्जालायाकहिवा । एहमां त्रीजेबोले त्रिणिकालका  
लें जेसमेजावे तेनाणी । तेजायकहियायेंछैं । त्रिणिथानकें नि शीलतेशुज्जनावरहित प्राणातिपातादिरहित । वृतउत्तरगुणरहित । कुलादिकनी म

इदं जन्म गर्हितो भवति पापप्रवृत्त्या विषज्जनजुगुप्सितत्वात् तथा उपपातो ऽकामनिर्जरादिजनित. किल्बिषादिदेवभवो नारकभवो वा उपपातो देव नारकाणामिति वचनात् सगर्हितो भवति किल्बिषाभियोग्यादिरूपतयेति आज्ञाति स्तस्मात् च्युतस्योदत्तस्य वा कुमानुषत्वतिर्यक्त्वरूपागर्हिता कुमानुषादित्वादेवेति उक्तविपर्ययमाह ॥ तत्रोदित्यादि ॥ निगदसिद्ध एतानि च गर्हितप्रशस्तस्थानानि ससारिणामेव भवन्तीति ससारिजीवनिरूपणाया

रस सव्यरस सगुणरस समेररस सपञ्चरकाणपोसहोववासरस पसत्या ज्ञवन्ति तंजहा अस्सिलोगेपसत्ये  
 ज्ञवइ उववाएपसत्येज्ञवइ आयाएपसत्येज्ञवइ । तिविहा संसारसमावन्नगा जीवा पसत्ता तंजहा इत्यी  
 पुरिसा णपुंसगा । तिविहा सव्वजीवा पसत्ता तंजहा सम्मदिठी मिच्छदिठी सम्मामिच्छदिठी । अहवा

र्यादाथीरहित । पोरसीप्रमुख तथा पर्वदिवसे उपवासादिरहित । एहवामनुष्यने गर्हितजुगुप्सित होय तेकहैछै । इहलोकें आजन्मनिन्दनीक होय पापकरवाथी । पडित मांठोकहै उपजवुं तेमांठेठामेहोय । नारकीथाय देवताथाय तोकिल्बिषीथाय । अकामनिर्जराथी देवताथाय तो तिहांथी नीसरी चवी अल्पायु तीर्यच काम मनुष्यथाय एह त्रण जव मांठा । त्रणथानकै शील सहित वृतसहित उत्तरगुण पचखाणसहितनें पोष धोपवाससहित मनुष्यने प्रशस्त वखाणवायोग्यहोय तेकहैछै । आजन्मप्रशस्तहोय पापना अणकरवाथी । पडित तेहनेवखाणें । परभवे देवता मो टीरिद्वीनुधणीथाय । तिहांथी चवी मनुष्यमोटीरिद्विनोधणीथाय । एतला संसारीजीवने थाय तेमांटे संसारी जीवनी निरूपणाकहैछै । त्रण प्रकारे संसारी जीवकहिया तेकहैछै । स्त्री पुरुष नपुंसक । त्रणप्रकारें सर्वजीव कहिया तेकहैछै । समकितदृष्टी । मिथ्यादृष्टी सम्यगूमिथ्यादृष्टी ।



ह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रसिद्धं जीवाधिकारा सर्वजीवान् त्रिस्थानकावतारेण षड्भिः सूत्रै राह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सुगम भवरं ॥ नोपज्जत्तत्ति ॥  
 नोपर्याप्तका नोअपर्याप्तकाः सिद्धाः एवमिति ॥ पूर्वक्रमेण ॥ सम्मद्दिष्टीत्यादि ॥ गाथाई मुक्तानुक्त सूत्रसंग्रहार्थं मिति ॥ तिविहासव्वजीवा पन्नत्ता  
 तंजहा परित्ता अपरित्ता नोपरित्तानोअपरित्ता तत्र परीत्ता. प्रत्येकशरीरा अपरीत्ताः साधारणशरीराः परीत्तशब्दस्य च्छन्दोर्थं व्यक्त्ययइति ॥ सुहु  
 मत्ति ॥ तिविहासव्वजीवा प० त० सुहुमा वायरा नोसुहुमानोवायरा एव सन्निनो भव्याश्च भावनीया. सर्वत्र तृतीयपदे सिद्धावाच्या इति सर्वएव  
 चैते लोके व्यवस्थिता इति लोकस्थितिनिरूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ कण्ठ्य किन्तु लोकस्थिति लोकाव्यवस्था आकाशं व्योम तत्रप्रतिष्ठितो र्यव  
 स्थित आकाशप्रतिष्ठितो वातो घनवाततनुवातलक्षणः सर्वद्रव्याणा माकाशप्रतिष्ठितत्वात् उदधि र्धनोदधिः पृथिवी तमस्तमप्रभादिकेति उक्तस्थि

तिविहा सव्वजीवा प० तं० पज्जत्तगा अपज्जत्तगा नोपज्जत्तगानोअपज्जत्तगा । एवं सम्मद्दिष्टिपरित्ता  
 पज्जत्तगसुज्जमसन्तिन्नविकाय । तिविहा लोग्गिई प० तंजहा आगासपइठिए वाए वायपयठिया उदही

अथवा त्रण प्रकारे सर्वजीवकहिया तेकहैछै । पर्याप्ता अपर्याप्ता नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता तेसिद्ध । एमसमकितदृष्टीनीपरे परित्त प्रत्येक अपरित्त  
 तेसाधारण नोपरित्तनोअपरित्त तेसिद्ध सूखम बादर । नोसूखमबादर । एमसन्नी । असन्नी नोसन्नीनोअसन्नी ज्व्य अभव्य नोज्व्यनोअज्व्य सघले  
 त्रीजे पदे सिद्धजांणिवा । एसर्वलोकमाळे तेमाटे लोकस्थितिकहैछै । त्रणप्रकारे लोकस्थितिकहीतेकहैछै । आकाशप्रतिष्ठितवात आकाशे वायुरहैछै । वा  
 युने आधारे समुद्रछे घनोदधि तनोदधि । समुद्रने आधारे पृथ्वीछै । साते तमतमादि । त्रणदिशिकही जीवने जीवआवधानी ऊर्हु अधो तिग्य । त्रणदि

तिकेच लोके जीवानां दिशोधिकृत्य गत्यादिभवतीति दिङ्निरूपणपूर्वकं तासु गत्यादिनिरूपयन् ॥ तत्रोदिसेत्यादि ॥ सूत्राणिचतुर्दशाह सुगमानिच  
नवर दिश्यते व्यपदिश्यते पूर्वादितया वस्त्वनयेति दिक् साच नामादिभेदेन सप्तधा आह च नाम १ ठवणा २ दविण ३ खेत्तदिसा ४ तावखेत्त ५  
पन्नवण ६ सत्तमियाभावदिसा साहोद्विहारसविहाओ ॥ १ ॥ तत्र द्रव्यस्य पुद्गलस्कन्धादे दिक् द्रव्यदिक् ॥ १ ॥ क्षेत्रस्याकाशस्य दिक् क्षेत्रदिक् साचैव  
अठ्ठपणसोरुयगो तिरियलोगस्समज्झयारमि एसपभवोदिसाण एसेवभवेअणुदिसाण ॥ २ ॥ तत्र पूर्वाद्या महादिश चतस्रोपि द्विप्रदेशादिका दुत्तरा  
अनुदिशस्तु एकप्रदेशा अनुत्तरा ऊर्ध्वाधोदिशौतु चतुरादौअनुत्तरे यतोवाचि ॥ दुपणसादिदुरुत्तर ४ एणपणसाअणुत्तराचैव चउरोचउरोयदिसा चउ  
राइअणुत्तरादोत्रि ॥ १ ॥ सगडुडिसठियाओ महादिसाओहवतिचत्तारि मुत्तावलीउचउरो दोचेवयहोतिरुयगनिभा ॥ २ ॥ नामानिचासा इंद १ गो  
यी २ जम्मा य ३ नेरई ४ वारुणोय ५ वायव्या ६ सोमा ७ ईसाणाविय ८ विमलाय ९ तमाय १० वोधव्या ॥ १ ॥ तापः सविता तदुपलब्धिता क्षेत्र  
दिक् तापक्षेत्रदिक् साचानियता यतउक्त जेसिजत्तोसूरो उदेइतेसितईहवइपुव्वा तावखेत्तदिसाओ पयाहिणसेसयाओसेत्ति ॥ १ ॥ तथा प्रज्ञापकस्य आ  
चार्यादे दिक् प्रज्ञापकदिक् साचैव पन्नवओजोअभिमुहो सापुव्वासेसियापयाहिणओ तस्सेवणुगतव्वा अग्गेयाईदिसानियमा ॥ १ ॥ भावदिक् चाष्टादशवि  
धा पुढवि १ जल २ जलण ३ वाया ४ मूलो ५ खुध ६ ग ७ पोरवीयाय ८ ॥ वि ९ ति १० चउ ११ पचिदियतिरि ॥ १२ यनारगा १३ देवसवाया १४

उदहिपइठिया पुढवी । तउ दिसाउ प० तं० उह्वा अहो तिरिया । तिहिदिसाहिं जीवाणं गई पवत्तई तं  
शिजीवने गतिप्रवर्त्तै उर्ध्वदिशि अधोदिशि तिरिणीदिशि ॥ एमआववु उपजवु । आहारलेवु । वृद्धि शरीरनुवढवु । शरीरनुंज घटवु । गतिपर्याय तेचा

२ ॥ समुच्छिन्न १५ कस्मा १६ क मभूमगनरा १७ तहंतरहोवा १८ ॥ भावदिसादिस्मृजं संसारीनिययमेहोहिं ति ॥ ३ ॥ इहच.चेन्नतापप्रज्ञापकदिग्भि  
रेवाधिकार स्तत्रच तिर्यग्ग्रहणेन पूर्वाद्या सतस्त्रएव दिशो गृह्यन्ते विदिक्षु जीवाना मनुश्रेणिगामितया वध्यमाणगत्या गतिव्युत्क्रान्तीना मयुज्यमानत्वा  
च्छेषपदेषुच विदिशा मविवक्षितत्वा दातोत्रेव वक्ष्यति ॥ तिहिदिसाहिजीवाणगईपवत्तईत्यादि ॥ तथा ग्रन्थान्तरेष्याहारमाश्रित्योक्तं निव्वाघाएणनियमा  
कृद्दिसिंति तत्र तिहिंदिसाहिति सप्तमी तृतीया पचमी वा यथायोग व्याख्येयेतिगतिः प्रज्ञापकस्थानापेक्षया मृत्वा ऽन्यत्रगमनमेव मिति पूर्वोक्ताभिलाप  
सूचनार्थः आगतिः प्रज्ञापकप्रत्यासन्नस्थाने आगमनमिति व्युत्क्रान्ति रूपति राहारः प्रतीतः वृद्धिः शरीरस्यवर्धनं हानिः शरीरस्यैवहानिः गतिपर्याय स  
लन जीवतएव समुद्घातो वेदनादिलक्षणः कालसयोगो वर्तनादिकाललक्षणानुभूति मरणयोगोवा दर्शनेनावध्यादिना प्रत्यक्षप्रमाणभूतेना भिगमो बोधो  
दर्शनाभिगम एवज्ञानाभिगम. जीवानांज्ञेयाना मवध्यादिनैवा भिगमो जीवाभिगम इति तिहिदिसाहिजीवाणअजीवाभिगमेपत्रत्ते तं० उद्धा ३ एवसर्व  
त्राभिलापनोय मितिदर्शनार्थं परिपूर्णान्यसूत्राभिधान मिति एतान्यजीवाभिगमान्तानिसामान्यजीवसूत्राणि चतुर्विंशति दण्डकचिन्तायान्तु नारकादिप

जहा उद्घाए अहोए तिरियाए । एवं आगई वक्कंती आहारे बुद्धी णिबुद्धी गइपरियाए समुग्घाए कालसं  
जोगे दंसणाजिगमे णाणाजिगमे जीवाजिगमे । तिहिठाणेहिं जीवाणं अजीवाजिगमे प० तं० उद्घाए अ

लवुं । समुदघात वेदनालक्षण । मरणकालयोग । दर्शन अवधिदर्शनादिकनुंपामिवुं । नाणनुं अजिगम जाणवारूप । जीवनुं जाणवुं । एहत्रणादिशियेहोय ॥  
त्रणादिशिये जीवने अजीवनुं जाणवुंहोय । तेकहैहै । उद्धंदिशि अधोदिशि तिरळीदिशि । एण प्रकारें पंचेद्रीतिर्यंचने एहमोल जाणवा जोपणिनारकी

देषु दिक्त्रये गत्यादीनां त्रयोदशानामपि पदानां सामस्येनासम्भवात् पचेन्द्रियतिर्यग्नु मनुष्येषु च तत्सम्भवात् तदतिदेशमाह ॥ एवमित्यादि ॥ यथा सामान्य  
 सूत्रेषु गत्यादीनि त्रयोदशपदानि दिक्त्रये अभिहिता न्येव पंचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्येषु इतिभावः एवंचैतानि पञ्चिंशतिसूत्राणि भवन्तीति अथैषा नारकादि  
 षु कथं मसम्भव इत्युच्यते नारकादीनां द्वाविंशते जीवविशेषाणां नारकदेवेषूत्पादाभावाद् दूर्द्धाधोदिशो विवक्षया गत्यागत्यो रभावस्तथा दर्शनज्ञानजीवा  
 जीवाभिगमागुणप्रत्यया अवध्यादिप्रत्यक्षरूपा दिक्त्रये नसन्त्येव भवप्रत्ययावधिपक्षे तु नारकज्योतिष्कास्तिर्यग्बोधयो भवनपतिव्यन्तरा ऊर्ध्वावधयोवैमानि  
 का अधोवधय एकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां त्ववधिर्नास्त्येवेति यथोक्तानि च गत्यादिपदानि त्रसानामेव सम्भवन्तीति सम्बन्धात्तसा त्रिरूपयन्नाह ॥ त्रिविहे  
 त्यादि ॥ स्पष्टं किन्तु त्रस्यन्तीति त्रसाः सञ्चलनधर्माण स्तत्र तेजोवाययोगतियोगा त्रसाः उदाराः स्थूला सूक्ष्मा इति त्रसनामकश्चोदयवर्त्तित्वात् प्राणादिति  
 व्यक्तीच्छासादिप्राणयोगा ह्येन्द्रियादयस्तेपि गतियोगात् त्रसा इति उक्ता त्रसा स्तद्विपर्ययमाह ॥ त्रिविहेत्यादि ॥ स्थानशीलत्वा तस्यावरनामकश्चोदया  
 द्वा स्यावराः शेष व्यक्तमेवेति इह च पृथिव्यादयः प्रायोद्गुलासंख्येयभागमात्रावगाहित्वात् अच्छेद्यादिस्वभावा व्यवहारतो भवन्तीति तत्प्रस्तावा त्रिचया च्छे

होए तिरियाए । एवं पचिंदियतिरिस्कजोणियाणं एवंमणुस्साणवि । त्रिविहा तसा पस्सत्ता तंजहा तेउकाइया  
 वाउकाइया उरालातसापाणा । त्रिविहा थावरा प० तं० पुढविकाइया आउकाइया वणस्सइकाइया ।

प्रमुखने गत्यादि बोलहैं पणि दर्शनादि त्रण बोल तीर्यचने मनुष्यनेज छे तेमांटे तिर्यचमनुष्य एह बे कहिया । त्रणप्रकारे त्रसकहिया तेकहैं ॥ तेउ  
 काय वाउकाय औदारकादिक वेइन्द्रियादि त्रसप्राण । त्रणथावर कहिया तेकहैं ॥ पृथ्वीकाय थावर अण्काय पाणीथावर वनस्पतिकाय थावर ।

यादौ नष्टमिसूत्रै राह ॥ तत्रोअच्छेज्जित्यादि ॥ छेत्तुमसक्या बुद्धाक्षुरिकादिशस्त्रेणवे त्यच्छेद्या च्छेद्यत्वे समयादित्वायोगा दितिसमयः कालविशेषः प्रदेशो धर्माधर्माकाशजोवपुनलानां निरवयवोशः परमाणुस्कन्ध.पुद्गल इति उक्तंच सत्येणसुतिक्वेणवि च्छेत्तुभेत्तुचजकिरनसक तपरमाणुंसिद्धा वयतिआइ पमाणाणति ॥ १ ॥ एवमिति पूर्वसूत्राभिलापसूचनार्थ इति अभेद्या. सूत्रादिना अदाह्या अग्निचारादिना अग्राह्या हस्तादिना नपिद्यते अर्द्धयेषा मित्य नर्द्धाविभागद्वयाभावात् अमध्या विभागत्रयाभावात् अतएवाह अप्रदेशा निरवयवा अतएवाविभाज्या विभक्तुमशक्या अथवा विभागेन निर्हत्ता विभागिमा स्तन्निषेधादविभागिमा एतेच पूर्वतरसूत्रोक्ता स्तसस्थावराख्याः प्राणिनो दु.खभौरव इत्येत त्सविधानकद्वारेणाह ॥ अज्जोइत्यादि ॥ सुगम केवल अज्जोति त्ति आरात् पापकर्मभ्यो याता आर्या स्तदामत्रणं हेआर्या इति एव मभिलापेनामत्येतिसम्बन्धः अमणो भगवान् महावीरो गौतमादीन् अमणा त्रिग्रन्था

तउ अच्चेज्जा प० तजहा समए पएसे परमाणु । एव मज्जेज्जा अफज्जा अगिज्जा अण्हा अमज्जा अपएसा । त उ अविज्जाइमा पस्सत्ता तजहा समए पएसे परमाणु । अज्जोत्ति समणेज्जगवं महावीरे गोयमाई समणेनिग्गथे ,

त्रण अच्छेदत्र कहिया तेकहैछे । बुद्धीथी तथा शस्त्रादिके छेदीनसके । समयतेकालविशेष । प्रदेश धर्माधर्म आकाश जीव पुदगलनुं परमाणुओ घणु नाहो दृष्टिनावे पुदगलखधनु । बलेनथी अग्निथी । हस्तादिकथी गहीनसके । छे ज्ञागनथाय । मध्यनथी त्रणविज्ञाग नथाय तेमांटे । अवयव नथी तेमांटे अप्रदेश ॥ त्रणविज्ञागरहित कहिया ते कहैछे । समय प्रदेश परमाणु । एह पूर्व त्रस थावरकहिया तेजयथी धीहेछे ॥ हेआर्यो साधो अमणजगवत महावीर गौतमादिकने निमत्रीने एम कहिवा लाग्या तेस्यु प्राणी जीवनेस्याथी जयछे हेअमणायुष्मन् ए जगवत पूछ्यो

नेवं वक्ष्यमाणन्यायेना वादीदिति कस्माद्भयं एषान्ते किञ्चया कुतोविभ्यतीत्यर्थः प्राणाः प्राणिनः ॥ समणाउसोत्ति ॥ हेअमणा हेआयुषन्तइति गोतमादीना मेवामत्रण मिति अयंच भगवतः प्रणाः शिष्याणां व्युत्पादनार्थ एवा नेनापृच्छतोपि शिष्यस्य हिताय तत्त्व माख्येमिति ज्ञापयति उच्यतेच कथ्यइपुच्छइसी सो कहिचपुष्ठावयतिआयरिया सीसाणंतुहियडा विउलतरागंतुपुच्छाएत्ति ॥ १ ॥ ततश्च उवक्कमतित्ति ॥ उपसक्रामति उपगच्छन्ति तस्य समीपवर्त्तिनो भवन्ति इहच तत्कालापेक्षयाक्रियायावर्त्तमानत्व मिति वर्त्तमाननिर्देशो नदुष्टः उपसक्रम्य वन्दन्ते स्तुत्या नमस्यन्ति प्रणामतः एव मनेन प्रकारेण ॥ वया सित्ति ॥ छान्दसत्वा बहुवचनार्थे एकवचनमिति अवादिषु रक्तवन्तो नोजानीमो विशेषतो नोपश्यामः सामान्यतो वाशब्दौ विकल्पार्थौ तदिति तस्मा

आमंतित्ता एवंवयासी किञ्चयापाणा समणाउसो गोयमाई समणाणिग्गंथा समणंजगवंमहावीरं उवसंकमंति  
उवसंकमिन्ना वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता एवंवयासी णोखलु वयं देवाणुप्पिया एयमठं जाणामोवा  
पासामोवा तंजहा जइणं देवाणुप्पिया एयमठं नोगिलायंति परिकहेत्तए तमिच्छामोणं देवाणुप्पियाणं अं

तिवारे गौतमादिकश्रमणनियथ श्रमणजगवंत महावीरं प्रति उपसक्रमै आवें आवीनें वादें नमस्कारकरे मनथीवादी नमस्कारकरी इमकहै हेदे  
वानुप्रिय हेजगवंत नथी निश्चयथी ए अर्थ विशेषथी जाणतानथी देखता जे प्राणीस्याथीजयपामैछे । तेमाटे जोहेदेवानुप्रिय ए अर्थ तुमनेकहता  
ग्नानपणुं किलामना नहोय तो अम्हे बाळांछा हेदेवानुप्रिय तुमारेपासे ए अर्थजाणवानें तिवारे जगवानकहैछे हेआर्यो इमकही गौतमादिश्रमण

देत मर्थ द्विभयाः प्राणा इत्येवं लक्षणं ॥ नोगिलायंतिति ॥ न ग्नायन्ति न आयन्ति परिकथयितु म्परिकथनेन ॥ तंति ॥ ततो ॥ दुःखभयति ॥ दुःखा  
 मरणादिरूपा इय मेवामिति दुःखभयाः ॥ सेणंति ॥ तद्दुःख ॥ जीवेणकडेति ॥ दुःखकारणकर्मकरणा जीवेन कृत मित्युच्यते कथ मित्याह ॥ पमा  
 एणति ॥ प्रमादेना ज्ञानादिना बन्धहेतुना कारणभूतेनेति उक्तच पमाश्रयमुणिदेहिं भणिश्रोअद्भमेयश्रो अन्नाणससओचेव मिच्छानाणतहेवय ॥ १ ॥  
 रागोदोसीमइज्झसी धम्ममियअणायरो जोगाणदुप्पणीहाण अड्ढावज्जियव्वओत्ति ॥ २ ॥ तच्च वेयते जिप्यते अप्रमादेन बन्धहेतुप्रतिपन्नभूतत्वादिति  
 अस्यच सूत्रस्य दुःखभयापाणा १ जीवेणकडेदुःखेपमाण २ अपमाणवेइज्झइ इत्येवरूपप्रणीत्तरनयोपेतत्वा त्विस्थानकावतारो द्रष्टव्यइति जीवेन कृत  
 दुःख मित्युक्त मधुना परमतं निरस्यै तदेवसमर्थय नाह ॥ अन्नउत्थोत्यादि ॥ प्रायः स्पष्टं किं स्वन्वतीर्थिका इहतापसा विभङ्गज्ञानवन्त एव वक्ष्यमाण

तिए एयमठं जाणित्तए । अज्जोत्ति समणेज्जगवंमहावी रे गोयमाई समणेनिग्गंथे अमंतिहा एवं वयासी  
 दुःकजयापाणा समणाउसो सेणंजंते दुःके केण कळे जीवेणकळे पमाणं सेणंजंते दुःके कहं वेइज्जांति अप्प  
 माएणं । अस्सउत्थियाणंजंते एवमाइरुक्ई एवं चासेई एवं परूवेई कहस्सं समणाणं निग्गंथाणं किरिया क

निग्रथने आमन्त्री तेडीने इमकहं छे मरणादि दुःखथी जय छे प्राणीने हेअमणायुष्मन् ते दुरा किणकीधो जगवान कहैछे जीवेकीधुं प्रमादथी दुःस  
 नाकारण कर्मकीधा । ते जगवंत दुःस केम मटे कर्मकिमज्जयथाय अप्रमादथी पाच प्रमाद ठाठवाथी । इहा जेमहावीरस्वामीये गौतमादिने साह  
 सु प्रणकीधो ते शिष्यहितार्थं जाणियो जे कहियोछे कत्थइपुच्छइसीसो कहंविपुच्छाययतिआयरिया इत्यादि ॥ हिवे परमतने खोटो एहजअर्थ

प्रकार माख्यागति सामान्यतो भाषन्ते विशेषतः क्रमेणै तदेव प्रज्ञापयन्ति प्ररूपयन्तीति पर्यायरूपपदद्वयेनोक्तमिति अथवा ख्यामी षष्ठाषन्ते व्यक्तभाषया प्रज्ञापयन्ति उपपत्तिभिर्बोधयन्ति प्ररूपयन्ति प्रभेदादिकथनतद्वति किं न्तदित्याह कथाङ्गेन प्रकारेण श्रमणानां निर्ग्रन्थानां मतइतिशेषः क्रियतइति क्रिया कर्म सा क्रियते भवति दुःखायेति विवक्षेति प्रश्नः इह चत्वारो भङ्गास्तदयथा कृता क्रियते विहितं सत्कर्मदुःखाय भवतीत्यर्थः १ एवं कृता नक्रियते २ अकृता क्रियते ३ अकृता नक्रियतइति ४ एतेष्वनेन प्रश्नेन यो भङ्गः प्रष्टुमिष्टस्तु शेषभङ्गनिराकरणपूर्वकमभिधातुमाह ॥ तथ्यत्ति ॥ तेषु चतुर्षु भङ्गकेषुमध्ये प्रथमद्वितीयचतुर्थं न च पृच्छन्ति एतत्तयस्यात्यन्तरुचे रविषयतया तत्प्रश्नस्याप्यप्रवृत्तेरिति तथाहि यासौ कृता क्रियते यत्तत्कर्म कृतं नभवति नोतत् पृच्छन्ति अत्यन्तविरोधेनासम्भवात्तथाहि कृतचे कर्म कथन्नभवतीत्युच्यते नभवतिचे कथञ्छन्त न्तदिति कृतस्य कर्मणोऽभवाभावात्तत्रतेषु या सा वकृता यत्तदकृतं कर्म नोक्रियते नभवति नोतां पृच्छन्ति अकृतस्यासतस्य कर्मणः खरविषाणकल्पत्वादिति अमुमेवच भङ्गत्रयविषेधमाश्रित्यास्यसूत्रस्य त्रिस्थानकावतारइति सम्भाव्यते तृतीयभंगकसु तत्कर्मतइति तपृच्छन्ति अतएवाह तत्र या सा वकृता क्रियते यत्तदकृतं पूर्वं

जांति तस्य जासा कक्षा कज्जइ णोतंपुच्छंति । तस्य जासा कक्षा नोकज्जइ णोतंपुच्छंति । तस्य जासा

थापेछे । सत्यपणे अन्यतीर्थी तापसादि अनाणी हेज्जगवंत इमकहैछे । सामान्यतया । तथा विशेषपणे कहैछे । एणअनुक्रमे जणावेछे । एमजेदेकरी कहैछे । केणेप्रकारेण श्रमणनिग्रन्थने क्रियाकरिये एतले कीधुंकर्म केमदुखने थायछे । इहाचार जांगाले । तेकहैछे । तिहां जेकर्मकीधो तेदुखनेथाय तेनपूछे एतले नलागे । पूर्वकीधुं ते अप्रत्यक्षपणांमाटे एहपहलो जांगोनलेवो ॥ तिहां जेकर्मकीधुं पणि नथीकरे एहबीजोजांगो



मविहितं कर्मभवति दुःखाय सम्पद्यते तां पृच्छन्ति पूर्वकालकृतत्वस्या प्रत्यक्षतया ऽसत्त्वेन दुःखानुभूतेश्च प्रत्यक्षतया सत्त्वेना कृतकर्मभवनपक्षस्य सम्मत  
 त्वादिति पृच्छतां चायमभिप्रायो यदि निर्गन्त्याग्रपि अकृतमेव कर्म दुःखाय देहिना भवतीति प्रतिपद्यते ततः सुष्ठु शोभन अस्मत्समानबोधत्वादिति शेषा  
 नपृच्छन्त स्तृतीयमेव पृच्छतीतिभावः ॥ सेत्ति ॥ अथ तेषा मकृतकर्माभ्युपगमवता मेवं वक्ष्यमाणप्रकार वक्तव्य मुक्तापः स्यात् तएववा एवमाख्याति परान्  
 प्रति यदुत अथेव वक्तव्य म्भरूपणीयं तत्ववादिना स्या ज्ञवेत् अकृते सति कर्माणि दुःखाभावात् अकृत्य मकरणीय मबन्धनीय मप्राप्तव्य मनागते काले  
 जीवाना मित्यर्थः किं दुःखं दुःखहेतुत्वा त्कर्म ॥ अफुसन्ति ॥ अस्पृश्य कर्मा कृतत्वादेव तथा क्रियमाणच वर्त्तमानकाले वध्यमान कृतत्वा तीतकाले वद्ध क्रिय  
 माण द्वैकत्वं कर्मधारयोवा नक्रियमाणकृत मक्रियमाणकृतं किन्तु दुःख ॥ अकिञ्चिदुखमित्यादि ॥ पदत्रयं तत्तज्जासाअकडाकज्जइ तपृच्छती त्यन्यती  
 र्थिकमताश्रितं कालत्रयालम्बन माश्रित्य त्रिस्थानकावतारो स्यद्रष्टव्यः किमुक्तमभवतीत्याह अकृत्वा अकृत्वा कर्म प्राणा द्वीन्द्रियादयो भूता स्तरवी जीवा. प

अकजा कज्जइ तंपुच्छंति । तत्तज्जासा अकजा नोकज्जइ णीतंपुच्छंति । ४ । सेएवंवत्तवंसियाअक्किञ्चं दुर्कं  
 अफुसंदुर्कं अकज्जमाणकज्जंदुर्कं अकहु अकहु पाणाज्जूया जीवा सत्तावेयणं वेयति वत्तव्णं जेतेएवमाहिंसु

जांणवो कीधुं तेप्रत्यक्ष जोगवेळे । तेनपूछे ॥ तिहां जेनथीकीधुं तेनथीकरतां नहोय सरविषाणानीपरे अजावथी ते एनथीपूछे त्रीजोजागी ॥  
 तिहार्जे अकृत अणकीधुं कर्मकरे तेकहैळे पूछुळुं एतले तेजोगवैळे । इमकहैळे तेअन्यमती जेनथीकीधुंकर्म नथी फरस्युंकर्म अक्रियमाण कृत दुःख  
 नथीकरीने नथीकरीने प्राण भूत जीव सत्व वेदना अनुभवैळे । इमकहैळे ॥ हिवे जगवत कहैळे जेअकृतकर्म जोगवेळे एमकहैळे तेखोटुं कहैळे ।

चेन्द्रियाः सत्वाः पृथिव्यादयो यथोक्तम् प्राणादिविचतुःप्रोक्ता भूतास्तुतरवःस्मृता जीवाः पञ्चेन्द्रियाच्चेयाः शेषाः सत्वा इतीरिताः ॥ १ ॥ वेदनां पीडां वेदयन्तीति वक्तव्यमित्ययं तेषां मुक्तापः एतद्वा ते अज्ञानोपहतबुद्धयो भाषन्ते परान् प्रति यदुत एवं वक्तव्यस्यादिति प्रक्रम एव मन्यतीर्थिकमतमुपदर्श्य निराकुर्वन्नाह ॥ जेतेद्वत्यादि ॥ यएते अन्यतीर्थिका एव मुक्तप्रकारमाह ॥ सुत्ति ॥ उक्तवन्तो मिथ्या असम्यक्ते ऽन्यतीर्थिका एव मुक्तवन्तो ऽकृतायाः क्रियात्वा नुपपत्तेः क्रियतइति क्रिया यस्यास्तु कथञ्चनापि करण नास्ति सा कथंक्रियेति अकृतकर्मानुभवनेहि बद्धमुक्तसुखितदुःखितादिनियतव्यवहाराभावप्रसंग इति स्वमतमा विष्कुर्वन्नाह ॥ अहमित्यादि ॥ अहमित्यहमेव नान्यतीर्थिका पुनः शब्दो विशेषणार्थः सच पूर्ववाक्यार्था दुत्तरवाक्यार्थस्य विलक्षणतामाह ॥ एवमाइक्खामीत्यादि ॥ पूर्ववत् कृत्यं करणीयमनागतकाले दुःखतडेतुत्वात् कर्मसृष्ट्यसृष्टलक्षणवन्धावस्थायोग्यक्रियमाणवर्तमानकाले कृतमतीति अकरण नास्ति कर्मणः कथञ्चनापीतिभावः स्वमतसर्वस्वमाह कृत्वा कृत्वा कर्मेति गम्यते प्राणादयो वेदनां कर्मकृतशुभाशुभानुभूतिवेदयं त्यनुभवन्तीति वक्तव्यस्या त्त्वम्यग्वादिनां ॥ इति त्रिस्थानकस्य द्वितीयउद्देशको विवरणतः समाप्तः ॥ २ ॥ उक्तोद्वितीयोद्देशकः साम्प्रत तृतीय आरभ्यते अस्यचाय

तेमिच्छा । अहंपुणएवमाइस्कामि एवंजासामि एवंपन्नवेमि एवंपरूवेमि किञ्चंदुरकं किञ्जामाणं कण्ठंदुरकं कहुकहु पाणाज्जूयाजीवा सत्तावेयणंवेयतित्ति वत्तव्वंसिया ॥ तइयछाणस्सवीजंउद्देसजंसम्मत्तो ॥ २ ॥

मै इमकहुल्लु एहवो जाखुंल्लु एमसमक्कावुल्लु एम प्ररूपुंल्लु जेदथी जे अनागतकाले करसी जेकर्म फरस्युं कर्म वंधावस्थायोग्यवर्तमानकाले क्रियमाण जेकर्म अतीतकालेकीधु जेदुखरूपकर्म करीने करीने प्राण जूत सत्त्व वेदना शुजाशुजानुजुतिरूप तेप्रतिजोगेहे । एहवो कहिखो थाय ॥ इति त्रीजा

मभिसम्बन्धइहा नन्तरोद्देशके विचित्रा जीवधर्माः प्ररूपिता इहापि तएव प्ररूप्यन्त इत्यनेन सम्बन्धेना यातस्या स्योद्देशकस्या दिसूत्रचयं ॥ तिहिंठाणे  
 हिंइत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहायसबन्धः पूर्वसूत्रे मिथ्यादर्शनवता मसमञ्जसतोक्ता इहतु कषायवता न्ता माहेलेव सम्बधस्या स्य व्याख्या मायी मा  
 यावान् माया मायाविषय गोपनीय प्रच्छन्न मकार्यं कृत्वा नोआलोचयेत् ॥ मायामेवेति ॥ शेष सुगम नवर मालोचन गुरुनिवेदन प्रतिक्रमण मि  
 थ्यादुष्कृतदान निन्दात्मसाक्षिका गर्हागुरुसाक्षिका वित्रोटनं तदध्यवसायविच्छेदनं आत्मन चारित्र्यस्यवा तिचारमलक्षालन मकरणता ऽभ्युत्थान पुन नैत  
 त्करिथ्यामीत्य भ्युपगमः ॥ अहारिहं ॥ यथोचितं ॥ पायच्छित्तति ॥ पापच्छेदकं प्रायश्चित्तविशोधकवा तपःकर्म निर्विकृतिकादि प्रतिपद्येत तद्यथा अकार्षमह

तिहिंठाणेहिं मायीमायंकहु णोअलोएज्जा णोपफिक्कमेज्जा णोणिंदेज्जा णोगरहेज्जा णोविउहेज्जा णोविसो  
 हेज्जा णोअकरणयाए अण्णुठेज्जा णोअहारिहं पायच्छित्तं तत्तकम्मं पफिवज्जिज्जा तं० अकरिंसुवाहं करेमि

ठाणानुं बीजुं उदेशो पुरोधयो ॥ २ ॥ हिवे त्रीजो कहैछे पाळले उदेशो जीवधर्म कहिया तीजे उदेशोपणि तेहज कहैछे । पूर्वसूत्रे  
 मिथ्यात्वीनी मूर्खताकही इहां कषायवंतने तेकहैछे । त्रिणिथानके मायावत मायाकरी छांना कार्यकरी आलोवेनथी आलोचिवुं गुरुसमक्षे कहि  
 वुं पडिकमवु जेमिथ्यादुष्कृतदेवु तथा निदेनथी आत्मसाक्षीये निदानकरे गर्हणानकरे गुरुनीसाक्षीये त्रोटनेनथी जे अध्यवसायनुं वेदवुं । चारित्र  
 ना अतीचारने विशोधेनथी वली एहवो पापनकरु एम मोजमाल नथाय । वली एहवो पापनकरु एम अंगीकार नकरे । यथायोग्य प्रायश्चित्त  
 विशोधवाने पापछेदवाने तप कर्म पढियजेनथी । तेअण्णोल कहैछे । मै एहकीधोकर्म तेकिस आलोवुं माहरो महिमाजाय एम अहंकारे । वली

मिदमतः कथं निन्द्यमित्यालोचयिष्यामि स्वस्य माहात्म्यहानिः प्राप्तेरित्येवमभिमानात् ॥ १ ॥ तथा करोमि चाह मिदानी मेव कथमसाध्विति भणामि क  
 रिष्यामीतिचा हमेत दकृत्य मनागतकालेपीति कथं प्रायश्चित्तं प्रतिपद्यतइति कीर्त्तिं रेकदिग्गामिनी प्रसिद्धिः सर्वदिग्गामिनी सैव वर्णो यशः पर्यायत्वा  
 दस्य अथवा दानपुण्यफलाकीर्त्तिः पराक्रमकृतयशः । तच्च वर्णइति तयोः प्रतिषेधो ऽकीर्त्तिं रवर्णश्चेति अविनयः साधुकृतो मे स्यादिति इदं च सूत्रमप्राप्त  
 प्रसिद्धिपुरुषापेक्ष ॥ मायकटुत्ति ॥ मायां कृत्वा मायां पुरस्कृत्य माययेत्यर्थः परिहास्यति हीना भविष्यति पूजा पुण्यादिभिः सत्कारो वस्त्रादिभि रित्द मेक  
 मेव विवक्षित मेकरूपत्वा दिति इदं तु प्राप्तप्रसिद्धिपुरुषापेक्षं शेषं सुगम उक्तविपर्ययमाह ॥ तिहिमित्यादि ॥ सूत्रत्रयं स्फुटं किन्तु मायी ॥ मायकटुआलो

वाहं करिस्सामिवाहं । तिहिंठाणेहिं मायीमायं कटु णोअलोएज्जा णोपफिक्कमेज्जा जावनोपफिवज्जेज्जा  
 तंजहा अकित्तीवामेसिया अवन्तेवामेसिया अविणयेवामेसिया । तिहिंठाणेहिं मायीमायं कटु णोअलो  
 एज्जा जावणोपफिवज्जेज्जा तंजहा कित्तीवामेपरिहाइस्सइ जसोवामेपरिहाइस्सइ पूयासक्कारेवामेपरिहा

पापहुंकरुं तुं तोकिम निंदुं माठोकीधुंकिम । वली करीस हुं तो किमप्रायश्चित्तलेवुं एहत्रणबोल आलोवेनथी ॥ वली त्रण थानके मायी कपट  
 वंत मायाकपटकरी नथी आलोवे यावत् पडिकमेनथी । तप पडिवजेनथी । अकीर्त्तिं अपयश माहरोथास्ये इमजाणी । अवर्णवाद निंदा मा  
 हरीथासे । माहरी अविनयता मूर्खताथासे । एह त्रणप्रकारे आलोवेनथी ॥ वली त्रणथानके मायावंत मायाकरीने आलोवे नथी जाव तपकर्म  
 नथी पडिवजे तेकहेछे । माहरी कीर्त्ति हानिपासे । पराक्रमथी ऊपनो जेमाहरो यश तेहानि पामसे । माहरी पूजा सत्कार वस्त्रादिकथी

एज्जति ॥ इह मायो अकल्यकरणकालएव आलोचनादि कालेव माय्येवा लोचनाद्यन्यथानुपपत्तेरिति ॥ अस्सिति ॥ अय यती मायिनइहलोकाया गहिं  
ता भवन्ति यतथा मायिन इहलोकाया प्रशस्ता भवन्ति यतथा मायिन आलोचनादिना निरतिचारो भूतस्य ज्ञानादौनि स्वभाव लभन्ते अतोह ममा

इस्सइ । तिहिंठाणेहिं मायीमायं कहु आलोएज्जा पफिक्कमेज्जा निंदेज्जा जावपफिवज्जेज्जा तंजहा मा  
यिस्सणं अस्सिलोगे गरहिए जवइ उववाए गरहिए जवइ आयाइ गरहिया जवइ । तिहिंठाणेहिं मा  
यीमायं कहु आलोएज्जा जावपफिवज्जेज्जा तंजहा अमायिस्सणं अस्सिं लगे पसत्ये जवइ उववाएपसत्ये  
जवइ आयाइपसत्ये जवइ । तिहिंठाणेहिं मायीमायं कहु आलोएज्जा जाव पफिवज्जिज्जा तं० णाणठयाए

थायळे हीनथासे लोक कहस्ये जेएह एहवा पापकर्म करेळे एह त्रणबोलै आलोवेनथी ॥ त्रणथानकै मायावत मायाकरीने आलोवे पडिकमै निंदे  
यावत् तपकर्म पफिवजै तेकहैळे । मायावत बाना पापकरनारनी एहलोकने विषे निदाथायळे । मायाकरवाथी उपपात उपजिवो तेनारकी ति  
र्यचमा उपजवाथी निदनीक थायळे । आगामिकाले पणि तेहनी निदाथायळे माठेठामै उपजै तेहथी एह तीनबोल जाणी पापप्रते आलोवे ॥  
वली त्रणथानकै मायी मायाकरीने आलोवे यावत् तपकर्म पफिवजै तेकहैळे । मायारहितने इहलोकादिक प्रशस्त जलाथाय । उपपात उपजिवु  
देवतादिकमा तिहां पणि रिद्धियेजलो कहवाये । वली तिहाथी चवीने रूडै प्रशस्तठामै अवतरे समजाणी आलोयणालेवे ॥ वली त्रणठामै मायी  
मायाकरीने आलोवे यावत् तप पडिवजै तेकहैळे । नाणने अर्थ आलोयणालेतो नाणपामै । समकितने अर्थलेतो समकितपामे । चारित्रने अर्थ

यौभूत्वा आलोचनादि करोमीतिभाव' अनन्तर शृङ्गि रक्ता इदानीं तत्कारिणी ऽभ्यन्तरसम्पद त्रिधा कुर्वन्नाह ॥ तत्रोपरोत्यादि ॥ सुबोध नवर मेतेयथो  
 त्तर प्रधानादिति तेषामेव वाह्या सम्पद सूत्रद्वयेनाह ॥ कप्पइत्यादि ॥ कल्पते युज्यते युक्तमित्यर्थः ॥ धारित्तएत्ति ॥ धर्तुं परिग्रहेपरिहर्तुं परिभोक्तुमिति  
 अथवा धारण्याउवभोगो परिहारणाहोइपरिभोगोत्ति ॥ जगिय ॥ जगमजमौर्णिकादि ॥ भगिय ॥ अतसोमयं ॥ खोमिय ॥ कार्पासिकमिति अलावुपात्र  
 तुवक दारुपात्र काष्ठमय मृत्तिकापात्रं मृत्तय शराववार्धटिकादि शेष सुगम वस्त्रग्रहणकारणान्नाह ॥ तिहोत्यादि ॥ क्लौलज्जा संयमोवा प्रत्ययो निमित्त  
 यस्य धारणस्य तत्तथा जुगुप्सा प्रवचनखिसा विवृताङ्गदर्शनेन माभूदित्येव प्रत्ययो यत्र तत्तथा एवं परिषहा. शौतोष्णदशमशकादयः प्रत्य

दसण्ठयाए चरित्तठयाए । तनुपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा सुत्तधरे अत्यधरे तदुत्तयधरे । कप्पइनिग्गंथा  
 णवा निग्गथीणंवा तनुवत्याइं धारित्तएवा परिहरित्तएवा तजहा जगिए जंगिए खोमिए कप्पइनिग्गंथाणं  
 वा निग्गथीणंवा तनुपायाइं धारित्तएवा परिहरित्तएवा तंजहा लाउयपाएवा दारुपाएवा महियापाएवा  
 तिहिंठाणेहिं वत्थंधरेज्जा तंजहा हिरिवत्तिइं दुगंठावत्तियं परीसहवत्तियं । तनु आयरस्का . पन्नत्ता तं०

लेतो चारित्र शुद्धथाय ॥ त्रणप्रकारे पुरुष कहिया तेकहैछै । सूत्रना धरणहार । अर्थना धरणहार । सूत्र अने अर्थ बेना धरणहार सह त्रीण  
 उत्तरोत्तर अधिकाजाणिवा ॥ कल्पै सूक्खे साधुने तथा साध्वीने त्रणवस्त्र धारवु राखवुं परिजोगवुं तेकहैछै । जंगम ते ऊर्णामय ऊननो धावल  
 प्रमुख । जंगिक ते रेसमनुं सणनुं अतसीखडनु वस्त्र । क्लौम ते कपासनुं वस्त्र ॥ कल्पै सूक्खे साधुने तथा साध्वीने त्रण जातिना पात्रनुं धारवुं

यो यत्न तत्तथा आह च वेडव्वियाउडेवा इत्येहीखडपजणणेचेव एसिअणुगाहडा लिङ्गुदयडायपट्टोउ ॥ १ ॥ वेडव्वित्ति ॥ विकृते तथा अप्रावृते वस्ता  
भावेसति वातिकेच उच्छूनत्वभाजने क्रियां सत्या खड्डे छड्डणमाणप्रजनने मेहने ॥ लिङ्गोदयवृत्ति ॥ स्त्रीदर्शनेलिङ्गोदयरक्षार्थं मित्यर्थः तथा तणगह  
णानलसेवा निवारणाधम्मसुक्कभाण्डा दिठ्ठकप्पपहाण गिलाणमरणट्टयाचेवत्ति ॥ १ ॥ वस्तस्य ग्रहणकारणप्रसङ्गात् पापस्यापि ता न्याख्यायन्ते अ  
तरतवासबुद्धा सेहादेसागुरुअसहवग्गो साहारणोग्गहाल तिकारणापायग्रहणत् ॥ १ ॥ अतरतत्ति ॥ ग्लानादेणाः प्राधूर्णकाः ॥ असहृत्ति ॥ सुकुमा  
रो राजपुत्रादिः प्रव्रजितः साधारणावग्रहात् सामान्योपष्टभार्थं अलधिकार्थं चेति निर्ग्रन्थ प्रस्तावा निर्ग्रन्थानेवानुष्ठानतः सप्तसूत्राह ॥ तत्रोआए  
त्यादि ॥ सुगम अवर आत्मान रागद्वेषादे रक्तलोडवकुपाद्धा रत्नलो त्यात्तरवाः ॥ धम्मियाएपडिचोयणाएत्ति ॥ आत्मना एव धार्मिकोपदेशेन  
नेद भवादृशां विधातु मुचितमित्यादिना प्रेरयिता उपदेशा भवतीति अनकुलेतरोपसर्गकारिण स्ततो सा बुपसर्गकरणा निवर्त्तते ततो कृत्या  
सेवा नभवतीत्यत आत्मा रक्षितो भवतीति १ तूष्णोको वा वाचयम उपेक्षकइत्यर्थः स्यादिति प्रेरणाया अविषये उपेक्षणासामर्थ्येच ततः स्या

धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता अवड्ढ तुसिणीएवासिया उड्डित्तुवा आयाएगंतमवक्कमेज्जा । णिग्गंथ

परिजोगवुं अनसनादि कारणे तेकहैछे । तुंबीपात्र काष्ठनुंपात्र माटीनुंपात्र ॥ त्रणि थानके साधु वस्त्रराखे तेकहैछे । लाजने अर्थ । तथा प्रवचननी  
निदा नथाय तेमाटे । शीतोष्णादशमशकादि परीसह टालवाने अर्थ ॥ साधुना अधिकारमाटे तेज अधिकार कहैछे । नण आत्मरक्षक बोल  
कहिआ तेकहैछे । धर्मने उपदेशे आगल्याजीवने अकार्ययीवारे जेतुम सरिखाने एह प्रारजकरवी नघटै एमकहिवो । अथवा कह्यो नमाने तेहनी

ना दुःखाय ॥ आयत्ति ॥ आत्मना एकांतं विजनं अंतं भूमिभागं मवक्रामेत् गच्छेत् निर्गन्धस्य ग्लायतो शक्नुवतः स्तब्धेदनया अभिभूयमानं स्येत्यर्थः  
 आहारग्रहणं हि वेदनादिभिरेव कारणैरनुज्ञातं ॥ तत्रोक्तिः ॥ तिस्रः ॥ वियडति ॥ पानकाहारस्तस्य दत्तय एकप्रक्षेपप्रदानरूपाः प्रतिगृहीतुं मांश्च  
 यितुं वेदनोपशमायेति उत्कर्षः प्रकर्षस्तद्योगादुत्कर्षा उत्कर्षतौतिवोत्कर्षा उत्कृष्टेत्यर्थः प्रचुरपानकलक्षणा यथा दिनमपि यापयति मध्यमा ततो ह्ये  
 ना जघन्या यथा सकृदेव विट्णो भवति यापनामात्रं वा लभते अथवा पानकविशेषा दुत्कृष्टाद्या वाच्या तथाहि कलमकाञ्जिकावश्चासमाणादेर्द्राक्षा  
 पानकादेर्वा प्रथमा १ षष्टिकादिकाञ्जिकादेर्वा मध्यमा २ तृणधान्यकाञ्जिकादेरुत्कृष्टादकस्य वा जघन्येति ३ देशकालस्वरुचिविशेषाद्वोत्कर्षादिने य  
 मिति ॥ साहस्रियति ॥ समानेन धम्मण चरतीति साधर्मिकस्तु समेकत्र भोगो भोजनसम्भोगः साधूनां समानसामाचारीतया परस्परमुपध्यादिदान

रसणंगिलायमाणस्स कप्पन्ति तन्नवियदत्तोन्न पणिगाहित्तए तंजहा उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना । तिहिंठाणे  
 हिं समणेनिग्गथे साहम्मियं संजोड्यं विसंजोड्यं करेमाणे णाड्क्कमड् तंजहा सड्वादठुं सट्ठियस्सवा नि

उपेक्षाकरवी उपेक्षी पोते मौनपणेरहै । अथवा वारवाने समर्थनथी तेमाटे पापना करनारने पासथी उठी पोतेज एकांते अलगो जाय एह त्रणप्रका  
 आत्मरक्षाकही जगवते ॥ रोगथी पराज्योहोय एहवा निग्रथ साधुने कल्पे त्रण वियड तेपाणी तेहनी दातीजे एकवारेज प्रक्षेप आप्युं पात्रमां  
 तेवोहरे तेतले तृष्णासमावे तेकहैछै । उत्कृष्टीदाति तेघणु पांणी । मध्यमदाती ते थोडुं । जघन्यदाती ते एकवार पिई तृष्णासमावे ॥ त्रण  
 थानकै श्रमण निग्रथ साधु साधर्मीने जेहनी सरिखो धर्मछे तेहनेसाथे संजोग आहारोपधिनुं देवुंलेवुं विसंजोग तेलेवु पणिनथी देवुं पणिनथी



गृहणसञ्चयहारलक्षणः सविद्यते यस्य ससभोगिक स्तं विसंभोगो दानादिभि रसञ्चयहारः स यस्यास्ति सविसभोगिक स्तं कुर्वन् आतिक्रामति नलङ्घय  
 त्याज्जा सामाधिकया विहितकारित्वा दिति स्वयमात्मना साक्षात् दृष्ट्वा सभोगिकेन क्रियमाणा मसभोगिकदानगृहणादिका मसमाचारी तथा ॥ सङ्घि  
 यस्तस्ति ॥ यज्ञा यज्ञानं यस्मि न्नास्ति सञ्चादः अद्वेयवचनः कोप्यत्यः साधु स्तस्य वचनमिति गम्यते निश्चया वधार्थं तथा ॥ तच्चति ॥ एक द्वितीयं यावत्  
 १. तृतीय ॥ मोसति ॥ मृषावादं अकल्पगृहणपार्श्वस्थदानादिना सावदाविषयप्रतिज्ञाभङ्गलक्षण माश्रित्येति गम्यते आवर्त्तते निवर्त्तते तमालोचयतीत्यर्थ. अ  
 नाभोगत स्तस्य भावात् प्रायश्चित्तं वा स्योचित दीयते चतुर्थत्वाश्रित्यप्रायो नोआवर्त्तते त नालोचयति तस्य दर्प्यत एव भावादिति आलोचनेपि प्राय  
 २. श्चित्तस्या दानमस्येति अत सतुर्थासंभोगकारणकारिणं विसभोगिक कुर्वन् आतिक्रामतीतिप्रकृत उक्तं च एगंचदीवितिनिव आउद्वंतस्सहोदपच्छित्तं आ  
 उद्वतेवितओ परेणतिगहविसभोगोत्ति ॥ १ ॥ एत सूरिणः सभोद्वओअसुद्वगिणहतोचोद्वओभणद संतापंपडिचोयण मिच्छामिदुक्कडं नपुणएवंकरिस्सामी ए  
 वमाउद्वेजमावन्नी तपायच्छित्त दाउंसोभोगो एववीयवाराए वि एवतइयवाराओ परओ चउत्थवाराए तमेवाइयारंसेविज्जण आउदं तस्सवि ॥ विसंभो  
 गोत्ति ॥ इहचायं स्थानद्वयं गुरुतरदोषाअय यत स्तत्र ज्ञातमात्रेशुतमात्रेच विसभोगः क्रियते तृतीय स्वल्पतरदोषाअय तत्रहि चतुर्थवेलाया सन्निधीय

सम्मतच्चमोसं आउद्वइ चउत्थं नोआउद्वइ । तिविहा अणुन्ना पन्नत्ता तंजहा आयरियत्ताए उवज्जायत्ताए

ते प्रतिकरतो जगवंतनी आग्याप्रते अतिक्रमेनथी जंगकरै नथी । संजोगियेकरी असंजोगिकनूं देवू लेवू एहवी असमाचारीने आप पोतै जोईने  
 यली एक बे यावत् त्रणि मृषावाद आश्रीने निवर्त्त तेहने आलोयणादे । यली चौथो मृषावाद आश्रीने जे न निवर्त्त तेहने आलोयणा न दे ।

तइति ॥ अणुवृत्ति ॥ अनुज्ञात मनुज्ञा धिकारदान आचर्यते मर्यादावृत्तितया सेव्यत इत्याचार्य आचरेवा पञ्चप्रकारे साधु रित्याचार्यः आह च पच  
विहआयार आयरमाणातहापयासंता आयारदसित्ता आयरियातेणवुच्चति ॥ १ ॥ तथा सुत्तत्यविजलक्खण जुत्तोगच्छस्समेढिभूओय गणतत्तिविप्प  
मुक्को अत्थवाएइआयरिओ ॥ १ ॥ तझाव स्तत्ता तथा उत्तरत्र गणाचार्यग्रहणा दनुयोगाचार्यतयेत्यर्थ. तथा उपेत्या धीयते स्मादि त्युपाध्याय आह  
च समत्तनाणदसण जुत्तोसुत्तत्यतदुभयविहसू आयरियठाणजोगो सुत्तवाएइउवभाओत्ति ॥ १ ॥ तझाव उपाध्यायता तथा तथा गणः साधुसमुदा  
यो यस्यास्ति सत्त्वाभिसम्बन्धेना सोगणी गणाचार्य स्तदभाव स्तत्ता तथा गणनायकतयेतिभाव तथा समितौ सगता औत्सर्गिकगुणयुक्तत्वेनो चिता आ  
चार्यादितया अनुज्ञा समनुज्ञा तथा ह्यनुयोगाचार्यस्यौ त्सर्गिकगुणाः तस्मावयसंपत्ता कालोचियगहियसयलसुत्तत्या अणुयोगाणुन्नाए जोगाभणिया  
जिणिदेहि ॥ १ ॥ इहराउमुसावाओ पवयणखिसायहोइलोयम्भि सेसाणविगुणहाणी तित्युच्छेओयभावेण ॥ २ ॥ गणाचार्योप्यौ त्सर्गिक एवं सुत्तत्ये  
निम्माओ पियदढधम्भोणवत्तणाकुसलो जाईकुलसपन्नो गभीरोलद्धिमतोय ॥ १ ॥ संगहुवगहनिरओ कयकरणोपवयणाणुरागीय एवविहोयभणिओ  
. गणसामीजिणवरिदेहिं ॥ १ ॥ अथैव विधगुणाभावे अनुज्ञाया अप्यभावात् कथ मन्या समनुज्ञा भविष्यतीत्यत्रोच्यते उक्तगुणानां मध्या दन्यतर

गणिताए तिविहा समणुन्ना पस्सत्ता तंजहा णायरियत्ताए उवज्जायत्ताए गणिताए । एवंउवसंपयत्ता ।

त्रणप्रकारे साधुने अनुग्याकही तेअधिकार पदवीनुं देवुं सामान्यथी आचार सहितने आचार्य पदवीदेवी उत्तरगुणसहित ते अनुयोगाचार्य । उपा  
ध्याय जेपासे जणिये सूत्रार्थनोजाण तेहने उपाध्याय पदवीदेवी । गण ते साधुसमुदाय तेहनुंस्वामी तेगणि गणाचार्य गणाचार्यतादेवी ॥ त्रणप्र

गुणाभावेपि कारणविशेषात्सम्भवत्वेवासी कथं मन्यथा भिधीयते ॥ जेयाविमंदेत्तिगुरुंविदित्ता उहरेइमेअप्पसुएत्तितच्चा ॥ हीलेतिभिच्छंपडिवज्जमाणा  
 करतिआसायणतेगुरूणति ॥ १ ॥ अतः केषांचित् गुणानां मभावे प्यनुज्ञासमग्रगुणभावेतु समनुज्ञेति स्थितं प्रथवा स्वस्य मनोज्ञा समान समा  
 चारौकतया अभिरुचिता स्वमनोज्ञास हवामनोज्ञै ज्ञानादिभिः समनोज्ञा एकसाभोगिकाः साधवः कथंनविविधाइत्याह आचार्यतयेत्यादि भिक्षुचु  
 ल्लकेत्यादिभेदाः संतोपि नविवविताः त्रिस्थानताधिकारादिति एव ॥ उवसपयत्ति ॥ एव मित्याचार्यत्वादिभि स्त्रिधा समनुज्ञावत् ॥ उपसपत्ति ॥ उप  
 सपत् ज्ञानाद्यर्थं भवदोयीह मित्यभ्युपगमः तथाहि कश्चि त्स्वाचार्यादिसदिष्टःसम्यक् श्रुतग्रन्थानां दर्शनप्रभावकशास्त्राणांवा सूत्रार्थयो ग्रहण  
 स्थिरीकरणविस्मृतसधानार्थं तथा चारित्रविशेषभूताय वैयावृत्याय चमणायवा सद्विष्ट माचार्यान्तरं य दुपसम्पद्यते उक्तच उवसपयायतिविहा णा  
 णेतहदसणेचरित्तिय दसणनाणेतिविहा दुविहायचरित्तअट्ठाएत्ति ॥ १ ॥ सेय माचार्योपसंपदेव मुपाध्यायगणिनोरपीति ॥ एवंविजहसत्ति ॥ एवमिति  
 आचार्यत्वादिभेदेन त्रिविधैव विहानपरित्याग स्तच्च आचार्यादेः स्वकीयस्य प्रमाददोष माश्रित्य वैयावृत्यचपणार्थं माचार्यान्तरोपसम्पत्त्या भवतीति  
 आहच नियगच्छादन्नमि उसीणदोसायणाहीइत्ति अथवा आचार्योज्ञानाद्यर्थं मुपसम्पन्न यति न्त मर्थं मनुतिष्ठत सिद्धप्रयोजनवा परित्यजति यत्

कारे समनुग्या विशेषणी अनुग्या पदवी आपवी । तेकहैछे । उत्कृष्ट मूलगुण राहितने आचार्य पदवीदेखुं । एम उपाध्याय पदवी । तथाग णि  
 पदवी प्रथमकही तेहणी विशेष गुणविना पदवी नदेवी ॥ एम उपसपन्ना पदवी तेहने ग्यानादिकने अर्थे सेविये पोताना आचार्यनी आग्यायी  
 अधिकग्यानी बीजा आचार्यने नाणादिक अर्थे ते उपसपन्ना पदवी तेहने देवी ॥ इम आचार्यादि जणने व्याड्यु प्रमादादि दोषदेसीने एक समा

साचार्यविहानि सक्तंच उवसपन्नोजंका रणंतुतंकारणंअपूरितो अहवासमाणियंसि सारण्यावाविसगोउत्ति ॥ १ ॥ एव मुपाध्यायगणिनो रपीति  
इय मनन्तर विशिष्टा साधुकायचेशा त्रिस्थानके वतारिता अधुनातु वचनमनसी तत्पर्युदासीध तत्रा वतारयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय  
मस्य गमनिका तस्य विवक्षितार्थस्य घटादे वचन भणन तद्वचन घटार्थापेक्षया घटवचनवत् तस्मा विवक्षितघटादे रन्यः पटादि स्तस्य वचनं  
तदन्यवचन घटापेक्षया पटवचनवत् नो अवचन मभणननिवृत्ति वचनमात्र डित्यादिवदिति अथवा स शब्दव्युत्पत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टोर्थोनेनोच्यत  
इति तद्वचन यथार्थनामेयथेः ज्वतनतपनादिव तथा तस्माच्छब्दव्युत्पत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टा दन्यः शब्दप्रवृत्तिनिमित्तधर्मविशिष्टो र्थ उच्यते अ  
नेनेति तदन्य वचन मयथार्थ मित्यर्थः मण्डपादिवत् उभयव्यतिरिक्तं नोअवचन निरर्थक मित्यर्थोडित्यादिवत् अथवा तस्या चार्यादे वचन त  
द्वचन तद्व्यतिरिक्तवचन तदन्यवचन अविवक्षितप्रणेतृविशेष नोअवचन वचनमात्रमित्यर्थः त्रिविधवचनप्रतिषेध स्ववचनं तथाहि नोतद्वचन घटा

एवंविजहसा । तिविहे वयणे पन्नत्ते तंजहा तद्वयणे तदन्तवयणे णोऽवयणे । तिविहेऽवयणे पन्नत्ते

चारीनो बीजो आचार्यादि आदरवु ॥ त्रणवचन कहिया तेकहैछै । घटने घटकहवो तेतद्वचन । घटथी अन्यपट कहवो ते अन्यवचन घटनी  
अपेक्षाये पट ते अन्यवचन पटनी अपेक्षाये घट ते अन्यवचन । नो अवचन तेनिरर्थक वचन डित्यादिनीपरे प्रवृत्तिनिमित्तशून्य ॥ त्रण प्रकारें  
अवचन कहियो तेकहैछै । निरर्थक वचन ते अवचन कामविना नबोले । नोतद्वचन जे घटने घट नकहै पटकहै । नो तदन्य वचन जे पटने  
घटकहै यथास्थित नकहै । केवल वचनमात्र निरर्थक ॥ त्रण प्रकारे मनकहियो तेकहैछै । तेह देवदत्तादिनु जेघटादिक वस्तुनेविषे मन ते

पेजया पटपचनात् नोतदन्यवचन घटे घटवचनवत् अवचनं यचननिवृत्तिमानमिति एव व्याख्यान्तरापेक्षयापि नेय तस्य देवदत्तादे स्तस्मिन्ना घ  
टादो मन स्तस्मिन् स्ततो देवदत्ता दग्यस्य यज्ञदत्तादे घटापेक्षया पटादो वामन स्तदन्यमनः अविचितसंबंधिविशेषन्तु मनोमात्रं नोप्रमनइति  
एतदनुसारेणा मनो प्युह्यमिति अनन्तरं सगतमनुष्यादिव्यापारा उक्ता इदानीं प्रायोदेवव्यापारान् ॥ तित्तिप्रत्यादिभिः ॥ रण्टाभिः सूत्रै राह सुग  
मानि चैतानि त्तिन्तु ॥ अप्यवुष्टिकाएत्ति ॥ अल्पः स्तोको ऽविद्यमानोवा वर्षणं वृष्टि रधः पतन वृष्टिप्रधानः कायो जीवनिकायो व्योमनिपत  
दण्कायद्रव्यार्थः वर्षणधर्मयुक्तचो दकं वृष्टि स्तस्याः कायो राशि वृष्टिकायः अल्पशासी वृष्टिकायया ल्यवृष्टिकायः सस्या ज्ञवेत् तस्मिं स्तन मगधादो  
चशब्दो ल्यवृष्टिकारणान्तरसमुच्चयार्थः गमित्यनङ्गारे देशे जनपदे प्रदेशे तस्यैव एकदेशरूपे वा शब्दौविकल्पार्थौ उदकस्य योनयः परिणामकारणभू

तंजहा णोतवृथणे णोतदन्नवयणे अण्वयणे । तिविहेमणे पण्णत्ते तंजहा तंमणे तयन्नमणे णोअणमणे । ति  
विहे अणमणे पण्णत्ते तजहा णोतंमणे णोतयन्नमणे अणमणे । तिहिंठाणेहि अण्णवुठीकाए सिया तंजहा

तम्मण । देवदत्तथी अन्यजे यग्यदत्तादिकनुं घटनी अपेक्षार्थे पटमां जे मन तेतदन्यमन । कोर्षं वस्तुनेविषे मननथी ते अमन ॥ त्रण प्रकारे  
अमन तेकहैल्ले । तन्मन नथी । तदन्य मन नथी । मनमात्रे सहित पणि अन्य ॥ त्रण थानकौ अल्प थोडुं अथवा नथी वृष्टि कायहोय एतले  
वरसा नवरसें तेकहैल्ले । तेदेशनेविषे जिह्वां वर्षा थोडीहोय ते आश्रीलेवुं अथवा ते देशना प्रदेशनेविषे घणा पाणीना योनिया जीव तथा  
पुदगल अण्कायपणं उपजतानथी चवतानथी उपजतानथी क्षेत्र स्वजावथी । देवता वैमानिक जोतिपी नागकुमार जवनपती यक्ष भूत व्यंतर

ता उदकयोनय स्तएवोदकयोनिका उदकजननस्वभावा भुक्तामन्ति उत्पद्यन्ते व्यपक्रामन्ति च्यवन्ते एतदेव यथायोग पर्यायतत्राचष्टे च्यवन्ते उत्पद्यन्ते  
 त्रेत्रस्वभावा दित्येक तथा देवा वैमानिका ज्योतिष्का नागा नागकुमारा भवनपत्युपलक्षणमेतत् यच्चा भूताइति व्यतरोपलक्षण अथवा देवा  
 इति सामान्यं नागादयस्तु विशेष एतद्गृहणञ्च प्राय एषा मेघविधेकर्मणि प्रवृत्ति रितिज्ञापनाय विचित्रत्वाद्वा सूत्रगतेरिति नोसम्यगाराधिता भव  
 न्ति अविनयकरणा ज्ञानपदै रितिगम्यते ततश्च तत्र मगधादौ देशे प्रदेशेवा तस्यैव समुत्थितमुत्पन्न उदकप्रधान पौद्गल पुद्गलसमूहो मेघइत्यर्थः  
 उदकपौद्गल तथापरिणत उदकदायकावस्थां प्राप्तं अतएव विद्युदादिकरणात् वर्धितुकाम स दन्य देशं मगधादिक सहरन्ति नयन्तीति द्वितीय  
 अन्त्राणि मेघा स्तै वर्द्धलकं दुर्द्दिन अभवर्द्धलक ॥ वाउयाएत्ति ॥ वायुकायः प्रचडवातो विधुनाति विध्वंसयतीतिद्वितीय ॥ इच्चे इत्यादि ॥ निगमन

तेसिंचणंदेससिवा पएसंसिवा णोवहवेउदगजोणियाजीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयं  
 ति उववज्जंति देवा नागा जस्का णोसम्ममाराहिया न्नवंति । तस्यसमुष्ठियं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउ  
 कामं अन्नदेसं साहरंति अण्णवद्दलगं चणं समुष्ठियं परिणयं वासिउकामं वाउकाएविप्पूणेइ इच्चे एहिंति

एह देवताने सम्यक् प्रकारे आराध्या नहोय अविनय कीधो होय तिवारे देशने विषे उपनो मेघ पाणीना पुद्गल परिणतपाणी देवानी अव  
 स्था पाम्या विजली प्रमुख कारणे वरसवा मांडयाथका वीजा देशमा सहरे लेजाय ए वीजूं कारण । मेहनां वादल ऊपनां परिणत यथा  
 वरसवा मांडयाथका वायरो विनसाडै विलयकरे । ए त्रिण थानकै कारणे अल्प वरसात मेघनी अन्नाव थाय । त्रण थानकै घणी महावृष्टि

मिति एतद्विपर्यासा दनन्तर सूत्रं अधुनो पपन्नो देवः क्लेशाह देवलोकेष्विति इहच बहुवचनं एकस्यै कदा अनेकेषू त्यादासभवा देकार्थे दृश्यं वचनव्यत्य  
यादेवलोकानेकत्वोपदर्शनार्थं वा देवलोकेषु मध्ये क्वचि देवलोकइति इच्छे दभिलषेत् पूर्वसगतिकदर्शनार्थं मानुषाणा मयं मानुष स्त ॥ हवन्ति ॥

हिंठाणेहिं अण्पबुठिग्गएसिया । तिहिं ठाणेहिं महाबुठिकाए सिया तंजहा तेसिचणं देसंसिवा पएसंसिवा  
वहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमति चयंति उववज्जति देवा नागा  
नूया जरका सम्ममाराहिया जवति अन्नत्पसमुठिय उदगपोग्गल परिणयं वासिउकाम तंदेसं साहरंति २  
अण्णवदलगंचणं समुठिय परिणय वासिउकामं णोवाउअण्ण विज्जणति ३ इअे एहि तिहिं ठाणेहिं महा  
बुठिकाए सिया । तिहि ठाणेहिं अण्णोववन्ने देवे देवलोगेसुइच्छेज्जामाणुसंलोगं हव मागच्छिअए णोचेवणं

थाय । तेकहैल्ले । तेदेशनेविषे घणा पाणीना योनीना जीव पुदगल उदकपणे उपनाहोय व्यतिक्रमे चवे उपजै तिवारे घणी वर्षाथाय । तिम  
देवता नाग यत्त जूत ए देवता सम्यक् प्रकारे आराध्या होय तिवारे बीजे देशे उदय पाम्या पाणीना पुदगल परिणत थई वरसवा मांड्या  
तिहायी ले ते देशमा वरसावे । तिम वली मेहना बादला उदय पाम्या परिणत थया वरसवामांड्या तेप्रते वायरो विध्वंसनकरे । ए त्रिणि  
थानकै कारणै मोटी वृष्टिथाय ॥ हिवे देवताना अधिकार माटै कहैल्ले त्रिण थानकै हमणातर ऊपनो देवता देवलोकने विषे वाल्ले जे मनुष्य  
लोकमां हुजाऊ आवुं वाल्ले पूर्व सगति मनुष्यने मिलवो पणि नही शक्ति सामर्थ नथाय इहा आववाने । नवो तुरत उपनो देवता देवलो

श्रीघ्नं ॥ सचाएत्ति ॥ शक्नोति दिवि देवलोके भवा दिव्यास्तेषु कामौ च शब्दरूपलक्षणौ भोगाश्च गन्धरसस्पर्शाः कामभोगास्तेषु अथवा काव्यन्तइति कामा मनोज्ञा स्तेचइति भुज्यतइति भोगाः शब्दादयस्तेच कामभोगास्तेषु मूर्च्छितइव मूर्च्छितो मूढ स्तत्स्वरूपस्या नित्यत्वादेर्विवोधाक्षमत्वात् गृध्रस्तदाकांक्षावा नष्टतइत्यर्थः ग्रथितइव ग्रथितस्तद्विषये स्नेहरज्जुभिः सन्दर्भितइत्यर्थः अध्युपपन्न आधिक्येना सक्तोऽत्यततन्मना इत्यर्थः नोआद्रियते नतेष्वादरवान् भवति नोपरिजानाति एतेपिच वस्तुभूता इत्येवं नमन्यते तथा तेष्विति गम्यते नो अर्थं बध्नाति एतै र्निद प्रयोजनमिति न निश्चय करोति तथा तेषु नोनिदानं प्रकरोति एते मे भूयासु रित्येवमिति तथा तेष्वेव नोस्थितिप्रकल्प मवस्थान विकल्पनमेतेष्वहं न्तिष्ठेयमिति एतेवा मम तिष्ठन्तु स्थिरीभवं त्वित्येवं रूप स्थित्यावा मर्यादया विशिष्टप्रकल्प आचार आसेवेत्यर्थस्तु प्रकरोति कर्तुमारभते प्रशब्दस्यादिकर्मा

संचाएइ हवमागच्छितए तं० अञ्जणोववन्तेदेवे देवलोगेसु दिव्वेसुकामजोगेसुमुच्छिए गिद्धेगटिए अञ्जोव वन्ते सेणं माणुरस्सए कामजोगे णोअ्याढाइ नोपरियाणाइ णोअ्यठ बंधइ णोणियाणंपगरेइ णोठिइप्पकप्पे पकरेइ अञ्जणोववन्ते देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामजोगेसु मुच्छिए गिद्धे गटिए अञ्जोववन्ते तरस्सणं माणुरस्सए

के तेदिव्यदेवता संबधी काम जागर्ने विषे मूर्छापाभ्यो मूर्छांणो गृध्र अतृप्त विषयस्नेह दोरडीयें बांध्यो ते गठित तेहमां अत्यत आसक्त थको तेदेवता मनुष्यना कामजोगप्रते आदरनकरे । वस्तुकरो पणिनजाणे जे ए कामजोगछे । अर्थनबांछें एपणि प्रयोजनछे इम नजाणे । एहन्नूं नियाणूं पणिनकरे जे एजोग हूपाभ्यो । स्थितिनोप्रकल्प विचारनकरे एजोग मांहरे घणाकाल रहियो । हमणानवो उपनो देवता देवलोकने विषे दिव्यका



र्थत्वादिति एवं दिव्यविषयप्रशक्तिरित्येकं कारणं तथा यतो सावधुमोपपन्नो देवो दिव्येषु कामभोगेषु मूर्च्छितादिविशेषणो भवति अतः स्तस्य मानुष्य  
 क मनुष्यविषय प्रेम स्नेहो येन मनुष्यलोके आगम्यते तद्वावच्छिन्नं दिविभव दिव्य स्वर्गगतवस्तुविषय सक्रात तत्र देवे प्रविष्ट भवतीति दिव्यप्रेमस  
 क्राति रितिद्वितीयः २ तथा ऽसौ देवो यतो दिव्यकामभोगेषु मूर्च्छितादि विशेषणो भवति ततः स्तत्प्रतिबन्धात् ॥ तस्स एति ॥ तस्य देवस्य ॥ एवति ॥ ए  
 व प्रकार चित्त भवति यथा ॥ इयण्हिति ॥ इदानीं गच्छामि ॥ मुहुत्तति ॥ मुहूर्त्तेन गच्छामि कृत्यसमाप्ता वित्यर्थः ॥ तेणकालेणति ॥ येन तत् कृत्य  
 समाप्यते सच कृतकृत्यत्वा दागमन शक्तो भवति तेन कालेन गतेनेतिशेष स्तस्मिन्वा काले गते णशब्दो वाक्यालङ्कारे ऽल्पायुषः स्वभावादेव मनुष्यमा  
 त्रादयो यद्दर्शनार्थं माजिगमिषति तेन कालधर्मेण मरणेन सयुक्ताभवति कस्या सौदर्शनार्थं मागच्छति असमाप्तकर्तव्यतानाम तृतीयमिति ॥ इच्च

पेमे वोच्छिन्ते विच्छिन्ते दिव्ये संकंते नवइ २ अज्जणोववन्ते देवे देवलोएसु दिव्येसु कामभोगेसु मुच्छिण  
 जाव अज्जोववन्ते तस्सण मेवं नवइ इयण्हं गच्छं मुज्जतं गच्छं तेणं कालेण मप्पाउया माणुस्सा काल

मज्जोगनेविपे मूक्ताणो गृध्रय्यो गठित स्नेहे बंधाणोथको अत्यासक्त मनथयो तेदेवतान् मनुष्यलोकनो प्रेमविच्छेद पाम्यो टूट्यो अनें दिव्यदेवता  
 संबंधीप्रेम सक्तम्यो तेणे नावे एबीजूकारण ॥ नवो उपनो देवता देवलोकनेविपे दिव्यकामभोगमा मूर्च्छाणु यावत् आसक्त मनथयो तेदेवतानी  
 मती एमहोय जे हु हवणाजाउं मुहुर्त्त बेघडी रहीनेजाउ एमचितवता नाटकजोता बेहजारवरस वहीजाय तेहवे थोडा आऊखानाधणी मनुष्य  
 इहा कालधर्मपामे मरणपामे तेनआवे त्रणथानकैकरी हमणा उपनो नवोदेवलोकमा तेवाछे मनुष्यलोकमा आघवु पणिसमर्थ नथाय इहां आवि

त्यादि ॥ निगमनं ३ देवः कामेषु कश्चि दमूर्च्छितादिविशेषणो भवति तस्यच मनइति गम्यते एवंभूतं भवति आचार्यप्रतिबोधकप्रब्राजकादि रनुयोगाचा  
 र्योवा इति एवंप्रकारार्थो वाशब्दोविकल्पार्थः प्रयोगस्त्वेव मनुष्यभवे यं समा चार्यो स्तौतिवा उपाध्यायः सूत्रदाता सोस्तौतिवा एव सर्वत्र नवर प्र  
 वर्त्तयति साधूना चार्योपदिष्टेषु वैयावृत्त्यादिष्विति प्रवर्त्ती उक्तच तवसंयमजोगेसु जोजोगोतत्पयट्टेइ असुहंचनियत्तेइ गणतत्तिलोपवत्तीओत्ति ॥ १ ॥  
 प्रवर्त्तिव्यापारितान् साधून् सयमयोगेषु सौदतः स्थिरौकरोतीति स्थविरः उक्तञ्च थिरकरणापुणथेरो पवत्तिवावारिएसुअत्येसु जोजत्यसौयइजइ  
 सतवलोतथिरंकुणइत्ति ॥ १ ॥ गणो स्यास्तौति गणी गणाचार्यः गणधरो जिनशिष्यविशेषः आर्यिका प्रतिजागरकोवा साधुविशेष उक्तञ्च पियधम्मेद

धम्मणा संजुत्ता जवइ । इच्चे एहिंतिहिं ठाणेहिं अज्जणोववन्ते देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव  
 मागच्छित्तए नोचेवणं सचाएइ हवमागच्छित्तए अज्जणोववन्ते देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामजोगेसु अमु  
 च्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्जोववन्ते तरुसणमेवं जवइ अत्थिणं मममाणुस्सए जवे आयरिएइवा उव  
 ज्जाएइवा पवत्तेइवा थेरेइवा गणीइवा गणहरेइवा गणावच्छेएइवा जेसिं पज्जावेणं मएइमा एयारूवा

गाने आवीनसकै ॥ त्रणथानकै नवोदेवलोकमा उपनो जेदेवता तेमनुप्यलोकमां आविवानी इच्छाकरै पणि तेइहां आविवाने समर्थ नहीय । देव  
 लोकमां नवो ऊपनो देवता दिव्यकाम जोगमा मूर्च्छितनथी अनित्यजाणी अगूढ गढितनथी अतिआसक्तनथी तेहनु एहवुं मनहोयछे जेमाहरे  
 नुप्यजवना धर्मना उपदेशक आचार्य उपाध्याय धर्मनाप्रवर्त्तनार प्रवर्त्तक स्थविर गणीगच्छनास्वामी गणधर जगवतनाशिष्य विशेष गणावच्छेद ते



हगुहा कायोत्सर्गं करणादीनां मध्ये दुष्कर मनुरक्तपूर्वोपभुक्तप्रार्थनापरतरुणीमन्दिरवासाप्रकंपत्रह्यचर्यानुपालनादिक इतितीति अतिदुष्कर २ कारकः  
स्थूलभद्रवत् तस्मात् ॥ गच्छामिति ॥ पूर्वमेकवचननिर्देशे पीह पूज्यविवक्षया बहुवचनमिति तान् दुष्कर २ कारकान् भगवतो वदे इति द्वितीयं तथा  
मायाइवापियाइवाभज्जाइवाभइणीइवापुत्ताइवाधुयाइवाइति ॥ यावच्छब्दा चेषः स्नुषा पुत्रभार्या तदिति तस्मा तेषा मन्तिके समीपे प्रादुर्भवामि प्रकट

सुकामजोगेसु अमुच्छिण्ण जाव अणज्जोववन्ते तस्सणं एवंजवइ एसणंमाणुस्सएज्जवे णाणीइवा तवस्सीइवा  
अइदुक्कारदुक्कारकारगे तंगच्छामिणंजगवंते वंदामि णमसामि जाव पज्जुवासामि ॥ २ ॥ अण्णोववन्तेदेवे दे  
वलोगेसु जाव अणज्जोववन्ते तस्सणमेवंजवइ अत्थिणं मममाणुस्सएज्जवे मायाइवा जावसुरहाइवा तंगच्छा  
मिणं तेसिमंतियं पाउप्पवामि पासंतुतामे इमं एयारूवं दिव्वंदेवहिं दिव्वंदेवजुइं दिव्वंदेवाणुज्जावं लद्धं पत्तं अत्ति

जाव आशक्तनथी तेदेवतानां मनमां एहवूं आवे जे एहमनुष्य जवमां मोटोनाणीछै अथवा तपस्वीछै अतिदोहिली करणीनो करनारछै सिंहगुफा  
सर्पबिले काउसगकरैछै दुष्कर ब्रम्हचर्यपालैछै स्थूलजद्रनीपरं तेमांटे हुंजाउं तेजगवतने बांदुं नमस्कारकसं यावत् सेवाजत्तिकरुं एह बीजुं कारण  
देवलोकमां नवोऊपनो देवता जे कामजोगमा आशक्तनथी तेहनुं एहवो मनथायछे मांहरे मनुष्यनां जवनेविपे माता पिता स्त्री पुत्र जगिनी पुत्री  
यावत् स्नुषा बहूछै तेमांटे हुंजाउं तेहनेपासै प्रगटथाउं तेहने दिखाडुं आ एहवा स्वरूपनी दिव्य मोटी देवरिद्धि दिव्यशरीरनी काति दिव्यदेवानु  
जाव प्रजावै मै लाधोपाम्यो विशेषथी पाम्योछै । एहवे त्रणथानकै त्रणकारणै नवोदेवलोकमां ऊपनो जेदेव तेमनमा बाछै मनुष्य लोकमां आवि

भवामि ॥ तामेति ॥ तावत् मेममेति तृतीय ॥ पीहेज्जति ॥ सृहये दमिलधे दार्यचेव मर्द्धमर्द्धषड्विंशतिजनपदाना मन्यतर मगधादि सुकुले इच्छाकाद देवलोकात् प्रतिनिवृत्तस्या जाति जन्मआयातिर्वा आगतिः सुकुलप्रत्याजाति सुकुलप्रत्यायातिर्वा तामिति ॥ परितप्पेज्जति ॥ पश्चात्ताप करोति अहो विस्मये सति विद्यमाने बले शारीरे वीर्ये जीवाश्रिते पुरुषकारेभिमानविशेषे पराक्रमे ऽभिमानएवच निष्पादितस्वविषयइत्यर्थः क्षेमे उपद्रवाभावे सति सुभिन्ने सुकाले सति कल्पशरीरेण नीरोगदेहेनेति सामग्योसङ्गावेपि नोबहुश्रुत मधीत मित्येकं ॥ विसयतिसिएणति ॥ विषयवृषितत्वा दिहलोकप्रति

समस्मागयं । इच्चेएहिं तिहिंठाणेहिं अज्जणोववन्तेदेवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसंलोगं हव्वमागच्छित्तए सं चारित्तए हव्वमागच्छित्तए ॥ ३ ॥ तं ठाणाइंदेवे पीहेज्जा तं माणुस्सगंजवं आरिएखेत्ते जम्मं सुकुलपच्चा याइं । तिहिंठाणेहिंदेवेपरितप्पेज्जा तंजहा अहोणं मए संतेवले सतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरक्कमे खेमंसि सुत्तिरकसि आयरियउवज्जाएहिं विज्जमाणेहि कल्लसरीरेण णोवज्जाएसुएअहीए ॥ १ ॥ अहोणमए इहलोगप

वाने समर्थथाय एतले आवै ॥ त्रणथानकै देवलोकमां रह्यो देवता बाढाकरे तेकहैछे । मनुष्यना जवमा आविवानी । आर्य साढापचीस क्षेत्र मा अवतारनी । देवलोकथी चधी सुकुल उत्तम कुलमा जन्म एह त्रणबोल बाछे ॥ त्रणथानकै देवता पश्चात्तापकरे तेकहैछे अहो इति खेदे माहरे शरीर सबधी बलछते । जीवाश्रित वीर्य छतै । पुरुषात्कार अजिमान ते थी ऊपनो जेपराक्रम तेछतै क्षेम उपदव रहितपणे सुकाल छते आचार्य उपाध्याय जणावनारनी सामग्रीछतै शरीर नीरोगछते मै मनुष्यना जवमा धणुश्रुत जण्योनथी एम पश्चात्तापकरै ॥ अहो मै इहलोक विषयादिक

बन्धादिना दीर्घश्रामण्यपर्यायापालनमिति द्वतीयं तथा ऋद्धिराचार्यत्वाद्दौ नरेन्द्रादिपूजा रसा मधुरादयो मनोज्ञाः सातं सुखं एतानि गुरुण्या दरविषया यस्य सोह मृद्धिरससातगुरुक स्तेन अथवा एनि गुरुक स्तेषा प्राप्ता वभिमानतो प्राप्तौच प्रार्थनातो शुभभावोपात्तकर्मभारतया अलघु स्तेन भोगेषु कामेषु आशसावा प्राप्तप्रार्थन गृहच प्राप्ता तृप्ति र्यस्य स भोगाशसागृह इहचा नुस्वारलोपकृत्स्नत्वे प्राकृततयेति पाठान्तरेण भोगामिषगृहेनेति नोविशुद्धमनति चार चरित्र स्पृष्टमिति तृतीयं इत्येतै रित्यादि निगमन विमानाभरणानां निष्पन्नत्व मौत्पातिक न्तचक्षुर्विभ्रमरूपंवा ॥ कप्परुक्खगति ॥ चैत्यवृक्षं ॥ तेय लेस्सति ॥ शरीरदीप्तिं सुखासिकांवा ॥ इच्चेएहिइत्यादि ॥ निगमन भवन्ति चैव विधानि लिङ्गानि देवाना च्यवनकाले उक्तच माव्यस्तानिःकल्पवृक्षप्रकपः श्रीक्रीनाशोवाससाचोपरागः ॥ दैन्यन्तन्द्राकामरागाद्भङ्गो । दृष्टेर्भान्तिर्वैपद्युधारतिथेति ॥ १ ॥ उवेगंति ॥ उवेग शोकं मयेत श्यवनीय भविष्यतीत्येक तथा

ऋबद्धेणं परलोगपरंमुहेणं विसयतिसिएणं णोदीहेसामन्तपरियाए ण्णुपालिए ॥ २ ॥ अहोणंमए इहिर ससाय गुरुएणं जोगासंसगिद्धेणं णोविसुद्धेचरित्ते फासिए ॥ ३ ॥ इच्चेएहिं तिहि ठाणेहिं देवे चइस्सामीति जाणइ विमणाज्जरणाइं णिप्पज्जाइं पासित्ता कप्परुक्खगंमिलायमाणंपासित्ता अण्णोतेयलेस्सं परिहायमा

ने प्रतिबंधे अतृप्तपणे परलोकथी पराङ्मुख उपराठैथकै विषयतृष्णायेकरी घणोकाललगि चारित्रनो पर्यायनपाल्यो मोहोदीक्षालीधी ॥ अहो वली मे रिद्धिने रसने साताने गारवेकरी जोगनीआसामा गृध्रपणे शुद्धचारित्र फरस्युंनही एतीनथानकै पश्चात्तापकरे ॥ त्रिणकारणे देवता इमजाणे हुं इहा थी चवस्युं तेकहेळै पोताना विमान आजरण निःप्रज्ञा कांतिरहित देखीनेजाणें । हुंचवीस कल्पवृक्षनें स्नानकमलाणा देखीने । पोतानी तेजोले

मातुरीज आर्त्तवं पितुः शुक्र स्तत्तथाविधं किमपिविलीनाना मतिविलीन स्तयो रीजः शुक्रयो रुभयं हय तदुभयं तच्चतत् संसृष्टं संश्लिष्टं तिचेवा परस्पर  
मेकीभूतमित्यर्थः तदुभयसंसृष्टं तदुभयसंश्लिष्टं वा एवं लक्षणो य आहार स्तस्य गर्भवासकालस्य प्रथमता तत्रप्रथमता तस्यां प्रथमसमयइत्यर्थः सप्राहर्त्तव्यो  
ऽभ्यवहार्यो भविष्यतीति द्वितीयं तथा कलमलीजठरद्रव्यसमूहः सएव जंवालः कर्दमो यस्यांसा तथा तस्या मतएवा शुचिकायां उद्देजनीयायां उद्देगकारि  
ण्या श्रीमाया भयानिकायां गर्भएव वसति स्तस्या वस्तव्य मितिद्वितीयं अचगाथेभवतः देवाविदेवलोए दिव्याभरणाणुरजियसरीरा जपरिवडंतितत्तो

णंजाणिता । इच्चेएहिंतिहिंठाणेहिं देवे उद्देगमागच्छेज्जा तंजहा अहोणं मए इमानं एयारूवानं दिव्वाणं  
देवहीनं दिव्वाणं देवजुईनं दिव्वाणं देवाणुजावानं पत्तानं लछानं अन्निसमस्सागयानं चवियव्वं नविस्सइ ॥ १ ॥  
अहोणमए माउनंयं पिउसुक्कं तंतदुजयसिठं तप्पढमयाए आहारो आहारेयव्वो नविस्सइ ॥ २ ॥ अहोणंमए  
कलमलजंवालाए असुईए उद्देयणिताए जीमाएगप्पवसहीए वसियव्वं नविस्सइ ॥ ३ ॥ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं

श्याहीन पांमती जाणीने एतीन कारणेकरीने ॥ त्रिणयानकै देवता देवलोकमां उद्देगशोकपामें तेकहैछे । अहोमें आप्रत्यक्ष एहवी मोटी दिव्य  
देवतानी रिद्धि दिव्यदेवतानीदुष्टति तेज दिव्यदेवतानी प्रजावलाधोछे पाप्मोछे विशेषथी पाप्मोछुं तेमूंकीने अववुंथास्ये इमजाणी उद्देगपामे ॥  
अहोमें मातानुं रुधिर पितानुं शुक्रवीर्य ते बे एकठाथया तेप्रथम उपजती बेलाआहार खावोथास्ये अशुचि आहारथास्ये इमउद्देगपामे बली अहो  
मांहरे कलमल तेहीजरूप जवाल तेकर्मछे जिहा अशुचि अपवित्र उद्देगकारी जीमबीहामणी एहवी गर्जनीवसती मांहि वसवुंथास्ये एतीन थानकै

तंदुक्खदारुणंतेसिं ॥ १ ॥ तंसुरविमाणविहव चितियचवणंचदेवलोगाओ अइवलियचियजंनवि फुट्टइसयसकरंहियं ॥ २ ॥ इच्चैएहीत्यादि ॥ निगमनं अथ देववक्तव्यतानन्तर तदाश्रयविमानवक्तव्यमाह ॥ तिसंठिएत्यादि ॥ सूत्रत्रय स्फुटमेव केवलत्रौणि सस्थितानि संस्थानानि येषातानि त्रिभिर्वाप्रकारैस्सस्थिता नित्रिसंस्थितानि ॥ तत्थणंति ॥ तेषु मध्ये ॥ पुक्खरकस्सियत्ति ॥ पुष्करकर्णिका पद्ममध्यभागः साहि वृत्ता समोपरिभागाच भवति सर्वतइति दिच्चु समता दिति विदिच्चु ॥ सघाडयति ॥ त्रिकोणो जलजफलविशेषः एकत एकस्यां दिशि यस्यां वृत्तविमानमित्यर्थः ॥ अक्खाडगो ॥ चतुरस्रः प्रतीतएव वेदिका सुडप्राकारलक्षणा एतानिचैव क्रमाण्येवावलिकाप्रविष्टानि भवति पुष्पावकीर्णानि त्वन्यथापीति भवन्तिचात्रगाथाः सव्वेसुपत्थडेसु मज्जेवट्ठअणतरतसं

तिसंठिया विमाणा प० तं० वहा तंसा चउरंसा । तत्थणंजेते वहविमाणा तेणंपुक्खरकस्सियासंठाणसंठिया सव्वजुसमंतापागारपरिस्सिक्ता एगदुवारा पन्नत्ता । तत्थणंजेते तंस विमाणा ते सिंघाळगसंठाणसंठिया दुहजुपागारपरिस्सिक्ता एगजुवेइयापरिस्सिक्ता तिदुवारा प० । तत्थणं जेते चउरंसविमाणा तेणंअस्काळ

देवता उद्देगपामे ॥ तीनसंस्थानना आकारनां विमानकह्या तेकहैछे । वाटला कमलनी कर्णिकाने आकारे त्रिखोणा संघाडाने आकारे चोखूणा । तेहनां जे वाटला विमानछे तेपुष्करकर्णिका तेकमलनो मध्यजाग तेसंस्थितरहियाछे तेविमान सगला चोफेर प्राकारकोट सहितछे एकद्वार वारणाना कहि या । तिहां जे त्रिखोणिया विमानछे तेविमान संघाडाने संस्थाने संस्थितछे बेपासे प्राकार कोटसहितछे एकपासे वेदिकाये सहित छे तीनद्वार तेहने कहिया । तिहा जेचउरंस विमानछे तेसर्वे अखाडो चउरंसहोइ तेहने संस्थाने संस्थितछे सबदिशें सघले वेदिकाये परिक्षिप्त चार वारणा



एयंतरचउरंसं पुणोविवटं पुणोतंसं ॥ १ ॥ वटं वटसुवरिं तंसंतं सस्यउपरेहोइ चउरंसेचउरंसं उहुंतुविमाणसेढीओ ॥ २ ॥ वटं वलयगंपिव तंसंसिंघांडगंपिव  
 विमाणं चउरसविमाणपिय अक्खाडगसंठियं भणियं ॥ ३ ॥ सव्वेवटविमाणा एगदुवाराहवंतिविन्नेया तिवियतसविमाणा चत्तारियहीतिचउरसे ॥ ४ ॥  
 पागारपरिक्खित्ता वटविमाणाहवतिसव्वेवि चउरसविमाणणं चउहिसिंवेइयाहोइ ॥ ५ ॥ जत्तोवटविमाण तत्तोतसस्यवेइयाहोइ पागारीवोधव्वो अवसेसे  
 हित्तुपासेहिं ॥ ६ ॥ आवलियासुविमाणा वट्ठातसातहेवचउरसा पुप्फावगणियापुण अणेगविहरूवसंठाणत्ति ॥ ७ ॥ प्रतिष्ठान सूत्रस्येयं विभजना घणउ  
 दहिपइठिया सुरभवणाहीतिदोसुकप्पेसु तिसुवाउपइठिया तदुभयसुपइठियातीसु तेणपरंउवरिमगा आगासंतरपइठियासव्वेत्ति ॥ १ ॥ अवस्थितानि  
 शास्त्रतानिवैक्रियाणि भोगाद्यर्थं निष्पादितानि यतो मिहितं भगवत्यां जाहेण भते सक्के देविदे देवराया दिव्वाइ भोगभोगाइं भुंजिउकामे भवइ से कह  
 मियाणि पकरेइ गोयमा ताहेचणं से सक्के देविदे देवराया एगं महं नेमिपडिरूवगं विउव्वइ [नेमिरिति चक्रधारा तद्वहत्तं विमानमित्यर्थः] एग जोयण

गसंठाणसंठिया सव्वजंसमंतावेइयापरिक्खित्ता चउदुवारापन्नत्ता । तिपइठियाविमाणा पस्यत्ता तंजहा घणो  
 दहिपइठिया घणवायपइठिया उवासंतरपइठिया । तिविहाविमाणा पस्यत्ता तंजहा इवठिया वेउट्टिया

तेहने कहिया ॥ त्रिणने आधारे विमान प्रतिष्ठित रहियाछे तेकहैछे । पहिला बे देवलोकना विमान घनोदधिने आधारेछे तीजा चोथा देवलो  
 कना विमान घनघातने आधारेछे पाचमां छठा सातमां आठमा देवलोकना विमान घनोदधि घनघात ए बेने आधारे छे । नोमाथी ऊपरना वि  
 मान आकाशने आधारछे ॥ त्रिण प्रकारे विमान कहिया तेकहैछे । अवस्थित ज्ञाश्रता । वैक्रिय ते देवागनासुं जोगकरवाने अर्थ नवीन उपजावै । वली

सयसहस्रं आयामविकल्भेण मित्यादि यावत् पासायवडिंसए सयणिज्जे तत्थणं से सक्के देविंदे देवराया अड्डहिं अगमहिंसीहिं सपरिवाराहिं दीहियअणि एहिणट्टाणीएणय गधव्वाणीएणय सड्ढिं महयाणट्टजावदिब्बाइंभोगभोगाइ भुजमाणेविहरइत्ति परियाणतिर्यग्लोकावतरणादि तत्प्रयोजन येषान्तानि परियाणिकानि पालकपुष्पकादौनि वक्ष्यमाणानीति पूर्वतरसूत्रेषु देवा उक्ता अधुनावैक्रियादिसाधर्म्यान्मारका निरूपयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सष्ट नार का दर्शनतो निरूपिताः शेषाअपि जीवा एवविधा एवेत्यतिदेशतः शेषानाह ॥ एवमित्यादि ॥ गतार्थं नवर ॥ विगलिदियवज्जति ॥ नारकवत् दडक स्त्रि धा वाच्यः विकलेन्द्रियान् वर्जयित्वा यतः पृथिव्यादीना मिथ्यात्वमेव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणान्तु न मिश्रमिति त्रिविधदर्शना श्व दुर्गतिसुगतियोगात् दुर्गताः सुगता श्व भवन्तीति दुर्गत्यादिदर्शनाय सूत्रचतुष्टयमाह ॥ तत्रोदित्यादि ॥ व्यक्त पर दुष्टागतिर्दुर्गतिः मनुष्याणांदुर्गति विवक्षयैव तत् सुगते रथभिधास्यमा

**परिजाणिया । तिविहा णेरइया पस्सत्ता तंजहा सम्मादिठ्ठी मिच्छादिठ्ठी सम्मामिच्छादिठ्ठी एवंविगलिंदिय  
वज्जं जाववेमाणियाणं । तनु दुग्गईनु पन्नत्तानु तंजहा णेरइयदुग्गई तिरक्कजोणियदुग्गई मणुस्सदुग्गई ।**

प्रयोजन ते जावाआवाने अर्थे पालक विमान प्रमुखबणावै ॥ त्रिणप्रकारे नारकी कहिया तेकहैछे । वैक्रियादिके सरीखाई माटे नारकी कहिया एक समकितदृष्टी बीजो मिथ्यादृष्टी त्रीजा सम्यग् मिथ्यादृष्टी काइक समकित काइक मिथ्यात्व इम विकलेन्द्री तांइ वर्जने यावत् वैमानिकतांइ चौबीस दडकै ए तीन बोलजाणवा ॥ त्रिण दुर्गति मांठीगति कही तेकहैछे । नरकनी दुर्गति एक तिर्यचयोनिनी दुर्गति बे मनुष्यनी दुर्गति चंक्राल नी त्रण ॥ त्रिण सुगतिकही तेकहैछे । मुक्ति तेसुगति एक देवतानीगति तेसुगति बे मनुष्यनी सुगति उत्तम कुलादिक त्रण ॥ त्रिण दुर्गतिगया कहिया

नत्वात् दुर्गता दुःस्थाः सुस्थाः सुगताः सिद्धादिसुगताश्च तपस्विनः संतो भवन्तीति तत्कर्त्तव्यपरिहर्त्तव्यविशेषमाह ॥ चउत्थेत्यादि ॥ सूत्राणि चतुर्दश व्यक्ता  
नि केवल एक पूर्वदिने द्वे उपवासदिने चतुर्थपारणकदिने भक्तं भोजन परिहरतो यत्र तपसि त चतुर्थभक्त तद्यस्यास्ति स चतुर्थभक्तिक स्तस्य एवमन्य  
त्रापि शब्दव्यपत्तिमात्र मेतत् प्रवृत्तिस्तु चतुर्थभक्तादि शब्दाना मेकाद्युपवासादिष्विति भिन्नशैल धर्म स्तस्माधुकारितावायस्य सभिस्तु भिन्नत्तिवा च  
धमिति भिस्तु स्तस्य पानकानि पानाहारा उत्स्वेदेन निवृत्त मुत्स्वेदिमं येन ब्रौह्मादि पिष्ट सुराद्यर्थं उत्स्वेद्यते तथा ससेकेन निवृत्तमिति ससेकिम अर  
णिकादिपत्रशाक मुक्ताल्य येन शीतलजलेन संसिच्यते तदिति तंदुलधावन प्रतीतमेव तिलोदकादि तत्तत्रचालनजल नवरं तुषोदक ब्रौह्मदक २ आया

तनु सुग्गइनु पस्सत्तानु तंजहा सिद्धिसोग्गई देवसोग्गई मणुस्ससोग्गई । तनुदुग्गया पस्सत्ता तंजहा णेरइ  
यदुग्गया तिरिक्कजोणियदुग्गया मणुस्सदुग्गया । तनुसुग्गया पन्नत्ता तंजहा सिद्धसुग्गया देवसुग्गया मणु  
स्ससुग्गया । चउत्थजत्तियस्सणं जिक्कुरस्स कप्पंति तनुपाणगाइ पणिगाहित्तए तजहा उस्सेइमे ससेइमे

तेकहैछे । नरकमां गयो ते दुर्गतिगयो एक तिर्यंचनी योनिमांगयो दुर्गतेगयो बे मनुष्य चाकाल प्रमुखमांगयो तेदुर्गतिगयो त्रण ॥ अथवा दुखीया  
कहिये ॥ त्रिण सुखीया कहिया तेकहैछे । सिद्ध मुक्तसदैव सुखीया एक देवता सुखीया बे पुण्यवंत मनुष्य सुखीया त्रण ॥ चतुर्थ जत्त एक उत्तरपा  
रणे एक पारणे जत्तमुंके बेजत्त उपवासना एव चतुर्थ जत्तना करणहार साधुने त्रिण जातिना पाणी लेवा ते कहैछे । उत्स्वेदिम ते ब्रौही प्रमुखनो  
पिष्ट लोट मदिरार्थ । पत्र शाक वाफ्तीने शीतलजलथी सींचैछे तेसस्वेदिम । चोखानुं धोवण ॥ पष्ठजत्तना करणहारने सूफे कल्पे त्रिणि पाणी

मक मवश्चावणं सौवीरक काञ्जिकं शुद्धं विकट मुष्णोदकं ३ उपहृत मुपहितं भोजनस्थाने ढीकितं भक्तमितिभावः फलिकं प्रहेणकादि १ तच्च तदुपहृतं चेतिफलिकोपहृत अवगृहीताभिधानपंचमपिडेपणाविषयभूतमिति यदाह व्यवहारभाष्ये फलियंपहेणगाइ वजणभक्खेहिवाविरहियतु भोत्तुमणस्सावहिय पंचमपिडेसणाएसत्ति ॥ १ ॥ तथा शुद्धमलेपकृतं शुद्धोदनञ्च तदुपहृतचेति शुद्धोपहृत एतच्चा ल्पलेपाभिधानचतुर्थेपणाविषयभूतमिति तथा ससृष्टनाम भोक्तु कामेन गृहीतं कूरादौ क्षिप्तेहस्तः क्षिप्तो न तावन्मुखे क्षिपति तच्च लेपालेपकरणस्वभावमिति तदेवभूत मुपहृत ससृष्टोपहृत मिद चतुर्थेपणात्वेन भजनीय लेपालेपकृतादिर्पत्वा दस्येति अत्रगाथा शुद्धचअलेपकडं अहवणसुद्धोदणोभवेसुद्ध ससठ्ठाउत्त [ भोक्तुमारब्धमित्यर्थः ] लेवाडमलेवडंवावित्ति ॥ १ ॥ इहच त्रय एकद्वित्रिसयोगैः सप्ताभिग्रहवतःसाधवो भवन्तीति अवगृहीतनामयेनकेनचि व्यकारेणदायकेना त्तं भक्तादि यदिति भक्तं चकाराः समुच्चयार्थाः

चाउलधोवणे । ठठन्नत्तियस्सणं निरकुस्स कप्पंति तन्न पाणगाइं पफिगाहित्तए तंजहा तिलोदए तुसोदए जवोदए । अष्टमन्नत्तियस्सणं निरकुस्स कप्पंति तन्नपाणगाइं पफिगाहित्तए तं० आयामए सौवीरए सुद्ध वियठे । तिविहे उवहठे पप्पत्ते तजहा फलिहउवहठे सुद्धोवहठे ससठोवहठे । तिविहे उगहिए पप्पत्ते

लेवा तेकहैछे । तिलनुं धोवण । वीहीनुं पाणी । जवनुं धोवण ॥ अष्टमन्नक्तना करणहार साधुने सूफे त्रण पाणीलेवा तेकहैछे । ओसामण कोजीनुंपाणी शुद्ध विकट गरमपाणी ॥ त्रणप्रकारे उपहृतकहिये तेकहैछे । पीसवाने काढयो तेहवे साधुआव्यो अने आपे जे ओजनने अर्थे आगया आहारने । शुद्धओदन हाथनखरफाये तेहवुं आगयुं तेअजिगूहवतसाधुने कल्पे । जिमनारे गृहियोमाहि हाथघाल्यो तेसंसृष्ट ॥ त्रणप्रकारे अवग

अवगृह्णाति आदत्ते हस्तेन दायकं स्तद्वगृहीतं मेतच्च षष्ठीपिडेषणेति एवंच वृद्धव्याख्यापरिवेषकः पिठकायाः कूरं गृहीत्वा यस्मै दातुकामस्तज्ञाज  
 ने क्षेप्तुं मुपस्थितं स्तेनच भणितं मादेहि अत्रावसरे प्राप्तेन साधुना धर्मलाभित ततः परिवेषको भणति प्रसारय साधोपात्रं ततः साधुना प्रसारिते पा  
 त्रे क्षिप्तं मोदनं इहच सयत्प्रयोजने गृहस्थेन हस्तएव परिवर्त्तितो नान्यत् गमनादि कृतमिति जघन्य माहृत जातमिति इहच व्यवहारभाष्यश्लोकः  
 भुजमाणस्सउक्खित पडिसिद्धचतेणओ जहन्तोवहडतंतु हत्थस्सपरियत्तणेत्ति ॥ १ ॥ तथा यच्च परिवेषकः स्थाना दविचलन् सहरति भक्तभाजनां झोजन  
 भाजनेषु क्षिपति तच्चा वगृहीतमिति प्रक्रमः श्लोकोत्र अहसाहारमाणत्वं वदंतो [ परिवेषयन्नित्यर्थः ] जोडदायओ दलेज्जाचलिओतत्तो क्ख्हाएसावि  
 एसणत्ति ॥ १ ॥ तथा यच्च भक्त मास्यके पिठरादिमुखे क्षिपति तच्चा वगृहीतमिति एवचात्र वृद्धव्याख्या कूरं मवलहादननिमित्तं कलिजादि भाजने  
 विशालोत्तानरूपे क्षिप्तं ततो भक्तिकेभ्यो दत्तं ततो भुक्तशेषं यत् भूयः पिठरके प्रकाशमुखे क्षिपति दद्यात् परिवेषयतीतिवा प्रकाशमुखे भाजने तते  
 ततोय मवगृहीतं श्लोकोत्र भुत्तसेसतुजभूओ बुभंतोपिठरोदये संवट्ठतीचअन्नस्स आसगसिपएसणत्ति ॥ १ ॥ नतु आस्येमुखे यत् प्रक्षिपतीति मुख्यर्थे स  
 ति किं पिठरादिमुखे इतिव्याख्या यतश्चलुच्यते अस्य प्रक्षेपव्याख्यानं मयुक्तमिति जुगुप्साभावादिति आहच पक्खेवएदुगुच्छा आएसोक्कुडमुहार्इसुत्ति

तंजहा जंचनुगिरहइ जंचसाहरइ जंचआसगंसि पस्सिक्खइ ।

हीतं कोईककारणं दायकं आण्यो घणांजस्तमाथी जत्त । जेदेनारहाथे करी आपै । जेकूरादिक प्रीसवानीमां आण्युं आपै । जे एकपिठ मुख  
 मा घाल्यो एहवे साधुआवी धर्मलाभदीधो तेआपै बीजीबार हाथघाल्योनथी ॥ आहारना अधिकारमाटे अणोदरीनुं कहैछै । अणप्रकारे अ

अवम मून मुदरं यस्य सोऽवमोदरः अवम चोदर मवमोदरं तद्भावो ऽवमोदरता प्राकृतत्वात् ॥ ओमोदरियति ॥ अवमोदरस्य वा करण मवमोदरिका व्युत्प  
त्तिरेवेय मस्य प्रकृति स्तूनतामात्रे तत्र प्रथमा जिनकल्पिकादौ ना मेव न पुनरग्येपा शास्त्रोयोपध्यभावेहि समग्रस्य भावादिति अतिरिक्ता ग्रहणता  
वो नोदरते त्युक्तच जगद्द्वयवयारे उवगरणतसिहोद्वयवगरणं अद्वरेगअहिगरणं अजओयजयपरिहरंतोअ ॥ १ ॥ यतश्च यकङ्गुजानो भवतीत्यर्थः भक्त  
पानावमोदरता पुन रात्मोयात्मोयाहारमानपरित्यागतो वेदितव्या इत्युक्तच वत्तौस्सकिरकवला आहारोक्कुच्छिपूरओभणिओ पुरिसस्समहिलियाए  
अट्ठावोसभवेकवला ॥ १ ॥ कवलाण्यपरिमाणं कुक्कुडिअङ्गपमाणमेत्तत्तु जोवाअविगियवयणो वयणमिक्कुहेज्जवोसत्यांति ॥ २ ॥ २ इयचाष्ट १ डादश २ षोडश  
३ चतुर्विंशत्येकत्रिंशदतैः कवलैः कमेणा व्याहारादिसज्जिता पञ्चविधा भवति उक्तच अण्णाहार १ अवड्ढा २ दुभाग ३ पत्ता ४ तहेवकिचूणा ५ अट्ठदुवा  
लस ३ सोलसचउवोस ४ तहेक्कतौसायति ५ ॥ १ ॥ एवमनेना नुसारेण पानेपि वाच्या भगवत्या मप्युक्त वत्तौसकुक्कुडिअङ्गपमाणमित्ते कवले आहारमा  
हारमाणे पमाणपत्तेतिवत्तव्वसिया एत्तोएगेणाविकवलेण जणग आहारेमाणे समणेनिग्गथे नोपागामरसभोइत्तिपत्तव्वंसियंति भावेनांदरता पुनः क्रोधा

तिविहानु मोयरियाणु पस्सत्तानु तजहा उवकरणोमोयरिया नत्तपाणोमोयरिया ज्ञावोमोयरिया । उवग  
रणोमोयरिया तिविहा पस्सत्ता तंजहा एगेवत्थे एगेपाथे चियत्तोवहिसाइज्जणया । तनुंठाणा णिग्गंथाणवा

ओदरी तेकहैछै । उपकरणनी अओदरी जिनकल्पीनेथाय बीजानेनथी । ज्ञात पांणीनी अओदरी वत्तीसकवलमाथी ओछो आहार लेवो । ज्ञावथी  
अओदरी क्रोधादिकनो त्याग ॥ उपकरणनी अओदरी त्रणप्रकारेकही तेकहैछै । एक वस्त्रराखै । एक पात्रराखै । वियत ते संयमी तेहनी उप

दित्यागः उतां च कोहाङ्गमणदिणं वाओजिणवयणभावणाओय भावेणोनीदरिया पन्नत्तावीयरोगेहिंति ॥ ६ ॥ उपकरणवमोदरिकायाः भेदानाह ॥ उ  
यत्तरणेत्यादि ॥ एक वस्त्रं जिनकल्पिकादे रेवेवं पात्रमपि एग पायजिणकपियाणमितिवचनादिति तथा चियत्तेणसयमोपकारकोयमिति प्रीत्या मलिना  
दायप्रीत्यकरणेन यावि य त्तस्यवा संयमिनां सयमतस्य उपधे रजोहरणादिकस्य ॥ साङ्गज्जणयत्ति ॥ सेवा विद्यत्तोवहिसाङ्गज्जणयत्तिविद्यत्तेणेत्ति ॥ प्रागुक्तमेत  
पिपर्ययभेदान् सकलानाह ॥ तओइत्यादि ॥ स्पष्टंकिन्तु अहिताय अपथ्याय असुखाय दुःखाय अन्नमाय अयुक्तत्वाय अनिश्चयसाया मोक्षाया नानुगामि  
कत्वाय न शुभानुबंधायेति कूजनता आर्त्तस्वरकरण कर्त्तरणता शय्योपध्यादिदोषोद्भावनगर्भप्रलपनं अपध्यानता आर्त्तरोद्रध्यायित्वमिति ८ उक्तवि

णिग्गंथीणवा अहियाए असुहाए अस्कमाए अणिरुसेयसाए अणानुगामियत्ताए नवइ तंजहा कूअणया  
कक्करणया अवज्जाणया । तत्तंठाणा णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा हियाए सुहाए स्कमाए णिरुसेयसाए अ  
णुगामियत्ताए नवइ तंजहा अकूयणया अकक्करणया अणवज्जाणया । तत्तंसत्ता पस्सत्ता तजहा मायासत्ते

धि रजोहरण मुहपत्तीनुं राखवुं ॥ यह पूर्व कहिया तेहीज विपरीत कहैछै । अण थानक साधुने तथा साध्वीने अहित मांठा असुखने काजे  
होय अन्नमाने काजेहोय अमोक्षने काजेहोय संसारनां पारपामिधाने नथाय तेकहैछै । आर्त्तस्वरे रोवू । करकरवू शय्यामांठी उपधिमांठी एम  
दोष काढीने । खोटुं ध्यान ध्याववुं ॥ अण थानक साधु तथा साध्वीने हितना कारण सुखना कारण क्षमाना कारण मोक्षनां कारण संसार  
ना पारने आपणहार थाय तेकहैछै । दुख आव्यां आर्त्तस्वरे रोवैनथी । शज्जा उपधिमा दोषकाढी गरेनथी । आर्त्तरोद्रध्यान करैनथी ॥

पर्ययसूत्र व्यक्त' ८ निर्ग्रन्थाना मेव परिहर्तव्यं त्रयमाह ॥ तत्रोद्भूत्यादि ॥ शल्यते बाध्यते अनेनेति शल्यं द्रव्यत स्तोमरादि भावतस्तु इदं त्रिविध माया निष्कृतिः सैवशल्यं मायाशल्य एव सर्वत्र नवरं नितरां दायते लूयते मोचफल मनिद्यवद्वाचर्यादिसाध्यं कुशलकर्म्मकल्पतरुवन मनेन देवर्ष्यादिप्रार्थनपरिणाम निश्चिताशनेति निदान मिथ्याविपरीत दर्शन मिथ्यादर्शनमिति ॥ १० ॥ निर्ग्रन्थानामेव लब्धिविशेषस्य कारणत्रयमाह ॥ तिहीत्यादि ॥ संक्षिप्तालघुकृता विपुलापि विस्तीर्णापिसती अन्यथादित्यविश्ववत् दुर्दर्शः स्यादिति तेजोलेश्या तपोविभूतिज तेजस्वित्व तेजसशरीरपरिणतिरूपं महाज्वालाकल्प येन ससक्षिप्तविपुलतेजोलेश्यः आतापनानां शीतादिभिः शरीरस्य सतापनानां भाव आतापनता शीतातपादेः सहनमित्यर्थः तथा चांत्याः क्रोधनिग्रहेण क्षमा मर्षणं नत्वशक्ततयेति चांति क्षमा तथा आपानकेन पारणककाला दन्यत्र तपः कर्म्मणा षष्ठादिनेति अभिधीयतेच भगवत्यां जेणगोसाली एगाएसनहाएकुमासपिंडियाएणेणयवियडामएण छठ्ठछठ्ठेण अणिखित्तेणतवोकम्मेणउडुंवाहाओपगिज्झियपगिज्झियसूराभिमुहेआयावणभूसीएआयावेमाणेविहरइ सेणअंतोक्कणहमासाणंसखित्तविपुलतेयलेस्सेभवइत्ति ११ ॥ तेमासियमित्यादि ॥ भिक्षुप्रतिमाः साधो रभिग्रहविशेषा स्ताश्च द्वादश तत्रै कमाः

णियाणसल्ले मिच्छादंसणसल्ले । तिहिंठाणेहिं समणेणिग्गंथे संखित्तविउलतेउलेस्से जवइ तंजहा आयाव

वली साधुनै त्रण छांडवा तेकहैछै । त्रण शल्य कहिया तेकहैछै । माया शल्य कपट तेहीजशल्य । देवरिद्धि पाप्मिवाने नियाणुं करिवुं । मिथ्यात्वशल्य एह त्रण छांमिवा ॥ त्रण थानकै साधु श्रमण सत्तेपे लघुकरे मोटी पणि तेजोलेश्या थाय तेकहैछै । आतापना शीत तापादि सहवाने तेजोलेश्यायै आतापना नथाय । क्षमा करवाने शक्तिछत्ते तेक्षमा । पारणाना कालथी अन्यकाल वेलो तेलो इत्यादि तपसां तेजोलेश्या



शिव्यादयो मासीत्तराः सप्ततिस्तः सप्तरात्रिदिवप्रमाणाः प्रत्येकं एकाहोरात्रिकी एका एकरात्रिकी उक्ता मासार्द्धसप्तता ७ पटमा १ यितरैश्च २  
सत्तराद्रदिणा १० अत्तराद्र ११ एगरार्द्ध १२ भिवलुण्डिमाणवारसंगति ॥ १ ॥ अग मन् भावार्थः पडिवज्जद्रयाग्री संघयणधिर्दुलुग्रीमहासत्तो पडिमा  
ग्रीभापियपासयांगुरुणाप्रणवाग्री ॥ १ ॥ गच्छेषियनिग्माग्री जापुष्पादसभजेशंपद्मा नवमसावप्रयवत्तू ह्रीद्रज्जग्रीसुयाभिगमी ॥ २ ॥ योसइवत्तदे  
ह्री उवसग्नसत्तो जहेज्जिणकाप्पो एसणप्राभिगहिद्या भत्तंचप्रखेवउतस्स ॥ २ ॥ गच्छाविणिगलगित्ता पडिवज्जद्रमासियमहापडिमं दत्तेगभीयणस्स पाण  
स्सविण्णजामासं ॥ ४ ॥ पच्छागच्छमुवेई एवदुमासीतिमासिजासत्त नवरंदत्तिविज्जुही जासत्तउसत्तमासीए ॥ ५ ॥ तत्तोयप्रइमीखलु उवद्रइहपठमस  
त्तराद्रंदी तोएचउलवउत्थेणं अपाणएणंप्रचविसेसी ॥ ६ ॥ तथाचागमः पठमसत्तराद्रंदियण भिवलुपडिमं पडिवज्जस्स अणगारस्स कण्णस्स से चउत्थे  
णं भत्तेणं अपाणएणं वडियागामस्स चेत्यादि उक्ताणगपासणी नेसज्जीयाविठाणठाइत्ता इणउवसगेघोरे दिव्वाइसइद्रअविक्कपो ॥ १ ॥ दोशाविणरिसत्ति  
य वडियागामाइयाणनवरंतं उक्कउलगंउसाइ उक्कायतिउक्काइत्ता ॥ २ ॥ तथाएवियएवं नवरंठाणतुतस्सगोदीही वीरासणमहवावी ठाएज्जावंपंख  
ज्जापो ॥ ३ ॥ एमेवअहोराइ उहंभत्तप्रपाणगंनवर गामनगराणवडिया वग्घारियपाणिण्ठाणं ॥ ४ ॥ एमेवएगरार्द्धअहंभत्तेणठाणवाहिराग्री ऐसिंपद्मा  
रगए अणमिसनवणेगदिहोए ॥ ५ ॥ साइइदोविपाए वग्घारियपाणिठायईठाण वग्घारि संयियभुग्री सेसदसासुजत्ताभणियति ॥ ६ ॥ तत्र विमासिजी ह

णयाणु खंतिखमाणु शुपाणगेणंतवोकम्मेणं । तेमासियशांजिरकुपफिमं पफिवत्तस्स शुणगारस्स कप्पंति

નકરૈ ॥ ત્રણ માસની જિતુપ્રતિમા અગ્નિગૃહપ્રતિ પહિવણ્યો જો પ્રણાગાર તેહનેં કલપે સૂઝે ત્રણદાતી ષોજનની લેયાનેં ત્રણદાત પાંશીની કલપે સૂઝે ॥

तीया ता प्रतिपन्नस्या श्रितस्य दत्तिः सकृत् प्रक्षेपलक्षणेति १२ एकरात्रिकी द्वादशी तां सम्य गनुपालयत' उन्माद चित्तविभ्रमो रोगः कुष्टादि रातंकः  
शूलविशूचिकादिः सद्योघातो सच सचेति रोगातक ॥ पाउणेज्जत्ति ॥ प्राप्नुया इमां च्छुतचारित्रलक्षणात् भ्रमे त्वस्यक्तस्यापि हान्येति उन्मादरोग धर्मभ्र

तनुदत्तीनं नोयणस्स पङ्गिगाहित्तए तनुपाणगरस्स एकराइय निरुपफिमं सम्ममणुपाले माणस्स अणगार  
स्स इमे तनुठाणा अहियाए असुजाए अखमाए अणस्सेयसाए अणगामियत्ताए ज्वंति तंजहा उन्मा  
यवालत्तेजा दीहकालियंवा रोयातकंपाउणेजा केवलपन्नत्तानुधम्मालंनसेजा । एकराइयसंनिरुपफिमं  
सम्मंअणुपालेमाणस्स अणगारस्स तनु ठाणाहियाए सुजाए खमाए णस्सेयसाए अणगामियत्ताए ज्वंति  
तंजहा उहिणाणेवासेसमुपज्जेजा मणपज्जवनाणेवासेसमुपज्जेजा केवलनाणेवासेसमुपज्जेजा जंबुद्दीवेदीवे

एकरात्रिनी जित्तुप्रतिमाने सम्यक् पालता साधुने एह त्रणथानक अहितनेअर्थ थाय असुखने अर्थ अक्षमाने अर्थ अनिश्रेयसने अमोक्षने संसारना  
पारने नापे ते कहैछे । उन्मादने पामें चित्तविभ्रमथाय । घणाकालनां कुष्टादि रोगातंकथाय । केवलि ज्ञापित धर्मथी पणि जूटथाय पडै । एह  
पहली पडिमा पालतें देवादि उपसर्ग उपजै तिवारे त्रणबोलथाय घणूधीरहोय तेहीज पालीसकै ॥ वली तिम एकरात्रिनी प्रतिमा जलीरीते  
पाले तेसाधुने त्रणथानक हितार्थथाय सुखार्थथाय क्षमार्थथाय मोक्षार्थथाय संसारनु पारआपे ते कहैछे । अवधिनाण उपजै । मनपर्यवनाण उप  
जै सहुनां मननां ज्ञावजाणै । पाचमुं केवलनाण उपजै जो धीरथईने पालै तो ॥ ए साधुनी क्रियाकही तेकर्म भूमिमांजहोय । तेवतीकर्म भूमिनु

याः प्रतिमायाः सम्यगननुपालनजन्याः अहिताद्यर्था दुःखार्था भयन्तीति हृदय १३ विपर्ययसूत्रं एतदनुसारतो बोद्धव्यमिति १४ उक्तरूपाणि च साध्वनुष्ठा-  
नानि कर्मभूमिष्वेव भवन्तीति तन्निरूपणायाह ॥ जंबूद्वीवेत्यादि ॥ सूत्राणि साक्षादतिदेशाभ्यां पञ्च सुगमानि चेति उक्ताः कर्मभूमयो ऽथ तद्वतजनधर्मा नि-  
रूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्राण्येकादश कण्ठ्यानि किन्तु त्रिविध दर्शनं शुद्धाशुद्धमिश्रपुञ्जत्रयरूप मिथ्यात्वमोहनीयं तथाविधदर्शनहेतुत्वादिति ॥ १ ॥  
रुचिस्तु तदुदयसम्पाद्य तत्त्वानां अज्ञानं २ प्रयोगः सम्यक्तादिपूर्वो जनः प्रभृतिव्यापारइति अथवा सम्यगादिप्रयोग उचितानुचितोभयात्मक औषधादिव्या-

तत्कर्मजूमोक्षं पन्नत्तत्तं तंजहा जरहे एरवए महाविदेहे । एवंधायइसंफेदीवे पुरच्छिमद्वे जावपुरकरवर  
दीवहपच्छिमद्वे । तिविहेदंसणे पन्नत्ते सम्मदंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छदंसणे । तिविहारुई पणत्ता तंजहा  
सम्मरुई मिच्छरुई सम्मामिच्छरुई । तिविहे पनुगे पन्नत्ते तंजहा सम्मपनुगे मिच्छपनुगे सम्मामिच्छपनुगे

स्वरूप कहैछे । जंबूद्वीपनामं द्वीपमां त्रिणकर्मजूमिकही तेकहैछे । जरतक्षेत्र । ऐरवतक्षेत्र । महाविदेहक्षेत्र । इमधातकीखंड द्वीपे पूर्वार्द्धने  
विषे । यावत् पुष्करार्द्ध द्वीपे पश्चिमार्द्ध एहीज तीनकर्म जूमिनां क्षेत्रछे । एवं पनरेकर्मजूमिक्षेत्र थया ॥ त्रिणप्रकारे दर्शनकहियो तेकहैछे ।  
सम्यग्दर्शन जे शुद्ध तत्त्वनुं जाणवुं । मिथ्यादर्शन जे खोटा तत्त्वनुं सरदहवुं । सम्यग्मिथ्यादर्शन जे शुद्धाशुद्ध मिश्र ॥ त्रिण रुचिमननो स्वज्ञाव  
विशेष तेकहैछे । सम्यक् रुची । मिथ्या रुची । सम्यग्मिथ्या रुची ॥ त्रिणप्रकारे प्रयोग कहिया ते कहैछे । सम्यक्तादि सहित मननो व्यापार  
तेप्रयोग कहिये । समीचीन प्रयोग । मिथ्या प्रयोग । मिश्रप्रयोग जे काईक खोटु काईक साधु ॥ त्रिणप्रकारे व्यापार कहियो तेकहैछे । कार्य

पारवत् व्यवसायो वस्तुनिर्णयइति पुरुषार्थसिद्धार्थमनुष्ठानं वा सच व्यवसायिनां धार्मिकाधार्मिकधार्मिकाधार्मिकाणां ३ संयतासंयतदेश संयतलक्षणानां सम्बन्धित्वा दमेदेनो च्यमान स्तिधा भवतीति सयमासंयमदेशसयमलक्षणविषयभेदा हा व्यवसायो निश्चयः सच प्रत्यक्षा वधिमनःपर्यायकेवललाख्य. प्रत्यया दिन्द्रियानिन्द्रियलक्षणा त्रिमित्ता ज्ञातः प्रात्ययिकः साध्य मसाध्यमग्न्यादिक मनुगच्छति साध्याभावे न भवति यो धूमादिहेतुः सोनुगामी ततो जात मानुगामिक मनुमानं तद्रूपो व्यवसाय आनुगामिकएवेति अथवाप्रत्यक्ष स्वयदर्शनलक्षणः प्रात्ययिकआप्तवचनप्रभवस्तृतीयस्तथैवेति इहलोके भव ऐहलौकिको य इहभवे वर्तमानस्य निश्चयो नुष्ठानवा स ऐहलौकिको व्यवसायइतिभावः यस्तुपरलोकेभविष्यति स पारलौकिकः यस्त्विहपरत्रच स ऐहलौकिकपार

तिविहेववसाये पस्यते तंजहा धम्मिएववसाये अहम्मिएववसाये धम्मियाधम्मिएववसाये । अहवा तिविहे ववसाये पस्यते तंजहा पच्चरके पच्चइए अणुगामिए । अहवा तिविहे ववसाये पस्यते तंजहा इहलोइए परलोइए इहलोयपरलोइए । इहलोइए ववसाये तिविहे पस्यते तजहा लोइए वेइए सामइए । लोइएव

सिद्धिने अर्थ क्रियाकरवी तेव्यापार उदयरूप । धर्म व्यापार साधुनो आचार । अधर्मेनुं व्यापार असंयती आरंजीने । धर्माधर्म व्यापार तेदे शविरति आवकनो ॥ वली त्रण प्रकारे व्यापार कहियो ते कहैछे । प्रत्यक्ष ते अवधि मन पर्यव केवलरूप । प्रत्यय व्यापार इंद्रिय नाणरूप । अनुगामिक व्यापार ते अनुमान व्यवसाय धूमानुसारै अग्नि जाणवी ॥ अथवा वली त्रणप्रकारे व्यापार कहियो ते कहैछे । इहलोकनो व्यापार वर्तमानजेवे पखै आवे । परलोक व्यापार जेपरलोके जोगवे । इहलोक परलोक व्यापार वेजवे जोगवे । इहलोक व्यापार त्रणप्रकारे कहियो

लौकिकइति लौकिकः सामान्यलोकाश्रयो निययो नुष्ठानंवा वेदाश्रितोवैदिकः समयः सांख्यादीनां सिद्धांतस्तदाश्रितस्तु सामायिकः लौकिकादयो व्यवसायाः प्रत्येकत्रिविधा स्तेच प्रतोताएव नवरं अर्थधर्मकामविषयो निर्णयो यथा अर्थस्यमूलनिकृतिःक्षमाच । धर्मस्यदानचदयादमय ॥ कामस्यवित्तचवपुर्वयस । मोक्षस्यसर्वोपरमःक्रियासु ॥ १ ॥ इत्यादिरूपस्तदर्थं मनुष्ठानंवा अर्थादिरेव व्यवसाय उच्यतइति ऋग्वेदाद्याहितो निर्णयो व्यापारीवाऋग्वेदादिरेवेति ज्ञानादीनि सामायिको व्यवसायः स्तत्र ज्ञानव्यवसायएव पर्यायशब्दत्वात्दर्शनमपि अज्ञानलक्षणव्यवसायो व्यवसायांशत्वात् तस्येति प्रतिपादितमेव चारित्रमपि समभावलक्षणो व्यवसायएव बोधस्वभावस्या तनः परिणतिविशेषत्वात् यच्चोच्यते सञ्चरणमणुष्ठाणं विहिपडिसेहाणुगतव्यति तद्वाद्यचारित्रापेक्षमवगतव्यमिति अथवाज्ञानादौ विषये योव्यवसायो बोधो नुष्ठानम्वास विषयभेदा त्रिविधइति सामायिकता चास्य सम्यग्मिथ्याशब्दलाब्धितस्य ज्ञानादित्रयस्य सर्वसमयेष्वपि भावादिति अर्थस्य राजलक्ष्मादे र्योनिरूपायो र्थयोनिः साम प्रियवचनादि दर्णोवधादिरूपः परनिग्रहः भेदो जिगीषितशत्रुवर्गस्य स्नेहा

वसाये तिविहे पन्नत्ते तंजहा अत्ये धम्मे कामे । वेइएववसाए तिविहे पन्नत्ते तंजहा रिउद्येए जजुद्येए सामवेए । सामइए ववसाये तिविहे पन्नत्ते तंजहा णाणे दसणे चरित्ते । तिविहा अत्यजोणी पन्नत्ता तजहा

तेकहैछे । लौकिक व्यवहार राखवुं । वेदाश्रित तेवैदिक । सामायिक ते सिद्धांताश्रित धर्मक्रिया ॥ लौकिक व्यवसाय वस्तुनो निर्णय तेव्यवसाय त्रणप्रकारे कहिये तेकहैछे । अर्थ व्यवसाय द्रव्य कमावुं । धर्म करिवुं । कर्म व्यापार जे विषय व्यापार ॥ वैदिक व्यापार त्रण प्रकारे कहियो तेकहैछे । रिजुर्वेदमां जेकहियो । यजुर्वेदमा जेकहियो । सामवेदमा जेकहियो ॥ सामायिक सिद्धांत व्यापार त्रणप्रकारे । नाण ते तत्व नुं जाणवुं । दर्शन तेसाची श्रद्धा । चारित्र सयम ॥ त्रणप्रकारे अर्थ राजलक्ष्मीनीं योनि तेउत्पत्तीकही । तेकहैछे । साम ते प्रियवचनादि ।

पनयनादि क्वचित्तु दण्डपदत्यागेन प्रदानेन सह तिस्रोर्थयोनयः पठ्यन्ते भवन्ति चात्रश्लोकाः परस्पररोपकाराणां दर्शनं गुणकोर्त्तनसम्बन्धस्य समाख्यानं  
मायत्या.सम्प्रकाशनं ॥ १ ॥ [ अस्मिन्नेवहृते इदं भावयो भविष्यतीत्याशा योजनं मायतिसम्प्रकाशनं मिति ] वाचापेशलयासाधु तवाहमितिचार्ष्येण इति  
सामप्रयोगज्ञैः सामपञ्चविधस्मृतः ॥ २ ॥ वधश्चैवपरिक्लेशो धनस्यहरणतथा इतिदण्डविधानज्ञैर्दण्डोपनिविधः स्मृतः स्नेहरागापनयनं सहर्षोत्पादनत  
था सतर्ज्जनञ्चभेदज्ञैर्भेदस्तुत्रिविधः स्मृतः ॥ ४ ॥ सहर्षः स्पर्द्धासतर्जनं चास्याः स्मन्नित्रविग्रहस्य परित्राणं मत्तोभविष्यतीत्यादिरूपमिति प्रदानलक्षणमिदं यः  
सम्प्राप्तो धनोत्सर्गः उत्तमाधममध्यमः प्रतिदानतथातस्य गृहीतस्यानुमोदनं ॥ ५ ॥ द्रव्यदानमपूर्वञ्च स्वयंग्राहप्रवर्त्तनं देयस्यप्रतिमोक्षश्चादानं पञ्चविधस्मृतं  
॥ ५ ॥ धनोत्सर्गो धनसम्पत् स्वयंग्राहप्रवर्त्तनं परस्त्रेषु देयं प्रतिमोक्षं ऋणमोक्ष इति प्रयोगश्चासामेव उत्तमप्रणिपातेन सूरभेदेनयोजयेत् नीचमल्पप्रदाने  
न समतुल्यं पराक्रमैरिति ॥ १ ॥ अनन्तरजीवधर्मा निरूपिताः अधुना पुद्गलास्तथैव प्ररूपयन्नाह ॥ तिविहापुगलेत्यादि ॥ प्रयोगपरिणता जीवव्यापारे  
ण तथाविधपरिणतिमुपनीता यथा पटादिषु कर्मादिषु वा ॥ मोक्षति ॥ प्रयोगविश्रुताभ्यां परिणता यथापटपुद्गला एव प्रयोगेण पटतया विश्रुतापरिणा  
मेन च भोगेऽपि पुराणतयेति विश्रुतास्वभावतस्तत् परिणता अभ्येन्द्रधनुरादिवदिति पुद्गलप्रस्तावा विश्रुतापरिणतपुद्गलरूपाणां नरकावासानां प्रतिष्ठानं

सामे दंष्ट्रे ज्ञेयं । तिविहा पोगला पन्नत्ता तजहा पजुगपरिणया मीसापरिणया वीससापरिणया । त्रिप

दड तेहणवुं । जेदपाडी धनलेवु ॥ हिवे पुदगलधर्म कहैछे । त्रणप्रकारे पुदगल तेकहैछे । प्रयोग पुदगल तेजीव व्यापारथी जिमपटवणावणुं । मि  
अपरिणत ते काईक प्रयोगथी काईक स्वजावथी नीपनो । विश्रुता परिणत जेस्वजावथीज परिणामप्राप्त जिमवादलमां इन्द्रधनुष ॥ पुदगलनां

निरूपणाह ॥ तिपद्दित्यादि ॥ स्फुटं केवल नरका नारकावासाः आत्मप्रतिष्ठिताः स्वरूपप्रतिष्ठिताः तत्प्रतिष्ठानं नयै राह ॥ णेगमेत्यादिनैकेन ॥ सा  
मान्यविशेषग्राहकत्वात् तस्थानेकेन ज्ञानेन मिनोति परिच्छिनत्तीतिनैगमः अथवा निगमा निश्चितार्थबोधा स्तेषु कुशली भवोवा नैगमः अथवा नैको  
गमो ऽर्थमार्गी यस्य स प्राकृतत्वेन नैगमः १ संग्रहण भेदानां सगृह्णाति वा तान् सगृह्यते वा ते येन सःसग्रहः सामान्यमात्राभ्युपगमपरइति ॥ १ ॥ व्य  
वहरण व्यवह्रियते वा तेन विशेषेणवा सामान्य भवह्रियते निराक्रियते नेनेति लोकव्यवहारपरी व्यवहारी विशेषमात्राभ्युपगमपरः ३ एतेषा नया  
ना मतेनेति गम्य ऋजु अवक्त मभिमुख श्रुत श्रुतज्ञान यस्येति ऋजुश्रुतः ऋजुवा तीतानागतवक्तपरित्यागा वर्त्तमान वस्तु सूत्रयति गमयतीति ऋजु  
सूत्रः स्वकीय साम्प्रतञ्च वस्तु नान्यदित्य भ्युपगमपरः शब्दते अभिधीयते ऽभिधेय मनेनेति शब्दो वाचको ध्वनिः नयति परिच्छिद् त्यनेकधर्मात्मक स  
त् वस्तु सावधारणतयै केन धर्मेणेति नयाः शब्दप्रधाना नया स्तेच त्रय शब्दसमभिरूढेवभूताख्या स्तत्र शपन मभिधान श्रूयते वा येन वस्तु सशब्द स्तद  
भिधेयविमर्शनपरी नयोपि शब्दएवेति सच भावनिक्षेपरूपं वर्त्तमान मभिन्नलिङ्गवाचक बहुपर्यायमपिच वस्त्वभ्युपगच्छतीति वाचक वाचक प्रतिवाच्य  
भेद समभिरोहत्या श्रयति यः स समभिरूढः सञ्च नन्तरोक्तविशेषणस्यापि वस्तुनः शक्रपुरन्दरादिवाचकभेदेन भेद मभ्युपगच्छति घटपटादिवदिति यथा

इठिया णरगा पन्नत्ता तंजहा पुढवीपइठिया णरगा आगासपइठिया आयपइठिया । णेगमसंगहववहा

अधिकारमाटे कहैछे त्रण प्रतिष्ठित नरकछे तेविस्त्रसा पुदगलने आधार नरकछे तेकहैछे । पृथ्वीमे आधारे नरकावासाछे । आकाशने आधारे  
नरकावासा छे । आत्मप्रतिष्ठित नरकावासाछे ॥ नैगम नयते निश्चय अर्थने महासामान्य विशेष संग्राहक । संग्रहनय तेह सामान्यबीज जेदनुं

शब्दार्थो घटते चेष्टतइति घट इत्यादिलक्षणः ॥ एवमिति ॥ तथाभूतः सत्यो घटादि रथो नान्यथेत्येव मभ्युपगमपर एवंभूतो नयो ऽयहि भावनिक्षेपा दिविशेषणोपेतं व्युत्पत्त्यर्थाविष्टमेवा र्थमिच्छति जलाहरणादिचेष्टावत घटमेवेति तत्रा द्यत्रयस्या शुद्धत्वात् प्रायो लोकव्यवहारपरत्वाच्च पृथिवीप्रतिष्ठित त्व नारकाणामिति तत्त चतुर्थस्य शुद्धत्वात् आकाशस्यच गच्छता तिष्ठतावा सर्वभावानामैकान्तिकाधारत्वात् भुवो नैकान्तिकत्वा चाकाशप्रतिष्ठितत्व मिति त्रयाणान्तु शुद्धतरत्वात् सर्वभावानां स्वभावलक्षणाधिकरणस्या तरङ्गत्वादव्यभिचारित्वाच्च आत्मप्रतिष्ठितत्वमिति नहि स्वस्वभावं विहाय परस्वभा वाधिकरणभावाः कदाचनापि भवन्तीति यत आह वत्युवसइसहावे सत्ताओवेयणव्वजीवंमि नविलक्खणत्तणाओ भिन्ने [अन्यत्र] च्छायातवेचेवत्ति ॥ १ ॥ नरकेषुच मिथ्यात्वा इति जन्तूनां भवतीति अथवा नया मिथ्यादृशइति सम्बन्धा मिथ्यात्वस्वरूपमाह ॥ तिविहेमिच्छत्तेइत्यादि ॥ सूत्राणि सप्त सुगमा नि नवरं मिथ्यात्वं विपर्ययस्तु अङ्गन मिह नविवक्षितं प्रयोगक्रियादीना वक्ष्यमाणतद्भेदाना मसंबध्यमानत्वात् ततोत्रमिथ्यात्वक्रियादीना मसस्यग्रूप

राणंपुढविपइठिया उज्जुसुयस्सञ्जागासपइठिया तिरहंसदणयाणं ञ्णायपइठिया । तिविहे मिच्छत्ते पस्सत्ते

गृहिवुं । व्यवहारनय ते लोकव्यवहार सहित सामान्यविना विशेषणं गृहिवुं । एह त्रणनयनें मते पृथिवी प्रतिष्ठित नरकछे ॥ रिजुनय तेवक्रनथी श्रुतनें सन्मुख अतीतानागतविना वर्तमान वस्तु जणाय तेनयने मते आकाश प्रतिष्ठितछे । शब्दनय ते त्रणलिंग वाचक शब्द नपुसक स्त्री पुरुष वाची एकशब्दै जाणवुं । ते शब्दनयनें मते आत्मप्रतिष्ठित नरकछे । पोताने स्वजावे रहियाछे । जेमांटे सर्वपदार्थ सर्वआत्मस्वभावे रहियाछे परस्वजावे गृहतानथी एशब्दनय नरकनेविषे मिथ्यात्वनीगति विशेषे थाय ॥ त्रणप्रकारे मिथ्यात्व अक्रियारूप तेकहैछे । अकिरिया तेमिथ्या



तामिथ्यादर्शनानाभोगादिजनितो विपर्यासो दुष्टत्वमशोभनत्वमिति भावः ॥ अकिरियत्ति ॥ नजिह दुःशब्दार्थो यथा अशीला दुःशीलत्वयः ततश्चा क्रिया दुष्टक्रिया मिथ्यात्वाद्युपहतस्या मोक्षसाधकममुष्टानयथा मिथ्यादृष्टे ज्ञानमप्यज्ञानमिति एव मविनयोपि अज्ञानमसम्यग्ज्ञानमिति अक्रियाहि अशोभनाक्रियैवा तो ऽक्रिया त्रिविधेत्यभिधायपि प्रयोगेत्यादिना क्रियेवोक्तेति तत्र वीर्यान्तरायचयोपशमाविर्भूतवीर्येणात्मना प्रयुज्यते व्यापार्यतइति प्रयोगो मनोवाक्कायलक्षणस्तस्य क्रियाकरणव्यापृतिरिति प्रयोगक्रिया अथवा प्रयोगैर्मनःप्रभृतिभिः क्रियते बध्यतइति प्रयोगक्रियाकर्म्मत्वार्थः साच दुष्टत्वादक्रिया अक्रियाच मिथ्यात्वमिति सर्वत्र प्रक्रमः ॥ समुदाणति ॥ प्रयोगक्रियैकरूपतया गृहीतानां कर्मवर्गणानां ॥ समिति ॥ सम्यक्प्रकृतिबंधादिभेदेन देशसर्वोपघातिरूपतयाच आदानस्वीकरणं समुदानं निपातनात्तदेवक्रिया कर्म्ममिति समुदानक्रियेति अज्ञानाद्या चेष्टा कर्मवासा ज्ञानक्रियेति

तंजहा अकिरिया अविणए अस्साणे । अकिरिया तिविहा पस्सत्ता तंजहा पणुगकिरिया समुदाणकिरिया  
अन्नाणकिरिया । पणुगकिरिया तिविहा प० तंजहा मणपणुगकिरिया वयपणुगकिरिया कायपणुगकिरिया

त्वीनी क्रिया । अविनय ते मिथ्यात्वीनुं विनय । अनाण तेमिथ्यात्वीनुं नाण ॥ अकिरिया त्रणप्रकारे कही मिथ्यात्वीनी मोक्षसाधनक्रिया तेअक्रिया । तेकहैछे । मन वचन कायाने प्रयोगेकरी कर्मकरिये तेप्रयोग क्रिया । मनप्रमुख प्रयोगेकरी कीधाकर्म जलीरीते अंगीकार करवा तेसमुदायकी क्रिया प्रकृति बधे बाधे ते । जेअनाणथी कर्मबाधे ते अनाण क्रिया ॥ प्रयोगक्रिया त्रणप्रकारेकही तेकहैछे । मनप्रयोग क्रिया । वचन प्रयोग क्रिया । कायप्रयोग क्रिया ॥ समुदाण क्रिया त्रणप्रकारे तेकहैछे । प्रथम समयनी क्रिया ते अनतर समयक्रिया जेहने आतरु नथी ।

प्रयोगक्रिया त्रिविधा व्याख्याता अर्थान् नास्त्यतरं व्यवधान यस्याः सा नन्तरा साचासौ समुदानक्रियाचेति विग्रहः प्रथमसमयवर्त्तिनीत्यर्थः द्वितीया ॥  
 दिसमयवर्त्तिनीतु परम्परसमुदानक्रियेतिप्रथमाप्रथमसमयापेक्षयातु तदुभयसमुदानक्रियेति ॥ मइअन्नाणकिरियत्ति ॥ अविसेसियामइच्चिय सम्महिठ्ठिस्स  
 सामइस्साण मइअस्साणमिच्छा दिठ्ठिस्ससुयंपिएमेवत्ति ॥ १ ॥ मत्थज्झानात् क्रिया अनुष्ठानं मत्थज्झानक्रिया एवमितरेपि नवर विभङ्गो मिथ्यादृष्टेरव  
 धिः सएवा ज्ञान विभङ्गाज्ञानमिति व्याख्यात मक्रियमिथ्यात्वं अविनयमिथ्यात्वं व्याख्यानायाह ॥ अविणयेत्यादि ॥ विंशिष्टीनयो विनयः प्रतिपत्तिवि  
 शेष स्तत्रतिषेधो ऽविनयः देशस्य जन्मचेत्तादे स्यागो देशत्यागः सयस्मि अविनये प्रभुगालीप्रदानादा वस्ति सदेशत्यागो निर्गत आलम्बना दाश्रयणीयात्  
 गच्छकुटुम्बकादेरिति निरालम्बन स्तद्भावो निरालम्बनता आश्रयणीयानपेक्षत्वमितिभावः पुष्टालबना भावेन चोचितप्रतिपत्तिभ्रशः प्रेमच द्वेषश्च  
 प्रेम द्वेषं नानाप्रकारस्मेमद्वेष नानाप्रेमद्वेष मविनय इयमत्रभावना आराध्यविषय माराध्यसमतविषयं वा प्रेम तथा राध्यसम्मतविषयो द्वेष इत्येव

समुदाणकिरिया तिविहा पस्सत्ता तंजहा अणंतरसमुदाणकिरिया परंपरसमुदाणकिरिया तदुत्तयसमुदाणकि  
 रिया । अस्साणकिरिया तिविहा पस्सत्ता तजहा मइअन्नाणकिरिया सुयअन्नाणकिरिया विजंगअन्नाणकि

परपर समुदाय ते बीजा त्रीजा समयना आरज्जनी क्रिया । अनंतर अने परपर समयनी जेक्रिया ॥ अनाण क्रिया त्रणप्रकारेकही ते कहैछे ।  
 मिथ्यादृष्टीनो नाण तेअनाण । मति अनाण क्रिया । श्रुत अनाण क्रिया । विजंग अनाण क्रिया मिथ्यात्वीनुं अवधि ते विजंग नाण ॥ अविन  
 य तेमिथ्यात्व ते त्रणप्रकारे तेकहैछे । देशत्यागी जे देशत्यागकरे घणी गालीदे तेहनेविषे । निरालंबता जेहथी कुटबनां आलंबननुं अजाव छे ।

द्वियता वेतौ विनयः स्या दुःखं च सहविमतिस्तुतिवचन तदभिमतप्रेमतद्विषिद्वेषः दानमुपकारकीर्तन ममंत्रमूलं वशीकरणमिति ॥ १ ॥ नानाप्रकारौ  
 च तावाराध्यतस्मत्तेतरलक्षणविशेषानपेक्षत्वेना नियतविषया वविनयइति अज्ञान मिथ्यात्वमिति उच्यते ॥ अत्राणेत्यादि ॥ ज्ञानहि द्रव्यपर्यायविष  
 यो बोध स्तन्निषेधो ज्ञान तत्र विवक्षितद्रव्य देयती यदा न जानाति तदा देशाज्ञान मकारप्रक्षेपात् यदाच सर्वत स्तदा सर्वाज्ञान यदाविवक्षितपर्या  
 यती न जानाति तदा भावाज्ञानमिति अथवा देशादिज्ञानमपि मिथ्यात्वविशिष्ट मज्ञानमेवेति अकारप्रक्षेप विनापि न दोषइति उक्तं मिथ्यात्व तच्चा  
 धर्मइति तद्विपर्यय मधुनाधर्ममाह ॥ तिविहेधर्मेइत्यादि ॥ श्रुतमेव धर्मः श्रुतधर्मः स्वाध्याय एवंचारित्रधर्मः चात्यादिश्रमणधर्मः अयच द्विविधोपि  
 द्रव्यभावभेदे धर्मो भावधर्म उक्तः यदाह दुविहोऽभावधर्मो सुयधर्मोऽखलुचरित्तधर्मोऽय सुयधर्मोऽसज्जन्तो चरित्तधर्मोऽसमणधर्मोऽस्ति ॥ १ ॥ अस्तिशब्दे  
 न प्रदेशा उच्यन्ते तेषा कायो राशि रस्तिकायः सचासौ सन्नया धर्मं स्येत्यस्तिकायधर्मो गत्युपप्लवङ्गधर्मोऽस्तिकायइत्यर्थः अयच द्रव्यधर्मइति अन

रिया । अविणये तिविहे पन्नत्ते तंजहा देसच्चाई णिरालं वणया णाणपेज्जादोसे । अन्ताणे तिविहे पसत्ते  
 तंजहा देसअस्साणे सव्वअस्साणे जावअस्साणे । तिविहे धम्मे पसत्ते तंजहा सुयधम्मे चरित्तधम्मे अत्यिका

अनेक प्रकारे प्रेम अने द्वेष तेबिहुं अविनय ॥ अनाण त्रणप्रकारे कहियो ते कहैछे । जेद्रव्य देशयी नजाणे तेदेश अनाण । जेसर्वथा नजाणे ते  
 सर्व अनाण । जेद्रव्ययी जाणे पणि पर्याययी नजाणे ते जावअनाण ॥ हिवे धर्म त्रणप्रकारे तेकहैछे । सिद्धांतनो सिज्जाय । चारित्र पंचमहा  
 वृत दशविध यतीधर्म । धर्मास्तिकाय धर्म गतिलक्षण एह द्रव्यधर्म ॥ त्रणप्रकारे उपक्रम उदरम आरज तेकहैछे । धर्मनु उपक्रम श्रुतजणवु चा

न्तरं श्रुतधर्मेचारित्रधर्मावुक्ता वधुना तद्विशेषमाह ॥ तिविहेउवक्लमेइत्यादि ॥ सूत्रा ण्यण्टौ सुगमानि पर मुपक्रमण मुपक्रम उपायपूर्वक आरम्भो धर्म  
 श्रुतचारित्रात्मके भवः सवा प्रयोजन मस्येति धार्मिक श्रुतचारित्रार्थ आरम्भइत्यर्थ स्तथानधार्मिको ऽधार्मिको संयमार्थ स्तथा धार्मिक स्यासौ देशतः ।  
 यमरूपत्वा दधार्मिकश्च तथैवा सयमरूपत्वाद्वा धार्मिका धार्मिकौ देशविरत्यारभइत्यर्थः अथवा नामस्थापना द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदात् षड्विध उपक्रम  
 स्तत्रनामस्थापने सुज्ञाते द्रव्योपक्रमस्तु ज्ञशरीरभव्यशरीरव्यतिरिक्त स्तिधा सचित्ताचित्तमिश्रद्रव्यभेदात् तत्र सचित्तद्रव्योपक्रमो द्विपदचतुष्पदापदभेदभिन्न  
 पुन रेकैकोडिविधः परिकर्म्मणि वस्तुविनाशेच तत्र परिकर्म्म द्रव्यस्य गुणविशेषकरण तस्मि न्सति तद्यथा घृताद्युपयोगेन पुरुषस्यवर्णादिकरण एव शुकस  
 रिकादीनां शिखागुणविशेषकरणं तथा चतुष्पदाना हस्त्यादीना अपदानाञ्च वृक्षादीनां वृक्षायु वेदोपदेशात् वाङ्मयादिगुणापादनमिति तथा वस्तुविन  
 शेच पुरुषादीनां खड्गादिभि विनाशएवो पक्रम इति एव मचित्तद्रव्योपक्रमः पञ्चरागादि मणे, चारमृत्युटपाकादिना वैमल्यापादन विनाशश्चेति मिश्रद्रव्य  
 पक्रमस्तु कटकादिविभूषितपुरुषादिद्रव्यस्यैवेति तथा क्षेत्रस्य शालिचेत्वादेः परिकर्म्मविनाशोवा क्षेत्रोपक्रम स्तथा कालस्य चन्द्रोपरागादिलक्षणस्यो पक्रम  
 उपायेनपरिज्ञान कालोपक्रमस्तथा भावस्य प्रशस्तप्रशस्तरूपस्यो पायतः परिज्ञानमेव भावोपक्रमः सचा प्रशस्तो डोडिनौगणिकामात्यदृष्टान्ता दवसेयः

यधम्मो । तिविहे उवक्लमे पस्सत्ते तंजहा धम्मिणुउवक्लमे अहम्मिणुउवक्लमे धम्मियाधम्मिणुउवक्लमे । अह

रित्र पालवुं । अधर्मनुं उपक्रम पापारंज करवुं । धर्माधर्म उपक्रम ते देशविरति आवकनों उपक्रम देशविरति आवकने देशविरति संयमछे ते  
 माटै ॥ अथवा वली त्रण प्रकारे उपक्रम कहिया ते कहै छे । आत्माने अनुकूल उपसर्गादि जए छते शील रत्ताने अर्थ जे उपक्रम वैहानशादि

प्रशस्तस्तु श्रुतादिमिन्नित्तमाचार्यादिभावोपक्रम एवं धार्मिकस्य संयतस्य य स्मार्तित्रायर्थं न्द्रव्यक्षेत्रकालभावानां मुपक्रम उक्तस्वरूपः स धार्मिकएवोपक्रमः  
तथा अधार्मिकस्यासंयतस्यासंयमार्थं यः सो धार्मिकएव तथा धार्मिकाधार्मिकस्य देशविरतस्य यः स धार्मिकाधार्मिकइति अथ स्वाम्यन्तरभेदेनो  
पक्रममेव त्रिधाह तथा अनो मुकूलोपसर्गादौ शीलरक्षणनिमित्तमुपक्रमो वैहानसादिना विनाशः परिकर्मवा आत्मार्यंवा उपक्रमोऽन्यस्य वस्तुन आ  
त्मोपमइति तथा परस्य परार्थंचोपक्रमः परोपक्रमइति तदुभयस्य आत्मपरलक्षणस्य तदुभयार्थंचोपक्रमस्तदुभयोपक्रमइति ॥ एवमिति ॥ उपक्रमसूत्र  
वत् आत्मपरोभयभेदेन वैयावृत्यादयो वाच्या व्यावृत्तस्य भावः कर्मवा वैयावृत्य भक्तादिभि रूपाश्च स्तत्रात्मवैयावृत्यं गच्छन्निर्गतस्यैव परवैयावृत्यं ग्लाना  
दिप्रतिजागरकस्य तदुभयवैयावृत्यं गच्छवासीनइति अनुग्रहो ज्ञानाद्युपकारस्तत्र आत्मनुग्रहो ध्ययनादिप्रवृत्तस्य परानुग्रहो वाचनादिप्रवृत्तस्य तदुभया  
नुग्रहः शास्त्रव्याख्यानशिष्यसंग्रहादिप्रवृत्तस्येति अनुशिष्टिरनुशासनं तत्रात्मनोयथा वायालीसेसणस कडमिगहणमिजीवणहुक्कलिओ इण्हजहणहुक्क  
लिज्जसि भुजतीरागदोसेहिंति ॥ १ ॥ तथाविधेयमिति शेषइति परानुशिष्टिर्यथा तातंसिभाववेज्जो भवदुक्खनिपौडियानुहएते हदिसरणंपवन्ना मो

वा तिविहे उवक्कामे प० तंजहा णायोवक्कामे परोवक्कामे तदुजयोवक्कामे । एव वेयावच्चे ण्णुग्गहे ण्णुसि

विनाश मरण । परने अर्थे उपक्रम । आत्माने परने अर्थे उपक्रम ॥ एम त्रण उपक्रम वेयावचमा जाणवा । आत्माने अर्थे आहार  
लेवाजाय ते आत्मवेयावच । परग्लानने अर्थे । आत्माने गच्छवासीने अर्थे ते तदुजय वेयावच ॥ अनुग्रह नाणादि उपकारमा पणि त्रण कहि  
वा । अध्ययनं जणवामा प्रवृत्त पुरुषने । वाचना दायकने । शास्त्रानुं व्याख्यान शिष्य संग्रहादिकमां प्रवृत्तने ॥ अनुसृष्टी धर्मेनी सिद्धादेवी आ

एयव्यापयन्तेति ॥ १ ॥ तदुभयानुशिष्टि र्यथा कहकहविमाणसत्ता इपावियचरणपवररयणं च तामोदत्यपमाओ कइयाविनहुज्जएअमहति ॥ १ ॥ उपा  
 लम्भ इयमेवा नौचित्यप्रवृत्तिप्रतिपादनगर्भा सचात्मनो यथा चोल्लगदिठ्ठतेणं दुलहलहिज्जणमाणसजम्म जनकुणसिजिणधम्म अप्पाकिंवैरिओतुज्जत्ति ॥ १ ॥  
 परोपालम्भो यथा उत्तमकुलसम्भूओ उत्तमगुरुदिक्खिओतुमवत्थ उत्तमनाणगुणड्ढोकहसहस्साववसिओएवति ॥ १ ॥ तदुभयोपालम्भो यथा एगस्सकए  
 नियजी वियस्सवहुयाउजीवकीडोओ दुक्खेउवतिजेके विताणकिसासयजीयति ॥ १ ॥ एवमित्यादिना पूर्वोक्तातिदेशो व्याख्यात एवचात्रा चरघटना यथैवो  
 पक्रमे आत्मपरतदुभयैस्त्रय आलापका उक्ता एव मेकैकस्मिन् वैयावृत्यादिसूत्रेतेत्रय स्वयो वाच्याइति अथ श्रुतधर्मभेदा उच्यन्ते अर्थस्य लक्षणाः कथा उपा  
 यप्रतिपादनपरो वाक्यप्रबन्धोर्थकथा उक्तच सामादिधातुवादादि कथादिप्रतिपादिका अर्थोपादानपरमा कथार्थस्यप्रकीर्तिता ॥ १ ॥ तथा अर्थार्थः पु  
 रुषार्थोय प्रधानः प्रतिभासते तृणादपिलवुलोके धिगर्थरहितनरमिति ॥ १ ॥ इयच कामन्दकादिशास्त्रप्रतिरूपा एवंधर्म्मोपायकथा उक्तच दयादानक्षमाद्येषु  
 धर्म्माङ्गेषुप्रतिष्ठिता धर्म्मोपादेयतागर्भा बुधैर्धर्मकथोच्यते ॥ १ ॥ तथा धर्म्माख्यःपुरुषार्थोय प्रधानइतिगौयते पापसत्कपशोस्तुल्यधिग्धर्मरहितनरम् ॥ १ ॥ इयचो  
 त्तराध्ययनादिरूपावसेयेति एवकामकथापि यदाह कामोपादानगर्भाच वयोदाक्षिण्यसूचिका अनुरागेगिताद्युत्थाकथाकामस्यवर्णिता ॥ १ ॥ तथा स्मितनल

ठी उवालंजे एवमिक्किक्को तिन्निमितिन्नि शालावगा जहेव उवक्कमे । तिविहा कहा प० तंजहा इत्यकहा

त्मानं परने उज्जयने ॥ ओलंजोदेवो जेमनुष्य जन्मपामी धर्मनथी करतो इत्यादि आत्मानं परने उज्जयने ॥ एवं एकेक आलावासां तीनतीन आ  
 त्मा पर उज्जय एह आलावा कहिया ॥ त्रणप्रकारे कथाकही तेकहेछे । अर्थकथा जेद्व्यविना मनुष्य तूण जेहवोछे । धर्मकथा दान शील तप जा

क्षेणवचोनकोटिभिर्नकोटिलक्षैःसविलासमोचितं । अवाप्यतेनैर्हृदयोपगूहनं नकोटिकोव्यापितदस्तिकामिनामिति ॥ १ ॥ इयमपि वात्स्यायनादिरूप  
वसेयेति प्रकीर्णावा तत्तदर्थं वचनपदपद्धति कथा चरितवर्णनरूपावा अर्थादिविनिश्चया अर्थादिस्वरूपपरिज्ञानानि तानिच अर्थानामर्जनेदुःख मर्जित  
नाचरचणे आयेदुःखंययेदुःख धिगर्थदुःखकारण ॥ १ ॥ तथा धनदोधनार्थिनाधर्मः कामदःसर्वकामिना धर्मएवापवर्गस्य पारम्पर्येणसाधकः ॥ २ ॥ तथा  
श्रव्यकामाविष कामाः कामाआशीविषोपमा' कामानभिलषन्तोपि निष्कामायातिदुर्गतिमित्यादौनि अनन्तर मर्थादिविनिश्चय उक्तइति तत्कारणफलप  
रमरा विस्थानकानवतारिणीमपि प्रसङ्गतो भगवत्प्रश्नद्वारेण निरूपयन्नाह ॥ तहारूवेइत्यादि ॥ पाठसिद्ध केवल पर्युपासना सेवा श्रवण फल यस्याः सा

धम्मकहा कामकहा । तिविहे विणिच्छिए प० तं० श्रुत्यविणिच्छिए धम्मविणिच्छिए कामविणिच्छिए ।  
तहारूवाणंजते समणंवा माहणंवा पज्जुवासेमाणस्स किफला पज्जुवासणया सवणफला । सेणजते सवणेकि

वनादि करवी । कामकथा जे कामशास्त्र कोकशास्त्रनी कथा ॥ त्रणप्रकारे विनिश्चय कहियो तेकहैछे । अर्थ विनिश्चय जेअर्थना उपार्जनमां दुख  
राखता व्ययमा पणि दुख अर्थ दुखनुज कारणछे । धर्म विनिश्चय जे धर्मथी बांछितपामै स्वर्गमोक्षनु साधकछे । काम विनिश्चय जेकामथी बांछित  
नपामै दुर्गतिनो आपनारछे ॥ एह निश्चयनुं फल पूछेछे । तथारूप श्रमण माहन छ कायाना रत्नकनी सेवाकीधानुं स्यु फलछे सेवाकरनारने हेगी  
तम श्रवणफलाछे साधु धर्मकथादिक स्वाध्यायकरे तेहनो श्रवणथाय तेहीज फलछे । हेजदंत श्रवणनुं सुणवानुं स्यु फलछे नाण फलछे सुणवाथी श्रुत  
नाण थायछे । हेजदत नाणनुं स्यु फलछे नाणथी विन्नाण थायछे जे उपदार्थ हेयछे उपदार्थ उपादेयछे इत्यादिनुं जांणवुं थायछे एम एणे अजि

तथा साधवोहि धर्मकथादिक स्वाध्यायं कुर्वन्तीति श्रवणं तत्सेवायां भवतीति ज्ञानं श्रुतज्ञानं विज्ञानं मर्थादीनां हेयोपादेयत्वविनिश्चयः ॥ एवमिति ॥  
 पूर्वोक्तेनाभिलाषेन सेण भते विन्नाणे किफले गोयमा पच्चखाणफले इत्यादिना इयंगाथाअनुगतव्या अनुस्मरणीया एतद्भायोक्तानि उक्तानुक्तानि पदान्यध्ये  
 तव्यानीत्यर्थः ॥ सवणेत्यादि ॥ भावितार्था नवर प्रत्याख्यान निवृत्तिद्वारेणप्रतिज्ञाकरण सयमः प्राणार्तिपाताद्यकरण उक्तं च पञ्चाश्रवादिरमण पञ्चेन्द्रि  
 यनिग्रहः कषायजयः दण्डत्रयविरतिश्चेतिसयमः सप्तदशभेदइति ॥ १ ॥ अनाश्रवोनवकर्मानुपादानअनाश्रवाल्लघुकर्मेत्वेनतपोनशनादिभेदभवति व्यवदान  
 पूर्वकृतकर्मवनलवनं दाप्लवनइतिवचनात् कर्मकचवरशोधनंवा दैप्शोधनइतिवचनादिति अक्रियायोगनिरोधो निर्वाण कर्मकृतविकारविरहितत्व सिद्धान्ति  
 कृतार्था भवन्तियस्या सा सिद्धिलोकाय सैव गम्यमानत्वाद्गति स्तस्यागमन तदेवपर्यवसानफल सर्वान्तिमप्रयोजन यस्यनिर्वाणस्य तत्सिद्धिगमनपर्यवसानफल

फले णाणफले । सेणंजते णाणेकिफले विस्साणफले । एवमेएणं अण्जिलावेणं इमा गाहा अणुगंतद्धा सवणे  
 णाणेयविस्साणे पच्चस्काणेयसंजमे । अणरहवेतवेचेव वोदाणेअकिरियाणिह्माणे ॥ १ ॥ जाव साणंजते अ

लापे एरीतै एगाथानुं जाव जाणवुं साधुनी सेवानुं फल श्रवण सांजलवुं साजलवानुं फल नाण जाणवुं जाणवानुं फल विन्नाण हेयोपादेयादिकनुं  
 जाणवु तेहनं फल पचखाण पचखाणथी सतरे जेदे सयमथाय संयमथी आश्रव नवीन कर्मबंध तेहनं अजावथाय अनाश्रवथी लघुकर्म पणायी तप  
 अनशनादिक थाय तपथी पूर्वकृत कर्मनु निर्जरावुं निर्जराथी मन वचन कायानां योगनुं निरोधिवुं योगनिरोधथी कर्मकृत विकारथी रहित थाय  
 यावत् हेजदत मन वचन कायानां योगनिरोध रूप अक्रियानुं स्युं फलछे निर्वाण मोक्ष फलछे निर्वाणनुं हेजदत स्युं फलछे सिद्धि लोकागू ते



प्रज्ञातं मया अन्यैश्चेति तस्मिन्निमित्तं हेममण हेमयुष्मन्निति गौतमादिकं शिष्यं भगवानामंजयमिदमुवाच ॥ इति त्रिस्थानकस्य तृतीयोद्देशको विवरणतः समाप्तः ॥  
 ३ ॥ आख्यात स्तृतीयोद्देशको ऽधुना चतुर्थोपाचारभ्यते अस्य चायमभिसम्बन्ध पूर्वस्मिन् उद्देशको पुत्रलजीवधर्मा स्तिवनेनोक्ता प्रहापित एव तथैवोच्यन्ते इत्यने  
 न सम्बन्धेना यातस्यास्येदमादिस्तपट्कं ॥ पडिमेत्यादि ॥ अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः पूर्वसूत्रे अमणमाहनस्य पर्युपासनायाः फलपरम्परोक्तो ह्येतु तद्विशेष  
 नस्य फलविभिरुच्यत इत्येव सम्बन्धितस्यास्य आख्या प्रतिमामासिक्तादिकां भिक्षुप्रतिज्ञाविशेषलघणां प्रतिपत्ती भ्युपगतवान् यः स तथा तस्यानगारस्य कल्पते  
 युज्यन्ते अथ उपाश्रयस्तेभ्यजन्ते श्रीतादिनाण्यर्थं मेते उपाश्रयस्तस्यैव प्रत्युपेक्षित मयस्थानार्थं निरीक्षितुमिति ॥ अहेति ॥ अथार्थः अथशब्दोऽह पदनये

किरिया किंफला णिह्वाणफला । सेणंजंते णिह्वाणे किंफले सिद्धिगङ्गमणपज्जवसाणफले पणत्ते समणाउ  
 सो ॥ तीञ्छणरुस तीउ उद्देशं सम्मत्तो ॥ ३ ॥ पफिमापफिवत्तरुसणं ञ्णगाररुस कप्पंति  
 तउ उवरुसग्गपफिलेहित्तए तजहा अहे अगमणगिहंसिवा अहेविथरुगिहंसिवा अहेरुसकमूलगिहंसिवा

हीज गति तेहमां जायुं तेहीज लेहलो फल कहियो भैं तथा अन्य केवलीयें हे अमण हे आयुष्मन् ॥ इति तीजा ठाणानुं तीजो उद्देशो पूरो  
 थयो ॥ ३ ॥ पूर्वे साधुसेवानुं फल कहियो हिवे तेसाधुने कल्पें तेकहैछे । बार साधुनी प्रतिमानें पडिवज्यो जेसाधु तेहने कल्पें सुभैं नण  
 उपाश्रय रहवाने अर्थ पफिलेहवा जोवा तेकहैछे । अथ पंथीने आविवाने तेहने अर्थ जेघर सजा पर्व देउल तिहा रहवाने जोवुं एके खूणुं  
 अथवा विवृतगृह जे उपरिणी ठांकोनथी एकखूणुं बाकुं होय ते अथवा वृक्षने मूलें घरहोय ते अथवा वृक्षनुं मूलहीज घर एह गृहस्थनी आगधा

पि त्रयाणामप्याश्रयाणां प्रतिमाप्रतिपन्नस्य साधोः कल्पनीयतया तुल्यताप्रतिपादनार्थोवा विकल्पार्थः पथिकादीना मागमनेनोपेत तदर्थंवा गृहमागमन  
गृहसभाप्रपादि यदाह आगंतुगारत्यजणोजहिंतु संठाइजवागमणंमितेसिं तंआगमोक्तितुविदूवयति सभापवादेउलमाइयंवत्ति ॥ १ ॥ तस्मिन्नुपाश्रय  
स्तदेकदेशभूतः प्रत्युपेक्षितुं कल्पतइतिप्रक्रमः तथा ॥ वियडति ॥ विवृतअनावृत तच्चदेधा अधऊर्द्धेच्च तत्रपार्श्वत एकादिदिक्स्व नावृतमधोविवृत मना  
च्छादितममालगृहचोर्द्धविहृत तदेवगृहविहृतगृहं उक्तञ्च अनाउडजतुचउद्दिसिपि दिसामहोतित्रिदुवेयएका अहेभवेतवियडगिहृतु उडुअमावंचअतिच्छ  
दवत्ति ॥ १ ॥ तस्मिन्वा तथा वृक्षस्यकरौरादे निर्गलस्य मूलसधोभाग स्तदेवगृहं वृक्षमूलगृहं तस्मिन्वेति प्रत्युपेक्षया चोपाश्रयेणुदे गृहस्थंप्रति तदनुज्ञापन  
भवतीत्यनुज्ञापनासूत्र ॥ एवमिति ॥ एतदेव पडिमापडिवन्नेत्या द्युच्चारणीयं नवरं प्रत्युपेक्षणास्थाने अनुज्ञापनंवाच्यमिति अनुज्ञातेच गृहिणातस्योपादा  
नमि त्युपादानसूत्र तदप्येवमेवेति ॥ उवाइणित्तएत्ति ॥ उपादातुंगृहोतुं प्रवेष्टुमित्यर्थः एव सस्तारकसूत्रत्रयमपि नवर पृथिवीशिलाउडुअगोत्ति ॥ यः प्रसि  
द्धः काष्ठञ्चासौशिलेवायतिविस्तराभ्या शिला साचेति काष्ठशिला यथासंस्तृतमेवेति यत्तृणादियथोपभोगार्हंभवति तथैवयत्नभ्यतइति प्रतिमाश्च नियत

एवमणुन्नवेत्तए उवाइणित्तए । पडिमापडिवन्तस्सणं अणगारस्स कप्पंति तनुं संथारगापडिलेहित्तए तंजहा  
पुढविसिला कठसिला अहासंघट्टमेव एवमणुन्नवित्तए उवाइणित्तए । तिविहे काले पस्सत्ते तंजहा ।

थी शुद्धथानक जांगी एहमा प्रवेश करवुं कल्पै । प्रतिमाने पडिवज्यो जे अणगार साधु तेहने कल्पै सूर्भै त्रण संथारा पडिलेहवा दृष्टिथी जोवा ते  
कहैछे । पृथ्वीनीशिला काष्ठनीशिला तृणादिकनुं सथारो ॥ सम पूर्ववत् आग्या मांगी गृहवो लेवो कल्पै एह तीनमां जे लाजै तेगृहण करै ।

कालाभवतीति कालत्रिधाह अतिशयेनश्रुतो गतोऽतोत पिधानवदकारलोपे तोतोवर्त्तमानत्वमतिक्रान्तइत्यर्थः साम्प्रतउत्पन्नः प्रत्युत्पन्नोवर्त्तमानइत्यर्थः नआगतोऽनागतो वर्त्तमानत्वमप्राप्तो भविष्यन्नित्यर्थः उक्तच भवतिसनामातीतः प्राप्तोयोवर्त्तमानत्वं एष्यशनामसभवति यःप्राप्स्यतिवर्त्तमानत्वमिति ॥ १ ॥ कालसामान्यत्रिधाविभज्य तद्विशेषांस्त्रिधाविभजन्नाह ॥ तिविहेसमयेत्यादि ॥ कालसूत्राणि समयादयो विस्थानकाद्युद्देशकवत् व्याख्येया नवर ॥ पोगलपरियट्टेति ॥ पुद्गलानारूपिद्रव्याणा आहारकवर्जिताना मीदारिकादिप्रकारेण गृह्यत एकजीवापेक्षया परिवर्त्तन सामस्येनस्पर्शः पुद्गलपरिवर्त्तः सचयावताकालेनभवति सकालोपिपुद्गलपरिवर्त्तः सचानन्तोत्सर्पिण्यवसर्पिणोरूपइति सचेत्थ भगवत्यामुक्तः कतिविहेण भंते पोगलपरियट्टे पन्नत्ते सत्तविहे पन्नत्ते त० ओरालियपोगलपरियट्टे वेउब्बियपोगलपरियट्टे एवतेयाकम्मामणवद्प्राणापाणपोगलपरियट्टे तथा से केणट्टेण भंते एववुच्चइओरालियपोगलपरियट्टे २ गोयमा जण जीवेण ओरालियसरीरेवट्टमाणेण ओरालियशरीरपाओगाइं दब्बाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइ जावनिसइहा

तीते पद्गुप्पन्ते अणगए । तिविहे समए पस्सत्ते तजहा तीते पद्गुप्पन्ते अणगए । एवंअवलिया अणणा पाणूथोवे लवे मुज्जत्ते अहोरत्ते जाव वाससयसहस्से पुव्वगे पुव्वे जाव उंसप्पिणी । तिविहे पोगलपरियट्टे

प्रतिमा कालआश्री होय तेमाटे कालनुं स्वरूप कहैछे । त्रणप्रकारे काल कहियो प्रतीतकाल वर्त्तमानकाल अनागतकाल जे आवसे ॥ त्रणप्रकारे समय कहियो तेकहैछे । अतीत वर्त्तमान अनागत ॥ एम आवलिका यानप्रान थोव लव मुहूर्त्त अहोरात्रि यावत् सो वरस हजारवरस पूर्वांग पूर्व यावत् उत्सर्पिणी अवसर्पिणी लगि जाणवा ॥ त्रण प्रकारे पुद्गल परावर्त्त कहियो आहरेक वर्त्त ओदारिकादि शरीरे एक जीव रूपीपुद्गल

इं भवन्ति सेतेण्डेणगीयमा एवंबुद्ध ओरालियपोगलपरियट्टे २ एव शेषाअपिवाच्याः तथा ओरालियपोगलपरियट्टेणभंते केवइ कालस्सनिव्वत्तिज्जइ गो  
यमा अणताहि उसप्पिणो ओसप्पिणीहिति एवशेषाअपीति अन्यत्रत्विवमुच्यते ओराले १ वेउव्वे २ तेय ३ कम्म ४ भासा ५ णपाण ६ मणगेहिफासेविसव्व  
पोगलमुक्का अहवायरपरट्टो दव्वेसुहुमपरट्टोजाहेएगेणअहसरीरेण लोगमि सव्वपोगलपरिणामे जणतोमुक्कत्ति २ द्रव्यपुद्गलपरिवर्त्तनसदृशा येन्येचेत्रका  
लभावपरिवर्त्ता स्तेन्यतोवसेयाइति एतेच समयादयः पुद्गलपरिवर्त्ताताः स्वरूपेणबहवोपि तत्त्वामान्यलक्षणमर्थ मेकमाश्रित्यैकवचनान्ततयोक्ताभवन्ति  
चैकादिष्वर्थेष्वेकवचनादिन्येकवचनादिप्ररूपयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ एकोर्थउच्यते ऽनेनोक्तिर्वैतिवचन मेकस्यार्थस्यवचनमेकवचन मेवमितरेपि अत्रक्रमेणो  
दाहरणानि देवःदेवौदेवाः वचनाधिकारे ॥ अहवेत्यादि ॥ सूत्रद्वय सुबोध उदाहरणानितु स्त्रोवचनादीना नदीनदःकुडं अतीतादीना कृतवान्करोतिकारि  
ष्यति वचनहि जीवपर्याय स्तदधिकारात्तत् पर्यायान्तराणि त्रिस्थानकेऽवतारयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्राणा मेकोनविंशतिः स्रष्टाचेय परस्मज्जापनाभे

पस्यते तंजहा तीते पढुप्पन्ने ण्णागए । तिविहे वयणे प० त० एगवयणे दुवयणे बज्जवयणे । अहवा  
तिविहे वयणे प० तंजहा इत्थिवयणे पुम्मवयणे णपुंसगवयणे । अहवा तिविहे वयणे प० तं० तीतवयणे

एसघला फरसें तेपुदगल परावर्त्त कहिये तेकहैछे । अतीतकाले कीधो वर्त्तमानकालें करेछे अनागतकाले करस्ये ॥ त्रणप्रकारे वचन कहियो तेक  
हैछे । एकवचन द्विवचन बहुवचन ॥ अथवा त्रणप्रकारे वचन तेकहैछे । स्त्री वचन नदी नारी इत्यादि । पुरुष वचन आब घट इत्यादि ।  
नपुंसक वचन कुल कुंड धान्य इत्यादि ॥ अथवा त्रणप्रकारे वचन कहिया तेकहैछे । अतीतकाल वचन करतो हुवो । वर्त्तमानकालवचन ते करे

दादाभिधानं तत्रज्ञानप्रापना आभिनवोपिकादिपञ्चधा ज्ञानं एवं दर्शनं चाशिक्षादित्रिधा चारित्रं सामायिकादिपञ्चधेति समस्ततीतिसम्य गवि  
 परीतं मोक्षं सिद्धिपत्तौत्थानुगममित्यर्थः तत्रज्ञानादीनि उपजननउपघातः पिण्डशय्यादेरकल्पनित्यर्थः तत्रउद्गमनमुद्गमः पिण्डादेःप्रभवद्रव्यार्थः तस्यचाधा  
 तार्थादय मोडगदोषाः उताच तत्तद्गमोपसूदं पञ्चोपमादिहीतिपञ्चधा सोपिण्डशिक्षापञ्चो तस्यदोसाःमेहीति ॥ १ ॥ आहानमुद्गसिद्धि २ पूर्वका  
 योग ३ मोसजाएय ४ ठवणा ५ पाद्युधियाए ६ पात्रोयए ७ कोय ८ पागिरो ९ ॥ २ ॥ परियदृष्ट १० अभिहृष्टे ११ उद्भिगे १२ मानलोहउद्ग १२ पा  
 च्छिज्जी १४ अणिसहे १५ अज्जोयएय १६ सोलसमेति ॥ २ ॥ द्रव्यचामेदधिवचनया उद्गदोष एवोद्गमो ऽतस्तीनोद्गमेनोपघातः पिण्डादेरकल्पनीयता क

पद्मुप्यन्तवयणे शुणागयवयणे । तिविहा पन्नवणा पणत्ता तंजहा णाणपन्नवणा दंसणपन्नवणा चरित्तपन्न  
 वणा । तिविहे सम्मे प० तं० णाणसम्मे दंसणराम्मे चरित्तसम्मे तिविहेउवघाए प० तं० उग्गमोवघाए

ले । अनागतकाल वचन जेकरस्ये कायादि आश्री ॥ त्रणप्रकारे पन्नवणा कही ते कहैले । नाण पन्नवणा ते मत्त्यादि पांचभेदै । दर्शन पन्न  
 वणा ते ज्ञायिकादि पांचभेदै समकित । चारित्र पन्नवणा सामायिकादि पांचभेदै ॥ त्रणप्रकारे सम्यग् ते अविपरीत मोक्षनुं साधवो । तेकहै  
 ले । नाण सम्यक् जीवादि तत्त्व । दर्शन सम्यक् ते ज्ञायिकादि समकित । चारित्र सम्यक् पंचमहावृत एह मोक्ष साधकले ॥ त्रणप्रकारे उप  
 घात कहियो पिंडशय्यादि अकल्प ते सूक्ष्मे तेकहैले । उद्गमोपघात ते आधाकर्मोदि चिंतवी साधुनिमित्त कीधो तेदोष । उत्पादनोपघात विदया  
 मंत्र चूर्णा चिकित्सादिकै करी उपजाव्यो । एषणोपघात ते अशुभमान सचिदादि आहार ॥ सम विशुद्धि आहारनी शुद्धि पणि ए कहिया ते

रणवरणस्यवाशवलीकरणमुद्गमोपघातउद्गमस्यवापिण्डादिप्रसूतेरुपघात आधाकर्म्मत्वादिभिर्दुष्टतोद्गमोपघात एवमितरावपि केवलमुत्पादन सम्पादन  
 गृहस्थात्पिडादेरुपार्जनमित्यर्थः तद्दोषाधात्रीत्वादयः षोडश यदाह उपायणनिवृत्तण संपायणमायहोति एगृहा आहारस्निहपगयाती एदोसाइमेहीति  
 ॥ १ ॥ धाई १ दूइ २ निमित्ते ३ आजौव ४ वणौमगे ५ तिगिच्छाय ६ कोहे ७ माणे ८ माया लोभेय १० हवतिदसए ॥ १ ॥ पुञ्चिपच्छासथव ११ वि  
 जामतेय १३ चुस १४ जोगेय १५ उपायणाइदोसा सोलसमेसूलकम्मेयत्ति ॥ २ ॥ तथाएषणागृहिणादीयमानपिडादेर्ग्रहण तद्दोषाः शङ्कितादयोदशे  
 त्याहच एसणगवेसणस्से सणायगहणचहोति एगृहा आहारस्निहपगया तीययदोसाइमेहीति ॥ १ ॥ सकिय १ मक्खिय २ निक्खि त्त ३ पिहिय ४ साहरि  
 य ५ दायगुम्मीसे ६ अपरिणय ८ लित्त ९ छड्डिय १० एसणदोसादसहवति ॥ २ ॥ इहच सोलसउगमदोसा गिहियाउसमुठ्ठिरवियाणाहि उपाहिउपा  
 यणाए दोसासाहउसमुठ्ठिएजाणत्ति ॥ ३ ॥ एषणादोषास्तू भयसमुत्थाइति एवमुद्गमादिदोषै रविद्यमानतया याविशुद्धि.पिण्डचरणादीना निर्दोषता  
 साउद्गमादिविशुद्धि उद्गमादीनांवा विशुद्धिर्यासा तथैतानेवातिदिशन्नाह ॥ एवमिसोही ॥ ज्ञानस्यश्रुतस्या राधना कालाध्ययनादिष्वष्टसु आचारेषु प्रवृ  
 त्त्यानिरतिचारपरिपालना ज्ञानाराधना एवदर्शनस्य निःशङ्कितादिषु चारित्रस्य समितिगुप्तिषु साचोत्कृष्टादिभेदा भावभेदा कालभेदाइति ज्ञाना

उपायणोवघाए एसणोवघाए । एवंमिसोही । तिविहा श्राराहणा पस्सत्ता तंजहा णाणाराहणा दंसणाराहणा

बेयालीस दोष रहित ॥ त्रण प्रकारे आराधना कही ते कहै छे । अतीचार रहित चारित्र पालवुं ते आराधना । नाण आराधना ते काले  
 विणये ए आठ अतीचार टालवा । दर्शनाराधना ते निस्संकियनिःकखिय आठ अतीचार टालवा । चारित्राराधना ते पाच सुमति त्रणगुप्ति

दिप्रतिपतनलक्षणः संक्षिप्तमानपरिणामनिबन्धनो ज्ञानादिसंक्षेपो ज्ञानादिशुद्धिलक्षणी विशुद्धमानपरिणामहेतुक स्तदसंक्षेप एवमिति ज्ञानादिविष-  
या एवातिक्रमादय सत्त्वार स्तत्राघाकर्माश्रित्य चतुर्णामपिनिर्दर्शनं आह्लाक्यमानंतण पडिष्ठुणमाणेअद्रक्कमोहीइ पयभेयाइवद्रक्कम २ गहिएतइओ ३ य  
रोगिलिएत्ति ४ ॥ १ ॥ इत्यमेवो त्तरगुणरूपचारित्रस्य चत्वारोपि एतदुद्देशेन ज्ञानदर्शनयो स्तदुपग्रहकारिद्रव्याणाञ्च पुस्तकचैत्यादीना मुपघाताय मि-  
थ्यादृशा मुपवृंहणार्थंवा निमज्जणप्रतिश्रवणादिभिर्ज्ञानदर्शनातिक्रमादयो प्यायोज्याइति ॥ तिग्गहअद्रक्कमाणति ॥ षष्ठ्या द्वितीयार्थत्वात् त्रौनतिक्रमाना  
लोचयेत् गुरवेनिवेदयेदित्यादिप्राग्व सवरं यावत्करणात् विसोहेज्जाविउट्टेज्जाअकरणयाएअहुडेज्जाअहारिइतवोकअपायच्छित्त मित्यध्येतव्यमिति पाप

चरित्ताराहणा । णाणाराहणातिविहा पस्सत्ता तंजहा उक्कोसा मज्झिमा जहन्ता । एवं दंसणाराहणावि चरि-  
त्ताराहणावि । तिविहे सकिलेसे प० तंजहा णाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चारित्तसंकिलेसे । एवंअसकिले-  
सेवि एवमइक्कमेवि वइक्कमेवि अइयारेवि अणायारेवि । तिरहमइक्कमाणं अालोएज्जा पफिक्कमेज्जा णिं

पालयी ॥ नाणानी आराधना त्रणप्रकारे कही तेकहैछे । उत्तुष्टी मध्यमा जघण्या ॥ एम दर्शनाराधना त्रणप्रकारे चारित्राराधना पणि त्रणिप्र-  
कारें ॥ त्रणप्रकारे सकिलेश तेकहैछे । नाण सकिलेश नाण त्रणतो कलेश उट्टेग पामें । दर्शन सकिलेश समकितमा मूंभाये सरदहणा पामेंनथी ।  
चारित्र संकलेश चारित्र पालतो दुखपामें ॥ एम असकिलेश पणि त्रणप्रकारे कलेशनपामें शुद्ध मनपरिणामें । इम अतिक्रम त्रणप्रकारे । एम  
व्यतिक्रम त्रणप्रकारे । अतीचार त्रणप्रकारे । अनाचार त्रणप्रकारे ॥ मायादिकनो अतिक्रम पाप अालीये गुरु आगलि कहै पडिकमै मिच्छामिदु

च्छेदकत्वात् प्रायश्चित्तविशोधकत्वाद्वा प्राकृते पायच्छित्तमिति शुद्धिरुच्यते तद्विषयः शोधनीयातिचारोपि प्रायश्चित्तमिति तच्च त्रिधा दशविधत्वेपि तस्य त्रिस्थानकानुरोधादिति तत्रालोचनमालोचनागुरवे निवेदनं तांशुद्धिभूतामर्हति तथैव शुद्ध्यति यदतिचारजातमिच्छाचर्यादितदालोचनार्हमिति एवं प्रतिक्रमणं मिथ्यादुष्कृतं तदर्हसहस्रांशमिति त्वमगुप्तत्वचेति उभयं मालोचनाप्रतिक्रमणलक्षणमर्हति यत्तत्तथा मनसोरागद्वेषगमनादिसाईगद्येह भिक्कायरियाएसुज्झइ अद्वयारोकोविविडणाएय वीश्रोयअसमिओमि त्तिकीससहस्रांशगुत्तोवइ सहाइएसुरागं दोसंचमणोगओतइयगमिति ॥ १ ॥ एतेच प्रज्ञापनादयो धर्माः प्रायोमनुष्यक्षेत्रएवस्युरिति तद्वक्तव्यतामाह ॥ जंबूद्वीवेत्यादि ॥ इदं च प्रकरणं द्विस्थानकानुसारेण जंबूद्वीपपदानुसारेण वावसेयमि

देज्जा गरहिज्जा जाव पण्डिवज्जोज्जा तंजहा णाणाइक्कमस्स दंसणाइक्कमस्स चरित्ताइक्कमस्स एवं वइक्क माणं अइयाराणं अणायाराणं । तिविहे पायच्छित्ते प० तंजहा आलोयणारिहे पण्डिक्कमणारिहे तदुज्जया रिहे । जंबूद्वीवेदीवे मंदरस्सपट्टयस्स दाहिणेणं तं अकम्मज्जमीतं प० तंजहा हेमवए हरिवासे देवकुरा जंबूद्वीवेदीवे मंदरस्स उत्तरेणं तं अकम्मज्जमीतं प० तं० उत्तरकुरा रम्मगवासे एरत्तवए । जंबूमंदरस्स

कृत देवे आत्मसाक्षिणी निदं आत्मसाक्षीयं गर्हाकरे परनी साक्षीयी यावत् तप वडिवज्जे तेकहैछे । नाणातिक्रमथयो होय ते आलोवे निदं । दर्शनातिक्रम थयो होय चारित्रातिक्रम थयोहोय । एम व्यतिक्रम अतीचार लागो ते अणाचारपणि आलोवे निदं ॥ त्रणप्रकारे प्रायश्चित्त कहि यो तेकहैछे । आलोयणं योग्य । प्रतिक्रमण योग्य । आलोयण प्रतिक्रम वेनें योग्य ॥ ए सर्व धर्म मनुष्यक्षेत्रमां छे तेहनुं स्वरूप कहैछे । जं



पद्मयस्स दाहिणेणं तत्तं वासा पन्नत्ता तंजहा जरहे हेमवए हरिवासे जंबूमंदरस्स उत्तरेणं तत्तं वासा पन्नत्ता  
 तं० रम्मगवासे हेरन्तवए एरवए । जंबूमंदरस्स दाहिणेणं तत्तं वासहरपद्मया पन्नत्ता तंजहा चुल्लहिमवंते  
 महाहिमवंते णिसढे । जंबूमंदरस्स उत्तरेणं तत्तं वासहरपद्मया पणत्ता तंजहा णीलवंते रूप्पी सिहरी जंबूमंद  
 रस्सदाहिणेणं तत्तं महादहा प० तं० पउमद्दहे महापउमद्दहे तिगिच्छिद्दहे । तत्थणं तत्तं देवयानं महिद्धिया  
 उ जाव पलित्तवमठिईयानं परिवसति तजहा सिरी हिरी धीई । एवं उत्तरेणवि णवरं केसरिद्दहे महा

बूद्धीपनामा द्वीपनेविपे मेरुपर्वतथी दक्षिणादिशि त्रण अकर्मजूमि कही तेकहेंछे । हेमवंत युगलक्षेत्र हरिवर्ष युगलक्षेत्र देवकुरु युगलक्षेत्र ॥ जंबू  
 द्वीपने विपे मेरुथी उत्तरदिशि त्रण अकर्मजूमि कही उत्तरकुरु रम्यकवर्ष ऐरवयवतक्षेत्र ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी दक्षिणादिशि त्रण वर्षक्षेत्र कहिया जर  
 त हेमवत हरिवर्ष ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी उत्तरदिशि त्रण वर्षकहिया रम्यकवर्ष ऐरवयवत ऐरवत ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी दक्षिणादिशि त्रण वर्षधर  
 पर्वत कहिया ॥ लघुहिमवंत पर्वत महाहिमवत पर्वत निषध पर्वत ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी उत्तरदिशि त्रण वर्षधर पर्वत कहिया ते कहेंछे । नील  
 वंत पर्वत रूपीपर्वत शिखरी पर्वत ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी दक्षिणादिशि त्रण मोटाद्रह पाणी जस्ता कह्या ॥ पदमद्रह महापदमद्रह तिगिच्छिद्दह  
 तिहा त्रणि देवता मोटी रिद्धिनाथणी यावत् पत्थीपमगी स्थितिनाथणी रहेंछे तेकहेंछे । श्री ह्री धृति ॥ एणें प्रकारे उत्तरदिशि पणि एतलो  
 विशेष जे केसरीद्रह पुंडरीकद्रह महापुंडरीकद्रह ॥ तिहा तीन देवांगना बसैंछे । कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी दक्षिणादिशि लघु

ति नवरमतर्नदीनाविष्कम्भः पंचविंशत्यधिकशतमिति अनन्तर मनुष्यक्षेत्रलक्षणक्षितिखण्डवक्तव्यतोक्ते त्वधुनाभंग्यन्तरेणसामान्यपृथिवीदेशवक्तव्य

पोंछरीयद्दहे पोंछरीयद्दहे देवयानु किन्ती बुध्नी लच्छी । जंबूमंदरस्स दाहिणं चुल्लहिमवंतानु वासहरपद्द  
यानु पउमदहानु महादहानु तनु महाणदीनु पवहति तजहा गंगा सिंधु रोहियसा । जंबूमंदरस्स उत्तरेणं  
सिहरीनु वासहरपद्दयानु पोंछरीयद्दहानु महादहानु तनु महाणदीनु पवहति तंजहा सुवन्नकूला रत्ता  
रत्तावती । जंबूमंदरस्स पुरच्छिमेण सीयाए महाणईए उत्तरेणं तनु अंतरणईनु पस्सत्ता तजहा गाहावई  
दहवई पंकवई । जंबूमंदरपुरत्थिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं तनु अंतरणईनु पस्सत्ता तंजहा तत्तज  
ला मत्तजला उम्मत्तजला जंबूमंदरपद्दत्थिमेण सीनुदानु महाणईएदाहिणेणं तनु अंतरणईनु पस्सत्ता तंजहा

हिमवंत वर्षधर पर्वतथी पदमद्रहनाम महाद्रहथी त्रण मोटीनदी निकलीछे । गंगा सिंधु रोहितांसा ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी उत्तरदिशि शिखरी  
नाम वर्षधर पर्वतथी पुंछरीकनाम महाद्रहथी त्रण मोटीनदी बहैछे । सुवर्णकूला रत्ता रक्तवती ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी पूर्वदिशि शीतामहानदी  
थी उत्तरदिशि त्रण अंतर नदीकही तेकहैछे । ग्राहवती द्रहवती पंकवती ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी पूर्वदिशि शीता महानदी थी दक्षिणदिशि त्रण  
अंतरनदी कही तेकहैछे । तप्तजला मत्तजला उन्मत्तजला ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी पश्चिमदिशि शीतोदा महानदीथी दक्षिणदिशि त्रण अंतर नदी  
कही ते कहैछे । क्षीरोदा सिहश्रोता अंतोवाहिनी ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी पश्चिमदिशि शीतोदा महानदीथी उत्तरदिशि त्रण अंतरनदी कही

तामाह ॥ तिहीत्यादि ॥ स्रष्टं केवल देशइतिभागः पृथिव्यारद्रप्रभाभिधानायाइति ॥ अहेति ॥ अधः ॥ ओरालिति ॥ उदाराः वादरानिपतेयु विंशसा  
परिणामा क्षतोविचटेयु रग्यतोवागत्य तत्रसंगेयु र्यत्रमुक्तमहोपलवत् ॥ तएणति ॥ ततस्तेनिपतन्तो देशंपृथिव्यासलयेयुरिति पृथिवीदेशसलेदिति म  
होरगोव्यतरविशेषः ॥ महिद्धिह ॥ परिवारादिना यावत्करणात् ॥ महज्जुइए ॥ शरीरादिदीप्ता ॥ महावसे ॥ प्राणतो महानुभागे वैक्रियादिकरणतो ॥ म

खीरोदा सीहसोया श्रुंतोवाहिणी । जंबूमंदरपञ्चल्यिमेणं सीनदाए महाणईए उत्तरेणं तनश्रुंतरणईन  
पसुत्ता तंजहा उम्मिमालिणी फेणमालिणी गंजीरमालिणी । एव धायइखरुदीवपुरच्छिमधेवि श्रुकम्मजू  
मीन श्राठवेत्ता जाव श्रुंतरणदीनत्ति णिरवसेस जाणियव्वं जाव पुस्करवरदीवहुपञ्चल्यिमधे तहेव णिरव  
सेसं जाणियव्वं । तिहिंठाणेहि देसेहिंपुठवीचलेज्जा तजहा श्रुहेणमिमीसे रयणप्पजाए पुठवीए उरालापो  
गगलाणिचलेज्जा तएणं ते उरालापोगगलाणिवत्तमाणा देसंपुठवीए चलेज्जा महोरएवामहिद्धिह जाव महे

तेकहेंछे । ऊर्मिमालिनी फेनमालिनी गंजीरमालिनी ॥ एम धातकीखंडद्वीपे पूर्वार्द्धमा अकर्मजूमिथी माडीने अंतरनदी लगे विशेष रहित  
सघलुं कहियुं यावत् पुष्करवर द्वीपार्द्धमां पश्चिमार्द्धमा पणि तिमज विशेष रहित जाणायु ॥ त्रणप्रकारे देशथी पृथ्वी चले हलै ते कहेंछे । हेठे  
आ रत्नप्रजा पृथ्वीनेविषे औदारिक पुदगल विश्रसा परिणत बीजलीथी आवीने पडै जिम ऊंघाथी मोटी पाखाण हेठे पडै तिम आवी पडै ति  
घारे औदारिक पुदगल पठतांथकां देशथी पृथ्वी चले हलै ॥ महोरग ते व्यंतर विशेष मोटी रिद्धिनो घणी यावत् मोटा सुखनुं घणी आ

हेसक्वे ॥ महेशइत्याख्यायस्येति उन्नमनिमग्निका मुत्पतनिपतां कुतोपि दर्पादेः कारणात् कुर्वन्देशं पृथिव्यास्रयेत् सचचलेदिति ॥ २ ॥ नागकुमाराणां सुपर्णकुमाराणाञ्च भवनपतिविशेषाणां स्मरस्वरं संग्रामेवर्त्तमाने जायमानेसति ॥ देसंति ॥ देशचलेदिति ॥ इच्चेएहिंइत्यादि ॥ निगमनमिति ३ पृथिव्यादेशस्यचलनमुक्त मधुना समस्तायास्तदाह ॥ तिहीत्यादि ॥ स्पष्टं किन्तुकेवलैवकेवलकल्पा ईषदूनताचेहनविवक्ष्यते अतःपरिपूर्णेत्यर्थः परिपूर्णप्रायाचेति पृथिवीभूः ॥ अहेत्ति ॥ अधो घनवात स्तथाविधपरिणामो वातविशेषोगुप्येत व्याकुलोभवेत्तुभ्येदित्यर्थः ततः सगुप्तःसन् घनोदधि तथाविधपरिणामजलसमूहलक्षण मेजयेत्कम्पयेत् ॥ तएणंति ॥ ततोन्तर सघनोदधि रेजितःकम्पितःसन् केवलकल्पां पृथिवींचलयेत् साचचलेदिति देवोवा ऋद्धि स्मरि

सरुके इमीसेरयणप्पन्नाए पुढवीए अहेउम्मज्जाणिमज्जियं करेमाणे देसंपुढवीए चलेज्जा णागसुवन्नाणवा संगामंसिवहमाणंसि देसपुढवीएचलेज्जा इच्चेएहिंठाणेहि केवलकप्पा पुढवीचलेज्जा तंजहा अहेणं इमीसेरयणप्पन्नाए पुढवीए घणवाए गुप्पेज्जा तएणसे घणवाए गुविएसमाणे घणोदहि मेएज्जा सेघणोदहीए एइए

रत्नप्रज्ञा पृथ्वीमां हेठे दर्पथी उत्पततो ऊंचोथातो निपतनकरतो नीचोथातो तिवारे देशथी पृथ्वी चालै ॥ नागकुमार सुपर्णकुमार जवनपति देवताने मांहीमांहि संग्रामयुद्ध थातां देशथी पृथ्वी चालै ॥ एह त्रण थानकै केवल कल्पा आखी पृथ्वी चालै ते कहैछे । हेठे आ रत्नप्रज्ञा पृथ्वीये घनवातगुंजै व्याकुलथाय तिवारे ते ऊपर घनवात त्तोजपामै व्याकुलथाय घनोदधिकापते समस्त रत्नप्रज्ञा पृथ्वी चालै ॥ अथवा को ईक महर्द्धिक देवता यावत् महासुखनुं धणी तथारूप श्रमण माहणने पोतानीरिद्धि परिवार दुगति तेज यश बलशरीरनुं धीर्यजीवनुं पुरुषा

धारादिरूपां द्युतिंशरीरादे र्यशःपराक्रमकृतांख्याति वलंशरीरं वीर्यंजीवप्रभव पुरुषकारंसाभिमानव्यवंसायनिष्पन्नफल म्त्मेवपराक्रममिति वलवीर्याद्यु  
पदर्शनहि पृथिव्यादिवलनविना नभवतीति तद्दर्शय न्ताञ्चलयेदिति देवाश्चैमानिकाइति असुराभवनपतय स्तेषा भवप्रत्ययवैरभवति अभिधीयतेचभगव  
त्वा किपत्तियण भते असुरकुमारा देवा सोहम्न कप्प गयाय गमिस्सतिय गोयमा तेसिण देवाण भवपच्चइए वैराणवधेत्ति ततश्च संग्रामः स्यात्तत्रचवर्त्तमाने  
पृथ्वीचले तत्रतेषा महाआयामत उत्पातनिपातसम्भवादिति ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमनमिति देवाःसुरा' संग्रामकारितया नन्तरमुक्ता स्तेचदशविधा  
इन्द्रसामानिकत्रायस्तिश त्पार्षद्यात्तरज्जकलोकपाजानौकप्रकीर्णका भियोग्यक्किक्खिविकाश्चैकशइतिवचना तन्मध्यवर्त्तिन स्तिस्थानकावतारित्वा क्किक्खिवि  
कानभिधातुमाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ स्फुटं केवल ॥ किक्खिसियत्ति ॥ नाणस्सकेवलीण धम्मायरियस्ससघसाङ्गण । माईअवन्नवाई किक्खिसियभावणकुण

समाणे केवलकप्प पुढविं चालेज्जा । देवेनामहिहिण्ण जावमहेसस्के तहारूवस्स समणस्समाहणस्सवा इहिं  
जुतिं जसं वलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदसेमाणे केवलकप्पं पुढविचालेज्जा । देवासुरसगामंसिवा  
वहमाणसि केवलकप्पा पुढवीचलेज्जा इच्चेएहिहि । तिविहादेवाकिच्चिसिया पन्नत्ता तजहा तिपलितुवम

स्कार अजिमान पराक्रम तेपौरुष थी ऊपनुं ते देखाडवाने समस्त पृथ्वीनें चलावे बलवीर्यनुं देखाडवुं पृथ्वीना चलनविना नथाय ॥ देव वै  
मानिक असुर जवनपति तेहने जवप्रत्यय वैरथी माहोमाहि संग्राम प्रवर्त्ततां समस्त पृथ्वी चलै एह सचली पृथ्वी चालै ॥ त्रणप्रकारे कि  
क्खिष देवता कहिया किक्खिष ते चाडाल सरिखा । तेकहैछे । त्रण पत्थोपमना आज्ञाणा । त्रण सागरोपमना आज्ञाणा । तेरे साग

इति ॥ १ ॥ एवविधभावनोपासं किल्विषपाप मुदयेविद्यते येषान्तेकिल्विषिका देवानामध्ये किल्विषिका पापा अथवा देवाश्चते किल्विषिकाश्चेति दे  
वकिल्विषिका मनुष्येषु चण्डालाश्वा स्पर्शा ॥ उपि ॥ उपरि ॥ हिष्ठति ॥ अधस्तात् ॥ सोहम्मीसाणेसुति ॥ षड्यर्थेसप्तमौ देवाधिकारायात ॥ सकेत्यादि ॥

ठिईया तिसागरोवमठिईया तेरससागरोवमठिईया । कहिस्सज्जते तिपलिउवमठिईया देवा किञ्चिसिया  
परिवसति उपिजोइसियाणं हिठि सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु एत्थणं तिपलिउवमठिईयादेवा किञ्चिसिया परिव  
संति । कहिस्सं ज्जते तिसागरोवमठिईयादेवाकिञ्चिसिया परिवसंति उपिंसोहम्मीसाणाणंकप्पाणं हेठिंस  
णंकुमारमाहिदकप्पेसु एत्थणं तिसायरोवमठिईया देवा किञ्चिसिया परिवसंति । कहिस्संज्जते तेरससागरो  
वमठिईयादेवकिञ्चिसिया परिवसंति उपिं बंजलोयस्सकप्पस्स हिठिं लंतगेकप्पे एत्थण तेरससागरोवमठि  
ईया देवकिञ्चिसिया परिवसति । सक्कास्सणं देविंदस्स देवरस्सो बाहिरपरिसाए देवाणं तिन्निपलिउवमाइं

रोपमना आज्ञाणा ॥ शिष्य पूछेछे हेजगवन् किहां ते त्रण पत्थोपमना आज्ञाणा किल्विष देवता बसैछे । ऊंचा उयोतिसीथी सौधर्म ई  
शान देवलोकथी हेठे ए ठिकाणे एक पत्थोपमना आज्ञाणा किल्विष देवता बसैछे ॥ हेजगवन् किहां त्रण सागरोपमना आज्ञाणा किल्वि  
ष देवता बसैछे । ऊंचा सौधर्म ईशान देवलोकथी हेठा सनत्कुमार माहेद्र देवलोकथी एहथानकै त्रण सागरोपमनी स्थितिना देवता बसैछे ॥  
किहां जगवंत तेरे सागरोपमनी थितिना देवता बसैछे ऊंचा पाचमां ब्रूमह देवलोकथी हेठा छठा लांतक देवलोकथी एहथानकै तेरे सागरोपम

सूत्रत्रय सुगममिति देवीना मनन्तरं स्थितिरुक्ता देवीत्वञ्च पूर्वभवे सप्रायश्चित्तानुष्ठानाद्भवतीति प्रायश्चित्तस्य तद्वताञ्च प्ररूपणायान् ॥ तिविहेत्यादि ॥  
 सूत्रचतुष्टय सुगमं केवल ॥ नाणेत्यादि ॥ ज्ञानायतिचारशुद्ध्यर्थं यदालोचनादिज्ञानादौ नावा योतिचार स्तज्ज्ञानप्रायश्चित्तादि तत्राकालाविनयाध्ययना  
 दयो षावतिचारा ज्ञानस्य शङ्कितादयो षोडशर्षनस्य मूलगुणोत्तरगुणविराधनारूपा विचित्रा चारित्र्येति ॥ अणुग्याइमत्ति ॥ उद्घातो भागपात स्तेन  
 निर्वृत्त मुह्यतिम लब्धित्यर्थः यतउक्त अङ्गेणक्विन्नसेसं पुव्वणेणतुसज्जयकाओ दिज्जाइलहुयदाण गुरुदाणतत्तियंचेवत्ति ॥ १ ॥ भावना मासार्द्धेन क्खिन्नी  
 जातानि पञ्चदशदिनानि ततोमासापेक्षया पूर्वतपः पञ्चविंशतितम तदर्धं सार्द्धं द्वादशक न्तेनसयुतं मासार्द्धं ज्ञातानि सप्तविंशतिदिनानि सार्धानीत्येव

ठिई पस्यत्ता । सक्कास्सणं देविदस्स देवरस्सो अण्णित्तरपरिसाए देवीणं तिसि पलित्ठवमाइं ठिई पस्यत्ता ।  
 ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरस्सो बाहिरए परिसाए देवीण तिसिपलित्ठवमाइं ठिई पस्यत्ता । तिविहे पाय  
 च्छित्ते पस्यत्ते तंजहा णाणपायच्छित्ते दसणपायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते । तन् अणुग्याइमा पन्नत्ता तं०

नी स्थितिना किलिष देवता वसेँछे ॥ शक्र देवेद्र देवताना राजानी बारली पर्षदाना देवतानो त्रण पल्योपमनुं आऊखो कहियो ॥ शक्र देवेद  
 देवतानां राजानी अभ्यतर पर्षदानी देवीनो त्रण पल्योपमनुं आऊखो कहियो ॥ ईशान देवेद्र देवतानां राजानी बाहिरनी पर्षदाना देवतानुं  
 त्रण पल्योपमनुं आऊखो कहियो ॥ त्रणप्रकारे प्रायश्चित्त कहियो तेकहँछे । नाण प्रायश्चित्त काले विणए बहुमाणे इत्यादि । दर्शन प्रायश्चित्त  
 तेशका कांक्षादि आठ प्रकारे । चारित्र प्रायश्चित्त ते मूलगुण उत्तरगुणानी विराधना करै ॥ त्रण अनुघातिम साधु कहिया तेकहँछे । जेहने

कृत्वा यद्वीयते तल्लघुमासदान मेवमन्यान्यपि एतन्निषेधा दनुद्वातिमतपोगुर्वित्यर्थः तद्योगात्साधवोपिवा तथोच्यन्ते हस्तकर्म आगमप्रसिद्धं तत्कुर्वन्तः सप्तमी  
 चेयषश्चर्या तेनकुर्वन्तइतिव्याख्येय मेतेषांच हस्तकर्मादीनां यत्रविशेषेयोऽनुद्वातिमविशेषो दीयते स कल्पादितोवसेय' ॥ पारंचियत्ति ॥ पारन्तीर तपसाअ  
 पराधस्यां चति गच्छति ततोदीच्यतेयः सपारांचो सएवपाराचिकस्तस्ययदनुष्ठान तच्चपाराचिकमिति दशमंप्रायश्चित्तं लिङ्गक्षेत्रकालतपोभि बहिःकरण  
 मितिभाव इहचसूत्रे कल्पभाष्ये इदमभिधीयते आसायणपडिसेवौ दुविहोपारचिओसमासेण एकेकमियभयणा सचरित्तेचेवअचरित्ते ॥ १ ॥ सव्वचरित्त  
 भस्सइ केणविपडिसेविपणउएएण कल्यइविट्ठइदोसापरिणामवहारमासज्ज ॥ २ ॥ तुल्लमिविअवराहे परिणामवसेणहोइनाणत्त कल्यइपरिणाममिवितुल्लेअ  
 वराहनाणत्तं ॥ ३ ॥ तत्रआसातकपाराचिकः तिल्यथरपवयणसुए आयरिएगणहरेमहड्डोए एतेआसायते पच्छित्तेमगणाहोइत्ति ॥ १ ॥ तत्रसव्वेआ  
 सायंतेपावइपारचियंठाणंति ॥ इहचसूत्रे प्रतिसेधकपारांचिकएव त्रिविधउक्त स्तदुक्त पडिसेवणपारंचिय तिविहोसोहोइआणपुव्वीए दुट्ठेय १ पमत्तेय २  
 नेयब्बोअन्नमन्नेय ॥ १ ॥ तत्रदुष्टोदोषवान् कषायतोविषयतश्च पुनरेकैकोडिधा स्वपक्षविपक्षभेदात् उक्तच दुविहोयहोइदुट्ठोइ कसायदुट्ठोयविसयदुट्ठोय दु  
 विहोकषायदुट्ठो सपक्खपरपक्खचउभगो ॥ १ ॥ तत्रस्वपक्षे कषायदुष्टोयथा शर्षपनालिकाभिधानशाकभर्जिकाग्रहणकुपितो मृताचार्यदन्तभञ्जकसाधुः

हत्यं कम्मं करेमाणे मेज्जणसेवमाणे राईजोयणंजुंजमाणे । तउ पारंचिया पन्नत्ता तंजहा दुट्ठेपारंचिए पम

प्रायश्चित्त तप नपामें अयोग्य । हस्तकर्म करतो हस्ते कदर्पनी कुचेष्टा करतो । मैथुन स्त्रीसेवा करतो स्त्रीसुं जोग करतो । रात्रि जोजन कर  
 तो रात्रिये जीमतो ॥ त्रेण पारंचिक तपेकरी अपराधनुं पारपामें ते पारचिक दशमुं प्रायश्चित्त तेकहैछे । दुष्ट पारंचिक तेक्रोध दुष्ट पारचिक



विषयदुष्टसुसाध्वीकामुक स्तत्रचोक्तं लिंगेणलिंगिणीए संपत्तिंजोनिगच्छईपावो सब्बजिणाणंजाव संघोवासाइओतेण ॥ १ ॥ पावाणंपावयरोदिट्ठिफासो  
 विसोनकप्पतिहु जोजिणपुंगवमुहं नमिज्जणतमेवधरिसेइति ॥ २ ॥ संसारमणवयग्ग जाइजरामरणवेयणापउरं पावमलपडलक्खन्ना भमंतिमुद्दाधरिसणे  
 णति ॥ ३ ॥ परपत्तकषायदुष्टसु राजवधको द्वितीयोराजाग्रमहिष्यधिगतेति उक्तच जोयसलिगेदुठ्ठो कषायविसएहिरायवह्मगीय रायग्गमहिसिप  
 डिसे वओयबहुसोपयासोय ॥ १ ॥ प्रमत्तः पञ्चमनिद्राप्रमादवान् मासाशिप्रव्रजितसाधुवदिति अयच सद्गुणोपित्याज्यइति आहच अविकेवलमुप्याडि  
 णय लिगेदेइअणइसेसीसे देशवयदंसणवा गेणहअणिच्छेपलायति ॥ १ ॥ तथा अग्योन्यपरस्पर मुखपायुप्रयोगतो मैथुनकुर्वन् ग्पुरुषयुगमितिशेषः उच्यते  
 आसयपोसयसेवो केविमणस्सादुवेयगाहीति तेसिलिंगविवेगोत्ति ॥ १ ॥ आसेवितातिचारविशेषः सन्ननाचरिततपो विशेषः तद्दोषोपरतोपिमहाव्रतेषु ना  
 वस्थाप्यते नाधिक्रियतइति अनवस्थाप्यं तदतिचारजात तच्छुद्धिरपिचा नवस्थाप्यमुच्यतइति नवमंप्रायश्चित्तमिति तत्रसाधर्मिकाः साधव स्तेपा सत्कस्यो  
 त्कण्टोपधिशिष्यादेवा बहुशोवा प्रद्विष्टचित्तोवा ॥ तेणति ॥ स्तेयचौर्यं कुर्वन् तथा अन्यधार्मिकाः शाक्यादयोऽहस्यावातेषां सत्कस्योपध्यादेः स्तेयकुर्वन्निति

त्तेपारंचिए ण्समसंकरेमाणेपारचिए । तउ णवठया पन्नत्ता तंजहा साहम्मियाणंतेणंकरेमाणे ण्सधम्मि

बीजो विषय दुष्ट पारंचिक गुरुये ज्ञाजी स्वाधी तेमांटे मूत्रां पछे चले दांत पाडया विषयदुष्ट ते साध्वीनां जोगनें बाळें एह खेने पारंचिक प्राय  
 श्चित्त आये पारंचिक ते देश क्षेत्रकाल तप प्रमुखे गच्छथी अलगो करवो ॥ प्रमाद प्रायश्चित्त पाचमी थीणद्धी निद्रावत प्रमादीने माहोमाहि खे  
 पुरुष मैथुन करे मुखचुंयनादि तेहने पारंचिक प्रायश्चित्त आये ॥ अणने अनवस्थाप्य नवमुं प्रायश्चित्त ते दोष सहितने आये तेकहैछे साधमी ।

तथा हस्तेनताडन, हस्तताल स्तम्बलमाणोददन् यष्टिमुष्टिलकुटादिभि र्मरणादिनिरपेक्षआत्मनःपरस्यवा प्रहरन्नितिभाव उक्तं च उक्तीसबहुसीवा पदुष्ट  
चित्तोवलेणियकुण्ड पहरइजोयसपक्वे निरवेक्खोघोरपरिणामोत्ति ॥ १ ॥ अथवा ॥ अत्थादाणंदलमाणोत्ति ॥ पाठः तत्रार्थादान द्रव्योपादानकरण अष्टांग  
निमित्त तद्दन्प्रयुजानइत्यर्थः अथवा ॥ हत्यालबदलमाणेत्ति ॥ पाठस्तत्र हस्तालबद्वय हस्तालवस्तहस्तालवददन् अश्विपुपुरोधादौ तत्प्रशमनार्थं मभि  
चारुकमत्रविद्यादिप्रयुजानइत्यर्थः पूर्वोक्तप्रायश्चित्त प्रजाजनादियुक्तस्य भवति तानिचायोग्यनिरासेन योग्यानाविधेयानीति तदयोग्यान्निरूपयन् सूत्रषट्क  
माह ॥ तन्नीइत्यादि ॥ कण्ठ्य किन्तु पण्डक नपुंसक तत्त्वलक्षणादिनाविज्ञायपरिहर्तव्य लक्षणानिचास्य महिलासहावीसरवन्नभेओ मेहनहतमउडैय  
वाया ससङ्गंमुत्तमफेणगच एयाणिछपडगलक्खणाणि ॥ १ ॥ तथा वातोस्यास्तीतिवातिकः यदा स्तनिमित्ततोन्यथावा मेहनकषायितभवति तदानशक्ती

याणं तेणंकरेमाणे हत्यतालंदलयमाणे । तनु णोकप्पंति पण्णावेत्तए तंजहा पंऊए वाइए कीवे । एवं मुंठावे

साधु तेहनी उत्कृष्टी उपधि तथा शिष्यादि तेहनी चोरीना करनारनें अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त आवे । अन्यमती शाक्यादि दर्शनी तेहनी जे उप  
धि प्रमुख वस्तु तेहनी चोरीकरे तेहने । तथा हस्तताल देतानें मुंठे मुंठे लाकणीये आत्मानें प्रहार करताने परनें पणि मरणनी अपेक्षा नकरै  
त्रण जणाने नकल्पै प्रवृज्या दिक्षादेवी तेकहैछे । पंडक ते नपुंसक जन्मथी । व्याधियोरोगी अथवा वातिक नपुंसक असमर्थ एह सर्व नपुंसकना  
जेदछे तथा एक दृष्टिनपुंसक वस्त्ररहित स्त्रीयादिकने देखी पुरुषविहू गलें । एक शब्दनपुंसक सुरतनो शब्द शाजली गलें । एक निमंत्रणा  
नपुंसक एकाते स्त्रियादिके तेडगोथको वृतराखी नसकै ॥ एहने कदाचित् दीक्षादीधी तो मुंठयो लोचकरवुं नकल्पै । एम आचारादि सीखावुं

ति योवेदंधारयितुं यावन्नप्रतिषेवाकृता सवातिकइति अयञ्च निरुज्येदो नपुसकतयापरिणमति काचित्तु ॥ वाहियति ॥ पाठ स्तत्रव्याधितो रोगीत्यर्थः ।  
तथा क्लौवोऽसमर्थः सचचतुर्था दृष्टिक्लौवगद्क्लौवादिग्धक्लौवनिमन्त्रणक्लौवभेदात् तत्रयस्यानुरागतो विवस्ताद्यवस्थविपक्षं पश्यतोसेहनगलति सदृष्टि  
क्लौवः यस्यतु सुरतादिशब्दशृङ्खलतः सद्वितोयः यस्तु विपक्षेणानगूढो निमन्त्रितोवा व्रतरचितं नशक्नोति सप्रादिग्धक्लौवो निमन्त्रितक्लौवयेति चतुर्विधोऽप्यय  
निरोधेन नपुसकतयापरिणमतीति वातिकक्लौवयोस्तु परिज्ञान तयोस्तन्मिनादीनांवा कथनादेरिति विस्तरश्चात्र कल्पादेरवसेयः एतेचो क्लौवेदतया  
व्रतपालनासहिष्णवइति नकल्पन्ते प्रव्राजयितुं प्रव्राजकस्याप्याज्ञाभगेन दीपप्रसङ्गादित्युक्ताच जिगवयणेपडिक्कुट्ट जीपव्वाविद्ग्लोभदीप्तेण चरणद्विभोतवस्मी  
लोवेदतमेवउवचरित्तंति ॥ १ ॥ इहचयो प्रव्राज्याउक्ता स्तिस्थानकानुरोधा दन्यथान्येपि तेसतियदाह बालेबुद्धेनपुसेय जडेकीवेयवाहिए तेणेरायावगारौय  
उम्भत्तेयअदंसणे ॥ १ ॥ दीप्तेदुष्टेअमूढेअ अणत्तो जुगिएइय उव्वइएयभयए सेहनिप्फेडियाइय ॥ २ ॥ शुब्बिणीवालवच्छाया पब्बाविप्पोनकप्पइत्ति ॥ १ ॥  
अदंसणोअधः अणत्तोत्तणपीडितः जुगिओजात्यंगहीनः उव्वत्तओ विद्यादायकादिप्रतिजागरकः सेहनिप्फेडिओ अपहत्तइति एवमित्यादि यथैते प्रव्रा  
जयितुं नकल्पन्ते एवमेतएव कथंचित् कलितेन प्रव्राजिताअपिसंतो मुडयितुं शिरोलोचेन नकल्पन्ते उक्तांच पब्बाविप्पोसियत्ति [ यःस्यादित्यर्थः ] मुंडा  
वेडंअणायरणजोगो अह्वामुंडावित्ते दोसाअणिवारिणापुरिमत्ति ॥ १ ॥ एवमिचयितुं प्रत्युपेक्षणादिसामाचारीं ग्राहयितुं तथा उपस्थापयितुं महाव

त्तए सिस्कावेत्तए उवठावेत्तए संजुंजित्तए संवासित्तए ।

नकल्पे । पच महाव्रत थापवा नकल्पे । उपधि आहारनुं संजोग जागकरयुं आपवुं नकल्पे । पासे बेसयुं रहयु काईनथी सूभे जेमाटे तेहनी

तेषु व्यवस्थापयितुं तथा सम्भोक्तुं सुपध्यादिनाएव मनाभोगात् संभुक्तान् सम्बासयितुं आत्मसमीपे आसयितुं नकल्पंतइति प्रक्रमतइति कथंचि त्संवासि  
ताअपि वाचनाया अयोग्या नवाचनीया तानाह ॥ तत्रोइत्यादि ॥ सुगम नवर नवाचनीयाः सूत्रनपाठनीया अतएवार्थमप्यथावणीया सूत्रार्थस्य  
गुरुत्वात् तत्राविनीत सूत्रार्थदातुर्वन्दनादिविनयरहित तत्राचनेहिदोषा. यतउक्त इहरहविनाणघञ् इ अविणोओलंभिओकिमुसुएण माण्डेनासिहिई ख  
एवखारोवसेगोओ ॥ १ ॥ गोजूहस्सपडागा सयपलायस्सवडुयइवेग दोसोदएयसमण नहोइननियान्तुल्लं च ॥ १ ॥ निदानतुल्यमेवभवतीत्यर्थ. विणयाहीया  
विज्जा देइफलइहपरेयलोगमि नफलइअविणयगहिया सस्साणिवतोयहौणाइति ॥ १ ॥ तथाविकृतिप्रतिबद्धो घृतादिरसविशेषगृद्धो ऽनुपधानकारोति  
भाव' इहापिदोषएव यदाह अतवीनहोइजोगो नयफलएहिच्छियफलविज्जा अविफलतिविडलमगुण साहणहौणाजहाविज्जति ॥ १ ॥ अव्यवसित म  
नुपशातं प्राभृतमिवप्राभृत नरकपालकौशलिकपरमक्रोधी यस्यसोव्यवसितप्राभृत. उक्तच अप्पेविपारमाणि अवराहेवयइखामियतच बहुसोउदौरयतो  
अविओसियपाहुडोसखडुत्ति ॥ १ ॥ पारमाणि परमक्रोधसमुद्घातं व्रजतीतिभाव' एतस्य वाचने इहलोकत स्यागो ऽस्यप्रेरणाया कलहनात् प्रातदेव

तत्तुं अवायणिज्जा पस्सत्ता तंजहा अविणीए विगइपफिवद्धे अविनसियपाहुद्धे ।

संगतिथी चारित्र नपालै ॥ त्रण अवाचनीय एतलें वाचना देवाने अयोग्य कहिया तेकहैकै । अविनीत बंदनादि विनय रहितने सूत्र जणाववूं  
नथी । विगय घृतादिकरस प्रतिबद्ध तेहमा गृद्ध ते उपधानादि तप नकरिसके तेमाटे एचारित्र पालवा अयोग्य । अव्यवसित प्राभृत ते महा  
क्रोधी घणी रीसचढै तेपणि अवाचनीय जणावाने अयोग्य एह त्रणने दीधुं श्रुत निष्फल थाय ऊपर खेतमा जिम बीज ॥ त्रण वाचना देवाने

ताछलनाच परलोकतोपित्वाग' तत्र शुतस्व दत्तस्य निष्फलत्वा दूपरक्षिप्तबीजवदित्याह च दुविहीउपरिष्ठाओ इहचोयणकलह १ देवयाछलगं २ प  
रलोगमियअफल खित्तपिवजसरेवीयति ॥ १ ॥ एतद्विपर्ययसूत्र सुगम शुतदानस्या योग्याउक्ता इदानींसम्यक्तस्याप्ययोग्यानाह ॥ तओइत्यादि ॥ कण्ठ  
किन्तु दुःखेनकुच्छेण सज्जाप्यगते प्रज्ञाप्यगते बोध्यतइति दुःसज्जाप्या स्तत्रदुष्टो दिष्टस्तत्वप्रज्ञापकवाप्रति सचाप्रज्ञापनोयो द्वेषणोपदेशाप्रतिपत्तेः एवमूढो  
गुणदोषानभिज्ञ व्युद्गाहितः कुप्रज्ञापकदृढीकृतविपर्यास सोऽप्युपदेश नप्रतिपद्यते उक्तञ्च पुब्बकुग्गाहियाकेइ वालापडियमाणिणो शेच्छंतिकारणसोउ  
दीवजाएजहानरेत्ति ॥ १ ॥ एतेषाचस्वरूप कत्तपात्कथा कोशा चावसेयमिति एतद्विपर्ययस्थान् सुसज्जाप्यतयाह ॥ तओइत्यादि ॥ स्फुटमिति ॥ उक्ता. प्रज्ञा

तउ कप्पंतिवाइत्तए तंजहा विणीए अविगइपफ़िवछे विन  
सियपाज्जछे । तउ दुसस्सप्पा पस्सत्ता तंजहा दुठे मूढे वुग्गा  
हिए । तउ सुसन्नप्पा पस्सत्ता तजहा अदुठे अमूढे अवुग्गाहि

श्रुत ज्ञणावधाने कल्पे सूक्ष्मे तेकहैछे । विनीत विनयवंत । विगयमा गृह्णन्थी रसनं लोलुपन्थी तप उपधान करवाने समर्थ । व्यवसित प्राभृत  
क्रोधरहित क्षमावत ते ज्ञणावधा योग्य नाण आपवा योग्य ॥ हिवे सम्यक्त योग्य कहैछे । त्रण दुखथी समभावा योग्यछे कष्टथी समभावा  
योग्य उपराठा द्वेषधरे तेकहैछे । दुष्ट द्वेषी तत्त्वना कहनारने । मूढ, ते गुणदोषनुं अजाण । व्युद्गाहित अन्यमतीये पोतानुमत समभावी दृढ  
कीधु एहने समभावु कष्टथी थाय समभावी नसकै ॥ त्रणने सुखथी धर्म समभावी सकै तेकहैछे । द्वेष रहितने । तत्त्व अतत्त्वना जाणने । अ

पनार्हाः पुरुषाः अधुना तत्प्रज्ञापनीयवस्तूनि त्रिस्थानकावतारौख्याह ॥ तत्रोमंडलित्यादि ॥ मण्डलचक्रवाल न्तदस्तिषेधाते माण्डलिकाः प्राकारवल  
यवदवस्थिताः मानुषेभ्यो मानुषचेत्रादोत्तरतः परतोवर्त्ती मानुषोत्तरइति तत्स्वरूपचेद पुक्खरवरदौवहु परिक्खिवइमाणुसुत्तरोसेलो पायारसरिसरूवो  
विभयन्तोमाणुसलोग ॥ १ ॥ सत्तरंसएगवीसाइ जोयणसयाइसोसमुब्बिडो चत्तारियतीसाइ मूलेकोसचओगाढो ॥ २ ॥ दसवीसाइअहेवि च्छिन्नोहोइ  
जोयणसयाइ सत्तयतेवीसाइ विच्छिन्नोहोइमज्झमि ॥ ३ ॥ चत्तारियचउवीसे वित्थारोहोइउवरिसेलस्स अट्टाइज्जेदौवे दोयसमुद्देशणपरौइत्ति ॥ ४ ॥ त  
था जवुदोवो १ धायइ २ पुक्खरदौवोय ३ वारुणिवरोय ४ खीरवरोचियदौवो ५ वयवरदौवोय ६ खोयवरो ७ ॥ १ ॥ नदौसरोय ८ अरुणो ९ अरुणो  
वाओय १० कुडलवरोय ११ ॥ तहसख १२ रुयग १३ भुयवर १४ कुसकुचवरो १५ तओदौवो ॥ १ ॥ इति क्रमापेक्षया एकादशेकुण्डलवराख्ये द्वीपे प्राका  
रकुण्डलाकृतिः कुण्डलवरइति तद्रूपमिदं कुण्डलवरस्समज्जे णगुत्तमोहोइकुडलोसेलो पागारसरिसरूवो विभयतोकुंडलंदौव ॥ १ ॥ बायालीससहस्से उ  
ब्बिडोकुंडलोहवइसेलो एगचेवसहस्स धरणियलमहेसमोगाढो ॥ २ ॥ दसचेवजोयणसए वावीसेवित्थडोयमूलमि सत्तेवजोयणसए वावीसेवित्थडोमज्जे  
३ ॥ चत्तारिजोयणसए चउवीसेवित्थडोउत्तिहरतलेत्ति ॥ तथा त्रयोदशे रुचकाख्ये द्वीपे कुण्डलाकृती रुचकइति एतस्यत्विदस्वरूप रुयगवरस्सउमज्जे नगु

ए । तउ मंळलियपह्णया पस्सत्ता तंजहा माणुसुत्तरे कुंळलवरे रुयगवरे । तउ महइमहालया पस्सत्ता तंजहा

न्यमतीये जरमाव्योनयी तेहनेधर्म सुखयी समभावीसके ॥ त्रण पर्वत मंळलीक कोटनीपरें चक्रवाल वलय सरिया कहिया तेकहैछे । मानुषोत्तर  
पर्वत पुष्करार्द्धने फरतोछे । कुंडल पर्वत मडलाकारे कुंडलद्वीपमाछे । रुचक पर्वत तेरमा रुचकवर द्वीपमांछे एह त्रण मोटा पर्वत कहिया ॥

॥ त्तमोहोद्वपव्वओरुयगो पागारसरिसरूवी रुयगंदीवंबिभयमाणो ॥ १ ॥ रुयगस्यउरसेहो चउरासीदंभवेसहस्रादं एगचेवसहस्रं धरणियलमहेसमोगाढो  
२ ॥ दसचेवसहस्राखलु वावीसाजोयणाणवोधव्वा मूलमियविक्वंभो सोहीओरुयगसेलस्स ॥ ३ ॥ तथा मध्यविस्तारोऽस्य सप्तसहस्राणि द्वाविंशत्यधिकानि  
शिरोविस्तारस्तु चत्वारिसहस्राणि चतुर्विंशत्यधिकानीति मानुषोत्तरादयो महातउक्ताइति महदधिकारा दतिमहतआह ॥ तओमहईत्यादि ॥ व्यक्त  
केवल मतिमहातयते आलयायाअयाअतिमहालया महातयते अतिमहालयायेति महतिमहालयाः अथवा लयइत्येतस्य स्वार्थिकत्वात् महातिमहात  
इत्यर्थः द्विरुच्चारणञ्च महच्छब्दस्य मन्दरादौना सर्वगुरुत्वस्थापनार्थं अव्युत्पन्नोवायमिति महदर्थेवर्त्ततइति ॥ मदरेसुत्ति ॥ मेरुणामध्ये जम्बूद्वीपकस्य सा  
तिरेकलचयोजनप्रमाणत्वा च्छेषाणा चतुर्णां सातिरेकपञ्चाशीतियोजनसहस्रप्रमाणत्वा तेषा तस्यच क्रमेण किञ्चिद्यूनाधिकरज्जुपादप्रमाणत्वादिति ब्र  
ह्मलोकसुमहान् तदप्रदेशे पञ्चरज्जुप्रमाणत्वा ल्लोकविस्तरस्य तत्प्रमाणतयाचविवक्षितत्वात् ब्रह्मलोकस्येति अनन्तर ब्रह्मलोकस्य कल्पउक्तइति कल्पशब्दसाध  
र्मात् कल्पस्थितिनिर्वाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वय कव्य केवल समानि ज्ञानादौनि तेषा मायोलाभः समायः सएवसामायिक सयमविशेष स्तस्य तदे

जंबूद्वीपमंदरे मंदरेसु सयजुरमणेसमुद्देसमुद्देसु बंजलोएकप्पेकप्पेसु । तिविहा कप्पठिई पप्पत्ता तंजहा

वली त्रण महामोटा आलय कहिया तेकहैछे । जंबूद्वीपमा मेरुछे ते सघला मेरुथी मोटो बीजा चार मेरु पंच्यासी हजार योजननाछे अनं  
जंबूद्वीपनी मेरु लाख योजन ऊचोछे तेमाटे मोटो । असख्याता समुद्रमा छेहलो स्वयभूरमण समुद्र मोटो वेपासे थईने अर्द्धराजनुछे । वारे  
देवलोकमां बूम्ह पाचमु देवलोक तेमोटुं पांचराज पिहुलोछे तेमाटै ॥ त्रणप्रकारे कल्पशब्दना सदृश पणायी कल्पस्थिति कही ते कहैछे । कल्प

ववाकल्पः करणमाचारो यथोक्त सामर्थ्यवर्णनायाच्च करणेच्छेदेनेतथा औपम्येचाधिवासेच कल्पशब्दंजिदुर्बुधाइति ॥ १ ॥ सामायिककल्पः सचप्रथमचरमती-  
र्थयोः साधूना मल्यकाल श्छेदोपस्थापनीयसद्भावात् मध्यमतीर्थेषु महाविदेहेषुच यावत्कथिकः छेदोपस्थापनीयाभावात्तदेव न्तस्यावस्थिति मर्यादा सामा-  
यिककल्पस्थितिः साच शय्यातरपिण्डपरिहारे चतुर्यामपालने पुरुषज्येष्ठत्वे वृहत्पर्यायस्ये तरेण वन्दनकदानेच नियमलक्षणा शुक्लप्रमाणोपेतवस्त्रापेक्षया  
यदचेलत्व तथा धार्कर्मिकभक्ताद्यग्रहणे १ राजपिण्डाग्रहणे ३ प्रतिक्रमणकरणे ४ मासकल्पकरणे ५ पर्युषणाकल्पकरणेवा नियमलक्षणाचेति उक्तंच सि-  
ज्जायरपिडेया १ चाउज्जामेय २ पुरिसजेठेय ३ किइकम्मस्सयकरणे चत्तारिअवट्ठियाकप्पा ॥ १ ॥ अचेलकु १ हेसिय २ सपडिक्कमणेय ३ रायपिडेय ४ मास  
५ पज्जोसवणा ६ कप्पेअणवट्ठियाकप्पा ॥ १ ॥ तत्रा चेलकत्वमेव दुविहोहोइअचेलो असंतचेलोयसतचेलोय तत्थअसतेहिजिणा सताचेलोभवेसेसा ॥ १ ॥  
सौसावेडियपोत्तं नइउत्तरणमिनगायवेति जुत्तेहिनगियमिह तुरसालियदेहिमेपोत्ति ॥ १ ॥ जुत्तेहिखडिण्हि असव्वतणुपाउण्हिनयनिच्च सतेहिंविनि  
गथा अचे लयाहोतिचेलोहि इत्यादि तथायः पूर्वपर्यायच्छेदेनोपस्थापनीय मारोपणीय छेदोपस्थापनीय व्यक्तितो महाव्रतारोपणमित्यर्थः तच्च प्रथमपञ्चि-  
मतीर्थयोरेवेति शेषाव्युत्पत्ति स्तथैवतत्स्थितिश्चोक्तलक्षणेष्वेव दशसुस्थानकेष्व वश्यपालनलक्षणेति तथाहि दसठाण्ठिओकप्पो पुरिमस्सयपच्छिमस्सयजिण-  
स्स एसोधुयरयकप्पो दसठाणपडिओहोइति ॥ १ ॥ अचेलकुहेसिय २ सेज्जायर ३ रायपिंड ४ किइकम्मे ५ वय ५ जेठ ७ पडिक्कमणे ८ मास ९ पज्जोसवणकप्पो

सामाइयकप्पठिई वेदोवठावणियकप्पठिई णिच्चिसमाणकप्पठिई । अहवा तिविहा कप्पठिई पस्सत्ता

ते आचार कहिये । सामायिक चारित्रिनी स्थिति आचार प्रथमचारित्रि ससद्भाव । प्रथम पर्यायनुं छेदकरी पंचमहाव्रत आरोपवा ते छेदोपस्थाप



त्ति १० ॥ १ ॥ निर्विशमाना ये परिहारविशुद्धितपो भुवन्ति परिहारिकाइत्यर्थः तेषां कल्पे स्थिति र्यथा श्रीमशीतवर्षाकालेषु क्रमेणतपो जघन्य चतु  
 र्षषष्टाष्टमादि मध्यम षष्टादी न्युत्कृष्ट मष्टमादीनौति पारणेचा याम एवं पिण्डेषणासप्तकोचा दयोरग्रहएवेति पचसु पुनरेकयामभक्त मेकयाचपानक मि  
 त्येव द्वयोरभियहइति उक्तच दशश्रद्धदसकृद् अष्टेवकृद्चउरोय उक्तोसमज्जिमजह नगाउवासासिसिरगिम्हे ॥ १ ॥ पारणगेआयाम पंचसुगहोदोसुभि  
 गहोभिक्वेत्ति ॥ १ ॥ निर्विष्टा आसेवितविवक्षितचारित्रा अनुपरिहारिकाइत्यर्थं तत्कल्पस्थितिर्यथा प्रतिदिन मायाममात्रं तपोभिचा तथैवेति उक्तच  
 कप्पट्टियाविपद्दिण करंति एमेवचायामति ॥ एतेच निर्विशमानका निर्विष्टाश्च परिहारविशुद्धिका उच्यन्ते तेषांच नवकोगणोभवति तेच एवविधाः सव्वे  
 चरित्तवतोउ दसणेपरिनिष्ठिया नवपुब्बियाजहन्नेणं उक्तोसादसपुब्बिया ॥ १ ॥ पचविहेववहारे कप्पमिदुविहंमिय दसविहेयपच्छित्ते सव्वेतेपरिणि  
 ठ्ठिया ॥ २ ॥ इत्यादि जिनाः गच्छनिर्गतसाधुविशेषा स्तेषा साधुविशेषाणा कल्पस्थिति जिंनकल्पस्थितिः साचैवं जिनकल्पहि प्रतिपद्यते जघन्येनापि  
 नवमपूर्वस्य तृतीयवस्तुनिसति उक्तृष्टतस्तु दशस्तु भिन्नेषु प्रथमेसहनने दिव्याद्युपसर्गरोगवेदना आसौ सहते एकाक्केवभवति दशगुणोपेतस्थण्डिलएवो

तंजहा णिविष्ठकप्पठिई जिणकप्पठिई थेरकप्पठिई । णेरइयाणं तत्तुं सरीरगा पस्सत्ता तंजहा वेउट्ठिए

नीय चारित्र कल्पस्थिति बीजुंचारित्र प्रथम चरम तीर्थंकरने वारेहोय वावीसने वारे नहोय । निर्विशमान कल्पस्थिति तेपरिहार विशुद्धि चा  
 रित्र जे नवजणा गच्छमाथी नीकली तपकरे ॥ अथवा वली त्रणा कल्पस्थिति कही तेकहैछे । निर्विष्ट कल्पस्थिति तेपणि परिहार विशुद्धि चारि  
 त्रज । जिनकल्पस्थिति जिनकल्पी परिहार विशुद्धि पछे जिनकल्पीथाय । अथवा थविर कल्पीमां आवे श्रीजी थविर कल्पस्थिति ॥ कल्पस्थिति

शारादिजोर्णवस्त्रादिष्व ल्यजति सर्वोपधिविशुद्धा अभिजातया तृतीयपौरुष्यां पिण्डेऽप्युत्तरा मायाना मेततरेऽपि विजरीनामकल्पेन तन्माभेयवीष्यां प  
 ट्टिनेभिजाटनमिति एव प्रजाराचेय सुगमवयनेत्यादिक्तात् गावाममूलात् कल्पोक्ता दशगतयेति भणितव गच्छमित्यनिम्नायाधोराजोद्विगमभियपरमत्या  
 भग्नहजोगभिमग्न उधेतिजिणकपियनरित्ति ॥ १ ॥ पश्ये प्रादयो रभियदे पाना पिण्डेऽप्युत्तरां दयो रोगे दयोर्मध्ये एकतरस्या गृहीतपरमा  
 र्यां धिश्चलियातमूरा नितोगरुडाउतेवुरिममोडा जनवीरिममवणा उमग्नपरोमनापभोरुयति ॥ १ ॥ स्यारिा पाचार्यादयो गच्छप्रतिपदा स्तेपां  
 कल्पस्थितिः स्यारिक्तल्पस्थितिः साच पञ्चजामिकताय मलयगङ्गापनिर्गतामो निषत्तोयविहारो सामाधारोद्विचेव ॥ १ ॥ इत्यादिकेति इहच  
 सामाधिकेसतिष्ठेद्रोपस्यापनोय तत्रच परिहारिगुडिकभेदरूप निर्गमानक तदनन्तरं निर्गमकान्त तदनन्तरं जिनकल्प स्यारिक्तल्पोक्त भवतीति  
 सामाधिककल्पस्थित्यादिकमूवयो क्रमोपन्यासइति उक्तकल्पस्थितिव्यतिक्रामिणीपि नारकादिगरोरिणीभवतीति तच्छरीरनिरूपणायाह ॥ नेरश्यामि  
 त्यादि ॥ दण्डकः कण्ठः किन्तु ॥ एवंसञ्चदेवाणति ॥ यत्र प्रमुराणा धीणि शरीराणि एयनागकुमारादिभानपतिव्यन्तरस्योतिक्त्वैमानिकाना एवं ॥  
 वाउक्ताइयवज्जाणति ॥ वायूनाहि आहारकपर्जानि चत्वारिगरोराणोति तदजन्तमेवपञ्चेन्द्रियतिरयामपि चत्वारि मनुष्याणान्तु पञ्चापोति तदहनदयिताः

तेयए कम्मए । असुरकुमाराणं तन्न सरीरगाचेव एवं सव्वेसिदेवाणं । पुढविकाडयाणं तन्न सरीरगा पणत्ता

जे अतिक्रमे तेनारकीनुं शरीरपामे तेकहैछे । नण शरीर नारकीने कटिया तेकहैछे । वैत्तिप तेजम कामणशरीर ॥ एम असुरकुमार प्रमुखने  
 नण शरीर कटिया तेकहैछे । एम सर्व देवताने व्यतर ज्योतिपी वैमानिकने । पृथ्वी कायना जीवनें शरीर कटिया तेकहैछे । औदारिक ते

कल्पस्थितिव्यतिक्रामिणस्य प्रत्यनीकाप्रपि भवन्तीति तानाह ॥ गुरुमित्यादि ॥ सूत्राणि षट् व्यक्तानि किन्तु गृह्यात्यभिधत्ते तत्त्वमिति गुरु स्तं प्रतीत्याभि  
 त्यप्रत्यनीकाः प्रतिकूलाः स्थविरो जात्यादिभि रेतत्प्रत्यनीकताचैवं जगद्ब्रह्मिण्यवसविभसद्ब्रह्मनयाविउववाए अहिभीच्छिद्दोही पगासवादीअण्णलोमो  
 ॥ १ ॥ अहवाविवएएवं उवएसपरस्सदेति एवतु दसविह्वेयावक्के कायव्वसयनकुव्वंतित्ति ॥ २ ॥ गतिर्मानुषत्वादिका तत्रेहलोकस्य प्रत्यक्षमानुषत्वलक्षणपर्या  
 यस्य प्रत्यनीक इन्द्रियार्थप्रतिकूलकारित्वा त्यज्ञाग्नितपस्त्रिय दिहलोकप्रत्यनीकः परलोको जन्मान्तर तत्प्रत्यनीक इन्द्रियार्थतत्परो द्विधालोकप्रत्यनीक  
 सौर्यादिभि रिन्द्रियार्थसाधनपरः यद्वा इहलोकप्रत्यनीक इहलोकोपकारिणां भोगसाधनादीना सुपद्रवकारी हलोकप्रत्यनीक एव ज्ञानादीना सुपद्रवका  
 री परलोकप्रत्यनीक उभयेषान्तु द्विधा लोकप्रत्यनीकइति अथवे हलोको मनुष्यलोकः परलोकोनारकादिः उभय मेतदेव द्वितयं प्रत्यनीकतातुतद्वितयप्ररू

तंजहा उरालिए तेयए कम्मए । एवं वाउकाइयवज्जाणं जावचउरिंदियाण । गुरुंपफुच्च तत्तं पफिणीया प०  
 त० अयारियपफिणीए उवज्जायपफिणीए थेरपफिणीए । गइंपफुच्च तत्तं पफिणीया प० तं० इहलोयपफिणीए

जस कामेण ॥ एम वायु काय छाडीनें जेमांटे वायुकायनें च्यार शरीरहोय यावत् चउरेद्रीलगे सर्वने त्रण शरीर होय ॥ थविर कल्पस्थिति गुरु  
 नें आश्रे ते अतिक्रमे ते प्रत्यनीकपणे होय तेकहैछे । त्रण प्रत्यनीक कहिया तेकहैछे । आचार्यनुं प्रत्यनीक जे अवर्णवाद बोले । उपाध्यायनुं प्र  
 त्यनीक जे उपाध्यायनुं अवर्णवाद बोले । थविर त्रण प्रकारें तेहना अवर्णवाद बोले द्विद्र पेखै ॥ मनुष्य गतिनी आश्री त्रण प्रत्यनीक कहिया  
 तेकहैछे । आचार्यनुं प्रत्यनीक । उपाध्यायनुं प्रत्यनीक । थविरनो प्रत्यनीक ॥ मनुष्यगति आश्रीने त्रण प्रत्यनीक कहिया ते कहैछे । इहलोक

पणेति कुलचान्द्रादिकं तत्समूहो गणः कोटिकादि स्तत्समूहः सङ्ग इति प्रत्यनीकता चैतेषां अवर्णवादादिभिरिति कुलादिलक्षणं चेदं एत्यकुलं विज्ञेयं एगाय  
रियस्ससतईजाओ तिगहकुलाणमिहोपुण सावेक्खाणगणोहोइ ॥ १ ॥ सम्बोविनाणदसण चरणगुणविभूसियाणसमणाण समुदाओपुणसंधो गुणसमुदाओ  
त्तिकाजण ॥ २ ॥ अनुकपा सुपष्टम प्रतीत्या श्रित्य तपस्वीचपकः ग्लानो रोगादिभि रसमर्थः शैवो ऽभिनवप्रव्रजित एतेह्य नुकम्पनीयाभवन्ति तदकरणा  
करणाभ्यांच प्रत्यनीकतेति भावः पर्यायः सच जीवाजीवगत स्तत्रजीवस्य प्रशस्तोऽप्रशस्तश्च तत्र प्रशस्तः चायिकादिः अप्रशस्तोविवक्षयौदयिकः चायिका  
दिश्च ज्ञानादिरूपः ततोभाव ज्ञानादिकं प्रत्यनीक स्तेषां वितथप्ररूपणातो दूषणतोवा यथा पाययसुत्तनिवद्ध कोवाजाणेइपणीयकेणेय किचाचरणेणत

परलोयपफिणीए दुहउलोगपफिणीए । समूहंपफुच्च तउपफिणीया पन्नहा तंजहा कुलपफिणीए गणपफि  
णीए सघपफिणीए । ञ्णुकपंपफुच्च तउ पफिणीया पस्रहा तंजहा तवस्सिपफिणीए गिलाणपफिणीए

तेमनुष्य जवनुं प्रत्यनीक अग्यानपणे शरीरने कष्टआपे पचाग्निसाधे । परलोक ते जन्मातर तेहनं प्रत्यनीक इन्द्रियार्थ विषय सेवै । तेहथी दु  
र्गतिमां जाय । इहलोक परलोक बेनुं प्रत्यनीक तेचोरी प्रमुखनुं करनार ॥ समुदाय आश्री त्रण प्रत्यनीक कहिया ते कहैछे । कुलनुं प्रत्यनीक  
ते एक कुलना एक आचार्यनी परपराना यती । गण प्रत्यनीक त्रणकुल एक समाचारीना तेहनं समुदाय ते गण । चतुर्विध संघनुं प्रत्यनीक ॥  
अथवा नाणादि गुणसहित सर्वसाधु समूह तेसंघ ॥ अनुकपा जक्ति आश्री त्रण प्रत्यनीक कहिया ते कहैछे । तपस्वीनु प्रत्यनीक तपस्वीना अप  
गुण बोलै । ग्लान रोगीनु प्रत्यनीक रोगीनें संतापै । शिष्य नवो दीक्षित तेहनु प्रत्यनीक जक्ति नकरे चेलानी जक्तिनु लाज छे ॥ जाव ते म

દાળેણવિણાઉકિંહવદ્ધતિ ॥ ૧ ॥ સૂત્રવ્યાખ્યેયં અર્થસ્તદ્વાસ્થાનં નિર્યુક્ત્યાદિઃ તદુભયં દ્વિતયમિતિ તદ્વાત્યનીકતા કાયાવવાયતેષ્વિય તેચેવપમાયઅપ્પમાયા  
 ય મોહાહિગારિયાણં જોતિસજોષોહિક્કિક્કમિત્યાદિ ॥ ૧ ॥ દૂષણોજ્ઞાવનમિતિ ઉક્તાકચ્છલિતિ ગંભેજમનુજાનામેવ તચ્છરોરંચ માતાપિટ્થેતુકમિતિ  
 તયોસ્તદગેષુ હેતુલેવિભાગમાહ ॥ તત્રોપિયગેત્યાદિ ॥ સૂત્રદય કચ્છલેવલ પિતુર્જનકસ્યા ગાન્ધવયવા, પિત્રગાનિ પ્રાયઃશુકપરિણતિરૂપાણીત્યર્થઃ અસ્થિપ્ર  
 તોત ૧ અસ્થિમિચ્છા અસ્થિમધ્યરસ ૨ કેગાયશિરોજા, સ્મશુચકૂર્ચરોમાણિચ કન્તાદિજાતાનિ નલાયપ્રતૌતાઃ કેશસ્મશુરોમનલમિત્યેકમેવ પ્રાયઃસમાનત્વા  
 દિતિ માત્રગાનિ આર્ત્તવપરિણતિપ્રાયાણીત્યર્થઃ માસપ્રતૌત શોણિતરક્ત મસુલિગ શેષં મેદપિપ્પિસાદિ કપાલમધ્યવર્ત્તિભેદ્યકમિત્યેકે પૂર્વોક્તસ્યવિરકલ્પ

સેહપઢિણીણ ૧ જાવંપઢુચ્છ તત્તં પઢિણીયા પસસતા તંજહા ણાણપઢિણીણ દસણપઢિણીણ ચરિત્તપઢિણીણ ૧  
 સુયપઢુચ્છ તત્તં પઢિણીયા પસસતા તજહા સુત્તપઢિણીણ ચુત્તપઢિણીણ તદુત્તયપઢિણીણ ૧ તત્તં પિતિયગા  
 પસસતા તંજહા ચુઠ્ઠી ચુઠ્ઠિમિજા કેસમસરોમનહે ૧ તત્તંમાડયગા પસસતા તંજહા મંસે સોણિણ મત્યુલિંગે ૧

નના શુજ્ઞાશુજ્ઞપર્યાય આશ્રીનેં ત્રણ પ્રત્યનીક કહિયા તેકહેહે ૧ નાણ પ્રત્યનીક જે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપે ૧ દર્શન પ્રત્યનીક ધર્મ કરતો શંકા આંશે  
 મિથ્યા જાણે ૧ ચારિત્ર પ્રત્યનીક ચારિત્ર પાલવાળી સ્યું થાયહે ॥ સૂત્ર સિદ્ધાત આશ્રીને ત્રણ પ્રત્યનીક તેકહેહે ૧ સૂત્ર પ્રત્યનીક જેકહે જણવા  
 થી સ્યું થાયહે ૧ અર્થ પ્રત્યનીક સોટૂ અર્થ કહે ૧ સૂત્ર ગને અર્થ બેનુ પ્રત્યનીક ॥ પૂર્વે કલ્પસ્થિતિ કહી તેગર્જજ મનુષ્યનેહીય તેમનુષ્ય શરીર  
 મા ત્રણ પિતાના અગ કહિયા તેકહેહે ૧ અસ્થિ તેહાઠ ૧ હાડનુ મધ્યરસ ૧ ચાલ દાઢી મૂલ રોમ નલ ॥ ત્રણ માતાના અગ કહિયા ૧ માસ

स्थितिप्रतिपन्नस्य विशिष्टनिर्जरा कारणान्यभिधातुमाह ॥ तिहीत्यादि ॥ सुगमं नवर स्मृती निर्जरा कर्मक्षयलक्षणा यस्य स तथा मह त्रयस्तु मात्यतिकं वापर्यवसान पर्यवः समाधिमरणतो ऽपुनर्मरणतो वा जीवितस्य यस्य स तथा अत्यन्त शुभाशयत्वादिति एव ॥ समणसत्ति ॥ एव सुकलक्षण त्रय स इति साधु मणसत्ति ॥ मनसा ऋस्वत्व प्राक्ततत्वा देव ॥ सवयसत्ति ॥ वचसा ॥ सकायसत्ति ॥ कायेनेत्यर्थः सकारागमः प्राकृतत्वादेव त्रिभिरपि कारणैरित्यर्थः अथ

तिहिं ठाणेहि समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ तंजहा कयाणं अहं अप्पं वा वज्जंवा सुयं अहिज्जिस्सामि । कयाणं महमेकल्लविहारपप्पिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सामि । कयाणं महमपच्छि ममारणंतियसंलेहणाजूसणाजूसिए जत्तपाणपप्पियाइस्सिए पानुवगंए कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि । एवसमणसा सवयसा सकायसा पागळेमाणे णिग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ । तिहिं ठाणेहिं

लोही । मस्तु लिग तेमेदकाल जुंजेचो कहैछे ॥ कल्पस्थिति रहै तेहने निर्जरा होय तेमांटे निर्जरानुं स्वरूप कहैछे । त्रण थानके अमणसाधु महानिर्जरा कर्मक्षय मोटो पर्यवसान तेसमाधि मरणादि सुगति साधनते होय ते कहैछे । किवारे हु थोडुं अथवा घणुं श्रुत जणस्युं एहवुं मनमा चिंतवतो महानिर्जरा करे । किवारे हु एकल विहारीनी प्रतिमा द्रव्यथी एकलो जावथी पणि एकलापणुं राग द्वेष रहितपणुं एकपणुं अगी कारकरी विचरस्युं एम चिंतवतो महानिर्जरा करै । किवारे हुं अपश्चिम मारणातिक संलेखणा सेवना सेवीस जातपाणीनुं निषेधकरी पा दपोपगमन अणसणकरी कालमरण अणबाढतो एहवो थई विचरीस रहीस एम चितवतो महानिर्जरा करै ॥ एहवुं वचनसहित मनसहित

॥ वा ॥ समनसेत्यादि ॥ प्रधारयन् तत्पर्यालोचयन् क्वचित् ॥ पागडेमाणेति ॥ पाठ स्तवप्रकटयन् व्यक्तीकुर्वन्नित्यर्थः यथाश्रमणस्यतथा श्रमणोपासकस्यापि  
॥ श्रीणिनिर्जराकारणानीति दर्शयन्नाह ॥ तिहीत्यादि ॥ कण्ठ्यम् अनन्तर कर्मनिर्जरोक्ता साच पुद्गलपरिणामविशेषरूपेति पुद्गलपरिणामविशेष मभिधा

समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ तंजहा कयाणमहमप्पंवा वज्जञ्चंवा परिग्गहं परिचइस्सामि  
कयाणं च्हं मुंढे जवित्ता च्छगारान्णगारियं पत्तयिस्सामि । कयाणं अपच्छिममारणंतिथसंलेहणाजूसणा  
जूसिए जत्तपाणपफियाइरिक्खिए पानुवगए कालमणवकंखमाणेविहरिस्सामि । एवं समणसा सवयसा सका  
यसा जागरमाणे समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ । तिविहे पोग्गलपफिघाए प० तंजहा

कायासहित प्रधारयन् प्रगट करतो चित्तवतो निग्रंथ साधु मोटीनिर्जरानुं धणीथाय मोटुं पर्यवसान समाधिपावै ॥ त्रण प्रकारे श्रमणनुं उपा  
सक तेआवक मोटी निर्जरा महापर्यवसाननु धणीथाय तेकहैछे । किवारे हुं थोडो अथवा घणुं परिगृह छाडस्यु एहवुं चित्तवे । किवारे हुं  
दीक्षालेईस द्रव्यजावथी मुडथईस गृहस्थावासमुंकी अणगारपणुंलेई प्रवृज्या लेईस एम चित्तवै । किवारे हुं अपश्चिम छेहली सराणी संलेखना  
अणसराणी संवनासहित थकी जात पाणीनुं पचखाणकरी पादपोषगमने कालप्रति अणबांछतो एहवोथई विचरिस एहवुं चित्तवतो महानिर्जरा  
करै ॥ मनसहित वचनसहित कायासहित एहवुं प्रगट करतो एहवी जावना जावतो श्रमणोपासक आवक मोटीनिर्जरा मोटापर्यवसाननुं धणी  
थाय ॥ त्रणप्रकारें पुदगल परमाणु प्रमुखनुं प्रतिघात तेखलन कहियो तेकहैछे । परमाणु पुदगल बीजा परमाणु पुदगल प्रतिपामीने ह्णायै

तुमाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ पुद्गलानां मखादीनां प्रतिघातः स्वलन पुद्गलप्रतिघातः परमाणुश्चासौ पुद्गलश्च परमाणुपुद्गलः सतदन्तरंप्राप्य प्रतिहन्येत गते प्रतिघातमापद्येत रूक्षतयावा तथाविधपरिणामान्तराद्गतितः प्रतिहन्येत लोकान्तेवा परतो धर्मास्तिकाया भावादिति पुद्गलप्रतिघातश्च सचक्षुरेव जानातीति तन्निरूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ प्रायः कण्ठ्यम् चक्षुर्लोचन तद्द्रव्यतोच्चि भावतो ज्ञानं तद्यस्यास्तीति सतद्योगाश्चक्षुरेव चक्षुष्मानित्यर्थः सच त्रिविधश्चक्षुः संख्याभेदात्तत्रैक चक्षुरस्येत्येकचक्षु रेव मितरावपि छादयतीति छद्म ज्ञानावरणादि तत्रतिष्ठतीति छद्मस्थः सच यद्यप्यनुत्पन्नकेवलज्ञानं सर्वं एवोच्यते तथापीहातिशयवत् श्रुतज्ञानादिविवर्जितो विवक्षितइति एकचक्षुरिन्द्रियापेक्षया देवो विचक्षुश्चक्षुरिन्द्रियावधिभ्यां उत्पन्नमावरणक्षयोपशमेन ज्ञानञ्च श्रुतावधिरूपं दर्शनचावधिदर्शनरूपं योधारयति वहति सतथा एवभूतः सः त्रिचक्षुश्चक्षुरिन्द्रियपरमश्रुतावधिभिरिति वक्तव्यस्यात् सहि साक्षादे

परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलंपप्पपफिहंमेज्जा लुक्कत्ताएवापफिहंमेज्जा लोगंतेवापफिहंमेज्जा । तिविहे चरक्कू पप्पत्ते तंजहा एगचरक्कू विचरक्कू तिचरक्कू । ठउमत्थेणमणुरस्से एगचरक्कू देवे विचरक्कू तहारूवे समणे

गतिनुं प्रतिघातं थाय एकथी बीजो हणाये । लूखापणथी हणाये लूखापणथी आगोचाली सकेनथी । लोकांतने विषे हणायें परमाणु चालतो लोकातेजाय आगो अलोकमां जाईसकैनथी धर्मास्तिकायना अजावथी ॥ त्रणप्रकारे चक्षुकहियो तेकहैछे । द्रव्यथीचक्षु लोचन जावथी चक्षु नाण एकचक्षु वेचक्षु त्रणचक्षु । छदमस्थ मनुष्य ते श्रुत नाणादि रहित तेएकचक्षु । द्रव्य नेत्रसहित । देवताने वेचक्षु एक द्रव्यचक्षु बीजो श्रुत अवधि रूपचक्षु । तथारूप श्रमणसाधु उत्पन्नथयो जेनाण और दर्शन तेहनुं धरणहार तेहने त्रणचक्षु कहिये एक द्रव्यनेत्र बीजो परमश्रुतनाण परमाव



वावलोकयति हेयोपादेयानि समस्तवस्तूनि केवलीत्विह नव्याख्यातः केवलज्ञानदर्शनलक्षणचक्षुर्हयकलानासम्भवेपि चक्षुरिन्द्रियलक्षणचक्षुषः उपयोगाभा-  
वेनासत्कल्पनया तस्य चक्षुस्त्वयं न विद्यत इति कृत्वेति द्रव्येन्द्रियापेक्षया तु सोपि न विरुध्यत इति चक्षुष्मानन्तरमुक्तं स्तस्य चाभिसमागमो भवतीति तन्मि-  
' ग्मेदेन विभजयन्नाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ अभीत्यर्थाभिमुख्येन न तु विपर्यासरूपतया समितिसम्यक् न संशयतया तथा आमर्षादया गमनमभिसमागमो वस्तुप-  
रिच्छेद इहैव ज्ञानभेदमाह ॥ जयाणमित्यादि ॥ अइसेसत्ति ॥ शेषाणि छद्मस्थज्ञानान्यतिक्रान्त मतिशेषं ज्ञानन्दर्शनं न तच्च परमावधिरूपमिति सम्भाव्यते  
केवलस्य न क्रमेणोपयोगो येन तत्प्रथमतयेत्यादि सूत्रमनवयं स्यादिति तस्य ज्ञानादेरुत्पादस्य प्रथमता तत्प्रथमता तस्याः ॥ उडुंति ॥ ऊर्ध्वलोकमभिसमेति  
समभिगच्छति जानाति ततस्तिर्यगिति तिर्यग्लोकं ततः तृतीये स्थाने अध इत्यधोलोकं मभिसमेति एव च सामर्षा त्प्राप्तमधोलोको दुरभिगमः क्रमेण पर्य-

वा माहणेवा उपपन्नणाणदंसणधरे सेणंतिचस्कुत्ति वत्तव्वंसिया । तिविहे अजिसमागमे पन्तत्ते तंजहा उहं  
अहं तिरियं । जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अइसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जइ सेणं तप्पठ

धिनाण एव त्रणचक्षु केवलीनी इहां विवत्तानथी जेमाटे केवली समस्त पदार्थं साक्षात् देखेछे ॥ त्रणप्रकारे अजिसमागम कहियो सत्यपणे वस्तु-  
नं जाणवुं ते अजिसमागम तेकहैछे । ऊर्ध्व ऊचो अधोहेठो तिर्यग् तिरछो ॥ जिवारे तथारूप शुद्धचारित्र युक्त श्रमण माहन तेहनें उत्कण्ठ-  
नाणदर्शन उपजै इहा परमावधि नाणदर्शन जाणवा केवलनाणानी विवत्तानुं संजवनथी केवलनाणानु क्रमथी उपयोगनथी तेमांटे तेपरमावधि प्रथ-  
म उपजता ऊर्ध्वलोकैजाय एतले ऊर्ध्वलोकनें जाणे देखै । तिवारपछी तिरछोलोक देखै जाणै । तिवार पछी अधोलोक तेदुरजिगमछे अधोलोक

न्ताधिगम्यत्वादिति हेतुमणायुष्मन्निति गौतमामंत्रणमिति अनन्तरमभिसमागमउक्तः सच ज्ञान गतञ्च ऋद्धिरिहैववक्ष्यमाणत्वादिति ऋद्धिसाधर्म्याद्भेदाना  
 ह ॥ तिविहाइडोइत्यादि ॥ सूत्राणि सप्त सुगमानि नवर न्देवस्येंद्रादेः ऋद्धिरैश्वर्यं न्देवर्द्धिं रेवराञ्चक्रवर्त्यादे गणिनो गणाधिपते राचार्यस्येति विमा  
 नाना विमानलक्षणावा ऋद्धिः समृद्धिर्हान्निश्लक्षणादिकं बाहुल्य महत्व रत्नादिरमणीयत्वचेति विमानर्द्धिर्भवति च द्वात्रिंशलक्षणादिक सौधर्मादिषु विमा  
 नबाहुल्य यथोक्त वत्तीसठावीसा वारसत्रयचतुरोसयसहस्रा आरेणबभलोगे विमाणसखाभवेएसा ॥ १ ॥ पचासचतुश्चैव सहस्रालतसुकसहस्रारे सय  
 चतुरोआणयपा णएसुतिवारणसुयए ॥ २ ॥ एकारसुत्तरंहे द्विमेसुसत्तत्तरचमज्जिमए सयमेगडवरिमए पचेवअणुत्तरविमाणत्ति ॥ ३ ॥ उपलक्षणचैतत्  
 भवननगराणामिति वैक्रियकरणलक्षणाऋद्धिर्वैक्रियऋद्धिर्वैक्रियशरीरैर्हि जम्बूद्वीपद्वय मसख्यातान्वा द्वीपसमुद्रान् पूरयन्तीत्युक्तञ्च भगवत्या चमरेणभते

मयाए उहमज्जिसमेइ तनतिरियं तनपच्छा अहे अहोलोगेणं दुरज्जिगमे पन्नत्ते समणाउसो । तिविहा इह्वी  
 पन्नत्ता तजहा देविह्वी राइह्वी गणिह्वी । देविह्वी तिविहा पन्नत्ता तजहा विमाणिह्वी विगुह्विणिह्वी परि

पदार्थ दोहिलो जाणिये तेमाटे अनुक्रमे छेहडे जाणवुं कहियो । हेतुमणायुष्मन् । नाण तेरिद्विछे तेमाटे रिद्धिकहैछे त्रणप्रकारे रिद्धि कही ।  
 देवर्द्धि इन्द्रादिकनी रिद्धि । राजरिद्धि तेचक्रवर्त्यादिकनी । गणि तेआचार्य गच्छाधीश तेहनी रिद्धि ॥ त्रणप्रकारे देवरिद्धिकही ते कहैछे । वि  
 मानर्द्धि तेवत्तीसलाख विमाननुं आधिपत्य । बीजी विकुर्वणारिद्धि जे वैक्रियरूप करवा इन्द्र वैक्रियरूप करे तो जंबूद्वीप बनें अथवा असख्याता  
 द्वीप समुद्रजरे एतला वैक्रियरूपकरे एतली शक्तिछे पणि कीधानथी करैनथी करस्येनथी । परिचारणर्द्धि तेदेवागनाथी जोगकरवुं वैक्रियरूप

केमहिडिण जाय केयइयचणं पभूविउव्वित्तए गोयमा चमरेणजाय पभूणं केवलकप्पं जंजुहीवंदीवं वल्लहिंअसुरकुमारेहिंदेवेहिं देवीहिंय आइअं जाव करेत्तए अदुत्तरचण एत्तचमरे जाव तिरियमसंखेज्जदीवसमुद्दे बल्लहिं प्रसुर कुमारेहिं देवेहिं देवीहिंय आइअं जाव करेत्तए एसणं गोयमाचमरस्स ३ अयमेयारूवे विसयमेत्ते बुद्धिं नोचेवणं सपत्तीए विउव्विंसु ३ एव सक्के दोविकेवलकप्पे जंजुहीवेदीवे जावआइअंकरेज्जन्ति ॥ परिचारणा कामसेवात दृष्टिः अन्यान्देवानन्यसत्त्वादेवीः स्वकीयादेवीरभियुज्या त्मानंच विकृत्य परिचारयतीत्येव मुक्तलक्षणेति १ सचित्ता स्वशरीराग्रमहिष्यादिविषया सचेतनव स्तुसपत् अचेतना वस्ताभ रणादिविषया मिश्रा अलघुतदेव्यादिरूपा २ अतियानं नगरप्रवेश स्तवत्तिडि स्तोरणहृदयोभाजनसम्पर्दादिलक्षणा निर्याणं नगरान्निर्गम स्तव ऋषिः हस्तिकल्पनसामन्तपरिवारादिका २ बलचतुरंगवाहनानि येगसरादीनि कोशोभाण्डागारं कोष्ठाधान्यभाजनानि तेषामगार

यारणिही । अहवादेविही तिविहा पन्नत्ता तंजहा सचित्ता अचित्ता मीसिया । राइही तिविहा पन्नत्ता तंजहा रम्भोअइयाणिही रम्भोणिज्जाणिही रम्भोबलवाहणकोसकोष्ठागारिही । अहवा राइही तिविहा प०

करै जोगने अर्थ ॥ अथवा देवतानीरिद्धि त्रणप्रकारें कही तेकहैछे । सचित्तरिद्धि पोतानुं शरीर । अचित्तरिद्धि वस्त्राभरणादि । मिश्ररिद्धि अ लंकृतदेवी प्रमुखनुरूप ॥ राजरिद्धि त्रणप्रकारें कही तेकहैछे । राजाने नगरप्रवेशनी रिद्धि तोरण हृदय शोभा लोकनो समर्प जोवामिलै तेअति यानरिद्धि । राजानें नगरथी नीकलवुं हाथी घोडा पालादि परिवाररिद्धि तेनिर्याणरिद्धि । राजानो बलचतुरंग हाथी घोडा रथ पायक वा हन पालखी प्रमुख कोश जंठार कोष्ठागारनी रिद्धि ॥ अथवा त्रणप्रकारे राजानीरिद्धि तेकहैछे । सचित्त स्वशरीर हाथी राणी प्रमुख । अचि

बृहगेहंकोष्ठागारंधान्यगृहमित्यर्थः तेषान्तान्येववाऋद्धिर्यासातथा ४ सचित्तादिकापूर्ववद्भावनीयेति ५ ज्ञानर्द्धिर्विशिष्टश्रुतसम्पत् दर्शनर्द्धिः प्रवचनेनिश्चि-  
 क्षितादित्वं प्रवचनप्रभावकशास्त्रसम्पदा चारित्रर्द्धिः निरतिचारता ६ सचित्ताशिष्यादिका अचित्तावस्थादिका मिथ्या तथैवेति इहच विकुर्वणादिऋद्धयोन्ये-  
 षामपि भवन्ति केवलन्देवादीनांविशेषवत्यस्ताइति तेषामेवोक्तइति ऋद्धिसङ्गावेव गौरवभवतीति तद्भेदानाह ॥ तत्रोगारवेत्यादि ॥ व्यक्तं परं गुरोर्भावः  
 कर्मवेतिगौरव तच्चदेधाद्रव्यतोवज्रादेर्भावतोऽभिमानलोभलक्षणा शुभभावतआत्मनस्तत्र भावगौरव त्रिधा तत्रऋद्ध्या नरेन्द्रादिपूजालक्षण्या आचा-  
 र्यत्वादिलक्षण्या वाभिमानादिद्वारेण गौरव ऋद्धिगौरव ऋद्धिप्राप्त्यऽभिमानप्राप्तिप्रार्थनाद्वारेणात्मनोऽशुभोभावो भावगौरवमित्यर्थ एवमन्यत्रापि नवरं-  
 रसोरसनेन्द्रियार्थो मधुरादिः सात सुखमिति अथवा ऋद्ध्यादिषु गौरवमादरइति अनन्तरं चारित्रर्द्धिरुक्ता चारित्र्यचरणमिति तद्भेदानाह ॥ त्रिविहे

सचित्ता अचित्ता मीसिया । गणिह्री त्रिविहा पन्नत्ता तजहा णाणिह्री दंसणिह्री चरित्तिह्री । अहवा  
 गणिह्री त्रिविहा प० त० सचित्ता अचित्ता मीसिया । तज गारवा पन्नत्ता तजहा इह्रीगारवे रसगारवे

तत्त्वसुवर्णादि आभरणवस्त्रादि । मिश्र अलंकृत राणी प्रमुखनी ॥ गणी आचार्यनी रिद्धि त्रणप्रकारे ते कहैछे । नाण संपदा । दर्शन ते सम-  
 कितनी रिद्धि जिनवचनमाश्रयनी । चारित्ररिद्धि तेपंचमहावृत ॥ अथवा त्रणप्रकारे गणीनी रिद्धि तेकहैछे । सचित्त शिष्यादिकनी रिद्धि  
 अचित्त वस्त्र पात्रादिकनी । मिश्र तेवस्त्रादि सहित शिष्य ॥ रिद्धि गारवेपामें गारवज्जार कहिये तेद्रव्यथी वस्त्रादि ज्ञावथी अजिमान लोभरूप  
 तेकहैछे । त्रण प्रकारें गारव रिद्धिनुगारव रिद्धि पामी अहंकारकरै । मधुरादि जलारस पामी अहंकार करै तेरसगारव । सुख साता पामी

त्यादि ॥ कृतिः करणमनुष्ठान स्तच्च धार्मिकादिस्वामिभेदेन त्रिविधं तत्र धार्मिकस्य संयतस्येदं धार्मिकमेवमितरं नवरं मधार्मिकी असंयतं स्तृती योद्देशसंयतं, अथवा धर्मोभव धर्मोवा प्रयोजनमस्येति धार्मिकं विपर्यस्तमितरत् एवढतोयमपोति धार्मिककरणमनन्तरमुक्तं तच्च धर्ममेवेति तद्भेदानाह ॥ त्रिविहेत्यादि ॥ स्पष्टं केवलं भगवता महावीरेणेत्येव जगाद् सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिनः प्रतीतिः सृष्टुकालविनयादाराधनेनाधीतं गुरुसकाशात् सूत्रतः पठितं स्वधोतं तथा सृष्टुविधिना ततएव व्याख्यानेनार्थतः श्रुत्वा ध्यातुं मनुप्रेक्षितं श्रुतमिति गम्य सुध्यातुं अनुप्रेक्षणाभावे तत्त्वानवगमेनाध्ययनश्रवणयोः प्रायोऽक्ततार्थत्वादिति अनेन भेदद्वयेन श्रुतधर्मोक्तं स्तथा सृष्टु इहलोकाद्याशसारहितत्वेन तपसितं तपस्यनुष्ठानं सुतपसितमिति चारित्रधर्म उक्तइति त्रयाणामप्येषा सुत्तरोत्तरतोऽविनाभाव दर्शयति ॥ जयाइत्यादि ॥ व्यक्तं परं निर्दोषाध्ययनं विना श्रुतार्थाः प्रतीतेः सुध्यातुं नभवति तदभावे ज्ञानविकल

सातागारवे । त्रिविहे करणे पन्नत्ते तजहा धम्मिएकरणे अधम्मिएकरणे धम्मियाधम्मिएकरणे । त्रिविहे जगवयाधम्मे पन्नत्ते तजहा सुत्थहिज्जिए सुज्जाइए सुतवस्सिए । जया सुत्थहिज्जियंजवइ तदा सुज्जाइयं

अहंकारकरै तेसातागारव ॥ पूर्वं चारित्र कहियो तेकरण तेहना जेद कहैछे । त्रण प्रकारे करण । करण तेक्रिया अनुष्ठान करवुं तेकहैछे । धार्मिक करण तेसयती साधुनी क्रिया । असयती आरज्जी मिथ्यात्वीनी क्रिया करण ते अधार्मिक करण । संयता संयतनी आवकनी क्रिया ते धर्माधर्म करण ॥ सुधर्मास्वामी जबूप्रति कहैछे । जगवत महावीर स्वामीये त्रणप्रकारे धर्मकहियो ते कहैछे । स्वाधीत जे काल विनयादि आराधवे गुरुपासे त्रणुं तेसुअधीत । जलीविधिये अर्थथी श्रुत सांजल्यो तेसुध्यात । इहलोकादि सुखनी आशंसा बाछा रहित तपक्रिया की जे ते सुतपसित ॥ एह चारित्रधर्म जिवारे निर्दोष भणवुहोय तिवारे निर्दोष अध्ययन श्रुतना अर्थनुं सुध्यान होय तत्त्वग्यान होय अध्ययन

तथा सुतपसितं नभवतीतिभावः यदेतत् संधीतादित्रयं भगवता वर्द्धमानस्वामिना धर्मः प्रज्ञप्तः ॥ सेत्ति ॥ स स्वाख्यातः सुष्टूक्तः सम्यग्ज्ञानक्रियारूपत्वात् तयो श्रैकान्तिकात्यतिकसुखावन्ध्योपायत्वेन निरुपचरितधर्मत्वात् सुगतिधारणाद्वि धर्म इति उक्तञ्च नाणपगासयसोह ओतवोसजमीयगुत्तिकरो तिण्हपिसमाओगो मोक्खोजिणसासणेभणिओत्ति ॥ १ ॥ एमिति वाक्यालङ्कारे सुतपसितमिति चारित्रमुक्तं तच्च प्राणातिपातादिविनिवृत्तिस्वरूपमिति तस्याः भेदानाह ॥ तिविहेल्यादि ॥ व्यावर्त्तन व्यावृत्तिः कुतोपि हिंसाद्यवद्या निवृत्तिरित्यर्थः साच याज्जस्य हिंसादे हेतुस्वरूपफलविदुषो ज्ञानपूर्विकाव्यावृत्तिः सातदभेदात् ॥ जाणुत्ति ॥ गदिता यात्वज्जस्याज्ञानात् सा ॥ अजाणू ॥ इत्यभिहिता यातुविचिकित्सातः सशयात् सा निमित्तनिमित्तिनोरभेदा द्विचिकित्से त्यभिहिता व्यावृत्ति रित्यनेनानन्तर चारित्रमुक्तं न्तद्विपक्षञ्चा शुभाध्यवसायानुष्ठाने इतितयो रधुनाभेदानपि देशत आह ॥ एवमित्यादि

जवइ । जया सुज्जाइयं जवइ तथा सुतवरिसयं जवइ । से सुञ्चहिज्जिए सुज्जाइए सुतवरिसए सुयस्काएणं जगवया धम्मो पस्सत्ते । तिविहा वावत्ती पस्सत्ता तंजहा जाणू अजाणूं वितिगिच्छा । एवमज्जोववज्जणा

विना श्रुतनां अर्थनो ध्याननहोय । जिवारे सुध्यान सुग्यानहोय तिवारें सुतपसित होय अनें नाण विन्नाण विकलपणें सुतपसित जलुंतपनहोय । तेहज सुअधीत सुध्यान सुतपसित एह त्रण स्वाख्यात जलीरीते कहिया सम्यग्नाण क्रियारूप मांटे जगवान महावीर स्वामीये एह धर्मकहि यो ॥ तपते चारित्ररूप तंचारित्रादि प्राणातिपातादि विरतिरूप तेहनां भेद कहैछे । त्रण प्रकारे व्यावृत्ति कही हिंसादिकथी निवृत्ति कही तेकहेछे । हिंसानां फलने जाणी हिंसाथी निवर्त्त तेजाणू । विना जाणया अनाणथी निवर्त्त तेअजाणू । जंसयथी निवर्त्त हिंसादिकथी कोण

सूत्रे एवमिति व्यावृत्तिरिव त्रिधा ॥ अज्झोववज्जणत्ति ॥ अधुपपादनं कचिदिन्द्रियार्थे अधुपपत्ति रभिष्वंगद्वयर्थः तत्र जानतो विषयजन्यमनर्थं या तत्रा  
 धुपपत्ति सा ॥ जाणू ॥ यात्वजानतः ॥ साअजाणू ॥ यातुशयवतः साविचिकित्सेति ॥ परियावज्जणत्ति ॥ पर्यापादनं पर्यापत्तिरासेवेति यावत्साप्येव  
 मेवेति ॥ जाणत्ति ॥ ज्ञः सच ज्ञाना त्स्यादित्युक्तं ज्ञान चातीन्द्रियार्थेषु प्रायः शास्त्रादिति शास्त्रभेदेन तद्भेदानाह ॥ तिविहेअतेइत्यादि ॥ अमन मधिगमन  
 मतपरिच्छेदं सूत्रलोको लोकशास्त्रं तत्कृतत्वात्तदध्येयत्वाच्चार्यशास्त्रादि तस्मादन्तोर्निर्णयस्तस्यवा परमरहस्यं पर्यन्तोवेति लोकान्त एवमितरावपि नव  
 र वेदा ऋगादयः समयाः जिनादिसिद्धान्ताइति अनन्तर समयान्तउक्तः समयश्च जिनकेवल्यहंच्छब्दवाच्यै रूतः सम्यग्भवतीति जिनादिशब्दवाच्यभेदानभि  
 धातु त्रिसूत्रीमाह ॥ तओजिणेइत्यादि ॥ सुगमा नवरं रागद्वेषमोहान् जयन्तोति जिनाः सर्वज्ञाः उक्तच रागद्वेषस्तथामोहो जितोयेनजिनोह्यसौ अस्त्री  
 शस्त्राक्षमालत्वा दर्हनेवानुमीयतइति ॥ १ ॥ तथा जिना इव ये वर्तन्ते निश्चयप्रत्यक्षज्ञानतया तेपिजिना सूत्रावधिप्रधानो जिनो वधिज्ञानजिन एव

परियावज्जणा । तिविहे अते प० तं० लोगते वेयंते समयंते । तउं जिणा पस्सत्ता तंजहा उहिनाणजिणे  
 मणपज्जवनाणजिणे केवलनाणजिणे । तउं केवली प० तंजहा उहिनाणकेवली मणपज्जवनाणकेवली केव

जाणो पापछे किनथी पणिनकीजै एह वित्तिगिच्छा ॥ एम अज्झोवज्जणा ते इन्द्रियनां विषय वर्जवा तेत्रणजेदै इमज विषय सेवानुं वर्जवुं ते परि  
 आवज्जणा इमज जेदजाणावा तेकहैछे ॥ त्रणप्रकारे अत लोकात तेलोक चउदहराजनुं छेहडो । वेदात ते च्यारवेदनुं रहस्य तत्व तेहज अत ।  
 समय जे जिनप्रणीत सूत्र तेहनुं रहस्य ॥ त्रणप्रकारे जिनकहिया । अवधिनाण जिन अवधिनाण सहित । मनपर्यवनाण च्यार नाणसहित जे

मितरावपि नवर मायावुपचरिता वितरो निरुपचार उपचार कारणन्तु प्रत्यक्षज्ञानित्वमिति केवलमेकमनंतं पूर्णं वा ज्ञानादियेषामस्ति तेकेवलिन उक्तं च कसिणकेवलकप्प लोगजाणतितहयपासंति केवलचरित्तनाणी तम्हातेकेवलीहोति ॥ १ ॥ इहापि जिनवद्व्याख्या अहंति देवादिकतां पूजा मित्यहंत अथवानास्ति रहः प्रच्छन्नं किचिदपि येषां प्रत्यक्षज्ञानित्वा ते अहन्तः शेष प्राग्वत् एते च सलेश्या अपि भवन्तीति लेश्याप्रकरणमाह ॥ तओइत्यादि ॥ सुगम नवरं ॥ दुग्धिगधाओत्ति ॥ दुरभिगन्धादुर्गन्धा दुरभिगधत्वच तासां पुद्गलात्मकत्वा त्पुद्गलादीनां च गन्धादीनामवश्यं भावादिति आह च जहगोमडस्सगंधो सुणगमडस्सवजहाअहिमडस्स एत्तोविअणतगुणो लेसाणअप्पसत्थाणति ॥ १ ॥ नामानुसारी चासा वर्णः कपोतवर्णालेश्या कापोतलेश्या धूम्रवर्णेत्यर्थः ॥ सुधि गधाओत्ति ॥ सुरभिगंधयः आह च जहसुरभिकुसुमगंधो गधावासाणपिस्समाणाणं एत्तोअणंतगुणो पसत्यलेसाणतिगहपित्ति ॥ १ ॥ तेजोवह्नि स्तद्वर्णाले

लनाणकेवली । तन्नं चरहा पस्सत्ता तंजहा न्हिनाणचरहा मणपज्जवनाणचरहा केवलनाणचरहा । तन्नं लेस्सानं दुग्धिगंधानं प० तं० करहलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । तन्नं लेस्सानं सुग्धिगंधानं पन्नत्तानं तं०

जिन । केवलनाण जिन पांच नाण सहित तेजिन ॥ त्रणप्रकारे केवली कहिया ते कहैछे । अवधिनाण केवली । मनःपर्यवनाण केवली । केवलनाण केवली ॥ त्रण अरिहंत कहिया ते कहैछे । अवधिनाणी अरिहत । मनपर्यवनाणी अरिहंत । केवलनाणी अरिहत ॥ यह अरिहंता दि लेश्यासहित होय तेमांटे लेश्यास्वरूप कहैछे । त्रण लेश्या दुर्गंध माठा गधनीकही लेश्या पुदगलात्मकछे पुदगल नेगंधहीय ते कहैछे । कण्ठा लेश्या जहगोमडस्सगंधोइत्यादि । नीललेश्या सुणगमडस्स । कापोत लेश्या जहाअहिमडस्स ॥ त्रण लेश्या सुगंध रूडागधनीकही ते कहैछे ।



स्या लोहितवर्णेत्यर्थः तेजोलेश्येति पद्मगर्भवर्णालेश्या पीतवर्णेत्यर्थः पद्मलेश्या शुक्ला प्रतीता एवंकरणाद्यथमसूत्रवत् तत्रोदित्याद्यभिलापेन शेषसूत्राण्यध्येतव्या  
 नीति तत्र दुर्गति नरकतिर्यग्रूपा गमयन्ति प्राणिनमिति दुर्गतिगामिन्यः सुगति देवमनुष्यरूपा संक्षिप्ता सक्तेश्चेतुत्वादिति विपर्ययः सर्वत्र सुज्ञानः अम  
 नोज्ञा अमनोज्ञरसोपेतपुद्गलमयत्वात् अविशुद्धा वर्णतोऽप्रशस्ता अश्वेयस्योऽनादेया इत्यर्थः शीतरूक्षाः स्पर्शतः आद्याः द्वितीया सुस्निग्धोष्णाः स्पर्शत एवेति  
 अनन्तर लेश्या उक्ता अधुना तद्विशेषितमरणनिरूपणायाह ॥ तिविहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टय बालोन्न स्तद्वयोवर्त्तते विरतिसाधकविवेकविकलत्वात्सबालो सं  
 यत स्तस्य मरण बालमरण एवमितरे केवलंपडिधातोर्गत्यर्थत्वेनज्ञानार्थत्वा द्विरतिफलेन फलवद्विज्ञानयुक्तत्वात् पण्डितो बुद्धतत्त्वः संयत इत्यर्थः तथा

तेउ पम्हा सुक्कलेस्सा । एवं त्तिदुग्गइगामिणीउ तिसुगइगामिणीउ । तउ संकिलिठानु अंसंकिलिठानु  
 अमणुनानु सुमणुनानु अविमुद्धानु विमुद्धानु अप्पसत्यानु पसत्यानु सीअलुक्कानु सिणिष्ठुरहानु । तिवि

तेजोलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या ॥ जहसुरज्जिकुसुमगधो गधावासाणापिस्समाणाणं सत्त्वोविअणंतगुणो पसत्थलेस्साणातिन्नंपि ॥ १ ॥ पहिली  
 त्रणलेश्या दुर्गतिआपे नरकतिर्यचनी गतिआपे । आगली त्रणलेश्या सुगतिआपे मनुष्य देवतानी गतिआपे । पहिली त्रणसकिलेश देवे आगली  
 त्रणअसकिलेश सुखदेवे । पहिली त्रण मनोहरतथी माठा रसनी । आगली त्रण जलारसनी । पहिली त्रण अविशुद्ध वर्णथी मलिन । आगली  
 त्रणनिर्मल । पहिली त्रण अप्रशस्त अनादेय । आगलीत्रण आदेय । स्पर्शथी शीतने लूत । आगली त्रण स्निग्ध उन्नस्पर्शथी । लेश्या विशेषे  
 मरण कहैछे । त्रणप्रकारे मरण कहियो तेकहैछे । बालमरण अनाशी अविरतीनुं मरण । पडितमरण नाणयुक्त विरतीनु मरण । बाल पडितमरण

अविरतत्वेन बालत्वात् विरतत्वेनचपण्डितत्वा बालपण्डितः संयतासंयत इति स्थिता अवस्थिता अविशुद्धान्य संक्लिश्यमानाच लेश्या कृष्णादि र्यस्मिन् त  
 त् स्थितलेश्यसंक्लिष्टा संक्लिश्यमाना सक्लेशमागच्छन्तीत्यर्थः सालेश्या यस्मिन् त तथा पर्यवाः पारिशेष्या द्विशुद्धिविशेषा. प्रतिसमयंजाता यस्यां सातथा  
 विशुद्ध्या वर्द्धमानेत्यर्थः सा लेश्यायस्मि स्तत्तथेति अत्र प्रथम कृष्णादिलेश्यः सन् यदा कृष्णादिलेश्येष्वेव नारकादिषूत्पद्यते तदा प्रथम भवति यदातु  
 नीलादिलेश्यः सन् कृष्णादि लेश्येषूत्पद्यते तदा द्वितीयं यदा पुनः कृष्णादिलेश्यः सन् नीलकापोतलेश्येषूत्पद्यते तदातृतीय उक्त चान्यद्वयसवादि भगव  
 त्या यदुत सेणूण भते कणहलेसेनीललेसे जावसुकलेसेभवित्ता काउलेसेसु नेरद्रएसु उववज्जइ हतागोयमा सेकेण्डेणं भते एव वुच्चइ गोयमालेसठाणेसु स  
 किलिस्समाणेसु वा विमुज्झमाणेसु वा काउलेस परिणमइ काउलेसेसु नेरद्रएसु उववज्जइति एतदनुसारेणोत्तरसूत्रयोरपि स्थितलेश्यादिविभागी नेयइति

हे मरणे प० तं० बालमरणे पंक्रियमरणे बालपंडियमरणे । बालमरणे तिविहे प० तं० ठिञ्चलेस्से संकि  
 लिठलेस्से पज्जवजातलेस्से । पंक्रियमरणे तिविहे प० तं० ठिञ्चलेस्से अ्संकिलिठलेस्से पज्जवजातलेस्से

विरता विरती देशविरति श्रावकनुं ॥ बालमरण त्रणप्रकारे तेकहैछे । स्थितलेश्यानुं जेकृष्णादिकमां मरी नरकगतिमां कृष्णलेश्यायेज उपजै ।  
 सकिलिष्ठ लेश्यानुं तेनील लेश्याये मरी कृष्णलेश्याये उपजै । पर्यवजात लेश्यानुं तेपर्याय फरी शुद्धथाय तेकृष्णलेश्यामां मरी नीलकापोत  
 लेश्यामां उपजै ॥ पंक्रितमरण त्रणप्रकारे कहियो ते कहैछे । शुक्लादि लेश्यामां मरी शुक्ल लेश्यामां उपजै देवगतिमां । असकिलिष्ठ लेश्यानुं पंडित  
 मरण तेजो पदम लेश्याये मरी शुक्ल लेश्यामा देवतादिकमां उपजै । पर्यवजात लेश्यानुं पंडितमरण वधती शुक्ललेश्यामां उपजै ॥ बालपंडित

पण्डितमरणे सन्निश्यमानतालेश्यायाः नास्ति संयतत्वादेवेत्ययं बालमरणाद्विशेषः बालपण्डितमरणेतु सन्निश्यमानता विशुद्धमानता च लेश्यायाः नास्ति मित्यत्वा देवेत्ययं विशेष इति एवं च पण्डितमरणं वसुतो द्विविधमेव सन्निश्यमानलेश्यानिषेधे ऽवस्थितवर्द्धमानलेश्यत्वा तस्य त्रिविधत्वतु व्यपदेशमात्रत्वादेव बालपण्डितमरण त्वेकविधमेव सन्निश्यमानपर्यवजातलेश्यानिषेधे अवस्थितलेश्यत्वा तस्येति त्रैविध्यन्त्वस्ये तरव्यावृत्तितो व्यपदेशत्रयप्रवृत्ते रिति मरणम नन्तरमुक्त मृतस्य तु जन्मान्तरे यथाविधस्य यद्वस्तुत्रय यस्मै सम्पद्यते तस्य तत्तस्मै दर्शयितुमाह ॥ तत्रोठाणेत्यादि ॥ त्रीणि स्थानानि प्रवचनमहाव्रतजौवनिका यलक्षणानि अध्वसितस्यानिश्चयवतो पराक्रमवतो वा हितायापथ्यायासुखायदुःखाया क्षमाया सगतत्वाया निःश्रेयसाया मोक्षाया नानुगामिकत्वाया शुभानुबन्धाय भवन्ति ॥ सेणति ॥ यस्य त्रीणि स्थानानि अहितादित्वाय भवन्ति सशक्तो देशतः सर्वतो वा संशयवान् काञ्चित्स्थैव मतान्तरस्यापि साधु

बालपण्डितमरणे त्रिविधे पन्नत्ते तंजहा ठिञ्चलेस्से अंसंकिलिठलेस्से अपज्जवजातलेस्से । तं ठाणा अण्ण वसिञ्चस्स अहियाए असुज्जाए अस्वमाए अणिस्सेसाए अण्णाणुगामियत्ताए ज्वन्ति तंजहा सेणं मुंठेज्वित्ता

मरण त्रणप्रकारे तेकहैछे । स्थित लेश्यानुं जेलेश्यानुं जेलेश्याये मरें तेलेश्यायें उपजैं । असंकिलिष्ट लेश्यानुं मरण ते बीजी शुजलेश्यायें उपजैं । अपर्यवजात लेश्यानुं बालपण्डितमरण तेसमय समये शुजलेश्या वधतीनपामैं ॥ त्रिणथानके जेणे निश्चयकरी साचाकरी नथीधास्या तेहने एतीन थानक अहितना करनार होय । असुखना कारणहोय । अक्षमा क्रोधना कारणहोय । अनिश्रेयस मोक्षदायक नहोय । अनानुगामी संसारपारना आपनार नथाय नहोय ॥ मरणकीधापढी जे जेहवुं थानकपामे तेकहैछे । जेसाधु द्रव्यजावथी मुंठयई अणगारथई प्रवूज्यालेई निगथ तेप्रवचन

त्वेन मताविचिकित्सितः फलं प्रति शङ्कोपेतो ऽत एवा भेदसमापन्नो द्वैधीभावमापन्नः एवमिदं नचैव मिति मतिकः कलुषसमापन्नो नैतदेव मिति प्रति पत्तिकः ततश्च निर्ग्रन्थानामिदंनैर्ग्रन्थिक प्रशस्तं प्रगतं प्रथमं वा वचनमिति प्रवचन मागमो दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् न अङ्गते सामान्यतो न प्रत्येति न प्रीति विषयीकरोति न रोचयति न चिकीर्षाविषयीकरोति तमिति य एवभूत स्त प्रव्रजिताभास परिसङ्घंते इतिपरीसहाः क्षुधादयः अभियुज्यरसस्वन्धमुपा गत्य प्रतिस्पर्द्धावा अभिभवन्ति न्यक्कुर्वन्ति इति शेषं सुगमं उक्तविपर्ययसूत्रं प्राग्वत् किन्तु हित मदोषकर मिह परत चा त्वनः परेषाच पथान्न भोज

अगारान् अणगारियं पञ्चइए णिग्गंथे पावयणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए जेदसमावन्ते कलुससमावन्ते  
णिग्गंथं पावयणं णोसद्दहइ णोपत्तियइ णोरोएइ तपरीसहा अज्जिजुंजिय अज्जिजुंजिय अज्जिजवति नोसे  
परीसहे अज्जिजुंजिय अज्जिजुंजिय अज्जिजवइ । सेणमुंढेज्जवित्ता अगारान् अणगारियं पञ्चइए पंचहिं

जिनशासन तेहनेविषे शंकाआणे एसाचुं कै खोटुं एहवीकात्ता परमतनीबांछा धर्ममां आणे । विचिकित्सा धर्मना फलनो संदेहआणें शंका तेहीज जेद ए इमकहिये नही तेप्रतेपामें द्विधाज्जावमापन्न । कलुषसमापन्न ते एज्जगवते कह्यो पणि इमनथी इमकरी निर्ग्रन्थनां प्रवचन सिद्धाता दिक् मार्गने सरदहेनथी सांचुं करीने । प्रत्ययविस्वास उपजावेनथी । रुचावेनथी बाछेनथी । एहवा साधुप्रते क्षुधादि बावीसपरीसहमां आवी आवीने एतले ऊपजीने पराजवकरें । पणि तेसाधुनथी नामसाधु ते परीसह उपनांआवी फरस्यां तेप्रतिसहै समेनथी तैमोक्ष पिणनपामें ॥ ते साधु मुंढयई गृहस्थावासयकी अणगारययी दीक्षातेई पंचमहावृतनेविषे शंकाआणें यावत् पूर्ववत् कलुषपणुं पामें । पंचमहावृतप्रते सरदहें

महब्रएहिं संकिए जाव कलुससमावसो पंचमहब्रयाइं णोसदहइ जाव नोसेपरीसहे अज्जिजुंजिय अज्जिजुंजि  
य अज्जिजवइ । सेणं मुंढेजवित्ता अणगारानं अणगारियं पवइए तहिं जीवनिकाएहि जाव अज्जिजवइ ।  
तनंठाणा ववसिअस्स हियाए जावाणुगामियत्ताए जवति तजहा सेणं मुंढेजवित्ता अणगारानं अणगारियं  
पवइए णिग्गथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए जाव णोकलुससमावसो णिग्गथं पावयणं सदहइ पत्तियइ  
रोएइ से परीसहे अज्जिजुंजिय अज्जिजुंजिय अज्जिजवइ । णोतपरीसहा अज्जिजुंजिय अज्जिजुंजिय अज्जिज  
वति । सेणं मुंढेजवित्ता अणगारानं अणगारियं पवइए समाणे पचहिं महब्रएहिं णिस्संकिए जाव परिस्सहे  
अज्जिजुंजिय अज्जिजुंजिय अज्जिजवइ णोत परिस्सहा अज्जिजुंजिय अज्जिजुंजिय अज्जिजवंति । सेणं मुंढेज

नथी यावत् पूर्वे कहिवुं तिम तेपरीसह उपना तेप्रते सहैनथी । तेमुंडथई अणगारथई प्रवज्या दीक्षा लेई छकायना जीवनी शंकाआणै यावत्  
परीसह नथीसहे ॥ त्रिणथानक निश्चयकरी जाणयाळे तेहने हितना करनार यावत् ससारनो पारआपे । तेमुंडथई वली गृहस्थपणुं सूकी अणगा  
रथयो प्रवज्यालेई निगथना प्रवचननेविषे जिनसिद्धातनेविषे जेहने शकानथी अन्यधर्मनी काक्षा बांछानथी । यावत् कलुषजावनथी पाम्यो ते  
निगथना प्रवचनप्रते सरदहे । प्रत्ययविस्वासरारखे मनमा रुचिआणे तेसाधु परीसहनो सबधपामीने परीसह उपने सहैखमे पिणते परीसह साधु  
प्रते पराजवनथी करीसकै ॥ तेमुंडथई गृहस्थावासथी अणगारपणुंलेई प्रवज्यालीयेथके पंचमहाव्रतनेविषे शंकारहित यावत् परीसहआवी फर  
सेथके सहैखमें पिणतेपरीसह तेसाधुनेआवी फरसी पराजवीसकेनथी ॥ वलीतेमुंडथई आगारपणुं सूकी अणगारथयो प्रवज्यालेई छकायना जीव

नवत् सुखमानन्द रष्टवितस्य शीतलजलपानइव क्षम सुचित तथाविधयाधिघातकौषधपानमिव निःश्रेयसं निश्चित श्रेयः प्रशस्य भावतः पञ्चनमस्कारकर  
णमिव अनुगामिकमनुगमनशील भास्वरद्रव्यजनितच्छायेवेति अयच्चैवविधः साधुरिहैव पृथिव्यां भवतीत्यर्थेनसम्बन्धेन पृथिवीस्वरूपमाह ॥ एगमेगेत्यादि ॥  
एकैकापृथिवी रत्नप्रभादिका सर्वतः किमुक्तभवति समता दृष्ट्वा दिक्षुविदिक्षुचेत्यर्थः सम्परिच्छिन्नावेष्टिता आभ्यतरंघनोदधिवलय ततःक्रमेणेतरे तत्र घनः  
स्थानो हिमशिलावत् उदधि र्जलनिचयः सचासौ सचेति घनोदधिः सएववलयमिव वलय कटक घनोदधिवलय तेन एवमितरेपि नवर घनश्चासौवातश्च  
तथाविधपरिणामोपेतो घनवात एवतनुवातोपि तथाविधपरिणामएवेति भवंत्यत्रगाथाः नवियफुसतिअलोग चउसुपिदिसासुसव्वपुढवीओ संगहिया  
वलएहि विक्खभतेसिवोच्छामि ॥ १ ॥ छच्चेव १ अइपचम २ जोयणअइच्च ३ होतिरयणाए उदही १ घण २ तणवाया ३ जाहासखेणनिहिठा ॥ २ ॥

वित्ता अगारानु अणगारियं पब्बइए त्तिहिं जीवनिकाएहिं णिस्संकिए जाव परिस्सहे अज्जिजुंजिय अज्जि  
जुजिय अज्जिजवइ णोतं परिस्सहा अज्जिजुंजिय अज्जिजुंजिय अज्जिजवन्ति । एगमेगाणं पुढवी तिहिंवल  
एहिं सब्बजसमंता संपरिस्सिक्खा तंघणोदहिवलएणं घणवायवलएणं तणवायवलएणं । णेरइयाणं उक्कोसेणं

नेविषे ज्ञांकारहि यावत् तेसाधु फरसीने पराजवकरी नसकै । एहवा साधुते इहां पृथवीमांछे ॥ तेपृथवीनुं स्वरूप कहैछे ॥ एकेकी पृथवी त्रिण  
वलयेकरी सगले च्यारेदिशे व्याप्तछै वीटीछे रत्नप्रभादिक तेकहैछे ॥ घनोदधि जलनो समूह तेहनेबलयेकरी बीटीछे । बीजो घनवातनो बलय  
तेणेकरी बीटीछै । तीजो तनवात बलयेकरी बीटीछै । एह सातनरकें नारकीं उपजै । तेनारकीनी उत्पत्ति कहैछे । नारकीने उत्कृष्ट त्रणसमयनी

तिभागी [योजनस्य] १ गात्रयंचेव २ तिभागीगात्रयस्य ३ ॥ आश्रधुवेपखेत्रो अहोअहोजावसत्तमियत्ति ॥ ३ ॥ एतासुच पृथ्वीषु नारकाएव उत्पद्यन्ते  
इति तदुत्पत्तिविधि मभिधातुमाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ त्रयः समयास्त्रिसमय तद्यत्रास्ति स त्रिसमयिक स्तेन विग्रहेण वक्रगमनेन ॥ उक्कोसेणति ॥  
चसानाहि चसनाद्यन्तरुत्पादात् वक्रद्वय भवति तच्च त्रयएवसमया स्तथाहि आग्नेयदिशो नैऋतदिश मेकेन समयेन गच्छति ततो द्वितीयेन समये  
स्या अध स्तुत स्तुतीयेन वायव्यदिशि समयेणैवेति त्रसानामेव त्रसोत्पत्तावेवविध उत्कर्षेण विग्रहइत्याह ॥ एगिदिएत्यादि ॥ एकेन्द्रिया स्वेकेन्द्रियेषु  
पंचसामयिकेना प्युत्पद्यते यतस्ते वहिस्ता चसनाडीतो वहिरप्युत्पद्यते तथाहि विदिसाउदिसिपठमे वीएपइसरइलोयनाडीए तइएउप्पिवावइ चउत्थए  
नौइवाहितु ॥ १ ॥ पचमएविदिसाए गंतुउप्पज्जइउएगिदित्ति ॥ सभवएवाय भवति चतु सामायिकएव भगवत्यांतथोक्तत्वादिति तथाहि अपज्जत्तग  
सुहुमपुढविकाइएणभते अहेलोगखेत्तनालीए वाहिरल्लेखेत्ते समोहए समोहणित्ता जेमविए उड्डुलोगखेत्तनालीए वाहिरल्ले खेत्ते अपज्जत्तसुहुमपुढविका  
इयत्ताए उववज्जित्तए सेणभंते कतिसमइएण विग्रहेण उववज्जेज्जा गो० तिसमइएणवा चउसमइएणवा विग्रहेण उववज्जेज्जा इत्यादि विशेषणवत्या मष्ट  
त्तं सुत्तेचउसमयाउ नत्थिगइंओपराविनिदिट्ठा जुज्जइयपचसमया जीवस्सइमागइलोए ॥ १ ॥ जोतमतमविदिसाए समोहओबभलोगविदिसाए उववज्ज  
एगइंए सोनियमापंचसमयाए ॥ २ ॥ उववायाभावाओ नपचसमयाहवानसतावि भणियाजहचउसमया महत्तबंधेणसतावित्ति ॥ ३ ॥ अतउत्तं ॥ एगि

तिसमइएणं विग्रहेणं उववज्जति । एगिदियवज्ज जाव वेमाणियाणं । खीणओहरस्सणं अरहउ तउकम्मं  
विग्रहगति त्रयसमयनी वक्रगतिकरी नारकीसां उपजै कोइक अन्यथापणि एकसमयमा उपजै । एकेद्री छोडीने एकेद्रीने पांचसमयनी वक्रगतिदो

दिवज्जंति ॥ यावद्द्वैमानिकानामिति वैमानिकांतानां जीवानां त्रिसामयिक उत्कर्षेण विग्रहो भवतीतिभावः मोहवतां त्रिस्थानक मभिधाया धुना चो  
णमोहस्य तदाह ॥ खोणेत्यादि ॥ चोणमोहस्य चोणमोहनीयकर्मणो ऽर्हतो जिनस्य त्रयः कर्मांशाः कर्मप्रकृतय इति उक्तञ्च चरमेणाणावरण पचविहद  
सणचउविगथं पचविहमताराय खवइत्ताकेवलीहोइत्ति ॥ १ ॥ शेष कण्ठं अनन्तर मशाखतानां त्रिस्थानक मुक्त मधुना शाखतानां तदाह ॥ अभीत्यादि ॥  
सूत्राणि सप्त कळ्यानीति पर म्परसूत्रे चोणमोहस्य त्रिस्थानकमुक्त मधुना तद्विशेषाणा तीर्थकृतां तदाह ॥ धम्मेत्यादि ॥ प्रकरणं ॥ तिचउद्भागत्ति ॥  
त्रिभि श्वतुर्भागैः पादेः पल्योपमस्य सत्कै रूनानि त्रिचतुर्भागपल्योपमानि तैर्यतिक्रांतै रिति उक्तञ्च धम्मजिणाओसंती तिहिओतिचउद्भागपलियज्जेहि

सा जुगवं खिज्जंति तं णाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं अंतरायं । अज्झिईणरुक्ते तितारे पन्नत्ते एवं सवणे  
अस्सिणी जरणी मगसिरे पूसे जेठा । धम्मनणं अरहानु संतीअरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउद्भागं

य । यावत् वैमानिकर्णे त्रणसमयनी होय ॥ चोणमोहनीय कर्मछे जेहने एहवा अरिहतने त्रणकर्मनां अंश तेप्रकृति समकाले क्षयपामे तेकहैछे ।  
नाणावरणीय पाचप्रकारे । दर्शनावरणी चारप्रकारे । अंतरायकर्म पांचप्रकारे एतण क्षय समकालेपामे क्षयपाम्यांथी केवलीथाय ॥ अज्झिजि  
न्नत्तत्रना त्रणतारा कहिया एम अवण नत्तत्रना त्रणतारा । अश्विनी नत्तत्रना त्रणतारा । जरणी नत्तत्रना त्रणतारा । मृगशिर नत्तत्रना त्रणता  
रा । पुष्यना त्रणतारा । ज्येष्ठा नत्तत्रना त्रणतारा ॥ धर्मेनाथ पनरमां अरिहंतना मोक्षथी शांतिनाथ सोलमा अरिहत पल्योपमना त्रणजाग  
कमती त्रण सागरोपम गयांथी उपना एक पल्योपमना चारजाग तेहमां त्रणजाग ऊणा एतले एकजाग पल्योपमनुं लेवो एतले त्रण सागरोपम



अयरेहिंसमुपपत्ति ॥ १ ॥ समणस्सेत्यादि ॥ युगानि पंचवर्षमानानि कालविशेषा लोकप्रसिद्धानिवा कृतयुगादीनि तानिच क्रमव्यवस्थितानि ततश्च पुरुषाः गुरुशिष्यक्रमिणः पितापुत्रक्रमवन्तो वा युगानीव पुरुषयुगानि पुरुषसिंहवत्समासः ततश्च पचम्याद्वितीयार्थत्वा तृतीयपुरुषयुगंयावत् जंबूस्वामिनयावदित्यर्थः ॥ जुगत्ति ॥ पुरुषयुगं तदपेक्षयांतकराणां भवांतकराणां निर्वाणगामिना मित्यर्थः भूमिः कालो युगांतकरभूमिं रिदमुक्तभवति भगवतोवर्द्धमानस्वामितस्तौर्थे तस्मादेवावधे स्मृत्ययपुरुषं जंबूस्वामिनं यावन्निर्वाणमभू ततउत्तरं तद्व्यवच्छेदइति ॥ मल्लीत्यादि ॥ सूत्रद्वयं तत्र सवाद एकोभगवंवोरो पा सोमल्लीयतिहितिहिसएहिंति ॥ मल्लिजिनः स्त्री शतेरपि त्रिभिः ॥ समणेत्यादि ॥ अजिणाणति ॥ असर्वैत्रत्वेन जिनसकाशानां सकलसंशयच्छेदकत्वेन सर्वे सकला अक्षरसन्निपाता अकारादिसयोगा विद्यते येषांते तथा स्वार्थिकेनप्रत्ययोपादानां सेपां विदितसकलवाङ्मयानां मित्यर्थः ॥ वागरमाणाणंति ॥

पलिनं वमऊणएहिं वीइक्कांतेहिं समुप्पन्ते । समणस्सणंजगवन् महावीरस्स जाव तज्जाणं पुरिसजुगानं जुगंतकळ्ळूमी । मल्लीणं अरहा तिहिपुरिससएहिं सद्धिं मुंहेजवेत्ता जाव पण्डइए एवं पासेवि । समणस्सणं जगवन् महावीरस्स तिनिसया चोदसपुल्लीणं अजिणाणं जिणसकासाणं सल्लस्करसन्निवाइणं जि

एकजग एतयोपमनुं गयांथी उपना ॥ अमणं जगवान् महावीरने यावत् त्रणपुरुषनी परंपरालगि मोक्षमार्गं चाल्यो एतले महावीरस्वामी सुध मास्वामी जंबूस्वामी एह त्रणपुरुषलगे मोक्षमार्गहतो तिवारपल्ली मोक्षमार्गं विच्छेदय्यो ॥ मल्लिनाथ अरिहत उगणीसमा त्रणसे पुरुष संघाते दीक्षालीथी यावत् प्रवृज्या पचमहावृत लीधा ॥ एम पार्श्वनाथ तेषीससां जिन अणसे पुरुषसाथे दीक्षालीथी ॥ अमणं जगवत् महावीरने त्रणसे

व्यागृणतां व्याकुर्वतामित्यर्थः ॥ तत्रोदित्यादि ॥ अत्रोक्तं संतीकुंथूप्रश्नो अरुहंताचेवचक्रवर्तीय अवसेसातित्ययरा मंडलियाभासिरायाणोक्ति ॥ १ ॥ तीर्थं क  
राक्षते विमानेभ्योऽवतीर्णा इति विमानविस्थानकमाह ॥ तत्रोदित्यादि ॥ लोकपुरुषस्य श्रीवास्थाने भवानि ग्रैवेयकानि तानिच तानि विमानानिच

णोइव अविताहं यागरमाणानं उक्तोसिया चोदसपुष्टिसंपया होत्या । तन तित्ययरा चक्रवर्ती होत्या  
तंजहा सती कुंथू अरो । तन गेविज्जविमाणपत्यफ्फे पसुत्ता तजहा हिठिमगेविज्जविमाणपत्यफ्फे मज्जि  
मगेविज्जविमाणपत्यफ्फे उवरिमगेविज्जविमाणपत्यफ्फे । हेठिमगेविज्जविमाणपत्यफ्फे तिविहे पसुत्ते तंजहा  
हिठिमहिठिमगेविज्जविमाणपत्यफ्फे हिठिममज्जिमगेविज्जविमाणपत्यफ्फे हिठिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्य  
फ्फे । मज्जिमगेविज्जविमाणपत्यफ्फे तिविहे पसुत्ते तंजहा मज्जिमहिठिमगेविज्जविमाणपत्यफ्फे मज्जिम मज्जि  
मगेविज्जविमाणपत्यफ्फे मज्जिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्यफ्फे । उवरिमगेविज्जविमाणपत्यफ्फे तिविहे पन्तत्ते

चउदह पूर्वा जिननथी केवलीनथी पिण जिन सरिखा केवली सरिखा सर्वाक्षर सन्निपाती सर्वाक्षर योगनां जाण जिननीपरं अविताथ सत्य  
व्याकरण प्रश्नना कहनार एहवी उत्कृष्टी चउदह पूर्वधारीनी संपदाथई ॥ त्रण तीर्थंकर चक्रवर्तिथया तेकहैछे । शांतिनाथ सोलमां । कुंथु  
नाथ सतरमा । अरुनाथ अठारमा ॥ त्रण ग्रैवेयक विमान प्रस्तट कहिया तेकहैछे । हेठिम विमान प्रस्तट । मध्यम विमान प्रस्तट । उपरि  
म विमान प्रस्तट ॥ हेठिम विमान प्रस्तट त्रणप्रकारे तेकहैछे । हेठिम हेठिम विमान प्रस्तट । हेठिम मध्यम विमान प्रस्तट । हेठिम उपरिम

तेषां प्रस्तुता रचनाविशेषवन्तः समूहाः द्रव्यं मैवेयकादिविमानवासिता कर्मणः सकाशां ज्ञवतीति कर्मणः विस्थानकमाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ सूत्राणि  
पट् तत्र विभिः स्थानैः स्तोत्रेणादिभिः निर्वर्तितान् अर्जितान् पुद्गलान् पापकर्मतया प्रशुभकर्मत्वेनोत्तरोत्तराशुभाध्यसायत शितवत आसङ्गलनत एव  
मुपचितवतः परिपोषणत एव उपवन्तो निर्मापणत उदीरितवत प्रध्यसायवशेनानुदीर्णादयप्रवेशनत, वेदितवतः अनुभवनतः निर्जरितवतः प्रदेशपरिशा-  
टनतः सग्रहणीगाथार्धमत्र एव चिणउवचिणवधोदी रवेयतहनिज्जराचेवत्ति ॥ एवमिति ॥ यथैक कालत्रयाभिलाषेनोक्तं तथा सर्वाण्यपीति कर्मच पुद्ग-

तंजहा उवरिमहिठिमगेविज्जाविमाणपत्यन्ते उवरिममज्जिमगेविज्जाविमाणपत्यन्ते उवरिमउवरिमगेविज्जावि-  
माणपत्यन्ते । जीवाणं तिष्ठाणणिह्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसुवा चिणिंतिवा चिणिरसंतिवा  
तंजहा इत्थीणिह्वत्तिए पुरिसणिह्वत्तिए णपुंसगणिह्वत्तिए । एव चिणउवचिणबंधोदी रवेयतहणिज्जराचेव ।

विमान प्रस्तट ॥ मध्यम विमान प्रस्तट त्रणप्रकारे तेकहैछे । मध्यम विमान प्रस्तट । मध्यम मध्यम विमान प्रस्तट । मध्यम उपरिम विमान  
प्रस्तट ॥ उपरिम विमान प्रस्तट त्रणप्रकारे तेकहैछे । उपरिम हेठिम विमान प्रस्तट । उपरिम मध्यम विमान प्रस्तट । उपरिम उपरिम विमान  
प्रस्तट ॥ जीवनें त्रणस्थानकै निवर्त्तित उपाज्या उदगल पापकर्मपणे एकठाचिण्या मेलया अतीतकाले । चिणैछे वर्तमानकाले । चिणस्ये अनाग-  
तकाले । तेकहैछे । स्त्रीवेदना उपाज्या पुरुष वेदना उपाज्या । नपुंसक वेदना उपाज्या ॥ एम चिण्या उपजय यध उदीरणा वेदना तिमनि

लात्मकमिति पुद्गलस्त्वान् प्रति त्रिस्थानकमाह ॥ तिपएसिएत्यादि ॥ स्रष्टमिति सर्वस्रष्टेषु व्याख्यातशेषकण्ठं ॥ इति त्रिस्थानकस्य चतुर्थोद्देशकः समाप्तः ॥  
तत्समाप्तीच श्रीमदभयदेवसूरिविरचिते स्थानाङ्गविवरणे तृतीयं त्रिस्थानकाख्यमध्ययन समाप्तमिति ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥  
व्याख्याततृतीयमध्ययन मधुना सख्याक्रमसम्बन्धमेव चतुःस्थानकाख्य चतुर्थमारभ्यते । अस्य चाय पूर्वेण सह विशेषसम्बन्धः अनन्तराध्ययने विचित्रा जी  
वाजीवद्रव्यपर्याया उक्ता इहापि तएवोच्यन्त इत्यनेन सम्बन्धेनायातस्यास्य चतुरुद्देशकस्य चतुरनुयोगदारस्य सूत्रानुगमे प्रथमोद्देशकादिसूत्रमेतत् ॥ चत्ता  
रि अतकिरियेत्यादि ॥ अस्य चायसम्बन्ध अनन्तरोद्देशकस्योपान्तसूत्रे कर्मण यथाद्युक्त मिहतु कर्मण स्तुत्वायेत्येवा भवस्यान्तक्रियोच्यत इत्यथवा युत म  
या युप्तता भगवतैवमाख्यात मित्यभिधाय यत्तदाख्यात तदभिहित तथेदमपर तेनैवाख्यात यत्तदुच्यत इत्येव सम्बन्धस्यास्य व्याख्या अतक्रिया भवस्यान्त  
करण तत्र यस्य न तथाविधतपो नापि परोषहादिजनिता तथाभिधावेदना दोर्ध्वेण प्रव्रज्यापर्यायेण सिद्धिर्भवति तस्यैका यस्य तु तथाविधे तपोवेदने अल्पे  
नैवच प्रव्रज्यापर्यायेण सिद्धिः स्या तस्य द्वितीया यस्यच प्रकृष्टे तपोवेदने दोर्ध्वेणच पर्यायेण सिद्धिः स्तस्य तृतीया यस्य पुनरविद्यमानतथाविधतपोवे

तिपएसियाखधा अणन्ता पञ्चत्ता एवंजाव तिगुणलुस्कपोगला अणन्ता पञ्चत्ता ॥ तिष्ठाणंसम्मतं ॥ ३

चत्तारि अंतकिरियान् पन्तत्ता तंजहा तत्यखलु इमा पढमा अंतकिरिया अप्पकम्मपञ्चायाए याविन्नवइ

जरा वे इमजाणवा ॥ त्रण प्रदेसिया पुदगसंध अनन्ता कहिया । एम यावत् त्रिगुण लूसा पुदगल अनन्ता कहिया लोकमा ॥ इति श्रीजोठाणूं  
थयो श्रीजो अभ्ययन पूरोथयो ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दनस्य ऋक्षपर्यायेणसिद्धिस्तस्य चतुर्थीति अन्तक्रियाया एकस्वरूपत्वेपि सामग्रीभेदाच्चातुर्विध्यमिति समुदायार्थं अवयवार्थस्त्वयं चतस्रोऽन्तक्रियाः प्रज्ञप्ताः भगवतेतिगम्यते तत्रेति सप्तमोनिर्द्धारणे तासु चतसृषु मध्यइत्यर्थं खलुमाक्यालङ्कारे इयमनन्तर वक्ष्यमाणत्वेन प्रत्यक्षासन्ना प्रथमा इतरापेक्षया आद्याअन्तक्रिया इहकश्चित् पुरुषः देवलोकादौ यात्वाततोऽत्यैः स्तोकैः कर्मभिः करणभूतैः प्रत्यायात, प्रत्यागतो मानुषत्वमिति अल्पकर्मप्रत्यायातो य इति गम्यते अथवा एकत्र जनित्वा ततोऽल्पकर्मासन् य, प्रत्यायातः स तथा लघुकर्मतयोत्पन्नइत्यर्थः चकारोवक्ष्यमाणमहाकर्मापेक्षया समुच्चयार्थः अपि सम्भावने सम्भाव्यते ऽयमपिपक्षइत्यर्थः भवतिस्यात् ॥ सइति ॥ असौ णमितिवाक्यालङ्कारे मुडोभूत्वा द्रव्यत शिरोलोचेन भावतो रागाद्यपनयनेनागारात् द्रव्यतो गेहात् भावत ससाराभिनदिना देहिनामावासभूता दविवेकगेहा निष्क्रम्येतिगम्यते ऽनगारिता अगारौगृही असयत स्तव्यतिषेधादनगारी सं यत स्तद्भावस्तत्ता ता साधुतामित्यर्थः प्रव्रजितः प्रगतः प्राप्तइत्यर्थः अथवा विभक्तिपरिणामादनगारितया निर्गन्त्यतया प्रव्रजितः प्रव्रज्याप्रतिपन्न, किं भूतइत्याह ॥ सजमबहुलेति ॥ संयमेन पृथिव्यादिसरचणलचणेन बहुल, प्रचुरो य स तथा सयमोवा बहुल, प्रचुरो यस्यस तथा एव सवरबहुलीपि नवर माश्रवनिरोधः सवरः अथवा इन्द्रियकषायनिग्रहादिभेदः एवंच सयमबहुलग्रहण प्राणातिपातविरतेः प्राधान्यव्यापनार्थः यतः एकचियएत्यवयव निहिष्ठं

सेणंमुंठेनवित्ता अगारानु अणगारियं पव्इए संजमबज्जले सवरबज्जले समाहिबज्जले लूहे तीरठी उव

हिवे चौथो ठाणूं कहैछे । च्यार अंतक्रिया छेहली मोक्ष जावानी कही तेकहैछे । तिहां निश्चयथी पहली अंतक्रिया अल्प थोडा कर्मनुंधणी म नुष्यनां अवतारमा आवी मोक्षजाय थोडी वेदना जोगे । तेअल्पकरमी मुठथईने, आगारीपणु मूकी अणगारपणु साधुपणु अंगीकार कीधी थकी

जिण्वरेहिसत्वेहिं पाणादवायवेरमण मवसेसातस्सरक्खुत्ति ॥ १ ॥ एतच्च द्वितयमपि रागाद्युपशमयुक्तचित्तवृत्ते भवति यत आह समाधिवहुलः समाधि  
सु प्रशमवाहिता ज्ञानादिर्वा समाधिः पुनर्निस्नेहस्यैव भवतीत्याह ॥ लूहे ॥ रूचःशरीरे मनसिच द्रव्यभावस्नेहवर्जितत्वेन रूपः लूययतिना कर्ममल  
मपनयतोतिल्लः कथमसावेवं संवृत्त इत्याह यतः ॥ तौरडो ॥ तौरं पार भवार्णवस्यार्थगत इत्येवगोल स्तोरायीं तौरस्थायोवा तौरस्थितिरितिवा प्रा  
कृतत्वा तौरडोति अतएवाह ॥ उवहाणवंति ॥ उपधोयते उपष्टभ्यते श्रुतमनेनेति उपधान श्रुतविषय स्तपउपचारइत्यर्थं स्तवान् अतएवच ॥ दुक्खक्खवे  
त्ति ॥ दुःख मसुख नत्कारणत्वाद्वा कर्म तत् क्षपयतोति दुःखक्षप. कर्मक्षपणच तपोहेतुक मित्यत आह ॥ तवस्सोति ॥ तपोभ्यन्तरकर्मन्धनदहनज्वलनक  
ल्प मनवरतशुभध्यानलक्षण मस्ति यस्यस तपस्वी ॥ तस्सणति ॥ यथैवंविध स्तस्य ण वाक्यालङ्कारे नो तथाप्रकार मत्यतघोर वर्द्धमानजिनस्येव तपो  
नशनादि भवति तथा नो तथाप्रकारा अतिघोरैवोपसर्गादिसम्पाद्यावेदना दुःखासिकाभवति अल्पकर्मप्रत्यायातत्वादिति ततश्च त तथाप्रकार मल्पकर्म  
प्रत्यायातादिविशेषणकलापोपेतं पुरुषजात पुरुषप्रकारा दोर्घेण बहुकालेन पर्यायेण प्रव्रज्यालक्षणेन कर्मभूतेन सिध्यति अणिमादियोगेन निष्ठितार्थो

हाणवं दुक्खक्खवे तवस्सीं । तस्सण णोतहप्पगारे तवे ज्वइ णोतहप्पगारावेयणा ज्वइ तहप्पगारे पुरिस

संयम बहुल पृथिव्यादि लकायनी रक्षाकरवामां प्रयत्नवंत तथा संवर बहुल ते आश्रवद्वारनुं संधनार घणी चित्तनी समाधि सहित लूखो स्नेह  
वर्जित तीरनी ससारनां पारनी बांछा सहित श्रुतनाणनां तपनु करनार योग उपधानादिक तपनु करनार दुखदाई कर्मनां क्षयनुं करनार तप  
स्वी तपनु करनार एहवा तपस्वीने तथाप्रकार तपकरवुं नपडै हलकरमी पणामाटे तथा प्रकारनी आकरी वेदनापणि नथाय । तथा प्रका

वा विशेषतः सिद्धिगमनयोग्योवा भवति सकलकर्मनायकमोहनीयघातात् ततो घातिचतुष्टयघातेन बुध्यते केवलज्ञानभावात् समस्त्वस्त्रूनि ततो  
 मुच्यते भयोपयाहिकर्मभिः परिनिर्वाति सकलकर्मकृतविकारश्चतिकरनिराकरणेन शीतोभवतीति किमुक्तं भवतीत्याह सर्वदुःखाना मत करोति शारीर  
 मानसाना मित्यर्थः अतथाविधतपोवेदनोदोर्षेणापि पर्यायेण तिकोपि सिद्धइति शङ्कापनोदार्थं माह ॥ जहासेइत्यादि ॥ यथासीप्रथमजिनप्रथमनन्दनो  
 नन्दनशताग्रजना भरतोरजा चत्वारिंताः पर्यन्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमसमुद्रहिमवलयाना यस्याः पृथिव्याः साचतुरन्ता तस्या अयस्यामित्वेनेति चातुर  
 न्तः स चासी चक्रवर्ती चेति सतथा सत्पिगाग्ने लघुकृतकर्मा सर्वार्थसिद्धविमानात् प्लुत्वा चक्रवर्तितयोत्पद्य राज्यावस्थ एव केवलमुत्पाद्य कृतपूर्वलय  
 प्रमज्ज्यः अतथाविधतपोवेदनएव सिद्धिसुपगतइति प्रथमांत क्रियेति ॥ आहावरेति ॥ अथानतर मपरा पूर्वापेक्षया अन्वा द्वितीयस्थाने भिधानात् द्वितीया

जाए दीहेणंपरियाएणं सिज्जइ बुज्जइ मुच्चइ परिणिह्वाइ सहदुस्काणमंतंकरेइ जहासे जरहेराया चाउरत  
 चक्रवर्ती । पढमाअतकिरिया ॥ १ ॥ अहावरे दोच्चा अंतकिरिया महाकम्मपच्चाएयावि जवइ सेणंसुंठे

रनो मोटो पुरुष दीर्घकालनी पर्याय दीक्षापालीनें सिद्धयाय मोक्षजाय । बुद्ध केवलीयई सर्वज्ञाव जाणों । कर्मथी सूक्काये । सर्वकर्म रहितयई  
 शीतलथाय । सर्व शरीर संबधी दुखनु अतकरीने ॥ जिम तेदृष्टात । जरत राजा चारदिशिनुं धणी चक्रवर्ती पूर्वजवे पांचसे साधनी वेया  
 वच आहारथी कीधु हलकरमीयई विमाने उपनुं तिहथी चवी इहां चक्रवर्तयई चक्रवर्तपद जोगी प्रारीसाना जवनमा केवलीयई लाख पूर्वनी  
 दीक्षा पाली मोक्षगयो जरत चक्रवर्त एह प्रथम अंतक्रिया ॥ अथ अनतर बीजी अतक्रिया कहैछे । महाकरमी बगुल करमना धणीनी कही ते

महाकर्मभिर्गुरुकर्मभिः महाकर्मावासन् प्रत्यायातः प्रत्याजातोवा यः स तथा ॥ तस्मिन्मत्यादि ॥ तस्य महाकर्मप्रत्याजातत्वेन तत्क्षपणाय तथाप्र  
कारं घोरतपोभवति एववेदनापि कर्मोदयसम्पाद्यत्वा दुपसर्गादौनामिति निरुद्धेनेति अल्पेन यथासौ गजसुकुमारोविष्णोर्लघुभ्राता सहि भगवतो  
रिष्टनेमिजिननायस्यांतिके प्रव्रज्यां प्रतिपद्य स्मशाने कृतकायोत्सर्गलक्षणमहातपाः गिरोनिहितजाज्वल्यमानाङ्गारजनितात्यतवेदनोऽल्पेनैव पर्यायेण  
सिद्धवानिति शेषकण्ठ्यं ॥ अहावरेत्यादि ॥ कण्ठ्यं यथासौ सनत्कुमारइति चतुर्थचक्रवर्ती सहि महातपाः महावेदनश्च स्रोगत्वात् दीर्घतरपर्यायेणच सिद्ध  
स्तद्भवे सिद्धभावेन भवान्तरे सेत्स्यमानत्वादिति ॥ ३ ॥ अहावरेत्यादि ॥ कण्ठ्यं यथासौ मरुदेवोप्रथमजिनजननी साहि स्थावरत्वेपि क्षीणप्रायकर्मत्वे

नविता अणगारान् अणगारियं घवइए संजमवज्जले संवरवज्जले जाव उवहाणवं दुक्करकवे तवरसी तरसणं  
तहप्पगारे तवे नवइ तहप्पगारावेयणा नवइ तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेणं परियाएणं सिज्जइ जाव  
अंतकरेइ जहासे जगसूमाले अणगारे । दोञ्चा अंतकिरिया २ । अहावरे तद्धा अंतकिरिया महाकल्लप

मुंडथई अणगारपणुंलेई गृहस्थावास मूकीदीक्षा लीधो घणुं सधमपाले जीवरक्षादि पाले । घणासंवरनुं घणो यावत् तप उपधाननुं करनाइ दु  
खना क्षयने अर्थे तपस्वी तपतपतो तेहने तथाप्रकारनुं आकरो तप होय तथा प्रकारनी वेदनापणिहोय तथा प्रकारनुं पुरुषजात रुधीने पर्याय  
दीक्षानुं तेप्रते दीक्षा थोठाकालनी तुरतसीम्हे यावत् अंतकरे । जिम तेगजसुकुमाल अणगार कण्ठनुं जाई नेमीश्वरपासे दीक्षालेइ सत्ताणना का  
उसगकीधो सोमल सुसरे अंगारा नस्या घणीवेदना जोगी थोडीवेलाये सीधो एह बीजी अंतक्रिया ॥ अथानंतर त्रीजी अंतक्रिया कहैछे महामो



नात्यकर्मा अविद्यमानतपोवेदनाच सिद्धा गजपराखुडा या एवायुः समाप्ती सिद्धत्वादिति एषाञ्च दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकाना मर्थानां नसर्वथा साधर्म्यमन्वे  
पणीय देगदृष्टान्तत्वादेया यतो मरुदेयाः ॥ मडेभवित्तेत्यादि ॥ विशेषणानि कानिचित् नघटन्ते अथवा फलतः सर्वसाधर्म्यमपि मुंडनादिकार्यस्य सिद्धत्वं

झाए यावि जवइ सेणमुंठेजवित्ता अणगारात्तु जाव पवइए जहा दोच्चा णवर दीहेणं परियाएणं सिज्जइ  
जाव सव्वदुस्काणमतं करेइ जहासे सणकुमारे राया चाउरतचक्कावट्ठी । तच्चाअंतकिरिया ३ । अहावरा  
चउत्था अंतकिरिया अप्पकम्मपच्चाए यावि जवइ सेणमुंठेजवित्ता जावपवइए संजमवज्जले जाव तरुसणं  
णो तहप्पगारे तवे जवइ नोतहप्पगारा वेयणा जवइ तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेणं परियाएणं सिज्जइ

टा कर्मना धणीनेहोय तेकहैछे । तेमुंठयईनें अणारथी अणगारपणुं प्रवृज्यालेई दीक्षाालेई जिम बीजीकही तिमज जाणवी । पणि एतलीं विज्ञे  
य दीर्घपर्याय पालीने घणाकाल लागि वेदना जोगवी सींछे मोक्षजाय यावत् सर्वदुखनु अतकरै जिमते सनत्कुमार राजा चातुरंत चक्रवर्त्त चौथी  
महातपा महावेदन सातसे बरसलगे रोगजोगवी लाखवरस दीक्षापाली सोधी एक जवकरी मोक्षजास्ये ते अपेक्षाये सींधोकहियो । एह बीजी  
अतक्रिया ॥ अथानतर चौथी अतक्रिया कहैछे । अल्पकर्मना धणीने थोडाकर्मना धणीनेहोय । तेकहैछे । तेमुंठयईनें यावत् दीक्षाालेईने सा  
धुयई घणुंसयम पाली घणुंसयमछे जेहने यावत् तथा प्रकारनुं तप मोटी नथाय तपकरवु नपडै तथा प्रकारनी घणीवेदना पणिनथाय । तथा  
प्रकारनुं पुरुषजात स्त्रीपणि रुधीनें पर्यायप्रतेपाली केवलीयई सींछे जाव सर्वदुखनु अतकरै मोक्षजाय । जिमते मरुदेया जगवती श्रीरिषजदेव

स्य सिद्धत्वादिति ४ । पुरुषविशेषाणां मन्तक्रियोक्ता अधुना तेषामेव स्वरूपनिरूपणाय दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकसूत्राणि पद्धिंशतिमाह ॥ चत्वारिरुक्खेत्यादि ॥  
 कण्य किन्तुवृद्धयते छिद्यत इति वृत्ता स्ते विवक्षयाचत्वारः प्रज्ञप्ता. भगवता तत्र उन्नत उच्चो द्रव्यतया नामेतिसम्भावने वाक्यालङ्कारेवा एकः कश्चित् वृत्त  
 विशेषः सएव पुनरुन्नतो जात्यादिभावतो शोकादि रित्येको भङ्ग उन्नतो नामद्रव्यतएव एकोऽन्य. प्रणतो जात्यादिभावे हीनो निम्बादिरित्यर्थः इति द्वि  
 तीयः प्रणतो नामैकां द्रव्यतः खर्वइत्यर्थः सएव उन्नतो जात्यादिना भावेनाशोकादिरिति तृतीयः प्रणतो द्रव्यतएव खर्वः सएवप्रणतो जात्यादिहीनो नि  
 वादिरिति चतुर्थः अथवा पूर्वमुन्नतसुगो धुनाप्युन्नतसुग एवेत्येकालापेक्षया चतुर्भङ्गीति ॥ एवमित्यादि ॥ एवमेववृत्तवत् चत्वारिपुरुषजातानि पुरुषप्रका

जाव सवृदुस्काणमन्तं करेइ जहा सा मरुदेवा जगवई । चउत्थाअंतकिरिया ४ । चत्वारिरुस्का पन्नत्ता तंजहा  
 उन्नएणाममेगेउन्नए १ उन्नएणाममेगेपणए २ पणएणाममेगेउन्नए ३ पणएणाममेगेपणए ४ । एवमेव  
 चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा उन्नएणाममेगेउन्नए तहेव जाव पणएणाममेगेपणए चत्वारिरुस्का प०

प्रथम तीर्थकरनी माता तपविना वेदना रहित हाथीना खधपर वैठी थकीज केवलनाण पायो आयु पूर्णकरी सिद्धयई एह चौथी अंतक्रिया ॥  
 पुरुष विशेषकही हिवे च्यार प्रकारना वृत्तकहिया तेकहैछे । एक वृत्तद्रव्यथी ऊंचो जावथीपणि उच्चो तेचदनादि । एक द्रव्यथी ऊंचो जातिथी हीन  
 निवादि एरइ प्रमुख । एक द्रव्यथी नीचो नाहो जावथीपणि नाहो वेल प्रमुख । एक द्रव्यथी नीचोजावथी ऊंचो जातिवंत स्वादवत एलची लवगादि  
 क ॥ एह वृत्त सरिखा च्यार पुरुषजात पुरुष विशेष कहिया तेकहैछे । एक पुरुष द्रव्यथी ऊंचो जावथीपणि ऊंचो तेसाधु तथा श्रावक । द्रव्य

रा अनगारा अगारिणीवा उन्नतपुरुषकुलैखर्यादिभिर्लौकिकगुणैः शरीरेणवा गृहस्थपर्याये पुनरुन्नतो लोकोत्तरैर्ज्ञानादिभिः प्रव्रज्यापर्याये अथवा उन्नत उत्तमभवत्वेन पुनरुन्नतः शुभगतित्वेन कामदेवादिवदित्येकः ॥ तद्देवति ॥ वृक्षसूत्रमिवेद ॥ जावति ॥ यावत् पण्येनाममेगेपण्येति चतुर्भेगक स्तावदाद्य न्तव उन्नत स्तथैव प्रणतस्तु ज्ञानविहारादिविहोनतया दुर्गतिगमनाद्वा मिथिलत्वेऽथैलकराजमिवत् ब्रह्मदत्तवदेति द्वितीयः तृतीयः पुनरागतसवेगः शैलकवत् मेतार्यवद्वा चतुर्थ उदायितृपमारकवत् कालशौकरिकवदेति एवदृष्टान्तदार्ष्टान्तिकसूत्रे सामान्यतो भिधाय तद्विशेषसूत्राख्याह उन्नत सुगतया एकोवृक्षः उन्नतपरिणतो ऽशुभरसादिरूप मनुन्नतत्व मपहाय शुभरसादिरूपोन्नततया परिणत इत्येकः द्वितीयेभ्यो प्रणतपरिणत उन्नत

तंजहा उन्नएणामंएगेउन्नएपरिणए उन्नएणाममेगेपणएपरिणए पणएणाममेगेउन्नएपरिणए पणएणामएगे पणयपरिणए ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा उन्नएणाममेगेउन्नएपरिणए चउज्जंगो । चत्तारि रुक्का पस्सत्ता तंजहा उन्नएणाममेगेउन्नएरूवे तद्देव चउज्जंगो ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया

थी जावथी कुलठकुराई लोकीक गुण । काम देववत् । नाणादि गुणसहित जावथी साधु एक ज्ञांगो । तिमज जाव द्रव्यथी नीचो जावथी नीचो एम वृक्ष दृष्टाते च्यार प्रकारे पुरुष जाणवा ॥ वली च्यार वृक्ष कहिया रसथकी तेकहैछे ॥ एक वृक्ष द्रव्यथी उचो जावथी पिण उंचो सर सपणा परिणतथी । एक वृक्ष द्रव्यथी उचो जावथी नीचो साठो रसछे । एक वृक्ष द्रव्यथी नीचो जावथी उचो परिणत सुअ द्राक्षादि ॥ एक वृक्ष द्रव्यथी नीचो जावथीपिण नीचो लघु अने दुरसकारेलीनीपरे ॥ एहनी परे च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे ॥ एक पुरुष द्रव्यथी

क्षणीन्नतत्त्वत्यागात् एतदनुसारेण तृतीयचतुर्थी वाच्यौ विशेषसूत्रता चास्य पूर्वमुन्नतत्वप्रणतत्वे सामान्येनाभिहिते इहतु पूर्वावस्थातो ऽवस्थान्तरगमनेन विशेषिते इति एव दार्ष्टान्तिकेपि परिणतसूत्र मयगन्तव्यमिति ४ परिणामश्चा कारवीधक्रियाभेदा त्रिधा तत्राकारमाश्रित्य रूपसूत्र तत्रउन्नतरूप सस्था नावयवादिसौदर्यात् गृहस्थपुरुषोप्येवं प्रव्रजितस्तु संविग्नसाधुनेपथ्यधारीति बोधपरिणामापेक्षाणि चत्वारिसूत्राणि तत्र उन्नतो जात्यादिगुणै रुच्यत यावा उन्नतमनाः प्रकृत्या औदार्यादियुक्तमना एवमन्येपि त्रयः एवमिति सङ्ख्यादिसूत्रेषु चतुर्भङ्गिकातिदेशो कारि लाघवार्थं सङ्ख्यो विकल्पो मनो

**पञ्चत्वा तंजहा उन्नतपणामं ४ । चत्वारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा उन्नतपणाममेगेउन्नतपणणे उन्नत० एवं**

जंवा ज्ञावथी पिण जंवा परिणतना धणी ग्यानादिगुणयुक्त । ग्यानरहित तेनींव परिणते इम च्यार ज्ञांगाकरीलेवा ॥ वली च्यार वृत्त कहिया तेकहैछे ॥ एक वृत्त द्रव्यथी जवाछे अने उन्नत रूपछे सस्थान आकार वयथी सुदरपणाथी तिम च्यार ज्ञागा जाणवा ॥ इमज च्यार प्रकार ना पुरुष जाणवा तेकहैछे ॥ गृहस्थआश्री द्रव्यथी उन्नतकुल ज्ञावथी सुदर शरीर रूप । साधुआश्री द्रव्यथी जचो संवेगी ज्ञावथी जचो ते साधुना वेषसहित इम च्यारजेद जाणवा ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहैछे ॥ एक पुरुष द्रव्यथी उन्नत इत्यादि गुणे ज्ञावथी उन्नत जावे औदार्यादे गुणयुक्त औदार्यादि सहित सकल्प तेउन्नत सकल्प कहिये । उन्नतथी विपरीत तेप्रसन्न लीजोपणि इम सर्वत्र जाणवु ॥ इम उन्नतसाथे सकल्पे तेमान विशेष विचार तेहनी चोजंगी ॥ इम प्रग्यासाथे च्यार ज्ञागा । प्रकृष्टग्यान तेप्रग्या रुखस अर्थ विशेष ॥ उन्नत विशेष एहनुं उन्नतपणुं तेविसवाद रहित नाण दृष्टिमांपिण ज्ञावथी उन्नतपणु अविस्वाद ॥ इम दृष्टि चक्षुसा नाथवा नयनत तेखा

निर्णयार्थः उन्नतत्वं चास्वीकार्यमिदं तदा सदर्शनं निषयतया वा ८ प्रकृतं ज्ञानं प्रज्ञानं सूक्ष्मार्थविवेचकत्वमित्यर्थः तस्य चोन्नतत्वं मयिसम्बादि  
 तथा ९ तथादर्शनं दृष्टिं सत्तुर्ज्ञानं नयमतया तदुन्नतत्वं मयिसम्बादि तथेति १० त्रियापरिणामापेक्षं मतः सूत्राय तत्र शीलाचारः शीलं समाधिः तत्  
 प्रधानं स्तस्य वा चारो नृष्ठानं शौलेन वा स्वभावेनाचार इति उन्नतत्वं चास्या दूषणतया वाचनान्तरे तु शीलसूत्रं माचारसूत्रं भेदेनाधीयत इति ११ व्यवहारः  
 रः प्रत्योक्तदानग्रहणादि विनादो वा उन्नतत्वं मस्य श्लाघ्यत्वेनेति पराक्रमः पुरुषाकारविशेषः परेषां वा शून्या माक्रमणं तस्योन्नतत्वं मप्रतिष्ठतत्वेन शो  
 भनविषयत्वेनेति उन्नतनिर्णयः सर्वत्र प्रणतत्वं भावनीयमिति ॥ एगेपुरिसेत्वादि ॥ एतेषु मनःप्रभृतिषु सप्तसु चतुर्भङ्गिकासूत्रेषु एक एव पुरुषजाताला  
 पनांध्येतव्यः प्रतिपक्षो द्वितीयः पक्षो दृष्टान्तभूतो वृक्षसूत्रे नास्ति नाध्येतव्यमिति यावत् एव मनःप्रभृतीनां दार्ष्टान्तिकपुरुषधर्माणां दृष्टान्तभूतवृक्षेषु  
 सम्भवादिति १३ ॥ उज्जुति ॥ ऋजुरवतोनामेति पूर्वपदेकः कश्चित् वृक्षः तथा ऋजुरविपरीतस्वभाव शौचित्येन फलादिसम्पादना दित्येकः द्वितीये द्वि

सकप्ते पन्ते दिष्टी सीलाचारे व्यवहारे परस्परमे एगेपुरिसजाए पञ्चिवस्को णत्थि । चत्तारि रुक्का पण्णत्ता

ये चार जागलेवा ॥ इमं शील आचारनापिण चार जांगा । शील ते समाधि तेहनो प्राचार जावथी उन्नत । व्यवहारे पिण चार जां  
 गा । पराक्रम ते पुरुषाकार तेथी चार जांगा । इहा जावथी उन्नतपणुं पाळी हणाये नथी । एसात जागांनेविषे एकज आलावो जाणवुं ।  
 मनप्रमुखनेविषे प्रतिपक्षनो सूत्रनथी ॥ चार प्रकारना वृक्ष कहिया तेकहैल्ले ॥ एक वृक्ष द्रव्यथी सरल वक्रनथी जावथी उचित योग्य फल  
 नो देणहार । एक द्रव्यथी सरल । जावथी वक्र विपरीत फलनो देणहार । एम चार जागा कहिया ॥ सहनीपरे चार जांगा पुरुषना

तीयं पद ॥ वंकइति ॥ वक्रः फलादौविपरीतः तृतीये प्रथमपदं वक्रकुटिलः चतुर्थः सुज्ञानः अथवा पूर्वं ऋजुः अवक्रः पश्चादपि ऋजु रवक्रो ऽथवा मूले ऋ  
 जुरतेच ऋजु रित्येव चतुर्भङ्गी कार्येत्येषदृष्टातः पुरुषस्तु ऋजु रवक्रो वहिस्तात् शरीरगतिवाक्चेष्टादिभि स्तथा ऋजु रन्तर्निर्मायित्वेन सुसाधुवदित्येकः  
 तथो रिजु स्तथैव ॥ वकइतितु ॥ वक्रः अन्तर्मायिकत्वेन मायिकारणवशप्रयुक्तार्जवभावो दुःसाधुवदिति द्वितीय स्तृतीयस्तु कारणवशा दृशितवहिरनार्ज  
 वीं तर्निर्माय इति प्रवचनगुप्तिरक्षाप्रवृत्तसाधुवदिति चतुर्थ उभयतोवक्र तथाविधशठवदिति कालभेदेन वाव्याख्येय २ अथ ऋजु ऋजुपरिणतइत्यादिका  
 एकादश चतुर्भङ्गिका लाघवार्थमिति देशेनाह एवमित्यनेन ऋजुर्नाम ऋजुरित्यादिनोपदर्शितक्रमभङ्गकक्रमेण ॥ यथेति ॥ येनप्रकारेण परिणतरूपादिविशे  
 षणनवकविशेषिततयेत्यर्थः उन्नतप्रणताभ्यां परस्पर प्रतिपक्षभूताभ्या गम सदृशपाटः कृतः तथा तेनप्रकारेण परिणतरूपादिविशेषिताभ्या मित्यर्थः ऋजु  
 वक्राभ्यामपि भणितव्यः कियत्तमइत्याह ॥ जावपरक्रमेति ॥ ऋजुवक्रवृत्तसूत्रात् त्रयोदश सूत्रं यावदित्यर्थः तत्र ऋजुः ऋजुपरिणत ऋजुरूपलक्षणानि  
 षट्सूत्राणि वृत्तदृष्टान्त पुरुषदार्ष्टान्तिकस्वरूपाणि शेषाणितु मनः प्रभृतीनि सप्त अदृष्टान्तानीति १३ पुरुषविचार एवेदमाह ॥ पङ्क्तिमेत्यादि ॥ स्फुटं

तंजहा उज्जुणाममेगे उज्जु उज्जुणाममेगेवंके चउज्जंगो । एवामेव चत्वारिपुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा उज्जु  
 णामं एगेउज्जु ४ । एवंजहाउन्नयपणएहिं गमो तहा उज्जुवंकेहिंवि ज्ञाणियत्तो जाव परक्कामे पप्पिमाप

कहिया तेकहैछे ॥ एक पुरुष द्रव्ययी जात्यादिकयी सरल जावयी सरल स्वज्ञावी । इम जिम उन्नतपदना च्यार ज्ञांगा तिम रिजुवक्रना पिण च्यार  
 ज्ञागा कहिवा पराक्रमलगे ॥ यतीनी बारे प्रतिमा अजिगूह विशेष अंगीकार कीधा एहवा अणगारने सूझै च्यार ज्ञाधानो बोलिवो ते कहैछे ॥ याचनी

परं प्रतिमाभिस्तुप्रतिमां द्वादश समयप्रसिद्धा स्ताः प्रतिपन्नो ऽभ्युपगतवान् य स्तस्य याच्यते अनयेति याचनी पानकादेः दाहिसिमेएत्तोअणतरं पाणग  
जायमित्यादि समयप्रसिद्धकृमेण तथा प्रच्छनी मार्गादेः कथञ्चित् सूत्रार्थयोर्वा तथा अनुज्ञापनीया अवग्रहस्य तथापृष्ठस्य केनाप्यर्थादेर्व्याकरणी प्रतिपा  
दनीति भाषा प्रस्तावा ज्ञाषाभेदानाह ॥ चत्वारिभासेत्यादि ॥ जात सुत्पत्तिधर्मक तच्चव्यक्तिवस्तु अतोभाषाया जातानि व्यक्तिवस्तूनिभेदाः प्रकाराः  
भाषाजातानि तत्र सतो मुनयो गुणाः पदार्थावा तेभ्योहितं सत्यमेक प्रथम सूत्रकृमापेक्षया भाष्यते सा तथावा भाषणवा भाषा कोययोगगृहीतवा  
ग्योग निमृष्टभाषाद्रव्यसंहति स्तस्या जात प्रकारो भाषाजात अस्त्यात्मेत्यादिवत् द्वितीयं सूत्रकृमादेव ॥ मोसति ॥ प्राकृतत्वात् मृषा अनृत नास्त्या  
त्मेत्यादिवत् तृतीय सत्यमृषा तदुभयस्वभावं आत्मास्त्यकर्त्तव्यादिवत् चतुर्थमसत्यामृषा अनुभयस्वभाव देहीत्यादिवदिति भवतश्चात्रगाथे सच्चाहिया

ऋवन्नस्सणं अणगारस्स कप्पंति चत्वारिज्ञासाउ ज्ञासित्तए त० जायणी पुच्छणी अणुन्नवणी पुठस्सवागरणी  
चत्वारिज्ञासजाया पस्सत्ता तजहा सच्चमेगज्ञासजायं वीइयमोस तइयंसच्चामोस चउत्थंअसच्चमोसं । चत्वारि

तेयाचनानी आहारादिकनी एआपीस मुक्कने । पूछणी मार्गादिकनी दाखिवो अथवा सूत्रार्थनो गुरुने पूछिवो । अणुन्नवणी अवग्रहनी आग्या  
देवो । कोईये अर्थादि पूछनी तेकहवु तेपृष्ठव्याकरण पूछानु जवाय देवु एचार ज्ञापा वोलै ॥ ज्ञापाना जेद कहैछे । चार प्रकारनी ज्ञापा  
कही । एक सत्य ज्ञापानुं प्रकार जेसूत्रानुसारे सांचुं वोलवु वीजी मृषा सोटु वोलवु नास्तिकनीपरे । त्रीजी सत्या मृषा नास्तिकनी परे  
जीवादि नथी । चौथीसाची नथी खोटीपिण नथी देहीत्यादिवत् । वली पुरुषनांजेद कहवाने कहैछे । चार प्रकारे वस्त्र एक शुद्ध निर्मल

सयामिह संतीमुण्णोगुणापयत्थावा तत्त्विवरीयामोसा मीसाजातदुभयसहावा ॥ १ ॥ अण्हिगयांजायाई सुविसद्दीच्चियकेवलोअसच्चमुसा एयांसमेय  
लक्खण सोदाहरणाजहासुत्तेत्ति ॥ २ ॥ पुरुषभेदनिरूपणा येवेयं त्रयोदशसूत्री ॥ चत्तारिवत्थेत्यादि ॥ स्पष्टा नवर शुद्धवस्त्रं निर्मलतत्त्वादिकारणारब्धत्वात्  
पुनः शुद्धमागन्तुकमलाभावादिति अथवा पूर्वशुद्ध मासो दिदानौमपि शुद्धमेव विपक्षौ सुज्ञानावेवेति अथदार्ष्टान्तिकयोजना ॥ एवमेवेत्यादि ॥ शुद्धो  
जात्यादिना पुनःशुद्धो निर्मलज्ञानादिगुणतया कालापेक्षयावेति ॥ चउभंगोत्ति ॥ चत्वारोभङ्गाः समाहृताश्चतुर्भङ्गो चतुर्भंगवा पुल्लिंगताचात्र प्राकृतत्वा  
त्तदयमर्थो वस्त्रव चत्वारोभङ्गाःपुरुषेपि वाच्याइति ॥ एवमिति ॥ यथा शुद्धान् शुद्धपदे परे चतुर्भंग सदाष्टान्तिक वस्त्रमुक्त एवशुद्धपदप्राक्पदे परिणतपदे  
रूपपदे च चतुर्भंगानि वस्त्राणि ॥ सपण्डिवक्खत्ति ॥ सप्रतिपक्षाणि सदाष्टान्तिकानि वाच्यानि इति तथाहि चत्तारिवत्था पन्नत्ता तजहा सुद्धेनामएगे  
सुद्धपरिणए चतुर्भङ्गी ॥ एवेत्यादि ॥ पुरुषजातसूत्रचतुर्भङ्गी एव सुद्धेनाम एगे सुद्धरूवे चतुर्भङ्गी एव पुरुषेणापि व्याख्यातुपूर्ववत् ॥ चत्तारि इत्यादि ॥ शुद्धो

वत्था पस्सत्ता तंजहा सुद्धेणामंएगेसुद्धे सुद्धेणामंएगेअसुद्धे असुद्धेणामंएगेसुद्धे असुद्धेणामंएगेअसुद्धे । एवा  
मेव चत्तारिपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा सुद्धेणामंएगेसुद्धे चउभंगो । एवंपरिणयरूवे वत्था सपण्डिवस्का । च

तंतुथी नीपनुं नवीन मलरहित । एकं शुद्धं तंतुथी नीपनुं पणिमलिनंथयोळै । एकं अशुद्धं मलिन तंतुथी नीपनुं पणिनिखारी शुद्धकीधोळे ।  
एकतंतुं द्रव्यथी अशुद्धं मलिन जावथी पणिमलिन थयोळै ॥ एम च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैळे । एक शुद्ध जात्यादिके करी जावथी  
पिण्णानाणादिकथी शुद्धळे । एम वस्त्रनीपरे च्यार जांगा कहिवा ॥ एम परिणतपदे रूपपदे च्यार च्यार जांगा कहिवा ॥ वस्त्रने प्रतिपक्षं दृष्टां



वहिःशुद्धमनाः अतः एवं शुद्धसङ्कल्पः शुद्धप्रज्ञः शुद्धदृष्टिः शुद्धशीलाचारः शुद्धव्यवहारः शुद्धपराक्रमइति वस्त्रवर्ज्याः पुरुषा एव चतुर्भङ्गवन्तो वाच्याः व्याख्यात प्रागिवेति अतएवाह ॥ एवमित्यादि ॥ पुरुषभेदाधिकारएवेदमाह ॥ चत्वारिसुएत्यादि ॥ सुताः पुत्राः ॥ अइजाएत्ति ॥ पितुः सम्पदमतिलंघ्य जातः सम्बृत्तो ऽतिक्रम्यवा ता यातः प्राप्तो विशिष्टतरसंपदः समृद्धतरइत्यर्थः इत्यतिजातो तियातोवा ऋषभवत् तथा ॥ अणुजाएत्ति ॥ अनुरूपः सम्पदापितुस्तुल्योजातो ऽनुजातः अनुगतोवा पितृविभूत्यानुयातः पितृसमइत्यर्थः महायशोवत् आदित्ययशसापित्रा तुल्यत्वात्तस्य तथा ॥ अवजाएत्ति ॥ अपइत्यपसदोहीनः पितुः सम्पदो जातो अपजातः पितुः सकाशा दोषद्वौनगुण इत्यर्थः आदित्ययशोवत् भरतापेक्षया तस्यहीनत्वात् तथा ॥ कुलिगालेत्ति ॥

त्वारिपुरिसजाया पस्यत्ता तंजहा सुद्धेणामण्णसुद्धमणे चउज्जंगो । एवं संकप्पे जाव परक्कमे । चत्वारिसुया पस्यत्ता तंजहा अइजाए अणुजाए अवजाए कुलिंगाले । चत्वारिसज्जाया पस्यत्ता तंजहा सज्जेणामण्णसज्जे

त पणिकहिवो जिमवृत्तने कहियो तिम ॥ च्यार प्रकारनां पुरुष कहिया तेकहैछे । एक ज्यात्यादिकथी शुद्ध तथा जावथी पिणशुद्ध अंतःकरण छै । एहना पणिच्यार जांगा कहिवा ॥ एम शुद्धसकल्प मनशुद्धि युक्तना च्यार जांगा कहिवा ॥ एम शुद्धप्रग्य शुद्धशीलाचार जिहांलंगि शुद्ध पराक्रमआवे तिहालगे प्रत्येकै च्यार च्यार जागा कहिवा ॥ पुरुषना अधिकार गाटेज कहैछे च्यार प्रकारना पुत्रकहिया ते कहैछे । अतिजात जेपितानी अपेक्षाये सपदाथी अधिको जरतनीपरे । अनुजात तेपितासरिखो आदित्ययशानुपुत्र महायशराजाजिम । अपजात जेपिताथी सपदायेहीन जरतनी अपेक्षाथी जिम आदित्ययश । कुलागार कुलगोत्रने अदूषकपणाथी तथा उपताप देवाथी कडरीकनीपरे । एम शिष्यनापणि

कुलस्यस्वगोत्रस्याङ्गारइवाङ्गारो दूषकत्वा दुपतापकत्वाहेति कण्डरीकवत् एव शिष्यचातुविध्यमप्यवसेयं सुतशब्दस्य शिष्येष्वपि प्रवृत्तिदर्शनात् तत्राभिजातः सिंहगिर्यपेक्षया वैरस्वामिवत् अनुजातः शय्यभवापेक्षया यशोभद्रवत् अपजातो भद्रबाहुस्वाम्यपेक्षया स्थूलभद्रस्वामिवत् कुलाङ्गारः कूलवालुकवदुदायिनृपमारकवदेति तथा ॥ चत्तारौल्यादि ॥ सत्यो यथा वडस्तुभण्णना दयथा प्रतिज्ञातकरणाच्च पुनः सत्यः सत्यमित्वेन सङ्गीहितत्वात् अथवा पूर्वं सत्य आसीदिदानीमपि सत्यएवेति चतुर्भंगी एवंप्रकारसूत्राण्यतिदिशन्नाह ॥ एयमित्यादि ॥ व्यक्त नवर मेव शूत्राणि चत्तारि पुरिसजायापन्नत्ता त सच्चेनामंगे सच्चपरिणए ४ एवं सच्चरूवे ४ सच्चमणे ४ सच्चसंकपे सच्चपन्ने ४ सच्चदिष्ठो ४ सच्चसौलायारे ४ सच्चववहारे ४ सच्चपरक्कमेत्ति ४ ॥ पुरुषाधिकारएवेद मपर माह ॥ चत्तारिवत्येत्यादि ॥ शुचिः पवित्रभावेन पुनः शुचिःसंस्कारेण कालभेदेनवेति पुरुषचतुर्भंग्या शुचिः पुरुषो पूतिशरीरतया पुनः शुचिःस्वभावेनेति

**सच्चेणामंगेअसच्चे ४ एवंपरिणएजाव परक्कमे । चत्तारिवत्या पसत्ता तंजहा सुइणामंगेसुई सुईणामं**

चार प्रकार जाणवा सुतशब्दथी शिष्यनुं पणिगूहणथायळे अजिजात तेसिंहगिरीनी अपेक्षाये जिम वैरस्वामी । अनुजात शय्यंजवसूरिनी अपेक्षाथी जिम यशोभद्रसूरि । अपजात तेजद्रबाहु स्वामीनी अपेक्षाथी जिम स्थूलजद्रस्वामी । कुलांगार जिम कूलवालुक तथा उदायिनृपनुं मार क ॥ वली चार प्रकारनां पुरुषकहिया तेकहैछे । एक साचो सांची प्रतिग्यानुधणी सत्यसयमनुं पालनहार । एक द्रव्यथी सांचो साची प्ररू पणानुंधणी पणिजावथी असत्यनु चलावनहार एम चार जांगा कहिवा ॥ एम सत्य परिणतना चार जांगा यावत् जिहांलगे सत्यपराक्रमना चार जागाहोय तिहांलगे कहिवा ॥ चार प्रकारना वस्त्रकहिया तेकहैछे । एक वस्त्रद्रव्यथी पवित्र अने संस्कारथी पवित्र निखास्युं धोयुं ।

॥ सुइपरिणएसुइरूवे ॥ इत्येतत् सूत्रद्वयं दृष्टान्तदाष्टान्तिकोपेतं ॥ सुइमणेइत्यादि ॥ च पुरुषमात्राश्रितमेव सूत्रसप्तक मतिदिशन्नाह ॥ एवमित्यादि ॥ कण्ठं पुरुषाधिकारएवेदं मपरमाह ॥ चत्तारिकोरवेत्यादि ॥ तत्र आम्नश्चूत स्तस्य प्रलम्बः फलं तस्यकोरक तन्निष्पादक सुकुल आम्नफलकोरक एवमन्येपि नवर तालो वृक्षविशेषः वल्ली कालिंग्यादिका मिंढविषाणा मेषशृङ्गसमानफला वनस्पतिजातिः आउलिविशेषइत्यर्थः तस्याः कोरक मितिविग्रह एतान्येव चत्तारि दृष्टान्ततयो पात्तानीति चत्वारौल्युक्तं नन्तु चत्वार्येव लोके कोरकाणि बहुतरोपलभादिति ॥ एवमित्यादि ॥ सुगम नवर सुपनयः एवयः पुरुषः सेव्यमान उचि

एगेअसुई चउन्नंगो । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पसत्ता तंजहा सुईणामंएगेसुई चउन्नंगो । एवं जहेव सुइणंवत्येणं जणियं तहेव सुइणावि जावपरक्कमे । चत्तारि कोरवा पसत्ता तंजहा अंबपलंबकोरवे ताल पलबकोरवे वल्लिपलंबकोरवे मिंढविसाणकोरवे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पसत्ता तंजहा अंबपलंब

एक द्रव्यथी पवित्र जावथी अपवित्र । एम च्यार जांगा कहिवा ॥ एणीपरे च्यार जागा च्यार प्रकारनां पुरुष कहिया । एक शरीरथी पवित्र जावथी मनपरिणामथी अपवित्र । एम च्यार जांगा कहवा ॥ एम यावत् शुद्धवस्त्रना च्यार जागा कहिया तिमज पवित्रसाथे कहवा शुचिपरि णात जाव शुचिपराक्रमलगे कहवा पुरुषआश्री ॥ च्यार प्रकारे कोरक कहिया तेकहैछे । आवानुं फल आगली कोपल नीकले तेकोरक । ताल वृक्षनुं कोरक । बेल कालिंग्यादिकनु कोरक । बोकडानासिंग सरिखा फलनी वनस्पति तेआउल तेहना फलनु कोरक । एहनीपरे च्यार प्रकार ना पुरुष कहिया तेकहैछे । एक अम्बफल कोरकसमान जेपुरुष सेव्योथको उचितकालें फलआपे वसते तिमआपे । जेपुरुष सेवाकरता सेवकर्ने कष्ट

तकाले उचितमुपकारफलं जनयत्यसा वा स्वप्रलम्बकोरकसमानः यस्त्व तिचिरेण सेवकस्य कष्टेन महदुपकारफलं करोति सतालप्रलम्बकोरकसमानः यस्तु अक्लेशेनाचिरेण च ददाति सवक्त्रोप्रलम्बकोरकसमानः यस्तु सेव्यमानोपि शोभनवचनान्येव ब्रूते उपकारन्तु न कञ्चन करोति स मिढविषाणकोरकसमानः त्वकोरकस्य सुवर्णवर्णत्वा द्वाद्यफलदायकत्वाच्चेति पुरुषाधिकारएवधुणसूत्र त्वचवाह्यवल्क खादतोति त्वक्खादः एवशेषा अपि नवर ॥ छन्निति ॥ अभ्यन्तरं वल्क काष्ठ प्रतोत सारः काष्ठमध्य मितिदृष्टान्तः एवमेवेत्याद्युपनयसूत्र भिक्षणशीला भिक्षणधर्माणो भिक्षणेसाधवोवा भिक्षाकाः त्वक्खादनधुणेन समानो ऽत्यत सन्तोषितया आयामास्त्रादिप्रान्ताहारभक्षकत्वात् त्वक्खादसमानः एव छन्नोखादसमानो अलेपाहारकत्वात् काष्ठखादसमानो निर्वि

कोरवसमाणे तालपलंबकोरवसमाणे बल्लिपलवकोरवसमाणे मिढविसाणकोरवसमाणे । चत्तारि घुणा प० तंजहा तयस्काए बल्लिखाए कठखाए सारखाए । एवामेव चत्तारि जिस्काया पस्सत्ता तंजहा तयस्कायस माणे जाव सारखायसमाणे । तयस्कायसमाणस्सणं जिस्कागस्स सारखायसमाणे तवे पन्नेत्ते । १ । सार

थी फलआपे तेताडफलनीपरे तेताडफल कोरकसमान । जेपुरुष कष्टविना सेवकने बहुलधनादि आपे तेबेल प्रलंब कोरकसमान । जेपुरुष सेव्यो थको मीठावचनबोले पणिकाइ आपेनथी तेमिढविषाण कोरकसमान ॥ चार प्रकारना घुण काष्ठमे उपजे तेजीवकहया ते कहैछे ॥ एक बाहिर ली त्वचा खाय । एक माहिली छालखाय । एक काष्ठ खाय । एक काष्ठनो सारमध्यखाय । इणदृष्टोते चार जिज्ञाचर साधुकहिया ते कहैछे ॥ त्वचाखाय तेघुण सरिखा तेजिहसतोपी आंवल प्रमुख तपप्रांतमां आहारनो लेणहार । एम जिहांलगे सारखाय तेसरिखो तेसर्व विगयनो आ

कृतिकाहारतया सारखादसमानः सर्वकामगुणाहारकत्वादिति एतेषां चतुर्णामपि भिक्षाकाणां तपोविशेषाभिधानसूत्रं ॥ तयखायेत्यादि ॥ सुगम केव  
न मयभावार्थः त्वक्कल्पासाराहाराभ्यवहर्तुं निरभिष्वगत्वा त्कर्मभेद मङ्गीकृत्य वज्रसारं तपोभवतीत्यतो तिदिश्यते ॥ सारखायसमाणेतवेत्ति ॥ सार  
खादघुणस्य सारखादत्वादेव समर्थत्वात् यज्जतुडत्वाच्चेति सारखादसमानस्योक्तान्नक्षणस्य साभिष्वगतया त्वक्खादसमानं कर्मसारभेद प्रत्यसमर्थं तपः  
स्यात् त्वक्खादघुणस्य हि त्वक्खादत्वादेव सारभेदनं प्रत्यसमर्थत्वादिति तथा कृणोखादघुणसमानस्य भिक्षाकस्य त्वक्खादघुणसमाना पेक्षया किञ्चिद्विशि  
ष्टभोजित्वेन किञ्चित्साभिष्वगत्वात् सारखादकाष्टखादघुणसमानापेक्षया त्वसारभोजित्वेन निरभिष्वगत्वाच्च कर्मभेदगति काष्टखादघुणसमान तपः प्र  
ज्ञप्तं नातितीव्र सारखादघुणव नाप्यति मन्दादित्वक्कृणोखादघुणवदितिभावः तथा काष्टखादघुणसमानस्य साधोः सारखादघुणसमानापेक्षया त्वसार

खायसमाणस्सणं निरकागस्स तयखायसमाणे तवे पन्नत्ते त्वल्लिखायसमाणस्सणं  
निरकागस्स कठखायसमाणे तवे पन्नत्ते । ३ । कठखायसमाणस्सणं निरकागस्स

हारीहोय तिहालगे कहिये । कललीखाय तेघुण सरिखो साधु अल्पाहारी । काष्टखाय तेघुण सरिखो साधु नीवी प्रमुखनो आहारी ॥ हिवे  
घ्यार भिक्षुना तपकहैछे ॥ त्वचाखाय तेघुणसमान आहारना करणहार साधुनें सारखादक समान तपकहियो सारखाय तेघुणनी चांच वज्जनीपरें  
आकरीहोय तिम कर्मजेद वा आकरो तपकरै । सारखादक समान सरस आहारना करणहार साधुनें त्वचा खाय तेसमान तपकहियो थोढो  
तपकरै कर्मनुसार मध्यजेदी नसकै । और मांहिली कालखाय तेसमान थोडा आहारना करणार साधुनें काष्टखादक समान तपकहियो ।

भोजित्वेन निरभिष्वंगत्वात् त्वक्छलीखादघुणसमानापेक्षया सारतरभोजित्वेन साभिष्वंगत्वाच्च छलीखादघुणसमानंतपः प्रज्ञप्त कर्मभेदंप्रति न सारखाद  
 काष्ठखादघुणवदतिसमर्थादिनापि त्वक्खादघुणवदतिमन्दमितिभावः प्रथमविकल्पे प्रधानतरन्तपो द्वितीये अप्रधानतरन्तपो तृतीयेप्रधान चतुर्थे ऽप्रधा  
 नमिति अनन्तरं वनस्पत्यऽवयवखादका घुणाः प्ररूपिताइति वनस्पतिमेव प्ररूपयन्नाह ॥ चउब्विहेत्यादि ॥ वनस्पतिः प्रतीतः सएवकायः शरीरं येषान्ते  
 वनस्पतिकाया स्तएव वनस्पति कायिका स्तृणप्रकारा वनस्पतिकायिका स्तृणवनस्पतिकायिका वादरा इत्यर्थः अग्र बीज येषान्ते अग्रबीजाः कोरण्टका  
 दयः अग्रेवा बीज येषान्ते अग्रबीजा बीज्यादयो मूलमेव बीज येषान्ते मूलबीजाः उत्पलकन्दादयः एव पर्वबीजा इच्छादयः स्कन्धबीजाः शलक्यादयः स्कन्धः  
 त्युडमिति एतानिच सूत्राणि नान्यथवच्छेदनपराणि तेन बीजरुहसमूच्छेदनजादौना नाभावो मन्तव्यः सूत्रान्तरविरोधादिति अनन्तर वनस्पतिजीवाना

बल्लिखायसमाणे तवे पस्यते । ४ । चउब्विहा तणवणस्सइकाइया पस्यत्ता तंजहा अग्वीया मूलवीया पो

पूर्वे कहियो तेहथी कार्दक विशेष तपकरै । काष्ठखादक समान विगय रहित आहारनां लेणहार साधुनें बल्लिखादक समान तपकहियो हलको  
 तपकरै ॥ प्रथम जेदनु प्रधानतर घणीतप बीजे भेद अप्रधानतप बीजे प्रधान चौथे भेदै पणि प्रधानतप । वनस्पतिना खानहार जीवनुं दृष्टात  
 कहियो तेमाटे वनस्पतिना भेदकहैछे । चार प्रकारे तृण वनस्पतिकाय तेबादर वनस्पती कही तेकहैछे । अग्रमा बीजछे जेहने ते अग्रबीजा को  
 रंटवृक्ष वृही जुआरि गोहुं बाजरा प्रमुख अग्रबीजा । मूलहीजछे बीज जेहनुं तेमूलबीजा कदादिक । पर्व गाठछे बीज जेहनुं तेपोरबीजा इत्तु  
 प्रमुख । स्कंधछे बीज जेहनुं तेस्कंधबीजा सल्लकी प्रमुख ॥ एह वनस्पती पृथ्वीने आश्रितछे रत्नप्रज्ञा पृथ्वी आश्रित नारकी पणिछे ते कहैछे

अतः स्थानकमुक्त मधुना जीवसाधर्म्या नारकजीवानामित्य तदाह ॥ चउहीत्यादि ॥ सुगम केवलं ॥ ठाणेहिंति ॥ कारणैः ॥ अहुणोववन्नेत्ति ॥ अधुनो  
 पपन्नो ऽचिरोपपन्नो निर्गत मयं शुभमस्मा दितिनिरयो नरकः तत्र भवो नैरयिक स्तस्य चानन्योत्पत्तिस्थानतां दर्शयितुमाह निरयलोके तस्मादिच्छेन्मा  
 नुपाणामयं मानुष स्त लोक क्षेत्रविशेष ॥ हव्व ॥ शोघ्रमागन्तु ॥ नोचेवत्ति ॥ नैव णवाक्यालङ्कार ॥ सचाएइ ॥ सम्यक्शक्तीति आगन्तु ॥ समुद्भुयति ॥  
 समुद्भूता मतिप्रवलतयोत्पन्ना पाठान्तरेण सम्मुखभूता मेकहेलोत्पन्ना म्पाठान्तरेण अमहतो महतो भवन महद्भूतं तेन सह यासा समहद्भूता तां समहद्भूता  
 वा वेदना दुःखरूपा वेदयमा नो ऽनुभवन् इच्छेदिति मनुष्यलोकागमनेच्छायाः कारण मेतदेववा ऽशकनस्य तीव्रवेदनाभिभूतोहि नशक्त आगन्तु मि  
 ति तथानिरयपालै रवादिभि र्भूयोभूयः पुनः पुन रधिष्ठोयमानः समाक्रम्यमाण आगन्तु मिच्छे दित्यागमनेच्छाकारणमेतदेववा गमनाशक्तिकारणं तैरत्य

रवीया खंधवीया । चउहिंठाणेहिं अज्जणोववस्से णेरइए णिरयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसंलोगं हव्वमागच्छि  
 तए णोचेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए १ । अज्जणोववन्तेणेइए णिरयलोगंसि समुप्पुयं वेयण वेयमाणे

चार थानकै तुरत उपनुं नारकी नरकलोकमां नरकावासमां रहियो थको चिंतवें बांछे मनुष्यलोकमां आववानें पणि आवानें समर्थ नथाय एतले  
 आवी नसकै मनुष्य लोकमां । तुरतऊपनुं नारकी सम्यक् घणी प्रबल ऊपनी वेदनाप्रति वेदतो जोगतो बांछे मनुष्य लोकमा आवानेपण तीव्रवेद  
 ना जोगतो इहा आवाने समर्थ नथाय एहवेदनानुं पहलु थानकथयु । तुरत ऊपनो नारकी नरकलोकने विषें नरकपाल परमाधामी प्रमुख थी  
 बारंबार आक्रमी आक्रमतोथको वेदना जोगवतो मनुष्यलोकमां आवयुं बांछे एपरमाधामीना कारणथी आववानी बांछाकरे पणि आववानें सम

गताक्रान्तस्यागन्तु मशक्तत्वादिति तथा निरये वेद्यते अनुभूयते यन्निरययोग्यवा यद्देदनीयं अत्यन्ताशुभनामकर्मादि असातवेदनीयंवा तत्र कमणि अक्षीणे स्थित्या अवेदिते ऽनुभूतानुभागतया ऽतिजीर्णे जीवप्रदेशेभ्यो ऽपरिश्रिते इच्छे न्मानुषलोकमागन्तु त्रच शक्नोति अवश्यवेद्यकर्मनिगडयत्रितत्वा दित्यागम नाशकनएव कारण मिति तथा ॥ एवमिति ॥ अहुणीववन्ते ॥ इत्याद्यभिलापससूचनार्थः निरयायुष्केकर्मणि अक्षीणे यावत्कारणात् अवेदइत्यादिदृश्य मिति निगमयन्नाह ॥ इच्छेएहिमिति ॥ इति एवप्रकारैरेतैः प्रत्यक्षै रनन्तरोक्तत्वादिति अनन्तर द्वारकस्वरूपमुक्त तेचासयमोपष्टम्भकपरिश्रहा दुत्पद्यन्तइति तद्वि

इच्छेज्जा माणुसंलोगं हव्व मागच्छित्तए णोचेवणं संचाएइ हव्व मागच्छित्तए २ । अज्जणोववन्ते णेरइए णिरय लोगंसि णिरयपालेहिं जुज्जो जुज्जो अहिठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्व मागच्छित्तए नोचेवणं संचाएइ हव्व मागच्छित्तए । ३ । अज्जणोववन्ते णेरइए णिरयवेयणिज्जांसि कम्मंसि अस्कीणंसि अवेइयंसि अणिजि स्यांसि इच्छेज्जा नोचेवणं संचाएइ एवंनिरइया नुअंसि कम्मंसि अस्कीणंसि जावणोचेवणं संचाएइ हव्व माग च्छित्तए ४ । एस्सेएहिं चउहिं ठाणेहिं अज्जणोववन्ते णेरइए जावनोचेवणं संचाएइ हव्व मागच्छित्तए ।

र्थं नथाय अत्यंत आक्रमवाथी आवी नसकै एह बीजुंथानक ॥ तुरत ऊपनो नारकी जोगवायोग्य जेवेदनीय कर्म बांध्युंछै तेअसातावेदनीय कर्म क्षीण नथयुं थितिथी नथीवेदुं जोगव्यो नथी जीरणथयो नथी सडियो नथी जीवप्रदेशथी तेहथी वाछै आववुं पणि गुरुकर्मपणा मांटे आवी नसकै इमज जेनरकनुं आयुकर्म बाध्योछै ते क्षीणनथयुं थितिथी यावत् आववुं बांछै पणि आववाने समर्थ नथाय आजखो पूरो थयांविनां आवी नसकै



पक्षभूत स्मारिग्रहविशेषं चतुस्थानके वतारयन्नाह ॥ कल्पंतीत्यादि ॥ कल्पन्ते युज्यन्ते निर्गताग्रन्था दन्धहेतोर्हिरेण्णादेर्मिथ्यात्वादेशेति निर्ग्रन्थः साध्य  
 स्तासां सङ्गात्वा उत्तरीयविशेषरूपा धारयितुंवा परिग्रहे परिहर्तुंवा परिभोक्तुमिति दौहस्तौ विस्तारः पृथुलं यस्याः सा तथा कल्पन्तइति क्रियापेक्षया कर्तृ  
 त्वात्सङ्गाटीनां ॥ एगंदुहत्यवित्यारं एगचउहत्यवित्यारंति ॥ प्रथमास्या त्दर्धचप्राकृतत्वात् द्वितीयोक्ता धारयन्ति परिभुंजतेचेति प्रत्ययपरिणामेनवा क्रियानु  
 स्मृते द्वितीयैव तत्र प्रथमा उपाश्रयभोग्या विहस्तविस्तरयो रेका भिच्चागमने द्वितीया विचारभूमिगमने चतुर्थी समवसरणे उक्तञ्च सघाडीओचउरो त  
 त्यदुहत्याउवसयमि दुन्नितिहत्यायामा भिक्खुहाएगएगउच्चारि ॥ १ ॥ ओसरणेचउहत्या निसन्नपच्छायणीमसिणत्ति ॥ भारकत्वं ध्यानविशेषात् ध्यानविशेषा

कप्पंति णिग्गंथीणं चत्तारिसिंघाफ्ठीनं धारित्तए वा परिहरित्तएवा तंजहा एगंदुहत्यवित्यारं दोतिहत्यवित्या  
 रानं एगंचउहत्यवित्यारं । चत्तारि ज्जाणा पन्नत्ता तंजहा अहेक्काणे रोद्वेज्जाणे धम्मज्जाणे सुक्खेज्जाणे । अहे

एह च्यार थानकै करी अधुना हमणा ऊपनुं नारकी यावत् पणि समर्थनथाय मनुष्यलोकमां आववानें ॥ पापपरिग्रहणी नरकमां ऊपनी तेह  
 थी विचेपरिणत पुण्यनुं परिग्रह तेकहैछै । कल्पेसूभै निग्रंथी साध्वीनें च्यार सघाटिका ते पळेडी धारवी परिहरवी भोगवी तेकहैछै । एक बे  
 हाथनी विस्तारे । बे त्रणहाथनी । एक च्यारहाथनी विस्तारे । पहली बेहाथनी ते उपाश्रयमां ओढै तीनहाथनी बे तेहमां एक गोचरीजातां  
 ओढै बीजी थफिलजाता । च्यारहाथनी समोसरणमा जातां ओढै एव सर्वमली च्यारथई ॥ ध्यानार्थे पळेफियो कहियो हिवे ध्यान च्यारप्रकारे  
 कहियो तेकहैछै । एक आर्त्तध्यान मुहूर्त्तमात्र चित्तनी थिरता । रौद्रध्यान हिसाक्रौर्यादिसहित ध्यान तेरौद्र । धर्मध्यान श्रुतचारित्रसहित तेधर्म

यमेवच सङ्गाद्यादिपरिग्रहइति ध्यानं प्रकरणत आह ॥ सुगम ज्ञैत नवरं ध्यातयो ध्यानानि अन्तर्मुहूर्त्तमात्रं कालं चित्तस्थिरतालक्षणा न्युक्तं च अतोमुहुत्त  
मिच्छ चित्तावल्याणमेगवत्थंमि क्खउमत्याणंज्झाण जोगनिरोहोजिणाणति ॥१॥ तत्र ऋत दुःखन्तस्य निमित्तं तत्रवा भव ऋतेवापीडिते भव मार्त्तन्ध्यानं दु  
ष्टोध्यवसायः हिंसाद्यतिक्रौर्यानुगतरीदं श्रुतचरणधर्मादनपेत धर्म्यं शोधयत्यष्टप्रकारं कर्ममलं शुचं वा क्लमयतीतिशुक्तं ॥ चउव्विहेत्ति ॥ चतस्त्रोविधा  
भेदायस्य तत्तथा अमनोज्ञस्यानिष्टस्य ॥ असमणुसस्सत्ति ॥ पाठान्तरे अस्वमनोज्ञस्या नात्मप्रियस्य शब्दादिविषयस्य तत्साधनवस्तुनो वा सम्प्रयोगः सम्बन्ध  
स्तेन सम्प्रयुक्तः सम्बन्धो ऽमनोज्ञसम्प्रयोगसम्प्रयुक्तो ऽस्वमनोज्ञसंप्रयोगसंप्रयुक्तो वा य इति गम्यते तस्येति अमनोज्ञस्य शब्दादे विप्रयोगाय वियोगार्थं स्मृति  
श्चिन्ता ता समन्वागतः समनुप्राप्तो भवति यः प्राणी सोऽभेदोपचारा दार्त्तमिति वापीतिशब्दः विकल्पापेक्षया समुच्चयार्थः अथवा मनोज्ञसंप्रयोगसंप्रयुक्तो  
यः प्राणी तस्य प्राणिनः विप्रयोगे प्रक्रमादमनोज्ञशब्दादिवस्तूनां वियोजने स्मृतिश्चित्तनं तस्याः समन्वागतः समागमनं समन्वाहारो विप्रयोगस्मृतिसमन्वा

ज्जाणे चउव्विहे पन्तहे तंजहा अमणुन्तसंपणुगसंपउत्ते तस्सविप्पणुगसतिसमस्सागए याविज्जवड् मणुन्तसंप  
णुगसपउत्ते तस्सअविप्पणुगसतिसमस्सागए याविज्जवड् । अतंकसंपणुगसंपउत्ते तस्सविप्पणुगसतिसमस्सा

शुक्लध्यानं जेआठकर्मने सोधै ॥ आर्त्तं जे दुखपीडाथो ऊपनुं तेच्यारप्रकारे कहियो ते कहैछै । अमनोग्य अप्रिय वस्तुनो संप्रयोग संबंध तेहथी  
प्रयुक्त प्रेस्यो एतले मानीवस्तुने योग्यप्राप्ति तेहना अमनोग्य शब्दादिकना वियोगने अर्थ टालवाने चिन्ताकरवाने आर्त्तध्यान आवे एह पहलो  
भेद ॥ मनोग्य प्रिय शब्दादि वस्तुनो संप्रयोग संबंध प्राप्ति तेहनी तेगोसहित तेमनोग्य जलीवस्तुना अविप्रयोगने अर्थ चिन्तासहित थाय ए

गतवापीति तथैव भवति आर्त्तध्यानमिति प्रक्रमः अथवा मनोज्ञसम्प्रयोगसम्प्रयुक्ते प्राणिनि तस्येति अमनोज्ञ शब्दादे विप्रयोगस्मृतिसमन्वागत मार्त्तध्या-  
नमिति उक्तञ्च आर्त्तममनोज्ञानां सम्प्रयोगे तद्भि प्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहार इति प्रथममेवमुत्तरत्रापि नवर मनोज्ञ वल्लभधनधान्यादि अविप्रयोगो  
ऽवियोगइति द्वितीयमार्त्तमिति तथा आतङ्को रोगइति तृतीय तथा ॥ परिभुसियत्ति ॥ निपेविता ये कामाः कमनीयाः भोगाः शब्दादय अथवा कामौ  
शब्दरूपे भोगाःगन्धरसस्पर्शाः कामभोगाः कामानावा शब्दादौना योभोग स्तौ स्तेनवा सम्प्रयुक्तः पाठान्तरेतु तेषा न्तस्यवा सम्प्रयोग स्तेन सम्प्रयुक्तो य,  
सतथा अथवा ॥ परिभुसियत्ति ॥ परिचीणो जरादिना सचासौ कामभोगसम्प्रयुक्तश्च यस्तस्य तेषामेवा विप्रयोगस्मृतेः समन्वागत समन्वाहार स्तद  
पि भवत्यार्त्तध्यान मिति चतुर्थं द्वितीय वल्लभधनादिविषय चतुर्थं तत्सम्प्राद्यशब्दादिभोगविषयमितिभेदो नयोर्भावनीयः शास्त्रान्तरेतु द्वितीयचतुर्थयो रे  
कत्वेन तृतीयत्व चतुर्थं तत्र निदानमुक्त उक्तच अमणुणाणसद्वा इविसयवत्थूणिदोसमइलस [वस्तूनि शब्दादिसाधनानि दोसोत्ति बेषः] धणियवियोगचि

गण्याविज्जवइ ३ परिभुसियकामजोगसंपनुगसंपउत्ते तस्सञ्चविप्पनुगसतिसमस्सागण्याविज्जवइ ४ । इह

बीजो आर्त्तध्यान । धनधान्यादिजलीवस्तु मलीछै तेरखेंजाये विणसे तेहनी चितानुं । आतंक रोगनुं संप्रयोग संबध पाम्याथकां एतले रोग आ  
व्याथका तेहनु विप्रयोग नाश तेहनी चितासहित मनुष्य आर्त्तध्यानी थाय एतले चिंतवे जेएरोग कहिए जास्ये । सेव्या जेकामजोग तेहना  
संप्रयोग संबध सहितथको अथवा जरासहितथयो तिवारे जोगव्या जेजोग तेहनुं जेअविप्रयोग अविनाश तेहनेअर्थे चितासहित रहै तेआर्त्त ॥  
पाम्या जेजोग तेरोगातंके जोगवी नसके तेहनी चिंतासहित रहै तेपणि आर्त्त ॥ आर्त्तना च्यार लक्षण कहिया जेथी आर्त्त ओलखाय तेकहैछै

तण मसंपओगाणुसरणंच ॥ १ ॥ तहसूलसीसरीगा इवेयणाएवियोगपणिहाणं तपसंपओगचिंतण तप्पडियाराउलमणस्स ॥ २ ॥ इट्ठाणंविसयाइण, वेय  
 णाएयरगरत्तस्स अविओगज्झवसाणं तहसयोगाभिलासीय ॥ ३ ॥ देविदचक्कवट्ठि त्ताणइगुणरिद्धिपत्थणामइय अहमनियाणचित्ताण मखाणाणुगयमच्चत  
 त्ति ॥ ४ ॥ आर्त्तध्यानलक्षणा न्याह लक्ष्यते निर्सीयते परोक्षमपि चित्तरूपवृत्तित्वात् आर्त्तध्यानमेभि रिति लक्षणानि तत्र क्रन्दनता महताशब्देन विरव  
 ण शोचनता दीनता तेपनता तिपेः क्षरणार्थत्वा दश्रुविमोचनं परिदेवनता पुन.पुनः क्लिष्टभाषण मिति एतानिचेष्टवियोगानिष्टसंयोगरोगवेदनाजनि  
 तशोकरूपस्येवार्त्तस्य लक्षणानि यतआह तस्सकदणसोयण परिदेवणताडणाइलिगाइं इट्ठाणिठ्ठवियोगा वियोगवियणानिमित्ताइति ॥ १ ॥ निदानस्यैषा  
 च लक्षणातरमस्ति आहच निदइनिययकयाइ पससइसठिम्हओविभूइओ पत्थइतासुरज्जइ तयज्जणपरायणीहोइत्ति ॥ १ ॥ अथरौद्रध्यानभेदाउच्यते हिं  
 सां सत्वानावधवेधवधनादिभिः प्रकारैः पीडा मनुवध्नाति सततप्रवृत्ता करोतीत्येवशील यत्प्राणिधानं हिंसानुबन्धोवा यत्रास्ति तद्विसानुबंधिरौद्रध्यानमि  
 ति प्रक्रम इति उक्तञ्च सत्तवहवेधवधण डहणकणमारणाइपणिहाणं अइकोहगाहवत्थ निग्घिणमणसोहमविवागति ॥ १ ॥ तथा मृषा ऽसत्य तदनुवध्ना

रुसणं ज्जाणस्स चत्तारिलक्कणा पन्नत्ता तंजहा कंदणया सोयणया तिप्पणया परिदेवणया । रोहेज्जाणे चउ  
 विहे पन्नत्ते तंजहा हिसाणुबंधि मोसाणुबंधि तेणाणुबंधि संरक्कणाणुबंधि ४ । रोह्मस्सणं ज्जाणस्स चत्तारि

आक्रंदनता महाशब्दे रोवाथी । दीनपणे शोचकरवाथी । आंसूना गेरवाथी । परिदेवनता बारंबार बहुलदुखनुं जाखवुं ॥ रौद्र चार प्रकारें  
 कहियो तेकहैलैं । हिंसानुबंधी जीववधनुं चिंतववुं करुणारहित । मृषानुबंधी घात्रीप्रमुख खोटुबोलवुं । स्तेनानुबंधी परद्रव्य हरवानुं चित्त ।

ति पिशुनासभ्यासङ्गतादिभिर्वचनभेदैस्तन्मृपानुबन्धि आह च पिसुणासभासभूय भूयवायाइवयण पणिहाण मायाविणीतिसधण परस्सपच्छन्नपाव  
 सत्ति १ तथा स्तेनस्य चौरस्य कर्म स्तेय तीव्रक्रोधाद्याकुलतया तदनुबन्धवतः स्तेयानुबन्धि आह च तहतिव्वकोहलोहा उलस्सभूतोवघायणमणज्जं  
 परदव्वहरणचित्तं परलोगावायनिरवेक्खति ॥ १ ॥ सरत्तणे सर्वोपायैः परित्राणे विषयसाधनधनस्यानुबन्धो यत्र तत्सरत्तणानुबन्धि यथाह सदाइविस  
 यसाहण धणसरक्खणपरायणमणिष्ठ सव्वाहिसकणपरो वधायकलुसाउलचित्ति ॥ १ ॥ अथैतं लक्षणानुच्यते ॥ ओसन्नदोसेति ॥ हिंसादीनामन्यतर  
 स्मिन् ओसन्नप्रवृत्ते प्राचुर्यबाहुल्ययत्नएवदोषः अथवा ओसन्नतिबाहुल्येना नुपरतत्वेन दोषो हिंसादीनामन्यतर ओसन्नदोषः तथा बहुष्व  
 पि हिंसादिषु सर्वेष्वपि दोषः प्रवृत्तिलक्षणी बहुदोषः बहुर्वा बहुविधो हिंसानृतादिरिति बहुदोषस्तथा अज्ञानात् कुशास्त्रसंस्कारात् हिंसादिष्व  
 धर्मस्वरूपेषु नरकादिकारणेषु धर्मबुद्ध्याभ्युदयार्थं याप्रवृत्तिस्तन्नलक्षणीदोषोऽज्ञानदोषः अथवा उक्तलक्षणमज्ञानमेव दोषोऽज्ञानदोष इति अन्यत्र नाना  
 विधदोष इति पाठः तत्र नानाविधेषु लक्षणलक्षणादिषु हिंसाद्युपायेषु दोषोऽसकृत्प्रवृत्तिरिति नानाविधदोष इति तथा मरणमेवान्तो मरणान्त आमरणां  
 ता दामरणात् मसजातानुतापस्य कालसौकरिकादेरिव याहिंसादिषु प्रवृत्तिः सैवदोष आमरणात्तदोषः अथ धर्म्यञ्चतुर्विधमिति स्वरूपेण चतुर्षुपदेषु

लक्षणा पसत्ता तजहा उंसन्नदोसे बज्जलदोसे अन्नाणदोसे आमरणांतदोसे ४ । धम्मोज्जाणे चउत्तिहे

सारत्तणानुबन्धी धनादिकं राखवाने सर्वने माठुं चितवे घातपणि चितवे ॥ चारं लक्षणं कहिया ओलखवाना तेकहैछे । घणुं हिंसादिकमां आ  
 शक्त तेहज दोष । घणे प्रकारे सर्वने विषे हिंसाकरे । अनाण्णी कुशास्त्र संगे धर्मबुद्धिये हिंसाकरे उदयार्थं । जेमरणांतलगे पश्चात्तापकरवानी

स्वरूपलक्षणालम्बनानुप्रेक्षालक्षणेऽवतारो विचारणीयत्वेन यस्यतश्चतुष्पदावतारं चतुर्विधस्यैव पर्यायीयमिति क्वचित् ॥ चउपडोथारमितिपाठः ॥ तत्र चतुर्धुपदेषु प्रत्यवतारो यस्येति विग्रहइति ॥ आणाविजएत्ति ॥ आअभिविधिना ज्ञायते ऽर्था यथासा आज्ञा प्रवचन साविचीयते निर्णीयते पर्यालोच्यते वा यस्मिस्तदाज्ञाविचय धर्मध्यानमिति प्राकृतत्वेन विजयमिति आज्ञावा विजयीयते अधिगमद्वारेण परिचितौक्रियते यस्मिन्नित्याज्ञाविजयं एवं शेषाण्यपि नवर मपाया रागादिजनिताः प्राणिना मैहिकामुष्मिकाअनर्था विपाकः फल कर्मणां ज्ञानाद्यावारकत्वा दितिसंस्थानानि लोकसमुद्रजीवादीनामिति आहच आप्रवचनप्रवचन माज्ञाविचयस्तदर्थनिर्णयन आयवविकथागौरव परीषहाद्यैरपायस्तु ॥ १ ॥ अशुभकर्मविपाका नुचितनार्योविपाकविचयः स्यात् द्रव्यत्वेनाकृत्यनु गमनसंस्थानविचयस्तु इति ॥ २ ॥ एतन्नक्षणान्याह ॥ आणारुदत्ति ॥ आज्ञासूत्रव्याख्यान निर्युक्त्यादि तत्र तथावा रुचिः अज्ञान आज्ञारुचिरेवमन्यत्रापि नवर निसर्गः स्वभावो ऽनुपदेश स्तेन तथा सूत्रमागम सूत्र तस्मादा तथाअवगाहन मवगाढ द्वादशाङ्गावगाहो विस्तारोधिगमइति सम्भाव्य

पन्नत्ते तंजहा आणाविजए अवायविजए विवागविजए संठाणविजए । धम्मस्सणं ज्ञाणस्स चत्तारि  
लक्षणा पन्नत्ता तंजहा आणारुई णिसग्गरुई सुत्तरुई उगाढरुई । धम्मस्सणं ज्ञाणस्स चत्तारि आलं

हिंसानेविषे प्रवर्ते कालसौकरिकनी परें ॥ धर्मध्यान चारप्रकारे चारपदनेविषे स्वरूपलक्षण संबंधे तेकहैछे । आग्या तेप्रवचन तेहनुं सत्य जावे चितववुं । अवाय तेकष्ट दुख प्राणीनेछे तेरागादिकथी उपजैछे इम चितवे जाणे । विपाक ते शुजाशुजकर्मनुं फल कर्मथीछे एमजाणे । संस्थान लोकद्वीपसमुद्र जीवादिकनु तेचितवे जाणे ॥ धर्मध्यानना चार लक्षण कहिया तेकहेछे । सूत्रने रुचि ते आणारुचि । स्वज्ञायेज धर्मनी

ते तेन रुचिरयवा ॥ ओगाटेत्ति ॥ साधुप्रत्यासन्नीभूतस्तस्य साधूपदेशात् रुचि रक्तं च आगमउवएसेण निसग्गओजजिणप्पणीयाणं भावाणसद्दृश्यं धम्म  
ज्जाणस्सतं लिगति ॥ १ ॥ तत्त्वार्थशब्दानरूप सम्यक्तं धर्मस्य लिगमिति हृदयं धर्मस्थालम्बनान्युच्यन्ते धर्मध्यानसौधारोहणार्थमालम्ब्यत इत्यालम्बनानि वाचनं  
वाचना विनेयाय निर्जरार्थे सूत्रदानादि तथा शङ्किते सूत्रादौ शङ्कापनोदाय गुरोः प्रच्छन् प्रति प्रच्छन्ना प्रतिशब्दस्य धात्वर्थमात्रार्थत्वा दिति तथा पूर्वा  
धीतस्यैव सूत्रादे रविस्मरणनिर्जरार्थे अभ्यासः परिवर्त्तनेति अनुप्रेक्षणा मनुप्रेक्षा सूत्रार्था नुस्मरण मिति अथवा नुप्रेक्षा उच्यते ॥ अन्विति ॥ ध्यानस्य  
पश्चात् प्रेक्षणानि पर्यालोचनान्य नुप्रेक्षा तच्च एकोहनास्तिमेकस्मिन्नाहमन्यस्यकस्यचित् नतपश्यामियस्याह नासौभावीतियोमम ॥ १ ॥ इत्येव मात्मनः ए  
कस्यैकाकिनो ऽसहायस्या नुप्रेक्षाभावना एकानुप्रेक्षा तथा कायःसन्निहितापायः सम्यदपदमापदां समागमासापगमाः सर्वमुत्पादिभगुरं ॥ १ ॥ इत्येव

बणा पणत्ता तंजहा वायणा पणिपुच्छणा परियट्ठणा अणुप्पेहा । धम्मस्सणं ज्जाणस्स चत्तारि अणुप्पेहान्  
पन्नत्तान् तंजहा एगाणुप्पेहा अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा । सुक्खे ज्जाणे चउत्तिहे चउप्पफो

रुचिहोय जेहने । सूत्र सांजलवानीरुचि । अवगाढरुचि तेद्वादशांगी अवगाहना करै जणै ॥ धर्मध्यानना च्यार आलंवन तेआधार जेहथी ध्यान  
रहै तेकहैछे । वाचना शिष्यने देवी निर्जरार्थे । शंका टालवाने गुरुने पूछवुं । पूर्वे जणयां सूत्र तेसज्जारवा गुणवा निर्जराने अर्थे । अनुप्रेक्षा  
सूत्रार्थनु स्मरणकरवुं सज्जारवु ॥ धर्मध्याननीं च्यार अनुप्रेक्षा कहि ते जे ध्यानपछी पर्यालोच विचारणा करवी ते अनुप्रेक्षा । तेकहैछे । एक  
हुछु माहरुं कोईनथी हुं पिण कोईनुं नथी एकाकी एहवी एकाकी जावना जावै । एह संपदादि सर्व अनित्यछै एह अनित्यानुप्रेक्षा । संसार

जीवितादे रनित्यस्या नुप्रेक्षा अनित्यानुप्रेक्षेति तथा जन्मजरामरणभयै रभिद्रुतेव्याधिवेदनाग्रस्ते जिनवरवचनादन्य नास्तिशरणंकश्चिन्नोके ॥ १ ॥  
 इत्येव मशरणस्या चाणस्या त्मनो ऽनुप्रेक्षा अशरणानुप्रेक्षेति तथा माताभूत्वादुहिता भगिनौभार्याचभवतिससारे व्रजतिसुतःपितृतां भ्रातृता पुनःशत्रु  
 तांचैव ॥ १ ॥ इत्येवं संसारस्य चतसृषुगतिषु सर्वावस्थासु ससरणलक्षणस्यानुप्रेक्षा ससारानुप्रेक्षेति अथ शुक्लमाह ॥ पुहुत्तवियक्तेति ॥ पृथक्त्वेन एकद्रव्या  
 श्रितानां उत्पादादिपर्यायाणां भेदेन पृथुत्वेनवा विस्तीर्णभावेने त्यन्ये वितर्कोविकल्पः पूर्वगतश्रुतालम्बनो नानानयानुसरणलक्षणी यस्मि स्तत्तथा पूज्यै  
 सु वितर्कः श्रुतालम्बनतया श्रुतमित्युपचारा दधीत इति तथा विचरण अर्थात् व्यञ्जने व्यञ्जनादर्थे तथा मनः प्रभृतीनांयोगाना मन्यतरस्मा दन्यतरस्मि  
 न्नितिविचारो ऽर्थव्यञ्जनयोगसक्रान्ति रिति वचनात् सहविचारेण सविचारि सर्वधनादित्वादिन्समासान्तः उक्तञ्च उपायद्विभगा इपज्जयाणजमेगद  
 व्वस्मि नाणानयानुसरणं पुव्वगयसुयाणुसारेणं सवियारमत्यवंजण जोगतरओत्तयपढममुक्क होइपुहुत्तवियक्कं सवियारमरागभावस्सत्ति ॥ १ ॥ एकोभेद  
 स्तथा ॥ एगत्तवियक्केत्ति ॥ एकत्वेना भेदेनो त्पादादिपर्यायाणा मन्यतमैकपर्यायालम्बनये त्यर्थः वितर्कः पूर्वगतश्रुताश्रयो व्यञ्जनरूपो ऽर्थरूपो वा यस्य

यारे प० तं० पुहुत्तवियक्के सवियारी १ । एगत्तवियक्के अविचारी २ । सुज्जमकिरिए अणियट्ठी ३ । समुच्चि

मां जन्म जरामरण व्याधि वेदनादि जीवने जिनवचनविना कोईनथी एह अशरणानुप्रेक्षा । संसारमां जमतां माता बहिन तेहज जार्या तेज  
 पिता थायळे इत्यादि संसारानुप्रेक्षा ॥ शुक्लध्यान च्यार प्रकारे कहियो ते कहैछे । च्यार पदार्थने विषे एकज पदार्थछे एक द्रव्याश्रित मांटै ते  
 कहैछे । एक द्रव्यने पृथग्भावे चितवुं उप्पन्नेवा जगमेवा ध्रुवेवा । तेपृथक् वितर्क । विचार सहित तेपुहुत्तवितर्क सवियारी । एकत्वपणे जेद



॥ तदेकस्ववितर्कं तथा न विद्यते विचारो ऽर्थव्यञ्जनयो रितरस्मा दितरत्र तथा मनःप्रभृतीना मन्यन्तरस्मा दग्यत्र संचरणलक्षणो निर्वातगृहगतप्रदीपस्येव  
 ॥ यस्य तद्विचारीति पूर्ववदिति उक्तञ्च जंपुणसुनिष्कंप निवायसरणप्यैवमिवचित्त उपायद्विभगा इयाणमेगंमिपज्जाए ॥ १ ॥ अवियारमत्यवज्जण  
 जोगतरओतयंविइयसुक्क पुव्वगयसुयालंक्खण मेगत्तवियक्कमवियारमिति ॥ २ ॥ द्वितीयं स्तथा ॥ सुहुमकिरियत्ति ॥ निर्वाणगमनकाले केवलिनो निरुद्ध  
 मनोवाग्योगस्या ईनिरुद्धकाययोगस्यै तदतः सूक्ष्माक्रिया कायिको उच्छासादिका यस्मि स्तत्तथा ननिवर्त्तते नव्यावर्त्तत इति एव शीलमनिवर्त्तिप्रवर्त्तमा  
 नतरपरिणामा दिति भणितञ्च निव्वाणगमणकाले केवलिणोदरनिरुद्धजोगस्स सुहुमकिरियानियट्ठी तइयतण्णकायकिरियस्सत्ति ॥ १ ॥ तृतीयं स्तथा ॥  
 समुच्छिन्नकिरियत्ति ॥ समुच्छिन्ना क्षीणा क्रिया कायिकादिका शैलेशीकरणे निरुद्धयोगत्वेन यस्मि स्तदाथा ॥ अपडिवाइत्ति ॥ अनुपरतस्वभाव मिति  
 चतुर्थः आहच तस्सेवयसेलेसी गयस्ससेलोव्वनिष्कंपस्स वोच्छिन्नकिरियमप्यडि वाइज्झाणंपरमसुकृति ॥ १ ॥ इहचांत्ये शुक्लभेदद्वये यक्रमः केवली कि  
 लान्तमुहूर्त्तभाविनि परमपदे भवोपग्राहिकस्मसुच वेदनीयादिषु समुदाततो निसर्गेण वा समस्थितिषु सत्सुयोगनिरोधं करोति तत्रच पज्जत्तमित्तसं

**स्सकिरिए अपडिवाइ ४ । सुक्कस्सणं ज्जाणस्स चत्तारि लक्खणा पस्सत्ता तंजहा अप्वहे असम्मोहे विवेगे वि**

उत्पादादि एकज द्रव्यमां छे तेहनु विकल्प ते पृथग्विचारवो नथी ते एकत्व वितर्क अविचार । सूखमक्रिया अनिवृत्ति तेमोक्ष जातां मनवचनना  
 योगसंधै एक काययोग सासीस्वास रूपछे सूखम वधता समुच्छिन्न क्रियानुं शैलेशीकरणानी अवस्थायै चौदसे गुणठाणें कायादिक्रिया रुंधीये ते  
 अप्रतिपाती पाडैनथी एह चार प्रकार शुक्ल ध्यानना कहिया । शुक्लना चार लक्षण कहिया तेकहैछे । व्यथा पीडा रहित देवादिकृत उ

॥ निष्क जत्तियाइंजहन्नजोगिस्स होंतिमणोदव्वाइं तव्वावारोयजंमेत्तो ॥ १ ॥ तदसंखगुणविहीणे समएसमएनिरुममाणोसो मणसोसव्वनिरोहं कुणइ असखेज्जसमएहि ॥ ३ ॥ पज्जत्तमेत्तबेंदिय जहन्नवययोगपज्जयाजेउ तदसंखगुणविहीणे समये २ निरुभंतो ॥ ३ ॥ सव्ववयजोगरोह संखाइंएहिकुणइ समएहि तत्तोयसुहुमपणगस्स पढमसमओववस्सस्स ॥ ४ ॥ जोकिरजहन्नजोगो तदसंखेगुणविहीणमेक्केके समएनिरुममाणो देहतिभागंचमुचतो ॥ ५ ॥ रुभ इसकायजोग संखाइंएहिंचेवसमएहि तोकयजोगनिरोहो सेलेसीभावणामेइ ॥ ६ ॥ शैलेशस्येव मेरोरिव यास्थिरता साशैलेशीति झस्सक्खराइमज्जे एजेण कालेणपचभसति अच्छइसेलेसिगओ तत्तियमेत्ततओकाल ॥ ७ ॥ तणरोहारभाओ ज्जायइसुहुमकिरियानियट्टिसो वोच्छिन्नकिरियमप्पडि वाइंसेलेसिकालं भित्ति ॥ ८ ॥ शुक्लध्यानलक्षणा न्युच्यते ॥ अब्बहेत्ति ॥ देवादिक्कतोपसर्गादिजनितं भयचलनवा व्यथा तस्याः अभावो ऽव्यथ तथा देवादिक्कतमायाजनितस्य सूक्ष्मपदार्थविषयस्यच संमोहस्य मूढताया निषेधा दसमोह स्तथा देहादात्मान मात्मनोवा सर्वसयोगानां विवेचन बुद्ध्या पृथक्करणं विवेकः तथा निःसंगतया देहोपधित्यागोव्युत्सर्गइति अत्र विवरणगाथे चालिज्जइवीहेइं धीरोनपरीसहोवसगहिं सुहुमेसुणसमुज्झइ भावेसुनदेवमायासु ॥ १ ॥ देहविचित्त

**उरुसगगे । सुक्कस्सणं ज्जाणस्स चत्तारि श्रालंबणा पस्सत्ता तं० खंती मोत्ती मद्दवे श्रज्जावे । सुक्कस्सणंज्जाणस्स**

पसर्गथी वीहैनथी । देवादि कोई माया देखाडे तेहथी मूकायें नथी । विवेक सहित शरीरथी आत्मा आत्माथी शरीरादि सर्वसंयोग ते सर्व जुदाजुदा चिंतववा एह विवेक । शरीरनुं त्यागकरवो निःसंगपरों ॥ शुक्लध्याननां चार आलंबनछे आधारछे ते कहैंछे । क्षमाकरवी । निर्लोभता करवी । मृदु सुकुमारपणुं । आर्जव सरलता मायारहित पणुं ॥ शुक्लध्याननी चार अनुप्रेक्षा विचारणा कही तेकहैंछे । अनंतीबार ए

पिच्छद्र अप्पाणतहयसव्वसंजोगा देहोवहिउस्सगा निस्सगोसव्वहाकुणइत्ति ॥ २ ॥ आलंवनसूत्र व्यक्त तत्रगाथा अहखतिमहअज्जव सुत्तीओजिणमयप्पहा  
णाओ आलवणाइजेहि उमुक्कज्जाणमारुहइ ॥ अणतवत्तियाणुप्पेहत्ति ॥ अनता प्रत्यत प्रभूता वृत्ति वर्त्तन यस्या सा वनतवृत्ति रनन्ततया वा वर्त्तत इत्यनत  
वर्त्ती तद्भाव स्तुत्ता भवसत्तानस्येति गम्यते तस्या अनुपेक्षा अनन्तवृत्तितानुपेक्षा अनन्तवर्त्तितानुपेक्षावेति यथा एसअणाईजोवो ससारोसागरोव्वदुत्ता  
रो नारयतिरियनरामर भवेसुपरिहिडएजोवोत्ति ॥ १ ॥ एवमुत्तरवापिसमासो नवर विपरिणामेत्ति ॥ विविधेन प्रकारेण परिणमन विपरिणामो व  
स्तूना मिति गम्यते यथा सव्वहाणाइअसा सयाइइहचेवदेवलोगेय सुरअसुरनराइण रिद्धिविसेसासुहाइंच ॥ १ ॥ असुमेत्ति ॥ अशुभत्व ससारस्येति  
गम्यते यथा धीसंसारोजन्मि जुयाणओपरमरूवगव्वियओ मरिज्जणजायइकिमो तत्थेवकलेवरैणियए ॥ २ ॥ तथा ॥ अवाएत्ति ॥ अपाया आप्रवाणामि  
तिगम्यते यथा कीहोयमाणोयअणिग्गहिया मायायलोभोयपवडुमाणा चत्तारिएतेकसिणाकसाया सिचंतिमूलाइंपुणभवस्स ॥ १ ॥ इहगाथा आसवदारा  
वाए तहससारोसुहाणभावच भवसताणमणत वत्थुणविपरिणामचत्ति ॥ १ ॥ ध्यानादेवत्वमपि स्या दतो देवस्थितिसूत्र स्थितिः क्रमोमर्यादा राजामात्यादि

चत्तारि अणुप्पेहानु पस्सत्तानु तंजहा अणतवत्तियाणुप्पेहा विपरिणामाणुप्पेहा असुज्जाणुप्पेहा अवाया

संसारमा जीव च्यार गतिमा जम्पो जमेळे ए अनुपेक्षा कही । एलोकमा सर्ववस्तु असास्वतीळे । शुज ते अशुज अशुज तेशुज इमज परिणमे  
ळे । अशुजानुपेक्षा तेधिग्गससारने जेमांटे रूपनो अजिमानो मरी तेहीज कलेवरमा कीडोथाय । अपायकष्ट दुखनुं मूल कषायळे ॥ ध्यानथी  
देवतापणि थाय तेमांटे देवस्वरूप कहैळे ॥ च्यार प्रकारे देवस्थिति मर्यादाकही मनुष्यवत् तेकहैळे ॥ एक देवता राजतुल्य सामानिकळे । एक

मनुष्यस्थितिवत् देवः सामान्यो नामेति वाक्यालङ्कारे एकः कथितस्नातकः प्रधानो देवएव देवानांवा स्नातक इतिविग्रहः एवमुत्तरत्रापि नवरं पुरोहितः  
 शांतिकर्मकारी ॥ पञ्जलणेति ॥ प्रज्वलयति दौपयति वर्णवाद्करणेन मागधवदिति प्रज्वलितइति देवस्थितिप्रस्तावात्त द्विशेषभूतसम्वाससूत्र एतच्च व्यक्तं  
 किन्तु सम्वासो मेथुनार्थं सवसन ॥ छविति ॥ त्वक्योगादौदारिकशरीरं तद्वती नारी तिरश्चीवा तद्वा नर स्तिर्यङ्वा छविरित्युच्यते अन्तरं सम्वास उक्तः  
 सच वेदलक्षणमोहोदया दिति मोहविशेषभूतकषायप्रकरण माह ॥ चत्वारिकसाएइत्यादि ॥ तत्र क्लृप्तं विलिखति कर्मक्षेत्रं सुखदुःखफलयोग्य कुर्वन्ति  
 कलुषयतिवा जीवमिति निरुक्तिविधिना कषाया उक्तञ्च सुहदुक्खवहसईय कम्मखेत्तेकसतिजेजम्हा कलुसंतिजंचजीव तेणकसायत्तिवुच्चति ॥ १ ॥ अथ  
 वा कषति हिनस्ति देहिन इति कष कर्म भवोवा तस्यायो लाभहेतुत्वा क्लपवा आययति गमयति देहिन इति कषाया उक्तञ्च कम्मकसंभवोवा कसमा

पुप्पेहा । चउत्तिहादेवाणं छिई पस्सत्ता तजहा देवेणामेगे देवसिणाणामेगे देवपुरोहिणामेगे देवपज्जालणे  
 णामगे । चउत्तिहेसवासे पस्सत्ते तंजहा देवेणामेगेदेवीएसद्धिसंवासंगच्छेज्जा देवेणामेगेछवीएसद्धिसंवासं

देवता स्नातक तेप्रधाननै ठामेछे । एक देवता पुरोहितने ठामें शांतिकर्म कारीछे । एक देवता प्रज्वलितछे जेमागध जाट जोजकनीपरें देवता  
 ना वर्णनकरैछे ॥ च्यार प्रकारे संवास तेमैथुनार्थं वसवुं जोगवुं तेकहैछे ॥ एक देवता देवांगनासार्थे संवासकरें जोगार्थेमिलें जोगकरें । एकदेव  
 ता छवीसाथे संवासपामे जोगकरै छवी तेत्वचा चामडीनो शरीर औदारिक शरीरछे जेहने सहवी नारी अथवा तिर्यची तेछवि कहीये तेस्युं जोग  
 करे देवता । एक छवी तेनर तथा तिर्यंच तेदेवांगना साथे संवासपामे एतले देवांगनासु नरतिर्यंच जोगकरै । एक नरतिर्यंच तेनारी तिर्यंची

० ॥  
१ ॥

ओसिंजओकषायाओ कसमाययंतिवजओ गमयंतिकसंकसायत्ति ॥ १ ॥ तत्रक्रोधनं क्रुध्यतिवा येन सः क्रोधः क्रोधमोहनीयोदयसपाद्यो जीवस्य परिण  
तिविशेषः सक्रोधमोहनीयकर्मैववेति एवमग्यत्रापि नयर जाल्यादिगुणवा नहमेवेत्येवं मननमवगमन मन्यतेपा अनेनेति मान स्तथा मानं हिसनं वचन  
मित्यर्थो मीयतेवा अनेनेति माया तथा लोभन मभिकांचण लुभ्यतेवा अनेनेति लोभः एवमिति यथा सामान्यत शवारः कषाया स्तथा विशेषतो ना  
रकाणा मसुराणा याव चतुर्विंशतितमेपदे वैमानिकाना मिति ॥ चउपइठिएत्ति ॥ चतुर्षु आत्मपरोभयतदभावेषु प्रतिष्ठित चतुःप्रतिष्ठित स्तत्र ॥ आय  
पइठिएत्ति ॥ आत्मापराधेनैहिकासुषिकापायदर्शना दात्मविषय आत्मप्रतिष्ठितः परेणाक्रोशादिनो दीरितः परविषयोवा परप्रतिष्ठित आत्मपरविष

गच्छेज्जा त्वीणामेगेदेवीएसद्धिसंवासगच्छेज्जा त्वीणामेगेत्त्वीएसद्धिसंवासंगच्छेज्जा । चत्तारिकसाया  
पस्यत्ता तजहा कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोन्नकसाए । एव नेरइयाणं जाववेमाणियाणं । चउ  
पइठिएकोवे पस्यत्ते तंजहा श्चायपइठिए परपइठिए तदुज्जयपइठिए अपइठिए । एवंणेरइयाणं जाववेमा

साये संवास मिलणकरे जोगार्थे ॥ एवेदोदय मोहथी होय तेमोह कषायमांछे तेकहैछे । च्यार कषाय कह्या तेकहैछे ॥ क्रोध कषाय । मान  
अहकार तेकषाय । मायाकपट तेकषाय कर्मरूप क्षेत्रखंडेते । लोन्न तेकषाय सुख दुखना कर्षण नीपजै ॥ इम नारकीने च्यार कषायहोय । या  
वत् वैमानिकताई च्यार कषाय होय ॥ च्यार थानक क्रोधने रहवाना कहिया तेकहैछे ॥ आत्मप्रतिष्ठित क्रोध तेपोताने वाके इहलोक परलोक  
कष्टपामे । परप्रतिष्ठित तेपोताना कठिन वचन साजली क्रोधऊपजै । काईक परनो आक्रोश काईक पोतानो वांक तेथी ऊपजै तेउज्जय प्रतिष्ठित

य उभयप्रतिष्ठित आक्रोशादिकारणनिरपेक्षः केवलं क्रोधवेदनीयोदयात् योभवति सोप्रतिष्ठितः उक्तञ्च सापेक्षाणिचनिरपेक्षाणिचकर्माणिफलविपाकेषु सोपक्रमचनिसपेक्षं क्रमञ्चदृष्टंयथायुष्कमिति ॥ १ ॥ अथञ्च चतुर्थभेदो जीवे प्रतिष्ठितोपि आत्मादिविषये ऽनुत्पन्नत्वा दप्रतिष्ठित उक्तो नतु सर्वथा ऽप्रतिष्ठितश्चतुः प्रतिष्ठितत्वस्या भावप्रसंगादिति एकेन्द्रियविकलेन्द्रियाणां कोपस्यात्मादिप्रतिष्ठितत्वपूर्वभवे तत्परिणामपरिणतमरणेनोत्पन्नानामिति एवं मानमायालोभैर्दण्डकत्रयमपरमध्येतव्यमिति चेन्नारकादौनां ४ स्वस्वमुत्पत्तिस्थानप्रतीत्याश्रित्य एववस्तुसचेतनादिवास्तुवागृहशरीरदुःस्थितं विरूपवा उपधिर्यस्योपकरणेकेन्द्रियादौना भवान्तरापेक्षयेति एवमानादिभिरपि दण्डकत्रयमनन्त भवमनुबध्नाति अविच्छिन्नकरोतीत्येव

णियाण । एवंजावलोभे वैमाणियाणं । चउहिंठाणेहिं क्रोधुप्पत्तिसिया तंजहा खेत्तंपहुच्च वल्युंपहुच्च सरीरंपहुच्च उवहिंपहुच्च । एवनेरइयाणं जाववेमाणियाणं । चउह्विहेकोहे पस्सत्ते तंजहा अणंताणुवंधिकोहे

परपोताना बांक् विना केवलं क्रोधवेदनी कर्मणा उदयथी ऊपजे तेपर पोतानी अप्रतिष्ठित । पूर्वज्जवे क्रोधादिपरिणामे परिणतमरे तेहवे ऊपजे तेमाटे अप्रतिष्ठित ॥ इमं नारकीने यावत् वैमानिकलगे चोवीस दण्डके जाणवा ॥ इमं यावत् लोभपणि चार प्रकारे वैमानिकताई चोवीस दण्डके जाणवा ॥ चार थानके क्रोधनी उत्पत्ति कही तेकहैछे ॥ क्षेत्रने आश्रीने नारकी प्रमुखने पोताना उत्पत्ति स्थानक । वस्तु गृहादि आश्रीने । शरीर माठारूप आकार आश्रीने । उपधि उपकरण आश्रीने क्रोध ॥ इमं नारकीने यावत् वैमानिकताई चोवीस दण्डके जाणवुं ॥ इमं यावत् लोभ वैमानिक चोवीस दण्डके जाणवुं ॥ चार प्रकारे क्रोध कहैछे । अनतानुबधी क्रोध जावजीवरहै फाटया गिरीनेपरे मिलेनथी । अप्रत्या

॥ शीलो ऽनन्तानुबन्धी अनन्तोवा नुबन्धोयस्ये त्यनन्तानुबन्धी सम्यग्दर्शनसहभावि क्षमादिस्वरूपोपशमादिवरणलवविवन्धी चारित्रमोहनोयत्वा तस्य न  
 ॥ चोपशमादिभिरेव चारित्री अलात्वात् यथा अमनस्को न सज्जी किन्तु महता मूलगुणादिरूपेण चारित्र्येण चारित्री मनःसज्जया 'संज्ञिव दत्तेव त्रिविध द  
 र्शनमोहनीयं पञ्चविशतिविध चारित्रमोहनीय मिति मनु पढमिल्लयाणउदयेनियमेइत्यादि विरुध्यते चारित्रावारकस्य सम्यक्ता'वारकत्वा नुपपत्ते रत  
 एव सप्तविध दर्शनमोहनोय मेकविशतिविध चारित्रमोहनीय मिति मत सगतमाभातो त्यवोच्यते पढमिल्लयाणेत्यादि यदुक्त तदनन्तानुबन्धिना नसम्य  
 क्तावारकतया किन्तु सम्यक्सहभाव्युपशमाद्यावारकतया अन्यथा नन्तानुबन्धिभिरेव सम्यक्तस्या वृत्तत्वात् किमपरेण मिथ्यात्वेन प्रयोजन भावृतस्याप्या  
 वरणे ऽनवस्था प्रसङ्गा तत्तत्ता यथा केवलियणाणलंभो जन्नत्थंखएकसायाणंति इहकषायाणां केवलज्ञानस्या ना'वारकत्वेपि कषायचयः केवलज्ञानकारण  
 तयोक्त स्तस्मिन्नेव तस्य भावा देव मनन्तानुबन्धि क्षयोपशमएव सम्यक्तलाभ उच्यते तस्मिन्सति तस्य भावा द्यतो नानन्तानुबन्धिषू दितेषु मिथ्यात्व  
 क्षयोपशम सुपयाति तदभावाच्च नसम्यक्तमिति यच्च सप्तविध सम्यग्दर्शनमोहनोय मिति मतान्तर तत्सम्यक्कसहचरितत्वेनो पशमादिगुणानां सम्यक्कोप  
 चारादिति मन्यामहे इत्यादि नविद्यते प्रत्याख्यान मणवतादिरूप यस्मिन् सो प्रत्याख्यानो देशविरत्यावारक' प्रत्याख्यान मा'मर्यादया सर्वविरतिरूप  
 मेवेत्यर्थः वृणोतीति प्रत्याख्यानारवणः सज्वलयति दीपयति सर्वसावयवविरतिमपौ द्वियार्थसम्पातेवा संज्वलति दीप्यत इति संज्वलनः यथा ख्यातचा

अपञ्चस्काणकोहे पञ्चस्काणावरणेकोहे सजलणेकोहे । एवंनेरइयाणं जाववेमाणियाणं एवंजाव लोने ।

ख्यानी क्रोध वर्षलगेरहे तलाव फादानीपरे । प्रत्याख्यानी क्रोध च्यार मासरहै । सज्वलन क्रोध पनरे दिनरहै ॥ इम नारकीने यावत् वैमा

रित्रावारकः एवमानमायालोभे ष्वप्पनंतानुवन्ध्यादिभेदचतुष्टयमध्येतव्य मिति एषांनिरुक्तिः पूज्यै रियमुक्ता अनन्तान्यनुवधन्ति यतोजन्मनिभूतये अंतो  
नन्तानुवधाख्या क्रोधाद्येषुप्रदर्शिता ॥ १॥ नाल्पमप्यसहेद्येषां प्रत्याख्यानमिहोदयात् अप्रत्याख्यानसञ्ज्ञातो द्वितीयेषुनिवेशिता ॥ २॥ सर्वसावद्यविरतिः  
प्रत्याख्यानमुदाहृत तदावरणसञ्ज्ञात सृष्टीयेषुविवेशिता ॥ ३॥ शब्दादीन्विषयान्प्राप्य संज्वलतियतीमुहुः अतःसज्वलनाह्वानं चतुर्थानामिहोच्यते ॥ ४॥  
इत्येव मानादिभिरपि दण्डकत्रय ॥ आभोगनिवृत्तिरिति ॥ आभोगो ज्ञानं तेन निवर्त्तितो यज्ज्ञानं कोपविपाकादि रुष्यति इतरस्तु यदज्ञानन्निति उप  
शातो ऽनुदयावस्थ स्तुतिपक्षो ऽनुपशांत एकेन्द्रियादीना माभोगनिवर्त्तितः सन्निपूर्वभावेक्षया अनाभोगनिवर्त्तितस्तु तद्भावेक्षयापि उपशांतो नारका  
दीनां विशिष्टोदयाभावात् अनुपशातो निर्विचारएव इति एवमानादिभिरपि दण्डकत्रयं इदानीं कषायाणामेव कालत्रयवर्त्तिनः फलविशेषा उच्यते ॥

वेमाणियाणंचउद्धिहेकोहे पस्यहे तंजहा अज्ञानोनिवृत्तिए अज्ञानोनिवृत्तिए उवसंते अणुवसंते । एवंने  
रइयाणं जाव वेमाणियाणं । एवंजाव लोत्ते । जाववेमाणियाणं जीवाणं चउहिठाणेहिं अष्टकम्मपगळीउ

निकतांई चौबीस दंडकै जाणवुं ॥ इम यावत् लोत्त च्यार वैमानिकतांई चौबीस दंडकतांई । च्यार प्रकारे क्रोधकहयो तेकहैछे । अज्ञानो निवर्त्ति  
त जे क्रोधादिना फलविपाक जाणतो क्रोधकरे । अनाज्ञानो निवर्त्तित जेक्रोधना फल अणजाणतो क्रोधकरे । उपशांत क्रोध उदया वस्थाये न  
थी आव्यो । अनुपशात क्रोध ते उदय प्राप्त ॥ इम नारकीने यावत् वैमानिकतांई चौबीस दंडके जाणवुं ॥ इम यावत् लोत्त वैमानिकतांई  
चौबीस दंडकै ॥ जीवने च्यार थानके करी आठ कर्मनी प्रकृति चिणताहुवा कर्म पुदगलनुं गूहणमात्र तेचिणवुं कहिये तेकहैछे ॥ क्रोधेकरीने ।



जीवाणमित्यादि ॥ गतार्थं नवरं चयनं कषायपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्रं उपचयनं चितस्यावाधाकालं मुक्त्वा ज्ञानावरणीयादितया निषेकः सचैवं प्रथमस्थितौ बहुतर कर्मदलिक निषिचति ततो द्वितीयाया विशेषहीन एव यावदुत्कृष्टाया विशेषहीन निषिचति उक्तच मोक्षतूणसगमवाह पढमाएठि ईएबहुतरदव्व सेसविसेसहीण जावुक्कोसतिसब्बेसिति ॥ १ ॥ बधनं तस्यैव ज्ञानावरणीयादितया निषिक्तस्य पुनरपि कषायपरिणतिविशेषा त्रिकाचन मिति उदोरणमनुदयप्राप्तस्य करणेनाक्कथोदये प्रक्षेपणमिति वेदनस्थितिचयादुदयप्राप्तस्य कर्मण उदोरणा करणेनोदयभावमुपनीतस्या नुभवन मिति निर्जरा कर्मणो ऽकर्मत्वभवन मिति इहच देशनिर्जरैव ग्राह्या सर्वनिर्जराया सतुर्विंशतिदण्डके असम्भवात् क्रोधादीनांच तदकारणत्वात् क्रोधादिचयस्यैव तत्कारणत्वा दिति इह प्रज्ञापनाधीता सग्रहगाथा आयपइठिय १ खित्त पडु २ चअणताणवधि ३ आभोगे ४ चिणउवचिणवधउदी रएयतहनिज्ज

चिणिसु तंजहा कोहेणं माणेणं मायाए लोत्तेणं । एवंजाव वेमाणियाण । एवंचिणंति एसदंऊन एवंचिणि  
स्संति एसदंऊन । एवमेएणं तिन्नि दंऊगा । एवंउवचिणिसु उवचिणंतिच उवचिणिस्सति । बंधिसु ३  
उदीरिसु ३ वेदेंसु ३ णिज्जारेंसु णिज्जारिंति णिज्जारिस्सति । जाववेमाणियाणमेव मेक्किक्को पदे तिन्नि २

माने करीने । मायाये करीने । लोभे करीने । इम यावत् वैमानिकने चौबीस दंडकै ॥ इम चिणेछे वर्तमानकाले एदंऊके जाणवो ॥ इम आ  
गामीकाले चिणस्ये एचौवीस दंऊक जाणवा ॥ इम एणे प्रकारे त्रणि दंऊक जाणवा ॥ इम उपचिणताहुवा अतीतकाले उवचिणेछे वर्तमानकाले  
उवचिणस्ये अनागतकाले एपूर्वे त्रण ठाणे अर्थ कहिया छे ॥ इम बाधताहुवा त्रणिकाले इम वेदताहुवा त्रणिकाले जाणवा ॥ इम निर्जराताहुवा

राचेवन्ति ॥ १ ॥ अनन्तरं निर्जरोक्ता साच विशिष्टप्रतिमाद्यनुष्ठाना इवतीति प्रतिमास्त्रयं तद्विस्थानकाधीतमपीहाधीयते चतुः स्थानकानुरोधा दि  
ति व्याख्याप्यस्य पूर्वव दनुसर्त्तथा किन्तु स्मरणाय किञ्चिदुच्यते समाधिः श्रुतं चारित्र्यं तद्विषयाप्रतिमा प्रतिज्ञा भिग्रहः समाधिप्रतिमा द्रव्यसमाधिर्वा  
प्रसिद्धस्तद्विषया प्रतिमा अभिग्रहसमाधिप्रतिमा एवमन्यापि नवर मुपधान तपः विवेको शुद्धातिरिक्तभक्तपानवस्त्रशरीरतन्मलादित्यागः ॥ विउस्सग  
ति ॥ कायोत्सर्गं स्तथा पूर्वादिदिक्चतुष्टयानिमुखस्य प्रत्येक प्रहरचतुष्टयमानः कायोत्सर्गोभद्रेति अहोरात्रद्वयेनचास्याः समाप्तिरिति सुभद्राप्येवभूतैव संभा  
व्यते नच दृष्टेति नलिखितेति एवमेव चाहोरात्रप्रमाण. कायोत्सर्गो महाभद्रा चतुर्भिश्चाहोरात्रैरिय समाप्यते यस्तु दिग्दशकाभिमुखस्या होरात्रप्रमाण

दंढगा ज्ञाणियद्वा जाव निज्जरिस्संति । चत्तारि पफ्णिमानं प० तं० समाधिपफ्णिमा उवहाणपफ्णिमा विवे  
गपफ्णिमा विउस्सगपफ्णिमा । चत्तारिपफ्णिमानं प० तंजहा जद्वा सुजद्वा महाजद्वा सव्वज्जद्वा । चत्तारिपफ्णि

निर्जरेळे निर्जरस्ये । यावत् वैमानिकतांई इम एकेके एकेपदे त्रिणि त्रिणि दंडक जाणवा ॥ यावत् निर्जरस्ये तिहांलगे हवे निर्जरा तेप्रतिमादि  
क्रियाथी होय ॥ तेमाटे कहेळे च्यार प्रतिमाकही अज्जिगूह तेप्रतिमा तेकहैळे ॥ समाधि प्रतिमा श्रुतचारित्रनी समाधि अथवा चित्तस्वास्थ्य ।  
उपधान विशेष तेहनो अज्जिगूह । अशुद्ध ज्ञात पाणी वस्त्र काय शरीर तेहनो त्याग व्हांडवु । व्युत्सर्ग करवो तेकाउसग प्रतिमा । वली च्यार प्रति  
मा कही ते कहेळे । जद्वा ते च्यारे दिशे च्यार च्यार प्रहर काउसग बे अहोरात्रि सोले प्रहरें पूर्ण थाय । सुजद्वा पणि इमज सोल प्रहरनी । महा  
जद्वा प्रतिमा च्यारदिसे आठ आठ प्रहर काउसग करे च्यार अहोरात्रि थाय ॥ सर्वतोजद्वा पणि इमज जाणवी । वली च्यार प्रतिमा कही ते क

कायोत्सर्गः सा सर्वतोभद्रा सा च दशभिरहोरात्रैः समाप्यते इति मोकप्रतिमा प्रश्रवणप्रतिज्ञा सा च चुल्लिका या षोडशभक्तेन समाप्यते महती तु या अष्टादशभक्तेनेति यवमध्या या यववदत्ति कवलादिभिः राद्यतयोर्हीनामध्ये च वृद्धेति वज्रमध्या तु याद्यन्तवृद्धा मध्यहीनाचेति प्रतिमाश्च जीवास्तिकाय एवेति तदिपर्ययस्वरूपा जीवास्तिकाय सूत्रं ॥ अस्तिकायत्ति ॥ अस्तोत्ययत्रिकालवचनो निपातः अभूवन् भवति भविष्यति चेति भावना अतो स्तिचते प्रदेशा ना कायाश्च राशय इति अस्तिगच्छेन प्रदेशप्रदेशाः कचिदुच्यन्ते ततश्च तेषां काया अस्तिकाया स्तेचा जीवकाया अचेतनत्वादिति अस्तिकाया मूर्त्ता ऽमूर्त्ता भवतो त्यऽमूर्त्तप्रतिपादनाय अरूप्यस्तिकायसूत्रं रूपं मूर्त्तिवर्णादिमत्त्वं तदस्ति येषां रूपिणः तत्पर्युदासा दूरूपिणो ऽमूर्त्ता इति अनन्तर

मानं पन्नत्तानं तजहा खुल्लियामोयपफिमा महल्लियामोयपफिमा जवमज्जा वड्ढरमज्जा । चत्तारिण्युल्लिका  
या अजीवकाया पन्नत्ता तजहा धम्मल्लियाणं अधम्मल्लियाणं अगासल्लियाणं पोग्गलल्लियाणं । चत्तारि

हैछे । नाहनी मोकप्रतिमा सोलस जत्ते पूरी थाय । मोक तेमात्रोलघुनीति नकरवी तेअजिगूह । मोटी मोकप्रतिमा तेअठार जत्ते पूरीथाय तिहां ताइ प्रश्रवण नकरे । जव मध्यप्रतिमा तेकोलीआनी । वज्रमध्यप्रतिमा ते पणि इमज चढता सोल कोलीआ एकथी ते जव मध्य उतरवाते वज्र मध्यप्रतिमा एवीजें ठाणे कहियोछे ॥ प्रतिमा तेजीवनी अपेक्षाये कही तेहथी विपरीत अजीवछे तेकहैछे । चार अस्तिकाय तेत्रणि काले अजीव छे तेमाटे अजीव अस्तिकाय कही ते कहैछे । धर्मास्तिकाय चलनस्वजाव । अधर्मास्तिकाय स्थिर स्वजाव । आकाशास्तिकाय अवकाश रूप । पुद्गलास्तिकाय मूर्त्ति रूपवर्णादिवंत वधै घटै ॥ चार अस्तिकाय अरूपीकाय कही रूपनथी तेकहैछे । धर्मास्तिकाय अरूपी । अधर्मास्तिकाय

जीवास्तिकाय उक्त स्तद्विशेषभूतपुस्तपनिरूपणाय फलसूत्र आममपक्व सत् आममिव मधुर माममधुर मीषमधुरमित्यर्थः तथा आमंसत् पक्वमिव मधुर मत्ततमधुरमित्यर्थं स्तथा पक्वसत् आममधुर प्राग्व तथा पक्वस त्यक्वमधुरं प्राग्वदेवेति पुरुषस्तु आमो वयः श्रुताभ्या मव्यक्त आममधुरफलसमान उप शमादिलक्षणस्य माधुर्यस्या ल्पस्यैवभावा तथा आमएव पक्वमधुरफलसमानः पक्वफलव न्मधुरस्वभाव प्रधानोपशमादिगुणयुक्तत्वा दिति तथा पक्वोन्मो वयःश्रुताभ्या परिणत आममधुरफलसमान उपशमादिमाधुर्यस्याल्पत्वात् तथा पक्व स्तथैव पक्वमधुरफलसमानो तथैवेति अनन्तर पक्वमधुर उक्तः सच

अत्यिकाया अरूविकाया पन्नत्ता तंजहा धम्मत्तिकाए अधम्मत्तिकाए आगासत्तिकाए जीवत्तिकाए ।  
चत्तारि फला पन्नत्ता तजहा आमैणामं एगे आममज्जरे आमैणामेगे पक्कमज्जरे पक्केणामेगे आममज्जरे पक्के  
णामेगेपक्कमज्जरे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा आमैणामेगे आमफलसमाणे ४ । चउत्तिहे

अरूपी । आकाशास्तिकाय अरूपी । जीवास्तिकाय जीव अरूपी ॥ चार फल कह्या ते कहैछे । पुरुष विशेष जीवस्वरूप कहैछे फल दृष्टांते एक फल काचुं थयु ते पणि कांईक मीठुं मधुरछे । एकफल काचु थयुं पाका जेहवु मीठुं एहवो फल होय । एकफल पाकु पणि आम मधुर का ईक मधुर मीठू । पाकु पणि लगारेक मधुर । एक फल पाको थको पाका जिम मधुर ॥ एफलने सरिखा चार पुरुष कह्या ते कहैछे । अव्यक्त तेआम काचो पणि काइक मीठो फल समान ते कांइक उपसमादि माधुर्यवत इमवये आम पणि पक्व मधुरफल समान । प्रधान उपसमादि गुण युक्त वयश्रुते पक्कापणि उपशम अल्प ॥ वयश्रुते पक्व अने पूर्ण उपसमादियुक्त । उपसम तेसत्यथी चारे प्रकारे सत्य कह्य ते कहैछे । कायानी

सत्यगुणयोगा इवतीति सत्य तद्विपर्ययञ्च सृष्टा तथा सत्यासत्यनिमित्त प्रणिधानं प्रतिपिपादयिषुः सूत्राख्याह ॥ चउव्विहेसच्चेइत्यादीनि ॥ गतार्थानि नवर सृजुकस्या मायिनो भावः कमेवा ऋजुकता कायस्य ऋजुकता कायर्जुकता एवमितरेअपि नवर भावोमनइति कायर्जुकतादयस्य शरीरवाङ्मनसा यथानस्थितार्थप्रत्यायनार्था. प्रवृत्तय स्तथा अनाभोगादिना गवादिकमखादिक यद्वदति कस्मैचित् किञ्चि दध्युपगम्यवा यन्न करोति साविसम्बादना तद्विपक्षेणयोग' सवन्धो ऽविसम्बादना योगइति ॥ मोखेति ॥ सृष्टा असत्य कायस्या ऋजुकतेत्यादि वाक्य प्रणिधिः प्रणिधान प्रयोगः तत्र मनसःप्रणिधानं मार्त्तरीन्द्रधर्मादिरूपतया प्रयोगो मनःप्रणिधान एववाक्काययो रपि उपकरणस्य लौकिकलोकोत्तररूपस्य वस्त्रपात्रादे. संयमासयमोपकाराय प्रणिधा

सच्चे पन्नत्ते तजहा काउज्जुयया नासुज्जुयया नावुज्जुयया अविस्वायणाजोगे । चउव्विहेमोसे प० तं०  
कायणुज्जुयया नासणुज्जुयया नायणुज्जुयया विस्वादणजोगे । चउव्विहे पणिहाणे पस्सत्ते तंजहा

रिजुता सरलता । वचननी रिजुता । ज्ञाव शरीर वचन मनने यथार्थ साचा अर्थनोप्रत्यय विश्वासपणे अर्थनी प्रवृत्तिते रिजुता मन वचन कायाये' ते मननी सरलता साचा ज्ञाव धारवाने सत्य बोले । अनाजोगपणे जिन तिम न बोले । पुरुषने स्त्री नकहे । स्त्रीने पुरुष न कहे ए अविस्वाद ॥ च्यार प्रकारे असत्य कह्यु ते कहैछे ॥ कायानी असरलता वक्राई पणु वक्रचालवु । ज्ञापानी अरिजुता असत्य ज्ञाखवुं । मननी अरिजुता असरलता मने असत्य पदार्थधारे । विस्वादना योग ते अनाजोगपणे । गवादिकने अस्वादि कहे यद्वातद्वा बोले । च्यार प्रकारे प्रणिधान कह्यु । प्रयोग तेप्रणिधान ते कहैछे । मन प्रणिधान तेआर्त्तरीन्द्र धर्मध्यानादि रूप प्रयोग तेमनप्रणिधान । इम सत्यासत्य बोलवु ते

न प्रयोग उपकरणप्रणिधानं ॥ एवमिति ॥ यथा सामान्यतस्तथा नैरयिकाणा मिति तथा चतुर्विंशतिदण्डकपठितानां मध्ये ये पंचेन्द्रिया स्तेषामपि वैमानिकाताना मेवमेवेति एकेन्द्रियादीनां मनःप्रभृतीना मसम्भवेन प्रणिधाना सम्भवा दिति प्रणिधानविशेषः सुप्रणिधान दुःप्रणिधानचेति तत्सूत्राणि शोभनं सयमार्थत्वा अणिधान मनःप्रभृतीना प्रयोजन सुप्रणिधान मिति इदञ्च सुप्रणिधान चतुर्विंशतिदण्डकनिरूपणायां मनुष्याणां तत्रापि सयतानामेव भवति चारित्र्यपरिणतिरूपत्वा त्सुप्रणिधानस्ये त्याह ॥ एवसजये त्यादि ॥ दुःप्रणिधानसूत्र सामान्यसूत्रव त्वरं दुःप्रणिधान मसंयमार्थं मनः

मणपणिहाणे वयपणिहाणे कायपणिहाणे उवगरणपणिहाणे एवंनेरइयाणं पंचेंदियाणं जाववेमाणियाणं ।  
चउव्विहे सुप्पणिहाणे पस्सत्ते तंजहा मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरणसुप्पणिहाणे । एवं संजयमणुस्साणवि  
चउव्विहे दुप्पणिहाणे पस्सत्ते तंजहा मणदुप्पणिहाणे जाव उवगरणदुप्पणिहाणे । एवं पंचेंदियाणं जाव

वचन प्रणिधान । कायपणि जे पाप तथा पुण्यकरे तेकायप्रणिधान । उपगरण धर्मना ओघा पात्रादि लौकिक उपगरण गृहादि वस्तु तेहनो प्रयोग मेलवुं तेउपगरण प्रणिधान ॥ इम ए नारकीने तथा पचेन्द्रीने यावत् वैमानिकने पाच प्रणिधान चौबीस दंडकमां एकेद्री बेद्री तेरिद्री चउरिं द्रीने पांच न हीय । मन ज्ञाषा नथी ॥ च्यार प्रकारे शुज प्रणिधान कहिवुं ते कहै छे ॥ मन सुप्रणिधान जे धर्मार्थने विषे मन प्रवर्तै । वचन सु प्रणिधान जे सत्य वचन बोलवुं । काय सुप्रणिधान जे धर्म क्रियाने विषे काय प्रवर्तै । उपगरण प्रणिधान जे रजोहरणादि धर्मोपगरण राखवो ए च्यार सुप्रणिधान चौबीस दंडकमां मनुष्यने । तेहमां पणि संयत साधुनेज होय ॥ च्यार प्रकारे दुःख प्रणिधान कहियो असंयमार्थं मन प्रमुखनो

प्रभृतीनां प्रयोग इति पुरुषाधिकारा देवापरथापुरुषसूत्राणि चतुर्दश सुगमानि नवर मापातन मापातः प्रथममीलक स्तत्र भद्रको भद्रकारी दर्शनालापा  
 दिना सुखकरत्वा त्सम्वास धिर सहवास स्तस्त्रिभद्रकोहिसकत्वा त्संसारकारणनियोजकत्वा द्वेति सम्वासभद्रकः सहसंवसता मत्यतोपकारितया नो  
 आपातभद्रक अनालापककठोरालापादिना एव द्वावग्यौ ॥ वज्जति ॥ वर्ज्यतद्वतिवर्ज्य अवद्यवा अकारलोपात् वज्रवत् वज्रवा गुरुत्वा द्विसानृतादिपाप  
 कर्म तदात्मनः सबधिकलहादौ पश्यति पद्यात्तापान्वितत्वा नपरस्य तंप्रत्युदासीनत्वात् अन्यस्तु परस्य नात्मनः साधिमानत्वात् इतरउभयो निरनुशयत्वे

वेमाणियाणं । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा ण्णावायज्जद्वएणामेगेणोसंवासज्जद्वए संवासज्जद्वएणामेगेणो  
 ण्णावायज्जद्वए एगेण्णावायज्जद्वएविसंवासज्जद्वएवि एगेणोण्णावायज्जद्वएणोसंवासज्जद्वए । चत्तारि पुरिसजाया  
 पस्सत्ता तंजहा ण्णप्पणोणामेगेवज्जपासइणोपरस्स परस्सणामेगेवज्जपासइ ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं०

प्रयोग तैकहैछे । मन दुप्रणिधान जेपापने विषे मन प्रवर्तै । यावत् इम वचन दुप्रणिधान । कायाये पाप ते कायदुप्रणिधान । असत्यवचन । कायाये  
 पाप करवुं पापोपगरण भेलवा ॥ इम चौबीस द्रुकमां पंचेद्रीनेज होय । ए च्यार यावत् वैमानिकताई । पुरुषाधिकार मांटेज कहेछे । च्यार प्रकार  
 नां पुरुष कहिया ते कहै छे । एक पुरुष आपातज्जद्रक ते प्रथम मिले तिवारे दर्शने बोलववे सुखकारी मीठा वोलै । पणि पछे सवासे घणे काले  
 आगल जाता ज्जद्र नही जलो नहीं । एक पुरुष एकठां रहतां ज्जद्रक जलो । इह परलोके उपगारी पणि प्रथम ज्जद्रक नही । जे बोलववे नही कठिन  
 वचन बोलववे । एक पुरुष आपात प्रथम पणि दर्शने बोलाववे ज्जद्रक जलो सहवासे पणि भद्रक आगलि जाता पणि जलो । एक पुरुष प्रथम

न यथावद्वस्तुवीधात् अपरस्तु नोभयो विमूढत्वादिति दृष्टाचैकं आत्मनः संबंधि अवद्य मुदीरयति भणति यदुत मयाकृत मेतदिति उपशान्तंवा पुनः प्रवर्त्तयति अथवा वज्र कर्म तदुदीरयति पौडोत्यादनेन उदये प्रवेशयतीति ३ एव मुपशमयति निवर्त्तयति पापं कर्ममा ४ ॥ अम्भुष्ठेति ॥ अभ्युत्थान करोति नकारयति परेण सविन्नपात्रिको लघुपर्यायोवा कारयत्येव गुरु रुभयवृत्ति हृषभादि रनुभयवृत्ति जिन्नकल्पिको ऽविनीतोवाइति एव वन्दनादिस्त्

अप्पणोणामेगेवज्जांउदीरेंतिणोपरस्स ४ । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा अप्पणोणामेगेवज्जांउवसामेइ  
णोपरस्स ४ । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा अप्पुठेइणामेगेणोअप्पुठावेइ ४ । एवं वंदइणामेगेणो

पणि भली नहीं पछे पणि नहीं पछे पणि सहवासे रहतां आगल जाता पणि जलो नहीं पाप मतिनो आपनार ॥ वली च्यार पुरुष कहिया ते क है छे । एक द्रव्यथी संसारी पुरुष । जावथी धर्म पुरुष ते कहै छे । एक पुरुष पोतानुं अवदय ते झूठा बोलवा प्रमुखनो वांकदोष देखै कलेस करतां पोतानुं वांक देखै पश्चात्ताप करै पणि परनुं वांक न देखै । एक परनुं अवदय वांक देखै आत्मानुं वांक न देखै । इम एक परनुं न देखै पोता नुं पणि न देखै ॥ वली च्यार पुरुष कहिया ते कहै छे । एक पुरुष आत्मानुं अवदय वाक दोष उदीरे जे एह भैंज कीधुं ॥ परनुं नथी उदीरे जे ते कीधुं एम न कहै एम च्यार जांगा जाणवा । पूर्वनी परें ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहै छे । एक पुरुष आत्मानुं दोष उपशमावे खमी ने निवर्त्तावे टालै । पणि परनु नथी एम च्यार जांगा ॥ वली च्यार प्रकारे पुरुष कह्या ते कहै छे । साधु आश्री पोतेज अभ्युत्थान करे साधुनें आवतो देखीने पोते ऊजो थाय । बीजानें उठवा न दे लघु पर्यायनुं धणी शिष्यादि ॥ इमज वांदै एक पणि वंदावे नथी ते वैराग्य पत्नी तथा



॥

॥

त्रेष्वपि नवरं ब्रूते द्वादशावर्त्तादिना ६ सत्करोति वस्त्रादिदानेन सन्मानयतिस्तुत्यादिगुणोन्नतिकरणेन ८ पूजयति उचितपूजाद्रव्यैरिति वाचयति पाठयति ॥ नोयायावेइ ॥ आत्मानमनेनेत्युपाध्यायादि द्वितीये शिष्यक स्तुतोये कचित् ग्रन्थांतरे अनधोतो चतुर्थे जिनकल्पिकं एव सर्वत्रोदाहणं स्वबुद्ध्यायी जनीय १० प्रच्छतीति सूत्रार्थो गृह्णाति ११ पृच्छतीति प्रणयति १२ सूत्रादियाकरोति ब्रूते तदेवेति १३ सूत्रधरः पाठको ऽर्थधरो बोद्धा अन्यस्तु भयधरः चतुर्थस्तु जडइति पुरुषाधिकारादेव विशेषपुरुषनिरूपणपराणि लोकपालादिसूत्राणि कथय्यानि नवर इन्द्रः परमैश्वर्ययोगात् प्रभुर्महान्वा गजेन्द्रवत् राजा तु राजना होपनात् शोभापत्वादित्यर्थः आराध्यत्वाद्वा एकार्थावेताविति दाक्षिणात्येषु योनामत स्तुतीयो लोकपालः सश्रीदीक्षेषु चतुर्थस्त्वित

वन्दावेइ ४ । एवं सक्कारेइ । सम्माणेइ ४ । पूएइ वाएइ पणिपुच्छइ पुच्छइ वागरेइ ४ । सुत्तधरेणामेगेणो  
अत्यधरे अत्यधरेणामेगेणोसुत्तधरे एगेसुत्तधरेविअत्यधरेवि एगेनोसुत्तधरे नोअत्यधरे । चमरस्सणं असुरिं  
दस्स असुरकुमाररत्तो चत्तारि लोगपाला पणत्ता तंजहा सोमे जमे वरुणे वेसमणे । एवं वलिस्सविसो

लघु पर्यायनो धर्मी एम च्यार जांगा ॥ एम सत्कार करें वस्त्रादि दानें करी । सन्मान करें स्तुति करवा थी । पूजा करें उचित द्रव्य थी । वाचना देवे । प्रश्ननुं उत्तर देवें । एक पुरुष सूत्रनुज ज्ञानहार सूत्र बोले पणि अर्थधर नथी अर्थ न जायें । एक अर्थनु धरणहार छे पणि सूत्रनुं ज्ञानहार नथी ॥ चमरेद्र असुरकुमारेद्र असुरकुमारना राजाने च्यार लोकपाल कहिआ ते कहैं छे । सोम १ । यम २ । वरुण ३ । वैश्रमण ४ ॥ एम बलेद्रने पणि च्यार लोकपाल कह्या ते कहैं छे । सोम १ । यम २ । वैश्रमण ३ । वरुण ४ ॥ धरणेद्र दक्षिण दिशिना इद्रने च्यार लोकपाल कह्या

मे जमे वेसमणे बरुणे । धरणस्स कालपाले कोलपाले सेलवाले संखवाले । नूताणंदस्स कालवाले कोलपाले संखवाले सेलवाले । वेणुदेवस्स चित्ते विचित्ते चित्तपक्के विचित्तपक्के । वेणुदालिस्स चित्ते विचित्ते विचित्तपक्के चित्तपक्के । हरिकंतस्स प्पज्जे सुप्पज्जे प्पज्जकंते सुप्पज्जकंते । हरिसिहस्स प्पज्जे सुप्पज्जे कंते प्पज्जकते । अग्गिसिहस्स तेज तेउसिहे तेउकते तेउप्पज्जे । अग्गिमाणवस्स तेज तेउसिहे तेउप्पज्जे तेउकंते । पुन्नस्स रुए रुयंसे रुयकंते रुयप्पज्जे । वसिठस्स रुए रुयसे रुयप्पज्जे रुयकंते । जलकंतस्स जले जलरए जलकंते जलप्पज्जे

ते कहै छे । कालपाल १ । कोलपाल २ । सेलपाल ३ । संखपाल ४ ॥ नूतानेद्रने चार लोकपाल ते कहै छे । कालपाल १ । कोलपाल २ । संखपाल ३ । सेलपाल ४ ॥ वेणुदेव उत्तर दिशिना घणीने चार लोकपाल ते कहै छे ॥ चित्र १ । विचित्र २ । चित्रपक्ष ३ । विचित्रपक्ष ४ ॥ वेणुदाली इंद्रने चार लोकपाल ते कहै छे ॥ चित्र १ । विचित्र २ । विचित्रपक्ष ३ । चित्रपक्ष ४ ॥ हरिकंत इंद्रने चार लोकपाल ते कहै छे ॥ प्रज १ । सुप्रज २ । प्रजकांत ३ । सुप्रजकांत ४ ॥ हरिसिह इंद्रना चार लोकपाल प्रज १ । सुप्रज २ । सुप्रजकांत ३ । प्रजकांत ४ ॥ अग्निशीर्ष इंद्रना चार लोकपाल ते कहै छे ॥ तेज १ । तेउसिख २ । तेजकांत ३ । तेजप्रज ४ ॥ अग्निमाणव इंद्रने चार लोकपाल ते कहे छे ॥ तेज १ । तेउसिख २ । तेउप्रज ३ । तेउकांत ४ ॥ पूर्ण इंद्रने चार लोकपाल ते कहे छे ॥ रुच १ । रुचस २ । रुचकांत ३ । रुचप्रज ४ ॥ वशिष्ठ इंद्रना चार लोकपाल ते कहे छे ॥ रुच १ । रुचांस २ । रुचप्रज ३ । रुचकांत ४ ॥ जलकांत इंद्रना चार लोकपाल ते कहै छे ॥ जल १ । जलरत २ । जलकांत ३ । जलप्रज ४ ॥

जलप्यज्ञस्स जले जलरए जलप्यज्ञे जलकंते । अमियगइस्स तुरियगई खिप्पगई सिंहगई सीहविक्रमगई  
 अमियवाहणस्स तुरियगई खिप्पगई सीहविक्रमगई सीहगई । बेलंबस्स काले महाकाले अजणे रिठे ।  
 पन्नजणस्स काले महाकाले रिठे अजणे । घोसस्स आवत्ते वियावत्ते णदियावत्ते महानंदियावत्ते । महा  
 घोसस्स आवत्ते वियावत्ते महाणदियावत्ते णंदियावत्ते । सक्कस्स सोमे जमे वरुणे वेसमणे । ईसाणस्स सोमे  
 जमे वेसमणे वरुणे । एवं एगंतरिया जाव अच्चुयस्स । चउट्ठिहा वायुकुमारा पस्सत्ता तंजहा काले महाकाले

जलप्रज्ञ इंद्रनां चार लोकपाल ते कहे छे ॥ जल १ । जलरत २ । जलप्रज्ञ ३ । जलकांत ४ ॥ अमित गति इंद्रना चार लोकपाल ते कहे छे ॥ त्व  
 रितगति १ । क्षिप्रगति २ । सिंहगति ३ । सिंहविक्रम गति ४ ॥ अमित वाहन इंद्रनां चार लोकपाल ते कहे छे त्वरित गति १ । क्षिप्रगति २ ।  
 सिंहविक्रम गति ३ । सिंहगति ४ ॥ बेलंब इंद्रनां चार लोकपाल ते कहे छे ॥ काल १ । महाकाल २ । अंजन ३ । अरिष्ट ४ ॥ प्रजंजन इंद्रनां  
 चार लोकपाल काल १ ॥ महाकाल २ ॥ रिष्ट ३ ॥ अंजन ४ ॥ घोष इंद्रना चार लोकपाल ते कहें छे ॥ आवर्त १ ॥ वैयावर्त २ ॥ नंदियावर्त ३ ॥  
 महानदियावर्त ४ ॥ महाघोष इंद्रनां ४ लोकपाल ते कहे छे ॥ आवर्त १ वैयावर्त २ महा नदियावर्त ३ नदियावर्त ४ ॥ एह बीस जवन पतिना इंद्रना  
 लोकपाल कह्या ॥ शक्र सौधर्मद्रने चार लोक पाल ते कहे छे ॥ सोम १ ॥ यम २ ॥ वरुण ३ ॥ वैश्रमण ४ ॥ ईशानेद्रना चार लोकपाल ते कहे  
 छे ॥ सोम १ ॥ यम २ ॥ वैश्रमण ३ ॥ वरुण ४ ॥ एम एकने आतरे अच्युतेद्र लगे जाणवु ॥ सनत्कुमार ३ ब्रह्म ५ शुक्र ७ प्राणत ८ दसमां एहने

॥ रइति एवं ॥ एगंतरियत्ति ॥ यन्नामानः शक्रस्य तन्नामानएव सनत्कुमारब्रह्मलोकशुक्रप्राणतेन्द्राणां तथा यन्नामानः ईशानस्य तन्नामान एव माहेन्द्रला  
 न्तकसहस्राराच्युतेन्द्राणामिति कालादयः पातालकलशस्वामिनइति चतुर्विधा देवा इत्युक्तं मेतच्च सख्याप्रमाणमिति प्रमाणप्ररूपणसूत्रं तत्र प्रमितिः  
 प्रमीयतेवा परिच्छिद्यते येनार्थं स्तव्यमाणं तत्र द्रव्यमेव प्रमाणं दण्डादिद्रव्येणवा धनुरादिना शरीरादेर्द्रव्यैर्वा दण्डहस्ताङ्गुलादिभिर्द्रव्यस्यवा जीवादे  
 र्द्रव्याणांवा जीवधर्माधर्मादौना द्रव्येवा परमाण्वादौ पर्यायाणां द्रव्येषुवा तेष्वेव तेषामेव प्रमाणं द्रव्यप्रमाण एव यथायोगं सर्वत्र विग्रहः कार्यः तत्र द्रव्यप्र  
 माणं द्वेधा प्रदेशनिष्पन्नं विभागनिष्पन्नञ्च तत्राद्यं परमाण्वाद्यनतप्रदेशिकान्तं विभागनिष्पन्नं पञ्चधा मानादि तत्र मानं धान्यमानं सेतिकादिरसमानं कर्षां

बेलंबे पन्नंजणे । चउच्चिहा देवा पसुत्ता तंजहा जवणवासी वाणमंतरा जोइसिया विमाणवासी । चउ  
 चिहे प्यमाणे पसुत्ते तजहा दह्वप्पमाणे खेत्तप्पमाणे कालप्पमाणे ज्ञावप्पमाणे । चत्तारि दिसाकुमारिमहत्त

सौधर्मद्रवत् लोकपाल कहवा । माहेन्द्रादिकने ईशानेद्रवत् लोक पाल कहवा ॥ च्यार प्रकारे वायु कुमार देवता कह्या ते कहे छे ॥ काल १ महा  
 काल २ बेलंब ३ प्रभजन ४ ॥ एह च्यार पाताल कलशना स्वामी ॥ च्यार प्रकारनां देवता कह्या ते कहे छे ॥ जवनपती १ वाणव्यंतर २ ज्योतिषी  
 ३ वैमानिक ४ ॥ च्यार प्रकारे प्रमाण कह्यो ते कहे छे ॥ जेह थी अर्थनुं मान करिये जांणिये ते प्रमाण कहिये ॥ द्रव्य प्रमाण ते वे प्रकारे एक प्र  
 देश थी निष्पन्न एक विज्ञाग थी निष्पन्न एक प्रदेश परमाणु थी अनंत प्रदेश परमाणु लगे विज्ञाग निष्पन्न ते पांच प्रकारे मानादिक मान ते  
 धान्यनु मान सेतिकादि रसमान कर्षादि १ उन्मान तुला कर्षादि २ अवमान ते हस्तादि ३ गणित एक आदिक ४ ॥ प्रतिमान गुंजावलादि ५ एह

॥ दि १ उन्मानं तुलाकर्षादि २ अवमानं हस्तादि ३ गणित मेकादि ४ प्रतिमानं गुप्ता वज्रादीति ५ क्षेत्र माकाशं तस्य प्रमाणं द्विधा प्रदेशनिष्पन्नादि तत्र प्रदेश निष्पन्न मेकप्रदेशावगाढादि असंख्येय प्रदेशावगाढान्त विभागनिष्पन्न मङ्गुलादिकालः समय स्तन्मान द्विधा प्रदेशनिष्पन्न मेकसमयस्थित्यादि असंख्येयसम यस्थित्यत विभागनिष्पन्नं समयावलिकेत्यादि क्षेत्रकालयो द्रव्यत्वेसत्यपि भेदनिर्देशो जीवादिद्रव्यविशेषकत्वेना नयो स्तत्पर्यायतापीति द्रव्या द्विशिष्टताख्या पनार्थः भावएव भावानांवा प्रमाण भावप्रमाणं गुणनयसख्याभेदभिन्न तत्रगुणा जीवस्य ज्ञानदर्शनचारित्राणि तत्र ज्ञान प्रत्यक्षानुमानोपमानागमरूप प्रमा णमिति नयानैगमादयः संख्या एकादिकेति देवाधिकार एवेद सूत्रचतुष्टय ॥ चत्तारिदिसाद्रत्यादि ॥ सुगम नवर दिङ्कुमार्यश तामहत्तरिकाश प्रधानतमाः तासांवा महत्तरिका दिङ्कुमारोमहत्तरिका एता मध्यरुचकयास्तव्या अर्हतो जातमात्रस्य नालकर्त्तनादिकुर्व्वतोति विद्युत्कुमारीमहत्तरिकास्तु विदिग्

रियान् पन्नत्तान् तंजहा रूवा रूवंसा सुरूवा रूवावई । चत्तारि विज्जुमारि महत्तरियान् पन्नत्तान् तंजहा

द्रव्य मानना जेद छे १ क्षेत्र जे आकाश तेहनुं प्रमाण बे प्रकारे एक प्रदेश निष्पन्नादि तिहां प्रदेश निष्पन्न एक प्रदेशावगाढ थी लेई असंख्येय प्र देशावगाढ पर्यंत जाणवुं विज्ञाग निष्पन्न ते अंगुलादिक २ काल ते समय तेहनुं मान बे प्रकारे प्रदेश निष्पन्न जे पुद्गलनी एक आकाश प्रदेशो एक समय स्थिति थी असंख्येय समय स्थिति पर्यंत जाणवी विज्ञाग निष्पन्न ते समयावलिकेत्यादि ३ ज्ञाव प्रमाण ते गुण नय संख्या जेद थी जिन त्रिहा गुण जीवना ज्ञान दर्शन चारित्र तिहां ज्ञान ते प्रत्यक्षानु मानोपमानागमन रूप प्रमाण नय ते नैगमादिक संख्या ते एकादिक ४ ॥ च्यार दिशिकुमारि महत्तरिका मध्यरुचक निवासिनी जास मात्र अरिहंत नालीने काटे ते कहैं छे ॥ रूपा १ रूपांसा २ सुरूपा ३ रूपावती ४ ॥ च्यार

॥ रुचकवास्तव्याः एताश्च भगवतो जातमात्रस्य चतसृष्वपि दिक्षु स्थिता दीपिकाहस्ता गायन्तीति एतेच देवाः संसारिण इति संसार सूत्रं तत्र संसरण मि  
तथेतच्च परिभ्रमणं संसार स्तत्र संसारशब्दार्थज्ञ स्तत्रानुपयुक्तो द्रव्याणां वा जीवपुद्गललक्षणाना यथायोग भ्रमण द्रव्यसंसार स्तेषामेव क्षेत्रे चतुर्दश  
रज्जात्मके यत्संसारं स क्षेत्रसंसारो यत्र वा क्षेत्रे संसारो व्याख्यायते तदेव क्षेत्र मभेदोपचारात् संसारो यथा रसवती गुणनिकेत्यादि ॥ कालस्य दिवसप  
ञ्चमासवर्षयनसंवत्सरादि लक्षणस्य संसारचक्रन्यायेन भ्रमण पत्योपमादिकालविशेषविशेषितत्वा यत्कस्यापि जीवस्य नारकादिषु सकालसंसारः यस्मिन्  
वा काले पौरुषादिके संसारो व्याख्यायते सकालोपि संसार उच्यते अभेदात् यथा प्रत्युपेक्षणा करणात्कालोपि प्रत्युपेक्षणेति तथा संसारशब्दार्थज्ञ स्तत्रोप

चित्रा चित्तकणगा सेयंसा सोयामणी । सक्लरुसणं देविंदरुस देवरन्तो मज्जिमपरिसाए देवाणं चत्तारि पलित्त  
वमाइं ठिई पन्तत्ता । ईसाणरुसणं देविंदरुस देवरन्तो मज्जिमपरिसाए देवीणं चत्तारिपलित्तवमाइं ठिई प०

विदुत्कुमारी महत्तरिका विदिशि रुचक निवासिनी जगवंतनी जन्म वेला च्यार च्यार दिशाएं दीपक लेइ ऊज्जी रहैं ते कहे छे ॥ चित्रा १ चि  
त्रकनका २ श्रेयासा ३ सौदामिनी ४ ॥ सक्ल सौधर्मैद्र देवेद्र देवताना राजानी मथ्यम पर्षदाना देवतानी च्यार पत्योपमनी स्थिति कही ॥ ईशानेद्र  
देवेद्र देवताना राजानी मथ्यमपर्षदाना देवतानी च्यार पत्योपमनी स्थिति कही ॥ एह देवता संसारीछैं तेमांटे संसार कहेछे । च्यार भेदै संसा  
र कह्यो ते कहेछे जीवपुद्गलनुं जूमण ते द्रव्यसंसार १ । चउदह राजलोक प्रमाण क्षेत्रसंसार २ । दिन रात्रि मास वर्ष पत्योपम सागरोपम जमवुं  
ते कालसंसार ३ । जावसंसार जे औदयिकादि कर्मना परिणाम ४ ॥ एह संसार स्वरूप दृष्टिवादमाछे तेदृष्टिवाद च्यार भेदै छे तेकहेछैं परिकर्म

॥ युक्तो जीवपुद्गलयोर्वा संसरणमात्रं सुपसर्जनीकृतसंबन्धिद्रव्य भावानां चोदयिकादीनां वर्णादीनां वा संसरणपरिणामो भावसंसारइति अथ च द्रव्यादिसंसारो  
 ॥ नेकनयेदृष्टिवादे विचार्यतइति दृष्टिवादसूत्र ॥ चउच्चिहेदिष्ठिवाएइत्यादि ॥ तत्र दृष्टयो दर्शनानि नयावा उच्यन्ते अभिधीयते पतन्ति वा ऽवतरन्ति यस्मिन्नसौ  
 दृष्टिवादी दृष्टिपातो वा द्वादशमंग तत्र सूत्रादि ग्रहणयोग्यता सम्पादन समर्थं परिकर्मगणितपरिकर्मत्र तत्र सिद्धिसेनिकादिसूत्राणीति ऋजुसूत्रादीनि  
 द्वाविंशति भवन्ति इह सर्वद्रव्यपर्यायनयादर्थसूचनात्सूत्राणीति समस्तश्रुतात् पूर्वकरणा त्पूर्वाणि तानि चो त्पादपूर्वादीनि चतुर्दशे त्वेतेषां चैव नाम  
 प्रमाणानि तद्यथा उपाय अग्नेणीय २ वीरिय ३ अस्थिनलिउववायं ४ नाणपवाय ५ सज्ज ६ आयपवायचकम्मच ८ ॥ १ ॥ पुब्बंपच्चक्खाण ९ विज्जणुवाय १०  
 अवज्झ ११ पाणाओ १२ किरियाविसालपुब्ब १३ चोदसमविंदुसारंतु १४ ॥ २ ॥ उपापपयकोडो अग्नेणीयमिह्वनउइलक्खा विरियमिसयरिलक्खा सट्ठिलक्खा  
 उअस्थिनत्थिमि ॥ ३ ॥ एगयऊणाकोडो नाणपवायमिहोइपुव्वमि एगापयाणकोडो क्खसगासज्जपायमि ॥ ४ ॥ क्ख्वीसकोडोओ आयपवायमिहोइपयसखा  
 कम्मपवाएकोडो असोइलखेहिअभत्तिया ॥ ५ ॥ सुलसीयसयसहम्मा पच्चक्खाणमिवन्निवापुव्वे एकापयाणकोडो दससहम्मासहियायअणुवाए ॥ ६ ॥ क्ख्वी

चउच्चिहे संसारे प० तं० दद्वसंसारे खेत्तसंसारे कालसंसारे जावसंसारे । चउच्चिहे दिष्ठिवाए प० तंजहा  
 दृष्टिवाद ते सूत्रग्रहणयोग्यताने नीपजाववा समर्थ १ । सूत्रदृष्टिवाद सर्व द्रव्य पर्याय नयादि अर्थ जणावे २ । पूर्वगतदृष्टिवाद ते चउदहपूर्व सहि  
 त श्रुत ३ । अनुयोगदृष्टिवाद ते तीर्थंकर कुलकर गडिकानुयोगादि तीर्थंकरगडिका कुलकरगडिका चक्रवर्त्तिगडिका जेहमा तीर्थंकरादिकना अधि  
 कार होय ते गडिका कहिये ४ ॥ च्यार भेदे प्रायश्चित्त कस्यो तेकहेछे ज्ञानप्रायश्चित्त ते ज्ञानना अतीचारनी आलोयणा गुरुआपे १ । दर्शनप्रायश्चित्त

॥ संकोडोऽपि पयाणपुब्बेअवंभनामस्मि पाणाउम्मियकोडी कप्पनलक्खेहिअभहिया ॥ ७ ॥ नवकोडीअसंखा किरियविशालम्मिवन्नियागुरुणा अहत्तेरसलक्खा पयसखाविदुसारमि ॥ ८ ॥ तेषु गतं प्रविष्ट यत्श्रुत तत्पूर्वगत पूर्वाखेव अगप्रविष्ट मद्धानि यथेति योजनयोगः ऽनुरूपो अनुकूलोवा सूत्रस्य निजेना भिधे येन सहयोग इत्यनुयोगः सचैकस्तोर्थकराणा प्रथमसम्यक्तावाप्तिपूर्वभवादिगोचरो यः समूलप्रथमानुयोगो ऽभिधीयते यस्तु कुलकरादिवक्तव्यतागोचरः सगण्डिकानुयोगइति पूर्वगत मनन्तर मुक्तान्तत्रच प्रायश्चित्तप्ररूपणासीदिति प्रायश्चित्तसूत्रद्वय न्तत्रज्ञानमेवप्रायश्चित्त यत स्तदेव पापच्छिनत्ति प्रायश्चित्तवा शोधयतीति निरुक्तिवशादज्ञान प्रायश्चित्तमिति एव मन्यत्रापि ॥ वियत्तकिच्चेति ॥ व्यक्तस्य भावतो गीतार्थस्य कृत्य करणीयं व्यक्तकृत्य प्रायश्चित्तमिति गीतार्थोहि गुरुलाघवपर्यालोचनेन यत्किञ्चन करोति तत्सर्वं पापविशोधकमेव भवतीति अथवा ज्ञानाद्यतिचारविशुद्धये यानि प्रायश्चित्तान्या लोचनार्हादीनि विशेषतो ऽभिहितानि तानि तथा अपदिश्यते ॥ वियत्तत्ति ॥ विशेषेण अवस्थाद्यौचित्येन विशेषानभिहितमपि दत्तं त्रितीर्षं मभ्यनुज्ञातमित्यर्थः यत्किञ्चि न्मध्यस्थगीतार्थेन कृत्य मनुष्ठान तत् विदत्तकृत्य प्रायश्चित्तमेव ॥ वियत्तकिच्चेति ॥ पाठान्तर प्रीतिकृत्य वैयावह्यादीति प्रतिषेवण मासे

परिकम्मे सुत्ताइं पुव्वगए अणुजोगे । चउव्विहेपायच्छित्ते पन्नत्ते तंजहा णाणपायच्छित्ते दंसणपायच्छित्ते

त दर्शनना अतीचारनी आलोयणा गुरु आपे २ । चारित्रना अतीचारनी आलोयणा गुरु आपे तेचारित्र प्रायश्चित्त ३ । व्यक्तकृत्यप्रायश्चित्त तेगीतार्थ नी करणी तेसर्व प्रायश्चित्तरूप पापशुद्धिनुं आपनार ४ ॥ वली च्यार प्रकारे प्रायश्चित्त कह्यो ते कहेंछे प्रतिसेवणा सेवना तेहनें अणकरवे प्रायश्चित्त आलोयण १ । संयोजना प्रायश्चित्त बे एकठा मिल्या जे शय्यातरनो पिड अने आधाकरमी तिहां जे प्रायश्चित्त २ । आरोपणाप्रायश्चित्त ते एक अपरा



वन मकलयस्येति प्रतिषेवणा साच द्विधा परिणामभेदात् प्रतिषेवणीयभेदाद्वा तत्र परिणामभेदात् पडिसेवणाश्रीभावी सोपुणकुसलीव्यहोञ्जकुसलीवा  
 कुसलेणहोङ्गकप्पी अकुसलपरिणामश्रीदप्पी ॥ १ ॥ प्रतिषेवणीयभेदा तु मूलगुणउत्तरगुणे दुविहापडिसेवणासमासेण मूलगुणपंचविहा पिडविसोहोङ्गगीड  
 यरा ॥ १ ॥ तस्यां प्रायश्चित्त मालोचनादि तच्चेद आलोयण १ पडिकमणे २ मोस ३ विवेगे ४ तहाविउस्सग्गे ५ तव ६ छेय ७ मूल ८ अणव डुयाय ९ पा  
 रचिए १० चैवत्ति ११ ॥ २ ॥ प्रतिषेवणाप्रायश्चित्तं तथा सयोजनमेकजातीयातिचारमौलन सयोजना यथा शय्यातरपिण्डो गृहीतः सोप्युदकार्द्रहस्ता  
 दिना सोप्यभ्याहृतः सोप्या धाकर्मिकः यत्र यत्प्रायश्चित्त तत् सयोजनाप्रायश्चित्त तथा आरोपण मेकापराधप्रायश्चित्ते पुनः पुन रासेवनेन विजातीयप्रा  
 यश्चित्ताध्यारोपण मारोपणा यथा पञ्चरात्रिन्दिव प्रायश्चित्त मापन्नः पुन स्तत्सेवने दशरात्रिन्दिव पुनः पचदशरात्रिदिव मेव यावत् पणमासान् तत

चरित्तपायच्छित्ते वियत्तकिञ्चे । चउव्विहे पायच्छित्ते पन्तत्ते तंजहा पडिसेवणापायच्छित्ते संजोयणापाय

घना प्रायश्चित्तनें बिषे वली पापकीधुं तेहनुं तप वली तेहमा देवो पाच अहोरात्रिनुं प्रायश्चित्तकीधुं तेहमा वली पंचवीस अहोरात्रिनुं एमयावत्  
 छमासी तप आपे तपमां तप छमासीताईं आपे ते आरोपणा प्रायश्चित्त कहिये वली एहनु विशेष गीतार्थना वचनथी जाणज्यो ३ परिकुचणा  
 प्रायश्चित्त ते पापनुं गोपवुं कीधोअन्य कहेअन्य तेहनुं प्रायश्चित्त ४ ॥ प्रायश्चित्त कालापेक्षाथी दिये ते मांटे काल कहेछे । च्यार जेदै कालकहियो ते कहेछे  
 प्रमाणकाल मासवर्ष रितु अयन शतवर्षपत्योपमादि प्रमाण करिये । देवता नारकी प्रमुखनु आजखानु काल जेहवानो जेतलो आयु ते यथा यु  
 काल । आजखानुं काल ते मरणकाल । अद्वाकाल ते समयादि मनुष्य क्षेत्रमा सूर्य भूमणरूप च्यार प्रहरे दिवस च्यारप्रहरे रात्रि इत्यादिक ॥ काल

स्तस्याधिकं तपोदेयं न भवत्य पितु शेषतपांसितु तत्रैवा न्तर्भावनीयानि इह तीर्थे षण्मासान्तत्वा तपस इति उक्तञ्च पंचाद्वयारोवणे नेयव्वाजावहोति  
 कृष्मासा तेणपरमासियाण कृण्णुवरिंभोसणंकुज्जत्ति ॥ १ ॥ आरोपणायाः प्रायश्चित्त मारोपणा प्रायश्चित्तमिति तथा परिकुचन मपराधस्य क्षेत्रकाल  
 भावानां गोपायन मन्यथा सता मन्यथा भणन परिकुंचना परिवचनावा उक्तञ्च दव्वेखेत्तेकाले ठावेपलिओंचणाचउवियप्पत्ति तथाहि सच्चित्तेअच्चि  
 त्ते जणवयपडिसेवियंचअद्धाने २ । सुभिक्षेयदुभिक्षे हत्येणतहागिलाणेणति ॥ १ ॥ तस्याः प्रायश्चित्त परिकुचना प्रायश्चित्त विशेषोत्र व्यवहारपीठा द्व  
 सेयइति प्रायश्चित्तच कालापेक्षया दीयतइति कालनिरूपणासूत्र तत्र प्रमीयते परिच्छिद्यते येन वर्षशतपत्योपमादि तत्रमाण तदेवकालः प्रमाणकालः  
 सच अद्वाकालविशेषएव दिवसादिलक्षणे मनुष्यक्षेत्रान्तर्वर्त्तीति उक्तञ्च दुविहोपमाणकालो दिवसपमाणचहोद्वराइय चउपोरिसिओदिवसो राइचउपो  
 रिसीचेवत्ति ॥ १ ॥ यथा यत्प्रकार नारकादिभेदेनायुः कर्मविशेषो यथायु स्तस्य रौद्रादिध्यानादिना निर्वृत्ति बन्धनं तस्याः सकाशात् यः कालो नार  
 कादित्वेन स्थिति जीवानां स यथायुर्निर्वृत्तिकालः अथवा यथायुवो निर्वृत्ति स्तथा यः कालो नारकादिभवे ऽवस्थान सतथेति अयमप्यद्वाकालएवा यु  
 ष्ककर्मानुभवविशिष्टः सर्वसंसारजीवानां वर्त्तनादिरूपइति उक्तञ्च आउयमित्तविसिद्धो सएवजीवाणवत्तणादिमओ । भस्सइअहाउकालो वत्तइजोजचिरं  
 तेणत्ति ॥ १ ॥ मरणस्य मृत्योः कालः समयः मरणकालो ऽयमप्यद्वासमयविशेष एव मरणविशिष्टो मरणमेव वा कालो मरणपर्यायत्वा दुक्तञ्च कालो

च्छित्ते शरीवणापायच्छित्ते पलिउंचणापायच्छित्ते । चउह्विहे काले पन्नत्ते तंजहा पमाणकाले अहाउणि

ते द्रव्य पर्याय रूपद्वे पर्यायाधिकारथी पुद्गलाधिकार कहेछे । च्यार जेदै पुद्गलकह्यो ते कहेछे । वर्ण परिणामे कालो नीलो नीलानुं पीत इत्यादि ।

त्तिमयंमरणं जहेवमरणगओत्तिकालगओ । तम्हासकालकालो जस्समओमरणकालोत्ति ॥ १ ॥ तथा अह्वैव कालो ऽडाकालः कालशब्दोहि वर्णप्रमाणक  
 लादिष्वपि वर्तते ततो ऽशब्देन विशिष्यतइति अयच्च सूर्यक्रियाविशिष्टो मनुष्यचेत्रान्तर्वर्त्ती समयादिरूपो ऽवसेयः उक्तच सूरकिरियाविसिष्टो गोदीहा  
 द्रकिरियासुनिरवेक्खो । अडाकालोभणइ समयक्खेत्तमिसमयाइ ॥ १ ॥ समयावलियमुहत्ता दिवसमहोरत्तपक्खमासाय सवच्छरजुगपलिया सागरओस  
 प्पिपरियट्ठत्ति ॥ २ ॥ द्रयपर्यायभूतस्य कालस्य चतुःस्थानकमुक्त मिदानी म्पर्यायाधिकारा तुद्गलाना पर्यायभूतस्य परिणामस्य तदाह ॥ चउब्बिहेत्यादि  
 परिणामो ऽवस्थातो वस्थान्तरगमन नच सर्वथा विनाश उक्तंच परिणामोह्यर्थान्तर गमननसर्वथाव्यवस्थान । नचसर्वथाविनाशः परिणामस्तद्विदामिष्टइ  
 ति ॥ १ ॥ तत्र वर्णस्य कालादेः परिणामो न्यथाभवनं वर्णेनवा कालादिनेतरत्यागेन पुद्गलस्य परिणामो वर्णपरिणाम एव मन्येपि अजीवद्रव्यपरिणामा  
 उक्तो ऽधुनातु जीवद्रव्यस्य परिणामाः विचित्राः सूत्रप्रपंचेना भिधीयन्ते तत्र ॥ भरहेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं व्यक्तमेव किन्तु पुरिमपश्चिमवर्जा किमुक्त भवति म

वृत्तिकाले मरणकाले अष्टाकाले । चउब्बिहे पोग्गलपरिणामे पन्तत्ते तंजहा वन्नपरिणामे गधपरिणामे

गंधपरिणाम सुगंधपुद्गल तेदुर्गंधथाय दुर्गंधते सुगंधथाय परिणाम ते नवीनवी अवस्थापामें । रसपरिणाम तीखानुं कळवो इत्यादि । फरस परिणाम  
 कोमलना कठिन कठिनना कोमल इत्यादि ८ फरसपरिणाम ४ ॥ एह अजीवना परिणाम कह्या हिवे जीवना परिणाम कहेछे । जरत ५ ऐरवत ५  
 एह १० क्षेत्रने विपे पहलो अने छेहलो २ तीर्थकर छोडीने वावीस तीर्थकर जगवंत च्यार महाव्रतरू पधर्मनी प्ररूपणाकरे ते कहैंछे । सर्व सूद्धम वा  
 दर प्राणातिपात जीवहिंसाथी विरमवु तेव्रत । एम सर्वमृषावादथी विरमवुं तेव्रत । एम सर्व अदत्तादानथी वैरमण अदत्तनलेवु तेव्रत । सर्व

ध्यमकाइति तैचा ष्टादयोपि भवन्तीति उच्यते ढाविंशतिरिति चत्वारो यमा एव यामानिवृत्तयो यस्मिन् सतथा ॥ बहिष्ठादाणाओत्ति ॥ बहिष्ठाभैथुनंप  
 रिग्रहविशेष आदानञ्च परिग्रह स्तयोर्द्वैकत्व मथवा आदीयत इत्यादान परिग्राह्य वस्तु तच्च धर्मापकरणमपि भवतोत्यत आह बहिस्ता इर्मापकरणा  
 इहि येदिति इहचमैथुन परिग्रहे न्तर्भवति नह्यपरिगृहीता योषित् भुज्यतइति प्रत्याख्येयस्य प्राणातिपातादे श्चतुर्विधत्वा चतुर्यामता धर्मस्येति इयचेह  
 भावना मध्यमतीर्थकराणा वैदेहिकानाञ्च चतुर्यामकधर्मस्य पूर्वपश्चिमतीर्थकरयोश्च पचयामधर्मस्य प्ररूपणा शिष्यापेक्षया परमार्थतस्तु पचयामस्यैवो भये  
 षा मध्यसौ यतः प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थसाधव ऋजुजडा वक्रजडाश्चेति तत्त्वादेव परिग्रहोवर्जनौय इत्युपदिष्टो मैथुनवर्जन मवबोडु पालयितुंच नचमाः  
 मध्यमविदेहजतीर्थकरतीर्थसाधवस्तु ऋजुप्राज्ञा स्तबोडु वर्जयितुंच चमा इति भवत आचक्षोको पुरिमाउज्जुजडाओ वक्रजडाओयपच्छिमा । मज्जिमाउ

रसपरिणामे फासपरिणामे । नरहेरवएसुणं वासेसु पुरिमपच्छिमवज्जा मज्जिमगा वावीसं अरहंता जग  
 वंता चाउज्जामं धम्मं पन्नविति तंजहा सव्वानुपाणाइवायानुवेरमणं एवं मुसावायानु अदिन्नादाणानु स  
 व्वानु बहिष्ठादाणानुवेरमणं । सव्वेसुणं महाविदेहेसु अरहता जगवंता चाउज्जामं धम्म पन्नवयंति तंजहा

बहिष्ठाण मैथुन ते मैथुनपरिग्रह एकठा तेहथी विरमवुं ४ ॥ सघलाई एतले पांच महाविदेह क्षेत्रमां अरिहंत जगवंत च्यार महाव्रतरूप धर्म प्र  
 रूपे तेकहेछे सर्व प्राणातिपात वेरमण १ । यावत् बहिष्ठाण मैथुनपरिग्रहथी वेरमण ४ ॥ जे प्राणातिपातथी विरमे नथी तेहने च्यार दुर्गति कही  
 तेकहेछे नरकदुर्गति तिर्यंचदुर्गति मनुष्यदुर्गति देवदुर्गति किलिषादि ४ ॥ च्यार सद्गति कही तेकहेछे सिद्धिसद्गति मुक्ति देवसद्गति विमानादि मनुष्यस

जुपणाओ तेणधम्मेदुहाकए ॥ १ ॥ पुरिमाणदुविसोज्झोउ चरिमाणंदुरणुपालए । कप्पेमज्झिमगाणत्त सुविसोज्झेसुपालएत्ति ॥ २ ॥ अनन्तरोत्तेभ्यः प्राणा  
तिपातादिभ्यो नुपरतोपरतानां दुर्गतिसुगती भवत स्तद्वतश्च तेदुर्गतेतरा भवतीति दुर्गतिसुगत्यात्मकपरिणामानां दुर्गतसुगतयोश्च भेदान् सूत्रचतुष्टयेना  
ह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ गतार्थं नवर मनुष्यदुर्गति दुःखितमनुष्यापेक्षया देवदुर्गतिः किल्बिषिकाद्यपेक्षयादिति ॥ सुकुलपञ्चायाइति ॥ देवलोकादौ गत्वा  
सुकुले इच्छाकादौ प्रत्यायातिः प्रत्यागमन प्रत्याजातिर्वा प्रतिजन्मेति इयच्च तीर्थंकरादीना मेवेति मनुष्यसुगते भौगभूमिजादिमनुजत्वरूपायाः भिद्यते  
दुर्गतिरेषा मस्तौ त्यचिप्रत्यये दुर्गता दुःस्थावा दुर्गता एवं सुगता अनन्तरसिद्धाः सुगता उक्ता स्तेचाण्टकर्मक्षयत्वा इवत्यतः क्षयपरिणामस्य क्रममाह  
॥ पढमेत्यादि ॥ सूत्रत्रय व्यक्त पर प्रथमः समयो यस्य सतथा सचासौ जिनश्च सयोगिकेवलो प्रथमसमयजिनस्तस्य कर्मणः सामान्यस्यां शाः ज्ञानावरणी

सद्धानपाणाइवायानुवेरमणं जाव सद्धानवहिष्ठादाणानुवेरमणं । चत्तारिदुग्गईनं प० तंजहा णेरइयदुग्गई  
तिरिक्कजोणियदुग्गई मणुस्सदुग्गई देवदुग्गई । चत्तारिसोग्गईनं पन्तत्तानं तंजहा सिद्धिसोग्गई देवसोग्गई

इति उक्तमजाति । सुकुल उक्तमकुलमां उपजवुं ते धर्मसहित कुल देवलोकमा सुकुलमा अवतरे ते तीर्थकरादिक जे मोक्षपामें ४ ॥ चार दुर्गतकह्या  
तेकहेछे नारकीदुर्गत तिर्यंचदुर्गत मनुष्यदुर्गत देवदुर्गत किल्बिषादि आज्ञियोगिक ४ । चार सुगत सुखिया कह्या तेकहेछे सिद्धसुगत यावत् सुकुल  
मा ऊपना ते सुगत पुण्यवत ४ ॥ सिद्ध ते कर्मक्षयणी थाय तेमांटे कर्मक्षय कहेछे । पहले समयनो जिन सयोगी केवलीना चार कर्मना अश समकाले क्षय  
थाय तिवारे केवलज्ञानी थाय तेकहेछे । ज्ञानावरणी दर्शनावरणी मोहनीय अतराय ४ ॥ ऊपनाछे जे केवलज्ञान केवलदर्शन तेहना धरणहार अरि

यादयो भेदाइति उत्पन्ने आवरणक्षयाज्जाते ज्ञानदर्शने विशेषसामान्यबोधस्वरूपे धारयतीति उत्पन्नज्ञानदर्शनधरो ऽनेना ऽनादिसिद्धकेवलज्ञानवतः सदा शिवस्या सद्भाव दर्शयति नविद्यते रह एकातो गोप्यमस्य सकलसन्निहितव्यवहितस्थूलसूक्ष्मपदार्थसार्थसाक्षात्कारित्वा दित्यरहा देवादिपूजार्हत्वेना हन्वा रागादिजेतृत्वा जिनः केवलानि परिपूर्णानि ज्ञानादौनि यस्यसति स केवलीति सिद्धत्वस्य कर्मक्षपणस्य च एकसमये सम्भवात् प्रथमसमयसिद्धस्येत्या दि व्यपदिश्यते असिद्धानान्तु हास्यादयो विकारा भवन्तीति हास्यं ताव चतुःस्थानकावतारित्वादाह ॥ चउहीत्यादि ॥ हसन हासो हासमोहोदयजनि तो विकार स्तस्यो त्यत्ति रत्वादो हासोत्यत्तिः ॥ पासित्तत्ति ॥ दृष्ट्वा विदूषकादिचेष्टां चक्षुषा तथा भाषित्वा वाचा किंचिच्च सूरीवचन तथा श्रुत्वा श्रो

मणुयसोग्गई सुकुलेपच्चायाई । पढमसमयजिणस्सणं चत्तारि कम्मंसा खीणा ज्ञवंति तंजहा णाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं मोहणिज्जं अतराइयं उप्पन्नणाणदंसणधरेणं अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदेंति तंजहा वेयणिज्जं अणुयं णाम गोय । पढमसमयसिद्धस्सणं चत्तारि कम्मसा जुगवं खिज्जंति तंजहा वेयणि ज्जं अणुयं णाम गोयं । चउहि ठाणेहि हासुप्पत्तिसिया तंजहा पासेत्ता ज्ञासेत्ता सुणेत्ता संजरेत्ता । चउ

हंत जिन केवली चउदह राजलोक हस्तामलकवत् देखै ते जिन च्यार कर्मना अंश वेदै जोगवे तेकहेछे वेदनीयकर्म आयुकर्म नामकर्म गोत्रकर्म ४ । प्रथमसमयना सिद्धने चौदमें अयोगिगुणठाणे च्यार कर्मना अंश जे घनघातीछे समकाले मूलथी क्षयथाय तेकहेछे । वेदनीयकर्म आयुकर्म नामकर्म गोत्रकर्म ४ ॥ असिद्धने हास्यादिहोय तेच्यार थानके हास्यनी उत्पत्तिकही । भवाईनी चेष्टादेखीने हास्यउपजे । कोईकबातकरतां हास्यउपजे । वचन

त्रेण परीक्षं तथाविधवाक्य तथाविधमेव चेष्टावाक्यादिकं स्मृत्वा हसतीतिशेषः एवं दर्शनादीनि हासकारणानि भवन्तीति असिक्तानामेव धर्मान्तरनिरूपणाय दृष्टांतदार्ष्टान्तिकार्थवत्सूत्रद्वयं ॥ चउच्चिहेत्यादि ॥ काष्ठस्यच काष्ठस्यचेति काष्ठयोरन्तरविशेषोरूपनिर्माणादिभिः एवमेव काष्ठायतरमिव पद्मकर्पासरूतादि पद्मणोरन्तरं विशिष्टसौकुमार्यादिभिर्लोहान्तरं अत्यंतच्छेदकत्वादिति प्रस्तरान्तरं पाषाणान्तरं चिन्तितार्थप्रापणादिभिरेवमेव काष्ठायतरवत् स्त्रियावा स्त्र्यन्तरापेक्षया पुरुषस्यवा पुरुषान्तरापेक्षया वाशब्दौ स्त्रीपुंसयो द्यातुर्विध्यं प्रति निर्विशेषताख्यापनार्थौ काष्ठान्तरेण समान तु ल्य मन्तर विशेषो विशिष्टपदवीयोग्यत्वादिना पद्मान्तरसमानं वचनसुकुमारतयैव लोहान्तरसमान स्नेहच्छेदेन परीषद्वादी निर्भङ्गत्वादिभिश्च प्रस्त

विहे अंतरे पश्यते तंजहा कठंतरे पम्हंतरे लोहंतरे पत्यंतरे । एवामेव इत्यिएवा पुरिसस्सवा । चउच्चिहे अंतरे प० तंजहा कठंतरसमाणे पम्हंतरसमाणे लोहंतरसमाणे पत्यंतरसमाणे । चत्तारि जयगा प० तं०

व्यास प्रमुखना सांजलीने हास्य उपजे । ह्रीयामा संजारीने हसैते ४ ॥ च्यार प्रकार अंतरकह्यो ते कहेछे । काष्ठांतर काष्ठ काष्ठमां विशेषछे एक चंदन काष्ठांतर एक थोहरआक । पम्ह ते पाख पाखमां अतर विशेष सुकुमाल एकसुहाली एक कठिन । लोह लोहमां अतर विशेष एक अत्यंत कठिन एक सुकुमाल । पत्थर पत्थरमा विशेष एक चिंतामणि मन वंछित आपें एक कांकरो ॥ एहनीपरे स्त्री स्त्रीमाहि पुरुष पुरुषमाहि च्यार प्रकार अतर विशेषछे । ते कहेछे । काष्ठांतर समानते एक विशेष पदवी योग्य एक अयोग्य । पदमातर समान स्त्रीपुरुष तेएकनु वचन सुकुमाल एकनो वचन कठिन । लोहान्तर समान तेस्नेह छेदेकरी स्नेहे एकसस्नेही । प्रस्तरातर समान तेचिंता रहित मनोरथपूरे गुणवत वादवायोग्य

रान्तरसमानं चिंतातिक्रान्तमनोरथपूरकत्वेन विशिष्टगुणवत् वंद्यपदवीयोग्यत्वादिनाचेति अनन्तर मन्तरसुक्तमिति पुरुषविशेषान्तरनिरूपणाय भृत्य कसूत्र तत्र भ्रियते पोष्यतेस्मेति भृत्यः सएवानुकम्पितो भृत्यकः कर्मकरइत्यर्थः प्रतिदिवसं नियतमूल्येन कर्मकरणार्थं योग्यह्यते सदिवसभृत्यकः यात्रा देशा न्तरगमन तस्यांसहायइति भ्रियते यःस यात्राभृत्यकः मूल्यकालनियम कृत्वा यो नियत यथावसरं कर्म कार्यते स उच्चताभृत्यकः कवाडभृत्यकः क्षितिखा नकः ओद्रादिर्यस्यस्वङ्गमार्प्यते द्विहस्ता त्रिहस्तावा त्वया भूमिः खनितव्यै तावत्ते धनन्दास्यामीत्येव न्रियस्येति इहगाथे दिवसभयत्रोधिष्यइ च्छिर्णेणध णेणदिवसदेवसिय । जत्ताओहोद्रगमणं उभयवा [ आगमनचेत्यर्थः ] एत्तियधणेण ॥ १ ॥ कव्वालउद्दुमाइ हत्यमियकम्मएत्तियधणेण । एच्चिरकालुब्बत्ते कायव्वंकम्मजविंति ॥ २ ॥ उक्तं लौकिकस्य पुरुषविशेषस्यां तर मधुना लोकोत्तरस्य तस्यांतरप्रतिपादनाय प्रतिषेधिसूत्र तत्र सप्रकट अगीतार्थसमच्च, मक

दिवसजयए जत्ताजयए उच्चतजयए कवाडजयए । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० संपागळपण्णिसेवीणामेगे  
णोपच्छसपण्णिसेवी पच्छसपण्णिसेवीणामेगेणोसंपागळपण्णिसेवी एगेसंपागळपण्णिसेवीवि पच्छसपण्णिसेवी

एक निरगुणी अने अवंदर ॥ पुरुष विशेष अधिकार माटे सेवकनो विशेष च्यार भृत्यक सेवककह्या ते कहेछे । दिवसनो एक सेवक तेदानगी मूल्य आपी कार्यने राखीये । यात्रा सेवक ते देशातरे जातां सखाई राखीये मूल्य आपीने । उच्चता भृत्यक ते जेकालनुं मानकरी मूल्ये काम करावीये । कवाड भृत्यक ते बेहाथ ३ हाथजूमिखोदसे तोएतलुं धन आपस्युं ॥ बली च्यार प्रकारे पुरुष कह्या ते कहे छे ॥ हिवे लोकोत्तर पुरुषनो विशेष कहै छे एक गीतार्थसाधु प्रकट अकल्प जत्तादिकनो सेवनार पणि अप्रच्छन्नसेवें समस्तसेवें व्दानुं न सेवें १ वकुश । एक प्रच्छन्न व्दानुं पाप कर्मसेवें प्रगट न



लप्य भक्तादि प्रतिषेधितुं शीलं यस्य स सम्प्रकटप्रतिसेवी त्वेवं सर्वत्र नवरं प्रच्छन्नमगीतार्थासमक्षं मन्त्रवाद्येषु भङ्गकत्रयेषु पुष्टालंबनो वकुशादि निरालंबनो वा पार्श्वस्थादि द्रष्टव्यश्चतुर्थेतु निर्णयः स्नातकोवेति अन्तराधिकारादेव पुरुषाणां स्त्रीकृतं मतं प्रतिपादयन् ॥ चमरस्त्र्यादिक ॥ मग्नमहिषीसूत्रप्रपञ्चमाह कण्ठस्थाय नवरं ॥ महारत्रोत्ति ॥ लोकपालस्य अग्रभूताः प्रधाना महिष्यो राजभार्या अग्रमहिष्यइति ॥ वदरोयणति ॥ विविधैः प्रकारैरोच्यते दीप्यते इति विरोचना स्तएवैरोचना उत्तरदिग्वासिनो असुरा स्तेषा मिदो धरणसूत्रे ॥ एवमिति ॥ कालवालस्यैव लोकपालशैलपालसंखपालानां

वि एगेणोसंपागपद्मिसेवी णोपच्छस्मपद्मिसेवी । चमरस्सणं असुरिदस्स असुरकुमाररत्नो सोमस्स महा रस्सो चत्तारि अगमहिसीत्तं पन्नत्तानं तजहा कणगा कणगलया चित्तगुत्ता वसुधरा । एवं जमस्स वरुणस्स वेसमणस्स । वलिस्सणं वदरोयणिंदस्स वदरोयणरस्सो सोमस्समहारस्सो चत्तारि अगमहिसीत्तं प० तं० मित्तगा सुत्तदा विज्जुया असणी । एवं जमस्स वेसमणस्स वरुणस्स । धरणस्सणं णागकुमारिंदस्स णाग

सेवे २ कुशीलिउं एक प्रगट पणेसेवे पासत्थो अनें छानुं पणिसेवे ३ एक गुणवंत साधु प्रगटपणि अकल्पवस्तुनसेवे अनें प्रच्छन्नपणि म सेवे ते नि ग्रथ अथवा स्नातक ४ ॥ अंतरा धिकार माटे देव पुरुषनो स्त्रीनो अधिकार कहेछे ॥ चमरेद्र असुरेद्र असुर कुमारनो राजा तेहना सोमनामा म हाराजाने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे ॥ कनका १ कनकलता २ चित्रगुप्ता ३ वसुधरा ४ । एम यमने वरुणने वैश्रमणने च्यार अग्र महिषी एज नाम ॥ वलेदने वैरोचन उत्तर दिशिना वासी देवतानु राजा तेहनुं सोमनामे मोटी राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही इद्राणी कही ते कहेछे ।

मेतन्नामिका एव चतस्रश्चतस्रो भार्या एतदेवाह ॥ जावसंखवालस्सत्ति ॥ भूतानन्दसूत्रे ॥ एवमिति ॥ यथाकालवालस्य तथात्थेषामपि नवरं तृतीयस्थाने चतुर्थोवाचः धरणस्य दक्षिणनागकुमारनिकायेंद्रस्य लोकपालानां मग्नमहिषी यथा २ यन्नामिका स्तथा तन्नामिकाएव सर्वेषां दक्षिणात्यानां शेषाणां मष्टानां वेणुदेवहरिकांताग्निशिखपूर्णजलकान्तमितगतिवेलवधोषाख्यानां मिन्द्राणां ये लोकपालोःसूत्रे दर्शिता स्तेषां सर्वेषामिति यथाच भूतानन्दस्यौ दीच्यनागराजस्य तथा शेषाणामष्टानां मौदीच्येन्द्राणां वेणुदालिहरिसहाग्निमाणववशिष्टजलप्रभामितवाहनप्रभञ्जनमहाधोषाख्यानां ये लोकपाला स्तेषां मपीति एतदेवाह ॥ जहाधरणस्तेत्यादि ॥ उक्तं सचेतनानां मन्तरमथान्तराधिकारादेवा चेतनविशेषाणां विक्लतीनां गोरसस्नेहमहल्लक्षण

कुमाररम्भो कालस्स महारम्भो चत्तारि अग्नमहिसीनुं प० तं० असोगा विमला सुप्पजा सुदंसणा । एवं जाव संखवालस्स । नूयाणंदस्सणं नागकुमारिदस्स नागकुमाररम्भो कालवालस्स महारम्भो चत्तारि अग्नमहिसीनुं प० तंजहा सुणंदा सुजदा सुजाया सुमणा । एवं जाव सेलवालस्स जहा धरणस्स । एवं सहेसिं

मित्रगा १ । सुजदा २ । विदुयता ३ । अशनी ४ ॥ इमज्जमने वैश्रमणनें वरुणनें च्यार च्यार अग्रमहिषी कहवी ॥ धरणेद्र नागकुमारेद्र नागकुमारनां राजानुं काल मोटोराजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही तेकहेछे । अशोका १ । विमला २ । सुप्रजा ३ । सुदर्शना ४ । एम यावत्तं खपाल लगे जाणवुं ॥ नूतानेन्द्र नागकुमारेद्र नागकुमारनुं राजा तेहनुं कालवाल मोटो राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । सुनदा १ । सुजदा २ । सुजाता ३ । सुमना ४ ॥ एम यावत्तं सेलपालने एह सर्व लोक पालछे ॥ जिम धरणेन्द्रने तिम सर्वने एम दक्षिण दिशिनां इंद्रनां लोक

दाहिणिंदलोगपालाणं जाव घोसस्स जहा जूयाणंदस्स । एवं जाव महाघोसस्स लोगपालाणं । कालस्सणं  
 पिसाइंदस्स पिसायरस्सो चत्तारि अग्गमहिंसीत्तं पन्नत्तानं तंजहा कमला कमलप्पन्ना उप्पला सुदंसणा ।  
 एव महाकालस्सवि । सुरूवस्सणं जूइदस्स जूयरस्सो चत्तारि अग्गमहिंसीत्तं पन्नत्तानं तजहा रूववई वज्ज  
 रूवा सुरूवा सुजगा । एवं पफिरूवस्सवि । पुम्माज्जदस्सणं जस्किंदस्स जस्करस्सो चत्तारि अग्गमहिंसीत्तं प०  
 तजहा पुम्मा वज्जपुत्तिया उत्तमा तारगा । एवं माणिज्जदस्सवि । ज्जीमस्सणं रक्कसिंदस्स रक्कसरन्नो चत्ता  
 रि अग्गमहिंसीत्तं पन्नत्तानं तंजहा पउमा वसुमई कणगा रथणप्पन्ना । एवं महान्जीमस्सवि । किन्नरस्सणं

पालने यावत् घोसने जिम भूतानेन्द्रने एम यावत् महाघोसना लोकपालने एह जवनपतिना कहिया ॥ काल नाम पिशाचनुं इंद्र पिशाचनुं राजा  
 तेहने चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे कमला १ । कमलप्रजा २ उत्पला ३ । सुदर्शना ४ ॥ एम महाकालनेपणि ॥ सुरूपनाम भूतेन्द्र भूतना राजाने  
 चार अग्रमहिषीकही ते कहेछे रूपवती १ । बहुरूपा २ । सुरूपा ३ । सुभगा ४ एम प्रतिरूप दक्षिण दिशिना इंद्रने पणि ॥ पूर्णाज्जद्र नामा यत्त  
 नोइद्र यत्तनु राजा तेहने चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । पूर्णा १ । बहुपुत्रिका २ । उत्तमा ३ । तारगा ४ ॥ एम माणिज्जद्रनेपणि ॥ ज्जीमनाम  
 राक्षसनुं इंद्र राक्षसनुं राजा तेहने चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । पट्ना १ । वसुमती २ । कनका ३ । रत्नप्रजा ४ ॥ एम महान्जीमने पणि ॥ ४  
 किन्नर नामा किन्नरनु इंद्र तेहने चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । वडिंसा १ । केतुमती २ । रतिसेना ३ । रतिप्रभा ४ ॥ एम किपुुरिसने पणि

किन्नरिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीन पण्हानं तंजहा वफिंसा केउमई रइसेणा रइप्पजा । एवं किंपुरिसस्स वि । सुपुरिसस्सणं किंपुरिसिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीन प० तं० रोहिणी णवमिया हिरी पुप्फवई । एवं महापुरिसस्सवि । अइकायस्सणं महोरगिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीन प० तं० जुयगा जुयगवई महाकच्छा फुफ्फा । एवं महाकायस्सवि । गीयरइस्सणं गंधर्विंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीन प० तंजहा सुघोसा विमला सुस्सरा सरस्सई । एवं गीयजसस्सवि । चदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरस्सो चत्तारि अग्गमहिसी नं पण्हानं तंजहा चंदप्पजा दोसिणाना अच्चिमाली पन्नकरा । एवं सूरस्सवि णवरं सूरप्पजा दोसिणा

जाणवी ॥ सुपुरिसनामा किंपुरुषनुं इंद्र तेहने चार अग्रमहिषीकही ते कहेछे । रोहिणी १ । नवमिका २ । ह्री ३ । पुष्पवती ४ ॥ एम महापुरुष इंद्रने पणि जाणवी ॥ ४ ॥ अतिकाय नामा महोरगनुं इंद्र तेहने चार अग्रमहिषीकही ते कहेछे । जुयगा १ । जुयगवती २ । महाकच्छा ३ । स्फुटा ४ ॥ एम महाकायने पणि ४ । अग्रमहिषी जाणवी ॥ गीतरतिनामा गंधर्वेद्र गंधर्वनुं राजा तेहने चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । सुघोषा १ विमला २ सुस्वरा ३ । सरस्वती ४ ॥ एम गीतयशने पणि चार अग्रमहिषी जाणवी । एह व्यतरेद्र कह्या ॥ चंद्रमा ज्योतिषेन्द्र ज्योतिषीना राजाने चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । चंद्रप्रजा १ ज्योत्स्नाप्रजा २ । अर्चिमाली ३ । प्रभंकरा ४ ॥ एम सूर्यनेपणि एतलो विशेष सूरप्रजा १ । ज्योत्स्ना प्रजा २ । अर्चिमाली ३ । प्रभंकरा ४ ॥ इगाल नामा मंगल मोटा ग्रहने चार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । विजया १ । वैजयंती २ । जयंती ३ ।

मग्नरं सूत्रयेणाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ गवां रसो गोरसो व्युत्पत्तिरेवेयं गोरसशब्दस्य प्रवृत्तिस्तु महिष्यादीनामपि दुग्धादिरूपेरसे विक्षतयः शरीरमनसो प्रायोपिकारहेतोर्विकारहेतुत्वादिति शेषः प्रकटं नवरः सर्पिर्घृतं नवनौतः अक्षणमिति स्नेहरूपा विक्षतयः स्नेहविक्षतयः वसा अस्थिमध्यरसः महाविक्ष

ना अञ्जिमाली पञ्चकरा । इंगालस्सणं महग्गहस्स चत्तारि अग्गमहिसीनं पस्सत्तानं तंजहा विजया वेजयं ती जयती अपराजिया । एव सत्तेसि महग्गहाणं जाव जावकेउस्स । सक्कस्सण देविदस्स देवरस्सो सोमस्स महारस्सो चत्तारि अग्गमहिसीनं पस्सत्तानं तंजहा रोहिणी मयणा चित्ता सामा । एवं जाव वेसमणस्स ईसाणस्सण देविंदस्स देवरस्सो सोमस्स महारस्सो चत्तारि अग्गमहिसीनं पस्सत्तानं तंजहा पुढवी राई रयणी विज्जू । एवं जाव वरुणस्स । चत्तारि गोरसविगईनं प० तजहा रकीरं दहि सप्पि णवणीअं । चत्ता

अपराजिता ४ एम सघला ८८ महाग्रहने च्यार च्यार अग्रमहिषी जाणायी जिहां लगे जावकेतु नामाग्रह आवे ॥ शक्रनामा प्रथम देवलीकनुं इंद्र देवताना राजनो सोमनामा मोटो राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । रोहिणी १ मदन २ चित्रा ३ । श्यामा ४ ॥ एम यावत् वैश्रमणने ॥ ईशान नामे देवेन्द्र देवताना राजानुं सोमनामा मोटो राजा तेहने च्यार अग्रमहिषी कही ते कहेछे । पृथिवी १ । रात्रि २ । रजनी ३ । विदुषत् ४ ॥ एम यावत् वरुणने ॥ एह सचेतननुं विशेष कह्यो हिवे अचेतननुं स्नेह जाव कहेछे । च्यार गोरसनी विगय कही ते कहेछे । दूध १ । दही २ । घृत ३ । नवनीतमाखण ४ ॥ च्यार स्नेहनी विगयकही ते कहैछे । तेल १ । घी २ । वसाचरयीहाडनी उकालीकरेते ३ । मांखण ४ । च्यार

तयो महारसत्वेन महाविकारकारित्वा अहत' सत्वोपधातस्य कारणत्वाच्चेति इहविकृतिप्रस्तावात् विकृतयो वृद्धगाथाभिः प्ररूयते खीरं ५ दहि ४ णव  
 णोअं ४ घय ४ तहातेलमेव ४ गुड २ मज्जं २ । मडु २ मसं ३ चेवतहा ओगाहिमगचदसमाओ ॥ १ ॥ गोमहिसुट्टिपसूण एलगखीराणिपचवत्तारि दहिमा  
 इयाइजम्हा उट्टीणताणिणोहुति ॥ २ ॥ चत्तारिहींतितेक्का तिलअयसिकुसुंभसरिसवाणच विगईओसेसाई डोलाईणनविगईओ ॥ ३ ॥ दवगुलपिडगुलादी  
 मज्जपुणकठपिठनिप्फत्रं मच्छियपोत्तियभामर भेयवतिहामहुंहोई ॥ ४ ॥ जलथलखहयरमस चम्मवससोणियतिहेयपि । आइल्लतिन्निचलचल ओगाहिमगं  
 चविगईओ ॥ ५ ॥ [आदिमानिओणिचलचलेत्येवपक्कानिविकृतिरित्यर्थ ] सेसानहींतिविगई अजोगवाहीणतेउकप्पति परिभुंजतिनपाय जनत्थियओननज्ज  
 ति ॥ ६ ॥ एगेणचेवतवो पूरिज्जइपूअण्णजोताओ वीओपुणविसकप्पइ निज्जिगईयलेवडोनवरं ॥ ७ ॥ इत्यादि अचेतनान्तराविकारादेव गृहविशेषान्तर दृ  
 ष्टान्ततया भिधित्सु पुरुषस्त्रियोश्चा न्तरंदष्टान्तिकतया अभिधातुकामः सूत्रचतुष्टयमाह ॥ चत्तारिकूडेत्यादि ॥ कूटानि शिखराणि स्तूपिका स्तब्ध त्यगा

रि सिणेहविगईउं पसत्तानु तंजहा तेल्लं घयं वसा णवणीयं । चत्तारि महाविगईउं पसत्तानु तंजहा मज्ज  
 मसं मज्जं णवणीयं । चत्तारि कूठागारा पसत्ता तंजहा गुत्तेणामेगेगुत्ते गुत्तेणामेगेअगुत्ते अगुत्तेणामेगेगुत्ते

महाविगयकही महारस मांटे मोटा विकारना करवाथी इंद्रीने ते कहेछे । मधु १ । मांस २ । मदिरा ३ । मांखण ४ । अचेतनना अधिकार भाटेज  
 गृह विशेषान्तर दृष्टाते पुरुष स्त्री आश्रित कहेछे । च्यार कूटाकारे गृह कह्या ते कहेछे । एक गुप्त घर जोहिरु अने गुप्त वारणुं । एक गुप्तघर  
 अने अगुप्तद्वार पूर्वगुप्त पछे अगुप्त २ । एक अगुप्तघर वारणु गुप्तढाकील ३ । एक अगुप्त घर वारणु पणि अगुप्त प्राकारकोट ४ ॥ एहनीपरें

राणि गेहानि अथवा कूटं सत्वबंधनस्थानं तद्वदगाराणि कूटागाराणि तत्रगुप्तं प्राकारादिवृतं भूमिगृहादिवा पुनर्गुप्तं स्थगितद्वारतया पूर्वकालापरकाला  
पेक्षयाचेति एवमन्येपि त्रयो भङ्गा बोद्धव्याः पुरुषस्तु गुप्तो नेपथ्यादिनातर्हितत्वेन पुनर्गुप्तो गुप्तेन्द्रियत्वेन अथवा गुप्तः पूर्वं पुनर्गुप्तो ऽधुनापीति विपर्यय  
ऊह्यः तथा कूटस्यैव आकारीयस्याः शालायाः गृहविशेषस्य सा तथा अथच स्त्रीलिङ्गदृष्टान्तः स्त्रीलक्षणदार्ष्टान्तिकार्थसाधर्म्यवशात् तत्र गुप्ता परिवारा  
वृता गृहातर्गता वस्त्राच्छादिताङ्गा गूढस्वभावावा गुप्तेन्द्रियातु निगृहीता नौचित्यप्रवृत्तेन्द्रिया एवं शेषाभङ्गा ऊह्याः अनन्तरं गुप्तेन्द्रियत्व सुक्त मिन्द्रिया  
णिचा वगाहेनाश्रयाणो त्यवगाहनानिरूपणसूत्र अवगाहन्ते आसतेयस्यां आश्रयन्तिवा यां जीवाः सा वगाहना शरीर द्रव्यतोवगाहना द्रव्यावगाहना एव

अगुत्तेणामेगेअगुत्ते । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया प० तं० गुत्तेणामेगेगुत्ते ४ । चत्वारि कूटागारसालान्  
प० तं० गुत्ताणामेगागुत्तद्वारा गुत्ताणामेगाअगुत्तद्वारा अगुत्ताणामेगागुत्तद्वारा अगुत्ताणामेगाअगुत्त  
द्वारा । एवामेव चत्वारि त्योञ्च प० तं० गुत्ताणामेगागुत्तिदिया गुत्ताणामेगाअगुत्तिदिया ४ । चउच्छिहा

चार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहेछे । एक पुरुष वस्त्रादिकें गुप्त ढाक्योछे अतरंग हिते पणि गुप्तछे सहितछे १ । एम चार जांगा जाणिवा  
चार कूटाकारे शाला गृह विशेषकही तेकहेछे । गुप्तढाकी शाला बारणं पणि गुप्तछे १ । एक शालागुप्तछे बारणं अगुप्तछे २ । एक शाला अगु  
प्तछे पणि बारणं गुप्तछे ३ । एक शाला पणि अगुप्तछे बारणं पणि अगुप्तछे ४ । एणे प्रकारे चार स्त्री कही ते कहेछे । एक स्त्रीगुप्तछे । गृह  
मांज रहीछे अथवा वस्त्रादिकें ढाकीछे इन्द्रियगुप्तछे सुशीलाछे १ । एक स्त्रीगुप्तछे वस्त्रादिकें ढाकीछे पणि इन्द्रिय गुप्तनथी २ । एम चार जांगा

सर्वत्र तत्र द्रव्यतो ऽननद्रव्या क्षेत्रतो ऽसंख्येयप्रदेशावगाढा कालतो असंख्येयसमयस्थितिका भावतो वर्णाद्यनन्तगुणेति अथवा वगाहना विवक्षितद्रव्य  
 स्या धारभूता आकाशप्रदेशा स्तत्र द्रव्याणा मवगाहना द्रव्यावगाहना क्षेत्रमेवावगाहना क्षेत्रावगाहना कालस्यावगाहना समयक्षेत्रलक्षणा कालावगाह  
 ना भाववताद्रव्याणा मवगाहना भावावगाहना भावप्राधान्यादिति आश्रयणमात्रंवा अवगाहना तत्र द्रव्यस्य पर्याये खगाहना अथयं द्रव्यावगाहना एव  
 क्षेत्रस्य कालस्य भावाना द्रव्येणेति अन्यथाचोपयुज्यव्याख्येयमिति अवगाहनायाश्च प्ररूपणा प्रज्ञप्तिष्विति तच्चतुःस्थानकसूत्र तत्र प्रज्ञाप्यते प्रकर्षेण बोध्यन्ते  
 अर्था यासु ताः प्रज्ञप्तयः अगा न्याचारादीनि तेभ्यो बाह्या अगवाह्या यथार्थाभिधानाश्चैताः कालिकश्रुतरूपा स्तत्र सूर्यप्रज्ञप्तिजम्बूद्वीपप्रज्ञप्ती पंचमषष्ठाङ्गयो  
 रूपाङ्गभूतद्वतरेतु प्रकीर्णकरूपेदिति व्याख्याप्रज्ञप्ति रस्ति पंचमी केवलं साङ्गप्रविष्टे त्येता चतस्र उक्ताः ॥ इतिचतुःस्थानकस्यप्रथमउद्देशकः समाप्तः ॥ १

उगाहणा पस्सत्ता तंजहा दब्बोगाहणा रक्केतोगाहणा कालोगाहणा ज्ञावोगाहणा । चत्तारिपस्सत्तीउं झुंगवा  
 हिरियाउं पस्सत्ताउं तंजहा चंदपस्सत्ती सूरपस्सत्ती जंबूद्वीवपस्सत्ती द्वीवसागरपस्सत्ती ॥ चउठ्ठाणस्सपढमो

जाणवा ४ । च्यार प्रकारनी अवगाहना कही ते कहेछे । द्रव्यावगाहना द्रव्यथी अनंत द्रव्य शरीरछे १ । क्षेत्रावगाहना असंख्याता प्रदेश अव  
 गाहियाछे क्षेत्रना २ कालावगाहना असंख्यात समय स्थितिनी कायाछे ३ । ज्ञावावगाहना ज्ञावथी वर्णादि अनंत गुण ४ ॥ एह अवगाहनानी  
 प्ररूपणा प्रज्ञप्ति मांकही ते च्यार प्रज्ञप्ति कही अंग बाहिर कालिक श्रुतरूप ते कहेछे । चंद्र प्रज्ञप्ति तेहमां चंद्रमानी वक्तव्यता १ । सूर्य प्रज्ञ  
 प्ति सूर्याधिकार कह्यो २ । जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिमा जंबूद्वीपनुं अधिकारछे ३ । द्वीप सागर प्रज्ञप्तिमां द्वीप अने समुद्रनुं अधिकारछे ४ ॥ एह चौथा



व्याख्यात चतुःस्थानकस्य प्रथमोद्देशको ऽधुना द्वितीय आरभ्यते ॥ अस्यचायं पूर्वेण सहाभिसंबंधः अनन्तरोद्देशके जीवादिद्रव्यपर्यायाणां चतुःस्थानकं मुक्तं  
 मिहापि तेषामेव तदेवोच्यत इत्येवं संबंधस्या स्योद्देशकस्ये दमादिसूत्रचतुष्टयं ॥ चत्वारिपङ्क्तिसलीणेत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहाय मभिसंबधो ऽनंतरसूत्रे  
 प्रज्ञप्तय उक्ता स्ताश्च प्रतिसलीनैरेव बुद्धान्तइति प्रतिसलीनाः सेतरा अनेना भिधीयत इत्येव सम्बद्ध मिदं सुगम नवर क्रोधादिकं वस्तु वस्तु प्रति सम्यग्लीना  
 निरोधवतः प्रतिसलीना स्तत्रक्रोधप्रति उभयनिरोधेनोदयप्राप्तविफलोकरणेन प्रतिसलीनः क्रोधप्रतिसलीन उक्तच उदयस्येवनिरोहो उदयपक्षाणवाफलीक  
 रण जएत्यकसायाण कसायसलीणयाएसन्ति ॥१॥ कुसलमन उद्दीरणेना कुशलमनो निरोधेनच मनः प्रतिसलीन यस्य स मनसावा प्रतिसलीनो मनःप्रति  
 सलीन एव वाक्कायेंद्रियेष्वपि नवर शब्दादिषु मनोज्ञामनोज्ञेषु रागद्वेषपरिहारौ इन्द्रियप्रतिसलीनइति अत्रगाथा अपसत्याणनिरोहो जोगाणमुद्दीरणचकु  
 सलाणं कज्जमिविहीगमण जोगेसलीणयाभणिया ॥ १ ॥ सहेसुयभइयण वएसुसोयविसयमुवगएसु । तुडेणचरुडेणव समणेनसयानहोयव्वं ॥ २ ॥ एव शेषेन्द्रि

उद्देशजं सम्मत्तो ॥ १ ॥ चत्वारि पङ्क्तिसंलीणा प० तं० कोहपङ्क्तिसंलीणे माणपङ्क्तिसंलीणे  
 मायापङ्क्तिसंलीणे लोभपङ्क्तिसंलीणे । चत्वारि अपङ्क्तिसंलीणा प० तं० कोहअपङ्क्तिसंलीणे जाव लोभअपङ्क्तिसं

ठाणानु पहलो उद्देशो पूरो षयो ॥ १ ॥ चत्वार प्रतिसलीण क्रोधादिकाना रुधनार कहिया तेकहेछे । क्रोधप्रतिसंलीण उपनां क्रोध  
 ने निष्फल करे १ मानप्रतिसंलीण उपना मानने रोके २ मायाप्रतिसलीण जे माया नकरे ३ लोभप्रतिसलीण उदयपाम्या लोभने रोके लोभश्चेदगुणो  
 नकि मितिवचनात् ४ ॥ चत्वार अपङ्क्तिसंलीण कछ्या तेकहेछे । क्रोधअपङ्क्तिसलीण जे क्रोधने वधारे रुधेनयी १ यावत् एमहीज लोभअपङ्क्तिसलीण लो

येष्वपि वक्तव्या इति एवं मनःप्रभृतिभि रसंलीनो भवति विपर्ययादिति असंलीनमेव प्रकारान्तरेण सप्तदशभि श्रुतुर्भङ्गीरूपै दीनसूत्रै राह दीनो दैन्यवान् ची  
णोर्जितवृत्तिः पूर्वं पश्चादपि दीन एव अथवा दीनो बहिर्वर्त्या पुन दीनो तर्ह्येत्यादि श्रुतुर्भङ्गी १ तथा दीनो बहिर्वर्त्या स्नानवदनत्वादिगुणयुक्तशरीरेणेत्य

लीणे । चत्वारिपङ्क्तिसंलीणा पञ्चत्ता तंजहा मणपङ्क्तिसंलीणे वङ्गपङ्क्तिसंलीणे कायपङ्क्तिसंलीणे इन्द्रियपङ्क्तिसं  
लीणे । चत्वारि अपङ्क्तिसंलीणा पञ्चत्ता तंजहा मणअपङ्क्तिसंलीणे जाव इन्द्रियअपङ्क्तिसंलीणे । चत्वारि पु  
रिसजाया पञ्चत्ता तंजहा दीणेणामेगेदीणे दीणेणामेगेअदीणे अदीणेणामेगेदीणे अदीणेणामेगेअदीणे । ४  
चत्वारि पुरिसजाया पञ्चत्ता तंजहा दीणेणामेगेदीणपरिणए दीणेणामेगेअदीणपरिणए अदीणेणामेगेदीण

जने उपशमावे नथी निवारं नथी घणुंकरें ४ ॥ वली च्यार पङ्क्तिसंलीण कह्या तेकहेछे । मनपङ्क्तिसंलीण रूडे मनेकरी मांठा मनने रूंधे १ वचनपङ्क्ति  
संलीण जे सत्य वचन बोले असत्यवचन नबोले २ कायपङ्क्तिसंलीण जे काया मांठे पापयोगे प्रवर्तती रूंधे धर्मक्रियामां प्रवर्तावे ३ इन्द्रियपङ्क्तिसंली  
ण जे जला शब्दादि विषय सांजली रागद्वेष नआणें ४ ॥ च्यार अपङ्क्तिसंलीण कह्या तेकहेछे मनअपङ्क्तिसंलीण मनने पापव्यापारथी नरोके १ एम  
यावत् इन्द्रियअपङ्क्तिसंलीण जे शब्दादि सांजली रागद्वेष करे ४ ॥ पुरुषाधिकार मांटेज कहेछे । च्यार प्रकारें पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष प्रथम  
दीन क्षीण आजीविका वृत्तिछे अने पळे पणि दीनछे १ एक पुरुष पहली दीन क्षीण आजीविक कालवयमां दरिद्री पळे अदीन घणी जीविकानो ध  
खी धनवंत थयो २ एक पहली अदीन धनवंत होय पळे दीन निर्धन थयो ३ एक पुरुष पहली पणि अदीन धनवंत पळे पणि अदीन धनवंत अंत्य

र्थः एवं प्रज्ञासूत्र यावदादिपद व्याख्येय दीनपरिणतः अदीनः सन् दीनतया परिणतो तर्ह्ये त्यादि अतुर्भङ्गो २ तथा दीनरूपो मलिनजीर्णवस्त्रादिनेपथ्या पेक्षया ३ तथा दीनमनाः स्वभावतएवा नुन्नतचेताः ४ दीनसङ्कल्प उन्नतचित्तस्वाभाव्येपि कथचिद्दीनविमर्शः ५ तथा दीनप्रज्ञः दीनसूक्ष्मार्थालोचन. ६ तथा दीनश्चिन्तादिभिरेव मुक्तस्त्रापि आदिपद तथा दीनदृष्टि विच्छेद्यचक्षु. ७ तथा दीनशीलसमाचारो दीनधर्मागुष्ठानः ८ तथा दीनव्यवहारो दीनान्योन्य

परिणए अदीणेणामेगेअदीणपरिणए ४ । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा दीणेणामेगेदीणरूवे ४ । एव दीणमणे दीणसंकप्पे दीणपस्से दीणदिठ्ठी दीणसीलायारे दीणवव्हारे । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा दीणेणामेगेदीणपरक्कामे दीणेणामेगेअदीणपरक्कामे । एवं सत्त्वेसिं चउज्जगो ज्ञाणियत्थो । चत्तारि पुरि

वयताई ४ ॥ वली च्यार प्रकारे पुरुष कह्या तेकहेछे । एक बाह्यवृत्तिये शरीरें दीन अने अंतरंगवृत्तिये दीनपरिणामथी राक कायर १ एक शरीरे दीनछे पणि अंतरंगपरिणामथी अदीनछे २ एक शरीरथी लष्टपुष्ट अदीन पणि दीनपणो प्रवर्त्त अंतरंगथी ३ एक शरीरथी अदीन पुष्ट अने परिणा मथी पणि अदीनपरिणत सूरवीर ४ ॥ वली च्यार भेदना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष दरिद्री अने दीनरूपछे मलिन जीर्णवस्त्रनी अपेक्षाथी वर्ण थी पणि एह चौभंगी जाणवी ४ ॥ एम एक दीनछे अने दीनमनछे । एम उन्नतमनने साथे एचौभंगी जाणवी । एम एक दीनछे एक दीनसकल्पछे स कल्प ते विचार एचौभंगी ४ ॥ एक दीन अने प्रज्ञाहीन सूक्ष्मलोचन एह चौभंगी जाणवी ४ ॥ एक दीन अने एक दीनदृष्टि हीनतेजचक्षु एचौभंगी ४ ॥ एक दीन अने दीनशीलाचार हीनाचार एह चौभंगी ४ ॥ एक दीन अने दीनव्यवहार दानादिक्रियाहीन एह चौभंगी ४ ॥ वली च्यार भेदे पुरु

दानप्रतिदानादिक्रियः हीनविवादोवा ६ तथा दीनपराक्रमो हीनपुरुषाकार इति १६ तथा दीनस्येव वृत्तिर्वर्त्तन जीविका यस्यस दानवृत्तिः ११ तथा दीनं दैन्यवन्तं पुरुषदैन्यवद्वा यथाभवति तथायाचत इत्येव शैलो दीनयाची दीनंवा यातीति दीनयायी दीनावा हीना जातिरस्येति दीनजातिः १२ तथा दीनव हीनवा भाषते दीनभाषी १३ दीनव दवभासते प्रतिभाति अपभाषतेवा याचत इत्येव शैलो दीनावभासी दीनापभाषीवा १४ तथा दीन नायक सेवत इति दीनसेवी १५ तथा दीनस्येव पर्यायो ऽवस्था प्रव्रज्यादिलक्षणो यस्यस दीनपर्यायः १६ ॥ दीनपरिवालेति ॥ दीन परिवारो यस्यस तथा १७ स

सजाया पस्यता तंजहा दीणेणामेगेदीणविज्ञी ४ । एव दीणजाई दीणज्ञासी दीणोज्ञासी । चत्तारि पुरिस जाया पस्यता तजहा दीणेणामेगेदीणसेवी ४ । एवं दीणेणामेगेदीणपरियाए ४ । एवं दीणेणामेगेदीणप

ष कह्या तेकहेछे एक दीनपुरुषछे अने दीनपराक्रम हीनपुरुषात्कार बलहीण एह चौजंगी जाणवी ४ ॥ एक दीन दयामणो अने दीनवृत्तिछे दीनसरिखी वृत्ति आजीविका छे एह चौजंगी ४ ॥ एक दीनछे अने दीनजातिछे हीनजातिनुंछे एचौजंगी ४ ॥ एक दीन अने दीनज्ञासी दीनवचन बोलन हार एहनी चौजंगी ४ ॥ एक दीन अने दीनोपज्ञासी दीनवदनथको याचना करे एह चौजंगी ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक दीनछे अने दीनसेवी दीनदरिद्री एहवा नायकने सेवे ए ४ भगी ए सचले ४ जंगाकरीये ॥ इम एकदीनछे अनेदीनपर्यायछे दीज्ञानो पर्याय दीनक्रिया लक्षण प्रव्रज्याछे इहां पणि ४ जंगा ॥ इम एकदीनछे अने परिवार पणि दीनछे । जेहवा कर्मकीधा तेहवा थया एसर्व ४ जंगा । एसतरे १७ बोले चो भगी जाणवी एकर्मनी विचित्राई ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ एक पुरुष आर्यछे क्षत्रथी आर्यछे । पापकर्मने अणकरवै ४ चोभंगी

व्यत्यचउभंगोत्ति ॥ सर्वसूत्रेषु चत्वारोभङ्गाः द्रष्टव्याइति पुरुषजाताधिकारवत्येवेय मष्टादशसूत्री गतार्था नवरं आर्योन्नवधा यदाह खेत्तेजाईकुलक मसि  
 पभासाएनाणचरणेय दसणायरियनवहा मेच्छासगजवणखसमाइत्ति ॥ १ ॥ तत्र आर्यः क्षेत्रतः पुनरायः पापकर्मबहिर्भूतत्वेना पाप इत्यर्थः एवं सप्तदश  
 सूत्राणि नेयानि तथा आर्यभावः क्षायादिज्ञानादियुक्तः अनार्यभावः क्रोधादिमानिति पुरुषजातप्रकरणमेव दृष्टातदार्थान्तिकार्योपेत माविकथासूत्रा

रिवाले ४ । सङ्ख्यत्य चउजंगो । चत्वारि पुरिसजाया पसत्ता तंजहा अज्जेणामेगेअज्जे ४ । चत्वारि पुरिस  
 जाया प० तं० अज्जेणामेगेअज्जपरिणए अज्जेणामेगेअज्जपरिणए ४ । एव अज्जरूवे ४ अज्जमणे ४ अज्ज  
 सकप्पे ४ अज्जपप्पे ४ अज्जदिठ्ठी ४ अज्जसीलायारे ४ अज्जववहारे ४ अज्जपरक्कामे ४ अज्जविप्पि ४ ।  
 अज्जजाई १२ अज्जजासी १३ अज्जउजासी १४ अज्जसेवी १५ एवं अज्जपरियाए १६ अज्जपरिवाले १७

नवजेदे आर्ये १ । जाति आर्य १ क्षेत्रथीआर्य २ कुलआर्य ३ कर्मआर्य ४ शिल्पआर्य ५ ज्ञाषाआर्य ६ ज्ञानआर्य ७ दर्शनआर्य ८ चारित्रआर्य ९ एनवप्रकारे  
 आर्य उत्तमकहिये । अने आर्यते उत्तमपरिणत स्वजावैद्धे चोभगी ॥ चार प्रकार पुरुषकह्या तेकहेहे ॥ एक आर्यक्षेत्रमा उपनाहे । इम आर्यक्षेत्रथी  
 आर्यरूप वस्त्रादिवेष उत्तमहे । इम आर्य जलोमन इहा चोभगी ॥ इम आर्यसकल्पविचार एचोभगी ॥ इम आर्यप्रज्ञानी चोजंगी ॥ एम आर्यदृष्टिनी  
 चोजंगी ४ ॥ आर्यशीलाचारनी चोजंगी ४ ॥ इम आर्यव्यवहारनी ४ भगी ॥ इम आर्यपराक्रमनी ४ जगी ॥ इम आर्यवृत्तिनी ४ भगी ॥ इम आर्य  
 जातिनी चोभंगी ॥ इम आर्यज्ञाषानी चोजंगी ॥ इम आर्यप्रज्ञाषनी ४ भगी ॥ इम आर्यसेवानीचोजंगी ॥ इम आर्यपर्यायदीक्षानी चोजंगी ॥ इम

दभिधीयते पाठसिद्धि चैत नवर ऋषभा वलीवर्दी जाति गुणवन्मातृकत्व कुलं गुणवत्पितृकत्व बल भारवहनादि सामर्थ्यं रूपं शरीरसौंदर्यं मिति पुरुषास्तु  
स्वय भावयितव्या अनन्तरदृष्टान्तसूत्राणितु सपुरुषदार्ष्टान्तिकानि जात्यादीनि चत्वारि पदानि भुवि विन्यस्य प्रष्टा द्विकसयोगाना ॥ जाइसपन्नेनोकुलसं  
पन्नेइत्यादिना ॥ स्थानभगक्रमेण षडेव चतुर्भंगिका' क्त्वा समवसेयानि हस्तिसूत्रे भद्रादयो हस्तिविशेषा वक्ष्यमाणलक्षणा वनादिविशेषिताश्च यदाह भ

एवं सत्तरसञ्जालावगा जहा दीणेण ज्ञाणिया तहा अज्जेणवि ज्ञाणियह्वा । चत्तारि पुरिसजाया प० तं०  
अज्जेणामेगेअज्जज्ञावे अज्जेणामेगेअणज्जज्ञावे अणज्जेणामेगेअज्जज्ञावे अणज्जेणामेगेअणज्जज्ञावे ४ चत्ता  
रि उसज्जा प० तं० जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने वलसंपन्ने रूपसंपन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं०  
जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने वलसंपन्ने रूपसंपन्ने । चत्तारि उसज्जा प० तं० जहा जाइसंपन्नेणाममेगे नोकुलसंपन्ने

आर्यपरिवारनी चोत्तंगी ॥ इम एसतरे आलावा जिमदीनसाथे कह्या तिम आर्यसाथे पणि कहवा ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुषकह्या तेकहेछे  
एक क्षेत्रादिकथी आर्यछे अनेआर्य ज्ञावछे ज्ञानादियुक्त १ एक पुरुष आर्यछे अने अनार्यज्ञावछे क्रोधादियुक्तछे २ एक क्षेत्रादिकथी अनार्यछे अने  
आर्यज्ञावछे उपशमवतछे ३ एक क्षेत्रथी अनार्यछे अनार्यज्ञावछे क्रोधादिसहित ज्ञावछे ४ ॥ पुरुषनो दृष्टात देखाडवाने कहेछे ॥ च्यार प्रकारना  
वृषजकह्या तेकहेछे एक वृषजजाति सपूर्ण गुणवंत माता जेहनी तेजातिसपन्न १ गुणवत पिता जेहनु ते कुलसपन्न २ । वलसंपन्न ते जार वाहवा  
समर्थ ३ । रूपसंपन्न शरीरे सुदररूप ४ ॥ एहनीपरे च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे । एक पुरुष जाति संपन्न गुणवती सुशीला मातानुं पुत्र

कुलसंपन्नेणाममेगे णोजाइसंपस्से एगेकुलसंपस्सेवि जाइसंपस्सेवि एगेनोजाइसंपस्से नोकुलसंपस्से ४ । एवामे  
 व चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा जाइसंपस्सेणाममेगेणोकुलसंपस्से ० ४ । चत्तारि उसजा पस्सत्ता तंजहा  
 जाइसपन्नेनाममेगेनोवलसपन्ने ० ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा जाइसपन्नेनाममेगे  
 नोवलसपन्ने ० । चत्तारि उसजा पस्सत्ता तजहा जाइसंपन्नेनाममेगेनोरूवसपन्ने ० । एवामेव चत्तारि पु  
 रिसजाया पस्सत्ता तजहा जाइसंपस्सेणाममेगे णोरूवसपस्से ० । चत्तारि उसजा पस्सत्ता तंजहा कुलसंपन्ने

एम यावत् एक रूपसपन्नछे एम ४ । ज्ञागा जाणिवा ४ ॥ चार प्रकारना वृषभ कह्या तेकहेछे । एक वृषज जातिसपन्नछे पणि कुलसंपन्न नथी  
 पिता उत्तम नथी । एक कुल सपन्नछे पणि जातिसपन्न नथी पिता उत्तम मातानीच २ । एक जाति सपन्न माता उत्तम अने कुलसपन्नछे पिता  
 पणि उत्तमछे ३ । एक जातिसपन्न नथी अने कुल सपन्ननथी जातिकुलथी हीन ४ ॥ एणे प्रकारे चार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे । एक पुरुष  
 जातिसपन्न अने कुलसंपन्न एम चौभंगी जाणवी ४ ॥ चार वृषज कह्या तेकहेछे । एक वृषज जातिसपन्नछे पणि वल सपन्ननथी आश्री ४ ज्ञागी ४  
 एम एणे प्रकारे चार पुरुष कहिया तेकहेछे । एक पुरुष जाति सपन्नछे बल सपन्ननथी एम चार भांगा ४ ॥ चार प्रकारे वृषज कह्या तेकहेछे  
 एक वृषज जाति सपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी । इण दृष्टाते चार प्रकारना पुरुषकह्या तेकहेछे । एक पुरुष जातिसंपन्नछे पणि रूपसंपन्ननथी  
 एम चौजगी ४ ॥ चार वृषजकह्या तेकहेछे । एक वृषभ कुलसपन्नछे । पणि वलसंपन्ननथी एम चौभंगी ४ ॥ एम चार प्रकारना पुरुष कह्या

॥ द्रोमन्दोमृगश्चेति विज्ञेयास्त्रिविधागजाः । वनप्रचारसारूप्य सत्वभेदीपलक्षिताइति ॥ १ ॥ तत्र भद्रो हस्ती भद्र एव धीरत्वादिगुणयुक्तत्वात् १ मन्दो मन्द एव धैर्यवेगादिगुणेषु मन्दत्वात् २ मृगो मृग इव तनुत्वभौरत्वादिना संकीर्णः किञ्चिद्भद्रादिगुणसयुक्तत्वात् संकीर्ण एवेति ॥ इति स्थानाद्गृह्यति प्रथमखण्डम् ।  
अथ द्वितीयखण्डलिख्यते श्रीस्थानाद्गृह्य ॥ २ ॥ पुरुषो प्येवं भावनीयः उत्तरसूत्राणितु चत्वारि सदाष्टान्तिकानि भद्रादिपदानि चत्वारि तदधीधः क्रमेण चत्वार्येव भद्रमन प्रभृतीनि च विन्यस्य ॥ भद्रेणाममेगेभद्रमणेइत्यादिना ॥ क्रमेण समवसेयानि तत्र भद्रो जात्याकाराभ्यां प्रशस्त स्तथा भद्रं मनो यस्य

नाममेगेनोवलसंपन्ने ० । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया प० तंजहा कुलसंपन्नेनाममेगे  
नोवलसंपन्ने चत्वारि उसन्ना प० तं० कुलसंपन्नेणाममेगेनोरुवसंपन्ने ० । एवामेव चत्वा  
रि पुरिसजाया पस्यत्ता तंजहा कुलसंपन्नेनाममेगेनोरुवसंपन्ने ० । चत्वारिउसन्ना पस्य  
त्ता तंजहा वलसंपन्नेणाममेगेनोरुवसंपन्ने ० । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पस्यत्ता  
तजहा वलसंपन्नेनाममेगेनोरुवसंपन्ने ० ॥ चत्वारि हत्थी पस्यत्ता तंजहा जद्दे मदे मिए  
सकिस्से । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पस्यत्ता तंजहा जद्दे मदे मिए संकिस्से । चत्वारि

ज	मं	मृ	सं
ज	ज	ज	ज
मं	मं	मं	मं
मृ	मृ	मृ	मृ
सं	सं	सं	सं

तेकहेछे । कुलसंपन्नछे पणि वलसंपन्ननथी ॥ च्यार प्रकारे वृषभ कह्या तेकहेछे कुलसंपन्नछे रूपसंपन्ननथी । एम इण दृष्टांते च्यार पुरुष तेकहेछे  
कुलसंपन्नछे रूपसंपन्न नथी एम चौजगी ४ ॥ च्यार प्रकारना वृषज कह्या तेकहेछे । वलसंपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी ४ ॥ एम च्यार प्रकारना  
पुरुष कह्या वलसंपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी एम चौभंगी ४ ॥ च्यार हाथी कह्या तेकहेछे । एक जद्र १ । मंद २ । मृग ३ । संकीर्ण ४ ॥ एम च्यार



अथवा भद्रस्येव मनोयस्यस तथा धीरइत्यर्थः, मद मंदस्येववा मनो यस्यस तथा नात्यन्तधीरः मृगमना भीरुरित्यर्थः संकीर्णमना भद्रादिविचित्रलक्षणोपेतमना

हृत्पी पस्यता तजहा जद्वेणाममेगेजद्वमणे जद्वेणाममेगेमंदमणे जद्वेणाममेगेमियमणे जद्वेणाममेगेसकिस्स  
मणे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्यता तजहा जद्वेणाममेगेजद्वमणे जद्वेणाममेगेमदमणे जद्वेणाममेगे  
मियमणे जद्वेणाममेगेसकिस्समणे । चत्तारि हृत्पी पस्यता तजहा मद्वेणाममेगेजद्वमणे मद्वेणाममेगेमंदमणे  
मद्वेणाममेगेमियमणे मद्वेणाममेगेसकिस्समणे । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्यता तजहा मद्वेणाममेगेज

प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे । भद्र १ । मंद २ । मृग ३ । संकीर्ण ४ ॥ च्यार प्रकारना हाथी कह्या तेकहेछे एक जातिआकारे जद्र हाथी अने जद्र  
मन धैर्यवंत १ । एक जद्रजातिनीं हाथी अने मंदमन मद धैर्यनो धणी २ । एक जद्रजातिनी हाथी पणि मृगमनछे जीरुछे ३ । एक भद्रजातिनुं हा  
थी संकीर्णमनछे काईक धैर्यवंत काईक जीरुछे ४ ॥ इणदृष्टांतेज च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष जातिथी जद्रछे उग्रजीगादिकुलनीं  
अने जद्रमनछे धैर्यवंत उदारचित्तछे १ । एक पुरुष जातिथी जद्र उत्तमकुलछे अने मदमन मदचित्तछे २ । एक जातिथी भद्रछे पणि मृगमन जीरुस्व  
नावछे ३ । एक जातिथी जद्रछे पणि संकीर्णमनछे काईक धीर उदारमन काईक जीरु पणिछे ४ ॥ च्यार हाथी कह्या तेकहेछे एक जातिआकारे  
मद हाथी पणि जद्रमन धैर्यवतछे १ । एक हाथी जातिथी मद अने मदमन धैर्यहीनमनछे २ । एक जातिथीमद अने मृगमन जीरुमन ३ । एक जा  
तिमदछे अने संकीर्णमन काईक धैर्यवतमन ४ ॥ इण दृष्टांते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष जातिमंद शरीर हीनकुल पणि जद्रम

દ્રમણે તંચેવ । ચત્તારિ હથ્થી પસાત્તા તંજહા મિણ્ણામમેગેજ્ઞદ્રમણે મિણ્ણામમેગેમંદમણે મિણ્ણામમેગેમિયમ  
 ણે મિણ્ણામમેગેસંકિસમણે । એવામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયા પસાત્તા તંજહા મિણ્ણામમેગેજ્ઞદ્રમણે તંચેવ ।  
 ચત્તારિ હથ્થી પસાત્તા તજહા સંકિસેણામમેગેજ્ઞદ્રમણે સંકિસેણામમેગેમંદમણે સંકિસેણામમેગેમિયમણે સંકિ  
 સેણામમેગેસંકિસમણે । એવામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયા પસાત્તા તજહા સંકિસેણામમેગેજ્ઞદ્રમણે તંચેવ જાવ

નહે ઉદારચિત્તહે એમ ચાર જાંગા ૪ ॥ ચાર હાથી કહ્યા તેકહેહે એક જાતિમૃગહે પણિ મદ્રમનહે ૧ । એક જાતિમૃગહે અનેમં દમનહે ૨ । એક હા  
 થી જાતિથી મૃગહે અને મૃગમનહે ૩ । એક જાતિથી મૃગ અને સંકીર્ણમન કાર્દક ધૈર્યમનહે ૪ ॥ ઇણ દૃષ્ટાંતે ચાર પુરુષ કહ્યા તેકહેહે એક પુરુષ  
 જાતિમૃગહે બીહકણહે પણિ મદ્રમન ધૈર્યવતહે તિમજ ચાર જાંગા કહવા ॥ વલી ચાર પ્રકારે હાથી કહ્યા તેકહેહે એક હાથી મૃગજાતિ અને મદ્ર  
 મન ૧ । એક જાતિમૃગ અને મંદમન ૨ । એક જાતિમૃગ અને મૃગમન ૩ । એક જાતિમૃગ અને સંકીર્ણમન ૪ ॥ ઇણ દૃષ્ટાંતે ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા  
 તેકહેહે એક પુરુષ જાતિથી મૃગ મૃગહાથી સરીલો અને મદ્રમન તિમજ ચૌજંગી જાણવી ૪ ॥ ચાર પ્રકારના હાથી કહ્યા તેકહેહે એક હાથી જાતિ  
 સંકીર્ણ અને મદ્રમન ૧ । એક જાતિસંકીર્ણ અને મંદમન ૨ । એક જાતિસંકીર્ણ અને મૃગમન ૩ । એક જાતિસંકીર્ણ અને સંકીર્ણમન ૪ ॥ ઇણ દૃષ્ટાંતે  
 ચાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા તેકહેહે એક પુરુષ જાતિસંકીર્ણ અને મદ્રમન સંકીર્ણહાથીના શરીર તથા જાતિ જેહવો ૧ । તિમજ યાવત્ એક પુરુષ  
 જાતિસંકીર્ણ અને સંકીર્ણમન ૨ । કાર્દક ધીરઉદારમનનો ધણી ૪ ॥ હિવે ચાર હાથીની જાતિના લક્ષણ કહેહે પુરુષની જાતિના શરીરાદિઆકા

विचित्रचित्तइत्यर्थः पुरुषास्तु वक्ष्यमाणभद्रादिलक्षणानुसारेण प्रशस्ताप्रशस्तस्वरूपा मन्तव्या इति भद्रादिलक्षण मिद ॥ महुगाहा ॥ मधुगुटिकेव चौद्रवटि  
केव पिङ्गले पिङ्गे अक्षिणी लोचने यस्यस तथा अनुपूर्वेण परिपाद्या सुष्टु जात उत्पन्नो यः सोऽनुपूर्वसुजातः स्वजात्युचितकालक्रमजातो हि बलरूपादि गु  
णयुक्तो भवति सचासौ दीर्घलाङ्गूलो दीर्घपुच्छश्चेति स तथा अनुपूर्वेणवा स्थूलसूक्ष्मसूक्ष्मतरलक्षणेन सुजात दीर्घलाङ्गूल यस्यस तथेति पुरतो ऽग्रभागे उदय  
उन्नतः तथा धीरो ऽचोभ स्तथा सर्वाङ्गज्ञानि सम्यक्प्रमाणलक्षणोपेतत्वेन आहितानि व्यवस्थितानि यस्यस सर्वाङ्गसमाहितो भद्रो नाम गजविशेषो भवती  
ति ॥ चलगाहा ॥ चल श्लथं बहुल स्थूल विषम बलियुक्त चर्म यस्य स तथा स्थूलशिराः स्थूलकेन ॥ एणपेणएत्ति ॥ पेचकेन पुच्छमूलेन युक्तः स्थूलन खदतवालो  
हरिपिङ्गललोचनः सिंहवत्पिङ्गाक्षो मन्दो गजविशेषो भवतीति ॥ तणुगाहा ॥ तनुकः कृशः स्तनुग्रीवः तनुत्वक् तनुचर्मा तनुकनखदन्तवालः भीरुर्भयशीलः

सकिस्सेणाममेगेसंकिस्समणे ॥ मधुगुलियपिङ्गलस्को अणुपुहसुजायदीहलंगूलो । पुरनुउदगाधीरो सङ्गस  
माहिनुनदो ॥ १ ॥ चलबहुलविसमचम्मो थूलसिरोथूलणपेण । थूलणहदंतवालो हरिपिङ्गललोयणोमं

रे जाणवा । मधुगुलिका ते मधुजेहवी पीली आखळे जेहनी अनुक्रमेण जला उपना बलरूपादिगुणावन्त दीर्घ लांबूं पूळ्डुं आगे कुंजस्थल उन्नत ऊंचो  
धीर धैर्यवत अक्षीज्य । सर्वाङ्गलक्षणोपेत ते जद्रजातिनो हाथो कहिये ॥ १ ॥ लीलरीसहित विषम ऊंचीनीची चामडीळे जेहनी मांथो ऊंचो पिहु  
लो थूल जाडोळे पूळ्डोमूलजेहनु सिंह सरीखा पीलाळे लोचन जेहनां ते मंदजातिनु हाथी कहिये ॥ २ ॥ तनुकश दुर्वल तनुसूक्ष्म लघुग्रीवा कोट  
तनु लघु सूक्ष्म दात नख बाल केश तनु सूक्ष्म त्वचा चामडी जयशील त्रस्त जयकारणादेखी कान इन्द्रिय थाज्जी राखें उद्वेगी रहें पोतें त्रस्त थकी

स्वभावतः स्वस्तो भयकारणवशात् स्वस्थः कर्णकरणादिलक्षणेपेतो भीतएव उद्विग्नः कण्ठविहारादुद्वेगवान् स्वयन्मस्तः परानपित्रासयतीति त्रासीच भवे नृ  
गोनाम गजभेदइति ॥ एएसिगाहा भद्गोगाहा ॥ कण्ठे तथा दतेहिहणइभद्गो मंदोहत्थेणआहणइहत्थी गत्तावरेहियमित्री संकिस्सोसव्व ओहणइत्ति ॥  
१ ॥ अनन्तरं सक्कीर्णः संक्कीर्णमना इत्यत्र मनःस्वरूप मुक्त मथ वाचः स्वरूपभणनाय विकथा कथा प्रकरणमाह सुगम नवरं विरुद्धा सयमबाधकत्वेन  
कथा वचनपद्धतिर्विकथा तत्र स्त्रोणा स्त्रीषुवा कथा स्त्रीकथा इत्यञ्च कथेत्युक्तापि स्त्रोविषयत्वेन संयमविरुद्धत्वा द्विकथेति भावनीयेति एवं भक्तस्य भोजन  
स्यदेशस्य जनपदस्य राज्ञो नृपस्येति ब्राह्मणीप्रभृतीना मन्यतमाया याप्रशसा निन्दावासा जात्या जातेर्वा कथेतिजातिकथा यथा धिग्ब्राह्मणीर्धवाभावे  
याजीवंतिमृताइव धन्यामन्येजनेशूद्रीः पतिलक्ष्यनिन्दिताइति ॥ १ ॥ एव मुग्गादिकुलोत्पन्नाना मन्यतमायाः यत्प्रशंसादि साकुलकथा यथा अहोची

दो ॥ २ ॥ तणुजंतणुतग्गीनु तणुयतजंतणुयदंतणहवालो । ज्जीरूतल्लुवियग्गी तोसीञ्जणमिण्णामं ॥ ३ ॥  
एएसिंहत्थीणं थोवथोवतुजोञ्जणुहरइहत्थी । रूवेणवसीलेणव सोसंकिस्सोत्तिणायहो ॥ ४ ॥ जद्गोमज्जाइस  
रण मदोउम्मज्जाएवसतम्मि । मिउमज्जाइहेमते संकिस्सोसल्लकालम्मि ॥ ५ ॥ चत्तारि विकहानु पण्णत्तानु तं०

बीजाने त्रास पमाडे एहवो हाथी ते मृगजातिनो ॥ ३ ॥ ए कहिया जे हाथी त्रण जातिना तेहनं थोडुंथोडुं लक्षण अनुसरे जेहाथी रूपैकरी तथा  
शीलस्वभावे करीने अनुसरे तेहाथी सक्कीर्णजातिनो ॥ ४ ॥ जद्गजातिनुं हाथी होय ते शरत्कालमां मदमां आवे । मंदजातिनुं हाथी वसंतकालमां  
मदमां आवे । मृगजातिनुं हाथी हेमतकालमां मदमा आवे । संक्कीर्णजातिनुं हाथी ते सर्व कालमां मदमां आवे छये रितुमां मदमां आवे ॥ ५ ॥

लुखपुनीणां साहसजगतोधिकं पत्युर्मृत्योविशत्यग्नी याप्रेमरहिताप्रपीति ॥ २ ॥ अन्ध्रीप्रभृतीनां मन्यतमाया रूपस्य यत्प्रशसादि सारूपकथा यथा च  
 न्द्रवक्तासरोजाक्षी सतीःपोनघनस्तानो किलाटीनामतःसास्या देवानामपिदुर्लभाइति ॥ १ ॥ तासामेता न्यतमाया कच्छवधादिनेपथ्यस्य यत्प्रशसादिस  
 नैपथ्यजयेति यथा धिष्णारोरोदीच्या बहुवसनाच्छादिताप्रलतिगत्वात् यद्योवननयूनां चक्षुर्मोदायभवतिसदेति ॥ १ ॥ स्तौकथायाश्च एतेदोषाः प्र  
 यपरमोहुदोरण उज्जाहोसुत्तमाश्परिहाणौ वम्हवणप्रगुत्तो पसगदोसायगमणाई ॥ १ ॥ उन्निकमणादयइत्यर्थः तथा शाकघृतादी न्येतावन्ति तस्य

इत्यिकहा जत्तकहा देसकहा रायकहा । इत्यिकहा चउल्लिहा पसत्ता तंजहा इत्यीणंजाइकहा इत्यीणंकुल  
 कहा इत्यीणंरूवकहा इत्यीणंनेवत्यकहा । जत्तकहा चउल्लिहा पसत्ता तंजहा जत्तस्सञ्जावावकहा जत्तस्सणि

पूर्व मननु स्वरूप कह्यो हिवे वचननुस्वरूप कहेछे । च्यार विकथा विरुद्ध पापकथा कह्यो तेकहेछे । स्तौकथा १ । जत्तकथा २ । जोजन रूडाजुंडा  
 जोजन मलियानी कथा २ । देशकथा देशातरनी कथा ३ । राजनीकथा ४ ॥ तेहमा स्तीनीकथा च्यार प्रकारे कह्यो तेकहेछे स्तीनीजातिकथा व्रात्त  
 णी प्रमुखनी प्रशसा तथा निदा करे १ । स्तीना कुलनी कथा ए उत्तमकुलनी तथा नीचकुलनी इम कह्यु जिम अहोचौलुखपुनीणां साहसजगतो  
 धिकं । पत्युर्मृत्योविशत्यग्नी याप्रेमरहिताप्रपि ॥ १ ॥ स्तीना रूपनी कथा जलु रूपछे गथवा मांठुं रूपछे एह काली एह गोरी जिम चद्रवक्तास  
 रोजाक्षी सतीपीनघनस्तनी । किलाटीनामतःसास्यात् देवानामपिदुर्लभा ॥ २ ॥ स्तीना वेशनी कथा ते वस्त्रकथा ४ ॥ जोजननी कथा च्यार प्रकारे  
 तेकहेछे आज जोजनमा शाक घृत सारा हुता तथा माठाहुंता ते जोजननी अवापकथा एमज प्रशंसा निदा करे १ । जोजननी निर्वापकथा ते प

॥ रसवत्या मुपयुज्यन्त इत्येवंरूपा कथा अवापकथा एतावन्त स्तत्र पक्कापक्कानभेदा व्यञ्जनभेदावेति निर्वापकथा इति तित्तिरादीना मियतां तत्रोपयोग  
 इत्यारम्भकथा एतावत् द्रविण तत्रोपयुज्यतइति निष्ठानकथेति उक्तंच सागययादावावो पक्कापक्कोयहोदनिब्बाओ । आरभतित्तिराई निष्ठाणंजासयस  
 हस्सति ॥ १ ॥ इहचामी दोषाः आहारमतरेणवि गेहीओजायएसइगाल अजियदियओदरिया वाओअणुणदोसायत्ति ॥ १ ॥ तथा देशे मगधादी  
 विधि विरचना भोजनमणिभूमिकादीना भुज्यतेवा यद्यत्र प्रथमतयेति देशविधि स्तत्कथा देशविधिकथा एव मन्यन्नापि नवर विकल्पः शस्यनिष्पत्तिः  
 वप्रकूपादि देवकुलभवनादिविशेषश्चेति छन्दो गम्यागम्यविभागी यथा लाटदेशे मातुलभगिनी गम्या अन्यत्रागम्येति नेपथ्य स्त्रीपुरुषाणा वेषः स्वाभाविको  
 विभूषाप्रत्ययश्चेति इहदोषाः रागदोसुपत्तौ सपक्खपरपक्खओयअहिगरण बहुगुणद्रमोत्तिदेसोसो उगमणचअनेसिति ॥ १ ॥ तथा अतियानं नगरादी

ह्मावकहा जत्तस्सञ्चारजकहा जत्तस्सणिठाणकहा । देसकहा चउल्लिहा पस्सत्ता तजहा देसविहिकहा देसवि  
 ञ्पकहा देसच्छंदकहा देसनेवत्यकहा । रायकहा चउहा प० तं० रस्सोञ्चइयाणकहा रस्सोनिज्जाणकहा र

क्कान्त्त सूखडीप्रमुखना जेद बखाणे वाकबखोडवा ७ वानानी सूखडी हती २ । भोजनना आरंजनीकथा ते राईतीखी मिरचतीखी घणी हती अन्नमां  
 अमकहु हतुं ३ । भोजननी निष्ठानकथा ते एतलाद्रव्य एहमां जोइये तो सारीवस्तु नीपजै कपूर कस्तूरी केसर एलची घाती होयतो लाडू सारा था  
 य इत्यादि कहवु ४ ॥ देशकथा च्यार प्रकारे कही तेकहेछै देशनी विधि रचनानी कथा खावो पीवो पहरवो भोजनादि एदेशमां रूपाळे १ । दे  
 शनी विकल्प कथा ते निधाननिष्पत्ति वप्र जूप जवन आरामादिकनी कथा २ । देशनी छदकथा ते गाथा गूढा दूहा हरिआली छंदना जाण एदेश

પ્રવેશ સ્તલ્કથા પ્રતિયાનકથા યથા સિયસિંધુરસ્તંભગમ્નો સિયચમરોસેયત્તજ્જનહો જળનયણકિરણસેત્રી એસોપવિસદ્ગુરેરાયન્તિ ॥ ૧ ॥ ઇયં સર્વં નવરં  
 નિર્યાણં નિર્ગમ સ્તલ્કથા યથા ષઙ્ગંતાહઙ્ગમમંદવદિસદ્ધિગિતસાચત સરણસિદ્ધમુદ્ધુય ત્રિધનયરાનિવોનિમદ્ધે ॥ ૧ ॥ વલહસ્ત્યાદિયાજન વેગમમાદિતલ્કથા  
 યથા હેસંતહયંગજ તમયગલંઘણઘણતરત્તલલલ કસ્મયસ્તવિસેત્રં તિપાસિનસત્તુસિત્રંભો ॥ ૧ ॥ કોપી ભાંડાગારં કોટાગારં ધાન્યાગારમિતિ તલ્કથા  
 યથા પુરિસપરંપરપત્તે નભરિયવિસ્મરેણકોસેણં નિજિગયેસમણેણં તેણસમોત્તોનિવોષયોત્તિ ॥ ૧ ॥ દ્રક્ષેતેદોપાઃ ચારિયચોરાભિમરે તિગમારિયસજ્જકા  
 ઉકામાયા ભુત્તાભુત્તોદ્ધાણે કરેજ્જવાપ્રાસસપમોગ ॥ ૧ ॥ ભુત્તભોગા અભુત્તભોગાપા પ્રાધાનકુર્ગાદિત્યર્થઃ પાનિપ્યતે મોત્તાત્તલ પ્રત્યાપુણતે યોતા ડનયે  
 ત્યાદ્ધેપણી તથા વિદિપ્યતેસન્માર્ગાત્ કુમાર્ગે કુમાર્ગાદા સન્માર્ગે યોતા ડનયેતિ વિદ્ધેપણી સવેગયતિ સંવેગકરોતીતિ સવેગતેવા સર્વોધ્યતે સવેજ્યતેવા

સોવલવાહનકહા રણોકોસકોઠાગારકહા । ચહિહા કહા પ૦ તં૦ ચુસ્કેવણી વિસ્કેવણી સવેગણી ણિહ્વે

ના લોકલે ક્ષતિકથા ૩ । દેશના સ્ત્રીપુરુષના વેપની કથા પત્તરીજાળે નજાળે રૂપ કથા ૪ ॥ રાજકથા ચાર પ્રકારે કહી તે કહેલે રાજાના પ્રતિયા  
 નની કથા નગરપ્રવેશની વાર્તા સ્વેતહસ્તીયે વૈઠો સ્વેતચામર લ્લનસરિત્ત નગરમાં આવે ૧ । રાજાની નિર્યાણકથા તે વાજા વાજતે સામંતરાજા મિલ  
 તે ક્ષત્યાદિક નગરમાં નીકલવાની કથા વાર્તા ૨ । રાજાના વલ હાથી ગાજેલે ઘોડા હીસરત્તપાલે ક્ષત્યાદિ વરાણાતું તે કથા ૩ । રાજાના કોણ જ  
 ઠાર ધન કોઠાર ધાનના ખસાલે ક્ષત્યાદિ વાર્તા કરવી ૪ ॥ વલી ચાર પ્રકારની કથા કહી તેકહેલે આદ્ધેપણી કથા તે મોત્તાથી આત્માને આકરવી  
 આણિયે ૧ । વિદ્ધેપણી જે આત્માને સન્માર્ગથી કુમાર્ગમાં કુમાર્ગથી સન્માર્ગમાં આણિયે ૨ । સવેગણી સાંભલાનારને સવેગ વૈરાગ્ય આવે ૩ । નિર્વેગણી

॥ सवेग ग्राह्यते श्रोता ऽनयेति संवेदनो सवेजनीवेति निर्वेद्यते संसारादे निर्विन्नाः क्रियतेनयेति निर्वेदनीति आचारो लोचास्त्रानादि स्तब्धकाश  
 नेन आक्षेपणी आचाराक्षेपणीति एव मन्यवापि नवर व्यवहारः कथञ्चिदापन्नदोषश्चपोहाय प्रायश्चित्तलक्षण. प्रज्ञप्तिः सशयापन्नस्य श्रोतु मधुरवचनैः प्र  
 ज्ञापनं दृष्टिवादः श्रोत्रपेक्षया नयानुसारेण सूक्ष्मजीवादिभावकथन मन्येत्वभिदधति अचारादयो ग्रन्था एव परिगृह्यन्ते आचाराद्यभिधानादिति अस्या  
 श्चायरसः विज्ञाचरणचतस्रो पुरिसकारोयसमिद्गुत्तौश्रो उवइस्सइखलुजसो कहाएअक्खेवणीएरसोत्ति ॥ १ स्वसिद्धात कथयति तद्गुणानुद्दीपयतिपूर्व  
 तत स्त कथयित्वा परसमय कथयति तद्दोषान् दर्शयतीत्येका एव परसमयकथनपूर्वक स्वसमय स्थापयित्वा स्वसमयगुणाना स्थापकोभवतीति द्वितीया

गणी अस्केवणीकहा चउल्लिहा प० तं० श्चायारस्केवणी व्यवहारस्केवणी पप्पत्तिस्केवणी दिठ्ठिवायअस्केव  
 णी । विस्केवणीकहा चउल्लिहा पप्पत्ता तंजहा ससमयंकहेइ ससमयंकहेत्ता परसमयं कहेइ । परसमयं कहे

जेहने सांजलतां संसारथी निर्वेद पामै ४ ॥ आक्षेपणी कथा चार प्रकारनी कही तेकहेछे आचारनुं प्रकाशवुं ते आचारनी कथा १ । पापलागो ते  
 टालवाने प्रायश्चित्त लक्षणनी कथा अथवा व्यवहारसूत्र ते व्यवहारक्षेपणी २ । संशयपाम्यो सांजलनार तेहने मीठे वचन कहवुं ते अथवा जंबूद्वीपप  
 न्नी प्रमुख ते प्रज्ञप्तीआक्षेपणी ३ । दृष्टिवादाक्षेपणी ते सूक्ष्म जीवादिज्ञावनी कथा अथवा दृष्टिवादसूत्र तेहनी कथा ४ ॥ निक्षेपणीकथा चार प्र  
 कारनी कही तेकहेछे स्वसमय ते सिद्धांत तेहना गुणकही दीपावे स्वसमय कहीने परसमय कहे ते परसासनना दोष देखाडे परसमय कहीने तेहना  
 दोष दिखाडीने स्वसमयनां सिद्धातनुं थापक होय थापना करे प्रथमसमयमां जे वीतरागना वचनानुसारी तत्त्ववाद कहै १ । समीचीनतया तत्त्ववा



॥ सम्मावायमित्यादि ॥ अस्या यमर्थः परसमयेचपि घुणाक्षरन्यायेन योयावान् जिनागमः तत्त्ववादसदृशतया सम्यगविपरीत स्तत्त्वानांवादः सम्यग्वाद स्तं कथयति त कथयित्वा तेष्वेव यो जिनप्रणीततत्त्वविरुद्धत्वा मिथ्यावाद स्त दोषदर्शनतः कथयतीति तृतीया परसमयेष्वेव मिथ्यावाद कथयित्वा सम्यग्वा दं स्थापयिता भवतीति चतुर्थी अथवा सम्यग्वादो ऽस्तित्व मिथ्यावादो नास्तित्व तत्रास्तिकवाददृष्टौ रुक्ता नास्तिकवाददृष्टौ भ्रंशतीति तृतीया एतद्वि पर्यया चतुर्थी इहलोको मनुष्यजन्म तत्स्वरूपकथनेसवेगिनी इहलोकसवेगिनी सर्वमिदं मानुषत्व मसार मध्रुव कदलीस्तंभसमान मित्यादिरूपा एव परलोकसवेदनी देवादिभवस्वभावकथनरूपा देवा अपीर्षाविषादभयवियोगादिदुखै रभिभूताः किपुन स्तिर्यगादयदिति आत्मशरीरसवेगिनी यदेत दस्म दीय शरीर मेत दशुचि अशुचिकारणजात मशुचिद्वारविनिर्गतमिति नप्रतिबन्धस्थानमित्यादिकथनरूपा एव परशरीरसवेगिनी अथवा परशरीर मृतक

त्ता ससमयं ठाविता नवइ । सम्मावायं कहेइ सम्मावायं कहेत्ता मिच्छावायं कहेइ । मिच्छावायं कहेत्ता स म्मावाय ठावइत्ता नवइ । संवेगणी कहा चउल्लिहा पसत्ता तंजहा इहलोगसवेगणी परलोगसंवेगणी च्छाय

द कहीने २ । पळे मिथ्यावाद कहे तेह मिथ्यावादना दोषनुं देखाडवुं कहे ३ । प्रथम मिथ्यावाद जे जिनवचन विरुद्ध कही ते मिथ्यावाद जिम अ पुत्रस्यगतिर्नास्ति स्वर्गानैवचनैवच इत्यादि मिथ्यावाद कही सम्यग्वाद कहे सम्यग्वाद थापै तेह चौथी निक्षेपणी कथा ४ ॥ सवेगणी कथा च्चार प्रकारे कही तेकहेळे इहलोकसंवेगनी ते आसर्व मनुष्यादि असारळे इत्यादि १ । परलोकसंवेदनी ते देवताप्रमुख तेपणि ईर्ष्याविषाद जय वियोगन दुख थी पराजव्याळे २ । आत्मशरीर संवेदनी ते अत्सारू शरीर अशुचि विष्टादिकथी नीपनु अशुचि वारणे नीकल्यु एहथी स्युं प्रतिबध ३ । इमज पर

शरीरमिति इहलोके दुश्चीर्सानि चौर्यादीनि कर्माणि क्रिया इहलोके दुःखमेव कर्मद्रुमजन्यत्वात् फल दुःखफलं तस्य विपाको अनुभावी दुःखफलविपाक  
स्तेनसयुक्तानि दुःखफलविपाकसयुक्तानि भवति चौरादीनामिवेत्येका एव नारकाणां मिवेति द्वितीया आगर्भात् व्याधिरिद्राभिभूतानामिवेति तृती  
या प्राक्कृता शुभकर्मात्यन्तानां नारकप्रायोग्य वधता काकगृद्धादीनां मिव चतुर्थीति ॥ इहलोएसुचिन्नेत्यादि ॥ चतुर्भगौ तीर्थकरदानदात् १ सुसाधु २

सरीरसंवेगणी परसरीरसंवेगणी । णिह्लेगणीकहा चउह्लिहा प० तं० इहलोगदुश्चिन्साकम्मा इहलोगदुहफल  
विवागसजुत्ता जवति । इहलोगदुश्चिन्साकम्मा परलोगदुहफलविवागसंजुत्ता जवति । परलोगदुश्चिन्साकम्मा  
इहलोगदुहफलविवागसंजुत्ता जवति । परलोगदुश्चिन्साकम्मा परलोगदुहफलविवागसजुत्ता जवति ॥ इहलो

बीजानुं पणि शरीर इत्यादि कहवुं एह परसंवेदनी ४ ॥ निर्वेगणीकथा चार प्रकारे ते कहेछे इहलोक एलोकमां मांठा आचस्याकर्म अथवा कीधा  
जे चोरीप्रमुख पापकर्म तेहनं इहाज दुखरूप फलनु विपाक अनुभाव ते सहित होय इहांज भोगवे चोरनीपरे १ । एहलोकमां मांठा आचस्या की  
धा जे पापकर्म तेहना परलोक नरकादिकने विषे दुखरूप फलना विपाक सहित होय पापकरी नरकमां जाय कालकसूरीया कसार्दनी परे २ । परलोक  
पाछिलेजवे कीधा जेकुर्म तेहना एह लोकनेविषे आधिरिद्रादि दुखरूप फलविपाक सहित होय इहां दुखी थाय ३ । परलोकने विषे मांठा की  
धा जे पापकर्म ते परलोकमा दुखरूप फलविपाक सहित होय जिम पूर्वकीधा अशुचकर्मथी इहा काक गीध थाय ते वली नरकगति बाधी नरक  
मा जाय ४ ॥ एलोकमां रूडा आचस्या पुण्यकर्म कीधा तेहनां इहलोकमां सुखरूप फलविपाक सहित होय ते तीर्थकरने दानदेणहार साढेवारेको

तीर्थंकर ३ देवभवस्थतीर्थंकरादीनामिव भावनीयेति उक्तो वाग्विशेषो ऽधुना पुरुषजातप्रधानतया कायविशेषमाह ॥ चत्वारिपुरिसेत्यादि ॥ कण्ठं न  
वर कण्ठस्तनुशरीरः पूर्वं पश्चादपि कण्ठ एव अथवा कण्ठो भावेन हीनसत्त्वादित्वा त्पुनः कण्ठः शरीरादिभि रेव दृढोपि विपर्ययादिति पूर्वत्त्वार्थविशेषा

गसुचिष्णाकम्मा इहलोगसुहफलविवागसजुत्ता ज्वति । इहलोगसुचिष्णाकम्मा परलोगसुहफलविवागसजुत्ता  
ज्वति एवं चउज्जगो । तहेव चत्वारि पुरिसजाया पणत्ता तजहा किसेणाममेगेकिसे किसेणाममेगेदढे द  
ढेणाममेगेकिसे दढेणाममेगेदढे ॥ चत्वारि पुरिसजाया पणत्ता तजहा किसेणाममेगेकिससरीरे किसेणाम

ढि सुनइयानी वृष्टिथाय १ । इहलोकमां जला आचस्या जेकर्म तेहनां परलोकनेविषे सुखरूप फलविपाक सहित होय साधुनीपरे इहा पांच महा  
वृत पाली देवता थाय मोक्ष जाय २ । तिम परलोके कीधा जलाकर्म तेहना फल जोगवे तीर्थंकरनी परे ३ । परलोकेपु ग्यकर्म कीधा तेपरलोके सु  
खफल जोगवे जिम देवजवमाहि रह्या ते इहा वली आवी तीर्थंकर थाय एचोजंगी ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक शरीरथी कण्ठ दु  
र्वल अने ज्ञावथी पणि दुर्वल हीनसत्त्वनु धणी १ । एक शरीरथी कण्ठ ज्ञावथी दृढसत्त्वनु धणी २ । एक शरीरथी दृढ ज्ञावथी कण्ठ हीनसत्त्व ३ । एक  
शरीरथी पणि दृढ ज्ञावथी पणि दृढ सत्त्ववंत ४ । च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक सत्त्वथी कण्ठ शरीरथी पणि कण्ठ सग्रालावो विपरीत  
लीजे पणि एतलो विशेष १ । एक हीनसत्त्वनो धणी पण शरीरथी दृढ शरीरथी स्थूलछे पणि कायरछे २ । एक दृढसत्त्वनो धणी पणि शरीरे दुर्व  
ल ३ । एक सत्त्वथी दृढ अने शरीरथी दृढ ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेछे एक कण्ठशरीरनां धणीने तपथी ज्ञानावरणी कर्मना क्षयो

॥ श्रितमेव द्वितीयं सूत्रं तत्र कृशोभावतः शेष सुगमं कृशस्यैव चतुर्भंग्या ज्ञानोत्पादमाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ व्यक्तं किन्तु कृशशरीरस्य विचित्रतपसा भावित  
स्य शुभपरिणामसम्भवेन तदावरणक्षयोपशमादिभावात् ज्ञानच दर्शनञ्च ज्ञानदर्शनं ज्ञानेनवा सह दर्शनं ज्ञानदर्शनं छाद्यस्थिकं कैवलिकंवा तत्समुत्पद्यते  
न दृढशरीरस्य तस्यहि उपचितत्वेन बहुमोहतया तथाविधशुभपरिणामाभावेन क्षयोपशमाद्यभावा दित्येकः तथा मन्दसहननस्या ल्पमोहस्य दृढशरीर  
स्यैव ज्ञानदर्शनं समुत्पद्यते स्वस्थशरीरतया मनः स्वास्थ्येन शुभपरिणामभावतः क्षयोपशमादिभावा न्न कृशशरीरस्या स्वास्थ्या दितिद्वितीयः तथा कृशस्य दृढ  
स्यवा तदुत्पद्यते विशिष्टसहननस्या ल्पमोहस्यो भयथापि शुभपरिणामभावात् कृशत्वदृढत्वेना पेक्षत इतितृतीयः चतुर्थः सुज्ञानः ज्ञानदर्शनयो रूपाद् उ  
क्तो ऽधुना तद्व्याघात उच्यते तत्र ॥ चउहौत्यादि ॥ सूत्रं स्फुटं परं निययौग्रहणात् स्त्रियाअपि केवलं समुत्पद्यत इत्याह अस्मिन्निति प्रत्यक्षत्वा नत प्रत्यास

मेगेदृढशरीरे दृढेणाममेगेकिससरीरे दृढेणाममेगेदृढशरीरे । चत्तारि पुरिसजाया पम्पत्ता तंजहा किसरस  
णाममेगरस णाणदसणेसमुप्पज्जइ णोदृढशरीरसस । दृढशरीरससणाममेगरस णाणदंसणेसमुप्पज्जइ णोकिस  
सरीरसस । एगरस किससरीरससवि नाणदंसणेसमुप्पज्जइ दृढशरीरससवि । एगरस णोकिससरीरसस नाणदं

पशमथी ज्ञानदर्शनं केवलादि उपज्जे दृढशरीरनाने नउपज्जे घणामोहमाटे १ । एकं दृढशरीरना धणीने थोडुं मोहछे तेहने ज्ञानदर्शनं उपज्जे केवला  
दि अने कृश शरीरना धणीने नउपज्जे मोहनी बलवंतछे रोगथी दुर्वलछे २ । एकं कृश शरीरना धणीने थोडुं मोहनीछे तपिअने शुभपरिणामथी  
ज्ञानदर्शनं उपज्जे अने शुभपरिणामथी दृढशरीरनाने उपज्जे ३ । एकं कृश शरीरनाने अशुभपरिणामथी ज्ञानदर्शनं नउपज्जे अने दृढशरीरनाने पणि

ત્રે સમયે ॥ અદ્રસેસેત્તિ ॥ શ્રેષ્ઠાણિ મત્યાદિચક્ષુર્દર્શનાદૌનિ અતિક્રાંતં સર્વાવગ્રોધાદિગુણે યંત્ત દતિશેષ મતિશયવતઃ કેવલમિત્યર્થ, સમુત્પત્તુકામમપીતિ ઇ  
 હૈવાર્થો દ્રષ્ટવ્ય' જ્ઞાનાદે રભિલાપાભાવા લ્લયયિતેતિ શીલાર્થિકસ્તૃન્ તેન દ્વિતીયા નવિરુદ્ધા ઇતિ વિવેકેનેતિ અશુદ્ધાદિત્યાગેન ॥ વિઝસ્સગ્ગેણંતિ ॥ કાયવ્યુ  
 ત્તર્ગેણ પૂર્વરાત્રચ રાત્રે' પૂર્વોભાગો ડપરરાત્રચ રાત્રે રપરોભાગ સ્તાવેવકાલ' સમયો ડવસરો જાગરિકાયા' પૂર્વરાત્રાપરરાત્રકાલસમય સ્તસ્મિન્ કુટુમ્બજા  
 ગરિકાવ્યવચ્છેદેન ધર્મપ્રધાના જાગરિકા નિદ્રાજ્ઞયેણ વોધો ધર્મજાગરિકા ભાવપ્રત્યુપેક્ષેત્યર્થ યથા કિંકયકિવાપેસ કિકરણિજ્જતવચનકરેમિ પુલ્લાવ  
 રત્તકાલે જાગરત્રો ભાવપડિલેહત્તિ ॥ ૧ ॥ અહવાકોમમકાલો કિમેયસ્સઽવિચિત્તસારાવિ સયાનિયમગામિણો વિરસાવસાણાભોસણોમચ્ચૂ ॥ ૨ ॥ ઇત્યાદિ

સણે સમુપ્પજ્જઈ ણોદઠસરીરસ્સ ॥ ચઠહિંઠાણેહિ ણિમ્મથાણવા ણિમ્મથીણવા ચ્હસિંસમયંસિ ચ્હિસેસે ના  
 ણદસણે સમુપ્પજ્જિઽકામેવિ ણોસમુપ્પજ્જેજ્ઞા ચ્હનિરુક્કણં ચ્હનિરુક્કણ ઇત્થિકહ જત્તકહ દેસકહં રાયકહ કહેતા  
 જવઈ ૧ । વિવેગેણં વિઝસ્સગ્ગેણ ણોસમ્મમપ્પાણ જાવેત્તા જવઈ ૨ । પુલ્લરત્તાવરત્તકાલસમયંસિ ણોધમ્મ

અશુજ્જાવથી જ્ઞાનદર્શન નજપજે ૪ ॥ ચ્યાર થાનકે નિગ્રથને તથા નિગ્રથણીને આ સમયમા અતિશેષ મોટું કેવલજ્ઞાન કેવલદર્શન ઝપજવાનુ હોય  
 તોપણિ નજપજે તેકહેછે બારબાર સ્ત્રીકથા કહે ૧ । ઝોજનની કથા કહે ૨ । દેશકથા કહે ૩ । રાજકથા કહે ૪ । એહ ચ્યાર વિકથા કરવાથી ઝપ  
 જનારુ કેવલજ્ઞાન કેવલદર્શન નજપજે ૧ ॥ વિવેક તે અશુદ્ધ માન આહારાદિત્યાગ વિઝસ્સગ્ગ તે કાઝસગ્ગ તેણે સમ્યક્પ્રકારે આત્માને ભાવિતનકરે  
 ૨ । પાછલી રાત્રિના કાલ સમયનેવિષે ધર્મજાગરિકા નજાગે પાછલી રાત્રિમા જાગી ધર્મની ચિંતા નકરે જે હુ સ્યુધર્મ કરુહુ સ્યુ નથી કરુંતુ ૩ ।

रूपा विभक्तिपरिणामा तया जागरिता जागरको भवति अथवा धर्मजागरिकां जागरिता कर्तेति द्रष्टव्यमिति तथा प्रगता असव उच्छासादयः प्राणा यस्मात् स प्रासुको निर्जीव स्तस्य एष्यते गवेष्यते उद्गमादिदोषरहिततयेलेषणीयः कल्प स्तस्य उज्ज्यते अल्पाल्पतया गृह्यत इत्युद्धो भक्तपानादि स्तस्य स मुदानेभैक्षणे याज्यायां भवः सामुदानिकस्तस्य नो सम्यगवेषयिता ऽन्वेष्टा भवतीति एव प्रकारै रेतै रनन्तरोदिते रित्यादि निगमनं एतद्विपर्ययसूत्र कण्ठ्य

जागरियं जागरित्ता नवइ ३ । फासुयस्स एसणिज्जस्स उंठस्स सामुदाणियस्स णोसम्मंगवेसइत्ता नवइ ४  
इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गथाणवा णिग्गथीणवा जाव नोसमुप्पज्जेज्जा ॥ चउहिंठाणेहिं निग्गंथाणवा  
निग्गथीणवा ण्णइसेसे नाणदसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा तंजहा इत्थिकहं नत्तकहं देसकह राय  
कह णोकहेत्ता नवइ । विवेगेणविउस्सग्गेणं सम्ममप्पाणं ज्ञावेत्ता नवइ । पुब्बरत्तावरत्तकालसमयंसि  
धम्मजागरियं जागरित्ता नवइ । फासुयस्स एसणिज्जस्स उंठस्स सामुदाणियस्स सम्मंगवेसइत्ता नवइ ४

हुं कुण यतीळुं अथवा आवक । फासू शुद्ध मान दोष रहित घणां घरनी भित्ता तेहनी सम्यक् प्रकारे गवेषणा नकरै ४ ॥ एह च्यार थानकें करी साधुने तथा साध्वीने यावत् हमणां तरत ऊपजनारू पणि ज्ञानदर्शन नऊपजै ॥ च्यार थानके साधुने तथा साध्वीने मोटुं ज्ञानदर्शन केवलादिक ऊपजवानुं होय ते ऊपजे तेकहेछे स्त्रीकथा नत्तकथा देशकथा राजकथा इत्यादिक च्यार कथा नकहे १ । विवेक ते पापनी त्याग तथा काउसग तेहथी सम्यक् प्रकारे आत्माने ज्ञावे २ । पाळली रात्रिना समयमा जागी धर्म जागरिका करे धर्मचितना करे ३ । फासू अचित्त एषणीय दोषरहि

नियमप्रस्तावा तदकृत्यनिषेधाय सूत्रे ॥ नौकणश्चेत्यादिके ॥ कण्ठे कोल महोत्सवानन्तरउत्तिवेलो त्त्वानुष्ठाना शेषप्रतिपदिलक्षणतया महाप्रतिपद स्था  
 स इहचदेशविशेषरूपा पाडिवएहिति निर्देशः स्वाध्यायो नन्यादिसूत्रविषयो पाचनादि रनुपेक्षातु न निषिध्यते प्रापाठस्य पूर्णिमास्या अनन्तरा प्रति  
 पदापाठप्रतिप देव मन्यनापि नवर मिन्द्रमहो ऽश्वयुज्यपूर्णमासी सगीष सैनपौर्णमासीति इहच यत्र विषये यतो दिवसा नमहामहाः प्रवर्तन्ते तत्र तद्विव  
 सात् स्वाध्यायो न विधीयते महसमाप्तिदिन यावत् तत्र पूर्णमास्यैव प्रतिपदसु चणानुष्ठानसमवेन वर्ज्यत इति उक्तंच आसाढाष्टदमहो कत्तियसुगिम्ह  
 एयवोध्वे एएमहामहाखलु सज्जेसिजावपाडिवएत्ति ॥ १ ॥ एकालस्वाध्यायेचा मोदोषाः सुयनाणमिप्रभत्ती लोगविरुद्धपमत्तल्लणाय विज्जासाहणये

इच्चेएहिं चउहिंठाणेहिं णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा जाव समुप्पज्जेज्जा ॥ णोकप्पइ णिग्गथाणवा णिग्गथी  
 णवा चउहिं महापाफिवएहिं सज्जायं करेत्ता तं० आसाढपाफिवए इंदपाफिवए कत्तियपाफिवए सुगिम्हपा  
 फिवए ॥ णोकप्पइ णिग्गथाणवा णिग्गथीणवा चहिसज्जाहि सज्जाय करेत्तए तं० पढमाए पच्छिमाए मज्ज

त जित्ता समुदाणकी ते घणां घरनी सम्यग्ग्रीतथी गवेषणा करे ४ ॥ एह च्यार थानके साधुने तथा साध्वीने यावत् केवलज्ञान केवलदर्शन उपजें  
 ४ ॥ नकल्पे साधुने तथा साध्वीने च्यार मोटी पडिवाने विषे सिज्जाय करवुं तेकहेछे आसाढसुदी १५ नी पफिवा आपाठबदी १ । इद्रमोच्छवनी १५  
 नी पफिवा आसीजबदी १ एहवुं जणायछे २ । कार्तिक पूर्णमासीनी पडिवा ३ । ग्रीष्मकालनी १५ नी पफिवा ते फागणसुदी १५ पाळली पडिवा प  
 छे गीतार्थ कहे तेसाचुं ४ ॥ नकल्पे साधुने तथा साध्वीने च्यार संध्यानी वेलामा सिज्जाय करवुं तेकहेछे प्रथमसंध्या सूर्योदयनी वेलायी प्रथमनी

गुणधर्मगुणसुत्ति ॥ १ ॥ विद्यासाधनवैगुण्यसाधर्मणैवेत्यर्थः प्रथमा संध्या अनुदिते सूर्ये पश्चिमा अस्तमयसमये उक्तविपर्ययसूत्र कण्ठ्य किन्तु ॥ पुंस्व  
 रहेअवरणहेत्ति ॥ दिनस्याद्यवरमप्रहरयोः ॥ पञ्चोसे पञ्चूसेत्ति ॥ रात्रेरिति स्वाध्यायप्रवृत्तस्यच लोकस्थितिपरिज्ञान भवतोति तामेव प्रतिपादयन्नाह ॥ चउब्बि  
 हेत्यादि ॥ लोकस्य क्षेत्रलक्षणस्य स्थिति र्व्यवस्था लोकस्थितिः आकाशप्रतिष्ठितो घनवाततनुवातलक्षणः उदधिर्घनोदधिः पृथिवीर त्रप्रभादिका त्रसा बींद्रियाद  
 य स्ते पुनः यैरत्रप्रभादिपृथिवीष्वप्रतिष्ठिता स्तेपि विमानपर्वतादिपृथिवीप्रतिष्ठितत्वात् पृथिवीप्रतिष्ठिताएव विमानपृथिवीनांचा काशादिप्रतिष्ठितत्व यथास  
 भव भवसेय मविवक्षाचेह विमानादिगतदेवादित्रसानामिति स्थावरा स्त्विह वाटरवनस्पत्यादयो ग्राह्याः सूक्ष्माणा सकललोकप्रतिष्ठितत्वात् शेष सुगममि

रहे अष्टरत्ने । कप्पइ णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा चउक्कालं सज्जायं करेत्तए पुह्वरहे अवररहे पत्तसे पञ्चूसे  
 चउब्बिहा लोगिठिई पस्सत्ता तंजहा आगासपइठिएवाए वायपइठिएउदही उदहिपइठियापुढवी पुढविपइ

बेघली १ । पश्चिमा ते सूर्य अस्त समयनी बेघडी २ । मध्याह्न वेपहरनी बेघडी ३ । मध्यरात्रिनी बेघडी ४ ॥ कल्पे साधुने तथा साध्वीने च्यार का  
 लमां सिज्जाय करवुं दिवसनां पहले पहरे १ । दिवसने पाळले पहरे २ । रात्रिना पहले पहरे ३ । रात्रिना पाळले पहरे ४ ॥ सिज्जायकरे ते लो  
 कस्थिति जाणो तेमाटे च्यार लोकस्थिति कही तेकहेछे आकाशो प्रतिष्ठित रहियोछे वायरो घनवात तनुवात १ । वायुप्रतिष्ठित उदधिछे वायुने  
 आधारे घनोदधितनोदधिछे २ । ते उदधिने आधारे पृथ्वीछे ३ पृथ्वीने आधारे बेइंद्रियादिक त्रस तथा थावर प्राण जीवछे चरलेवा सूक्ष्मती  
 सकल लोक व्यापीछे ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहा तेकहेछे एक पुरुष साचो, सत्यवादी १ । एक पुरुष नोतथा एतले खोटुं असत्यवादी २ ।



तिअनन्तरं त्रसाः प्राणा उक्ता अधुना त्रसप्राणविशेषस्य ॥ चत्वारौत्यादिभिः ॥ यतुर्भिद्यतुभङ्गीसूत्रैः स्वरूपं दर्शयति कण्ठ्यानि चैतानि केवलं ॥ तद्वृत्तिः ॥ से-  
वकः सन् यथैवादिश्यते तथैवयः प्रवर्त्तते सतथा अन्यस्तु मोतथैवा न्यथापीत्यर्थः इतिनोतथः तथा स्वस्तौत्याह चरतिवा सौवस्तिकः प्राकृतत्वा ल्कारलोपि  
दौर्धत्वेच सावत्यौ मागलिकाभिधायौ मागधादि रन्य एतेषा मेवा राध्यतया प्रधानः प्रभुरन्यइति ॥ आयतकरेत्ति ॥ आत्मनोन्त भवसानं भवस्य करोती  
त्यात्मातकर' नोपरस्य भवातकरो धर्मदेशनानासेवक' प्रत्येकबुद्धादि स्तथा परस्य भवातं करोति मार्गप्रवर्त्तनेन परातकरो नात्मातकरो अचरमशरीर  
आचार्यादि स्तृतीयस्तु तीर्थकरोऽग्योवा चतुर्थी दुःखमाचार्यादि रथवा त्मनोतमरणं करोती त्यात्मान्तकर एव परान्तकरोपि इह प्रथम आत्मवधको द्वि-  
तीयः परवधक स्तृतीय उभयहता चतुर्थ स्ववधकइति अथवा त्मतत्रः सन् कार्याणि करोती त्यात्मतत्रकर एव परतत्रकरोपि इहतु प्रथमो जिनी द्वितीयो

ष्ठिया तसा थावरा पाणा । चत्वारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा तहेणाममेगे णोतहेणाममेगे सोवत्थीणा  
ममेगे पहाणेणाममेगे । चत्वारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा अयंतकरेणाममेगेणोपरंतकरे परंतकरेणाममे

एक पुरुष सौवस्तिक मंगलीकनुं वोलणहार भाट जोजकादि ३ । एक प्रधान पुरुष ए ३ ने आराधवा योग्य पुण्यवंत व्यवहारी ४ ॥ च्यार प्रकार  
ना पुरुष कह्या तेकहेछे एक आत्माना जवनुं अतकरे मोक्ष पहुचे पणि परने जवनु अत नकरावे उपदेश नदेवे प्रत्येकबुद्धादिसाधु १ । एक  
परने जवनो अतकरावे उपदेश देईने पणि आत्माने जवनुं अंत नकरे ते आचार्यादि अथवा अज्ञव्यना प्रतिबोध्या मुक्तिजाय पणि पोते नजाय  
२ । एक पोताना जवनु अंतकरे अने परना भवनुं पणि अंतकरे ते तीर्थकरादि ३ । एक आत्मात पणि न करे परात पणि नकरे दुखमदुखमा

भिन्नु स्तृतीय आचार्यादि श्रुतुर्थः कार्यविशेषापेक्षया शठइति अथवा आत्मतन्त्रं आत्मायत्तं धनं गच्छादि करोती त्यात्मतन्त्रकर एव मितरापि भंगयोजना स्वयमूहेति तथा ऽऽत्मान तमयति खेदयती त्यात्मतमा आचार्यादिः परशिष्यादिक तमयतीति परतमाः सर्वत्रप्राकृतत्वाद्नुस्वारः अथवा आत्मनितमो अज्ञान क्रोधोवा यस्यस आत्मतमा एव मितरोपि तथा आत्मान दमयति शमवत करोति शिचयतिवे त्यात्मदमः आचार्यो ऽखदमकादिर्वा एव मितरो पि नवर परः शिष्यो ऽखादिर्वा दमश्च गर्ह्यगर्हान्त स्यादिति गर्हासूत्रं तत्र गुरुसाक्षिकमात्मनोनिदा गर्हा तत्र उपसम्पद्ये आश्रयामि गुरुञ्च स्वदीपनिवेद नार्थं मभ्युपगच्छामि बोचित प्रायश्चित्त मित्ती त्वेवप्रकारः परिणाम एका गर्हेति गर्हात्वञ्चा स्योक्तपरिणामस्य गर्हायाः कारणत्वेन कारणेकार्योपचारा न्न हांसमानफलत्वाच्च द्रष्टव्यमिति अभिधीयतेहि भगवत्या णिर्गन्धेण गाहावश्कुल पिडवायपडियाए [पिडलाभप्रतिज्ञयेत्यर्थः] पविष्ठेण अन्नयरेअकिञ्चिहाणे

गेणोऽप्रायंतकरे एगेऽप्रायंतकरेविपरंतकरेवि एगेणोऽप्रायंतकरेणोपरंतकरे ४ । चत्वारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा अप्रायतमेनाममेगेणोपरंतमे परंतमेनाममेगेनोऽप्रायंतमे ४ । चत्वारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा अप्रायंदमेणाममेगेणोपरंदमे परंदमेणाममेगेणोऽप्रायंदमे एगेऽप्रायंदमेविपरदमेवि एगेणोऽप्रायंदमेणोपरदमे ४

कालना आचार्यादिक अथवा मूर्ख ४ ॥ चार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुषने आत्माने तम क्रोधछे परने क्रोधनथी करतो १ । एक परने क्रोधकरे पोते नकरे एम चार जागा ४ ॥ चार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक आचार्यादि आत्माने दमेछे उपशमवत करेछे पर शिष्या दिकने नथी दमावतो १ । एम चार जांगा कहवा ४ ॥ चार प्रकारे गर्हा कही तेकहेछे स्वदीप कहवाने गुरुने आश्रयस एहवो परिणाम ते एक

पडिसेविए तस्सणं एयं भगव द्रष्टव्यं ताव अहं एयस्स ठाण्णस्स आलोएमि पडिक्कमामि निंदामि जाव पडिवज्जामि तथोपच्छा येराणं अंतियं आलोइस्सामि  
 सयसपडिहिए असंपत्ते अण्णाय पुब्बमेवकालंकारेज्जा सेणंभते किंआराएणविराएण गोयमा आराएणोविराएणत्ति तथा ॥ वित्तिगिच्छामीति ॥ जीति विप्रेषेण  
 विविधैः प्रकारेण चित्तिक्कामिप्रतिकरोभिगर्हणीयान्दोषा ननेनेतोलेय विक्कप्पात्मिका एकाग्यागर्हति तत एवेति तथा ॥ जंकिचमिच्छामीति ॥ यत्किञ्चना  
 मुभित तन्निष्णा विपरोतं दुष्टं मे मम इत्येवं वासनागर्भयचनरूपा एकाग्यागर्हा एवंस्वरूपत्वादेव गर्हया स्तथा ॥ एवमपीति ॥ अनेनापि स्वदोषगर्हाप  
 कारेणापि प्रज्ञप्ताभिहित्ता जिने दोषशुद्धिरिति प्रतिपत्ति रेकागर्हा एवविधप्रतिपत्ते गर्हा कारणत्वा दिति एवंपिपयत्तेनोगरिहेति पाठे व्याख्यान मिदं  
 एवंपिपयत्तेएगाइति ॥ पाठे त्विदं यत्किञ्चना यत्तं तन्निष्णे त्येवं प्रतिपत्तव्यमित्ये य मपि प्रज्ञप्ते प्ररूपिते सत्ये का गर्हाभव त्येवविधप्ररूपणायाः प्रज्ञापनी  
 यस्य गर्हाकारणत्वात् अथवा उपसंपत्ते प्रतिषेधा म्यह मतिचारा नित्येवं स्वदोषप्रतिपत्ति रेका गर्हा तथा विचिक्कित्तामि शंके अशकनीयानपि जिनभा  
 वितभावान् शुर्वादीन्वा दोषयत्तये त्येवं प्रकारापि गर्हा स्वदोषप्रतिपत्तिरूपत्वा देयेति तथा यत्किञ्चन साधूना मनुचितं तदिच्छामि साक्षा द्दकरणेपि म  
 नसा भिल्लामि इहमकार आगमिकः प्राकृतत्वादिति अथवा यत्किञ्चना साधुजाल्य माशित्य मिष्णाविपर्यस्तोस्मि भवामि मिष्णाकरोमिया मिष्णागामी  
 ति ॥ मिच्छामीति ॥ स्तेच्छवदाचरामोतिया स्तेच्छामीति मिच्छामि जेपंपूर्ववत् तथा असदनुष्ठाने प्रवृत्तः प्रेरितः सन् केनापि स्वकीयचित्तसमाधानार्थं

चउल्लिहा गरहा पणत्ता तंजहा उवसंपज्जामिएगागरहा वित्तिगिच्छामिएगागरहा जंकिचमिच्छामिएगाग

गर्हा १ । विज्ञेयणी पापनी गर्हा करोस एहयो विकल्प करे ते वीजी गर्हा २ । जे पापलागे तेहनु मिष्णादुष्कृत एह वचनरूप नीजी गर्हा ३ ।

वा स्वकीयासदनुष्ठानसमर्थनाय क्लिष्टचित्ततयैवं प्ररूपयामि भावयामिवा यदुत एवमपि प्रज्ञप्तिः प्ररूपणास्तिजिनागमे पाठान्तरे त्वेवमपि प्रज्ञप्तोयंभाव इत्यस्थानाभिनिवेशो उत्सूत्रप्ररूपको वाह मित्येका गर्हा स्वदोषप्रतिपत्तिरूपा गर्हा सर्वत्रेति गर्हाच दोषवर्जकस्यैव सम्यग्भवति नेतरस्येति दोषवर्जकजीव स्वरूपप्ररूपणाय सप्तदश चतुर्भङ्गो सूत्राणि व्यक्तानि केवल अलमस्तुनिषेधो भवतु य एवमाह सो लमस्ती ल्युच्यते निषेधकइत्यर्थः सचात्मनोदुर्नयेषु प्रवर्त्तमानस्यै को निषेधकः अथवा ॥ अलमयुत्ति ॥ समयभाषया समर्थो भिधीयते तत आत्मानो निग्रहे समर्थः कश्चिदिति १ एको मार्ग ऋजु रादा वतेपि ऋजुः प्रतिभाति तत्वतोपि ऋजुरेवेति पुरुषस्तु ऋजु पूर्वापरकालापेक्षया अंतस्तत्त्वबहिस्तत्त्वापेक्षया वेति क्वचित्तु ॥ उज्जुणामंगे उज्जमणेत्ति ॥ पाठ

रहा एवपिपस्मत्तिएगागरहा । चत्तारि पुरिसजाया पस्मत्ता तंजहा ञ्पणोणाममेगेञ्जलमंथून्नवइनोपरस्स परस्सणाममेगेञ्जलमंथून्नवइ नोञ्पणो एगेञ्पणोविञ्जलमंथून्नवइ परस्सवि एगेणोञ्पणोञ्जलमंथून्नवइ णोपरस्स । चत्तारि मग्गा पस्मत्ता तजहा उज्जुणाममेगेउज्जु उज्जुणाममेगेवंके वंकेणाममेगेउज्जु वंकेणाममे

एणे प्रकारेण दोषनी गर्हणाकरे ते जिने दोषशुद्धिकर्ही एहवी चिंतना ते चौथी गर्हा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष पपामां प्रवर्त्ततो जे पोतानुं आत्मा तेहने बारवाने समर्थ थाय पणि परना आत्माने पापथी बारवाने अलमंथू कहिये समर्थ नथाय १ । एक पुरुष परने पापथी बारवाने समर्थथाय पणि आत्माने वारी नसकै २ । एक पोताना आत्माने पणि पापथी बारवा समर्थ परने पणि पापथी बारवासमर्थ ३ । एक पुरुष आत्माने पणि पापथी बारवासमर्थ नथी परने पणि पापथी बारवा समर्थ नथी ४ ॥ च्यार मार्ग कह्या तेकहेछे एक मार्ग

સોપિ વહિસ્તવાન્તસ્તવાપેતયા આચ્ચેયઃ ૩ સ્તેમો નામૈકો માર્ગ આદૌ નિરુપદ્રવતયા પુનઃ સ્તેમોતે તથૈવ પ્રસિદ્ધિતવાચ્યાં વા ૪ એવ પુરુષોપિ ક્રોધાદ્યુપ  
દ્રવરહિતતયા સ્તેમઃતિ ૫ સ્તેમોભાવતો ઽનુપદ્રવત્વેન સ્તેમરૂપ આકારેણ માર્ગઃ પુરુષસુ પ્રથમો ભાવદ્રવ્યલિદ્ગયુક્તઃસાધુ દ્વિતીયઃકારુણિકો દ્રવ્યલિગવર્જિતઃ

વંકે । એવામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયા પસ્યતા તંજહા ઉજ્જુણામમેગેઉજ્જુ ૪ । ચત્તારિ મગ્ગા પસ્યતા તંજહા  
સ્વેમેણામમેગેસ્વેમે સ્વેમેણામમેગેસ્વેમે ૦ ૪ । એવામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયા પસ્યતા તંજહા સ્વેમેણામમેગેસ્વે  
મે ૪ । ચત્તારિ મગ્ગા પસ્યતા તંજહા સ્વેમેણામમેગેસ્વેમરૂવે સ્વેમેણામમેગેસ્વેમરૂવે ૪ । એવામેવ ચત્તારિ

આદિમા સરલ અંતમા પણિ સરલ ૧ । એક માર્ગ પ્રથમ સરલ પહે અતમા વક્ર ૨ । એક માર્ગ આદિમા વક્ર પહે સરલ ૩ । એકમાર્ગ આદિમા પણિ  
વક્ર અતમા પણિ વક્ર ૪ ॥ ઇણ દૃષ્ટાંતે ચ્યાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા તે કહેહે એક પુરુષ આદિમા પણિ તત્ત્વનું ધણી પહે અતમા પણિ તત્ત્વનું જાણ ૧ ।  
એમ ૪ । જાંગા જાણવા ૪ ॥ વલી ચ્યાર પ્રકારના માર્ગ કહ્યા તેકહેહે એક માર્ગ આદિમા સ્તેમ ઉપદ્રવરહિત પહે પણિ સ્તેમ ઉપદ્રવરહિત ૧ । એક  
માર્ગ આદિમા સ્તેમ અતે અસ્તેમ ઉપદ્રવસહિત ૨ । એમ ચ્યાર જાંગા ૪ ઇણ દૃષ્ટાંતે ચ્યાર પ્રકારે પુરુષ કહ્યા તેકહેહે એક પુરુષ આદિમા સ્તેમ ક્રોધાદિ  
ઉપદ્રવરહિત અંતે પણિ સ્તેમ એમ ૪ । જાંગા કહવા ૪ ॥ વલી ચ્યાર પ્રકારના માર્ગ કહ્યા તે કહેહે એક માર્ગ સ્તેમ ઉપદ્રવરહિત અને સ્તેમરૂપ આ  
કારે રૂઢોસમો ૧ । એક સ્તેમમાર્ગ નિરુપદ્રવ અને અસ્તેમરૂપ વિપમ આકાર એમ ચ્યાર ભાંગા ૪ ॥ ઇણ દૃષ્ટાંતે ચ્યાર પ્રકારના પુરુષ કહ્યા તેકહેહે  
એક પુરુષ સ્તેમ જાવથી સાધુ ગુણ સહિત અનેદ્રવ્યથી સાધુવેષ સહિત ૧ । ગુણયુક્ત પણિ કારણે વેષરહિત ૨ એક દ્રવ્ય વેષ સહિત ગુણરહિત ૩ ।

साधुरेव तृतीयो निऋव चतुर्थीन्यतीर्थिको गृहस्थोवेति ७ सवुक्ताः शङ्का वामो वामपार्श्वव्यवस्थितत्वात्प्रतिकूलगुणत्वाद्वा वामावर्त्तं प्रतीतं एवं दक्षिणाव  
 र्त्तोपि दक्षिणपार्श्वनियुक्तत्वाद्दनुकूलगुणत्वादिति ८ पुरुषसु वामः प्रतिकूलस्वभावतया वामएवा वर्त्तते प्रवर्त्ततइति वामावर्त्तो विपरीतप्रवृत्ते रेकोन्यो वा  
 मएव स्वरूपेणकारणवशा दक्षिणावर्त्तो ऽनुकूलप्रवृत्ति रन्यसु दक्षिणो ऽनुकूलस्वभावतया कारणवशा द्दामावर्त्तो ऽनुकूलप्रवृत्ति रित्येव चतुर्थीपीति ९ धू  
 मशिखा वामा वामपार्श्ववर्त्तितया ऽनुकूलस्वभावतयावा वामत एवावर्त्तते या तथा चलना त्वा वामावर्त्ता १० स्त्रीपुरुषवद् व्याख्येया कबुट्टान्ते सत्यपि

पुरिसजाया पस्यता तजहा खेमेणाममेगेखेमरूवे ० । चत्वारि सवुक्ता पस्यता तजहा वामेणाममेगेवामा  
 वत्ते वामेणाममेगेदाहिणावत्ते दाहिणेणाममेगेवामावत्ते दाहिणेणाममेगेदाहिणावत्ते । एवामेव चत्वारि पु  
 रिसजाया पस्यता तजहा वामेणाममेगेवामावत्ते ० । चत्वारि धूमसिहान् पस्यतान् तजहा वामाणाममेगा

एक द्रव्यवेपे रहित गुणथी रहित ४ ॥ प्रथम बोले साधु बीजें बोले पणिसाधु त्रीजोनिऋव चौथो अन्यमती ४ ॥ एम च्यार जांगा ॥ च्यार शंख  
 कह्या तेकहेछे । एक शंखने वाम पासे आवर्त्त रह्याछे पणि वाम दुसदेवामाटे १ । एक डावोछे पणि जीमणुं आवर्त्त होय तेसुसदाई होय २ ।  
 एक दक्षिण जीमणुछे पणि आवर्त्त डावो ने पणि दुखदाईछे ३ । एक शस दक्षिण जीमणे पासे पाप अने आवर्त्त तेहने चणो जलोकहिये ४ ॥  
 इण दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुषनु स्वजाव वांस वाको अने वामावर्त्त प्रवर्त्तित ते पणि वाको १ । एम च्यार जांगा ४ ॥  
 च्यार धूमशिखाकही तेकहेछे । एक धूमशिखा वामडावीछे अनेवाम आवर्त्तछे १ । इम च्यार जांगा शंखनीपरे ४ ॥ एणे प्रकारे च्यार स्त्रीकही

धूमशिखादिदृष्टान्तानां स्त्रीदार्ष्टान्तिके शब्दसाधर्म्येणो पपत्रतरत्वा जेदेनो पादानमिति ११ एव मग्निशिखापि १२ वातमण्डलिका मण्डलेनो र्जप्रवृत्तो वायुरिति इहच स्त्रियो मानिन्योपतापचापन्यस्वभावा भवन्ती त्वभिप्रायेण तासु धूमशिखादृष्टान्ततयो पन्यास इति उक्तं च चवलामडलणसीला सिणेह परिपूरियावियावेइ दीवयसिहिव्वमहिंला लडप्पसराभयंदेइत्ति ॥ १७ ॥ वनखण्डसु शिखाव ववर वामावर्त्तो वामचलनेन जातत्वा हायुनावा तथा धूयमा नत्वादिति १६ पुरुषसु पूर्ववत् १७ अनुकूलस्वभावो नुकूलप्रवृत्ति शानन्तर पुरुषउक्त एवभूतय निर्यथः सामान्येना नुचितप्रवृत्तावपि नस्वाचारमतिक्राम

वामावत्ता ४ । एवामेव चत्वारि त्रियानु पस्यत्ता तजहा वामाणाममेगावामावत्ता ० । चत्वारि ष्ण्णिसि हाउं पस्यत्ताउं तंजहा वामाणाममेगावामावत्ता ४ । एवामेव चत्वारि त्रियानु पस्यत्ताउं तजहा वामाणा ममेगावामावत्ता ४ । चत्वारि वायमळलिया प० त० वामाणाममेगावामावत्ता । एवामेव चत्वारि त्रिया उं पस्यत्ताउं त० वामाणाममेगावामावत्ता ० । चत्वारि वणखळा पस्यत्ता तंजहा वामेणाममेगेवामावत्ते ४ ।

तेकहेछे । एक वाम वक्र स्वजावळे अने वाम प्रवर्त्तंछे एम च्यार जागा जाणवा ४ ॥ च्यार प्रकारे अग्नि शिखाकही ते कहेछे । एक शिखावामळे आवर्त्त पणि वामळे एम च्यार भागा ४ ॥ इण दृष्टाते च्यार स्त्रीकही ते कहेछे । एक वाम अने वामावर्त्त च्यार जांगा कहवा ४ ॥ च्यार वायुनी मडली कही ऊचो वायु मडलचाले ते कहेछे एक वायुमडली वामपासेछे अने वाम आवर्त्तछे इम च्यार जागा ४ ॥ इमज च्यार प्रकारनी स्त्रीकही तेकहेछे । एक वाम अने वामावर्त्त एम च्यार जांगा ४ ॥ च्यार वन रांड कह्या तेकहेछे । एक वन वामळे ऋावे पासेछे अने वामावर्त्त वायरे करी

तीतिदर्शयन्नाह ॥ चउहीत्यादि ॥ स्फुटं किन्तु आलप न्रीष त्रथमतयावा जल्पन् संलपन् मिथोभाषणेन नातिक्रामति नलङ्घयति निर्ग्रन्थाचारं एगोएगत्थि एसद्धिनेवचिद्धेनसलवे विमेषत' साध्या इत्येवंरूप मार्गप्रश्नादीनां पुष्टालम्बनत्वा दिति तत्रमार्गं पृच्छन् प्रश्ननोयसाधर्मिकगृहस्थपुरुषादीनामभावे हेआर्ये कोस्माकमितो गच्छता मार्गं इत्यादिना क्रमेण मार्गंवा तस्यादेशयन् धर्मशीलेय मार्गस्ते इत्यादिनाक्रमेण अशनादिचादद धर्मशीले गृहाणेद अशनादीत्ये वतथा अशनादि दापयन् आर्ये दापयाम्ये तत् तुभ्यं आगच्छेह गृहादा वित्यादिविधिनेति तथा तमस्काय तम इत्यादिभिः शब्दैर्व्याहर नातिक्रामति भा षाचार यथार्थत्वादिति तानाह ॥ तमुक्तायेत्यादि ॥ सूत्रत्रय सुगम नवरं तमसो ऽत्कायपरिणामस्वरूपस्या न्यकारस्य कायः प्रचय स्तमस्कायो यो ह्यस

एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पसुत्ता तंजहा वामेणाममेगेवामावत्ते ० । चउहिंठाणेहिं णिग्गंथे णिग्गंथिं  
 च्चालवमाणेवा सलवमाणेवा णाइक्कमइ तं० पंथंपुच्छमाणे पंथंदेसमाणे च्चसणवापाणंवाखाइमंवासाइमंवा  
 दलयमाणे दवावेमाणेवा । तमुक्कायस्सणं चत्वारि णामधेज्जा प० तं० तमेइवा तमुक्काएइवा च्चंधकारेइवा

डावे पासे वलेछे च्यार ज्ञांगा जाणवा ४ ॥ एम च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे एक पुरुष वाम स्वजावछे आचरणा पणि वामछे एम च्यार ज्ञांगा १७ ॥ च्यार थानके साधु एकली साध्वीने वोलावतो सलापकरतो आचार प्रति अतिक्रमे नथी ते कहेछे साधु गृहस्थ पुरुषने अजावे पूछे हे आर्यो उहुं जाउं छुंते मार्गछे । अथवा हेधर्मशीले आमार्गछे एम साधवीनेमार्गदेखाडे अशन पान खादिम स्वादिम देतो धर्मशीले लैअशनादि देवाडती हे आर्येए तुभ्भने अपावीस आवजे इमकहतो ४ ॥ तमस्कायने तम इमकहतां पणि आचार अतिक्रमे नही यथार्थमांटे ॥ तमस्कायना च्यार नाम



ख्याततमस्या रुणवराभिधानद्वीपस्य बाह्यवेदिकान्ता दक्षिणोदायं समुद्रं द्विचत्वारिंश योजनसहस्रा अथवाग्राह्यो परितना ज्जलांता देवप्रदेशिकया श्रेण्या  
समुत्थितः सप्तदशैकविंशत्यधिकानि योजनशतानि ऊर्ध्वं सुत्पत्य तत स्थिर्यं विस्तृणन् सौधर्मादींश्चतुरो देवल्लोका नावृत्त्यो र्ध्वमपि ब्रह्मलोकस्य रिष्टविमा  
नप्रस्तुटं संप्राप्त स्तस्य नामा न्येव नामधेयानि तमइति तमोरूपत्वा दिति रूपप्रदर्शने वा विकल्पे तमोमात्ररूपताभिधायका न्यायानि चत्वारि नामानि  
तथा पराणि चत्वार्येवा त्वंतिकतमोरूपताभिधायकानीति लोके अयमेवान्धकारो नान्योस्ती दृशइति लोकान्धकारः देवाना मध्य न्धकारो सौ तच्छरीर  
प्रभाया अपि तत्राप्रभावनादिति देवान्धकारः अतएव तेबलवतो भयेन तत्र नश्यतीति श्रुतिरिति तथा न्यानि चत्वारि कार्याश्रयाणिवा तस्य परिहृनना  
त् परिघो ऽर्गला परिघइव परिघोवा तस्य परिघो वातपरिघ स्तथा वात परिघवत् क्षोभयति हतमार्गं करोतीति वातपरिक्षोभः वातएव वा परिघ स्त

महंधकारेइवा । तमुक्त्वायस्सण चत्वारि णामधेज्जा पस्सत्ता तंजहा लोगंधयारेइवा लोगतमसेइवा देवंधया  
रेइवा देवतमसेइवा । तमुक्त्वायस्सणं चत्वारि णामधेज्जा पस्सत्ता तंजहा वायफलिहेइवा वायफलिहखोजे

कह्या तेकहेछे । तमकहीये १ । तमस्कायकहिये अप्कायरूपछे तेमाटे कायकह्यो २ । असंख्यातमो अरुणवरनामे द्वीपछे तेहनी बाहिरली वेदिकाना  
छेह्नाथी अरुणोदधिसमुद्रमां बेतालीस ४२ हजार योजन अथवाग्राह्ये त्रिहा पाणीथी एक प्रदेशानी श्रेणिये तम अंधकार नीकल्यो ते सतरेसे १७२१  
इकवीस योजन ऊचो जईने त्रीछो विस्तस्यो सौधर्मआदिक च्यार देवल्लोक आवरीने ऊचो ५ पाचमा ब्रह्मदेवल्लोकना रिष्टविमानना प्रतरताई पो  
हतोछे अधकारकहिये ३ । महाधकार पणि कहिये ४ ॥ वली तमस्कायना च्यार नामकहेछे ॥ लोकाधकार कहिये लोकमा एज अधकारछे १ । लो

क्षोभयति यस्ततथा पाठान्तरेण वातपरिक्षोभइति क्वचिदेवपरिषोदेवपरिक्षोभइति चाद्यपदद्वयस्थाने पठ्यते देवाना मरणमिव बलवद्भयेन नाशनस्थानत्वा  
 य सदेवारण्यमिति देवानां व्यूहः सागरादिः साग्रामिक व्यूहइव यो दुरधिगमत्वा त्सादेवव्यूहइति तमस्कायस्वरूपप्रतिपादनायैव ॥ तमुक्तायेणमित्यादि ॥  
 सूत्र गतार्थं द्विन्तु सौधर्मादी नावृणो त्यसौ कुक्कुटपञ्जरसंस्थानसंस्थितस्य तस्य प्रतिपादना दुक्तच तमुक्ताएण भते किंसंठिए पन्नत्ते गोयमा अहेमन्नगमू  
 लसंठिए उषिं कुक्कुडपंजरसंठिए ॥ पस्यत्तेत्ति ॥ पूर्व गतमस्कायो वचनपर्यायै रुक्तो धुना र्थपर्यायैः पुरुषनिरूपयता पञ्चसूत्री गदिता सुगमाच नवरं कश्चि  
 त्साधु गच्छवासी सम्प्रकट मेव गीतार्थप्रत्यक्षमेव प्रतिसेवते मूलगुणा उत्तरगुणान्वा दर्पत, कल्पेनवेति सम्प्रकटप्रतिसेवी त्येकः एव मन्यः प्रच्छन्न प्रतिसे  
 वतइति प्रच्छन्नप्रतिसेवी अन्यस्तु प्रत्युत्पन्नेन लब्धेन वस्त्रशिथ्यादिना प्रत्युत्पन्नोवा जातः स न शिष्याचार्यादिरूपेण नन्दति यः सप्रत्युत्पन्ननन्दी अथवा नन्दन

इवा देवरस्मैइवा देवव्यूहेइवा । तमुक्ताएणं चत्वारि कप्पे आवरित्ता चिठ्ठइ तंजहा सोहम्मीसाणं सणंकुमा  
 रमाहिंद । चत्वारि पुरिसजाया पस्यत्ता तंजहा संपागळपळिसेवीणाममेगे पच्छसपळिसेवीणाममेगे पढुप्प

कतमकहिये २ । देवांधकार कहिये रुद्रराजीछे जेमांटे ३ । देवतमकहिये ४ ॥ वली तमस्कायना ४ नाम कहेछे ॥ वातफलिका वायनी जोगलसरी  
 खो १ वातफलकाक्षोज वायुना मार्गनें हणे तेमांटे २ । देवआण्य अटवी जयथी देवताने नाशवानुं स्थानकछे जेमांटे ३ । देवव्यूह संग्रामना व्यूह ते  
 सेना तेहनीपरे दुरधिगममाटे ४ ॥ तमस्काय च्यार देवलोकने आवरी व्यापीने रहीछे तेकहेछे ॥ सौधर्म १ । ईशान २ । सनत्कुमार ३ । माहेद्र ४ ॥  
 साधु आश्रीने च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ एक साधु अकल्पवस्तुने गीतार्थसमक्ष सेवे तेसप्रकट प्रतिसेवी १ । एक प्रच्छन्न छानु पापसेवे २

वन्दि रानन्दः प्रत्युत्पन्नेन नन्दि र्यस्य स प्रत्युत्पन्ननदि स्तया प्राघूर्णकशिप्यादीना मात्मनोवा निस्सरणेन गच्छादे निर्गमेण नन्दति यो नन्दिर्वा यस्य स तथा पाठान्तरेण तु प्रत्युत्पन्न यथालब्ध सेवते भजते नानुचित विवेचयतीति प्रत्युत्पन्नसेवीति ॥ जइत्तत्ति ॥ जेत्री जयति रिपुबल एका नपराजेत्री न प राजयते रिपुबला न भज्यते द्वितीयातु पराजेत्री परेभ्यो भङ्गभाक् अतएव नो जेत्रीति तृतीया कारणवशा दुभयस्वभावेति चतुर्थी त्वविजिगीषुत्वा दनुभ ग्रूपेति पुरुषः साधुः सजेता परीषहाणां नतेभ्यः पराजेता उद्विजते भज्यत इत्यर्थो महावीरवदिति एको द्वितीयः कण्ठरीकवत् तृतीयस्तु कदाचिज्जेता

स्मणंदीणाममेगे निस्सरणणंदीणाममेगे । चत्तारि सेणानु पस्सत्ता तं० जइत्ताणाममेगाणोपराजिणिह्ता परा जिणित्ताणाममेगाणोजइत्ता एगाजइत्ताविपराजिणिह्तावि एगाणोजइत्ताणोपराजिणिह्ता । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा जइत्ताणाममेगेणोपराजिणिह्ता ० ४ चत्तारि सेणानु पस्सत्तानु तजहा जइत्ताणा

एक प्रत्युत्पन्ननंदीजे आचार्यशिष्यादिपाभ्यो नंदे आणद उपजे ३ । एक गच्छादिकमां नीकलवे नंदे हर्षथी ४ ॥ च्यार सेना कही तेकहेछे ॥ एक सेना जैत्री जे रिपुबलने जीते अने रिपुबलथी जागे नाशे नही १ । एक सेना रिपुबलथी जागे नाशे एतलाजमाटे जैत्री नही जीते एहवीनही २ । तीजी जीते पणि कारणविशेषे रिपुथी नाशे जागे पणि ३ । एकसेना जीते पणि नही नाशे जागेनही ४ ॥ एणे दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ाकहेछे ॥ एक साधु परिसहनी सेनाने जीते पणि परीसहथी भागे नही श्रीवीरवत् १ । बीजे जागें कण्ठरीकवत् । त्रीजे भांगे शीलकराजरिपि । तीथे जागे जेहने परिस्सहनथी ऊपना एहवासाधु ४ । इम ४ जागा जाणवा ॥ बली च्यार सेना कही तेकहेछे । एकसेना एक बेलारिपुजीतीने

कदाचि कर्मवशात् पराजिता शैलकराजर्षिवत् चतुर्थस्तु अनुत्पन्नपरीषद्भ्यो जित्वा एकदा रिपुबलं पुनरपिजयतीत्येका अन्याजित्वापराजयते भज्यते अन्या पराजित्य परिभज्य पुनर्जयति चतुर्थीतु पराजित्य परिभज्य कदापुनः पराजयते पुरुषस्तु परीषद्वादिष्वेव चितनीय इति जेतव्या श्रेष्ठ तत्त्वतः कषाया एवेति तत्स्वरूप दर्शयितुकामः क्रोधस्योत्तरत्रोपदर्शयिष्यमाणत्वा न्यायादिकषायवयप्रकरणमाह ॥ चत्तारौत्वादि ॥ प्रकट किन्तु केतनं सामान्येन वक्रवस्तु पुष्पकरण्डस्यवा सम्बन्धि मुष्टिग्रहणस्थान वशादिदलक तच्च वक्रं भवति केवलमिह सामान्येन वक्रं वस्तु केतनं गृह्यते तत्र वशीमूलं च तत्केतनं च वंशीमूलकेतनमेव सर्वत्र नवर मेढविषाण मेघशृंग गोमूत्रिका प्रतीता ॥ अवलेहणियति ॥ अवलिख्यमाणस्य वशशलाकादे वा प्रतन्वोत्वक् सा वलेखनिके

ममेगाजयइ जइत्ताणाममेगापराजिणइ पराजिणिताणाममेगाजयइ पराजिणिताणाममेगापराजिणइ ४ ।  
 एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० जइत्ताणाममेगाजयइ । चत्तारि केष्णुणा पस्सत्ता तं० वंसीमूलकेष्णुणए  
 मेढविसाणकेष्णुणए गोमुत्तिकेष्णुणए अविलेहणियाकेष्णुणए । एवामेव चउत्तिहा माया पस्सत्ता तं० वंसीमूल

बली कामपडेजीते १ । एकसेना प्रथम जीतीने कोइ बेला पछे जागेनाशे २ । एकसेना प्रथम नाशीजागीने बली कोइसमे रिपुने जीते ३ । एकसेना नाशी जागीने पछे पणि नाशेजागे ४ ॥ एणे प्रकारे चार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहेछे ॥ इमज परीसहने आश्रीने एकसाधु परीसहने जीतीपछे पणि जीते इम ४ जागाजाणवा ॥ जीतवा ते तत्त्वथी कषायनो जीतवो तेकहेछे ॥ चार केतन कह्या केतनते वक्र बाधी वस्तुने कहीये तेकहेछे ॥ वंसी मूलकेतन तेवासनुं मूलवक्रहोय १ । मेढविषाणकेतन तेमेढानुं सीगडुं वक्रहोय २ । गोमुत्ति केतनते गायचालती मूते तेवक्रहोय ३ । अवले

ति वंशीमूलकेतनकादिसमतात् मायाया स्तुता मनार्जभेदा तथाहि यथा वंशीमूल मतिगुणिलयक भेगं कस्यचि आयापी त्वेव मत्पात्तरात्पतमा नार्जयत्वेना न्यापि भावनीयेति इत्यद्या नन्ताशुभम्यगलास्थानावरणसंज्वलनरूपा कृमेण ज्ञेया पलेक मिल्यन्ते तेनैवा नन्तानुजभिग्या उद्देशेपि देयत्वादि न निरुध्यते एवं मानादसोपि वाचना न्तरैत पूर्व बोधमामसूत्राणि ततो मायासूत्राणि तत्र बोधसूत्राणि चत्वारिरार्द्धापो पयत्तापो तजरा पय्यरार्द्ध पृथगिरार्द्ध रेणरार्द्ध धनरार्द्ध एवामेव चउत्विष्टे कोहे इत्यादि मायासूत्राणि चा धोतानि फलसूत्रे अनुपयिष्ठ स्तद्वदय यत्तीति शिलागिकारः शैलः सचासी स्तभाश स्थाणुः शैलस्तभाः एवमत्येपि नयर मणि दारुचप्रतोत तिनिशो वक्ष्यिषेय स्तस्यलता कम्पा तिनिशलता साधा लंतमपीति मानस्यापि शैल

केचुणसमाणा जाव शुवलेहणियाकेचुणसमाणा ० । वंसीमूलकेचुणसमाणंमायंचुणुप्पविठेजीवेकालंकरेइणे रइएसु उववज्जइ मेंढविसाणकेचुणसमाणंमायमणुप्पविठेजीवे कालंकरेइ तिरिस्कजोणिएसुउववज्जइ गोमु त्तिचं जाव कालंकरेइ मणुस्सेसु उववज्जइ शुवलेहणिया जाव देवेसु उववज्जइ । चत्वारि थंजा प० त० सेलथं

एणिया केतनते बासनीलाल ऊपरली उत्तारे ते पणिकांईक वक्तव्योय ४ ॥ एणो प्रकारे प्यार प्रकारनी मायाकली तेकहेले ॥ एक वंशीमूल केतनस मान वंसमूलने गुप्त वक्तताहोय तिमकोईकने गुप्तमायाहोय कपटहोय । यावत् मेपण्ण सरिरी गोमूनिक्का समान एक एकथी अल्पथोडी थोडी जाणावी । वंशीमूल केतनसमान मायाकरी प्रविष्टसहित जीव मरणापामे ते नारकीमां ऊपजे १ । मेपण्ण समान मायाइं प्रविष्टसहित जीव कालकरे ते प्राणी तिर्य्यचनी योनिमा ऊपजे २ । गोमूनिक्का समान मायासहित कालकरे ते मनुष्यमां उपजे ३ । अवलेही लालसमान मायाये कालकरे ते

स्तभादिसमानता तद्वतां नमनाभावविशेषात् ज्ञेयेति मानो प्यनन्तानुबंधादिरूपः क्रमेण दृश्यः तत्फलसूत्रं व्यक्त कृमिरागे वृद्धसम्प्रदायो य मनुष्यादीनां रुधिर गृहीत्वा केनापि योगेन युक्त भाजने स्थाप्यते तत स्तत्र कृमय उत्पद्यन्ते तेच वाताभिलाषिण श्लिद्रनिर्गता आसन्ना भ्रमन्तो निर्हारलाला मुंचति ताः कृमिसूत्र भण्यते तच्च स्वपरिणामरागरजित मेव भवति अन्येभणति येरुधिरकृमय उत्पद्यते तान् तत्रैव मृदित्वा कचवर मुत्तार्य तद्रसे किञ्चित् योग प्रक्षिप्य पट्टसूत्र रंजयति सच रसः कृमिरागो भण्यते अनुत्तारीति तत्र कृमीणां रागो रजकरस' कृमिरागस्तेन रक्त कृमिरागरक्त एवं सर्वत्र नवरं

ज्ञे अष्ठिथज्ञे दारुथंज्ञे तिणिसलयाथज्ञे । एवामेव चउल्लिहे माणे पस्यहे तं० सेलथंज्ञसमाणे जाव तिणिसल याथंज्ञसमाणे । सेलथंज्ञसमाणमाणंअणुप्पविठेजीवेकालंकरेइ णेरइएसुउववज्जाइ एव जाव तिणिसलयाथंज्ञ समाणमाणंअणुप्पविठेजीवेकालंकरेइ देवेसुउववज्जाइ । चत्तारि वल्ल्या पस्यत्ता तजहा किमिरागरत्ते कदम

देवतामा उपजे ४ ॥ चार थंज्ञ कहा तेकहेछे ॥ एक शैलथंज्ञ पाषाणनोथंभ १ । अस्थिहाडनोथंज्ञ २ । लाकडानोथंभ ३ । तिनस वृक्षविशेष तेहनी लतानोथंज्ञ ४ ॥ एह ४ थंभ सरीखो चार प्रकारनो मानकह्यो तेकहेछे ॥ शैल थंज्ञसमान यावत् तिणिसलता समान थंज्ञसरीखो ॥ शैलथंज्ञसमाने प्रविष्टसहित जीव कालकरे ते नरकमाऊपजे । इम यावत् माननीपरे तिनसलता थंज्ञसमानमाने प्रविष्टसहित जेजीव कालकरे ते देवलोक्ने विषे ऊपजे ॥ चार प्रकारना वस्त्र कहा तेकहेछे ॥ कृमिरागतेस्त्राजाविक रातापुद्गलनु नीपनु वस्त्र केईक कहेछे मनुष्यना लोहीमा कीडा उपजेछे तेतेह माज मर्दाने कचरीने मध्ये कांईकयोग घातीने पट्टसूत्ररगवे तेकृमिरागरक्तवस्त्र १ । कदम गोबर प्रमुखनो तेरागरग्युं २ । खंजनते दीवानी कली

कर्मो गोवाटादीनां खञ्जनं दीपादीनां हरिद्रा प्रतीतैवेति कृमिरागादिरक्तवस्त्रसमानता च लोभस्या नन्तानुबन्धादि तज्जेदवतां जीवानां क्रमेण दृढही  
 नहीनतरहीनतमानुबन्धित्वा तथाहि कृमिरागरक्त वस्त्र दग्धमपि न रागानुबन्धं मुचति तज्जस्मनोपि रक्तत्वा देवं योमृतोपि लोभानुबन्धं न मुचति तस्या  
 भिधीयते लोभः कृमिरागरक्तवस्त्रसमानो ऽनन्तानुबन्धो चेति एव सर्वत्र भावना कार्येति फलसूत्र स्पष्ट इह कषायप्ररूपणागाथाः जलरेणुपुटविषव्य  
 राईसरिसोचउव्विहीकोही तिणसलयाकठुठिय सेलथभोवमोमाणो ॥ १ ॥ मायावलहिगोमु त्तिमेढसिगघणवसमूलसमा लोहीहलिइखजण कइमकि  
 मिरागसारित्थो ॥ २ ॥ पखवउमासवच्छर जावज्जोवाणुगामिणोकमसो देवनरतिरियनारथ गइसाहणहेयवोभणियत्ति ॥ ३ ॥ अनन्तर कषायाः प्रज्ञ

रागरत्ते खंजणरागरत्ते हलिद्वारागरत्ते । एवामेव चउव्विहे लोजे पखत्ते तंजहा किमिरागरत्तवत्थसमाणे क  
 ह्मरागरत्तवत्थसमाणे खंजणरागरत्तवत्थसमाणे हलिद्वारागरत्तवत्थसमाणे । किमिरागरत्तवत्थसमाणलोत्तम  
 णुप्पविठेजीवेकालंकरेइ नेरइएसु उववज्जइ तहेव जाव हलिद्वारागरत्तवत्थसमाणं लोत्तमणुप्पविठेजीवे कालं

ते रागे रंग्यु ३ । हलदीने रागे रंग्यु ४ ॥ इण प्रकारे चार जेदनो लोत्त कट्थो तेकहेळे कृमिरागरक्त वस्त्रसमान एक लोत्त कट्थो कृमिरागरक्त  
 वस्त्र बल्यो पणि रग नमूकै तेहनी जस्म पणि राती होय तिम मूत्रो पणि लोत्त नमूकै १ । कर्मरागरक्त वस्त्र समान बीजोलोत्त २ । सजन दी  
 पकलिकासमान वस्त्र सरीखो तीजो लोत्त ३ । हरिद्रारागरक्त वस्त्र समान चौथो लोत्त ४ ॥ कृमिरागरक्त वस्त्र समान लोत्तप्रविष्ट जीव काल करे  
 ते नरकमा उपजै । तिम यावत् पूर्वनी परें हरिद्रारागरक्त वस्त्र समान लोत्तप्रविष्ट जे जीव काल करे ते देवलोकमा उपजै ॥ एह चार क्रोधथी स

प्ताः कषायैश्च संसारो भवतीति संसारस्वरूपमाह ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ व्यक्तं किन्तु संसरणं संसारः मनुष्यादिपर्याया नारकादिपर्यायगमनमिति नैरयिक प्रायोग्ये ष्वायुर्नामगोत्रादिषु कर्मसू द्यगतेषु जीवो नैरयिक इति व्यपदिश्यते उक्तञ्च नेरइएण भंते नेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ गो यमा नेरइएनेरइएसु उववज्जइत्ति ततो नैरयिकस्य संसरणं मुत्पत्तिदेशगमनं मपरापरावस्थागमनवा नैरयिकसंसारः अथवा संसरंति जीवा यस्मिन्नसौ संसारो गतिचतुष्टयं तत्र नैरयिकस्या नुभूयमानगतिलक्षणः परम्परया चतुर्गतिकोवा संसारो नैरयिकसंसार एवमन्येऽपि उक्तस्वरूपश्च संसार आयुषि सति भवतीति आयुः सूत्रं तत्र एतिच यातिचे त्यायुः कर्मविशेष इति तत्र येन निरयमवे प्राणी धियटे तन्निरयायु रेव मन्यान्यपि उक्तस्वरूपञ्चा युर्भवे स्थितिकरोतीति भवसूत्रं कण्ठं केवलं भवनं भव उत्पत्तिर्निरये भवो निरयमवो मनुष्येषु मनुष्याणां वा भवो मनुष्यभव एव मन्यावपि भवेषुच सर्वेष्वपि हा रकाजीवा इत्याहारकसूत्रे तत्राक्रियते इत्याहारः अश्नतइत्य शन मोदनादि पीयतइति पानं सौवीरादि खादः प्रयोजनं मस्येति खादिम फलवर्णादि

करेइ देवेषु उववज्जइ । चउव्विहे संसारे प० तं० णेरइयसंसारे जाव देवसंसारे । चउव्विहे ण्णाउए प० तं० णेरइयण्णाउए जाव देवाउए । चउव्विहे ज्वे प० तं० णेरइयज्वे जाव देवज्वे । चउव्विहे ण्णाहारे प० तं०

सारवधे ते चार जेद संसारकह्यो तेकहेछे ॥ नारकीसंसार १ । यावत् तिर्य २ । मनुष्य ३ । अनेदेवतासंसार ४ ॥ चार प्रकारनुं आज्ञुं कह्यो तेकहेछे । नारकीनुं आज्ञुं १ । यावत् देवतानुं आज्ञुं ४ ॥ आर जेद ज्वे कह्यो तेकहेछे ॥ नारकीनुं ज्वे १ एम यावत् देवतानुं ज्वे ॥ चार जेद आहार कह्यो ते कहेछे । पूर्वोक्त चार गतिमां आहार छे तेमांठे आहारनुं सूत्र कहेछे । अशन अन्नादि सूखडी प्रमुख १ । पाणी सौवीस



खादः प्रयोजन मस्येति खादिमं ताम्बूलादि उपस्कियते नेने ल्युपस्कारो हिंवादि स्तेन सम्पन्नो युक्त उपस्करसम्पन्न स्तथा उपस्करण मुपस्कृतं पाक इत्यर्थं स्तेन सम्पन्न ओदनमण्डकादि उपस्कृतसम्पन्नः पाठान्तरेण नो उपस्करसम्पन्नो हिंवादिभि रसस्कृत ओदनादिः स्वभावेन पाकं विना सम्पन्न. सिद्धः द्राक्षादि स्वभावसम्पन्नः ॥ परिभुसियत्ति ॥ पर्युषितं रात्रिपरिवसन तेन सम्पन्न. पर्युषितसम्पन्नः इड्डरिकादिः यत स्तापर्युषितकलनीकता आन्तरसाः भवन्ति आरमनास्थिताम्रफलादिर्वेति अनन्तरोदिताः ससारादयो भावाः कर्मवताभवन्तीति ॥ चउव्विहेबधेत्यादि ॥ कर्मप्रकरण मारादेककसूत्रा एक ट चैतत् नवर सकषायत्वात् जीवस्य कर्मणो योग्याना पुद्गलाना वन्धन मादान वध स्तत्र कर्मणः प्रकृतयो शा भेदा ज्ञानावरणीयादयो ऽष्टौ तासा म्प्रक तेर्वा अविशेषितस्या कर्मणो बन्धः प्रकृतिबन्ध स्तथा स्थिति स्तासा मेवा वस्थान जघन्यादिभेदभिन्न तस्याः बन्धो निवर्तन स्थितिबन्ध स्तथा अनुभागे वि

असणे पाणे खाइमे साइमे । चउव्विहे आहारे प० त० उवस्करसंपन्ते उवस्कसंपन्ते सजावसंपन्ते परि  
कुसियसपन्ते । चउव्विहे बंधे प० त० पगइबंधे ठिइबंधे अणुजावबंधे पएसबंधे । चउव्विहे उवक्कमे प०

दिक २ । खादिम फलफलादि ३ । खादिम पान सुपारी लवंगादि ४ ॥ वली च्यार प्रकारनुं आहार कह्यो तेकहेछे उपस्करसंपन्न अग्निमा पाक्यो अन्नमाडादि १ । अथवा नोपस्करसपन्न तेहिंवादि संस्कार रहित ए पाठातर २ पर्युषित संपन्न तेवासीराखे रात्रिये नीपजे खाटोरस थाय आघो आठणादि ३ । स्वजावसंपन्न पाकादि वानी सिद्ध द्राक्षादि ४ ॥ च्यार प्रकारे कर्मनु बध कह्यो तेकहेछे । प्रकृति बंध ज्ञानावरणादि ८ कर्म प्रकृतिनो बंध १ । स्थितिबध तेकर्मनु कालमान २ । अनुजागबध तेकर्म प्रकृतिनो विपाक तीव्रादि रसबध ३ । प्रदेशबध जीव प्रदेशसाथे कर्म

पाक स्तोत्रादिभेदो रस इत्यर्थं स्तस्य बन्धो ऽनुभागबन्ध स्तथा जीवप्रदेशेषु कर्मप्रदेशानां मनन्तानां प्रतिप्रकृतिप्रतिनियतपरिमाणानां स्वस्यः सम्बन्धन सप्रदेशबन्धः परिमितप्रमाणगुडादिमोदकबन्धवदिति एवञ्च मोदकदृष्टात वर्णयन्ति वृद्धाः यथाकिल मोदकः कणिकागुडघृतकटुभांडादिद्रव्यवद् सन् कोपि वातहरः कोपि पित्तहरः कोपिमारकः कोपिवुद्धिकरः कोपिआमोहकरः एव कर्मप्रकृतिः काचित् ज्ञानमावृणोति काचित् दर्शनं काचित् सुखदुःखादि वेदनं मुत्पादयतीति तथा तस्यैव मोदकस्य यथा ऽविनाशभावेन कालनियमरूपास्थिति भवति एव कर्मणोपि तदभावेन नियतकालावस्थान स्थितिबन्ध स्तथा तस्यैव मोदकस्य यथा स्निग्धमधुरादि रेकगुणद्विगुणादिभावेन रसोभवति एव कर्मणोपि देशसर्वधातिशुभाशुभतीव्रमन्दादिरनुभावबन्ध स्तथा तस्यैव मोदकस्य यथा कणिकादिद्रव्याणां परिमाणवत्त्व एव कर्मणोपि पुद्गलानां प्रतिनियतप्रमाणता प्रदेशबन्ध इति उपक्रम्यते क्रियते नेनेति उपक्रमः कर्मणो बद्धत्वोदीरितत्वादिना परिणमनहेतु जीवस्य शक्तिविशेषो यो न्यत्र करणमिति रूढः उपक्रमेण चोपक्रमो बधनादीनां मारम्भः स्यादारम्भउपक्रम इतिव

तं० बंधणोवक्ष्ममे उदीरणोवक्ष्ममे उवसामणोवक्ष्ममे विप्परिणामनोवक्ष्ममे । बंधणोवक्ष्ममे चउल्लिहे प० तं०

प्रदेशानुबंधं तेलालूना दृष्टान्तथी जिम मोदक कणिका गुड घृत सुंठ्यादि द्रव्यथी बाध्यो ते कोई वातहर कोईक पित्तहर कोईक कफहर कोई बुद्धि कर कोईक मोहमदकरतिम कर्म प्रकृतिनो स्वज्ञाव कोईक ज्ञान आवरे कोईक दर्शन आवरे कोईक सुखदुःखादि उपजावे तिम तेहीज मोदकनी स्थितिनुं कालमान थाय तिमज कर्मनी पणि कालस्थितिछे जिम मोदकनु स्निग्ध मधुरादिरस तिम कर्मनु पणि रस शुंजाशुजादिछे ते अनुज्ञाग वध जिमते मोदकनु कणिकादि द्रव्यनुं परिमाण होय तिम कर्मना पणि पुद्गलनुं प्रमाणथाय तेप्रदेशबन्ध ४ ॥ च्यार प्रकारे उपक्रम करीये कर्मवं धादि जेणे उपक्रम जीवशक्तिविशेष ते उपक्रम कहिये ॥ वधनोपक्रम जे जीव प्रदेश अने कर्मपुद्गलने मांहीमाहि संबंध करवो १ । उदीरणोपक्रम

चनादिति तत्र बंधनं कर्मपुद्गलानां जीव प्रदेशानाञ्च परस्परं संबन्धन मिदञ्च सूत्रमात्रबद्धलोहशलाकासंबन्धोपम मवगंतव्यं तस्यो पक्रम उक्तार्थो बंधनोपक्रम आसकलितावस्थस्यवा कर्मणो वद्धावस्थीकरण संबन्धन तदेवो पक्रमो वस्तुपरिकर्मरूपो बंधनोपक्रमो वस्तुपरिकर्म वस्तुविनाशरूपस्याप्यु पक्रमस्या भिहि तत्वादिति एव मग्यत्रापि नवर मप्राप्तकालफलानां कर्मणा मुदये प्रवेशन मुदीरणा उक्तञ्च जकरणेणोक्तद्विय उदयेदिज्जइउदीरणाएसा । पगइष्ठियञ्च णुभाग पएसमूलुत्तरविभागा ॥ १ ॥ तथा उदयोदीरणानिधत्तनिकाचनाकरणाना मयोग्यत्वेन कर्मणो वस्थापन मुपशमनेति उक्तञ्च उव्वट्टणओपट्टण सकमणाइचतत्यकरणाइति । उपशमनाया सतीति प्रक्रमः तथाविधैः प्रकारैः कर्मणा सत्तोदयच्चयचयोपशमोदत्तनापवर्त्तनादिभि रेतद्रूपतयेत्यर्थः गिरि सरिदुपलग्यायेन द्रव्यक्षेत्रादिभिर्वा करणविशेषेणवा अवस्थान्तरापादन विपरिणामना इहच विपरिणामनावधनादिषु तदन्येष्व प्युदयादिष्व स्तीति सा मान्यरूपत्वात् भेदेनो क्तेति बंधनोपक्रमो बधनकरणं चतुर्धा तत्र प्रकृतिबधनस्यो पक्रमो जीवपरिणामो योगरूप स्तस्य प्रकृतिवधहेतुत्वा दिति स्थितिबधनस्यापि सएव नवरं कषायरूपः स्थितेः कषायहेतुकत्वादिति अनुभागबधनोपक्रमोपि परिणामएव नवर कषायरूपः प्रदेशबधनोपक्रमस्तु सएव योगरूप इति यत उक्तं जोगापयडिपएस ठिइअणुभागकसायओकुणइत्ति ॥ प्रकृत्यादिबधनाना मान्तमौहत्तोनान्तःकोटीकोटीरूपारभावा उपक्रमाइति एव

पगइबंधणोवक्कमे ठिइबधणोवक्कमे अणुजावबंधणोवक्कमे पएसबंधणोवक्कमे । उदीरणावक्कमे चउल्लिहे

ते उदयकालनथी आव्यो ते उदीरणाये कर्मने उदय आणवा ते २ उदयउदीरणा निधत्तनिकाचना करवायोग्य कर्मनुं थापवु ते उपशामनोपक्रम ३ । द्रव्यक्षेत्रादिकरणविशेषे करी अवस्थांतरनुं करवुं ते विपरिणामनोपक्रम ४ ॥ शुजनाअशुज अशुजनाशुज करवा ॥ बंधनोपक्रम ते च्यार प्रकारे कह्यो

मन्यत्रापि यन्मूलप्रकृतीनां सुतरप्रकृतीनां वा दलिकं वीर्यविशेषेण कृथो दये दीयते सा प्रकृत्युदीरणेति वीर्यादेव या प्राप्नोदयया स्थित्या सहा प्राप्नोदया स्थितिरनुभूयते सा स्थित्युदीरणेति तथैव प्राप्नोदयेन रसेन सहा प्राप्नोदयो रसो यो वेद्यते सा ऽनुभागोदीरणेति तथा प्राप्नोदयैर्नियतपरिमाणकर्मप्रदेशैः सहाप्राप्नोदयानां नियतपरिमाणानां कर्मप्रदेशानां यदेदन सा प्रदेशोदीरणेति इहापि कषाययोगरूपः परिणाम आरम्भोऽप्युपक्रमोपक्रममादयश्चत्वारोऽपि सामान्योपशमनोपक्रमानुसारेण वगन्तव्या प्रकृतिविपरिणामनोपक्रममादयोऽपि सामान्यविपरिणामनोपक्रमलक्षणानुसारेण ववोद्व्याः उपक्रमस्तु प्रकृत्यादित्वेन पुद्गलानां परिणामनसमर्थं जीववीर्यमिति ॥ अप्यावहुएत्ति ॥ अल्पञ्च स्तोत्रं बहुच प्रभूत मल्पबहु तद्भावा ल्यबहुत्वदीर्घत्वास

प० तं० पगइउदीरणोवक्त्रमे ठिइउदीरणोवक्त्रमे अणुजागउदीरणोवक्त्रमे पएसउदीरणोवक्त्रमे । उवसाम  
णोवक्त्रमे चउत्तिहे प० तं० पगइउवसामणोवक्त्रमे ठिइ अणुजाव पएस उवसामणोवक्त्रमे । विप्परिणाम  
नोवक्त्रमे चउत्तिहे प० तं० पगइ ठिइ अणुजाव पएस विप्परिणामनोवक्त्रमे । चउत्तिहे अप्यावहुए प० तं०

तेकहेछे ॥ प्रकृतिबंधनोपक्रम १ । स्थितिवंधनोपक्रम २ । अनुजागबंधनोपक्रम ३ । प्रदेशबंधनोपक्रम ४ । ए ४ उपक्रम कषाययोगरूप जाणवा  
एहथी उपक्रम उदीरणोपक्रम ते च्यार प्रकारे कह्यो तेकहेछे ॥ प्रकृतिउदीरणोपक्रम कषाययकीहीज थाय १ । स्थितिउदीरणोपक्रम आकर्षणे उद  
यअणवा २ । अनुजागउदीरणोपक्रम ३ । प्रदेशउदीरणोपक्रम ४ ॥ उपशामनोपक्रम ते च्यार प्रकार कह्यो तेकहेछे ॥ प्रकृतिउपशामनोपक्रम १ ।  
यावत् स्थिति अनुजाग प्रदेश उपशामनोपक्रम ४ विपरिणामनोपक्रम च्यार प्रकारे कह्यो तेकहेछे ॥ प्रकृति १ । स्थिति २ । अनुभाग ३ । प्रदेशवि

युक्तत्वेच प्राकृतत्वादिति प्रकृतिविषय मल्पबहुत्व वधापेक्षया यथा सर्वस्तोकप्रकृतिबधक उपशान्तमोहादि रेकविधबधक उपशमकादिसूक्ष्मसम्परायः षड् विधबधकत्वात् बहुतरबधकः सप्तविधबधक स्ततो षट्विधबधकइति स्थितिविषय मल्पबहुत्व यथा सव्वथोवो सजयस्स जहन्नओ ठिइबधो एगिदियवाय रपज्जत्तगस्स जहन्नओ ठिइबधो असखिज्जगुणो इत्यादि अनुभागप्रत्य ल्पबहुत्व यथा सव्वथोवाइ अणत्तगुणवुड्ढिठाणाणि असखेज्जगुणवुड्ढिठाणाणि अस खिज्जगुणाणि सखिज्जगुणवुड्ढिठाणाणि असखिज्जगुणाइ जावअणत्तभागवुड्ढिठाणाणि असंखिज्जगुणाणि प्रदेशाल्पबहुत्व यथा अडुविहबधगस्स यआउयभा गो थोवो नामगोयाण तुल्लो विसेसाहिओ नाणदसणावरणतरायाण तुल्लोविसेसाहिओ मोहस्स विसेसाहिओ वेयणिज्जस्स विसेसाहिओत्ति याप्रकृति व ध्नाति जीव स्तदनुभावेन प्रकृत्यतरस्थदलिक वीर्यविशेषेण यत्परिणामयति ससकम उक्तच सोसकमोत्तिभणइ जवधणपरिणओपओगेण पययतरस्थदलि य परिणामइतदणभवेजमिति ॥ १ ॥ तत्र प्रकृतिसकमः सामान्यलक्षणावगम्य एवेति मूलप्रकृतीना मुत्तरप्रकृतीनांवा स्थिते र्यदुत्कर्षणवा ऽपकर्षणवा प्रकृ

पगइअप्पावज्जाए ठिइ अणुजाव पएस अप्पावज्जाए । चउल्लिहे संकमे प० तं० पगइसंकमे ठिइ अणुजाव

परिणामनोपक्रम ४ ॥ एकषाययोगथी थाय ॥ च्यार प्रकारे अल्पबहुत्व कर्म आश्री कह्यो तेरुहेछे । प्रकृति विषयनुं अल्पबहुत्व वधादिकनी अपेक्षा थी १ । स्थिति विषयनु अल्पबहुत्व २ । अनुज्ञागअल्पबहुत्व ३ । प्रदेश अल्पबहुत्व ४ ॥ जघन्यस्थितिबध सयतीने एकेदीने बादरपर्याप्तने जघन्य सख्यातगुणो सर्वथी थोडो अनुज्ञाग रसबध सयतीने साधु थोडारसना कर्म बाधै तेहथी वधता असख्यात अनतगुणा थानक छे तिम प्रदेशना अल्पबहुत्वनी । आठ कर्मना बाधणहारने आयु प्रदेश बध थोडो नामगोत्र सरीखो काईक अधिको पणि ज्ञानदर्शनावरणी अंतरायनु तुल्य अधि को पणि मोहनी वेदनानु विशेषाधिक ॥ च्यार जेदे संक्रम कह्यो तेरुहेछे एक कर्म प्रकृतिमा बीजा कर्मनी प्रकृति परिणामे ते सक्रम कहिये ।

त्यतरस्थितौवा नयन सस्थितिसक्रम इति उक्तंच ठिइसकम्भोत्तिबुच्चइ मूलुत्तरपगइओयजाहिठिई उव्वट्टियावओव ट्टियावपगईनियावन्नंति ॥१॥ अनुभाग  
सक्रमोप्पेवमेव यदाह तत्थइपयंउव्व ट्टियावओवट्टियावअविभागा अणुभागसकमोए सोअन्नपगईनियावावित्ति ॥ १ ॥ अट्ठपयति ॥ अनुभागसक्रमस्वरूपनि  
र्धारण ॥ अविभागत्ति ॥ अनुभागा ॥ नियत्ति ॥ नीताइति यत्कर्मद्रव्य मन्यप्रकृतिस्वभावेन परिणामेन परिणाम्यते सप्रदेशसक्रम उक्तञ्च जदलियमन्नपगई  
निज्जइसोसकमोपएसस्सत्ति निधान निहितवा निधत्त भावेकर्मणिवात्तप्रत्यये निपातना दुद्धत्तनापवर्त्तनवर्जितानां शेषकरणानां मयोग्यत्वेन कर्मणो ऽव  
स्थापनं मुच्यते नितरां काचन वधनं निकाचितं कर्मणः सर्वकरणानां मयोग्यत्वेना वस्थापनं उक्तञ्चोभयसवादि सकमणापिणिहत्ती पणत्थिसेसाणिव  
त्तिइपरस्सत्ति निकाचनाकरणस्येति अपवापूर्ववदस्यकर्मण स्तप्तसमौलितलोहशलाकासवधसमानं निधत्त तप्तमिलितसकुट्टितलोहशलाकासवधसमानं नि  
काचितमिति प्रकृत्यादिविशेषः स्तूभयत्रापि सामान्यलक्षणानुसारेण नेयइति विशेषतो बन्धादिस्वरूपजिज्ञासुना कर्मप्रकृतिसग्रहणि रनुसरणीयेति इहा

पएस सक्रमे । चउच्चिहे निधत्ते प० तं० पगइनिधत्ते ठिइ अणुजाव पएस निधत्ते । चउच्चिहे निगाइए प०  
त० पगइनिगाइए ठिइनिगाइए अणुजावनिगाइए पएसनिगाइए । चत्तारिक्का प० तं० दविएएक्काए मा

प्रकृतिसंक्रम १ । स्थिति अनुज्ञाग प्रदेशसंक्रम ४ ॥ चार जेदे कर्मनुं निधत्त कह्यो तेकहेछे । लोहनी शलाका सोई एकठी काटें करी मली ते नि  
धत्त कहिये । तिमज कर्म प्रकृतिनिधत्त १ । स्थितिनिधत्त २ अनुज्ञागनिधत्त ३ । प्रदेशनिधत्त ४ ॥ चार जेदे निकाचित कर्म कह्यो काटे मली लो  
हनी शलाका तेज तपावी कूटी तेसवधसमान कर्म निकाचित तेकहेछे । प्रकृतिनिकाचित १ । स्थितिनिकाचित २ । अनुज्ञागनिकाचित ३ । प्रदेश

नन्तरमल्पबहुत्व सुक्तं तत्रात्यतमस्य मेक शेषं त्वपेक्षया बहु इत्यल्पबहुत्वाभिधायिन एककतिसर्वशब्दां यतुःस्थानके वतारयन् ॥ चत्तारौत्यादि ॥ सूत्रत्रय  
 माह एकसंख्योपेतानि द्रव्यादीनि सार्थिककप्रत्ययोपादाना देवकानि तत्र द्रव्यमेवेकक द्रव्येकक सचित्तादिभेदात् त्रिविधनिति ॥ माउयएकएत्ति ॥ मातृ  
 कापदैकक मेकांमातृकापद तद्वयाया उपपन्नेश्वेत्यादि इह प्रवचने दृष्टिपादे समस्तनयवाद्वोजभूतानि मातृकापदानि भवति तद्वयाया उपपन्नेश्वया विगमेश्वया  
 ध्रुवेश्वेति प्रमूनिवा मातृकापदानोव अत्राद्वलेवमादीनि सकलशब्दशास्त्रार्थव्यापारव्यापकत्वा मातृकापदानीति पर्यायैकक एकः पर्यायः पर्यायो विशेषे  
 षो धर्म इत्यनर्थान्तर सचानादिष्टो वर्णादिरादिष्टाणादिरिति सग्रहैककः शालिरिति अयमर्थसग्रहः समुदाय स्त माश्रित्यै कवचनगर्भशब्दप्रवृत्ति स्त  
 या चैकोपि शालिः शालि रित्युच्यते बहवोपि शालयः शालिरिति लोकेतथादर्शना दिति कचित्पाठः ॥ द्विएएकणत्यादि ॥ तत्र द्रव्ये विषयभूते एकक  
 इत्यादि व्याख्येयमिति कतीति प्रत्यगर्भापरिच्छेदवत् सख्यावचनो बहुवचनात् स्तत्र द्रव्याणिच तानि कतिच द्रव्यकति कतिद्रव्याणीत्यर्थः द्रव्यविषयोवा

उएक्काए पज्जवएक्काए संगहएक्काए । चत्तारि कइं प० तजहा दवियकइं माउयकइं पज्जवकइं संगहकइं । च

निकाचित ४ ॥ निकाचित जोगवार्थीज बूटे ॥ पूर्वे अल्पबहुत्व कस्यो तिहा अत्यंत अल्प ते एकनी संख्यानु तेच्यार स्थानके कहेछे । च्यार एक  
 संख्याना जाणवा तेकहैछे द्रव्य एकछे ते सचित्त अचित्त मिश्र एह त्रण जेदे १ । मातृकापद एकछे सिद्धात मातृकापद उपपन्नेवा विगमेवा ध्रुवेवा  
 एह सिद्धातना बीज भूत अथवा अग्रा इत्यादि मातृकापद सर्व शारार्य व्यापारमा व्यापकछे तेमाटे शास्त्रीयमातृका २ । पर्याय एक ते वर्णादिधर्म  
 कालोराती इत्यादि ३ । सग्रह एकछे तेसमुदाय आश्री वचन ते एक शालि इत्यादि तथा पणि एक शालि शालि कहवाये घणी शालि पिण शालि

कतिशब्दो द्रव्यकति एवं मातृकापदादिष्वपि नवरं संग्रहाः शालियवगोधूमा इत्यादि नामच तत्सर्वं नामसर्वं सचेतनादेर्वां वस्तुनो यस्य सर्वमितिनाम  
तन्नामसर्वं नाम्नासर्वं सर्वमितिवा नामयस्येति विग्रहा नामशब्दस्यच पूर्वनिपातस्तथा स्थापनया सर्वमेतदिति कल्पनया अक्षादिद्रव्य सर्वं स्थापना सर्वं  
स्थापनैववा अक्षादिद्रव्यरूपा सर्वस्थापना सर्वं आदेशन मादेश उपचारो व्यवहारः सच बहुतरे प्रधानेवा दिश्यते देशेपि यथाविवक्षितं घृतमभिसमीक्ष्य  
बहुतरे भुक्ते स्तोकेच शेषे उपचारः क्रियते सर्वं घृतं भुक्तं प्रधाने व्युपचारः क्रियते यथा ग्रामप्रधानेषु गतेषु पुरुषेषु सर्वो ग्रामो गत इति व्यपदिश्यत इति  
अत आदेशतः सर्वं मादेशसर्वं उपचारसर्वमित्यर्थः तथा निरवशेषतया अपरिशेषव्यक्तिसमाश्रयेण सर्वं निरवशेषसर्वं यथा अनिमिषाः सर्वे देवा नहिदेव  
व्यक्ति रनिमिषत्व काचि द्व्यभिचरतीत्यर्थः सर्वत्र ककारः स्वार्थिको द्रष्टव्यः अनन्तरं सर्वं प्ररूपितं तद्वत्स्वावात् सर्वमनुष्यक्षेत्रपर्यन्तवर्तिनि पर्वते सर्वासुति  
यंदिक्षु कूटानि प्ररूपयन्नाह ॥ माणुसुत्तरस्तेत्यादि ॥ स्फुटं किन्तु ॥ चउद्दिशिसिति ॥ चतसृणां दिशा समाहारः चतुर्दिक् तस्मि चतुर्दिशि अनुस्वारः प्राक्

तारि सद्वा पस्यता तंजहा णामसद्वा ठवणसद्वा ञ्णएससद्वा निरवसेससद्वा । माणुसुत्तरस्सणं पद्दयस्स

कहवाये ४ ॥ च्यार कति कहा तेकहैछे । कतिकति ते केतलाछे इम वोलाय तेद्रव्यकति तेद्रव्य केतलाछे एम वोलावुं १ । मातृका पद केतलाछे इम  
कहवुं २ । पर्याय केतलाछे ३ । संग्रह केतलाछे शालि गोधूमनो समुदायते ४ ॥ च्यार सर्व ते सघला कहा तेकहैछे । नाम सर्व ते सचेतन अचेतन  
वस्तु सघली नाम सहितछे १ । स्थापना सर्वते अक्षादि द्रव्य ते सर्व स्थापनाछे २ । आदेश सर्व ते जे घणी वस्तुने प्रधान वस्तुने विषे आदेश ३ ।  
निरवशेष सर्व ते सर्व देवता मेषोन्मेष रहितछे एहमा कोई शेष रह्यो नही सहूइं एहवाछे ४ ॥ सर्वशब्दमाटे सर्वमनुष्यक्षेत्रने अंते मानुषोत्तर



तत्वादिति कूटानि शिखराणि इह च दिग्ग्रहणेपि विदित्सिति द्रष्टव्यं तत्र दक्षिणपूर्वस्यां दिशि रत्नकूटं गरुडस्य वेणुदेवस्य निवासभूतं तथा दक्षिणा  
 परस्या दिशि रत्नोच्चयकूटं वेलम्बमुखदमित्यपरनामक वेलम्बस्य वायुकुमारेन्द्रस्य सम्बन्धि तथा पूर्वोत्तरस्यां दिशि सर्वरत्नकूट वेणुदालिसपर्णकुमारेन्द्रस्य  
 तथा परोत्तरस्या रत्नसचयकूट प्रभञ्जनापरनामक प्रभञ्जनवायुकुमारेन्द्रस्येति एवचैतद्वाख्यायते द्वीपसागरप्रज्ञप्तिसग्रहणनुसारेण यतस्तत्रोक्त दक्षिण  
 पुर्वेणरयण कूडगरुलस्यवेणुदेवस्य । सञ्चरयणचपुब्बु त्तरेणतवेणुदालिस्य ॥ १ ॥ रयणस्यअवरपासे तिष्ठिविसमदृच्छिऊणकूडाइ कूडवेलवस्यउ वेलवसुहय  
 सयाहोइ ॥ २ ॥ सञ्चरयणस्यअवरे णतिष्ठिसमदृच्छिऊणकूडाइ । कूडपभजणस्यउ पभजणआढियहोइति ॥ ३ ॥ इह चतुःस्थानकानुरोधेन चत्वार्युक्ता न्य  
 न्यथा अग्याग्यपि द्वादशसन्ति पूर्वदक्षिणापरोत्तरासु त्रीणि द्वादशापि चैकैकदेवाधिष्ठितानीति उक्तच पुर्वेणतित्रिकूडा दाहिणओतिस्सितिष्ठिअवरेण  
 उत्तरओतिस्सिभवे चउद्दिसिमाणसनगस्सत्ति ॥१॥ अनतरं मानुषोत्तरे कूटद्रव्याणि प्ररूपिता न्यधुना तेनावृतचेत्रद्रव्याणा चतुःस्थानकावतार ॥ जंबूद्वीवेश  
 त्यादिना ॥ चत्तारिमदरचूलियाओ ॥ एतदतेन ग्रथेनाह व्यक्तं खाय नवर चित्रकूटादीना वच्चारपर्वतानां षोडशानामिदं स्वरूप पचसएवाणउए सोलस

चउद्दिसिं चत्तारि कूटा पस्सत्ता तंजहा रयणे रयणुच्चए सञ्चरयणए रयणसचए । जंबूद्वीवे ज्जरहेरवएसुवासे  
 सु तीयाए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए चत्तारि सागरोवमकोठाकोठील कालो होत्या । जंबूद्वीवे ज्जरहेरवए

पर्वतच्छे तेहनं स्वरूप कहैछे । मानुषोत्तर पर्वतने च्यारे दिशे च्यार कूटशिखर कह्या । रत्नकूट १ । पूर्वदक्षिणाविचे अग्निकूणे रत्नोच्चयकूट २ । सर्वरत्न  
 कूट ३ । रत्नसचयकूट ४ ॥ जंबूद्वीपनामेद्वीपविषे ज्जरत ऐरवतक्षेत्रं गर्ह उत्सर्पिणी कालने विषे पहिलो आरो सुखमसुखमा नामे च्यार कोडाकोडी

यसहस्रदोकलाश्रय । विजयावक्त्रांतर नईणतहवणमुहायामौत्ति ॥ १ ॥ तथा जत्तोवासहरगिरौ तत्तोजोयणसयंसमवगाढा । चत्तारिजोयणसए उ  
व्विद्वासव्वरणमया ॥ २ ॥ जत्तोपुणसलिलाश्री तत्तोपचसयगाउउव्वेहा पचेवजोयणसए उव्विद्वाआसखंधणिभत्ति ॥ ३ ॥ विष्कम्भच्चैषामेवं विजयाणविक्व

इमाए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोढाकोढीउ कालो होत्था । जंबूद्वीवेद्वीवे च्छा  
गमिस्साए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोढाकोढीउ कालो जविस्सइ । जंबूद्वीवे  
द्वीवे देवकुरुउत्तरकुरुवज्जाउ चत्तारि अकम्मभूमीउ प० तं० हेमवए हेरस्सवए हरिवासे रम्मगवासे । तस्स  
ण चत्तारि वट्टवेयट्टपट्टया पस्सत्ता तजहा सदावइ वियळावइ गंधावइ मालवंत परियाए । तत्थणं चत्ता  
रि देवामहिट्ठिया जाव पलिउवमठ्ठिइया परिवसंति तंजहा साई पज्जासे अरुणे पउमे । जंबूद्वीवेद्वीवे महा

सागरोपमनो कालमाने थयो । जं बूद्वीपे जरत ऐरवतक्षेत्रे ए वर्तमान उत्सर्पिणीकालने विपै सुखमसुखमा नामे पहिलो आरौ च्यार कोडाकोढि  
सागरोपमनो थयो । जंबूद्वीपने विषे जरत ऐरवतक्षेत्रे अनागत आवती उत्सर्पिणीकाले सुखमसुखमा पहिलो आरौ च्यार सागरोपम कोडाकोढि  
नो कालमाने थास्ये । जंबूद्वीपने विषे देवकुरु उत्तरकुरु वरजीने च्यार अकर्मभूमी कही ते कहैछे ॥ हेमवंत १ । हैरण्यवत २ । हरिवर्ष ३ । रम्यक  
वर्ष ४ ॥ च्यार वृत्त वाटला वैताढ्य पर्वत कछ्या तेकहैछे । शब्दापाती १ । विकटापाती २ । गंधापाती ३ । माल्यवंतपरियाय ४ ॥ तिहां च्यार  
देवता मोटी रिद्धिना धणी रहैछे । पल्योपमनीस्थितिना धणी रहैछे ते कहैछे ॥ स्वाति १ । प्रज्ञास २ । अरुण ३ । पट्ट ४ ॥ जंबूद्वीपमे महाविदेह

॥ ॥  
 भी वावीससयाइतेरसहियाइं पंचसएवक्खारापणवोससयंचसलिलाओत्ति ॥ १ ॥ पयते गम्यते इतिपदं सख्यास्थान तच्चा नेकधेति जघन्यं सर्वहीन पदं ज  
 घन्यपद तत्र विचार्ये सत्यवश्य भावेन चत्वारोक्कदादयइति भूम्या भद्रगालवनं मेखलायुगलेच नदनसोमनसे शिखरे पंडकवनमिति अत्रगाथा वावीसस  
 हस्साइ पुब्बावरमेरुभइसालवण आद्धाइज्जसयाउण दाहिणपासेयउत्तरगो ॥ १ ॥ पचेवजोयणसए उड्डुगतूणपचसयपिड्डुल नदणवणसुमेरु परिकिव्वित्ताठि

विदेहेवासे चउल्लिहे पस्सत्ते तंजहा पुह्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा । सल्लेविणं णिसठणीलवंत  
 वासहरपह्वया चत्तारि जोयणसयाइं उह उच्चत्तेणं चत्तारिगाउयसयाइं उल्लेहेणं प० । जंबूद्वीवेद्वीवे मंदरस्स  
 पह्वयस्स पुरत्थिमेणं सीअणमहाणईए उत्तरकूले चत्तारि वस्कारपह्वया प० तंजहा चित्तकूले पम्हकूले ण  
 लिणकूले एगसेले । जंबूमदरपुरत्थिमेण सीअणमहाणईए दाहिणकूले चत्तारि वस्कारपह्वया पस्सत्ता तं०  
 तिकूले वेसमणकूले अज्जणे मायंजणे । जंबूमदरपह्वयत्थिमेणं सीअणमहाणईए दाहिणकूले चत्तारि वस्का

च्यारभेदे कह्या ते कहैछे । पूर्वविदेह १ । पश्चिमविदेह २ । देवकुरुमहाविदेह ३ । उत्तरकुरुमहाविदेह ४ ॥ एममहाविदेहक्षेत्रछे ॥ सघलाई निप  
 धनीलवतनामे वर्षधर पर्वत च्यारसे योजन उचाछे । च्यारसे गाऊ उडा धरतीमा छै । जंबूद्वीपे पूर्वदिशि शीतामोटी नदीछै तेहना उत्तरने तटे च्यार  
 वक्खारापर्वतछे ते कहैछे । चित्रकूट १ । पट्टकूट २ । नलिनकूट ३ । एकशैलकूट ४ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथीपूर्व शीतामोटी नदीने जीमणे तटे च्यारवक्खारा  
 रापर्वतछे ते कहैछे ॥ त्रिकूट १ । वैश्रमणकूट २ । अजन ३ । मातंजन ४ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पश्चिम शीतामोटीनदीने दक्षिणतटे च्यार वक्खारापर्वत

यंरम्भ ॥ २ ॥ वासष्ठिसहस्राङ् पचेवसयाद् नन्दणवणाओ उडुंगतूणवणं सोमणसंनन्दणसरित्थ ॥ ३ ॥ सोमणसाओतीसं ळच्चसहस्सेविल्लिगिऊणगिरं विमलज

रपह्या पम्पत्ता तंजहा अंकावई पम्हावई आसीविसे सुहावहे । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीलुआए महाणईए  
उत्तरेकूले चत्तारि वस्कारपह्या प० तं० चंदपह्यए सूरपह्यए देवपह्यए नागपह्यए । जंबूद्वीवेद्वीवे मदरस्स  
पह्यस्स चउसुविदिसासु चत्तारि वस्कारपह्या प० तं० सोमणसे विज्जुप्पन्ने गंधमायणे मालवते । जंबू  
द्वीवेद्वीवे महाविदेहेवासे जहम्पए चत्तारि अरहता चत्तारि चक्कावहो चत्तारि बलदेवा चत्तारि वासुदेवा  
उप्पज्जिसुवा उप्पज्जातिवा उप्पज्जिस्सतिवा । जंबूद्वीवेद्वीवे मदरेपह्यए चत्तारि वणा पम्पत्ता तंजहा न्ह  
सालवणे णंदणवणे सोमणसवणे पङ्गवणे । जंबूमदरपह्य पङ्गवणे चत्तारि अज्जिसेगसिलानु प० तं०

कह्या ते कहैछे ॥ अंकावती १ । पट्ठावती २ । आशीविष ३ । सुखावह ४ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पश्चिम शीतानदीने उत्तर ऋगे तटे चार वक्खारापर्वत  
कह्या ते कहैछे चद्रपर्वत १ । सूर्यपर्वत २ । देवपर्वत ३ । नागपर्वत ४ ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वतथी चारविदिशैं चार वक्खारा पर्वत कह्या तेकहैछे ॥  
विदुग्गप्रज्ञ १ । सौमनस २ । गधमादन ३ । माल्यवत ४ ॥ जंबूद्वीपे महाविदेहत्तेत्तैं जघन्य पदे थोळातो चार अरिहंत होय चार चक्रवर्त्ति  
होय चार बलदेवहोय चार वासुदेवहोय अतीतकालेऊपना ऊपजेछे आगल उपजस्ये ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वतने विषे चार वनछे तेकहैछे ॥ भद्रशा  
लवन १ । नंदनवन २ । सोमनसवन ३ । पांडुकवन ४ ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वतनेविषे चार तीर्थकरना जन्मान्निषेकनी शिला कही तेकहैछे ॥ पांडुकवला

लफुडगहण भवद्रवणंपंडगसिहरे ॥ ४ ॥ चत्तारिजोयणसया चउणउयाचत्तवालओरुंदं । इगतीसजोयणसया वावडापरिरओतस्सत्ति ॥ ५ ॥ तीर्थकराणा  
मभिषेकार्या शिला भिषेकशिला चूलिकायाः पूर्वदक्षिणापरोत्तरासु दिक्षु क्रमेणा यगम्या प्रति ॥ उपरिति ॥ अग्ने ॥ विह्व भेषति ॥ विस्तरेणेति यथा  
जंबूद्वीवे द्वीवे भरहेरवएसु द्रव्यादिभिः सूत्रैः कालादय चूलिकाता अभिहित्ता एव धातकीखडस्य पूर्वार्धे पश्चिमार्धे एव पुष्करार्धस्यापि पूर्वार्धे पश्चिमार्धे च  
पाया एकमेरुसवतवत्तव्यताया शतुर्ध्वं न्येषु समानत्वा देतदेयाह ॥ एवमित्यादि ॥ असुमेना तिदेश सयहगाथयाह ॥ जंबूद्वीवेत्यादि ॥ जंबूद्वीपस्येद ज  
बूद्वीपक तवा गच्छतीति जंबूद्वीपं जंबूद्वीपे यदिति कचित्पाठे ऽवश्यंभाविता हाचत्वादा वश्यक जंबूद्वीपगतावश्यकया वस्तुजातं तुः पूरणे किमादि किम  
तेचेलाह कालात् सुसमसुसमालक्षणा दारभ्य चूलिका मदरचूलिकां यावत् यत्त दिति गम्यते धातकीखण्डे पुष्करवरे द्वीपेच यी पूर्वापरीपार्श्वौ प्रत्येक

पंडुकवलसिला अतिपंडुकवलसिला रक्तकवलसिला अतिरक्तकवलसिला । मदरचूलियाणं उवरिं चत्तारि  
जोयणाइं विस्कन्नेण पसत्ता एव धायइखण्डीवपुरच्छिमद्धेवि काल आइंकरित्ता जाव मदरचूलियत्ति  
एव जाव पुष्करवरदीवपञ्चत्थिमद्धे जाव मदरचूलियत्ति । जंबूद्वीवगआवस्सगतुकालात्त चूलियधायइखण्डी

शिला १ । अतिपंडुकवलसिला २ । रक्तकवलसिला ३ । अतिरक्तकवलसिला ४ ॥ मेरुपर्वतनी चूलिकानुं ऊपर च्यार योजन विष्कंज पिहुलप  
णो कण्ठो ॥ इमधातकीखण्डद्वीपना पूर्वार्धेनेविषे कालमान आदिदेईने यावत् मेरुनी चूलिकाताइं जंबूद्वीपनीपरेजाणवुं ॥ इम यावत् पुष्करवरद्वीप  
पश्चिमार्धेथकीमाळी यावत् मेरुचूलिकालगे जाणवुं ॥ जंबूद्वीपने विषे उत्सर्पिणी कालमानथीमाळी चूलिकालगेजिमकण्ठो तिम यावत् धातकीखड

पूर्वाह्नमपराह्नं च तयोः पूर्वापरेषु वर्षेषु वा क्षेत्रेष्वन्यूनाधिकं द्रष्टव्यमिति शेष इति विजयादीभिः क्रमेण पूर्वादिदिक्षु विष्कम्भो द्वारशाखयोः स्तरं प्रवेशः कुड्यास्थूल-  
 त्वमष्टयोजनाग्युच्चत्वमिति उक्तं च चउजोयणविच्छिन्ना अष्टेयजोयणाणि उच्यन्ते । उभयोर्विकोसकोस कुड्यावाहल्लोतेति सिंति ॥ १ ॥ [ क्रीडांशाखावाहल्य-  
 मित्यर्थः ] पलिओवमठिइया सुरगणपरिवारियासदेवीया एणसुदारनामा वसन्ति देवामहिङ्गीयन्ति ॥ २ ॥ चुल्लहिमवंतस्सन्ति ॥ महाहिमवदपेच्चया लघो-  
 हिमवतस्तस्यहि प्राग्भागापरभागयोः प्रत्येकं शाखाद्वयमस्तीत्युच्यते ॥ चउसुविदिसासु ॥ विदिक्षु पूर्वोत्तराद्यासु लवणसमुद्रमिति अवगाह्येतस्य हि

पुष्करवरेयपुष्पावरेपासे जंबूद्वीवरस्सण्डीवरस्स चत्तारिदारा पस्सत्ता तंजहा विजए वेजयन्ते जयन्ते अपराजि-  
 ए । तेण दारा चत्तारि जोयणाइं विस्कन्नेणं तावइयचेव पवेसेणं पस्सत्ता । तस्यण चत्तारि देवा महिहि-  
 या जाव पलिओवमठिइया परिवसन्ति तंजहा विजए वेजयन्ते जयन्ते अपराजिए । जंबूद्वीवेद्वीवे मंदरस्स प-  
 ह्यरस्सदाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्सवासहरपह्यरस्स चउसुविदिसासु लवणसमुद्रं तस्मिंस्सि जोयणसयाइं उ-

पुष्करवरद्वीपना पूर्वे पश्चिमने पासे जाणवुं ॥ जंबूद्वीपनामे द्वीपना कोटने चार बारणा कह्या तेकहैछे ॥ विजयद्वार १ । वैजयंतद्वार २ । जयंतद्वार ३ ।  
 अपराजितद्वार ४ ॥ तेदरवाजा चार योजनने माने चौडाछे तेतलाज ४ योजन प्रवेशेछे उचा ८ योजनछे तिहा चार देवता मोटी रिद्धिना धणी १  
 परयोपमनी आज्ञाखानी स्थितिना वसेछे तेकहैछे ॥ विजयदेवता १ । वैजयतदेवता २ । जयतदेवता ३ । अपराजितदेवता ४ ॥ जंबूद्वीपनामे द्वीपमां  
 मेरुपर्वतथी दक्षिणदिशि चुल्लहिमवत नामै नान्हो वर्षपर पर्वतने चार दिग्भिने विषे लवणसमुद्रप्रति तीनतीनसे योजन अवगाहीने जइये तिहां

कर्मत्वा कर्मणि सप्तम्यर्थे द्वितीयेति त्रीणि त्रीणि योजनशता न्यवगाह्यो लब्ध येषां शाखाविभागा वर्तन्ते ॥ एत्यत्ति ॥ एतेषु शाखाविभागेषु अतरे मध्ये स मुद्रस्य द्वीपा अथवा अतर परस्परविभाग स्तत्रधाना द्वीपा अंतरद्वीपा स्तत्र पूर्वोत्तराया मेकोरुकाभिधानो योजनशतत्रयायामविष्कम्भो द्वीप एव माभा भिकवैषाणिकलागूलिकद्वीपा अपि क्रमेणा ग्नेयीनैर्ऋतीवायव्यास्विति चतुर्विधा इति समुदायापेक्षया नत्वे कैकस्मिन्निति अतः क्रमेणै ते योज्या द्वीपनाम त. पुरुषाणा नामान्येव तेषु सर्वाङ्गोपाङ्गसुन्दरा दर्शने मनोरमा. स्वरूपतो नैकोरुकादय एवेति तथा एतेभ्य एव चत्वारियोजनशता न्यवगाह्य प्रतिवि

गाहेत्ता एत्यणं चत्वारि अंतरदीवा प० तजहा एगुरुअदीवे अज्ञासिअदीवे वेसाणियदीवे णंगोलियदीवे तेषुण दीवेषु चउव्विहा मणुस्सा परिवसन्ति एगूरुया अज्ञासिया वेसाणिया णंगोलिया तेषिणं दीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्द चत्वारिचत्वारि जोजणसयाइ उगाहेत्ता एत्यणं चत्वारि अंतरदीवा पस्सत्ता तं० हयकस्सदीवे गयकस्सदीवे गोकस्सदीवे सक्कुलिकस्सदीवे । तेषुणं दीवेषु चउव्विहा मणुस्सा परिवसन्ति त०

गजदत्त पर्वत ऊपरजईये एठिकाणे चार अतरद्वीप समुद्रमा कह्या ते कहैछे ॥ एकोरुकनामाद्वीप १ । आभासनामा २ । वैपाणिकद्वीप ३ । लागूलिकद्वीप ४ ॥ ते द्वीपनेविषै चार जेदना मनुष्यवसेछे द्वीपनेनामे मनुष्यना नामछे सर्वग्रग उपाग सुदर मनोहर दर्शनीय रूपछे ॥ एकोरुकमनुष्य १ । आजाधिकमनुष्य २ । वैपाणिकमनुष्य ३ । लागूलिकमनुष्य ४ ॥ तेद्वीपथी चार विदिशिनेविषै अग्नि १ । नेरित २ । वायु ३ । ईशान ४ नेविषे लवणसमुद्रप्रति चारचारसे योजन अवगाहीजे तिवारे एथानकेवली चार अतरद्वीपछे ते कहैछे ॥ हयकर्णद्वीप १ । गजकर्णद्वीप २ । गोकर्ण

दिक् चतुर्थीजनशतायामविष्कम्भा द्वितीया अतारएव एव येषा यावदतरं तेषां तावदेवा याम विष्कम्भप्रमाणं यावत् सप्तमानां नवशता न्यन्तरतावदेव  
 च तत्रमाणमिति सर्वेष्टाविशति रेत्ये एतन्मनुष्यास्तु युग्मप्रसवाः गन्धोपमासख्येयभागायुषो ऽष्टधनुःशतोच्चा स्तथै रवतक्षेत्रविभागकारिण, शिखरिणी  
 प्येवमेव पूर्वोत्तरादिविदिक्त क्रमेणै तन्नामकै वान्तरद्वीपाना मष्टाविशति रिति अतरद्वीपप्रकरणार्थं संग्रहगाथा. सुहृद्दिशमवतपुष्पा वरेणविदिसासुसा  
 गरतिसण । गतूणतरदीवा तिस्रिसएहोतिविच्छिन्ना ॥ १ ॥ अउणावखनवसण किचूणपरिहिणसिमेनामा । एगूरुयआभासिय वेसाणीचेवलंगूली ॥ २ ॥  
 एएसिदीवाण परओचत्तारिजोयणसयाइ ओगाहिजणलवण सपडिदिसिंचउसयपमाणा ॥ ३ ॥ चत्तारतरदीवा हयगयगोकससंकुलीकसा एवपचसयाइ  
 छसत्तअठ्ठेवनवचेव ॥ ४ ॥ ओगाहिजणलवण विखभोगाहसरिसयाभणिया चउरो २ दीवा इमेहिंनामेहिनायव्वा ॥ ५ ॥ आयसगमेंढमुहा अओमुहागो

हयकसा गयकसा गोकसा सकुलिकसा । तेषिणं दीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्रं पंचपंच जोयणस  
 याइ उंगाहेत्ता एत्यणं चत्तारि अतरदीवा पसत्ता तंजहा आयसमुहदीवे मेंढगमुहदीवे अउमुहदीवे गोमु

द्वीप ३ । शकुलीकर्णद्वीप ४ ॥ तेद्वीपने विषे चार जेदना मनुष्यवसेछे द्वीपनेनामे ते कहैछे ॥ हयकर्णा मनुष्ययुगल १ । गजकर्णामनुष्ययुगल २ । गो  
 कर्णामनुष्ययुगल ३ । शकुलीकर्णामनुष्ययुगल ४ ॥ एच्यार द्वीपथी चार विदिशामे लवणसमुद्र प्रते पाचपाचसे योजन अवगाही जे एठिकारिं चार  
 अंतरदीप कह्या ते कहैछे ॥ आयंसमुखदीप १ । मेंढमुखदीप २ । अयोमुखदीप ३ । गोमुखदीप ४ ॥ तेदीपनेविषे चार प्रकारना मनुष्यकह्या ते दीप  
 ने नामथी जाणवा ॥ वली तेदीपथी चार विदिशिमे लवणसमुद्रप्रते छसेयोजनअगाहीजे इहां चार अंतरदीप कह्या ते कहैछे ॥ अश्वमुखदीप १ ।



मुहायचउरेते अस्समुहाहत्थिमुहा सीहमुहाचैववग्घमुहा ॥ ६ ॥ तत्तोयअस्सकस्सा हत्थिअकस्साअकस्सपाउरणा । उक्कामुहमेहमुहा विज्जुमुहांविज्जुदंताय  
७ ॥ घणदंतलङ्घदता निगूढदंतायसुद्धदताय । वासहरेसिहरंमिवि एवंचियअट्ठवीसापि ॥ ८ ॥ अतरदीवेसुनरा धणसयअसूसियासयामुद्रया । पालितिमि

हदीवे । तेसुणं दीवेसु चउच्चिहा मणुस्सा ज्ञाणियत्ता । तेसिण दीवाण चउसुविदिसासु लवणसमुद्धं ठ ठ  
जोयणसयाइ उंगाहेत्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा पस्सत्ता तंजहा अासमुहदीवे हत्थिमुहदीवे सीहमुहदीवे  
वग्घमुहदीवे । तेसुणदीवेसु मणुस्सा ज्ञाणियत्ता । तेसिणदीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्धं सत्तसत्तजोय  
णसयाइ उंगाहिता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० अासकस्सदीवे हत्थिकस्सदीवे अकस्सदीवे कस्सापा  
उरणदीवे । तेसुणंदीवेसु मणुया ज्ञाणियत्ता । तेसुणंदीवाणं चउसुविदिसासुलवणसमुद्धं अठअठ जोयणसयाइ  
उंगाहिता एत्थण चत्तारि अंतरदीवा प० तंजहा उक्कामुहदीवे मेहमुहदीवे विज्जुमुहदीवे विज्जुदतदीवे ।

हस्तिमुखदीप २ । सिहमुखदीप ३ । व्याघ्रमुखदीप ४ ॥ ते दीपाने विधे मनुष्यजाणवा । तेदीपथी वली चार विदिशिने विधे लवणसमुद्रप्रतं सातसे  
योजन अवगाहीजे एथानके चार अंतरदीप कह्या तेकहैके ॥ अश्रुर्णदीप १ । हस्तिर्णदीप २ । अर्णदीप ३ । कर्णप्रावर्णदीप ४ ॥ तेदीपनेविधे मनुष्यए  
ज चारप्रकारना जाणवा एकह्या तेहवा मुख कानकै ए मनुष्याने । तेदीपथी वली चार विदिशमे लवणसमुद्रप्रति आठ आठसे योजन अवगाहीजे इहा  
चार अतरदीप कह्या ते कहैके ॥ उक्कामुखदीप १ । मेघमुखदीप २ । विदुग्गमुखदीप ३ । विदुग्गदंतदीप ४ । तेदीपनेविधे मनुष्यजाणवा । वली ते

तेसुणंदीवेसु मणुस्सा ज्ञाणियह्वा । तेसुणंदीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्धं णवणवजोयणसयाइं उंगा  
 हिता एत्थण चत्तारि अंतरदीवा प० त० घणदंतदीवे लछदंतदीवे गूढदंतदीवे सुद्धदंतदीवे । तेसुणंदीवेसु  
 चउह्विहा मणुस्सा परिवसति तं० घणदंता लछदता गूढदता सुद्धदंता । जंबूद्वीवेद्वीवे मंदरस्सपह्यस्स  
 उत्तरेण सिंहस्सवासहरपह्यस्स चत्तारि चउसुविदिसासु लवणसमुद्ध तिसिस्सितिस्सि जोयणसयाइं उंगाहि  
 ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा पस्सता तजहा एगस्सदीवे सेसंतहेव निरंवसेसं ज्ञाणियह्वं जाव सुद्धदता ।

दीपथी चार विदिशिनेविषे लवणसमुद्रप्रतें नवसे योजन अवगाहीजे एठिकाणे चार अंतरदीप कह्या ते कहैछे ॥ घनदंतदीप १ । लछदंतदीप २ ।  
 गूढदंतदीप ३ । शुद्धदंतदीप ४ ॥ तेदीपने विषेमनुष्य ४ प्रकारनावसेछे ॥ घनदंतामनुष्य १ । लछदता २ । गूढदंता ३ । शुद्धदंता ४ ॥ जंबूद्वीपनां  
 मेरुथी उत्तरदिशे शिखरीनामे वर्षधरपर्वतनी एहनी परे चार विदिशामे चारशाखा निकलीछे ॥ एह २८ दीप हिमवंत पर्वतनी समुद्रमा पूर्वदिशि  
 पश्चिमदिशि गजदताकारे बेबे शाखा नीकलीछे चार विदिशिमे ते एकेऊ शाखामां सातसात दीपछे एम चार शाखाऊपरना सर्व मली २८  
 थया तिहा युगलिया वसेछे तेहनं पत्योपमने असख्यातमे जागे आजखोछे आठसेधनुष ऊची कायाछे ६४ पांसली छे उन्नासीदिन बोरुनी पालना  
 चतुर्थंजत्ते आहार लेछे ॥ लवणसमुद्रप्रतें तीनतीनसे योजन अवगाहीने जईये इहा चार अंतरदीप कह्या ते कहैछे ॥ एकोरुद्वीप १ । शेषसर्व  
 तिमज निर्विशेषपणे जाणवुं यावत् शुद्धदंत दीप लगे । तिम २८ दीप शिखरीपर्वतनी शाखा चार छे मनुष्यनाम सर्व इमज छे ए ५६ अंतर दीप कह्यां  
 जंबूद्वीपनी बाहिरली वेदिकाथी चारों दिशि लवण समुद्र प्रति पचासु हजार योजन अवगाहीने एथानके मोटामाहि मोटा महामोटामोटा अलं

हुणधर्मं पञ्चसप्तसंख्यभागाश्च ॥ ८ ॥ चउसद्विपिडिकरं उगाणिमणुयाणवक्षपालणया भउणासीदुत्तुदिणा चउत्तमत्तेणआहारोति ॥ १० ॥ एत्थगंति ॥ मध्य  
 मेव दशसु योजनसहस्रेषु महामहान्तइति यत्तव्ये समयभाषया महइमहालयाइत्युक्त मत्तवतदरजरच भरजरं उदककुभ इत्यर्थः महारजर तस्य संस्थानेन  
 संस्थिता ये ते तदाकाराइत्यर्थः महान्तं स्तादन्यत्तुल्यकव्यवच्छेदेन पातालमिवा गाधत्वात् गभीरत्वा त्पातालाः पातालव्यवस्थितत्वात् पाताला महान्तप  
 ते पातालायेति महापाताला वडवामुखः केतुको यूपक ईश्वरयेति क्रमेण पूर्वादिदिक्षु इति एतेषु मुखे मूलेषु दशसहस्राणि योजनानां मध्ये उतोस्ते  
 नच लक्षमिति एषा सुपरितनभागे जलमेव मध्ये वायुजले मूले वायुरेवेति एत त्रिवासिनी देवा वायुकमाराः कालादयइति इहगाथाः पणनउइस  
 हस्साइ ओगाहित्ताणचउद्विसिलवण चउरोलिजरसठा णसंठियाहीतिपायाला ॥ १ ॥ बलवामुहकोऊए जूयगतहइसरयवोधव्वे सब्बवइरामयाणं कुळा

जंबूद्वीवरुसणं द्वीवरुस वाहिरिल्लाउवेइयाउ चउद्विसिलवणसमुद्वं पंचाणउयं जोयणसहससाइं उगाहेत्ता एत्थ  
 ण महइमहालया महालिंजरसठाणसठिया चत्तारि महापायाला प० तं० बलवामुहे केउए यूवए ईसरे ।  
 तत्थणं चत्तारि देवा महिहिया जाव पलिउवमठिइया परिवसति तंजहा काले महाकाले वेलवे पन्नजणे ।

जर ते उदकना कुज तेहने संस्थाने रत्ताळे एत्था च्चार महापाताल कलश कथा ते कहैळे वडवामुरा पूर्वदिशिमा १ । केतु दक्षिण दिशिमां २ ।  
 यूपकपश्चिमदिशिमा ३ । ईश्वरउत्तरदिशिमा ४ ॥ तित्ता च्चार देवता मोटीरिद्धिना धणी यावत् पत्थोपमनीस्थितिना धणी वसेळे काल १ । महा  
 काल २ । वेलंय ३ । प्रजंजन ४ ॥ जंबूद्वीपनी वाहिरली वेदिकाथी च्चारदिशि लवणसमुद्रप्रति बैयालीसहजार योजन अवगाहीने एठेकाणे वेलधर

एएसिदससदया ॥ २ ॥ जोयणसहस्रदसगं मूलैवरिचहींतिविच्छिन्ना मज्जेयसयसहस्र तत्तियमेत्तचओगाढा ॥ ३ ॥ पलिओवमठिइया एएसिअहि  
वईसुराइणमो कालेयमहाकाले वेलंबपभजणेचेव ॥ ४ ॥ अणेवियपायाला खुड्डालिंजरगसठियालवणे अठसयाचुलसीया सत्तसहस्रायसवेवि ॥ ५ ॥ जो  
यणसयविच्छिन्ना मूलवरिदससयाणिमज्जमि ओगाढायसहस्र दसजोयणियायसिकुड्डा ॥ ६ ॥ पायालाणविभागा सब्बाणवितिस्मि २ बोधव्वा हेठिमभा  
गे वाऊ मज्जेवाऊयउदगच ॥ ७ ॥ उवरिउदगभणियं पढमगबीएसुवायुसखुभिओ [ वायुमेवमयतीत्यर्थ ] उदगतेणयपरिओ परिवट्टइजलनिहौखुहिओ  
८ ॥ परिसठियमिपवणे पुणरविउदगतमेवसठाण वच्चइतेणउदही परिहायइणक्कमेणेवति ॥ ९ ॥ वेला लवणसमुद्रशिखा मन्तविंशती वहिर्वायान्ती अग्रशि  
खाच्च धारयन्तीति सज्जात्वा डेलन्धरा स्तेचते नागराजाच्च नागकुमारा वेलंधरनागराजा स्तेषा मावासपर्वताः पूर्वादिदिक्षु क्रमेण गोस्तूपादयो विदि  
क्षु पूर्वोत्तरादिषु वेलधराणा पश्चादुत्तयो नुनायकत्वेन नागराजा अनुवेलधरनागराजा वेलधरवत्तव्यता गाथाः दसजोयणसहस्रा लवणसिहाचक्कवाल

जंबूद्वीवरुस बाहिरिल्लानु वेइयतानु चउदिसिं लवणसमुद्रं वायालीसं जोयणसहस्राइं उगाहिता एत्यणं चउ  
रहं वेलधरणागरायाण चत्तारि आवासपह्यया प० तं० गोथूजे दनुजासे संखे दामे । तत्यण चत्तारि महि  
हिया जाव पलिनुवमठिइया देवा परिवसति गोथूजे सिवए सखे मणोसिलए । जंबूद्वीवरुसणं द्वीवरुस बाहि

नाग राजाना एह समुद्रनी वेलावधती तथा बाहिर नीकलतीधरेछे तेहना च्यार आवास पर्वतछे ते कहैछे गोथूज पर्वत पूर्वदिशिमा १ । शिव  
पर्वत दक्षिणदिशिमां २ । शंख पर्वत पश्चिम दिशिमां ३ । मन शिलपर्वत उत्तरदिशिमा ४ ॥ जंबूदीपनी बाहिरली वेदिकाना अतथी च्यार विदिशि

पोरुडा सोलससङ्गउवा सहस्रमेगंतुयोगाढा ॥ १ ॥ [ समा भूभागादितिभावः ] देस्रगमइजोवण लवणसिद्धीवरिदगंतुकालदुगे [ दिवारागौचेत्यर्थः ]  
 अदरेगंअदरेगं पग्विबुद्धहायएयावि ॥ २ ॥ अभितरियवेल धरतिलाणोदहिष्णनागाण वायालीससहस्रा [ प्रतर्विंशतीमित्यर्थः ] दुसत्तरिसहस्रवाहिरियं  
 २ ॥ [ वहिर्गच्छन्तीमित्यर्थः ] सडिनागसहस्रा धरेतिअगोदगं [ शिखाग्रमित्यर्थः ] समुद्रस वेलधरआवासा लवणयचउहिसिचउरी ॥ ४ ॥ पुब्बाइअ  
 णुअमसो गोथुमदगभाससखदगसोमा गोथुमसिवएसंखे मणोसिलेनागरायाणो ॥ ५ ॥ अणुलेनगरासा लवणिविदिसासुसंठियाचउरी कणोडेविज्जुपहे को  
 नासरुणपभेचेन ॥ ६ ॥ कणोडयकदमए केलासरुणपभेयरायाणो वायालीससहस्रे गतुउदहिमिसव्वेवि ॥ ७ ॥ चत्तारिजोयणसए तीसेकोसचउगयाभू  
 मो सत्तरसजोयणसए इगयोसेऊसियासव्वेत्ति ॥ ८ ॥ पभासिसुत्ति ॥ चन्द्राणा सौम्यदोतिकत्वात् वसुधभासन मुक्ता मादित्यानान्तु श्रृंखररश्मिक्वात् ॥ तवद

रिहान वेइयंतान चउसुविदिसासु लवणसगुदं वायालीसवायालीसं जोयणसहस्राइं नंगाहेत्ता एत्यणं च  
 उरह अणुवेलधरणागराईणं चत्तारि आवासपत्तया प० त० कक्कोरुए विज्जुजिप्पे केलासे अरुणप्पजे । त  
 त्यण चत्तारि महिद्विया जाव पलिउवमठिईया देवा परिवसति कक्कोरुए कदमए केलासे अरुणप्पजे । लव

नेविपे लवणसमुद्रप्रति बेतालीस बेतालीस हजार योजन अवगाहीने एथानके चार अनुवेलधर जे बेलंधरने पळी समुद्रनी बेला प्रतें राखे ते  
 नागराजाना चार आवास पर्वत कछा ते कहैछे ॥ कर्कोटक १ । विदुनत्प्रज २ । कैलाश ३ । अरुणप्रज ४ ॥ तिहा चार देवता मोटीरिहिना धणी  
 यावत् पत्योपमनी स्थितिना वसेछे ते कहैछे ॥ कर्कोटक १ । कदम २ । कैलाश ३ । अरुणप्रज ४ ॥ लवण समुद्रमां ४ चद्रमा अतीतकाले प्रकाशता

सुप्ति ॥ तापनमुक्तमिति चतुःसंख्यत्वाच्चद्राणां तत्परिवारस्यापि नक्षत्रादे चतुःसंख्यत्वं भवेत्याह चतस्रः कृत्तिका नक्षत्रापेक्षया नतु तारकापेक्षयेति एव  
मष्टाविंशतिरपि अग्निरिति कृत्तिकानक्षत्रस्य देवता याव यमइति भरण्या देवता अगारक आद्यो ग्रहः भावकेतु रित्यष्टाशीतितमइति शेषं यथा द्वि  
स्थानके समुद्रद्वाराणि जवूडोपद्वारादिव दिति चक्रवालयस्य वलयस्य विष्कम्भो विस्तरः जवूडोपा इहि धातकौखण्डपुष्करादयो रित्यर्थः शब्दोपलक्षित उद्दे  
शक शब्दोद्देशको द्विस्थानकस्य तृतीयइत्यर्थः केवल तत्र द्विस्थानकानुरोधेन दोभरद्वाइ इत्याद्युक्त मिहतु चत्तारीत्यादि उक्त मनुष्यक्षेत्रवस्तूनां चतुःस्थान

णेणंसमुद्दे चत्तारि चदा पञ्चासिंसुवा पञ्चासितिवा पञ्चासिस्संतिवा । चत्तारि सूरिया तविंसुवा तवंतिवा  
तविस्सतिवा । चत्तारि कत्तियाउ जाव चत्तारि जरणीउ । चत्तारि ञ्गी जाव चत्तारि जमा । चत्तारि  
ञ्गारया जाव चत्तारि जावकेऊ । लवणस्सणंसमुद्दस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता तजहा विजए वेजयंते जयं

हवा १ । प्रकाशकरस्ये अनागतकाले २ । प्रकाशकरेछे वर्तमानकाले ३ । एहशास्वतजावछे ४ ॥ तिमज ४ सूर्यं तपताहुवा तपस्ये तपेछे ॥ हिवे  
चद्रसूर्यनुं परिवार कहैछे ॥ च्यार कृत्तिका नक्षत्रे यावत् अष्टावीसमो जरणी नक्षत्रावे तिहालगे च्यारच्यार नक्षत्र कहवा ॥ हिवे नक्षत्रना देवता  
कहैछे कृत्तिकाना देवता च्यार अग्नि एम यावत् जरणी नक्षत्रना देवता च्यार यम होय तिहा लगे च्यारच्यार देवता कहवा ॥ हिवे ८८ ग्रह कहैछे  
अगारक ४ छे एम यावत् च्यार जावकेतुग्रह लगे सर्व च्यारच्यार कहवा जावकेतु अष्टासीमा छेहलो ग्रहछे ॥ लवण समुद्रमा च्यार दरवाजा वारणा  
कह्या तेकहैछे ॥ विजय १ । वेजयंत २ । जयंत ३ । अपराजित ४ ॥ ते बारणा ४ योजन विष्कम्भ फिहुलपणेछे तेतलाज लावपणे छे । तिहां च्यार देवता

क मधुना क्षेत्रसाधर्म्या नदीश्वरद्वीपवस्तूना मासत्यसूत्रा चतुस्थानकं ॥ नदीसरस्सेत्यादिना ॥ अथेनाह सूत्रसिद्धिं शायं केवलं जम्बू १ लवणधाय २ का  
लोय पुष्कराद् ३ जुयलाद् ४ वारुणि ५ खोर ६ घय ६ क्वू ७ नदीसर ८ अरुण ९ दीवुदही ॥ १ ॥ इति गणनया ऽष्टमो नदीश्वरः स एव वरश्च मनुष्य  
होषा पेक्षया बहुतरजिनभवनादिसद्भावेन तस्य वरत्वा दिति तस्य चक्रवालविष्कम्भस्य प्रमाणं ६३८४००००० उक्तञ्च तेवद्विक्रोडिसय चउरासीइसयसह  
स्राइ नदीसरवरदीवो विक्खभोचक्रवालेणमिति ॥ १ ॥ मध्य आसी देशभागश्च देशावयवो देशमध्यभागः सचा नात्यंतिक इति बहुमध्यदेशभागो न प्रवे  
शादिपरिगणनया निश्चितो पितु प्रायइति अथवा अत्यंत मध्यदेशभागो बहुमध्यदेशभाग इति तत्र इहा ज्ञानका मूले दशयोजनसहस्राणि विष्कम्भेणे

ते अपराजिए । तेणंदारा चत्तारि जोयणाइं विस्कंजेणं तावइयचेव पवेसेण पसत्ता । तत्थणं चत्तारि देवा  
महिहिया जाव पलिनवमठिइया परिवसति त० विजए जाव अपराजिए । धायइखंणेणदीवे चत्तारि जो  
यणसयसहस्साइं चक्रवालविस्कंजेण प० जंबूदीवरस्सणदीवरस्स बहिया चत्तारि जरहाइ चत्तारि एरवया  
इं एवंजहा सदुहेसए तहेव णिरवसेस जाणियइ जाव चत्तारि मंदरा चत्तारि मंदरचूलियानुण णदीसरवर

मोटी रिद्धिना यावत् १ पत्योपमनी स्थितिनाथणी वसेछे ते कहेछे ॥ विजय १ । वेजयंत २ । जयत ३ । अपराजित ४ ॥ धातकीखड दीप च्यार  
लाख योजन ४००००० चक्रवाल विष्कम्भपणे कह्यो । जंबूदीपनामा दीपने वाहिर च्यार मेरुपर्वतनी चूलिकाछे एह बेधातकी खडमाछे वे पुष्करार्द्ध  
माछे । नंदीश्वर दीप ८ मां नोचक्रवालविष्कंज पिहुलपणे ६३८४००००० विष्कंजमान बहु अत्यंत पुरो मध्यदेशानु जाग तेहमा पूर्वोदिक च्यार दिशिमा

त्युक्त द्वीपसागरप्रज्ञप्तिसंग्रहस्यान्तूक्तं सुलसीइसहस्राइं उब्बिडाउगयासहस्रमुहो । धरणितलेविच्छिन्ना ऊणगातेदससहस्रा ॥ १ ॥ नवचेवसहस्राइं  
पचेवयहोतिजोयणसयाइं । अजणगपब्बयाणं मूलंमिउहोइविक्वभो ॥ २ ॥ [कन्दस्थेत्यर्थः] नवचेवसहस्राइ चत्तारियहींतिजोयणसयाइ । अंजणगपब्बयाण  
धरणितलेहोइविक्वंभोति ॥ ३ ॥ तदिदंमतान्तर मवसेय मेवमन्यत्रापि मतान्तरवीजानितुकेवलिंगम्यानीति ॥ गोपुच्छेसठाणेति ॥ गोपुच्छो ह्यादौस्थूलो

स्सणंद्दीवरस्स चक्कावालविस्कजस्स वज्जमज्जदेसजाए चउद्दिसिं चत्तारि अंजणगपब्बया पस्सत्ता तंजहा पुरच्छि  
मिल्लेअंजणगपब्बए पच्चत्थिमिल्लेअंजणगपब्बए उत्तरिल्लेअंजणगपब्बए दाहिणिल्लेअंजणगपब्बए । तेणंअंजणगपब्ब  
या चउरासीइजोयणसहस्साइं उहंउच्चत्तेण एगंजोयणसहस्सं उव्वेहेणं मूलेदसजोयणसहस्साइं विस्कंजेणं त  
दणंतरंचणं मायाएमायाए परिहाएमाणा परिहाएमाणा उवरिमेगंजोयणसहस्स विस्कंजेणं प० मूले एक्का  
तीसेजोयणसहस्साइं उच्चत्तेवीसेजोयणसए परिस्केवेणं उवरितिस्सिजोयणसहस्साइं एगंचवावठिजोयणसयं

६  
च्यार अंजनक पर्वतछे ते कहैछे ॥ पूर्वदिशामां एक अंजनक पर्वतछे १ । बीजो दक्षिणदिशामां अंजनक पर्वतछे २ । त्रीजो पश्चिम दिशामां अंजनक  
पर्वतछे ३ । चौथो उरत्त दिशामां अंजनकपर्वत ४ ॥ ते च्यार अंजनक पर्वत चौरासी हजार योजन ऊंचा ऊंचपणोछे एक हजार योजन ऊंडा धर  
रतीमाछे मूल कदमां दश हजार योजन विष्कंजपणे तिवार पळी थोळोथोडो हीनहीन पामते ऊपर एक हजार योजन विस्कजपणे पिहुल पणे  
कह्या मूलमा एकत्रीस हजार छस्से तेत्रीस योजन परिधि पाळलिफिरे तिवारे थाय ऊपरि त्रण हजार एकसी बासठि योजन परिधिछे मूलमा



न्ते सूक्ष्म स्तद्वत्तेपीति ॥ सर्वजणमयस्ति ॥ अजनं क्षणरत्नमिश्रेण स्तमयाः सर्वैवा नन्यमयत्वेन सर्वथेनां जनमयाः सर्वाञ्जनमयाः परमकृष्णा इति भावः ॥  
 उत्तमं भिगगस्तद्वत्कज्जल अजणधाउसरिसाविरायति । गगणतलमणुलिहता अजणगापब्बयारम्भति ॥ १ ॥ अच्छा आकाशस्फटिकवत् सगहा क्षणपर  
 माणस्तन्निष्पत्ताः क्षणादलनिष्पन्नपटवत् लगहा श्रृणाः मसृणा इत्यर्थः घुणितपटव त्तया घृष्टा इव घृष्टाः खरपाणया पाषाणप्रतिमावत् मृष्टा इव मृष्टाः  
 सुगुमारपाणया पाषाणप्रतिमेन शोधिताया प्रमार्जनिकयेव अनएव नौरजसः रजोरहितत्वा त्रिमल्लाः कठिनमलाभावात् धौतजस्तवद्वा निष्पंका आर्द्राः  
 मलाभावा दकलङ्गत्वाया निष्ककउच्छाया निष्कट्टका निष्कवचा निरावरणेत्यर्थः च्छाया शोभा येपान्ते तथा अकलङ्गशोभावा सप्रभा देवानन्दकत्वा  
 दिप्रभावयुक्ता अथवा स्वेन आत्मना प्रभान्ति न परंत इति स्वप्रभाः यतः समरीचीया सह मरीचिभिः किरणे र्येते तथाविधा अतएव सउज्जीया सहो  
 द्योतेन वस्तुप्रभासनेन वर्तन्ते येते तथा पासाइयस्ति प्रसादोया मनसः प्रसादकरा दर्शनीया स्तां चतुषा पश्यन्नपि न अमं गच्छतीत्यर्थः अभिरूपाः  
 कमनीयाः प्रतिकरूपाः द्रष्टारं द्रष्टारंप्रति रमणीया इति यावच्छब्दसंग्रहः बहुसमा अत्यन्तसमा रमणीयाश्च ये ते तथा सिद्धानि शाश्वतानि सिद्धानांवा

परिस्केवेणं मूलेविच्छिन्ना मज्जेसंस्किन्ना उप्पितणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया सल्लञ्जणगमया ञ्छा जाव  
 पफिरूवा । तेसिणं ञ्जणगपट्टयाणं वज्जसमरमणिज्जानूमिन्नागा पस्सत्ता तेसिण वज्जसमरमणिज्जाणंनूमिन्ना

विस्तीर्णा पिङ्गुलाळे मध्यजागमा संक्षिप्तळे साकफाळे ऊपरि तनुसूक्ष्म पातलाळे गायना पूरुने आकारें सस्थितळे आदिमा स्थूल मध्यमा साकडा  
 अंतमा सूक्ष्म सघलाई रत्नमयळे अंजन कालारत्ननाळे निर्मलळे यावत् प्रतिकरूपळे जोनार सर्वेनें रमणीकलागे ते अजन पर्वतने ऊपर घणुं सम

शास्त्रताना मर्ह्यतिमाना मायतनानि स्थानानि सिद्धायतनानि उक्तञ्च अजणमपव्वयाणं सिहरितलेसुहवतिपत्तेयं । अरिहंताययणाइं सीहनिसायाइं तुगाइं ॥ १ ॥ मुखे द्वारे आयतनस्य मण्डपा मुखमण्डपाः पट्टशालारूपाः प्रेक्षा प्रेक्षणक तदर्थं गृहरूपा मण्डपाः प्रेक्षागृहमण्डपाः प्रसिद्धस्वरूपाः वडरं

गाण वज्जमज्जदेसन्नाए चत्तारि सिद्धायञ्जणा प० । तेणंसिद्धायञ्जणा एगंजोयणसयं ञ्जायामेणं प० पस्सा संजोयणाइ विस्सज्जेणं वावत्तरिजोयणाइं उहंउच्चत्तेणं । तेसिणंसिद्धायञ्जणाणं चउद्दिसिं चत्तारिदारा प० तंजहा देवदारे असुरदारे णागदारे सुवस्सदारे । तेसुणंदारेसु चउद्दिहा देवां परिवसति तंजहा देवा असु रा नागा सुवस्सा । तेसिणंदाराणं पुरत्तं चत्तारि मुहमंठवा प० । तेसिणं मुहमंठवाणं पुरत्तं चत्तारि पेच्छा

रमणीक सुदर भूमिजाग धरती कही ते बहुसम रमणीक भूमि जागनां मध्यदेशने विषे चार सिद्धायतन कह्या अरिहंतनी प्रतिमाना घर कह्या । ते सिद्धायतन १ सोयोजन आयाम लांबपणे पचासयोजन विष्कंज पिहुलपणे बोहत्तरयोजन ऊचा ऊंचपणे ते सिद्धायतननी चार दिशामां चार दरवाजा वारणाछे पूर्व १ । पश्चिम २ । उत्तर ३ । दक्षिण ४ ॥ ते कहैछे पूर्वदिशामां देवद्वार । दक्षिण दिशामां असुर २ । पश्चिममा नागदरवाजो उत्तर दिशामां सुपर्ण दरवाजो ४ ॥ तेह दरवाजाने विषे चार प्रकारना देवतावसेछे ते कहैछे ॥ देव १ । असुर २ । नाग ३ । सुपर्णकुमार ४ ॥ ते वारणाने आगलि चार मुखमंडप कह्या मुखमंडपने आगलि चार प्रेक्षाघर नाटक देखवाना घर कह्या । तेप्रेक्षाघरमंडपनां बहु मध्यदेशनेविषे चार मणिरत्न पीठिका कही । तेमणि पीठिकाने ऊपर चार सिंहासन कह्या । ते सिंहासन ऊपर चार विजयदूष्य रत्नमय वस्त्रविशेष कह्या

वञ्च रत्नविशेष स्तम्भया आखाटकाः प्रेक्षाकारिजनाशनभूताः प्रतीता एव विजयदूष्याणि वितानकरूपाणि वस्ताणि तन्मध्यभाग एवां कुशा अवलंबननि  
मित्त चन्द्रोपकाः कुम्भो मुक्ताफलानां परिमाणतया विद्यते येषुतानि कुम्भिकानि मुक्तादामानि मुक्ताफलमालाः कुम्भप्रमाणंच दोअसई सपईओ दोपसईओ  
सेइया चत्तारिसेइयाओ कुडओ चत्तारिकुडवा पत्थो चत्तारिपत्थया आढय चत्तारिआढया दोणो सडोआढयाइ जहखोकुभो असोइ मज्झिमो सय मुक्कोसो  
त्ति ॥ तद्वेत्ति ॥ तेषामेव मुक्तादाम्ना मई मुच्चत्वस्य प्रमाण येषान्तानि तद्वर्जोच्चत्वप्रमाणानि तान्येव तन्मात्राणि तैः ॥ अडकुभिकेहिंति ॥ मुक्ताफलार्द्धकुभव

घरमंठवा प० । तेसिणं पेच्छाघरमंठवाणं वज्जमज्जदेसजाए चत्तारि वडरामयाअरुकाफगा प० । तेसिणं  
वडरामयाणं अरुकाफगाणं वज्जमज्जदेसं चत्तारि मणिपेठियाणं प० । तासिणंमणिपेठियाणं उवरिं चत्ता  
रि सीहासणा पम्पत्ता । तेसिण सीहासणाणं उवरिं चत्तारि विजयदूस प० । तेसिणं विजयदूसगाणं व  
ज्जमज्जदेसजाए चत्तारि वडरामया अंकुसा प० । तेसिणं वडरामएसुअंकुसेसु चत्तारि कुंजिया मुक्तादामा  
प० । तेणंकुंजियामुक्तादामा पत्तेयं पत्तेयं अस्सेहिं तदरुच्चतपमाणमित्तेहिं चउहिं अरुकुंजिएहिं मुक्तादामे

ते विजयदूष्यना मध्यजागमा च्यार वज्जमय अकुश अंकोठाळे । वज्जमय अकुशमा च्यार कुजिका ते कुजप्रमाण मोतीनी दाम मालाकही । ते मोतीनी  
माला प्रत्येके प्रत्येके तेहथी अर्द्ध प्रमाण उच्च एहवी अन्यचार अर्द्ध कुजिकाप्रमाण मोतीनी मालाथी सर्वथा सर्वत चोफेर व्याप्तळे ते प्रेक्षाघरमड  
ग्ने आगलि चार मणिपीठिका कही । ते मणिपीठिकाने ऊपर च्यार २ चैत्यस्तूप कह्या । ते चैत्यस्तूपने च्यार दिशिमा प्रत्येके वली च्यार मणि

द्विः सर्वतः सर्वासुदिक्षु किमुक्तमभवति समन्तादिति चैत्यस्य सिद्धायतनस्य प्रत्यासन्नाः स्तूपाः प्रतीता चैत्यस्तूपाश्चित्ताह्लादकत्वाद्वा चैत्यस्तूपाश्चैत्यस्तूपाः सपर्यङ्गनिषणाः पद्मासननिषणा एवचैत्यवृक्षा अपि महेन्द्रा इत्यतिमहान्तः समयभाषया ते च ते ध्वजाश्चेति अथवा महेन्द्रस्येव शक्रादे र्ध्वजा महेन्द्रध्वजा.

हिं सङ्ख्यं समन्तासंपरिस्क्रित्ता तेषिणं पेच्छाघरमंजवाणं पुरं चत्तारि मणिपीठिया पस्सत्ता । तासिणंमणि पेठियाण उवरिं चत्तारि चेइयथून्ना प० । तेषिण चेइयथून्नाणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेठि यानु प० । तासिणं मणिपेठियाणं उवरिं चत्तारि जिणपफिमानु सङ्खरयणामइयानु सपलिङ्गं कणिसस्सानु थून्नाज्जिमुहीनु चिठ्ठति । तंजहा रिसन्ना वरुमाणा चदाणणा वारिसेणा । तेषिणं चेइयथून्नाणं पुरं चत्तारि मणिपेठियाणु प० । तासिणं मणिपेठियाणं उवरिं चत्तारि चेइयसुक्का प० । तेषिणं चेइयसुक्काणं पुरं चत्तारि मणिपेठियाणु प० । तासिणं मणिपेठियाणं उवरिं चत्तारि महिदज्जया प० तेषिणं महिं

पीठिका कही ते मणिपीठिकाने ऊपर चार जिनप्रतिमाछे सर्व रत्नमयछे पर्यंकासन वैठीछे तेस्तूपने सन्मुख साहमी रहीछे । रिषज बर्हुमान चंद्रा नन वारिषेण एहनामनी प्रतिमाछे । तेहस्तूपने आगलवली चार मणिपीठिका कही ते मणिपीठिकाने ऊपर चार चैत्यवृक्ष कह्या तेरत्नमयछे । ते चैत्यवृक्षने आगलिवली चार मणिपीठिका कही । ते मणिपीठिकाने ऊपर चार मोटा महा इद्रध्वजछे । तेइद्रध्वजने आगलि चार नंदानामा पुष्करणी वावीकही सर्व पुष्करणी नंदा कहिये । ते पुष्करणीने चारों दिशिमां प्रत्येके चार वनखंरु कह्या ते कहैछे पूर्वदिशिमां । दक्षिणदि

शाखतपुष्करिणः सर्वा अपि सामान्येन मन्दे लुप्यन्ते ॥ सत्तयगावर्णसि ॥ सप्तच्छदवनमिति ॥ तिस्रोवाणपट्टिरुवगति ॥ एकद्वारं प्रति निर्गमप्रवेशार्थं विदि

दङ्कयाणं पुरं चत्वारि णंदानुपुस्करणीन प० । तासिणंपोस्करणीणं पत्तेयंपत्तेयं चउद्दिसिं चत्वारि वणखं  
 णा प० तंजहा पुरच्छिमेणं दाहिणेणं पञ्चाल्यमेण उत्तरेणं । पुह्णेणञ्जसोगवणं दाहिणन्हींतिसत्तिवणवणं ।  
 अ्वरेणचंपगवणं चूतवणंउत्तरेपासे ॥ १ ॥ तत्त्यण जेसे पुरच्छिमिल्ले अजणगपल्लए तरुसणं चउद्दिसि चत्ता  
 रि णदा पोस्करणीन पम्मात्तानु तंजहा णदा णंदुत्तरा अणंदा णदिवद्धणा । तनुणंणदापोस्करणीन एगजो  
 यणसयसहरुसं आयामेणं पम्मासजोयणसहरुसाइ विस्क्कजेणं दसजोयणसयाइ उव्वेहेण । तासिणं पोस्करणीणं  
 पत्तेयंपत्तेयं चउद्दिसि चत्वारि तिसोवाणपट्टिरुवगा पम्मात्ता तंजहा तेसिण तिसोवाणवट्टिरुवगाणं पुरं

शिमा । पश्चिमदिशिमां । उत्तरदिशिमां ॥ पूर्वमां अशोकवृक्षानुवन १ । दक्षिणदिशिमां सप्तच्छदसादडीवृक्षानुवन २ । पश्चिमदिशो चंपकवन ३ ।  
 उत्तरदिशिमां आम्रवन ४ ॥ तिहा जे पूर्वदिशिनुं अजणग पर्वतले तेहने चार दिशिमा चार नदा पुस्करणी वावीकही ते कहैले ॥ नदोत्तरा १  
 नंदा २ । आनंदा ३ । नदिवर्द्धना ४ ॥ तेनदा नामा पुस्करणी एकलाख योजन आयाम लावपणोले पचास हजार योजन विस्क्कजपणे पितुलीले द  
 शसे एतले १ हजार योजन ऊडीले । ते पुस्करणी वावीने प्रत्येके एकेकी वावीने त्रण सोपान प्रतिरूपक मत्तले त्रण दिशा साहमा त्रण धारणाळे  
 तेहमां पेसवाने पावकियाळे । ते त्रण सोपान प्रतिरूपकने आगलि चार तीरणाळे ते कहैले ॥ पूर्वदिशिमां दक्षिणमा पश्चिममा उत्तरमां । ते पुस्क

चत्वारि तोरणा पश्चात्ता तंजहा पुरच्छिमेणं दाहिणेणं पञ्चत्थिमेणं उत्तरेणं । तासिणं पोस्करणीणं पत्तेयंप  
 तेयं चउद्दिसिं चत्तारि वणखळा पश्चात्ता तं० पुरउं दाहिणउं पञ्चत्थिमेणं उत्तरेणं । पुव्वेणअसोगवणं जा  
 व चूयवणउत्तरेपासे । तासिणं पुस्करणीण बज्जमज्जदेसजाए चत्तारि दहिमुहगपव्वया पश्चात्ता । तेणंदहि  
 मुहगपव्वया चउसठिंजोयणसहस्साडं उह्वउच्चत्तेणं एगजोयणसहस्समुव्वेहेण सव्वत्थसमा पत्तगसठाणसठिया  
 दसजोयणसहस्साइ विस्सजेणं एक्कतीस जोयणसहस्साइ उच्चत्तेवीसेजोयणसए परिस्सवेणं सव्वरयणामया  
 अच्चा जाव पफिख्खवा । तेसिण दहिमुहगपव्वयाण उवरि बज्जसमरमणिज्जा भूमिजागा पश्चात्ता सेसंजहे

रणीने प्रत्येके २ च्यार दिशि च्यार वनखंडछे ते कहैछे पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशिमां पूर्वदिशिमां अशोकवन एम यावत् आम्रवनलगेकहै उत  
 रदिशामा ४ ॥ ते पुस्करणीना बहुमध्य देशभागमा विचाले च्यार दधिमुखपर्वत कह्या दहीनीपरे ऊजलाछे ते दधिमुखपर्वत चौसठ हजार योजन  
 ना ऊंचा ऊचपणे एक हजार योजन ऊडाछे वावीप्रमाणे सघले मूले शिखरे सरिखाछे पालाने संस्थाने आकारे संस्थितछे दशहजार योजन विस्कां  
 न पिहुलपणेछे एक त्रीस हजार योजन ऊपरे छस्से त्रैवीस योजन परितेपे परिधिछे सर्वरत्नमय ऊजलाछे निर्मलछे यावत् प्रतिरूप जीवा योग्य  
 छे । ते दधिमुख पर्वतने ऊपरि सम रमणीक सुंदर भूमिजाग प्रदेशछे । शेष बीजु जिम अजनक पर्वतनुं कह्यो तिमज जाणवु विशेष रहित जा  
 णवु यावत् आम्रवन उत्तरने पासेछे । तिहां जे दक्षिदिशिनुं अजनकपर्वतछे तेहने च्यारदिशे च्यार नदा पुष्करिणी कह्यो ते कहैछे ॥ जद्रा १ ।  
 विशाला २ । कौमुदी ३ । पुंडरीकिणी ४ ॥ ते च्यार नदा पुष्करणी एकलास योजन लावपणेछे । शेष बीजु तिमज यावत् दधिमुख पर्वत यावत्

गभिमुखा स्तिस्रः सोपानपत्तयो दधिवत्खेत मुख शिरो रजतमयत्वा द्येषांति तथा उक्तञ्च सखदलविमलनिम्बल दहिघणगोकखीरहारसकासा गगणलत

व अंजणगपद्भ्याणं तहेव गिरवसेसं ज्ञाणियद्दं जाव चूअवणंउत्तरेपासे । तत्थणं दाहिणिल्ले अंजणगपद्भ्या  
ए तस्सण चउद्दिसि चत्तारि णंदानु पुस्करणीनु पस्सत्तानु तजहा न्दा विसाला कुमुया पोंफरीकिणी । ता  
नुणं णंदानु पोस्करणीनु एक्कं जोयणसयसहस्स सेसंतचेव जाव दहिमुहगपद्भ्या जाव वणखळा । तत्थणं  
जेसे पद्भ्यामिल्ले अंजणगपद्भ्या ए तस्सण चउद्दिसि चत्तारि णंदानु पोस्करणीनु पस्सत्तानु तजहा णदिसेणा  
अमोहा गोथूजा सुदसणा । सेसतचेव तहेव दहिमुहगपद्भ्या सिद्धाययणा जाव वणखळा । तत्थणं जेसे उत्त  
रिल्ले अंजणगपद्भ्या ए तस्सण चउद्दिसि चत्तारि णंदानु पोस्करणीनु प० तं० विजया वेजयंती जयती अपरा  
जिया ताणं पोस्करणीनु एगजोयणसय तचेवपमाण तहेव दहिमुहपद्भ्या तहेव सिद्धायअणा जाव वणखळा  
णदीसरवरस्सण द्वीवरस्स चक्कावालविस्कनस्स वज्जमज्जदेसजाए चउसुविदिसासु चत्तारि रतिकरणपद्भ्या

वनखंलगे कहवु । तिहांवली जे पश्चिम दिशिनुं अंजन पर्वतछे तेहने चारदिशिमां चार पुष्करणी कही नदिषेणा १ । अमोघा २ । गोस्तूजा ३ ।  
सुदर्शना ४ ॥ शेषतिमज प्रथमनीपरे दधिमुखपर्वत तिमज सिद्धायतन यावत् नवसड लगे जाणावा । तिहांवली जे उत्तरदिशिनुं अंजनपर्वतछे तेहने  
चारदिशि चार नंदापुष्करणी कही ते कहैछे ॥ विजया १ । वेजयती २ । जयती ३ । अपराजिता ४ ॥ ते पुष्करणी एक लाख योजन लावीछे ते

प० तं० उत्तरपुरच्छिमिल्लरतिकरगपल्लए दाहिणपुरच्छिमिल्लरतिकरगपल्लए दाहिणपञ्चत्थिमिल्लरतिकरगपल्ल  
 ए उत्तरपञ्चत्थिमिल्लरतिकरगपल्लए । तेण रतिकरगपल्लया दसजोयणसयाइं उहं उच्चतेण दसगाउयसयाइ  
 उव्वेहेणं सल्लत्यसमाय ऊल्लरिसंठाणसंठिया दसजोयणसहस्साइं विस्संजेणं एक्कतीसजोयणसहस्साइं उच्चतेवी  
 सेजोयणसए परिकेवेणं सल्लरयणामया च्छुक्का जाव पफ़िरूवा । तत्थणं जेसे उत्तरपुरच्छिमिल्ले रतिकरग  
 पल्लए तरस्सणं चउद्दिसि मीसाणस्स देवरस्सो चउरहमग्गमहिसीणं जंबूदीवपमाणमेत्तानं चत्तारि रायहाणीनं

हीज प्रमाण तिमज दधिमुखपर्वत तिमज सिद्धायतन यावत् वनखंड जाणवा । नंदीश्वरवरदीप चक्रवालवलय विष्कंज तेहना बहुमध्य देशजागमां  
 चारविदिशि चार रतिकर पर्वतछे रतिशाता सुखना करनारछे ते कहैंछे ॥ उत्तर अने पूर्व दिशाने विचे रतिकर पर्वत ईशान विदिशिमाछे १ ।  
 दक्षिण अने पूर्वने विचे अग्निविदिशिमा बीजो रतिकर पर्वत २ । दक्षिणपश्चिमने विचाले नैरित विदिशिमां त्रीजो रतिकरपर्वत ३ । उत्तरप  
 श्चिमने विचाले वायुविदिशिमा चौथो रतिकर पर्वतछे ४ ॥ ते रतिकर पर्वत १ हजार योजन ऊचा ऊचपणोछे । एक हजार कोश धरतीमाछे  
 सघले ऊपर नीचे सम वरावरछे । भालारने सस्थाने संस्थितछे भालारजेहवु आकारछे दश हजार योजन पिहुलाछे । एकत्रीस हजार छस्से त्रैवीस  
 योजन ३१६२३ परिधिछे । सर्व रत्नमयछे निर्मल यावत् देखवा योग्यछे । तिहां जे उत्तरपूर्वनेविचाले ईशाननुं रतिकरपर्वत तेहने चार दिशिमां  
 ईशानेद्र देवेद्र देवताना राजानी चार अग्रमहिषीनी जंबूदीप प्रमाणे एकएकलाख योजननी ४ राजधानी कही ईशानेद्र उत्तर लोकार्दुनु स्वामीछे  
 तेमाटे उत्तर पूर्वने विचाले अने उत्तर पश्चिम विचाले राजधानीछे तेकहैंछे ॥ नंदा १ । नंदोत्तरा २ । उत्तरकुरा ३ । देवकुरा ४ ॥ इद्राणीना नाम



मणुलिहंता सोहंतेदधिमहारम्भति ॥ १ ॥ बहुमध्यदेशभागे उत्तलक्षणे विदिक्षु पूर्वोत्तराद्यासु रतिकरणा द्रतिकराः ४ राजधान्यः क्रमेण कृष्णादीना मिन्द्रा  
णीनामिति तत्र दक्षिणलोकार्धनायकत्वाच्छक्रस्य पूर्वदक्षिणदक्षिणापरविदिग्दयरतिकरयो स्तस्येन्द्राणीनां राजधान्यः इतरयो रीशानस्योत्तरलोकार्धा  
धिपतित्वा तस्येति एवच नन्दीश्वरे दीपे १६ अञ्जनकदधिमखेषु विंशतिर्जिनायतनानि भवन्ति अत्रच देवाश्चातुर्मासिकप्रतिपत्सु सायत्सरिकेषु चान्येषु

पश्चत्तानं तंजहा णंदोत्तरा णंदा उत्तरकुरा देवकुरा । करहा राईए रामाए रामरक्कियाए । तत्थणं जेसेदा  
हिणपुरच्छिमिल्ले रतिकरगपल्लए तस्सणं चउद्दिसि सक्कस्सदेविदस्स देवरस्सो चउरहमग्गमहिसीणं जंबूद्दी  
वपमाणानं चत्तारि रायहाणीनं पश्चत्ता तंजहा सुमणा सोमणसा अच्चिमाली मणोरमा । पउमाए सिवाए  
सुईए अंजूए । तत्थण जेसे दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपल्लए तस्सणं चउद्दिसिं सक्कस्सदेविंदस्स देवरस्सो  
चउरहमग्गमहिसीणं जंबूद्दीवपमाणमेत्तानं चत्तारि रायहाणीनं पश्चत्तानं तंजहा चूया चूयवफिंसा गोथूजा

कहैछे कम्प्रा १ । राइ २ । रामा ३ । रामरक्षिता ४ ॥ तिहा जे दक्षिण पूर्व विचे अग्नि कूणमा रतिकर पर्वतछे तेहने चार दिशि शक्र देवेन्द्र  
देवतानां राजानी चार अग्रमहिषीनी जंबूद्दीप प्रमाण एतले १ लाख योजननी चार राजधानी कही तेकहैछे समना १ । सोमनसा २ । अर्च्चिमा  
ली ३ । मनोरमा ४ ॥ इन्द्राणीना नाम कहैछे पट्टा १ । शिवा २ । सुतीता ३ । अजू ४ ॥ तिहा जे दक्षिण पश्चिम विचे नैरित कूणमा रतिकर पर्वतछे  
तेहनी चार दिशि शक्र सौधमैन्द्र देवेन्द्र देवताना राजानी चार अग्रमहिषी नी एक १ लाख योजन प्रमाण चार राजधानीछे तेकहैछे भूता १ ।

च बहुजिनजन्मादिषु देवकार्येषु समुदिता अष्टाद्विकामहिमाः कुर्वन्तः सुखं सुखेन विहरन्ती त्युक्तं जीवाभिगमे ततो यद्यन्यान्यपि तथाविधानि संति  
 सिद्धायतनानि तदानविरोधः सम्भवति च तानि उक्तनगरीषु विजयनगर्या मिवेति तथा दृश्यतेच पञ्चदशस्थानो दारलेयः सोलसदहिमुहसेला कुंदा  
 मलसखचन्दसकासा कणयनिभावत्तोस रङ्गकरगिरिवाहिरातेसि ॥ १ ॥ इयो ईयो वाँप्यो रतराले वहि ष्कोणयोः प्रत्यासन्नौ द्वौद्वावित्यर्थः अंजणगाद्रगिरीण  
 नाणामणिपज्जलतसिहरेसु वावन्नजिणनिलया मणिरयणसहस्रकूडधरेत्ति ॥ १ ॥ तत्त्वतु बहुश्रुताविदतीति एतच्चपूर्वोक्तं सर्वं सत्यं जिनोक्तत्वादिति सत्यं

सुदसणा । अमलाए अचक्राए नवमियाए रोहिणीए । तत्थणं जेसे उत्तरपञ्चल्यिमिल्ले रतिकरगपद्मए तस्स  
 णं चउद्विसि मीसाणस्स चउरहमग्गमहिसीण जवूदीवपमाणमेत्तानं चत्तारि रायहाणीनं पस्सत्तानं तंजहा  
 रयणा रयणोच्चया सत्तरयणा रयणसंचया । वसुए वसुगुत्ताए वसुमित्राए वसुंधराए । चउद्विहे सच्चे पस्सत्ते  
 तंजहा णामसच्चे ठवणसच्चे दव्वसच्चे नावसच्चे । आजीवियाणं चउद्विहे तवे पस्सत्ते तंजहा उग्गतवे घोरत

भूतावतंसा २ । गोस्तूजा ३ । सुदर्शना ४ ॥ इंद्राणीना नाम कहैछे अमला १ । अप्सरा २ । नवमिका ३ । रोहिणी ४ ॥ तिहां जे उत्तर पश्चिम दिशि  
 वायु कूणमां रतिकर पर्वतछे तेहनी चार दिशि ईशानेद्र देवेद्र देवताना राजानी चार अग्रमहिषीनी चार १ एक लाख योजन प्रमाणं चार  
 राजधानी कहौ तेकहैछे रत्ना १ । रत्नोच्चया २ । सर्वरत्ना ३ । रत्नसंचया ४ ॥ इंद्राणीना नाम कहैछे वसू १ । वसुगुप्ता २ । वसुमित्रा ३ । वसुंधरा ४ ॥  
 चार प्रकारे सत्य साधु कह्यो तेकहैछे नाम सत्य ते रिषभादि नाम सत्यछे १ । स्थापनासत्य जगवंतनी प्रतिमा २ । द्रव्यसत्य जे जीव जिन थासे ३ ।

बधेन सत्यसूत्र नाम स्थापना सत्ये सुज्ञाने द्रव्यसत्य मनुष्ययुक्तस्य सत्यमपि भावसत्यं तु यत्स्वपरानुपरोधेन उपयुक्तस्येति सत्य चारित्र्यविशेषइति चारित्र्यवि  
शेषानुद्देशकात् यावदाह ॥ आजीविएत्यादि ॥ आजीविकाना गोसालकशिष्याणा उय तपो ऽष्टमादि कचन उरमितिपाठ स्तत्र उर शोभन इह लोकाद्या  
शसारहितत्वेनेति घोरमात्मनिरपेक्षं ॥ रसनिज्जुहणता ॥ घृतादिरसपरित्यागः जिह्वेन्द्रियप्रतिसलीनता मनोज्ञामनोज्ञे आहारेषु रागद्वेषपरिहारइति आह  
तानान्तु हादशधेति मनोवाकायाना मकुशलत्वेन निरोधाः कुशलत्वेनू दीरणानि सयमा उपकरणसयमो महामूल्यवस्तादिपरिहारः पुस्तकवस्त्र

बाहल्लेति ॥ बाहल्यं पिण्डं पृथुत्व  
विस्तार स्ताज्या तुल्यं समानं श्रुतु

दृग्गन्धस्पर्शरसचक्षुःपरिहारोवा तत्र गंडोकच्छविमुष्टौ सपुडफलएतहाक्किवाडीय एयपोत्ययपणग पणत्तंवीयरगेहि ॥ २ ॥ बाहल्लपुहुत्तेहि गंडीपोत्योयतुल्लओ

वे रसनिज्जुहणया जिह्विन्द्रियपरिसलीणया । चउल्लिहे संजमे पणत्ते तंजहा मणसजमे वयसंजमे कायसंज

जावसत्य ते प्रत्यक्ष वैठा जिन ४ ॥ आजीविक गोसालक मतना शिष्य तेहना तप च्यार प्रकारें कह्या तेकहैछे उग्रतप ते अष्टमादिक तप १ । घोर  
तप ते लोकसुखनी इच्छा रहित २ । रसनिज्जुहणा ते घृतादिरसनु त्याग ३ । जिह्वेन्द्रियप्रतिसलीनता ते जला माठा आहारमा राग द्वेष नथी २४  
अरिहत ने वारे जेदे तपछे ४ ॥ च्यार प्रकारनु सयमकह्यो माठा मन प्रमुखनी उदीरणानुं नियम कह्यो तेकहैछे मनसयम माठा मननु रुंधवु ते  
हीज सयम १ । एम मांठा वचननु रोधवु ते वचनसंयम २ । कायसजम कायाथी पाप न करवु ते काय संयम ३ । उप करण सयम ते महा मूल्य वस्त्रा

रस्त्रो दीर्घश्च कच्छपीपुस्तक उज्जयोः पार्श्वयो रन्तपर्यं चउरंगुलति ॥ अंगुलचतुष्टयप्रमाणो दीर्घोवा आकृतौ वृत्ताकृति वर्तुलाका ॥ संपुडगोति  
 न्तज्ञागे तनुकः सूक्ष्मो मध्यज्ञागे पृथुलो गण्डीपुस्तको रो मुष्टिपुस्तको ऽथवा ऽगुलचतुष्कायाम श्रुतुष्कोणो मुष्टिपुस्तकः ॥ ३ ॥ संपुटफलक  
 ज्ञेयः ॥ विस्तृतो अल्पबाहल्यो ज्ञातव्यः ॥ २ ॥ पुस्तको यत्र

दोहो कत्यविअंतेतणुओ मज्जेपिहुलोमुण्यब्बो ॥ २ ॥ चउरगुलदोहोवा वट्टोगिइमुट्ठिपोत्यओअहवा चउरंगुलदोहोच्चियचउरसोसोउविण्णो ॥ ३ ॥ सपु  
 द्वादीनि फलकानि भवन्ति व ॥ छिवाडिएति ॥ तनुज्जिः पत्रै रूक्षितरूपः  
 शिग्जनस्यो द्वारनिक्षेपादिरा किचिदुन्नतो भवति च्छेदपाटीपुस्तक इति ॥  
 धारः संपुटकार्यं करणविज्ञेयः

डगोदुमगाइं फलगावोत्यछिवाडिएताहे तणुपभूसियरूवा होइछिवाडोवुहावेति ॥ ४ ॥ दोहोवाक्कसोवा जोपिहुलोहोइअप्पवाहलो तंमुणियसमय  
 सारा छिवाडिपोत्यभण्णतीह ॥ ५ ॥ वस्त्रपचक द्विधा अप्रत्युपेक्षितदुःप्रतिपेक्षितभेदा तत्र अप्पडिलेहियदूसे चूलीउवहाणगचनायव्व गडुवहाणालिगिणि  
 मसूरएचेवपोत्तमए पल्लहविकोयवपावा रणवतएतहयदाडिगालीओ दुप्पडिलेहियदूसे एववीयभवेपणग ॥ २ ॥ पल्लहविहत्थुत्थरण तुकोयओरूयपूरिओ  
 पडओ दडिगालीधोयपोत्तो सेसपसिद्धाभवेभेया ॥ ३ ॥ तणपणगपुणभणिय जिणेहिकम्मट्ठगट्ठिमहणेहि सालीवीहीकोइव रालगरन्नेतणाइंच ॥ ४ ॥ चर्मपंच  
 कमिद अयएलगायमहिसो भिगाणअजिणंतुपचमंहोइ तलियाखल्लगवज्झो कोसगकत्तीयवीयतुत्ति ॥ ५ ॥ वियाएत्ति ॥ त्यागो मनः प्रभृतीनां प्रतीतएव  
 अथवा मनःप्रभृतिभि रशनादे. साधुभ्यो दानं त्यागएव मुपकरणेन पात्रादिना भक्तादे स्तस्यवा त्याग उपकरणत्यागो न विद्यते किञ्चन द्रव्यजात अस्ये

त्यकिञ्चन स्तज्ञावो ऽकिञ्चनता निष्परिग्रहितेत्यर्थः साच मनः प्रभृतिभि रूपकरणापेक्षया च भवतीति तथोक्ता ॥ इतिचतुःस्थानकस्यद्वितीयोद्देशकः स मातः ॥ २ ॥ व्याख्यातो द्वितीयोद्देशको ऽथतृतीय आरभ्यते ॥ अस्यच पूर्वेण सहा य मभिसम्बन्धः पूर्वत्र जीवक्षेत्रपर्याया उक्ता इहतु जीवपर्याया उच्यंत इत्येव सम्बन्धस्यास्य दमादिसूत्रद्वय ॥ चत्तारीत्यादि ॥ अस्यचा य मभिसम्बन्धः पूर्वं चारित्र मुक्त तत्प्रतिबन्धकस्य क्रोधादिभावइति क्रोधस्वरूपनि रूपणायै द मुच्यते तदेव सम्बन्धस्यास्य दृष्टातभूतादिसूत्रव्याख्या राजी रेखा शेष क्रोधव्याख्यान मायादिवत् मायादिप्रकरणा ज्ञान्यत्र क्रोधविचारो वि

मे उच्यकरणसजमे । चउह्विहे वियाए पसत्ते तंजहा मणवियाए वइवियाए कायवियाए उवकरणवियाए चउह्विहा अकिचणया पसत्ता तजहा मणअकिचणया वइअकिचणया कायअकिचणया उवकरणअकिचणया ॥ चउत्थठाणस्स बीजं उद्देसं सम्मत्तो ॥ २ ॥ चत्तारि राईं पसत्ता तं० पव्यराईं पुढवि

दि परिहार ४ ॥ चार प्रकारे त्याग ते छाडवुं परिहरवुं तेकहैछे माठामननुं त्याग करवुं १ । मांठा वचन नु त्याग करवुं दुर्वलवचन असत्यवचन न वोल्वुं २ । कायत्याग ते अनसनादिके काया वोसराववी ३ । उपकरण त्याग वस्त्रादि जीर्णथया अथवा परठवतां अथवा जिनकल्पी थावुं ४ ॥ चार प्रकारे अकिचनता ते द्रव्य रहित थावुं कह्यो तेकहैछे मननी अकिचनता ते उपकरण वस्त्रादि ऊपरि इच्छा न करे १ । वचनथी परिग्रहनी इच्छा नकरे परिग्रहार्थ वचननुं व्यापार न करे २ । कायाथी परिग्रहने अर्थ उदम नकरे ते कायअकिचनता ३ । उपकरणअकिचनता जीर्णप्राय वस्त्रादि राखे तथा जिनकल्पी थई वस्त्रपात्रादि नराखै ४ ॥ एह चौथा ठाणा नो बीजो उद्देशो पूरो थयो ॥ २ ॥ हिवे त्रीजो लिखेछे ।

चित्रत्वात्स्वगतो द्वितीयचसुगममेव ॥ अयञ्च क्रोधो भावविशेषइति भावप्ररूपणाय दृष्टान्तादि सूत्रद्वयमाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ प्रसिद्ध किन्तु कर्हमो यत्र प्रविष्टः पादादिनाक्रष्टु शक्यते कष्टेनवा शक्यते खञ्जन दोषादि खञ्जनतुल्य पादादिलेपकारी कर्हमविशेषएव वालुका प्रतीता सातु लग्नापि जलशोषे पादादे रल्येनैव प्रयत्नेना पैतो त्यज्यलेपकारिणी श्रेनास्तु पापाणाः स्मरणरूपा स्तेपादादेः स्पर्शनेनैव किञ्चित् दुःख मुत्पादयति नतु तथाविध लेप मुपजन

राई वालुयराई उदगराई । एवामेव चउल्लिहे कोहे पस्यते तजहा पस्यराइसमाणे पुढविराइसमाणे वालुय राइसमाणे उदगराइसमाणे । पस्यराइसमाण कोहमणुप्पविठे जीवे काल करेइ णेरइएसु उववज्जइ पुढवि राइसमाणं कोहमणुप्पविठे जीवे काल करेइ तिरिस्कजोगिएसु उववज्जइ वालुयराइसमाण कोह णुप्पविठे

चार प्रकारे राई ते रेखा कही तेकहेछे पर्वतराई ते पर्वतनी रेखा १ । धरतीनी रेखा २ । वालूनी रेखा ३ । पाणीनी रेखा ४ ॥ एहनी परें चार प्रकारनु पुरुषने क्रोध कह्यो तेकहेछे पर्वतनीरेखा समान क्रोध जीवने नरक गासी १ । धरतीनीरेखा समान वरस लगिरहै ते २ । वालूनीरेखासरिखो जेहने चारमासलगे क्रोध रहै ३ । पाणीनीरेखा सरिखो जेहने १५ दिन क्रोध रहै ४ ॥ पर्वतनी रेखासमान क्रोधमां पड्ठो जीव मरण पामें ते न रक माहि ऊपजे १ । पृथ्वीरेखासमान क्रोधे पैठो जीव मरी ने तीर्यच योनिमा ऊपजे २ । वालूनी रेखासमान क्रोधें अनुप्रविष्ट जीव ते सहित मरी मनुष्यमा ऊपजै ३ । पाणीनी रेखासमान क्रोधे अनुप्रविष्ट जीव मरी देवतामा उपजे ४ ॥ हिवे दृष्टात सूत्र कहेंछे चार प्रकारे उदक पाणी कह्यो तेकहेछे कर्दमनु पाणी जेहमा पंठा पग कष्टथी काठी सके १ । खंजनोदक ते दीपकनी कलिका सरिखो कादव २ । वालू सहितपाणी सूकाय एतले

યંતિ કર્ફમાદિપ્રધાનાત્પદાનિ કર્ફમોદકાદીનોત્પન્નંતે ભાવો જીવસ્ય રાગાદિપરિણામ સ્તસ્ય કર્ફમોદકાદિસામ્ય તત્સ્વરૂપાનુસારેણ કર્મલેપ મગીકૃત્ય  
મસ્તવ્યમિતિ અનન્તર ભાવ ઉક્તો ઽધુના તદ્વતઃ પુરુષાન્ સદૃષ્ટાતાન્ ॥ ચત્તારિપક્ષોલ્યાદિના ॥ અત્યમિયત્યમિદૃશ્યેતદંતેન ॥ ગયેનાહ વ્યત્ત શાય નયર

જીવેકાલંકરેઈ મણુસેસુ ઉવવજ્ઞઈ ઉદગરાઈસમાણં કોહમણુપ્પવિઠે સમાણેજીવેકાલંકરેઈ દેવેસુ ઉવવજ્ઞઈ ।  
ચત્તારિ ઉદગા પ૦ તં૦ કહ્મોદણુ સ્વજણોદણુ વાલુન્દણુ સેલોદણુ । એવામેવ ચઉદ્ધિહે જાવે પ૦ તં૦ કહ્મ  
મોદગસમાણે સ્વજણોદગસમાણે વાલુઉદગસમાણે સેલોદગસમાણે । કહ્મોદગસામાણજાવમણુપ્પવિઠે જીવે  
કાલકરેઈ ણેરૂણુસુ ઉવવજ્ઞઈ એવ જાવ સેલોદગસમાણં જાવસમણુપ્પવિઠે જીવે કાલ કરેઈ દેવેસુ ઉવવજ્ઞઈ  
ચત્તારિ પક્કી પ૦ ત૦ રુચસંપન્નેનામમેગેણોરુવસપન્ને રુવસંપન્નેનામમેગેણોરુચસપન્ને એગેરુચસંપન્નેવિ

વાલૂ સરીપહે પગને લેપમાત્ર થાય એહવો કર્દમ ૩ । સિલા જે પાપાણસહિત પાણી તે પગને ફરસતાં દુરાકરે ૪ ॥ એહનીપરે ચ્યાર પ્રકારનો જાવ  
જીવનું પરિણામ કહ્યો તેકહે છે કર્દમ પાણી સરિયો જાવ એક કર્મના લેપગ્રાશ્રીને જાણવું । સંજનોદકસમાન એક જીવનું પરિણામ તેકાઈક  
હલકર્મી ૨ । વાલૂદકસમાન પરિણામ ૩ । શૈલોદકસમાન એક જીવનું પરિણામ ૪ ॥ કર્દમોદકસમાન પરિણામી જીવ કાલકરે નારકીમા ઝપજે ૧ ।  
એમ સ્વજનોદક જાવે મરે તે તિર્યંક યોનિમા ઝપજે ૨ । વાલૂદક સમાનપરિણામી જીવ મરે મનુષ્યમા ઝપજે ૩ । શૈલોદકસમાન પરિણામી જીવ  
મરે મરીને દેવતા મે ઝપજે ૪ ॥ ચ્યાર પ્રકારે પક્ષી કહ્યા તે કહે છે એકપક્ષી સ્વત જે શબ્દ તેહથી સહિત છે શબ્દમનોહર કરે છે પણ રૂપસંપન્ન

रुतं रूपच सर्वेषामेव पक्षिणां अस्त्य त स्ते विशिष्टे एवे ह ग्रह्ये ततो रुतं मनोज्ञः शब्द स्तेन संपन्न एकः पक्षी नचरूपेण मनोज्ञेनैव कोकिलव द्रूपसंपन्नो नोरुतसंपन्नः प्राक्ततशुकवत् उभयसंपन्नो मयूरवत् अनुभयस्वभावः काकवदिति पुरुषो न यथायोग मनोज्ञशब्दः प्रशस्तरूपच प्रियवादित्वसद्वेषत्वाभ्यां साधुर्वा सिद्धातप्रसिद्धधर्मदेशनादिस्वाध्यायप्रवधवान् लोचविरलवालोत्तमाङ्गतातपस्तनुतनुत्वमलमलिनदेहता अल्पोपकरणतादिलक्षणसुविहितसाधुरूप धारीवा योज्यइति ॥ पत्तियति ॥ प्रीतिरेव प्रीतिक स्वार्थिककप्रत्ययोपादानेपि रूढे नृपुंसकतेति तत्करोमि प्रत्ययवा करोमीति परिणतः प्रीतिकमेव प्रत्ययमेववा करोतीति स्थिरपरिणामत्वात् उचितप्रतिपत्तिनिपुणत्वा त्वाभाग्यवत्वा इति अन्यस्तु प्रीतिकरणे परिणतो ऽप्रीतिकरोति उक्तवैपरौत्या दिति अ

रूपसंपन्नेवि एगेणोरुयसंपन्ने नोरूपसंपन्ने ४ ॥ एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० रुयसंपन्नेनाममेगे नोरूपसंपन्ने ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० पत्तियंकरेमीएगेपत्तियंकरेइ पत्तियंकरेमीएगेअपत्तियंकरेइ अपत्तियंकरेमीएगेपत्तियंकरेइ अपत्तियंकरेमीएगेअपत्तियंकरेइ । चत्तारि पुरिसजाया पस्यत्ता तजहा ।

नथी जिम कोकिल १ । एक पक्षी रूपसंपन्नछे मनोज्ञरूपछे पणि शब्दसंपन्न नथी अज्जण पोपटनी परे २ । एक पंखी रुत शब्दसंपन्नछे रूपसंपन्न पणिछे मयूरनी परे ३ । एक पक्षी रूपसंपन्न पणि नथी अने शब्दसंपन्न पणि नथी काकनी परे ४ ॥ एह पक्षीनी परे च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे एक पुरुष शब्दसंपन्नछे मिष्टवचन बोलेछे पणि रूपसंपन्न नखी कालोछे कूबडोछे एमपूर्वनी परे च्यार जांगा कहवा ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे एक पुरुष इम चितवे जेहुं बीजाने प्रीतिकरं जलुकरु ते बीजाने प्रीतिकरै स्थिरपरिणाममाटे १ । एक पुरुष प्रथम चिंतवे जे



परो ऽप्रीतो परिणतः प्रीतिमेव करोति संजातपूर्वभाषभिद्यत्तत्वात् परसजा अप्रीतिहेतुतोपि प्रीत्युत्पत्तिस्तभावत्वादिति चतुर्थः सुज्ञानः आत्मन एकः क  
 शित् प्रीतिक मानद् भोजनाच्छादनादिभिः करोत्यु त्पादय त्यागार्थप्रधानत्वा अपरस्य अग्न्यः परस्य परार्थप्रधानत्वा आत्मनो ऽपर उभयस्या प्युभयार्थ  
 प्रधानत्वा दितरो नो भयस्या प्युभयार्थशून्यत्वादिति आत्मनः प्रत्यय प्रतीतिं कुरुति न परस्ये त्यादपि व्याख्येयमिति ॥ पत्तियपवेसेमिति ॥ प्रीतिक प्र

अप्पणोणाममेगेपत्तियंकरेइणोपरस्स परस्सणाममेगेपत्तियंकरेइणोअप्पणो ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प०  
 तंजहा पत्तियंपवेसामीएगेपत्तियंपवेसेइ पत्तियंपवेसामीएगेअप्पत्तियंपवेसेइ अप्पत्तियंपवेसामीएगे पत्तियं  
 पवेसेइ अप्पत्तियंपवेसामीएगे अप्पत्तियंपवेसेइ ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पणत्ता तंजहा अप्पणोणाममे

परने प्रीतिकरुं पणि पळे अप्रीति करे अथिरपरिणामपणामांटे २ । एक प्रथम अप्रीति करु एम चिंतवी पळे जलुकरे एहपणि परिणाम विज्ञोषळे ३  
 एक प्रथम अप्रीतिकरुं इम चिंतवी पळे पणि अप्रीतिकरे ४ ॥ वली च्यार प्रकारनां पुरुष कइया ते कहैळे एक पुरुष पोताना आत्मानेज प्रीति करे  
 जोजन आच्छादनादिकै करी पणि परने नकरे आत्मार्थनेज प्रधानमाने १ । एक पुरुष परने प्रीति हितकरे पोताना आत्मानें नकरे परार्थनेज  
 प्रधान माने २ । एक परने अने पोताने बेने हितकरे ३ । एक परने हित नकरे आत्माने पणि हितनकरे ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कइया  
 ते कहैळे एक पुरुष चितवे जे परनां चित्तमां प्रवेस करीस परनांचित्तमा विद्यास उपजायीस एम चितवीने विद्यास उपार्जनकरे १ । एक चिंतवे  
 परना चित्तमां प्रीति प्रवेसीस पणि अप्रीति प्रवेसे एम पूर्वलीपरे च्यार जागा कहया ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कइया ते कहैळे एक पुरुष

त्ययवा अय करोती त्येवं परस्य चित्ते विनिवेशयामीति परिणत स्तथै वैकः प्रवेशयतोत्येकइति सूत्रशेषो नन्तरसूत्रच पूर्ववत् पत्राणि पर्णा न्युपगच्छतीति ॥  
 पत्रोपगो बहलपत्रइत्यर्थः एव शेषाअपि पत्रोपगादिवृक्षसमानतातु पुरुषाणां लोकोत्तराणा लौकिकानावा ऽधिषु तथाविधोपकारकरणेन स्वस्वभावलाभ  
 एव पर्यवसितत्वात् सूत्रदानादिनो पकारकत्वा दर्शदानादिना महोपकारकत्वा दनुवर्त्तनापायसरक्षणादिना सततोपसेव्यत्वाच्च क्रमेण द्रष्टव्यमिति भारं  
 धान्यमुक्ताभ्यादिक बहमानस्य देशा देशान्तरं नग्नतः पुरुषस्य आश्वासा विद्यामा भेदश्च तेषा भवसरभेदेनेति यत्रावसरे अशा देकस्मात् स्कंधा दशमिति

गेपत्तियंपवेसेइणोपरस्स ० ४ ॥ चत्तारि रुक्का पस्सत्ता तंजहा पत्तोवए पुष्फोवए फलोवए ढायोवए ॥  
 एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा पत्तोवारुक्कसामाणे पुष्फोवारुक्कसामाणे फलोवारुक्कसामाणे  
 ढातुवारुक्कसामाणे । जारणं वहमाणस्स चत्तारि आसासा पस्सत्ता तजहा जत्थणं असातुअंसंसाहरइ तत्थ

पोताना आत्माने प्रतीतिमा तथा प्रीतिमां थापै सुखमा प्रवेशे थापे पणि परने नथापे एम चीजंगी जाणवी ४ ॥ हिवे दृष्टांतदेवाने कहैछे च्यार  
 प्रकारना वृक्ष कह्या ते कहैछे एक वृक्ष घणांपत्र पानडा सहित १ । एक वृक्ष घणाफूल सहित २ । एक घणांपलसहित होय ३ । एक वृक्ष घणी  
 सघन ढाया सहित थाय ४ ॥ एम च्यार प्रकारना लौकिक अने लोकोत्तर पुरुष कह्या ते कहैछे पत्रवतवृक्षसमान ते स्वजावथीज वचनादिक थी  
 तथा धर्म कहवाथी उपकारी १ । फूलवतवृक्षसमान ते सूत्रना जणावाथी विशेष उपकारी २ । फलवतवृक्षसमान तेह अर्थसूत्रनां तथा द्रव्यना देवा  
 थी महोपकारी ३ । ढायावतवृक्षसमान जे कष्टमाथी राखे तथा लोकोत्तर पापदुखथी राखे ते ४ ॥ जार वहनार पुरुषने च्यार विश्राम कह्या ते

स्तब्धान्तरं सहरति नयति भारमिति प्रक्रमः तत्रा यसरेपिचेति उत्तराश्वासापेक्षया समुच्चये स तस्य वोढुरिति परिष्ठापयति व्युत्सृजति नागकुमाराया  
 सादिक मुपलक्षण मतो न्यत्रवा यतनेवा समुपेतौति रात्रौ वसति यावती यत्परिमाणा कथा मनुष्यो य देवदत्तादिर्वा यमिति व्यपदेशलक्षणा याव  
 क्कथा तथा यावज्जीवमित्यर्थः तिष्ठति वसतो त्यव दृष्टान्त एवमेवेत्यादिदार्ष्टान्तिकः अमणान् साधूनुपास्त इति अमणोपासक, आवक स्तस्य सावद्यया  
 पारभाराक्रान्तस्या श्वासा स्तद्धिमोचनेन विश्रामाश्चित्तस्या श्वासनानि स्वास्थानि इदं मे परलोकभीतस्य चाण मिलेवरूपाणौति सहि जिनागम  
 सगमावदातबुद्धितया आरम्भपरिग्रहौ दुःखप्ररम्भराकारिससारकान्तारकारणभूततया परित्याज्या वित्या कलयन् करणभटवशतया तयोः प्रवर्त्तमानो स  
 हान्त खेद सताप भयचो ब्रह्मति भावयतिचैवं हियएजिणाणआणा चरियमहएरिसअउखस्स एयआलप्पाल अच्चादूरविसवयइ ॥ १ ॥ हयमम्हाणनाण ह  
 यमम्हाणमणुसमाहप्प जेक्किललडविवेया विचिद्धिमोवालवालुव्वत्ति ॥ २ ॥ यत्रा वसरे शौलानि समाधानविशेषा ब्रह्मचर्यविशेषावा व्रतानि स्थूलप्राणाति  
 पातविरमणादीनि अन्यत्रतु शोनान्य णव्रतानि सप्त शिचान्नतानि तदिह न व्याख्यात गुणव्रतादीनां साक्षादेवो पादानादिति गुणव्रते दिग्ब्रतोपभोगपरि  
 भोगव्रतलक्षणे विरमणा न्यनर्थदण्डविरतिप्रकारा रागादिविरतयोवा प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषधः पर्वदिन मष्टम्यादि तत्रो पपसन मभ  
 त्तार्थं पौषधोपवास एतेषा इदं स्तान् प्रतिपद्यते भ्युपगच्छति तत्रापिच स तस्यैक आश्वासः प्रज्ञप्तो यत्रापिच सामायिकं सावद्ययोगपरिवर्जननिरवद्ययो

वियसेएगेष्वासासे पस्सत्ते जत्यवियणं उच्चारंवा पासवणवा परिठावति तत्यवियसेएगेष्वासासे पस्सत्ते जत्य

कहैछे जेअवसरे एक स्कधयी बीजा स्कंधने ऊपरि प्रार संहरे ते अवसरे एक विश्राम कह्यो १ । वली जिहा ते पुरुष बडीनीति तथा लघुनीति

गप्रतिसेवनलक्षणं यद्वावस्थित' आहः अमणभूतो भवति तथा देशेदिग्ब्रतगृहीतस्य दिक्परिमाणस्य विभागो वकाशो वस्थान मवतारो विषयो यस्य त  
 देशावकाश तदेव देशावकाशिकं दिग्ब्रतगृहीतस्य दिक्परिमाणस्य प्रतिदिन सत्तेपकरणलक्षण सर्वव्रतसत्तेपकरणलक्षणवा नुपालयति प्रतिपत्त्यनन्तर  
 मखण्ड मासेवतइति तत्रापिच तस्यैक आश्वास. प्रज्ञप्तइति उद्दिष्टे त्वमावास्या परिपूर्णं मित्यहोरात्रं यावत् आहारशरीरसत्कारत्यागव्रत्तचर्यायापार

वियणं नागकुमारावासंसिवा सुवन्नकुमारावासंसिवा वासं उवेइ तत्पवियसे एगेञ्चासासे पम्पत्ते जत्यवि  
 यणं ञ्चावकहाए चिठइ तत्पवियसे एगेञ्चासासे पम्पत्ते । एवामेव समणोवासगरस्स चत्तारि ञ्चासासा प०  
 तंजहा सीलव्यगुणव्यवेरमणपच्चरकाणपोसहोववासाइपफिवज्जइ तत्पवियसे एगेञ्चासासे पम्पत्ते जत्यवियणं  
 सामाइयदेसावगासियमणुपालेइ तत्पवियसे एगेञ्चासासे पम्पत्ते जत्यवियणं चाउद्दसिठमुद्दिठपुस्सिमासीसु  
 पफिपुन्न पोसह सम्मं ञ्णुपालेइ तत्पवियसे एगेञ्चासासे पम्पत्ते जत्यवियणं अपच्छिममारणतियसंलेहणा

परठवे अर्थात् करे जार उतारीने तिहापणि तेहने एक विश्राम २ । जिहां वली ते नागकुमारना आवासमां तथा सुपर्णकुमार देवताना आवास  
 मा आवी वासो ले रात्रिरहै तिहां पणि तेहने एक विश्राम कह्यु ३ । जिहा ते जारवाही पुरुष वसेछे तिहां ग्रामातरथी जार लावी उतारे ते  
 पणि एक विश्राम कह्यु ४ ॥ एहनीपरे अमणोपासकने आवकने सावदयव्यापारना जारथी आक्रम्याने च्यार विश्राम कह्या ते कहैछे जे अवसरे शील  
 व्रत्तव्रत प्राणातिपातविरमण गुणवूत दिशिपरिमाण जोगोपजोग अनर्थदंड एह त्रण विरमण पचखाण नोकारसीप्रमुखनु पौषधदिन अष्टमी चतु



लक्षणभेदोपेतमिति यत्रापिच पश्चिमैवामगलपरिहारार्थं मपश्चिमा सा चासौ मरणमेवां तो मरणान्तं स्नात्रभवा मारणातिको साचेत्यपश्चिममारणांति  
को सा चासौ सलिलयते अनया शरीरकषायादौनि सलेखना तपोविशेषः साचेति अपश्चिममारणातिकसलेखना तस्याः ॥ भूसृणन्ति ॥ जीषणा सेवना  
लज्जो यो धर्मं स्तया ॥ भूसृणन्ति ॥ जुष्टः सेवितो यथा क्षिप्तः क्षपितदेहो यः स तथा तथा भक्तपाने प्रत्याख्याते येन स तथा पादपवत् उपगतो नि  
खेष्टतया स्थितः पादपोपगत अनशनविशेष प्रतिपन्नइत्यर्थं कालं मरणकालं अनवकाचन् तत्रानुत्सुकइत्यर्थः विहरति तिष्ठति उदित आसा बुध्नतकुल

ऊसणाऊसिएनत्तपाणपक्रियाइरिक्कए पानुवगएकालमणवकखमाणे विहरइ तत्थवियसे एगेआसासे पस्सत्ते  
चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा उदिनुदिणुणाममेगे उदियत्थमिणुणाममेगे अत्थमिनुदिणुणाममेगे अत्थ  
मियत्थमिणुणाममेगे । नरहेराया चाउरंतचक्कवह्णीणं उदिनुदिणु बंनदत्तेणंरायाचाउरतचक्कवह्णीउदियत्थ

दर्शने दिवसे उपवास एतला पडिवजे आदरे तिहा पणि आवकने एक विश्राम कह्यो १ । वली जे अवसरे सामायिक ले देशावगाशिक ले सम्यक्  
जली रीते पाले ते अवसरे एक विश्राम २ । वली जे अवसरे चौदस अष्टमी अमावस पूर्णिमासी दिने परिपूर्ण अहोरात्रि पौषधकरे एतले अठपो  
हरी पौषधप्रति सम्यक् मनवचनकायाथी पाले तेह अवसरे एक विश्राम कह्यो ३ । वली जे अवसरे छेहलीमारणांतिक सलेखणा अनसन तप लेह  
नी सेवालक्षणधर्म तेहथी भूषित भातपाणीनु पचखाण करीने छेदनाथका वृक्षनी फालनीपरे कालने अण्णाद्धतोथको विचरेछे ते अवसरे तेह आवक  
ने एक विश्राम कह्यो ४ ॥ च्यार प्रकारे पुरुष कह्या ते कहैछे एक पुरुष उदितोदित नाम उच्चकुल बल रिद्धि परमसुखनु धणी १ । एक पुरुष

वलसमृद्धिनिरवद्यऋमनिरत्युदयवान् उदितश्च परमसुखसंदोहोदयेने त्युदितो यथाभरत उदितोदितत्वंवा स्थ प्रसिद्धं तथा उदित आसौ तथैव अस्तमि  
 तश्च भास्करश्च सर्वसमृद्धिभ्रष्टत्वात् दुर्गतिगतत्वाच्चेति उदितास्तमितो ब्रह्मदत्तचक्रवर्त्तीव सहि पूर्वमुदित उन्नतकुलोत्पन्नत्वादिना स्वभुजोपार्जितसाम्रा  
 ज्यत्वेनच पश्चादस्तमितः अतथाविधकारणकुपितब्राह्मणप्रयुक्तपशुपालधनुर्गोलिकाप्रक्षेपणोपायप्रस्फोटिताक्षिगोलकतया मरणानन्तराप्रतिष्ठानमहानर  
 कपेदनाप्राप्ततयावेति २ तथा अस्तमित आसौ ह्योनकुलोत्पत्तिदुर्भगत्वदुर्गतत्वादिना उदितश्च समृद्धिकीर्त्तिसुगतिलाभादिनेति अस्तमितोदितो यथा ह  
 रिकेशवलाभिधानो ऽनगारः सहिजन्मान्तरोपात्तनौचैर्गोत्रकर्मवशा द्वाप्तहरिकेशाभिधानचाण्डालकुलतया दुर्भगतया दरिद्रतयाच पूर्व मस्तमितादि  
 त्यश्वा नभ्युदयवत्वा दस्तमितइति पश्चा अपतिपन्नप्रव्रज्यो निष्कम्पचरणगुणा वर्जितदेवकृतसान्निध्यतया प्राप्तप्रसिद्धितया सुगतिगततयाच उदितइति  
 तथा अस्तमित आसौ सूर्यश्च दुष्कुलतया दुष्कर्मकारितयाच कोर्त्तिसमृद्धिलक्षणतेजोविवर्जितत्वा दस्तमितश्च दुर्गतिगमना दित्य स्तमितास्तमितो  
 यथा कालाभिधानः सौकरिकः सहि सूकरैश्चरति मृगयाकरोतीति यथार्थः सौकरिकएव दुष्कुलोत्पन्नः प्रतिदिन महिषपञ्चशतीव्यापादकइति पूर्व म  
 स्तमितः पश्चादपि मृत्वा सप्तमनरकपृथिवीद्वतइति अस्तमितएवेति ॥ भरहेत्यादि ॥ तू दाहरणसूत्र भावितार्थ मेवेति य एव विचित्रभावैश्चिन्त्यन्ते ते जी

मिष्ट हरिष्टसबलेणाममणगारेणमत्यमिउदिष्ट कालेणंसोयरिष्टुष्ट्यत्यमिष्ट ४ । चत्वारि जुंमा पश्यत्ता तं०

उदितथर्द्ध ने अस्तथया परमसमृद्धि पाई जोगवी ने निर्धन थया दुखने अज्निमुखथया २ । एक पुरुष अस्तथर्द्धने उदितथया नीचकुलादि पामीने  
 पळे परम सुखना जोगनार थया ३ । एक पुरुष अस्तथर्द्धने पुन अस्तथया नीचकुलादि दुखपामीने नरकादिकना दुखपाया ४ ॥ जरतराजा चातु

वाः सर्वे एव चतुर्षु राशिषु प्रवतरन्तीति तान् दर्शयन्नाह ॥ चत्वारिजुग्मेत्यादि ॥ जुग्मेति राशिविशेषो योहि राशि शतुष्पापहारेणा पङ्क्तिमाणा शतुःप  
र्यवसितो भवति स कृतयुग्म इत्युच्यते यस्तु निपर्यवसितः सत्र्योजो द्विपर्यवसितो द्वापरयुग्म एकपर्यवसितः कल्योज इति ब्रह्म गणितपरिभाषायां समरा  
शिर्युग्म इत्युच्यते षिषमस्तु ओज इति द्वयश्च समयस्थितिः लोकेतु कृतयुगादीनि एव गुर्यन्ते षात्रिंशच्चसहस्राणि कलीलक्षचतुष्टय वर्णाणां द्वापरादीन् दत्ता देत

कल्युग्मे तेयो ए दावरजुग्मे कलिनु ए । णेरइयाणं चत्वारि जुंगा पण्णत्ता तजहा कल्युग्मे तेनु ए दावरजुग्मे  
कलिनु ए । एवमसुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं एवं पुढविकाइयाणं उवाउते उवाउवणस्स इवेदिं दियाणं  
तेदिं दियाणं चउरिं दियाणं पचिं दियतिरिक्कजोणियाणं मणुस्साण वाणमंतरजोइसियाण वेमाणियाणं सव्वेसि

रन्तचक्रवर्ती उदितथर्द्धने पुन उदितथयो रिषम पुन चक्रीथर्द्धं मोक्ष पोहतो १ । ब्रह्मदत्तनामा चक्रवर्तिराजा उदयथर्द्धने अस्तथयो सर्वसमृद्धिं नृप  
थर्द्धं दुर्गतिमां गयो २ । हरिकेशवल नामा साधु अणगार अस्तथर्द्धने उदय थयो पूर्वजवे नीचगोन उपराजी चञ्जालथयो पढे चारि लेई मोक्षपुह  
तो ३ । कालकसीकरिक आयमीने आयमियो नित्य ५०० जेसा हणतो पढे पणि सातमी नरकमां पोहतो पापकरीने ४ ॥ चार युग्म ते राशि  
विशेष कट्ठा ते कहैछे कृतयुग्म १ । त्र्योज २ । द्वापरयुग्म ३ । कल्योज ४ ॥ नारकीने चार युग्म कट्ठा उपजै चवे तेषो ओळा अधिकाथाय तेकहै  
छे कृतयुग्म १ । तेओज २ । द्वापरयुग्म ३ । कलिओज ४ ॥ एम असुरकुमारने चार युग्मथाय जन्ममरण माटे यावत् स्तनितकुमारने ४ होय तिहा  
लगे कहवुं ४ ॥ एम पृथ्वीकायने अप्काय तेउकायने वाउकायने वनस्पतिकाय बेइंद्री तेइंद्री चउइंद्री पंचेद्री तिर्यच मनुष्य वाणव्यतर ज्योतिषी वै

द्वित्रिचतुर्गुणमिति उक्तशशी नारकादिषु निरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ सुगमं नवरं नारकादयश्चतुर्धापि स्युर्जन्ममरणाभ्यां हीनाधिकत्वसंभवा  
दिति पुनर्जीवानेव भावे निरूपयन्नाह ॥ चत्तारिसूरेत्यादि ॥ सूत्रइय कण्ठ्य किन्तु शूरा धीराः क्षांति शूरा अर्हन्तो महावीरवत् तपः शूरा अनंगारा  
दृढप्रहारिवत् दानशूरो वैश्रवण उत्तराशालोकपाल स्तौर्थकरादिजन्मपारणकादिरत्नवृष्टिपातनादिनेति उक्तच वेसमणवयणसचो इयाउतेतिरियजंभ  
गादेवा कोडिगसोहिरण्य रयणाणियतत्यउवणेति ॥ १ ॥ युद्धशूरो वासुदेव कृष्णवत्तस्यषष्ठ्यधिकेषुत्रिषु संग्रामशतेषु लब्धजयत्वा दिति उच्च पुरुषः श  
रीरकुलविभवादिभिस्तथा उच्चच्छंद उन्नताभिप्राय औदार्यादियुक्तत्वा नीचछंदसु विपरीतो नीचो प्युच्चविपर्यया दिति अनन्तर मुञ्चेतराभिप्राय उक्तः स

जहा नेरइयाणं । चत्तारि सूरा पस्सत्ता तंजहा खतिसूरे तवसूरे दाणसूरे जुधसूरे । खतिसूराअपरहंता तव  
सूराअणगाश दाणसूरेवेसमणे जुधसूरेवासुदेवे । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा उच्चैणाममेगेउच्चच्छंदे  
उच्चैणाममेगेणीयच्छंदे णीएणाममेगेउच्चच्छंदे णीएणाममेगेणीयच्छंदे । असुरकुमाराणं चत्तारि लेस्सा प० तं०

मानिकने चार युग्म थाय जिम नारकीने कह्या तिम सर्वत्र जन्ममरण मांटे अधिका ओछा थाय ॥ चार प्रकारना सूर कह्या ते कहैछे जमासूर  
जमाथी धीर १ । तपसूर २ । दानसूर ३ । युद्धसूर ४ ॥ जमासूर अरिहत वीतराग महावीरवत् १ । तपसूर साधुमुनिराज दृढप्रहारीनीपरें २ ॥  
दानसूर वैश्रमण उत्तरदिशानु लोकपालतीर्थकर जन्म पारणादि दिवसे रत्नसुवर्णेनी वृष्टिकरे ३ । युद्धसूर वासुदेव त्रणसेसाठ संग्रामकरे तेमांटे ४ ।  
चार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे एक उच्चशरीर कुलधनथी अने उच्चछंद उन्नत अजिप्राय औदार्यादिगुण सहित १ । एक उच्चकुलादिके पणि



च लेश्याविशेषा इवतीति लेश्यासूत्राणिसुगमानि नवरं असुरादीनां चतस्रो लेश्या द्रव्याशयेण भावतस्तु षडपि सर्वदेवानां मनुष्यपंचेन्द्रियतिरशान्तु द्रव्यतो  
भावतस्तु षडपीति पृथिव्यव्यवसनस्तीनांहि तेजोलेश्या भवति देवीत्यस्तेरिति तेषां चतस्र इति उक्तलेश्याविशेषेणच विचित्रपरिणामा मानवाः स्युरिति याना  
दिदृष्टान्तं चतुर्भंगिकाभि रन्यथाच पुरुष चतुर्भंगिका यानसूत्रादिना आवकसूत्रावसानेन ग्रंथेन दर्शयन्नाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ कण्ठसायं नवरं यानं शक्त

कण्ठलेस्सा णीललेस्सा काउलेस्सा तेउलेस्सा एवंजाव थणियकुमाराणं एवं पुढविकाइयाणं श्पाउवणस्स  
इकाइयाणं वाणमंतराणं सद्धेसिं जहा असुरकुमाराण । चत्तारि जाणा पस्सत्ता तंजहा जुत्तेणाममेगेजुत्ते जुत्ते  
नाममेगेजुत्ते ज्जुत्तेणाममेगेजुत्ते ज्जुत्तेणाममेगेजुत्ते । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० त० जुत्तेणा  
ममेगे जुत्ते ४ । चत्तारि जाणा पस्सत्ता तजहा जुत्तेणाममेगेजुत्तपरिणए जुत्तेणाममेगेजुत्तपरिणए ४ ।

नीचखंड नीचस्वभाव श्रीदार्यादिगुण रहित २ । एक कुलादिकथी नीच पणि उच्चखंड उच्चमननुं अजिप्राय श्रीदार्यादिगुण सहित ३ । एक कुलादि  
कथी पणि नीच अने नीचखंड नीचस्वभाव श्रीदार्यादिगुणरहित ४ ॥ एहज्जनीच लेश्याथी थाय तेमाटे लेश्या कहैछे असुरकुमार जवनपतिना देव  
ताने च्यार प्रकारनी लेश्या कही ते कहैछे कम्मलेश्या १ । नीललेश्या २ । कापोतलेश्या ३ । तेजोलेश्या ४ ॥ एम यावत् स्तनितकुमारने १० नि  
कायनाने एमज पृथिवीकायना जीवने अप्कायने वनस्पति कायना जीवने वाणव्यंतर देवताने एह सर्वने जिम असुरकुमारने कही तिमज ४ लेश्या  
कहवी ४ ॥ च्यार प्रकारे यान गाडो बहिल कहिया ते कहैछे एक यान सर्व सामग्रीसहितछे उपकरणयुक्तछे अने बलद पणि जोडपाछे १ । एक सा

टादि तद्युक्त वलीवर्दादिभिः पुन र्युक्तं संगतं समग्रसामग्रीकवा पूर्वापरकालापेक्षयावे त्येकं अन्यत् युक्तं तथैवा युक्तंतू क्तविपरीतत्वादिति एवमितरौ पुरुषस्तु युक्तो धनादिभिः पुनर्युक्तउचितानुष्ठानैः सद्भिर्वा पूर्वकालोवा युक्तो धनधर्मानुष्ठानादिभिः पश्चादपितथैवेति चतुर्भंगी अथवा युक्तो द्रव्यलिङ्गेन भावलिङ्गेन चेति प्रथमः साधु द्रव्यलिङ्गेन नेतरेणेति द्वितीयो मिश्रवादि नैद्रव्यलिङ्गेन भावलिङ्गेन युक्तइति तृतीयः प्रत्येकबुद्धादि उभयवियुक्त चतुर्थो गृहस्थादिरिति एवसूत्रान्तराख्यपि नवर युक्तं द्वोभिर्युक्तं स्परिणतन्तु अयुक्तं सत्सामग्र्या युक्ततयापरिणतमिति पुरुषःपूर्ववत् युक्तरूप सगतस्वभावं प्रशस्तवा युक्तं युक्तं

एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पश्यता तंजहा जुत्तेणाममेगेजुत्तपरिणए ४ । चत्वारिजाणा प० तं० जुत्ते

मग्री उपकरणादिकथी सहितछे पणि वलद वलवान नथी २ । एक सामग्रीयुक्त नथी पणि वलदादिकथी सहितछे ३ । एक सामग्रीसहितनथी अने वलदादिकथीयुक्त पणि नथी ४ ॥ इण दृष्टांते चार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे एक पुरुष धनादिसहितछे अने उचितानुष्ठानसहित छे १ । एक पुरुषधनादिकथी सहितछे पणि उचितक्रियारहित स्वरचे नथी कृपणछे २ । एम चार जांगा । साधुआश्री पणि कहैछे एक साधु द्रव्यवेषसहित जावथी धर्मानुष्ठान सहितछे १ । द्रव्यवेषसहितभावथी विपरीत तेनिन्हव २ । त्रीजो प्रत्येकबुद्ध ३ । चौथो गृहस्थ ४ ॥ वली चार यान कह्या तेकहै छे एक युक्त सामग्री सहितछे अने युक्तपरिणतछे जोडोनथी पणि वलदादिसहितछे १ । एक सामग्रीसहितछे पणि वलदप्रमुखनी सामग्री तयार नथी तेमाटे अयुक्तपरिणत २ । एम ४ जागा जाणवा ॥ इणदृष्टाते चार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे । एक धनादिकथीसहितछे अने युक्तपरिणतछे उचित कार्यमां तत्परछे १ । एम चार जांगा ॥ वली चार यान वाहन कह्या तेकहै छे एक यान युक्तछे अने युक्तरूपछे वलद जलाछे अने

रूपमिति पुरुषपक्षे तु युक्ती धनादिना ज्ञानादिगुणैर्वा युक्तरूप उचितवेषः सविहितनेपथ्येति तथा युक्तं तथैव युक्तं शोभते युक्तस्य वा शोभा यस्य तत् युक्तशोभमिति पुरुषस्य युक्ती गुणैः स्थाया युक्ता उचिता शोभा यस्य सतथेति युग्य वाहन मखादि प्रथवा गोलविषये जपाण द्विहस्ताप्रमाण चतुरस्रं सवेदिकं सुप्रशोभितं युग्यं कथ्यते तत् युक्तं मारोहणसामग्र्या पर्याणादिकया पुन युक्तं वेगादिभि रित्येव यानव द्वाष्ट्येय भेतदेवाह ॥ एवंजहत्यादि ॥ प्रतिपक्षा दाष्टान्तिक स्तथैव कोसा वित्याह ॥ पुरिसजायति ॥ पुरुषजातानो त्वेवं परिणतरूपशोभा स्तत्र चतुर्भङ्गिकाः सप्रतिपक्षा वाच्या यावच्छोभसूत्रचतुर्भङ्गी

णाममेगेजुत्तरूवे जुत्तेणाममेगेजुत्तरूवे ४ । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया प० तं० जुत्तेणाममेगेजुत्तरूवे ४ ।  
चत्वारि जाणा प० तंजहा जुत्तेणाममेगेजुत्तसोत्ते ४ । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया प० तजहा जुत्तेणाम  
मेगेजुत्तसोत्ते ४ । चत्वारि जुग्गा प० तं० जुत्तेणाममेगेजुत्ते ४ । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया प० तं०

यान सामग्री सहित छे १ । एक यान युक्तछे सामग्रीसहितछे अने अयुक्तरूपछे वृषभ नथी एम च्यार भांगा ४ ॥ इण दृष्टांते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे एक पुरुष तथा साधु धनादिके तथा ज्ञानादिगुणसहितछे अने युक्तरूप जलोरूप साधुवेषादिकछे एम च्यार जागा ४ ॥ वली च्यार यान कह्या तेकहैछे एक युक्तछे अने वृषजादिकथी जोडगो शोत्तेछे एम च्यार जागा ४ ॥ एम च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे एक पुरुष धना दिके सहितछे अने उचितक्रियानी शोभाथी सहितछे एम ४ जागा कहवा ॥ साधु ज्ञानादि सहितछे अने धर्मक्रियानी शोभाथी सहितछे एम ४ जा गा ॥ च्यार युग कह्या युगते अश्वप्रमुख तेकहैछे एक पलाणप्रमुखथी सहितछे अने वेगादिकथी सहितछे एम ४ जागा कहवा ॥ इण दृष्टांते ४ प्रकार

यथा ॥ जुत्तेणामं एगे जुत्तसोभे ॥ एतदेवाह ॥ जावसोभेति ॥ सारथिः शाकटिको योजयिता शकटे गवादीना न वियोजयिता मोक्ता अन्यस्तु वियोजयिता नतु योजयितेति एव शेषावपि नवर चतुर्थः खेटयत्येवेति अथवा योक्तयतं प्रयुक्ते यः स योक्तापयिता वियोक्तयनः प्रयोक्तातु वियोक्तापयितेति लोकोत्तरपुरुषविवक्षायास्तु सारथिरिव सारथि योजयिता संयमयोगेषु साधूना अवर्त्तयिता वियोजयितातु तेषामेवा नुचितानां निवर्त्तयितेति यानसूत्रवत् हयगजसूत्राणीति ॥ जुगारियत्ति ॥ युग्यस्य चर्या वहन गमनमित्यर्थः क्वचित्तु जुगायरियत्तिपाठ स्तत्रापि युग्याचर्येति पथया व्येक युग्य भवति

जुत्तेणाममेगेजुत्ते ४ । एवं जहा जाणेणं चत्तारि झालावगा तथा जुग्गेणवि पफ़िवरको तहेव पुरिसजाया जाव सोभेति । चत्तारि सारथी प० तं० जोझावइत्ताणाममेगेणोविजोयावइत्ता विजोयावइत्ताणाममेगेणोविजोयावइत्ता एगेजोयावइत्तावि विजोयावइत्तावि एगेणोविजोयावइत्ताणोविजोयावइत्ता ४ । एवामेव

ना पुरुष कह्या तेकहैछे धनादिकसहितछे उचितक्रियाथीपणि सहितछे जिम यान वाहनने सार्थे ४ आलावाकह्या तिमज युग अश्वसार्थेपणि प्रति पक्षदृष्टातसहित तिमज पुरुषना प्रकार यावत् शोभेछे तिहालगे कहवा ॥ च्यार सारथी रथना पेडु कह्या तेकहैछे एक सारथी वृषणादिक शकट प्रति जोडेछे पणि छोन्नार नथी सेन्नारनथी । एक सारथी खेडेछे पणि जोन्नारनथी जोडतो नथी । एक जोडेछे अने खेडे पणिछे । एक सारथी जोडतो पणि नथी खेडतो पणि नथी ४ ॥ एहनीपरे च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे संयमयोगमां साधूने प्रवर्त्तावे तेमांटे सारथिनीपरे सारथी । वियोजयिता जे साधुने अनुचितव्यापार थी निवर्त्तावे एम च्यार जांगा कहवा ॥ च्यार प्रकारना घोडा कह्या तेकहैछे । एक पलाणप्रमुख

नो तपश्यायीत्यादि चतुर्भङ्गी इहच युग्यस्य चर्याद्वारेणैव निर्देशे चतुर्विधत्वेनो क्त्वा चत्वार्या एवो हेतोक्त चातुर्विध्य मवसेय मिति भावः युग्यपक्षेतु

चत्वारि पुरिजाया ॥ चत्वारि हया पशुता तंजहा जुत्तेणाममेगेजुत्ते ४ । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया  
प० तं० जुत्तेणाममेगेजुत्ते ४ । एवं जुत्तपरिणए जुत्तरूवे जुत्तसोजे सद्येसि पफ़िवस्को पुरिसजाया चत्वारि  
गया प० तं० जुत्तेणाममेगेजुत्ते ४ । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया प० तं० जुत्तेणाममेगेजुत्ते एवजहा ह  
याणं गयाणवि जाणियह्व पफ़िवस्को तहेव पुरिसजाया । चत्वारि जुगारिया प० तं० पथजाईणाममेगे  
णोउप्पहजाई उप्पहजाईणाममेगेणोपथजाई एगेपथजाईविउप्पहजाईवि एगेणोपथजाईणोउप्पहजाई ।

सामग्रीये सहितछे अने वेगसहितछे । एक युक्तछे पणि वेगादिकथी अयुक्तछे एम च्यार जांगा जाणवा ॥ इण दृष्टाते च्यारप्रकारना पुरुष कह्या ते  
कहैछे एकसाधु सयमसहितछे अने क्रियासहितछे एम च्यार भागा ॥ एम पूर्वे कह्युंछे तिमज युक्तपरिणत युक्तरूप युक्तशोजाछे एम सर्वबोले प्रतिपक्ष  
दृष्टातसहित पुरुषनाप्रकार जाणवा ॥ च्यार हाथी कहिया तेकहैछे एक हाथी अवाहीप्रमुखथी सहितछे अने वेगादिके सहितछे एम ४ जांगा ॥ इण  
दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे एक साधु सयमादिसहितछे अने क्रियाये पणि सहितछे एम ४ जांगाकहवा एम जिम घोडाकह्या ति  
मज हाथीना पणि जाणवा प्रतिपक्ष तिमज पुरुषना प्रकार कहवा ४ ॥ च्यार युग्य ते अश्व हाथी प्रमुख तेहनु गमन चालवुं कह्युं ते कहैछे एक  
मार्गे चाले पणि उन्मार्गे नचाले १ । एक उन्मार्गेचाले पणि मार्गेनचाले २ । एक मार्गेमा चाले उन्मार्गेमां पणि चाले ३ । एक मार्गेमां पणिनचा

युग्यमिव युग्य संयमयोगभरवोढा साधुरिव सच पथिवा ध्यमत्त उत्पथयायी लिंगावशेष उभययायी प्रमत्त अतुर्थः सिद्धक्रमेण सदसदुभयानुभयानुष्ठान  
रूपत्वात् अथवा पथ्युत्पथयोः स्वपरसमयरूपत्वात् यायित्वस्यच गत्यर्थत्वेन बोधपर्यायत्वात् स्वपरसमयबोधापेक्षये य चतुर्भङ्गी नेयेति एक पुष्प रूपसम्प  
न्न न गन्धसम्पन्नं माकुलीपुष्पवत् द्वितीय बकुलस्येव तृतीय जातेरिव चतुर्थ बदर्यादेरिव पुरुषो रूपसम्पन्नो रूपवत्वात् सुविहितरूपयुक्तोवेति जाति ६

एवामेव चत्वारि पुरिसजाया प० । चत्वारि पुष्पा प० त० रूवसंपन्नेनाममेगेणोगंधसंपन्ने गंधसपन्नेनाम  
मेगेणोरूवसंपन्ने एगेरूवसपन्नेविगंधसंपन्नेवि एगेणोरूवसंपन्नेणोगंधसंपन्ने । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया  
पस्यता रूवसपन्नेनाममेगेणोसीलसंपन्ने ४ । चत्वारि पुरिसजाया प० त० जाइसंपन्नेनाममेगेणोकुलसं  
पन्ने ४ । चत्वारि पुरिसजाया प० त० जाइसंपन्नेनाममेगेणोवलसंपन्ने वलसंपन्नेनाममेगेणोजाइसंपन्ने

ले उन्मार्गमा पणिनचाले ४ ॥ एम संयममार्ग आश्री च्यार भांगा कहवा ४ ॥ च्यार प्रकारना फूल कह्या तेकहैछे एक फूल रूपसंपन्नछे पणि गंध  
सपन्न नथी रूडो गधनथी जिम आउलनु फूल १ । एक फूल गंधसपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी ते बकुलवृक्षनु फूल तथा वउलसिरीनु फूल २ । एक  
फूल रूपसपन्न पणि छे गंधसंपन्नपणिछे चपेलीनु फूल तथा चपानु फूल ३ । एक फूल रूपसपन्न पणिनथी गंधसपन्न नथी ते बोरझीनु फूल ४ ॥  
इण दृष्टाते च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे ॥ एक पुरुषरूपवतछे प्रतिपूर्ण शरीर गौरवर्णछे पणि शील आचारादि गुणसपन्न नथी एम च्यार  
जागा ॥ २ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे ॥ एक पुरुष जातिसपन्नछे उत्तमजातिछे पणि कुलसंपन्ननथी जातिते मातानुपन्न कुलतेपिता

कुल ५ बल ४ रूप ३ श्रुत २ शील १ चारित्र ७ लक्षणेषु सप्तसु पदेषु एकविंशतौ द्विकसंवोगेषु एकविंशति रेवं चतुर्भङ्गिकाः कार्याः सुगमा येति

एगेजाइसंपन्ने० । एवजाईएरूवेणय चत्तारि आलावगा एव जाईएसुएणय ४ । एवं जाईएचरित्तेणय ४ । एव कुलेणय वलेणय ४ । एव कुलेणयरूवेणय ४ । कुलेणयसुएणय ४ । कुलेणयसीलेणय ४ । कुलेणयचरित्तेणय ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० त० बलसंपन्नेणाममेगेणोरूवसंपन्ने ४ । एव वलेणयसुएणय ४ । एव वलेणयसीलेणय ४ । एव वलेणचरित्तेणय ४ । चत्तारि पुरिसजाया पसत्ता तजहा रूवसंपन्नेणाममेगेणो

नुंपन्न एम ४ भांगा ॥ १ ॥ वली च्यार प्रकारनां पुरुष कह्या तेकहैछे एक पुरुष जातिसंपन्नछे पणि बलसंपन्न नथी निर्बलछे एह बलसाथे चोजंगी जाणवी २ ॥ एक पुरुष जातिसंपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी । एम रूपने साथे पूर्वनीपरे च्यार जाणा कहवा ३ ॥ इम जातिसाथे अने श्रुतज्ञानसाथे चोजंगी कहवी ४ ॥ एमजातिसाथे अने शीलसाथे चोजंगी पाचमी ५ ॥ एम जाति अने चारित्र साथे छठी चोजंगी ६ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे ॥ एक पुरुष कुलसंपन्नछे पणि बलसंपन्न नथी एवलसाथे चोजंगी सातमी ७ ॥ एम कुल अने रूपसाथे चोजंगी आठमी ८ ॥ एम कुल अने श्रुतसाथे चोजंगी नवमी ९ ॥ कुल अने शीलसाथे चोभंगी दशमी १० ॥ कुल अने चारित्रसाथे चोभंगी इग्यारमी ११ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे ॥ एक पुरुष बलसंपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी एम चोजंगी बारमी १२ ॥ एम बल अने श्रुतसाथे चोभंगी तेरमी १३ ॥ बल अने शीलसाथे चोजंगी चवदमी १४ ॥ एम बल अने चारित्रसाथे चोभंगी पनरमी १५ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे ॥ एक पुरुष रूप संपन्न छे





श्र्यन्तइति आत्मवेयावृत्त्यकरो ऽनसो विसम्भोगिकोऽपि परवेयावृत्त्यकरः स्वार्थनिरपेक्षः स्वपरवेयावृत्त्यकरः स्थविरकल्पिकः कोऽपि उभयनिवृत्तौ ऽनश्रनवि  
 शेषप्रतिपन्नकादिरिति करोत्ये वैको वेयावृत्त्य त्रिःसृहत्वात् प्रतीच्छत्येवा न्य आचार्यत्वग्लानत्वादिना अन्यः करोति प्रतीच्छतिच स्थविरकल्पिकविशेष उ  
 भयनिवृत्तस्तु जिनकल्पिकादिरिति ॥ अङ्ककरोति ॥ अर्थान् हिताहितप्राप्तिपरिहारादीन् राजादीना दिग्यात्रादी तथोपदेशतः करोतीत्यर्थकरो मन्त्री  
 नैमित्तिकोवा सचा र्थकरो नामैको न मानकरः कथ मच्च मनभ्यथितः कथयिष्यामी त्यवलेपवर्जित एवमितरे त्रयी ऽत्रच व्यवहारभाष्यगाथाः पुष्ठापुष्टो

माणे । चत्वारि पुरिसजाया प० तं० श्रायवेयावच्चकरेनाममेगेणोपरवेयावच्चकरे ४ । चत्वारि पुरिसजाया  
 प० त करेइणाममेगेवेयावच्चणोपफिच्छइ पफिच्छइणाममेगेवेयावच्चनोकरेइ ४ । चत्वारि पुरिसजाया प०  
 तंजहा अष्टकरेणाममेगेणोमाणकरे माणकरेणामएगेणोअष्टकरे एगेअष्टकरेविमाणकरेवि एगेणोअष्टकरेणो

बीजानी नकरे एह एकलविहारी १ । एक परनी वेयावच करे पणि आत्मानी नकरे ते अजिग्रहधारी नदिपेण वसुदेवना जीवनी परे २ । एक  
 आत्मवेयावच पणि करे परनी वेयावच पणि करे ते स्थविर ३ । एक आत्मवेयावच पणि नकरे परनी पणि नकरे अणसणनु करणहार ४ ॥ वली  
 च्यार प्रकारना पुरुष कट्या ते कहैछे एक साधु वेयावच करे पणि करावे नथी निस्पृहमाटे १ । एक वेयावच करावे पणि करतो नथी ग्लानमाटे  
 २ । एक वेयावच करेछे अने करावे स्थविरकल्पी ३ । एक करतो नथी अने करावतो नथी ते लिनकल्पी ४ ॥ एह सघले लौकिक पुरुष अने लोको  
 तर साधुपुरुष एह बेनी ज्ञाव आवे ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कट्या ते कहैछे राजा आश्री । एक मन्त्री निमित्तियो तथा सेवक राजाना अर्थ

पठनो जताइहियाहियप रेकहेइ । तइओपुठोसेसा उनिष्कनाएवगच्छेविति ॥ १ ॥ गणस्य साधुसमुदायस्या र्थान् प्रयोजनानि करोतीति गणार्थकर  
 आहारादिभि रूपष्टभको नच मानकरोऽभ्यर्थनानपेक्षत्वात् एव त्रयोन्ने उक्तञ्च आहारउवहिसयणा इएहिगच्छस्सुवगहकुण्ड । बीओनजाइमाणं दी  
 सिवितइओनउचउत्थाति ॥ २ ॥ अथवा ॥ नोमाणकरेत्ति ॥ गच्छार्थकरो हमिति न माद्यतोति अनन्तर गणस्यार्थ उक्तः सच संग्रहो ऽतआह ॥ गण  
 संग्रहकरेत्ति ॥ गणस्या हारादिना ज्ञानादिनाच संग्रह करोतीति गणसंग्रहकरः शेष तथैव उक्तच सोपुणगच्छस्सट्ठो उसगहोतत्यसगहोदुविहो द  
 वेभावेनियमा उहोतिआहारनाणाई ॥ ३ ॥ आहारोपधिश्ययाज्ञानादीनौत्यर्थ. नमाद्यति गणस्यानवद्यसाधुसामाचारौप्रवर्तनेन वादिधर्मकर्मनैमि

माणकरे । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गणठकरेणाममेगेणोमाणकरे ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं०  
 गणसंग्रहकरेणाममेगेणोमाणकरे ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गणसौजकरेणामंगेणोमाणकरे ४ ।

नुं कार्यनुं करनारखे पणि मान नथी करतो जे एहकाम मैं कीधो १ । एक मान अहंकारनुं करनारखे पणि अर्थनुं करनार नथी तेहथी कियुं काम  
 इम नीपजै २ । एक अर्थनुं पणि करनारखे अने माननुं पणि करनारखे ३ । एक अर्थनुं पणि करनारो नथी माननुं पणि करनारो नथी ४ ॥ वली  
 च्यार प्रकारना पुरुष साधु आश्रीने कह्या तेकहैछे एक साधु गण ते गच्छना अर्थनुं करनारखे हितकरे अहित मान नकरे जे हुं गच्छनाकार्य करूं  
 छु एम च्यार जागा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे एक साधु गच्छमा संग्रह ते आहारनुपधिश्ययाज्ञानादि तेहनु राखवुं तेकरे  
 नणि मान नकरे संग्रह जे उपकरणादि राखे जोइये तिवारे आपे इहा पणि च्यार जागा ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहैछे एक साधु

तिकविद्यासिद्धत्वादिनावा शोभाकरणशीलो गणशोभाकरो नोमानकरो भ्यर्थनानपेक्षतया मदाभावेनवा गणस्य यथायोग्य प्रावृत्तितदानादिना शोधिं  
 शुद्धिं करोतीति गणशोधिकरो ऽथवा शुद्धिते भक्तादौ सति गृहिकुले गत्वा नभ्यर्थितो भक्तशुद्धिं करोति यः स प्रथमो यस्तु माना न गच्छति स द्विती  
 यो यस्तु अभ्यर्थितो गच्छति स तृतीयो यस्तु नाभ्यर्थनापेक्षो नापि तत्र गता स चतुर्थ इति रूप साधुनेपथ्य जहाति त्यजति कारणवशान्न धर्मं चारित्र्यलक्षण बौ  
 टिकमध्यस्थितमुनिवत् अन्यस्तु धर्मं नरूपनिष्कवत् उभयमपि उत्पन्नजितवत् नोभय सुसाधुवत् धर्मं त्यज त्येको जिनाज्ञारूप न गणसंस्थिति स्वगच्छकतां  
 मर्यादामिह कैचिदाचार्ये स्तोर्थं करानुपदेशेन संस्थितिः कृता यथा नास्माभिर्महाकल्यायतिशयश्रुत मन्यगणसत्कायदेय मित्येव च योग्यगणसत्काय न त इ

चत्वारि पुरिसजाया प० तं० गणसोहिकरेणाममेगेणोमाणकरे ४ । चत्वारि पुरिसजाया प० त० रूवंणा  
 ममेगेजहइ नोधम्मं धम्मंणाममेगेजहइ नोरूवं एगेरूवपिजहइ धम्मं पिजहइ एगेणोरूवंजहइ णोधम्मजहइ ४ ।

गण गच्छनी शोभानुं करणहारछे तपे धर्मकहे निमित्तथी विद्याथी सिद्धिप्रमुखथी गच्छरूढो देखावे पणि मान नकरे इहा पणि च्यार जांगा ४ ॥  
 वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहैछे एक साधु रूप साधुना वेषप्रति कारणविशेषे छांडै पणि चारित्र्यरूपधर्म ज्ञावथी नथी मूकतो जिम  
 हरिजद्रसूरिना चेला वेषमूकती बौटिक बौद्धमतमा जणयाकारणे रहिया १ । एक धर्मने मूकछे पणि वेष नथी मूकतो निन्हव जमालीनीपरे २ ।  
 एक धर्म मूकछे साधुवेष पणि मूकछे कंडरीकनी परे ३ । एक रूप ते वेष नथी मूकतो अने धर्म पणि नथी मूकतो जलासाधुनी परे ४ ॥ वली च्यार  
 प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे एक साधु धर्मते जिनाज्ञा तेप्रति छाडेछे अने गण गच्छनी स्थिति ते गच्छनी मर्यादा नथी मूकतो कोईक आचार्य

दाति स धर्मं त्यजति न गणस्थितिं जिनाज्ञाननुपालनात् तीर्थं करोपदेशो ह्येवं सर्वेभ्यो योगेभ्यः श्रुतं दातव्यमिति प्रथमो यस्तु ददाति स द्वितीयः यस्त्वयो  
 ग्येभ्यस्त ददाति स तृतीयः यस्तु श्रुताव्यवच्छेदार्थं तदव्यवच्छेदसमर्थस्य परशिष्यस्य स्वकीयदिग्वध कृत्वा श्रुत ददाति तेन न धर्मी नापि गणसंस्थितिं त्यक्ते  
 ति स चतुर्थ इति उक्तञ्च सयमेवदिसावध काज्जणयडित्यगस्सजोदेई उभयमवलंबमाण कामतुतयपिपूएमोत्ति ॥ १ ॥ प्रियो धर्मी यस्य तत्र प्रीतिभावे  
 न सुखेन च प्रतिपत्तेः स प्रियधर्मा नो न च दृढो धर्मी यस्य आपद्यपि तत्परिणाम विचलनात् अनीभत्वादित्यर्थः स दृढधर्मेति उक्तञ्च दसविहवेयावच्चे  
 अणतरेखिण्यमुज्जमहुणइ अच्चनमणेच्चाणि विईविरियकिसोपढमभगो ॥ १ ॥ अन्यस्तु दृढधर्मा अगौकतापरित्यागात् नतु प्रियधर्मा कष्टेन धर्मप्रतिपत्तेः

चत्तारि पुरिसजाया प० त० धम्मंणाममेगेजहइ णोगणसंठिइं ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा पिय  
 धम्मेणाममेगेणोदढधम्मे दढधम्मेणाममेगेणोपियधम्मे एगेपियधम्मेविदढधम्मेवि एगेणोपियधम्मेणोदढधम्मे

एहवी मर्यादा कीधीछे जे बीजागच्छना यतीने सिद्धात नदेवुं हिवे ते बीजागच्छना यतीने श्रुत नापे नजणावे ते धर्मजिनाज्ञा छाडैछे पणि गच्छनी  
 स्थिति नथी मूंकतो जिनाज्ञा एहवीछे जे योग्यहोय ते सर्वने श्रुत देवुं तेमाटे १ । आज्ञा मूंकी जे अन्यगच्छना यतीने योग्यने श्रुत आपैछे ते जि  
 नाज्ञारूप धर्म नथी मूंकतो गच्छस्थिति मूकेछे २ । जे अयोज्ञ अन्यगच्छनाने श्रुत आपेछे ते धर्म अने श्रुत बेने मूकेछे ३ । अने जे श्रुतराखवाने को  
 ईक योज्ञ परना शिष्यने पोतानुं करी श्रुत आपेछे ते धर्म अने स्थिति बे नथी मूंकतो एमचौभगी जाणवी ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या  
 ते कहैछे एक पुरुष प्रियधर्मछे धर्म बाहलोछे पणि दृढधर्म नथी कष्ट आव्यांथी धर्ममां दृढपणुं नथी धर्ममूंकीदे १ । इम एक दृढधर्मछे अगीकार

इतरौतु सन्नानी उक्तं च दुक्खेण उगाहिज्जइ वोओगहिइयतुनेइजातीर उभयतो कल्लाणी तइओचरमोउपडिक्खोति ॥ १ ॥ आचार्यसूत्रे चतुर्थभङ्गो यो न  
प्रव्राजनया नैवो पस्थापनया चार्यः स क इत्याह धर्माचार्य इति प्रतिबोधक इत्यर्थः आह च धम्मोजेणुवइठो सोधम्मगुरुगिहीवसमणोवा कोविति हि सप  
उतो दोहि विण्णकेरुणेवति ॥ १ ॥ त्रिभिरिति प्रव्राजनोत्थापनावर्माचार्यैरिति उद्देशन मङ्गादौ पठनेधिकारित्वकरण तत्र तेन वा चार्यो गुरु रुद्देश

चत्तारि ञ्णायरिया प० त० पद्दावणायरिएणाममेगेणोउवठावणायरिए उवठावणायरिएणामंएगेणोपद्दावणा  
यरिए एगेपद्दावणायरिएवि उवठावणायरिएवि एगेणोपद्दावणायरिएणोउवठावणायरिए धम्मायरिए । चत्तारि  
रि ञ्णायरिया प० त० उद्देसणायरिएणाममेगेणावायणायरिए ४ धम्मायरिए । चत्तारि ञ्णतेवासी प० त०

कीधो नमूकै पणि प्रियधर्म नथी कष्टमा धर्मकरे २ । एक प्रियधर्मळे अने दृढधर्म पणिळे ३ । एक प्रियधर्म पणि नथी अने दृढधर्म पणि नथी तेना  
स्तिक ४ ॥ च्यार प्रकारना आचार्य कह्या तेकहैळे एक प्रव्रज्याचार्य जेदीक्षादे पणि उपस्थापनाचार्य नथी उठामण नथी करतो सर्व सिद्धातनुं योग  
वही नाटिकरावीहोय ते ओठामण करे १ । एक उपस्थापनाचार्यळे पणि प्रव्रज्याचार्य नथी २ । एक प्रव्रज्याचार्यळे अने उपस्थापनाचार्य पणिळे ते  
पचमहाव्रतनुं आरोपकरे ते उपस्थापनाचार्य कहिये ३ । एक प्रव्रज्याचार्य पणि नथी अने उपस्थापनाचार्य पणि नथी ते धर्माचार्य कहिये जेहने  
पासे धर्म पास्युं ते धर्माचार्य यती पणि थाय अने प्रतिबोधक आवक पणि थाय ४ ॥ वली च्यार प्रकारना आचार्य कहिया तेकहैळे एक उद्देसना  
चार्य जे अगादिसूत्र सूत्रथी जणावेळे पणि वाचनाचार्य नथी अर्थआपे ते वाचनाचार्य इहा ४ ज्ञागा जाणवा चौथे ज्ञागे धर्माचार्य जाणवो ॥ च्या

नाचार्य उभय शून्यः को भवतीत्याह धर्माचार्यइति अते गुरो समोपे वस्तु शील मस्यां तेवासी शिष्य. प्रव्राजनया दीक्षया अंतेवासी प्रव्राजनांतेवासी दी  
क्षितइत्यर्थः उपस्थापनांतेवासी महाव्रतारीपणतः शिष्यइति चतुर्थभङ्गकस्थः क इत्याह धर्मांतेवासीति धर्मप्रतिबोधनतः शिष्यो धर्मार्थितयो पसम्पन्नो  
वेत्यर्थ. यो नो हेयनान्तेवासी न वाचनान्तेवासीति चतुर्थः सक इत्याह धर्मान्तेवासीति निर्गता बाह्याभ्यतरग्रथा निर्गन्ताः साधवो रत्नानि भावतो  
ज्ञानादीनि तैर्व्यहरतीति रात्रिकः पर्यायज्येष्ठइत्यर्थः अमणो निर्गन्तो महान्ति गुरुणि स्थित्यादिभि स्तथाविधप्रमाणाद्यभिव्यक्त्यानि कर्माणि यस्य स

पञ्चावणंतेवासीणाममेगेणोउववायणंतेवासी ४ धम्मतेवासी । चत्तारि अतेवासी प० तंजहा उद्देसणंतेवासी  
णामंएगेणोवायणतेवासी वायणंतेवासी ४ धम्मंतेवासी । चत्तारि निग्गथा प० त० रायणिएसमणेनिग्गंथे  
महाकम्मे महाकिरिए अणायवी अस्समिए धम्मस्स अणाराहए जवइ १ । रायणिए समणेनिग्गथे अप्प

र अतेवासी शिष्य कह्या तेकहैछे एक प्रव्रज्याशिष्य जेहने पोते दीक्षादीधी तेचेलो पणि उपस्थापना शिष्य नथी एम चौजंगी ४ ॥ चौथे ज्ञांगे ध  
र्म शिष्य जेहने धर्मोपदेश देई बोध्यो ॥ बली च्यार प्रकारना शिष्य कहिया ते कहैछे एक उद्देशनांतेवासी जेहने सूत्र भणाव्योछे ते पणि वाचनां  
तेवासी नथी अर्थ नथी जणाव्युं तेमांटे १ । एक वाचनाशिष्यछे पणि उद्देशनाशिष्य नथी एम ४ ज्ञागा कहवा ॥ चौथे ज्ञांगे धर्मशिष्य जाणवुं श्राव  
कादि ॥ च्यार प्रकारना निग्रथ कह्या वाह्याज्यंतर ग्रथरहित द्रव्यरहित ते कहैछे एक रत्नाधिकसाधु जे दीक्षामां अने पर्यायथी वडेरौ निग्रंथ म  
हाकर्मा मोटीस्थितिना कर्मछे जेहने मोटीक्रियाछे प्रमादादिकनी जेहने आतापनारहित तपनथीछे जेहने समतारहित उपशम नथीछे जेहने एह

महाकर्मा महती क्रिया कायिकादिका कर्मबंधहेतु र्यस्य स महाक्रियः न प्रातापयति प्रातापनां शीतादिसहनरूपां करोती त्यनातापी मंदशब्दत्वा  
दिति अतएवा समितः समितिभिः सचैवंभूतो धर्मस्या नाराधको भवतीत्येक अन्यस्तु पर्यायज्येष्ठएवा ल्पकर्मा लघुकर्मा ऽल्पक्रियइति द्वितीयः अन्यस्तु  
अवमो लघुः पर्यायेण रात्रिको ऽवमरात्रिक एव निर्यथिक्ता श्रमणोपासकश्रमणोपासिकासूत्राणि ॥ चत्वारिगमन्ति ॥ निष्पत्ति सूत्रेषु चत्वार आला

कम्मे अप्पकिरिए णायावी समिए धम्मस्सणाराहए जवइ २ । उमराइणिए समणेणिग्गंथे महाकम्मे महा  
किरिए णायावी अस्समिए धम्मस्स णाराहए जवइ ३ । उमराइणिए समणेणिग्गंथे अप्पकम्मे अप्प  
किरिए णायावी समिए धम्मस्सणाराहए जवइ ४ । चत्तारि णिग्गंथीउ पस्सत्ताउ तंजहा राइणिया समणी  
णिग्गंथी ४ एवचेव । चत्तारि समणोवासगा प० तंजहा रायणिएसमणोवासए महाकम्मे तहेव । चत्तारि

वो रत्ताधिकसाधु धर्मनो आराधक नथाय १ । एक रत्ताधिकसाधु दीक्षाथी वडो निग्रंथ अल्प थोलीछे कर्मस्थिति जेहने थोलीछे प्रमादादिकनी  
क्रिया जेहने आतापनानो लेणहार एहवो साधु धर्मनो आराधक थाय २ । एक अवमरात्रिक साधु दीक्षाथी लघु श्रमण निग्रथ मोटीरिथतिना क  
र्मनुं धणी प्रमादादि मोटी क्रियाछे जेहने आतापना नथी लेतो मदसत्वपणा माटे समतारहित एहवो साधु धर्मनु आराधक नहोय ३ । एक अ  
वमरात्रिक दीक्षायेलघु श्रमणनिग्रथ अल्पकर्मनु धणी अल्पछे क्रियाजेहने आतापनानु लेणहार समतासहित साधु धर्मनु आराधक थाय ४ ॥ एम  
च्यार निग्रथी साध्वीकही तेकहैछे रत्ताधिक दीक्षासां वडेरि श्रमणी निग्रथीना ४ जोगा साधु नीपरे कहवा ॥ च्यार प्रकारना श्रमणोपासक आव

पकाभवतीति ॥ अस्मापिइसमाणे ॥ मातापितृसमान उपचारं विनापि साधुः एकान्तेनैव वत्सलत्वात् भ्रातृसमान अत्यतरप्रेमत्वा तत्त्वविचारादौ निष्ठुरवचना दप्रीते तथाविधप्रयोजने स्वत्यक्तवत्सलत्वाच्चेति मित्रसमानः सोपचारवचनादिना विना प्रीतिचतेः तत्क्षितौचा पद्युपेक्षकत्वादिति समा नः साधारणः पति रस्याः सा सपत्नी यथा सा सपत्न्या ईर्ष्यावशा दपराधान् वीक्ष्यते एव यः साधुषु दूषणदर्शनतत्परी नुपकारीच स सपत्नीसमानो ऽभिधीयतइति ॥ अद्वागति ॥ आदर्शसमानो यो हि साधुभिः प्रज्ञाप्यमाना नुत्सर्गापवादादौ नागमिकान् भावान् यथाव अतिपद्यते सन्निहितार्थानादर्शकवत् स आदर्शसमानः यस्या नवस्थितो बोधो विचित्रदेशनावायुना सर्वतो पङ्क्तिमाणात्वात् पताकेव स पताकासमानइति यस्तु कुतोपि कदाय

समणोवासियानुं प० तं० रायणियासमणोवासियामहाकम्मा तहेव चत्तारि गमा । चत्तारि समणोवासगा प० तं० अस्मापिइसमाणे ज्ञाइसमाणे मित्रसमाणे सवत्तिसमाणे । चत्तारि समणोवासगा प० तं० अद्वागसमा

क कहिया तेकहैछे । रत्नाधिक वडेरी आवक मोटीस्थितिना कर्मनुंधणी तिमज पूर्वनीपरे ४ ज्ञांगा कहवा ॥ च्यार प्रकारनी अमणोपासिका कही तेकहैछे रत्नाधिक वडेरी संघमा मोटीस्थितिना कर्मनी तिमज साधुनीपरे ४ ज्ञांगा कहवा ४ ॥ च्यार प्रकारना अमणोपासक कहिया ते कहैछे एक आवक मातापितासमान जे उपचारविना साधु यतीजनने एकातहितकारी १ । एक ज्ञाईसरिखो कांईक प्रमाददेखी क्रोधकरे पणि मनथी घणुंहि तराखै २ । एक मित्रसमान दोषठाकी साधुनां गुण वखाणै ३ । सोकसमान एक आवक जिम सोक छिद्र देखै तिम साधुना केवल छिद्र दोपने देखै गुणठांके दोषदेखाडै ४ ॥ वली च्यार प्रकारना आवक कह्या ते कहैछे एक आदर्शसमान आरसा समान जेहवु साधु सिद्धातनुं ज्ञाव प्ररूपे ते



हा न गीतार्थप्रदेगनया चात्यते सो ऽनमनस्वभावबोधत्वेना प्रज्ञापनीयः स्थाणुसमानइति यत्न प्रज्ञाप्यमानो न केवलं स्वायत्ताय चलति अपितु प्रज्ञापक दुर्वचनकण्टके विध्यति स खरकण्टकसमानः खरा निरन्तरा निष्ठुरावा कण्टाः कण्टका यस्मिं स्यात् खरकण्टं बज्जलादिडाल खरणमिति लोके य दुष्यते तत्र विलग्न चीवर न केवल मविनाशितं न मुञ्चति अपितु तद्धिमोचक पुरुषादिहस्तादिषु कंटके विध्यति अथवा खरटयति लेपवंतं करोतीति यत्त त्खरंट मशयादि तत्समानो यो हि ज्ञयो धापनयनप्रवृत्त संसर्गमात्रादेश दूषणवत् करोति कुपोषकशीलतादुःप्रसिद्धिजनकत्वेनो त्सूत्रप्ररूपको य मित्य सद्दूषणीज्ञा वक्तृत्वेन चेति श्रमणीपासकाधिकारा दिदमाह ॥ समणस्सेत्यादि ॥ कण्ठा नवर श्रमणीपासकाना मानन्दादौना सुपासकदशाभिहिताना मिति देवाधिकारा देवेद माह ॥ चउहोत्यादि ॥ त्रिस्थानके तृतीयोद्देशके प्रायोव्याख्यात मेवेद तथापि किञ्चि दुच्यते ॥ चउहिंठाणेहिंनोसंचाएत्ति ॥ सवध स्तथा देवलोकेषु

णे पद्मागसमाणे स्थाणुसमाणे खरकण्टसमाणे । समणस्सणंजगवन्तमहावीरस्स समणोवासगाणं सोहम्मेकप्पे  
अरुणान्नेविमाणे चत्तारि पलिनवमाइं ठिई प० चउहिंठाणेहिं अज्जणोववन्ते देवे देवलोगेसु इच्छेज्जामा

हयुंज अंगीकार करे धारे जिम आरीसामां मुखादिक १ । एक पताकासमान जे विचित्रदेशना सांजली मनडोलावे २ । एक आवक स्थाणुसमान ठुठसमान जे पोतानुं खोटुं हटनमूके समझावतां कदाग्रहकरे ३ । एक खरकण्टकसमान सीखामणदेशहारसाधुने साहमो दुर्वचनरूपकांटाथी वींघै ४ ॥ श्रमण जगवंत महावीरस्वामीना १० आनंदादिक आवकनी सौधर्मदेवलोकमा अरुणान्नविमाने चारपत्योपमनी स्थितिकही ॥ देवताना अधिकारमाटे कहैछे चार थानके नवो तरतऊपनुं देवता देवलोकविषे रह्यो बाढाकरे मनुष्यलोकमां आविवाने पिण आवीनसके आवासमर्थ नथाय तेकहैछे हम

देवमध्येइत्यर्थः ॥ ह्रस्वं ॥ शोघ्रं ॥ सचाएइ ॥ शक्नोति कामभोगेषु मनोज्ञशब्दादिषु मूर्च्छित इव मूर्च्छितो मूढ स्तस्वरूपस्या नित्यत्वादे विविधाक्षमत्वात्  
 गृह स्तदाकाक्षावान्ग्रहमइत्यर्थः ग्रथित इव ग्रथितस्तद्विषयस्नेहरञ्जुभिः सदभित इत्यर्थः अध्वपपन्नो ऽत्यततन्मनाइत्यर्थ नाद्रियते न तेषादरवान् भवति न  
 परिजानाति एतेपि वस्तुभूता इत्येव नमन्यते तथातेष्विति गम्यते नो ऽर्थं प्रतिवध्नाति एतै र्दि प्रयोजनमिति निश्चय करोति तथा नो तेषु निदान प्रक  
 रोति एते मे भूयासु रित्येवमिति तथा नो तेषु स्थितिप्रकल्प मवस्थानविकल्पन मेतेष्वह तिष्ठामि एतेवा मम तिष्ठन्तु स्थिराभवन्त्वित्येवरूपं स्थित्यावा मर्या  
 दया प्रकष्टः कल्प आचारः स्थितिप्रकल्प स्त प्रकरोति कर्तुमारभते प्रशब्दस्या दिकर्मार्थत्वादिति एवं दिव्यविषयप्रसक्तिरेक कारण तथा यतो सा बहुनोत्पन्नो  
 देवः कामेषु मूर्च्छितादिविशेषणो ऽतस्तस्य मानुष्यक मित्यादौति दिव्यप्रेमसक्ताति द्वितीय तथा सौ देवो यतो भोगेषु मूर्च्छितादि विशेषणो भवति तत

णुसंलोगंहवृमागच्छित्तए णोचेवसंचाएइ हवृमागच्छित्तए तंजहा अज्जणोववन्तेदेवेदेवलोगेसु दिव्वेसुकामजो  
 गेसु मुच्छिए गिष्ठे गढिए अज्जोववस्से सेणंमाणुस्सएकामजोगे णोअट्ठाइ णोपरियाणाइ णोअठ्ठवंधइ णोणि  
 याणंपगरेइ णोठिइप्पगप्पपगरेइ १ । अज्जणोववन्ते देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामजोगेसु मुच्छिए ४ तस्सणं

णा तुरत ऊपनुं देवता देवलोकमां दिव्य देवतासंबंधी कामजोगनेविषे मूर्च्छा पाम्योथको नजारो जे एह अनित्यत्वे मूर्च्छित गृह विषयमां अतृप्त अ  
 त्यत आशक्तमन तेदेवता मनुष्यनां कामजोगने आदर नकरे तत्त्ववस्तुकरी नजारो असार कुत्सित जारो अर्थनवाधे जे एहनुं एप्रयोजनत्वे समनकरे  
 नियाणुं नकरे जे एह भोग हु भवातरे पांसुं स्थितिप्रकल्प जे एह जोगनेविषे हुं रहुं एहवो विचार नकरे एकारणे नावे १ । वली नवो ऊपनुं दे

स्तप्रतिबन्धात् ॥ तस्मिन्मित्रादीति ॥ देवकार्यायत्ततया मनुष्यकार्यानायत्तत्वं तृतीय तथा दिव्यभोगमूर्च्छितादिविशेषणत्वा तस्य मनुष्याणा मयं मानुषः  
सएव मानुषको गन्धः प्रतिकूलो दिव्यगन्धविपरीतवृत्तिः प्रतिलोमद्यापि इन्द्रियमनसो रनाह्लादकत्वा देकार्थौ चैता वल्यतामनोज्ञताप्रतिपादनायो  
क्ता विति यावदिति परिमाणार्थः ॥ चत्तारिपचेति ॥ विकल्पदर्शनार्थं कदाचि झरतादि श्वेकान्तसुखमादौ चत्वार्येवा न्यदातु पञ्चापि मनुष्यपचेन्द्रियतिरश्चा

माणुस्सए पेमे वोच्छिस्से दिव्वे संकते जवइ २ । अण्णोववन्ते देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामजोगेसु मुच्छिए ४  
तस्सणं एवं जवइ इयसिहं गच्छ मुज्जत्तेणगच्छ तेणं कालेण मप्पाउअण मणुस्सा कालधम्मणा संजुत्ता जवति ३ ।  
अण्णोववन्ते देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामजोगेसु मुच्छिए ४ । तस्सणं माणुस्सए गंधे पण्णिकूले पण्णिलोमे  
यावि जवइ उह पियणं माणुस्सएणं गंधे चत्तारि पंचजोयणसयाइं हव मागच्छइ ४ । इस्सेएहिं चउहि

वता देवलोकमां दिव्यकाम भोगने विषे मूर्च्छित थको ४ पूर्ववचन कहवा तेह देवताने मनुष्यना जव संबंधी मातापितानो प्रेम स्नेह विच्छेद थ  
यो अने देवतासबधी उंसक्रम्यो उपनो एह बीजो कारण २ । वली हमणा तुरत उपनुं देवता देवलोकमा दिव्य कामजोगने विषे मूर्च्छित थको  
एम च्यार बोल कहवा ४ तेह देवता इम जाणे हमणा जांजं बेघणीमां जाऊ आनाटक जोईने जाऊ एक नाटिक जोता बेहजार वरस जाय  
तेकाले इहा अल्प आऊखाना धणी मनुष्य कालधर्म सहित थाय मरण पामें एह बीजो कारण ३ । वली देवलोकमा तुरतउपनो देवता दिव्य का  
मजोगने विषे मूर्च्छित थको इहा पूर्वोक्त च्यार बोल कहवा ते देवताने मनुष्य लोकनो गंध प्रतिकूल दिव्यगंधयी विपरीत प्रतिलोम इन्द्रियमनने

बहुत्वेनौ दारिकशरीराणां तदवयवतत्त्वज्ञानांच बहुत्वेन दुरभिगन्धप्राप्तुर्यादिति आगच्छति मनुष्यक्षेत्रा दाजिगमिषुं देवं प्रतीति इदञ्च मनुष्यक्षेत्रस्या शु  
भस्वरूपत्वं मेवोक्तं नच देवो ऽन्योवा नवभ्यो योजनेभ्यः परत आगत गन्ध जानातीति अथवा अतएव वचनात् यदिन्द्रियविषयप्रमाणं मुक्तं न्तदौदारि  
कशरीरेन्द्रियापेक्षयैव सभाव्यते कथं मन्यथा विमानेषु योजनलक्षादिप्रमाणेषु दूरस्थिता देवा घंटाशब्द शृणुयुः यदि परस्म्यति शब्दद्वारेणा न्यथावेति  
नरभवाशुभत्वं चतुर्थमनागमनकारणमिति शेष निगमन आगमनकारणानि प्रायः प्राग्वत् तथापि किञ्चिदुच्यते कामभोगे स्वमूर्च्छितादि विशेषणी यो  
देव स्तस्य ॥ एवमिति ॥ एवभूत मनोभवति यदुत अस्ति मे किंतदित्याह आचार्यइतिवा चार्य एतद्वा स्तीति रूपप्रदर्शने वापिकल्पे एव मुत्तरत्रापि क्व

ठाणेहि अञ्जणोववन्ते देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसलोगं हव्व मागच्छित्तए णोचेवणं संचाएइ हव्व मा  
गच्छित्तए ॥ चउहि ठाणेहि अञ्जणोववन्ते देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्व मागच्छित्तए संचा  
एइ हव्व मागच्छित्तए तंजहा अञ्जणोववन्ते देवे देवलोगेसु कामभोगेसु अमुच्छिए जाव अणज्जोववस्से

असु खनो देणहार अत्यंत माठोलाने जेमांटे ऊचो आकाशे मनुष्यनो गंध सर्प गोप्रमुखना मृतक जेहवो यावत् चारसे योजन लगे दुकालमां पां  
चसेयोजन लगे जायळे उठलेळे सदैव एह चौथो कारण ४ ॥ इत्यादि चार कारणे थानके नवो ऊपनो देवता देवलोकमां रह्यो बाळे मनुष्यलो  
कमा आविवाने पणि समर्थ नथाय शीघ्र आविवाने ॥ वली चार थानके हमणा उपनो देवता देवलोकमां रह्योथको मनुष्यलोकमां आविवाने  
समर्थ थाय तेकहैळे तुरत ऊपनो देवता देवलोकमा दिव्य कामभोगनेविषे मूर्च्छित नथयो अनित्य जाणी यावत् अत्यंत आसक्तमन नथी तेहने

चिदिति शब्दो न दृश्यते तत्रसूत्रं सुगममेवेति इहवाचार्यप्रतिबोधकप्रवाजकादि रनुयोगाचार्योवा उपाध्यायः सूत्रदाता प्रवर्तयति साधू नाचार्योपदि  
 शेषु वैद्यावत्यादिष्विति प्रवर्ती प्रवर्तिव्यापारितान् साधून् सयमयोगेषु सौदतः स्थिरीकरोतीति स्थविरो गणो स्यास्तीति गणो गणाचार्यो गणधरोवा जि  
 नमिष्यविशेष आर्थिकाप्रतिजागरकोवा साधुविशेषः समयसिद्धान्तोगणस्या वच्छेदो स्या स्तीति गणावच्छेदको योहि त गृहीत्वा गच्छोपष्टभायैवो  
 पधिमार्गणादिनिमित्त विहरति ॥ इमेत्ति ॥ इयं प्रत्यक्षासत्रा एतदेव रूप यस्या नकालान्तरादा वपिरूपान्तरभाक् सा तथा दिव्या स्वर्गसम्भवा प्रधाना  
 वा देवर्षि विमानरत्नादिका द्युतिः शरीरादिसम्भवा द्युतिर्वायुक्ति रिष्टपरिवारादिसयोगलक्षणा लब्धा उपार्जिता जन्मान्तरे प्राप्तेदानौ मुपगता अभि  
 समन्वागता भोग्यावस्था इति ॥ तति ॥ तस्मा त्तान् भगवतः पूज्यान् वन्दे स्तुतिभिर्नमस्यामि प्रणामेन सत्करोमि आदरकरणेन वस्त्रादिनावा सन्मानया

तत्सणं एव जवइ अत्यिखलु मम माणुस्सए जवे आयरिएइवा उवज्जाएइवा पवित्रीवा थेरेइवा गणीइवा  
 गणहरेइवा गणावच्छेएइवा जेसि पन्नावेणं मएइमा एयारूवा दिव्वा देवही दिव्वा देवजुई लद्धा पत्ता  
 अजिसमस्यागया तगच्छामिण तेजगवते बंदामि जाव पज्जुवासामि । अज्जणोववस्से देवे देवलोएसु जाव

एहवो मनमा आवे जे छे माहरे मनुष्यजवसंबधी आचार्य प्रतिबोधक अथवा उपाध्याय त्रसूदाता प्रवर्तक जे साधुजनने आचारमां प्रवर्तावे अ  
 थवा स्थविर अथवा गणी गच्छनी स्वामी गणाधर गच्छनी धरणाहार अथवा गणावच्छेदक गच्छनी सार करे ते जेहना प्रजावधी आ प्रत्यक्ष देवसं  
 पत्नी देवतानोदारीर तथा काति पामी जन्मातर मां उपराजी ते जोगसन्मुख आवी तेमाटे हुजाऊ ते जगवतने घादु यावत् तेहनी सेवा करुं

स्युचितप्रतिपत्त्या कच्चाणं मङ्गल दैवतं चैत्यनिति बुद्ध्या पर्युपास्ये सेवामीत्येकं तथा ज्ञानी श्रुतज्ञानादिनेत्यादि द्वितीयं तथा ॥ भायाइवाभज्जाइवा भद्रणी  
इवापुत्ताइवाधुयाइवेति ॥ यावत्शब्दाक्षेपः स्तुषा पुत्रभार्या ॥ त ॥ तस्मा त्तेषा मतिकसमौप प्रादुर्भवामि प्रकटोभवामि ॥ ता ॥ तावत् ॥ मे ॥ मम इतिपाठान्तर  
मितितृतीयं तथा मित्रपद्यात्स्नेहवत् स खावालवयस्यः सुहृत्सज्जनो हितैषो सहायः सहचर स्वदेककार्यप्रवृत्तोवा संगत विद्यते यस्यासौसाङ्गतिकः परिचि

अणज्जीववस्से तस्सण मेवं जवइ एसणं माणुस्सए जवे णाणीइवा तवस्सीइवा अइदुक्करकारणं तंगच्छामि  
ण तेजगवते वदामि जाव पज्जुवासामि २ अण्णोववस्से देवे देवलोएसु जाव अणज्जीववस्से तस्सण  
मेवं जवइ अत्थिणं मम माणुस्सए जवे मायाइवा जाव सुरहाइवा तगच्छामिण तेसि मंतिय पाउप्पवामि  
पासंतु तामेइममेयारूव दिव्वंदेवहि दिव्वंदेवजुइं लद्धं पत्त अज्जिसमस्सागय ३ । अण्णोववस्सेदेवे देवलोएसु

एह प्रथम कारण १ । हमणा तुरत ऊपनो देवलोकने विषे देवता यावत् सूच्छित विषयमा अत्यंत आशक्त नथी तेहने एहवो मनसां आवे जे म  
नुष्यना जवमा ज्ञानी श्रुतज्ञानादिसहितके अथवा मोटो तपसीके अथवा अतिदुक्कर करणीनो करणहार परीसहादि सहनारके तेमाटे हुं जाऊं  
ते जगवत ज्ञानी अथवा तपसी अथवा दुक्करकरणीनो करणहारके तेहने बांदुं यावत् तेहनी सेवाभक्ति करु एह इहा आवानो बीजो कारण २ ।  
वली हमणां तुरत देवलोकमा ऊपनो देवता विषयसुखनेविषे अत्यंत आशक्त नथी तेह देवताने एहवो मनसा आवे जे के माहरे मनुष्यजवसंबंधी  
मातापिता यावत् स्तुषा भार्या जाई बहिन पुत्र पुत्री तेमाटे हुं जाऊं तेहने पासे जईने प्रगट थाऊं ते सर्व देखे मांहरी दिव्य देवतानी विमा

तस्मिन् ॥ अस्मिन् ॥ प्रयागिः ॥ प्रणमणस्तुति ॥ अन्योन्यं ॥ संगारेति ॥ संकेतः प्रतिश्रुतो भूयगतो भवतिस्मिन् ॥ जोमेति ॥ यो सात्कं पूर्वपावते देवलोका  
 त्स स गोधयितव्य इति चतुर्थं मिदचमनुष्यभवेकतसकेतयो रेकस्य पूर्वलजादिजीविषु भवनपत्त्यादिषू त्यद्य युत्वाच नरतयो त्यन्नस्या न्यःपूर्वलजादिजीविला  
 सीधर्मादिषू त्यद्य सजोधनार्ण यदि ह्य गच्छति तदा वसेयमिति इत्येते रित्यादि निगमनमिति अनंतर देवागमनमुक्तं तच्च तत्कृतोद्योतोभवतीति तद्विषय मन्थ  
 कारं लोके आह ॥ चउगीत्यादि ॥ व्यक्तां किन्तु लोके अन्धकारं तमिस्स द्रव्यतो भावतसपदनये स्या त्समाच्यते हाहंदादिष्ववच्छेदेद्रव्यतोन्धकार उत्पातरूपत्वात्

जाव अणज्जोववणे तरुसण मेवज्जवइ अत्थिणं मममाणुस्सएज्जवे मिहेइवा सुहीइवा सहाएइवा संगइए  
 इवा तेसिंचणं अम्हे अणमणस्स सगारेपफ़िसुएज्जवइ जोमेपुहिंचयइ सेसवोहियवो इच्चेएहिंजावसंचाएइ  
 हवमागच्छितए ४ । चउहिठाणेहिं लोगधगारे सिया तंजहा अरिहंतेहिवोच्छिज्जमाणेहि अरहंतपणस्से

नादिकनी सपत्नी रतप्रमुखनी दिव्य देवतानी कांति शरीरनी जे में पामीछे जोगावस्थाये सन्मुख थवैछे एह त्रीजो कारण ३ । वली नवी ऊपनी  
 देवता यावत् तेहना मनमे एहवो आवे जे छे माहरे मनुष्यजवसंबधी मित्र स्नेहवंत सखा अथवा सहचारी अथवा सांगतिक घणो जेहथी परिचय  
 छे ते संधाते मनुष्यना जवमा हता तिवारे मांहीमांहि एहवो सकेत कीधीहतो जे देवतामांहिथी प्रथमचवी मनुष्यमा जाय तिवारे तेहने प्रति  
 बोधवो इत्यादि ४ कारणथी देवता मनुष्यलोकमां आवे एह चौथो कारण ४ ॥ देवतानी अधिकार कही च्यार थानके लोक मनुष्यलोकमां अध  
 कार थाय देवलोकमां सदैव उद्योतछे तेहथी विपरीत ग्रंथकारछे तेकहैछे अरिहंतनी विरहथाय तिवारे जावथी ग्रंथकार थाय लज्जभंगादिघणा

।स्य कृत्रभङ्गादौ रज उत्पातादियदिति वज्जिश्चच्छेदे ऽन्धकार द्रव्यतएव तथा स्वभावात् दीपादे रभावाद्वा भावतोपिच एकांतदुःखमादा वागमादे रभावा  
देति पूर्व देवागम उक्तो तो देवाधिकारवन्त मादुःखशय्यासूत्रा त्सूत्रप्रपञ्चमाह ॥ चउहीत्यादि ॥ सगमश्चाय नवरं लोकोद्योत श्वतुर्ष्वपि स्थानेषु देवाग  
।।त् जन्मादित्रयेतु स्वरूपेणापि ॥ एवमिति ॥ यथा लोकात्मकार तथा देवात्मकारमपि चतुर्भिः स्थानैर्देवस्थानेष्वप्यर्हदादिव्यवच्छेदकाले वस्तुमाहा  
म्यात् क्षण मन्धकार भवति एवं देवोद्योतो हंता जन्मादिष्वपि देवसन्निपातो देवसमवाय एवमेव देवोत्कलिका देवलहरि रेवमेव ॥ देवकहकहेति ॥

धम्मेवोच्छिज्जमाणे पुव्वगएवोच्छिज्जमाणे जायएजोवोच्छिज्जमाणे । चउहिंठाणेहिं लोउज्जोएसिया तं० अरि  
हंतेहिंजायमाणेहिं अरहतेहिंपव्वयमाणेहिं अरहंताणंणाणुप्पायमहिमासु अरहंताणंपरिनिव्वाणमहिमासु ।

उत्पात उपजे तेमाटे १ । अरिहंत भाषितधर्म विच्छेद थाय तिवारे अंधकार थाय तिवारे एकांत दुःखमाकाल छठो आरो प्रवर्त २ । चौदेपूर्व वि  
च्छेद जातां अंधकार थाय आगमहानि मांटे ३ । जाततेजा वादरअग्नि विच्छेद जातां द्रव्यथी अंधकार थाय दीपादिकना अज्ञावमांटे ४ ॥ चार  
थानके सनुव्यलोकमां उजवालो थाय तेकहैछे । अरिहंतनो जन्म थातां घणां देवता आवे तेमांटे अने स्वज्ञावथी पणि १ । अरिहंत दीक्षालेते उ  
जवालो थाय २ । अरिहंतने केवलज्ञान उपजवानी महिमाने विषे जगवत धर्मप्रकाशो देवतापणि आवे ३ ॥ अरिहंतना परिनिर्वाण मोक्ष जावानी  
महिमाने विषे ए चारथानके उजवालो थाय ४ ॥ एम देवताने अंधकार थाय अरिहतादि पूर्वोक्त चार विच्छेद जाता ४ ॥ एम देवताने अजु  
गालु थाय जिनजन्मादि चारथातां एम ए चार कारणे देवतानो समवाय देवोत्कलिका ते देवलहरी देवकहकह हर्षनो कलकल शब्द थाय ४ ॥



देवमोदकलकल एवमेष देवेन्द्रा मनुष्यलोक मागच्छेयु रर्हता ज्ञानादिष्वेति यथा पिस्थानके प्रथमोद्देशके तथा देवेन्द्रागमनादीनि लोकान्तिकसू  
 त्रायसानानि वाचानि केवल मित्र परिनिर्वाणमहिमास्त्विति चतुर्थमिति पूर्व मर्हता ज्ञानादिष्वतिकरेण देवागम उक्तो ऽधुना ऽर्हतामेव प्रवचना  
 र्थं दुःस्थितससाधो दुःखशय्या इतरस्येतराभवन्तीति सूत्रयेनाह ॥ चत्तारोत्यादि ॥ चत ए शतुःसख्या दुःखदाशय्या दुःखशय्या स्ताश द्रव्यतो ऽतथा  
 विधखट्वादिस्त्वा भावतस्तु दुःस्थचित्ततया दुःशमणस्वभावाः प्रवचनान्नान १ परलाभप्रार्थन २ कामाशसन ३ स्नानादिप्रार्थन ४ विशेषिताः प्रज्ञप्ताः  
 सूनेति तासुमध्ये सइति सकश्चित् गुरुकर्मा अथार्थोवा अर्थ सच वाकोपक्षेपे प्रवचने शासने दौर्धत्वश प्रकटादित्वादिति शङ्कित एकभावविषयसंशये संयु

एवं देवंधगारे देवुज्जोए देवसन्निवाए देवुक्कालिया देवकहकहए । चउहिंठाणेहिं देविंदामाणुसंलोगं हव्माग  
 च्छंति एवं जहा तिठाणे जाव लोगतियादेवा माणुसंलोगं हव्मागच्छेज्जा अरहतेहि जायमाणेहिं जाव  
 अरहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु । चत्तारि दुहसेज्जाउ प० तं० तत्थखलु इमा पढमा दुहसेज्जा सेणंमुंफेज

चार थानके देवेन्द्र मनुष्यलोकमां आवे एम जिम वीजाठाणामें कछो तिमज यावत् लोकान्तिकदेवता मनुष्यलोकमां आवे तिम कहैछे अरिहंतनो  
 जन्मथातां यावत् अरिहंतना ज्ञान तथा दीक्षा तथा निर्वाणनी महिमा थातां ४ ॥ हिवे अरिहंतना धर्ममां चार दुराशय्या कही ते कहैछे । ति  
 हां निश्चयथी एह पहिली दुसशय्या कोईक घनकरमी जीव मुडथई दीक्षालेई गृहस्थावासमूकी अणगर थयो पांचमहाव्रत लेई पछे निर्ग्रंथ प्रव  
 चन ते जिनशासन तेहने विषे ज्ञाकासहित बीजामतनी बाळा करे बितिगिच्छा धर्मना फलमां संदेह आणे जेदसमापन्न जे ए सांचीछे किवा खो

क्तः काञ्चितो मतांतरमपि साध्विति बुद्धिर्विचिकित्सितः फलंप्रति शंकावान् भेदसमापन्नो बुद्धेर्द्वैधौभावापन्न एवमिदं सर्वजिनशासनोक्तमन्यथावेति कलुषसमापन्नो नैतदेवमिति विपर्यस्तइति नश्यते सामान्येनैवमिदमिति नोपपद्यते प्रतीतिद्वारेण नो रोचयति अभिलाषातिरेकेणासेवना भिमुखतयेति मनश्चित्तमुच्चावचमसमजस निर्गच्छति निर्याति करोतीत्यर्थः ततो विनिपातधर्मभ्रंशससारवा आपद्यते एव मसौ आमण्यशय्याया दुःखमास्ते इत्येका तथा केन स्वकौयेन लभ्यते लभ्यतेति लाभोऽन्नादिरन्नादेर्वा तेन आशा करोत्याशयति स नूनमेदास्यतीत्येवमिति आस्वादयति वा

वित्ता अगारानुअणगारियपव्वइए निग्गंथेपावयणे संकिए कखिए वितिगिच्छिए जेयसमावससे कलुससमावससे निग्गंथपावयणं णोसद्दहइ णोपत्तियइ णोरोएइ निग्गंथपावयणं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे मणउच्चावचंनियच्छइ विणिघायमावज्जइ पढमादुहसेज्जा । अहावरादोच्चादुहसेज्जा सेणंमुंफेज्जवित्ता अगारानुअणगारियंपव्वइए एसणंलाजेणं णोतुस्सइ परस्सलाज्जमासाइ पीहेइ पच्छेइ अनिलसइ परस्सलाज्जमा

टोले कलुषसमापन्न ए इम नही एहवों कहै एतले प्रकारे वीतरागनी आज्ञाने सरदहे नथी तेहने ऊपर अट्टा न आणे वली विश्वास न आणे जे धह साचोळे प्रीतिआणी रुचावेनथी एम निर्गंथ प्रवचनप्रते नथी सरदहतो अविश्वास उपजावतो अणरुचावतो मनजंचोनींचोकरतो विनिघात पामे एमंथी पडी ससार जमे ए प्रथमदुखशया कही साधुने मनना मांठापणथी । हिवे अपर बीजी दुसज्या कहैळे । ते बहुकरमी जीव मुंठयई गृह स्थावासमूकी यावत् प्रवृज्या लेई पीताने लाजे सतोष नपामें परना लाभप्रति आसादे बाळना करे स्पृहाकरे पाथे मननो अजिलाष करे परना

लभतेचेत् तद्भुक्ते एवं सहयति वाञ्छति प्रार्थयति याचते अभिलषति लब्धे अधिकतरं वाञ्छतीत्यर्थः शेष मुक्तार्थं मेवमप्यसौ दुःखमास्तु इति द्वितीया  
तृतीया कण्ठ्या अगारवासो गृहवासस्तु मावसामि तत्रवर्त्ते सम्बाधन शरीरस्यास्थिसुखत्वादिना नैपुण्येन मर्दनविशेषः परिमर्दनंतु पृष्ठादेर्मलनमात्र

साएमाणे जाव अजिलसमाणे मणं उच्चावयंति विणिघायमावज्जइ दोच्चा दुहसेज्जा । अहावरा तच्चा दुहसेज्जा  
सेणंमुंठेनविता अगारानं अणगारियं पव्वइए दिव्वेमाणुस्सए कामजोगे आसाएमाणे जाव अजिलसमाणे म  
णंउच्चावचंणियच्छइ विणिघायमावज्जइ तच्चा दुहसेज्जा ३ । अहावरा चउत्था दुहसेज्जा सेणं मुंठेनविता  
जाव पव्वइए तरस्सणमेवंनवइ जयाण अहमगारवासमावसामि तयाणमहं संबाहणपरिमंढणगाउल्लंगगाउ  
च्छोलणाइ लज्जामि जप्पजियंचणं अहमुंठेनविता जाव पव्वइए तप्पजियंचणं अहंसंबाहणजावगाउच्छोल

आहार उपकरणना लाजनी बांछा करतो यावत् अजिलाष करतो मनऊंचोनीचो करतो विनिघात पांमैं धर्मथी पडै एह बीजी दुखसज्या कही २ ।  
हिवे अपर बीजी दुखसज्या कहैछे ते बहुकरमी जीव मुंडथई यावत् प्रवृज्या दीक्षा लेई दिव्य दीपता मनुष्यकामजोग विषयसुखप्रति आस्वादतो  
बाछतो यावत् अजिलाश करतो मन ऊंचोनीचो करतो विनिघात पांमैं धर्मथी पडै एह बीजी दुखसज्या कही ३ । हिवे अपर चौथी दुखसज्या कहै  
छे ते मुंडथई यावत् प्रवृज्यालेई तेहने मनमां एहवो आवे जिवारे हु गृहस्थावासमां वसतोहतो तिवारे हु सबाधन शरीरना अस्थिने सुखकारी  
परिमर्दन मलापहार अज्यग तैलनो मर्दन अगनो पखालवो उष्ण तथा शीतल पाणीथी एतला वाना पामतो जेदिवसथी मांडी हं मंडथयो यावत

॥ ' परिशब्दस्य धात्वर्थमात्रवृत्तित्वात् गात्राभ्यंग स्त्रैलादिनाङ्गमन्त्रणं गात्रोत्तालन मङ्गधावन मेतानि लभेत कश्चिन्निषेधयतीति श्रेयं कंठ्यमिति चतुर्थो दुःख

णाङ्ं आसाएइ जाव अजिलसइ सेणंसवाहणजावगाउच्छोलणाङ्ं आसाएमाणे जाव मणंउच्चावचंनियच्छइ विणिघायमावज्जइ चउत्थादुहसेज्जा ४ । चत्तारि सुहसेज्जानं पस्सत्तानं त० लत्थखलु इमापढमा सुहसेज्जा सेणंमुंठेनवित्ता अगारात्तणगारियं पब्बइए निग्गथेपावयणे णिस्संकिए णिक्कांखिए णिह्वितिगिच्छिए णोत्तेयसमावस्से णोकलुससमावस्से निग्गथंपावयणं सदहइ पत्तियइ रोएइ निग्गथंपावयणं सदहमाणे पत्तियमाणे रोएमाणे नोमणंउच्चावचंनियच्छइ णोविणिघायमावज्जइ पढमासुहसेज्जा ५ । अहावरा दोच्चा

प्रव्रज्या लीधीळे तेदिवसथी मांढी संवाधन डीलचंपाववो यावत् अंगप्रक्षालन स्नान प्रमुख नथी पामतो यावत् गात्रनुं पखालवुंप्रमुख वाळे यावत् अभिलाष करे वाळा करे ते साधु संवाधन यावत् गात्रनु पखालवु बांळतो यावत् मननु ऊंचानीचापणुं पामें सकल्पविकल्पमाटे विनिघात पामें धर्मथी पडे एह चौथी दुखशय्या ४ ॥ हिवे सुखसज्या कहैळे तिहा निश्चयथी एह पहिली सुखसज्या जाणवी ते हलकरमी जीव मुडथई लोच करा वी गृहस्थपणुं मूंकी अणगारपणुं लीधुं प्रव्रज्या पचमहावृत ऊचरी जिनशाशनमां शंकारहित आकांक्षारहित वित्तिगिच्छारहित धर्मफलसंदेहरहित भेद नथी पाम्यो जे धर्म इम हस्ये किवा नथी कलुषजाव नथी पाम्यो मनमैलो नथी एहवो जिनशाशनप्रति साचोकरी सरदहे प्रत्ययविश्वास उ पजावे रुचावे जिनशाशनने निग्रथना प्रवचनने सरदहतो विश्वास आणतो रुचावतो मनऊंचोनीचो संकल्पविकल्प नकरे धर्मथी घात नपामें न पडै एह पहली सुखसज्या १ । अथानंतर बीजी सुखसज्या कहैळे ते मुंठथई यावत् प्रव्रज्यालेई पोताने ज लाजथी सतोषपामें परना लाजनी आज्ञा

ग्रथ्याविपरीताः सुखग्रथ्याः प्राग्विवावगम्या नवरं ॥ हृदयि ॥ शोकाभावेन हृष्टाद्व हृष्टा अरोगा ज्वरादिवर्जिताः बलिकाः प्राणवतः कल्पशरीराः पटु

सुहसेज्जा सेणमुंठेजाव पव्वइए सएणंलान्नेणं तुरस्सइ परस्सलान्नेणोअ्थासाएइ णोपीहेइ णोपत्थेइ णोअ्थि  
लसइ परस्सलान्नेमणासाएमाणे जाव अण्णिलसमाणे णोमणंउच्चावच णियच्छइ णोविणिघायमावज्जइ दो  
असुहसेज्जा २ । अहावरा तच्चासुहसेज्जा सेणमुंठे जाव पव्वइए दिव्वमाणुस्सएकामन्नोणे णोअ्थासाएइ जा  
व णोअ्थिलसइ दिव्वमाणुस्सएकामन्नोणे अ्थासाएमाणे जाव अण्णिलसमाणे णोउच्चावच नियच्छइ णोविणि  
घायमावज्जइ तच्चा सुहसेज्जा ३ । अहावरा चउत्था सुहसेज्जा सेणमुंठेजाव पव्वइए तस्सणमेवज्जवइ जइ  
ताव अरहंता जगवता हृष्टा अरोगा बलिया कल्पशरीरा अन्तयराइं उरालाइं कल्लाणाइं विउलाइं पय

नकरे बांछा नकरे प्रार्थना नकरे अभिलाष नकरे परनालान्ने अण्णबाल्लतो यावत् अज्जिलाप अण्णकरतो पोतानामनने उंचोनीचोनकरतो विनिघात  
नपावे धर्मथी नपडै एह बीजी सुखसज्जा २ । हिवे त्रीजीसुखसज्जा कहैछे ते मुडयई प्रव्वज्जालेई दिव्य मनुष्यना कामन्नोणमां पामवानी बाळा न  
करे यावत् अज्जिलास नकरे दिव्य मनुष्यना कामन्नोणने विषे आशाअण्णकरतो यावत् अज्जिलापअण्णकरतो मनने उंचोनीचोनकरतो विनिघात नपा  
वे धर्मथी नपडै एह त्रीजीसुखसज्जा ३ । हिवे चौथी सुखसज्जा कहैछे ते मुडयई यावत् प्रव्वज्जालेई ते साधुने मनमा एहवु होय जे ते अरिहत  
जगवंत हर्षवत शोकरहितमाटे ज्वरादि रोगरहित बलवंत पडवडा पाच इद्रिय शरीरना धणी एहवायका अन्यतर उदार तप आसंसादिदोषर

शरीरा अन्यतराणि अनशनादीनां मध्ये एकतराणि उदाराणि आशंसादीषरहिततयो दारचित्तयुक्तानि कन्याणानि मङ्गलस्वरूपत्वात् विपुलानि व  
हुदिनत्वात् प्रयतानि प्रकटसयमयुक्तत्वात् प्रष्टुहीतानि आदरप्रतिपन्नत्वात् महानुभागानि अचिन्त्यशक्तियुक्तत्वात् ऋद्धिविशेषकारणत्वाद्वा कर्मक्षय  
कारणानि मोक्षसाधकत्वात् तपःकर्मणि तपःक्रियाः प्रतिपद्यन्ते आश्रयन्ति ॥ किमंगपुणत्ति ॥ किप्रश्ने अगे त्यामत्रणे अलङ्कारेवा पुनरिति पूर्वोक्तार्थवे  
लक्षणदर्शने शिरोलोचव्रह्मचर्यादीना मभ्युपगमे भवा आभ्युपगमिकौ उपक्रम्यते ऽनेना युरि त्युपक्रमो ज्वरातिसारादि स्तत्र भवा या सो पक्रमिकौ सा  
चासौ साचेति आभ्युपगमिकोपक्रमिकौ ता वेदना दुःख सहामि तदुत्पत्तावनिमुखतया अस्तिच सहि रवैमुख्यार्थे यथा असौ भट स्तम्भट सहते तस्मा  
न्नभज्यतइतिभाव. क्षमे आत्मनि परेवां विकीपतया तितिक्षामि अदैन्यतया अध्यासयामि सौष्टवातिरेकेण तत्रैव वेदनाया मवस्थान करोमीत्यर्थ. एका

त्ताइ पग्गहियाइं महाणुजागाइं कम्मस्कयकरणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जांति किमंगपुण झ्ह झ्ज्जोवगमि  
उवक्कामिय वेयण णोसम्मंसहामि खमामि तितिस्केमि झ्हियासेमि ममंचण झ्ज्जोगमिनुवक्कामियं सम्मम

हित मंगलीकरूप विपुलघणा उत्कृष्टसयमसहित आदरसहितग्रह्या महानुजाग अचिन्त्यशक्तिसहित ८ कर्मना क्षयकरणहार एहवा गुणसहिततप  
कर्मते पडिवजे ज्योतीर्थंकर जेहवा तपकरेखे तोहु तेहुं अभ्युपगमिकी वेदना ते शिरोलोच व्रह्मचर्यथी ऊपनी । उपक्रमिकी तेज्वरातीसाररोगथी ऊ  
पनी एवे प्रकारनी वेदना तेऊपनेहुं नथी सहतो । क्रोधरहित खमतोनथी तितिक्षाऊपरे रीसने अणकरवे अदैन्यपणे अहियासे मुक्कने अभ्युपगमि  
की । तथारोगादि उपक्रमथी ऊपनी वेदनाप्रते सम्यक्प्रकारे अणसहते अणखमते तितिक्षाअणकरते वेदना २ यावत् सम्यक् प्रकारेसहते यावत् अ

थां शेते शब्दाः ॥ किमत्रेति ॥ मन्थे निपातो वितर्कार्थः क्रियते भवतीत्यर्थः ॥ एगंतसोत्ति ॥ एकान्तेन सर्वथेत्यर्थ इति एतेच दुःखसुखशय्यावन्तो निर्गुणाः सगुणाश्च अतद्विशेषाणामेव वाचनीयत्वदर्शनाय सूत्रद्वय कण्ठ्य नवर ॥ वोइति ॥ प्रकृतिः क्षीरादिका अध्यवशमितप्राभृत इति प्राभृत अधिकरण

सहमाणस्स अखममाणस्स अतितिरुकेमाणस्स अणहियासेमाणस्स किंमस्से कज्जाइ एगंतसोपावेकम्मैकज्जाइ ममंचण मज्जोवगमिनु जाव सम्मंसहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स किंमस्से कज्जाइ एगंतसोमेणिज्जाराकज्जाइ चउत्थासुहसेज्जा ४ ॥ चत्तारि अवायणिज्जा प० त० अविणीए विगइप्पफिवद्धे अविउसवियपाज्जणे मायी ॥ चत्तारि वायणिज्जा पसत्ता तंजहा विणीए अविगइप्पफिवद्धे अविउसवियपाज्जणे अमायी । चत्तारि

हिंसते तेस्युं थास्ये एकातेमांहरे तोहु एकांते निश्चयसु पापकर्मकरीस पापउपराजीस । अने मुक्कने वलीजो अन्युपगमिकी वेदना २ यावत् सम्यक् प्रकारेसहते यावत् अहियासते तेस्युंथास्ये एकांते मांहरे कर्मनिर्जेराथास्ये एहवुं विचारीखमे धर्मसिद्धातनेरुचावे १ पीताने लाजे सतोप आणे २ कामजोगनी बाळानकरे ३ तपकरतोपरीसहरीगादि वेदना सहें ए ४ सुखसज्या जाणवी ॥ ४ ॥ सुखसज्यावंतते गुणवत । दुखसज्यावतते निर्गुण ते हने च्यार पुरुष अवायणीकह्या । जणाववानही । वाचनादेवीनही तेकहैछे ॥ अविनीत १ । विणयदूधदही प्रमुख ६ तेहनो लालची २ । नथीसम्यो अधिकरण एतले क्रोधनु करणहार ३ । मायावी कपटी ४ ॥ च्यारने वाचना देवी तेकहैछे विनयवतने १ । विगयनो लालची नथी तेहने २ । उप सम्योछे अधिकरण क्रोध जेहने ३ । माया कपटरहित ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे एकपुरुष आत्मजरछे पीतानुजकार्य करेछे पणि

कारो कोपइति अनन्तरं वाचनीयाः पुरुषा उक्ता इति पुरुषाधिकारा तद्विशेषप्रतिपादनपर चतुर्भङ्गिकाप्रतिवद्धसूत्रप्रवन्ध माह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ आत्मान विभर्त्ति पुष्पातीति आत्मभरिः प्राक्ततत्वा दायभरेइति तथा पर विभर्त्तीति परम्भरि रिति प्राक्ततत्वा त्परभरेइति तत्र प्रथमभङ्गे स्वार्थकारक एव सच जिनकल्पिको द्वितीय परार्थकारकएव सच भगवानर्हं स्तस्य विवक्षया सकलस्वार्थसमाप्तेः परप्रधानप्रयोजनप्रापणप्राणितत्वात् तृतीये स्वपरार्थ कारो सच स्थविरकल्पिको विहितानुष्ठानतः स्वार्थकरत्वा द्विधिवत्तिष्ठान्तदेशनातश्च परार्थसम्पादकत्वा चतुर्थे तू भयानुपकारी सच सुग्धमतिः कश्चि द्यथाछन्दोवेति एव लौकिकपुरुषोपि योजनीय उभयानुपकारीच दुर्गत एव स्यादिति दुर्गतसूत्र दुर्गतो दरिद्रः पूर्वं न्यनविहीनत्वात् ज्ञानादिरत्नविहीनत्वाद्वा पञ्चादपि तथैव दुर्गतएवेति अथवा दुर्गतो द्रव्यतः पुन दुर्गतो भावत इति प्रथमएव मन्ये त्रयो नवर सुगतो द्रव्यतो धनी भावतो ज्ञानादिगुण

पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा ण्णायंजरे णाममेगेणोपरंजरे परंजरेणाममेगेणोण्णायंजरे एगेण्णायंजरेविपरंजरेवि एगेणोण्णायंजरेणोपरंजरे । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा दुग्गएणाममेगेदुग्गए दुग्गएणाममेगेसुग्गए

परंजर नथी परनो कार्यं नकरे अरिहत दीक्षालीधी पळी मौनकरी रह्या उपदेश नदेवे ते आत्मजर परंजर नथी २ । एक परना कार्यं करेछे पोतानो कार्यं नथी करतो परउपकारीछे २ । एक आत्मकार्यं पणि करेछे परना पणि करेछे ३ । एक पोतानु पणि कार्यं नथी करतो अने परनो पणि कार्यं नथी करतो ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे एक पुरुष द्रव्यथी दुर्गत दरिद्री धनरहित अने जावथी दुर्गत उपकारादि गुण रहित १ । एक द्रव्यथी दुर्गत दरिद्रीछे पणि जावथी ज्ञान उपकारादि गुण सहित २ । एक द्रव्यथी सुगत धनवंतछे अने जावथी उपकारादि



वानिति दुर्गतः कोपि व्रती स्यादिति दुर्व्रतसूत्रं दुर्गतो दरिद्रः पूर्वं धनविहीनत्वात् दुर्व्रतो ऽसम्यग्व्रतो ऽथवा दुर्व्यय आंयानपेक्ष्य व्ययः कुस्थानव्ययोवे ल्ये  
क' अन्यो दुर्गतः सन् सुव्रतो निरतिचारनियम सुव्ययो वीचित्यप्रवृत्ते रिति इतरौ प्रतीतौ दुर्गत स्तथैव दुःप्रत्यानन्द उपकृतेन कृत सुपकार योनाभिम  
न्यते यस्तु मन्यते त स सुप्रत्यानन्द इति दुर्गतो दरिद्रः सन् दुर्गति गमिष्यतीति दुर्गतिगामी ल्येव मन्येपि नवरं सुगति गमिष्यतीति सुगतिगामी सुगत

सुग्गएणाममेगेदुग्गए सुग्गएणाममेगेसुग्गए चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा दुग्गएणाममेगेदुव्वए दुग्गए  
णामंएगेसुव्वए सुग्गएणाममेगेदुव्वए सुग्गएणामंएगेसुव्वए चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा दुग्गएणाममेगे  
दुप्पक्रियाणंदे दुग्गएणाममेगेसुप्पक्रियाणंदे ४ । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा दुग्गएणाममेगेदुग्गइ

गुणरहितत्वे ३ । एक द्रव्ययी सुगत धनवंत जावयी पणि सुगत ज्ञान उपकारसहित ४ ॥ वली चार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे एक दरिद्रीछे  
अनेदुव्रतछे माठाव्रतनो धरणहारछे १ । एक दरिद्रीछे पणि सुव्रत जलाव्रतनो धरणहारछे २ । एक सुव्रत जलाव्रतनो धरणहारछे पणि दुर्गतछे द  
रिद्रीछे ३ । एक सुव्रत ते उचित जाणोछे अने सुव्रतनो धरणहारछे ४ ॥ वली चार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे एक दुर्गत दरिद्रीछे अने दुःप्र  
त्यानंदछे कीधाउपकारने नथी जाणतो १ । एक दरिद्रीछे पणि सुप्रत्यानंदछे कीधोउपकार जाणोछे एम ४ भागा कहवा ४ ॥ चार प्रकारना पुरुष  
कहिया तेकहैछे एक दुर्गत दरिद्रीछे अने दुर्गतिमां गयो राजगृहीमा यात्राना लोक उपर कोपकीधो जित्तुकै लोकने मारवाने शिला नाखी पोते  
चपानगरे गयो १ । एक दुर्गत दरिद्रीछे पणि धर्मकरी सदगते गयो इम जाणवो एम चार जागा ४ ॥ वली चार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे

ईखर इत्यर्थो दर्गत स्तथैव दर्गतिङ्गतः यात्राजनकुपिततन्मारणप्रवृत्तद्रमकवत् एव मन्थे त्रय स्तमद्रव तमः पूर्वमज्ञानरूपत्वा दप्रकाशत्वाद्वा पश्चादपित  
मएवेत्येकः अन्यस्तु तमः पूर्वं पश्चाद् ज्योतिरिव ज्योति रूपाजितज्ञानत्वात् प्रसिद्धिप्राप्तत्वाद्वा शेषौ सुज्ञानी तमः कुकर्मकारितया मलिनस्वभाव स्तमो  
ऽज्ञान बल सामर्थ्य यस्य स तमो भ्रकारवा तदेव तत्रवा बल यस्य स तथा असदाचारवा नज्ञानी रात्रिचरोवा चौरादिरित्येकं तथा तम स्तथैवः जोति  
ज्ञानं बल यस्य आदित्यादिप्रकाशोवा ज्योति स्तदेव तत्रवा बल यस्य स तथा अयचा सदाचारो ज्ञानवान् दिनचारीवा चौरादिरिति द्वितीयः जोति  
सत्कर्मकारितयो ज्वलस्वभाव स्तमो बल स्तथैव अयच सदाचारवान् ज्ञानीकारणान्तराद्वा रात्रिचर इति तृतीयः चतुर्थः सुज्ञानः अयच सदाचारवान्

गामी दुग्गइणाममेगेसुगइगामी । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा दुग्गएणाममेगेदुग्गइगए दुग्गए  
णाममेगेसुगइगए ४ । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा तमेणामंएगेतमे तमेणामंएगेजोई जोईणाम

एक पुरुष तम अधपुरुष अने पढी पणि अंध १ । एक पूर्वं तम अज्ञानथी पढी ज्ञानस्वरूप ज्योतिवंत थयो २ । एक पूर्वं ज्ञानरूप ज्योतिवंतछे  
पढी तम अज्ञानी थयो ३ । एक पूर्वं पणि ज्ञानवंतछे पढी पणि ज्ञानवंतछे ४ ॥ च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहैछे एक पुरुष तमछे कुकर्मना  
करवाथी अने तमवलछे पापकरवानो बलछे चौरादिक १ रात्रिचर १ । एक ज्योति पुरुष जलाकर्मना करवाथी ऊज्वलस्वभावछे पणि तमवलछे अं  
धारे रात्रिमां चालेछे कोईक कारणे ज्ञानीछे २ । एक पुरुष ज्योतिवंत ज्ञानी सदाचारमाटे अने तमवलछे ३ । एक पुरुष कुकर्मकारीछे अने ज्योति  
सूर्यनी तेहनं बलछे दिवसचारीछे चौरादि ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे एक पुरुष तम पापी अने तम मिथ्यात्व अज्ञान अथ

ज्ञानी दिनचरोवेति तथा तम स्तथैव ॥ तमवलपलज्जणेति ॥ तमो मिथ्याज्ञान मन्धकारं वा तदेव बलं तत्रा यवा तमस्यु क्तरूपे वलेच सामर्थ्ये प्ररज्य ते रतिकरोतीति तमोवलप्ररजन एव ज्योतिर्बलप्ररजनोपि नवर ज्योतिः सम्यक्ज्ञान भादित्यादिप्रकाशोवेति एवमितरावपि इहापि तएव सूत्रोक्ता पुरुषविशेषा प्ररजनविशेषिता द्रष्टव्याः अथवा तम स्तथैवा प्रविडोवा तमोवलेना धकारवलेन सचरन् प्रलज्जतेइति तमोवलप्रलज्जन. प्रकाशचारौ ए व मितरेपि नवर द्वितीयोधकारचारौ तृतीय. प्रकाशचारौ चतुर्थ. कुतोपिकारणा दधकारचार्य वेति ॥ पज्जलणेति ॥ कचित्पाठ स्तत्रा ज्ञानवलेना ध कारवलेनवा ज्ञानवलेनवा प्रकाशवलेनवाप्रज्वलति दर्पितो भवत्य वष्टभङ्गरोतियः स तथेति परिज्ञातानि अपरिज्ञया स्वरूपतो वगतानि प्रत्याख्यानप

मेगेतमे जोईणाममेगेजोई चत्वारि पुरिसजाया पसत्ता तंजहा तमेणाममेगेतमबले तमेणाममेगेजोइबले जोईणाममेगेतमबले जोईणाममेगेजोईबले । चत्वारि पुरिसजाया पसत्ता तंजहा तमेणाममेगेतमबलपलज्जणे तमेणाममेगेजोइबलपलज्जणे ४ । चत्वारि पुरिसजाया पसत्ता तंजहा परिस्सायकम्मे णाममेगेणोपरिस्सायस

वा अंधकार तेहना यलथी राजै १ । एक पुरुष तमळे अने ज्योतिवल ते सम्यक्त तथा सूर्यनी ज्योति तेवले प्ररज्यते रतिकरे राचै ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैळे एक पुरुष ज्ञानथी जाणी कण्यादिकर्म पचखाणथी परिहस्याळे एहवोळे पणि जलाभावसहित नथी नवो यती १ । परिज्ञातसज्ज ते शुज्जनावे भावितळे तेमाटे पणि परिज्ञातकर्म ते कण्यादिकना आरज्जथी निवत्यो नथी ते श्रावक २ । एक परिज्ञातकर्मळे आरज्ज मात्रनो पचखाण कीधोळे जाणीने अने ज्ञातसज्जळे शुज्जपरिणामीळे साधु ३ । एक परिज्ञातकर्म पणि नथी अने ज्ञातसज्ज पणि नथी पचखाण नथी

रिज्ञयाच परिहृतानि कर्माणि कृष्यादीनि येन स परिज्ञातकर्मा नो नच परिज्ञाताः संज्ञा आहारसंज्ञाया येन सो परिज्ञातसंज्ञा अभावितावस्थ प्रव्रजितः आवकोवे त्येकः परिज्ञातसंज्ञा सद्भावनाभावितत्वा नपरिज्ञातकर्मा कृष्याद्यनिवृत्तः आवक इति द्वितीयः तृतीयः साधु चतुर्थो ऽसयतइति परिज्ञातकर्मा सावद्यकरणकारणानुमतिनिवृत्तः कृष्यादिनिवृत्तोवा नपरिज्ञातगृहावासो ऽप्रव्रजितइत्येक अन्यस्तु परिज्ञातगृहावासो नत्यक्तावस्थो दुःप्रव्रजित इति द्वितीयः तृतीयः साधु चतुर्थो ऽसयत स्वयसंज्ञो विशिष्टगुणस्थानकत्वा दत्यक्तगृहावासो गृहस्थत्वा देकः अन्यस्तु परिहृतगृहावासो यतित्वा द

सो परिस्मायसंज्ञेणाममेगेणोपरिस्मायकम्मे एगेपरिस्मायकम्मेविपरिस्मायसंज्ञेवि एगेनोपरिस्मायकम्मेनोपरिस्मायसंज्ञे ४ । चत्वारि पुरिजाया पस्सत्ता तजहा परिस्मायकमेणाममेगेणोपरिस्मायगिहावासे परिस्मायगिहावासेणामंएगेणोपरिस्मायकम्मे ४ । चत्वारि पुरिस्जाया पस्सत्ता तंजहा परिस्मायसंज्ञेणाममेगेणोपरि

ज्ञाव पणि नथी ते असयती मिथ्यात्वी ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहैछे एक परिज्ञातकर्म ते पापनुं करवो कराववो अनुमोदवो तेहथी निवत्योछे अथवा कृष्यादिक आरज्जथी निवत्यो गृहावासथी नथी निवत्यो दीक्षा नथी लीधी आनदादि आवकनी परे १ । एक गृहावास मूं क्यो पणि आरज्ज नथी मूक्यो ते मोकलो साधु तापसादिकनी परे वकायनो आरज्जी एम च्यार ज्ञागा जाणवा त्रीजे ज्ञागे साधु चौथे ज्ञागे असंयती मिथ्यात्वी ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया ते कहैछे एक परिज्ञातसंज्ञे उतम गुणसहितछे पणि गृहावास छाडियो नथी गृहस्थछे १ । बीजो गृहावास मूक्याछे पणि ज्ञावितात्मा नथी यती २ । त्रीजो बेज्ञाव सहितछे ते शुद्ध यती ३ । चौथो बेज्ञावरहितछे ते असती मिथ्यात्वी ४ ॥

भाषितत्वा न परिहृतसंज्ञाः अन्य उभयथा अन्यो नोभयथेति द्रष्टव्यं जगन्मर्णः प्रयोजन भोगसुखादि प्राप्ताया इदमेव साध्विति मुक्तिर्यस्य स प्रदार्थं द्रष्टा  
स्थोवा भोगपुरुषः इहलोकप्रतिवर्त्तोवा परत्रैव जन्मान्तरे अर्थं प्राप्ताया यस्य स परार्थः परास्थोवा साधु वालतपस्वीवा २ इहच परत्रच यस्यार्थं प्राप्ताया स  
सुखायक उभयप्रतिवर्त्तोवा उभयप्रतिषेधवान् कालसौकरिकादि मूढोनेति ४ अथवा द्रष्टेव विवक्षिते गामादौ तिष्ठतोति द्रष्टव्यः तत्रातिवन्धा आ प  
रस्थो न्यतः परत्र प्रतिपन्नधात् परस्थः अन्यस्तू भयस्थो ऽन्यः सर्वाप्रतिवर्त्तत्वा दनुभयस्थः साधुरिति एकेनेति श्रुतेन एकाः कश्चि द्दर्शते एकेनेति सम्यग्द

सायगिहावासे परिणायगिहावासेणाममेगे ४ । चत्वारि पुरिसजाया पणत्ता तंजहा इहत्येणाममेगेणोपरत्ये  
परत्येणाममेगेणोइहत्ये ४ । चत्वारि पुरिसजाया पणत्ता तंजहा एगेणणामंएगेवहइ एगेणहायइ एगेण

वली च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैले एक इहलोकसंबंधी सुखना अरथीले परलोकना सुखना अरथी नही १ । एक परलोकसंबंधी सुखना  
अरथीले पणि इह लोकसंबंधी सुखना अरथी नथी ते साधु तथा वालतपस्वी २ । एम चौजगी । ते इम कहै ले इहां खा इहांखा पी इहांज खावो  
पीवो भोगवोज जलोले आगलि कुण दीठोले राजाप्रमुख १ । बीजो साधु ते इह भवसंबंधी सुख मूक्याले अने परजवमां सुख पामस्ये २ । एक इह  
जवसंबंधी सुखना अरथी अने पर जवसंबंधी सुखनां पणि अरथीले ते आवक ३ । एक इह लोकसंबंधी सुखना अरथी नथी अने परलोकसंबंधी  
सुखना पणि अरथी नथी ते दरिद्री अथवा पतितसाधु अथवा कालकसूरियानी परे आचरण करणहार ४ ॥ वली ४ प्रकारना पुरुष कहिया तेकहै  
ले एक कोईक एक ज्ञानथी वधै एक सम्यक्तथी हीन थाय पडै सिद्धांतने उत्सून प्ररूपवे समकितथी पडै १ । एक कोईक एक श्रुतज्ञानथी वधै अ

॥ र्शनेन हीयते यथोक्तं जह २ बहुस्तुत्रोसंमश्रियसीसगणसपरिबुडोय अविणिच्छिओयसमये तहतहसिद्धतपडिणीओत्ति ॥ १ ॥ एकस्तथा एकेन श्रुतेनेवा न्यो वर्द्धते द्वाभ्यां सम्यग्दर्शनविनयाभ्यां हीयतइति द्वितीय. द्वाभ्या श्रुतानुष्ठानाभ्या मन्यो वर्द्धते एकेन सम्यग्दर्शनेन हीयतइति तृतीयः द्वाभ्यां श्रुतानुष्ठानाभ्या मन्यो वर्द्धते द्वाभ्या सम्यग्दर्शनविनयाभ्या हीयतइति अथवा ज्ञानेन वर्द्धते रागेणहीयत इत्येकः अन्यो ज्ञानेन वर्द्धते रागद्वेषाभ्यां हीयतइति द्वितीयो ऽन्यो ज्ञानसंयमाभ्यां वर्द्धते रागेण हीयत इतितृतीयः अन्यो ज्ञानसंयमाभ्यां वर्द्धते रागद्वेषाभ्यां हीयतइति चतुर्थः अथवा क्रोधेन वर्द्धते मायया हीयते कोपेनवर्द्धते मायालोभाभ्या हीयते ३ क्रोधमानाभ्या वर्द्धते माययाहीयते ३ क्रोधमानाभ्यावर्द्धते मायालोभाभ्याहीयत इति ४ प्रकथकाःपाठांत रतः कथकावा अश्वविशेषा आकीर्त्ती व्याप्तो जवादिगुणै. पूर्वं पश्चादपि तथैव अन्यस्वा कीर्त्त. पूर्वं पश्चात् खलुङ्को गलि रविनीतइति अन्यः पूर्वंखलुङ्क.

णामंएगेवहृइदोहिंहायइ दोहिंणाममेगेवहृइएगेणंहायइ दोहिंणाममेगेवहृइदोहिहायइ । चत्तारिपकंथका .

ने वे समकित विनयथी हीन थाय २ । एक बेथी वधै ज्ञानक्रियाथी बेगुणथी वधै एक गुणथी हीनथाय समकित रहित थाय ३ । एक ज्ञान क्रियाथी बेथी हीन थाय अने वे समकित विनयथी रहित थाय ४ ॥ अथवा एक ज्ञानथी वधै मिथ्यात्वथी हीन थाय १ । एक ज्ञानथी वधै अने वे राग द्वेषथी हीन थाय २ । एक ज्ञान संयमथी वधै एक मिथ्यात्वथी हीन थाय ३ । एक वे ज्ञान अने संयमथी वधै अने राग द्वेष बेथी हीन थाय ४ ॥ अथवा एक क्रोधथी वधै अने १ मायाथी हीनथाय १ । एक क्रोधथी वधै अने माया लोभ बेथी हीनथाय २ । एक माया अने लोभ वेथी वधै अने क्रोधथी हीन थाय ३ । एक क्रोध अने मान बेथी वधै अने माया लोभ बेथी हीन थाय एवं ४ ज्ञागा जाणवा ४ ॥ च्यार प्रकारना

पश्चादाकीर्णो गुणवानिति च चतुर्थः पूर्वपश्चादपि खलुङ्गएवेति आकीर्णो गुणवान् आकीर्णतया गुणवत्तया विनयवेगादिभि रित्यर्थः वहति प्रवर्तते विहरतीति पाठांतर आकीर्णो अन्यआरोहदोषेण खलुङ्गतया गलितया वहति अन्यस्तु खलुक आरोहकगुणात् आकीर्णगुणतया वहति चतुर्थः प्रतीतः सूत्रद्वयेपि पुरुषाः दार्ष्टान्तिका योज्याः सूत्रेण कचिन्नोक्त विचित्रत्वात् सूत्रगते रिति जातिः कुल ३ बल २ रूप १ जयपदेषु दशभि र्विकसयोगै र्दशैव प्रकथक

पस्यता तजहा आइन्तेणाममेगेआइन्ते आइन्तेणाममेगेखलुंके खलुंकेणाममेगेआइन्ते खलुंकेणाममेगेखलुंके ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्यता तजहा आइन्तेणाममेगेआइन्ते चउज्जगो । चत्तारि पकथका पस्यता तजहा आइन्तेणाममेगे आइन्तयाएविहरइ आइन्तेणाममेगे खलुकयाएविहरइ ४ । एवामेव

कथक ते घोटक कहिया तेकहैछे एक पूर्वे आकीर्ण वेगादिगुणसहित पछी आकीर्ण विनय वेगवत १ । एक घोडो पहिलां आकीर्ण गुणवत पछे खलुं क गल्यो अविनीत वक्रथाय २ । एक प्रथम खलुक गलियो पछे आकीर्ण गुणवत वेगादिके थाय ३ । एक प्रथम पणि खलुक गलियो पछी पणि खलुक गलियो अविनीत ४ ॥ इण दृष्टाते चार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे एक पूर्वे आकीर्ण विनयादिगुणवत पछे पणि आकीर्ण एम चार भागा जाणवा ४ ॥ वली चार प्रकारना घोडा कहिया तेकहैछे एक घोडो आकीर्ण जातिवतछे अने आकीर्णताथी वेगथी तथा समरीतथी चालेछे १ । एक आकीर्णछे अने खलुक अविनीतनी परे वाको चालेछे एम ४ जागा जाणवा ॥ इण दृष्टातथी चार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे एक पुरुष आकीर्ण विनयादिगुण सहित अने आकीर्ण विनयवतनी चालथी चालेछे एम चार जागा जाणवा ४ ॥ वली चार प्रकारना कथक कहिया तेकहै

॥ दृष्टान्तचतुर्भङ्गोसूत्राणि प्रत्येक तान्येवानुसरति सति दश दार्ष्टान्तिकपुरुषसूत्राणि भवन्तीति नवर जयः पराभिभवइति सिंहतया ऊर्जवत्या निष्कां

चत्वारि पुरिसजाया पम्पत्ता तजहा आइन्नेआइन्तताएविहरइ चउजंगो । चत्वारि पकथका प० तं०  
जाइसंपन्नेणाममेगेणोकुलसंपन्ने ४ । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पम्पत्ता तजहा जाइसंपन्नेणामएगे चउ  
जंगो । चत्वारि कथगा पम्पत्ता तंजहा जाइसंपन्नेणाममेगेणोवलसंपन्ने ४ । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया  
पम्पत्ता तंजहा जाइसंपन्नेणाममेगेणोवलसंपन्ने ४ । चत्वारि कंथगा पम्पत्ता तंजहा जाइसंपन्नेणाममेगे  
णोरूवसंपन्ने ४ । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पम्पत्ता तंजहा जाइसंपन्नेणाममेगेणोरूवसंपन्ने ४ । च

छे एक अश्व जातिसंपूर्णछे पणि कुलसंपूर्ण नथी जाति ते मातानुपन्न कुलते वापनो पन्न एम चौजंगी ४ ॥ एहनी परे च्यार प्रकारना पुरुष कहि  
या तेकहैछे एक पुरुष जातिसंपूर्णछे पणि कुलसंपूर्ण नथी एम च्यार जागा कहवा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना अश्व कहिया तेकहैछे एक जातिसंपू  
र्णछे पणि बलसंपूर्ण नथी इम च्यार जागा कहवा ४ ॥ एहनी परे च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे एक पुरुष जातिसंपूर्णछे पणि बलसंपन्न  
नथी एम च्यार जागा जाणवा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना अश्व कहिया तेकहैछे एक जातिसंपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी एम च्यार जागा जाणवा  
४ ॥ इण दृष्टातथी च्यार प्रकारना पुरुष कहिया तेकहैछे एक जातिसंपन्नछे पणि रूपसंपन्न नथी एम चौजंगी जाणवी ४ ॥ वली च्यार प्रकारना  
घोडा कह्या तेकहैछे ॥ एक जातिसंपन्नछे पणि जयसंपन्न नथी एम चौजंगी ॥ ४ ॥ एहनी परे च्यार प्रकारना पुरुष एक जातिसंपन्नछे पणि ज  
यसंपन्न नथी । इम कुलसंपन्न अने बलसंपन्न साथे चौभंगी ४ ॥ कुलसंपन्न अने रूपसंपन्न साथे चौभंगी ४ ॥ कुलसंपन्न अने जयसंपन्न साथे चौजंगी



१० ॥

५६ ॥

तो गृहवासात् तथेव विहरति उद्यतविहारेणेति शृगास्तया दीनवृत्तेति पूर्वं पुरुषाणा मखादिभिर्जात्यादिगुणेन समतो ता धुना अप्रतिष्ठानादीनां

त्तारि कंथगा पन्नत्ता तंजहा जाइसंपन्नेणाममेगेणोजयसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा जाइसंपन्ने ४ । एवं कुलसंपन्नेणयवलसंपन्नेणय ४ । कुलसंपन्नेणरूवसंपन्नेणय ४ । कुलसंपन्नेणय जयसंपन्नेणय ४ । एवंबलसंपन्नेणयरूवसंपन्नेणय ४ । बलसंपन्नेणयजयसंपन्नेणय ४ । सवृत्यपुरिस जायापफिवस्का । चत्तारि कंथगा पन्नत्ता तंजहा रूवसंपन्नेणाममेगेणोजयसंपन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिस० । चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा सीहत्ताएणाममेगेनिस्कंतिसीहत्ताएविहरइ सीहत्ताएणाम मेगेनिस्कतिसियालत्ताएविहरइ सियालत्ताएणाममेगेनिस्कंतिसीहत्ताएविहरइ सियालत्ताएणाममेगेनिस्कति

४ ॥ वलसंपन्न अने रूपसंपन्न साथे चोजगी ४ ॥ बलसंपन्न अने जयसंपन्न साथे चोजगी ४ ॥ इहा सघले पुरुषनो दृष्टांत जाणवो ॥ बली च्यार घोडा कट्या तेकहैछे ॥ एक अश्व रूपसंपन्न छे पणि जयसंपन्न नथी एम ४ भागा ॥ एहनी परे च्यार पुरुष कट्या तेकहैछे ॥ एक पुरुष रूपसंपन्न छे पणि जयसंपन्न नथी ॥ प्रथम अश्व साथे पुरुष दृष्टांत कट्यो जात्यादिगुणथी हिवे चारित्रगुणथी सिहनी दृष्टांत कहैछे ॥ च्यार पुरुष कट्या एक पुरुष सिहनी परे दीक्षा लेवा नीकल्यो धन्ना अणगारनी परे अने सिहनी परे विचरे विहारकरे १ ॥ एक सिहनी परे नीकल्यो अने पढी सीया लनी परे विचरे कंडरीकनी परे २ एक सीयालनी परे घरथी दीक्षा लेवा नीकल्यो पढी सिंहथई विचरे जवदेवनीपर ३ । एकसीयालनी परे नी कलपो अने सीयालनी परे विचरे दीक्षा भावथी लीधी जावथी पाले नथी पेटजरार्द्धकरै ४ ए च्यार जांगा ॥ च्यार पदार्थ लोकमा सम सरिखा क

तामेव प्रमाणत आह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ सूत्रद्वयं प्रायोऽव्याख्यातार्थं तथा प्युच्यते अप्रतिष्ठानो नरकावासः सप्तम्यां नरकपृथिव्यां पञ्चानां कालादीनां नरकावासानां मध्यवर्ती सच योजनलक्ष पालकं पाचकदेवनिम्मितं सौधर्मैन्द्रसम्बन्धि यामञ्च तद्विमानञ्च यानायवा गमनाय विमान यानविमान नतु शाश्वतमिति सर्वार्थसिद्ध पञ्चानां मनुत्तरविमानानां मध्यममिति चत्वारो लोके समा भवन्ति कथमित्याह ॥ सपक्खिसपडिदिसति ॥ समानाः पक्षाः पार्श्वा दिशो यस्मिन् तत्सपक्ष इहे कारः प्राकृतत्वेन तथा समानाः प्रतिदिशो विदिशो यस्मिन् तत् प्रतिदिक् तद्यथा भवत्येव समा भवन्तीति सट्टशाः पक्षैरिति सपक्ष मित्यव्ययीभावोवेति पृथुसकौर्णयो हिं द्रव्ययो रध उपरि विभागेन स्थितयो सुल्यमानयोर्वा विषमताव्यवस्थितयो न समा दिशो विदिशश्च भवन्तीति अत्यतसमताख्यापनार्थं मिदं विशेषणद्वयमिति सीमन्तकः प्रथमपृथिव्याः प्रथमप्रस्तटे पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाण इति समयः

सियालत्ताएविहरइ । चत्तारि लोके समा पप्पत्ता तंजहा अप्पइठाणेणए जंबूद्वीवेदीवे पालएजाणविमाणे सव्वठसिद्धेमहाविमाणे । चत्तारि लोके समा सपरिकं सपडिदिसिं प० तं० सीमंतएनए समयखेत्ते

ह्या तेकहैछे ॥ सातमीनरके कालादि पांच नरकावासामां बिचलो अप्रतिष्ठान नरकावासो १ । सर्वथी छोटी जंबूद्वीपनामा द्वीप २ । सौधर्मैन्द्रनो जावा आवानो पालकविमान ३ । सर्वार्थ सिद्धनामे मोटी अनुत्तरविमान ४ ॥ एच्चार एक एक लाख योजनना छे तेमांटे सम कह्या ॥ बली लोक मा च्यार पदार्थ सरीखा कह्या । सपक्ष सदिशि सविदिशि तेकहैछे ॥ सीमतक नामा नरकावासो पहली नरकमां ४५ लाख योजन प्रमाण १ । समयक्षेत्र एतले मनुष्यक्षेत्र ४५ लाख योजननु २ । उडुविमान सौधर्म देवल्लोके प्रथम प्रतरमां ३ । ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी ते सिद्धशिला ४५ लाख योज

कालस्तदुपलब्धितं चेन्न सम्यग्धोऽं मनुष्यत्वेनमित्यर्थः । उडुविमाणः सौधर्गोऽप्रथमप्रसूट एवेति ईषदल्यो रत्नप्रभादपेक्षया प्राग्भारउडुयादिलक्षणो यस्यां सेपत्प्रा-  
 ग्भारा ईषत्प्राग्भारा ऊर्ध्वलोके भवतीति ऊर्ध्वलोकप्रस्ताया दिदमाह ॥ उडुल्यादि ॥ द्वे शरीरे येषांते द्विशरीरा एक पृथिवीकायिकादिशरीरमेव द्वितीय जन्मांत-  
 रभावि मनुष्यशरीर ततः सृतीय केषां चि न भवत्य नन्तर मेव सिद्धिगमनात् ॥ ओरालातसत्ति ॥ उदाराः स्थूला द्वीन्द्रियादयो नतु सूक्ष्मा स्तेजीवायुलक्ष-  
 णा स्तेषां मनन्तरभवे मानुषत्वा प्राप्या सिद्धिर्न भवतीति शरीरांतरसम्भवा त्तथो दारत्रसग्रहणेन द्वीन्द्रियादिप्रतिपादनेषी न द्विशरीरतया पञ्चेन्द्रि-  
 या एव ग्राह्या विकलेन्द्रियाणां मनन्तरभवे सिद्धेरभावा दुक्तच विगलालभेज्जविरटं ण्हुकिचिलभेज्जसुहुमतसत्ति ॥ लोकसम्बन्धायाते ऽधोलोकतिर्यग्ग्लो-  
 कयो रतिदेशसूत्रे गतार्थेति तिर्यग्ग्लोका धिकारा तत्त्वम्भव सयतादिपुरुषं भेदैराह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ क्रिया लज्जया सत्त्व परीषदादिसहने रणाङ्ग-

उडुविमाणे ईसिंपल्लारापुठवी । उडुलोणं चत्तारि विसरीरा पम्पत्ता तंजहा पुठविकाइया ञ्णाउवणस्सइउरा  
 लतसपाणा । ञ्हेलोगेणं चत्तारि विसरीरा पम्पत्ता ॥ एवंचेव तिरियलोएवि ॥ चत्तारि पुरिणजाया पम्पत्ता

ननीळे ४ ॥ उर्ध्वलोकमां च्यारने बेशरीर कहिया तेकहैळे उर्ध्वलोकथी आवी मनुष्यपणुं पामी मोक्ष जाय ते आश्रीने बेशरीर कहिया । केतलाईक  
 पृथिवीकायने एक शरीर पृथिवी नोळे बीजो शरीर मनुष्यनो पामी मोक्ष जाय १ । अप्कायने पणि इमज बे शरीर कहवा वनस्पतिकायने पणि  
 इमज बे शरीर २ । औदारिक त्रस जीव ते इत्ता पचेद्री जाणवा ४ ॥ अधोलोकमा च्यार बेशरीर कहिया ॥ इमज ऊर्ध्वलोकनी परे तिरछा लोकमां  
 बे शरीरी कहवा ॥ तिरछालोकना अधिकारमाटे च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैळे लाजथी एकपुरुष सत्त्व राखेळे लाजथी परीषदादि खमेळे

णेवा अवष्टम्भो यस्य सङ्गीसत्त्व स्तथा क्रिया हसिष्यति मा मुत्तमकुलजातं जनाइति लज्जया मनस्येव नकाये रोमहर्षकपादिभयलिङ्गोपदर्शनात् सत्त्व  
 यस्य स क्लीमनःसत्त्वः चल मस्थिर परीपहादिसम्पाते ध्वंसात्सत्त्व यस्य स चलसत्त्व एतद्विपर्यया तिष्ठिरसत्त्वइति स्थिरसत्त्वो नन्तर सुक्त. सचा भिग्रहान् प्रति  
 पद्य पालयतिइति तद्दर्शनायसूत्रचतुष्टय मिद ॥ चत्तारिसेज्जा इत्यादि ॥ सुगम नवरं श्रय्यते यस्या सा श्रय्या सस्तारक स्तस्याः प्रतिमा अभिग्रहाः श्रय्या  
 प्रतिमा स्तत्रोद्दिष्ट फलकादौना मन्यतमं गृहीष्यामि ने तरदित्येका यदेव प्रागुद्दिष्ट तदेव यदि द्रक्ष्यामि तदा तदेव गृहीष्यामि ना न्यदिति द्वितीया त  
 दपि यदि तस्यैव श्रय्यातरस्य गेहे भवति ततो गृहीष्यामि नान्यत् आनीय तत्र श्रयिष्य इति तृतीया तदपि फलकादिक यदि यथा सस्तृतमेवास्ति त  
 तो गृहीष्यामि नान्यथेति चतुर्थी आसुचप्रतिमास्त्रा द्ययोःप्रतिमयो गच्छनिर्गता नामग्रह उत्तरयो रन्यतरस्या मभिग्रहोगच्छातर्गतानान्तु चतस्रोपि क  
 ल्पन्त इति वस्त्रप्रतिमा वस्त्रग्रहणविषये प्रतिज्ञा. कार्पासिकादौ न्येव मुद्दिष्ट वस्त्र याचिष्यइति प्रथमा तथा प्रेक्षित वस्त्र याचिष्ये नापरमिति द्वितीया  
 तथा न्तरपरिभोगेन उत्तरौयपरिभोगेन वा श्रय्यातरेण परिभुक्तप्राय वस्त्र गृहीष्यामीति तृतीया तथा तदेवो त्सृष्टधर्मिक ग्रहीष्यामीतिचतुर्थी पात्रप्रति

तंजहा हिरिसत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते । चत्तारि सेज्जापफ्णिमानु पस्सत्तानु । चत्तारि वत्थपफ्णिमानु

सग्राममा ऊजो रहै १ । एक लज्जामनःसत्त्वनु धणीछे परीसहऊपना खमै २ । एक चलसत्त्वनु धणी परीसह ऊपना खमै ३ । एक थिरसत्त्वनु ध  
 णी परीसहऊपनाथी दृढसत्त्व ४ ॥ सत्त्ववतने च्यार सय्या सथारानी प्रतिमा ते अजिग्रहविशेष कह्या ते आचारागमां कहियाछे ॥ च्यार वत्तनी  
 प्रतिमा कही ॥ च्यार पात्रनी प्रतिमा कही ॥ च्यार स्थान प्रतिमा कही तेग्रंथातरथी जाणवी ॥ च्यार शरीरना जीव फरस्या कहिया तेकहैछे

मा उद्दिष्ट न्दारुपात्रादि याचिष्ये १ तथा प्रेक्षितं २ तथा दातुः स्वाङ्गिक परिभुक्तप्राय द्वित्रिषु वापात्रेषु पर्यायेण परिभुज्यमानं पात्र याचिष्य इति तृ-  
 तीया उज्जितधर्मिण मिति चतुर्थी स्थान कायोत्सर्गार्थं आश्रय स्तत्र प्रतिमा स्थानप्रतिमा स्तत्र कस्यचित् भिक्षो रेवभूतो भिग्रहो भवति यद्य ह मचि-  
 त्त स्थान सुपात्रयिष्यामि तत्रचा कुचनप्रसारणादिका क्रियां करिष्ये तथा किञ्चि दचित्त कुषादिक मवलबयिष्ये तथा तत्रैव स्तोत्रं पादविहरण समाश्र-  
 यिष्या मौतिप्रथमा प्रतिमा द्वितीया त्वा कुचनप्रसारणादिक्रिया मवलबनञ्ज करिष्ये न पादविहरण मिति तृतीया त्वा कुचनप्रसारण मेव ना लम्बनपाद-  
 विहरणे इति चतुर्थी पुन यत्र त्रयमपि न विधत्ते अनन्तरं शरीरचेष्टानिरोध उक्त इति शरीरप्रस्तावा दिद् सूत्रद्वय ॥ चत्तारीत्यादि ॥ व्यक्त किन्तुजीवेन  
 सृष्टानि व्याप्तानि जीवसृष्टानि जीवेन हि सृष्टान्येव वैक्रियादोनि भवन्ति नतु यथा औदारिक जीवसुक्तमपि भवति सृतावस्थाया तथैतानीति ॥  
 कम्ममौसगत्ति ॥ कर्मणेन शरीरेणो मिश्रकाणि न केवलानि यद्यौ दारिकादौनि त्रीणिवैक्रियादिभि रमिश्रकाण्यपि भवति नैवं कर्मणेनेति शरीरा-  
 णि कर्मणेनो मिश्राणो त्युक्त मुमिश्राणिच सृष्टाग्येवेति सृष्टप्रस्तावात् सूत्रद्वय ॥ चउहीत्यादि ॥ गतार्थं केवलं ॥ फुडेत्ति ॥ सृष्टः प्रतिप्रदेशं व्याप्तः

पन्नत्तानं । चत्तारि पायपफिमानं पन्नत्तानं । चत्तारि ठाणपफिमा । चत्तारि सरीरगा जीवफुळा पन्नत्ता  
 तंजहा वेउल्लिए आहारगे तेयए कम्मए । चत्तारि सरीरगा कमुम्मीसगा पन्नत्ता तंजहा उरालिए वेउल्लिए

वैक्रियशरीर १ । आहारकशरीर २ । तैजसशरीर ३ । कर्मणशरीर ४ ॥ चार शरीर कर्मणशरीरथी मिश्र कहिया तेकहेछे औदारक १ वैक्रिय २

॥ सूक्ष्माणां पचानामपि सर्वलोकात् सर्वलोके उत्पादात् वादरतेजसानान्तु सर्वलोकादुद्धृत्य मनुष्यक्षेत्रे ऋजुगत्या वक्रगत्याचो त्यद्यमानानां द्वयो रूर्ध्वक पाटयो रेव वादरतेजस व्यपदेशस्ये ष्टत्वात् ॥ चउहिवादरकाएहि ॥ इत्युक्त वादरा हि पृथिव्यम्बुवायुवनस्पतयः सर्वतो लोका दुद्धृत्य पृथिव्यादिधनोद ध्यादि धनवातवल्ग्यादिषु यथा स्वमुपादस्थाने प्वन्यतरगत्यो त्यद्यमाना अपर्याप्तावस्थाया मतिवहुत्वा त्सर्वलोक प्रत्येकं सृशन्ति पर्याप्ता स्वेते वादर तेजस्कायिका स्त्रसाश्च लोकासख्येयभागमेव सृशन्तीति उक्तञ्चप्रज्ञापनाया तत्पण वादरपुढविकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता उववाएण लोय स्स असखेज्जइभागे ॥ तथा ॥ वादरपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता उववाएण सव्वलोए ॥ एवमम्बुवायुवनस्पतीना तथा ॥ वादरतेउ काइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता उववाएण लोअस्स असखेज्जइभागे वादरतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता लोयस्स दोसु उड्ढकवा डेसुतिरिय ॥ लोयतड्ढेयत्ति ॥ द्वयो रूर्ध्वकपाटयो रूर्ध्वकपाटस्थतिर्यग्लोकेचेत्यर्थः तिर्यग्लोकस्थानके वे त्यन्ये तथा कहिण भन्ते सुद्धुमपुढविकाइयाण पज्जत्त

आहारए तेयए । चउहि अत्थिगाएहि लोगे फुढे पन्नत्ते तजहा धम्मत्थिकाएण अधम्मत्थिकाएणं जीव त्थिपोग्गलत्थिकाएण । चउहिंवायरकाएहि उववज्जमाणेहि लोगे फुढे पन्नत्ते तजहा पुढविकाइएहिं अ

आहारक ३ । तेजसशरीर ४ ॥ फरसना अधिकार भाटे कहैछे चार अस्तिकायथी आसो लोकस्पृष्टछे तेकहैछे धर्मास्तिकाय १ । अधर्मास्तिकाय २ जीवास्तिकाय ३ । पुद्गलास्तिकाय ४ ॥ ए चारे लोकप्रमाणेछे ॥ चारयथाइच्छाथी ऊपजता अपर्याप्तावस्थाये वादरपणे एचारे लोकफरस्यो क ह्यो तेउकायवादरतेलोकनो असख्यातमो भागफरस्ये तेकहैछे ॥ एक पृथिवीकाय वादर अपर्याप्ता १ अपकाय २ वाउकाय ३ वनस्पतीकाय ४ ।

० ॥

ए ॥

गाण अपज्जत्तगाणयठाणा पणत्ता गोयमा सुहुमपुढविकाइया जेय अपज्जत्तगाते सव्वे एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोगपरियावणगा पणत्ता ॥  
 समणाउसोत्ति ॥ एव मग्घेपि एव वेइदियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता उववाएण लोयस्स असखेज्जइभागेत्ति ॥ एवशेषाणा मपीति च  
 तुर्भि लोकिः सृष्ट इत्युक्तमिति लोकप्रस्तावात् तस्य धर्मास्तिकायादीनां वा न्योग्य प्रदेशतः समतामाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर प्रदेशायेण प्र  
 देशप्रमाणेनेति तुल्याः समानाः सर्वेषा मेषा मसख्यातप्रदेशत्वात् ॥ लोयागासेत्ति ॥ आकाशस्या नन्तप्रदेशत्वेन धर्मास्तिकायादिभिः सहा तुल्यता प्रसक्ते  
 लोकग्रहणम् ॥ एगजीवत्ति ॥ सर्वजीवाना मनन्तप्रदेशत्वात् विपचिततुल्यताभावप्रसङ्गा देकग्रहणमिति पूर्वं पृथिव्यादिभिः सृष्टो लोक इत्युक्त मिति पृ  
 थिव्यादि प्रस्तावा दिदमाह ॥ चउण्हमित्यादि ॥ कण्ठ्य किन्तु ॥ नोपस्सति ॥ चत्तुपा नो दृश्यमिति सूक्ष्मत्वात् कचित् न सुपस्सतिपाठ तत्र न सुखदृश्यं  
 न चत्तुषः प्रत्यक्षदृश्यं मनुमानादिभिस्तु दृश्यमपीत्यर्थः वादरवायूना तथा सूक्ष्माणा पञ्चानामपि तदेक मनेकवा अदृश्यमिति चतुर्णामित्युक्तं वनस्पतयइति

उकायवाउवणस्सइकाएहिं । चत्तारि पएसग्गेणंतुत्ता प० तंजहा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए लोगागासे  
 एगेजीवे । चउण्हमेगसरीर नोसुपस्सं जवइ त० पुढविकाइयाणं आउतेउवणस्सइकाइयाणं । चत्तारि इदि

च्यारे प्रदेशथीसरिखा कट्या । एच्चारना प्रदेशसरिखाळे तेकहैळे ॥ धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ लोकाकाश ३ एक जीवना प्रदेश ४ । च्यार  
 सूक्ष्म माटे एहनाशरीर दृष्टिथी दीसेनही एकलोजुदोशरीर तेकहैळे ॥ पृथिवीकायनुशरीर नदीसे १ अपकायनो २ तेउकायनो ३ साधारणवनस्पती  
 नो ४ एनो मानजाणिये एवादर जाणवा अने वादर वायुकायनो अने ए पाचे सूक्ष्मनो एक अथवा अनेक शरीरतेचत्तुथी अदृश्यळे । च्यार इंदियना

साधारणाएव ग्राह्याः प्रत्येकशरीरस्यै कस्यापि दृश्यत्वादिति पृथिव्यादीनां शरीरस्य चतुरिन्द्रियाविषयत्वं मुक्तमितीं द्विविषयप्रस्तावा दिदमाह ॥  
 चत्वारिन्द्रियेत्यादि ॥ स्पष्टं किन्तु इन्द्रियै रर्थ्यते अधिगम्यत इतीन्द्रियार्थाः शब्दादयः ॥ पुठति ॥ स्पष्टा इन्द्रियसवडा ॥ वेएतित्ति ॥ वेद्यते आत्मना ज्ञायं  
 ते नयनमनोवर्जानां श्रोत्रादीनां प्रामाण्यपरिच्छेदसंभावत्वा दिति उक्तञ्च पुठमुण्डेइसइ रूपपुणपासइअपुठतु । गंधरसचफास चवडपुठवियागरेत्ति ॥ १ ॥  
 अनतरं जीवपुद्गलयो रिन्द्रियद्वारेण ग्राहकग्राह्यभाव उक्तो धुना तयो र्गतिधर्मं चितयन्नाह ॥ चउहीत्यादि ॥ व्यक्तं पर अन्येषा गतिरेव नास्तीति जीवा  
 यपोगलायेत्युक्तं ॥ नोसंचाएत्ति ॥ न शक्नुवति नाल ॥ बहियत्ति ॥ बहिस्तात् लोकातात् अलोकमित्यर्थः गमनतायै गमनाय गन्तुमित्यर्थः गत्यभावेन लो  
 कान्ता त्परत स्तेषां गतिलक्षणसंभावाभावा दधोदीपशिखाव तथा निरुपग्रहतया धर्मास्तिकायाभावेन तज्जनितगत्युपपत्तिभावात् गत्यादिरहितपंगु  
 वत् तथारूक्षतया सिकतामुष्टिवत् लोकांतेषु हि पुद्गलारूक्षतया तथा परिणमति यथा परतो गमनायनाल कर्मपुद्गलानां तथा भावे जीवा अपि सिद्धा

यत्या पुष्ठा वेदेति तंजहा सोइंदियत्ये घाणिंदियत्ये जिप्पिंदियत्ये फासिंदियत्ये । चउहिं ठाणेहिं जीवाय  
 पोगलाय णोसंचाएइ बहिया लोगंतागमणयाए गइअज्ञावेणं निरुवग्गहयाए लुक्कत्ताए लोगाणुज्ञावेणं

विषयस्वरस्या यथा वेदीये तेकहैछे ॥ श्रोत्रेन्द्रिय कानइन्द्रियनो विषय १ घ्राणेन्द्रिय नाशिकाइन्द्रियनो विषयगंध २ जीज्ञनो विषयरस ३ फरसनो वि  
 पयरूप ४ तेचलुने अफरस्यो वेदाय ॥ च्यार थानके जीव तथा पुद्गल ए वे समर्थनहोय बाहिर लोकथकी अलोकांतमां जावाने एतले अलोकमां जई  
 नसके तेकहैछे ॥ गतिना अज्ञावथी लोकातलगे जगतछे जिमदीवानी गति शिखानेहेठे १ धर्मास्तिकायना बलना अज्ञावथी जिमगाडा विना प्राग



सु निरुपग्रहतयावेति लोकानुभावेन लोकमर्यादया विषयत्वेना द्रव्यत्र मार्तण्डमण्डलवदिति अनन्तरोक्ता अर्था उक्तवन्निर्दर्शनतः प्रायः प्राणिनां प्रतीति पथपातिनी भवतीति निर्दर्शनभेदप्रतिपादनाय पंचसूत्री तत्र ज्ञायते अस्मिन्सति दार्ष्टान्तिको ऽर्थ इति अधिकरणेत्तप्रत्ययोपादानात् ज्ञात दृष्टातः साधन सञ्ज्ञावे साध्यस्या वश्यभावः साध्याभावेवा साधनस्या वश्य मभाव इत्युपदर्शनलक्षणो यदाह साध्येनानुगमोहेतोः साध्याभावेचनास्तिता । ख्याप्यते यःसदृष्टांतः ससाधर्म्येतरौद्धिधेति ॥ १ ॥ तत्र साधर्म्ये दृष्टांतो अग्नि रत्र धूमा यथा महानस इति वैधर्म्येदृष्टातस्तु अग्न्यभावे धूमो न भवति यथा ज लाशय इति अथवा ख्यानकरूप ज्ञात तच्च चरितकल्पितभेदात् द्विधा तत्र चरित यथा निदानं दुःखाय ब्रह्मदत्तस्येव कल्पित यथा प्रमादवता मनित्य योवनादीनीति निर्दर्शनीय यथा पांडुपुत्रेण किशलयाना देयित तथाहि जहतुमेतहअग्ने तुमेप्रियहोइहाजहाअग्ने । अप्पाहेइपडत पडुयपत्तंकिसलयया णति ॥ १ ॥ अथयो पमानमात्रं ज्ञात सुकुमार' करः किसलयमिवे त्याद्विवत् अथवा ज्ञातमुपपत्तिमात्र ज्ञानहेतुत्वात् कस्मा यथाः क्रीयते यस्मात् मुधा नलभ्यते इत्यादिव दित्वेव मनेकधापि साध्यप्रत्यायनरूप ज्ञात मुपाधिभेदा शतुर्विध दर्शयति तत्र आ अभिविधिना क्रियते प्रतीती नीयते अप्रतीती ऽर्थो ऽनेने त्याहरण यत्र समुदित एव दार्ष्टान्तिको ऽर्थ उपनीयते यथा पाप दुःखाय ब्रह्मदत्तस्ये वेति तथा तस्या हरणार्थस्य देश स्तद्वेशः सचा सा युपचारा

### चउद्दिहे णाणे पन्नत्ते तंजहा आहरणे आहरणतद्देसे

लावत् २ लूखापणा माटे लोकांतने विपे पुद्गल एहवो लूसो थाय जिम आघोजाय नसके ३ यली लोकानुभावथी लोकमर्यादाथी जिम सूर्यमंड ल ४ ॥ हिवे च्यार प्रकारनो ज्ञान कह्यो तेकहैछे प्राणी सदर्है ॥ आहरणदृष्टांत ते प्राधियाथाय १ । आहरणनो एक देशे दृष्टात जिमचंद्रवन्मुख

दाहरणंचेति प्राक्ततत्वा दाहरणशब्दस्य पूर्वनिपाते आहरणतद्देश इति भावार्थः यात्र यत्र दृष्टांतार्थदेशेनैव दार्ष्टांतिकार्थस्योपनयनं क्रियते तत्तद्देशो दाहरणमिति यथा चन्द्रश्च सुखं मस्याइति इहहि चद्रे सौम्यत्वलक्षणेनैव देशेन मुखस्योपनयनं ना निष्ठेन नयननाशावर्जितत्वकलङ्कादिनेति तथा तस्यैवाहरणस्य संबधी साक्षात् असंगसपन्नोवा दोषस्तद्दोषः स चासौ धर्मधर्मिण उपचारा दाहरणचेति प्राक्ततत्वेन पूर्वनिपाता दाहरणतद्दोष इति अथवा तस्याहरणस्य दोषो यस्मिंस्तत्तथा शेषतयैवायमत्र भावार्थः यत्साध्यविकलत्वादित्दोषदुष्टतद्दोषाहरणं यथा नित्यः शब्दोऽमूर्त्तत्वात् घटवत् इह साध्यसाधनकैवल्यं नाम दृष्टांतदोषो यथा सत्यादिवचनरूपं तद्दोषाहरणं यथा सर्वथा ह मसत्यं परिहरामि गुरुमस्तककर्त्तनवदिति यद्वा साध्यसिद्धिं कुर्यदपि दोषान्तरमुपनयति तदपितदेव यथा सत्यधर्ममिच्छति लौकिकमुनयोपि वरकूपशताद्वापी वरवापीशतात्क्रतुः वरक्रतुशतात्पुत्रः सत्यपुत्रशताद्वरमिति ॥ १ ॥ वचनवक्तृनारदवदिति अनेनच श्रोतुं पुत्रक्रतुप्रभृतिषु प्रायः संसारकारणेषु धर्मप्रतीतिराहितेति आहरणतद्दोषतेति यथावा बुद्धिमता केनापि कृतमिदं जगत्क्षत्रिवेशविशेषवत्त्वात् घटवत् सचेत्तद्वदिति अनेनहि स बुद्धिमान् कुभकारतुल्यो नीश्वरः सिद्धातीति ईश्वरश्च सविवक्षित इति तथा वादिना अभिमतार्थसाधनाय कृते वस्तूपन्यासे तद्विघटनाय यः प्रतिवादिना विरुद्धार्थोपनयः क्रियते पर्यनुयोगोपन्यासेवा य उत्तरोपनयः स

### आहरणतद्दोषे उपन्यासोपनयः

एहसौम्यगुणे दृष्टांत २ । आहरणं ते दृष्टांतं ते असत्यवचनादिरूपः । यथा बुद्धिमता केनापि कृतमिदं जगत् एजगत् कोईक बुद्धिमंते कीधोखे ईश्वरादिके जगतरच्योखे घटपटादिकनी परं एदृष्टांतं दोषसहितं जेमाटे जगत् शाश्वतोखे कोईनो कीधोनथी ३ । उपन्यासोपनयदृष्टांतं ते वादीने जीत

० ॥

१ ॥

उपन्यासोपनय उत्तररूप मुपपत्तिमात्रमपि ज्ञातभेदो ज्ञानहेतुत्वादिति यथा अकर्त्तात्मा अमूर्त्तत्वा दाकाशव दित्युक्ते अन्यग्राह आकाशव देवाभोक्ते त्य  
 पिप्राप्त मनिष्टं चेतदिति यथावा मांसभक्षण मदुष्ट ग्राह्यंगत्वा दीदनादिवत् अत्रा हा न्य ओदनादिव देव खपुत्रादिमांसभक्षण मप्यदुष्ट मिति यथावा  
 त्यक्तसगा यस्तपात्रादिसग्रहं न कुर्वन्ति ऋषभादिवत् अत्राह कुण्डिकाद्यापि ते न गृह्णन्ति तद्वदेवेति तथा कस्मा लार्मं कुरुषे यस्मा जनार्थीति ब्रह्म प्रथमं  
 ज्ञात समयसाधर्म्यं द्वितीयं देशसाधर्म्यं तृतीयं सदोष चतुर्थं प्रतिवाद्युत्तररूपमि त्यय मेषां स्वरूपविभाग इति ब्रह्मदेशतः सम्वादगाथा चरियचकपिय  
 वा दुविहंततोचउव्विहेकेक आहरणेतेसे तद्दोसेचेनवुवासेत्ति ॥ १ ॥ अवाएत्ति ॥ अपायो नर्थः सयत्र द्रव्यादि ष्वभिधीयते यथैतेषु द्रव्यादिविशेषेषु अस्त्य  
 पायो विवक्षितद्रव्यादिविशेषेष्विव हेयता चास्य यत्रा भिधीयते तदाहरण मपाय इति सच चतुर्णां द्रव्यादिभि स्तत्र द्रव्यात् द्रव्येवा पायो द्रव्य मेववा त  
 ल्कारणत्वा दपायो द्रव्यापाय एत हेयतासाधक मेत साधक चाहरणमपि तथोच्यते तत्रयोगी द्रव्यापायः परिहार्यं स्तत्र चापायो वर्त्तते देशान्तरगम  
 नोपार्जितद्रविणयो स्वालोभा त्परस्परभारणपरिणतयोः स्वग्रामाद्वहिः प्राप्ता वनुतापात् ऋदत्यक्तमत्यगिलिततद्वित्तयो भ्रंतस्यवन्धकपार्श्वत् गृहीतस्य

### आहरणे चउव्विहे पन्तते तंजहा अवाए

वाने बीजो अर्थआणी खोटी पाडवी इहां प्रथमदृष्टांत समस्तने सरिखो आव्यो पापते सचलुं दुखदेशारळे १ बीजो देशथी सरिखो २ । त्रीजोसदो  
 प ३ चौथोबादीने उत्तर देवारूप ४ ॥ आहरण तेपाप च्यार प्रकारं छे तेकहेछे ॥ अवाय ते अनर्थ ते द्रव्यक्षेत्रकालजावथी च्यार प्रकारनो द्रव्यथी  
 मत्स्यविदारता द्रव्य नीकत्यो तेहथी बहिन माता मरण पामी १ क्षेत्रापाय तेसर्पसहित घर अथवा संक्षेत्राथानक २ । कालथी जद्रासहित दिवस ३ ।

तस्य मत्स्यस्य विदारणे ज्वाप्ततद्द्रव्यलुब्धभगिन्या मत्स्यच्छेदकशस्त्राभिघातेन तदुद्दालनप्रवृत्तमारितमाहकयो स्तथाविधव्यतिकरदर्शनोत्पन्नसवेगा त्प्र  
 तिपन्नप्रव्रज्ययो भ्रातृवणिजो रिव तत्परिहारश्च प्रव्रज्यया तत्त्यागादिति आहरणता चास्य देशेनोपनयस्या विवक्षणा दिति तथा क्षेत्रात् क्षेत्र मेववा  
 पायः क्षेत्रापायः शेष तथैव एव मुत्तरत्रापि तत्प्रयोगोपायवत् क्षेत्र वर्जयेत् जरासन्धाभिधानप्रतिवासुदेवात् सम्भावितापाया मथुरां नगरीं यथा  
 दशार्हचक्र वर्जयामासेति अथ सम्भवति अपायः सप्रत्यनौकक्षेत्रे ससर्पगृहवत् कालापायो यथा सापायकालवर्जने यतेत द्वैपायनो द्वारका भावर्षद्वा  
 दशकाद्व्यतीति श्रुतनेमिनाथवचनो द्वादशवर्षलक्षण सापायकालपरिजिह्वीर्षयो उत्तरापथप्रवृत्तो द्वैपायनो यथेति अथवा सापायोपि भवति कालो भ  
 द्रादिवदिति तथा भावापाय परिहरेत महानागवत् नागदत्तक्षुल्लकवदेति तथाहि किल कश्चित् चपकः प्रसूतपारणकः सक्षुल्लकः समारब्धभिचार्यभ्रम  
 णकः कथञ्चिन् मारितमडूकिकः क्षुल्लकप्रेरितो प्रतिपन्नतद्वचनः पुन रावश्यककाले स्मारिततदर्थः समुत्पन्नकोपः क्षुल्लकोपघाताया भ्युत्थितो वेगा दा  
 गच्छन् स्तभ आपतितो मृतो ज्योतिष्केषू त्यन्नो अनन्तर च्युतो जातिस्मरदृष्टिविषसर्पतयो त्यन्नः सर्पदृष्टमृतपुत्रेणच सर्पेषु कुपितेन राज्ञा द्रिष्टजनमा  
 र्यमाणेषु नागेषु नागविनाशकनरेण केना प्यौषधिवला दाक्षथमाणो दृष्टकोपविपाकतयाच मदृष्टिविषेण मा घातकपुरुषविघातो भवत्विति भावन  
 या पुच्छतो निर्गच्छन् यथा निर्गम च खड्गमानः कोपलक्षणभावापाय परिहृतवानिति तथा स एवा नन्तर नागदत्ताभिधानराजसुततयो त्यन्नो वालत्व  
 एव प्रतिपन्नप्रव्रज्यो त्यतसविग्न स्तिर्यग्भवाभ्यासा ज्ञात्यन्तक्षुधालु रादित्योदया दस्तमय यावज्जीवनशीलो साधारणगुणावर्जितदेवताभिवन्दितो ततएव  
 तद्वच्छगतमासादिचपकचतुष्टयस्ये र्याविषयीभूतो विनयार्थ तेषा सुपदर्शितस्वार्थानौतभोजन स्तैश्च मत्सरा ज्ञोजनमध्यनिष्कृतनिष्ठीवनो ज्ञान्तोपशान्त  
 चित्तवृत्तितया यःसजातकेवलः पुन देवतावन्दित स्तेषामपि चपकाणा सवेगहेतुत्वेन केवलज्ञानदर्शनसमृद्धिसंपादकः कोपरूपं भावापाय परिजहारे

ति अथवा कोपादिलक्षणे भावोपायो भवति क्षपकस्येवेति गाथे द्रह दवावाएदुणिउ वाणिगगाभायरोवहनिमित्त वहपरिणएकमेक दहन्मिमच्छेण  
 निव्वेओ ॥ १ ॥ खेत्तमिअयकमण दसारवणस्सहोद्ववरेण दीवायणोयकाल भावेमडुक्कियाखमओत्ति ॥ २ ॥ उवाएत्ति ॥ उपाय उपेयप्रति पुरुषव्यापारा  
 दिका साधनसामगो स यत्र द्रव्यादा वुपेये स्तो त्यभिधौयते यथै तेषु द्रव्यादिविशेषेषु साधनौयेषु अस्यु पायो विवक्षितद्रव्यादिविशेषवत् उपादेयता चा  
 स्य यत्रा भिधौयते त दाहरणमुपायइति सोपि द्रव्यादिभि यतुषैव तत्र द्रव्यस्य सुवर्णादेः प्राशुकोदकादेर्वा द्रव्यमेववा उपायो द्रव्योपाय एतत्साधन मे  
 तदुपादेयता साधनवा हरणमपि तथोच्यते तत्प्रयोगश्चैव अस्ति सुवर्णादिपू पाय उपायेनैव वा सुवर्णादौ प्रवर्तितव्यं तथाविधधातुर्वादसिद्धादिव दिति  
 एव क्षेत्रोपायः क्षेत्रपरिकर्मणो पायो यथा अस्यस्य क्षेत्रस्य क्षेत्रौकरणोपायो लाङ्गलादि स्तथाविधसाधुविधव्यापारोवा तेनैववा प्रवर्तितव्य मत्र तथा  
 विधान्यक्षेत्रवदिति एव कालोपायः कालज्ञानोपायो यथा स्ति कालस्य ज्ञानोपाय धान्यादेरिव जानौहिवा काल घटिकाछायादिनो पायेन तथाभू  
 तगणितज्ञवदिति एव भावोपायो यथा भावज्ञाने उपायो स्ति भावज्ञो पायतो जानौहि वहत्कुमारिकाकथाकथनेन विज्ञातचौरादिभावाभयकुमारव  
 दिति तथाहि किल राजगृहनगरस्वामिन. श्रेणिकराजस्य पुत्रो भयकुमाराभिधानो देवताप्रसादोपलब्धसर्वर्तुक्रफलादिसमृद्धारामस्या म्रफलाना मका

### उवाए

जावापाय क्रोधसहित डेडकीविराधक साधु ४ । उपायग्राहरण ते धातुर्वादउपाये द्रव्य उपजाविवो १ । क्षेत्रोपाय हलादिकखेडी धान उपजा  
 विवो २ । कालोपाय कालमज्जित्तादि ज्ञान ३ । जावोपाय वहतकमारीनी कथाथी अन्नयक्रमारे चोर जाण्या ४ । २ ॥ ॥ ॥

लाभफलदोहदव ज्ञार्यादोहदपूरणार्थं चाण्डालचौरेणा पहरणे कृते चोरपरिज्ञानार्थं नाशदर्शननिमित्तमिलितबहुजनमध्ये वृहत्कुमारिकाकथा मचक  
 थ तत्राहि काचित् वृहत्कुमारिका वाञ्छितवरलाभाय कामदेवपूजार्थं मारामे पुष्पाणिचौरयतौ आरामपतिना गृहीता सज्ञावकथने विवाहितया  
 पत्या अपरिभुक्तया मत्पार्श्वे समागन्तव्यमिति अभ्युपगमं कारयित्वा मुक्ता ततः कदाचि द्विवाहितासतौ पति मापृच्छ रात्रा वारामपतिपार्श्वे गच्छती  
 चौरराक्षसाभ्या गृहीता सज्ञावकथने प्रतिनिवृत्तया भवत्पार्श्वे आगन्तव्यमिति कृताभ्युपगमा मुक्ता आरामे गता आरामिकेण सत्यप्रतिज्ञे त्यखडितशीला  
 विसर्जिता इतराभ्यामपि तथैव विसर्जिता पतिसमोप मागतेति ततो भोलोकाः पत्यादीनामध्ये कोदुष्करकारक इति चासौ पप्रच्छ तत इर्यालुप्रभृतयः प  
 त्यादीन् दुष्करकारकत्वेना भिदधुः चौरचाण्डालसु चौरानिति ततो सावनेनो पायेन भाव सुपलब्ध चोर इतिकृत्वा सत वधयामासेति अत्रापिगाथे एमे  
 वचउविगप्पो होइउवाओवितत्यद्वमि धाउवाओपढमो मगलकुलिणहिखेत्तु ॥ १ ॥ कालोविनालियाई हिहोइभावमिपडिओअभओ । चोरस्सकएनडिय  
 वड्कुमारिपरिकहिसुत्ति ॥ २ ॥ ठवणाकम्मेत्ति ॥ स्थापन प्रतिष्ठापन स्थापना तस्याः कर्म करण स्थापनाकर्म येन ज्ञातेन परमत दूषयित्वा स्वमतस्थापना  
 क्रियते तत्स्थापनाकर्म तिभाव तच्च द्वितीयाङ्गे द्वितीयश्रुतस्त्वक्षे प्रथमाध्ययन पुण्डरीकाख्य तत्र ह्युक्त अस्ति काचित् पुष्करिणी कर्दमप्रचुरजला तन्मध्यदेशे  
 महापुण्डरीक तदुद्धरणार्थं चतसृभ्यो दिग्भ्य चत्वारः पुरुषा सकर्दममार्गे प्रवेष्टु मारव्या स्तेचा कृततदुद्धरणा एव पङ्केनिमग्ना अन्यस्तु तटस्थो ऽससृष्टकर्द

### ठवणाकम्मे

स्थापनाकर्म ते जेणे ज्ञाने परनामतने दोस देई पोतानो मत थापे ३ । प्रत्युत्पन्नविशी जे ऊपनी वस्तु तेहनो नाशखै ते दृष्टांतसहितकहिये ४ ॥

० ॥

॥

मएवा मोघवचनतया तदुजृत्तवानिति ज्ञात मुपनय शाय मन कर्दमस्थानोगा विषयाः पुण्डरीकं राजादि भव्यपुरुष शतारः पुरुषाः परतीर्थिकाः पञ्चम  
 पुरुषः साधुः प्रमोघवचन धर्मदेशना पुष्करिणी संसारः तदुषारोनिर्वाणमिति प्रनेनच ज्ञातेन विषयाभिप्यंगवन्तां अन्यतीर्थिकानां भव्यस्य सशारानुत्तार  
 कत्वं साधो य तद्विपर्यय वदता प्राचार्येण परमतदूषणेन स्वमत स्थापित मतो भवतीति इदं ज्ञातं स्थापनाकर्मति प्रथवा आपन्न दूषण मपोह्य स्वाभि  
 मतस्थापना कार्ये त्येवविधार्थप्रतिपत्ति र्यतो जायते तत् स्थापनाकर्म किल मालाकारेण केनापि राजमार्गपुरीषोत्सर्गलक्षणापराधापोहाय तत् स्थाने  
 पुष्पपुष्पकरणेन किमिदं मिति पुच्छतो लोकस्य हिगुशियो देवो यमिति वदता व्यतरायतनस्थापनाकृतेति एतस्मात् किलास्थानका दुक्तार्थः प्रतीयत  
 इदं स्थापनाकर्मति तथा नित्यानित्यं वस्त्वित्यसंगत जिनमत विरुद्धधर्माध्यासादिति दूषण आपन्न मेतद् व्यपोहायो च्यते विरुद्धधर्माध्यासो न भेदनिव  
 धन विकल्पस्यैव विकल्पो हि कमभाविवर्णोल्लेखवान् पिरुद्धधर्मोपेतो भवति नच कथञ्चि देको न भवति खण्डसो विभक्तस्य तस्य स्वरूपलाभा भावात् प्र  
 वृत्तिनिवृत्त्यो रकारणता स्यादसमञ्जसं चैवमिति एवच विरुद्धधर्माध्यासस्य कथञ्चि दभेदकत्वे सति न केवल नित्यानित्य भवतीति दूषण मपोह  
 मपितु सर्व मनेकांतात्मक मिति विकल्पज्ञातेन स्वमतं प्रसाधित मतो विकल्पज्ञात स्वमतस्थापनेन स्थापनाकर्मति अत्र निर्युक्तिगाथा ठवणाकम्प  
 एक [ अभेदमित्यर्थः ] दिङ्मंतोतत्पुण्डरीयतु । अहवाविसण्ठकण हिगुसिपकयउदाहरणति ॥ १ ॥ सत्यभिचारोवा हेतु र्यः सहसोपन्यस्त स्वस्य समर्थना  
 र्थ यो दृष्टातः पुनरुपन्यस्यते स स्थापना कर्मति उक्तच सब्धभिचारहेतु सहसावोत्तुतमेवग्रनेहि । उयधूहसप्यसरं सामत्यचण्णोणाप्नोति ॥ १ ॥ तद्यथा  
 अनित्यः शब्दकृतकत्वा दय वर्णात्मको शब्दे कृतकत्व न विद्यते वर्णानां नित्यतया भिमतत्वा दिति व्यभिचारः समर्थना पुनर्वर्णात्माशब्दः कृतको निजका  
 रण भेदेन भिद्यमानत्वात् घटपटादिवत् घटादिदृष्टान्तेनहि वर्णानां कृतकत्व स्थापित मिति भय त्ययं स्थापनाकर्म ति ॥ पटुपणविणासिति ॥ प्रत्युत्प

नस्य तत्कालोत्पन्नवस्तुनो विनाशो भिधेयतया यत्रा स्ति त प्रत्युत्पन्नविनाशीति यथा केनापि वणिजा दुहित्र्यादिस्त्रीपरिवारशीलविनाशरक्षणार्थं तदा सक्तिनिमित्तं स्वगृहासन्नराजगान्धर्विकगुणनिकायां स्वगृहे कुलदेवतानिवेशनात् गुणनिकाकाले तस्या देवताया अग्रत आतोद्यनादव्याजेन राजाप राधपरिहारेण विनाशः कृत एवं गुरुणा शिष्यान् कचि दस्तुन्य धूपपद्यमाना नुपलभ्य तस्य तदाशक्तिनिमित्तकारणं सुपहन्तव्यं मित्येव प्रत्युत्पन्नविनाश नीयता ज्ञापकत्वात् प्रत्युत्पन्नविनाशिज्ञातता गान्धर्विकाख्यानकस्या वगन्तव्येति उक्तञ्च हीतिपद्मुपसृष्टविणा ससमिगधव्वियाउदाहरणं । सीसोविक ल्यविजई अज्जोवज्जेज्जतोगुरुणा ॥ १ ॥ वारेयव्वोउववाएणति ॥ अथवा अकर्त्तात्मा अमूर्त्तत्वा दाकाशवदि त्युत्पन्ने आत्मनो कर्तृत्वापत्तिलक्षणे दूषणे तद्वि नाशायो च्यते कर्त्तृत्वा त्मा कथञ्चि न्मूर्त्तत्वा देवदत्तवदिति व्याख्यात माहरण माहरणता चैत ज्ञेदानां देशेन दोषवत्तया चोपनयनाभावा दिति अथा हरणतद्देशो व्याख्यायते सच चतुर्धा तत्र अनुशासनं मनुशास्तिः सद्गुणोत्की र्तनेनोपबृंहणं सा विधेयेति यत्रो पदिश्यते सा नुशास्तिः यथा गुणवन्तो नुशासनोया भवन्ति यथा साधुलोचनपतितरजः कणापनयनेन लोकसम्भावितशीलकलङ्का तत्त्वचालनाया राधितदेवताकृतप्रातिहार्यां चालनीव्यवस्थापि तोदका च्छोटनतोद्घाटितचम्पागोपुरत्रया सुभद्रा अहो शीलवतीति महाजनेना नुशासितेति उक्तञ्च आहरणतद्देशे चउहाअणुसद्धितहउवाल्लो पुच्छा निस्सावयणं होद्रसुभद्राणुसद्धो ॥ १ ॥ साधुकारपुरोय जहसाअणुसासियापुरजणेण । वेयावच्चाइसुवि एवजयतेववूहिज्जत्ति ॥ २ ॥ इहच तथाविधवैयाह

पद्मुपपन्नविणासीया । आहरणतद्देशे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा अणुसद्धि

आहरणं ते पदार्थं तेहने १ देशो दृष्टान्तं ते ४ प्रकारे कह्यो ते कहेंके अनुशास्ति कृतागुणानुं कहवो प्रसंसा करवी जिम सुज्जद्रानुं शीलवखाणुं १ ।



त्या करणादिना प्युपनयः सम्भवति तत्त्यागेनच महाजनानुशास्त्रिमात्रेणो पनयः कृत इत्याहरणतद्देशेति एव मनभिमतांशत्यागा दभिमतांशोपनयन सुत्तरेष्वपि भावनीय मिति तथा उपलभन मुपालम्भो भंग्यन्तरेणा नुशासनमेव स यत्रा भिधीयते स उपालम्भो यथा कचि दपराधवृत्तयो विनेया उपालम्भनीया यथा महावीरसमवसरणे सविमानागत चन्द्रादित्योद्योतेन कालविभाग मजानतौ मृगावती नाम्नी साध्वी स्थिता तत स्तङ्गमने ऽतिका लोयमिति सम्भ्रान्ता सह साध्वोभि रार्यचन्दना समीपङ्गता तथाचो पलब्धा ऽयुक्तमिदं भवादृशीना उत्तमकुलजाताना मिति तथा पृच्छा प्रश्नः किं कथं केन कृत मित्यादि सा यत्र विधेयतयो पदिश्यते सा पृच्छा यथा पृच्छनीया ज्ञानिनो निर्णयार्थिभि र्यथा भगवान् कोणिकेन पृष्ट स्तथाहि किल कोणि क. श्रेणिकराजपुत्रः श्रमणं भगवन्त महावीरं पप्रच्छ तद्यथा भदत चक्रवर्त्तिनो परित्यक्तकामा मृता कोपपद्यन्ते भगवता भिहित सप्तमनरकपृथिव्या ततो सौ वभाण अहं कोत्पत्स्ये स्वामिनो क्व पद्या स उवाच अहं किं न सप्तम्या स्वामिना जगदे सप्तम्या चक्रवर्त्तिनो याति ततो सा वभिदधौ किं महं न चक्रवर्त्ती यतो ममापि हस्त्यादिक तत्समानमस्ति स्वामिना प्रत्यूचे तव रत्ननिधयो नसति ततोसौ कृत्रिमाणि रत्नानि कृत्वा भरतक्षेत्रसाधनप्रवृत्त कृतमालकयक्षेण गुहाद्वारे व्यापादितः षष्ठीं गत इति तथा ॥ निस्सावयणेति ॥ निश्चया वचन निश्चावचन मयमर्थः कमपि सुशिष्य मालव्य यदन्यप्रबोधार्थं

### उवाचने पृच्छा

उपालंज अपराध कियाथी ओलजो देवो जिम मृगावतीये चदनवालाने २ । पृच्छा प्रश्ननुं पूछिवो कोणिक राजा जगवंत महावीर स्वामीने पूछ्यो चक्रवर्त्त जोग नछाडै तो किहा जाय जगवान कह्यो सातमी नारकीमे त्यारेपूछ्यो हुं किहां जाईस भगवान कह्यो छठी नरकमा तो किम हुं चक्री

वचन निश्चावचन न्त यत्र विधेयतयो चते तदाहरणं निश्चावचनं यथा असहनान् विनेयान् माईवसम्पन्न मन्यमालव्य किंचिद्भूयात् गौतम माश्रित्य भगवानिवेति तथाहि किल गौतम तापसादि प्रव्रजितानां केवलोत्पत्ता वनुत्पन्नकेवलत्वेना धृतिमत चिरसृष्टो सि गौतम चिरपरिचितोसि गौतम मा त्व मधृति कार्पो रित्यादिना वचनसदोहेना नुशासयता न्ये प्यनुशासिता स्तदनुशासनार्थं दुमपत्रकाध्ययनच प्रणिन्यइति उक्तञ्च पुच्छाएकोणिओ खलु निस्सावयणमिगोयमस्सामिति ॥ व्याख्यात तद्देशोदाहरण तद्दोषोदाहरण मथ व्याख्यायते तच्च चतुर्धा तत्र ॥ अहम्मजुत्तेत्ति ॥ य दुदाहरण कस्यचि दर्थस्य साधनायो पादीयते केवल पापाभिधानरूप येनचोक्तेन प्रतिपाद्यस्या धर्मबुद्धि रूपजन्यते त दधर्मयुक्त तद्यथा उपायेन कार्याणि कुर्यात् कोलिकनलदामवत् तथाहि पुत्रखादकमत्कोटकमार्गणो पलव्यविलवासाना मशेषमत्कोटकानां तप्तजलस्य विले प्रक्षेपणतो मारणदर्शनेन रजित चित्तचाणिक्यावस्थापितेन चौरग्राहनलदामाभिधानकुविदेन चौर्यसहकारितालक्षणोपायेन विश्वासिता मितिताश्चौरा विषमिश्रभोजनदानतः सर्वे व्या

णिरुसावयणे । आहरणतद्दोसे चउच्चिहे पन्नते तजहा अधम्मजुत्ते

नथी जगवान कह्यो ताहरे चवदेरत्त नथी कृत्रिमरत्नकरी तमिश्राये गयो अने मरण पायो ३ । निश्चाकरके जेवचन ते निश्चावचन जिम गौतम दीक्षि ततापसादिकने केवलोत्पत्ति देखीने अधृतिवन्तथया त्पारे महावीरस्वामी कह्यो हेगौतम बहोतकालथी ससृष्ट्थे चिरकालथी परिचित्थे अधृतिम तकर एम अनुशासना करी दुमपत्रकाध्ययन कह्यो ४ ॥ आहरण जे दृष्टांत तेहनो दोष ते चार प्रकारे अधर्मयुक्तदृष्टात जे दृष्टातकहता अधर्मबु द्वि उपजे जिम नलदामकोलीना पुत्रने मकोडे काट्यु तेहना मार्गथी मकोडानो बिल जाणी तप्तजल नाखी सर्वहण्यां तेदेखी चाणक्ये कोटवाल

पादिताइति आहरणतद्दोषता चास्या धर्मयुक्तात्वा तत्थाविध्योतु रधर्मबुद्धिजनकत्वा चेति अतएव नैवंविध मुदाहर्त्तव्यं यतिनेति ॥ पडिलोमेति ॥ प्रति  
 कूल यत्र प्रातिकूल्यं मुपदिश्यते यथा शठे प्रतिशठत्वकुर्यात् यथा चण्डग्रन्थोते तदपहरणार्थं तदपहृताभयकुमार शकारेति तद्दोषता चास्य श्रोतुः परोप  
 कारकरणनिपुणबुद्धिजनकत्वात् अथवा दृष्टप्रतिवादिना द्वावेव राशी जीवश्च जीवश्चेत्युक्ते तत्प्रतिघातार्थं कश्चिदाह तृतीयो यस्मिन्नजीवाख्यो गृह  
 कोलिकादिच्छिन्नपुच्छवदिति अस्यापि तद्दोषतायः सिद्धाताभिधाना दिति ॥ अतोवणीएति ॥ आत्मैवोपनीतस्तथा निवेदितो नियोजितो यस्मिन् स्तुत  
 या येन ज्ञानेन परमतदूषणायोपात्तेनात्ममतमेव दृष्टतयोपनीयते यथा पिगलेनात्मा तदात्मोपनीतस्तथाहि कथमिदं तडागमभेदभविष्यतीति  
 राज्ञापुष्टः पिङ्गलाभिधानः स्वपतिरवोचत् भेदस्थाने कपिलादिगुणे पुरुषे निखाते सतीति अमात्येन तु स एव तत्र तदगुणत्वात् निखातइति तेन आत्मैव  
 नियुक्तः स्ववचनदोषात्तदेव विधमात्मोपनीतमिति अत्रोदाहरणं यथा सर्वसत्त्वा न हतव्या इत्यस्य पक्षस्य दूषणाय कश्चिदाह अन्यधर्मस्थिता हंत  
 व्या विष्णुनेव दानवा इत्येवं वादिना आत्मा हतव्यतयोपनीतो धर्मातरस्थितपुरुषाणामिति तद्दोषता तु प्रतीतैवास्तेति ॥ दुरोवणीएति ॥ दृष्टमुपनीत  
 निगमितयोजितमस्मिन्निति दुरोपनीतपरित्राजकवाक्यवत् यथाहि किल कश्चित्परित्राजको जालव्यग्रकरो मत्स्यवधाय चलितः केनचिद् धूर्त्तैर्न किं

### पडिलोमे अतोवणीए दुरोवणीए ।

किंधु तेणं चोरविस्वासथी हणयां १ । बीजो प्रतिलोमदृष्टात शठप्रतिशठंकुर्यात् मूर्खने मूर्खरीते समभाविबो जिम अजयकुमार चण्डप्रदयोतनने  
 बाधी आणयो २ । पोतानो मतदुष्टपणे थापे जिम जीव न हणवा पिण पापी हणवा ३ । चोथो दृष्टातदेवो जिम जित्तोकथाश्रयाते इत्यादि ४ ॥

चिदुक्तः तेनच तस्योत्तर मसंगतंदत्त मत्रच वृत्तं भिन्नोक्त्याश्रयातेनहिशफरवधेजालमश्रासिमत्स्यां स्तेमेमयोपदंशाःपिवसिमधुयुतोवेश्ययायासिवेश्यां  
दत्वारीणागलेंघ्निकनुतवरिपवोयेषुसधिच्छिनश्चि चौरस्वन्यूतहेतोस्त्वयिसकलमिदनास्तिनष्टेविचारः ॥ १ ॥ इत्येव प्रकृतसाध्यानुपयोगि स्वमतदूषणावहवा  
य त्त द्वाष्टान्तिकेन सह साधर्म्याभावात् दुरुपनीतमिति यथा नित्यः शब्दो घटवदिह घटे नित्यत्व नास्त्येवेति कुत स्तत्साधर्म्या च्छब्दस्य नित्यत्व मस्तु अ  
पित्व नित्यत्वात् घटस्य तत्साधर्म्या च्छब्दस्याप्यनित्यत्वमेवा नभिमत सिद्धयतीति साध्यानुपयोगौ द मुदाहरणं तथा संतानोच्छेदो मोक्षो दीपस्येवेत्यभ्यु  
पगमे दीपदृष्टाता दनादिमतोपि सतानस्या वस्तुताप्रतीयते तथाहि दीपस्यात्मनश्चा संतानोच्छेद उत्तरक्षणा जनकत्वा तदेवार्थक्रियाकारित्वलक्षणसत्त्वा  
भावा दन्त्यक्षणस्या वस्तुत्व मवस्तुजनकत्वात् पूर्वक्षणस्यापि ततएव पूर्वतरस्यापौ त्येव समस्तस्यापि सतानस्या वस्तुत्व मथ क्षणान्तरानारम्भेपि स्वविषयी  
स्वगोचरज्ञानजननलक्षणार्थक्रियाकारित्वा दन्त्यक्षणो वस्तुभविष्यति नैवमेवंहि भूतभाविपर्यायपरम्परायोगिज्ञान स्वविषयमुत्पादयतीति वस्तुत्व स्वीकुर्या  
त्तत्र क्षणान्तरानारम्भे वस्तुत्व मित्यतो भवति दीपज्ञान स्वमतदूषणावहमिति अथवा अनित्यः शब्दः कृतकत्वात् घटवदिति वक्तव्ये सन्नमा दनित्यो घ  
टः कृतकत्वा च्छब्दवदिति वदतो दुरुपनीतं विपर्ययोपनयनादिति अत्रगाथा पठमअहमजुत्त पडिलोमअत्तणोउवस्सासो दुरुवणियचचउत्थ अहमजुत्तं  
मिनलदामो ॥ १ ॥ पडिलोमेजहअभओ पज्जोयहरइअवहिओसतोत्ति ॥ अत्तउवन्नासमिय नलायभेयमिपिंगलोथवई । अणिमिसगिहस्सभिच्छुग दुरुव

उवस्सासोवणए चउत्तिहे पन्नत्ते तंजहा

उपन्यासोपनय चार प्रकारनी कह्यो ते कहैछे ॥ तेहज वस्तुनो दृष्टात जे कोई कह्यो समुद्रना तदने ऊपर एक बओ वृक्षछै तेहनी शाखा जल

યોગપદ્ધતિ ॥ ૧ ॥ ઉક્ત આચરણસદ્દોષો ધ્વનો પન્થાસોપનય ઉચ્ચતે સચ પત્તર્ણી તપ ॥ તત્ત્વત્થુર્ણતિ ॥ તદ્દેવ પરોપન્યસ્તસાધનં ચક્ષિતિ ઉત્તરભૂતં ॥  
 યસ્ય ચક્ષિન્ ઉપન્યાસોપનયે સતતશુકો યથા તદ્દેવ પરોપન્યસ્ત યસ્ય તપસ્તુ તદ્દે ॥ તપસ્તુકં તપ્તુક ઉપન્યાસોપનયોપિ સતતશુકા પ્રતિ ઉચ્ચતે એવ મુત્તરભાપિ  
 યથા કશિદાઝ સમુદ્રતટે મહાન્ હૃતોમિત ત વાહસ્તા જનશ્યાયા સુપરિ મિત્તા તત્પત્તાણિ ચ ચાનિ જલે નિપતતિ તાનિ જલચરા જીવા ભવંતિ ચા  
 નિચ સ્થલે તાનિશ્ચલચરા પ્રતિ અન્ય સ્વાદુપમ્યસ્તમે ॥ તરુપાપતનયસ્તુ ચ હોલા તદુક્ત વિષટગરિ ચદુત યાનિ શુન મીધ્યે તંપાં આ વાર્તે લેત દુપપત્તિમા  
 પ ચતરશૂત તપસ્તુક ઉપન્યાસોપનયો આતલ્વચાસ્ય આનનિમિત્તલાત્ અથા યથાશુભમેવ આતમેત ત્થા રોય પ્રયોગો સ્થ જલશ્ચલપતિતપ્તાણિ ન  
 જલચરાદશલાઃ સચાતિ જલશ્ચલમધ્યપતિતપ્તાણાં ત્ તમધ્યપતિતપ્તાણાં તિ જલશ્ચલપતિતપ્તાજલચરલાદિપ્રાપ્તિય દુભયશ્ચપાસગો ન ધોભયરૂપાઃ  
 સલા અમ્બુપમતાપ્રતિ અથવા નિલ્લો જોયો ડમ્બુતેલા વાકાશ દિ લુકે પાઝ અનિલ્લ યાસ્તુ મૂર્ત્તલા લ્કમૈવદિતિ તથા ॥ તથાત્ત્વત્થુર્ણતિ ॥ તસ્યા ત્વ  
 રો પન્થસ્તા હસ્તુનો ન્દત્તરભૂત વસ્તુ ચક્ષિ ઉપન્યાસોપનયે સ તદ્દેવપન્થુકો યથા જલેપતિતાનિ જલચરા પ્રલુકે એતપિધટનાય પતના દમ્ય દુત્તર મા

## તદ્વત્થુર્ણ તદન્નવત્થુર્ણ

સ્થાલને ઉપર સ્થિતલે તેહના પત્ર જે જલમે પડેલે તે જલચર જીવ પાયલે અને જે સ્થાલમે પડેલે તે જલચર જીવ પાયલે બીજો તેહીજ વૃક્ષના પત્ર  
 પડવારૂપ વસ્તુ ગત્તીને પૂર્વોક્તનો સંબંધ કરેલે જે પત્ર જલમાં નથી પડ્યા તથા જલમાં નથી પડ્યા તેહની સું વાર્તાલે સ તેજજવસ્તુનો દુષ્ટાંત ૧।  
 બીજી વસ્તુનો દુષ્ટાંત દેર્દ શોદું કદવો જેમ તેહીજ પૂર્વોક્ત પત્રપડવારૂપ વસ્તુને આશ્રયગાકરીને કદવો જ્યો દમજહોયતો મનુષ્યને આશ્રિત જૂમ

ह यानि पुनः पातयित्वा खादति नयति वा तानि किं भवन्ति न किञ्चिद्विद्यर्थीयमपि ज्ञापकतया ज्ञात मुक्तो यथा यथा रुडमेव ज्ञातमेव तथा हि न  
जलस्थलपतितानि पत्राणि जलचरादिसत्त्वाः सम्भवन्ति मनुष्याद्याचितानीव अथ सभिप्रायो यथा जलाद्याचितत्वा जनचरादितया तानि सम्पद्यते तथा  
मनुष्याद्याचिततया मनुष्यादिभवयूकादितयापि सम्पद्यता माश्रितत्वस्यापि गोपा यच तानि तथा भ्युपगम्यत इति जलादिगतानामपि जनचरत्वा यस्य  
भवइति तथा ॥ पडिनिभेति ॥ यत्रो पर्यासोपनये वाटिनो पन्यस्तवस्तुनः सदृशं वस्तु तदृष्टानां पनोयते स प्रतिनिभो यथा कोपि प्रतिजानीते यद्  
त यो मा सपूर्वं आनयति तस्मै लज्जमूल्य मिदं करोटकं ददामि इति मय आश्रितोपि तत्रापूर्वमिति प्रतिपद्यते तत एकेन सिद्धपुत्रेणोक्तं तुङ्गपियामङ्ग  
पिञ्ज धारेइअणूणयंसयसहस्रं जइसुयपुत्रदिज्जइ अहनसुयंतोरयदेहिंति ॥ १ ॥ प्रतिनिभता चाप्य सर्वत्राप्युक्ते श्रुतपूर्वमेवेदं ममेत्येव मसत्त्व वचो ब्र  
वाणस्य परस्य निग्रहाय तव पिता ममपितु इरयति लज्जमित्येव विधम्य द्विपागरज्जुत्तपस्यासत्यम्यै व वचस उपन्यस्तत्वादिति अस्यचो पपत्तिमात्रं  
पस्या प्यर्थं ज्ञापकतया ज्ञातत्वं मुक्तमिति अथवा यथा रुड मेव ज्ञातमेव तथा च यथा य प्रयोगो नाम्न्य श्रुतपूर्वं किञ्चित् श्लोकादि समेत्येव सभिमानधनं ब्रू  
मो वयं मस्ति तथा श्रुतपूर्वं वचनं तव पिता मम पितु इरयत्य नूनं यतमहस्रमिति यथेति तथा ॥ हेउत्ति ॥ यथा पर्यासोपनये पर्यनुयोगस्य हेतु रक्त

### पणिणिने हेउ ।

मुखं मनुष्यं केम नथी याता २ । प्रतिनिजं सदृशवस्तुनो दृष्टान्तं देवो जिम कोइंरु तापमं बोल्यो जे मुक्कने अणसाजली यात संजलावे तेहने ला  
खमूल्यनो सुवर्णकटोरो आपुं तिवारे एकं सिद्धपुत्रं इमं कह्यो तुङ्गपियामङ्गपितु धारेइअणूणयंसयसहस्रं जइसुयपुत्रदिज्जउ अहनसुयंतोरयं

रतया विधीयते सो हेतुरिति यथा केनापि कश्चि पर्यनुयुक्तः ग्रहो किं यथा क्रीयंते त्वया स त्वाह येन मुधैव नलभ्यत इति तथा कस्मात् व्रत्तवर्गादिक  
 ष्ट मनुष्ठीयते यस्मा दकृततपसा नरकादौ गुरुतरा वेदना भवतीति इदमपि उपपत्तिमात्रमेव ज्ञातत्वेनोक्तं मर्थज्ञापकत्वादिति अथवा यमपि यथा रू  
 ढ ज्ञातमेव तथा ह्यस्यैव प्रयोगः कस्मात् त्वया प्रवज्या क्रियत इति पृष्ट'सन् केनापि साधु राह यत स्ताविना मोक्षो नभवति एतत्समर्थनायैव साधु स्त  
 माह भोयवग्राहिन् किमिति त्वया यवाः क्रीयते सत्वाह येन मुधा नलभ्यते साधोऽशाय अभिप्रायो यथा मुधालाभाभावात्तान् क्रीणासि त्वमेव मह ता वि  
 ना तदभावात्ता करोमीति इहच मुधायवालाभस्य क्रयणे हेतोः सतो दृष्टांततयो पन्यस्तत्वात् हेतूपन्यासोपनयज्ञाततेति इहच किञ्चिद्विशेषेणैव विविधा  
 ज्ञातभेदाः सम्भवन्त्येवमपि किन्तु तेन विवक्षता अन्तर्भावोवा कथंचित् गुरुभिर्विवक्षितो नच तवय सम्यग् जानीमइति अथ ज्ञातानन्तर ज्ञातवद्देतोः  
 साध्यसिध्यगत्वात्तद्भेदात् ॥ हेऊइत्यादिना ॥ सूत्रत्रयेणाह व्यक्त चैत न्वरं हिनोति गमयति ज्ञेयमिति हेतुः अन्यथानुपपत्तिलक्षण उक्तञ्च अन्यथानु  
 पपन्नत्व हेतोर्लक्षणमौरित तदप्रसिद्धिसदेह विपर्यासैस्तदाभासतेति प्रागुक्तञ्च हेतुः पर्यनुयुक्तस्योत्तररूप उपपत्तिमात्र मयन्तु साध्य प्रति अन्वयव्यतिरे  
 कवान् तथाविधदृष्टातस्मृततद्भावइति सचै कलक्षणोपि किञ्चिद्विशेषा चतुर्धा तत्र ॥ जावएत्ति ॥ यापयति वा दीनः कालयापना करोति यथा काचिद

### चउद्दिहे हेऊ पञ्चता तंजहा यावए

देई १ । ३ ॥ जिहां उपन्यासोपनयमां पर्यनुयोग हेतु उत्तरतया कहिये तेहेतु जेम कोई पुरुषने कोईथी पूछ्यो ग्रहो किम यव खरीदेछे तेणें कह्यो  
 जेमाटे मुफ्त नथी मिलेछे इत्यादि ४ ॥ हेतु ते ज्ञेयवस्तुनो जेह्यी ते जाणवो ते च्यार प्रकारनो कह्यो यापक काल थापना वेला लागे १ ।

सती एकैकरूपके ऐकैक मुद्रलिङं दातव्यमिति दत्तशिक्षस्य पत्यु स्तद्धिक्कयार्थं मुञ्जयिनोप्रेषणोपायेन विटसेवायां कालयापनां कृतवतीति यापकः उत्तञ्च उभामियायमहिला जावगहेओमिउटलिडाइति ॥ इह वृद्धै र्व्याख्यातप्रतिवादिन ज्ञात्वा तथा विशेषणजहुनो हेतुः कर्त्तव्यो यथा कालयापना भवति ततो सौ नावगच्छति प्रकृतमिति सचे दृश्य. सम्भाव्यते सचेतनायायवोऽपरग्रेरणेसति तिर्यगनियतत्वाभ्या गतिमत्वात् गोशरीरादिति अग्रहिहेतु वि शेषणबहुलतया परस्य दुरधिगमत्वात् वादिनः कालयापनां करोति स्वरूप प्रम्या नानुभ्यमानो हि परो न भटित्येवा नेकान्तिकत्वाद्विदूषणोपावनाय प्रवर्त्तितु शक्नो त्यतो भवत्य स्या द्वादिनः कालयापनेति अथवा यो प्रतीतिज्ञातिकतया व्याप्तिमात्रक प्रज्ञारातरसव्यपेक्षत्वान्न भटित्येव साध्ये प्रती ति करोत्यपितु कालक्षेपेणे त्यसौ साध्यप्रतीतिप्रतिकालयापनाकारित्वात् यापको यथा जणिकं वस्त्विति पने वौद्धस्य सत्वादिति हेतु नहि सत्वश्रवणादेव जणिकत्व प्रत्येति परइत्यतो वौडाः सत्व जणिकत्वेन व्याप्तमिति प्रसाधयितु मुपक्रमते तयान्नि सत्व नामार्थक्रियाकारित्वमेव अन्यथा वन्त्या न्तस्यापि सत्वप्रसंगो ऽर्थक्रियात् नित्यस्यैकरूपत्वात् न क्रमेण नापि योगपद्येन जगान्तरे अकर्तृत्वप्रसंगा दित्यतो र्थक्रियालक्षण सत्व मजणिका निवर्त्तमानं जणि क एवावतिष्ठत इत्येवं क्षेपेण साध्यसाधने कालयापनाकारित्वा द्यापकः सत्वलक्षणो हेतुरिति तथा स्थापयति पक्ष सक्षेपेण प्रसिद्धव्याप्तिकत्वा त्सम र्थयति यथा परिव्राजकधूर्त्तो लोकमध्यभागे दत्त बहुफलभवति तत्रा हमेवजानामीति मायया प्रतियाम मन्यान्यलोकमध्य स्वरूपयतिसति तन्निग्रहा

थावए

यापक हेतुवचन थाइं वसंकेतु २ ।



य कश्चित् श्रावको लोकमध्यस्थै कत्वा कथं बहुषु ग्रामादिषु तत्सम्भव इत्येवं विधोपपत्त्या त्वदर्शितो लोकमध्यभागो नभवतीति पञ्च स्थापितवानिति ॥ टी  
 स्थापको हेतुः उक्तञ्च लोगसमज्जजाणण श्रावगहेज्जउदाहरणति ॥ सचाय मग्नि रत्त धूमात् तथा नित्यानित्य वस्तु द्रव्यपर्यायत स्तथैव प्रतीयमानत्वादिति अनयोश्च प्रतीतिव्याप्तिकतया कालक्षेपेण साध्यस्थापनात् स्थापकइति तथा व्यसयति पर व्यामोहयति शकटतित्तिरीग्राहधूर्त्तव व्यः सव्यसक्तइति तथाहि कश्चि दन्तरालेष्वमृततित्तिरीयुक्तेन शकटेन नगर प्रविष्ट उक्तो धूर्त्तेन यथा शकटतित्तिरी कथ लभ्यते सच किलाय शकटसक्ता तित्तिरीं याचत इत्यभिप्राया दवोचत् तर्पणालोडिकयेति सक्तालोडनेन जलाद्यालोडितसक्तभि रित्यर्थः ततो धूर्त्तः साक्षिण आहृत्य सतित्तिरीक शकटं जगाह उक्तवां य मदौय मेत दनेनैव शकटतित्तिरीदत्तत्वा न्मयातु शकटसहितातित्तिरी शकटतित्तिरी गृहीतत्वादिति ततो विषयः शाकटिकइति अत्रोक्त सा सगडतित्तिरीव सगमिहेउम्भिहोइनायव्वति ॥ सचैव अस्तिजीवो ऽस्ति घट इत्यभ्युपगमे जीवघटयो रस्तिव मविशेषेण वर्त्तते तत स्तयो रेकत्व प्राप्त मभि न्नशब्दविषयत्वादिति व्यसको हेतुः घटशब्दविषयघटस्वरूपवत् तथा अस्तिव जीवादौ न वर्त्तते ततो जीवाद्यभावः स्या दस्तित्वाभावादिति व्यसकः २ प्र तिवादिनो व्यामोहकत्वादिति तथा ॥ लूसएत्ति ॥ मुष्णाति लूषयतिवा व्यसकापादित मनिष्टमिति लूषको हेतुः सएव शाकटिको यथा धूर्त्तान्तरशिचित्ते नहि शाकटिकेन तेन याचितो सौधूर्त्त स्तर्हि देहिमे तर्पणालोडिका मिति ततो धूर्त्तेनोक्ता स्वभार्या देह्यस्मै शक्नू नालोड्येति तांच तथा कुर्वतीं तद्भार्या

वंसए लूसए ।

परने व्यामोह मांडे ३ । लुण्यकोहेतु परने वचनेछे ४ ॥

गृहीत्वा सो प्रस्थितो वादीच्च धूर्त्तमभि मदीयेयं तर्पण मिति सत्तूनालोडयतीति तर्पणासोडिकेति भवतेव दत्तत्वादिति सचायं यदि जीवघटयो रस्ति त्व  
 वृत्त्या एकत्वं सभावयसि तदा सर्वभावाना मेकत्वं स्यात्सर्वेष्वप्यस्ति त्ववृत्तेरविशेषा वचैवमिति इहास्ति त्ववृत्तेरविशेषा दित्यय नूपको जीवघटयो रेकत्वापा  
 दनलक्षणस्य भावापत्ति लक्षणस्य चा निष्टस्य परापादितस्या नेन लूपितत्वादिति ॥ अहवेत्ति ॥ हेतोः प्रकारान्तरता द्योतको विकल्पायै हिनोति गमयति प्र  
 मेयमर्थं सवा हीयते ऽधिगम्यते ऽनेनेति हेतुः प्रमेयस्य प्रमितौ कारण प्रमाणमित्यर्थं सचतुर्विधः स्वरूपादिभेदा तत्र ॥ पञ्चखेत्ति ॥ अन्ना त्वय्युते व्याप्नो  
 ति अर्था नित्यच्च आत्मा तस्मिन्ति य द्धर्त्तते ज्ञानं तत् प्रत्यक्ष निश्चयतो वधिमनःपर्यायकेवलानि अक्षाणि चेन्द्रियाणि प्रति य त्प्रत्यक्ष व्यवहारत स्तच्च च  
 क्षुरादिप्रभवमिति लक्षणमिदमस्य अपरोक्षतयार्थस्य ग्राहकज्ञानमोदृगं प्रत्यक्षमितरदृग्नेय परोक्षग्रहणेचया ॥ १ ॥ ग्रहणापेक्षयेति भावः अन्विति लिङ्गद  
 र्शनसम्बन्धानुस्मरणयोः पद्या दात्मान ज्ञान मनुज्ञान एतन्नक्षणमिदं साध्याविनाभूतलिङ्गात् साध्यनिश्चायकममृतं अनुमानतदभ्यात प्रमाणत्वात्समचव  
 दिति ॥ १ ॥ एतच्च साध्याविनाभूतहेतुजन्यत्वेनाप्युपचारा हेतुरिति ४ तथा उपमानमुपमा सैवोपस्य अनेन गवयेन सदृशी गौरिति सादृश्यप्रतिपत्तिरूपं  
 उक्तं च गान्धर्वायमरखेन्य गवयवौजतेयदा । भूयोवयवसामान्य भाजवर्त्तुलकगृहक ॥ १ ॥ तस्यामेवत्ववस्थाया यदि ज्ञानप्रवर्त्तते । पशुनैतेन तुल्योसौ गोपि  
 ण्डइतिसोपमेति ॥ २ ॥ अथवा श्रुतातिदेगवाक्यसमानार्थोपलभने सज्जासज्जिसम्बन्धज्ञान मुपमान मुच्यतइति आगम्यन्ते परिच्छिद्यते ऽर्था अनेने त्याग

अथवा हेतु चउद्दिहे पन्नत्ते तंजहा पञ्चरके अणुमाणे उवमे आगमे ।

अथवा वली हेतू कहैछे प्रत्यक्ष हेतु जे इन्द्रियग्राह्यछे १ । अनुमान प्रमाण धूमथी अग्नि २ । उपमान यथा गौ तथा गवय ३ । आगम ते आप्तवचन ४ ॥

० ॥ म प्राप्तवचनसम्प्राप्त्यो विप्रकृष्टार्थप्रत्यय उक्तञ्च दृष्टेष्टाश्चाहतादाका त्परमार्थाभिधायिनः तत्त्वगाहितयोत्पन्न मानशाब्दप्रकीर्तित ॥ १ ॥ आसीपञ्चमनु  
 ॥ ॥ लब्ध मष्टष्टेष्टविरोधक तत्त्वोपदेशकत्वार्थशास्त्रकापथघटनमिति ॥ २ ॥ इहा न्यथानुपपन्नत्वलक्षणहेतुजन्यत्वा दनुमानमेव कार्यकारणोपचारा हेतुः सच  
 चतुर्विधः चतुर्भंगीरूपत्वा त्तन अस्ति विद्यते तदिति लिङ्गभूतं धूमादिवस्तुमिति कृत्वा अस्ति सो ग्यादिकः साध्यो र्थ इत्येव हेतुरिति अनुमान तथा  
 तदग्न्यादिक वस्त्व तो नास्ति सो तद्विरुद्ध शीतादि र्थ इत्येवमपि हेतु रनुमानमिति तथा नास्ति तदग्न्यादिक मतः शीतकीले स्ति सशीतादि र्थ  
 इत्येवमपि हेतुमानमिति तथा नास्ति तदवृत्तत्वादिकमिति तथा नास्ति सग्नियपात्वादिको र्थ इत्यपि हेतु रनुमानमिति इहच शब्दे कृतकत्वस्या स्ति  
 त्वा दस्त्यनित्यत्व बटवत् तथा धूमस्या स्तित्वा दिहा स्वग्नि मँहानसद्भवे त्यादिक सभावानुमान कार्यानुमानञ्च प्रथमभङ्गकेन सूचित तथा अग्नेरस्ति  
 त्वात् धूमास्तित्वाद्वा नास्तिशीतस्पर्श इत्यादिविरुद्धो पलभानुमान विरुद्धकार्योपलभानुमानच तथा अग्ने धूमस्य वाचित्वा नास्ति शीतस्पर्शजनितदत  
 वीणारोमहर्षादिपुरुषनिकारो महानसज्जदिति कारणविरुद्धापलभानुमान कारणविरुद्धकार्योपलभानुमानच द्वितीयभङ्गकेना भिहित तथा क्वादे  
 रग्नेर्वा नास्तित्वा दस्ति क्वचित्कालादिविशेषे प्रातपः शीतस्पर्शोवा पूर्वोपलब्धप्रदेशद्भवे त्यादिक विरुद्धकारणानुपलभानुमान विरुद्धानुपलभानुमा

अथवा हेऊ चउद्विहे पन्नत्ते तजहा अत्यितंअत्यिसोहेऊ अत्यितणत्यिसोहेऊ णत्यितं

अथवा बली च्यार प्रकारना हेतू कहिया तेकहेछे धूमादि छेतो अग्निपछे अस्तित्वास्तित्व हेतू १ ।  
 अग्निछे पणि शीत ठाढ नथी एह अनुमानहेतू २ । अग्नि शीत नथी पणि शीतकाले शीतछे

नव तृतीयभङ्गकेनोक्त तयादुर्गन्मानया सया घटोपनभस्य नास्तित्वा चास्तो घटो विनिर्दिष्टदेशादित्यादि सभागानुपनयानुमान तथा धूमस्य नास्तित्वा नास्त्य विज्ञानो धूमकारणकत्वाप घटोपनभस्य दित्यादिकार्यानुपनयानुमान तथा वृक्षनास्तित्वात् गिरिषा नास्तित्वादि जाप कानुपनयानुमान तथा प्रग्ने नास्तित्वात् धूमो नास्तित्वादि कार्यानुपनयानुमान चतुर्थभङ्गेना विज्ञापितमिति नव यथा न ज्ञेयपक्षिभ्यः सर्वे जैनाभिमतान्वयानुपपन्नत्वरूपस्य हेतुननयस्य विगमानत्वादिति अनंतरं हेतुगुणेन ज्ञानविशेषात् स्मट्टिकायात् ज्ञानविशेषातिरूपगता ॥ चउ ज्विहेत्यादि ॥ सत्प्राप्ते गत्यते नेनेति सत्प्राप्त गणितमित्यत्र ता परिकल्पेनानादिक पाटोपमि एव व्यपगर्गपि सिद्धयत्यत्रादि रनेकथा ॥ रज्जुरिति ॥ रज्जुगणित नेत्रगणितमित्यर्थः रागिरिति त्रेरागिकपत्ररागि ताटोनि रज्जुमिति त्रेरागि ताटमिति चेतस्यथा त्रेरागि ताटमिति त्रिधा विभक्त्या धकारो व्योतोवा धित्य सूत्रादेः प्ररूपगामाद ॥ प्रहेत्यादि ॥ सुगम तित्तु पशोनामे उक्तनयने चत्वारिास्तुनोति गम्यते नरका नारका वासा नेरयिका नारका एते कृणुरूपत्वा दधकार कुर्वन्ति पापानि तमाणि ज्ञानारगतादिति मियात्वाज्ञाननयभायान्धकारित्वा दन्धकार कुर्वन्तो

अतिसोहेज् गत्यितंगत्यिसोहेज् । चउत्रिहेसंखाणे पक्षहे तजहा पफिकस्मे ववहारे रज्जु रासी । अहो लो गेणं चत्वारि अधकार करेति तजहा गरगा गेरड्या पावाडंकरमाड अस्तुजापोगला । तिरिस्कलागेण च

एहेतू ३ । अग्निमा धूमनयी तोधूमना कारण वृक्षादिक पणि नयी ४ ॥ चार प्रकारे गणितत्रे तेकनेत्रे सूत्रपरिकर्म सकालादि गणित १ । व्यवहार गणित २ । रज्जुगणित अर्थात् क्षेत्रगणित ३ । गणितराशी त्रेरागिकपत्ररागिक ४ ॥ गभीलोकमा चार प्रकारनो प्रधकार कक्षियो तेकहेत्रे नरका वासा काला माटे १ । नारकी काला तेमाटे अधारी करे २ । पापकर्म प्रधकार करेछे ३ । अशुचपुद्गल प्रधकार करेछे ४ ॥ तिरिक्छा लोकमा चार

० ॥ त्र्युच्यते अथवा न्यकारस्वरूपे ऽधोलोके प्राणिना मुत्पादकत्वेन पापानां कर्मणा मन्थकारकर्तृत्व मिति तथा अशुभाः पुद्गला स्तमित्रभायेन परिणता इति ॥ मणित्ति ॥ मणय शन्द्रकान्ताद्याः ॥ जोदृत्ति ॥ ज्योति रग्निः ॥ इति चतुःस्थानकस्य तृतीयोद्देशकोविवरणतः समाप्तः ४ ॥ ३ ॥ व्याख्या  
० ॥ त स्तृतीयोद्देशक स्तदनन्तरं चतुर्थं आरभ्यते अस्यचा यमभिसम्बन्ध इहा नन्तरोद्देशके विविधाभावा शतुःस्थानकतयो क्ता इहापि तएवो चत इत्येव सम्ब  
न्धस्या स्योद्देशकस्ये दमादिसूत्र ॥ चत्वारिपसप्पगेत्यादि ॥ अस्यचा नन्तरसूत्रेण सहायं सम्बन्धो ऽनन्तरसूत्रे देवा देव्यश्च निर्दिष्टा स्तेच भोगवन्तः सुखि  
ताश्च भवतीति भोगान् सुखानिचा श्रित्य प्रसर्पन्ताभिधानाये दमुच्यते इत्येव संवन्धस्या स्य व्याख्या प्रकर्षेण सर्पन्ति गच्छन्ति भोगाद्यर्थं देशानुदेशं

त्वारि उज्जोयं करेति चदा सूर्या मणी जीती । उहलोगेणं चत्वारि उज्जोयं करेति तंजहा देवा देवीन् वि  
माणा अज्ञरणा । चउठाणस्स तइत्त उद्देसत्तं सम्मत्तो ॥ ३ ॥ चत्वारि पसप्पगा पन्नत्ता  
तंजहा अणुप्पन्नाणजोगाणंउप्पायत्ता एगेपसप्पए पुत्तुप्पन्नाणं जोगाणं अविप्पत्तगेणं एगे पसप्पए अणुप्प

अजुवालो करेळे तेकहेळे चंद्रमा १ सूर्य २ मणिरत्न ३ अग्नि ४ ॥ ऊर्ध्वलोकमां च्यार अजवालो करेळे ते कहेळे देवता १ देवांगना २ विमान ३ आज  
रणा ४ ॥ इतिश्री चौथा ठाणानो त्रीजो उदेशो पूरोथयो ॥ ३ ॥ हिवे चौथा ठाणानो चौथो उदेशो कहेळे ॥ च्यार प्रसर्पक कल्या जो  
गसुख तेप्रति संचरेळे देशानुदेश संवरंती तेकहेळे नथीऊपना भोगसुख उपजाविवाने स्त्रीप्रादिक मेलवाने एक पुरुष प्रसर्पेळे उदम करेळे ठामोठा

सचरति आरम्भपरिग्रहतोवा विस्तारं यांतीति प्रसर्पका ॥ अणुपण्णाणति ॥ द्वितीयार्थं षष्ठीति अनुत्पन्ना नसम्पन्नान् भोगान् शब्दादीन् तत्कारण  
द्रविणागनादीन्वा ॥ उप्यायत्तत्ति ॥ उत्पादयितु सम्पादनायाऽथवाऽनुत्पन्नानां भोगानां उत्पादयितो त्यादकः सन्नेकः कोपि प्रसर्पति प्रगच्छति प्रसर्प  
कोवा प्रगताभवतीति गम्यते प्रसर्पन्तिच भोगाद्यर्थिनो देहिनिः उक्तच धावेऽरोहणतर इसागरभमङ्गिरिनिकुजेसु मारेऽबन्धवपिहु पुरिसीजोहोद्रध  
णलुवो ॥ १ ॥ अड्डवहुवहइभर सहइळ्हपावमायरइधिष्ठो कुलसीलजाइपुव्वय ठिइचलोभहुउच्चयइत्ति ॥ २ ॥ तथा पूर्वोत्पन्नानां पाठातरेण प्रत्युत्पन्ना  
नावा ॥ अविप्पजोगेणति ॥ अविप्रयोगाय रत्तार्थमिति सौख्यानामिति भोगासम्पादानन्दविशेषाणां शेष सुगम भोगसौख्यार्थंच प्रसर्पंत, कर्मबन्धा ना  
रकत्वेनो त्यद्यन्तइति नारका नाहारतोनिरूपयन्नाह ॥ नेरइयाणमित्यादि ॥ व्यक्त केवल अगारोपम अल्पकालदाहत्वात् मुर्मुरोपमः स्थिरतरदाहत्वात्  
शीतल शीतवेदनोत्पादकत्वात् हिमशीतलो त्यतशीतलो त्यतशीतवेदनोत्पादकत्वात् अधोवइति क्रमइति आहाराधिकारात् तिर्यग्मनुष्यदेवानामा

स्माणं सोरुकाणं उप्याइत्ता एगे पसप्पए पुव्वुप्पन्नाण सुरुकाणं अविप्पजोगेणं एगे पसप्पए । णेरइयाणं चउ  
च्चिहे आहारे पन्नत्ते तंजहा इगालोवमे मुर्मुरोवमे सीयले हिमसीयले । तिरिस्सजोणियाण चउच्चिहे आहारे

म देशाटन करेछे १ । वली एक पुरुष उपजता जे जोगसुख ते राखवाने प्रसर्पेछे सचरेछे २ । नथीऊपना जे जोगसुख ते उपजाविवाने एक प्रसर्प  
छे ३ । पूर्वे ऊपना जे जोगसुख ते राखवाने एक पुरुष प्रसर्पेछे जमेँछे ४ ॥ ते कर्मकरीने नरकमाजाय तेह नारकीने च्यार प्रकारनी आहार कह्यो  
इगालोपम १ । मुरमुरोपम २ । शीतल ३ । हिमशीतल ४ ॥ तिर्यचनो आहार ४ प्रकारे कह्यो ते कहैछे ककपत्तीना आहार जेहवो १ । विलसा

हारनिरूपणाय सूत्राय ॥ तिरिक्खजोणियाणमित्थादि ॥ व्यक्तं नवरं कांकाः पत्तिविशेषं स्तस्या हारेणोपमा यत्तस्य मध्यपदलोपात् कांकोपमः प्रथमार्थो यथाहि कांकस्य दुर्जरीणि स्वरूपेणा हारः सुखभक्ष्यः सुखपरिणामश्च भवति एव यस्तिरयां सुखभक्ष्यः सुपरिणामश्च सकल्लोपमइति तथा विले प्रवेशद्रव्य विलमेय तेनोपमा यत्तस्य तथा विलेहि प्रलब्धरसास्वाद भटिति यथा तिल किञ्चि गविशति एवं यस्तेषां गलविले प्रविशति स तथोच्यते पाणो मा तज्ज्ञ स्तस्यास्य मस्यस्थत्वेन पुण्यपाया दुःखाण्यस्या देव यस्तेषां दुःखाण्यः स पाणमांसोपमः पुत्रमांसन्तु सेहपरतया दुःखाण्यतरं स्या देव यो दुःखाण्यतरः स पुत्रमांसोपमः क्रमेण चैते शुभसमा शुभाशुभतरा वेदितव्याः वर्णवानित्यादौ प्रससाया मति शायनेवा मन्तुरिति प्राचारोक्ति भक्षणायइति भक्षणधिकारा दाश्रीविपस्तु सुगमं चेद नवर ॥ प्रासीविसत्ति प्राण्या दष्टाः तासु विपयेपांते प्राशीविषा स्तेच कर्मतो जातितश्च ता कर्मत स्तिर्य

पन्तते तजहा कंकोवमे विलोवमे पाणमंरोवमे पुत्रमंसोवमे । मणुस्साणं चउद्धिहे आहारे पन्तते तंजहा अण्णजे जाव साइमे । देवाण चउद्धिहे आहारे पणत्ते तजहा वण्णमते गंधमंते रसमंते फासमंते । चत्ता रि जाइआसीविसा पणत्ता तंजहा विच्छुयजाइआसीविसे मंजुक्काजाइआसीविसे उरणजाइआसीविसे म

पैसेद्रव्य तेहवो २ । प्राणा ते हाथीना मांस जेहवो हस्तिमांस निंदनीक ३ । पुत्रना मांस समान दुखकारी पणांमाटे ४ ॥ मनुष्यने चार प्रकारनुं आहार कत्थो ते कहैछे प्रसन धान १ । पाणी २ । खादिम फलादि ३ । स्वादिम लवंगादिक ४ ॥ देवताने चार प्रकारनो आहार कत्थो ते कहैछे शुजवर्णवत १ । शुजगधवत २ । शुजरसवत ३ । शुजफरसवत ४ ॥ चार प्रकारना आशीविष आहारना अधिकार माटे कत्थो ते कहैछे । बीली

गमनुथाः कुतोपिगुणादाशीविषाःस्युः देवाश्चा सहस्राराच्छापादिनापरव्यापादनादिति उक्तञ्च आसीदाढातगय महाविसासोविसादुविहभेया तेकम्प जाइभेए णणेगहाचउच्चिहविगप्पत्ति ॥ १ ॥ जातित आशीविषा जाल्याशीविषा वृश्चिकादयः ॥ केवइयत्ति ॥ कियान् विषयो गोचरो विषयेति गम्यते प्रभुः समर्थः अर्द्धभरतस्य यत्प्रमाण सातिरेकविषयधिकयोजनशतद्वयलक्षण तदेवमात्राप्रमाण यस्या सा ऽर्द्धभरतप्रमाणमात्रा ता स्वीदि शरीर विषेण स्वकी याशीप्रभवेण करणभूतेन विषपरिणता विषरूपापन्नां विषपरिणतामिति क्वचित्पाठे तद्व्याप्तामित्यर्थः ॥ विसदृमाणि वकसती विदलतीं कर्तुं विधातुं वि प्रय' सगोचरो सौ अथवा ॥ से ॥ तस्य वृश्चिकस्य विषमेवा र्थो विषार्थं स्तद्भाव स्तत्ता तस्यां विषार्थतायाविषत्वस्य तस्यावा ॥ नोचेवत्ति ॥ नैवेत्यर्थः सपत्या एवविधवोन्दिसम्प्राप्तिद्वारेण ॥ करिसुत्ति ॥ अकार्षुं वृश्चिकाइति गम्यत इहचै कवचनप्रक्रमेपि बहुवचननिर्देशो वृश्चिकाशीविषाणा बहुत्वज्ञापनार्थ एव

गुस्सजाइअसीविसे । विच्छुयजाइअसीविसस्सणं जंते केवइए विसए पस्सत्ते पन्नूणं विच्छुयजाइअसी विसे अण्णरहप्पमाणमेत्तं बोदिं विसेणं विसपरिणयं विसदृमाणिं करेत्तए विसएसे विसदृत्ताए नोचेवणं

जातिनुं आशीविष १ । डेऊक जातिनुं आशीविष तेदाढेळे २ । सर्पजातिनो आशीविष ते एण्ण मुखेळे ३ । मनुष्यजातिनो आशीविष ए पणि सु खमाळे ४ ॥ बीळीनी जातिना आशीविषनो हे जगवंत केतलोविषय कह्यो जगवंत कहैळे समस्तार्थळे बीळीनी जातिनो आशीविष अर्द्धभरतक्षेत्रप्रमा ण वेसे त्रेसठ योजनप्रमाण शरीर विषयसहित विष पीकितकरे एबीळी विषय विषनो विषयार्थ एण्ण विषमिश्रित शरीर कोई कस्योनथी क रतो नथी करस्ये नथी १ । डेऊकाना आशीविषानुं प्रम समर्थळे डेडकानुंविष भरतक्षेत्रप्रमाण शरीर विष सहित करे बीजो तिमज यावत् कस्यो



कुर्वन्ति करिष्यन्ति चिकालनिर्देशशा मीषां पैकालिकत्वज्ञापनार्थः समयचेत्रं मनुष्यचेत्रं विषपरिणामोहि व्याधिरिति तदधिकारा द्वाविभेदानाह ॥ च  
उब्बिहेत्वादि ॥ कण्ठा कीजल वातो निदान मस्येति वातिकः एव सर्वत्र नवरं सम्पातः सयोगो हयो स्वयाणांवेति वातादिस्वरूप चैतत् तन्नरूचोदघः शीतः  
खरः स्रग्भयनीनः पित्तसस्तेहतीक्ष्णो लघुनिश्चरद्रव ॥ १ ॥ कफोगुरुर्हिमस्तिग्धः प्रक्लेशीस्त्रिपिच्छिलः सन्निपातगुसकोर्ण लक्ष्णोद्गादिमीलकः ॥  
२ ॥ वातादीना कार्याणि पुन रिमाणि पारुष्यसङ्कोचनतोदशून श्यामत्वमद्गव्यचेष्टभङ्गाः सुतत्वशोतत्वखरत्वगोपाः कर्माणिवायोःप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ १ ॥

संपत्तिए करिंसुवा करेंतिवा करिस्संतिवा । मंजुक्कजाइच्चासीविसरुस पुच्छा पन्नूणं मंजुक्कजाइच्चासीविसे  
जरहप्पमाणमेत्त वोदि विसेण विसए सेसंतचेव जाव करिस्संति । उरगजाइच्चासीविसरुस पुच्छा पन्नूणं  
उरगजाइच्चासीविसे जंबूद्वीवपमाणमेत्त वोदि विसेणं सेसंतचेव जाव करिस्संतिवा । मणुस्सजाइच्चासी  
विसरुस पुच्छा पन्नूणं मणुस्सजाइच्चासीविसे समयरक्केत्तपमाणमेत्त वोदि विसेणं विसपरिणय विसहमाणं  
करेंति विसएसे विसठत्ताए नोचेवणं जाव करिस्संतिवा ४ ॥ चउब्बिहा वाही पसत्ता तजहा वाइए पि

नथी २ । सर्पना आशीविषनुं प्रप्प समर्थे सपनी जातिनुं विष जंबूद्वीप प्रमाण शरीर विषसहित करे बीजो यावत् कीधो नथी ३ । मनुष्यना  
आशीविषनु प्रप्प समर्थे मनुष्यत्वेनप्रमाण शरीर ४५ लाख योजननो शरीर विष सहित करे एह विषनु विषय कच्चो शेष तिमज यावत् कीधो  
नथी ४ ॥ रोगाधिकार माटे कहैछे चार प्रकारनी व्याधी कही ते कहैछे । वातव्याधि १ । पित्तव्याधि २ । कफनीव्याधि ३ । सन्निपातनी व्याधि

परिस्रवस्त्रेदविदाहरागा वैगन्ध्यसंक्लेदविपाककोपाः प्रलापमूर्च्छाभ्रमिपीतभावाः पित्तस्यकर्माणिवदतितज्ज्ञा' ॥ २ ॥ श्वेतत्वशीतत्वगुरुत्वकांडू स्नेहोप  
 देहस्तिमितत्वलेपाः उत्सेधसपातचिरक्रियश्च कफस्यकर्माणिवदतितज्ज्ञाः ॥ ३ ॥ अनन्तरं व्याधि रक्तो ऽधुना तस्यैव चिकित्सां चिकित्सकांश्च सूत्रद्वयेनाह  
 ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर चिकित्सा रोगप्रतीकार स्तस्यां आतुर्विध्य कारणभेदादिति एतत्सूत्रसम्बादक मुक्त मपरैरपि भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता  
 रोगोपादचतुष्टय चिकित्सितस्यनिर्दिष्ट अत्येकतत्त्वतुर्गुणं ॥ १ ॥ दक्षोविज्ञातशास्त्रार्थोदृष्टकर्मांशुचिर्भिषक् बहुकल्पबहुगुणसम्पन्नयोग्यमौषध ॥ २ ॥ अनुरक्तः  
 शुचिर्दक्षो बुद्धिमान्परिचारकः आढ्यो रोगौभिषग्वश्यो ज्ञापकः सत्ववानपीति ॥ ३ ॥ द्रवद्रव्यरोगचिकित्सा मोहभावरोगचिकित्सात्वेवं निब्विगद्वनिब्वलोमे  
 तवउव्वहाणमेवउज्झामे वेयावच्चाहिडण मडलिकप्पट्टियाहरणति ॥ १ ॥ निर्वल वल्लादि अवम मून उज्झामो भिच्चाभ्रमण आहिडण देशेषु मडली सूत्रार्थयोः  
 कप्पट्टिया श्रेटिवधूरिति चिकित्सका द्रव्यतो ज्वरादिरोगा प्रति भावतो रागादौन्प्रति इति तत्रा त्वनो ज्वरादेः कामादेर्वा चिकित्सकः प्रतिकर्त्तृ त्यात्म

तिए सजिए सन्निवाइए ४ । चउव्विहा तिगिच्छा पण्हत्ता तंजहा विज्जा उंसहाइं आउरे परियारए ४ ।

चत्तारि तिगिच्छगा पण्हत्ता तंजहा आयतिगिच्छिण्णाममेगेणोपरतिगिच्छिण्ण परतिगिच्छिण्णाममेगे णो

ते वातपित्तकफना संयोगथी व्याधि ४ ॥ चार प्रकारनी चिकित्साकही विद्या मंत्र १ । औषध २ । आतुर ३ । रोगीनी परिचारणा सेवा ४ ॥  
 चार प्रकारना चिकित्सक ते वैद्य कहिया ते कहैछे एक आत्मानो चिकित्सकछे पणि परनुं चिकित्सक नथी १ । एक परनीचिकित्सा जाणेछे  
 पणि पोतानीचिकित्सा नथी जाणतो २ । एम चार जागा कहवा ४ ॥ चार प्रकारना पुरुष कह्या एक पोते लोही काढवाने चांदो प्रमुख करेछे

१० ॥

३ ॥

चिकित्सकइति अथा आचिकित्सकान् भेदतः सूत्रत्रयेणाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ कण्ठ नवरं व्रणं देहे क्षत स्वयं करोति रुधिरादिनिर्गलना श्रमिति व्रणकरो नो नैव व्रण परिमृशतीत्येवशीलो व्रणपरिमर्शीत्येको न्यस्त्व न्यक्तत व्रण परिमृशति नच तत्करोतीति एव भावव्रण मतिचारलक्षण करोति कायेनच तदेव परिमृशति पुनःपुन सस्मरणेन स्मृशति अन्यस्तु तत्परिमृशतीत्यभिलाषा नच करोति कायतः ससारभयादिभिरिति व्रण करोति नच तत्पट्टवन्धादिना सरक्षति अन्यस्तु कृतसरक्षति नच करोति भावव्रणंत्वा श्रित्या तिचारं करोति नच त सानुबन्ध भवतं कुशीलादिससर्गतत्रिदानपरिहारतो रक्षति एको ऽन्यस्तु पूर्वकृतातिचार निदानपरिहारतो रक्षति नच नकरोति नो नैव व्रण सरोहय त्वौषधदानादिनेति व्रणसरोही भावव्रणापेक्षयातु नो व्रण सरोही प्रायश्चित्ताप्रतिपत्ते व्रणसरोही पूर्वकृतातिचारप्रायश्चित्तप्रतिपत्त्या नो व्रणकरो ऽपूर्वातिचाराकारित्वादिति उक्ता आत्मचिकित्सका अथ चि

ध्यायतिगिच्छिणु । चउज्जंगो ४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा वणकरेनाममेगेनोवणपरिमासी वण परिमासीनाममेगेनोवणकरे एगेवणकरेविवणपरिमासीवि एगेनोवणकरेनोवणपरिमासी । चत्तारिपुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा वणकरेनाममेगेनोवणसारस्की ४ । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा वणकरेनाममेगेनो

पणि वारंवार संजारवे करी फरसतो नथी १ । एकपरनो कीधोचांदो फरसेछे पणि पोते नथी फरसतो २ । एक पोते व्रण करेछे अने वारंवार संजारवे करी फरसेछे ३ । एक व्रण करतो नथी अने फरसतो पणि नथी एम जावव्रणअतीचारआशी पणकहवो ४ ॥ च्यार प्रकारना पुसप कहा तेकहैछे ॥ एक पोतेव्रण चादोकरे पणि पाटोबाधने नथीरासतो एम चीजंगी पूर्वनी परे एम जावथी अतीचार करेछे पणि कुसगतटालवाथी राख

कित्स्यं व्रणं दृष्टांतीकृत्य पुरुषभेदानाह ॥ चत्वारिणीत्यादि ॥ चतुःसूत्री सुगमा नवर अन्त मध्ये शल्यं यस्य अदृश्यमानमित्यर्थः तत्तथा ॥ वाहिसन्नेति ॥  
यच्छ ल्य व्रणस्यां तरगल्य वहिस्तु बहु तद्वहिरिव वहिरित्युच्यते अतोवहिः शल्यं यस्य तत्तथा यदिपुनः सर्वथैव त ततो वहिः स्या तदा शल्यतैव नस्या दुह  
त्तत्वेवा भूतभावितया स्यादपीति २ यत्रपुनरन्तर्बहु वहिर प्युपलभ्यते तदुभयशल्य ३ चतुर्थः शून्यइति गुरुसमजमनालोचितत्वेनां तःशल्य मतिचाररूप  
यस्य स तथा वहिः शल्य मालोचिततया यस्य सतथा अन्तर्वहियशल्य मालोचितानालोचितत्वेन यस्य स तथा चतुर्थ शून्य. अन्तर्दुष्ट व्रण लूतादिदो  
पतो नवहीरागाद्यभावेन सौम्यत्वात् ४ पुरुषस्तु अन्तर्दुष्टः गठतया सवृताकारत्वात् न वहिरित्येक अन्यस्तु कारणेनो पदर्शितवाक्पारुष्यादित्वा वहिर

वणसारोही ४ । चत्वारि वणा पस्सत्ता तजहा अतोसल्लेनाममेगेणोवाहिसल्ले ४ । एवामेव चत्वारि पुरिस  
जाया पस्सत्ता तजहा अतोसल्लेनाममेगेणोवाहिसल्ले ४ । चत्वारि वणा पस्सत्ता तजहा अतोदुठेनाममेगेणो

तो नथी ४ ॥ चार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे ॥ एक पोते व्रणकरेछे पणि औपधादिकथी रूंधतो नथी एम अतीचारकरेछे पणि प्रायश्चित्तकरवा  
थी शुद्धनथी करतो एम चोजंगी ४ ॥ चार प्रकारनाशल्य कह्या ते कहैछे ॥ एक माहि अदृश्यशल्यछे पणि वाहिरदीसतो नथी ४ ॥ एहनी परें  
चार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे । एकने माहिसालछे द्रव्यथी पणि वाहिर सालनथी एमचोजंगी जावथी गुरुशारे आलोव्योनथी तेमाहिश  
ल्यछे ४ ॥ वली चार प्रकारनाव्रण कह्या ते कहैछे ॥ एक चादो माहिदुष्टछे पीळा करेछे पणि वाहिर दुष्टमोटोनथी १ । एक वाहिर दुष्टदेखवामां  
मोटु वेसुरछे पणि माहि दुष्ट पीडतो नथी २ । एम चार जांगा ४ ॥ इण दृष्टांते चार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे ॥ एक पुरुष हियासां

वेति पुरुषाधिकारा तज्ज्ञेदप्रतिपादनाय षट्सूची कण्ठ्या च जिंतुं अतिशयेन प्रशस्यः श्रेयानेकः प्रशस्यभावः सङ्गोधत्वा त्पुनः श्रेयान् प्रशस्तानुष्ठानत्वा  
 साधुवदित्वाः अन्यस्तु श्रेयांस्तथैव अतिशयेन पाप पापीयान् सचा विरतत्वेन दुग्नुष्टायित्वादिति २ अन्यस्तु पापीयान् भावतो मिथ्यात्वादिभि रूप  
 तत्तत्त्वा कारणवशात् सद्गनुष्टायित्वाच्च श्रेयानुदायिनृपमारकवत्तुर्थः सएव छतपापप्रति अथवा श्रेयान् गृहस्थत्वे निष्कामणकालेवा पुनः श्रेयान् प्रव्रज्या  
 या विहारकालेवे त्वेवमन्येपि १ श्रेया नेको भावतो द्रव्यतस्तु श्रेयान् प्रशस्यतइति एव बुद्धिजनकत्वेन सदृशको न्येन श्रेयसा तुष्यो नतु सर्वथाश्रेयाने  
 वेति एताः अन्यस्तु भावतः श्रेयानपि द्रव्यतः पापीया नित्येव बुद्धिजनकत्वेन सदृशको न्येन पापीयसा समानो नतु पापीयानेवेति द्वितियो भावतः

वाहिदुष्टे वाहिदुष्टेनाममेगेनोऽन्तोदुष्टे ॥ एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पश्यता तजहा ञ्त्तोदुष्टेनाममेगेनो  
 वाहिदुष्टे ४ ॥ चत्वारि पुरिसजाया पश्यता तजहा सेयसेनाममेगेसेयसे रंयसेनाममेगेपावंसे पावसेनाममे  
 गेसेयसे पावंसेनाममेगेपावंसे ॥ चत्वारि पुरिराजाया पश्यता तंजहा सेयसेनाममेगेसेयंसेहिसालिसए सेयंसे

दुष्टे शठे वाहिर दुष्ट नथी जद्राकारे बगलानी परे एम च्यार भागा ४ ॥ बली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे ॥ एक पुरुष नामे श्रेया  
 शठे अने प्रशसवा योग्यछे साधूनी परे १ । एक नामे श्रेयांस पुण्यवत् पणि परिणामे पापी अविरतीभाटे उदाईनृप मारकवत् २ । एक नामे पा  
 पीछे पणि पुण्यवत् समकितवंतछे ३ । एक नामे पापी परिणामे पापी पापनो करणहार कालशौकरिकनी परे ४ ॥ फेर च्यार प्रकारना पुरुष  
 कह्या ते कहैछे ॥ एक प्रथम गृहस्थपणे श्रेयासछे अने पछी दीक्षाकाले पणि प्रशसवा योग्यछे १ । एक प्रथम श्रेयासछे पछे पापासछे उत्तरकाले

पापीया नप्यन्यः संहताकारतया श्रेया नित्येवं सदृशको न्येन श्रेयसे तितृतीयः चतुर्थः मुञ्जानः श्रेयानेकः सवृत्तत्वात् श्रेया नित्येव मात्मान मन्यते यथावद्बोधा लोकेन वा मन्यते विशदशुभानुष्ठानात् इह च मन्त्रिज्जुद्धति वक्तव्ये प्राकृतत्वेन मन्त्रइत्युक्त १ श्रेया नप्यन्य आत्म न्यरुचिपरायणत्वा त्पापी या नित्यात्मान मन्यते स एव वा पूर्वोपलब्धतद्दोषेण जनेन मन्यते दृढप्रहारिवत् २ पापीयानप्यपरो मिथ्यात्वा द्युपहततया श्रेया नित्यात्मान मन्यते कु तीर्थिकवत् तद्भक्तेनवेति ३ पापीया नन्यो अविरतिकत्वात् पापीया नित्यात्मान मन्यते सद्बोधत्वात् असयतोवा मन्यते सयतलोकेनेति श्रेया नेको भा वतो द्रव्यतस्तु किञ्चित्सदनुष्ठायित्वात् श्रेयानित्येवं विकल्पजनकत्वेन सदृशको न्येन श्रेयसा मन्यते जायते जनेनेति विभक्तिपरिणामाद्वा सदृशताक मात्मा न मन्यतइति एवशेषाः ॥ आधवइत्तति ॥ आख्यायक, प्रज्ञापक, प्रवचनस्य एकः कश्चि न्न च प्रविभावयिता प्रभावक, शासनस्य उदारक्रियाप्रतिभादि

नाममेगेपावंसेत्तिसालिसए ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा सेयंसेनाममेगेसेयसेत्तिमसइ सेयंसेनाममेगे पावसेत्तिमसइ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा सेयसेनाममेगेसेयसेत्तिसालिसएमन्नइ सेयसेनाममेगेपा वसेत्तिसालिसएमन्नइ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा आधवइत्ताणाममेगेणोपरिज्ञावइत्ता परिज्ञावइत्ता

जलो थई माठो थाय एम च्यार भागा ४ ॥ फेर च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे ॥ एक जलोछे अने पोताना आत्माने भलोकरी मानेछे तथा लोक जलो मानेछे १ । एक पुण्यवतथको आत्माने पापीकरी मानेछे दृढ प्रहारी साधुनी परे २ । एम च्यार जागा ४ ॥ वली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या तेकहैछे । एक श्रेयासछे अने श्रेयांस सरखी मानेछे जे हु साधु सरिखीछु १ । एक श्रेय पुण्यवंतछे अने आत्माने पापी सरिसी मानेछे विशि

॥ रहितत्वात् प्रविभाजयितावा प्रवचनार्थस्य नयोत्सर्गादिभिर्विवेचयितेति अथवा आख्यायक' सूत्रस्य प्रविभावयिता प्रविभाजयितावा र्थस्येति अथ आख्यायक एक' सूत्रार्थस्य नचोऽक्षजीविका सम्पन्नो नैषणानिरतइत्यर्थः सचा पद्गतः सविग्नपाक्षिकोवा यदाह हुज्जहुवसणपत्तो सरौरदुव्वल्लयाएअसमथो चरणकरणेअसुद्धे सुद्धमगपरूवेज्जा ॥ १ ॥ तथा ओसणोविविहारे कमसिद्धिलेइसुलहवोहीय चरणकरणविसुद्ध उववूहतोपरूवतोत्ति ॥ २ ॥ एको द्वितीयो यथाच्छन्द स्तृतीयः साधु चतुर्थो गृहस्थादिरिति पूर्वसूत्रे साधुलक्षणपुरुषस्याख्यायकत्वाक्षजीविकासम्पन्नत्वलक्षणा गुणविभूषोक्ता अधुना तत्साम्या वृक्षविभूषामाह ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ अथवा पूर्व मुक्खजीविकासम्पन्नः साधुपुरुष उक्त स्तस्यचवैक्रियलब्धिमत् स्तथाविधप्रयोजने वृक्षविकुर्वेतो यदि धातद्विक्रिया स्या तामाह ॥ चउव्विहेत्यादि ॥ पातनयै वोक्तार्थं नवरं प्रवालतयेति नवाङ्कुरतयेत्यर्थः एतेहि पूर्वोक्ता आख्यायकादयः पुरुषा स्तौर्यिका

णाममेगेणोऽघवइत्ता ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तजहा ञ्घवइत्तानाममेगेनोउंल्लजीवियासंपप्पो उंल्लजीवियासंपप्पेनाममेगेणोऽघवइत्ता ॥ चउव्विहा रुक्खविगुह्णणा प० तंजहा पवालत्ताए पत्तत्ताए पुप्फत्ताए फल

एक्रियामाटे २ । एम च्यार जागा ४ ॥ बली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे । एक सिद्धांतनो आख्यापक रूप कहैछे पणि उदारक्रियाथी प्रभावक नथी १ । एक शुद्धक्रियाये करी जिनशासन दीपावेछे पणि प्ररूपक नथी देशना तेहवी नथी २ । एम चोभंगी ४ ॥ बली च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे । एक सूत्रार्थनो कहनारोछे पणि छ कायनो राखणहार नथी ईर्यादिसमिति रहितछे १ । एक छ कायनु रक्षकछे पणि प्ररूपकनथी नवोसाधु इम चौजगी ४ ॥ कोइक लब्धिवत्साधुकारणे विकुर्वणा विकुर्वे ॥ च्यार प्रकारे वृक्षनी विकुर्वणाछे ते कहैछे । प्रवाल

इतितेषां स्वरूपाभिधानायाह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ वादिन स्तौर्थिका : समवसरं त्यवतरं त्येविति समवसरणानि विविधमतमौलका स्तेषां समवसरणानि वादिसमवसरणानि क्रियां जीवाजीवादिरर्थोऽस्तौत्येवरूपा वदतीति क्रियावादिन आस्तिकाइत्यर्थं स्तेषा यत्समवसरण तत्तएवोच्यतेअभेदादिति तन्निषेधा दक्रियावादिनो नास्तिकाइत्यर्थं अज्ञानमभ्युपगमद्वारेण येषा मस्ति ते अज्ञानिका स्तएव वादिनो ऽज्ञानिकवादिनो ऽज्ञानमेव श्रेयइत्येव प्रतिज्ञाइत्यर्थः विनय एव वैनयिक तदेव निःश्रेयसाये त्येव वादिनो वैनयिकवादिनइति एतद्वेदमख्याचेय असौइसयकिरियाण अकिरियवाइणहोइत्तुलसीइ अन्नाणियसत्तडो वेणयियाणचवत्तीसति ॥ १ ॥ तत्रा शौत्यधिक गत क्रियावादिनां भवति इदंचा मुनोपायेना वगन्तव्य जीवाजीवाश्रववन्धसवरनिर्जरापुण्या पुण्यमोक्षाख्यान् नवपदार्थांत्विचय्य परिपाद्या जीवपदार्थस्या ध' स्वपरभेदा वुपन्यसनीयो तयो रधो नित्यानित्यभेदौ तयो रप्यध' कालेश्वरात्मनियति स्वभावभेदाः पंच न्यसनीयाः पुन श्रेय विकल्पा' कर्तव्याः अस्तिजीवः स्वतो नित्यः कालत एवेत्येको विकल्पः विकल्पार्थं श्वाय विद्यते खल्वय मात्मा स्वेन रूपेण न परापेक्षया ऋसत्वदीर्घत्वे इव नित्यश्च कालवादिन उक्तेनैवा भिलापेन द्वितीयोविकल्पः ईश्वरकारणिक स्तृतीयो विकल्पः आत्मवादिन. पुत्र ष एवेद मित्यादिप्रतिपत्तु रितिचतुर्थी नियतिवादिनो नियतित्व पदार्थानां भवश्यतया य द्यथाभवने प्रयोजकवीति पचमः स्वभाववादिन एवस्वत इत्य जहता लब्धाः पचविकल्पा परत इत्यनेनापि पचैव लभ्यंते तत्र परत इत्यस्या यमर्थ इहच सर्वपदार्थानां पररूपापेक्ष. स्वरूपपरिच्छेदो यथा ऋसत्वाद्य

त्ताए ॥ चत्तारि वाइसमोसरणा प० तंजहा किरियावाइ अकिरियावाइअ णाणिअवाइ वेणइयवाइ ४ ।

नवाकुरपणे विकुर्वणा पत्रसहित फूलसहित । फलपणे विकुर्वे ॥ चार वादीपुरुषना मत कल्या १८० क्रियावादीनामत ८४ अक्रियादी ६७ इम



॥ पेचो दीर्घत्वादिपरिच्छेद एवमेवचात्मनः स्तम्भकुम्भादीन् समोच्य तद्वातिरितेति वस्तु न्यात्मबुद्धिः प्रवर्तत इत्यतो यदात्मनः स्वरूपं तत्परतएवावधा-  
 र्यते नस्तदिति नित्यत्वापरित्यागेन चैते दशविकल्पा एव मनित्यत्वेनापि दशैव एवं विशति जीवपदार्थेन लब्धा अजीवादिष्वप्यष्टैव मेव प्रतिपदं विं-  
 शतिर्विकल्पानां मतो विशतिर्नवगुणा शतमशोत्युत्तरक्रियावादिनामिति एव एतेच विकल्पा एकैकशो न लभ्यते शीलाप्लवदिति तथा अक्रियावा-  
 दिनां चतुरशोतिर्द्रष्टव्या एवचेयं पुण्यापुण्यविवर्जितपदार्थसप्तकन्यासस्तथैव जीवस्याधः स्वपररूपविकल्पद्वयोपन्यासोऽसत्त्वादात्मनो नित्यानित्यभेदौ  
 नस्तः कालादीनान्तु पञ्चानां षष्ठी यदृच्छा न्यस्यते इयंचा नभिसन्धिपूर्विकार्यगामिरिति पश्चाद्विकल्पाभिलापः नास्ति जीवः स्वतः कालत इत्येको  
 विकल्प एव मीश्वरादिभिरपि यदृच्छावसानैः सर्वे षड्विकल्पास्तथा नास्ति जीवः परतः कालत इति षडेव विकल्पा इत्येकच द्वादश एव मजीवादि-  
 ष्वपि षट्सु प्रत्येकं द्वादशविकल्पा एवच द्वादश सप्तगुणा शतुरशोतिर्विकल्पा नास्तिकानामिति प्रज्ञानिकानां सप्तषष्टिर्भवती यचा मुनो पायेन द्रष्टव्या  
 तत्र जीवाजीवादी अवपदार्थान् पूर्ववद्वावस्थाप्य पर्यते चोत्पत्तिमुपन्यस्याधः सप्त सदादग उपन्यसनीयाः सत्त्व मसत्त्व सदसत्त्वं अवाच्यत्वं सदवाच्यत्वं  
 मसदवाच्यत्वं सदसदवाच्यत्वमिति एते नवसप्तकास्तिषष्टि रूपास्तेषु चत्वार एवाद्याविकल्पास्तद्यथा सत्त्व मसत्त्व सदसत्त्व मवाच्यत्वं चेति त्रिषष्टिम

णेरइयाणं चत्वारि वाइसमोसरणा पण्णाहा तंजहा किरियावाई जाव वेणइयवाई । एव मसुरकुमाराणवि

अज्ञानवादी ३२ विनयवादी एवं ३६३ पाखंडीना बोल जाणवा । एक क्रियावादी जीवाजीवादिकळे इममाने । अक्रियावादी नास्तिकमती जीवनथी  
 , , अज्ञानवादी अज्ञान तेहज जलुंळे ते अज्ञान विनयवादी सहूनो विनयकरे काकध्याननोकरे ॥ नारकीने चारवादीनां समोसरणमत ते कहैळे । क्रिया

ध्येक्षिता सप्तषष्टि भवति विकल्पाभिलाषश्चैवं को जानाति जीवः सन्निति किंवा तेन ज्ञातेनेत्येको विकल्प एव मसदादयोपि वाच्या स्तथा सती भावो  
 त्यत्तिरिति को जानाति किंवा नया ज्ञातया एव मसती सदसती अवक्तव्याचेति सत्वादिसप्तभग्या श्वायमर्थः स्वरूपमात्रापेक्षया वस्तुन' सत्व १ पररूपमा  
 त्रापेक्षया त्वसत्व २ तथा एकस्य घटादिद्रव्यदेशस्य ग्रीवादेः सद्भावपर्यायेण ग्रीवात्वादिना दिष्टस्य सत्वात् तथा घटादिद्रव्यदेशस्यैवा परस्य बुधादे  
 रसद्भावपर्यायेण वृत्तत्वादिना परगतपर्यायेणवा दिष्टस्या सत्वा हस्तुन, सदसत्व ३ तथा सकलस्यैवा खण्डितस्य घटादिवस्तुनो ऽर्थान्तरभूतैः पटादि  
 पर्यायै निर्जे श्रौर्द्धकुण्डलोष्ठायतवृत्तग्रीवादिभि र्युगपद्विवक्षितस्य सत्वेना सत्वेनवा वक्तुमशक्यत्वा त्तस्य घटादे र्द्रव्यस्या वक्तव्यत्व ४ तथा घटादिद्रव्यस्यै  
 कदेशस्य सद्भावपर्याये रादिष्टत्वस्य सत्वा दपरदेशस्य स्वपरपर्यायै र्युगपदादिष्टतया सत्वेना सत्वेनवा वक्तुमशक्यत्वात् घटादिद्रव्यस्य सदवक्तव्यत्वमि  
 ति ५ तथा तस्यैव घटादिद्रव्यस्यैकदेशस्य परपर्यायै रादिष्टस्या सत्वा दपरदेशस्य स्वपरपर्यायै र्युगपदादिष्टत्वेन तथैव वक्तुमशक्यत्वात् तस्य घटादे र  
 सदवक्तव्यत्व ६ तथा घटादिद्रव्यस्यैकदेशस्य स्वपर्यायै रादिष्टत्वेन सत्वा दपरस्यपरपर्यायै रादिष्टतया असत्वा दन्यस्य स्वपरपर्यायै र्युगपदादिष्टस्य त  
 थैव वक्तुमशक्यत्वेना वक्तव्यत्वात् तस्य घटादिद्रव्यस्य सदवक्तव्यत्वमिति ७ इहच प्रथमद्वितीयचतुर्था अखण्डवस्त्वाश्रिताः शेषा श्रुत्वारो वस्तुदेशाश्रिता दर्शि  
 ता स्तथा अन्यै स्तृतीयोपि विकल्पो अखण्डवस्त्वाश्रितएवोक्त स्तथाहि अखण्डस्य वस्तुन, स्वपर्यायै' परपर्यायैश्च विवक्षितस्य सदसत्वमिति अतएवा मि  
 हित माचारटौकाया इहचो त्यत्ति मङ्गीकृत्योत्तर विकल्पत्रय न सम्भवति पदार्थावयवापेक्षत्वा त्तस्यो त्यत्तेश्चा वयवाभावादिति एव मज्ञानिकानां स  
 प्षष्टिर्भवतीति वैयर्थिकानांच हात्रिशत् साचेव मवसेया सुरनृपतियतिज्ञातिस्थविराधममाहपितृणां प्रत्येक कायेन वाचा मनसा दानेनच देशकालोप  
 पन्नेन विनयः कार्यइत्येते चत्वारोभेदा सुरादि षष्टसु स्थानेषु भवति तेचैकत्र मौलिता हात्रिशदिति सर्वसंख्या पुनरेतेषा त्रीणिशतानि त्रिषष्ट्यधिकानीति

उक्तंचपूज्यैः आस्तिकमतमात्माद्याः नित्यानित्यात्मकानवपदार्थाः कालनियतिस्वभावे श्वरात्मकतकाः स्वपरसंस्थाः ॥ १ ॥ कालयदृच्छानियतीश्वरस्वभावात्मनश्चतुरशोति नास्तिकवादिगणमत नसतिसप्तस्वपरसंस्थाः ॥ २ ॥ अज्ञानिकवादिमत नवजीवादीन्सदादिसप्तविधा भावोत्पत्तिसदृश हैतावाच्यचको वेत्ति ॥ ३ ॥ वैनयिकमतविनय श्वेतोवाकायदानतः कार्यः सुरनृपतियतिज्ञाति स्थविराधममाटपिटपुसदेति ॥ ४ ॥ एतान्येव समवसरणानि चतुर्विंशतिदण्ड के निरूपयन्नाह ॥ नेरद्रयाणमित्यादि ॥ सुगम नवर नारकादिपञ्चेन्द्रियाणां समनस्कृत्वा चत्वार्यप्येतानि सम्भवन्ति ॥ विगलिदियज्जेत्ति ॥ एकहिचिचतुरिन्द्रियाणां समनस्कृत्वा त्रसम्भवतीति नोक्तानौति पुरुषाधिकारात् पुरुषविशेषप्रतिपादनाय प्रायः सदृष्टातसूत्राणि पुरुषसूत्राणि विचत्वारिंशत ॥ चत्वारिमेहेत्यादीनाह ॥ सुगमानिच नवरं मेघाः पयोदा गर्जितागर्जितकृत् नो वर्षिता न प्रवर्षणकारीति १ एव कश्चित्पुरुषो गर्जितेच गर्जितादान

जाव थणियकुमाणं एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं । चत्वारि मेहा पसत्ता तंजहा गजित्तानाम  
मेगेणोवासित्ता वासित्तानाममेगेणोगजित्ता एगेगजित्ताविवासित्तावि एगेणोगजित्ताणोवासित्ता ॥ एवा

वादी यावत् विनयवादी पचेद्रीमनसहितमाटे । इमज असुरकुमारमा पणि यावत् स्तनितकुमारताईं इम विगलेद्री एकेद्री वेदी तेद्री चउरेद्री वर्जी तेहने मन नथी । यावत् वैमानिकताईं ॥ चार प्रकारना मेघ कह्ये ते कहैछे । एक मेघ गाजे पणि वरसे नही १ । एक मेघ वरसेछे पणि गाजता नथी २ । एक गाजेछे वरसेछे ३ । एक गाजता नथी वरसता नथी ४ ॥ एह मेघनी परे चार प्रकारना पुरुष कह्ये ते कहैछे । एक गाजेछे प्रति ज्ञाकरीबोले हुं आ करीस पणि करता नथी १ इम चौजंगी जाणवी ॥ चार प्रकारे मेघ कह्ये ते कहैछे । एक गाजे बिजली नथी करता १ इम चौजंगी ॥

॥ ज्ञानव्याख्यानानुष्ठानशत्रुनिग्रहाटिविषये उच्चैःप्रतिज्ञावान् नो नैव वर्षितेव वर्षितावर्षितो भ्युपगतसम्पादकइत्यर्थः अन्यस्तु कार्यकर्त्ता नचोच्चैः प्रतिज्ञावानिति विति एव मितरावपिनेया २ ॥ विज्ज्याइत्ति ॥ विद्युत्कर्त्ता ३ एव पुरुषोपि कश्चिदुच्चैः प्रतिज्ञाता नच विद्युत्कारतुल्यस्य दानादिप्रतिज्ञातार्थारम्भाडस्वरस्य कर्त्ता अन्य स्वारम्भाडस्वरस्य कर्त्ता न प्रतिज्ञातेति एव मन्यावपोति ४ वर्षिता कश्चि ददानादिभिर्नतु तदारम्भाडस्वरकर्त्ता अन्यस्तु विपरीतो न्यउभयथा अन्यो न किंचिदिति ५ कालवर्षो अवसरवर्षोति एव मन्येपि ६ पुरुषस्तु कालवर्षीच कालवर्षी अवसरे दानव्याख्यानादिपरोपकारार्थप्रवृ

मेव चत्वारि पुरिसजाया पम्सत्ता तंजहा गज्जित्तानाममेगेणोवासित्ता ४ ॥ चत्वारि मेहा प० तंजहा गज्जित्तानाममेगेणोविज्जुयाइत्ता विज्जुयाइत्तानाममेगेणोगज्जित्ता । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पम्सत्ता तंजहा गज्जित्तानाममेगेणोविज्जुयाइत्ता ४ । चत्वारि मेहा प० तंज० वासित्तानाममेगेणोविज्जुयाइत्ता । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पम्सत्ता तंजहा वासित्तानाममेगेणोविज्जुयाइत्ता ४ ॥ चत्वारि मेहा पम्सत्ता तंजहा कालवासीनाममेगेणोअकालवासी । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पम्सत्ता तंजहा कालवासीनाममेगेणोअका

वली च्यार मेघ कह्या ते कहैछे । एक वरसेछे पणि विजली नथी करता १ इम चौजंगी ॥ इम च्यार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे । एक वचने वोले पणि देवानो आडंवर नथी एम चौजंगी ॥ एकदे पणि वचननो आडवरनथी इमचौजंगी ॥ वली च्यार प्रकारे मेघछे ते कहैछे । एक काले वरसेछे अकालेनथी १ इम चौभंगी ॥ इम च्यार प्रकारे पुरुष कह्या ते कहैछे । एक अवसरमादानदे अवसरविनानदे १ इम चौजंगी ॥ वली च्यार

॥ त्तिक्त एकः अन्यस्त्व न्यथेति एवमेवौ ७ क्षेत्रं धान्यात्पत्तिस्थान ८ पुरुषस्तु क्षेत्रवर्षी च क्षेत्रवर्षी पात्रेदानशुतादीना निक्षेपकः अन्यो विपरीतोऽन्यस्तथा  
 ॥ विधिविवेकिकाल तथा मत्तोदर्यात् प्रवचनप्रभावनादिकारणतोवा उभयस्वरूपो न्यस्तु दानादावप्रवृत्तिरिति ९ जनयिता मेघो यो हृष्ट्या धान्य सुन्नमयति  
 ॥ निमीपयितात् यो हृष्ट्यै सफलता नयतीति एव मातापितरावपोतिपसिद्ध एव माचार्योपि मिथ प्रत्युपनेतय इति ११ विवक्षितभरतादिक्षेत्रस्य ग्राह्यता  
 ॥ दिकालस्यावा देशे प्राप्नोवा देशेन वर्षतीति देशवर्षी १ यस्तु तयोः सर्व्वयोः सर्व्व्यात्मनावा वर्षेति ससर्व्ववर्षी २ यस्तु क्षेत्रतोदेशे कालतः सर्व्वेन प्राप्नोवा

लवासी ॥ चत्वारि मेहा प० तं० खेत्तवासीनाममेगेणोऽखेत्तवासी । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया प० तं०  
 खेत्तवासीनाममेगेणोऽखेत्तवासी ॥ चत्वारि मेहा पण्णा तजहा जणइत्तानाममेगेणो निम्मवइत्ता णिम्मव  
 इत्तानाममेगेणो जणइत्ता ॥ एवामेव चत्वारि ञ्जम्मापियरो प० तं० जणइत्तानाममेगेणो निम्मवइत्ता ४ ॥  
 चत्वारि मेहा पण्णा तजहा देसवासीणाममेगेणो सत्तवासी ४ । एवामेव चत्वारि रायाणो प० तं० देसा

मेघ कट्या ते कहैछे । एक क्षेत्रे वरसे जिहा धान थाय पणि ऊखरे नथी वरसतो १ इमचीभंगी ॥ इम चार पुरुष कट्या ते कहैछे । एक पाते दान  
 करे कुपाते नथी १ इम चीभंगी ॥ बली चार मेघ कट्या ते कहैछे । एक प्रथम बरसीने धान उपजावे पणि पूरानीपजावे नही १ एकमेघ धान नी  
 पजावे पणि उपजावे नही २ इम चीभंगी ॥ इम एसरखा चार मातापिता कट्या ते कहैछे । एक पुनने जरीछे पणि उल्लेरतानथी १ इम गुरुशिष्यने  
 पणि ताणवा इमचीभंगी ॥ बली चार मेघ कट्या ते कहैछे । एक मेघ एक देशमां वरसे पणि सघले नथी वरसतो १ इमचीभंगी ॥ एहनी परे चार

॥ सर्वत ३ अथवा कालतोदेशे क्षेत्रतः सर्वत्र आत्मनोवा सर्वत्र ४ अथवा आत्मनो देशे न क्षेत्रतः सर्वत्र ५ कालतोवा सर्वत्र ६ अथवा क्षेत्रकालतो देशे आत्मनः सर्वतः ७ अथवा क्षेत्रतोदेशे आत्मनोदेशे नच कालतः सर्वत्र ८ अथवा कालतोदेशे आत्मनो देशे नक्षेत्रतः सर्वत्र ९ इत्येवं नवभिर्विकल्पैर्वर्षति स देशवर्षी सर्ववर्षीचेति चतुर्थः सुज्ञानइति १३ राजातु यो विवक्षितक्षेत्रस्य मेघवत् देशे एव योगक्षेमकारितया प्रभवति सदेशाधिपति न सर्वाधिपतिः सच पक्षीपत्यादि र्यस्तु न पक्षादौ देशे अन्यत्रतु सर्वत्र प्रभवति स सर्वाधिपति न देशाधिपति र्यस्तु उभयाधिपतिः अथवा देशाधिपति भूत्वा सर्वाधिपति र्योभवति वासुदेवादिवत् स देशाधिपतिश्चेति चतुर्थोराज्यभ्रष्टइति ॥ १४ ॥ पुक्खलेत्यादि एगेणवासेणति ॥ एकया वृद्ध्या भावयतीति उदकस्नेहवतीं करोति धान्यादि निष्पादनसमर्था मितियावत् भुवमिति गम्यते जिम्हस्तु बहुभिर्वर्षणै रेकमेव वर्षं मद्दयावत् भुव भावयति नैववा भावयति रूक्षत्वा

हिवर्ङ्णाममेगेणोसह्राहिवर्ङ् ४ । चत्वारि मेहा पत्तता तंजहा पुक्खलसंवहए पज्जुस्से जीमूए जिम्मए । पो र्खलसंवहएणं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइ जावेइ । पज्जुस्सेणं महामेहे एगेणंवासेणं दसवासस

प्रकारना राजा कहिया तेकहैछे । एकराजा एकदेशमाछे पणि सर्वदेशनो धणी नथी १ इम चौजंगी चौथे जागे राज्यजूराराजा ॥ बली च्यार मेघ कह्या ते कहैछे । पुष्करसंवर्तक १ । प्रदुम्न २ । जीमूत ३ । जिम्ह ४ ॥ पुष्करसंवर्तकनामा महामेघ एकवार वरसे दसहजार वर्षलगे धरती प्रते स्नेहवतकरे १ । प्रदुम्ननामा महामेघ एकवार वरसे एक हजार वर्षलगे धरतीप्रते स्नेहवतकरे २ । जीमूतनामा महामेघ एकवार वरसे दसवर्षलगे धरती प्रते स्नेहवतकरे ३ । जिम्हनामा महामेघ घणीवारवरसे तिवारे एकवर्षलगे धरती प्रते स्नेहवतकरे अथवानजावे ४ ॥ एहवा ४ पुरुष कहवा

॥ तज्जलस्येति अनान्तरे मेघानुसारेण पुरुषाः पुष्कलावर्त्तसमानादयः पुरुषाधिकारत्वा दभ्यूह्यादिति तत्र सकृदुपदेशेना दानेनवा प्रभूतकालंयावत् शुभस्त  
 ॥ भाव मीश्वरंवा देहिन यः करो त्यसा वाद्यमेघसमानः एव स्तोकोत्तरस्तोकोत्तमकालापेक्षया द्वितीयतृतीयमेघसमानौ असकृदुपदेशादिना देहिन मत्प  
 कालं याव दुपकुर्वन् नुपकुर्वन्वा चतुर्थमेघसमानइति करण्डको यस्ताभरणादिस्थान जनप्रतीतः श्वपाककरण्ड साण्डालकरण्डकः सच प्राय यर्मपरि  
 कर्मोपकरणयथादिचर्मोयस्थानतया अत्यन्त मसारो भवति वेश्याकरण्डस्तु जतुपूरितस्वर्णाभरणादिस्थानत्वा त्किञ्चि त्ततः सारोपि वक्ष्यमाणकरडापेक्षया  
 त्व सारएवेति गृहपतिकरडकः शोमकोटुं विककरण्डकः सच विगिष्टमणिसुवर्णभरणादियुक्तात्वा त्सारतरः राजकरण्डकस्तु अमूल्यरत्नादिभाजनत्वा त्सा  
 रतमइति १६ एवमाचार्योयः षट्प्रज्ञापकगाथारूपसूत्रार्थधारीविगिष्टक्रियाविकलग्न सप्रथमो ऽत्यन्तासारत्वात् यस्तु दुरधीतश्रुतलघोपि वागाडम्बरेण सु

याइं जावेइ । जीमूएणंमहामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं जावेइ । जिम्मेणंमहामेहे वज्जवासेहि एणंवासं  
 जावेइवा णवाजावेइ । चत्तारि करंरुगा पन्नत्ता तजहा सोवागकरंरुए वेसियाकरंरुए गाहावइकरंरुए  
 रायकरंरुए । एवामेव चत्तारि श्यायरिया पन्नत्ता तजहा सोवागकरंरुगसमाणे वेसियाकरंरुगसमाणे गाहा

एकवार उपदेश सांजली घणांकालताइं धर्मनी मींजी जेदाइं ॥ चार करंडिया कइया तेकहेछे । चंडालनो करंड चामडो वधूहोय असार १ वेइयाना  
 करंड जेहमां लाखजस्या आजरणहोइ काईं क सार २ व्यवहारियानो करंड पणि सुवर्णसार रतन ३ राजानो करंड अमोलिकरत्नस्यो घणोसार ४ ॥  
 इम चार आचार्यछे ते कहैछे । चंडालना करंडसमान उत्सूत्रज्ञापी क्रियारहित यती साधु घणो असार १ । वेश्याकरंडसमान दुष्टरीते श्रुत थोळी

गधजन मावर्जयति सद्वितीयः परिचाऽक्षमतया ऽसारत्वादेव यस्तु स्वसमयपरसमयज्ञः क्रियादिगुणयुक्तश्च स तृतीयः सारतरत्वात् यस्तु समस्ताचायंगु  
णयुक्ततया दीर्घकरकल्पः स चतुर्थः सारतमत्वात् सुधर्मादिवदिति १७ सालो नामैकः सालाभिधानवृक्षजातियुक्तत्वात् सालस्यैव पर्याया धर्मा बहलच्छा  
यत्वासेव्यत्वादयो यस्य स सालपर्याय इत्येकः सालो नामैकइति तथैव एरंडस्यैव पर्याया धर्मा अबहलच्छायत्वा सेव्यत्वादयो यस्य स एरंडपर्यायइति द्वि  
तीयः एरंडो नामैक एरंडाभिधानवृक्षजातीयत्वा सालपर्यायो बहलच्छायत्वादिधर्मयुक्तत्वा दिति तृतीयः एरंडो नामैक स्तथैव एरंडपर्यायो ऽबहलच्छा  
यत्वा दोरंडधर्मयुक्तत्वा दितिचतुर्थः १८ आचार्यस्तु सालइव सालो यथाहि सालो जातिमानेव माचार्योपि यः सत्कुलः सद्गुरुकुलश्च ससाल एवो च  
ते तथा सालपर्यायः सालधर्मा यथाहि सालः सत्वचत्वादिधर्मयुक्त एव यो ज्ञानक्रियाप्रभवयशःप्रभृतिगुणयुक्तो भवति स तथोच्यते इत्येकः तथा सालो

वड्करंरुगसमाणे रायकरंरुगसमाणे । चत्तारि रुक्का पस्यत्ता तंजहा सालेणाममेगेसालपरियाए सालेणाम  
मेगेएरंरुपरियाए एरंरु ० ४ । एवामेव चत्तारि ञ्चारिया पस्यत्ता तंजहा सालेणाममेगेसालपरियाए साले

सो जणी ज़ोलालोकने रीभावे अजव्यवत् कांडकसार २ । गाथापतिना करंडसमान स्वसमयनो जाण क्रियावंत ३ । राजाना करंडसमान जे सर्व  
आचार्यगुण सहित जिनसरिखो ४ ॥ च्यार प्रकारना वृक्ष कह्या ते कहैछे । एक सालनामे वृक्षछे अने सालिनी पर्यायछे घणी छायाछे सहायछे घणी  
रमणीय फूलफूले । एक जाति सालवृक्षछे एरंडनो पर्यायछे छायादिधर्म एरंड सरखाछे । एम चार आचार्य कह्या तेकहैछे । जातें साल सरखो सुगुरु  
कुलनो सालपर्याय ते ज्ञानक्रियायशगुणयुक्त जातिसालवृक्षसरखो एरंडपर्याय ज्ञानक्रियादिगुणरहित एकजाति एरंड इम चौभगी ॥ चार बलीवृक्ष



नामेकद्रति तथेव एरंडपर्यायस्तू ताविपर्यया दितिद्वितीयः एव मितरावपीति १६ तथा साल स्तथेव सालएव परिवारः परिकरो यस्य स साल परिवार  
 एवं शेषायमिति २० आचार्यस्तु सालएव सालो गुरुकुलश्रुतादिभि रतमत्वा सालपरिवारः सालकल्पमहानुभावसाधुपरिकरत्वा तथा एरंडपरिवार  
 एरंडकल्पनिर्गुणसाधुपरिकरत्वात् एव मेरडोपि श्रुतादिभिर्हीनत्वा दितिचतुर्थः सजानः उता चतुर्भंग्या एव भावनार्थं ॥ सालदुमेल्यादि ॥ गाथाचतुष्पां व्यक्तां

गाममेगेएरंरुपरियाए एरंरुणाममेगे० ४ । चत्तारि रुक्का पशुत्ता तजहा सालेणामंएगे सालपरिवारे ४ ।  
 एवामेव चत्तारि ञ्णायरिया पन्नत्ता तंजहा सालेणामंएगेसालपरिवारे ४ । सालदुममज्जगारे जहसालेणा  
 महोइदुमराया । इयसुंदरञ्णायरिए सुंदरसीसेमुणेयव्वे ॥ १ ॥ एरंरुमज्जगारे जहसालेणामहोइदुमराया ।  
 इयसुंदरञ्णायरिए मंगुलसीसेमुणेयव्वे ॥ २ ॥ सालदुममज्जयारे एरंरुणामहोइदुमराया इयमंगुलञ्णायरिए  
 सुंदरसीसेमुणेयव्वे ॥ ३ ॥ एरंरुमज्जयारे एरंरुणामहोइदुमराया इयमंगुलञ्णायरिए मंगुलसीसेमुणेयव्वे ४ ।

कप्पा ते कहैळे । एक सालनामे वृक्ष अने सालनो परिवार इम चोभंगी ॥ एमचार आचार्य कप्पा ते कहैळे । एक साल सरखोगुरू अने साल जेह  
 वोज साधुशिष्यनो परिवारळे जिम सालना वृक्षमध्ये सालनामेज वृक्षनो राजाहोय । एम सुंदर जलो आचार्य अने सुंदर शिष्यनो परिवार जाणवी  
 एरंड वृक्षमांहे जिम सालनामे वृक्षनो राजाहोय ॥ इम जलो आचार्य माठाकुशिष्यनो परिवार सालना वृक्षमाहिं जिम एरंड वृक्षनो राजा होय  
 इम माठो आचार्य क्रियारहित अने चेला सुशिष्य ३ एरंडना वृक्षमाहें एरंडो नामे होय वृक्षनो राजा एम कुगुरु अने कुशिष्यनोपरिवार वेतु क्रिया

नवरं मगुल मसुंदरं २१ अनुश्रोतसा चरतीत्यनुश्रोतधारी नद्यादिप्रवाहगामी एवमन्ये त्रयः २२ एवं भित्ताकः साधु र्योह्यभिग्रहविशेषा दुपाश्रयसमीपात् क्रमेण कुलेषु भिचते सो नुश्रोतधारिमत्स्यव दनुश्रोतधारी प्रथमो यस्तू त्क्रमेण गृहेषुभिच्यमाण उपाश्रय मायाति स द्वितीयो यस्तु क्षेत्रांतरेषु भिचते स तृतीयः क्षेत्रमध्ये चतुर्थः २३ मधुसिक्थमदनं तस्य गोलो वृत्तपिण्डो मधुसिक्थगोल एवमन्येपि नवर जतुलाक्षा दारुमृत्तिके प्रसिद्धे इति २४ यथै ते गोला मृदुकठिनकठिनतरकठिनतमाः क्रमेण भवन्त्येव ये पुरुषाः परीषहादिषु मृदुदृढदृढतरदृढतमसत्त्वा भवन्ति ते मधुसिक्थगोलकसमाना इत्यादिभि र्व्य

चत्तारि मच्छा पस्यत्ता तंजहा अणुसोयचारी पफिसोयचारी अंतचारी मज्जचारी । एवामेव चत्तारि जिस्कागा पस्यत्ता तजहा अणुसोयचारी पफिसोयचारी अंतचारी मज्जचारी । चत्तारि गोला पस्यत्ता तंजहा मधुसित्यगोले जउगोले दारुगोले महियागोले । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्यत्ता तजहा मधु सित्यगोलसामाणे ४ । चत्तारि गोला पस्यत्ता तजहा अयगोले तनुगोले तवगोले सीसगोले । एवामेव

रहित ४ ॥ एम च्यार मच्छ कह्या ते कहैछे । एक नदीना प्रवाहसरखो चाले १ । एक प्रवाहने साहमो चाले २ । एक पाणि उपरे चाले हेठेचाले ३ । एक पाणिने मध्ये चाले ४ ॥ एम चार भित्तु अजिग्रह धारी साधु कह्या ते कहैछे । अपासराथी अनुक्रमे गृहे जिह्वाले १ । छेहकाथी उपासरालगे आवे २ । छेहले घरे गोचरीकरे ३ । मध्यघरे गोचरीकरे ४ ॥ च्यार गोला कहिया ते कहैछे । मधुसिक्थ ते मधुगोलो १ । लाखनोगोलो २ । लाक डानो गोलो ३ । माटीनो गोलो ४ ॥ एगोलासरखा बहुकर्मा पुरुष कहिया गुरु १ । गुरुतर २ । गुरुतम ३ । अत्यंतगुरु ४ ॥ मधुसिक्थगोला समान

पदेशै र्व्यपदिश्यन्तइति २५ अयोगोल्लादयः प्रतीताः २६ एतैश्चा योगोल्लाकादिभिः क्रमेण गुरुगुरुतरगुरुतमात्यतगुरुभिरारम्भादिविचित्रप्रवृत्त्युपार्जितकर्मभा  
रा ये पुरुषा भवन्ति ते अयोगोल्लाकसमाना इत्यादिव्यपदेशवतो भवन्ति पितृमातृपुत्रकलत्रगतस्नेहभारतीवेति २७ हिरण्यादिगोलेषु क्रमेणा लपगुणगुणा  
धिकगुणाधिकतरगुणाधिकतमेषु पुरुषाः समृद्धितो ज्ञानादिगुणतोवा समानतया योज्याः २८ पत्राणि पर्णानि तद्वत् प्रतनुतया यानि अस्यादीनि  
तानि पत्राणीति असिः खड्गः सएव पत्र मसिपत्र करपत्र क्रकच येन दारुच्छिद्यते क्षुरक्षुरः सएव पत्र क्षुरपत्र कदम्बवीरिकेति शस्त्रविशेषइति ३० तत्र

चत्वारि पुरिसजाया पद्मज्ञा तजहा अयगोल्लासमाणे जाव सीसगोल्लासमाणे । चत्वारि गोला पद्मज्ञा हिर  
ण्यगोले सुवर्णगोले रयणगोले वयरगोले । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पद्मज्ञा तजहा हिरण्यगोल्लासमाणे  
जाव वयरगोल्लासमाणे । चत्वारिपत्ते पद्मज्ञे तजहा असिपत्ते करपत्ते क्षुरपत्ते कलंबवीरियापत्ते । एवामेव

यावत् माटीना गोला समान ४ ॥ बली चार गोला कहिया ते कहैछे । लोहनी गोलो १ । तरुआनी गोलो २ । त्रांबानीगोलो ३ । सीसानोगोलो ४ ॥  
एस चार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे । लोहना गोला समान १ । यावत् सीसानागोलासमान ४ पिता माता पुत्र स्त्रीना स्नेहथी कह्या ॥ बली  
चार प्रकारना गोला कह्या ते कहैछे । रूपानीगोलो १ । सोनानीगोलो २ । रत्नानीगोलो ३ । हीरानीगोलो ४ । एक एकथी रिद्विये अधिक ॥  
इण सरखा चार पुरुष कह्या ज्ञानादिगुणेकरी अधिकअधिक जोडवा ते कहैछे । रूपानागोलासमान यावत् हीराना गोलासमान अधिकाधिक ॥  
चार पत्र कहिया पत्रसमान ते कहैछे । तरवारपत्र १ । करपत्र तेकरकचपत्र २ । क्षुरपत्र तेक्षुरपलो ३ । कदम्बवीरकपत्र शस्त्रविशेष ४ ॥ एणे प्रकारें

द्राक्छेदकत्वा दमेये' पुरुषो द्रागेव स्नेहपाशं छिनत्ति सो सिपत्रसमानो ऽवधारितदेववचनसनत्कुमारचक्रवर्त्तिवत् यस्तु पुनः पुन रुच्यमानो भावना  
 भ्यासात् स्नेहतरुछिनत्ति स करपत्रसमानस्तथाविधश्चावकवत् करपत्रस्यहि गमनागमनाभ्या कालजेपेण च्छेदकत्वादित्यस्तु श्रुतधर्ममार्गोपि सर्वथा स्नेह  
 च्छेदासमर्थो देशविरतिमात्रमेव प्रतिपद्यते स चुरपत्रसमान. चुरोहि केशादिक मल्पमेव च्छिनत्तीति यस्तु स्नेहच्छेद मनोरथमात्रेणैव करोति स चतुर्थः  
 अविरतसम्यग्दृष्टिरिति अथवा योगुर्वादिषु शीघ्रमन्दमन्दतरमन्दतमतया स्नेहं छिनत्ति स एव मपदिश्यते ३१ कटादिभिरातानवितानभावेन निष्पाद्यते  
 यः स कट कट इव कट इत्युपचारात् तत्त्वादिमयोपि कट एवेति तत्र ॥ सुठडेत्ति ॥ दृणविशेषनिष्पन्ने ॥ विदलकमेत्ति ॥ वशशकलकृतः ॥ चमकडेत्ति ॥  
 वर्तु व्यूतमचकादिः ॥ कवलकडेत्ति ॥ कवलमेवेति ३२ एतेषु चाल्पबहुवहुतरबहुतमावयवप्रतिबधेषु पुरुषा योजनीयास्तथाहि यस्य गुर्वादिष्वल्पः प्रतिबधः

चत्वारि पुरिसजाया पसह्ता तंजहा अंसिपत्तसामाणे जाव कलंववीरियापत्तसामाणे । चत्वारि कळा पसह्ता  
 तजहा सुंठकळे विदलकळे चमकळे कवलकळे । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया प० तं० सुंठकळसामाणे जाव

चार पुरुष कह्या ते कहैछे । तरवार सरखा पुरुष तरत स्नेह रागछेदे २ उपदेशदेता देता छेदे राग अनेद्वेषने करपत्र पूर्वे न छेदे ते श्रावक वरप  
 ला जेहवो सर्वथा छेदी नसके तेचोथो अविरति सम्यग्दृष्टि यावत् कदव पत्रसमान ते हलुंड राग छेदे सनत्कुमार चक्रीवत् ॥ चार कंड कह्या  
 पुद्गलना अवयवनीबध ते कहैछे । सुंठनो कंड थोडोबंध १ । विदलबध वासनी फाडीनोबध ३ चर्मनोबध तेबाधनो माचो ३ । कंवलनोकडते का  
 बलोज ४ ॥ एम चार पुरुष गुर्वादिकना प्रतिबध आश्री कह्या ते कहैछे । सुंठिना कंडसमान तेहने गुरुस्यूं प्रतिबंध थोडो निस्नेही यावत् कवल

स्वल्पश्रुतीकादिनापि विगमा त्सुठकटसमान इत्येव सर्वत्र भावनीयमिति ३३ चतुष्पदाः स्थलचरपचेंद्रियतिथिंच एकः खुरः पादेपादे येषांते एकखुरा  
 अश्वाद्य एव द्वौखुरौ येषांते तथा तेच गवाद्यः गडौ सुवर्णकारादोना मधिकरणो गडिका तद्वत्पदानि येषांते तथा ते हस्त्यादयः ॥ सणप्यति ॥  
 सनखपदा नाखरा, सिहादय इहो त्तरस्त्रवयेच जीवाना पुरुषशब्दवाच्यत्वात् पुरुषाधिकारतेति ३४ चर्ममयपक्षाः पक्षिणः चर्मपक्षिणो पल्लुलीप्रभृ  
 तय एव लोमपक्षिणो हसादयः समुद्रकवत् पक्षी येषांते समुद्रकपक्षिणः समासांत इन् तेच बहिर्द्वीपसमुद्रे श्वेवविततपक्षिणोपीति ३५ ॥ क्षुद्रा अधमा  
 अनतरभवे सिद्धाभावात् प्राणा उच्छासादिमतः क्षुद्रप्राणा, समूर्ध्वेन निर्वृत्ता सचूर्द्धिमा तिरश्चां सत्का योनि र्येषांते तथा पदत्रयस्य कर्मधारयेसति

कवलकणसामाणे । चउव्विहा चउप्पया पस्सत्ता तंजहा एगखुरा दुखुरा गंभीपदा सणप्यदा ॥ चउव्विहा  
 परकी प० तजहा चम्मपरकी लोमपरकी समुग्गपरकी विययपरकी ॥ चउव्विहा खुद्दपाणा पस्सत्ता तंजहा  
 वेइदिया तेंदिया चउरिंदिया समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्कजोणिया । चत्तारि परकी प० तंजहा णिवइत्ता

कंठ समान ॥ चार प्रकारना चतुष्पदछे तेकहैछे । एक खुरीछे पगे अश्व १ । बेखुरी ते गाय २ । गंडीपद ते सोनारनी हाथी ३ । नखला सिंहप्रमु  
 ख ४ ॥ चार प्रकारना पक्षी कह्या तेकहैछे । चर्मपक्षी ते चामडीनी पांख वागुलछाया १ । रोमनी पांख ते हसादिक २ । समुद्रपक्षी डावडा समान  
 पाखछे ३ । मोकली पाख रहेछे तेविततपक्षी मनुष्य लोक बाहिर ४ ॥ चार प्रकारना अधमप्राणीछे जवांतरे एके मोक्ष नजाय ते कहैछे । बेद्री १ ।  
 तेद्री २ । चउरिद्री ३ । समूर्द्धिमपंचेद्री तिर्यच ४ ॥ ए चार चउदस्थानके उपजेते ॥ चार प्रकारना पक्षी कहिया ते कहैछे । एक पक्षी मालाथी

संमूर्द्धिमपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकादिति भवति निपतिता नीडा दवतरीता अवतरीतु शक्तो नामैकः पक्षी धृष्टत्वा दन्यत्वाद्वा नतु परिव्रजिता नपरिव्रजितु  
 शक्तो बालत्वा दित्येकः एव मन्थः परिव्रजितु शक्तः पुष्टत्वा नतु निपतितुं भौरत्वा दन्यस्त्वं भयप्रतिषेधवा नतिबालत्वादिति ३७ निपति  
 ता भिक्षाचर्याया मवतरीता भोजनाद्यर्थित्वा नतु परिव्रजिता परिभ्रमको आनत्वा दलसत्वा कृज्जालुत्वादेत्येकः अन्यः परिव्रजिता परिभ्रमणशील आ  
 श्रया त्रिगंतः स नतु निपतिता भिक्षार्थं मवतरीतुमशक्तः सूत्रार्थाशक्तत्वादिना शेषौ स्पष्टौ ३८ निष्कृष्टो निष्कर्षितः स्तपसा कथदेह इत्यर्थः पुनर्निष्कृष्टो

णाममेगेणोपरिवइत्ता परिवइत्ताणाममेगेणोणिवइत्ता एगेणिवइत्ताविपरिवइत्तावि एगेणोणिवइत्ताणोपरिव  
 इत्ता । एवामेव चत्तारि जिस्कागा प० तं० णिवइत्ताणाममेगेणोपरिवइत्ता चत्तारि पुरिसजाया प० तं० णि  
 क्कठेनाममेगेणिक्कठे णिक्कठेनाममेगेणिक्कठे ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० णिक्कठेनाममेगेणिक्कठप्या

उडी जावाने समर्थे पणि अरहोपरो फरवा समर्थं नथी बालक माटे १ । एकपंखी फरवा समर्थे पणि मालाथी नीसरिवा समर्थं नथी बीहक  
 णमाटे २ । एक मालाथी निवर्तवा निकलवा समर्थं अने फरवाने समर्थं बीहकण नथी ३ । एक मालाथी निकलवा समर्थं नथी अने फरवा समर्थं  
 नथी घणोवालकमाटे ४ ॥ एम च्यार भिल्लुसाधु कह्या ते कहैछे । एक गोचरीये जावा समर्थं जोजनना अरथी माटे पणि सघले घरे फरवा सम  
 र्थं नथी ग्लान आलसी लज्जालुमाटे इम चौजंगी । बली च्यार पुरुष कह्या ते कहैछे एक शरीरे निकृष्ट तपे दुबलछे देहअने जावथी दुबलो कषाय  
 रहित १ । एक शरीरे दुबलो अने जावथी कषाये करीअनिकृष्ट २ । इम चौजंगी ॥ बली चार पुरुष कह्या ते कहैछे । एक शरीरे दुबलो अने कषा

भावतः कृगौकृतकपायत्वा देव मन्ये त्रयद्विति ३८ एतद्भावनार्थमेवा नन्तरसूत्र निष्कृष्टः कृशशरीरतया तथा निष्कृष्ट आत्मा कषायादिनिर्मथनेन यस्यस्य  
 तथे त्येव मन्ये त्रयद्विति अथवा निष्कृष्ट स्तपसा कृगौकृत पूर्व म्पद्यादपि तथैवे त्येव मादिसूत्र व्याख्येय द्वितीयन्तु यथोक्त मेवेति ४० बुधो बुधत्वकार्यभू  
 तसत्क्रियायोगात् उक्तच पठक पाठकश्चैव येचान्येतत्त्वचितकाः सर्वेभ्यसनिनोराजन् यःक्रियावान्सपडितइति ॥ १ ॥ पुन बुध' सविवेकमनस्त्वा दित्येको  
 अग्न्यो बुध स्तथैव अबुध स्वविविक्तमनस्त्वादपर स्वबुधो असत्क्रियत्वा बुधो विवेकवच्चित्तत्वा चतुर्थ उभयनिषेधादिति ४१ अनन्तरसूत्रेणै तदेव व्यक्तौक्रिय  
 ते बुध' सत्क्रियत्वात् बुध हृदय मनो यस्य स बुधहृदयां विवेकमनस्त्वात् अथवा बुधः शास्त्रज्ञत्वात् बुधहृदयस्तु कार्येषु अमूल्यत्वात् दित्येक एव मन्ये च  
 यज्जहाः ४२ आत्मानुकम्पक आत्महितप्रवृत्तः प्रत्येकबुधो जिनकल्पिकोवा परानपेक्षोवा निर्धृणः परानुकम्पको निष्ठितार्थतयातीर्थकर आत्मानपेक्षोवा

णिक्लृष्टेनाममेगेऽणिक्लृष्टप्पा ४ । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा बुहेनाममेगेबुहे बुहेनाममेगे अ्बुहे  
 ४ । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा बुहेनाममेगेबुहहियए ४ । चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तजहा अ्पा

य रहित दुर्वल आत्मा १ । एक दुर्वल शरीर अने आत्माकपायथी अनिकृष्ट मातो इमचौजंगी ॥ ए अर्थथी एकज ॥ वली चार पुरुष कह्या ते कहैछे  
 एक बुद्ध पण्डितछे जण्यामाटे जावथी पण्डित छे १ । एक पण्डितछे पणि जलीक्रियारहितमाटे अपण्डित इम चौजंगी ४ ॥ वली चार प्रकारना पुरुष  
 कह्या ते कहैछे । एक पण्डित शास्त्रना जाणमाटे अने पण्डित हृदयछे विवेकसाहित मनछे एम चारभागा ४ ॥ वली चार प्रकारना पुरुष कह्या  
 ते कहैछे । एक आत्मानुकम्प आत्मानोहित वाळे पणि परनो नथी तेप्रत्येकबुद्ध तथा जिनकल्पी इम ४ जाणा तीर्थकर परनो हितवांछे ४ । चार

द्वैकरसो मेतार्यवत् उभयानुकम्पकः स्वविरकल्पितः उभयानुकम्पकः पापात्मा कालगौकरिकादिरिति ४३ अनन्तर पुरुषभेदा उक्ता अपुना तद्व्यापार  
विशेष तद्देदसम्पाद्य मभिधित्सुः सूत्रसप्तकमाह ॥ चउव्विहेसनासेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर स्त्रिया सह वसन शयन सवासः द्यौ स्वर्ग स्तवासी देवो ध्रुपचा  
रा द्यो स्तत्र भवो दिव्यो वैमानिकसवधौत्यर्थः असुरस्य भवनपतिविशेषस्या य मासुरएव मितरौ नवरं राक्षसो व्यतरविशेष अतुर्भङ्गिकासूत्राणि देवासुरे  
त्येवमादि संयोगतः देवा १ असुर २ राक्षस ३ मनुष्य ४ षट् भवंति पुरुषक्रियाधिकारादेवा पध्वससूत्र तत्रा पध्वसन मपध्वस चारित्र्यस्य तत्फलस्यवा  
असुरादिभावना ज देवो असुरो राक्षसो मानुषो नितो निवास स्तत्रासुरभावनाजनित आसारोयेषुचा नुष्ठानेषु वर्त्तमानो ऽसुरत्व मर्जयति

याणुकपणुनाममेगेनोपराणुकंपणु ४ । चउव्विहे संवासे प० तं० दिह्वे ञ्णसुरे ररुक्से माणुसे । चउव्विहे सं  
वासे पणुत्ते तजहा देवेनाममेगेदेवीएसद्धिसंवासंगच्छइ देवेनाममेगेअसुरोएसद्धिसंवासंगच्छइ असुरेनाम  
मेगेदेवीएसद्धिसंवासंगच्छइ असुरेनाममेगेअसुरोएसद्धिसंवासंगच्छइ । चउव्विहे संवासे पणुत्ते तजहा देवे

प्रकारनो संवास ते स्त्रीसाथे वसवुं ते सवास तिर्यंच एकठा नथी रहता देववैमानिक १ । असुर जवनपति २ । राक्षसनो व्यंतर ३ । मनुष्यनो सं  
वास ४ ॥ बली च्यार प्रकारे सवास कह्यो ते कहैंछे । एक देवनामे वैमानिक देवीसाथे संवास संजोगादि पामे १ । एकदेवता आसुरी स्त्रीसुं वास  
करे २ । असुर जवनपति एक देवीसुं सवास पामें ३ । एक असुर आसुरीसु संवासकरे ४ ॥ बली च्यार संवास कह्या ते कहैंछे । देवतादेवीसु संवास  
करे वसे १ । एक देवछे ते राक्षसीसु संवास पामे २ । एक राक्षसछे देवीसुं संवास पामे जोगार्थी ३ । एक राक्षसछे ते राक्षसीसुं सवास पामे जोग



णाममेगेदेवीएसद्धिसंवासंगच्छइ देवेनाममेगेरक्सीएसद्धिसंवासंगच्छइ रक्सेनाम० । चउब्विहे संवासे प०  
 तजहा देवेनाममेगेदेवीएसद्धिसंवासंगच्छइ देवेनाममेगेमणुस्सीहिसद्धिसंवासंगच्छइ ४ । चउब्विहे संवासे  
 पसत्ते तजहा असुरेनाममेगेअसुरीहिसद्धिसंवासंगच्छइ असुरेनाममेगेरक्सीहिसद्धिसंवासंगच्छइ ४ ॥  
 चउब्विहे संवासे पसत्ते तजहा असुरेनाममेगेअसुरीएसद्धिसंवासंगच्छइ असुरेनाममेगेमणुस्सीएसद्धिसंवासं  
 गच्छइ । चउब्विहे संवासे प० त० रक्सेनाममेगेरक्सीएसद्धिसंवासंगच्छइ रक्सेनाममेगेमणुस्सीएसद्धि  
 संवासंगच्छइ ४ । चउब्विहे अवद्धसे प० त० आसुरे आजियोगे समोहे देवकिब्विसे । चउहिंठाणेहि जीवा

पामे ४ ॥ बली च्यार संवास कह्या ते कहैछे । एक देवछे अने देवांगनासाथे संवासपामे १ । एकदेवछे अने मनुष्यणीसाथे संवासपामे २ । एक  
 मनुष्यछे ते देवीसाथे संवासपामे ३ । एक मनुष्यछे ते मनुष्यणी साथे संवास पामे ४ ॥ बली च्यार प्रकारे संवास कह्या ते कहैछे असुरनामे एक  
 ते आसुरी साथे संवास पामे १ । असुरनामे एक तेराक्षसी साथे संवास पामे २ । इमचौजगी ॥ बली च्यार संवास कहिया ते कहैछे । असुरनामे  
 एक ते आसुरी साथे संवास पामे १ । असुरनामे एक ते मनुष्यणी साथे संवास पामे २ । इमचौभगी ॥ बली च्यार संवासकहिया ते कहैछे । राक्ष  
 सनामे एक ते राक्षसी साथे संवासपामे १ । राक्षसनामे एक तेमनुष्यणी साथे संवास पामे २ । इम चौजगी ॥ च्यार प्रकारना अपध्वंस ते चा  
 रित्रना फलनोवास कह्या ते कहैछे आसुरी जावना १ । अजियोग चाकरपणी पामे २ । समोहजावना ३ । कलिवपदेवता ४ ॥ चारथानके जीव असुर



परस्तपनकाटिकरणेनेति इयमप्येगमन्यत्र कोऊयभूगकम्मे पसिणाइयरेनिमित्तमाजीवी इड्डिरससायगरुओ अभिजोगंभावणंजुणइत्ति ॥ १ ॥ प्रओपुष्टप्रया  
दि रितर, स्वप्नविद्यादि रिति तथा संमुणतोति समोहो मूढात्मा देवविशेषएव तज्जाव स्तत्ता तस्यै सम्मोहताये,सम्मोहवया वेति उम्मार्गदेशनया सम्यग्दा  
र्गनादिरूपभायमार्गातिक्रान्त धर्मप्रकथनेन मार्गान्तरायेण मोचाध्वप्रवृत्ततद्धिघकरणेन कामाशसाप्रयोगेण शब्दादा वभिलाषकरणेन ॥ भिज्जत्ति ॥ लो  
भो ग्टि स्तेन निदानकरण मेतस्मा त्तपः प्रभृते शकवर्त्यादित्व मे भूयादिति निकाचनाकरण तेनेति इयम प्येव मन्यत्र उम्मार्गदेशओमग्ग नासओमग्गवि  
ण्डिवत्ती । मोहेणयमाहेत्ता सम्मोहभायणजुणइत्ति ॥ १ ॥ देवानां मध्ये किल्विषः पापो ऽतएवा सृष्ट्यादिधर्मको देव शासो किल्विष शेतिवा देवकि

चउहिठाणेहिंजीवाअजिनुगत्ताए कम्मपगरेंति तंजहा अणुक्कोसेणं परपरिवाएण जूइकम्मेण कोऊयकरणेण  
चउहिठाणेहि जीवा सम्मोहत्ताए कम्म पगरेंति तंजहा उम्मग्गदेसणयाए मग्गतएण कामासंसपण्णेणं जि  
ज्जानियाणकरणेण । चउहिंठाणेहिजीवा देवकिल्विसियाए कम्म पगरेंति तंजहा अरहताणअवसवयमाणे

आजीविका करे ४ ॥ च्यार थानके जीव अजियोग पणानो कर्म बांधे सेवकथाय तेकहैछे । आत्मोत्कर्षे पोताना गुणने अजिमाने १ । परदोष कह  
वाथी जूतकर्म रोगीने ओपधादि करे ३ । सौभाग्यादि निमित्तेशरीरे उगटणादिकरे ४ ॥ च्यार थानके जीव सम्मोह मूढात्मादेव विशेष पणानो  
कर्मबांधे उम्मार्गने देखाडवे जिनमार्गथीप्रन्य १ । मोक्षमार्गं चालताने अतरायकरे २ । कामा सशप्रयोगे विषयने अजिलापे ३ । लोअथी नियाणो करे  
तपस्वी चक्रीनी रिद्धि मागे ४ ॥ च्यार थानके किल्विष देवतानो कर्मबांधे देवतामा ढेडवतू अरिहंतना अवर्णवाद अवगुण बोले १ । अरहतना

ल्विषःशेष तथैवा ऽवर्णोऽज्ञाघा ऽसहोषोद्वेदनमित्यर्थः अयमर्थो न्यत्रैव मुच्यते णाणस्सकेवलीणं धम्मायरियाणसव्वसाह्मणं भासंअवन्नमादे किञ्चिसियभा  
 वणकुणइत्ति ॥ १ ॥ इह कदप्पभावनानोक्ता चतुस्थानकत्वा दित्यवसरञ्चाय मस्याइत्ति साप्रदर्श्यते कंदप्पेकुकुडए देवकुसीलियाविहासणकरेय विम्हाविंतोय  
 पर कदप्पभावणकुणइत्ति ॥ १ ॥ कदप्पःकदप्पकथावान् कुकुचितो भांडचेष्टो द्रवशीलो दर्पद्रुतगमनभाषणादिहामनकरो वेपरचनादिस्वपराहासोत्पा  
 दको विस्मापक इद्रजाली अयचा पध्वस. प्रवज्यान्वितस्येति प्रवज्यानिरूपणाय ॥ चउव्विहापव्वज्जेत्यादि ॥ सूत्राष्टक कण्ठ्य किन्तु इह लोकप्रतिवडनि  
 वांहादिमात्रार्थिना परलोकप्रतिवडा जन्मांतर कामाद्यर्थिना द्विधालोकप्रतिवडोभयार्थिना अप्रतिवडा विगिष्टसामायिकवतामिति पुरतो ऽयतः प्रव  
 ज्या पर्यायभाविषु शिष्याहारादिषु या प्रतिवडा सा तथोच्यते एव मार्गत पृष्टतः स्वजनादिषु द्विधापि काचित् अप्रतिवडा पूर्ववत् ॥ उवायत्ति ॥ अवपा

अरहंतपस्सत्तस्सधम्मस्सअवसंवयमाणे आयरियउवज्जायाणमवसवयमाणेवा चाउव्वस्सस्ससंधस्सअवसंव  
 यमाणे ॥ चउव्विहा पव्वज्जा प० त० इहलोगपडिवद्धा परलोगपडिवद्धा दुहउलोगपडिवद्धा अप्पडिवद्धा  
 चउव्विहा पव्वज्जा प० त० पुरउपडिवद्धा मग्गउपडिवद्धा दुहउपडिवद्धा अपडिवद्धा । चउव्विहा पव्वज्जा

कस्या धर्मना अवर्णवाद बोले जमालीवत् २ । आचार्य उपाध्यायना अवर्णवाद बोले ३ । चतुर्विधसंघनो अवर्णवाद बोले ४ ॥ चार प्रकारनी प्रव  
 ज्या कही ते कहेंछे । इहलोक प्रतिवद्ध ते पेटजरौ १ । परलोकने जोगादिकने अर्थ २ । इहलोक परलोकने जोगादिकने अर्थ ३ । अप्रतिवद्ध तेमो  
 जने अर्थ ४ ॥ चार प्रकारे प्रवज्या कही ते कहेंछे । पुरतआगलदीक्षा १ । मार्गतः पृष्टतः पाठलिथी स्वजनादिषु २ । वेप्रकारे प्रतिवद्ध ३ । अप्र

तः सद्गुरुणासेयाततो या प्रव्रज्या सा वपातप्रव्रज्या आख्यातस्य प्रव्रज्ये त्याद्युक्तस्य या स्यात् साख्यातप्रव्रज्या आर्यरक्षित भ्रातुः फल्गुरक्षितस्येवेति ॥  
सगारक्षित ॥ सकेत स्तस्मात् या सा तथा मेतार्यादीनामिव यदिवा यदित्व प्रव्रजति तदाहमपि इत्येव सकेततो या सा तथेति ॥ विहगगइक्षित ॥ विह  
गगत्या पत्निग्यायेन परिवारादिवियोगेन काकिनो देशान्तरगमनेनच या सा विहगगतिप्रव्रज्या कचि विहगप्रव्रज्येतिपाठ स्तत्र विहतगस्येवेति दृश्यं  
इति विहतस्यवा दारिद्र्यादिभि ररिभिर्वेति ॥ तुयावइक्षित ॥ तोदकत्वा तोदयित्वा व्यथा मुत्पाद्य या प्रव्रज्या दीयते मुनिचन्द्रपुत्रस्य सागरचन्द्रेणेव सा  
तथोच्यते ॥ ओयावइक्षित ॥ कचित्पाठ स्तत्र ओजो बल शरीरं विद्यादिसत्त्वा तत् कृत्वा प्रदर्श्य दीयते सा ओजयित्वे त्यभिधौयते ॥ पुयावइक्षित ॥  
मुष्णता वितिवचनात् प्लावयित्वा अन्यत्र नीत्वा ऽर्यरक्षितयत् पूतंवा दूषणव्यपोडेन कृत्वा या सा पूतयित्वेति ॥ वुयावइक्षित ॥ सभाष्य गौतमेन कर्षकव  
त् वचनया पूर्वपक्षरूप कारयित्वा निगृह्यच प्रतिज्ञावचनवा कारयित्वा या सा तथोक्ता कचिन् ॥ मोयावइक्षित ॥ पाठ स्तत्र मोचयित्वा साधुना तैला

पम्पत्ता तंजहा उवायपम्पत्ता अस्कायपम्पत्ता सगारपम्पत्ता विहगगइपम्प  
त्ता । चउद्विहा पम्पत्ता पम्पत्ता तजहा तुयावइत्ता पुयावइत्ता मोयावइत्ता

तिवद् ४ ॥ चार प्रकारे प्रव्रज्या कह्य ते कह्येळे । अपपात प्रव्रज्या गुरुसेवाथी १ । आख्यात प्रव्रज्या आर्यरक्षित जाई फल्गुरक्षितवत् २ । शृंगार प्रव्र  
ज्या सोमदेववत् ३ । दारिद्र्यी प्रव्रज्या ४ ॥ च्यार प्रकारे प्रव्रज्या कह्य तेकह्येळे । पीडाउपजावी दीक्षा लीधी १ । प्लावयित्वा नसाडी अन्यत्र लेजईने २ ।  
मुक्तीने साधुंण तैलमाटे दासीथई भगवत् मुनिचन्द्रना पुत्रसागरचद्र ३ । घृतादिभोजन करावी लालची देखाडी दीक्षा लीधी सप्रति निखारिवत् ४ ॥ बली

॥ र्थत्वा दासन्नप्राप्तभगिनीवदिति ॥ परिपुयावइत्तत्ति ॥ घृतादिभिः परिप्लुतभोजनः परिप्लुतएव तं कृत्वा परिप्लुतयित्वा सुहस्तिनो रक्वत् या सा तथोच्यत  
इति नटस्येव सवेगविकलधर्मकथाकरणीपार्जितभोजनादौना ॥ खइयत्ति ॥ खादित भक्षण यस्यांसा नटखादिता नटस्येववा ॥ खइत्ति ॥ सवेगशून्यधर्म  
कथनलक्षणो हेवाकःस्वभावो यस्यासा तथा एव भटादिष्वपि नवरं भट स्तथाविधवलोपदर्शनलब्धभोजनादेः खादिता आरभटवृत्तिलक्षणहेवाकोवा सिंहः  
पुनः शौर्यातिरेका दवज्जयोपात्तस्य यथा रक्वभक्षणेनवा खादिता तथाविधप्रकृतिर्वा शृगालस्तु न्यग्बृत्त्यो पात्तस्या न्यान्यस्थानभक्षणेनवा खादिता तत्स्व  
भावोवेति कृषि धीन्याये चेत्रकर्षणम् ॥ वावियत्ति ॥ सकृडान्यवपनवती ॥ परिवावियत्ति ॥ हिस्तिर्वा उत्पाद्य स्थानान्तरारोपणतः परिवपनवती शालिक  
षिवत् ॥ णिंदियत्ति ॥ एकदा विजातोय तृणाद्यपनयनेन शोधिता निदिता ॥ परिनिदियत्ति ॥ हिस्तिर्वा तृणादिशोधनेनेति ६ प्रव्रज्यातु ॥ वाविया ॥ सा

परिपुयावइत्ता । चउह्मिहा पल्लजा पस्यत्ता तजहा णडस्कइत्ता जडस्कइत्ता सीहस्कइत्ता सियालस्कइत्ता ।  
चउह्मिहा किसी प० तं० वाविया परिवाविया णिदिया परिणिदिया एवामेव चउह्मिहा पल्लजा पस्यत्ता

च्यार प्रकारे प्रव्रज्याकही तेकहैछे । नटनी परे संवेगरहित धर्मकथाये उपार्जित भोजनकरे १ । सुजटनी परे तथाविध बल देखाडी भोजन करे २ ।  
सिंहनीपरे शौर्यगुणदेखाडी भोजनकरे ३ । सियालपरे गरीब थई एकात अन्यत्रथी आणी भोजनकरे ४ ॥ च्यार प्रकारे कृषी खेत्रवाडी कही तेक  
हैछे । एकवार वाव्युउगे १ । बीजीवार उपाडीवाव्युं उगेशालि २ । एकवार नीदे तृणादि ३ । बारवार बे तृणवार नीदे उगे ४ ॥ ए दृष्टांते च्यार  
प्रकारे प्रव्रज्या कही ते कहैछे । सामायकादिविषे आलोयण रहित १ । मूल दोषलागे फरीचारित्रले २ एकवार अतीचारनी आलोयणाले ३ । बारं

मायिकारोपणेन ॥ परिवाविद्या ॥ महाव्रतारोपणेन निरतिचारस्य सातिचारस्यवा मूलप्रायश्चित्तदानतः निन्दिया सकृदतिचारालोचनेन परिणिन्दिया पु  
नः पुनरिति ७ ॥ धर्मपुंजियसमाणत्ति ॥ खले लूनपूतविशुद्धपुंजीकृतधान्यसमानासकलातिचारकचवरविरहेण लब्धस्वस्वभावत्वात् एका ग्यातु खलकएव  
यद्विरहितं विसारितं वायुना पूतपुंजीकृतं धान्य तत्समाना याहि लघुनापि यतेन स्वस्वभाव लप्स्यतइति ग्रन्थातु यद्विकोर्ण गोखुरत्तुणतया विचित्र धान्य  
तत्समाना याहि सप्तसमुत्पन्नातिचारकचवरयुक्तात्वा सामगान्तरापेक्षितया कालक्षेपलभ्यस्वस्वभावा सा धान्यविकीर्णसमानो च्यते ग्रन्थातु य त्सज्जर्षितं  
क्षेपादात्तर्षितं खल मानौत धान्य तत्समाना याहि बहुतरातिचारोपेतत्वा इहुतरकालप्राप्तस्वस्वभावा सा धान्यसङ्घर्षितसमानेति इहच पुंजितादे र्धा  
न्यविशेषणस्य परनिपातः प्राकृतत्वादिति इयंच प्रब्रज्या एवपिचिना संज्ञावशा ज्वतोति संज्ञानिरूपणाय सूत्रपक्षक ॥ चत्तारोत्वादि ॥ व्यक्तं कोजल सं  
ज्ञानं सज्ञा चैतम्यं तथा सातवेदनौयमोहनौयकर्मादयजम्यविकारयुक्त माहारसज्ञादित्वेन व्यपदिश्यत इति तथा चारसंज्ञा हाराभिलापः भयसंज्ञा भय

तंजहा वाविद्या परिवाविद्या णिंदिया परिणिंदिया । चउत्तिहा पसुज्जा प० तंजहा धर्मपुंजियसामाणा  
धर्मविरल्लियसामाणा धर्मविरिक्त्तसामाणा धर्मरकहियसामाणा । चत्तारिसम्मानं पसुत्तानं तंजहा ण्णा

वार अतीचार लगाडी आलोयणाले ४ ॥ बली च्यार प्रकारे प्रब्रज्या कही ते कहैछे । खलानी शुद्धकरी ठिगकीधो तेसरखी ते अतीचारने कचरे र  
हित १ । बीजी खलाणमां जवायरे विस्तार्यो धान्य तेसरखी ते थोडे उदममे शुद्ध थाय २ । नीजीदीक्षा वलदनीखुरीमा रुधाना ते कालांतरे शुद्ध  
थाय ३ । चौथीदीक्षाक्षेत्रथी खलाणमा प्राण्यु धान तेसमान अतीचार घणा ४ ॥ सर्वजीवने च्यार सज्ञाकही ते कहैछे आहार लेवानी सज्ञा ते

॥ मोहनोयसम्पाद्यो जीवपरिणामो मैथुनसंज्ञा वेदोदयजनितो मैथुनाभिलाषः परिग्रहसंज्ञा चारित्रमोहोदयजनितपरिग्रहाभिलाष इति अवमकोष्टतया रिक्तोदरतया मत्वा आहारकथा श्रवणादिजनितया तदर्थोपयोगेन सतत माहारचिन्तयेति हीनसत्त्वतया सत्त्वाभावेन मति भयवार्त्ताश्रवणभीषणदर्शनादिजनिता बुद्धि स्तया तदर्थोपयोगेन इहलोकादिभयलक्षणार्थपर्यालोचनेनेति चिते उपचिते मांसशोणिते यस्य स तथा तद्भाव स्तत्ता तथा चितमा

हारसम्पा ज्ञयसम्पा मेकुणसम्पा परिग्रहसम्पा । चउहिं ठाणेहि आहारसम्पा समुप्पज्जइ तंजहा उंसकोठ  
याए तुहावेयणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं मईए तदठोवगुणेणं । चउहिंठाणेहिं ज्ञयसम्पासमुप्पज्जइ तंजहा  
हीणसत्तयाए ज्ञयवेयणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं मईए तदठोवगएणं । चउहिंठाणेहिं मेकुणसम्पासमुप्पज्जइ  
तजहा चित्तमंससोणियाए मोहणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं मईए तदठोवगुणेण । चउहिं ठाणेहिं परिग्रह

आहार संज्ञा १ । ज्ञयसंज्ञा ते ज्ञयपामवो २ । मैथुनाजिलाश ते मैथुनसंज्ञा ३ । परिग्रहाजिलाप ते परिग्रहसंज्ञा ४ ॥ जीवने चार थानके आहार लेवानी संज्ञा उपजे पेट खालीहोय तिवारे १ । जूखवेदनी कर्मना उदयथी २ । मतिथी आहारनी वात सांजलवाथी ३ । निरंतर आहारनी चिन्ता करवाथी ४ ॥ चार थानके जीवने ज्ञयसंज्ञा उपजे ते कहैछे । हीनसत्त्व पणांथी १ । ज्ञयवेदनी कर्मना उदयथी २ । ज्ञयनीवात सांजल्यांथी ३ । निजरे देखवाथी इहलोक ज्ञयना विचारवाथी ४ ॥ चार थानके मैथुन संज्ञा उपजे ते कहैछे । मांस लोहीना उपचयथी वधवाथी डीले पूछवाथी १ । मोहनोयकर्मना उदयथी २ । मैथुननी कथा सांजल्याथी ३ । मैथुननी घणी चिंतना कस्यांथी ४ ॥ चार थानके जीवने परिग्रह संज्ञा उपजे ते कहैछे



सशोणिततया मत्या सुरतकथाश्रवणादिजनितबुद्ध्या तदर्थोपयोगेन मैथुनलक्षणार्थानुचिन्तनेनेति अविमुक्ततया सपरिग्रहतया मत्या सचेतनादिपरिग्रहदर्शनादिजनितबुद्ध्या तदर्थोपयोगेन परिग्रहानुचिन्तनेनेति संज्ञाहि कामगोचरा भवन्तीति कामनिरूपणसूत्रं व्यक्तच किन्तु कामा. शब्दादयः शृङ्गारा देवाना मेकातिकाल्यतिकमनोज्ञत्वेन प्रकृष्टरतिरसास्पदत्वादिति रूपोहि शृङ्गारो यदाह व्यवहारः पुनार्थो रन्योन्यरक्तयो रतिप्रकृतिः शृङ्गारइति मनुष्याणां करुणा मनोज्ञत्वस्या तथाविधत्वात् तुच्छत्वेन चण्टनष्टत्वेन शुकशोणितादिप्रभवदेहाश्रितत्वेनच शोचनात्मकत्वात् करुणोहि रसः शोकस्य भावः करुणः शोकप्रकृति रितिवचना दिति तिरया वीभत्सा जुगुप्सास्पदत्वात् वीभत्सरसोहि जुगुप्सात्मको यदाह भवतिजुगुप्साप्रकृति वीभत्स इति नैरयिकाणा रौद्रदारुणा अत्यन्तमनिष्टत्वेन क्रोधोत्पादकत्वात् रौद्ररसोहि क्रोधरूपो यतआह रौद्रः क्रोधप्रकृतिरिति एतेच कामा स्तुच्छगम्भीरयो वीध केतराइति तावभिधित्सु सदृष्टांतान्यष्टौ सूत्राण्याह ॥ चत्तारीत्यादि ॥ व्यक्तानि किन्तु उदकानि जलानि प्रज्ञप्तानि तत्रो त्तान नामैक तुच्छत्वात् प्र

सत्त्वा समुप्यज्जड तंजहा अविमुक्तयाए लोज्जवेयणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं मईए तदठोवनुगेणं । चउव्विहा कामा पस्सत्ता तजहा सिंगारा कलुणा वीजच्छा रोद्धा । सिंगाराकामामणुयाणं वीजच्छाकामातिरिस्कजो

परिग्रहसहितपणो १ । लोज्जवेदनी कर्मना उदयथी २ । परिग्रहनी वात साज्जल्याथी ३ । मतिथी तेहनी चणी चितना करवाथी ४ ॥ च्यार प्रकारे काम शब्दादिक कह्या ते कहैछे । शृंगारकाम देवताने १ । करुणकाम मनुष्यने २ । वीजत्सकाम जुगुप्सनीय ३ । रौद्रकाम क्रोधरूप ४ ॥ शृंगार काम देवताने १ । करुणकाम मनुष्यने २ । वीभत्सकाम तिर्यंचने ३ । रौद्रकाम अत्यत अनिष्ट माटे क्रोधना उपजावण हारने नारकीने ४ ॥ च्यार

तलमित्यर्थः पुनरुत्तानं स्वच्छतयोपलभ्यमध्यस्वरूपत्वा दुदकं जलं ॥ उत्ताणोदएत्ति । व्यस्तोयं निर्देशः प्राकृतशैलीवशात् समस्तद्रव भासते नच मूलोपा-  
त्तेनोदकशब्देनायङ्गताथी भविष्यतीति वाच्य तस्य बहुवचनान्तत्वेनेहासबध्यमानत्वात् साक्षादुदकशब्देच सति किं तस्य वचनपरिणामादनुकर्षणेने-  
त्येव सुदविस्मृतेपि भावनीयमिति १ तथोत्तानं तथैव गम्भीरं मुदकं गडुलत्वा दनुपलभ्यमानस्वरूप २ तथा गम्भीरं मगाधं प्रचुरत्वा दुत्तानं मुदकं स्वच्छत-  
योपलभ्यमध्यस्वरूपत्वात् ३ तथा गम्भीरं मगाधत्वात् पुनर्गम्भीरं मुदकं गडुलत्वादिति पुरुषस्तु उत्तानो ऽगम्भीरो बहिर्दर्शितमददैर्ग्यादिजन्यविकृतका-  
यवाक्चेष्टत्वा दुत्तानहृदयस्तु दैर्ग्यादियुक्तगुह्यधरणासमर्थचित्तत्वा दित्येकोन्य उत्तानं कारणवशाद्दर्शितविकृतचेष्टत्वात् गम्भीरहृदयस्तु स्वभावेनोत्ता-  
नहृदयविपरोतत्वात् हृदयस्तु गम्भीरो दैर्ग्यादिवत्त्वेपि कारणवशात् तस्मिन्नाकारतया उत्तानहृदयस्तु यैव चतुर्थं प्रश्नमविपर्ययादिति २ तथा उत्तानं प्रत-

णियाणं रोह्वाकामाणेरइयाणं । चत्वारि उदगा पस्सत्ता तंजहा उत्ताणेणाममेगेउत्ताणोदए उत्ताणेणाममेगे  
गंजीरोदए गंजीरेणाममेगेउत्ताणोदए गंजीरेणाममेगेगंजीरोदए । एवामेव चत्वारि पुरिसजाया पस्सत्ता

पाणी कह्या ते कहैछे । एक तुच्छ थोडो जलछे स्वस्थमाटे मध्यजणाय तेमाटे उत्ताणोदग १ । एक उत्तान तुच्छ जलछे अने गंजीरछे मध्यडोहलो-  
छे २ । गंजीरनाम एक उत्तानोदक ३ । गंभीर नाम एक गंजीरोदक ४ ॥ इण दृष्टान्ते चार प्रकारना पुरुषछे ते कहैछे । उत्ताण तुच्छ मुखछे अने  
हृदयछे १ । एक उत्ताननामा गंभीरहृदयछे २ । एम चार जांगा ४ ॥ बली चार पाणी कह्या ते कहैछे उत्तान नामा एक जल उत्तान अवज्ञासे  
स्थानविशेष १ । एक उत्तानछे पणि गंजीर दीसे ऊडोदीसे सांकडा ठाम माटे २ । इमचौजंगी ॥ इम चार प्रकारना पुरुष कह्या ते कहैछे । उत्तान

नत्वा दुत्तान मवभासते स्थाननिषेधात् १ तथा त्तान न्तथै गभीर मगाध मवभासते संकीर्णायत्वादिना २ तथा गभीर मगाध मुत्तानावभासितं पि  
स्तोर्णस्थानायत्वादिना ३ तथा गभीर मगाध गभीरावभासि तथाविधस्थानाश्रितत्वादिनैवेति ३ पुरुषस्तू त्तान सुच्छ उत्तानं एवा वभासते प्रदर्शि  
ततुच्छप्रिकारत्वात् द्वितीयः सम्युतत्वात् तृतीयः कारणतो दर्शितविकारित्वा चतुर्थः सज्जानः ४ तथा उदकसूत्रव दुदधिसूत्रद्वयमपि सदार्थान्तिक मवसे  
यमिति अथवा उत्तानः सगाधत्वादेक उर्ध्वदेशः पूर्वं पश्चादपि उत्तानएव वेलाया वहिः समुद्रेष्व भावात् द्वितीयस्तू त्तानः पूर्वं पश्चा दगभीरो वेला

तजहा उत्ताणेणाममेगेउत्ताणहियए उत्ताणेणाममेगेगञ्जीरहियए ४ । चत्तारि उदगा पस्सत्ता तजहा उत्ता  
णेणाममेगेउत्ताणजासी उत्ताणेणाममेगेगञ्जीरोजासी ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा  
उत्ताणेणाममेगेउत्ताणोजासी उत्ताणेणाममेगेगञ्जीरोजासी ४ । चत्तारि उदही पस्सत्ता तजहा उत्ताणेणाम  
मेगेउत्ताणोदही उत्ताणेणाममेगेगञ्जीरोदही । गञ्जीरिउत्ताणोणाममेगेदही । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया  
पस्सत्ता तंजहा उत्ताणेणाममेगेउत्ताणहियए ४ । चत्तारि उदधी प० तं० उत्ताणेणाममेगेउत्ताणोजासी  
उत्ताणेणाममेगेगञ्जीरोजासी ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता उत्ताणेणाममेगेउत्ताणोजासी ४ ।

तुच्छनामे एक तुच्छहृदय इम समुद्रनो दृष्टात इमचीजगी ॥ एम च्यार पुरुष जाण्णिवा ते कहैछे । एक उत्तानहृदयछे एमचीभगी ॥ च्यार समुद्रछे ।  
एक समुद्र उत्तान नाम १ । उत्तानअवजासे २ । उत्ताननामेएक ३ । गञ्जीरअवजासे ४ ॥ एम च्यार पुरुष कछा ते कहैछे । उत्तान नाम एक उत्ता

॥ गमेना गाधत्वात् तृतीयस्तु गभीरः पूव पश्चा हेलाविगमेनो ज्ञान उदधि चतुर्थः सुज्ञानः समुद्रप्रस्तावा चत्तरकान् सूत्रद्वयेनाह ॥ चत्तारितरगेत्यादि ॥  
 व्यक्त नवर तरन्तीति तरा स्तएव तरकाः समुद्र समुद्रवत् दुस्तर सर्ववैरत्यादिकं कार्यं तरामि करोमी त्येव मभ्युपगम्य तत्र समर्थत्वा देकः समुद्र तर  
 ति तदेव समर्थयती त्येक अन्यस्तु तदभ्युपगमासमर्थत्वा द्वोपद तत्कल्प देशविरत्यादिक मल्पतमं तरति निर्वाहयतीति अन्यस्तु गोपदप्राय मभ्युपग  
 म्य वीर्यातिरेका स्समुद्रप्रायमपि साधयतीति चतुर्थः प्रतीतः समुद्रप्राय कार्यं तरौत्वा निर्वाह्य समुद्रप्राये प्रयोजनांतरे विधीदति न त निर्वाहयति वि  
 चित्रत्वात् क्षयोपशमस्येति एव मन्ये त्रयदति पुरुषानैव कुभट्टष्टातेन प्रतिपिपादयिषुः सूत्रप्रपञ्च माह सुगम शाय नवर पूर्वः सकलावयवयुक्तः प्रमा

चत्तारि तरगा पस्सत्ता तंजहा समुद्धंतरामीएगेसमुद्धंतरइ समुद्धंतरामीएगेगोपतंतरइ गोपतंतरामीएगे ४ ।  
 चत्तारि तरगा पस्सत्ता तजहा समुद्धतरित्ताणाममेगेसमुद्धेविसीयइ समुद्धंतरेत्ताणाममेगेगोपएविसीयइ गो  
 पयं० ४ । चत्तारि कुंजा पन्नत्ता पुस्सेणाममेगेपुस्से पुस्सेणाममेगेतुच्छे तुच्छेणाममेगेपुस्से तुच्छेणाममेगेतुच्छे ।  
 एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा पुस्सेणाममेगेपुस्से ४ । चत्तारि कुंजा पस्सत्ता तजहा पुस्से

नअवज्जासे १ । इमचोज्जगी ॥ च्यारतरक कट्ठा ते कहैछे । समुद्रवत् दुस्तर सर्वविरतिकरं एम चिंतवी समुद्र तरे सर्वकार्य समर्थ समुद्रतरुं एम  
 चितवे पणि असमर्थ माटे गोपददेश समान विरतितरे गोपद गायना पगला समान आगमी करी बलवत थई समुद्र समान कार्यकरे इमचौभंगी ॥  
 बली च्यार प्रकारे तरक कट्ठा ते कहैछे । समुद्रतरीस इम कही समुद्रमां पैसे १ । समुद्र तरुं एम कही गोपद तरे पैसे २ । इमचौभंगी ॥ च्यार

ગોપેતોવા પુન પૂર્ણો મધ્વાદિશ્રુતઃ દ્વિતીયે ભજ્ઞે તુચ્છો રિતઃ સ્તૂતીયે તુચ્છો પૂર્ણાવયવો લઘુર્વા ચતુર્થઃ સુજ્ઞાનઃ અથવાપૂર્ણો શ્રુતઃ પૂર્વ મ્મશાદપિ પૂર્ણોએવે  
ત્યેવ ચત્વારોપિ પુરુષસુ પૂર્ણો જાત્યાદિભિર્ગુણૈઃ પુનઃ પૂર્ણોજ્ઞાનાદિભિરિતિ અથના પૂર્ણો ધનેન ગુણૈર્વા પૂર્વ પશ્યાદપિ તૈઃ પૂર્ણોએવેતિ એવ શેષાઅપિ ૨ પૂ  
ર્ણો વયવૈર્દધ્યાદિનાત્રા પૂર્ણૃણવા વભાસતે દ્રષ્ટૃણામિતિ પૂર્ણાવભાસીત્યેકો ન્યસુ પૂર્ણોપિ કુતથિ જેતો વિવચિતપયોજનસાધકત્વાદે સુચ્છોવભાસતે એ  
વ શેષો ૩ પુરુષસુ પૂર્ણો ધનશ્રુતાદિભિ સ્તદિનિયોગાચ્ચ પરિપૂર્ણૃણવા વભાસતે અન્યસુ તદવિનિયોગાત્ તુચ્છૃણવા વભાસતે અન્ય સુચ્છોપિ કથમપિ પ્રસ્તા  
વોચિતપ્રવૃત્તે પૂર્ણૃણવા વભાસતે અપરસુ તુચ્છો ધનશ્રુતાદિરહિતો ઽતએવ તદવિનિયોજકત્વાત્ તુચ્છાવભાસીતિ તથા પૂર્ણોનીરાદિના પુનઃ પૂર્ણ પુણ્યવા પવિ  
ત્ર રૂપ યસ્ય સ તથેતિ પ્રથમો દ્વિતીયે તુચ્છ હૈન રૂપ માકારો યસ્ય સ તુચ્છરૂપ એવશેષો ૫ પુરુષસુ પૂર્ણો જ્ઞાનાદિભિઃ પૂર્ણરૂપ પુણ્યરૂપોવા વિશિષ્ટ

ગામંણગેપુણ્ણોજ્ઞાસી પુણ્ણેગામંણગેતુચ્છોજ્ઞાસી ૪ । એવામેવ ચત્તારિ પુરિસજાયા પન્નત્તા તંજહા પુન્નેગામ  
મેગેપુન્નોજ્ઞાસી ૪ । ચત્તારિ કુંજા પસસત્તા તંજહા પુન્નેગામમેગેપુન્નરૂવે પુન્નેગામમેગેતુચ્છરૂવે ૪ । એવામેવ  
ચત્તારિ પુરિસજાયા પસસત્તા તંજહા પુન્નેગામમેગેપુણ્ણરૂવે ૪ । ચત્તારિ કુંજા પન્નત્તા તંજહા પુન્નેવિણગેપિ

કુમ કહ્યા તે કહેહે ૧ । એક પૂર્ણનામે ધૃતાદિકે શોજે ૧ । એક પૂર્ણનામે તુચ્છ ધૃતાદિ રહિત અવજ્ઞાસે ૨ । એક તુચ્છનામે પૂર્ણઅવજ્ઞાસે ૩ । એક  
તુચ્છનામે તુચ્છઅવજ્ઞાસે ૪ એમ ચ્યાર પુરુષ કહ્યા તે કહેહે ૧ । એક ધનાદિકે પૂર્ણ અને પૂર્ણ અવજ્ઞાસે દીસે ૪ ॥ બલી ચ્યાર કુંજ કહિયા તે કહેહે ૧ ।  
એક પૂરો કુમહે અને પૂર્ણરૂપહે આકાર સારો ૧ । એકપૂર્ણ પણ તુચ્છરૂપહે હીન આકારહે ૨ । હમચોભગી ॥ એમ ચ્યાર પુરુષ કહ્યા તે કહેહે ૧ ।

॥ रजोहरणादिद्रव्यलिगसद्भावात् सुसाधुरिति द्वितीयभङ्गे तुच्छरूपः कारणा च्यक्तलिङ्गः सुसाधु रेवेति तृतीये तुच्छो ज्ञानादिविहीनो निङ्गवादि अतुर्थो ॥ ट  
ज्ञानादिद्रव्यलिगहीनो गृहस्थादिरिति ६ तथा पूर्णं स्तथैव अपि सुच्छापेक्षया समुच्चयार्थः एकः कश्चित् प्रियाय प्रीतये अयमिति प्रियार्थः कनकादिमय  
त्वा त्सारइत्यर्थः तथा अपदल मपसदं द्रव्य कारणभूतं सृत्तिकादि यस्या सा वपदलो ऽवदलति वा दीर्यत इत्यवदल आमपक्ततया असारइत्यर्थः तुच्छो  
प्येवमिति ७ पुरुषो धनश्रुतादिभिः पूर्णः प्रियार्थः कश्चित् प्रियवचनदानादिभिः प्रियकारो सारइत्यर्थः अन्यस्तु नतथे त्यपदलः परोपकार प्रत्ययोग्यइ  
ति तुच्छोप्येव मेवेति ८ पूर्णो ऽपि जलादिविथन्दते श्रवति इह तुच्छं स्तुच्छजलादि सएव विथन्दते अपिः सर्वत्र समुच्चये प्रतियोग्यपेक्षयेति ९ पुरुषस्तु

यथे पुन्नेविण्णेष्वदले तुच्छेविण्णेष्वदले । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तंजहा  
पुन्नेविण्णेष्वदले तहेव चत्तारि कुंजा पन्नत्ता तंजहा पुन्नेविण्णेष्वदले पुन्नेविण्णेष्वदले तुच्छेवि  
ण्णेष्वदले तुच्छेविण्णेष्वदले । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा पुन्नेविण्णेष्वदले ।

एक पुरुष ज्ञानादिके पूर्णछे अने पूर्णरूपछे उंचो मुहपत्ति साधुरूप १ इमचौभंगी ॥ बली चार कुंज कह्या ते कहैछे । एक पूर्ण कुंजछे अने प्रिय  
छे सुवर्णमाटे १ । एक पूर्णछे पणि अवदलमाटीनो पाकोनथी २ । एकतुच्छहीन आकारछे पणि प्रियछे सुवर्णनो ३ । एक तुच्छआकार अने तुच्छ  
माटीनो ४ ॥ एम चार पुरुष कह्या ते कहैछे ॥ एक ज्ञानादिक पूर्ण अने प्रिय १ इमचौभंगी ॥ तेमज बली चार कुंज कह्या ते कहैछे ॥ एक पूर्ण  
छे पणि जलस्त्रवेछे १ । एकपूर्णछे स्त्रवतो नथी २ । एकतुच्छछे अने स्त्रवेछे ३ । एक तुच्छछे पणि स्त्रवतो नथी ४ ॥ एमज चार पुरुष कह्या ते कहैछे ॥

पूर्णां षेको पिष्यन्ते धनं ददाति पुतंगा न्योनेति तुच्छो प्यणयित्तादि रमिष्यन्ते ग्रन्थो नेयेति १० तथा भिन्नं स्फुटितो जर्जरितो राजीशुनः परिणा  
वि दुष्पक्त्वात् चरको ऽपरिणावी कठिनत्वादिति १ चारिणन्तु भिन्न मूलप्रायश्चित्तापत्त्या जर्जरितं छेदादिप्राप्त्या परिणावि सूक्ष्माविचारतया अपरिणा  
विनिरतिचारतयेति द्रष्टव्यं पुरुषाधिकारेपि य शारिन्नवर्णपुरुषधर्मभणन त पर्मधर्मिणो वायसिदभेदा दनवद्य मयगन्तव्यमिति १२ तथा मधुनः नो  
द्रव्यं कुम्भो मधुकुम्भो मधुभृत मध्वेववा पिधानं स्थगनं मस्या सो मधुपिधानं एवमग्रे नयः १२ पुरुषसूत्रं स्वयमेव ॥ त्रियमित्यादि ॥ गाथाचतुष्टयेन भा

तहेव चत्तारि कुंजा पन्नत्ता तंजहा जित्ते जज्जारिए परिरसाई अपरिस्साई । एवामेव चउल्लिहे चरित्ते  
पन्नत्ते तजहा जित्तेजाव अपरिस्साई चत्तारि कुंजा पन्नत्ता तंजहा मज्जकुंजेणामएगेमज्जप्पिहाणे मज्जकुं  
जेणामंएगेविसप्पिहाणे विसकुंजेणामंएगेमज्जप्पिहाणे विसकुंजेणाममेगेविराप्पिहाणे । एवामेव चत्तारि  
पुरिसजाया पणत्ता तंजहा मधुकुंजेणामंएगेमधुप्पिहाणे ४ । हिद्ययमपाकमकलुसं जीहाविद्यमधुरज्जासिणी

एक ज्ञाने धने पूर्णं ग्रने स्ववेत्तेदातारत्ते द्दमचीजगी ॥ तेमज च्यार कुंज कएया ते कहैले ॥ एक फूटोले १ । एक जाजरोले २ । एमपरिस्तावी काचा  
माटे ३ । एक अपरिस्तावी पक्क कठिनमाटे ४ ॥ एम च्यार प्रकारे चारिन कएया ते कहैले ॥ एक जित्त फल भग १ । एक जाजरो दीत्तानीलेद २ ।  
एक परिस्तावी सूक्ष्म अतिचारनी ३ । एक अपरिस्तावी निरतिचारनी ४ ॥ बली च्यार कुंज कएया ते कहैले ॥ मधुनो घडो ग्रने मधुनो ढांकणी १ ।  
मधुनो घडो विषनो ढाकणी २ । विषनो घडो मधुनो ढाकणी ३ । विषनो घडो विषनो ढांकणी ४ ॥ द्दम च्यार पुरुष कएया ते कहैले ॥ एक

वितमिति तत्र हृदय मनः अपाप महिंस मकलुष मप्रौतिवर्जितमिति जिह्वापिच मधुरभाषिणी नित्यं यस्मिन् पुरुषे विद्यते स पुरुषो मधुकुंभश्च मधुकुम्भो मधुपिधानश्च मधुपिधानइति प्रथमभङ्गयोजना तृतीयगाथायां यत् हृदयं क्लृप्तमयप्रौत्वात्मकं मुपलक्षणत्वात्पापञ्च जिह्वा या मधुरभाषिणी नित्यं तत्साचेति गम्यते यस्मिन् पुरुषे विद्यते स पुरुषो विषकुम्भो मधुपिधानं स्वत्साधर्मादिति १४ अत्र चतुर्थं पुरुष उपसर्गकारी स्यादित्युपसर्गप्ररूपणाय ॥ चउव्विहाउवसग्नेत्यादि ॥ सूत्रपञ्चकमाह कण्ठ्य चेदं नवरं मुपसर्जना न्युपसृज्यते धर्मा अचाव्यते जन्तु रेभि रित्युपसर्गाः बाधाविशेषा

णिञ्चं जमिपुरिसंमिविज्जइ सेमधुकुंभेमज्जपिहाणे ॥ १ ॥ हिंययमपाकमकलुसं जीहावियकहुयज्जासिणी  
णिञ्चं जमिपुरिसंमिविज्जइ सेमधुकुंभेविसपिहाणे ॥ २ ॥ जंहिंययंकलुसमयं जीहावियमज्जरज्जासिणीणिञ्चं  
जमिपुरिसंमिविज्जइ सेविसकुंभेमज्जपिहाणे ॥ ३ ॥ जंहिंययंकलुसमयं जीहावियकहुगमासिणीणिञ्चं जमि  
पुरिसंमिविज्जइ सेविसकुंभे विसपिहाणे ॥ ४ ॥ चउव्विहा उवसग्गा पसग्गा तंजहा दिव्वा माणुसा तिरि

मधुनो घडो मधुनो ढांकणो १ एमचौजंगी ॥ मन पापरहित मैलरहित जीज पणि मीठाबोली जेपुरुपने होय तेपुरुष मधुनो घडो मधुनो ढांकणा सरखो १ मन मैल रहित अने जीज कडवा बोली जेपुरुपने होय तेमधुनो घडो विषनो ढांकणो सरखो २ जेहनो मन कलुष पापसहित अने जीज मीठाबोली तेविषनो घडो मधुनो ढांकणो सरखो ३ । जहनो मन मैलो अने जीज पणि नित्यकडुआ बोली तेविषकुंभ विषठाकणो सरखो ४ ॥ चार उपसर्ग कह्या तें कहैछे ॥ देवताना १ । मनुष्यना २ । तिर्यचना ३ । पोते आत्माएंकारी ते विषखाई ४ ॥ देवताना उपसर्ग चार प्रकारे



स्तेच कर्तृभेदा चतुर्विधाः आह च उवसज्जणमुवसग्गो तेणतग्गोयउवसज्जिएजम्हा सोदिव्वमणयतेरि क्कआयसंचेयणाभेउत्ति ॥ १ ॥ आत्मना संचेत्यंते क्रि  
यते इत्यात्मसंचेतनीयाः ॥ तत्र दिव्या ॥ हासति ॥ हासा ज्वति हाससभूतत्वात् या हासाः उपसर्गा एवेत्येव मन्यत्रापि यथा भिचार्यं ग्रामान्तरप्रस्थित  
क्षुल्लकै र्व्यतर्था उपयाचित प्रतिपन्न यदीप्सित लप्स्यामहे तदा तवो डेरकादि दास्याम इति लब्धे च तत्र तवेद मिति भणित्वा तदुन्डेरिकादितै स्वयमे  
व भक्षित देवतया चहासेन तद्रूप मावृत्य क्रीडित मनागच्छसु क्षुल्लकेषु व्याकुले गच्छे निवेदित माचार्याणा देवतया क्षुल्लकवृत्त ततो वृषभै रुडेरिका  
दि याचित्वा तस्यै दत्त तयातु ते दर्शिता इति प्रहेषा यथा सङ्गमको महावीरस्यो पसर्गा नकरोत् विमर्षा यथा क्वचिद्देवकुलिकाया वर्षासू पित्वा सा  
धुषु तदीयएवा ग्यः पश्चादागत स्तत्रोभित स्तत्र देवता किंस्वरूपो यमिति विमर्षा दुपसर्गितवतीति पृथग् विभिन्ना विविधा मात्रा हासादिवस्तुरूपा  
येषु ते पृथग्विमात्रा अथवा पृथग्विविधा मात्रा विमात्रा तये त्येतन्मुत्ततृतीयैकवचन पद दृश्य तथाहि हासेन कृत्वा प्रहेषेण करोती त्येव सयोगा.  
यथा सगमक एव विमर्षेण कृत्वा प्रहेषेण कृतवानिति तथा मानुष्या हास्यात् यथा गणिकादुहिता क्षुल्लक मुपसर्गितवती साच तेन दडेन ताडिता वि  
वादेच राज्ञः श्रीगृहदृष्टातो निवेदित स्तेनेति प्रहेषात् यथा गजसुकुमारः सोमिलनाह्मणेन व्यपरोपितो विमर्षात् यथा चाणक्योक्तचन्द्रगुप्तेन धर्मपरी  
चार्यं लिङ्गिनो न्तःपुरे धर्ममाख्यापिता क्षोभिताश्च साधवस्तु क्षोभितु न शक्ताइति कुशील मन्त्रेण तस्य प्रतिषेवण कुशीलप्रतिषेवण तद्भावः कुशीलप्र

रुक्जोणिया आयसंचेयणिज्जा । वादि उवसग्गा चउट्ठिहा प० तं० हासा प्यनुसा वीमंसा पुढोवेमाया

ते कहैछे । अट्टहास १ । प्रहेषार्थी सगमे महावीरनेकीधा २ । ईर्ष्यार्थी गोसाले महावीरनेकीधा ३ । हासोद्वेपे विविधपरेकरे ४ ॥ मनुष्यना उपसर्ग

तिषेवणता उपसर्गकुशीलस्यवा प्रतिषेवणं येषु ते कुशीलप्रतिषेवणका अथवा कुशीलप्रतिषेवणयेति व्याख्येयं यथा संध्यायां वसत्यर्थं प्रोषितस्ये र्धालो गृहे  
 प्रविष्टः साधु श्वतसृभिरौर्ध्वांलुजायाभि र्दत्तावासः प्रत्येक चतुरोपि यामानुपसर्गितो नच क्षुभितः तथा तैरश्वो भयात् श्वाद्यो दशेयुः प्रहेषा चण्डकौशिको  
 भगवत दष्टवान् आहारहेतोः सिंहाद्यो ऽपत्यलयनसरक्षणाय काक्यादय उपसर्गयेयुरिति तथा आत्मसचेतनीया घटनता घटनयावा यथा ऽक्षणि रजः  
 पतित तत स्तदक्षि हस्तेन मलित दुःखितु मारव्य मथवा स्वयमेव अक्षणि गलेवा मांसाकुरादि जात घटयतीति प्रपतनात् प्रपतनयावा यथा अप्रयत्ने  
 न सचरतः प्रपतनात् दुःख सुत्पद्यते स्तम्भनता स्तम्भनयावा यथा ताव दुपविष्टः स्थितो यावत्मुक्तः पादादिस्तथो जातश्लेषणता श्लेषणयावा यथा पाद  
 माकुच स्थितो वातेन तथैव पादौ लगितइति भवतिचात्रागाथाः हासप्यदोसवीमसओविमायाययाभवेदिव्वो एवचियमाणस्सो कुसोलपडिसेवणचउत्थो  
 ॥ १ ॥ तिरिओभयप्पओसा हारावव्वाइरक्खणत्थवा घट्टणयंभणपवडणलेसणओवायसंवेओ ॥ २ ॥ दिव्वंमिवतरीसं गमेगजइलोभणाईया [ इत्युत्तराई ]

मा । पुस्साउवसग्ग चउट्ठिहा पस्सत्ता तंजहा हासाप्पजसा वीमंसा कुसोलपडिसेवणया । तिरिस्कजोणिया  
 उवसग्गा चउट्ठिहा पस्सत्ता तंजहा जया पदोसा आहारहेउं अवच्चलेणसारक्खणया । आयसंचेयणिज्जा उव

चार प्रकारे कहिया ते कहैछे ॥ हासथी १ । द्वेषथी २ । ईर्ष्याथी ३ । कुशील सेवनाथी स्त्रीयादिक आलिंगनकरे ४ ॥ तिर्यचना उपसर्ग चार  
 प्रकारे कह्या ते कहैछे ॥ जयथी सर्पादि दीठे १ । प्रद्वेषथी चक्रकौशिके २ । आहारहेते सिंह जलक ३ । बालकराखवाने सियालणीप्रमुख अवन्ती  
 सुकुमालवत् ४ ॥ आत्मसंवेदनीयउपसर्ग चार प्रकारे कह्या ते कहैछे ॥ सघट्टणथी आंखमा रज पडी तेहाथे चोलते वेदनाथाय १ । पडवाथीवागे

गणिया सोमिलधर्मो वएसणेसालुजोसियाईया ॥ ३ ॥ तिरियंसिसाणकोसिय सौहाअचिरस्चियगवाई कणुगकुडणाभिपयणा इगत्तसंलेसणादप्रोनेया  
 ॥ ४ ॥ आप्रोदाहरणावा यपित्तकफसन्निवायावत्ति ॥ आत्मसचेतने उदाहरणानि उपसर्गसहना कर्मचयी भवतीति कर्मास्वरूपप्रतिपादनायाह ॥ चउ  
 ३३ ॥ विहेत्यादि सूत्रत्रय कण्ठ नवर क्रियतइति कर्म ज्ञानावरणीयादि तत् शुभ पुण्यप्रकृतिरूप पुनः शुभ शुभानुबन्धित्वा झरतादीनामिव शुभ तथैवा शुभ  
 मशुभानुबन्धित्वात् ब्रह्मदत्तादीनामिव अशुभ पापप्रकृतिरूप शुभ शुभानुबन्धित्वात् दुःखिताना मकामनिर्जरावता गवादीनामिव अशुभ तथैव पुनर शु  
 भ मशुभानुबन्धित्वा न्तस्यबन्धादीनामिवेति तथा शुभ सातादि सातादित्वेनैव बद्ध तथैवो देति यत्तत् शुभविपाक यत्तुबधं शुभत्वेन सक्रमकरणवशा तूदे  
 त्यचशुभत्वेन तत् द्वितीयं भवतिच कर्मणि कर्मान्तरानुप्रवेशसक्रमाभिधानकरणवशा दुक्तच मूलप्रकृत्यभिनाःसक्रमयति गुणउत्तराःप्रकृतौः नत्वात्मानूर्तत्वा

सग्गा चउट्ठिहा पणत्ता तजहा घट्ठणया पवण्णया थंजणया लेसणया । चउट्ठिहे कम्मे पन्नत्ते तंजहा सुजे  
 णामंण्णसुजे सुजेणाममेण्णसुजे णसुजे ० ४ । चउट्ठिहे कम्मे पणत्ते तजहा सुजेणाममेण्णसुजविवागे सुजे  
 णाममेण्णसुजविवागे णसुजेणाममेण्णसुजविवागे णसुजेणाममेण्णसुजविवागे ४ । चउट्ठिहे कम्मे प० तं०

वेदना थाय २ । ऊजासूता पग स्तब्धथाय ३ । श्लेष्मणता वायथी पग रहे ४ ॥ एकर्मथीहोय तेकर्म चार प्रकारे कह्या ते कहैछे ॥ एक शुज पुण्य  
 प्रकृतिरूप अशुजानुबन्धी ब्रम्हदत्तनीपरे नरकदाता अकाम निर्जरा ३ । माळीनीपरे ४ प्रथमे अशुज ॥ बली च्यार प्रकारे कर्म ते कहैछे एक शुज  
 शातावेदनी उदयकाले पणि सुख जोगवे १ । एक शुजकर्म बाध्यो उदयकालमा विचे माठाकर्मना सक्रमवाथी असुख उपजे ४ ॥ बली च्यार प्रकारे

॥ दध्यवसानप्रयोगेणेति ॥१॥ तथा मतान्तरं मोक्षूणमाउयखलु दंसणमोहंचरित्तमोहच सेसाणपयडीणं उत्तरविहिसकमोभणिओत्ति ॥ १ ॥ यद्वद्द मशुभतयो  
 देतिचशुभतया तत् तृतीयं चतुर्थं प्रतीतमिति तृतीयं कर्मसूत्र मत्रत्यद्वितीयोद्देशकवशमसूत्रत्वे ज्ञेयमिति चतुर्विधकर्मस्वरूपं सधएववेत्तीति सधसूत्रं सच  
 सर्वविहचनसंस्कृतबुद्धिमानिति बुद्धिसूत्रं बुद्धिश्च मतिविशेषइति मतिसूत्रे सुगमानि चैतानि नवरं संघो गुणरत्नपात्रभूतसत्त्वसमूहं स्तत्र आभ्यंति तपस्यती  
 ति अमणाः अथवा सहमनसा शोभनेन निदानपरिणामलक्षणया परहितेनच चेतसा वर्त्तंतइति समनसं स्तथा समानं स्वजनपरिजनादिषु तुल्यं मनो  
 येषां ते समनसं उक्तं च तौसमणोजइसमणो भावेणयजइनहोइपावमणो सयणेयजणेयसमो समीयमाणावमाणेसु ॥१॥ अथवा समिति समतया शत्रुमित्रा  
 दि श्वणति प्रवर्त्तंतइति अमणाः आहच नस्थियसिकोइवेसो पिओवसज्जेसुचेवजोवेसु एएणहोइसमणो एसोअन्नोविपज्जाओत्ति ॥ १ ॥ प्राकृतं तथा सर्वत्र  
 समणत्ति ॥ एव ॥ समणोओ ॥ तथा शृण्वति जिनवचनमिति आवका उक्तं च अवाप्तदृष्ट्यादिविशुद्धसम्पत् परसमाचारमनुप्रभात शृणोति य'साधुजनाद  
 तद् स्तंआवकप्राहुरमीजिनेन्द्राइति ॥१॥ अथवा आन्ति पचति तत्त्वार्थश्रवणं निष्ठा नयंतीति आ स्तथा वपन्ति गुणवत्समज्ञेनेषु धनवीजानि निक्षिपन्ती  
 ति वा स्तथा किरति क्लिष्टकर्मरजो विक्षिपतीति का स्ततः कर्मधारये आवकाइति भवति यदाह अद्वालुतांश्यातिपदार्थचिन्तनां दुर्नानिपात्रेषुवपत्यना

पगळीकम्मे छिईकम्मे अणुजावकम्मे पदेसकम्मे । चउत्तिहे संघे पन्तत्ते तंजहा समणा समणीउं सावगा सा

कर्मकह्या ते कहैछे प्रकृतिकर्म कर्मस्वजाव १ । स्थितिकर्म कर्मरहवानी स्थिति २ । अनुजावकर्म कर्मनुरस ३ । प्रदेशकर्म तेकर्मना दल ४ ॥ एकर्मनी  
 वात सध जाणे ते च्यार प्रकारेछे ते कहैछे ॥ साधु १ । साध्वी २ । आवक ३ । आविका ४ ॥ संघ बुद्धि वान होय तेबुद्धि च्यार प्रकारे कही ते

० ॥

७ ॥

रतं किरत्य पुण्यानि सुसाधुसेवना दयापितयावकमाहुरजसेति ॥१॥ एव आविकाअपीति तथा उत्पत्तिरेव प्रयोजन यस्या सा औत्पत्तिकी नतु चयोपशम  
कारण मस्या सत्य किन्तु स खल्वतरङ्गत्वात् सर्वबुद्धिसाधारणइति न विवक्ष्यते नचा न्यच्छास्त्रकर्माभ्यासादिक मपेक्षतइति अपिच बुद्ध्युत्पादा त्पूर्व स्वय  
मदृष्टो न्यतया श्रुतो मनसोऽप्यनालोचित स्तस्मिन्नेव क्षणो यथावस्थितो र्थो गृह्यते यथा सा लोकद्वयाविरुद्धैकातिकफलवतीबुद्धि रौत्पत्तिकीति यदाह  
पुल्लमहिष्ठमसुयम वेद्यतत्त्वणविशुद्धगहियत्या अवाहयफलजोगा बुद्धीउत्पत्तियानामत्ति ॥१॥ नटपुत्ररोहकादीना मिवेति तथा विनयो गुरुशुश्रूषा सकार  
ण मस्या स्तत्रधाना वैनयिकी अपिच कार्यभरनिस्तरणस मर्थाधर्मार्थकामशास्त्राणा गृहीतसूत्रार्थसार लोकद्वयफलवतीचेयमिति ॥ १ ॥ यदाह भरणि  
त्यरणसमत्या तिवग्गसुत्तत्यगहियपेयाला उभओलोगफलवती विणयसमुत्थाहवइबुद्धिति ॥१॥ नैमित्तिकसिद्धपुत्रशिष्यादीनामिवेति अनाचार्यक कर्मसाचार्य  
क शिल्प कदाचित्कम् वा कर्म नित्यव्यापारस्तु शिल्पमिति कर्मणो जाता कर्मजा अपिच कर्माभिनिवेशोपलब्धकर्मपरमार्था कर्माभ्यासविचाराभ्याविस्तीर्णा  
प्रशसा फलवतीचेति यदाह उवओगदिठसारा कम्मपसगपरिघोलनविंसाला साहुकारफलवती कम्मसमुत्थाहवइबुद्धिति ॥१॥ हैरण्यककर्षकादीनामिवेति  
परिणामस्तु दीर्घकाल पूर्वापरार्थावलोकनादिजन्य आत्मधर्मः स प्रयोजन मस्या स्तत्रधानावेति पारिणामिकी अपिच अनुमानकारणमात्रदृष्टान्तै साध्य  
साधिका वयोविपाकेच पुष्टीभूता भ्युदयमोक्षफलाचेति यदाह अणुमाणहेउदिठ तसाहियावयविवागपरिणामा हियनिस्सेसफलवई बुद्धीपरिणामिया

विगातु । चउल्लिहा बुद्धी पन्नत्ता तजहा उप्पइया वेणइया कम्मिया पारिणामिया । चउल्लिहा मई प० तं०

कहैछे ॥ औत्पात्तिकी अदीठी असाजली ऊपजे १ । वैनयिकी विनयथी ऊपजे २ । कर्मणकी कर्मकरता ऊपजे ३ । पारिणामिकी वय पाक्याथी पा

नामति ॥ १ ॥ अभयकुमारादौनामिवेति तथा मननमति स्तत्र सामान्यार्थस्या शेष विशेषनिरपेक्षस्या निर्देशस्य स्वरूपादे रवइति प्रथमतो ग्रहण परि  
च्छेदन मवग्रह सएव मति रवग्रहमति रेव सर्वत्र नवरं तदर्थविशेषालोचन मौहा प्रकातार्थविशेषनिश्चयो वायः अवगतार्थविशेषधरण धारण चेति उ  
क्तञ्च सामन्यत्वावग्रह णमोग्रहभेदमग्नहणमिहेहा । तस्मावगमोवाओ अविचुडंधारणातस्मेति ॥ १ ॥ तथा अरजर मुदककुभो लजरमिति यत्प्रसिद्ध त  
त्रो दक य तत्समानार्थप्रभूतार्थग्रहणो लेखणधारणसामर्थ्याभावेना ल्पत्वा दस्थिरत्वाच्च अरजरोदकहि सचित्तं शीघ्रनिष्ठचेति विदुरो नदीपुलिनादौ जला  
र्थोर्गतं स्तत्र यदुदक तत्समानाल्पत्वा दपरापरार्थोहनमात्रसमर्थत्वाद् भटि त्यनिष्ठितत्वाच्च तदुदक ह्यल्प तथा परापर मल्पमल्प स्यदते अतएवच सचित्त  
मनिष्ठितचेति सरउदकसमानातु विपुलत्वात् बहुजनोपकारित्वा दनिष्ठितत्वाच्च प्रायः सरोजलस्याप्येवभूतत्वादिति सागरोदकसमाना पुनः सकलपदा

उग्नहमई ईहामई अवायमई धारणामई । अहवा चउछिहा मई प० तं० अरंजरोदगसामाणा त्रियरोदगसा  
माणा सरोदगसामाणा सागरोदगसामाणा चउछिहा संसारसमावन्तगा जीवा प० तं० णेरइया तिरिस्क

कीमति ऊपजै ४ ॥ बुद्धि ते मतिविशेष ते मती च्यार प्रकारनी ते कहैछे ॥ अवग्रह मति तेप्रथमवस्तुग्रहण १ । ईहामतिविचारवो २ । तेहीज व  
स्तुनो निश्चय करवो ते अवाय ३ । धारणामति ते धारीराखवो ४ ॥ अथवा च्यार प्रकारनी मति कही ते कहैछे ॥ अलंजर तेउदकनो कुंम तेसमान  
घणो अर्थ ग्रही नसके अस्थिरपणाथी १ । विदुरोदक समान नवोनवो अर्थ ग्रहण करे शीघ्रघटै नही २ । सरोदकसमान विपुल घणाने उपकारी ३ ।  
समुदोदकसमान सर्वपदार्थ विशेष जाणे ४ ॥ मतिमान जीव होय ते च्यार प्रकारना कहिया ते कहैछे ॥ नारकी १ । तिर्यच योनिया २ । मनुष्य ३ ।

र्थप्रतिषेधविषयत्वेनात्यन्तविपुलत्वा दक्षयत्वादलक्षनमध्यत्वाच्च सागरजलस्यापि ह्येवभूतत्वादिति यथोक्तमतिमन्तो जीवाएव भवन्तीति जीवसूत्राणि पञ्च  
व्यक्तानि चेतानि नवर मनोयोगिनः समनस्का योगत्रयसङ्गवेपि तस्य प्राधान्या देवं वाग्योगिनो ह्येन्द्रियादयः काययोगिन एकेन्द्रिया अयोगिनो निरुद्ध  
योगा, सिद्धायेति अवेदकाः सिद्धादयश्चतुषः सामान्यार्थग्रहणं मवग्रहेहारूपं दर्शनं चतुर्दर्शनं तद्वन्तश्चतुरिन्द्रियादयो ऽचक्षुःस्पर्शनादि तद्दर्शनवत एके  
न्द्रियादय इति संयताः सर्वविरता असयता अविरताः सयता देशविरता स्तयः प्रतिषेधवन्तः सिद्धा इति जीवाधिकारात् जीवविशेषान् पुरुषभेदान् चतुः

जोणिया मणुस्सा देवा । चउद्विहा सव्वजीवा पस्सत्ता तंजहा मणजोगी चयजोगी कायजोगी अजोगी ।  
अहवा चउद्विहा सव्वजीवा पस्सत्ता तजहा इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा णपुंसगवेयगा अवेयगा अहवा चउ  
द्विहा सव्वजीवा पस्सत्ता तजहा चरकुदसणी अचरकुदसणी उहिदसणी केवलदसणी अहवा चउद्विहा सव्व  
जीवा पन्नत्ता तजहा संजया १ असंजया २ संजयासंजया ३ णोसंजयासंजया । चत्तारि पुरिसजाया प०

देवता ४ ॥ चार प्रकारना सर्व जीव कह्या ते कहैछे ॥ मनोयोगी १ । वचनयोगी २ । काययोगी ३ । अयोगी ते सिद्धनाजीव ४ ॥ वली चार प्रकारना  
सर्व जीव कह्या ते कहैछे ॥ स्त्रीवेदनाधणी १ । अचक्षुदर्शनी पुरुषवेदी २ । नपुंसकवेदी ३ । अवेदी ते वेद रहित सिद्धनाजीव ४ ॥ अथवा चार  
प्रकारना सर्व जीव कह्या ते कहैछे ॥ चक्षुदर्शनी १ । अचक्षुदर्शनी २ । अवधिदर्शनी ३ । केवलदर्शनी ४ ॥ अथवा चार प्रकारना सर्व जीव कह्या ते  
कहैछे ॥ सयती साधु १ । असयती मिथ्यात्वी २ । सयतासयती ते आवक ३ । नोसयतासयती ते सिद्ध ४ ॥ चार पुरुष कह्या ते कहैछे ॥ मित्रनाम

सूत्र्याह ॥ चत्तारौल्यादि ॥ स्पष्टाचेयं नवरं मित्र मिहलोकोपकारित्वात् पुन मित्र परलोकोपकारित्वात् सद्गुरुवत् अन्यस्तु मित्र स्नेहवत्वा दमित्रः पर  
लोकसाधनविध्वसा कलत्रादिवत् अन्य स्वमित्रः प्रतिकूलत्वा मित्रं निर्वेदनोत्पादनेन परलोकसाधनोपकारित्वा दविनीतकलत्रादिवत् चतुर्थोमित्रः प्र  
तिकूलत्वात् पुन रमित्रः सक्लेशहेतुत्वेन दुर्गतिनिमित्तत्वा त्पूर्वापरकालापेक्षया चेदभावनीयमिति तथा मित्रमतः स्नेहवत्त्वा मित्रस्यैव रूप माकारोवा  
ह्योपचारकारणत्वात् यस्य स मित्ररूप इत्येको द्वितीयो अमित्ररूपो बाह्योपचाराभावात् तृतीयो अमित्रः स्नेहवर्जितत्वादिति चतुर्थः प्रतीत स्तथा मुक्त  
स्यक्तसगो द्रव्यतः पुनर्मुक्तो भावतो भिष्वगाभावात् सुसाधुवत् द्वितीयो ऽमुक्त साभिष्वगत्वा द्रव्यवत् तृतीयो ऽमुक्तो द्रव्यतो भावतस्तु मुक्तो राज्यावस्थोत्प  
न्नकेवलज्ञानभरतचक्रवर्तिव चतुर्थो गृहस्थः कलत्रापेक्षया चेद दृश्यमिति मुक्तो निरभिष्वगतया मुक्तरूपो वैराग्यपिशुनाकारतया यतिरिवेत्येको द्वितीयो  
ऽमुक्तरूप उक्तरूपविपरीतत्वात् गृहस्थावस्थाया महावीरइव तृतीयो मुक्तः साभिष्वङ्गत्वात् शठयतिव चतुर्थो गृहस्थइति जीवाधिकारिक पञ्चेन्द्रियतिर्य

मित्तेनाममेगेमित्ते मित्तेनाममेगेऽमित्ते ऽमित्तेनाममेगेमित्ते ऽमित्तेनाममेगेऽमित्ते । चत्वारि पुरिसजाया  
पस्यता तंजहा मित्तेनाममेगेमित्तरूवे० चउजंगो । चत्वारि पुरिसजाया पस्यता तजहा मुत्तेनाममेगेमुत्ते  
मुत्तेनाममेगेऽमुत्ते० । चत्वारि पुरिसजाया पस्यता तंजहा मुत्तेनाममेगेमुत्तरूवे० । पचेदियतिरिक्कजोणि

एकमित्र सद्गुरुवत् इहलोक परलोकोपकारी १ । एक मित्रछे स्नेहमाटे परलोके दुःखदायी तेमाटे अमित्र स्त्रीआदि २ । एक अमित्र शत्रु परमार्थ  
थी मित्र परलोकसाधन करावे ३ । एक शत्रुछे अने संक्लेशकारी दुर्गतिमा नाखे कर्मबंधकारी ४ ॥ बली च्यार पुरुष कहिया ते कहैछे । एक मुक्त



યા ચઠગઢયા ચઠણાગઢયા પસ્યતા તંજહા પંચેંદિયતિરિસ્કજોણિણુ પંચેંદિયતિરિસ્કજોણિણુસુ ઉવવજ્જેમા  
 ણે ણેરઢણહિંતોવા તિરિસ્કજોણિણુહિંતોવા મણુસસેહિતોવા દેવેહિતોવા ઉવવજ્જેજ્ઞા સેચેવણં સે પંચેંદિય  
 તિરિસ્કજોણિણુ પંચેંદિયતિરિસ્કજોણિયં વિષ્ણુજહયમાણે ણેરઢયજ્ઞાણુ જાવ દેવત્તાણુ ઉવાગચ્છેજ્ઞા । મણુ  
 સ્સા ચઠગઢયા ચઠણાગઢયા ઇવંચેવ મણુસસાવિ । બેઢિદિયા ણ જીવા ઇસમારજ્ઞમાણસસ ચઠહિંહે સંજમે  
 કજ્ઞઢ તજહા જિણ્ણામયાણસોસ્કાણુ ઇવવરોવેજ્ઞા જવઢ જિણ્ણામણુદુસ્કેણસંજોગેજ્ઞાજવઢ ફાસામયાણુ  
 સોસ્કાણુઇવવરોવેજ્ઞાજવઢ ફાસામયાણુદુસ્કાણુસંજોગેજ્ઞાજવઢ । ઇવચેવ બેઢિદિયાજીવા સમારજ્ઞમાણસસ  
 ચઠહિંહે ઇસંજમે કજ્ઞઢ તજહા જિણ્ણામયાણસોસ્કાણુવવરોવિજ્ઞાજવઢ જિણ્ણામણુદુસ્કેણસંજોગેજ્ઞાજવઢ

અને મુક્ત રૂપ સાધુવેશસહિત ૧ હમચૌભગી ॥ પંચેદ્રિય તિર્યચ યોનિમા જીવને ચારગતી ચારઆગતી તે કહેલે ॥ પંચેદ્રિયતિર્યચનો જીવ પંચેદ્રિયતિ  
 ર્યચમા ઉપજતો નારકીમાથી આવી ઉપજે ૧ । તિર્યચમાથી આવી ઉપજે ૨ । મનુષ્યમાથી આવી ઉપજે ૩ । દેવતામાથી આવી ઉપજે ૪ ॥ તેહજ  
 પંચેદ્રિયતિર્યચ પણૂ મૂકતો ઢાઢતો નારકી તિર્યચમા માવત્ મનુષ્ય દેવતામા ઉપજે ચક્રેદ્રી બેરિદ્રી તેરિંદ્રી ચરિંદ્રી તિર્યચમાઉપજે ॥ મનુષ્ય  
 ચાર ગતિમાથી આવે હમજ તિર્યચની પરે મનુષ્ય પણિ બેરિદ્રી જીવનો જે આરજનકરે હણેનહી તે ચાર પ્રકારનો ધર્મકરે તે કહેલે ॥ જીજ્ઞાંસી  
 સુખથી અલગો નકરે સતલે જીજ્ઞાના સુખથી ટાલે નહી ૧ । અને જીમના દુઃખથી જોડે નહી ૨ । ફરસેદ્રીના સુખથી ટાલેનહી ૩ । અને કાયાના દુઃખથી જોડેન

॥ मनुष्यसूत्रद्वय सुगम एव द्वीन्द्रियसूत्रद्वयमपि नवरं द्वीन्द्रियान् जीवान् असमारभमाणस्या व्यापादयती जिह्वाया विकारो जिह्वामयं तस्मा स्त्रीयया द्रसो  
 पलभानन्दरूपा द्रव्यपरोपयिता अभ्यगयिता तथा जिह्वामय जिह्वेन्द्रियहानिरूपयत् दुःख तेना सयोजयितेति जोवाधिकारादेव सम्यग्दृष्टीनां चतस्रः  
 क्रिया मिथ्यात्वक्रियाया अभावात् एव ॥ विगलिदियवज्जति ॥ एकद्वित्रिचतुरिन्द्रियाणा पञ्चापि तेषामिथ्यादृष्टित्वात् द्वीन्द्रियादीनां च सासादनसम्यक्तस्या  
 ल्यत्वेना विवक्षितत्वादिति एव चेह विकलेन्द्रियवर्जनेन षोडशक्रियासूत्राणि वैमानिकान्तानि भवतीति अनतर क्रिया उक्ता स्तद्वाच्या सङ्गतान् परगुणा  
 न्नाशयति प्रकाशयतिचे त्येवमर्थं सूत्रद्वय तच्च सुगम नवर सती विद्यमानान् गुणान्नाशये दवनाशये दपलपति न मन्यते क्रोधेन रोषेण तथा प्रतिनिवे

फासामयानुसोरकानुववरोविज्ञानवड् फासामएणंदुरकेणसंजोगेज्ञानवड् । एवचेव सम्मदिष्ठियाणं णेरइयाणं  
 चत्तारि किरियाणं पस्सत्ताणं तजहा झारजिया परिग्गहििया मायावत्तिया अप्पञ्चखाणकिरिया । सम्मदि  
 ठियाणमसुरकुमाराणं चत्तारि किरियाणं एवंचेव । एवविगलिदियवज्जं जाव वेमाणियाणं । चउहिंठाणेहिं  
 सतेगुणे णासेज्जा तजहा कोहेणं पफिनिवेसेण झकयणुयाए मिच्छत्ताहिणिवेसेणं । चउहिंठाणेहिं संतेगुणे

ही ४ ॥ जे मनुष्य वेद्री जीवनी आरंज करे ते च्यार प्रकारे असंयम अधर्मकरे ते कहैछे ॥ जीजना सुखथी अलगोकरे १ । जीजना दुखसाथे जोडे २ । फरसें  
 द्रीना सुखथी टाले ३ । कायाना दुखथी जोडे ४ ॥ समकितदृष्टि नारकीने च्यार क्रिया पापनी कही ते कहैछे ॥ आरंजिकी १ । पारिग्रहिकी २ । मा  
 याप्रत्ययिकी ३ । अपचक्खाणिकी ४ ॥ समकितदृष्टि असुरकुमार देवताने च्यार क्रिया कही ते कहैछे । इमज वेद्री तेद्री चउरिंद्री वर्जने वैमानि

॥ श्रेणै ष पूज्यते अहन्तु नेत्येव परपूजाया असहनलक्षणेन कृत मुपकारं परसबन्धिन न जानाती त्यक्ततत्र स्तद्धाव स्तत्ता तथा मिथ्यात्वाभिनिवेशेन बोध  
 विपर्यासेनेति उक्तञ्च रोसेणपणिनिवेशे णतहयअकयत्नित्यभावेण सतगुणेनासित्ता भासइअगुणेअसतेवित्ति ॥ १ ॥ असती ऽविद्यमानात् कचि त्सन्ते  
 तिपाठ' तत्रच सती विद्यमानान् गुणान् दीपयेत् वदेदित्यर्थः अभ्यासो हेवाको वर्णनीयासन्नतावा प्रत्ययो निमित्त यत्र दीपते त दभ्यासप्रत्यय दृश्यते  
 ह्याभ्यासा त्रिविषयापि निष्फलापिच प्रवृत्तिः सनिहितस्यच प्रायेण गुणानामेव ग्रहणमिति तथा परच्छन्दस्य पराभिप्रायस्या नुवृत्ति रनुवर्तना यत्र  
 त त्परच्छदानुवृत्तिकं दीपन मेव तथा कार्यहेतोः प्रयोजननिमित्त चिकौर्षितकार्यं मत्या नुकूल्यकरणायैत्यर्थं तथा कृते उपकृते प्रतिकृत प्रत्युपकार स्त  
 द्यस्यास्ति स कृतप्रतिकृतकइतिवा कृतप्रत्युपकर्त्तेति हेतो रित्यर्थः अथवा कृतप्रतिकृतयेइति एके नैकस्यो पकृत गुणावो क्लीर्त्तिताः स तस्या सतोपि  
 गुणान् प्रत्युपकारार्थमुक्तीर्त्तयतीत्यर्थः इतिरूपप्रदर्शने वा विकल्पे इदञ्च गुणनाशनादिशरीरेणक्रियतइति शरीरस्यो त्यत्ति निवृत्तिसूत्राणां दण्डकद्वय

दीवेज्जा तंजहा अण्णासवत्तियं परत्तंदाणुवत्तियं कज्जहेउं कयपफिकएइवा । णेरइयाणं चउहिंठाणेहिं सरी  
 रुप्पत्ती सिया तजहा कोवेण माणेणं मायाए लोप्पेण । एवं जाव वेमाणियाणं । णेरइयाणं चउछाणणिव

कलगे ॥ च्यार थानके कृतागुण नासे वर्तमान गुणनो नासथाय ते कहैछे ॥ क्रोधकरीने १ । प्रद्वेषथी २ । उपकारकीधो नजानो कृतघ्नताथी ३ ।  
 मिथ्यात्वना अजिनिवेशथी आदरवाथी ४ ॥ च्यार थानके कृतागुण दीपे ते कहैछे ॥ अधिक अधिक गुणना अभ्यासथी १ । परनाअजिप्रायने अ  
 नुवर्तवाथी तेहनामने चालवाथी २ । कार्यनाहेतुथी ३ जेहने उपकार कीधो तेहना प्रत्युपकार करवाथी ४ ॥ नारकीने च्यार थानके शरीर नीपजे

कण्ठं चैत नवरं क्रोधादयः कर्मबन्धहेतवः कर्मव शरीरस्योत्पत्तिकारणमिति कारणेकार्योपचारात् क्रोधादयः शरीरोत्पत्तिनिमित्ततया अपदिश्यत इति ॥ चउहिठाणेहि ॥ शरीरेत्याद्युक्तक्रोधादिजन्यकर्मनिर्वर्तितत्वात् क्रोधादिनिर्वर्तित शरीर मित्यपदिष्टं इहचो त्यत्ति रारम्भमात्र निर्वृत्ति सु निष्पत्ति रिति क्रोधादयः शरीरनिर्वृत्तेः कारणानौ त्युक्त तन्निग्रहास्तु धर्मस्येत्याह ॥ चत्तारिधम्मोत्यादि ॥ धर्मस्य चारित्रलक्षणस्य द्वाराणीव द्वारा खुपायाः ज्ञां त्यादौनि धर्मद्वाराणी त्युक्त मथारम्भादौनि नारकत्वादिसाधनकर्मणो द्वाराणीति विभागतः ॥ चउहिठाणेहौ त्यादिना ॥ सूत्रचतुष्टयेनाह कण्ठं चैत नवर ॥ नेरइयत्ताएत्ति ॥ नेरयिकत्वाय नैरयिकतायै नैरयिकतयावा कर्म आयुष्कादि ॥ नेरइयाउयत्ताएत्ति ॥ पाठांतरे नैरयिकायुष्करूप कर्मदलिक मिति महानिच्छापरिमाणेना कृतमर्यादया बृहदारम्भ, पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणो यस्य स महारम्भ शक्रवर्त्यादि स्तद्भाव स्तत्ता तथा महारम्भतया एव

त्तिएसरीरए तंजहा कोहनिह्वत्तिए जाव लोन्ननिह्वत्तिए । एवंजाव वेमाणियाण । चत्तारि धम्मदारा प० तं० रक्ती मोत्ती अज्जवे महवे । चउहिठाणेहि जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पगरेति तंजहा महारंजयाए महाप रिग्गहयाए पचेदियवहेणं कुणिमाहारेणं । चउहिठाणेहि जीवा तिरिस्कजोणियत्ताए कम्मं पगरेति तजहा

ते कहैछे ॥ क्रोधयी १ । मानयी २ । मायायी ३ । लोन्नयी ४ ॥ एम यावत् वैमानिकलगे चौवीस दडके कहवो ॥ नारकीने चार थानके शरीरनी निर्वृत्ति नीपनी आउखाताई रहे तेकहैछे ॥ क्रोधनिर्वर्तित यावत् लोन्न निर्वर्तित ॥ एम यावत् वैमानिकलगे कहवो ॥ हिवे चार धर्मना द्वार कह्या ते कहैछे ॥ क्षमा १ । निर्लोन्नता २ । अर्जव तेनिष्कपटता ३ । मार्दव अहंकार रहितता ४ ॥ चार थानके जीव नारकीनो आयुकर्मबाधे

० ॥

८ ॥

महापरिग्रहतयापि नजरं परिगृह्यत इति परिग्रही हिरण्यमवर्णद्विपदचतुष्पदादिरिति ॥ कुण्ठिममिति ॥ मांसं तदेवा हारी भोजनं तेन ॥ माइत्तयाए  
 त्ति ॥ मागितया मायाच मनःकुटिलता ॥ नियडित्तयाएत्ति ॥ निकृतिमत्तया निकृतिश्च वचनार्थं कायचेष्टाद्यन्यथाकरणलक्षणाऽभ्युपचारलक्षणावा तद  
 त्तया कूटतुलाकूटमानेन यो व्यवहारः सकूटतुलाकूटमान एवोच्यते अत स्त्रेनेति प्रकृत्या स्वभावेन भद्रकता परानुपतापिता या सा प्रकृतिभद्रकता त  
 या शान्तोत्थतया सद्यतया मत्सरिकता परगुणासङ्गिण्यता तत्प्रतिषेधो ऽमत्सरिकता तयेति सरागसयमेन सकषायचारित्र्येण वीतरागसयमिना मा  
 शुपो बन्धाभावात् सयमासयमो द्विस्वभावत्वात् देशसयमो बालाश्रव बाला मिथ्यादृश्य स्त्रेषां तप कर्मतपःक्रिया बालतपःकर्म तेन अकामेन निर्जराप्रत्य  
 नभिलाषेण निर्जराकर्म निर्जरणहेतु बुभुक्षादिसङ्ग यत्ना अकामनिर्जरा तया अनन्तर न्देयोत्पत्तिकारणान्युक्तानि देवाश्च वाद्यनाद्यादिरतयो भवती

माइत्तयाए नियडित्तयाए अलियवयणेणं कूटतुलकूटमाणेणं । चउहिठाणेहि जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पग  
 रेंति तंजहा पगइज्जदयाए विणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छुरियाए । चउहिंठाणेहि जीवा देवाउयत्ताए  
 कम्मं पगरेंति तजहा सरागसंजमेण संजमासंजमेण बालतवोकम्मेण अकामनिज्जाराए । चउहिहे बज्जे प०

ते कहैछे ॥ मोटाआरज्जथी १ । मोटापरिग्रहथी २ । पचेद्विय जीवना बधथी ३ । मासना खावाथी ४ ॥ च्यार थानके जीव नारकीनुं आयुकर्म  
 बाधे ते कहैछे ॥ मायाकपटना करवाथी १ । वचना करवाथी २ । अलीक भूठ वचन बोलवाथी ३ । खोटा तोल खोटा माप तेगजादिकथी खोटु  
 नापवाथी ४ ॥ च्यार थानके जीव मनुष्यनु आयुकर्म बाधे ते कहैछे ॥ जद्रकस्वजावथी १ । विनीत स्वजाव पणाथी २ । दयावत पणाथी ३ । अमत्स

ति वाद्यादिभेदाभिधानाय षट्सूत्रौ तत्र ॥ वज्जीति ॥ वाद्यं तत्र ततवीणादिकं ज्ञेयं विततं पटहादिकं धनन्तुकास्थतालादि वंशादिशुषिरं मतमिति ॥ १ ॥  
 नाट्यगेयाभिनयसूत्राणि सम्प्रदायाभावात् न विवृतानि मालायां साधु माल्य पुष्प तद्रचनापि माल्य ग्रथः सटर्भं सूत्रेण ग्रथनं तेन निर्वृत्तं ग्रथिमं माला  
 दि वेष्टनं वेष्ट स्तेन निर्वृत्तं वेष्टिमं मुकुटादि पूरेण पूरणेन निर्वृत्तं पूरिमं मृगय मनेकच्छिद्रं वगशलाकादिपजरवा यत्र पुष्पैः पूर्यत इति सघातेन निर्वृत्तं  
 सघातिमं यत्परस्परतः पुष्पमालादिसघातेनोपजन्यत इति अलङ्कियते भूयते नेने त्यलकार एव सर्वत्र देवाधिकारवत्येव ॥ सणकुमारत्यादिका ॥ द्विसूत्रौ

तजहा तते वितते घणे सुसिरे । चउछिहे णट्टे पसत्ते तजहा अचिए रिजिए आरजट्टे जिसोले । चउछि  
 हे गेये प० तजहा उरिक्किए पत्तए मंदए रोविदए । चउछिहे मल्ले पसत्ते तजहा गथिमे वेढिमे पूरिमे  
 संघाइमे । चउछिहे अलकारे पसत्ते तजहा केसालकारे वल्लालकारे मल्लालकारे आजरणालकारे । चउछिहे

रिक्कता मत्सर क्रोधनथी करवाथी ४ ॥ चार थानकै जीव देवतानुं आजखो वाधे ते कहैछे ॥ कपाय सहित चारित्रथी १ । देशसयम आहु धर्मथी २ ।  
 अज्ञानतप करवाथी ३ । अकामनिर्जराथी ४ ॥ चार प्रकारे वादित्र कह्या ते कहैछे ॥ तत तेवीणादिक १ । वितत ते पटहादिक २ । घन ते कां  
 स्थतालादिक ३ । शुषिर ते वासली प्रमुख ४ ॥ चार प्रकारे नाटक कह्यो ते कहैछे ॥ अचित १ । रिजित २ । आरजट ३ । जिसोल ४ ॥ चार  
 जेदे गीत ते कहैछे उत्तिप्त १ । पत्रक २ । मंद ३ । रोविदक ४ ॥ चार जेदे माल्य ते कहैछे ॥ सूत्रे गूंथ्या १ । माल्यादि वींटवो २ । वंश जालें  
 पूरव ३ । घणा फूल माहोमाहि गूंथवो ४ ॥ चार प्रकारे अलकार कह्यो ते कहैछे केश समारवा १ । जलावस्त्र पहरवा २ । फूलपहरवा ३ ।

॥ सुगमाचेय नवर सनत्कुमारमाहेन्द्रयोश्चतुर्वर्णानि कन्यान्तरेषु त्वन्यथा यदुक्तं सोहमिपंचवणा एकगहाणीउजासहस्रारो दोदीतुक्ताकप्या तेणपरपुंड  
 रीयाओ ॥ १ ॥ हयोर्हयोः कल्पयो वर्णस्य हानिः कार्येत्यर्थं स्तत्र भवे धार्यते तदिति तंवा भव धारयतीति भवधारणीय यज्जन्मतो मरणावधि कृतमुष्टिक  
 सु रत्निः सएव विततागुलि ररत्नि रिति वचने सत्यपि रत्निशब्देनेह सामान्येन हस्तो भिधीयतइति शुक्रसहस्रारयोश्चतुर्हस्ता देवा अन्यत्र त्वन्यथायत  
 आह भवण १ वण ८ जोइ ३ सोह स्त्रीसाणेसत्तर्हीतिरयणीओ एक्केकहाणिसेसे दुदुगेयदुगेयचउक्केय ॥ १ ॥ गेवेज्जेसुयदुन्निय एकारयणीअणत्तरसुरेस्सुत्ति  
 ॥ १ ॥ भवधारणीयान्येव सुत्तरवैक्रियाणितु लक्षमपि सभवति उत्कृष्टेनैतत् जघन्य स्वङ्गुलासख्येयभागप्रमाणा न्युत्पत्तिकाले भवधारणीयानि भवत्युत्तर  
 वैक्रियाणि त्वङ्गुलासख्येयभागप्रमाणा नीति अनंतर देववक्तव्यतोक्ता देवा आप्कायतयाप्युत्पद्यते इत्युदकगर्भप्रतिपादनाय ॥ चत्तारीत्यादि ॥ सूत्रद्वयमा

अग्निणए प० तं० दिष्ठतिए पांरुंसुए सामंतोवणिए लोगमज्जवासिए । सणकुमारमाहिदेसुणकप्पेसु विमा  
 णा चउवस्सा प० त० णीला लोहिया हालिद्दा सुक्खिला । महासुक्कसहस्सारेसुण कप्पेसु देवाणं जवधारणि  
 ज्जा सरीरगा उक्कोसेण चत्तारि रयणीउ उह उच्चत्तेणं पस्सत्ता । चत्तारि दग्गगप्पा प० तं० उस्सा महिया

आजरण पहरवा ४ ॥ सनत्कुमार माहेद्र तीजे चौथे देवलोके च्यारवर्णना विमान कह्या ते कहैछे ॥ नीला १ । राता २ । पीला ३ । धोला ४ ॥  
 महाशुक्र सहस्रार सातमा आठमा देव लोकमा देवताने जवधारणीय मूलवैक्रिय शरीर उत्कृष्ट च्यार हाथ उचपणे कह्यो ॥ च्यार पाणीना गर्ज  
 कहिया जेकालोतरे वरसे ते कहैछे ॥ उसठार ते उस रात्रिमा पडैते १ । धूंअर तेमहिका २ । ठाढि तेढढ ३ । उप्प तळखो घाम ४ ॥ बली च्यार

॥ ह ॥ दग्गमेति ॥ दकस्यो दकस्य गर्भा इव गर्भा दकगर्भाः कालांतरे जलवर्षणस्य हेतवः तत्ससूचका इति तत्त्वमिति अवस्थायः क्षपाजलं महिका धूमि  
का शीता न्यात्यन्तिकानि एव सुष्णो घर्म्म एतेहि यत्र दिने उत्पन्ना स्तस्मा दुत्कर्षेणा व्याहताः सतः षड्भिर्मासै रुदक प्रसुवते अन्यैः पुनरेव सुतं पवना  
भ्रष्टृष्टिविद्यु जर्जितशीतोष्णरश्मिपरिवेषा जलमत्स्येन सहोक्ता दशधाचां वुप्रजनहेतुः ॥ १ ॥ तथा शीतवाताश्च बिदुश्च गर्जितपरिवेषणं सर्वगर्भेषु संसृति  
निर्गत्याः साधुदर्शनाः ॥ १ ॥ तथा सप्तमे सप्तमे मासे सप्तमे सप्तमे हनि गर्भाः पाकनियच्छति यादृशास्तादृशफलं ॥ १ ॥ हिम तुहिनं तदेव हिमक तस्यै  
ते हैमकाः हिमपातरूपा इत्यर्थः ॥ अथ सघडन्ति ॥ अभ्रसंसृतानि मेघै राकाशाच्छादनानीत्यर्थः आत्यंतिके शीतोष्णे पचानां रूपाणां गर्जितविद्युज्जलवा  
ताभ्रलक्षणानां समाहारः पञ्चरूप तदस्ति येषां ते पञ्चरूपिका उदकगर्भा इह मतान्तरमेव पौषे स मागं शीर्षं संध्या रागो वुदा स परिवेषाः नात्यर्थमार्गशि  
रे शीतपौषेऽति हिमपातः ॥ १ ॥ माघे प्रवलो वायु स्तुषारकलुषद्युतीरविशशाकौ अतिशीतसघनस्य च भानोरस्तोदयौ धन्यौ ॥ २ ॥ फाल्गुनमासे रूक्षं श्वण्डः  
पवनोऽभ्रसप्तवाः स्निग्धाः परिवेषाश्च सकलाः कपिलस्ताम्रोरविश्च शुभः ॥ ३ ॥ पवनघनवृष्टियुक्ता श्वेत्ने गर्भाः शुभाः स परिवेषाः घनपवनसलिलविद्युत् स्तनि

सीया उसिणा । चत्वारि उदगगङ्गा पम्पहा तंजहा हेमगा अष्टसंघका सीनुसिणा पंचरूविया ॥ सिलोगो ॥  
माहे उहेमगा गङ्गा फग्गुणे अष्टसंघका । सीनुसिणानुयचित्ते वइसाहे पंचरूविया ॥ १ ॥ चत्वारि मणुस्सी गङ्गा

पाणीनां गर्भं कहिया ते कहैछे ॥ हिमनुं षड्वी १ । वादला आकाशढांके २ । घणीठंड अने तरुखो घाम ३ । पंचरूपी आकाश तेगाज बीज जलवात  
शीत रूई बादल ४ ॥ गाथा ॥ माघ मासमां हिमनुं गर्ज फागुण मासमां बारिदनुं गर्भ शीतोष्णचैत्रमासमां वैशाखमासमां पंचरूपीपणुं ॥ १ ॥ चार



तैश्चहितायवैशाखइति ॥ ४ ॥ तानेव मासभेदेन दर्शयति ॥ माहेत्यादि ॥ श्लोकः गर्भाधिकारान्नरीगर्भसूत्र व्यक्तं केवलं ॥ इत्थित्ताएत्ति ॥ स्त्रीतया बिम्बमि  
ति गर्भप्रतिबिम्ब इर्भाकृति रार्त्तवपरिणामो नतुगर्भएवेति उक्तं च अवस्थितलोहितमङ्गनाया वातेनगर्भेभुवतेनभिज्ञाः गर्भाकृतित्वात्कटुकोष्णतीक्ष्णैः श्रुतेषु  
नःकेवलएवरक्ते ॥ १ ॥ गर्भजडाभूतहृतवदन्तीत्यादि ॥ वैचिन्त्य गर्भस्य कारणभेदादिति श्लोकाभ्यां तदाह ॥ अप्यामत्यादि ॥ शुक्र रेतः पुरुषसम्बन्धि ओज आ  
र्त्तव रक्त स्त्रोसम्बन्धि यत्र गर्भाशयइति गम्यत इति तथा स्त्रिया ओजसा समायोगो वातवशेन तत् स्थिरोभवलक्षणं स्त्रोज, समायोग तस्मिन्सति बिम्ब  
तत्र गर्भाशये प्रजायते अन्यैरप्युक्तं अतएवचशुक्रस्य बाहुल्याज्जायतेपुमान् रक्तस्यस्त्रोतयोःसाम्ये क्लीवशुक्रार्त्तवेपुनः ॥ १ ॥ वायुनाबहुशोभिन्ने यथास्व  
बहुपत्यता वियोनिविकृताकारा जायन्तेविकृतैर्मलैरिति ॥ २ ॥ गर्भः प्राणिनां जन्मविशेषः सचो त्पादो भिधीयते उत्पादस्योत्पादाभिधानः पूर्वं प्रपच्यतइ  
ति तत् स्वरूपविशेषप्रतिपादनायाह ॥ उपायेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर उत्पादपूर्वं प्रथम पूर्वाणा तस्यचूला आचारस्या ग्राणीव तद्रूपाणि वस्तूनि परिच्छे

पश्यता तजहा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए नपुंसगत्ताए बिम्बत्ताए ॥ सिलोगो ॥ अप्सुक्कंबल्लनयं इत्थीतत्यप्प  
जायइ अप्पनयबल्लसुक्क पुरिसोतत्यजायइ ॥ १ ॥ दोरहपिरत्तसुक्काणं चुल्लजावेनपुंसनं ॥ इत्थीनंतस्समा

मानुषी मनुष्यनी स्त्रीना गर्भं कह्या ते कहँळे स्त्रीपणे १ । पुरुषपणे २ । मपुसक पणे ३ । गर्जनो प्रतिबिम्ब गर्जनं आकार तनुगर्ज ४ ॥ गाथा ॥  
थोडो शुक्र पुरुषनोवीर्य अने घणु स्त्रीनो उज ते रितुसबधी रुधिर होय तिवारे स्त्रीजपजै गर्जमा ॥ थोडो उजघणु वीर्यतिहां पुरुष होय ॥ १ ॥  
बेरितु अने कशु सरखा बराबर होय तिवारे नपुंसक होय । स्त्रीना उज रुधिरनो जवाय विशेषतया अधपडे तिहां बिम्ब नीपजै ॥ २ ॥ उत्पाद पूर्वनी

दविशेषा अध्ययनवत् चूलावस्तूनि उत्पादपूर्वं हि काव्यमिति काव्यसूत्रं कण्ठं चेत् नवरं काव्यं ग्रन्थः गद्य मच्छन्दोनिवद्ध शस्त्रपरिज्ञाध्ययनवत् पद्यं च्छन्दोनिवद्ध विमुक्ताध्ययनवत् कथाया साधु कथ्य ज्ञाताध्ययनवत् गेयं गानयोग्य इहगद्यपद्यान्तर्भावेपी तरयोः कथागानधर्मविशिष्टतया विशेषो विवक्षित इति अनन्तरं गेयं मुक्तं तच्च भाषास्वभावत्वा दृढमथादिक्रमेण लोकैकदेशादि पूरयति समुद्घातोऽप्येवमेवेति साधर्म्यात् तसमुद्घातसूत्रे सुगमेच नवरं समुद्घातः शरीराद्बहिर्जोषप्रदेशप्रक्षेपः वेदनया समुद्घातः कषायैः समुद्घातो मरणमेवातो मरणान्तं स्तत्र भवो मारणान्तिकः स एव समुद्घातो वैक्रिया य समुद्घात इति विग्रहा इति वैक्रियसमुद्घातो हि लब्धिरूप उक्त इति लब्धेः प्रस्तावात् विशिष्टश्रुतलब्धिभूता मभिधानायाह ॥ अरहन्तीत्यादि ॥ सूत्रं

जगे विवन्तत्यप्यजायइ ॥ २ ॥ उप्यायपुष्टस्सणं चत्तारि चूलियावत्पू पस्यत्ता । चउह्विहे कव्वे पस्यत्ते तं०  
गज्जे पज्जे कत्थे गेये । णेरइयाण चत्तारि समुग्घाए प० त० वेयणसमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियस  
मुग्घाए वेउह्वियसमुग्घाए । एवं वाउकाइयाणवि । अरहन्तं अरिष्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोदसपुह्वीण

चार चूला वस्तु अध्ययनरूप कही ॥ चार जेदेकाव्य ते ग्रन्थ ते कहैछे ॥ गद्यबंध जेहमां छंद नही शस्त्रपरिज्ञाध्ययननीपरे १ । पद्य ते छंदो निवद्ध विमुक्ताध्ययननीपरे २ । कथाग्रथ ते ज्ञाताध्ययननीपरे ३ । गेय गावायोग्य जेअध्ययन ४ ॥ नारकीने चार समुदघात शरीरथी जीवप्रदेश बाहिर नीकलता वेदनायाय ते कहैछे ॥ वेदनासमुदघात १ । कषायथी समुदघात २ । मारणातसमुदघात ३ । वैक्रियसमुदघात वैक्रियरूपकरेते ४ ॥ एम वायुकायने पणि चार समुदघात कहवा ४ ॥ अरिहत अरिष्ठनेमि नाथने चारसे ४०० चोदस पूर्वानी संपदाथई जिन नही पिण जिन सरिखा

॥ द्वयो सुगमाच नवर मजिनाना मसर्वज्ञत्वात् जिनसङ्गाशाना मविसवादिवचनेत्वा द्यथाष्टनिर्वृत्तत्वा च सर्वेऽक्षराणा मकारादीनां सन्निपाता द्या  
दिसयोगा अभिधेयानन्तत्वा दनन्ताअपि विद्यन्ते येषांते सर्वाक्षरसन्निपातिन स्तेषां जिनसकाशत्वे कारणमाह ॥ जिणोइवेत्यादि ॥ उक्कोसियत्ति ॥  
॥ नातो धिका चतुर्दशपूर्विणो बभूवुः कदाचिदप्येति तेच प्रायः कल्पेषु गताइति कल्पसूत्राणि सुगमानिच नवर ॥ अर्द्धचंद्रसंठाणसंठिएत्ति ॥ पूर्वापर

मजिणाणंजिणसंकासाणं सत्त्वरकरसंनिवाईणं जिणोइवअवितहवागरमाणेण उक्कोसिया चोद्दसपुत्तिसंपया  
होत्या । समणस्सणजगवन्महावीरस्स चत्तारिसया वाईण सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं उ  
क्कोसिया वाइसंपया होत्या ॥ हेठिल्ला चत्तारिकप्पा अर्द्धचंद्रसंठाणसंठिया प० त० सोहम्मै ईसाणे सण  
कुमारे माहिदे । मज्झिल्लाकप्पा पफ्फिपुस्सचंद्रसंठाणसंठिया पस्सत्ता तजहा वंजलोगे लंतए महासुक्को सह  
स्सारे । उवरिल्ला चत्तारिकप्पा अर्द्धचंद्रसंठाणसंठिया प० तंजहा आणए पाणए आरणे अज्जुए । चत्तारि

सर्वाक्षर संनिपातयोगना जाण केवलीनी परे सत्य प्रश्नना कहनार उत्कृष्टी चोदहपूर्वधारी साधुनी संपदाथई ॥ अमण जगवंत महावीरने चारसे  
वादीनी सपदाथई देवता मनुष्य असुरनी पर्षदामा अपराजित कोई जीती नसके एहवी उत्कृष्टी वादीनी सपदा थई ॥ हेठला चार देवलोक अर्द्ध  
चंद्र संठाण संस्थित कह्या ते कहैछे ॥ सौधर्म १ । ईशान २ । सनत्कुमार ३ । माहेद्र ४ ॥ मध्यम विचालना चार देवलोक परिपूर्णचंद्र सस्थान स  
स्थित कह्या ते कहैछे ॥ ब्रम्हदेवलोक १ । लांतक २ महाशुक्र ३ । सहस्रार ४ ॥ ऊपरला चार देवलोक अर्द्धचंद्रसस्थान संस्थित कह्या ते कहैछे ॥

तो मध्यभागे सीमासद्भावादिति देवलोकादि क्षेत्रप्रस्तावा त्समुद्रसूत्रं व्यक्तं च नवरं एकमेकप्रति भिन्नो रसो येषां ते प्रत्येकरसाः अतुल्यरसा इत्यर्थः लवणरसोदकत्वा लवणः पाठान्तरन्तु लवणमिवोदकं यत्र सलवणोदो निपातनादिति प्रथमः वारुणी सुरा तथा समान वासुण वारुण मुदकं यस्मिन् स वारुणोदश्चतुर्थः क्षीरव तथा घृतव दुदकं यत्र सक्षीरोदः पचमो घृतोदः षष्ठः कालोदपुष्करोदस्वयम्भूरमणा उदकरसाः शेषास्तु इक्षुरसा इति उक्तं च वारुणिवरक्षीरवरो घयवरलवणोयहोतिपत्तेया कालोयपुष्करोदहि सयभुरमणोयउदकरसत्ति ॥ १ ॥ अनन्तरं समुद्रा उक्ता स्तेषुचावर्त्ता भवन्तीत्यावर्त्तान् दृष्टान्तान् कषायांश्च तद्दार्ष्टान्तिकान् अभिधित्सु सूत्रद्वयमाह सुगम चैतन्नवर खरो निष्ठुरो अतिवेगितया पातकं श्लेदकोवा आवर्त्तनमावर्त्तः सच समुद्रादे श्चक्रविशेषाणाचेति खरावर्त्त उन्नतउच्छ्रित सचा सा वावर्त्तश्चेति उन्नतावर्त्तः सच पर्वतशिखरारोहणमार्गस्य वातोत्कलिकायावा गूढासा वावर्त्तश्चेति गूढावर्त्त सच गेन्दुकदवरकस्य दारुगुण्यादेर्वा आमिषमासादि तदर्थमावर्त्तः शकुनिकादौना मामिकावर्त्त इति एतत्समानताच क्रोधादौ

समुद्रा पक्षेयरसा पस्यता तजहा लवणोदए वारुणोदए स्त्रीरोदए धिनुदए । चत्वारि व्यावत्ता पस्यता तं०  
खरावत्ते उन्नयावत्ते गूढावत्ते आमिसावत्ते । एवामेव चत्वारि कसाया पस्यता तंजहा खरावत्तसमाणेकोहे

आनत १ । प्राणत २ । आरण ३ । अच्युत ४ ॥ चार समुद्र जूजुआ रसना कह्या ते कहैछे ॥ लवणसमुद्र खारो १ । वारुणोदधि मदिरा सरिखो २ । क्षीरोदधि दूधसमान पाणीनु कह्यो ३ । घृतोदधि घीसमान पाणीनु कहियो ४ ॥ चार पाणीना आवर्त्त कह्या तेकहेछे ॥ खरावर्त्त ते कठिन कठोर चक्रनीपरे पाणीनु जमवो १ । उन्नतावर्त्त उचो जे पाणीनु जमवो २ । गुप्तावर्त्त काठनी गाढवतू ३ । मासावर्त्त समली आकाशमा भमे ४ ॥ एम

ना क्रमेण परोपकारकरणदास्यत्वात् पञ्चदशादिवस्तुनश्च मनस उन्नतत्वारीपणात् अत्यन्तदुर्लभस्वरूपत्वात् अनर्थशतसंपातसंकुले प्यवपतनकारणत्वा  
 चेति इयचोपमा प्रकर्षवता कोपादोनामिति तत्फलमाह ॥ खरावत्तेत्यादि ॥ अशुभपरिणामस्या शुभकर्मबन्धनिमित्ततया दुर्गतिनिमित्तत्वा दुच्यते ॥ णेर  
 इएसु उववज्जइत्ति ॥ नारका अनंतर सुक्ता स्तेच वैक्रियादिना समानधर्माणो देवा इतितद्विशेषभूतनक्षत्रदेयाना चतुःस्थानक विवक्षुः ॥ अणुराहेत्या  
 दि ॥ सूत्रत्रय माह कण्ठं चैतदिति देवत्वादिभेदश्च जीवाना कर्मपुद्गलावयवादिकृतइतितत्प्रतिपादनायाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ सूत्रषट्क व्याख्यात

उन्नयावत्तसमाणेमाणे गूढावत्तसमाणामाया आमिसावत्तसमाणेलोत्ते । खरावत्तसमाणंकोहमणुप्पविठेजी  
 वे कालकरेइ णेरइएसु उववज्जइ । उन्नयावत्तसमाण तचेव । गूढावत्तसमाणंमानमेवंचेव । आमिसावत्त  
 समाणलोत्तमणुप्पविठेजीवे काल करेइ णेरइएसु उववज्जइ ॥ अणुराहाणस्कत्ते चउतारे पस्सत्ते । पुद्गासा  
 ढा एवचेव । उत्तरासाढाएवंचेव । जीवाणचउठाणनिवृत्तिणुपोगले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणित्तिवा

चार कषाय क्ख्या ते कहैठे ॥ खरावर्त्तसमान क्रोध १ । उन्नतावर्त्तसमान मान २ । गूढावर्त्तसमान माया ३ । आमिषावर्त्तसमान लोभ ४ ॥ खरा  
 वर्त्तसमान क्रोधमा अनुप्रविष्ट पैठो जीव कालकरीने नारकीमाउपजै १ । उन्नतावर्त्तसमान मानमा अनुप्रविष्ट जीव मरीने नारकीमां उपजै २ । गूढा  
 वर्त्तमायामा अनुप्रविष्ट जीव कालकरी नरकमा जाय ३ । आमिषावर्त्तसमान लोभमा अनुप्रविष्ट जीव कालकरी नरकमा जाय ४ ॥ अनुराधा नक्ष  
 त्रना चार तारा क्ख्या ॥ पूर्वाषाढानक्षत्रना पणि ४ तारा क्ख्या ॥ उत्तराषाढा नक्षत्रना पणि इमज चार तारा क्ख्या ॥ जीव चार थानके उप

प्राक् तथापि किञ्चिद्विख्यते ॥ जीवाणति ॥ गणेशोवाक्यालङ्कारार्थं शत्रुभिः स्थानकैर्नारकत्वादिभिः पर्यायैर्निर्वर्त्तिताः कर्मपरिणामं नीता स्तथाविधा शुभपरिणामवशा इवा स्ते चतुःस्थाननिर्वर्त्तिता स्तान् पुद्गलान् कथं निर्वर्त्तितानित्याह पापकर्मतया अशुभस्वरूपज्ञानावरणादिरूपत्वेन ॥ चिणसुत्ति ॥ तथाविधापरकर्मपुद्गलैश्चितवतः पापप्रकृती रल्पप्रदेशा बहुप्रदेशौकृतवन्तः ॥ नेरडयणिब्बत्तिएत्ति ॥ नेरयिकेण सता निर्वर्त्तिता इति विग्रह एव सर्वत्र तथा ॥ एवंउवचिणसुत्ति ॥ चयसूत्राभिलापेनोपचयसूत्रं वाच्यं तत्र ॥ उवचिणसुत्ति ॥ उपचितवतः पौनःपुन्येन एवमिति चयादिन्यायेन बधादिसूत्राणि वाच्यानीत्यर्थः इहच बधउदौरेत्यादिवक्तव्यं यच्चयोपचयग्रहणं तत्स्थानान्तरप्रतिवगायोत्तराद्बानुवृत्तिवशादिति तत्र ॥ बंधत्ति ॥ बंधेयुं स्रथबधनबद्धान् गाढबधनबद्धान् कृतवतः ॥ ३ ॥ उदौरत्ति ॥ उदौरिसु ॥ उदयप्रामेदलिके अनुदिता स्ता नाकथ्य करणेन वेदितवतः ॥ वेयत्ति ॥ वेदिसु ॥ प्रतिसमयस्वेन रसविपाकेनानुभूतवतः ॥ तहनिज्जराचेवत्ति ॥ निज्जरिसु ॥ कात्स्न्येनानुसमयविशेषतद्विपाकहान्यापरिश्रान्तवन्तः पुद्गलाधिकारात्पुद्गलानेव

चिणिस्संतिवा तं० नेरडयणिब्बत्तिए तिरिक्कजोणिणिब्बत्तिए मणुस्सणिब्बत्तिए देवणिब्बत्तिए । एवंउवचिणं सुत्रा उवचिणतिवा उवचिणिस्सतिवा । एवं चिणउवचिणबंधोदी रवेयतहणिज्जराचेव । चउप्पएसियाखं

जवाना पुद्गलने पापकर्मतया चिणताहुवा अतीतकाले चिणेके वर्त्तमानकालमां चिणस्ये आगामिकालमां तेकहैछे ॥ नारकीनिर्वर्त्तित १ । तिर्यचयोनि निर्वर्त्तित २ । मनुष्यनिर्वर्त्तित ३ । देवनिर्वर्त्तित ४ ॥ एम पूर्वे अतीतकालमां एकठा कीधा वर्त्तमानकालमां उपचिणेके आगामिकालमां उपचिणस्ये ४ ॥ एम चिणे उपचिणे बाधे उदयआणे तिम निर्जरावे ॥ च्यार प्रदेशिया खध अनंता कह्या ॥ च्यार आकाशने अवगाही रह्या एहवा पुद्गल

॥

॥

द्रव्यादिभिर्निरूपयन्नाह ॥ चउप्पएत्यादि ॥ सुगममिति ॥ इतिचतुःस्थानकस्यचतुर्थोद्देशकः ॥ इति श्रीमदभयदेवाचार्यविरचिते स्थानाख्यतृतीयाङ्ग  
विवरणे चतुःस्थानकाख्य चतुर्थमध्ययन परिसमाप्तमिति ॥ अथश्लोकाः २६३२ ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
व्याख्यात चतुर्थमध्ययन साम्प्रत व्याख्याक्रमसम्बद्धमेव पञ्चस्थानकाख्यं पञ्चममध्ययन व्याख्यायते ऽस्य चाय विशेषाभिसम्बन्ध इहा नन्तराध्ययने जी  
वाजीवतद्वर्माख्यः पदार्थाश्चतुःस्थानकावतारणे नाभिहिता इहतु तएव पञ्चस्थानकावतारणे नाभिधीयत इत्यनेनाभिसम्बन्धेनायातस्यास्योद्देशकत्व  
यवतश्चतुरनुयोगद्वारवतोध्ययनस्य प्रथमोद्देशको व्याख्यायते अस्यच पूर्वोद्देशकेन सह सम्बन्धो धिकृताध्ययनवद् द्रष्टव्य स्तस्य चेदमादिसूत्रं ॥ पञ्चम

धा अणन्ता पस्सत्ता । चउप्पएसोगाढा पोग्गला अणन्ता पस्सत्ता । चउसमयठिईया पोग्गला अणन्ता  
पस्सत्ता चउगुणकालगा पोग्गला अणन्ता पस्सत्ता । जाव चउग्गुणलुस्का पोग्गला अणन्ता पस्सत्ता ॥  
इइ चउठाणं सम्मत्त ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
पच महत्तया पस्सत्ता तजहा सत्ताणंपाणाइवायानुवेरमण सत्ताणमुसावायानुवेरमणं जाव सत्ताणंपरिग्गहा

अनन्ता कह्या ॥ च्यार समयनी स्थितिना पुद्गल अनन्ता कह्या ॥ च्यार गुणा काला पुद्गल अनन्ता कह्या ॥ यावत् च्यारगुणा लूखा पुद्गल अनन्ता कह्या ॥  
इति चौथो ठाणू सपूर्णं थयो ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
हिवे पाचमो लिखे ॥ पाच महाव्रत कह्या ते कहै ॥ सर्व प्राणातिपातथी विरमवो त्यागकरवो १ । एस सर्व मृपावादथी विरमवो २ । सर्व

हव्वएत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहायं सम्बन्धः पूर्वसूत्रे ऽजीवानां परिणामविशेष उक्त इहतु सएव जीवाना मुच्यत इत्येवं संबन्धस्या स्य व्याख्या सं-  
हितादिक्रमेण सच क्षुण्णव नवरं पंचेति सख्यान्तर व्यवच्छेद स्तेन न चत्वारि प्रथमपश्चिमतीर्थयोः पचानामेव भावात् महान्ति वृहन्ति तानिच ता-  
निच नियमात् महान्नतानि महत्त्व चैषां सर्वजीवादिविषयत्वेन महाविषयत्वात् उक्तंच पढममिसव्वजीवा वीएचरिमेयसव्वदब्बाइ । सेसामहव्वयाख-  
लु तदेकदेसेणदब्बाणंति ॥ १ ॥ तेषां द्रव्याणा एकदेशेनेत्यर्थं स्तथा यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेनेति प्रत्याख्यानरूपत्वात् तेषामिति देशविरतापेक्षया म-  
हतोवा गुणिनो व्रतानि महद्व्रतानीति पुलिङ्गनिर्देशस्तु प्राकृतत्वादिति प्रज्ञप्तानि तथाविधशिष्यापेक्षया प्ररूपितानि महावीरेण आद्यतीर्थकरेणच न  
शेषे रित्येतत् किल सुधम्मस्सामी जंख्खामिन प्रतिपादयामास तद्यथा सर्वस्मा त्रिरवशेषात् त्रसस्थावरसूक्ष्मवादरभेदभिन्नात् कृतकारितानुमतिभेदाच्चे-  
त्यर्थः अथवा द्रव्यतः षड्जीवनिर्कायविषयात् क्षेत्रतः स्थलोकसमभवात् कालतो तीतादे रात्र्यादिप्रभवाद्वा भावतो रागद्वेषसमुत्थाच्च नतु परिस्थूरादेवे-  
तिभावः प्राणाना मिन्द्रियोच्छासायुरादीना मतिपातः प्राणिनः सकाशा द्विभ्रशः प्राणातिपातः प्राणिप्राणवियोजनमित्यर्थः तस्मा द्विरमण सम्यक्-  
ज्ञानयद्धानपूर्वकं निवर्त्तनमिति तथा सर्वस्मा त्ज्ञावप्रतिषेधासद्भावोद्भावना २ अर्थान्तरोक्तिगर्हभेदात् कृतादिभेदाच्चा यथा द्रव्यतः सर्वद्रव्यास्तिकाया-  
दिद्रव्यविषयत्वात् क्षेत्रतः सर्वलोकालोकगोचरात् कालतो तीतादेः रात्र्यादिवर्त्तिनोवा भावतः कषायनोकषायादिप्रभवात् मृषा ऽलोकं वदनं वादो-  
मृषावाद स्तस्मा द्विरमण विरतिरिति तथा सर्वस्मात् कृतादिभेदा द्यथा द्रव्यतः सचेतनाचेतनद्रव्यविषयात् क्षेत्रतो ग्रामनगरारण्यादिसमभवात् काल-  
तो तीतादे रात्र्यादिप्रभवाद्वा भावतो रागद्वेषमोहसमुत्थात् अदत्तं खामिना अवितीर्णं तस्या दान ग्रहण मदत्तादानं तस्मा द्विरमण मिति  
तथा सर्वस्मात् कृतकारितानुमतिभेदा द्यथा द्रव्यतो दिव्यमानुषतैरश्वभेदात् रूपरूपसहगतभेदाद्वा तत्र रूपाणि निर्जीवानि प्रतिमा रूपा ण्यु



यन्ते रूपसङ्गतानितु सजीवानि भूषणविकलानिवा रूपाणि भूषणसहितानि रूपसङ्गतानीति क्षेत्रतस्त्रिलोकसम्भवात् कालतो ऽतोतादेराश्यादि  
 समुत्पादा भावतो रागद्वेषप्रभवात् मिथुन स्तोपुसद्वद तस्य कर्ममैथुन तस्मा द्विरमणमिति तथा सर्वस्मात् कृतादे रथवा द्रव्यतः सर्वद्रव्यविषयान् क्षेत्र  
 तो लोकसम्भवात् कालतो ऽतोतादे राश्यादिभवादा भावतो रागद्वेषविषया त्परिगृह्यत आदीयते परिग्रहणवा परिग्रह स्तस्मा द्विरमणमिति व्रत  
 प्रस्तावात् ॥ पञ्चाणुब्रह्मादि ॥ अणुव्रतसूत्र स्फुटं चेदं किन्तु अणूनि लघूनि व्रतानि अणुव्रतानि लघुत्वच महाव्रतापेक्षया अल्पविषयत्वादिनेति प्रतीत  
 मेवेति उक्तच सव्यगयंसमत्तं सुएचरित्तेनपञ्जवासब्जे देशविरहंपडुञ्चा दोषहविषडिसेवणकुञ्जति ॥ १ ॥ अथवा अनुमहाव्रतकथनस्य पसा तदप्रतिप  
 त्तौ यानि व्रतानि कथ्यन्ते ता न्यणुव्रतानीति उक्तञ्च जइधग्गस्ससमत्थे जुज्झइतद्वेसणपिसाङ्गण तदहिगदोसनिवत्ती फलतिकायाणकपडुत्ति ॥ १ ॥ अथ  
 वा सर्वविरतापेक्षया अणो लघो गुणिनो व्रता न्यणुव्रतानीति स्थूला दीन्द्रियादयः सत्त्वाः स्थूलत्वे चैतेषां सकललौकिकाना जीवत्वाप्रसिद्धेः स्थूलविषय  
 त्वात् स्थूल तस्मा प्राणातिपाता तथा स्थूलः परिस्थूलवस्तुविषयो ऽतिदुष्टो विवक्षासगुञ्जव स्तस्मात् मृषावादात् तथापरिस्थूलवस्तुविषय चौर्यारोपणहे  
 तुत्वेन प्रसिद्ध मतिदुष्टाध्यवसायपूर्वक स्थूल तस्माददत्तादाना तथा स्वदारसंतोष आत्मोपकलत्रा दन्यगेच्छानिवृत्ति रित्युपलक्षणा त्वरदारवर्जनमपि

**उत्वेरमणं । पञ्चाणुब्रह्मा पञ्चत्वा तंजहा थूलानुपाणाइवायानुवेरमण थूलानुमुसावायानुवेरमणं थूलानुञ्चदि**

अदत्तादानथी विरमवो ३ । सर्व मैथुनथी विरमवो ४ ॥ सर्वपरिग्रहथी विरमवो ५ ॥ पांच अणुव्रत कस्या ते कहैले स्थूल प्राणातिपातथी विरमवो १ ।  
 थूल मोटा मृषावादथी विरमवो २ । थूल अदत्तादानथी विरमवो ३ । थूल मैथुनथी विरमवो स्वदार तेस्व कीयस्त्रीपोतानी स्त्रीमा संतोष ४ ॥ थूल

ग्राह्यं तथा इच्छाया धनादिविषयस्या भिलाषस्य परिमाणं नियमन मिच्छापरिमाणं देशतः परिग्रहविरतिरित्यर्थः इच्छापरिमाणं चेन्द्रियार्थगोचरं ये  
 य इतीन्द्रियार्थवक्तव्यतार्थं ॥ पचवन्नेत्यादि ॥ त्रयोदशसूत्री माह प्रकटा चेय नवरं पचवर्णाः १ पंचैव रसा स्तदन्येषां सयोगिकत्वेना विवक्षितत्वादिति ॥  
 कामगुणन्ति ॥ कामस्य मदनस्या भिलाषमात्रस्यवा सम्पादका गुणा धर्माः पुद्गलानां काम्यन्तइति कामा स्तेचते गुणाश्चेतिवा कामगुणाइति ३ ॥ पंच  
 हिंठाणेहि ॥ पचसु पचभिर्वा स्थानेषु रागाद्याश्रयेषु तैर्वा सह सज्यतेसग सखन्धं कुर्वन्तीति ४ ॥ एवमिति ॥ पचस्वेव स्थानेषु रज्यते सगकारणं रागं यां  
 तीति ५ ॥ मुच्छन्ति ॥ तद्दोषानवलोकनेन मोह मचेतनत्व मिव यांति सरक्षणानुबंधवतोवा भवन्तीति ६ ॥ गृध्यन्ति प्राप्तस्या सतोषेणा प्राप्तस्या कांचावतो  
 भवन्तीति ७ ॥ अधुपपद्यन्ते तदैकचित्ताभवन्तीति तदर्जनायवा धिक्वेनोपपद्यन्ते उपपन्ना घटमानाभवतीति ८ ॥ विनिघातं मरणं मृगादिव तससारवा प  
 द्यते प्राप्नुवतीति आह च रक्तः शब्दे हरिणः स्पर्शेनागोरसेचवारिचरः कृपणपतङ्गोरूपे भुजगोगधेनतुविनष्टः ॥ १ ॥ पचसुरक्ताः पचवि नष्टायत्रागृहीत

न्नादाणानुवेरमणं सदारसतोसे इच्छापरिमाणे । पंचवस्त्रा पस्त्रता तंजहा किरहा नीला लोहिया हालिहा  
 सुक्लिहा । पचहिंठाणेहि जीवा सज्जन्ति तंजहा सद्देहि जाव फासेहि । एव रज्जति मुच्छन्ति गिज्जति श्च

परिग्रह्यथी विरमवो इच्छा परिमाणे परिग्रहनुं मान परिमाण करवो ५ ॥ पाच वर्ण कह्या ते कहैछे ॥ कालो १ । नीलो २ । रातो ३ । पीलो ४ ।  
 सपेद ५ ॥ पाच रस कह्या ते कहैछे ॥ तिक्त यावत् मधुर मीठो ५ ॥ पच कामगुण कह्या ते कहैछे ॥ शब्द १ । रूप २ । रस ३ । गंध ४ । स्पर्श ५ ॥ पांच  
 थानके जीव सज्जित होय उदम करे ते कहैछे शब्दने विषे रूपरसगंधस्पर्शनेविषे ॥ एम राचैछे । मूर्च्छापामैछे । गृध्रथाय एपाचथानके जीव

परमार्थाः एकः पञ्चसुरक्तः प्रयाति भस्मान्ततां मूढ इति ॥ २ ॥ ८ अपरिणायति ॥ अपरिज्ञया स्वरूपतो अपरिज्ञाता न्यनवगतानि प्रत्याख्यानपरिज्ञयाचा प्रत्याख्यातानि अहिताया पायाया सुभाया पुण्यबधाया सुखायवा ऽक्षमाया नुचितत्वाया ऽसमर्थत्वायवा ऽनिःश्रेयसाया कान्धाणाया मोक्षायवा य दु पकारिस त्वालान्तर मनुयाति तदनुगामिकं तत्प्रतिषेधो ननुगामिक तज्ज्ञाव स्तत्त्व तस्मै अननुगामिकत्वाय भवति १० द्वितीयं विपर्ययसूत्र ११ उत्तरसूत्र द्वयेन तु एतदेवा हितहितादि व्यजितमिति दुर्गतिगमनाय नारकादिभवप्राप्तये सुगतिगमनाय सिद्धादिप्राप्तय इति दुर्गतिसुगत्योः कारणान्तरप्रतिपाद

ज्जोववज्जांति । पंचहिंठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जाइ तंजहा सद्देहिं जाव फासेहि । पंचठाणा जीवा णं अपरिस्साया अहियाए असुज्जाए अखमाए अनिस्सेयसाए अण्णाणुगामियत्ताए ज्वंति तंजहा सद्दा जा व फासा । पंचठाणा सुपरिस्साया जीवाणं हियाए सुज्जाए जाव अण्णाणुगामियत्ताए ज्वति तं० सद्दा जाव फासा । पंचठाणा परिस्साया जीवाणं सुगइगमणत्ताए ज्वंति तं० सद्दा जाव फासा । पंचहिंठाणेहिजीवा

विनिघात मरण पामै मृगादिवत् ते कहैछे ॥ शब्दथी रूपरसगंधस्पर्शथी पतंग मत्स्य जूमर हस्तिवत् ॥ पांच थानके जीवने अण्णाण्णायाथकां एह नाफल जाण्णाविना अहितने अर्थ थाय अशुज्जने अर्थथाय । अक्षमाने अर्थथाय । अनिश्रेयस अकल्याणने अर्थ थाय संसार बंधार वाने अर्थ थाय संसारनुं पार नपामै ते कहैछे ॥ शब्द यावत् स्पर्श ॥ पांच थानके जीव जलीरीते जाण्णाथकी जीवने हितने शुज्जने यावत् संसारनुं पार पामिवा ने अर्थ थाय ते कहैछे ॥ शब्द यावत् स्पर्श ॥ पांच थानके जाण्णाथका जीवने सद्गतिने अर्थहोय ते कहैछे ॥ शब्द यावत् स्पर्श ॥ पांच थानकेथी

॥ नसूत्रे सुगमेइति इह संवरतपसी मोक्षहेतू तत्रा नन्तर माश्रवनिरोधलक्षणः संवर उक्तो धुना तपोभेदात्मिकाः प्रतिमाआह ॥ पचेत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं  
 भद्रा १ महाभद्रा २ सर्वतोभद्रा ३ च द्विचतुर्दशभि दिने, क्रमेणभवतीत्युक्त प्राक् सुभद्रात् दृष्टत्वात् नलिखिता सर्वतोभद्रातु प्रकारान्तरेणा प्युच्यते द्वि  
 धेय क्षुल्लिका महतीच तत्राद्या चतुर्थादिना द्वादशावसानेन पंचसप्ततिदिनप्रमाणेन तपसा भवति अस्याश्च स्थापनोपायगाथा एगार्इपंचंते ठवियमं  
 ज्मेतुआइमण्यति उचियकमेणयसेसे जाणलहुसव्वओभइमिति १ पारणकदिनानितु पचविशतिरिति स्थापना महतीतु चतुर्थादिना षोडशावसानेन  
 षण्णवत्यधिकदिनशतमानेन तपसा भवति अस्याअपि स्थापनोपायगाथा एगार्इसत्तंते ठवियमज्मेतुआदिमण्यति उचियकमेणयसेसे जाण महंसव्वओभ  
 इति ॥ १ ॥ पारणकदिना न्येकोनपचाशदिति २ स्थापना भद्रोत्तरप्रतिमा द्विधा क्षुल्लिका महतीच तत्राद्या द्वादशादिनाविशंतेन पचसप्तत्यधिकादिमत  
 प्रमाणेन तपसा भवति अस्याः स्थापनोपायगाथा पचाइअनवते ठवियमज्मेतुआइमण्यति उचियकमेणयसेसे जाणहभईतरंखुडडति ॥ १ ॥ पारणकदि  
 नानि पचविशतिरिति ३ महतीतु द्वादशादिना चतुर्विंशतितमांतेन दिनवत्यधिकदिनशतत्रयमानेन तपसा भवति तत्रचगाथा पचाइगारसते ठवियमं

दुग्गइं गच्छंति तंजहा पाणाइवाएणं जाव परिग्गहेणं । पंचहिंठाणेहिं जीवा सोग्गइं गच्छंति तंजहा पाणाइ  
 वायवेरमणं जाव परिग्गहवेरमणं । पचपडिमानं पण्णत्तानं तजहा जद्दा सुजद्दा महाजद्दा सव्वज्जद्दा जद्दु

जीवदुर्गतिमां जाय ते कहैछे ॥ जीवहिंसाथी यावत् परिग्रहथी ॥ पांच थानकें जीव सुगतिमां जायछे ते कहैछे ॥ जीवहिंसाथी विरमवो यावत्  
 परिग्रहथी विरमवो ॥ पाच प्रतिमा ते अविग्रहविशेषकह्या ते कहैछे ॥ जद्दा १ । सुजद्दा २ । महाजद्दा ३ सर्वतोजद्दा ४ ॥ जद्दोत्तरप्रतिमा ५ ॥

आंतुआश्मण्यति उचियकमेणयसेसे मद्भमद्भोत्तरजाणति ॥ १ ॥ पारणदिना ग्येकीनपंचाशदिति उक्तः कर्मणां निर्जरणहेतु स्तपोपिशेषोऽधुना तेषामेव अनुपादानहेतोः सयमस्य विषयभूता नेत्रेन्द्रियजीयानाह ॥ पचेत्यादि ॥ स्थावरनामकर्मोदयात् स्थावराः पृथिव्यादय स्तेषां काया राशयः स्थावरोवा कायः शरीरं येषां ते स्थावरकायाः इद्रसंबन्धित्वा दिन्द्रः स्थावरकायः पृथिवोकाय एवंतद्गणिपसमतिप्राजापत्याप्रपि अप्कायादित्वेन वाच्या इति एतस्यायकानाह ॥ पचेत्यादि ॥ स्थावरकायानां पृथिव्यादीनामिति सभाष्यते अधिपतयो नायका दिशामिवे रद्राग्यादयो नवन्नाणामिवा ग्नियमदहनादयो दक्षिणोत्तर लोकार्णयो रिवशक्तेशानायिति स्थावरकायाधिपतयइति एतेषां अधिमत इत्यायधिसरूपमाह ॥ पचहीत्यादि ॥ व्यक्त अवरं अवधिना दर्शनं भवलीकन म र्थानामुत्पत्तुकाम भवितुकाम तजग्रमताया भवधिदर्शनोत्पादप्रथममगये ॥ राभाएज्जाति ॥ स्तम्भीयात् क्षुभ्येत् स्तम्भीत्यर्थः अवधिदर्शनेवा समुत्पत्तुकाम

तरपद्मिमा । पंचथावरकाया पण्णा तजहा इद्रेथावरकाये वंनेथावरकाये सिप्पेथावरकाये समईथावरका ये पयावएथावरकाये । पच थावरकायाहिर्वई प० त० इद्रेथावरकायाहिर्वई जाव पयावएथावरकायाहिर्वई पचहिंठाणेहि उहिदसणे समुप्पज्जिउकामेवि तप्पढमयाए रक्कजाएज्जा तजहा अप्पज्जयवा पुढवि पासित्ता

पाच थावरकाय कही ते कहेले ॥ इद्रथावरकाय पृथिवी १ । धूम्र थावर काय ते आप्ताय तेहनोस्वामी यूमह्ये २ । शिल्पथावरकाय ते अग्नि तेहनु स्वामी शिल्पले ३ । समतीथावरकाय ते वनस्पतिकाय तेहनु स्वामी समती देवतान्ने ४ ॥ प्राजापत्य थावरकाय ते वनस्पतिकाय तेहनोस्वामी प्रजा पतीले ५ ॥ पाच थावर कायना अधिपती कत्या ते कहेले ॥ इद्रपृथिवी थावरकायनो स्वामी एम यावत् प्रजापति वनस्पति थावरकायनो स्वामी

सति अवधिमानिति गम्यते क्षुभ्ये दल्पभूतां स्तोत्रसत्त्वां पृथिवीं दृष्ट्वा वाशब्दे विकल्पार्थः अनेकसत्त्वव्याकुला भूरिति सम्भावनावा मकस्य दल्पसत्त्वभूदर्शनात् आकि मेतदेव मित्येव क्षुभ्ये देवा क्षीणमोहनीयत्वादिति भावः अथवा भूतशब्दस्य प्रकृत्यर्थत्वा दल्पभूता मत्वा पूर्वा हि तस्य वक्षी पृथिवीति सम्भावना सौदिति १ तथा त्यतप्रचुरत्वात् कुंथूनां कुथूराग्निभूतां कुथूराग्नित्वं प्राप्तां पृथिवीं दृष्ट्वा इत्यतस्मिन्मया दयाभ्यामिति तथा ॥ महद्महालयति ॥ महान्तिमहन् महोरगशरीर महाहितनुं बाह्यद्वीपवर्तियोजनसहस्रप्रमाणं दृष्ट्वा विस्मया दया वा ३ तथा देव महर्षिक महायुतिक महानुभाग महाबलं महासौख्यं दृष्ट्वा विस्मयादिति ४ तथा ॥ पुरे सुवर्त्ति ॥ नगरा व्येकदेशभूतानि प्राकारावृतानि पुराणीति प्रसिद्धं तेषु पुराणानि चिरतनानि ॥ उरालादिति ॥ क्वचित्पाठ

तप्पठमया ए खन्ना एज्जा । कुंथुं कुंथुरासिज्जूयवा पुढविं पासित्ता तप्पठमया ए खन्ना एज्जा । महद्महालयं वाम होरगसरीर पासित्ता तप्पठमया ए खन्ना एज्जा । देववा महद्दिय जाव महेसक पासित्ता तप्पठमया ए खन्ना ए

५ ॥ पांचथानके अवधि दर्शन उपजवा आव्यो ते पणि उपजवाने पहिलेज समये क्षोत्रनां पामें रखलना पामें ते कहैछे ॥ अल्पमूत थोड़ी पृथ्वी देखी अने घणा जीवथी जरी देखीने १ । अथवा पूर्वे जे पृथ्वीने घणी जाणतो हतो ते अल्पदेखीने जाणो जे एहस्युं एम प्रथम समयमा क्षोत्र पामें १ । कुंथु जीवनी राशिभूत पृथ्वी देखी एतले घणा कुथुआकुल पृथ्वी देखी प्रथम समयमा क्षोत्र पामे अत्यंत विस्मय ऊपजै २ । अत्यंत मोटा मोटा सर्पनाशरीर देखी पहले क्षोत्रना पामें विस्मयथी अथवा जय पामवाथी मनुष्यक्षेत्रवाहिर जे द्वीप तेहमां सर्पनुं १ हजार योजननो शरीरछे एहवा मोटा सर्पछे ३ । देवताने महारिद्धिमंत यावत् महासुखी देखी ते प्रथम क्षोत्र पामें जे अहह एहवी मोटी रिद्धछे ४ ॥ मोटा जूना नगरने

स्तत्र मनोहराणीलङ्गः ॥ मण्डपमहालयादन्ति ॥ विस्तीर्णत्वेन महानिधानानीति महामूल्यरत्नादिमत्वेन प्रह्वीणाः स्वामिनो येषांतानि तथा प्रह्वीणाः  
 सेतारः सेचका स्तौयेतो पर्युपस्थितप्रक्षेपकाः पुत्रादयो येषा तानि तथा अथवाप्रह्वीणाः सेतव स्तदभिज्ञानभूताः पालय स्वामार्गावा विचिरतनतया  
 प्रतिजागरकाभावेनच येषां तानि प्रह्वीणसेतुकानि किं बहुना निधायकानां यानि गोत्रागाराणि कुलगृहाणि तान्यपि प्रह्वीणानि येषा मथवा तेषा  
 मेव गोत्राणि नामा न्याकाराया कृतय स्ते प्रह्वीणा येषांतानि प्रह्वीणगोत्रागाराणि प्रह्वीणगोत्राकाराणिवा एव मुच्छगस्वामिकादीन्यपिनवर मिह प्रह्वी  
 णाः किंचित्सत्तावतः उच्छन्ना निर्नष्टसत्ताका यानी मानि अनतरोक्तविशेषणानि तथा ग्रामादिषु यानि तत्र करादिगम्यो ग्रामः प्रागत्यकुर्वन्ति यत्र स  
 प्राकारो लोहाव्युत्पत्तिभूमिरिति नास्मिन् करोस्तीति नकर धुलीप्रकारोपेतं खेट कुनगर कर्बट सर्वतोऽर्द्धयोजनात्परेणस्थितग्रामं मण्डपं यस्यजलस्थलपथा वु  
 भावपि तद्द्रोणमुख यत्र जलपथस्थलपथयोरन्यतरेण पर्याहारं प्रवेश स्त त्वत्तन तीर्थस्थान माश्रमः यत्र पर्वतनितबादि दुर्गो परचक्रभयेन रक्षार्थं धान्या

ज्जा । पुरेवा पोराणाइं महइ महालयाइं महाणिहाणाइ पहीणसेउयाइं पहीणगोत्रागाराइं उच्छिखरासि  
 याइं उच्छिखसेउयाइ उच्छिखगोत्रागाराइं जाइं इमाइं गाभागरनगरखेठकवृममवदोणमुहपट्टणा सम

विषे जूना मोटामोटा निधान महामूल्यरत्न प्रह्वीण थयाळे स्वामी जेहना दायगयाळे सेवनार पुत्रादि जेहना दायगयाळे गोत्रघर निधान दाटनारनां  
 विच्छेद थयाळे स्वामी उच्छेद थयाळे गोत्रीयघर जेहना जे एह ग्राम आकर नगर खेट कर्बट मण्डप द्रोणमुख पाटणा आश्रम सवाश संनिवेश इ  
 त्यादिकने विषे घोडाकारे मार्गने विषे त्रिक चतुष्क चाघर चतुर्मुख महापथ ते राजमार्गमा नगर नो पाणी जावानोमार्ग तेहमां मसाण सूनांघर

दीनि संवहन्ति ससंवाहः यत्र प्रभूतानां भाण्डानां प्रवेशः स संनिवेश स्तथा शृङ्गाटकं त्रिकोणं रथ्यांतरं स्थापनात्रिकं यत्र रथ्यानां त्रयं मिलति चतुष्कं यत्र चतुष्टयं चत्वरं रथ्याष्टकमध्यं चतुर्मुखं देवकुलादि महापथो राजमार्गः पथो रथ्यामात्र एव भूतेषुवा स्थानेषु नगरनिर्दमनेषु तत्चालेषु तथा अगारशब्द सवधात् श्मशानागारं पितृवनगृह शून्यागारं प्रतीतं तथा गृहशब्दसवधात् गिरिगृहं पर्वतोपरिगृहं कन्दरगृहं गिरिगुहा गिरिकन्दरवा शान्तिगृहं यत्र राज्ञां शान्तिकर्म होमादि क्रियते शैलगृहं पर्वत मुक्तोर्यं यत्कृत उपस्थानगृहं आस्थानमण्डपो अथवा शैलोपस्थानगृहं पाषाणमण्डपः भवनगृहं यत्र कुटुम्बिनो वास्तव्याभवन्तीति अथवा शान्त्यादिविशेषितानि भवनानि गृहाणिवा तत्र भवनं चतुःशालादि गृहन्त्वपवरकादिमात्रं तेषु संनिक्षिप्तानि न्यस्तानि दृष्ट्वा क्षुब्धे दृष्टपूर्वतया विस्मया लोभादिति ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमनमिति केवलज्ञानदर्शनतु न स्तम्भीया केवलीच याथात्म्येन वसुद

संवाहसंनिवेशेषु सिंघातगतिगचउक्लचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु नगरणिष्ठमणेषु मसाणसुसागारगिरिकंद रसन्तिसेलोवछाणन्नवणगिहेसु संनिस्किताइं चिछति ताइवा पासित्ता तप्पढमयाए खज्जाएज्जा इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं उहिदंसणेसम्मुप्पज्जिउं कामे तप्पढमयाए खज्जाएज्जा ॥ पंचहिं ठाणेहिं केवलवरनाणदंसणे

मां पर्वतनी गुफामां शान्तिघरं ते होमकरवानो घरं तेहमां शैलघरं पर्वत कोरी घरकीधो उपस्थान आस्थानसज्जा जवनघरं सोटा कुटुंबीनांघरं ए तला स्थानकमां दाटया होय रहिया होय ते देखीने प्रथम लोचना पांमै पूर्वे एहवा दीठानही ते देखीने विस्मय ऊपजै ५ । इत्यादि पाच था नके अवधिदर्शन उपजतो प्रथम लोचना पांमै क्षीण मोहनीयकर्म नथी थयो तेमाटे ॥ पांच थानके केवलज्ञान एतले केवल दर्शन उपजवा मांडयो



१० ॥ १ ॥ र्यनात् क्षीणमोहनीयत्वेन भयविस्मयलोभाद्यभावेना तिगम्भीरत्वाच्चेति अत आह ॥ पंचहीत्यादि ॥ सुगममिति तथा नारकादिशरीराणि वीभत्सा न्यु  
 ८ ॥ २ ॥ दाराणि च दृष्ट्वापि न केवलदर्शनं स्कम्भातीति शरीरप्ररूपणाय ॥ नेरद्रयाणमित्यादि ॥ सूत्रप्रपचोगतार्थेण नवर पचवर्णत्वं नारकादिवैमानिकांता  
 नां शरीराणां शरीराणां निश्चयनयात् व्यवहारतस्तु एकवर्णप्राप्त्युक्त्या कृष्णादिप्रतिनियतवर्णतैवेति ॥ जावसुक्लिता ॥ किरहा नीला लोहिया हालि  
 हा सुक्लिताय जाव मधुरति तित्ता कडुया कसाया अगिला मधुरा जाव वैमाणियाणति ॥ चतुर्विंशतिदण्डकसूत्राणि ॥ सरीरेति ॥ उत्पत्ति समया दा

समुप्यज्जिउकामे तप्पढमयाए णोखन्नाएज्जा तंजहा अण्णनूयंवा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए णोखन्नाए  
 ज्जा सेसंतहेव जाव जयणगिहेसु संनिखित्ताइ चिठ्ठति ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए णोखन्नाएज्जा सेसंत  
 हेव । इच्चेएहि पचहिं ठाणेहि जाव णोखन्नाएज्जा ॥ णेरद्रयाणंसरीरगा पंचवस्सा पंचरसा पस्सत्ता तंजहा  
 किरहा जाव सुक्लिता तित्ता जाव मधुरा । एव निरंतरं जाव वैमाणियाण । पंचसरीरगा पस्सत्ता तंजहा

ते पहले समये क्षोज्जना नपामै क्षीण मोहनीयकर्म थयो तेमाटे तेकहैछे अल्पभूत पृथिवी देखीने ते प्रथम समयमा क्षोज्जना नपामै बीजो तिमज पूर्व  
 वत् यावत् जवनघरमा थाप्या होय ते निधान देखीने प्रथम समयमा क्षोज्जना नपामै एम पांच थानके यावत् क्षोभना न पामै ॥ नारकीना श  
 रीर पाचवर्ण ना तथा पाच रसना कहिया ते कहैछे कृष्ण यावत् ऊजलो सपेद पणि सर्व ठेकाणे तीखा यावत् मधुर रस एम अंतर रहित याव  
 त् वैमानिक बीबीस दंठक लगे ॥ पाच शरीर कह्या ते कहैछे औदारिक १ । वैक्रिय २ । आहारक ३ । तैजस ४ । कर्मण ५ ॥ औदारिक शरीर

रभ्य प्रतिक्षणमेव शीर्यतइति शरीरं ॥ ओरालियति ॥ उदारं प्रधानं उदार मेवौदारिकं प्रधानता चास्य तीर्थकरादिशरीरापेक्षया महि तंतो म्यग्रधान  
 तर मस्ति प्राक्ततत्वेनच ॥ ओरालियति ॥ अथवा उरालनाम विस्तराल विशाल सातिरेकयोजनसहस्रप्रमाणत्वा दस्या न्यस्य वा वस्थितस्यैव मसम्भवा  
 दुक्तञ्च जोयणसहस्रमहिय ओहयएगेदिएतरुगणेषु मच्छजुयलेसहस्र उरगेसुयगभजाएसुत्ति ॥ १ ॥ वैक्रियस्य लक्षप्रमाणत्वे म्यनवस्थितत्वात् तदेव  
 ओरालिक अथवा उराल मल्पदेशोपचितत्वात् बृहत्वाच्च भिडवदिति तदेव ओरालिक निपातनात् अथवा ओरालं मासास्थिस्नाट्वाद्यववञ्चं तदेव ओ  
 रालिकमिति उक्तञ्च तथोदारमुरालं उरालओरालमहवविन्नेय ओदारियतिपठम पडुच्चतित्येसरसरौर ॥ १ ॥ भस्त्रद्वयतहोराल वित्थरवंतंबस्त्रस्त्रपप्य प  
 गर्दैनत्यिन्न एहहमेतंविसालतु ॥ २ ॥ उरलथोवपणसो वचियपिमहल्लगजहाभिड संसठ्ठिगहारवद्ध ओरालसमयपरिभासन्ति ॥ ३ ॥ वेउव्वियन्ति ॥ वि  
 विधा विशिष्टावा क्रिया विक्रिया तस्यां भव वैक्रियं उक्तञ्च विविहायविसिठ्ठावा किरियाविक्रियतीएजंभवतमिह वेउव्वियतयंपुण नारगदेवाणयगर्दए  
 त्ति ॥ १ ॥ विविध विशिष्टवा कुर्वन्ति तदिति वैकुर्विकमिति वा ॥ आहारएत्ति ॥ तथाविधकार्योत्पत्तौ चतुर्दशपूर्वविदा योगबलेना क्लियत इत्याहारकं  
 उक्तञ्च कज्जम्भिसमुपन्ने सुयकेवलिणोविसिठ्ठलबीए जएत्थआहरिज्जइ भणतिआहारगततु ॥ १ ॥ कार्याणि त्वमूनि पाणिदयरिद्विसंदरि सणत्थमत्थोवग  
 हणहेओवा ससयवुच्चेयत्थं गमणजिणपायमूलंमि ॥ १ ॥ कार्यसमाप्ती पुन मुंचते याचितोपकरणवदिति ॥ तेयएत्ति ॥ तेजसो भाव स्तेजस मूष्मादिलिग

उरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए । उरालियसरीरे पंचवन्ते पंचरसे पणत्ते तंजहा किराहे जाव

ने पांचवर्ण पांचरस कहिया कृष्ण यावत् सपेद तीखो यावत् मधुर मीठो ॥ एम यावत् कर्मण शरीर लगे पांच वर्ण पांच रस कहवा ॥ सघलाई

॥ सिंहं उक्तं सत्त्वस्य उग्रसिंहं रसादिपाहारयागजणगंच तेयगलजिनिमित्तं च तेयगंहोदनायज्वमिति ॥ १ ॥ कग्माएत्ति ॥ कर्मणोयिणारः कार्मणं सकलं  
 शरीरकारणमिति उक्तं कग्माणिगारोक्तगणं महुयिद्विविचित्तकग्मानिपणं सल्लेसिसरीराणं कारणभृशंमुणेश्वंति १ ॥ श्रीदारिकादिक्तमथ यणोत्तरं  
 सूक्ष्मत्वा जदेशवाहुपाशेति तथा सर्वाण्यपि वादरबोदिधराणि पर्याप्तकत्वेन स्फूराकारधारीणि कलेवराणि शरीराणि मनुष्यादीना पंचादिवर्णादीं न्य  
 ययभेदेनेति अणिगोलकादिषु तथेयो पल्लवः ॥ दोगंधति ॥ सुरभिदुरभिभेदात् ॥ पडफासत्ति ॥ कठिनमदुशीतोष्णगुलघुस्निग्धरुचभेदादिति अवादर  
 बोदिधराणि तु न नियतवर्णादिचपदेश्या न्यपर्याप्तकत्वेना वयवविभागाभावादिति अनतरं शरीराणि प्ररूपितानीति शरीरविशेषगतान् धर्मविशेषान्  
 ॥ पचहिठाणे हि ॥ प्रत्यादिना जंबसूतातेन गंधेन दर्शयति सुगमसाय नवरं पंचसु स्थानकेषु प्रास्वातादिक्रियायिशेषलक्षणेषु पुरिमा भरतेरावतेषु चतुर्विं  
 शति रादिमा स्तेच पश्चिमका शरमा पुरिमपश्चिमका स्तेषां जिनाना मर्हतां ॥ दुग्गमति ॥ दुःखेन गम्यतइति दुर्गमं भावसाधनीयं ज्ञच्छहृत्तिरित्यर्थस्तद्वति  
 धिनेयाना मज्जुजडत्वेन वज्जजडत्वेनच तानि चेमानि तथथेत्यादि इहचा स्थानं विभजन दर्शनं त्रियिचण मनुचरणचे त्वेव वक्तव्येपि येषु स्थानेषु ज्ञच्छ

सुक्खिले तित्ते जाव मज्जरे । एवं जाव कम्मगसरीरे । सत्त्वेविणं वादरबोदिधरा कलेवरा पंचवग्गा पंचरसा  
 दुगंधा अठफासा । पंचहिठाणेहिं पुरिमपच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं जवइ तंजहा दुग्गाइरकं दुद्धिजजं

वादर मोटा आकारना धरणाहार पर्याप्ता शरीर ते पांच वर्ण सहित पांच रस जेगंध छ्वाठ स्पर्श सहित कहिया ॥ पांच ध्यानके प्रथम अने छे  
 हला जिनने वारे तत्त्व दुखणी समझै रिजुजड वज्जजड भाटे ते कहैछे शिष्यने दुखणी कहवाय जेद जावना विभागदुखणी समझै जीवा जीवनुं दे

वृत्तिर्भवति तानि तद्योगात् कृच्छ्रवृत्ती न्येवोच्यतइति कृच्छ्रवृत्तिद्योतकदुःशब्दविशेषितानि कर्मसाधनशब्दाभिधेया न्याख्यानादीनि विचित्रत्वात् शब्दप्रवृत्तेराह ॥ दुःआइक्खमित्यादि ॥ तत्र दुराख्येयं कृच्छ्राख्येयवस्तुतत्त्व विनेयाना महावचनाटोपप्रबोध्यत्वेन भगवता मायासोत्पत्तेरिति एव माख्याने कृच्छ्रवृत्तिरुक्ता एव विभजनादिष्वपि भावनौया तथा आख्यातेपि तत्र दुर्विभज कष्टविभजनीयं ऋजुजडत्वादेरेव तद्भवतीति दुःशक शिष्याणां वस्तुतत्त्वस्य विभागेना वस्थापनमित्यर्थः दुर्भिभवमित्यत्र पाठांतरं दुर्विभाव्यं दुःशका विभावना कर्तुं तस्येत्यर्थः तथा ॥ दुष्पस्सति ॥ दुःखेन दर्श्यतइति दुर्दृश्यं सुपपत्तिभिर्दुःशक शिष्याणां प्रतोता वारोपयितुं तत्त्वमितिभावः ॥ दुःतितिक्खति ॥ दुःखेन तितित्तते सद्यतइति दुःस्तितित्त परीषहादि दुःशकपरीषहादिक मुत्पन्न तितित्तयितुं शिष्य तत्प्रतिक्षमां कारयितुमिति भाषइति ॥ दुरणुचरति ॥ दुःखेना नुचर्यते ऽनुष्ठेयतइति दुरनुचरमंतर्भूतकारितार्थत्वेन दुःशक मनुष्ठा पयितुमित्यर्थः अथवा तेषां तोर्थं दुराख्येयं दुर्विभज माचार्यादौना वस्तुतत्त्व स्वशिष्या गति आत्मनापि दुर्दृश्यं दुःस्तितित्त दुरनुचर मित्येवं कारितार्थविमुच्य व्याख्येय तेषामपि ऋजुजडादिवादिनि मध्यमानान्तु सुगम मज्झक्खवृत्ति स्तुविनेयाना ऋजुप्राज्ञत्वेना ल्पप्रयत्नेनैव बोधनीयत्वा द्विहितानुष्ठाने सु

दुपरुसं दुतितिस्सं दुरणुचरं । पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणंसुग्गमं जवइ तजहा सुआइस्सं सुवि

खाडवु ते दुखथी परिसहादिक दुखथी सहै आचारनुं पालवो दोहिलो ॥ पाच थानके मध्यम एतले २२ जिनना वारेका साधुने सुगम सोहिलो कह्यो ते कहैछे सोहिलो कहवो १ । ज्ञाव जेद समझवा सुगम २ । जीवादिकनो देखावो सुगम ३ । खमवो सुगम ४ । पालवो सुगम ५ ॥ पाच थानके श्रमण जगवंत महावीरने श्रमण निग्रथ साधुने नित्य वर्णव्या नित्य वस्त्राख्यां नित्य नामथी कह्या नित्य प्रज्ञास्या नित्य करवु एम आज्ञा

खप्रवर्तनीयत्वा चेति शेष पूर्वत्र अवर मकृच्छार्थविशिष्टता आख्यानादीनां वाचा तथा ॥ सुरणुचरंति ॥ रेफः प्राकृतत्वादिति नित्यं सदा वर्णितानि फ  
लतः कोर्तितानि सयस्दितानि नामत ॥ बुद्ध्यादिति ॥ व्यक्तवाचोक्तानि स्वरूपतः प्रशस्तानि प्रशंसितानि श्लाघितानि शसुस्तुतावितिवचनात् अभ्यनुज्ञाता  
नि कर्तव्यतया अनुमतानि भवतीति अथच सूत्रोत्क्षेपः प्रतिसूत्रे वैयावृत्यसूत्रं यावत् दृश्यत इति तत्र घ्यांत्यादयः क्रोधलोभमानमाथानिग्रहा स्तथा लाघ  
वमुपकरणतो गौरवत्रयत्यागतश्चेति तथा अन्यामि पच सद्गोहित सत्य मनलीक तच्चतुर्विध यतो अवावि अविसंवादनयोगः कायमनोवागजिघ्रसाचैव  
सत्य चतुर्विध तच्च जिनवरमतेस्ति नान्यत्रेति तथा संयमन सयमो हिंसादिनिवृत्तिः सच सप्तदशविध यदुक्त पुढविदगअगणिमारुय वणस्सइवितिच  
उपणिदिअज्जावे पेहोप्पेइपमज्जण पठिठवणमणोवईकाये ॥ १ ॥ अथवा पचाअवाविरमण पचेद्वियनिग्रहः कषायजय. दडवयविरतिश्चे तिसयम.सप्तदश  
भेदइति ॥ १ ॥ तथा तप्पते अनेनेति तपः यतो ऽभ्यधायि रसरुधिरमासमेदो स्थिमज्जाशुक्लाण्यनेनतप्पते कर्माणिवाशुभानी त्यतस्तपोनामनैरुक्त ॥ १ ॥

ज्जं सुपस्सं सुतितिरुं सुरणुचरं । पंचठाणाइं समणेणं जगवयामहावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं णिच्चं  
वस्सियाइं णिच्चकित्तियाइं णिच्चबुद्धयाइं णिच्चंपसत्थाइं निच्चमप्पणुस्साइं जवति तजहा खती मोत्तीअज्जावे  
महवे लाघवे । पंचठाणाइं समणाणं जावअप्पणुन्नायाइं जवति तजहा सच्चे संजमे तवे चियाए बंजचेरवासे

दीधीळे ते कर्हेळे क्षमा १ । निर्लोभता २ । आर्जव जद्रक ३ । मार्दव अहकार रहितता ४ । लाघव द्रव्यज्ञावे हलुकापण ५ ॥ पांच ध्यानकै अमण  
जगवत महावीरने यावत् आज्ञा दीधीळे ते कर्हेळे सत्य १ । १७ भेदे सयम २ । तप १२ जेदे ३ । त्यागी यती साधुने विज्ञाग ४ । ब्रम्हचर्य पालवो

तच्च द्वादशधा यथाह अणसणमूणीयरिया वित्तीसंखेवरसच्चावो कायकिलेसोसंली णयायबभोतवोहोइ ॥ १ ॥ पायच्छित्तविणओ वैयावच्चंतहेवसज्जा ओ ज्जाणउत्सगोवियअभितरओ तवोहोइत्ति ॥ २ ॥ चियाएत्ति ॥ त्यजन त्यागः सविग्नैकसभोगिकाना भक्तादिदानमित्यर्थः गायेचात्र तोकयपच्च क्खाणी आयरियगिलाणबालवुड्डाणं दिज्जासणाइसते लाभेकयवोरियारो ॥ १ ॥ सविग्गअन्नसंतो इयाणदेसिज्जसठ्ठगकुलाई अतरंतोवासभोइयाणदेशेज हसमाहीति ॥ २ ॥ बल्लचर्ये मैथुनविरमणे तेनवा वासो बल्लचर्यवास इत्येष पूर्वोक्तैः सहदशविधः अमणधम्म इति अन्यत्रत्वयमेव मुक्तः खतीयमह्वज्जव मुत्तीतवसजमेवबोधवे सच्चसोयंआकिं चनचवंभचजइधम्मोत्ति ॥ १ ॥ इतच्चसाधुधम्मं भेदस्य बाह्यतपोविशेषस्य वृत्तिसंक्षेपाभिधानस्यभेदाऽ ॥ उक्खित्तचर येत्यादिना ॥ अभिधीयते तत्र उत्तुत्तित्त स्वप्रयोजनाय पाकभाजना दुद्धृत तदर्थं मभिग्रहविशेषा चरति तन्नवेषणाय गच्छतीत्युत्तुत्तित्त सचरकः एवं सर्वं नवर निक्षिप्तमनुद्धृतं अतर्भव मांत मुक्तावशेष वल्लादिप्रकृष्ट मांत प्राततदिवपर्युषित रूक्ष निस्नेहमिति इहच भावप्रत्ययप्रधानत्वेन उत्तुत्तित्तचरक त्वमित्यादि द्रष्टव्य मेव मुत्तरत्तापि भावप्रधानता दृश्या इहचाद्यौ भावाभिग्रहा वितरे द्रव्याभिग्रहा यतो ऽभाणि उक्खित्तमाइचरगा भावजुयाखलुअ

पंचठाणाइं समणाणं जाव झुल्लणुन्नायाइं ज्वंति तंजहा उरिक्खित्तचरणे णिरिक्खित्तचरणे झुंतचरणे पंतचरणे

५ ॥ पांच धानके यावत् जगवान् एम आजा दीधीळे तेकहैळै पोताने अर्थे जाजनथी उपाड्यो १ । आहार लेवानी गवेपणा २ । भाजन नथी ऊध

॥ भिग्गहोहीति गायतोयक्यंतो जंदेइनिसत्तमाइया ॥ १ ॥ तथा लेउडमलेउडंवा अमुगंदब्बंअज्जपेच्छामि अमुगेणउदब्बेणं अहदब्बाभिग्गहोनामंति ॥ १ ॥  
 ॥ एवमन्यत्रापि विधेयं ज्ञेयं इति अज्ञातः अनुपदर्शितस्वाजन्यर्चिमयव्रजितादिभावः संशरति भिक्षार्थं मटवी त्यज्जातचरकः तथा ॥ अन्नइलायचरणत्ति ॥  
 अन्नग्लानको दोषान्नभुगिति भगवतीटीपनकेउत्ता एवविधः स न्नथवा अन्नं विना ग्लायकः समुत्पन्नवेदनादिकारण एवेत्यर्थः अन्यस्मैवा ग्लायकाय भोजनार्थं  
 चरतीति अन्नग्लानकचरको ऽन्न ग्लायकचरको अन्यग्लायकचरकोवा कचित्पाठः ॥ अन्नवेलत्ति ॥ तत्र अन्यस्यां भोजनकालापेक्षया आद्यावसानरूपायां  
 वेलाया समये चरतीत्यादि दृश्यं मयच कालाभिग्रह इति तथा मौनं मौनवतं तेन चरति मौनचरकः तथा संसृष्टेन खरटितेने त्यर्थो हस्तभाजनादिना  
 दीयमानं कल्पिकं कल्पवत् कल्पनीयं सुचितमभिग्रहविशेषा ज्ञातादि यस्यसं ससृष्टकल्पिकं स्तथा तज्जातेन देयद्रव्यप्रकारेण यत्संसृष्टं हस्तादि तेनदीय  
 मानं कल्पिकं यस्येति विग्रह इति उपनिधीयत इत्युपनिधिः प्रत्यासन्नं यद्यथाकथंचि दानीत तेनचरतीति तद्ग्रहणायैत्यर्थः इत्युपनिधिकः उपनिहित  
 मेववा यस्य ग्रहणविषयतयास्ति स प्रज्ञादेराकृतिगणत्वेन मत्वर्थीयणप्रत्यये औपनिहित इति तथा शुद्धा अनतिचारा एषणाशकितादिदीपवर्जितरूपा

लूहचरण । पंचठाणाइं जाव अण्णसुन्नायाइं न्वंति तंजहा अन्नायचरण अन्नवेलचरण मोणचरण संसठक

स्यो ते लेवानी गवेषणा अते खाधी पळे जगस्यो लिये ३ । प्रांत ते वल्ल चण्यादि आहार लीजिए ४ । लूखो ते घीतेल रहित आहार वोसरे ५ ॥  
 पाच थानके यावत् जगवते आज्ञा दीधीळे ते कहेंळे पोतानी जाति कुल सगाई अण जणावी आहार लेवो १ । जोजननो काल लाडी गोचरी जाय  
 ते कालाजिग्रह २ । मौन व्रतधारी गोचरी जाय ३ । हस्तादि खरडै हाथथी कल्पनीय लेवे ४ । जे आहारदिपेळे तेणें घरडी हाथे दम कल्पनीय

॥ संसद्धमसंसद्धेत्यादि ॥ सप्तप्रकारा अन्यतरावा तथाचरती त्युत्तरपदवृद्धा शुद्धैषणिकः संख्याप्रधानाः परिमिता एव दत्तयः सकृद्भुक्तादिष्वेव लक्षणा ग्रा  
ह्या यस्यस संख्यादत्तिकः दत्तिलक्षणश्लोको ऽत्र दत्तीओजत्तिएवारे खिवईहोतितत्तिता अवोच्छिन्ननिवायावो दत्तीहोइद्वेतरत्ति ॥ १ ॥ तथा दृष्टस्यै  
व भक्तादे लांभ स्तेन चरतीति तथैव दृष्टालाभिक सृष्टस्यैव साधो दीयत इत्येवंयोलाभ स्तेन चरतीति प्राग्वत् पृष्टलाभिकः आचाम्न समयप्रसिद्ध तेनचर  
तीत्याचाम्निकः निर्गतो घृतादिविकृतिभ्यो यः स निर्विकृतिकः पुरिमार्द्ध पूर्वाङ्गलक्षण प्रत्याख्यानविशेषो ऽस्ति यस्यस तथा परिमितो द्रव्यादिपरि  
माणतः पिण्डपातो भक्तादिलाभो यस्यास्ति सपरिमितपिण्डपातिकः भिन्नस्यैव स्फोटितस्यैव पिण्डस्य सक्तुकादिसंबन्धिनः पातो लाभो यस्यास्ति स  
भिन्नपिण्डपातिकः ग्रहणानन्तरमभ्यवहरण भवतीत्यत एतदुच्यते अरस हिंवादिभि रसस्कृत माहारयती त्यरसीवा हारो यस्यासा वरसाहार एव सर्वत्र

प्यिए तज्जायसंसठकप्यिए । पंचठाणाइं जाव अण्णुन्नायाइं ज्वंति तंजहा उवनिहिए सुद्धेसणिए संखा  
दत्तिए दिठलान्निए पुठलान्निए । पंचठाणाइं जाव अण्णुन्नायाइं ज्वंति तंजहा अयायंवलए निच्चिइए  
पुरिमह्विए परिमियपिण्वाइए जिन्नपिण्वाइए । पंचठाणाइं जाव अण्णुन्नायाइं ज्वंति तंजहा अरसा

आहार लेवो एहवा अजिग्रह करे ५ ॥ पांच थानके यावत् एम आज्ञा दीधीछे ते कहैछे कोईक रीते आणयो आहार लेवो ते उपनिहित १ । ए  
षणा शुद्ध ४२ दोषरहित लेवो २ । संख्यादत्ति लेवो ३ । नजरथी देखी लाजस्यें तोलेस्युं ४ । पूछी ते लाभस्यें तोलेस्युं ५ ॥ पांच थानकें यावत्  
आज्ञा दीधीछे ते कहैछे आंबिलकरे १ । नीवीकरे विगयमूकें २ । पुरिमार्द्ध बेपहरनुं सूर्योदयथी पचखाण करे ३ । द्रव्यपरिमाणकरी आहार लेवो जे एतला



नवरं विरसं विगतसरं पुराणधान्योदनादि रूखं तैलादिवर्जितमिति तथा अरसेन जीवितुं शीलं माज्जापि यस्यसं तथा एव भग्यवापि ॥ ठाणाप्र  
 एषि ॥ स्थानं कायोत्सर्गस्त मति ददाति प्रकरोति अतिगच्छति वेति स्थानातिदः स्थानातिगोवेति उल्लुटुकासन पीठादौ पुतालगनेगोपवेशनरूप मभि  
 गृह्यतो यस्यास्ति स उल्लुटुकासनिकः तथा प्रतिमया एकरात्रिवादिकया कायोत्सर्गविशेषेण तिष्ठतीत्येवंशीलो यः स प्रतिमास्थायी बीरासनं भूयस्व  
 पादस्य सिंहासने उपविष्टस्य तदपनयने या कायापस्था तद्रूप दुष्करच तदित्यतएव बीरस्य साहसिकस्या सनमिति बीरासनं मुक्तं तदस्यास्तीति बी  
 रासनिकं स्तथा निपयोपवेशनिविशेषः साच पंचधा तत्र यस्यां समपादौ पुतौच स्थितः सा समपादपुता यस्यान्तु गोरिवोपवेशन सागोनिषदिका यत्र

हारे विरसाहारे अंतहाहारे पंताहारे लूहाहारे । पंचठाणा जाव जवति तंजहा अरसजीवी विरसजीवी  
 अंतजीवी पतजीवी लूहजीवी । पचठाणाइं जाव जवति तजहा ठाणाइए उक्कुनुआसणिए पफिमठाइ  
 बीरासणिए णेसज्जिए । पंचठाणाइं जाव जवति तंजहा दंढायइए लगंढसाई आयावए अवाउरुए अकंढु

द्रव्य लेवा ४ । जिन्न फेस्यो फलादि आहारनो लाज नलेवे ५ ॥ पाच थानक यावत् आजादीधीळे तेकहैळे अरस लवणादि रहित आहार लेवो १ ।  
 विरस जूमा धाननो आहार लेवो २ । जगस्यो आहार लेवो ३ । प्रात तुच्छ आहार लेवो ४ । लूखो आहार लेवो ५ ॥ पांच थानक यावत् कच्चा  
 ते कहैळे । अरस आहार करी जीवे १ । विरस आहार करी जीवे २ । छत आहार करी जीवे ३ । प्रात आहार करी जीवे ४ । लूखो आहार क  
 री जीवे ५ ॥ पाच थानक अनुज्ञात होय ते कहैळे काउसगमारहै १ । ऊकडू आसन वेंठे २ । एकरात्रि प्रमुख प्रतिमा अजिग्रह विपेश लेई रहै

पुताभ्यामुपविष्टः सन् एकं पादमुत्पाद्यास्ते सा हस्तिशुंडिका पर्यंका ऽर्द्धपर्यंकाच प्रसिद्धा निषद्यया चरति नैषदिक इति दंडस्येवा यतिदीर्घत्वं पादप्रसारणेन यस्य स दंडायतिकः तथा लगड किल दुःस्थित काष्ठं तद्वन्मस्तकपार्श्विकानां भुवि लगनेन पृष्ठस्य चालगनेनेत्यर्थः यः श्येते तथाविधाभिग्रहात्स लगडसायी तथा आतापयत्यापनां शीतातपादिसहनरूपां करोती त्यातापकः तथा नविद्यते प्रावृतं प्रावरण मस्ये त्यप्रावृतकः तथा न कंडूयत इत्यकडूयकः स्थानातिगत्यादि पदानां कल्पभाष्यव्याख्यैव उद्धृष्टाण्ठाणा इत्यतुपडिमायहीतिमासाई पचेवनिसेज्जाओ तासिविभासाउकायव्वा ॥ १ ॥ बीरासनतसीहा सण्णवजहमुक्कजाणुगनिविट्ठो दडेलडंगउवमा आययकुज्जेयदोणहपि ॥ २ ॥ आयावणायतिविहा उक्कोसा १ मज्झिमा २ जहन्नाय ३ उक्कोसाउनिविष्ठा निसखमज्झावियजहन्ना ॥ ३ ॥ तिविहाहोइतिविष्ठा ओमंथिय १ पास २ तइयउत्ताणत्ति ॥ निषण्णापि त्रिविधा गोदीहुक्कडपलियं कमेसतिविहायमज्झिमाहोइ तइयाउहत्थिसुडे गपायसमपाइयाचेवत्ति ॥ १ ॥ इयच निषण्णादिका त्रिविधाप्यातापना स्वस्थाने पुनरुत्कृष्टादिभेदा ओमथि यादिभेदेनावगतव्या इहच यद्यपि स्थानातिगत्वादीना मातापनाया मतर्भाव स्थापि प्रधानेतरविवक्षया नपुनरुक्तत्वं मतव्यमिति तथा महानिर्जरी व

यए । पंचहिंठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ तजहा अगिलाए अयारियवेयावच्चं

३ । बीरासनथी वैठे ४ । निषेधिका आसन विषेशमां रहै ५ ॥ पांच थानक अनुज्ञात होय तेकहैछे दंडनीपरे पण पसारी रहवो १ । लकुट लाक डानी परे सोई मांथो जमीनमां लगाडै २ । आतापना लेवे ३ । शीत ठांड खमै उप्पकाले तडखो खमै ४ । खाज शरीरमां न खणो ५ ॥ पांच थानके अमण निग्रंथ मोटी निर्जरा कर्मक्षय पामे मोटा संसारनो छेद नासकरे तेकहैछे अग्लान पणो आचार्यनी वेयावच करे १ । एम उपाध्यायनी वेया

हृत्कर्मलयकारी महानिर्जरत्वात् महदालंतिषां पुनरुज्जायभावात् पर्यवसानमन्तो यस्यस तथा ॥ अगिलाएत्ति ॥ अग्लान्ता अग्लिसतया बहुमामिनेत्यर्णः  
 प्राचार्यः पचप्रकार स्वयथा गाम्राजनाचार्यो दिगाचार्यः सूतस्योद्देशनाचार्यः सूतस्यसमुद्देशनाचार्यो वाचनाचार्यं शेति तस्यवेयावृत्त्यं व्याहृतस्य शुभव्यापा  
 रवसो भावः कर्मणा वेयावृत्त्यं भक्तादिभि धर्मोपगृहकारिणस्तुभि रूपगृहकारण माचार्यवेयावृत्त्यं तत्कुर्वाणो विदधदिति एव मुत्तरपदेषपि नवर मुपाध्या  
 यः सूत्रदाता स्थविरः स्थिरीकरणात् अथवा जात्या पट्टिपार्षिकः पर्यायेण विंशतिवर्षपर्यायः श्रुतेन समवायधारी तपस्वी भासचपकादिः ग्लानो ऽग्रतो  
 व्याध्यादिभिरिति तथा ॥ सेहत्ति ॥ श्रेष्ठको ऽभिनवप्रव्रजितः साधर्मिकः समानधर्मा लिंगतः प्रवचनत शेति कुलचान्द्रादिक साधुसमुदायविशेषरूपं प्रती  
 तं गणः कुलसमुदायः सघो गणसमुदाय प्रत्येवं सूत्रपत्रेण दशविधं वेयावृत्त्य माभ्यतरतपोभेदभूतं प्रतिपादित मिति उक्तांच आयरियउजगाए धेरतव

करेमाणे एवंउवज्जायवेयावच्चं थेरवेयावच्चं तवस्सिवेयावच्चं गिलाणवेयावच्चं करेमाणे । पंचहिं ठाणेहिं  
 समणेनिग्गथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ तंजहा अगिलाएसेहवेयावच्चं करेमाणे । अगिलाएकुलवेया  
 वच्चंकरेमाणे अगिलाएगणवेयावच्चंकरेमाणे अगिलाएसंघवेयावच्चं करेमाणे अगिलाए साहमियवेयावच्चं करे

वत्त करवाणी २ । थविरनी वेयावत्त ३ । तपस्वीनी वेयावत्त ४ । अने ग्लान रोगीनी वेयावत्त करतो ५ ॥ पांच थानके अमण निग्रंथ मोटी निर्जरा मो  
 टो संसारनुं अंतकरे तेकहैछे अग्लानपणो शिष्य लघु चेलानी वेयावत्त करतो १ । अग्लानपणो कुलानी वेयावत्त करतो २ । अग्लानपणो गण गच्छनी  
 वेयावत्त करतो ३ । संघनी वेयावत्त करतो ४ । साधर्मीनी वेयावत्त करतो ५ ॥ पांच थानके अमण निग्रंथ पोताना साधर्मीने एक जोजन मंडली

॥ स्त्रीगिलाणसहाणं साहमियकुलगणसंव संगयंतमिहकायव्रंति ॥ १ ॥ संभोगिक मेकभोजनमंडलीकादिकं विसंभोगिकं मंडलीवाह्यं कुव नातिक्रामति आज्ञा मितिगम्यते उचितत्वादिति सक्रिय प्रस्तावा दशभकर्म्मवधयुक्तं स्थान मकृत्यविशेषलक्षणं प्रतिषेविता भवतीत्येक प्रतिषेव्य गुरवे नालोचयति ननिवे दयतीति द्वितीयं आलोच्य गुरूपदिष्ट प्रायश्चित्त न प्रस्थापयति कर्त्तुं नारभते इतितृतीय प्रस्थाप्य ननिर्विशति नसमस्त प्रवेशयति अथवा निर्वेशः परिभोग इति वचना अपरिभुक्ते नासेवतइत्यर्थः इति चतुर्थं यानौमानि सुप्रसिद्धतया प्रत्यक्षाणि स्थविराणां स्थविरकल्पिकानां स्थितौ समाचारे प्रकल्पानि प्रकल्पनी यानि योग्यानि विशुद्धपिडशय्यादीनि स्थितिप्रकल्पानि अथवा स्थितिश्च मासकल्पादिका कल्पानिच पिडादीनि स्थितिप्रकल्पादीनि तानि ॥ अद्वयचियअद्व यचियत्ति ॥ अतिक्रम्यातिक्रम्येत्यर्थः प्रतिषेवते तदन्यानीति गम्यते अथ सघाटकादिः साधुरेव पर्यालोचयति यथा नैत अतिषेवितु सुचित गुरुर्नो वाह्यी

माणे । पंचहिठ्ठाणेहिं समणेनिग्गथे साहंमियं संजोइयं विसंजोइयंकरेमाणे णाइक्कमइ तंजहा सकिरि यठ्ठाणंपफिसेवित्ताज्जवति पफिसेवित्ता णोअलोइए अलोएत्ता णोपठिवेइ णोपठित्ता णोणिच्चिसइ । जाइं इमाइं थेराणं ठिइप्पकप्पाइं ज्वंति ताइं अइयंचिय २ पफिसेवेइ से हंद हं पफिसेवामि किमेथे

कादिकने विसंजोगिक मंडली बाह्यकरतो जिनाज्ञा प्रति नथी अतिक्रम करे तेकहैछे क्रिया पापक्रिया सहित थान सेवीने १ । पाप सेवी करी गुरुपासे आलोवे नही ३ । आलोईने गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप करे नही ४ । प्रायश्चित्त तप आदरी पूरो नहोय ४ । जे एह प्रसिद्ध थविर कल्पीनी स्थिति प्रकल्प मासकल्प पिड शय्यादि आचारने अतिक्रमी अतिक्रमी अणाचार सेवे तेहुं अणाचार सेवीसमुक्कने थविर गुरु स्युं करस्ये रीसाणा थका ५ ॥ पांच

करिष्यति तत्रैतरे आह ॥ सेद्वत्ति ॥ सदकल्पजातं ॥ हं देति ॥ कीमलामत्रणवचनं हमित्यकारप्रक्षेपा दहं प्रतिषेवामि किं मम स्थविराः गुरवः करिष्यति न  
 किञ्चि तैरुष्टै रपि कर्तुं मे शक्यत इति बलोपदर्शन पचम मिति ॥ पारचियति ॥ दशमप्रायश्चित्तभेदव तमपहृतलिगादिक मित्यर्थः कुर्वन्नातिक्रामति सामा  
 यिक मिति गम्यते कुले चाद्रादिके वसति गच्छवासी त्यर्थः तस्यैव कुलस्यभेदाया न्योन्य मधिकरणोत्पादनेना भ्युत्थाता भवति यतत इत्यर्थः इत्येकं गणस्या  
 प्रीति द्वितीय तथा हिसावध साध्वादेः प्रेक्षते गवेषयतीति हिसा प्रेक्षीति तृतीय हिसार्थमेवा पञ्चाजनाथं वा च्छिद्राणि प्रमत्ततादौनि प्रेक्षत इति छिद्रप्रे  
 क्षी चतुर्थ अभीक्ष्ण मितौह पुनः शब्दार्थः ततश्चा भीक्ष्ण मभीक्ष्णं पुनः पुनरित्यर्थः प्रश्ना अगुष्टकुक्षप्रश्नादय सावद्यानुष्ठानपृच्छावा तएवायतनानि असय  
 मस्य प्रश्नायतनानि प्रयोक्ता भवति प्रयुक्त इत्यर्थः इति पंचम तथा आचार्योपाध्यायस्येति समाहारद्वयः कर्मचार्योवा ततश्चाचार्यस्योपाध्यायस्यचाचार्यस्यो

रा करिस्संति । पचहिं ठाणेहिं समणेनिग्गथे साहमियं पारंचियं करेमाणे णाइक्कमइ तंजहा कुलेवसइ ।  
 कुलस्सजेयाएअप्पुठेत्ताजवइ । गणस्सजेयाएअप्पुठेत्ताजवइ । हिसप्पेही च्छिदप्पेही । अजिस्सकणं २ पसि  
 णाए तेणाइ पउत्ता जवइ । आयरियउवज्जायस्सणं गणसि पच वुग्गहठाणा पस्सत्ता तजहा आयरिय

थानकै श्रमण निग्रंथ साधमीने पारचिक प्रायश्चित्त करावतो आज्ञा नलोपे वसेरहित रहवो आचारमा वर्ष १२ लगे ते कहेंछें ते कुलमां वसेरहैं  
 ते कुलनोज भेद कुलते समुदाय कहिये १ । गण गच्छमा वसे अने तेज गच्छनो जेद करवा उजमाल थाय २ । हिसानो करनार ३ । साधुना छिद्र  
 नो देखणहार ४ । वारवार प्रश्ननो पूछनार प्रयुजनार जिमतिम गुरुने खोटा पाऊवाने ५ ॥ आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे पाच व्युद्ग्रह कल

॥ पाठ्यायस्य वा ॥ गणंसिति ॥ गणे विग्रहस्थानानि कलहाश्रयाः आचार्य उपाध्यायो द्वयं वा गणे गणविषये आज्ञां हेसाधो भवतेदं विधेय मित्येवंरूपा मादिष्टिं ॥  
 धारणा नविधेय मित्येव रूपा नोनैव सम्य गौचित्येन प्रयोक्ता भवतीति साधवः परस्परं कलहायते असम्यग्नियोगात् दुर्न्नियतत्वाच्च अथवा नौचित्यनियो  
 क्तार माचार्यादिक मेव कलहायत इत्येवं सर्वत्रेति अथवा गूढार्थपदै रगीतार्थस्य पुरतो देशांतरस्थगीतार्थनिवेदनाय गीतार्थो यदतिचारनिवेदनं करोति  
 साज्ञा ऽसकृदालोचनादानेन यः प्रायश्चित्तविशेषावधारणसाधारणा तयो नसम्यक् प्रयोक्तेति सकलहभा गिति प्रथमं तथा सएव ॥ आहाराइणियाएत्ति ॥  
 रत्नानि द्विधा द्रव्यतो भावतश्च तत्र द्रव्यतः कर्कतनादीनि भावतो ज्ञानादीनि तत्र रत्नै र्ज्ञानादिभि र्व्यवहरतीति रात्रिकः बृहत्पर्यायो यो रात्रिको  
 यथा रात्रिक तद्भावा स्तत्ता तथा यथा ज्येष्ठं कृतिकर्म निवेदन विनयएव वैनयिक तच्च न सम्यक् प्रयोक्ता अतर्भूतकारितार्थत्वाद्वा प्रयोजयिता भवतीति  
 द्वितीयं तथा सएव यानि श्रुतस्य पर्यायजातानि सूत्रार्थप्रकारान् धारयति धारणा विषयीकरोति तानि काले २ यथावसर नसम्यगनुप्रवाचयिता

उवज्जायस्सणंगणंसि श्णणंवा धारणंवा नोसम्मं पउजित्ता जवइ । श्णायरियउवज्जाएणंगणंसि श्णहाराइ  
 णियाए किइकम्मं णोसम्मं पउजित्ता जवइ । श्णायरियउवज्जाएणंगणंसि जेसुयपज्जवजाएधारेइ तेकाले

हना करणहार थानक ते कहैछे आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे आज्ञा धारणा संयमनुं प्रयुंजनार नहोय तेकलहकारी जाणवो १ । आचार्य उ  
 पाध्यायना गच्छमा यथायोग्य रत्नाधिक वडेराने कृतिकर्म वंदणा सम्यक् जलीरीते प्रयुंजे नथी २ । आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे जे श्रुत प  
 र्यायने जाणे सूत्रार्थने धारे तेकालवेलासां सम्यक् प्रकारे वांचे जणे नही अकालमां जणे ३ । आचार्य उपाध्यायना गच्छमां ग्लान शिष्यनी वेयावच्च

॥ भवति न पाठयतीत्यर्थ इति तृतीयं काले अनुप्रवाचयिते त्युक्त न्तत्रगाथाः कालक्रमेणपत्त संवच्छरमाद्रणाउजजंमि तंतंमिचेवधीरो वाएज्जासोयकालो  
 य ॥ १ ॥ तिवरिसपरियागस्तउ आयारपकप्पणाममज्जयण चउवरिसस्तयसग्ग सूयगडनामअंगंति ॥ २ ॥ दशकप्पववहारा सवच्छरपणगदिविखयस्सेय  
 ठाणसमवाओविय अगेतेअड्ढवासस्स ॥ ३ ॥ दसवासस्सविवाहो एकारसवासयस्सयइमेओ खुड्डियविमाणमाद्रं अज्जयणापचनायब्बा ॥ ४ ॥ वारसवासस्ततहा  
 अरुणववायाइपचअज्जयणा तेरसवासस्ततहा उट्ठाणस्याइयावउरो ॥ ५ ॥ चोइसवासस्ततहा आसीविसभावणंजिणाविति पन्नरसवासगस्तय दिठ्ठिविसभा  
 वणंतइय ॥ ६ ॥ सोलसवासाइसुय एकोत्तरबुड्ढिएसुजहसखं चारणभावणमाहसु विणभावणतेयगनिसग्गा ॥ ७ ॥ एगूणवीसगस्तउ दिठ्ठीवाओदुवालसममगं  
 संपुणवीसवरिसो अणुवाईसव्वसुत्तस्सत्ति ॥ ८ ॥ तथा सएव ग्लानशैजवैयावत्त अति न सम्यक् स्वय मभ्युत्थाता अभ्युपगन्ता भवतीति चतुर्थं तथा सएव ग  
 णमनापुच्छ चरति चेवातरसक्तमादि करोती त्येवशीलो ऽनापुच्छचारी किमुक्त भवति नोआपुच्छ चारीति पचम विग्रहस्थान एतदेव व्यतिरेकेणाह वि

णोसम्ममणुप्पहाएत्ता नवइ । श्णायरियउवज्जाएणंगणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं णोसम्ममणुठेत्ता नवइ । श्णाय  
 रियउवज्जाएणंगणंसि श्णापुच्छियचारीयाविहवइ नोश्णापुच्छियचारी । श्णायरियउवज्जायस्सणगणंसि

सम्यग् रीते नकरे ४ । आचार्य उपाध्यायना गच्छमा गुरुने अणपूछी विहार करै गुरुने पूछी नचाले ५ ॥ आचार्य उपाध्यायना गच्छमा पांच उग्र  
 हस्थान कइया तेरुहैछे आचार्य उपाध्यायना गच्छमां आज्ञा धारणा सम्यक् रीतथी प्रयुंजे ते आधारभूत होय १ । एम वडेराने वादणा देवे २ ।  
 आचार्यादिकना गच्छमा सूत्रजाण्या धास्याछे कालमाज नणे ३ । एम ग्लान श्लिष्यनी वेयावच करे ४ । आचार्य उपाध्यायनां गच्छमा गुरुने पूछी

॥ ग्रहसूत्रं गतार्थं निषद्यासूत्रे निषदनानि निषद्या उपवेशनप्रकारा स्तत्रासनालग्नपुतः पादाभ्यामवस्थित उल्लुटुक स्तस्य या सा उल्लुटुका तथा गोदीर्हनं गोदोहिका तद्व द्यासौ गोदोहिका तथा समौ समतया भूलग्नौ पादौच पुतौच यस्यां सा समपादपुता तथा पर्यंका जिनप्रतिमा तामिव या पद्मास नमिति रूढा तथा अर्द्धपर्यंका ऊरा वेकपादनिवेशनलक्षणेति तथा ऋजो रागद्वेषवक्तवर्जितस्य सामायिकवतः कर्मभावोवा आर्जवं सवर इत्यर्थं स्तस्य स्थानानि भेदा आर्जवस्थानानि साधुसम्यग्दर्शनपूर्वकत्वेन शोभन मार्जवं मायानिग्रह स्ततः कर्मधारयः साधोर्वा यते रार्जवसाध्वार्जवं एवशेषाख्यपि आर्जव

पंच अणुगहठाणा पस्यत्ता तंजहा आयरियउवज्जाएणंगणसि आणंवा धारणंवा सम्मंपउंजित्ता नवइ । एवमहाराइणियाएसम्मं आयरियउवज्जाएणंगणंसि जेसुयपज्जवजाएधारेइ तेकालेसम्म० ॥ एवंगिलाणसेह वेयावच्चंसम्म० ॥ आयरियउवज्जाएणंगणसि आपुच्छियचारीयाविज्जवइ णोअणुणापुच्छियचारी । पंचनि सिज्जाउ पस्यत्ताउ तंजहा उक्कुहुया गोदोहिया समपायपुया पलियंका अण्णपलियका । पंच अण्णवठाणा पस्यत्ता तंजहा साज्जअण्णवं साज्जमद्वं साज्जलाघवं साज्जखंती साज्जमोत्ती । पंचविहा जोइसिया पस्यत्ता

चाले अणपूछी नचाले ५ ॥ पाच निषदया कही तेकहैछे ऊकडू वैसवो १ । गोदूहासने २ । बे पग समा जोळी बेसवुं ३ । पलाठी वाली वेसवो ४ । अर्द्ध पलाठी वाली वेसवो ५ ॥ पांच आर्जव सवरना थान कह्या तेकहैछे जलो आर्जवपणुं सरलतापणो १ । जलो मर्दव कोमलतापणुं अहंकार र हितता २ । जलो लाघव द्रव्यज्ञावथी हलुकापण ३ । जली ज्ञाति ज्ञमा ४ । जली मुक्ति ते निर्लोभता ५ ॥ पांच प्रकारना ज्योतिषी देवता कहिया



६ ॥  
० ॥

युक्ताश मृत्वा प्रायोदेवा भवन्तीति ॥ पंचविहाजोद्गसिएत्यादिनाईसाणस्तणमेतदंतेन गन्येन ॥ देवाधिकारमाह सुगमशायं नवरं ज्योतींषि विमानविशेषाः  
तेषु भवा ज्योतिष्का इति तथा दीव्यति क्रीडादिधर्मभाजो भवन्ति दीव्यतेवा स्तूयते येते देवा भव्या भाविदेवपर्याययोग्या अतएव द्रव्यभूता स्तेच तेदेवासे  
ति भव्यद्रव्यदेवा वैमानिकादि ४ देवत्वेनागन्तारभवेये उत्पत्त्यन्तद्रव्यर्थः नराणादेवानरदेवा सक्रवर्तिनद्रव्यर्थः धर्मप्रधानादेवाधर्मदेवा सारित्रवंतो देवानां  
मध्ये अतिशयवंतोदेवा देवातिदेवा अरहतः भावदेवा देवायुष्काद्यनुभवन्तो वैमानिकादय ४ द्रव्यर्थः ॥ परिचारणत्ति ॥ वेदोदयप्रतीकार स्तान् स्त्रीपुंसयोः  
कायेन परिचारणा मैथुनप्रवृत्तिः कायपरिचारणा ईशान कल्पयाव देवमन्यचापि समासो नवर स्पर्शन तदुपरि द्वयोः रूपेण द्वयोः शब्देन द्वयो र्मनसा च

तंजहा चंदा सूरा गहा णस्कत्ता ताराञ्ज । पंचविहा देवा पणत्ता तंजहा अवियदष्टदेवा णरदेवा धम्मदेवा  
देवातिदेवा ज्ञावदेवा । पंचविहा परियारणा पणत्ता तंजहा कायपरियारणा फासपरियारणा रूवपरिया  
रणा सहपरियारणा मणपरियारणा । चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्तो पंच अण्णमहिंसीञ्ज पणत्ताञ्ज

तेकहैछे । चंद्रमा १ । सूर्य २ । ग्रह ३ । नक्षत्र ४ । तारा ५ ॥ पांच प्रकारना देवता कहिया तेकहैछे जव्य द्रव्यदेव जे इहांथी मरी देवता थास्ये १ ।  
नरदेव चक्रवर्त्ति २ । धर्मदेव चारित्रवंत साधु ३ । देवातिदेव ते अरिहंत ४ । ज्ञावदेव वैमानिकादि ५ ॥ देवताने पांच प्रकारनी परिचारणा मैथु  
नसेवा कही तेकहैछे काय परिचारणा सौधर्म ईशाने १ । फास परिचारणा ते ३ । ४ । देवलोकमा २ । रूप परिचारणा ५ । ६ । देवलोकमां ३ ।  
शब्दपरिचारणा ७ । ८ । देवलोकमा ४ । मनपरिचारणा मनथी मैथुनसेवा ९ । १० । ११ । १२ । देवलोकमा ५ ॥ चमरेद्र असुरेन्द्र असुरकुमारना रा

॥ तर्धु ग्रैवेयकादिषु परिचारणैव नास्तीति सांग्रामिकाणि संग्रामप्रयोजना न्येतच्च गंधर्वनाय्यानीकयो र्व्यवच्छेदार्थं विशेषण मिति अनीकाधिपतयः सैग्यम  
ध्यप्रधानाः पदात्यादय एव पदातीनां समूहः पादाततदेवानीक पादातानीक पीठानीक मश्वसैन्यं तथा पादातानीकाधिपतिः पदातिरेवोत्तमः अश्वराजः

तजहा काली राई रयणी विज्जु मेहा । बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरस्सो पंच झग्गमहिसीत्तं  
पस्सत्तात्तं तजहा सुज्जा णिसुज्जा रज्जा णिरंज्जा मयणा । चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्तो पंच संग्गा  
मिया झणिया पंच संग्गामिया झणियाहिवई प० तजहा पायत्ताणिए पीठाणिए कुंजराणिए महिसाणिए  
रहाणिए । दुमे पायत्ताणियाहिवई सोदामी आसराया पीठाणीयाहिवई वेकुंथुहत्थिराया कुंजराणियाहि  
वई लोहियस्के महिसाणियाहिवई किन्नरे रहाणियाहिवई । बलिस्सण वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्तो

जाने पांच अग्रमहिषी कही तेकहैछे काली १ । रात्रि २ । रजनी ३ । विदुन्त् ४ । मेघा ५ ॥ बलेंद्र वैरोचनेंद्रने वैरोचनना राजाने पांच अग्रमहिषी  
कही तेकहैछे शुज्जा १ । निशुंभा २ । निरंभा ३ । रंभा ४ । मदना ५ ॥ चमर असुरेंद्र असुरकुमारना राजाने पांच सांग्रामिक अनीक सेना तेहना  
पांच अधिपती कह्या ते कहैछे पादात्यनीक ते पालीआ तपाल १ । पीठानीक ते घोडा सवारनी फौज २ । हाथीनी सेना ३ । जैसानी सेना ४ ।  
रयनी सेना ५ ॥ दुम पादात्यनीकाधिपती १ । सोदाम अश्वराज पीठानीकाधिपती २ । वेकुंथु हस्तिराज कुंजरानीकाधिपती ३ । लोहितात्त जैसा  
नी सेनानुं अधिपती स्वामी ४ । किन्नर रथानीकनी स्वामी ५ ॥ बली वैरोचनेंद्र वैरोचननां राजाने पांच संग्रामना अनीक कह्या पांच संग्रामना

पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई पसता तंजहा पायताणिए जाव रहाणिए । मह  
दुमे पायताणियाहिवई महासोदामे आसराया पीठाणियाहिवई मालंकारे हत्यिराया कुंजराणियाहिवई  
महालोहिअस्के महिसाणियाहिवई किंपुरिसे रहाणियाहिवई । धरणिंदस्सण नागिंदस्स नागकुमाररन्तो  
पंच संगामिआ अणीआ पच संगामिआ अणीआहिवई पसता तजहा पायताणिए जाव रहाणिए न्ह  
सेणे पायताणियाहिवई जसोधरे आसराया पीठाणीयाहिवई सुदसणे हत्यिराया कुंजराणियाहिवई नील  
कंठे महिसाणियाहिवई आणंदे रहाणीयाहिवई जूयाणंदस्सण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्तो पच संगामि  
मिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई पसता पायताणीए जाव रहाणीए । दस्के पायताणिया

सैन्य कह्या तेकहैछे पादानीक यावत् रथानीक लगे कहवो ॥ महादुम पदात्यनीकाधिपती १ । महासोदाम अश्वनो राजा पीठानीकनो स्वामी  
२ । मालकार हस्तिनो राजा कुंजरसेनाधिपती ३ । महालोहितात्त जैसानी सेनानु अधिपती ४ । किपुरुष रथानीकाधिपती ५ ॥ धरणेंद्र नागेंद्र  
नागकुमारना राजाने पाच सग्रामना अनीक कटक कहिया तेकहैछे पादानीक यावत् रथानीक । भद्रसैन्य पादानीक सेनानो अधिपती स्वामी १ ।  
यशोधर अश्वराजा पीठानीकनो स्वामी २ । सुदर्शन हस्तिनो राजा कुजराधिपती ३ । नीलकठ महिषानीकाधिपती ४ । आणंद रथानीकाधिपती ५ ॥  
भूतानंद नागकुमारनो इद्र नागकुमारना राजाने पाच सग्रामना अनीक सैन्य पांच सेनाधिपती कहिया तेकहैछे । पदात्यनीक यावत् रथानीक ५ ॥

॥ प्रधानोऽथ एवमन्येपि ॥ दाहिणिल्लाणंति ॥ सनत्कुमारब्रह्मशुक्राननारणानां ॥ उत्तरिल्लाणति ॥ माहेन्द्रलांतकसहस्रारप्राणताच्युतानामिति इहच दाहि

हिवई सुग्गीवे आसराया पीठाणियाहिवई सुविक्रमे हल्यिराया कुंजराणीयाहिवई सेयकंठे महिसाणिया  
हिवई णंदुत्तरे रहाणियाहिवई । वेणुदेवस्सणं सुविस्सिंदस्स सुवस्सकुमाररत्तो पंच संगामिया अणिया पंच  
संगामिया अणियाहिवई पस्सत्ता तजहा पायत्ताणिए एव जहा धरणस्स तहा वेणुदेवस्सवि वेणुदालियस्सय  
जहा जूताणंदस्स जहा धरणस्स तहा सव्वेस्सिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स । जहा जूयाणंदस्स तहा सव्वेस्सिं  
उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स । सक्कस्सण देविदस्स देवरत्तो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया  
अणियाहिवई पस्सत्ता तंजहा पायत्ताणिए जाव उसत्ताणिए । हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई वाऊ आ

दत्तपाल पदात्यनीकाधिपती १ । सुग्गीव अश्वराज पीठानीकाधिपती २ । सुविक्रम हस्तिनो राजा कुंजरानीकाधिपती ३ । श्वेतकंठ महिषानीकाधि  
पती ४ । नंदोत्तर रथानीकाधिपती ५ ॥ वेणुदेव सुपर्णेद्र सुपर्णकुमारना राजाने पाच सांग्रामिक सैन्य पाच सेनाना अधिपती कहिया तेकहेछे पा  
दानीक एम जिम धरणेद्रने कह्या तिमज ॥ वेणुदेवने वेणुदालीने जिम जूतानेद्रने कह्यो तिम ॥ जिम धरणने तिम सघला इंद्र दक्षिण दिशिनाने  
यावत् घोषने जिम जूताणंदने तिम सघलाई उत्तरदिशाना इंद्रने यावत् महाघोषने ॥ शक्रेद्र देवेद्र देवताना राजाने पांच संग्रामनी सेना कही  
पाच तेहना अधिपती कहिया तेकहेछे पादानीक यावत् वृषजसैन्य रथसैन्य । हरिणेगमेसी पदात्यनीकाधिपती १ । वायुनामा अश्वराज पीठानीका

॥ ॥  
णात्याः सौधर्मादयो विषमसंख्याइति विषमसंख्यत्वशब्दस्य प्रवृत्तिनिमित्तीकृत्य ब्रह्मलोकशुक्लो दक्षिणात्या वृहती समसंख्यत्वन्तु प्रवृत्तिनिमित्तीकृत्य लांतक  
सहस्रारावोत्तराविति तथा देवेन्द्रस्तवाभिधानप्रकीर्णकश्रुतद्वय द्वादशाना मिद्राणाविवचना दारणस्येत्याद्युक्तमितिसभायते अन्यथा चतुर्षु द्वावेवेन्द्रा वत

॥ ॥  
सराया पीठाणियाहिवई ऐरावणे हस्तिराया कुंजराणियाहिवई दामठी उसन्नाणियाहिवई माढरे रहा  
णियाहिवई ईसाणरुसण देविदरुस देवरुनो पंच संगामिया अणिया जाव पायत्ताणिए पीठा कुंजरा  
उसन्ना रहाणिउ । लज्जपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई १ महावाऊ असासराया पीठाणीयाहिवई २ पुष्पदते  
हस्तिराया कुंजराणियाहिवई महादामठी उसन्नाणियाहिवई महामाढरे रहाणियाहिवई । जहा सक्करुस  
तहा सव्वेसि दाहिणिल्लाण जाव अरणरुस । जहा ईसाणरुस तहा सव्वेसि उत्तरिल्लाणं जाव अचुयरुस ।

धिपती २ । ऐरावण हस्तिराज कुजरानीकाधिपती ३ । दामास्ति वृषज्ज सेनाधिपती ४ । माढर रथानीकाधिपती ५ ॥ ईशान देवेन्द्र देवताना राजा  
ने पाच सांग्रामिक अनीक सेना पाच तेहना अधिपती स्वामी कहिया ते कहेछे पादानीक १ । पीठानीक २ । कुजरानीक ३ । वृषज्जानीक ४ । रथा  
नीक ५ ॥ लघुपराक्रम पदात्यनीकाधिपती १ । महावायु अश्वराज पीठानीकाधिपती २ । पुष्पदंत हस्तिराज कुजरसेनाधिपती ३ । महामाढर रथानीकाधिपती ४ । महामाढर रथानीकाधिपती ५ ॥ जिम शक्रेद्रने तिम सघला दक्षिण दिशाना इन्द्रने यावत् आरणेन्द्रने ॥ जिम ईशानेन्द्रने  
तिम सघलाई उत्तरदिशाना इन्द्रने जाणवा ॥ अन्यतर पर्वदानी देवीनी स्थिति पांच पल्योपमनी कही ॥ पाच प्रकारना प्रतिघात कहिया तेकहे

॥ आरण्ये त्याद्यनुपपन्नस्यादिति इहा नंतरं देवानां वक्तव्यतोक्ता दुष्टाध्यवसायस्यच प्राणिन स्तद्वतिस्थित्यादिप्रतिघातो भवतीति तद्विरूपणायाह ॥ पंचवि  
हापडिहेत्यादि ॥ सुगम नवर ॥ पडिहृत्ति ॥ प्राकृतत्वात् ॥ उवप्पाइत्यादिवत् प्रतिघातः प्रतिहनन मित्यर्थं स्तत्र गते देवगत्यादेः प्रकरणात् शुभायाः प्र  
तिघात स्तत्प्राप्तियोग्यत्वे सति विकर्मकरणा दप्राप्ति र्गतिप्रतिघातः प्रवज्यादिपरिपालनतः प्राप्तव्यशुभदेवगते नरकप्राप्ती कडरीकास्येवेति तथा स्थितेः शु  
भदेवगतिप्रायोग्यकर्माणां तथैव प्रतिघातः स्थितिप्रतिघातः भवतिचाध्यवसायविशेषात् स्थितेः प्रतिघातो यदाह दीहकालष्ठियाओए ऋस्सकालष्ठियाओ  
पकरेइत्ति ॥ तथा बन्धन नामकर्मण उत्तरप्रकृतिरूप मौदारिकादिभेद यः पंचविध तस्य प्रक्रमात् प्रशस्तस्य प्राग्व अतिघातो बंधनप्रतिघातो बंधनगृहण  
स्यो पलक्षणत्वात् तत्सहचरप्रशस्तशरीरतदगोपागसहननसंस्थानानां मपि प्रतिघातो व्याख्येयः २ तथा प्रशस्तगतिस्थितिबधनादिप्रतिघाता जोगा  
नां प्रशस्तगत्याद्यविनाभूतानां प्रतिघातो भोगप्रतिघातो भवतिहि कारणाभावे कार्याभाव इति तथा प्रशस्तगत्यादे रभावादेव बलवीर्यपुरुषकारपरा  
क्रमप्रतिघातो भवतीति प्रतीत तत्रबल शरीर वीर्यं जीवप्रभव पुरुषकारो ऽभिमानविशेषः पराक्रमः सएव निष्पादितस्त्वविषयो ऽयवा पुरुषकारः पुरु

सक्तास्सणं देविंदस्स देवरन्नो अष्ट्रिंतरपरिसाए देवाणं पंचपलिनुवमाडं ठिई पस्सत्ता ईसाणस्सणं देविंदस्स  
देवरन्नो अष्ट्रिंतरपरिसाए देवीणं पंच पलिनुवमाड्ठिई पस्सत्ता । पंचविहा पफिहा पस्सत्ता तंजहा गइ  
पफिहा ठिइपफिहा बंधणपफिहा जोगपफिहा बलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमपफिहा । पंचविहे अजाजीवे प०

छे गति प्रतिघात ते शुभगतिनो घात कर्मवशथी १ । दीर्घं शुभ देवस्थिति नुंघात २ । शुभप्रकृतिबधनो घात ३ । जोगसुखनो प्रतिघात गति स्थि

पुनर्त्तं यं पराक्रमो बलवीर्ययो व्यपारणमिति देवगत्यादिप्रतिघातश्च चारिणातिचारकारिणी भवती ल्युत्तरगुणानाश्रित्य तद्विशेषमाह ॥ पंचविहेत्यादि ॥  
जाति ब्राह्मणादिका माजीव ल्युपजीवति तज्जातीय मात्मान सूचादिनोपदर्श्य ततो भक्तादिक गृह्णातीति जात्याजीवक एवं सर्वत्र नवर कुल सुग्रादिकं  
गुरुकुलंवा कर्म कृष्याद्यनाचार्यकया शिल्प तूर्णनादि साचार्यकवा लिङ्गं साधुलिङ्गं तदाजीवति ज्ञानादिशून्य स्तेनजीविकां कल्पयतीत्यर्थः लिंगस्थाने ऽन्य  
त्र गणीभिधीयते यतउक्ता जाईकुलगणकम्पे सिप्पेप्राजीवणाउपचविहा सूयाएअसूयाए अप्पाणकहेइएकेकेत्ति ॥ १ ॥ तत्र गणो मत्तादिः सूचया व्याजेना  
सूचया साचात् अनन्तरं साधूनां रजोहरणादिक लिङ्गमुक्तं अधुना राजादिरूप राज्ञां तदेवाह ॥ पंचरायककुहेत्यादि ॥ व्यक्त नवर राज्ञां नृपतीना क  
कुदानि चिह्नानि राजककुदानि ॥ उप्फेसित्ति ॥ शिरोवेष्टन श्रेष्ठरक इत्यर्थः ॥ पाहणाओत्ति ॥ उपानही वालव्यजनी चामरमित्यर्थः श्रूयतेच अव  
णेइपचककुहाणि जाणिरायाणचिधभूयाणि छत्तखम्भोवाहणमउडतहचामराओयत्ति ॥ १ ॥ अनंतरोदितककुदयोग्य शैल्लाकादिकः प्रव्रजितः सरागो

तंजहा जाइच्छाजीवे कुलाजीवे कम्माजीवे सिप्पाजीवे लिंगाजीवे । पंचरायककुहा पम्पत्ता तंजहा रक्कगं  
वत्तं उप्फेसं वाहणानु वालवीयाणी । पचहि ठाणेहिं वउमत्येणं उदिण्णे परीसहोवसग्गे सम्मंसहेज्जा खमेज्जा

ति नही तिवारे ४ । बलवीर्य पुरुषाकारपराक्रमयी घात थाय वलादि रहित थाय ५ ॥ पांच प्रकारना आजीविक पेट भरार्ह करणहार कहिया  
तेकहेछे जाति जणावी आहार लेवे ते जात्याजीवी १ । कुलजणावी आहार लेवे २ । कर्म कृष्यादिकनुं करी पेटभरे ३ । शिल्प विज्ञान देखाडी जी  
वे ४ । लिंग साधुना चिन्ह धारणकरी पेटभरे ५ ॥ पांच राजाना चिन्ह कहिया ते कहेंते खड्ग १ । छत्र २ । मुकुट ३ । उपानह पगरखी मोज

॥ पिसन्सत्वाधिकत्वात् यानि वस्तू न्यालव्य परीषहादीन् अपगणयति ताग्याह ॥ पंचहीत्यादि ॥ स्फुटं किन्तु च्छाद्यते येन तत् छद्म ज्ञानावरणादिघाति कर्मचतुष्टयं तत्र तिष्ठतीति छद्मस्थः सकषायइत्यर्थः उदीर्णं बुद्धान् परीषहोपसर्गानभिहितस्वरूपान् सम्यक्तकषायोदयनिरोधादिना सहेत भयाभावे ना विचलना इट भटवत् क्षमेत क्षांत्यातितिक्षेत अदीनतया अध्यासीनपरीषहादा वेवाधिक्येना सीन नचले दिति उदीर्णं बुद्धितप्रवत्तवा कर्म मिथ्यात्व मोहनीयादि यस्यस उदीर्णकर्म खलुर्वाक्यालङ्कारे अयं प्रत्यक्षः पुरुष उन्मत्तको मदिरादिना विप्रुतचित्तः सद्रव उन्मत्तकभूतो भूतशब्दस्योपमानार्थत्वा त् उन्मत्तकएववा उन्मत्तकभूतो भूतशब्दस्य प्रकल्यर्थत्वात् ॥ तेणत्ति ॥ उदीर्णकर्म यतोय मुन्मत्तकभूतः पुरुष स्तेन कारणेन ॥ मेइति ॥ मा एषोय माक्रो शति शपति अपहसति उपहासं करोति अपघर्षतिवा अपघर्षणं करोति निष्क्रीटयति सबन्धान्तरसबद्धहस्तादौ गृहीत्वा बलात् क्षिपति निर्भर्त्सयति दुर्वचनैर्बध्नाति रज्जादिना कण्डि कारागारप्रवेशादिना क्वेशरीरावयवस्य हस्तादेः छेद करोति मारणप्रारम्भ. प्रमारो मूर्च्छाविशेषो मारणस्थानंवा त नयति प्रापयतीति अपद्रावयति मारयति अथवा प्रमार मरणमेव ॥ उद्देइति ॥ उपद्रवयति उपद्रवं करोतीति पतद्गृहं पात्र कबल प्रतीत पादप्रोक्षन

तितिस्केजा अहियासेजा तंजहा उदिन्नकस्मे खलु अयं पुरिसे उन्मत्तगज्जूए तेणमे एस पुरिसे अक्कोस इवा अवहसइवा णिच्छोळइवा णिज्जल्येइवा बंधइवा रुंधइवा षविच्छेयंकरेइवा पमारवाणेइ उद्देइवा

श्री ४ । चामर ५ ॥ पांच ठेकाणे छद्मस्थ साधु उदय पाप्म्यां परीषह उपसर्ग सम्यक् सहवा खमवा तितिक्षा करवा अहियासवा तेकहैछे कर्मना उदयथी निश्चे यह पुरुष उन्मत्तथयोछे तेभांटे मुक्कने एपुरुष आक्रोशकरेछे हसेछे हाथ प्रमुखथी डाली बलकरी नाखैछे कठिनवचनथी निर्भर्त्सना



रजोहरणं प्राच्छिनन्ति बला दुहालयति विच्छिनन्ति विच्छिन्नं करोति दूरेव्यवस्थापयतीत्यर्थः अथवा वस्त्र मीष च्छिनन्ति आच्छिनन्ति विशेषेण छिनन्ति विच्छिनन्ति भिनन्ति पात्र स्फोटयति अपहरति चोरयति वाशब्दाः सर्वे विकल्पार्था इत्येक परीषहादिसहनालबनस्थान मिदञ्चा क्रोशादिक मिह प्राय आक्रोशवधाभिधानपरीषहद्वयरूप मतस्य सुपसर्गविवचायान्तु मानुष्यकप्रादेविकाद्युपसर्गरूप मिति तथा यच्चाविष्टो देवाधिष्ठितो ऽयतेना क्रोशतीत्यादिद्वितीय तथा अयहि परीषहोपसर्गकारी मिथ्यात्वादिकर्मवशवर्ती ॥ ममचणति ॥ मम पुन स्तेनैव मानुष्यकेण भवेन जन्मना वेद्यते ऽनुभूयते यत्त भववे

वत्यपङ्गिगहं कंबलंपायपुच्छणमाच्छिंदइवा विच्छिंदइवा जिंदइवा अणहरइवा १ । जस्काइठे खलु अयंपु  
रिसे तेणमे एसपुरिसे अक्कोसइवा तहेव जाव अणहरइवा २ । ममंचणं तप्पववेयणिज्जे कम्मे उदिन्ने  
जवइ तेणमे एसपुरिसे अक्कोसइवा जाव अणहरइवा ३ । ममंचणं सम्मं असहमाणस्स अखममाणस्स  
अतितिस्केमाणस्स अणहियासेमाणस्स किम्मन्ने कज्जाइ एगतसोमे पावकम्मे कज्जाइ ४ । ममंचणं सम्मं

करेछे बाधेछे रूंधेछे छविच्छेद मस्तक आंगुली प्रमुख काटेछे प्रकर्षणी मारेछे उपद्रव करेछे बस्त्रपडघो कांबलो पुच्छणं उदाली लियेछे वेगलो लेई  
नाखेछे पात्र फोडेछे चोरी लिएछे एम सहेछे १ । यत्तथी अधिष्ठितछे निश्चे यह पुरुष तेमाटे मुफ्फने यह पुरुष आक्रोश करेछे तिमज यावत् अप  
हरेछे २ । मांहरे ते जवनुं वेदनीयकर्म उदय आब्योछे तेमाटे मुफ्फने एपुरुष आक्रोश करेछे एम यावत् अपहरैछे ३ । मुफ्फने सम्यक् अणसहताने  
अण समते क्षमा अणकरता क्षमा कीधाविना अण अहियासतां स्युथास्ये एकातथी पापकर्म करीस ४ । अने मुजने जलीरीते सहतां यावत् अहि

॥ दनीयं कर्म उदीर्णं भवत्यस्ति तेनैष मा माक्रोशतीत्यादि तृतीयं तथा एषयालिशः पापाभीतत्वा क्करोतु नामाक्रोशनादि मम पुनरसहमानस्य ॥ किम्भवे  
 त्ति ॥ मग्ये इति निपातो वितर्कार्थः ॥ कज्जइत्ति ॥ सपद्यते इह विनिश्चयमाह ॥ एगंतसोत्ति ॥ एकान्तेन सर्वथा पापं कर्मा ऽसातादि क्रियते संपद्यत इ  
 तिचतुर्थः तथा अय ताव त्पापं बध्नाति ममचेदं महतो निर्जरा कियत इतिपचमं ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमनमिति शेषसुगम छद्मस्थविपर्ययः केवलीति  
 तत्सूत्र तत्रच चित्तचित्तः पुत्रशोकादिना नष्टचित्तः पुत्रजन्मादिना दर्पवच्चित्त उन्मत्त एवेति माच सहमानं दृष्ट्वा अन्येपि सहिष्य त्युत्तमानुसारित्वात् प्रा  
 य इतरेषां यदाह जोउत्तमेहिंसगो पद्दओसोदुक्करोनसेसाण आयरियमिजयते तयणचराकेणसीएज्जत्ति ॥ १ ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ अत्रापिनिगमनं शेषसुग

सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स 'किम्भन्ने कज्जइ एगंतसोमे निज्जराकज्जइ ५ । इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं  
 ठउमत्ये उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्म सहेज्जा जाव अहियासेज्जा ॥ पंचहिंठाणेहिं केवली उदिन्ने परीस  
 होवसग्गे सम्म सहेज्जा जाव अहिआसेज्जा तजहा खित्तचित्ते खलु अयपुरिसे तेणमे एसपुरिसे अक्कोस  
 इवा तहेव जाव अवहरइवा १ । दित्तचित्ते खलु अयंपुरिसे तेणमे एसपुरिसे जाव अवहरइवा २ ।

यासतां स्युंथास्ये एकांतथी कर्मनिर्जरा थासे ५ ॥ एहवा पाच थानके छदमस्य उदय आव्यां परीषह उपसर्गं सम्यक् सहै यावत् अहियासवा ५ ॥  
 पाच थानके केवली उदय आव्या परीषहोपसर्गं सम्यक् सहै यावत् अहियासे तेकहेछे पुत्र शोकादिना नष्ट चित्त निश्चे यह पुरुष मुजने आक्रोश क  
 रेछे तिमज यावत् अपहरैछे १ । पुत्र जन्मादिकथी दीप्त उन्मत्तचित्त निश्चे यह पुरुषछे तेमाटे मुजने यावत् अपहरेछे आक्रोशकरेछे २ । जूतग्रस्त

ममिति छद्मस्थकेलिनो रनतरं स्वरूपमुक्त मिदानीमपि तयोरेव तदाह ॥ पंचहेऊइत्यादि ॥ सूत्रनवकं तत्र भगवतीपंचमशतसप्तमोद्देशकचूर्णनुसारेण कि  
मपि लिख्यते पचहेतव इह यश्छद्मस्थतया नुमानव्यवहारी अनुमानाद्गतया हेतुलिङ्ग धूमादिक जानाति स हेतुरेवोच्यते एवं यः पश्यति २ श्रद्धते ३ प्रा  
प्नोति चेति ४ तदेव हेतुचतुष्टय मिथ्यादृष्टि माश्रित्य कुत्साद्वारेणाह हेतु नजानाति नसम्यक् विशेषतो गृह्णाति नजः कुत्सार्थत्वा दसम्यगवैतौत्यर्थः एव नप

जस्काइठे खलु अग्रंपुरिसे तेणमे एसपुरिसे जाव अवहरइवा ३ । ममंचणं तप्पववेयणिज्जे कम्मे उदिन्ते  
जवइ तेणमे एसपुरिसे जाव अवहरइवा ४ । ममंचणं सम्म सहमाणं खममाणं तितिरुक्माण अहियासे  
माणं पासित्ता बहवे अन्ते त्ठउमत्यासमणा निग्गथा उदिन्ते परीसहोवसग्गे एवं सम्म सहिरुसंति जाव  
अहियासिरुसंति ५ । इच्चेएहिं पचहि ठाणेहि केवली उदिन्ते परीसहोवसग्गेसम्मं सहेज्जा जाव अहिया  
सेज्जा । पंचहेऊ पस्यत्ता तजहा हेऊनजाणइ हेउणपासइ हेउणबुज्जइ हेउणाजिगच्छइ हेउमन्ताणमरणं

निश्चे यह पुरुषछे तेमाटे मुजने एह यावत् अपहरैछे ३ । मुजने ते जवना वेदनीकर्म उदय आव्याछे तेमाटे एह पुरुष यावत् अपहरैछे इहालगे स  
र्व बोलकहवा ४ । मुजने सम्यक् सहताने खमताने क्षमा करताने अहियासताने देखी घणा अन्य बीजा त्ठदमस्थ अमणा निग्गथ उदय आव्या परी  
षहोपसर्ग एस सम्यक् सहस्ये जे केवली सरखा खमैछे तो आपणो खमस्ये यावत् अहियासस्ये ५ ॥ एह पांच थानके केवली उदय आव्या परीषह  
उपसर्ग सम्यक् सहे यावत् अहियासे ॥ पांच हेतु अनुमानादि कह्या ते कहेछे हेतु नजाणो १ । हेतु नदेखै २ । हेतु न बूझे हेतु न सरदहै ३ । हे

॥ श्यति सामान्यतो नबुध्यते नश्रद्धते बोधेः श्रद्धानपर्यायत्वा तथा नसमभिगच्छति भवनिस्तरणकारणतया नप्राप्नोत्येवचाय चतुर्विधो हेतुर्भवतीति तथा हेतु मध्यवसानादिमरणहेतुजन्यत्वेनोपचारादज्ञानमरणं मिथ्यादृष्टित्वेनाज्ञानहेतु तद्गम्यभावस्य मरणं तन्म्रियते करोति यश्चैवविधः सोपि हेतु रेवेति पचमो हेतुर्विधित एवोक्तइति १ तथा पचहेतवस्तत्रयोहेतुना धूमादिनाऽनुमेयमर्थज्ञानाति स हेतुरेव एवं यः पश्यतीत्यादि तदेव कुत्साद्वारेण मिथ्यादृष्टिमाश्रित्य हेतुचतुष्टयमाह हेतुना न जानात्यनुमेय नजः कुत्सार्थत्वा देवा सम्यगवगच्छतीत्यर्थः एव न पश्यतीत्यादि तथा हेतुना मरणकारणेन योऽज्ञानमरणं म्रियते स हेतुरेवेति पचमो हेतुरिति २ तथा पंचहेतवो योहि सम्यग्दृष्टितया हेतुं सम्यग्जानाति स हेतुरेवैवैव मन्येपि नवर हेतुहेतु मच्छद्मस्यमरणं सम्यग्दृष्टित्वा न्नाज्ञानमरणं मनुमादत्वाच्च न केवलमरणमिति ३ एवं तृतीयांतसूत्रमपि ३ इह सूत्रद्वयेपि हेतवः स्वरूपत एवोक्ताः ४ तथा पचाऽहेतवो यः प्रत्यक्षज्ञानादितया नुमानानपेक्षः सधूमादिका अहेतुना यहेतुर्ममा नुमानोत्थापक इत्येव जानातीत्यतो हेतुभूतं तं जान

मरइ । पंचहेऊ प० तंजहा हेऊणाणजाणइ जाव हेमणा ण्णमरणंमरइ २ । पंचहेउ पस्यत्ता तंजहा हेउं जाणइ जाव हेउठउमस्यउरणं मरइ २ । पंच हेउ पन्नत्ता तंजहा हेउणाजाणइ जाव हेउणा ठउमस्य मरणं

तु हियामां नआणे ४ । हेतु अज्ञानमरणे मरे ते हेतुज मिथ्यादृष्टि मांटे ५ ॥ पांच हेतु कह्या ते कहेछे हेतुथी धर्म नजाणे यावत् हेतुथी करी अज्ञानमरण मरे ५ ॥ पांच हेतु कहिया तेकहेछे हेतु जाणे यावत् हेतु छदमस्य मरण मरे समकित दृष्टि मांटे ५ ॥ पांच हेतु कह्या तेकहेछे हेतुथी जाणे यावत् हेतुथी छदमस्य मरण मरे ५ ॥ पांच अहेतु कह्या ते कहेछे अहेतुथी जाणे यावत् अहेतु छदमस्य मरण मरे ५ ॥ पांच अहेतु कह्या

अहेतुरेवा सा बुध्यते एवं दर्शनबोधाभिसमागमापेक्षयापि तदेव महेतुचतुष्टयं छद्मस्य माश्रित्य देशनिषेधत आह अहेतुमिति धूमादिकं हेतु महेतुभावेन न जानाति न सर्वथा वगच्छति कथंचिदेवा वगच्छतीत्यर्थः नञो देश निषेधार्थत्वात् ज्ञातुं वा वध्यादिकेवलित्वेना नुमानाव्यवहर्तृत्वा दित्येको य महेतु देशप्रतिषेधत उक्त एव महेतु क्त्वा धूमादिक नपश्यतीति द्वितीयो न बुध्यते न शब्दे इति तृतीयो नाभिसमागच्छतीति चतुर्थः तथा अहेतु मध्यवसा नादिहेतुनिरपेक्ष निरुपक्रमतया छद्मस्यमरण मनुमानव्यवहर्तृत्वे प्यकेवलित्वा तस्यायच स्वरूपतएव पचमो हेतुरुक्तः तथा पचा हेतवो यो ऽहेतुना हेत्वभावेना वध्यादिकेवलित्वात् जाना त्यसा वहेतुरेव त्वेव पश्यतो त्यादयोपि एवच छद्मस्य माश्रित्य पदचतुष्टयेना हेतुचतुष्टय देशप्रतिषेधत आह तथा ऽहेतुनो पक्रमाभावेन छद्मस्यमरण म्रियतइति पचमो ऽहेतु स्वरूपत एवोक्तः ६ तथा पचाहेतवो ऽहेतु नहेतुभावेन विकल्पित धूमादिक जानाति केवलितया यो ऽनुमानाव्यवहारित्वा त्तो ऽहेतुरेव एव यः पश्यतीत्यादि तथा अहेतु निर्हेतुक मनुपक्रमत्वात् केवलिमरण मनुमानाव्यवहारित्वान् म्रियते यात्य सावहेतु पंचम एते पचापौ ह स्वरूपत उक्ताः ७ एव तृतीयान्तसूत्रम प्यनुसर्त्तव्यमिति ८ गमनिकामात्रमेत तत्त्वत् बहुश्रुता विदतीति तथा न

मरइ ४ । पंच अहेऊ प० तंजहा अहेउंजाणइ जाव अहेउळउमत्यमरणंमरइ ५ । पंच अहेऊ प० तं० अहेउणानजाणइ जाव अहेउणाळउमत्यमरणमरइ ६ । पच अहेउ पस्यत्ता तजहा अहेउंजाणइ जाव

तेकहेळे अहेतुयी नजाणे यावत् अहेतुयी करी कदमस्य मरण मरे ५ ॥ पांच अहेतु कहिया तेकहेळे अहेतु जाणे यावत् केवली मरण मरे ५ ॥ पां च अहेतु कह्या तेकहेळे अहेतुये करी जाणे यायावत् हेतुये करी जाणे हेतुये करी केवली मरण मरे ५ ॥ एह पांच अहेतु कह्या ८ ॥ केवलीने पां

संयुक्तराणि प्रधानानि येभ्यः स्ता न्यऽनुत्तराणि यथा स्वं सर्वथावरणक्षयात् तत्रायै ज्ञानदर्शनावरणक्षयादनन्तरैर्मोहक्षयात्तपसश्चारित्र्यभेदत्वात्तपश्च केवलिना मनुत्तरं शैलेयवस्थायां शुक्लध्यानभेदद्वयस्वरूपध्यानस्याभ्यन्तरतपोभेदत्वाद्द्वीर्यान्तरायक्षयादिति ६ केवल्यधिकारात्तीर्थकरसूत्राणि चतुर्दश कण्ठ्यानि चैतानि नवरपद्मप्रभः ऋषभादिषु षष्ठः पंचसु चानादिदिनेषु चित्रानक्षत्रविशेषो यस्य स पंचचित्रश्चित्राभिरिति रूढ्या बहुवचनच्युतोऽवतीर्ण उपरिमोपरिमयेवेयका देकत्रिंशत्सागरोपमस्थितिकात् च्युत्वाच ॥ गमति ॥ गर्भे कुक्षौ व्युत्क्रांत उत्पन्नः कौशाभ्यां धराभिधानमहाराजभार्यायाः सुसीमानामिकायाः माघमासबहुलषष्ठ्या जातो गर्भनिर्गमेन कार्तिकबहुलद्वादश्यां तथा मुडोभूत्वा केशवपायाद्यपेक्षया अगारा त्रिंश्रुत्या नगारितां अमणतां प्रव्रजितो गतोऽनगरतथाच प्रव्रजितः कार्तिकशुद्धत्रयोदश्यां तथा अनतपर्यायानन्तत्वादनन्तरं सर्वज्ञानोत्तमत्वात् निर्व्याघातमप्रतिपातित्वा त्रिरावरणं

अहेउकेवलिमरणंमरइ ७ । केवलिससण पंच अणुत्तरा प० त० अणुत्तरेनाणे अणुत्तरेदसणे अणुत्तरेचरित्ते अणुत्तरेतवे अणुत्तरेवीरिए ९ । पउमप्पन्नेणमरहा पंच चित्ते होत्था तजहा चित्ताहिचुएचइत्ता गप्पवक्कंते चित्ताहिंजाए चित्ताहिमुंठेन्नचित्ता अगारान्अणगारियपब्बइए चित्ताहिअणंते अणुत्तरे णिह्वाघाए निराव

च उत्कृष्टा कल्या तेकहेळे उत्कृष्ट ज्ञान १ । उत्कृष्ट दर्शन २ । उत्कृष्ट चारित्र्य ३ ॥ उत्कृष्ट तप ४ ॥ उत्कृष्ट वीर्य ५ ॥ पदमप्रज्ञ ६ अरिहंतनां ५ कल्याणक चित्रा नक्षत्रमां थया ते कहेळे चित्रासां चव्या चित्रायें गर्भमां उपना १ ॥ चित्रासां जन्मलीधो २ ॥ चित्रासां मुठ्ठयई गृहस्थावास मूकीने अणगार थया दीक्षालीधो ३ ॥ चित्रासां अनत उत्कृष्टो व्याघात रहित आवरण रहित कृत्स्न आखो प्रतिपूर्ण केवलवरज्ञानदर्शन उपनुं ४ ॥ चि

॥ सर्वथास्वावरणक्षयात् कटकृष्याद्यावरणाभावाद्वा कृत्स्नं सकलपदार्थविषयत्वात् परिपूर्णं स्वावयवापेक्षया ऽखंडं पीर्णमासीच्चद्रबिम्बवत् किमित्याह केवलं  
 ॥ ज्ञानान्तरासहायत्वात् सशुद्धत्वाद्वा अतएव वरं प्रधानं केवलवरं ज्ञानं च विशेषावभास दर्शनं च सामान्यावभास ज्ञानदर्शनं तच्च तच्चेति केवलवरज्ञानदर्शनं  
 ससुत्पन्नं जातं चैवशुद्धपंचदश्या तथा परिनिर्वृतो निर्वाणगतः मार्गशीर्षबहुलैकादश्या आदेशान्तरेण फाल्गुनबहुलचतुर्थ्यामिति ॥ एवमेवैवति ॥ पद्मप्रभसूत्रं  
 भिवपुष्पदत्तसूत्रं मध्यध्येतव्यं मेव मनन्तरोक्तस्वरूपेण एतेना नन्तरत्वा गत्यक्षेणाभिलापेन सूत्रपाठेने मास्तिस्त्रः सूत्रसग्रहणिगाथा अनुगन्तव्या अनुसर्त्तव्याः  
 पेशसूत्राभिलापनिष्पादनार्थं ॥ पञ्चमप्यभस्त्रेत्यादि ॥ तत्र पद्मप्रभस्य चित्रानक्षत्रं च्यवनादिषु पञ्चमस्थानकेषु भवतीत्यादिगाथाचरार्थो वक्तव्यः सूत्राभिलाप  
 स्वाद्यसूत्रद्वयस्य साक्षाद्दर्शितएव प्रतरेपांत्वेव ॥ सीयलेण अरहा पञ्चपुष्पासादे होत्यातजहा पुष्पासाढाहि चुएचइत्ता गभं वक्तंते पुष्पासाढाहि जाएइत्य  
 दि ॥ एवसर्वाण्यपीति व्याख्यात्वेव पुष्पदत्तो नवमतीर्थंकर आनतकल्या देकोनविंशतिसागरीपमस्थितिकात् फाल्गुनबहुलनवम्या मूलनक्षत्रे च्युतः च्युत्वा का  
 कदीनगर्या सुग्रीवराजभार्यायाः रामाभिधानायाः गर्भत्वेन व्युत्क्रातो मूलनक्षत्रे मार्गशीर्षबहुलपंचम्या जातः स्यात्वा मूलएव ज्येष्ठशुद्धप्रतिपदि मतातरेण  
 मार्गशीर्षबहुलपञ्च्यां निष्क्रातः तथामूलएव कार्त्तिकशुद्धतीयाया केवलज्ञानं सुत्पन्नं तथा ऽश्वयुजः शुद्धनवम्या आदेशान्तरेण वैशाखबहुलपञ्च्यां निर्वृतइति

रणे कसिणे पङ्क्तिपुन्ते केवलवरनाणदसणेसमुप्यन्ते चित्ताहिंपरिनिष्ठुए १ । पुष्पदत्तेणं अरहा पंच मूले  
 होत्या मूलेणंचुएचइत्ता गप्पवक्कते एवमेव एएणं अज्जिलावेणं इमानंगाहानं अणुगंतव्वानं । पञ्चमप्यन्न

ज्ञानक्षत्रमा मोक्ष पोहता ५ ॥ सुविधिनाथ अरिहंतना पांच कल्याणक मूल नक्षत्रमां यथा मूलमा देवलोकथी चयी गर्भमा ऊपना १ ॥ इमज एणे

तथा शीतलो दशमजिनः प्राणतकल्याद्विशतिसागरोपमस्थितिका द्वैगाखबहुलपद्म्यां पूर्वाषाढानक्षत्रे च्युतः च्युत्वाच भद्रिलपुरे दृढरथनृपतिभार्याया नन्दा  
याः गर्भतया व्युत्क्रान्तः तथा पूर्वाषाढास्त्रे माघबहुलद्वादस्यां जातः तथा पूर्वाषाढास्त्रे माघबहुलद्वादस्यां निष्क्रान्तः तथा पूर्वाषाढास्त्रे पौषस्य शुद्धे मता  
न्तरेण बहुलपक्षे चतुर्दश्यां ज्ञान सुत्पन्न तथा तत्रैव नक्षत्रे आवर्णशुद्धपचम्यां मतातरेण आवर्णबहुलद्वितीयाया निर्हृतइति एव गाथात्रयोक्तानां शेषाणाम

रसचित्रा मूलेपुणहोइपुष्पदंतस्स पुष्पाश्रासाढासी यलस्सउत्तराविमलस्सज्जद्वयया ॥ १ ॥ रेवइयश्चणंतजि  
णो पूसोधम्मस्ससंतिणोजरणी कुंथुस्सकत्तियानु अरस्सतहारेवईउय ॥ २ ॥ मुणिसुहृयस्ससवणो अशिसिणि  
नमिणोयनेमिणोचित्रा पासस्सविसाहानु पचयहल्युत्तरेवीरो ॥ ३ ॥ समणे जगव महावीरे पंचहल्युत्तरे

अजिलापे करी एगाथा कही छे तेहथी जांणवूं पदमप्रजु छठा अरिहंतना पांच कल्याणक चित्रा नक्षत्रमां थया ॥ वली मूल नक्षत्रमा पांच कल्याण  
क पुष्पदंत सुविधिनाथना थया ॥ पूर्वाषाढा नक्षत्रमा शीतलनाथना पांच कल्याणक थया ॥ उत्तराज्जाद्रपदमां विमलनाथना पांच कल्याणक थ  
या ॥ १ ॥ रेवती नक्षत्रमां पांच कल्याणक अनतनाथना थया ॥ पुष्य नक्षत्रमां पांच कल्याणक धर्मनाथना थया ॥ जरणी नक्षत्रमां पांच कल्याण  
क शातिनाथना थया ॥ कुथुनाथना पांच कल्याणक कृत्तिका नक्षत्रमां थया ॥ अर नाथना पांच कल्याणक रेवतीमा थया ॥ २ ॥ मुनिसुवृतना अ  
वण नक्षत्रमां ॥ अश्विनी नक्षत्रमां नमिनाथना थया ॥ चित्रा नक्षत्रमां नेमिनाथना थया ॥ विशाखा नक्षत्रमां पार्श्वनाथना थया ॥ अने पांच क  
ल्याणक महावीरना उत्तराफाल्गुनीमां थया ॥ ३ ॥ अमण जगवत महावीर स्वामिने पांच कल्याणक उत्तराफाल्गुनीमां थया उत्तराफाल्गुनीमा



५० ॥

३४ ॥

पि सूत्राणां प्रथमानुयोगपदानुसारिणो पयुज्य व्याख्या कार्या नवरं चतुर्दशसूत्रे ऽभिलाषविशेषो स्तीति तद्दर्शनार्थं माह ॥ समणेद्रत्यादि ॥ हस्तोपलक्षितं  
 उत्तराहस्तोत्तराहस्तोवोत्तरोयासांताहस्तोत्तरा उत्तराफालगुन्यः पचसुच्यवनगर्भहरणादिषु हस्तोत्तरा यस्यस तथा गर्भात् गर्भस्थानात् ॥ गभति ॥ गर्भे  
 गर्भस्थानान्तरे सङ्गतो नौतो निर्घतस्तु स्वातिनक्षत्रे कार्तिकामावास्यायामिति ॥ इतिपचमस्थानकस्यप्रथमउद्देशको विवरणतः समाप्तः ॥ १ ॥  
 उक्तः प्रथमोद्देशकः साम्प्रत द्वितीय आरभ्यते अस्यचाय मभिसम्बन्धो ऽनन्तरोद्देशके विविधा जीववक्तव्यतोक्ता इहापि सैवोच्यत इत्येव मभिसम्बन्धस्या  
 स्पेदमादिसूत्रं ॥ नोकप्यद्रत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेणसहा यमभिसम्बन्धः पूर्वसूत्रे केवलिनिर्गन्धगत वस्तूक्त मिहतु छद्मस्थनिर्गन्धगत तदुच्यत इत्येव मस्माद्गर्भ

होत्या तंजहा हत्युत्तराहिंचुएचइत्ता गप्प्रंवक्कंते । हत्युत्तराहिं गप्पानं गप्पं साहरइ । हत्युत्तराहिंजाए  
 हत्युत्तराहिमुंजेनविता जाव पवइए । हत्युत्तराहिं ञ्णते ञ्णुत्तरे जाव केवलवरणाण दंसणे समुप्पन्ते ।  
 इति पंचठाणस्स पढमोउद्देशेसुं सम्मत्तो ॥ १ ॥ नोकप्यइ निग्गथाणंवा निग्गंथीणंवा इमानं  
 उद्दिठानं गणियानं वजियानं पंच महस्सवानं महाणइंउं अंतोमासस्स दुखुत्तोवा तिखुत्तोवा उत्तरित्तएवा

देवलोकथी च्यवी गर्भपणे ऊपना १ । तेहीज नत्तत्रमा गर्भसहस्यो २ । तेहीजनत्तत्रमां जन्मथयो ३ । तेहीजनत्तत्रमा दीक्षालीधी ४ । तेज नत्तत्रमा  
 अनत उत्कृष्ट यावत् केवल वर ज्ञान दर्शन ऊपनो ॥ इतिश्री पाचमा ठाणानो पहिलो उद्देशो पूरो थयो ॥ १ ॥ हिवे वीजो कहैछे ॥  
 नकल्पे साधुने तथा साधवीने ए आगलि कहैछे ते एह उदिष्ट गणित सख्याथी पाच व्यजिता प्रगट कीधी पाच महार्णवा घणा पांणी मांठे मोटी

सूत्रादग्येषां च सखन्धानां ॥ नोक्कप्यइत्यादीनां ॥ व्याख्या सुकरैव नवरं ॥ नोक्कप्यइति ॥ नकल्पते नयुज्यंते एकवचनस्य बहुवचनार्थत्वात् वत्यगन्धमलाल  
कारमित्यादाविवेति निर्गता ग्रन्थादिति निर्गन्थाः साधव स्तेषां तथा निर्गन्थीना साध्वीना मिह प्राय सुत्यानुष्ठानवत् सुभयेषा मपीति दर्शनार्थो वाश  
व्यो ॥ इमाइति ॥ वक्ष्यमाणनामतः प्रत्यक्षासन्ना उद्दिष्टाः सामान्यतोभिहिता यथा महानद्यइति गणिता यथा पचेति व्यञ्जिता व्यक्तीकृता यथा गगेत्यादि  
विशेषणोपादानाद्वा यथा महार्णवाइति तत्र महर्णव इव या वहदकत्वा महार्णवगामिन्योवा या स्ता महार्णवा महानद्यो गुरुनिम्नगा अंतर्मध्ये मास  
स्य द्विःकल्पोवा द्वौवारौ त्रिःकल्पोवा त्रीन् वारान् उत्तरीतुं लघयितुं बाहुजघादिना सतरीतुं सांगत्येन नावादिनेत्यर्थः लघयितुमेव सकृदोत्तरीतुं मने  
कथः सतरीतुमिति अकल्प्यतावा त्वसयमोपघातसम्भवेन श्वलचारित्राभावा द्यतआह ॥ मासभ्रंतरतिन्निय दगलेवाओकरेमाणेति ॥ उदकलेपो नाभिप्रमा  
णजलावतरणमिति इह सूत्रे कल्पभाष्यगाथा इमउत्तिमुत्तउत्ता १ उद्दिष्टनईओ २ गणियपचेव ३ गगादिवजियाओ ४ वहदयमहस्सवाओय ५ ॥ १ ॥ पच  
गहगहणेण सेसाविउसूइयामहासलिलेति ॥ प्रत्यपाया खेह ओदारमगराईया घोरातत्यउसावया सरौरोवहिमाईया णावातेणावकत्यइति ॥ १ ॥ अ

संतरित्तएवा तंजहा गंगा जउणा सरऊ एएवती मही ॥ पंचहिं ठाणेहिं कप्पंति तंजहा जयंसिवा दुप्पिरकं  
सिवा २ पद्दाहेज्जवणंकोई उदघसिवा एज्जमाणंसि महतावा ण्णारिएहिं । णोक्कप्यइ णिगंथाणंवा णिगं

नदी मासमां बेवार त्रिणवार उतरवाने नाव आदिकथी तरवाने भुजाथी ते कहैछे गंगा १ । जमुना २ । सरजू ३ । ऐरावती ४ । मही ५ ॥ अने  
अपवादमार्गथी कल्पै उतरवाने पाच थानके तेकहेछे राजादिकना जयथी १ । दुकालथी २ । कोईक शत्रु उपाडी गंगादिकमा नांखै ३ । पांणी गं

पवाद्माह ॥ पचेत्यादि ॥ भये राजप्रत्यनीकादेः सकाशा दुपध्याद्यपहारविषये सति १ दुर्भिक्षेवा भिक्षाऽभावे सति २ ॥ पव्वहेज्जत्ति ॥ प्रव्यायते वाधते अं  
 तर्भूतकारितार्थत्वाद्वा प्रवाहयेत् कचि अत्यनीक स्तत्रैव गगादी प्रचिपेदित्यर्थः ३ ॥ दओघसित्ति ॥ उदकौघेवा गगादीना मुन्मार्गगामित्वेना वगच्छति  
 सति तेन प्लाव्यमानानामित्यर्थः महतावा आटोपेने तिशेषः ४ ॥ अणारिएसुत्ति ॥ विभक्तिव्यत्ययादनार्यै स्नेच्छादिभि जीवितचारित्रापहारिभिरभि  
 भूताना मितिशेषः ५ स्नेच्छेषुवा आगच्छत्तिस्त्विति शेष एतानि पुष्टा न्यालबनानीति तत्तरणेपि नदोषइति उक्तच सालवणोपडंतो विअप्पयदुग्गमेविधा  
 रेइइयसालवणसेवी धारेइजईअसढभाव ॥ १ ॥ आलंबणहौ णोपुणनिवडइखलिओअहेदुरुत्तारेइयनिकारणसेवी पडइभवोहेअगाहमिति ॥ २ ॥ तथा ॥ पढमपा  
 उससित्ति ॥ इहा षाढआवणौ प्रावट् आषाढसु प्रथमप्रावट् ऋतूनांवा प्रथमइति प्रथमप्रावट् अथवा चतुर्मासप्रमाणो वर्षाकालः प्रावडिति विवक्षितस्तत्र सप्त  
 तिदिनप्रमाणे प्रावषे द्वितीये भागे ताव नकल्पतएव गन्तु अथमभागेपि पञ्चाशद्दिनप्रमाणे विशतिदिनप्रमाणेवा न कल्पते जीवव्याकुलभूतत्वा दुक्तच  
 एत्ययअणभिगहिय वीसइराइंसवीसईमास तेणपरमभिगहिय गिहिनायकत्तियजावत्ति ॥ १ ॥ अनभिगहौत मनिश्चित मशिवादिभि निर्गमभावात्  
 आहच अतिवादिकारणेहि अहवावासनसुडुआरइं अभिवडियमिवीसा इयरेसुसवीसईमासो ॥ १ ॥ यत्रसवत्तरेऽ धिकमासको भवति तत्राषाढ्याः

थोणंवा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइजित्तए । पंचहिं ठाणेहि कप्पइ तंजहा जयंसिसा दुप्पिरकंसिवा

गादिकनुं उन्मार्गं यई घणो ताणतो आवतां ४ । अनार्यं स्नेच्छ आवतां ५ ॥ नकल्पे साधुने तथा साधवीने प्रथम वर्षाकाल चौमासाने विषे ग्रामा  
 नुग्राम विहरवी ॥ पाच थानके चौमासामां कल्पे तेकहेछे जयहुवांथी दुकालथी यावत् मोटा अनार्यने आवतां ॥ वर्षाकाल चौमासाने विषे नकल्पे

विगति दिनानि याव दनभिग्रहिक् आवासो ऽन्यत्रसविंशतिरात्रं मासं पंचागतं दिनानीति अथचै तेदोषाः छहायविराहणया आवडणविषमणा  
 एकटेस वुक्कणअभिहणरुक्खो असावएतेणउवचरण ॥ १ ॥ पत्तुत्तेसुपहेसु पुठवोउदगचहोइदुयिहंतु उअपयावणअगणो इहारापणओहरियकयुत्ति ॥ २ ॥  
 तत स्तत्र प्रावपि किमतआह एकस्मा द्दामा दवधिभूता दुत्तरगामाणा मनतिक्रमो ग्रामानुग्रामं तेन ग्रामपरम्परयेत्यर्थः अथवा एकग्रामा अनुपवाद्वा  
 वाभ्यां ग्रामो ऽनुग्रामो गामोय अणुगामोय गामाणुगाम तत्र ॥ दूइज्जित्तएत्ति ॥ द्रोतु विहत्तु मित्युत्तर्गो पयादमाह ॥ पचेत्यादि ॥ तथेव नवर सिं प्रव्य  
 येत ग्रामा चालये त्रिकाशयेत् कचित् उदकोवेवा आगच्छति ततो नग्येदिति उक्तं च आगहेदुभिक्षे भएदओवसिपामहतसि परिभवणंतान्णवा जया  
 परोवाकरेज्जासिन्ति ॥ १ ॥ तथावर्षासु वर्षाकालेवर्षो वट्टिः वर्षावर्षोवर्षासुवा प्रावामो ऽवस्थान वर्षावास स्त सच जघन्यत आत्तात्तिपया दिनमतपिप्र  
 माणो मध्यमवुत्त्याच चतुर्मासप्रमाण उत्कटतः पण्णाममान स्तदुक्त इयमत्तरीजहन्ना अमिडेनउडेविमुत्तरसगन्न जावासेमणमिर दसरायातिविउ  
 कोसा ॥ १ ॥ [ मासमिचये ] काऊणमासकण्य तथेवठियाणतोवनगतिरे सानराणणइया सिओउजिहोगहोइदत्ति ॥ २ ॥ पज्जोनविद्यागति ॥ प  
 रीति सामख्येनो पितानां पर्युपणाकल्पेन नियमवडसु मारब्धानामित्यर्थः पर्युपणाकल्पन न्यूनोदरताकरणं विकृतिनवकपरित्यागः पोठफलकादिस  
 स्तारकादान सुञ्चारादिमात्रकसगृहण लोचकरण गैनाप्रवाजन प्राणुहीताना भस्मडगलकादीना परित्यजन मितरेपा गृहण दिगुणवर्षेविगृहोपकरणध  
 रण मभिनवोपकरणगृहण सक्रीययोजना त्यरतो गमनवर्जन मित्यादि उक्तं च दव्वडवणाहारे विगइसयारमत्तएलोए सच्चित्तेअच्चित्ते वोसिरणंगहणधर

जाव महतावाञ्णारिएहि वासावासंपज्जोसवित्ताणं णोकप्पइ णिग्गंथाणंवा निग्गंथीणंवा २ गामाणुगामं

॥  
॥

णाश्रति ॥ १ ॥ दन्ताष्टवर्णति ॥ निशीथे तारपरामर्शप्रति ज्ञानमेवा र्थी यस्य स ज्ञानार्थं स्तुताय स्तुता तथा ज्ञानार्थतया ज्ञानाधिक्येन तथा पूर्वः श्रुतस्तु  
 स्तो न्यस्या चार्यादे रस्ति सच भक्तं प्रत्याख्यातुं कामं स्तुतो यस्यसौ तत्तत्काशा न गृह्यते ततो सो ज्ञयन्तिष्ठति इत स्तुतुत्तुगार्थं ग्रामानुग्रामं द्रोतुं कल्पते  
 एव दर्शनार्थतया दर्शनप्रभावकाशास्तार्थिकत्वेन चारिणार्थतयात् तस्यचेनस्या नेपणा स्त्यादिदोषदृष्टतया तद्रक्षणार्थं तथा ॥ आयरियउवज्जाएत्ति ॥ स  
 मात्तारत्तत्वा दाचार्योपाध्यायया से तस्य भिक्षोः ॥ विसुभेज्जति ॥ विष्णुगरीरात् पृथग्भवेत् जायेता म्मिय तेत्यर्थं स्तुत स्तुत गच्छे न्यस्या चार्या दे रभा  
 वा ज्ञानांतराज्यगार्थं ज्ञयता ॥ विसुभेज्जति ॥ विष्णुमेत तस्य साधो राचार्यादि पित्र्योभये ततो तन्तराज्यकार्यकरणायेति तथाचार्योपाध्यायानांवा  
 वहिस्ता धर्माचेनस्य वर्तमानानां येषां ह्यल्लक्षणतायै प्रेषितस्या चार्यादिना द्रोतुं कल्पतइति उक्तांच असिक्वेप्रोमोयरिए रायदुहेभएयगेलणे नाणाप्रति

दूइज्जित्तए । पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तंजहा णाणठयाए दंसणठयाए चरित्तठयाए आयरियउवज्जाएवा  
 सेवीसुजेज्जा आयरियउवज्जायाणंवावहियावेयावच्चकरणयाए । पंचअणुग्घाइमा पणत्ता तं० हत्यकम्मकरे

निग्रंथ साधुने तथा साध्वीने ग्रामानुग्राम विहार करवो ॥ पांच थानके कल्पे साधुने तथा साध्वीने तेकहेछे ज्ञानने अर्थ १ । सम्यक्तने अर्थ २ ।  
 चारित्रना लाभने अर्थ ३ । आचार्य उपाध्याय ने मरणादि रोगादिकारणो अथवा अत्यंत हास्य कार्य करवाने ४ । आचार्य उपाध्याय क्षेत्रधी वा  
 हिर रहियाने येयावच करवाने ५ ॥ पांच अनुद्धातिम कहिया तेकहेछे हस्तकर्म हाथे कंदर्पनी कुचेष्टा करतो १ । मेषुन स्त्रीसेवा करतो २ ।

गस्तथा वीसुंभणपेसणेणवत्ति ॥ १ ॥ अणुग्धाइयत्ति ॥ न वियते उच्चातो लघूकरणलक्षणो यस्य तपोविशेषस्य तदनुद्घातं यथा श्रुतदानमित्यर्थं स्त द्येषां प्रतिसेवा  
विशेषतो स्तिते ऽनुद्घातिका हस्तकर्म समयप्रसिद्धं तत् कूर्वाणो मेथुन मंत्रज्ञातिक्रमादिना सेवमान स्तथा भुज्यतइति भोजनं रात्रौ भोजन रात्रिभोजन  
तच्च द्रव्यतो शनादि चेततः समयचेत्रे कालतो दिवागृहीत दिवाभुक्त दिवागृहीत रात्रौ भुक्त रात्रौगृहीतं दिवाभुक्त रात्रौगृहीत रात्रौभुक्त मित्येवंचतुर्भ  
ङ्गरूपं भावतो रागद्वेषाभ्या तद्भुञ्जानो ऽश्विनियर्थः अत्रदोषा. सतिमेसुद्गमापाणेत्यादि श्लोकत्रय तथा जइविहुफासुगदव्व कुथूपणगातहाविदुप्पस्सा पच्च  
क्वष्णाणीमिहु राईभत्तपरिहरति ॥ १ ॥ जइवियपिवीलिगाई दीसतिपईवजोइउज्जाए तहविखलुअणाइणं मूलवयविराहणाजेणति ॥ २ ॥ तथा अगार  
गृहं सह तेन वर्त्ततइति सागारः सएव सागारिकः शय्यातर स्तस्यपिंडः आहारोपधिरूपः अन्य स्वसौ नभवति उक्तञ्च तणच्छारडगलमल्लग सेज्जासयार  
पीठलेवाई सेज्जायरपिंडोसो नहोइसोहोयसीवहिओत्ति ॥ १ ॥ सागारिकपिंड स्त भुञ्जान स्तज्जोजने चा मोदोषा' तित्यकरपडिक्कुट्टो अन्नाय [ अज्जातो  
च्छोनभवतोत्यर्थ. ] उगमोवियनसुज्झोय [ परिचयात् ] अविमुत्तिअलाघवया दुग्गहसेज्जोयवोच्छेदो ॥ १ ॥ पडिवधनिराकरण केइअणेअगिहीयगहणस्स  
तस्साउट्ठण [ शय्यातरावर्जनमित्यर्थ. ] आण एत्यवरेवितिभावत्यति ॥ २ ॥ तथा राज्ञ पिंडांजरापिण्डस्तं भुञ्जान. राजा चेह चक्रवर्त्यादिर्यतआह जो  
सुडाअभिसित्तो पचहिसहिओहुभुजएरज्ज तस्सउपिंडोवज्जां तज्जिवरौयमिभयणाओ ॥ १ ॥ पिंडस्वरूपच असणाईयाचउरो वत्येपाएयकवलेचेव पाओ

माणे मेज्जणंपडिसेवमाणे राईन्नोयणंजुंजमाणे सागारियपिण्डंजुंजमाणे शयपिण्डंजुंजमाणे । पंचहिं ठाणेहिं

रात्रिमां जोजन करतो ३ । शय्यातरनु पिंडं जोजन करतो ४ । राजपिंडं जोजन करतो ५ ॥ पांच थानके अमण निग्रथ राजानां अंतेउरमां प्रवेश

कण्ठयतहा अठविहोरायपिडोउ ॥ १ ॥ दोषा आज्ञादय ईश्वरादिप्रवेशादौ व्याघातो मङ्गलधिया प्रेरणालोभ एषणाव्याघात श्रीरादिशङ्कावेत्यादयइति ॥  
 ॥ नाइक्कमइत्ति ॥ आज्ञा माचार वेति नगर स्या इवे त्वर्वतः सर्वासु दिक्षु समता द्विदिक्षु अथवा सर्वतः किमुक्तमभवति समतादिति गुप्तं प्राकारावेष्टित  
 त्वात् गुप्तद्वार द्वाराणा स्थगितत्वात् आस्यति तपस्यन्तीति अमणा मावधीरिति प्रवृत्तिर्येषांते माहना उत्तरगुणमूलगुणवंतः सयताइत्यर्थः अथवा अम  
 णाः शाक्यादयो माहना ब्राह्मणाः ॥ नोसचाएत्ति ॥ नशक्नुवन्ति भक्षाय पानायवा निष्क्रमितुवा निर्गतुं नगरा तद्वहिर्भिन्नाकुलेषु भिक्षित्वा तत्रैव प्रवेष्टु  
 वेति तत स्तेषां अमणादीनां प्रयोजने विज्ञापनाय राज्ञो त'पुरस्थस्य प्रमाणभूतराश्यावाराजान्तःपुर मनुप्रविशे दिह च शाक्यादीनां प्रयोजने यद्वाज्ञो  
 विज्ञापन तदपवादरूप मसयताविरतत्वा तेषा मेतच्च किञ्चि दात्यन्तिका सघादिप्रयोजन मवलवमानाना भवतीति समवसेयमित्येक तथा कृतप्रयोजनैः  
 प्रतिह्रियते प्रतिनोयते य त्प्रतिहारप्रयोजनत्वा आतिहारिक पीठं पट्टादिक फलक मवष्टम्भफलक शय्या सर्वाङ्गीणा फलकादिरूपा सस्तरको लघुतरो

समणेनिग्गथे रायतेउरमणुपविसमाणे नाइक्कमइ तंजहा णगरेसिया सङ्खलसमंतागुत्ते गुत्तदुवारे बहवे सम  
 णमाहणा णोसंचाएइ जत्ताएवा पाणाएवा निष्क्रमित्तएवा पविसित्तएवा तेसिंविणवस्सठयाए रायतेउरम  
 णुपविसेज्जा पाणिहारिएवा पीढफलगसेज्जासंथारगंपञ्चप्पिणमाणे रायतेउरमणुपविसेज्जा । हयस्सवा गय

करतो जातो आज्ञा अतिक्रमे नथी तेकहैळे नगर एहवो होय कदाचित् । च्यारदिशि कोटथी गुप्त द्वार दीधाळे घणा अमण माहन शाक्यादि द  
 र्शनी ते नथी शक्तिवत ज्ञातने पाणीने नीकली सकता नथी पैसी सकता नथी ते अमणादिकने कामे वीनववाने अतेउरमा राजाळे तिहा जाई

॥ अथवा शय्या शयनं तदर्थं संस्तारकः शय्यासंस्तारको द्वन्द्वैकवद्भावात् पीठफलकशय्यासंस्तारकं ॥ पञ्चपिणमाणत्ति ॥ आर्यत्वा अत्यर्पयितु तत्प्रविशे व्यस्मा  
 व्यदानीतं त तत्रैव निक्षेपव्यमिति क्वेतिद्वितीय हयादेर्दृष्टा दागच्छतो भौतइतिद्वितीय पर आत्मव्यतिरिक्तः ॥ सहसत्ति ॥ अकस्मात् ॥ बलसत्ति ॥  
 बलेन हठात् सकार स्वागमिको बाहौ गृहीत्वेति चतुर्थं ॥ वहियावत्ति ॥ नगरादेर्बहि रारामगतं बोद्यानगतवा निर्गन्थ तत्रा रामो विविधपुष्पजाल्य  
 पशोभित उद्यानतु चपकवनाद्युपशोभितमिति ॥ सपरिक्खिवियत्ति ॥ सपरिक्खिप्य परिचार्य सनिविशेत् क्रीडादर्थं गत आवास कुर्यादिति पचममि  
 ति ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमन मिहच पोठादीना मर्पणस्य ग्रहणव्यतिरेकेणा सम्भवा तद्ग्रहण मप्यनेनैव संगृहीत द्रष्टव्यमिति भवतिचात्रगाथा अते

रसवा दुठरस आगच्छमाणरस जीए रायंतेउरमणुपविसेज्जा । परोवणं सहसावा बलसावा बाहाए गहाय  
 रायंतेउरमणुपवेसेज्जा वहियावण आरामगयंवा उज्जाणगयवा रायंतेउरजणो सव्वुंसमंता संपरिक्खिवि  
 त्ताणं निविसेज्जा इच्चेएहिपचहिं ठाणेहि समणे जाव णाइक्कमइ । पंचहिं ठाणेहिं इत्थीपुरिसेणसद्धि

साधुनो विश्वासजळे प्रमाण जूतळे प्रातिहार अथवा पीठ फलक शय्या संधारो राजाथी आवी आण्योळे ते पाळो आपवाने अंतः पुरमां जाय १ ।  
 घोळो अथवा हाथी दुष्ट मदवत साहसुं आवतो देखी बीहतोथको राजाना अतेउरमा पैसे २ । कोईक बीजो अकस्मात् बलात्कारथी हाथ पकडीने  
 लेजायतो राजाना अतः पुरमा पैसे । बाहिर आराम बगीचामां गयाळे साथ वा उद्यानमा पोहताळे तिहां राजानो अतेउर आवी च्यारो दिशी  
 वीटीने क्रीडाने अर्थ आवी करी रहै तिहां साधुपणि रहै ॥ एहवा पांच थानके अमण निग्रंथ यावत् आज्ञा अतिक्रमे नथी ॥ पांच थानके स्त्री पु



उरंचतिविहं जुगंनवपंचकन्नगाणंच एकेकंपियदुविहं सङ्गाणेचेवपरठाणे ॥ १ ॥ एतेसामणपरं रणोअंतेउरंतुजोपविसे सोभाणाअणवत्थं मिच्छत्तविराहणं  
 पावे ॥ २ ॥ सद्दाइइदियथो वओगदोसाणएसणसोहे सिंगारकत्ताकहणे एगयरुभएयबहुदोसा ॥ ३ ॥ वह्नियावि [निर्गतस्येत्यर्थः] हींतिदोसा केरिसगा  
 कहणगिगहणाइया गब्बोवाउसियत्तं सिंगाराणचसंभरणं ॥ ४ ॥ वितियपद [अपवादइत्यर्थः] मणाभोगे वसहिपरिक्खेवसेज्जसंधारे हयमाईदुष्ठाण आव  
 यमाणाणकज्जेत्ति ॥ ५ ॥ अनन्तरमंतःपुरसूत्रत्वात् स्त्रीगत मुक्त मधुनापि तद्वतमेव क्रियाविशेषमाह ॥ उपचहीत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टयं कण्ठ्य नवरं ॥ दु  
 ज्वियडत्ति ॥ विवृता अनाद्यता साचो त्तरीयापेचयापिस्या दतो दुःशब्देन विशेष्यते दुष्टविवृता दुर्विवृता परिधानवर्जितेत्यर्थः अथवा विवृतोरुक्ता दुर्वि  
 वृता सतो दुर्निपणा दुष्टविरूपतयो पविष्टा गुह्यप्रदेशेन कथंचित् पुरुपनिसृष्टशुक्रपुद्गलवज्जूमिपटादिक मासन माक्रम्य निविष्टा सादुर्विवृता दुर्निपणेति  
 शुक्रपुद्गलान् कथंचित् पुरुपनिसृष्टा नासनस्था नधितिष्ठे द्योन्याकर्पणेन सगृहीयात् तथा शुक्रपुद्गलसंसृष्टं ॥ से ॥ तस्या स्त्रिया वस्तु मंत मध्ये योना व  
 नुप्रविशे दिह्म वस्तु मित्युपलक्षण तथाविधः अन्यदपि कोशमातुः कोशवत् कलूयनार्थं रक्तानिरोधार्यंवा तथा प्रयुक्तं सद नुप्रविशे दनाभोगेनवा तथावि  
 धं वस्तुं परिहित सद्योनि मनुप्रविशे तथा स्वयमिति पुत्रार्थिनौत्वात् शीलरक्तकत्वाच्च ॥ सेत्ति ॥ सा शुक्रपुद्गलान् योना वनुप्रवेशयेत् तथा परोवेति श्वश्रू

अथसंवसमाणीवि गण्धधरेज्जा तजहा दुष्टियमा दुन्निसन्ना सुक्कपोग्गले अहिठेज्जा । सुक्कपोग्गलसंसिठे

रूपसाथे अणारहती अलगी रहती पणि गर्भ धरे तेकहेळे वस्तरहित माठीरीतथी वैठी तिहां चूमिकाये तथा पाटला प्रमुखें लागा जे शुक्रना पुद्गल  
 योनिमां प्रवेश करे योनिमार्गथी ग्रही लेवे १ । शुक्रना पुद्गलथी खरडगो जेवस्त ते योनिमांहि पेसे तिवारे पुद्गल ग्रही गर्भ धरै २ । पोतेकाईक

प्रभृतिकः पुत्रार्थमेव ॥ से ॥ तस्या योना वितिगस्यते तथा ॥ वियडंति ॥ समयभाषया जलं तच्चा नेकधे त्यंत उच्यते ॥ शीतोदकलक्षणं यद्विकटं पल्लवादिगत  
मित्यर्थः तेनवा ॥ से ॥ तस्या आचमत्याः पूर्वपतिता उदकमध्यवर्तिनः शुक्रपुद्गला अनुप्रविशेयुरिति ॥ इच्चेणहीत्यादि ॥ निगमनमिति अप्राप्तयौवना प्राय  
आवर्षद्वादशका दार्त्तवाभावा त्तथा तिक्रान्तयौवना वर्षाणा पचपचाशतः पंचाशतोवा परत आर्त्तवाभावा देव यतोवाचि मासि २ रजःस्त्रीणा मजस्र  
स्त्रवतिच्यह वत्सराद्वादशादूर्ध्वं यातिपंचाशतःत्रयं ॥ १ ॥ पूर्णषोडशवर्षास्त्री पूर्णविशेनसगता शुद्धेगर्भाशये १ मार्गे २ रक्ते ३ शुक्ले ४ निले ५ हृदि ॥ २ ॥  
वीर्यवतसुतसूते ततोन्मूनाब्दयोः पुनः रोग्यत्पायुरधन्योवा गर्भोभवतिनैववेति ॥ ३ ॥ शुद्धे निर्दोषे गर्भाशयादिषट्कद्रव्यैः तथा जाते जन्मत आरभ्य वध्या

वसे वत्ये अंतो जोणीए अणुपविसेज्जा । सयंवासेसुक्कपोग्गले अणुपविसेज्जा । परोवा सेसुक्कपोग्गले अणु  
पविसेज्जा ४ । सीनदगवियङ्गेणवा सेअायममाणीए सुक्कपोग्गले अणुपविसेज्जा ५ । इच्चेणहिं पंचहिं  
ठाणेहि जाव धरेज्जा ॥ पचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेणसद्धिं संवसमाणीवि गप्पं नोधरेज्जा तंजहा अप्पत्तजो

स्त्री पुत्रनी अर्थिनी पुत्रनी इच्छा करनारी शीलराखवाने ते शुक्र वीर्यना पुद्गल योनिमा प्रवेशकरावै मूकै ३ । परवीजो सासू प्रमुख पुत्रार्थे वहूना  
गुह्यप्रदेशमा वीर्य पुद्गल प्रवेशे मूकै ४ । शीतल जल विकट पल्लव द्रव प्रमुखनु तिहां स्नान करते पूर्व पतित वीर्य पुद्गल योनिमां प्रवेश करे अ  
ने गर्ज धरवानो समय होय ५ ॥ एहवा पांच थानकै स्त्री पुरुष साथे अणरहती पिण गर्भ धारण करे ॥ पांच थानके स्त्री पुरुष साथे वसती थ  
की पिण गर्भ धारण नकरे ते कहैछे अप्राप्तयौवना प्राय १२ वरसनी स्त्री १ । तथा अतिक्रातयौवना ५५ वरस पीछे रितुना अजावथी एतले पच

निर्वीजा जातिवध्या तथा ग्लान्येन ग्लानत्वेन स्पृष्टाग्लान्यस्पृष्टा रोगार्दिता तथा दौर्मनस्य शोकाद्यस्ति यस्याः सा दौर्मनस्यिका तद्वा जात मस्या इति दौर्मनस्यितेति ॥ इच्चेएहीत्यादि ॥ निगमन नित्य सदा न अहमेव ऋतू रक्तप्रवृत्तिलक्षणो यस्या सा नित्यर्तुका तथा न विद्यते ऋतू रक्तरूप. शास्त्रप्रसिद्धोया यस्या. सा अनृतुका तथाहि ऋतुसुद्धादशनिशाः पूर्वास्त्रिस्त्रोऽत्रनिदिता. एकादशीचयुग्मासु स्यात्पुत्रोऽन्यासु कन्यका ॥ १ ॥ पञ्चसकोचमायाति दिनेतीतेयथातथा ऋतावतीतेयोनिःसा नैवशक्रप्रतीच्छति ॥ २ ॥ मासेनोपचितरक्त धमनीभ्यामृतीपुनः ईषत्कृष्णविगधच वायुर्योनिमुखात्तुदेदिति ॥ ३ तथा व्यापन्न विनष्ट रोगतः श्रोतो गर्भाशयच्छिद्रलक्षण यस्याः सा व्यापन्नश्रोता स्तथा व्यादिग्ध व्याविह्ववा वातादिव्याप्त विद्यमानमप्युपहतशक्तिक श्रोत

वृणा अइक्कांतजोवृणा जाइवंज्जा गेलन्नपुष्ठा दोमणंसिया । इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्योपुरिसेणसद्धिं संवसमाणीवि गप्पनोधरेज्जा ॥ पचहिं ठाणेहिं इत्योपुरिसेणसद्धिं संवसमाणीवि गप्पनोधरेज्जा तजहा निच्चोउच्चा अणोउया वावन्नसोया वाविह्वसोया अणगपफिसेविणी । इच्चेएहिं पचहिं ठाणेहिं इत्यो

पन वरसनी स्त्री २ । तथा जातिवध्या जन्मथी निर्वीजा स्त्री ३ । तथा ग्लानस्पृष्टा रोगथी पीडायुक्त जे स्त्री ४ । तथा दौर्मनस्यिका शोकादिक मानसी पीडायुक्त जे स्त्री ५ ॥ एहवा पाच थानके स्त्री पुरुष साथे रहती थकी पिण गर्भ नधारे ॥ पाच थानके स्त्री पुरुष साथे वसती थकी गर्भ नधारे ते कहैछे नित्यर्तुका नित्य सदा प्रतिदिनछे रितू रक्तनी लोहीनी प्रवृत्ति प्रश्राव जेहने १ । तथा नथीछे रितू रक्त प्रश्रवणरूप शास्त्रप्रसिद्ध जेहने ते अनर्तुका २ । व्यापन्न कहिये विनाशने प्राप्त थयोछे रोगथी गर्भाशय च्छिद्रलक्षण जेहनु ते व्यापन्नश्रोता ३ । वातादिकथी व्याप्त वि

उक्तरूप यस्याः सा व्यादिग्ध्योता व्याविद्धयोतावा तथा मैथुने प्रधान भग मेहनं भगश्च तत्प्रतिषेधो ऽनंगं तेना नगेना हार्यलिंगादिना ऽनगेवा मुखादौ  
 प्रतिषेवा अस्तियस्याः अनगवा काम मपरापरपुरुषसपर्कतो ऽतिशयेन प्रतिषेवत इत्येवं शीला अनगप्रतिषेविणी तथाविधवेश्यावदिति ऋती ऋतुकाले  
 नो नैव निकाम मत्यर्थं वीजपात यावत् पुरुष प्रतिषेवत इत्येव शीला निकामप्रतिषेविणी वापीति उत्तरविकल्पापेक्षया समुच्चये समागतावा से तस्याः  
 ते प्रतिविध्वसते योनिदोषा दुपहतशक्तयो भवति मेहनवित्योतसावा योने बहिःपतंतो विध्वसतइति उदीर्णं चोत्कट तस्याः पित्तप्रधान पीणित स्यात्तच्चा  
 वीजमिति पुरावा पूर्ववा गर्भावसरात् देवकर्मणा देवक्रियया देवतानुभावेन शक्त्युपघातः स्यादिति शेषः अथवा देवश्च कार्मणच तथाविधद्रव्यसयोगी  
 देवकार्मण तस्मादिति पुत्रलक्षण फल पुत्रफल पुत्रीवा फल यस्य कर्मण स्तत्पुत्रफलं तद्वा तो निर्विष्ट भवति अलब्ध मनुपात्त स्यादित्यर्थः योववहु निवेसमि

पुरिसेणसद्धिं संवसमाणीवि गप्पं नोधरेज्जा ॥ पंचहि ठाणेहि इत्यो पुरिसेणसद्धिं संवसमाणीवि गप्पं  
 नोधरेज्जा तजहा उटूसिणोणिगामपप्पिसेविणीवाविज्जवड समागयावासेसुक्कपोग्गलेपप्पिविद्धंसंति उदिन्ते  
 वासेपित्तसोणिण पुरावादेवकमुणा पुत्तफलेवानोनिविठेज्जवड इच्चेएहिं जाव नोधरेज्जा । पंचहिंठाणेहिं

दयमानशको पिण शक्ति रहित थयोळे श्रोत उक्तरूप जेहनो ते व्यादिग्ध्य श्रोता ४ । घणी कामसेवाथी गणिका प्रमुख अपरापर पुरुष सेवे तेमां  
 टे ५ ॥ एहवा पाच थानके स्त्री पुरुष साथे वसती पणि गर्ज नधारे ॥ पाच थानके स्त्री पुरुषसाथे रहती पणि गर्ज नधारे ते कहैळे रितुकाले घ  
 णी कामसेवा नकरे १ । अथवा योनिदोषथी वीर्यना पुद्गल माहि आव्या पणि बाहिरपडै कमल संकोचथी २ । उत्कटआकरो ते स्त्रीने पित्तनु सो

त्यादौ निर्वेशशब्दस्य लाभार्थस्य दर्शना दथवापुत्रफल यम्यत त्वत्फल दामं त ज्ञानान्तरे अनिर्विष्ट मदत्तभवति निर्विष्टस्य दत्तार्थत्वा यथा ॥ नानिवि  
 ष्टमभूदिति ॥ स्वधिकारादेव साध्वोक्तव्यताप्रतिवर्तं सूत्रद्वय मिहमाह ॥ पचहीत्यादि ॥ सुगमं नवर ॥ एगयप्रोत्ति ॥ एकत्र ॥ ठाणंति ॥ कायोत्सर्ग उ  
 पवेगनंवा ॥ सेज्जति ॥ शयन ॥ निसीहियति ॥ स्वाध्यायस्थान चेतयतः कुर्वंतो नाति कामति न लज्जय त्याज्जामिति गम्यते ॥ अत्यित्ति ॥ सन्ति भवति  
 ॥ एगइयति ॥ एके केचन एका मद्धितौयां महंतो विपुला मग्गामिका मकामिकावा अनभिलषणोया छिन्ना आपाताः सार्थगोकुलादौनां यस्यां सा  
 तथा ता दीर्घो ऽध्वा मार्गी यस्या सा तथा तां दीर्घाध्वान मकार स्वागमिको दीर्घो ऽध्वावा कालो निस्तरणे यस्या सा दीर्घाध्वा ता मटवी कातार म  
 नुगविष्टा दुर्भिक्षादिकारणवशात् तत्राटव्यां ॥ एगयप्रोत्ति ॥ एकतः एकनेत्यर्थः स्थानादि कुर्वंत आगमोक्तसामाचार्यानातिक्रामति २ तथा राजधानी यत्र

निग्गंथाय निग्गथीनुय एगयनु ठाणंवा सेज्जवा निसीहियंवा चेएमाणा णाइक्कमंति तंजहा अत्येगइया  
 निग्गथाय निग्गथीनुय एग मह आगामिय च्छिन्नावाय दीहमद्धममविमणुपविष्ठा तत्येगयानु ठाणवा  
 सेज्जवा निसीहियवा चेएमाणा णाइक्कमंति । अत्येगइया निग्गंथा गामंसिवा नगरसिवा जाव रायहाणिवा

णितहोय रुधिर होय ३ । अथवा दैव कर्मथी कर्मना दोषथी ४ । अथवा पुत्रादि फल कर्म पाळले जवमा उपाज्यो नथी ५ ॥ इत्यादि पांच थान  
 के गर्जे नथी धरे ॥ पांच थानके साधु साध्वी एकठा कायोत्सर्ग करता वैसता आज्ञाना विराधक नथाय ते कहैछे केतला एक निग्रथ साधु सा  
 ध्वी मोटी अण बाळिये एहवी कोईक सार्थ प्रमुख आवे नथी घणा गाऊनी अटवी प्रते पैठा तिहा गयाथकापिण साधु साध्वी एक थानके सोता  
 वसता आज्ञा लोपे नथी १ । गामने विषे नगरने विषे यावत् राजधानीने विषे रहिवा आव्या एक उपाश्रये रहवा आव्या एक उपाश्रय एक र

राजाऽभिषिच्यते वासमुपगता निवासंप्राप्ताइत्यर्थः ॥ एगइयायत्यत्ति ॥ एकका एकतरा निर्गंथा निर्गंथिकावा च पुनरर्थः अत्र ग्रामादौ उपाश्रयं गृहपति  
गृहादिकमिति २ तथा ॥ अत्येत्ति ॥ अथ गृहपतिगृहादिक सुपाश्रय मलव्या ॥ एगइया ॥ एके केचन नागकुमारावासादौ वास मुपगता अथवा ॥ अत्येत्ति ॥  
इह सबध्यते अस्ति सति भवति निवासमुपगता स्तस्यच नागकुमारावासादे रतिशून्यत्वा दयंवाबहुजनाश्रयत्वादेनायकत्वाच्च निर्गन्थिकारचार्य मेकतएव  
स्थानादि कुर्वाणा नानिक्रामतीति तथा आमुष्णत्वी त्यामोषका शीरा दृश्यंतेच द्रच्छन्ति निर्गन्थिका ॥ चौवरवडियाएत्ति ॥ चौवरप्रतिज्ञयावस्त्राणि गृही  
ष्याम इत्यभिप्रायेण प्रतिग्रहितु यत्रेति गम्यते तत्र निर्गं या स्तद्रक्षणार्थं मेकतः स्थानादिकमिति ४ तथा मैथुनप्रतिज्ञया मैथुनाथमिति ५ इदं मपवादसूत्र  
मुत्सर्गश्चा पवादसहितो भाष्यगाथाभि रवसेय स्ताथेमाः भयणपयाणचउण्ह [एक.साधुरेकास्त्रीत्यादिभंगकानामित्यर्थः] अस्तरजुएउसंजएसते जेभिक्वूवि

वासउवगया एगइयायत्यउवस्सयं लज्जंति एगइया णोलज्जंति तत्येगयानु ठाणंवा जाव णाइक्कमंति ।  
अत्येगइया णिग्गंथा णिग्गंथीनुय णागकुमारावासंसिवा सुवन्तकुमारावासंसिवा वासंउवगया तत्येगयानु  
ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । आमोसगा दीसंति इच्छति णिग्गंथीनु चौवरपडियाए पडिगाहेत्तए तत्ये

हवानो ठांम तिहां गया एकठा रहता यावत् आज्ञा प्रते अतिक्रमे नथी २ । केतलाएक साधु साध्वी नागकुमारना देहरामां वसवा आव्या तिहां  
एकठा रहतां यावत् अतिक्रमे नथी ३ । चौर दीसे तेवाळे साध्वीना लूगडा साडी लेवाने तिहां एकठा रहता अतिक्रमे नथी ४ । जवान पुरुष दे  
खी बाळै साध्वीने मैथुन सेविवाने ग्रहवाने तिहां एकठा रहता अतिक्रमे नथी आज्ञाप्रते ५ ॥ इत्यादि पांच थानके यावत् रहता अतिक्रमे नथी

हरजा अहवाधिकरिज्जसम्मायं ॥ १ ॥ असणादिं गहारि उगारादिं वग्रावरिज्जाहिं निहुरमसाधुजुत्त अणंतरकहंचजोकहए [स्तीभिः सहेति] ॥ २ ॥ सोआ  
णाअणवत्थं मिच्छत्तविराज्जणतत्तादुविहं पावएजम्हातेणं एएउपएविवज्जेज्जत्ति ॥ ३ ॥ वीयपयमणपण्णे [अपवादो ऽनात्मवशद्वत्यर्थः] गेलगुवसगरोहगडाणे  
सभमभयवासासुय खतियमाइणणिखमणेत्ति ॥ ४ ॥ अचेलः चित्तचित्तत्वादिना चित्तचित्तः शोकेन तत्प्रतिजागरकाः साधवो न विद्यते ततो निर्गुन्यिकाः  
पुत्रादिकमिव तसगोपायतीति न ततो प्यसा वाज्जा मतिक्रामति १ दृष्टचित्तो हर्षातिरेकात् यच्चाविष्टो देवाधिष्ठितउन्मादप्राप्तो वातादिचोभात् ४ निर्गु

गयनं ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । जुवाणादीसंति तेइच्छति निगगंथीनं मेज्जणपफियाए पफिगाहेत्तए तत्थे  
गयनं ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । इच्चेएहि पचहिठाणेहि जाव णाइक्कमंति । पचहिठाणेहि समणेनिगगथे  
अचेलए सचेलियाहि निगगथीहिं सद्धिं संवसमाणे णाइक्कमइ तजहा खित्तचित्तेसमणेनिगगथे निगगंथेहिं  
अविज्जमाणेहिं अचेलनं सचेलियाहि निगगंथीहिंसद्धिं संवसमाणे नाइक्कमइ । एवमेएणगमएणं दित्तचित्ते  
जस्काइठे उम्मायपत्ते निगगथीपव्वावियए समणे निगगथेहिं अविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिनिगग

पाच धानके अमण निग्रंथ वस्तरहित वस्त्रसहित साध्वी साथे वसतो अतिक्रमे नथी ते कहैले व्याप्तिप्त चित्त शोकादिकथी एह्वो साधु वीजा  
साधु कोई नहोय तिवारे पुत्रवत् करी वस्त्र रहितने सचेल साध्वीपासे राखे एकठा रहता अतिक्रमे नथी आज्ञापत्ते १ । एमज हर्षथी दीप्तचित्त २  
भूतग्रस्त ३ । वायथी उन्माद पाप्म्यो ४ । साध्वीये कारण विशेषे पुत्रादिकने दीक्षा दीधी ते पासे विद्यमान वस्तरहितले वस्त्रसहित साध्वीसाथे

॥ न्यिकया कारणवशात् पुत्रादिः प्रव्राजितः सचबालत्वा दचेलो महानपिवा तथाविधवृद्धत्वादिनेति य अत्रचोत्सर्गापवाद्दौ भाष्याभिहितावेवं जेभिक्वूयस  
 चेले ठाणनिसीयणउयट्टणवावि वेएज्जसचेलाण मज्झमियआणमाईणि ॥ १ ॥ इयसदसणसभा सणेहिभिन्नकहविरहजोगेहिं [दोषाभवतीति तथ] सेज्जा  
 तरादिपासण वोच्छेयदुदिद्धम्मत्ति ॥ २ ॥ तथा सचरिएविह्दोसा किपुण्णंगंतरणिगिणउभओवा दिठ्ठमदिठ्ठम्मे दिठ्ठिपयारेभवेखोभेत्ति ॥ ३ ॥ उत्सर्गाः  
 वीयपदमण्यपे गेलनुवसगरोहगठ्ठाणे समणाणंअसइए समणीपव्वाविएचेवत्ति ॥ ४ ॥ धर्म नातिक्रमतौ त्युक्त तदतिक्रमश्चा स्वरूप इति तद्वाराणि तस्यै  
 वच प्रतिपन्नत्वा त्स्वरद्वाराणि पुन राश्रवविशेषांश्च दडक्रियालक्षणानापरिज्ञासूत्रादाह ॥ पचेत्यादि ॥ सुगम नवर आश्रवण जीवतडागे कर्मजलस्य सं  
 गलन माश्रवः कर्मबंधनमित्यर्थ. तस्य द्वाराणीव द्वारा ण्णपाया आश्रवद्वाराणीति तथा सवरण जीवतडागे कर्मजलस्य निरोधनं सवर स्तस्य द्वाराण्युपा  
 याः सवरद्वाराणि मिथ्यात्वाद्दौना माश्रवाणा क्रमेण विपर्ययाः सम्यक्त्वविरत्यप्रमादाकषायित्वायोगित्वलक्षणाः प्रथमाध्ययनकव द्वाच्याइति दंडते आत्मा  
 न्योवा प्राणी येन सदण्ड स्तत्र वसानां स्थावराणावा लनः परस्यवो पकाराय हिंसा ऽर्थदण्डो विपर्यया दनर्थदण्डो हिंसितवान् हिनस्ति हिंसिष्य त्यय

थीहिं सद्धिं संवसमाणे णाडक्कमइ ॥ पंच आसवदारा पप्पत्ता तंजहा मिच्छत्तं अविरई पमानु कसाया  
 जोगा ॥ पंच संवरदारा पप्पत्ता तंजहा संमत्तं विरती अपमानु अकसाया उत्तमजोगित्तं । पंच दंठा

वसतो आज्ञा प्रते अतिक्रमे नथी ५ । पांच आश्रवद्वार कहिया ते कहैछे मिथ्यात्व १ । अविरती २ । प्रमाद ३ । कषाय ४ । जोग ५ ॥ पांच संवर  
 द्वार कह्या ते कहैछे सम्यक्त १ । विरति २ । अप्रमाद ३ । अकषाय ४ । उत्तमयोग ५ ॥ पांच दंड कह्या ते कहैछे अर्थदंड १ । अनर्थदंड कामकाज



मित्राभिसंधे र्यः सप्यवैरिकादिवधः स हिंसादंडइति ॥ अकस्मादंडइति ॥ मगधदेशे गोपालबालाबलादिगसिषो ऽकस्मादिति शब्द स इह प्राकृतेपि तथैव ॥ ८ ॥  
 प्रयुक्तइति तना व्यवधार्यगहारे मुक्ते ऽग्यस्य वधो ऽकस्मा इडइति यो मित्रस्या यमित्रो यमिति बुद्ध्या वधः स दृष्टिविपर्यासदंडइति एतेहि दंडा स्वयोद  
 यानां क्रियास्थानानां मध्ये धौताइति प्रसगतः शेषाणि अष्टौ क्रियास्थाना न्यभिधीयन्ते तत्र सृपाक्रिया आत्मज्ञात्याद्यर्थं यदलोकभाषणं १ तथा ऽदत्तादा  
 नक्रिया आद्यर्थं मदत्तग्रहणं २ तथा ऽध्यात्मक्रिया यत्केनापि कथचना प्यपरिभूतस्य दीर्घमनस्यकरण ३ । तथा मानक्रिया यज्जात्यादिमदमत्तस्य परेषां हील  
 नादिकरणं ४ तथा ऽमित्रक्रिया य आतापितस्वजनादीना मलो प्यपराधे तीव्रदंडस्य दत्तनाङ्गनताडनादिकस्य कारण ५ तथा मायाक्रिया य च्छठतया मनो  
 बाकायप्रवर्तन ६ तथा लोभक्रिया य लोभाभिभूतस्य सावदारभपरिग्रहेषु महत्सु प्रवर्तन ७ तथेर्यापथक्रिया य दुपशांतमोहादे रेकविधकर्मबन्धनमिति ८  
 प्रनगाथा अष्टा १ णडा २ तिसा ३ कम्हा ४ दिष्टीय ५ मोस ६ दिष्टीय ७ अभत्य ८ माण ९ मित्रे १० माया ११ लोभे १२ रियावहियति १३ ॥ १ ॥ नयरं

पणत्ता तंजहा अण्ठादंठे अण्ठादंठे हिंसादंठे अकस्मादंठे दिष्टिविपरियासियादंठे । पंच किरियात  
 पणत्तात तजहा अरंजिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चस्काणकिरिया मिच्छादसणवत्तिया । मिच्छ  
 दिष्टिनेरइयाणं पंच किरियात पणत्तात तंजहा अरंजिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया । एवंसवेसिंनिरं

विनाज पापकर्ममां प्रवर्तवो २ । हिंसादंठ ३ । अकस्मात् दंड अन्यने हणतां बीजो हणाय ४ । दृष्टिविपर्यासदंड ते मित्रने अमित्र जाणी हणो ५ ॥  
 मिथ्यादृष्टी नारकीने पांच क्रिया कही तेकहैके अरंजिकी १ । पारिग्रहिकी २ । माया प्रत्येकी ३ । अप्रत्याख्याननी ४ । मिथ्या दर्शननी ५ ॥ इम

॥ विगलिदियेत्यादि ॥ एकद्वित्रिचतुरिन्द्रियेषु मिथ्यादृष्टिविशेषणं न वाच्यं तेषां सदैव सम्यक्ज्ञाभावेन व्यवच्छेद्याभावात् सासादनस्य चाल्पत्वेना विवक्षितत्वा  
दिति कायिकी कायचेष्टा १ अधिकरणिकी २ खड्गादिनिवर्त्तिनी २ प्राद्वेषिकी मत्सरजन्या ३ पारितापनिकी दुःखोत्पादनरूपा ४ प्राणातिपातः प्रतीतः ५  
॥ दिष्टिया ॥ अश्वादिचित्रकर्मक्रियादर्शनार्थं गमनरूपा १ ॥ पुष्टिया ॥ जीवादीन् रागादिना पृच्छतः सृशतोवा २ ॥ पाडुस्त्रिया ॥ जीवादीन् प्रतीत्य या  
३ ॥ सामतोवणिवाद्या ॥ अश्वादिरथादिक लोके श्लाघयति हृष्यतो ऽश्वादिपतेरिति ४ ॥ साहय्यिया ॥ स्वहस्तगृहीतजीवादिना जीवं मारयतः ॥ नेस

तरं जाव मिच्छादिष्ठियाणंवेमाणियाणं । णवरं विगलेंदिया मिच्छादिठी नजन्मंति सेसं तहेव । पंच किरि  
यानं पसत्तानं तंजहा काइया अहिगरणिया पानुसिया पारियावणिया पाणाइवायकिरिया । नेरइयाणं  
पंच एवचेव । एवंनिरतर जाव वेमाणियाणं । पंच किरियानं पसत्तानं तंजहा अरंजिया १ जाव मिच्छा  
दंसणवत्तिया ५ । णेरइयाणं पचकिरिया निरंतरं जाव वेमाणियाणं । पंच किरियानं पसत्तानं तंजहा

सर्वने निरंतर यावत् मिथ्यादृष्टी वैमानिक देव २४ दंडकें एतलो विशेषछे विगलेद्रीमिथ्यादृष्टीज कहिये बीजो तिमज ॥ पांच क्रिया कही ते कहेछे ।  
कायानी १ । अधिकरणकी २ । प्रद्वेषकी ३ । पारितापकी ४ । प्राणातिपातकी ५ ॥ नारकीने ए पाच एमज एमनिरंतर यावत् वैमानिक ताई ॥ पांच  
क्रिया कही तेकहेछे । आरभिकी यावत् मिथ्या दर्शनकी ५ ॥ नारकीने एपांच क्रिया निरंतर वैमानिक ताई ॥ पांच क्रिया कही ते कहेछे । दृष्टि  
की जोवाजावूं १ । फर्शकी रागथी जीवादिकने फरस २ । जीवादिक प्रत्ययकी ३ । घोडा प्रमुख लोकने बखाणातो वस्तु धणी हर्षपामे ४ । स्वहस्ते

थिया ॥ यंत्रादिना जीवाजीवा त्रिस्तजतः १ ॥ अणवणिया ॥ जीवाजीवा नानासंयतः २ ॥ वियारणिया ॥ तानेवविदारयतः ३ ॥ अणाभोगवत्तिया ॥  
 अनाभोगेन पात्रा द्याददतो निक्षिपतोवा ४ ॥ अणवकंखवत्तिया ॥ इहलोकपरलोकापायानपेक्षस्येति ५ ॥ पेज्जवत्तिया ॥ रागप्रत्यया १ ॥ दोसव  
 त्तिया ॥ द्वेषप्रत्यया २ ॥ योगक्रिया कायादिव्यापाराः ३ ॥ समुदानक्रिया कर्मोपादान ४ ॥ इरियावहिया योगप्रत्ययो बधः ५ ॥ इदच्च प्रेमादि  
 क्रियापचक सामान्यपदे चतुर्विंशतिदंडके तु मनुष्यपदएव सभक्ति ईर्यापथक्रियाया उपशांतमोहादित्रयस्यैवभावादित्याह ॥ एवमित्यादि ॥ इहै केन्द्रिया

दिठिया १ पुठिया २ पाहुच्चिया ३ सामंतोवणिवाइया ४ साहल्यिया ५ । एवंणेरइयाणं जाव वेमाणि  
 याणं २४ । पंच किरियाणं पस्सत्ताणं तजहा णेसल्यिया १ अणवणिया २ वेयारणिया २ अणान्नोगवत्ति  
 या ४ अणवकंखवत्तिया ५ । एवं जाव वेमाणियाणं २४ । पंच किरियाणं पस्सत्ताणं तजहा पेज्जवत्तिया १  
 दोसवत्तिया २ पणंगकिरिया ३ समुदाणकिरिया ४ इरियावहिया ५ । एव मणुस्साणवि सेसाणनल्यि ।

जीवादि हणो ५ ॥ इम नारकीने वैमानिक ताईं २४ ॥ पांच क्रिया कही तेकहेछे यंत्रादिके जीवाजीव पालता १ । जीवादिक अणाववा २ । तेज अ  
 णावी विदारता छेदता ३ । अनान्नोग पणो जिम तिम बोलतां मूकता लेतां ४ । इहलोक परलोकना कष्टनी विचारणा नही जे पाप फल कटुकछे  
 ५ ॥ इम यावत् वैमानिक ताईं २४ दंडके ॥ वली पांच क्रिया कही तेकहेछे । राग प्रत्येकी १ । द्वेष प्रत्येकी २ । प्रयोग क्रिया कायादि व्यापार ३ ।

॥ दीना मविशेषेण क्रियो क्ता साच पूर्वाभवापेक्षया सर्वापि संभवतीति भावनीयं द्विस्थानके द्वित्वेन क्रियाप्रकरण मुक्त मिह तु पंचकत्वेन नरकादिचतुर्विंशतिदंडकाश्रयेणचेति विशेषः क्रियाणां च विस्तरव्याख्यान द्विस्थानकप्रथमोद्देशका द्वाचमिति अनन्तरं कर्मणो बंधनिबंधनभूताः क्रिया उक्ता अधुना तस्यैव निर्जरोपायभूतां परिज्ञामाह ॥ पंचविहेत्यादि ॥ सुगम नवर परिज्ञान परिज्ञावस्तुस्वरूपस्य ज्ञान तत्पूर्वकप्रत्याख्यान इयं च द्रव्यतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो ऽनुपयुक्तस्य भावतस्तूपयुक्तस्ये त्याह च भावपरिज्ञाजाण्ण पञ्चक्वाणचभावेणिति ॥ तत्रो पधी रजोहरणादि स्तस्या तिरिक्तस्या शुद्धस्य सर्वस्य वा परिज्ञा उपधिपरिज्ञा एव शेषपदान्यपि नवर उपाश्रीयते सेव्यते सयमात्मपालनाये लुपाश्रयः परिज्ञाच व्यवहारवतां भवतीति व्यवहारं प्ररूपयन्नाह ॥ पचेत्यादि ॥ व्यवहरण व्यवहारो व्यवहारो सुमुक्षप्रवृत्तिनिवृत्तिरूप इह तु तन्निबंधनत्वात् ज्ञानविशेषोपि व्यवहार स्तत्र आगम्यते परिच्छिद्यतेथीं नेने त्यागमः केवलमनः

पचविहा परिन्ना प० तं० उवहिपरिन्ना उवस्सयपरिन्ना कसायपरिन्ना जोगपरिन्ना ज्ञत्तपाणपरिन्ना । पंच विहे ववहारे प० त० आगमे १ सुए २ आणा ३ धारणा ४ जीए ५ । जहासे तस्य आगमेसिया आगमेणं

समुदायकर्म बांधे ४ । जेमन वचन काया जोगथी वंधाए ५ ॥ एपांच क्रिया इहां एकेंद्रियादिकने क्रिया ओ कही ते सघली पूर्व जवना अपेक्षाये मनुष्यनेज होय बीजे दंडके नथी ॥ पाच प्रकारनी परिज्ञा कही वस्तुनूं स्वरूप जाणी पचखवुं ते परिज्ञा ते कहेछे । उपधिरजोहरणादि अशुद्धनी परिज्ञा १ । उपासरानी परिज्ञा अशुद्ध वसति जाणी छाऊवी २ । कषायनी परिज्ञा ३ । जोग परिज्ञा ४ । भातपाणीनी परिज्ञा ५ ॥ पाच प्रकारे व्यवहार कह्यो ते कहेछे । आगम व्यवहार १ । जाणिये अर्थ जेणे ते आगम केवल मनपर्यव अवधिज्ञान चौदेपूर्व नवपूर्व लगे ए आगम । शेष आ



पर्यायावधिपूर्वचतुर्दशकदशकनवकरूपः १ तथा शेषं श्रुत माचारप्रकल्पादिकं श्रुतं नवादिपूर्वाणां श्रुतत्वे प्यतीन्द्रियार्थज्ञानहेतुत्वेन सातिशयत्वा दागमस्यपदे  
 गः केवलवदिति यदगौतार्थस्य पुरतो गूढार्थपदे देशान्तरस्थगीतार्थनिवेदनाया तिचारालोचन मितरस्थापि तथैव श्रुतिदानं साक्षा गीतार्थसविग्नेन द्रव्या  
 व्यपेक्षया यत्रा पराधे यथा या विशुद्धिः कृताता मवधार्य य दन्य स्तत्रैव तथैव तामेव प्रयुक्ते साधारणा वैयावृत्यकरादेर्वा गच्छीपगृहकारिणो ऽप्येषानुचि  
 तस्यो चितप्रायश्चित्तपदानां प्रदर्शितानां धरणं धारणेति तथा द्रव्यक्षेत्रकालभावपुरुषप्रतिषेवानुवृत्त्या सहननवृत्त्यादिपरिहाणि मवेक्ष्य यप्रायश्चित्तदानं  
 योवा यत्र गच्छे सूत्रातिरिक्तं कारणतः प्रायश्चित्तव्यवहारप्रवर्त्तितो बहुभि रग्यैश्चानुवर्त्तित तज्जीतमिति अत्रगाथा आगमसुयववहारो मुणहजहाधी  
 रपुरिसपन्नतो पञ्चक्लोयपरोक्लो सोवियदुविहोसुणेयव्वो ॥ १ ॥ पञ्चक्लोवियदुविहो इदियजोचेवनोयइदियजो इंदियपञ्चक्लोविय पचसुविसएसुणेयव्वो ॥ २  
 नोइदियपञ्चक्लो ववहारोसोसमासओतिविहो ओहिमणपज्जवेया केवलनाणेयपञ्चक्लो ॥ ३ ॥ पञ्चक्खागमसरिसो ह्योइपरोक्लोविआगमोजस्स चदमहीचउ  
 सोविहु आगमववहारवहोइ ॥ ४ ॥ पारोक्खववहार आगमओसुयहराववहरंति चोइसदसपुव्वधरा नवपुव्विगगधहत्थीय ॥ ५ ॥ जजहमोत्तरयण तंजाण  
 इरयणवाणिओनिउण इयजाणइपञ्चक्लो जोसुज्झइजेणदिनेण ॥ ६ ॥ कप्पस्सयणिज्जुत्ति ववहारस्सेवपरमनिउणस्स जोअत्यओवियाणइ सोववहारीअण  
 णाओ ॥ ७ ॥ तंचेवणसज्जंते [अनुसरन्] ववहारविहिपउजइजहुत्त एसोसुयववहारो पणत्तोवीयरगेहि ॥ ८ ॥ अपरक्कमोतवस्सी गंतुंजोसोहिकारगस  
 मीवे नवणइआगतु सोसोहिकरोविदेसाओ ॥ ९ ॥ अहपठ्वेइसीस देसंतरगमणनइचेठ्ठाओ इच्छामज्जीकाओ सोहितुभसगासिंमि ॥ १० ॥ सोववहारविह  
 णू अणसज्जित्तासुओवएसेण सीसस्सदेइआण तस्सइमदेहपच्छित्तं ॥ ११ ॥ [ गूढैः पदे रूपदिशतीति ] ॥ १२ ॥ जेणयाइदिठ्ठ सोहीकरणंपरस्सकीरस  
 जारिसयचेवपुणो उप्पणकारणतस्स ॥ १३ ॥ सोतमिचेवदग्गे खेत्तेकालेयकारणेपुरिसे तारिसयचेवपुणो करंतुआराहओहोइ ॥ १४ ॥ वैयावच्चकरोवा सीस

॥ वादेसहिडओवावि देसअवधारिंती चउत्थओहीइववहारोत्ति ॥ १५ ॥ बहुसोबहुस्सएहि जीवत्तीनीनिवारिओहीइ वत्तणवत्तपमाण जीएणकयहवइएयं ॥ १६ ॥  
 तथा जजस्सउपच्छित्त आयरियपरपराएअ विरुद्ध जोगायबहुविहीया एसोखलुजीवकप्पोउत्ति ॥ १७ ॥ जीत माचरित मिदवा स्वलक्षण असडे  
 हिसमा इन्न जकत्थइकेणईअसावज्ज ननिवारियमन्नेहिं बहुमण्णमयमेयमायरियति ॥ १ ॥ आगमादीनां व्यापारणे उत्सर्गापवादावाह यथेति प्रकारः केव  
 लादीना मन्यतमा ॥ से ॥ तस्य व्यवहर्तुः सवा उक्तलक्षण स्तत्र तेषु पचसु व्यवहारेषु मध्ये तस्मिन्वा प्रायश्चित्तदानादिव्यवहारकाले व्यवहर्तव्येवा वस्तु  
 नि विषये आगमः केवलादिः स्या इवे त्तादृशेनेतिशेषः आगमेन व्यवहारप्रायश्चित्तदानादिक प्रस्थापयेत् प्रवर्त्तयेत् नशेषै रागमेपि षड्विधे केवलेना  
 त्तस्यै तदभावेच मनःपर्यायेणैव प्रधानतराभाव इतरेणेति अथवा नोनैव ॥ से ॥ तस्य सवा तत्र व्यवहर्त्तव्यादा वागमः स्यात् यथा यत् प्रकार तत्र श्रुत स्या  
 वध्यबोधत्वा त्तादृशेन श्रुतेन व्यवहार प्रस्थापयेदिति ॥ इच्चेएहिइत्यादि ॥ निगमनं सामान्येनेति यथायथा सौ तत्रा गमादिः स्या तथा तथा व्यव

ववहारे पठवेज्जा णोसे तत्थ आगमेसिया १ जहासेतत्थसुएसिया सुत्तेणं ववहारे पठवेज्जा णोसेतत्थ सुए  
 सिया २ एव जाव जहासे तत्थ जीएसिया जीएणं ववहारेणं पठवेज्जा । इच्चेएहि पंचहिं ववहार पठवेज्जा

चारागादि ते सूत्र । सूत्र व्यवहार २ । आज्ञा व्यवहार ३ । धारणा व्यवहार ४ । जीत व्यवहार ५ ॥ जेवहुश्रुते आचस्यो ते आचरवा ते जीत । ति  
 मज तिहाथी आगमवत केवली प्रमुख पूर्वधारी ते आगमेकरी व्यवहार थापे प्रायश्चित्तादि दे पोताने ज्ञाने १ । नहीते तिहां आगमवत सूत्रे क  
 ह्यो तिम व्यवहारने थापे प्रायश्चित्तनदे २ । वली तिहा सूत्रना जाण आगमे व्यवहारने थापे इम यावत् जिम ते तिहां जीतवंत जीते व्यवहार

हारं तितु प्रस्थापयेदिविशेषनिगमनमिति एतैर्व्यवहर्तुं प्रश्नद्वारेण फलमाह ॥ सेकिमित्यादि ॥ अथ किं हेभदत भट्टारका आहुः प्रतिपादयति के  
 आगमबलिका उक्तज्ञा नविशेषबलवतः श्रमणा निर्ग्रथाः केवलिप्रभृतयः ॥ इच्छेयति ॥ इत्येत इच्छ्यमाण मथवा किं तदित्याह इत्येव इति उक्तरूप एत  
 प्रत्यक्षक पंचविध व्यवहार प्रायश्चित्तदानादिरूप ॥ समववहारमाणेति ॥ संबध्यते व्यवहरन् प्रवर्त्तयन्नित्यर्थः कथ ॥ समति ॥ सम्यक् तदेव कथ  
 मित्याह यदा यदा यस्मिन् यस्मिन्नवसरे यत्र यत्र प्रयोजने क्षेत्रेवा यो य उचित स्तमिति शेष स्तदा तदा काले तस्मिन् तस्मिन् प्रयोजनादौ  
 कथभूतमित्याह अनिश्रितै सर्वांशसार हितै रूपाश्रितोद्भूतौ कृतौ ऽनिश्रितोपाश्रितस्तत्रयथा निश्रितश्च शिष्यत्वादिप्रतिपन्न उपाश्रितश्च स एव कथमित्याह  
 वैयावृत्यकरत्वादिना प्रत्यासन्नतर स्ता वथवा निश्रितश्च रागउपाश्रितश्च द्वेष स्ते ऽथवा निश्रितश्च हारादिलिप्ता उपाश्रित च शिष्यप्रतीच्छककुलाद्यपेक्षा

आगमेणं जाव जीएणं जहा २ से तल्य आगमे जावजीए तहा २ ववहारं पठवेज्जा सेकिमाउज्जंते आगम  
 वलियासमणा निगगथा इच्छेय पंचविहं ववहारं जया २ जहिं २ तया तया तहि तहिं अणिरिसिज्जं वरिसियं

थापे एणे पांचे व्यवहार थापे । आगमे यावत् जीते जेजिहा जे व्यवहारमा होय आगममां तथा जीतमा तिम तिम व्यवहार थापे । तेषां माटे  
 जगवत आगमे वलि आ श्रमणा निगग्रथ केवली होय । ए पाच प्रकारे व्यवहार प्रते जिवारे जिवारे जिहा जिहा क्षेत्रकाले तिवारे तिवारे तिहा  
 तिहा आहारादिकनी लालचविना उपाश्रित शिष्यादिकनी अपेक्षाये मूक्री सम व्यवहारे विचरतो श्रमणा निर्ग्रथ आज्ञानो आराधक होय । जिवारे  
 जे व्यवहारनो काम तिवारे ते व्यवहारे चाले ते आराधक होय ॥ समयवत मनुष्य ते साधुने सूताने पाच जागता कह्या अग्निने परे ते कहे छे ।

ते नस्तो यत्र तस्येति क्रियाविशेषणं सर्वथा पक्षपातवर्जितत्वेन यथावदित्यर्थः इह पूज्यव्याख्या रागीउहोइनिस्सा उवस्तिओदोससंजुत्तो अहवणआहाराई दाहीमज्जतुएसनिस्साओ ॥ १ ॥ सीसीपडच्छओवाहोइउवस्साकुलाईयत्ति ॥ आआयाजिनोपदेशस्साराधको भवतीति हंत आहुरेवेतिगुरुवचनं गम्यमिति अमणप्रस्तावां तद्व्यतिकरमेव सूत्रद्वयेनाह ॥ सजयेत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं सयतं मनुष्याणां साधूनां सुप्तानां निद्रावतां जाग्रतीति जागरा असुप्ता जागरा इव जागरा इयं सत्र भावना शब्दादयोहि सुप्तानां सयतानां जाग्रद्विद्वदप्रतिहतशक्तयो भवति कर्मबंधाभावकारणस्या प्रमादस्य तदानीं तेषां मभावात् कर्मबंधकारणं भवतीत्यर्थः द्वितीयसूत्रभावनानां जागराणां शब्दादयः सुप्ता इव सुप्ता भस्मच्छन्नाग्निवत् प्रतिहतशक्तयो भवन्ति कर्मबंधकारणस्य प्रमादस्य तदानीं तेषां मभावात् कर्मबंधकारणं भवतीत्यर्थः सयतविपरीता असंयता इति तानविकृत्याह ॥ असजयेत्यादि ॥ व्यक्तं नवरं मसयतानां प्रमादितया वस्थाद्वयेऽपि कर्मबंधकारणतया ऽप्रतिहतशक्तित्वात् शब्दादयो जागरा इव जागरा भवन्तीति भावना सयतासयताधिकारा तद्व्यतिकराभिधायिसूत्रद्वयं

समं व्यवहारेमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहएज्जवइ । संजयमणुस्साणं सुत्ताणं पंच जागरा पस्सत्ता तंजहा सद्दा जाव फासा । संजयमणुस्साण जागराण पंच सुत्ता पस्सत्ता तंजहा सद्दा जाव फासा । असंजय मणुस्साण सुत्ताणंवा जागराणंवा पंच जागरा पस्सत्ता तंजहा सद्दा जाव फासा । पंचहिठाणेहिं जीवा

शब्द रूप रस गंध फरस ए ५ इंद्रिणा विषे जागे ॥ संयतं मनुष्येने साधुने जागताने पांच सूता जस्मढाक्या अग्निवत् ते कहेछे । शब्द यावत् फरस ॥ असंयतं मनुष्येने सूताने अने जागताने पांच जागता कल्या तेकहेछे । शब्द यावत् फरस कर्म बंधनो कारण ॥ पांच आनके जीव रज ते



सुगमं नवरं ॥ जीवति ॥ असंयतजीवा ॥ रयति ॥ जीवस्वरूपोपरंजना द्रुणद्रव रजः कर्म ॥ आद्रयंतित्ति ॥ आददति गृह्णन्ति बधन्तीत्यर्थः ॥ जीवति ॥  
 संयतजीवाः ॥ वसतित्ति ॥ त्यजति क्षपयंतीत्यर्थः सयताधिकारादेवा पर सूत्रत्रय ॥ पचमासिएत्यादि ॥ व्यक्त नवर उपघातो ऽशुद्धता उद्गमोपघात उद्ग  
 मदोषे राधाकर्मादिभिः षोडशप्रकारैर्भक्तपानोपकरणलेपाना मशुद्धता एव सर्वत्र नवर उत्पादनया उत्पादनादोषैः षोडशभिर्धर्म्यादिभि रेषणया तद्दोषै  
 र्दशभिः शक्तितादिभिरिति परिकर्म वस्तुपानादेच्छेदनसेवनादि तेन तस्यो पघातो कल्पता तत्र वस्तुस्य परिकर्मोपघातो यथा तिगहपरिफालि  
 याण वत्तंजोफालियंतुससीवे पचगहण्गतर [ ओषिकायन्यतरत्तु ] सोपायद्राणमाईणि ॥ १ ॥ [ तथा पात्रस्य ] अवलक्खणेगवधे दुगतिगअदरेगवधणवा  
 यि जोपायपरियट्ठ [ परिभुंक्ते ] परंदिवडाउमासाउ ॥ २ ॥ [ सम्राज्जादौनाप्नोतीति तथावसतेः ] दूमियधूमियवासिय उज्जोदयपलिकडाअवत्ताय सिस्ता  
 समडाविय विसोहिकोडिंगयावसहिति ॥ ३ ॥ दूमिता धवलिता वलिकता कूरादिना अव्यक्ता कृगणादिना लिप्ता समृष्टा समार्जितेत्यर्थः तथा परिहरणा  
 आसेवा तथो पध्यादे रकल्पता तत्रो पधे र्यथा एकाकिना हिडकसाधुना यदा सेवित सुपकरण तदपहतभवतीति समयव्यवस्था जगहणअपडिवज्जण  
 जइविचिरेणनउवहस्मेति यचना दस्यचायमर्थ एकाकी गच्छन्मथो यदि जागर्त्ति दुग्धादिपुच न प्रतिवध्यते तदा यद्यप्यसौ गच्छे चिरेणा गच्छति तथा  
 प्युपधि नीपहन्त्यते अन्यथात् पहन्त्यत इति वसतेरपि मासचतुर्मासयो रुपरिकालातिक्कांततेति तथा मासद्वय चतुर्मासद्वयवा वर्जयित्वा पुन स्तत्रैव वस  
 ता सुपस्थानेपिच तद्दोषाभिधानात् उक्तञ्च उवासासमतीता कालातीताउसाभवेसेज्जा सोचेवउवहाणा दुगुणादुगुणचवज्जित्ति ॥ १ ॥ तथा भक्तस्या  
 परिष्ठापनिकाकारंप्रत्यकल्पता तदुक्त विहिगहियंविहिभुत्त अदरेगभक्तपाणभोत्तव्व विहिगहिएविन्निभुत्ते इत्ययचउरोभवेभंगा ॥ १ ॥ अहवाविप्रविहिग  
 हिय विहिभुत्त तगुरुहिएणायं सेसाणाण्णया गहणेदिन्नेवनिज्जुहणति ॥ २ ॥ उद्गमादिभिरेव भक्तादीनां कल्पता विशुद्धयइति उपघातविशुद्धवृत्तयश्चजी

॥ वानिर्धर्मार्थिकत्वाभ्यां बोधे रत्नाभलाभस्थानेषु प्रवर्त्तत इति तत्प्रतिपादनाय सूत्रद्वयं ॥ पंचहीन्यादि ॥ सुगमं नवरं दुर्लभाबोधि जिनधर्मो यस्य स तथा

रयं अहिजांति तंजहा पाणाइवाएणं जाव परिग्गहेणं । पंचहिंठाणेहिं जीवा रयं वमंति तंजहा पाणाइ  
वायवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं । पंचमासिएणं त्तिस्कुपप्पिमं पप्पिवन्तस्स अणगारस्स कप्पंति पंच  
दत्तीनुं नोयणस्स पप्पिगाहेत्तए पंचपाणगस्स । पंचविहे उववाए पप्पत्ते तजहा उग्गमोववाए उप्पायणोव  
वाए एसणोववाए परिक्कम्मोववाए परिहरणोववाए । पंचविहा विसोही पप्पत्ता तजहा उग्गमविसोही उप्पा  
यणविसोही एसणाविसोही परिक्कम्मविसोही परिहरणविसोही । पंचहिंठाणेहिं जीवा दुल्लभोहियत्ताए

पापकर्म ते प्रतिग्रहे बांधे ते कहेछे । प्राणातिपाते यावत् परिग्रह्यो करी ॥ पांच यानके जीवरज पापकर्मतेवमे ते कहेछे । प्राणातिपातयो विरमे  
यावत् परिग्रह्यो विरमे ॥ पांचमासनी जित्तु साधुनी प्रतिमा पप्पिवज्जो गृह्वा अणगारने कल्पे पांच दांती नोजननी एकवारं पात्रमां आवे ते १  
दाति पडिगाहठी लेवी अने पांच पाणीनी ॥ पांच प्रकारे उपघात आहारनो दोष होय तेकहेछे । उपजतां आघाकर्मादि १६ दोष आहारना । उ  
त्पादना दोष १६ उपजाववाना आहारना घातृप्रमुख । स्पणाना दोष १६ शकितादि । परिकर्मना दोष वस्त्र पात्रा छेदवूं सीववूं । उपधिअसूडतीनो  
दोषवसति ४ मास अधिकरहे ॥ पांच प्रकारे विसोधी कही शुद्ध मानता आहारादिकनी तेकहेछे । उद्गम विसोधी १ । उत्पादनाविसोधी २ । स्प  
णा विसोधी ३ । परिकर्मणा विसोधी ४ । परिहरणा विसोधी ५ ॥ पांच यानके जीव दुल्लभ बोधि पणानो कर्म बांधे जिन धर्मनी प्राप्ति दोहिली

तद्भावस्तत्ता तथा दर्लभबोधिकतया तस्येव कर्ममोहनीयादि प्रकुर्यन्ति बध्नन्ति प्रहता मयण मञ्जाघां यदन् यथा नखीप्ररहंतती जाणंतोकीसभं  
जएभोए पाहुडियउपजोवद्र समवयसरणादिरूपाए ॥ १ ॥ माइजिणाणप्रवणो ॥ नच ते नाभूवं स्तगणीतप्रवचनीपलब्धि नपि भोगानुभवनादे दीपो ऽय  
श्येदासातस्य तीर्थकरनामादिकर्मणश निर्जरणीपायत्वा तस्य तथा वीतरागत्वेनसमवसरणादिषु प्रतिबधाभावादिति तथा प्रदणपस्य धर्मस्य शुतचा  
रिरूपस्य प्राकृतभाषानिगड मेतत् तथा किंचारिणेण दानमेव जेय इत्यादिक मवर्णं वदन् उत्तर चाग प्राकृतभाषात्वं शुतस्य नदुष्टं बालादीनां सुखाध्येय  
त्वेनो पकारित्वा तथा चारिममेव जेयो निर्वाणस्या नन्तरहेतुत्वा दिति प्राचार्योपध्यायाना मवर्णं वदन् यथा बालो यमित्यादि नच बालत्वादिदोषो  
बुडादिभि ष्वत्वादिति तथा चत्वारो वर्णाः प्रकाराः जमणादगो गम्भिन्स तथा सएव स्वार्यिकाखिनाना शातुर्वर्णं स्तस्य सघस्या वर्णं वदन् यथा कोऽयंसं

कम्म पकरेंति तंजहा अरहंतानमवन्तंवदमाणे अरहंतपसत्तरसधम्मस्सअवन्तंवदमाणे आयरियउवज्जायाण  
मवन्तंवदमाणे चाउवन्नसंघस्सअवन्तवयमाणे विविक्कतवबंजचेराणंदेवाणअवन्तंवदमाणे । पंचहिठाणेहिं

होय तेकहेळे १ अरिहंतना अवर्णवाद बोलतो अरिहत थयातो समोसरणस्यूं बेसवूं ॥ अरिहंतना जाण्याधर्म चारित्र रूप तेहनो अवर्णवाद बोल  
तो जे चारित्र तेस्यू दानदे तेज जलूंळे २ । आचार्य उपाध्यायनो अवर्णवाद बोलतो एस्यू बालकळे ३ । चतुर्विध सधनो अवर्णवाद बोलतो जे ए  
स्यो संघ पञ्चूनो समुदाय त सरखो ४ । विविक्त परिपूर्ण पाळिला जवना तप ब्रह्मचर्य पात्थायी देवता पणू पास्या ते देवताना अवर्णवाद बो  
लतो ५ ॥ पाष थानके जीव सुलज बोधि पणानो कर्म बाधे ते कहेळे । अरिहतना गुण बोलतो यावत् विविक्त तप ब्रह्मचर्यथी देवता थया तेह

धो यः समवायबलेन पशुसंघइवा मार्गमपि मार्गीकरोतीति नचैत स्नाधुञ्जानादिगुणसमुदायात्मकत्वा तस्य तेनच मार्गस्यैव मार्गीकरणादिति तथा  
 विपक्वं सुपरिनिष्ठित प्रकर्षपर्यन्त सुपगत मित्यर्थः तपश्च ब्रह्मचर्यं च भवान्तरे येषां विपक्वं वा उदयागतं तपोब्रह्मचर्यं तद्धेतुक देवायुक्तादिकर्म येषां ते तथा  
 तेषां भवस्य वदन् नसत्येव देवाः कदाचनाप्यनुपलभ्यमानत्वात् किंवा ते विटैरिव कामासक्तमनोभि रविरतै स्तथा निर्निमेषै रचेष्टैश्च स्त्रियमाणैरिव प्रव  
 चन कार्यानुपयोगिभिश्चे त्यादिक इहोत्तर सति देवा स्तत्कृतानुग्रहोपघातादिदर्शनात् कामासक्तताच मोहसात कर्मोदया दित्यादि अभिहितच एत्यप  
 सिद्धीमोहणि यसायवेयणियकम् उदयाग्रे कामपसत्ताविरई कम्पुदयग्रीविनतेसि ॥ १ ॥ अणमिसदेवसहावो निचेष्टाणुत्तरादिकयकिञ्चा काल णभावति  
 त्यस्यपिअसत्यकु वतित्ति ॥ २ ॥ तथा अर्हतावर्णवादीयथा जियरागदोसमोहा सच्चसूतियसनाहकयपूया अच्चतसच्चवयणा सिवगद्गमणाजयतिजि  
 णत्ति ॥ १ ॥ अर्हत्पणीतधर्मवर्णी यथा वत्थुपयासणसूरी अइसयरथणाणसायरोजयइ सत्त्वजयजीववधुर वधूदविहोविजिणधम्मो ॥ २ ॥ आचार्यवर्णवादी य  
 था तेसिनमोतेसिनमो भावेणपुणोवितेसिचेवनमो अणवकयपरहियरया जेनाणदेतिभत्वाण ॥ ३ ॥ चतुर्वर्णअमणसच्चवर्णीयथा एवमिपूइयमि नत्थितय  
 जनपूइयहोइ भवणेविपूयणिज्जी नगुणीसघाउजअन्नो ॥ १ ॥ देववर्णवादीयथा देवाणअहोसीलं विसयविसमोहियाविजिणभवणे अच्चरसाहिपिसम हासा  
 ईजेणनकरतित्ति ॥ १ ॥ सयतासयतव्यतिकरमेव ॥ पचपडिसलीणेत्यादिना ॥ आरोपणासूत्रपर्यं तेन ग्रन्थेनाह गतार्थेनाय नवरं ओत्रेन्द्रियादिक्रमो यथा

जीवा सुलज्जबोहियत्ताए कम्मं पगरेति अग्रहंताणं वन्नं वदमाणे जाव विविक्कतवदंजचेराणं देवाणं वन्नं वद

ना गुण बोलतो ॥ पांच प्रति संलीनता ते संवर जावना कही ते कहेछे । ओत्रेंद्री काननी प्रति संलीनता यावत् फरसनी प्रति संलीनता ॥ पांच

प्रधान्या गाधान्यंच ज्योपशमबहुत्वकृत तथा प्रतिसलीनेतरसूत्रयो. पुरुषोधर्मो उक्तः संवरेतरसूत्रयोस्तु धर्मएवेति तथा संयमनं सयमः पापोपरम इत्यर्थं स्तत्र समो रागादिरहित स्तस्य अयो गमन प्रवृत्ति रित्यर्थः समायः समायएव समायेभव समायेननिर्वृत्त समायस्यविकारोऽशोवा समायो वा प्रयोजनमस्येति सामायिक उक्तच „रागद्वोसविरहित्रो समोत्तिअयणअप्रोत्तिगमणति समगमणतिसमाओ सएवसामाइयनाम ॥ १ ॥ अहवाभवसमाए निव्वत्त तेणतम्मयतावि जाप्पप्रोयणवा तेणविसामाइयनेयति ॥२॥ अथया समानि ज्ञानादीनि तेषु तैर्या अयनमयः समायः सएव सामायिकमिति अवादिच अहवासमाइसम त्तनाणचरणाइतेसुतेहिवा अयणअयोसमाओ सएवसामाइयनामत्ति ॥ १ ॥ अथवा समस्य रागादिरहितस्या यो गुणानालाभः समानां

माणे । पंच पङ्किसंलीणा पङ्कत्ता तजहा सोइदियपङ्किसलीणे जाव फासिंदियपङ्किसलीणे । पंच अूपङ्किसलीणा पङ्कत्ता तंजहा सोइदियअूपङ्किसलीणे जाव फासिदियअूपङ्किसलीणे । पचविहे संवरे पङ्कत्ते त० सोइदियसंवरे जाव फासिदियसंवरे । पचविहे असंवरे पङ्कत्ते तजहा सोइदियअसंवरे जाव फासिंदियअसंवरे । पंचविहे सजमे पङ्कत्ते तजहा सामाइयसजमे छेदोवछावणियसंजमे परिहारविसुद्धियसजमे सुज

अप्रति संलीनता ते असवर मोकला कह्या ते कहेछे । ओत्रेद्वीनी अप्रति संलीनता यावत् फरसनी अप्रति संलीनता ॥ पांच प्रकारे सवर कह्यो ते कहेछे । ओत्रेद्वीनी सवर यावत् फरसेद्वीनी सवर ॥ पांच प्रकारनो असवर कह्यो ते कहेछे । ओत्रेद्वीनी असवर यावत् फरसेद्वीनी असवर ॥ पांच प्रकारे सजम चारित्र तेकहेछे । सामायिक सयम १ । छेदोपस्थापनिक सयम २ । परिहार विशुद्धि चारित्र ३ । सूक्ष्मसपराय चारित्र ४ । यथा

वा ज्ञानादी ना मायः समायः सएव सामायिक मभाणिव अहवासमस्माओ गुणाणलाभोत्तिजोसमाओसो अहवासमाणमत्ते नेयोसामाद्वयनाम  
 त्ति ॥ १ ॥ अथवा सान्नि मैत्र्यां सान्नावा आय स्तस्यवा आयः समायः सएव सामायिक अभ्यधायिव अहवा साममेत्ती तत्तत्राओतेणवत्तिसामाओ अ  
 हवासामस्माओ लाभोसामाद्वयनामत्ति ॥ १ ॥ सावद्ययोगविरतिरूपं सर्वमपिचारित्रमविशेषितः सामायिकमेव छेदादिविशेषैस्तु विशिष्यमाण मर्थतः  
 शब्दतत्त्वनानात्वं भजते तत्र प्रथमं विशेषणाभावात् सामान्यशब्द एवावतिष्ठते सामायिक मिति तच्च द्विधा इत्वरकालिकं यावज्जीविकं च तत्रेत्वरकालिकं  
 सर्वेषु प्रथमपश्चिमतौर्थकरतौर्थं ध्वनारोपितव्रतस्य यावज्जीविकंतु मध्यमविदेहतौर्थकरतौर्थेषु भवतीति तेषु पस्थापना भावादिति सामायिकं च तत्सं  
 यमथे त्येवं सर्वत्र वाक्यं कार्यमिति भवति चात्रगाथाः सव्वमिणसामद्वयं छेदादिविसेसओपुणविभिणं अविसेसियमादिमयं थियमिहसामन्नसंनए ॥१॥  
 सावज्जजोगविरइ त्तित्तयसामाद्वयंदुहातच इत्तरमावकहंतिय पढमपढमंतिमजिणाणं ॥ १ ॥ तित्थेसुअणारोविय वयस्ससेहस्सथोवकालीयं सेसाणमावक  
 हियं तित्थेसुविदेहियाणवेत्ति ॥२॥ तथाच्छेदस्य पूर्वपर्यायस्यो पस्थापनच व्रतेषु यत्र तच्छेदोपस्थापनं तदेवच्छेदोपस्थापनिक तेवा विद्येते यत्र तत् छेदो  
 पस्थापनिक मथवा पूर्वपर्यायच्छेदेनो पस्थाप्यते आरोप्यते यन्महाव्रतलक्षणं चारित्र तत् छेदोपस्थापनीयं तदपि द्विधा अनतिचारं सातिचारं च तत्रान  
 तिचारं य दित्तरसामायिकस्य शिष्यकस्या रोप्यते पार्श्वनाथसाधोर्वा पंचयामधर्मप्रतिपत्तौ सातिचारं य मूलप्रायश्चित्तप्राप्तस्येति इहापिगाथे परिया  
 यस्सच्छेओ जत्योवढावणवएसुचच्छेदो छेदोवढावणमिह तमणइयारेतरंदुविहं ॥ १ ॥ सेहस्सनिरइयारं तित्थतरसकमेवतंहोआ मूलगुणघाइणीसा इयार  
 सुभयचठियकप्पे ॥ २ ॥ प्रथमपश्चिमतौर्थयो रित्थयं स्तथा परिहरण परिहार स्तपोविशेष स्तेन विशुद्ध परिहारोवा विशेषेणशुद्धो यस्मि स्तत् परिहारवि  
 शुद्ध तदेव परिहारविशुद्धिक् परिहारेणवा विशुद्धि येस्मि स्तत् परिहारविशुद्धिक् तच्च द्विधा निर्विशमानक निर्विष्टकायिकं च तत्र निर्विशमानकानां

० ॥

५ ॥

यत्त त्रिर्विंशमानकं यस्तु निविष्टकायानां प्राप्तेर्विवक्षितचारिकायानां तन्निर्विष्टकायिक मिति द्रष्टापिगाथे परिहारेणविसुखं सुधोयतवोजद्विधि  
 सेसेणं तपरिहारविसुख परिहारविसुखियनाम ॥ १ ॥ तंदुविकल्पंनिब्विस माणंनिब्विहृताद्रवसेणं परिहारियाणपरिहा रियाणकण्डियस्सवियत्ति ॥ २ ॥  
 द्रुत्तच नयको गणो भवति तत्रचत्वारः परिहारिका अपरेतु तद्वैयावृत्त्यकर सत्वार एवा नपरिहारिका एकस्तु कल्पस्थितो वाचनाचार्यो गुरुभूत इत्यर्थः  
 एतेषांच निर्विंशमानकाना मय परिहारः गौणे जघन्यादीनि चतुर्थपष्टाष्टमानि शिशिरेतु पष्टाष्टमदशमानि वर्षां स्वष्टमदशमष्टादशानि पारणके चा  
 यामं इतरेषां सर्वेषा मायाममेव एवमेते चत्वारः षण्णासान् पुनरग्रे चत्वारः षष्ठो पुनर्वाचनाचार्यः षडिति सर्वे एवा यमष्टादशमासिकः कल्प इति  
 तथा सूक्ष्माः लोभकिट्टिकारूपाः सपरायाः कषाया यत्र तत् सूक्ष्मसपराय तदपि क्षिधा विशुशमानक सक्तिश्यमानकंच तचाद्य क्षपकोपशमश्रेणितय  
 समारोहतः सक्तिश्यमानकं तूपशमश्रेणितः प्रच्यतमानस्येति प्रोक्त कोहाइसपरायो तेणजुओसपरोइससारं तसहुमसपराय सुहुमोजत्यावसेसीसे ॥ १ ॥  
 सेटिधिलगओत विसुश्रुतमाणतओवयतस्स तहसकिलिस्समाण परिणामवसेणविन्नेणं ॥ २ ॥ अथशब्दो यथार्थः यथैवा कषायतयेत्यर्थः आख्यात मभिहित  
 मथाख्यात तदेव सयमो यथाख्यातसयमो यच छद्मस्थस्योपशान्तमोहस्य चोणमोहस्यच स्या लोवल्लिनः सयोगस्यायोगस्यच स्यादिति द्रष्टाभ्यधायि अह  
 सद्दोजाहयो अहोप्रभिविहीएकहियमक्खाय चरणमकसायमुदिय तमहक्खायंअहक्खाय ॥ १ ॥ तदुविकल्पंछुडम त्यकोलिविहाणप्रोपुणेकेक खयसमज  
 सजोगाजो गिकोलिविहाणप्रोदुविहंति ॥ २ ॥ एगिदियाणजोवत्ति ॥ एकेंद्रियान् णमितिवाक्यालकारे जोवा नसमारंभमाणस्य संघटादीना मविषयी

मसंपरायसजमे शुहरकायसजमे । एगिदियाणजीवा शुसमारजमाणस्स पचविहे संजमे कज्जाइ तंजहा

ख्यात चारित्र ५ ॥ एकेंद्रीनो जीव आरंज नकरे ते पांच प्रकारनो सयम करे तेकहेछे । पृथिवी कायनो संयम जीव राखे यावत् वनस्पति कायनो

॥ कुर्वतः सप्तदशप्रकारस्य संयमस्य मध्ये पंचविधसंयमो व्यपंरमो ऽनाश्रवः क्रियते भवति तद्यथा पृथिवीकायिकेषु विषये संयमः संघटाद्युपरमः पृथिवीकायिकसंयम एव मन्यान्यपि पदानि असयमसूत्रं संयमसूत्रं द्विपर्ययेण व्याख्येयमिति ॥ पंचिन्द्रियाणमित्यादि ॥ इह सप्तदशप्रकारसयमभेदस्य पंचेन्द्रियसंयमलक्षणस्येन्द्रियभेदेन भेदविवक्षणा त्वचविधत्व तत्र पंचेन्द्रियानारंभे श्रोत्रेन्द्रियस्य व्याघातपरिवर्जनं श्रोत्रेन्द्रियसयमः एव चक्षुरिन्द्रियसयमादयोपि वाच्या असयमसूत्रं मेतद्विपर्यासेन बोद्धव्यमिति ॥ सव्वपाणेत्यादि ॥ पूर्वं मेकेन्द्रियपंचेन्द्रियजीवाश्रयेण सयमासयमा वुक्ता विहृतु सर्वजीवाश्रयेणा तएव सर्वग्रहणं कृतमिति प्राणादीनां चायं विशेषः प्राणाद्विचित्रतुः प्रोक्ता भूतास्तुतरवः स्मृताः जीवाः पंचेन्द्रियास्त्रेयाः शेषाः सत्त्वाद्रतीरिताः ॥ १ ॥ इह सप्तदश

पुढविकाइयसंजमे जाव वणस्सइकाइयसंजमे । एगिंदियाणंजीवा समारंजमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ तंजहा पुढविकाइयअसंजमे जाव वणस्सइकाइयअसंजमे । पंचिदियाणंजीवाणं असमारंजमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ तंजहा सोइंदियसंजमे जाव फासिदियसजमे । पंचेदियाणं जीवा समारंजमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ तंजहा सोइंदिय असंजमे जाव फासिंदियअसजमे । सव्वपाणनूयजीवसत्ताणं असमारंज

संजम राखे ॥ एकेद्री जीवनो आरंभ करे पांच प्रकारे असयम करे ते कहेछे । पृथ्वीकायनो असंयम यावत् वनस्पति कायनो असंयम ॥ पंचेद्री जीवनो आरंभ नकरतो पांच प्रकारनो सयम करे तेकहेछे । श्रोत्रेद्रीनो सयम यावत् फरसेद्रीनो सजम ॥ पंचेद्री जीवनो आरंभ करतो पांच प्रकारे असयमकरे तेकहेछे । श्रोत्रेद्रीनो असंयम यावत् फरसेद्रीनो असंजम ॥ सर्व प्राण बेद्रीयादि भूत वनस्पति जीव पंचेद्री बीजा सत्त्व पृथिव्यादि तेह



प्रकारसंयमस्याद्यानवभेदाः संगृहीता एकेंद्रियसंयमग्रहणेन पृथिव्यादि संयमपंचकस्य गृहीतत्वादिति एतद्व्याख्येना संयमसूत्रं ॥ तणवणस्सइत्ति ॥ तणव  
नसतयो वादरवनसतयो ऽग्रबीजादयः क्रमेण कोरंटका उत्पलकदा वंशाः शल्लको वटा एवमादयो व्याख्यातं चैत आगिति आचरण माचारो ज्ञानादि  
विषयासेवेत्यर्थः ज्ञानाचारः कालादि रष्टधा दर्शनं सम्यक्त तदाचारो निःश्रुतितादि रष्टधैव चारित्राचारः समितिगुणिभेदो ष्ठधा तपआचारो ऽनशना  
दिभेदा षादशधा वीर्याचारो वीर्यागोपन मेतेष्वे वेति आचारस्य प्रथमांगस्य पदविभागसमाचारीलक्षणप्रकृष्टकल्पाभिधायकत्वा अकल्प आचारप्रकल्पः

माणस्स पंचविहे संजमे कज्झइ तंजहा एगेंदियसंजमे पंचेंदियसंजमे । सद्यपाणनूयजीवसत्ताणं समारंज  
माणस्स पचविहेअसंजमे कज्झइ तंजहा एगेंदियअसंजमे जाव पचेदियअसंजमे । पचविहा तणवणस्सइ  
काइया पसत्ता तंजहा अग्वीया मूलवीया पोरवीया खधवीया वीयरुहा ॥ पंचविहे आयारे पसत्ते  
तजहा णाणायारे दसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे । पंचविहे आयारपकप्पे प० तं० मासि

नो आरभ नकरे तेहनो पाच प्रकारे संयम करे तेकहेछे । ऐकेंद्रीनो संयम यावत् पचेद्रीनो संयम ॥ सर्वप्राण जूत जीव सत्त्वन्तो आरंज करतो पांच  
प्रकारे असयमकरे तेकहेछे । ऐकेंद्रीनो असयम यावत् पचेद्रीनो असयम ॥ पाच प्रकारे तृणवनस्पति काय कह्यो ते कहेछे । अग्रबीजा कोरटादि वृ  
क्ष १ । मूलबीजा उत्पलादिकंद २ । पर्यबीजा सेलडीबीज ३ । स्कधबीजा सालि प्रमुख ४ । बीज ऊगे ते ताली प्रमुख ५ ॥ पाच प्रकारे आचार क  
ह्यो तेकहेछे । ज्ञानाचार १ । दर्शनाचार २ । चारित्राचार ३ । तपाचार ४ । वीर्याचार ५ ॥ पांच प्रकारे उत्कृष्ट आचार कह्यो तेकहेछे । प्रायश्चि

निशीथाध्ययनं सच पंचविधः पंचविधप्रायश्चित्ताभिधायकत्वा त्थाहि तत्र केषुचि दुद्देशकेषुलघुमासप्रायश्चित्तापत्ति सच्यते १ केषुचिच्च गुरुमासापत्तिः २ एवंलघुचतुर्मास ३ गुरुचतुर्मासा ४ रोपणा स्वेति ५ तत्र मासेननिष्पन्न मासिकं तप स्तच्च उद्धातो भोगपातो यत्रास्ति तदुद्धातिक लघ्वित्यर्थः यतउक्त अद्वेणच्छिन्नसेसं पुब्बहेणतुसजुयकाउ देज्जाहिलहुयदाण गुरुदाणतत्तियचेवत्ति ॥ १ ॥ यचेवत्ति ॥ एतद्भावना मासिकतपोधिकृत्यो पदश्यते मासस्या द्वेच्छिन्नस्य शेषदिनानां पचदशक तन्मासापेक्षयाच पूर्वस्यपंचविशतिकस्याहुँन सार्द्धद्वादशकेन सयुतं कृत सार्द्धं सप्तविशति भवतीति आरोपणातु चडा वणित्तिभणियंहोइ योहि यथाप्रतिषेवित मालोचयति तस्यप्रतिषेवानिष्पन्न मेव मासलघुमासगुरुप्रभृतिकं दीयते यस्तु न तथा त त्तावद्दीयते एव माया सनिष्पन्न चान्यदा रोप्यत इत्यारोपणेति ॥ आरोवणत्ति ॥ आरोपणोक्तस्वरूपा तत्र ॥ पठुवियत्ति ॥ बहुष्वारोपितेषु य न्मासगुर्वादिप्रायश्चित्त प्रस्थाप यति वोढु मारभते तदपेक्षया सौ प्रस्थापिते त्युक्ता ॥ १ ॥ ठवियत्ति ॥ यत्प्रायश्चित्त मापन्न स्तस्य स्थापित कृत नवाहयितु मारब्धमित्यर्थः आचार्यादि

एउग्घाइए मासिएअणुग्घाइए चउमासिएउग्घाइए चाउंमासिएअणुग्घाइए अारोवणा । अारोवणा पंचविहा पस्सत्ता तंजहा पठविया ठविया कसिणा अकसिणा ऋहहऋ । जबूदीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स पुरच्छिमेणं

त देवारूप ते आचार प्रकल्प मास नो १ नीतपते उद्धात सहित पारणा सहित । १५ उपवास १५ पारणा एवंमास । घणे प्रायश्चित्ते गुरुमास त पते अनुद्धातिक पारणादिन विना २ । चारमासी तप पारणा सहित ते उद्धातिक ३ । चारमासी तपते अनुद्धाती पारणादिन जुदाग्रहवा ४ । आरोपणा यथा प्रायश्चित्त तप देवो ५ ॥ आरोपणा पाच प्रकारे कही तेकहेळे । प्रस्थापिता ते तप तरत करे १ । स्थापिता ते थापणा राखे २ ।

वैयावृत्यकरणार्थं तद्वि वहन्नशक्नोति वैयावृत्य कर्तुं वैयावृत्यसमाप्तौ तु तत्करिष्यतीति स्थापितोच्यत इति कृत्स्ना पुन यत्र ज्मोषो न क्रियते भोषस्त्वय मि  
ह तीर्थे षण्मासांतमेव तप स्ततः षण्मासासाना सुपरि यान् मासाना पन्नो ऽपराधी तेषा क्षपण मनारोपण प्रस्थे चतुःसेतिकातिरिक्तधान्यस्येव भाटनमि  
त्यर्थं ज्मोषाभावेन सा परिपूर्णैति कृत्स्नेत्युच्यत इतिभावः ३ अकृत्स्ना तु यस्या षण्मासाधिक भोष्यते तस्याहि तदतिरिक्तभाटनेना परिपूर्णत्वा दिति ४ ॥  
हाडहडेति ॥ यत्तद्युगुरुमासादिक मापन्न स्तत्तद्यएव यस्या दीयते सा हाडहडोक्तेति एतत्स्वरूपच विशेषतो निशीथविश्रतितमोद्देशका दवगन्तव्यमिति  
५ अथच सयतासप्रतगतवस्तुविशेषणव्यतिकरो मनुष्यक्षेत्रएव भवतीति मनुष्यक्षेत्रवर्त्तिनो वस्तुविशेषान् ॥ जबूदीवेत्यादिना उसुयारानत्यन्तिपर्यवसानेन ॥  
ग्रन्थेनाह कण्वशाय नवर मालवतो गजदत्तकात् प्रदक्षिण्या सूत्रचतुष्टयोक्ता विश्रतिर्वक्षस्तारगिरयो ऽवगतव्याइति इहच देवकुरुषु निषधवर्षधरपर्वता  
दुत्तरेणा छौ योजनाना शतानि चतुस्त्रिंश दधिकानि योजनस्य चतुरश्र सप्तभागान तिक्रम्य शीतोदाया महानद्याः पूर्वापरकूलयो विचित्रकूटाभिधाना

सीयाएमहानदीए उत्तरेण पंच वरकारपद्मया पद्मत्ता तंजहा मालवए चित्रकूटे पम्हकूटे नलिणकूटे एग  
सेले । जबूमंदरस्सपुरए सीयाएमहाणदीए दाहिणेणं पंच वरकारपद्मया पद्मत्ता तंजहा तिकूटे वेसमणकूटे

क्रोध रहित तप करे पूर्ण ३ । क्रोध सहित करे तेअपूर्ण ४ । जे लघु गुरु तप वय जोई तप दीजे ५ ॥ जबूद्वीपनामा द्वीपने विषे मेरुपर्वतने पूर्वदि  
शि सीता महानदीने उत्तर पासे पाच वरकार पर्वत कह्या ते कहेछे । मालवत १ । चित्रकूट २ । पद्मकूट ३ । नलिणकूट ४ । एकशैल ५ ॥ जबूद्वीप  
ने विषे मेरु पर्वतने पूर्वे सीता महानदीने दक्षिणदिशि पाच वरकार पर्वत कहिया तेकहेछे । त्रिकूट १ । वैश्रमण कूट २ । अंजनकूट ३ । मातजन

योजनसहस्रोच्छ्रितौ, मूले सहस्रायामविष्कंभा वुपरि पचयोजनशतायामविष्कंभौ प्रासादमंडितौ स्वसमाननामदेवनिवासभूतौ पर्वतौ स्त स्तत स्ताभ्यामुत्तरतो नन्तरोदितान्तर, शीतोदा महानदी मध्यभागवर्ती दक्षिणोत्तरतो योजनसहस्रमायतः पूर्वापरतः पचयोजनशतानि विस्तीर्णं वेदिकावनखण्डद्वयपरि निसौ दशयोजनावगाढो नानामणिमयेन दशयोजननालेना द्वयोजनबाहुच्येन योजनविष्कम्भेना द्वयोजनविस्तीर्णया क्रोशोच्छ्रितया कर्णिकया युक्तेन निषधाभिधानदेवनिवासभूतभवनभासितमध्येन तदर्द्धप्रमाणा षटोत्तरशतसंख्ययुद्धै स्तदग्न्येषांच सामानिकादिदेवनिवासभूतानांपद्माना मनेकलक्षैः सम तात्परिवृतेन महापद्मेन विराजमानमध्यभागो निषधो महाद्रु एवमन्येपि निषधसमानवक्तव्यताः स्वसमानाभिधानदेवनिवासा उक्तान्तराः समव

अंजणे मायंजणे सोमणसे । जंबूमंदरपञ्च सीन्याए महाणइए दाहिणेणं पंच वरकारपट्टया पस्सत्ता तंजहा विज्जुप्पत्ते अंकावई पम्हावई आसीविसे सुहावहे । जंबूमंदरपञ्चत्थिमेणं सीन्याए महाणइए उत्तरेणं पंच वरकारपट्टया प० त० चदपट्टए सूरपट्टए नागपट्टए देवपट्टए गंधमायणे । जंबूमंदरदाहिणेणं देवकुरा एकुराए पचमहद्दहा पस्सत्ता तंजहा निसहदहे देवकुरुदहे सूरदहे सुलसदहे विज्जुप्पहदहे । जंबूमंदरउत्तरेणं

कूट ४ । सोमनस ५ ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वतने सीतोदा महानदीने दक्षिणे पांच वरकार पर्वत कहिया ते कहेछे । विदुयत्प्रज १ । अंकावती २ । पट्टावती ३ । आशीविष ४ । सुखावह ५ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पश्चिमे सीतोदामहानदीने उत्तरे पांच वरकार पर्वत कह्या ते कहेछे । चंद्रपर्वत १ । सूर पर्वत २ । नागपर्वत ३ । देवपर्वत ४ । गंधमादन ५ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी दक्षिणे देवकुरुने विषे पांच मोटाद्रुह कह्या ते कहेछे । निषधद्रुह १ । देवकुरुद्रुह

सेषा नपरं नीलावाहाद्गदो विचित्रचित्रकूटपर्वतसमवत्तयताभ्यां यमकाभिधानाभ्यां स्वसमाननामदेवावासाभ्यां पर्वताभ्या मनंतरं द्रष्टव्य स्ततो दक्षि  
णतः शेषा शत्वार इति एतेच सर्वेपि प्रत्येक दशभिर्दशभिः कासनकाभिधानै र्योजनशतोच्छ्रितै र्योजनशतमूलविष्कम्भैः पचाशद्योजनमानमस्तकविस्ता  
रैः स्वसमाननामदेवाधिवासेः प्रत्येक दशयोजनांतरैः पूर्वापरस्थितै र्गिरिभि रूपेता एतेषाच विचित्रकूटादिपर्वतज्जदनिवासिदेवाना मसंख्येयतमजबू  
द्धीपे द्वादशयोजनसहस्रप्रमाणा स्तयामिता नगर्यो भवंतीति ॥ सध्वेविणमित्यादि ॥ सर्वेपि जगूडोपादिसबधिनः ॥ तेणंति ॥ शीताशीतोदेमहानद्यौ प्र  
तोते लक्षणोकृत्य नदीदिशौत्यर्थः मंदरवा मेरुया पर्वत प्रति तद्दिशौत्यर्थः तत्र मालवक्षीमनसत्रिदुष्यभगन्धमादनाः गजदत्ताकारपर्वता मेरुप्रति यथो  
क्तस्वरूपाः शेषास्तु वच्चारपर्वता महानद्यौ प्रतीते इयचानन्तरोदिता समसूनी धातकोखण्डस्य पुष्करार्द्धस्यच पूर्वापरार्द्धयो र्दृश्ये त्यत एवोक्त ॥ एवजहाजबू  
द्धीवेत्यादि ॥ समयः काल स्तद्विषिष्ट चेत्र समयचेत्र मनुष्यचेत्र तस्यैवा दित्यगतिसमभिच्यंग्यकृत्ववनादिकालयुक्तत्वात् ॥ जावपंचमदरन्ति ॥ इहे यव

उत्तरकुराएकुराए पच महद्रहा पम्पहा तंजहा नीलवतद्रहे एरावणद्रहे उत्तरकुरुद्रहे चद्रहे मालवंतद्रहे ।  
सध्वेविण वस्कारपद्मया सीयासीनयाउ महाणईउ मंदरंवा पद्मय तेण पंचजोयणसयाइं उहं उच्चत्तेण पंच  
गाउयसयाइ उह्वेहेणं धायइखरुदीवपुरच्छिमद्देणं । मंदरस्स पद्मयस्स पुरच्छिमेण सीयाएमहाणदीए उह

ह २ । सूरद्रह ३ । सुलस द्रह ४ । विदुत्प्रजद्रह ५ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरे उत्तर कुरुने विषे पाच मोटाद्रह कट्या ते कहेछे । नीलवंतद्रह १ । उत्त  
र कुरुद्रह २ । चद्रह ३ । एरावण ४ । मालवतद्रह ५ ॥ सधला एवक्खारपर्वत सीता सीतोदा महानदी ओ मेरुपर्वतने अने पांचसे योजन ऊच  
पणे पांचसे ऊडापणे ॥ धातकी खड द्वीपे पूर्वार्द्धे मेरुपर्वतने पूर्वदिशो सीतोदानदीने उत्तरे पाच वक्खारपर्वत कट्या ते कहेछे । मालवत इमजिम जं

त्कारणा त्वंच हैमवतानि पंच हैरखवतानीत्यादि पंच शब्दापातिन इत्यादि चोपयुज्य सर्वं चतुःस्थानकद्वितीयोद्देशकानुसारेण वाच्यं नवरं ॥ उसुयारत्ति ॥  
चतुःस्थानके चत्वार इषुकारपर्वता उक्ता इहतु ते नवाच्याः पचस्थानकत्वा दस्येति अनन्तरं मनुष्यक्षेत्रवस्तूगुक्तानीति तदधिकारात् भरतक्षेत्रवर्त्तमाना  
वसपि गोपूगभूतऋषभजिनवस्तु तत्सम्बन्धात् अन्यानिच पचस्थानके ऽवतारयन् सूत्रपंचक माह ॥ उसभेणमित्यादि ॥ कण्ठ नवरं ॥ कोसलिएत्ति ॥ को  
शलदेशोत्पन्नत्वा कौशलिको भरतादयश्च ऋषभापत्यानि बुद्धाश्चैते बुद्धश्च भावतो मोहजयाद् द्रव्यतो निद्राक्षयादिति द्रव्यबोध द्वारणत उपदर्शयन्नाह

रेणं पंच वरकारपद्मया पस्मत्ता तंजहा मालवते एवं जहा जंबूद्वीपे तथा जाव पोस्करवरदीवहृपञ्चत्थिमद्धे  
वरकारा दहाय उच्चत्तं जाणियहं । समयखेत्तेणं पच जरहाइं पचएरवयाइं एव जहा चउठाणे विईएउद्देसे  
तहा एत्थवि जाणियहं जाव पंच मंदरा पच मदरचूलिया । णवरं उसुयाराणत्थि । उसन्नेणंजरहा कोसलिए  
पच धणुसयाइं उहउच्चत्तेण होत्था । जरहेणराया चाउरतचक्कवही पच धणुसयाइं उह उच्चत्तेण होत्था बाझ

बूद्धीपने विषे तिम यावत् पुष्करवरद्वीपे पश्चिमार्द्धने वक्खारं पर्वतद्रह वक्खार पर्वतनो ऊचपणो जाणवो ॥ समयक्षेत्र मनुष्यक्षेत्रने विषे पांच  
जरत पाच ऐरवतळे इम जिम चोथेठाणे बीजे उदेसेळे । तिम इहा पणि जाणवो ॥ यावत् पांचमेरु । पाच चूलिका ओ कही एतलो विशेष जे  
इषुकार पर्वत नथी ॥ रिषभदेव अरिहंत कौशली पांचसे धपनुऊचा ऊचपणो थया १ । जरत राजा चातुरंत चक्रवर्ती पांचसे धनुषऊंचा ऊचपणो थ  
या २ । बाहुबली अणगार साधु ३ । इम ब्राह्मी आर्या ४ । इमज सुंदरी पिण ५ ॥ पाच थानके अमण साधु साधवीनो शब्द साजले हाथे धरतो

१० ॥

३ ॥

॥ पंचहीत्यादि ॥ कण्ठ्यं नवरं इह निद्राक्षयोऽन्तरकारणशब्दादयस्तु तत्कारणत्वेन तत्कारणतयोक्ता भोजनपरिणामो बुभुक्षा अनन्तरं द्रव्यप्रबुद्ध' कारणत उक्तोऽयं भावप्रबुद्धमनुष्ठानत आज्ञानतिक्रमण दर्शयितुमाह ॥ पंचहीत्यादि ॥ सुगम नवर ॥ गिरहमाणेति ॥ बाह्यादा वगे गृह्णन् अवलबमान.प तत्तो स्वाह्वादी गृहोत्वा धारयन् अथवा संवगियतगृहण करेण अवलबन्तुदेसमिति ॥ नातिक्रामति स्वाचार मात्रां वा गौतार्थस्थविरीवा निर्यथिका भावेन यथाकथञ्चि त्यशुजातीयो दृष्टगवादिः पक्षिजातीयो गृध्रादिः ॥ श्रीहाएज्जति ॥ उपहन्वा तत्रेति उपहनने गृह्ण नातिक्रामति कारणिकत्वा त्रि कारणत्वेतुदोषा' यदाह मिच्छत्तउड्डाहो पिराहणाफासभावसबन्धो पडिगमणाइंदोषा भुक्ताभुक्तेयमायत्वा ॥ १ ॥ इत्येक तथा दु'स्त्वेन गम्यत इति दु

बलीणमणगारे एवचेव । वंजीणं अज्जा एवचेव । एवसुदरीवि । पचहिठाणेहिं सुत्तेवि बुज्जेज्जा तं० सहेणं फासेणं ज्ञोयणपरिणामेण णिहस्सकएणं सुविणदसणेण । पचहिठाणेहिं समणेनिग्गथे निग्गथिं गिरहमाणेवा अवलबमाणेवा णाइक्कमइ तजहा निग्गथिचणं अत्तयरे पसुजाइएवा पक्खिजाइएवा उंहाएज्जा तत्थनिग्गथे निग्गथिगिरहमाणेवा अवलबमाणेवा णाइक्कमइ । निग्गथे निग्गथिं दुग्गसिवा विसमसिवा परक्कलमाणिंवा

फरसथी ज्ञोजनने परिणामे भूखलागे निद्रा पूरी थाय सुपन दीठे । पाच थानके अमण साधु साध्वीने हार्थे ग्रहतो आलबन लेतो अतिक्रमे नही तेकहेछे । साधवीने कोईक पशू दर्पवत गवादि अथवा पक्षीनी जाति गृध्रादि हणे तिहा साधु साधवी प्रते ग्रहतो आलबन देतो आज्ञा अतिक्रमे नही १ । साधु साधवीने मनुष्यादि दुष्ट विषम खंड पाषाणादि सहित पर्वत तिहा खलातिलथरुथी पकता थका ग्रहता आज्ञा अतिक्रमे न

गः सच विधा वृक्षदुर्गः स्वापदुर्गो स्नेच्छादिमनुष्यदुर्गं स्तत्रवामाग उक्तञ्च तिविहंचहीदुर्गं रुक्मिसावयमणुस्तदुर्गंचति ॥ तथा विषमेवा गत्तपाषाणा  
 व्याकुले पर्वतेवा प्रखलंतींवा गत्याप्रपततींवा भुवि अथवा भूमौएअसपत्त पत्तवाहयजांणुगादीहि पक्खलणनायब्ब पवडणभूमियगत्तेहिति । १ ॥  
 गृह्णन्नातिक्रामतीति द्वितीय तथा पकः पतकोवा सजलोयव निमज्जते ससेक स्तत्रवा पकः कर्दम स्तत्रवा पनकेवा आगंतुकप्रननुप्रतनुइवरूपे कर्द  
 मएव तुल्लावा अपकसन्तीं पंकपनकयोः परिहसती अपोह्यमानांवा सेके उटकेवा नीयमानां गृह्णन्नातिक्रामतीति गाथेचेह पकोखलुचिक्खल्लो आ  
 गन्तुपतणुओद्वोपणओ सोच्चियसजलोसेउ सीइज्जइजयदुविहेविति ॥ १ ॥ पंकेपणएसुनियमा ओसगणवुभणसियासेए निमियमिनिमज्जणया सजलेसे  
 एसियादोविति ॥ २ ॥ तृतीय तथा ॥ नावमारुहमाणेति ॥ आरोहयन् ॥ ओरुहमाणेति ॥ अवरोहय नुत्तारयन्नित्यर्थी नातिक्रामतीति चतुर्थं तथा क्षिप्तं  
 नष्ट रागभयापमानै चित्त यस्याःसा क्षिप्तचित्ता तांवा उक्तञ्च रागेणवाभयेणव अहवाअवमाणियामहतेण एतेहिखित्तचित्तति ॥ तथा दृप्तंसन्माना  
 दृप्पंव चित्त यस्याःसा दृप्तचित्ता तांवा उक्तञ्च इतिएसअसमाण खित्तोसमाणओभवेदित्तो अग्गीवइधणेण दिप्पइचित्तंइमेहितु ॥ १ ॥ लाभमएणव  
 मत्तो अहवाजेऊणदुज्जयसत्तुति ॥ यच्चेण देवेन आविष्टा धिष्ठिता यच्चाविष्टा तावा अत्रोक्त पुक्खभववेरिएण अहवारागेणरागियासंती एतेहिंजक्खाइ

पवळमाणिंवा गेरुहमाणेवा अण्वलवमाणेवा णाइक्कमइ । निग्गये निग्गथिं सेससिवा पंकंसिवा पणगंसिवा  
 उदगसिवा उक्कस्समाणिंवा उउज्जुमाणिवा गेरुहमवलव णाइक्कमइ । निग्गये निग्गंथिं णाव अणरुहमाणेवा

ही २ । साधु साध्वीने पाणीमां कादवमां पनकनील फूलमां पाणीमां द्रुषी पडती पाणीथी ग्रहतो अवलंबतो अतिक्रमे नही ३ । साधु साध्वीने वा



इति ॥ उन्मादं उन्मत्ततां प्राप्ता उन्मादप्राप्तातांवा अत्रापुक्तं उन्माओखलुदुविहो जक्खाएसोयमोहणिज्जोय जक्खाएसोवुत्तो मोहेणइमंधुवोच्छामि ॥ १ ॥  
 रूवगद्वुण उन्माओअहवपित्तमुच्छाएत्ति ॥ उपसर्गं सुपद्रव प्राप्ता उपसर्गप्राप्ता तांवा इहापुक्तं तिविहेयउवस्सग्गे दिव्वेमाणस्सएतिरिक्खेय दिव्वेयपुव्व  
 भणिए माणस्सेआभिओगेय ॥ १ ॥ विज्जाएमतेणय चुणेणवज्जोइयाअणप्पवसत्ति ॥ तथा सहाधिकरणेन साधिकरणा युडार्थमुपस्थिता तावा सहप्राय  
 चित्तेन सप्रायचित्ता तावा भावनाचेह अहिगरणंमिकयमिउ खामेउमुवड्डियाएपच्छित्तं तप्पढमयाभएण होइकिलताववहमाणी ॥ १ ॥ तथा भक्तपाने  
 आभवं प्रत्याख्याते यथा सा भक्तपानप्रत्याख्याना तावा इहगाथा अठ्ठवाहेउवा समणीणविरहएकहेतस्स मुच्छायविवड्डियाए कप्पग्गहणपरिखाए  
 त्ति ॥ २ ॥ अर्थः कार्यं सुअत्राजनतः स्वकीयपरिणेत्रादे जातं यथा सार्थजाता पतिचौरादिना संयमाच्चाल्यमाने त्यर्थं स्तावा इहगाथा अठ्ठोत्तिजोएक  
 ज्ज सजायएसअठ्ठजायाओ तपुणसयमभावा चालिज्जतीसमवलवति ॥ १ ॥ पचममिति अनन्तर येषुस्थानेषु वर्त्तमानो निर्ग्रंथो धर्मं नातिक्रामति तान्यु  
 क्ता न्यधुना तद्विशेष आचार्यो येष्वतिशयेषु वर्त्तमान स्तत्रातिक्रामति तानाह ॥ आयरिएत्याह ॥ आचार्यश्चासा वुपाइयायश्चे त्याचार्योपाइयायः सहि के

उरुहमाणेवा णाइक्कमइ । खेत्तइत्तं दित्तइत्तं जरुकाइठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरणं सपायच्छित्तं जत्त  
 पाणपफ़ियाइरिक्खित्तं अण्ठजायं निग्गथे निग्गथि गिरहमाणेवा अण्ठवलवमाणेवा णाइक्कमइ ॥ आयरिय

हण प्रते चढावतो उतारतो अतिक्रमे नही ४ । रागें मयें अपमानें व्याप्युं चित्त अहकारे दर्पमां यत्ता विष्टित चित्त मोहनीयें उन्माद पास्यु चित्त  
 उपसर्ग उपद्रव व्याप्त अधिकरण क्रोधादिक प्रायश्चित्त सहित ज्ञात पाणीनुं पचखाण कीधुं काई अर्थ उपने साधु साध्वीने ग्रहतो अवलंबन देतो

पांचि दर्शदायकत्वा दाचार्योऽन्येषां सूत्रदायकत्वा दुपाध्यायइति तस्या चार्योपाध्याययोर्वा न शेषसाधूनां गणेशाधुसमुदाये वर्त्तमानस्य वर्त्तमानयोर्वा गणविषयेवा शेषसाधुसमुदायापेक्षये त्यर्थः पंचातिशेषा अतिशयाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा आचार्योपाध्याययोर् तर्मध्य उपाश्रयस्यव सतेः पादौ निगृह्य २ पादधूले रुद्धयमानाया निग्रह वचनेन कारयित्वा यथान्ये धूल्यान भ्रियते तथेत्यर्थं प्रस्फोटयित्वा आभिग्रहिणेना न्येनवा साधुना स्वकीयरजोहरणेन ऊर्णिकपाद प्रोक्षनेनवा प्रस्फोटन कारयन् भाटय न्नित्यर्थः प्रमार्जयित्वा शनैर् लूषय न्नातिक्रामतीति इहच भावार्थ इत्य मास्थित आचार्यः कुलादिकार्येणनिर्गतः प्रत्यागतः उत्सर्गेण तावत् वसते बहिरेव पादौ प्रस्फोटयति अथ तत्रसागारिको भवे तदा वसतेरतः प्रस्फोटयेत् प्रस्फोटनच प्रमार्जनविशेष स्तच्चक्षुर्व्यापार लक्षणप्रत्युपेक्षणपूर्वक मितौह सप्तभगा स्तत्र न प्रत्युपेक्षते नप्रमार्ष्टिचे त्येकः न प्रत्युपेक्षते प्रमार्ष्टीति द्वितीयः प्रत्युपेक्षते नप्रमार्ष्टीति तृतीयः प्रत्युपेक्षते प्रमार्ष्टिचेति चतुर्थः यत्त प्रत्युपेक्षते प्रमार्ज्यतेच तत् दुःप्रत्युपेक्षितंदुःप्रमार्जितं दुःप्रत्युपेक्षितं सुप्रमार्जितवा सुप्रत्युपेक्षितदुःप्रमार्जितवा ६ सुप्रत्युपेक्षितं सुप्रमार्जितंवा ७ करोति इहच सप्तमः शुद्धः शेषेष्व समाचारीति यदितु सागारिक श्वल स्ततः सप्ततालमात्र सप्तपदावक्रमणमात्रंवा काल बहिरेव स्थि

उवज्जायस्सणं गणंसि पंच अतिसेसा पणप्ता तजहा आयरियउवज्जाए अतोउवस्सयस्स पाये निगिज्जि य २ पप्फोळेमाणेवा पमज्जेमाणेवा णाइक्कमइ । आयरियउवज्जाए अतोउवस्सयस्स उच्चारपासवणं विगिं

अतिक्रमे नही ५ ॥ आचार्य उपाध्यायनो गच्छने विषे पांच अतिसेस विशेष कह्या तेकहेळे । आचार्य उपाध्यायने उपासरामाहि पग डाली डालीने निग्रह धूलिडाले ओघे पूरणे फाडजो टालेतो रज हलूये पीजतो अतिक्रमे नही कोईठामे गुरु जइ आव्या तेपगे इम पूजे १ । आचार्य उपाध्याय



॥ ६ ॥ त्वा तस्मिन् गते पादौ प्रस्फोटयेत् उक्तञ्च अद्वाद्गमिवाहिं अच्छंतिमुद्गुत्तगंथेरन्ति ॥ अतिपातितो ऽस्थिर स्ततो वसतो प्रविशेत् कः केनवा स्यपादौ प्र  
मार्जयतो त्यज्यते आभिग्राह्यस्त्रसई तस्सेवरओहरेणअणयरो [ तस्यैवे त्याचार्यस्यैव ] पाओक्कणत्तियेणव पुक्कइओअणन्नभुत्तेणति ॥ १ ॥ वसते रतःप्र  
विष्टस्य चायविधिः विपुलाया वसतो अपरिभोगे स्थाने सकटायां चात्मसस्तारकावकासे उपविष्टस्य पादौ प्रमार्जनीया वन्यस्यापि गणावच्छेदकादे रय  
मेवविधिः केवल मन्यो बहि चिरतर तिष्ठतीति उक्तञ्च विपुलाएअपरिभोगे अत्तणओवासएवचेठुस्स एमेवयभिक्षुस्सवि नवरवाहिंचिरयरतु ॥ १ ॥ एता  
वानेव चाय मतिशयो यदसौ नचिरं बहिरास्ते अथ चिरतिष्ठतः केदोपा इत्युच्यते तिणहुणहभावियस्सा [ सुकुमाराचार्यस्य ] पडिच्छमाणस्स [ बहिस्तात् ]  
मुच्छमाईया खड्वाइयणगिलाणे [ प्रचुरद्रवपाने ग्लानत्वे ] सुत्तत्यविराहणाचेवेत्यादि ॥ १ ॥ शेषसाधवस्तु चिर मपि बहि स्तिष्ठति नचदीषाः स्फूर्जितअ  
मत्वा दाहच दसविहवेयावच्चे सगमवहियचनिच्चवायामो सीउणहसहाभिक्षू नयहाणीवायणाईयत्ति ॥ १ ॥ एको ऽतिशय स्तथां तर्मध्ये उपाश्रयस्य  
उच्चार पुरौष प्रश्रवण मूत्र विवेचयन् सर्वं परिष्ठापयन् विशोधयन् पादादिलग्नस्य निरवयवत्वं कुर्वन् शीघ्रभावेन वेति अथवा सकृद्विवेचन बहुशोविशो  
धन मुक्तञ्च सव्वस्सवद्गुणविगि चणाओपुयपायहल्लगस्स पुसणधुवणाविसोहण सकिचबहुसोयनाणत्तति ॥ १ ॥ नातिक्रमतीहच भावार्थ एव माचार्यो  
नोत्सर्गतो विचारभूमि गच्छति दोषसंभवात् तथाहि श्रुतवानय मित्यादिगुणतः पूर्व बोधिषु वणिजो बहुमाना दभ्युत्थानादिकृतवत स्ततो विचारभूमी

चमाणेवा विसोहेमाणेवा णाइक्कमइ । श्रायरियउवज्जाए पन्नू इच्छा वेयावणिय करेज्जा इच्छा णोकरेज्जा

ने उपासरामांही लघूनीति वरुनीति परठवतो शुद्धकरतो पगप्रमुखे लागी तेढालतो अतिक्रमे नही आराधक २ । आचार्य उपाध्यायनी समर्थ इ

सकृद्विर्वा आचार्यस्य गमने आलस्यात् न कुर्वन्ति पराङ्मुखाश्च भवन्तीत्येतच्च परे दृष्ट्वा संकंते यदुताय मिदानीं पतितो वणिजाना मभ्युत्थानायकरणा दि  
 त्येव मिथ्यात्वगमनादयो दोषा उक्तव सुयवंतवस्त्रिपरिवा रवचवणियतराणवृष्टाणे [ अतरापुणोवौथौ ] दुष्टाणनिगममिय [ द्विर्निर्गमे ] हाणीय [ वि  
 नयस्य ] परम्मुहावसो ॥ १ ॥ अवसो नूनं द्विर्भुक्तइति गुणवतो जओवणिया पूयतिअणे विसत्तयातंमि पडिउत्तिअणुष्टाणे [ अनुत्थाने ] दुविहनियत्तीअ  
 भिमुहाण ॥ २ ॥ आवकत्वप्रव्रजितत्वाभ्यां निवृत्तिरिति तथा मत्सरिभ्यः सकाशात् मरणबधनापभ्राजनादयो ऽन्येपि व्यवहारभाष्या दवगतव्या इति द्वि  
 तीयो ऽतिशयः तथा प्रभुः समर्थः इच्छा अभिलाषो वैयावृत्यकरणे यदिभवे तदा वैयावृत्य अक्तपानगवेषणग्रहणतः साधुभ्यो दानलक्षण कुर्या दथेच्छा  
 भिलाष स्तदकरणे तन्नकुर्यादिति भावार्थ स्वय आचार्यस्य भिक्षाभ्रमण न कल्पते यतो ऽवाचि उपपन्ननाणाजहनोअडति चोत्तीसबुडाइसयाजिणिदा  
 एवगणीअठगणीववेओ सच्छावनोहिडइइडिमु ॥ १ ॥ दोषास्त्वमी भारेणवेदणावा हिडतेउच्चनीयसासोवा आईणकुट्टुणाई [ प्रचुरपनकादेरापानादौ  
 छर्द्यादयो ] गेलसेपोरिसोभगोत्ति ॥ १ ॥ एवमादयो ऽनेकेदोषाः व्यवहारभाष्योक्ताः समवसेया एतेच सामान्यसाधोरपि प्रायः समाना स्तथापि गच्छ  
 स्यतीर्थस्यवा महीपकारित्वेन रक्षणीयत्वेनवा चार्यस्याय मतिशय उक्त उक्तव जेणक्लआयन्न तपुरिसआयरेणरखिज्जा नहुतुंवमिविण्ठे अरयासाहारया  
 होतित्ति ॥ १ ॥ तृतीयः तथा अन्तरुपाश्रयस्य एकाचासो रात्रिश्चे त्येकरात्र तदा द्वयोः रात्र्योः समाहारो द्विरात्र तदा विद्यादिसाधनार्थ मेकाक्ये काते

आयरियउवज्जाए अतोउवरसयस्स एगराइंवा दुराइंवा एगाजीवसमाणे णाइक्कमइ । आयरियउवज्जाए

च्छायं अजिलाष होयतो यावत् करे इच्छानहो ते नकरे ३ । आचार्य उपाध्यायना उपासरामाहि एकरात्रि ज्ञान साधवां बेरात्रि जणी एकाते रह

वस सातिकामति तत्र तस्य वक्ष्यमाण दोषासंभवा दन्यस्यतु तद्भावा दितिचतुर्थः एवं पंचमोपि भावार्थशाय मनयीत रुपाण्यस्य वक्षारके विषय स्वसतिज  
 हिर्यो पाण्यस्य श्रुत्यगृहादिषु वसति यदितदा असमाचारीदोषा येते पुन्येदोपयोगेन जनरहिते हस्तकर्मादिकरणेन सयमभेदो भवति मर्यादा मया लं  
 धितेति निर्वेदेन वैद्यायसादिमरणं च प्रतिपद्यतइति इहगाथा तन्भावप्रयोगेण रक्षिण्यकम्मादिसजमेभेदो मेरावलधियामे वेद्याणसमादिनिव्वेया ॥ १ ॥  
 जइयियनिगयभावो तज्जाविरलिज्जइसअनेहि वंसकछिह्नेहिणे वियेणुप्रोपाएनमहिं ॥ २ ॥ यीसुवसप्रोदम्पो गणिप्रायरियहोइएमेव सुत्तंपुणकारणि  
 यं भिक्खुस्सणिकारणेणणा ॥ ३ ॥ विज्जाणपरिवाडिं पग्गेपग्गेकरेंतिप्रायरिया दिठ्ठतोमहपाणे अतोवाहिचवसणीएत्ति ॥ ४ ॥ आचार्यस्य गण्येतिशया उक्ता  
 अधुना तस्यैवातिशयपर्ययभूतानि गणात्रिगमकारणा न्याह ॥ पचल्लीत्यादि ॥ सगम नवरं आचार्योपाध्यायस्य आचार्योपाध्याययोर्वा गणाद्वच्छा दपक  
 मणं विनिर्गमो गणापक्रमण आचार्योपाध्याययो र्गणेगच्छविषये आज्ञांवा योगेषुप्रवर्त्तनलक्षणा धारणांवा विधेयेषु निवर्त्तनलक्षणां नोनैव सम्य ग्यथी  
 चित्तं प्रयोक्ता तयोः प्रवर्त्तनशीलो भवति इदमुक्तं भवति दुर्यिनीतत्वा ज्ञणस्य तेप्रयोक्तु मशक्तुयन् गणादपक्रामति कालिकाचार्यव दित्येक तथा गणविष

वाहिउवस्सगस्स एगराइं दुराइंवा वसमाणे णाइक्कमइ ॥ पचहिं ठाणेहिं श्वायरियउवज्जायस्स गणावक्क  
 मणे प० त० श्वायरियउवज्जाए गणंसि श्वाणंवा धारणवा नोसम्मं पउजित्ता जवइ । श्वायरियउवज्जाए गणं

तो आज्ञा प्रतिक्रमे नहीं ४ । आचार्य उपाध्यायणी बाहिर सूत्र्य गृहादिके एकरानि बेरानि रहती थकी अतिक्रमे नहीं ५ ॥ पांच ध्यानके आचा  
 र्य उपाध्यायना गच्छापक्रम कक्षा गच्छने माठी देखाडे तेकहेछे । आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे आज्ञा धारणा सम्यक् प्रकारे प्रयुजे नहीं क

ये यथा रत्नाधिकतया यथा ज्येष्ठ कृतिकर्म तथा वैनयिकं विनयं नोनैव सम्यक्प्रयोक्ता भवत्याचार्यसंपदासाभिमानत्वात् यत आचार्येणापि प्रतिक्रमण  
 चामणादिषू चितानामुचितविनयः कर्तव्य एवेतिद्वितीयं तथा असी यानि श्रुतपर्यवजातानि यान्श्रुतपर्यायप्रकारा नुद्देशकाध्ययनादीन् धारयति इत्य  
 विस्मरणतस्तानि काले २ यथावसरं नोसम्यगनुप्रवाचयिता तेषा पाठयिताभवति ॥ गणेत्ति ॥ इहसत्रध्यते तेन गणगणविषये गणमित्यर्थ स्तस्या विनीत  
 त्वा त्सस्यवा सुखलेपटत्वात् मदप्रज्ञत्वादेति गणादपक्रामतीति तृतीयं तथासौ गणे वर्त्तमानः ॥ सगणियाएत्ति ॥ स्वगणसंबन्धिन्यां ॥ परगणियाएत्ति ॥  
 परगणसत्काया निर्गन्था तथाविधाशुभकर्मवशवर्त्तितया सकलकल्याणाश्रयसयमसौधमध्याह्निलेश्या तःकरण यस्यासौ बहिल्लेश आसत्तो भवतीत्यर्थ  
 एव गणा दपक्रामतीति नचेद अधिकगुणत्वेना स्या सभास्य यतः पठ्यते कन्माइंतूणिघणचि कणाइगरुयाइवज्जसाराइं नाणड्डियंपिपुरिस पथाओउप्पह

सि अहारायणियाए किइकम्मं वेणइयं नोसम्मं पउंजित्ता जवइ । आयरियउवज्जाए गणंसि जे सुयपज्जवजाए  
 धारिति ते काले णोसम्म मणुपवादेत्ता जवइ । आयरियउवज्जाए गणसि सगणियाएवा परगणियाएवा  
 निगंथीए बहिल्लेस्से जवइ । मित्ते णाइगणेवा सेगणालु अवक्खमेज्जा तेषिं संगहोवग्गहठ्ठयाए गणावक्खमणे

रेनही १ । आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे जे जेहथी बडाहोय तेहने वांदे नही विनय सम्यक् प्रकारे प्रयुंजे नही २ । आचार्य उपाध्यायने गच्छने  
 विषे जे सूत्र पर्याय जाणे धारे ते कालवेलाये सम्यक् रीते वाचे जणे नही ३ । आचार्य उपाध्यायने गच्छने विषे पोतानागच्छने विषे तथा परना  
 गच्छ निग्रथ साधवो अशुभ कर्मना उदयथी तेहने व्यस्यधिको बाहिर धर्म ध्यानथी वर्तलेष्यामन परिणाम मित्रजातिगण ते स्वजनादि माटे गच्छ

० ॥

७ ॥

नेतित्ति ॥ १ चतुर्थं तथा मित्रज्ञातिगणोवा सृष्टत्स्वजनवर्गोवा ॥ से ॥ तस्याचार्यादेः कुतोपि कारणा द्रणादपक्रामेदत स्तेषां सृष्टत्स्वजनानां सग्रहा  
 यर्थं गणादपक्रमण प्रज्ञप्तं तत्र सग्रह स्तेषां स्त्रीकार उपग्रहो वस्तादिभि रुपष्टभ इति पचम अनन्तर माचार्यस्य गणापक्रमणमुक्तं सच ऋद्धिमन्मनुष्य  
 विशेष इत्यधिकारा दृष्टिमवानुष्यविशेषा नाह ॥ पंचविह्येत्यादि ॥ कण्ठं नवर ऋद्धि रामपौषध्यादिकासंपत् तद्यथा आमर्षौषधि विप्रुडोषधिः खेलोषधि  
 र्जलो मलः सर्वौषधिराशौविपत् शपानुग्रहसामर्थ्यमित्यर्थं प्राकाशगामित्व मज्जीणमहानसिकत्वं वैक्रियकरण माहारकत्वं तेजोनिर्जन पुलाकत्वं घीराश्र  
 यत्वं मध्वाश्रयत्वं सर्पिराश्रयत्वं कोष्ठबुद्धिता बीजबुद्धिता पदानुसारिता सभिन्नशोढत्वं युगपत्सर्वशब्दयावितेत्यर्थः पूर्वधरता ऽपधिज्ञान मनःपर्यवज्ञानं केव  
 लज्ञानं मर्हता गणधरता चक्रवर्तिता बलदेवता वासुदेवताचेत्येवमादिका उक्तच उदयकृत्यखग्रीवसमो वसमसमुत्थावहुपगाराग्री एवपरिणामवसा ल  
 षीश्रीहोतिजोवाणति ॥ १ ॥ तदेवरूपा प्रबुरा प्रशस्तातिशाधिनीवा ऋद्धि विद्यते येषाते रुद्धिमती भावितः सदासनया वासित आत्मा यैस्ते भावितात्मा  
 नो ऽनगारा इति एतेषांच ऋद्धिमत्वं मामर्षौषध्यादिभि रर्हदादीनांतु चतुर्णा यथासभव मामर्षौषध्यादिना ऽर्हत्वादिनाचेति पंचस्थानकस्य विवरणतो

पश्यते ॥ पंचविहा डृष्टिमंता मणुरसा पश्यता तंजहा अग्रहंता चक्षुवही बलदेवा वासुदेवा ज्ञावियप्पाणो  
 अणगारा । पंचठाणरस वियज उद्देसजं सम्मत्तो ॥ २ ॥ पंचअत्यिकाया पश्यता तजहा

माथी अलगो निकले तेहने सग्रहण माटे ते स्वजनादिकने उपग्रहवा वस्तादिके आधार देवाने गच्छथी अलगो थाय ॥ पांच प्रकारे रिद्धिवंत मनु  
 ष्य कल्या तेकहेछे । अरिहत १ । चक्रवर्ति २ । बलदेव ३ । वासुदेव ४ । ज्ञावितात्मा साधु लब्धिनो धर्मी ५ ॥ पांच ठाणानो बीजो उद्देशो थ

द्वितीयोद्देशकः समाप्तः ॥ २ ॥ उक्तो द्वितीयोद्देशकः सांप्रत तृतीयः आरभ्यते पञ्चचायनभिसंज्ञोऽन्तराद्देशके जीवधर्माः प्ररूपिता इह त्वजी  
वाजीवधर्मा उच्यत इत्येव सर्वधर्मास्येदं मादिमन्त्रः ॥ पञ्चअस्तिकायैत्यादि ॥ पञ्चचाय नभिसंज्ञोऽन्तराद्देशके जीवास्तिकायविशेषा ऋद्धिमत उक्ता इह  
त्वसत्येयानतप्रदेशलक्षणा ऋद्धिमतः समस्तास्तिकाया उच्यत इत्येवं सर्वधर्मास्य व्याख्या प्रथमाध्ययनः दनुमर्त्तव्या नवर धर्मास्तिकायादयः किमर्थमित्य  
मेवोपन्यस्यत इत्युच्यते धर्मास्तिकायादिपदस्य सागलिकत्वात् अथम धर्मास्तिकायोपन्यासः पुन धर्मास्तिकायप्रतिपन्नत्वात् दधर्मास्तिकायस्य पुन स्तदाधार  
त्वादाकाशास्तिकायस्य पुन स्तदाधेयत्वात् जीवास्तिकायस्य पुन स्तदपग्राहकत्वात् पुद्गलास्तिकायस्येति धर्मास्तिकायादीनां कृमेण स्वरूपमाह ॥ धर्मत्यि  
कायेत्यादि ॥ वर्णगंधरसस्पर्शप्रतिषेधात् ॥ परूषित्ति ॥ रूपं सूचित्वर्णादिभिरुक्तं तदस्यान्तोतिरूपो नरूपो अरूपो अमूर्त्त इत्यर्थः स्तया प्रजोवां ज्वेतन गायतः  
प्रतिक्षणं सत्तालिगितत्वात् दवस्थितोऽनेन रूपेण नित्यत्वादिति लोकस्यां गभूत द्रव्यं लोकद्रव्यं यत उक्तं पञ्चतिकायमद्रव्यं लोकात्मना इतिह गतिः ॥ अथ  
तत्स्वरूपस्योक्तस्य प्रपचनायां नुरक्तस्यचाभिधानायाह समाप्तः सजेपतः पञ्चविंशोपिस्तरः स्वव्यव्यापि स्यात्कथमित्याह द्रव्यतो द्रव्यं मविज्ञत्वं चैवतः  
चैवमाश्रित्य एव कालतो भावतश्च गणतः कारितः कार्यमाश्रित्येत्यर्थः तत्र द्रव्यतो मानेकं द्रव्यं तयाविधैकपरिणामादेकसंख्याया एवेहभावात् चैवतो

धम्मत्तिकाए अणधम्मत्तिकाए अणगासत्तिकाए जीवत्तिकाए पोग्गलत्तिकाए । धम्मत्तिकाए अणवन्ते अणगंधे

यो ॥ २ ॥ पांच अस्तिकाय कथा तेरुच्छे ॥ धर्मास्तिकाय १ । अर्धर्मास्तिकाय २ । पुद्गलास्तिकाय ३ । आकाशास्तिकाय ४ । जीवास्तिकाय ५ ॥  
धर्मास्तिकायनो वर्णनधी गंधनधी रसनधी फरसनधी रूपनधी जीवनधी सास्वतोच्छे प्रवस्थितच्छे लोक द्रव्य लोकमांज छे ॥ ते संज्ञेपे पांच प्रकारछे



॥ लोकस्य प्रमाणं लोकप्रमाण असंख्येयाः प्रदेशास्तत्परिमाणं मस्येति लोकप्रमाणमात्रः कालतो न कदाचिन् नासीदित्यादि कालत्रयनिर्देश एतदेव सु-  
 ॥ स्वार्थं व्यतिरेकेणाह अभूच्च भवतिच भविष्यतिचेति एव त्रिकालभावित्वाद् भ्रुवो माभूदेकसर्गापेक्षयैव भ्रुवत्वमिति सर्वदैव भावा न्नियतो माभूदनेकस-  
 र्गापेक्षयैव नियतत्वमिति प्रलयाभावाच्छाश्वत एवं सदाभावेनाक्षयः पर्यायापगमे प्यनतपर्यायतयाऽव्यय एव मुभयरूपतयाऽवस्थितोऽनेन प्रकारेणो-  
 घतो नित्यइति पूज्यव्याख्या अथवा यतएव त्रैकालिको सा वतएव भ्रुवोऽवश्यभावित्वाद् दादित्योदयवत् नियत एकरूपत्वाच्छाश्वत, प्रतिक्षण सत्त्वा दतएवा-  
 क्षयोऽवयविद्रव्यापेक्षयाऽक्षतोपा परिपूर्णत्वाद् द्रव्ययोऽवयवापेक्षयाऽवस्थितो नित्यत्वत्वात् तात्पर्यमाह नित्यइति अथवा इन्द्रगक्रादिशब्दवत् पर्यायशब्दा-  
 ध्रुवादयो नानादेशजविनेयप्रतिपत्त्यर्थं मुपन्यस्ताइति तथा गुणतो गमनइति स्तद्गुणो गतिपरिणामपरिणताना जीवपुद्गलाना सहकारिकारणभावतः का-  
 र्यं मत्स्याना जलस्येव यस्यासौ गमनगुणो गमनेवा गुण उपकारो जीवादीना यस्मादसौ गमनगुण इति ॥ एवमेवैति ॥ यथा धर्मास्तिकायो धीतएव म-  
 धर्मास्तिकायोपीति नवर केवल मेतावान् विशेषो यदुत ॥ ठाणगुणेति ॥ स्थान स्थिति गुण, कार्यं यस्य स स्थानगुणः सहि स्थितिपरिणताना जीवादी-

अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवठिए लोगदहे से समासनु पंचविहे पसुत्ते तंजहा दहनु खेतनु  
 कालनु जावनु गुणनु । दहनुणं धम्मस्तिकाये एग दह खेतनुलोगप्रमाणमेहे कालनुनकयावि णासी नक

ते कहेछे । द्रव्यथी १ । क्षेत्रथी २ । कालथी ३ । जावथी ४ । गुणथी ५ ॥ द्रव्यथी धर्मास्तिकाय एकद्रव्य छे । क्षेत्रथी १४ राजलोक प्रमाण छे । काल-  
 थी किवारे नहतो एम नथी १ । किवारे नरहै एमनथी २ । किवारे नरहस्ये एमनही ३ ॥ पूर्वे हतो १ । वर्तमानकाले छे । अनागतकाले रहस्ये

ना मपेक्षाकारणतया स्थानं कार्यं करोति स्थानेवा स्थितौगुण उपकारो यस्मात् तया ॥ लोगालोगेत्यादि ॥ लोकालोकयोस्तद्वक्त्यो र्व्यमाण मनन्ताः प्रदे-  
 शा स्तदेव परिमाण मस्येति लोकालोकप्रमाणमात्रो ऽवगाहनाजीवादीना माश्रयो गुणः कार्यं यस्य स तस्यावा गुण उपकारो यस्मा त्तो वगाहनागुण.  
 ॥ अणताइद्व्याइति ॥ अनता जीवा स्तेषा प्रत्येक द्रव्यत्वादिति ॥ अरूवीजीवेति ॥ जीवास्तिकायो ऽमूर्त स्तथा चेतनावानिति उपयोगः साकारानाका-  
 रभेद चैतन्य गुणो धर्म्मो यस्य स तथा शेष तदेव य दधर्म्मास्तिकायादीनामिति लोकप्रमाणो जीवास्तिकायः पुद्गलास्तिकायश्च तयो स्तत्रैव भावादि

यावि नञवङ् णकयावि नञविस्सङ् जुविञ्च न्वङ् य न्विस्सङ् य धुवे णितिते सासए अरूकए अण्णए अण्  
 ठिए निञ्जे । न्वतो अण्वन्ते अण्गंधे अण्णसे अण्णफासे । गुणन्तु गण्णगुणय । अधम्मत्तिकाये अण्वस्से एवचेव  
 नवर गुणन्तु ठाणगुणे । अण्णासत्तिकाए अण्वन्ते एवचेव णवरं खेत्तन्तु लोगालोगप्यमाणे गुणन्तु अण्णगाह  
 णागुणे सेसं तचेव । जीवत्तिकाएणं अण्वन्ते एवचेव णवर दण्णन्तु जीवत्तिकाए अण्णन्ताइ दण्णाइं अण्णवे  
 जीवे सासए गुणन्तु उवन्तगुणे सेसं तचेव । पोग्गलत्तिकाए पचवन्ते पचरसे दुग्धे अण्णफासे रूवी अण्णजीवे

एवं त्रिण कालमां सासतोळे धुवळे नित्यळे अक्षयळे अवस्थितळे । नित्य भावथीळे अवर्णं अण्ण रसरहित स्पर्शरहित । गुणथी चालवानुं गुण ॥  
 अधर्म्मास्तिकाय वर्णरहित यावत् स्पर्शरहित एतलो विशेष गुणथी स्थानगुण स्थिरस्वभाव ॥ आकाशास्तिकाय अवर्णं इमज एमविशेष क्षेत्रथी लो-  
 कालोक प्रमाण गुणथी अवकाशदेवानो गुण बीजो तिमज ॥ जीवास्तिकाय अवर्णं इमज एतलो विशेष द्रव्यथी जीवास्तिकाय अनन्ता द्रव्यळे अरूपी

ति ॥ गहणगुणेति ॥ गहण श्रीदारिकशरीरादितया ग्राह्या इन्द्रियग्राह्यतावा वर्णादिमत्त्वात् परस्परसंबंधलक्षणवा तदुणो धर्मो यस्य स तथा अनंतर  
मस्त्रिकाया उक्ताइति तद्विशेषस्य जीवास्त्रिगुणस्य सवधिवस्तू न्याहा ध्यानपरिसमाप्तिं यावदिति मत्ता न्सवध स्तन ॥ पचेत्यादि ॥ गतिस्त्रय कणज  
नवर गमन गति गम्यत इतिवा गतिः क्षेत्रविशेषो गम्यतेवा अनया कर्मपुद्गलसह्येति गति नाम कर्मांतरप्रकृतिरूपा तत्कृतावा जीवावस्थिति स्तत्र  
निरये नरको १ गति निर्णय सासौ गतिश्च त्रिवा २ निरयणापिकावा गतिः ३ निरयगति एवतिर्यक्ष १ तिरया २ तिर्यक्ताप्रसाधिकावा गति स्तिर्यगतिः  
एवमनुष्यदेवगती सिद्धीगतिः सिद्धि सासौ गतिश्चेतिवा सिद्धिगति रिह नामप्रकृति र्नास्तीति अनंतर सिद्धिगति रुक्ता साचेन्द्रियार्थान् कषायादिचाश्रि  
त्य मुडितत्वे सति भवतीतीन्द्रियार्था निन्द्रियकषायादि मुंडां साभिधित्सुः सूत्रायमाह ॥ पचेत्यादि ॥ सुगम नवर मिंदना दिद्रो जीवः सर्वाविषयोपलब्धि

सासए अणवठिए जाव दव्वुणं पोग्गलत्थिकाए अणताइं दव्वाइ खेत्तनं लोणप्पमाणमेत्ते कालनं णकयावि  
णासि जाव निच्चे जावनं वन्नमंते गधमंते रसमंते फासमंते गुणनंगहणगुणे । पच गइंनं पणत्तानं तंजहा  
निरयगई तिरियगई मणुयगई देवगई सिद्धिगई । पच इदियत्था पणत्ता तजहा सोइदियत्थे जाव फासिं

छे सासतो गुणथी उपयोग गुण शेष तिमज ॥ पुद्गलास्तिकाय पाच वर्णानो पाच रसथी युक्त वेगध प्राठ फरश रूपी अजीवछे सासतो अवस्थित  
छे यावत् द्रव्यथी पुद्गलास्तिकाय अनंता द्रव्यछे क्षेत्रथी लोकप्रमाण कालथी किवारेन हतो एम नथी यावत् नित्यछे जावथी वर्णसहित गधसहित  
रससहित स्पर्शसहित गुणथी ग्रहण गुण ॥ पांच गति कही ते कहैछे नरकगति १ । तिर्यचगति २ । मनुष्यगति ३ । देवगति ४ । सिद्धिगति ५ ॥

भोगलक्षणपरमैश्वर्ययोगा तस्य लिंगं तेन दृष्टं शृष्टं जुष्टं दत्तमिति वा इन्द्रियं श्रोत्रादि तच्चतुर्विधं नामादिभेदा तत्र नामस्थापने सुज्ञाने निर्वर्त्युपकरणे ॥ टीका  
 द्रव्येन्द्रिय लब्धुपयोगी भावेन्द्रिय तत्र निर्वर्त्ति राकारः साच बाह्या भ्यतराच तत्र बाह्या अनेकप्रकारा अभ्यंतरा पुनः क्रमेण श्रोत्रादीनां कदंबपुष्प १  
 धान्यमसूरा २ तिमुक्तकपुष्प चद्रिका क्षुरप्रनानाप्रकार ५ संस्थाना उपकरणेन्द्रिय विषयग्रहणे समर्थं च्छेद्यच्छेदने खड्गस्येव धारा यस्मिन् उपहते निर्व  
 त्तिसद्भावेपि विषयेन गृह्णातीति लब्धोन्द्रिय यं स्तदा वरणक्षयोपशम उपयोगेन्द्रियं यः स्वविषये व्यापार इतीह च गाथा इंदो जीवो सव्वो वलद्विभोग  
 परमेसरत्तणओ सोत्तादिभेदमिदिय मिहतल्लिगादिभावाओ ॥ १ ॥ तन्नामादिचउद्धा दव्वंमिनिव्वत्तिओवकरणच आकारोनिव्वत्ती वित्तावज्झाइमा  
 अंतो ॥ २ ॥ पुप्फंकलंबुयाए धन्नमसूरातिमुत्तचंदोय होइखुरप्पोनाणा गिइयसोईदियाईणं ॥ ३ ॥ विसयगहणसमतथ उवगरणंइंदियंतरंतंपि जंनेहतदुव  
 घाएगिणहइनिव्वत्तिभावेवि ॥ ४ ॥ लडुवओगोभाविं दियतुलद्वित्तिजोखओवसमो होइतयावरणाण तत्ताभेचेवसेसपि ॥ ५ ॥ जोसविसयवावारे सोउव  
 ओगोसएगकालमि एगेणचेवतम्हा उवओगेगिदिओसव्वे ॥ ६ ॥ एगिंदियादिभेदा पडुच्चसेसिदियाइंजीवाण अहवापडुच्चलईं दियपिपचेंदियासव्वे ॥ ७ ॥  
 जकिरवउलार्इण दौसइसेसदिओवलंभोवि तेणत्थितदावरण खओवसमसभवोतेसिति ॥ ८ ॥ अर्थते ऽभिलष्यते कियार्थिभि रयन्ते वाधिगग्यंत इत्यर्था  
 इन्द्रियाणा मर्था इन्द्रियार्था स्तद्विषयाः शब्दादयः श्रूयते नेने ति श्रोत्र तच्च तदिन्द्रिय श्रोत्रेन्द्रिय तस्यार्थो ग्राह्यः श्रोत्रेन्द्रियार्थः शब्दः एव क्रमेण रूपरसगंध  
 स्पर्शाश्चक्षुराद्यर्था इति मुडन मुडो ऽपनयनं सच देधा द्रव्यतो भावतश्च तत्र द्रव्यतः शिरसः केशापनयनं भावतस्तु चेतस इन्द्रियार्थगतप्रेमा प्रेम्णोः कषा  
 याणांवा पनयन मिति मुण्डलक्षणधर्मयोगा पुरुषी मुण्डउच्यते तत्र श्रोत्रेन्द्रिये श्रोत्रेन्द्रियेणवा मुंडः पादेन खंज इत्यादिवत् श्रोत्रेन्द्रियमुंडः शब्दे रागादिमुं  
 डनात् श्रोत्रेन्द्रियार्थमुंड इति भाव इत्येव सर्वत्र तथा क्रोधे मुंडः क्रोधमुंड स्तच्छेदना देव मन्यत्रापि तथा शिरसि शिरसावा मुंडः शिरोमुंड इति इदं च मुंडि

तत्त्व वादरजीवविशेषाणां भवतीति लोकत्रयापेक्षया वादरजीवकायान् प्ररूपयन् सूत्रत्रय माह ॥ अहेइत्यादि ॥ सुगम नवर अधर्जलोकयो स्तेजसा वादरा न सन्तीति पञ्चैते उक्ता अन्यथा षट्सु रिति अधोलोकग्रामेषु ये वादरा स्तेजसा स्तेऽल्पतया नविवचिता येचोर्ध्वपाटद्वये ते उत्पत्तुकामत्वेनोत्पत्तिस्थावास्थितत्वा दिति ॥ उरालातसत्ति ॥ वसत्वं तेजोवायुष्वपि प्रसिद्ध अतस्तद्वावच्छेदेन द्वौन्द्रियादिप्रतिपत्त्यर्थं मोरालग्रहण ओराला. स्थूला एकेन्द्रियापेक्षयेति एकमिन्द्रिय करण स्पर्शनलक्षण मेकेन्द्रियजातिनामकर्मादया तदावरणक्षयोपशमाच्च गेषान्ते एकेन्द्रिया पृथिव्यादय एवं द्वौन्द्रियादयोपि नवर मिन्द्रियविशेषो जातिविशेषश्च वाच्य इति एकेन्द्रिया इत्युक्तमिति तान् पञ्चस्थानकाननुपातिनो विशेषतः सूत्रत्रयेणाह ॥ पचविहेत्यादि ॥ अगारः

दियत्ये । पच मुंझा प० त० सोइंदियमुंझे जाव फासिंदियमुंझे । अहवा पच मुंझा पसत्ता तजहा कोहमुंझे माणमुंझे मायामुंझे लोजमुंझे सिरमुंझे । अहेलोगेण पंच वादरा पसत्ता तजहा पुढविकाइया आउवाउव णसइकाइया उरालातसापाणा । उहलोगेण पच वादरा एएचेव । तिरियलोगेण पच वादरा पसत्ता तजहा

पाच इंद्रियना अर्थ विषय कहिया ते कहैछे ओत्रेन्द्रियार्थ यावत् स्पर्शनेन्द्रियार्थ ॥ पाच मुंझ कहिया ते कहैछे ओत्रेन्द्रियमुंझ यावत् स्पर्शनेन्द्रियमुंझ ५ ॥ अथवा पाच मुंझ कहिया ते कहैछे क्रोधमुंझ जे रीसटाले १ । मानमुंझ २ । मायामुंझ ३ । लोजमुंझ ४ । शिरोमुंझ ५ ॥ अधोलोकमा पाच वादर कहिया ते कहैछे पृथ्वीकाय पाणी वायु वनस्पती औदारिक वसप्राण देव नारकी ५ ॥ ऊर्ध्व लोकमा पाच वादर कहिया अहज पूर्वे कहिया तेहीज कहवा ५ ॥ तिरिछा लोकमा पांच वादर कहिया ते कहैछे एकेद्री यावत् पचेद्री ॥ पाच प्रकारना वादर तेउकायना जीव कहिया ते कहैछे इगारा १ ।

प्रतीतः ज्वाला ऽग्निशिखा च्छिन्नमूला सैवा च्छिन्नमूलार्चिर्मुर्मुरो भस्ममिश्राग्निकणरूपः अलातमुल्लुकमिति प्राचीनवातः पूर्ववातः प्रतीचीनः पश्चिमः  
दक्षिणः प्रतीतः उदीचीन उत्तर स्तदन्यस्तु विदिग्वात इति आक्रान्ते पादादिना भूतलादौ यी भवति स आक्रान्तो यस्तु धाते दृत्यादौ सध्मातः जलार्द्रवस्ते  
निष्पीड्यमाने पीडित उद्गारोच्छासादिः शरीरानुगतः व्यञ्जनादिजन्यः सम्मूर्च्छिम एतेच पूर्व मचेतना स्ततः सचेतना अपि भवतीति पूर्व पंचेन्द्रिया  
उक्ताइति पंचेन्द्रियविशेषा नाह अथवा अनंतरं सचेतना अचेतना वायव उक्ता स्तांश्च रक्षन्ति निर्ग्रन्थाएवेति तानाह ॥ पंचनियंठेत्यादि ॥ सूत्रषट्  
क सुगम नवर ग्रन्था दांतरा मिथ्यात्वादे र्वाङ्मात्र धर्म्मोपकरणवर्जना इनादे निर्गता निर्ग्रन्थाः पुलाक स्तंदुलकणशून्यापलजित स्तद्वत् य स्तपः श्रुतहेतु  
कायाः सर्वादिप्रयोजने चक्रवर्त्यादिरपि चूर्णनसमर्थाया लब्धे रुपजोवनेन ज्ञानाद्यतिचारासेवनेनवा सयमसाररहितः सपुलाकः अत्रोक्तं जिनप्रेरिता दा

एगिंदिया जाव पंचेदिया । पंचविहा वादरतेउकाइया पस्सत्ता तंजहा इंगाले जाला मुम्मुरे ण्ण्णी ण्ण्ण्णी ।  
पच वादरवाउकाइया प० तंजहा पाईणवाए पणीणवाए उदीणवाए दाहिणवाए विदिसिवाए । पंचविहा  
ण्ण्ण्ण्णी वाउकाइया पन्नत्तां तजहा ण्ण्ण्ण्णी धत्ते पील्लिए सरीराणुगए समुच्छिमे ॥ पंच नियंठा प० तं०

जाला २ । मुर्मुर ३ । अर्चो मूलमां अग्निनी म्हाल ४ । उंबाडुं ५ ॥ पांच प्रकारे वादर वायुकाय कहिया तेकहैछे पूर्वनो वायु १ । पश्चिमनोवायू २  
दक्षिणनो वायू ३ । उत्तरनो वायू ४ । विदिशिनी वायू ५ ॥ पांच प्रकारनो अचित्त वायुकाय कह्यो ते कहैछे पण प्रमुखने अनुक्रमे १ । धमता वा  
युनीकले धौकणी प्रमुखथी २ । जीनुवस्त्र निचोतां ३ । उरुकार सासोस्वास लेतां ४ । समूर्च्छिम बीजणा प्रमुखथी ऊपनुं ५ ॥ पांच नियंठा निर्ग्रन्थ

गमात् सदैव प्रतिपातिनो ज्ञानानुसारेण क्रियानुष्ठायिनो लब्धि मुपजीवतो निर्गम्याः पुलाका भवन्तीति वकुशः शवलः कर्बुर इत्यर्थः शरीरोपकरणवि  
भूषानुवर्त्तितया शुभाशुद्धिव्यतिकीर्णचरण इत्ययमपि द्विविधः यथाह मोहनीयचर्यप्रति प्रस्थिताः शरीरोपकरणविभूषानुवर्त्तिन स्तत्र शरीरे ऽनागुप्त  
व्यतिकारेण करचरणवदनप्रचालनमचिर्गर्णनासिकावयववेभ्योपि दूषिकामलाद्यपनवनं दंतपावनलक्षणं केशसंस्कारच देहविभूषार्थं माचरतः शरीरव  
कुशा उपकरणवकुशा स्तु अकालएवप्रचालितचोलपट्टकांतरकल्यादिघोक्षवास'प्रियाः पानदण्डकाद्यपितैलमानयो ज्वलीकृत्य विभूषार्थं मनुवर्त्तमाना वि  
भति उभयेपिच ऋद्धि यशस्तामा स्तान् ऋद्धि प्रभूत वस्तुपात्रादिकां ख्यातिञ्च गुणवंतो विशिष्टाः स्रधव इत्यादि प्रवादरूपा कामयते सातगौरव साश्रि  
ता नातीवाहोरात्राभ्यतरानुष्ठेयासु क्रियास्त्रभ्युद्यता अविविक्तपरिवारानासयमात् पृथग्भूतो दृष्टजघ स्त्रेलादिकृतशरीरमृज' कर्त्तरिकाकल्पितकेशश्च प

पुलाए वउसे कुसीले नियठे सिणाए । पुलाए पचबिहे पन्तत्ते तंजहा णाणपुलाए दंसणपुलाए चरित्तपुलाए  
लिंगपुलाए अहासुज्जमपुलाएनामपचमे । वउसे पंचविहे पन्तत्ते बंजहा अण्णोगवउसे अण्णोगवउसे सबुद्ध

कत्या तेकहैछे पुलाक कण रहित तुस समान संयमसार रहित तप श्रुत लब्धिवत काम उपनाथी चक्रवर्त्तिनी सेनानो चूर्ण करे ज्ञानादिकता अती  
चार सहित लब्धि फोरवे ते पुलाक १ । वकुश कावरो चारित्र करे २ । कुशील शरीरना उपकरण थी विभूषा करी जे उत्तरगुण दूवे ३ । निर्गम्य  
४ । स्नातक ५ ॥ पुलाक पाच प्रकारनो कह्यो ते कहैछे ज्ञान पुलाक १ । दर्शनपुलाक २ । चारित्रपुलाक ३ । लिंगपुलाक अधिक वेप धरे ४ । य  
था सूक्ष्मपुलाक ते प्रमादने मने अकल्पनीय वस्तु ग्रहण करे मनमां अणाचार चितवे ५ ॥ वकुश पांच प्रकारना कह्यो ते कहैछे आजोग वकुश ते

रिचारोयेषामितिभावः बहुच्छेदशवलयुक्ताः सर्वदेशच्छेदार्हातिचारजनितशवलत्वेन युक्ता निर्ग्रन्थवकुशा इति तथा कुक्षितं उत्तरगुणप्रतिषेवया सज्ज  
लनकषायोदयेनवा दूषितत्वात् शील मष्टादशशीलांगसहस्रभेदं यस्यस कुशील इत्येपोपि द्विविधएव अत्राप्युक्त द्विविधाः कुशीलाः प्रतिषेवणाकुशीलाः क  
षायकुशीला अत्र तत्र ये नैर्ग्रन्थम्यति प्रस्थिता अनियतेंद्रिया कथंचित् किंचि देवोत्तरगुणेषुपिंडविशुद्धिसमितिभावनातप'प्रतिमाभिग्रहादिषु विराधयतः  
सर्वज्ञाज्ञोल्लघनमाचरति ते प्रतिषेवणाकुशीला येषातु सयतानामपि सताङ्गयचित्सज्जलनकषाया उदीर्यं ते ते कषायकुशीला निर्गतो ग्रन्था न्मोहनीयाख्या  
निर्ग्रन्थ चीणकषाय उपशान्तमोहोवा चालितसकलघातिकर्ममलपटलत्वात् स्नातइव स्नातः सएव स्नातकः सयोगो ऽयोगोवा केवलीति अधुनै तएव भेदत  
उच्यते तत्र पुलाक इत्यासेवी पुलाकः पंचविधो लब्धिपुलाकस्यै कविधत्वात् तत्र स्वलितमिलितादिभि रभिचारै ज्ञान मात्रित्या त्मान ससार कुर्वन् ज्ञानपु  
लाक एवंकुट्टष्टिसंस्तवादिभि दर्शनपुलाको मूलोत्तरगुणप्रतिषेवणात शरणपुलाको यथोक्तलिङ्गाधिकगृहणा त्रिष्कारणे ऽन्यलिङ्गकरणाद्वा लिङ्गपुलाकः किञ्चि

वउसे असंवृत्तवउसे अहासुज्जमवउसेणामंपंचमे । कुसीले पंचविहे पन्तत्ते तंजहा णाणकुसीले दंसणकुसीले  
चरित्तकुसीले लिंगकुसीले अहासुज्जमकुसीलेणामंपंचमे । नियंठे पंचविहे पन्तत्ते तंजहा पढमसमयनियंठे

सहसात्कारी १ । अनाज्ञोगवकुश जे छानां कर्म करे २ । संवृत्त वकुश तेपग प्रमुख धोवादिके ३ । असंवृत्त वकुश ते मूलोत्तर गुणमां संवरी असंव  
री ४ । यथा सूक्ष्म वकुश ते काईक प्रमादी आंख प्रमुखनां मलटालवाथी ५ ॥ कुशील पांच प्रकारे कह्यो ते कहैछे ज्ञान कुशील १ । दर्शनकुशील २  
चारित्र कुशील ३ । लिंगकुशील जे एतपसीछे एम साजली हर्ष पासे ४ । यथासूक्ष्म कुशील ते प्रमादे सेवे ५ ॥ अठार सहस्र शीलांगमा दोष लगा

॥ टी

॥ मू

॥ भा



१० ॥ अमादात् मनसाकल्पग्रहणाद्वा यथा सूक्ष्मपुलाकोनाम पंचमक इति वकुशो द्विविधोऽपि पचविधस्तत्र शरीरोपकरणविभूषयोः संचिन्त्यकारी आभोगवकुशः  
 २ ॥ सहसाकारी अनाभोगवकुशः प्रच्छन्नकारी सवृतवकुशः प्रकटकारी असंवृतवकुशो मूलोत्तरगुणाश्रितत्वा सवृतासवृतत्वं किञ्चिदमादौ अचिमलाद्यपनयन  
 त्वात् यथा सूक्ष्मवकुशोनाम पचम इति कुशीलो द्विविधोऽपि पचविधस्तत्र ज्ञानदर्शनचात्रिलिङ्गा न्युपजीवन् प्रतिषेवणतो ज्ञानादिकुशीलो लिङ्गस्थाने क्वचि  
 त्तपो दृश्यते तथायं तपश्चरतीत्येवमनुमोद्यमानो हर्षं च्छन् यथा सूक्ष्मकुशीलः प्रतिषेवणयैवेति कपायकुशीलोऽप्येव नवर क्रोधादिना विद्यादिज्ञान प्रयुजा  
 नो ज्ञानकुशीलो दर्शनग्रन्थ प्रयुज्ज्ञानो दर्शनतः शाप ददश्चारिचतः कषायैर्लिङ्गान्तरं कुर्वन् लिङ्गतो मनसा कषायान् कुर्वन् यथा सूक्ष्म शूर्णिकारव्याख्यात्वेवं सम्य  
 गाराधनविपरीता प्रतिगतावा सेवना प्रतिषेवणा सा पचसु ज्ञानादिषु येषां प्रतिषेवणा कुशीलाः कपायकुशीलास्तु पञ्चसु ज्ञानादिषु येषां कषायैर्विरा  
 धना क्रियत इति अन्तर्मुहूर्तप्रमाणाया निर्ग्रन्थाद्वायाः प्रथमे समये वर्तमान एकः शेषेषु द्वितीयः अन्तिमे तृतीयः शेषेषु चतुर्थः सर्वेषु पचम इति विवक्षया  
 भेद एषामिति च्छविः शरीर तदभावा त्वाद्ययोगनिरोधे सति अच्छविर्भवति अव्यथकोवा १ निरतिचारत्वा दशवलः २ क्षपितकर्मत्वा दकर्मस्य इति त्

अपठमसमयनियंते चरिमसमयनियंते अचरिमसमयनियंते अहासुज्जमनियंते णामंपचमे । सिणाए पंचविहे

डे सजलन कपायना उदयथी ते कुशीलकपाय निग्रथ ॥ मोहनीनी गांठिथी नीकल्यो क्षीणकपाय अथवा उपशांत मोहनो धनी ते निग्रथ पांच  
 निग्रथ कक्षा तेकहैछे प्रथमसमय निग्रथ अंतर्मुहूर्त प्रमाण निग्रथ होय तेहमा पहले समये वर्ततो ते १ । बीजे समये वर्ततो ते अपठमसमय नि  
 ग्रथ २ । छेहला समयनो निग्रथ ३ । अचरमसमयनो निग्रथ ४ । सर्वसमयमा वर्तमान ते पाचमो निग्रथ ५ ॥ स्नातक पाच प्रकारनो कहियो ते

तीयः ज्ञानान्तरेणा संप्रकृत्वा तसंशुद्धज्ञानदर्शनधरः पूजार्हत्वा दर्हन् नास्यरहो रहस्य मस्तीत्यरहावा जितकषायत्वात् जिनः केवलं परिपूर्णं ज्ञानादि  
 त्रय मस्यास्तीति केवलीति चतुर्थः निष्क्रियत्वा तत्कलयोगनिरोधे ऽपरिश्रावीति पचमः क्वचित् पुनरर्हन् जिन इतिपचमः अत्रभाष्यगाथा होइपुलाओदुवि  
 हो लक्षिपुलाओतहेवइयरोय लक्षिपुलाओसधा इकज्जइयरोयपचविहो ॥ १ ॥ नाणेदंसणचरणे लिगेअहसुहुमएयनायव्वो नाणेदसणचरणे तेसितुविराहण  
 असारो ॥ २ ॥ लिगपुलाओअणं निक्कारणओकरेइसोलिगं मणसोअकप्पियाणं निसेवतोहोअहासुहुमे ३ ॥ सरीरे उवकरणे वाउसियत्तदुहासमक्खायं  
 सुक्किलवच्छाणिधरे देसेसव्वेसरीरमि ॥ ४ ॥ आभोगमणाभोगे सबुडमसबुडेअहासुहुमे सोदुविहोवियवउसो पचविहोहोइनायव्वो ॥ ५ ॥ आभोगेजाणंतो करे  
 इदोसतहाअणाभोगे मूलुत्तरेहिसबुड विवरीयमसबुडोहोइ ॥ ६ ॥ अत्थिसुहुमज्जमाणी होइअहासुहुमओदुहावउसो पडिसेवणाकसाए होइकुसीलोदुहा  
 एसो ॥ ७ ॥ नाणेदसणचरणे तवेयअहसुहुमएयवोधव्वे पडिसेवणाकुसीलो पंचविहोऊमुण्येव्वो ॥ ८ ॥ नाणादोउवजीवइ अहसुहुमोअहइमोमुण्येव्वो सा  
 इज्जतोराग वच्चइएसोतवच्चरणी ॥ ९ ॥ एष तपस्सरणीत्येव मनुमोयमानो हर्षं व्रजतीत्यर्थः एमेवकसायमो पचविहोहोइऊकुसीलो कोहेणविज्जाइ पउंज  
 एमेवमाणाइ ॥ १० ॥ एवमेव मानादिभिरित्यर्थः एमेवदसणतवे सावपुणदेइउवचरित्तमि मणसाकोहाइणं करेइअहसोअहासुहुमो ॥ ११ ॥ पढमापढमेच

पन्तते तंजहा अच्छवी असंवले अकम्मंसे संसुद्धणाणदसणधरेअरहाजिणेकेवली अपरिस्सावी । कप्पइनि

कहैछे कायानो योग रुध्योछे तेमांटे अच्छवी १ । निरतीचारमांटे असंवल २ । कर्मक्षय कीधा तेमांटे अकर्माश ३ । ज्ञानांतरायना क्षयथी शुद्धज्ञान  
 दर्शनना धरणहार अरिहत जिन केवली ४ । सर्वयोगना रूधवाथी अपरिश्रावी ५ ॥ कल्पे साधुने तथा साध्वीने पांच वस्त्र धारवा राखवा परि

रमा चरमेप्रहसुहम ५ होइनिगंधे अत्कवि १ अस्सवलेया २ अकम्म ३ ससुष्ठ ४ अरहजिणेत्ति ॥ १२ ॥ निर्ग्रन्थानामेवो पधिविशेषप्रतिपादनाय सूत्रद्वयमाह ॥ कप्पइत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर कल्पन्ते युज्यन्ते धारयितुं परिग्रहे परिहर्तुं मासेवितुमिति अथवा धारणया उवभोगो परिहरणाहोइपरिभोगोत्ति ॥ ज गियत्ति ॥ जगमा स्तसा स्तद्वयवनिष्पन्न जागमिक कबलादि ॥ भगएत्ति ॥ भगा अतसी तन्मय भांगिक ॥ साणएत्ति ॥ सनसूत्रमय साजक ॥ पोत्तियत्ति ॥ पोतमेव पौत्तिक कार्पांसिक ॥ तिरिडवट्टेत्ति ॥ वृत्तत्वग्मयमिति इहगाथा जगमजायजगिय तपुणविगलिदियंचपचेदि एकेकपियपत्तो होइविभागेण्णग विह ॥ १ ॥ पट्टसुवन्नेमलए असुयचीणसुएयविगलिदी उखोद्वियमियलोमे कुतवेकिट्टोयपचेदो ॥ २ ॥ पट्टः सुवर्णसुवर्णसूत्र कृमिकाणा मलयमलयविप यएव अशुक श्लक्ष्णपट्ट चीनाशुक कोसिकार चीनविषयेवा यज्जवति श्लक्ष्णात् पट्टादिति मृगरोमज शशलोमज मूषकरोमजवा कुतप श्लागले किट्टिजमेतेषा मेवा वयवनिष्पन्नमिति अयसीवसीमाइय भगियसाणयतुसणवक्के ॥ पोतकप्पासमय तिरिडरुक्खातिरीडपट्टोय ॥ १ ॥ इह पचविधे वस्त्रे प्ररूपिते प्युत्तर्ग तः कार्पांसिकौर्षिकेएव आद्ये यतो ऽवाचि कप्पासियाओदोणी उखियएक्कोयपरिभोगोत्ति ॥ कप्पासियस्सअसई वागयपट्टोयकोसियारोय असईयउ

ग्गंथाणवा निग्गथीणवा २ पंच वत्थाइं धारेत्तएवा परिहरित्तएवा तंजहा जंगिए जंगिए साणए पोत्तिए तरीरुपट्टएणामंपचमए । कप्पइ निग्गथाणवा निग्गथीणवा २ पच रयहरणाइं धारित्तएवा परिहरि त्तएवा

ग्रहवा जोगववा तेकहैछे कवल प्रमुख त्रसजीवना अवयवथी नीपनु १ । अतसीनुं रेसमनु २ । सणनो ३ । कपासनो ४ । वृत्तनी छाल तथा तृण नो ५ ॥ कल्पे साधुने तथा साध्वीने पाच रजोहरण धारवा राखवा परिहरवा तेकहैछे जननो १ । उंटनालोमनो २ । सणनो ३ । तृणविज्ञेपनो ४ ।

श्रियस्मा वागयकोसेज्जपट्टोयसि ॥ १ ॥ तद प्यमहामूयमेव ग्राह्यं महामूयताच पाटलिपुत्रीयरूपकाष्टादशका, दारभ्य रूपकलचं यावदिति रजो हि  
 यते अपनीयते येन तद्रजोहरण मुक्तच हरहरयंजीवाण ब्रह्मंअभतरचजतेण रयहरणतिपवुच्चद कारणकज्जीवयाराओत्ति ॥ १ ॥ तत्र ॥ उण्णियंति ॥ अ  
 विलोममय ॥ उट्ठेयंति ॥ उट्ठलोममय सानकं सनसूत्रमय ॥ पच्चापिच्चियएत्ति ॥ पल्लव स्तणविशेष स्तस्य ॥ पिच्चियति ॥ कुट्टितत्वक्तमय मुञ्ज' ग्रापणीति  
 इहगाथा पाउंच्छणयंदुविह उस्सगियमाववाइयचेव एकेकपियदुविहनिव्वावायचवाघायं औत्सर्गिक रजोहरण पट्टनिपद्यादययुक्त मापवादिक मनाहत  
 दडं निर्याघातिक मौर्खिकदणिकं व्याघातिकं त्वितरदिति जतनिव्वाघाय तएगउन्नियतिनायव्व [ औत्सर्गिकं च ] उस्सगियवाघाय उट्टियसणवच्चमुजच  
 ॥ १ ॥ निव्वाघायववाइ दारुगदंडुणियाहिदमियाहिं अववाइयवाघाय उट्टीसणवच्चमुजमयति ॥ २ ॥ अमणानां यथा वस्तरजोहरणे धर्मोपग्राहके तथा  
 पराण्यपि कायादीनीति तान्येवाह ॥ धम्ममित्यादि ॥ धम्मं श्रुतचारित्ररूप णमित्यनङ्गारे चरतः सेवमानस्य पचनिस्सास्याना न्यवलवनस्थानानि उपग  
 हहेतवइत्यर्थः षट्कायाः पृथिव्यादय स्तेषांच सयमोपकारिता आगमप्रसिद्धा तथाहि पृथिवीकाय मायित्यो क्तं ठाणनिसीयतुयट्ठण उच्चाराइणगहण  
 निक्खेवे घट्टगडगलगलेवो एमाइपओयणंवहुहा ॥ १ ॥ अप्काय मायित्य परिसेयपियणहत्या इधोयणेवीरधोयणेचेव आयमणभाणधुवणे एमाइपओयणव  
 हुहा ॥ २ ॥ तेजस्काय अति ओयणवंजणपाणग आयासुसिणोदगचकुम्मासा डगलगसरक्खसूइय पिप्पलमायईउवओगो ॥ ३ ॥ वायुकायमभि दइएण

तंजहा उस्सिए उट्टिए साणिए पच्चापिच्चिए मुंजापिच्चिए णामंपंचमे । धम्मं चरमाणस्स पच निस्साठाणा

मुंजनो कुट्टितमुंजनो ५ ॥ धर्मकरताने पांच निश्राना स्थान कइया आलंवनना ते कहेंछे ठकाय १ । गच्छ २ । राजा ३ । गाथापती ४ । शरीर का

यथिणावा पशोयणं होज्जवाउणामुणिणी गेलणंमिविहोज्जा सचित्तमीसेपरिहरेज्जा ॥ ४ ॥ वनसतिअति संथारपायदडग खोमियकप्पायपीढफलगा  
 प्रोसहमेसज्जाणिय एमाइपशोयणंतहसु ॥ ५ ॥ वसकाये पचेद्विय तिरय आणिलोक्ता चम्मड्ढिदंननहरो मसिमअजिलाणच्छगणगोमुत्ते खोरदहि  
 माइयाण पचिद्वियतिरियपरिभोगे ॥ ६ ॥ एव विकलेंद्रियमनुष्यदेवाना मय्यपगृहकारिता वाचा तथा गणो गच्छ स्तस्यचोपग्राहिता एगस्सकओधमो  
 इत्यादिगाथा पूगादयसेया तथा गुप्तपरिवारोगच्छो तथ्यवसताणनिज्जराविउला विणयाउतहासारण भाईहिंनदोसपडिवत्ती ॥ ७ ॥ अन्ननावेक्खाए  
 जागतितहिपयइतो नियमेणगच्छवासो असगपयसाहगेनेओत्ति तथा राजा नरपति स्तस्य धर्मसहायकत्व दुष्टेभ्यः साधुरचणा दुक्तंचलीकिक्कैः क्ष  
 द्रनोक्ताकुलेल्लोकोधर्मं ज्ञयुं कथयित्ते चांतादांता प्रहृतर सेट्ठाजातावरत्तति ॥ १ ॥ तथा अराजकेत्तिलोकेऽस्मिन् सर्वतोविह्वते भयात् रक्षार्थमस्यसर्वस्य रा  
 जानमस्रजत्तभुरिति ॥ २ ॥ तथा गृहपतिः शय्यादाता सोपि निस्साख्यान स्यानदानेन सयमोपकात्तित्वा यदुक्तं वृत्तिस्तेनदत्तामतिस्तेनदत्ता गतिस्ते  
 नदत्तासुखतेनदत्त गुणश्रोसमालि ग्यतेभ्येवरेभ्यो मुनिभ्योमुदायेनदतोनिवासः ॥ १ ॥ तथा जोदेइउवस्सयजइ वराणतवनियमजोगजुत्ताण तेणदिणा  
 वल्ल गणपाणसगणासणविगप्पति ॥ १ ॥ तथाशरीरकायः अस्यचधर्मीपग्राहिता स्फुटैव यतोवाचि शरीरधर्मसयुक्तं रचणीयंप्रयत्नतः शरीरात्प्रवतेधर्मः प  
 र्वतात्सलिलयथेति ॥ १ ॥ भवति चात्रार्या धर्मं चरतःसाधो लोकेनिआपदानिपचैव राजागृहपतिरपरः षट्कायागणशरीरेचेति ॥ १ ॥ शेषं सुगमं अम

प० तं० लक्षाया गणो राया गाहावई सरीरं । पंचणिही पसत्ता तजहा पुत्तणिही मित्तणिही सिप्पणिही

या ५ ॥ पाच निधान कइया तेकहैछे पुत्रते निधान १ । मित्रते निधान २ । विज्ञान ते निधान ३ । धन सुवर्णादि ते निधान ४ । धान्य गोधूमा



॥ त्वेनविवक्षितत्वा तत्स्यैवच युक्तियुक्तत्वादिति तथा अग्निः शीचमत् शीचप्रचालनमित्यर्थ स्तेजसा अग्निना तद्विकारेणवा भस्मना शीच तेजः शीच मत्रशीच  
 शुचिविद्यया ब्रह्मचर्यादिकुशलानुष्ठान तदेव शीच ब्रह्मशीच मनेनच सत्यादिशीच चतुर्विधमपि सगृहीतं तच्चेद सत्यशीचतपःशीच शीचमिन्द्रियनिग्रहः  
 ॥ सर्वभूतदयाशीचं जलशीचतुपचममिति ॥ १ ॥ लौकिकैः पुनरिदं सप्तधोक्तम्यदाह सप्तस्नानानिप्रोक्तानि स्वयमेवस्वयंभुवा द्रव्यभावविशुद्धार्थं मृषीणांस्त्रुद्धाचा  
 रिणां ॥ १ ॥ आग्नेयवारुणब्राह्म वायव्यंदिव्यमेवच पार्थिवमानसचैव स्नानंसप्तविधस्मृतं ॥ २ आग्नेयभस्मनास्नानं भवगाह्यतुवारुण आपोहिष्टामयब्रा  
 ह्म वायव्यतुगवारजः ॥ ३ ॥ सूर्यदृष्टन्त्यदृष्टं तद्दिव्यमृषयोविदुः पार्थिवन्तुमृदास्नानं मनःशुद्धिस्तुमानस ॥ ४ ॥ इति अनंतरं ब्रह्मशीचं सुक्तं न्तच्च जीवशुद्धि  
 रूपं जीवच कृद्गस्थो नजानाति केवलौतु जानातीति सवधा च्छद्गस्थकेवलिनो रज्जेयज्जेयवस्तुप्रतिपादनाय सूत्रद्वयमाह ॥ कृदमत्येत्यादि ॥ सुगमं नवरं कृ  
 द्गस्थ इहावध्याद्यतिशयविकलो गृह्यते ऽन्यथा अमूर्त्तत्वेना धर्मास्तिकायादी नजानन्नपि परमाणु जानात्येवा सौ मूर्त्तत्वा तस्या य सर्वभावेनेत्युक्तं न्ततश्च  
 त कथंचि ज्ञानन्नपि अनन्तपर्यायतया नजानातीति एवं तर्हि सख्यानियमोव्यर्थः स्या दृष्टादीना सुबह्वना मर्थाना मकेवलिनो सर्वपर्यायतया ज्ञातुं न  
 शक्यत्वादिति ॥ सव्यभावेणंति ॥ साक्षात्कारेण श्रुतज्ञानेन त्वसाक्षात्कारेण जानात्येव जीव मशरीरप्रतिवक्ष्ये न्देहसुक्तं परमाणु आसौ पुद्गलश्चेतिविग्रहः द्वय  
 णकादीना सुपलक्षणं मिदं यथैताव्यतीन्द्रियाणि जिनः पंच जानाति तथा ग्यद प्यतीन्द्रियं जानातीत्यधो लोकोर्ध्वलोकव र्थ्यतीन्द्रिय पंचस्थानकावतारि

ठाणाइं कृदमत्ये सव्यभावेणं णयाणइ णपाराइ तंजहा धम्मत्थिकायं अधम्मत्थिकायं आगासत्थिकायं जीवं

त्र पवित्रता ४ । शील ब्रह्मचर्ययो पवित्रता ५ ॥ पाच स्थानके कृदमस्य सर्व भावे करो नजाने नदेखे देशयो जाणे ते कहैछे धर्मास्तिकाय १ । अथ

दर्शयन् सूत्रद्वयमाह ॥ अहोइत्यादि ॥ व्यक्त चवरं ॥ अहोलीएत्ति ॥ सप्तमपृथिव्या मनुत्तराः सर्वोत्कृष्टवेदनादित्वा ततः परं नरकाभापाडा महत्वज्ञ च  
तुर्णा चेतो यस्य सत्त्वातयोजनत्वा दप्रतिष्ठानस्य तु योजनलक्षप्रमाणत्वेऽप्यायुषो ऽतिमहत्वा महत्वइति एव भूर्भुवःलोकेऽपि कालादिषु विजयादिषु च सत्त्वाधि  
कपुरुषाएव गच्छतीति तदप्रतिपादनायाह ॥ पंचपुरिसेत्यादि ॥ हिरिसत्ते ॥ क्रिया लज्जया सत्त्व परीपहेषु साधोः सगामादा वितरस्ववा ऽवष्टभो ऽविचल

असरीरपण्डितं परमाणुपोग्गलं । एयाणिचेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वज्ञावेणं जाणइ  
पासइ धम्मत्थिकायं जाव परमाणुपोग्गलं । अहोलोगेणं पंच अणुत्तरा महइमहालयामहाणिरया पस्सत्ता  
तंजहा काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइठाने । उहलोगेण पच अणुत्तरा महइमहालया महाविमा  
णा पस्सत्ता तंजहा विजये वेजयंते जयते अपराजिए सव्वठसिद्धे । पंच पुरिसजाया पस्सत्ता तंजहा हिरि

मोस्तिकाय २ । आकाशास्तिकाय ३ । शरीर रहित जीव ४ । परमाणुपुद्गल ५ ॥ एहीज पांच निश्चयथी ऊपनुं छे केवल ज्ञानदर्शन जेहने एहवा  
अरिहंत जिन केवली तेह सर्वज्ञावे जाणे देखे ते कहेंछे धर्मास्तिकाय यावत् परमाणु पुद्गल ॥ अधो लोकने विषे पांच उत्कृष्टा मोटा महालय क  
ह्या ते कहेंछे काल १ । महाकाल २ । रोरुय ३ । महारोरुय ४ । अप्रतिष्ठान ५ ॥ उर्द्ध लोकमां पांच उत्कृष्टा मोटा महालय महा विमान कह्या  
ते कहेंछे विजय १ । वैजयंत २ । जयत ३ । अपराजित ४ । सर्वार्थसिद्ध ५ ॥ पांच प्रकारना पुरुष कह्या ते कहेंछे एक लाजथी सत्त्वराखै १ । एक ला  
जथी मनमा सत्त्व राखै देहमां शीतादि विकारथी कंप नथी होय २ । चल सत्त्व ३ । स्थिरसत्त्व ४ । एकने उदय पामतोछे सत्त्व बढतो बढतो स



० ॥ ॥  
 ६ ॥ त्वं यस्यासौ स्त्रीसत्त्व स्तथा क्रियापि मनस्येव सत्त्व न देहे शीतादिषु कंपादिविकारभावात् सक्रीमन.सत्त्व अल भगुर सत्त्व यस्य सतथा एतद्विपर्ययात् स्थि  
 रसत्त्व उदयन मुदयगामि प्रवर्द्धमानं सत्त्व यस्य स तथा अनतर सत्त्वपुरुष उक्त' सच भिन्नुरेवेति तत्स्वरूपप्रतिपादनाय दृष्टातदार्ष्टांतिकसूत्रे ॥ पचमच्छे  
 त्यादिके ॥ आह तत्र मत्स्य. प्राग्वत् भिन्नाकसु अनुश्रोतश्चारी प्रतिश्रया दारभ्य भिन्नाचारी सच प्रथम प्रतिश्रोतश्चारीच प्रतिश्रोतश्चारी दूरादारभ्य प्र  
 तिश्रयाभिमुखचारीत्यर्थ. सच द्वितीय. अतचारी पार्श्वचारीतिद्वितीयः शेषौ प्रतीतौ भिन्नाकाधिकारा तद्विशेष पचधाह ॥ पंचेत्यादि ॥ व्यक्तं द्विन्तु परेषा  
 मात्मदुःखत्वदर्शनेना नुकूलभाषणतो यत्प्रभ्यते द्रव्य सा वनी प्रतीता तां पिवति आस्वादयति पातीतिवेति वनीपः सएव वनीपकीयाचक इह तु यो यस्या  
 तिथ्यादे भंक्तो भवति तत्प्रशसनेन यो दानाभिमुख करोतीति सवनीपकइति तत्र भोजनकालोपस्थायोप्रावूर्णको ऽतिथि स्तदानप्रशंसनेन तद्भक्तान् यो  
 लिप्स्यते सोतिथि माश्रित्य वनीपको ऽतिथिवनीपको यथा पाणदेवलो गो उपगारिसुपरिविण्वजुसिएवा जोपुणअडाखित्त अद्रहिपूएइतदाणति ॥ १ ॥

सत्ते हिरिमणसत्ते चलसत्ते थिरसत्ते उदयणसत्ते । पच मच्छा पस्यता तजहा शृणुसोयचारी पफिसोय  
 चारी श्रुंतचारी मज्जचारी सव्वचारी । एवामेव पच जिक्कागा पस्यता तजहा शृणुसोयचारी जाव सव्व

त्वच्छे जेहनुं ते उदयनसत्त्व ५ ॥ पांच प्रकारना मच्छ कहा तेकहैछे प्रवाहने पाछल चाल्यो जाय १ । प्रवाहने साहमो चाल्यो जाय २ । पाणी ऊ  
 पर चाले ३ । पाणीने वीचमा चाले ४ । सर्व रीतथी चालै ५ ॥ एहनी परे पाच जिक्काचर कहिआ तेकहैछे उपासराथी माणी जिक्का लेतो जाय  
 एम यावत् सर्वचारी ५ ॥ पाच वनीपक कहा तेकहैछे अतिथिवनीपक जे अतिथ्यादिक नो जत्त होय तेहनी प्रशसा पूर्वक जेदानाभिमुख करे ते

जुसिएत्ति प्रीते तमिति तस्य दानं महाफल मितिशेष एवमन्येपि नवरं कृपणा रङ्गादयो दुःखा उदाहरणं किवणिसुदुम्भणिसुय अवंधवोयकिजुगियंगेसु पू  
जाहज्जेलोए दाणपडागहरइदेतो ॥ १ ॥ आयकित्ति रोगी जुगियगी व्यमितः पूजाहार्यः पूजितपूजको माहना ब्राह्मणा स्तउदाहरणं लोयाणुगहकारिसु  
भूमोदेवेसुवहुफलंदाण अविनामबंभवधुसु किपुणक्कम्मनिरयाणं ॥ १ ॥ बंभवधुसुत्ति जन्ममात्रेण ब्रह्मवांधवेषु निर्गुणेष्वपीत्यर्थः यजनादीनि षट्कर्माणीति  
श्ववनीपको यथा अविनामहोज्जसुलभो गोणाईणतणाइआहारो च्छिच्छिक्कारहयाण नहुसुलहोहोज्जसुणगाण ॥ १ ॥ केलासभवणाए गुज्जगाआगया  
महिं चरतिजक्खरूवेण पूयापूयाहियाहिया ॥ १ ॥ पूजयाहिता अपूजया त्वहिताइत्यर्थः अमणाः पचधा निर्यंथाः शाक्या स्तापसा गैरिका आजौविकाश्चे  
ति तत्र शाक्यवनीपको यथा भुजतिचित्तकम्म ठियावकारुणियदाणरुइणीय अविकामगहमेसुचि ननस्सएकिपुणजतीसुत्ति ॥ १ ॥ एवमन्येपि तापसवनीप  
कादयो द्रष्टव्याइति योय वनीपकउक्तः स साधुविशेषः साधुश्चा चेलोभवती त्यचेलत्वस्य प्रशंसास्थानान्याह ॥ पचहीत्यादि ॥ प्रतीत नवर नविद्यन्ते चेलानि  
वासांसि यस्या सा वचेलकः सच जिनकल्पिकविशेष स्तदभावा देव तथा जिनकल्पिकविशेषः स्थविरकल्पिकश्चा ल्याल्पमूल्यसंप्रमाणजीर्णमलिनवसनत्वादि

चारी । पंच वणीमगा पस्सत्ता तंजहा अतिहिवणीमए किवणवणीमए माहणवणीमए साणवणीमए समणव  
णीमए । पंचहिं ठाणेहि अचेलए पसत्ये जवइ तंजहा अप्पापफिलेहा लाघविएपसत्ये रूवेवेसासिए त

१ । कृपणावनीपक ते रंकादिक दुस्थ २ । ब्राह्मणावनीपक ३ । श्रानावनीपक ४ । अमणा वनीपक शाक्यादि दर्शनावनीपक ५ ॥ पांच थानके सा  
धुने अचेलकपणु ते शप्रस्त जलो कह्यो तेकहैछे अल्प अपेक्षा होय धणुं जोको जालवुं नहोय १ । हलुकापणुं ते भलो होय २ । विश्वाषरूपथाय सहूजा

ति प्रशस्तः प्रशंसित स्तीर्थकरादिभिरिति गम्यते अल्पा प्रत्युपेक्षा अचेलकस्य स्यादिति गम्यं प्रत्युपेक्षणीयं तथाविधोपधेरभावा देवंच नस्त्राध्यायादिपरि  
मंशइति तथा लघोर्भावो लाघवं तदेवलाघविकं द्रव्यतो भावतोपि रागविषयाभावात् प्रशस्त मनिद्यंस्या तत्थारूप नेपथ्यं वैश्वासिक विश्वासप्रयोजन मलि  
प्ततासूचकत्वात् स्यादिति तथा तप उपकरणसंलीनतारूप मनुज्जातं जिनानुमत स्या तत्था विपुलो मन्हा निद्रियनिग्रहः स्या दुपकरणविना स्पर्शनप्रतिकू  
लशीतवातातपादिसहनादिति इन्द्रियनिग्रहश्च सत्वेनो त्कटै रेव कर्त्तुं शक्य इत्युत्कटभेदानाह ॥ पंचेत्यादि ॥ सुगम नवरं ॥ उक्कलत्ति ॥ उत्कटा उत्कलावा तत्र  
दड आज्ञा अपराधिदडनवा सैत्यंवा उत्कटः प्रकृष्टो यस्य तेन वोत्कटो यः स दडोत्कटो दडेन योत्कलति वृश्चियाति यः स दडोत्कल इत्येव सर्वत्र नवर राज्य  
प्रभुता स्तेना सौरा देशो मडलं सर्वं मेत त्समुदयइति असयतो दडादिभि रत्कटो भवति सयतस्तु समितिभिरिति समितीः प्राह ॥ पंचेत्यादि ॥ सुगम नवर  
समेक्रीभावेनेतिः प्रवृत्तिः समितिः शोभनै कायपरिणामस्य चेष्टेत्यर्थः ईरणमीर्या गमनमित्यर्थं स्तत्र समिति रीर्यासमिति रत्तांच ईर्यासमितिर्नाम रथशक  
टयानवाहनाक्रांतेषुमार्गेषु सूर्यरश्मिप्रतापितेषु प्रासुकविविक्तेषु युगमात्रदृष्टिना भूत्वा गमनागमन कर्त्तव्यमिति भाषण भाषा तस्यां समिति र्भाषासमिति

वेष्णुष्माणे विउलेइन्द्रियनिग्रहे । पंच उक्कला पणत्ता तंजहा दंफुक्कले रज्जुक्कले तणुक्कले देसुक्कले सत्तु  
क्कले । पंच समिइज्ज पन्नत्ता तजहा इरियासमिई ज्ञासा जाव पारिष्ठावणियासमिई । पंचविहा संसारस

शो जे एह निरलोभी ३ । तप अनुज्ञान कत्थो अचेलकपणु ते तप ४ । घणो इन्द्रियनो निग्रह ५ ॥ पाच उत्कट कत्था तेकहैछे दड अपराधे तेथी उ  
त्कट १ । राज्यनो उत्कट समुदय २ । शरीरनु उत्कट सत्वयुक्त ३ । देशोत्कट ४ । सेनानु उत्कट ५ ॥ पाच समिति कही ते कहैछे ईर्यासमिति जे

रुक्तंच भाषासमितिर्नाम हितमितासंदिग्धार्थभाषणं तथा एषण मेषणा गवेषणग्रहणयासैषणाभेदा शंकादिलक्षणावा तस्यां समिति रेषणासमिति रुक्तंच  
 एषणासमितिर्नाम गोचरगतेन मुनिना सम्यगुपयुक्तेन नवकोटीपरिशुद्धं ग्राह्यमिति तथा आदानभांडमात्रनिक्षेपणासमितिः भांडमात्रे आदाननिक्षेपवि  
 षया सुंदरचेष्टेत्यर्थ इहचा प्रत्युपेक्षिताः प्रमार्जिताद्याः सप्तभंगाः पूर्वोक्ता भवतीति तथा उच्चारप्रश्रवणखेलसिंघाणजलानां पारिष्ठापनिका त्याग स्तत्र  
 समिति र्या सा तथेति तत्रोच्चारः पुरीषं प्रश्रवण मूत्रं खेलः श्लेष्मा जल्लो मलः सिंघाणो नासिकोद्भवः श्लेष्मा अत्रापि तएव सप्तभंगादिति समितिप्ररूपणंच  
 जीवरक्षार्थं मिति जीवस्वरूपप्रतिपादनाय सूत्राष्टकमाह ॥ पचविहेत्यादि ॥ स्फुटार्थं नवरं संसारसमापन्ना भववर्त्तिनः विप्रजहन् परित्यजन्सर्वजीवाः

मावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा एगिदिया जाव पंचेंदिया । एगिदिया पंचगइया पंचागइया प० तं०  
 एगिदिए एगिदिएसु उववज्जमाणे एगेंदिएहितोवा जाव पंचेंदिएहितोवा उववज्जेज्जा सेचेवण से एगेंदिए  
 एगेंदियत्त विप्पजहमाणे एगेंदियत्ताएवा जाव पंचेंदियत्ताएवा गच्छेज्जा । वेइदिया पंचगइया पंचागइ  
 या एवंचेव । एवं जाव पंचेंदिया पंचगइया पंचागइया पन्नत्ता तंजहा पंचेंदिया जाव गच्छेज्जा । पंचविहा

जोई चालें १ । भाषासमिति २ । यावत् पारिष्ठापनिकासमिति ५ ॥ पांच प्रकारना संसार समापन्न जीव कल्या तेकहैछे एकेद्री यावत् पंचेद्री ५ ॥  
 एकेद्रीने पाच गति पांच आगति कही तेकहैछे एकेंदीमा ऊपनो जीव एकेद्रीमाहिथी उपजे यावत् पंचेद्रीमांथी आवी ऊपजै । तेहज एकेदी एकेद्री  
 पणु छांडतो मूकतो एकेद्री माहि आवे यावत् पंचेद्रीमां आवे । बेइंद्री पाच गतिथी आवे पाचगतिमां जाय । इमज यावत् पंचेद्री पाचगतिथी आवे

संसारिसिद्धा अकषायिण उपशान्तमोहादयो जीवाधिकारा हनस्यतिजीवा नागित्य पचस्थानक मात् ॥ अहेत्यादि ॥ त्रिस्थानकवद्व्याख्येय नपर कला  
या वटचणगा मसूरा चण्ड्याग्री तिलमुद्गमासाः प्रतीताः निष्पावा वल्गा कुलत्था चवलगसरिसा चिप्पडिया भवति आलिसदया चवलया सईणा तुवरी  
पलिमिया कालचणगा इति अनन्तर सबत्तरप्रमाणेन योनिव्यतिक्रम उत्तो ऽधुना सण्व सबत्तर शिलत इति ॥ पचसबच्छरेत्यादि ॥ सूचतुष्टय तप  
नक्षत्रसबच्छरेत्ति ॥ इहचद्रस्यनक्षत्रमडलभोगकालो नक्षत्रमासः सचसप्तविंशति दिनानि एकविंशतिः सप्तषष्टिभागा दिवसस्येति ॥ एवंविधवाद्दशमा

सहजीवा पस्यता तजहा कोहकसायी जाव लोजकसायी अकसायी । अहवा पंचविहा सहजीवा प० तं०  
नेरइया जाव देवा सिद्धा । अहजते कल मसूरतिलमुग्गमासणिप्पावकुलत्थ्यालिसदगसईणपलिमथगाणं एण  
सिणं धन्नाणं कोठात्ताणं जहा सालीणं जाव केवइयंकाल जोणीसंचिछइ गोयमा जहन्तेणमंतोमुज्जत्त उक्खो  
सेण पच संवच्छराइं तेणपर जोणीपरिमिलायइ जाव तेणपर जोणीवोच्छेदेपन्नत्ते । पचसंवच्छरा प० तं०

पाचगतिमा जाय तेकहैछे पंचेद्रीमां यावत् आवे ॥ पांच प्रकारना सर्व जीव कह्या तेकहैछे क्रोध कपाई यावत् लोजकपाई अकसाई ५ ॥ पाच प्र  
कारना सर्व जीव कह्या ते कहैछे नारकी यावत् देवता सिद्ध ५ ॥ अथ जगवत कलम वाटला चिणा मसूर तिल मुंग उडद वाल कुलथी चोलरा स  
हडातुअरि चणा ए जातिना धान्य कोठारमा घात्या जिम शालि कहिया यावत् केतले काल योनि रहै केतले काल सचित रहै जगवत कहैछे  
जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पाच वरस तिवार पढी योनि सान थाय यावत् तिवार पढी योनी विच्छेद थाय ॥ पाच संबच्छर कह्या तेकहैछे नक्षत्र

सो नक्षत्रसंबत्सरः २७ । २१ । ६७ । सचायं त्रीणिशतानि अङ्गां सप्तविंशत्युत्तराणि एकपंचाशच्च सप्तषष्टिभागा इति ३२७ । ५१ । ६७ । पचसंबत्सरात्मकं युगं तदेकदेशभूतो वक्ष्यमाणलक्षण चंद्रादि युगसंबत्सरः प्रमाणं परिमाण दिवसादीनां तेनो पलक्षितो वक्ष्यमाण एव नक्षत्रसंबत्सरादिः प्रमाणसंबत्सरः सएव लक्षणानां वक्ष्यमाणस्वरूपाणां प्रधानतया लक्षणसंबत्सरो यावता कालेन शनैश्चरो नक्षत्र मेक मथवा द्वादशापि राशीन् भुंक्ते स शनैश्चरसंबत्सर इति यत चंद्रप्रज्ञप्तिसूत्र सणिचरसंबत्सरे अष्टावीसविह्वे पणत्ते अभिर्द्धे समणे जाव उत्तरासाठा जवा सणिचरे महगहे तीसाए सयच्छरेहिं सध्व नक्षत्तमं डल समाणैइति युगसंबत्सरः पंचविध स्तद्यथा ॥ चदेत्ति ॥ एकोनत्रिंशद्दिनानि द्वात्रिंशच्च द्विषष्टिभागा दिवसस्ये त्येवंप्रमाणः २६ । ३२ । ६२ । कृष्णप्रति पदारब्धः पौर्णमासीनिष्ठित चंद्रमास स्तेन मासेन द्वादशमासपरिमाण चंद्रसंबत्सर स्तस्यच प्रमाण मिदं त्रीणिशता न्यङ्गां चतुःपंचाशदुत्तराणि द्वादशच्च द्विषष्टिभागाः ३५४ । १२ । ६२ । एवं द्वितीयचतुर्थीवपि चंद्रसंबत्सरौ ॥ अभिवर्द्धिणत्ति ॥ एकत्रिंशद्दिनानि एकविंशत्युत्तरशतं चतुर्विंशत्युत्तरशतभागा

णरक्तसंबत्सरे जुगसंबत्सरे प्रमाणसंबत्सरे लक्षणसंबत्सरे सणिचरसंबत्सरे । जुगसंबत्सरे पंचविह्वे प०

संबत्सर १ । युगसंबत्सर २ । प्रमाण संबत्सर ३ । लक्षण संबत्सर ४ । शनैश्चर संबत्सर ५ ॥ अष्टावीस नक्षत्रनो शनैश्चर जोग करे ते शनैश्चर संबत्सर ५ ॥ युगसंबत्सर पाच प्रकारनो कह्यो तेकहैछे चंद्रसंबत्सर १ । चंद्रसंबत्सर २ । अभिवर्द्धित संबत्सर ३ । चंद्रसंबत्सर ४ । अभिवर्द्धित संबत्सर ५ ॥ प्रमाणसंबत्सर पाच प्रकारनो कह्यो तेकहैछे नक्षत्रप्रमाण संबत्सर २७ दिन अने १ दिवसनाद ७ हाइया जाग २१ एह नक्षत्र मासनो परिमाण एहवा १२ मासथी नक्षत्रसंबत्सर होय तेहनादिन ३२७ । जाग ५१ । ६७ हाइया ॥ चंद्र प्रमाण संबत्सर वदी १ पडवाथी पौर्णमासी लगे तेह

नामभिवर्द्धितमास एवं विधेन मासेन द्वादशप्रमाणो ऽभिवर्द्धितसंवत्सरः सच प्रमाणेन त्रीणिशतान्यङ्गा व्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्च द्विषष्टिभागा  
 ३८३ । ४४ । ६२ । इत्येव पचमोपि एभिश्चन्द्रादिभिः पचभिः सबत्सरै रेकयुग भवती त्वेषांच पंचानां संवत्सराणा मध्ये ऽभिवर्द्धिताख्ये सबत्सरे ऽधिकमास  
 कः पततीति प्रमाणसंवत्सरः पचविध स्तत्र नक्षत्रइति नक्षत्रसंवत्सरः सच उक्तलक्षण. केवलं तत्र नक्षत्रमण्डलस्य चन्द्रभोगमात्र विवक्षित मिह तु दिन  
 भागादिप्रमाणमिति तथा चद्राभिवर्द्धिता वप्युक्तलक्षणा वेव किन्तु तत्र युगावयवतामात्र मिह तु प्रमाणमिति विशेष ॥ उक्तइति ॥ ऋतुसंवत्सरस्त्रिंशद  
 होरात्रप्रमाणैर्द्वादशभि ऋतुमासेः सावनमासकर्ममासपर्यायै निष्पन्न. पञ्चधिकाहोरात्रशतत्रयमानइति ३६० ॥ आइक्षेति ॥ आदित्यसंवत्सरः सच त्रि  
 शद्दिना न्यर्हचे त्वेवविधमासद्वादशकनिष्पन्नः षट्पञ्चधिकाहोरात्रशतत्रयमानइति ३६६ । अयमेवा नन्तरोक्तो नक्षत्रादिसंवत्सरो लक्षणप्रधानतया लक्षणसं  
 वत्सरइति तत्र नक्षत्रमाह ॥ समग गाहा ॥ समर्क समतया नक्षत्राणि कृत्तिकादीनि योगं कार्त्तिकपौर्णमास्यादितिथ्या सह सबध योजयति कुर्वति इद

तंजहा चंदे चदे अजिवहिए चदे अजिवहिएचेव । पमाणसंवच्छरे पंचविहे पसत्ते तंजहा णरकत्ते चंदे उज  
 आइच्चे अजिवहिए । लरकणसंवच्छरे पंचविहे पसत्ते तजहा समगंनरकत्तायोगंजोयति समगंउजपरिणमंति

ना दिन २८ जाग ३२ एक अहोरात्रिना ६७ हाइया एहवा १२ मासथी १ चद्रसंवत्सर होय तेहना दिन ३५४ अने एक अहोरात्रिना ६२ हाइया जा  
 ग १२ होय ॥ रितु प्रमाण सबत्सर ३० अहोरात्रिनो १ मास एहवा १२ मासथी १ रितुसंवत्सर तेहना दिन ३६० होय ॥ आदित्य प्रमाण सबत्स  
 र तेहनी मास साढातीस दिननु १२ मासना दिन ३६६ ॥ अजिवर्द्धित प्रमाण सबत्सर १३ चंद्रमासनी ॥ नक्षत्रादि सबत्सर लक्षण प्रधान ते लक्षण

मुक्तभवति यानि नक्षत्राणि यासु तिथिषू क्षर्गन्ती भवन्ति यथा कार्तिक्यां कृत्तिका स्तानि तास्वैव यत्र भवन्ति यथोक्तं जेठोवच्चद्रमूले णसावणोवच्चर्द्धधणि  
 ष्ठाहि अहासुयमगसिरो सेसानक्वत्तनामियामासत्ति ॥ १ ॥ तथा यत्र समतयैव ऋतवः परिणमति न विषमतया कार्तिक्या अनन्तरं हेमन्तर्तुः पौष्या  
 अनन्तरं शिशिरर्तुरित्येव भवतरन्तीतिभावः यच्च न नैवातीव उष्णं धर्मो यत्र सो ल्युण्णो न नैवाति शीतो ऽतिहिमः बह्मदक यत्र सबह्मदकः सच भवति  
 लक्षणतो नक्षत्रइति नक्षत्रचारलक्षणलक्षितत्वा नक्षत्रसवत्सरइति अस्यांच गाथाया पचमाष्टमावशकौ पचकाला वितीय विचित्रेतिच्छंदोविद्धि रूप  
 दिश्यते बहुलाविचित्रेति गाथालक्षणात् पत्तिपचकलोगणइति ॥ ससिगाहा ॥ ससित्ति विभक्तिलोपात् शशिना चद्रेण सकलपौर्णमासी समस्तारा  
 का यः सवत्सर इतिगम्यते अथवा यत्र शशी सकलापौर्णमासीयोजयति आत्मना संबंधयति तथा विषमचारीणि यथा स्वतिथि प्ववर्त्तीनि नक्षत्राणि

**णक्षुरहणाइसीउ बह्मदउहोइनरकतो १ ससिसगलपुसमासी जोएइविसमचारिणरकते कहुनबह्मदनुय तमा**

पांच प्रकारना कहिया तेकहैछे समान सरखा मासनामथी समान नक्षत्र पूर्णिमाये योग करे चंद्रमाथी जिम कार्तिकी पूर्णमासीये कृत्तिका । एम  
 जेठीये ज्येष्ठा इत्यादि मासनाम सदृश नक्षत्र होय समान अनुक्रमथी रितुपरिणामे विषमरीतथी रितु नथी परिणामे कार्तिकी पूर्णिमा पछे हेमन्त  
 रितु पौषी पूर्णिमा पछे शिशिर रितु इत्यादि समतया परिणामे नथी घणो उष्मता पणुं नथी घणो शीत हिम उदकपाणी बहुत बरसात जिहांछे  
 एह नक्षत्रचारने समपणाथी नक्षत्र संबत्सर कह्यो ॥ १ ॥ जिहां चद्रमा संपूर्ण पूनिमजोडै अने मासना नामथी नक्षत्र विषमचारी होय जे मासनी  
 पूर्णमासीने सदृश नहोय जिम जेठनी पूर्णमासीयें मूल आवणी पूर्णमासीये धनिष्ठा मार्गशीर्षनी पूर्णमासीये आर्द्रा एम मासनामथी विषमचारी न



यत्र स विषमचारिनक्षत्रः तथा कटुकोऽतिशीतोष्णसद्भावात् बह्वदकश्च दीर्घत्वं प्राकृतत्वा तमेवंविधमाहुर्लक्षणतो ब्रुवते तद्विदः संबत्सरं चंद्रं चंद्रचारल  
क्षणलक्षितत्वादिति ॥ विषम ॥ गाहा विषमेवैषम्येण प्रवालं पल्लवाद्भुरस्तद्विद्यते येषांते प्रवालिनो वृक्षा इति गम्यते परिणमति प्रवालवत्तालक्षणया  
अवस्थया जायंते अथवा प्रवालिनो वृक्षाः परिणमति अकुरोद्भेदा द्यवस्थां यान्ति तथा अमृतुषु अस्वकाल ददति प्रयच्छन्ति पुष्पफलं यथा चैत्रादिषु कु  
सुमादिदायिनोपि स्वरूपेण चूताः साधादिषु पुष्पादि यच्छतीति यथा वर्षं वृष्टि मेघो न सम्यग्वर्धति यत्रेति गम्यते त माहुर्लक्षणतः सबत्सरं कार्मण  
यस्य स ऋतुसबत्सरः सावनसबत्सरश्चेति पर्यायौ ॥ पुढविगाथा ॥ यत्रलिति गम्यते तथाच यत्रतु सबत्सरे पुथिव्युदकयोः समाधुर्यस्निग्धतालक्षण पुष्प  
फलानां च ददा त्यादित्यः तथा स्वभावत्वा तथाविधोदकाभावेपौतिभावः अतएवा ह्येनापि वर्षेण सम्यग्यथाभिमत निष्पद्यते सस्य शाक्यादिधान्य स ल

ऊसंबच्छरंचदं ॥ २ ॥ विसमंपवालिणोपरि णमंतिष्णदूसुदंतिपुष्पफल वासंणसम्मवासइ तमाऊसंबच्छरं  
कम्मं ॥ ३ ॥ पुढविदगाणंतुरसं पुष्पफलाणतुदंतिष्णाइच्चो ण्ण्णेणविवासेणं सम्मनिप्पज्जाएसासं ॥ ४ ॥ ण्णा

क्षत्रहोय अतिशीत अतिउष्ण घणुं पाणी वरसे जेबर्षमां ते चद्रसंबत्सर कहिये चंद्रचार लक्षणथी लक्षित पणामांटे ॥ २ ॥ विषमरीते एतले रितुवि  
ना वृक्षने पत्र नवीन आवे काल विनाज वृक्षने फल फूल आवे तिम वरसात सम्यग् रीते नवरसे ते कर्मसबत्सर कहिये अथवा रितुसंबत्सर सवन  
सबत्सर कहिये बेतेहना पर्यायळे ॥ ३ ॥ जे सबत्सरने विपे पाणीनो रस माधुर्य स्निग्धता लिएहोय फूलफल काले वृक्ष आपे ते आदित्यसबत्स  
र कहिये थोडा पाणी वरसवाथी पिण जलीरीते धान्य ऊपजे ॥ ४ ॥ सूर्य तेजथी क्षण ते मुहूर्त लव ते ४८ स्वासोत्स्वास प्रमाण दिवसते अहोरा

॥ जणत आदित्यसंवत्सरउच्यतइति शेषइति ॥ आइच्चगाथा ॥ आदित्यतेजसा तप्ताः पृथिव्यादितो येप्युपचारात् क्षणादय स्तप्ता इतिमंतव्यं तत्र चणो मुह  
र्त्तः लव एकोनपचाशदुच्छासप्रमाणो दिवसो ऽहोरात्र ऋतुर्मासद्वयप्रमाणः परिणमति अतिक्रामति यत्रेतिगम्यते यच्च पूरयति वायूत्खातरेणुभिः स्थला  
नि भूमिप्रदेशविशेषान् त माहु राचार्या लक्षणतः संवत्सरमभिवर्द्धित ॥ जाणेत्ति ॥ त्वमपि शिष्य त तथैव जानीहीति सबत्सरव्याख्यानमिदं तत्त्वार्थं  
टोकाद्यनुसारेणप्रायोलिखितमिति अनंतरं सबत्सरउक्तः सचकालः कालात्ययेच शरीरिणां शरीरान्निर्गमो भवतीत्यतः स्तन्मार्गं निरूपयन्नाह ॥ पचवि  
हेत्यादि ॥ व्यक्तं किन्तु निर्याण मरणकाले शरीरिणः शरीरान्निर्गमस्तस्यमार्गो निर्याणमार्गः पादादिकं स्तत्र ॥ पाएहि ॥ पादाभ्यां मार्गभूताभ्यां कार  
णतापन्नाभ्यां जीव शरीरा निर्यातीतिशेष एव मूर्खभ्यामित्यादावपि अथ क्रमेणास्य निर्याणमार्गस्य फलमाह पादाभ्यां शरीरा निर्यान् जीवो ॥ निर

इच्चतेयतविया खणलवदिवसाउऊपरिणमंति पूरेइयथलयाइं तमाऊऊज्जिवहियंजाण ॥ ५ ॥ पंचविहे जीवस्स  
णिज्जाणमग्गे पस्सत्ते तजहा पाएहिं उरूहिं उरेणं सिरेण सव्वगेहिं । पाएहिं णिज्जाणमाणे निरयगामी  
नवइ उरूहिंणिज्जाणमाणे तिरियगामी नवइ उरेणंणिज्जाणमाणे मणुयगामीनवइ सिरेणंणिज्जाणमाणे

त्रि रितु ते बेमासप्रमाण तेपरगमे जणाय जे पवन रेणुथी खाडो पूरे ते अज्जिवर्द्धितसंवत्सर कहिये आचार्यना कहवाथी तूपिण जाण हेशिष्य ५ ॥  
पांच प्रकारे जीवने कायामाथी निकलवानो मार्ग कह्यो ते कह्ये पगथी १ । जंघाथी २ । हृदयथी ३ । मस्तकथी ४ । सर्वांगथी ५ ॥ पगथी नीकल  
तो जीव नरकमा जाय १ । जघाथी नीकलतो जीव तिर्यंचगामी होय २ । हृदयथी नीकलतो जीव मनुष्य गतिगामी थाय ३ । मस्तकथी नीकलतो

१० ॥

११ ॥

यंगामिति ॥ प्राक्ततत्वा दनुस्वारइति निरयगामी भवति एव मग्यत्रापि सर्वाणिच तान्यंगानिच सर्वाङ्गानि तै निर्यान् सिद्धिगतिः पर्यवसानं संसरणप  
र्यन्तो यस्य स सिद्धिगतिपर्यवसानं प्रज्ञप्तइति निर्याणचा युष्कच्छेदने भवतीति च्छेदनं प्ररूपयन्नाह ॥ पंचविहेत्यादि ॥ कण्ठ्य केवल ॥ उप्यत्ति ॥ उत्पा  
दो देवत्वादिपर्यायातरस्य तेन च्छेदो जीवादिद्रव्यस्य विभाग उत्पाद च्छेदनं तथा ॥ वियत्ति ॥ व्ययो विगमी मानुषत्वादिपर्यायस्य तेन च्छेदनं जीवादे  
रेवेति व्यवच्छेदनं तथा बंधनस्य जीवापेक्षया कर्मणः, स्कन्धापेक्षया तु सम्बन्धस्य च्छेदनं विनाशनं बन्धनच्छेदनमिति तथा तस्यैव प्रदेशतो निर्विभागा  
वयवतो बुद्ध्या च्छेदनं विभजनं प्रदेशच्छेदनं तथा जीवादेरेव द्रव्यस्य द्विधाकरणं द्विधाकारः स एव च्छेदनं द्विधाकारच्छेदनं उपलक्षणं चैतत् त्रिधाकारा  
दीना मनेनच देशत च्छेदनं मुक्तं अथवा त्वादस्यो त्पत्तौ च्छेदनं विरहो यथा नरकगतौ द्वादशमुहूर्त्ता व्यवच्छेदनं मुहूर्त्तनाविरहः सोऽप्येव बंधनविरहो  
यथो पशान्तमोहस्य सप्तविधकर्मबंधनापेक्षया प्रदेशच्छेदनं प्रदेशविरहो यथा विसंयोजिताना मनतानुबध्यादिकर्मप्रदेशानां तथा द्वे धारे यस्य तद्विधा  
रं तच्च तच्छेदनं च द्विधाच्छेदनं उपलक्षणत्वा दस्यैकधारायपि दृश्यं तच्च क्षुरखड्गचक्राद्ये तच्च च्छेदनशब्दसामान्या दिहोपात्तमिति प्रदेशच्छेदनस्थाने क्वचित्

देवगामी जवइ सवंगेहि णिज्जायमाणे सिद्धिगतिपज्जवसाणे पस्सत्ते । पंचविहे च्छेयणे पस्सत्ते तंजहा उप्पा  
यच्छेयणे वियच्छेयणे बंधणच्छेयणे पएसच्छेयणे दोधारच्छेयणे । पंचविहे ण्णाणंतरिए पस्सत्ते तंजहा उप्पा

जीव देवगामी होय ४ । सर्वागथी नीकलतो जीव सिद्धिगति पर्यवसान होय ५ ॥ पांच प्रकारे आयुनो छेदवुं कह्यो तेकहैछे देवनारकीमा उपजवो  
ते उत्पादच्छेदन १ । मानुषटली देव थाय मनुष्यनो पर्यायटले फिरे २ । जीवने कर्मसंबधनुं छेदवो ते बंधन छेदन ३ । जीवना प्रदेश छे ४ । जीव

॥ पञ्चच्छेदनेति ॥ पठ्यते तत्र पञ्चच्छेदनं मार्गच्छेदनं मार्गातिक्रमणमित्यर्थः च्छेदनस्य विपर्यय आनन्तर्यमिति तदाह ॥ पञ्चविहेत्यादि ॥ आनन्तर्यं सा  
तत्त्व मच्छेदन मविरहइत्यर्थ स्तत्रोत्पादस्य यथा निरयगतौ जीवाना मुत्कर्षतोऽसंख्येयाः समया एवं व्ययस्यापि प्रदेशानां समयानाञ्च तत्प्रतीतमेव अवि  
वक्षितोत्पादव्ययादिविशेषण मानन्तर्यमात्र सामान्या नन्तर्यं आमण्यस्यवा आकर्षविरहेणा नन्तर्यं आमण्यनन्तर्य मिति बहुजीवापेक्षयावा आमण्य  
प्रतिपत्त्या नन्तर्यं न्तश्चाष्टौ समयाइति अनन्तरसूत्रे समयप्रदेशाना मानन्तर्यमुक्तं न्तेचा नन्ता इत्यनन्तकमेवप्ररूपयन्नाह ॥ पञ्चविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं प्रती  
तार्थं न्वरं नाम्ना अनन्तक नामानन्तकं अनन्तकमिति यस्य नाम यथा समयभाषया वस्त्रमिति स्थापनैव स्थापनयावा अनन्तक स्थापनानन्तक मनन्तकमि  
ति कल्पनया चादिन्यासः अशरीरादिव्यतिरिक्त द्रव्याणामग्रादीना गणनीयाना मनन्तक द्रव्यानन्तक द्रव्यानन्तकं गणना संख्यान तल्लक्षण मनन्तक म  
विवक्षिता ग्रादिसंख्येयविषयः संख्याविशेषो गणना नन्तक प्रदेशाना संख्येयाना मनन्तकं प्रदेशानन्तकमिति एकत एकेना श्रेया यामलक्षणेना नन्तक मे

यणन्तरिए वियणन्तरिए पणसाणन्तरिए समयाणन्तरिए सामणाणन्तरिए । पञ्चविहे ण्णन्तए पस्सत्ते तंजहा णामा  
णन्तए ठवणाणन्तए दव्वाणन्तए गणणाणन्तए पणसाणन्तए । अहवा पञ्चविहे ण्णन्तए पस्सत्ते तंजहा एगणुणन्त

अने कर्मने पृथक् करे ते द्विधाच्छेदन ५ ॥ पांच प्रकारे अनन्तर्य आंतरा रहित पणुं कह्यो तेकहैछे उत्पादनुं निरन्तर जीवने उत्कृष्टो असंख्यसमय वि  
रह नही १ । मनुष्यगत्यादि पर्यायनो अच्छेद २ । प्रदेशनु निरन्तर पणुं ३ । समयनुं अनन्तर पणु ४ । सामान्यथी सर्वजीवनुं अनन्तर ८ समय ५ ॥  
पांच प्रकारे अनन्तो कह्यो तेकहैछे नामथी अनन्तो वस्त्रजिम वस्त्रनीपरे १ । स्थापना अनन्त २ । द्रव्यानन्त ३ । गणवानुं अनन्त ४ । प्रदेशानन्त ५ ॥

० ॥

२ ॥

कतो नतत मेतयेणोक्तं क्षेत्रं विधा आयामविस्ताराभ्या मनंतक विधा ऽनंतक प्रतरक्षेत्रं क्षेत्रस्य यो रुचकापेक्षया पूर्वाद्यन्यतरदिग्लक्षणो देश स्तस्य वि  
स्तारो विष्णोभ स्तस्य प्रदेशापेक्षया ऽनंतक देशविस्तारानंतक सर्वाकाशस्य तु चतुर्थं शाश्वतं च तदनंतकं च शाश्वतानंतक मनाद्यपर्यवसितं य जीवादि द्र  
व्य मनंतसमयस्थितिकत्वा दिति एवभूतार्थपरिच्छेदो ज्ञानाज्ञवतीति ज्ञानस्वरूपनिरूपणायाह ॥ पचविहेत्यादि ॥ पचेति पचसंख्या विधा भेदा यस्य त  
त्पञ्चविध ज्ञाति ज्ञानमिति भावसाधनः सविदित्यर्थः ज्ञायतेवा अनेना स्मादिति ज्ञान तदावरणस्य क्षयः क्षयोपशमोवा ज्ञायतेवा अस्मिन्निति ज्ञान मा  
त्मा तदावरणक्षयक्षयोपशमपरिणामयुक्तो जानातीतिवा ज्ञानं तदेव स्वविषयग्रहणस्वरूपत्वादिति प्रज्ञप्तं प्ररूपितं मर्थत स्तौर्थकरैः सूत्रतो गणधरैः रक्त  
श अत्यभासइप्ररहा सुत्तगयतिगणहरानिष्ठण सासणस्सहियठाए तओसुत्तपवत्तइत्ति ॥ १ ॥ अथवा प्राज्ञा तीर्थकरात् प्राज्ञैर्वा प्रज्ञयावा प्राप्त प्राप्त  
मात्तवा प्राज्ञाप्तं प्रज्ञप्तवा तद्यथा अर्थाभिमुखो ऽविपर्ययरूपत्वा न्नियतो सशयरूपत्वा बोधः सवेदन मभिनिबोधः सएव स्वार्थिकप्रत्ययोपादाना दाभि  
निबोधिकं अभिनिबोधेया भव तेनवा निर्बुद्धं तन्मायवा तन्मयोजन वेत्याभिनिबोधिक अभिनिबुध्यतेवा तत्कर्मभूत मित्याभिनिबोधिक मवग्रहादिरप मति  
ज्ञानमेत तस्य स्वसविदितरूपत्वा दभेदोपचारा दित्यर्थः अभिनिबुध्यतेवा अनेना स्मादस्मिन्वेत्याभिनिबोधिक तदावरणकर्मक्षयोपशमइतिभावार्थः आत्मैववा

ए दुहनंणंतए देसवित्थाराणंतए सव्ववित्थाराणंतए सासयाणंतए । पचविहेणाणे पप्पत्ते तंजहा ण्णान्निबोहि

अथवा पाच प्रकारे अनंतो कक्षो तेकहैछे एक अनंतो आयाम लक्षण एक श्रेणि रूप १ । वे प्रकारे आयाम विस्तार पणो पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्त  
र २ । देश विस्तारानंत पूर्वादिक एक दिशि अनंतप्रदेशात्मक ३ । सर्व विस्तारानु अनंत ते सर्वाकाशरूप ४ । शाश्वतानंत ते अनादि अनंतरूप ५ ॥

॥ भिनिबोधोपयोगपरिणामान्यत्वा द्भिनिबुध्यत इत्याभिनिबोधिकं तच्च तज्ज्ञानंचे त्याभिनिबोधिकज्ञानमिति आहच अत्याभिमुहीनियओ बोधोजोसो मओअभिनिबोहो सोचेवाभिणिबोहिय महवजहोजोगभाजोज्जा ॥ १ ॥ ततेणतओतमिय सोमाभिनिबुज्झएतओवायति ॥ तथा श्रूयतइति श्रुतं शब्दएव भावश्रुतकारणत्वा त्कारणकार्योपचारादितिभावार्थः श्रूयतेवा अनेनास्मा दस्मिन्नेति श्रुतं तदावरणकर्मक्षयोपशमइत्यर्थ आत्मैववा श्रुतोपभोगपरिणामा नन्यत्वात् शृणोतीति श्रुत श्रुतच तज्ज्ञानंचेति श्रुतज्ञान आहच ततेणतओतमिय सुणेइसोवासुयतेणति ॥ तथा अवधीयते अनेना स्मा दस्मिन्वे त्यवधिः अवधीयत इत्यधीधो विस्तृतं परिच्छिद्यते मर्यादयाचेत्यर्थः सचा वधिज्ञानावरणक्षयोपशमएव तदुपयोगहेतुत्वादिति अवधानवा अवधि विषयपरि च्छेदनमित्यर्थः अवधि आसौ ज्ञानचे त्यवधिज्ञान उक्तच तेणावधीयतेत मिवापहाणवतोवहीसोय मज्जायाजताए दव्वाइपरोप्परमणइत्ति ॥ १ ॥ तथा परि. सर्वतोभावे अवन अवो ऽयनंवा अय आयोवा गमन वेदनमिति पर्यायाः परिअवो ऽय आयोवा पर्यव' पर्ययः पर्यायोवा मनसि मनसोवा पर्यवः प र्ययः पर्यायोवा मन.पर्यवो मनःपर्ययो मनःपर्यायोवा सर्वत स्तत्परिच्छेदइत्यर्थः सएव ज्ञान मनःपर्यवज्ञान मन पर्ययज्ञानं मनःपर्यायज्ञानवा अथवा म नसः पर्याया. पर्ययाः पर्यवावा भेदा धर्मा बाह्यवस्त्वालौचनादिप्रकाराइत्यर्थ स्तेषु तेषावा ज्ञान मनःपर्ययज्ञान मनःपर्यायज्ञान मनःपर्यवज्ञान मिति आ हच पज्जवणंपज्जयण पज्जाओवामणमिमणसोवा तस्सवपज्जायादि नाणमणपज्जवणाणमिति ॥ १ ॥ तथा केवल मसहाय मत्यादिज्ञाननिरपेक्षत्वात् शु

यणाणे सुयणाणे उहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे । पंचविहे णाणावरणिज्जे कम्मे पस्सहे तंजहा श्रान्ति  
पांच प्रकारे ज्ञान कह्यो तेकहँछे मतिज्ञान १ । श्रुतज्ञान २ । अवधिज्ञान ३ । मन. पर्यायज्ञान ४ । केवलज्ञान ५ ॥ पांच प्रकारे ज्ञानावरणी कर्म

जंवा प्रावरणमलकलकरहितत्वात् सकलंवा तणयमतयेवा शेषतदावरणाभावात् संपूर्णोत्पत्ते रसाधारणंवा ऽनन्यसदृशत्वात् अनंतंवा ज्ञेयानन्तत्वा यथा  
 यस्थिताशेषभूतभवज्ञाविभावस्वभावावभासीति भावना तत्र ज्ञानं चेति केवलज्ञान मुक्तांच केवलमेगंसुखं सकलमसाधारणंप्रणतंच ॥ पामंचनाणसद्दो ना  
 णसमाणाहिगरणोयति ॥ १ ॥ प्रायइति मनःपर्यायज्ञानेतत्परुपस्यापि दर्शितत्वात् इत्थं स्वामिकालकारणविषयपरीक्षत्वसाधर्म्यं तत्रावेच शेषज्ञानस  
 ज्ञाया दादायेव मतिश्रुतज्ञानयो रुपन्यासइति तथाहि यएव मतिज्ञानस्य स्वामी सएव श्रुतज्ञानस्य जल्यमतिनार्णतल्यसुयनाणमितियचना तथा याया  
 मतिज्ञानस्य स्थितिकाल स्तावानेवेतरस्य प्रवाहापेक्षया अतीतादिसर्वएव प्रतिपतितैकजीवापेक्षया तु पट्पष्टिसागरोपमाण्य धिकानीति यथा मतिज्ञानं  
 चयोपगमहेतुकं तथा श्रुतज्ञानमपि यथाच मतिज्ञान मोचतः सर्वद्रव्यादिविषय मेयंश्रुतज्ञानमपि यथाचमतिज्ञान परोक्षं एव श्रुतज्ञानमपि तथामतिज्ञा  
 नश्रुतज्ञानभावेवा यध्यादिभावादिति आहच जसामिकालकारण विसयपरोक्षतत्तणेहितत्वात् तत्रावेसेसाइ तेणार्इएमइसयाइति ॥ १ ॥ मतिपूर्वकत्वा  
 चश्रुतस्य विशिष्ट मल्यशरूपत्वात् श्रुतस्यादौ मते रुपन्यास इत्युक्तं च मप्रपुल्लंजेणसुयं तेणार्इएमइविसिद्धोवा मइमेवोचेवसुय तोमइसमणतरमणिर्यति ॥ १  
 तथा कालविपर्ययस्वामिनामसाधर्म्यं मतिज्ञानश्रुतज्ञानानतर मवधिज्ञानस्योपन्यास स्तथाहि यावानेव मतिश्रुतज्ञानयोःस्थितिकालः प्रवाहापेक्षया प्रति  
 पतितैकसत्वाधारापेक्षयाच तावानेवा वधिज्ञानस्यापि तथा यथे मतिज्ञानश्रुतज्ञानयो विपर्ययज्ञाने भवत एव मिदमपि मिथ्यादृष्टे विभङ्गज्ञानश्रवतो  
 ति तथा यएव तयोः स्वामी सएवा स्यापि भवतीति तथा विभङ्गज्ञानिन स्तिदशादेः सम्यग्दर्शनावाप्तौ युगपदेव ज्ञानायलाभसम्भवइति उक्तं च काल  
 विवज्जयसामि तत्ताहसाहममोवहीतत्तोत्ति ॥ तथा कइस्यविषयभावाध्यवत्वसाधर्म्यं द्ववधिज्ञानानतरं मनःपर्यायज्ञानस्यो पन्यास स्तथाहि यथा व  
 धिज्ञान कइस्यस्य भवति एव मनःपर्यायज्ञानमपि तथा यथा वधिज्ञान रूपिद्रव्यविषयमेव मेतदपि तथा यथा वधिज्ञानं चयोपगमिको भावे तथेदमपि

तथा यथा वधिज्ञानं प्रत्यक्ष तथेदमपीति उक्तञ्च माणसमेतौक्यम त्वविसयभावादिसामन्नत्तत्ति ॥ तथा मनःपर्यायज्ञानानतरं केवलज्ञानोपन्यासस्तस्य सकलज्ञानोत्तमत्वात् तथा अप्रमत्तयतिस्वामिसाधर्म्यां तथाहि यथा मनःपर्यायज्ञानं मुत्तमयतेरेव भवति एव मिदमपि तथा अवसानलाभात् योहि सर्वज्ञानानि समासादयति सखत्वं तएवेदमाप्नोतीति तथा विपर्ययाभावसाधर्म्यां तथाहि मनःपर्यायज्ञानं सविपर्ययं नभवत्येव केवलमपीति उक्तञ्च अतेकेवलमुत्तमं जइसामित्तवसाणलाभाओ एत्थं चमइसुयाइ परोक्खमियरंचपच्चत्तत्ति ॥ १ ॥ उक्तस्वरूपस्य ज्ञानस्य यदावारकं कर्म तत्स्वरूपाभिधानाय सूत्रं ॥ पचेत्यादि ॥ सुगमं च उक्तं ज्ञानावरणमिति तत् क्षणोपायविशेषस्य स्वाध्यायस्य भेदानाह ॥ पचविहेत्यादि ॥ सुगमं नवरं शोभनं मामर्थादयाऽध्ययनश्रुतस्याधिकं मनुसरणस्वाध्यायं तत्र वक्ति शिष्यस्तु प्रतिगुरोः प्रयोजकभावो वाचनापाठनमित्यर्थः गृहीतवाचनेनापि सशयाद्युत्पत्तौ पुनः प्रष्टव्यमिति पूर्वाधीतस्य सूत्रादेः शङ्कितादौ प्रश्नः प्रच्छनेति प्रच्छनाविशोधितस्य सूत्रस्य माभूद्विस्मरणमिति परिवर्तनासूत्रस्य गुणनमित्यर्थः सूत्रवदर्थेपि स भवति विस्मरणं मतः सोऽपि परिभावनोय इत्यनुप्रेक्षणं मनुप्रेक्षा चिन्तनिकेत्यर्थ एव मभ्यस्तश्रुतेन धर्मकथा विधेयेति धर्मस्य श्रुतरूपस्य कथा व्याख्या धर्म

णिवोहियनाणावरणिज्जे जाव केवलनाणावरणिज्जे । पंचविहेसज्जाए प० तं० वायणा पुच्छणा परियट्टणा  
अणुप्पेहा धम्मकहा । पंचविहे पच्चरक्काणे पस्सत्ते तंजहा सदहणसुद्धे विणयसुद्धे अणुत्तासणासुद्धे अणुपाल  
णासुद्धे जावसुद्धे ॥ पंचविहे पफिक्कमणे पस्सत्ते तंजहा आसवदारपफिक्कमणे मिच्छत्तपफिक्कमणे कसाय

कह्यो तेकहैछे मतिज्ञानावरणी १ । यावत् केवल ज्ञानावरणी ५ ॥ पांच प्रकारे सिज्जाय कही ते कहैछे वाचना १ । पृच्छना २ । परिवर्तना फरीण



कथेति धर्मकथामंथनिर्मथितमिथ्यात्वभावात् भक्त्याः श्रुतं प्रत्याख्यानं प्रपद्यंतइति तदाह ॥ पंचविहेत्यादि ॥ प्रतिषेधत आख्यानं मर्यादया कथनं प्रतिज्ञा ॥ ट  
 न आख्यायानं तत्र अज्ञानेन तथेति प्रत्ययलक्षणेन श्रुतं निरवयं अज्ञानश्रुतं अज्ञानाभावेहि तदश्रुतं भवति एव सर्वत्रेह निर्युक्तिगाथा पञ्चक्लाणसव्व नुद्दे  
 सियंजजहिजयात्ताले तंजोसहहइनरो तजाणसुसहहणसुड ॥ १ ॥ विनयश्रुतं यथा किइकम्मस्सविसोहिं प प्रीजएजो प्रदीणमइरित्त मणवयणकायगुत्तो  
 तंजाणसुविणयप्रोसुधं ॥ १ ॥ अनुभाषणाश्रुतयथा अणुभासइगुरुवयणं अक्खरपयवजणेहिपरिसुण पंजलिउडोप्रभिमुत्तो तंजाणसुभासणासुधं ॥ १ ॥ नच  
 र गुरुर्भणति ॥ वोसिरतत्ति ॥ शिष्यत्तु ॥ योसिरामित्ति ॥ अनुपालनाश्रुतं यथा कतारेदुभिक्खे आयकेवामहया [ महतीत्यर्थः ] समुप्पणे जपालियन  
 भग्ग तजाणसुपालणासुड ॥ १ ॥ भाषश्रुतयथा रोगेणउदोसेणव परिणामेणव [ इहलोकाव्याशंसा लक्षणेन ] नदूसियजतु तखलुपञ्चक्लाण भावविसुद्धमुणे  
 यत्तंति ॥ १ ॥ अन्यदपि षष्ठं ज्ञातश्रुमिति निर्युक्तायुक्तं यदाह पञ्चक्लाणजाणइ कप्पेजजमिहोइकायत्ता मूलगुणउत्तरगुणे तंजाणसुजाणसुत्तति ॥ १ ॥  
 इहत्त पचस्थानजानुरोधा नेदमुक्त अज्ञानश्रुतेनवा सगृहीतत्वात् ज्ञानविशेषत्वात् अज्ञानस्येति प्रत्याख्यानेच कृते कदाचि दलित्चारः सम्भवति तत्रच प्रति  
 क्रमण कर्त्तव्यमिति प्रतिक्रमण निरूपयन्नाह ॥ पंचविहेत्यादि ॥ प्रतीप क्रमण प्रतिक्रमण एतदुक्तं भवति शुभयोगेभ्यो शुभयोगानुक्रान्तस्य शुभेष्वेव गमन  
 मिति उक्तं च स्वस्थानायत्परस्थान प्रमादस्यवशादतः तत्रैकक्रमणभूयः प्रतिक्रमणमुच्यते ॥ १ ॥ अथोपशमिकाज्ञावा दीदधिकस्यवशगतः ॥ तत्रापिच स

पङ्क्तिक्रमणे जोगपङ्क्तिक्रमणे ज्ञावपङ्क्तिक्रमणे । पंचहि ठाणेहि सुत्तं वाएज्जा तंजहा संगहठयाए उवग्गह

गावु ३ । अनुप्रेक्षा अर्थ चित्तन ४ । धर्मकथा ५ ॥ पाच प्रकारे पचसाणा कस्यो तेकहेब्बे शरदहणा शुद्ध १ । विनयशुद्ध गुरुने वंदना करी पचसाणा

एवार्थं' प्रतिकूलगमात्स्मृतइति ॥ २ ॥ इदंच विषयभेदा त्वंचधेति तत्रा अवहाराणि प्राणातिपातादीनि तेभ्यः प्रतिक्रमणं निवर्त्तनं पुनरकरणमित्यर्थ आ  
 अवहारप्रतिक्रमण मसंयमप्रतिक्रमणमिति हृदय मिथ्यात्वप्रतिक्रमणं यदाभोगानाभोगसहसाकारैर्मिथ्यात्वगमन तन्निवृत्ति रेवकषायप्रतिक्रमणं योगप्रतिक्र  
 मणतु यत्ननोवचनकायव्यापाराणामशोभनानां व्यावर्त्तनमित्याश्रवहारादिप्रतिक्रमणमेव विवक्षितविशेष भावप्रतिक्रमणमिति आह च मिच्छताद्रनगच्छ  
 इ नयगच्छावेदनाणुजाणाइ जमणवइकाएहिंतभणियभावपडिकमणमिति ॥ १ ॥ विशेषविवक्षायातूक्ता एवचत्वारीभेदा यदाह मिच्छत्तपडिकमण तहेवअ  
 सजमेपडिकमण कासायाणपडिकमण जीगाणयअप्पसत्याणति ॥ १ ॥ भावप्रतिक्रमणच श्रुतभावितमतेरेव भवतीति श्रुत वाचनीय शिचणीयचेत्येतद्वयोपदर्श  
 नार्थं वेसूत्रे ॥ पचहीत्यादि सुगमे नवर ॥ सुत्तं ॥ श्रुत सूत्रमात्र वाचयेत् पाठये तत्र सग्रहः शिष्याणां श्रुतोपादान सएवार्थं प्रयोजनं तस्मै सग्रहार्थाय सग्रह  
 एववार्थो यस्यस सग्रहार्थं स्तज्जावस्तत्ता तथा संग्रहार्थतया श्रुतसग्रहो भव त्वेनामिति प्रयोजनेनेतिभाव अथवै तएव मया एवसङ्गृहीता भवन्ति शिष्यीक  
 ता भवतीति संग्रहार्थतया तदसग्रहायेतिभाव एव मुपग्रहार्थतयावा एव ह्येते भक्तपानवस्त्राद्युत्पादनसमर्थतयो पष्टम्भिता भवत्वितिभावः निर्जरार्थाय नि

ठयाए निजरठयाए सुत्तेवा मे पज्जावयाए जविस्सइ सुत्तस्सवा अणोच्छित्तिणयठयाए । पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं

करे २ । अनुज्ञावना शुद्ध गुरुये कक्षां पळी वोसरामीति जणवो ३ । पूर्णपालवो ४ । ज्ञाव आणवो ते भावशुद्ध ५ ॥ पांच प्रकारे प्रतिक्रमण कह्यो  
 तेकहैछे आश्रवद्वारनो रोकवो पडिकमवो अशुभपरिणामथी शुभपरिणाम आणवो १ । मिथ्यात्वनु पडिकमवो ते मिथ्यात्वप्रतिक्रमण २ । कपायनो  
 पडिकमवो ते कषाय प्रतिक्रमण ३ । योग मन वचन कायानो पडिकमवो ते योग प्रतिक्रमण ४ । ज्ञाव आणी पडि कमवो ते ज्ञाव प्रतिक्रमण ५ ॥

जंरणमेव मेकर्मणां भवत्विति श्रुतवा यथो मे मम वाचयतइति गम्यते पर्यवजातं जातिविशेष स्फुटतया भविष्यतीति अव्यवच्छित्या नयनं श्रुतस्य कालांतर प्रापण अव्यवच्छित्तिनयः सएवाथे स्तरमै इति ज्ञान तत्त्वाना परिच्छेदो दर्शन तेषामेव गद्धान चारित्र सदनुष्ठानं व्युद्ग्रहो मिथ्याभिनिवेश स्तस्य तस्माद्वा परेषा विमोचन व्युद्ग्रहविमोचन तदर्थाय तदर्थतयावा ॥ अहृत्येति ॥ यथास्था न्यथावस्थिता न्यथार्थान्वा यथाप्रयोजनान् जीवादी न्यथार्थान्वा यथाद्रव्या न् भावान् पर्यायान् ज्ञास्यामीति कृत्वा इतिहेतोः शिचतइति यथावस्थिताश्च भावा ऊर्ध्वलोके सौधर्मादयइति तद्विषयं सूत्रत्रय तथा धोलोकादी लोके

सिस्केजा तजहा णाणठयाए दंसणठयाए चरित्तठयाए बुग्गहविमोयणठयाए । अहृत्येवा ज्ञावे जाणिस्सा मो तिकहु । सोहम्मीसाणेसुण कप्पेसु विमाणा पचवन्ना पणत्ता तजहा किरहा जाव सुक्खित्ता । सोहम्मी साणेसुणं कप्पेसु विमाणा पचजोयणसयाइं उह् उच्चत्तेण पणत्ता । वंजलोगलतएसुणं कप्पेसु देवाणं जव धारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं पचरयणीउ उह् उच्चत्तेण पणत्ता । णेरइयाणं पचवन्ते पंचरसे पोग्गले बंधि

पाच थानके सूत्रनी वाचना देवी कही तेकहैले शिष्यना सग्रहने अर्थे भणावाथी शिष्यथाय १ । उपग्रहने अर्थे जणावाथी शिष्यजक्त पानवस्त्र पा त्र आणवा समर्थ थासे २ । कर्म निर्जराने अर्थ ३ । सूत्र माहरे जणावते पर्याप्त स्पष्ट थास्ये वीसस्यो साजलस्ये ४ । अथवा सूत्र घणा काल लगे परपराथी रहस्ये विच्छेद नथी थास्ये ५ ॥ पाच थानके सूत्र सीसवो तेकहैले ज्ञानने अर्थ १ । दर्शनने अर्थ २ । चारित्रने अर्थ ३ । व्युद्ग्रह मिथ्या त्वाभिनिवेश ते परतो मुकाववाने अर्थ ४ । यथार्थ ज्ञापदार्थ जाणवाने अर्थ ५ ॥ सौधर्म ईज्ञान देवलोकमा विमान पाच वर्णना कल्या कल्या

॥ नारकादयश्चतुर्विंशतिरिति तद्गतां चतुर्विंशतिसूत्रीं तथा तिर्यग्लोके जंबूद्वीपादय इति तद्गतवस्तुविषयं सूत्रचतुष्टयं भाह सर्वं खेतानि सुगमानि नवर  
॥ बधिसुत्ति ॥ शरीरादितयेति दक्षिणेनेति भरते ॥ समर्प्येति ॥ समाप्नुवति उत्तरेणेति ऐरवत इति पूर्वतरसूत्रे भरतवक्तव्यतोक्तेति तत्प्रस्तावा तदुत्पन्नती

सुवा बधंतिवा बंधिस्संतिवा तंजहा किरहे जाव सुक्खिल्ले । तिहे जाव मधुरे । एवं जाव वेमाणिया ।  
जंबूद्वीवेदीवे मंदरस्सदाहिणेणं गगामहाणदि पचमहाणदीलसमर्प्येति तंजहा जउणा सरऊ आदी कोसी  
मही जंबूमंदरस्स दाहिणेण सिंधुमहानदीं पचमहाणईल समर्प्येति तंजहा सहू जावितत्थी वज्जासा एरावई  
चद्रागा । जंबूमंदरउत्तरेण रत्तमहानइ पचमहाणईल समर्प्येति तंजहा किरहा महाकिरहा नीला महानी  
ला महातीरा । जंबूमंदरउत्तरेणं रत्तावइमहाणदि पच महाणईल समर्प्येति इदा इंदसेणा सुसेणा वारि

यावत् सपेद ५ ॥ सौधर्म ईशान देवलोकमां विमान पांचसे योजन ऊंचा ऊंचपणे कह्या ॥ ब्रह्म देवलोक लांतक देवलोकमां देवताने भवधारणीय  
शरीर उत्कृष्ट पाच हाथनो कह्यो ५ ॥ नारकीने पांचवर्ण पांचरसना पुद्गल बांध्याळे बांधेळे बाधस्ये ते कहैळे कृष्ण यावत् स्वेत ॥ तीखा यावत् म  
धुर एम यावत् वैमानिक लगे कहवा ॥ जंबूद्वीपमा मेरु पर्वतथी दक्षिण दिशि गगा महानदीमां पाच मोटी नदी जलेळे ते कहैळे जमुना १ । सर  
जू २ । आदी ३ । कौशी ४ । मही ५ ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी दक्षिणदिशि सिंधु महानदीमां पाच मोटीनदी आवी जलेळे ते कहैळे सद्रु १ । विसा २ ।  
जावितस्ता ३ । ऐरावती ४ । चंद्रागा ५ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरदिशि रक्ता मोटी नदीमां पाच मोटी नदी आवी मलेळे ते कहैळे कृष्णा १ । महाक

यं करसूत्रं सुगम नपरं कुमारराणा मराजभायेन वासः कुमारवासः ॥ तं प्रज्ज्ञावसित्ति ॥ अध्युस्येति तथा भरतादिचेवप्रस्तावात् जेनभूतचमरचचादिवत्ता  
 न्यताभिधायिसूत्रय चमरचचारत्नप्रभापुशिव्यां चमरस्या सुरकुमारराजस्येति सुधर्मा सभा यस्या शय्या उपपातसभा यस्या सुत्पद्यते अभिपेकसभा यस्या  
 राज्याभिपेकेणा भिषिच्यते अलकारिका यस्या मलक्रियते व्यवसायसभा यत्र पुस्तकपाचनतो व्यवसाय तत्त्वनिश्चयं करोति एताश्च यथाक्रम मुत्तरपूर्वस्यां  
 द्रष्टव्या इति देपनिवासाधिकारा अत्तनसूत्रनक्षत्रादिदेवरूपताच सत्वानां कर्मापुद्गलचयादरेति चयादिसूत्रपट्क पुद्गलाश्च विविधपरिणामा इति पुद्गलसूत्रा

सेणा महानागा । पच तित्यगरा कुमारवासमज्जेवसित्ता मुंठे जाव पद्मइया तंजहा वासुपुज्जे मल्ली अरिठ  
 नेमी पासे वीरे । चमरचचाएणं राजधानीए पंच सज्जानं पन्नत्ता तंजहा राजासुहम्मा उववायसज्जा अज्जि  
 सेयसज्जा अलकारियसज्जा ववसायसज्जा । एगमेगेणइदछाणे पच सज्जानं पन्नत्तानं तंजहा सज्जासुहम्मा  
 जाव ववसायसज्जा । पच णरकत्ता पंचतारा पसत्ता तजहा धणिछा रोहिणी पुणव्सू हत्यो विसाहा । जी

स्मा २ । नीला ३ ॥ महानीला ४ ॥ महातीरा ५ ॥ जबूद्धीपमा मेरुथी उत्तरदिशि रक्तवती महानदीमा पाच मोटीनदी आवी मलेछे तेकहैछे इंदा १ ॥  
 इद्रसेना २ ॥ सुषेणा ३ ॥ वारिपेणा ४ ॥ महाजोगा ५ ॥ पाच तीर्थकर कुमार वासमा बसीने घरमा रहीने मुंड थया यावत् दीक्षा लीधी तेकहै  
 छे १२ वासुपूज्य १ ॥ १६ मल्लीनाथ २ ॥ २२ अरिष्ट नेमिनाथ ३ ॥ २३ पार्श्वनाथ ४ ॥ महावीर २४ ५ ॥ चमरचचा राजधानीमा पाच सज्जा कही ते  
 कहैछे सुधर्मा सज्जा १ ॥ उपपात सज्जा २ ॥ अभिपेक सज्जा ३ ॥ अलकार सज्जा ४ ॥ व्यवसायसभा ५ ॥ एक एक इंद्रना स्थानकमां पाच सज्जा कही

णीति व्याख्याच प्राग्व दध्ययनसमाप्तिंयावत् सुकराचेति पंचस्थानकस्य तृतीयः ॥ इति श्रीमदभयदेवाचार्यविरचिते स्थानांगविवरणे पंचस्थानकाख्यं पंचम  
मध्ययनं समाप्तं श्लो० १६२५ ॥ ५ ॥ \* \* \* \* \* ॥  
व्याख्यात पंचम मध्ययनं मधुना संख्याक्रमसंबधमेव षट्स्थानकाख्यं षष्ठं समाारभ्यते अस्यचायमभिसंबध इहा नन्तराध्ययने जीवादिपर्यायप्ररूपणा कृते  
हापि सैव क्रियत इत्येव संबधस्या स्य चतुरनुयोगद्वारस्ये द मादिसूत्र ॥ छहिंठाणेहौत्यादि ॥ अस्यचाय मभिसंबधः पूर्वसूत्रे पंचगुणरूचाः पुद्गला अनन्ताः

वाणं पंचठाणणिवृत्तिणु पोग्गले पावकम्मत्ताणु चिणिंसुवा चिणिंतिवा चिणिस्सिंतिवा तंजहा एगेंदियनि  
वृत्तिणु जाव पचेंदियनिवृत्तिणु । एवं चिणउवचिणबंधउदी रवेदतहनिज्जराचेव । पंचपणुसियाखधा  
अणता पन्तत्ता पंचपणुसोगाढा पोग्गला अणता पन्तत्ता । जाव पंचगुणलुक्का पोग्गला अणता पन्तत्ता ।  
इति पंचठाण सम्मत्त ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तेकहैछे सुधर्मासमा १ ॥ यावत् व्यवसायसज्जा ५ ॥ पांच नत्तत्र पांच ताराणा कह्या तेकहैछे धनिष्ठा १ ॥ रोहिणी २ ॥ पुनर्वसु ३ ॥ हस्त ४ ॥ वि  
शाखा ५ ॥ जीवने पाच थानके निर्वर्तित पुद्गल पापकर्म पणो चिण्या चिणेछे चिणस्ये ते कहैछे एकद्री पणाना यावत् पंचेद्री निर्वर्तित ५ ॥ इम चि  
ण्या उपचिण्या बध उदीरणा वेदना तिम निर्ज्जरा ५ ॥ पांच प्रदेशिया खंध अनन्ता कह्या ॥ पाच आकाश प्रदेशोवगाढ पुद्गल अनन्ता कह्या ॥  
पाच गुण लूखा पुद्गल अनन्ता कह्या ॥ इति पांचमोठाणो संपूर्णो थयो ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

० ॥ प्रचप्ता इत्युक्त प्रज्ञापकायेतेषां मर्थतो ऽर्हतः सूत्रतो गणधरा गणधराश्च ये गुणैर्युक्तस्य अनगारस्य गणधरणार्हत्वं भवति तद्युक्ताएवेति तेषां गुणानां सुपदंशं  
 १ ॥ नाय इदं मुक्तमित्येव सवधस्यास्य व्याख्या सहितादिचर्चस्तु प्रतीत एव नवर पङ्क्तिभिः स्थानैर्गुणविशेषैः संपन्नो युक्तो ऽनगारो भिक्षुरर्हति योग्यो भवति गणंगच्छं  
 धारयितुं मर्यादायामिति गम्यते पालयितुं चेत्यर्थः ॥ सट्टित्ति ॥ अथावान् अश्रद्धावतो हि स्वयममर्यादावर्त्तितया परेषां मर्यादास्थापनायां असमर्थत्वाद्गणधर  
 नर्हत्वं मेव सर्वत्र भावनाकार्या पुरुषजातं पुरुषप्रकार इह च षड्भिः स्थानै रित्युक्तापि यदुक्त आशंपुरुषजातमिति तद्वर्मधर्मवतो रभेदादन्यथा आप्तत्वं सत्यत्व  
 मित्यादि वक्तव्य स्यादिति तथा सत्यं सद्गो जीवेभ्यो हिततया प्रतिज्ञातशूरतयावा एवमभूतो हि पुरुषो गणपालक आदेयश्च स्यादिति २ तथा मेधावि म  
 र्यादया धावतीत्येव शीलमिति निरुक्तिवशादेवभूतो हि गणस्य मर्यादा प्रवर्त्तको भवति अथवा मेधाश्रुतगृहणशक्ति स्तद्ध देवमभूतो हि श्रुत मन्यतो भट्टि  
 ति गृहीत्वा शिष्याध्यापने समर्थो भवतीति ३ तथा बहु प्रभूत श्रुतं सूत्रार्थरूप यस्य तत्तथा अन्यथा हि गणानुपकारी स्यादुक्तं च सौसाणकुण्डकहसो न  
 हाविहीहदिनाणमाईण अहियाहियसंपत्ती संसारुच्छेयणपरम ॥ १ ॥ तथा कहसोजयउअगीउ कहवाकुणओअगीयनिस्साए कहवाकरेउगच्छ स्सवालबु

ढहिंठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ गणं धारित्तए तंजहा सट्टिपुरिसजाए सत्तेपुरिसजाए मेहावीपुरिस  
 जाए बज्जस्सुएपुरिसजाए सत्तिमं अप्पाहिगरणे । ढहिंठाणेहिं निग्गथेनिग्गथिं गिरहमाणेवा अवलबमा

वस्थानकसहित अणगार अरिहंतना गणनें साधुने साध्वीने आवक आविकाने धारे ते कहैछे । अद्वावंत पुरुष १ । सत्यवंत पुरुष २ । बुद्धिवंत पु  
 रुष ३ । बहुश्रुत पुरुष ४ । सत्ववत ५ । अल्पाधिकरण क्रोधादिरहित रीसालुनही ६ ॥ वस्थानके साधु साध्वीने ग्रहतोयको अवलंबनलेतो अतिक्रमे

ड्हाउलसोउंति ॥ ४ ॥ तथा शक्तिम च्छरीरमंत्रतंत्रपरिवारादिसामर्थ्ययुक्तं तद्विविधा स्वापत्सु गणस्यात्मनश्च निस्तारकं भवतीति ५ तथा ॥ अप्याहिगर  
 णेति ॥ अल्पमविद्यमानमधिकरणसपक्षपरपक्षविषयो विग्रहो यस्य तत्तथा तद्वानुवर्त्तकतया गणस्याहानिकारकं भवतीति ६ अथांतरेत्येव गणिनः  
 स्वरूपमुक्तं सुत्तत्येनिष्ठाउपियददधम्मोणुवत्तणाकुसलो जार्इकुलसपन्नो गभीरोलद्धिमतोय ॥ १ ॥ सगहुवगहनिरओ कयकरणोपवयणाणुरागीय एव  
 विहोयभणिओ गणसामौजिणवरिदेहि ॥ २ ॥ अनन्तरं गणधरगुणा उक्ता गणधरकृतमर्यादया च वर्त्तमानो निर्ग्रंथो नाज्ञा मतिक्रामतीत्येतत् सूचयमाह  
 तत्र प्रथमं पञ्चस्थानके व्याख्यातमेव तथापि किञ्चिदुच्यते गृह्णन् ग्रीवादा ववलवयन् हस्तवस्त्रांचलादौ गृहीत्वा नातिक्रामत्याज्ञा मितिगम्यते चित्तं  
 चित्तां शोकेन दृप्तचित्तां हर्षेण यक्षादिष्टां देवताधिष्टितां उन्मादप्राप्तां वातादिना उपसर्गप्राप्तां तिर्यग्मनुष्यादिना नौयमानां साधिकरणा कलहयतीं  
 इतिषद्भिः स्थानैर्वर्च्यमाणैर्निर्ग्रंथाः साधवो निर्ग्रन्थश्च साध्यस्तथाविधनिर्ग्रंथाभावे मिश्राः सतः साधर्मिकं समानधर्मयुक्तं साधुमित्यर्थः ॥ समायरमाणत्ति ॥  
 समाद्रियमाणाः साधर्मिकप्रत्यादरकुर्वाणाः समाचरतोवा उत्पाटनादिव्यवहारविषयीकुर्वन्तो नातिक्रामत्याज्ञां स्त्रीभिः सह विहारस्वाध्यायावस्थानादि

णेवा नाइक्कमइ तंजहा खित्तचित्तं दित्तचित्तं जस्काइठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरणं । लहिंठाणेहिं  
 निग्गंथानिग्गंथीनुय साहमियं कालगयं समायरमाणा णाइक्कमइ तं० अंतोहितोवाहिणीणेमाणा वाहिहिं

नहीं तेकहैछे शोकें व्याप्त चित्त १ । हर्षे व्याप्त चित्त २ । यक्षाधिष्टित ३ । उन्मादप्राप्त कामोद्रेक ४ । उपसर्गपामी कोई लेईजाइं ५ । अधिकरणसहि  
 त क्रोधेहठमां आवी ६ ॥ छस्थानके साधुसाधवी साधर्मी समान धर्मी जेसाधुतेप्रते काल प्राप्तजाणी समाचरतां उपाडवा प्रमुख व्यवहार साचव



न कार्यं मित्यादिरूपां पुष्टालंबनत्वादिति ॥ अंतोहितोवेत्ति ॥ गृहादे मंध्या इहि नयंतो वा शब्दा विकल्पार्थाः ॥ बाहिहितोवेत्ति ॥ गृहादे बहिस्तान् निर्व  
हि रत्यत बहि बहिस्ता त्तरां नयन्त उपेक्षमाणाइति उपेक्षा द्विविधा व्यापारोपेक्षा अव्यापारोपेक्षा च तत्र व्यापारोपेक्षया त सुपेक्षमाणा स्तद्विषयाया  
च्छेदनबंधनादिकायां समयप्रसिद्धक्रियाया व्याप्रियमाणा इत्यर्थः अव्यापारोपेक्षया च मृतकस्वजनादिभि स्तसत्क्रियमाण सुपेक्षमाणा स्तत्रो दासीना इत्यर्थ  
स्तथा ॥ उवासमाणेति ॥ पाठांतरेण ॥ भयमाणेति वा ॥ रात्रिजागरणा तदुपासन विदधाना ॥ उवसामेमाणेति ॥ पाठांतरे त क्षुद्रव्यतराधिष्ठितं सम  
यप्रसिद्धविधिनो पशमयंतइति तथा ४ ॥ अणुस्त्ववेमाणेति ॥ तत् स्वजनादीं स्तत्परिष्ठापनाया मनुज्ञापयंतः ५ ॥ तुसिणीएति ॥ तूष्णीभावेन सप्रवृजन्त  
स्तत्परिष्ठापनार्थं भागमानुज्ञातत्वा त्वर्वं मिद् माज्ञातिक्रमाय नभवतीति क्वाश्चिच्छिक्त श्चाय व्यवहारः प्रायउक्तइति क्दमस्थप्रस्तावा दिदमाह ॥ क्दहीत्यादि ॥  
इह क्दमस्थो विशिष्टावध्यादिविकलो नत्व केवली यतो यद्यपि धर्माधर्माकाशान्यशरीरं जीवंच परमावधि न जानाति तथापि परमाणुशब्दो जानात्येव रू

तोवाणिष्वाहिंणीणेमाणा उवेहमाणावा उवासमाणावा अणुन्ववेमाणावा तुसिणीएवासंपन्नयमाणा । ठठा  
णाइं ठउमत्ये सवृज्जावेणं णयाणइ णपासइ तंजहा धम्मस्तिकाय मधम्मस्तिकायं आगासं जीवमसरीरप

तां अतिक्रमे नथी तेकहैछे माहिथी बाहिर काढता १ । बाहिरथी वा घणोरो बाहिर लेतां २ । उपेक्षादिच्छेदन बंधनादि करतां ३ । रात्रि जा  
गरणादि उपासना सेवा करता ४ । तेहना स्वजनादिकने परठवानो जणाववु ५ ॥ अणुवोत्यो परठवा जाय ए क्दमस्थनो व्यवहारछे ६ । ठथा  
नके क्दमस्थ सर्व ज्ञावने नजाणे नदेखे तेकहैछे धर्मास्तिकाय १ । अधर्मास्तिकाय २ । आकाशास्तिकाय ३ । जीव शरीर रहित ४ । परमाणु पुद्ग

पित्वा त्तयो रूपिविषयत्वा चावधेरिति एतच्च सूत्रं सविपर्ययं प्राग्ब्याख्यातप्राथमेवेति कृद्गस्थस्य धर्मास्तिकायादिषु ज्ञानशक्तिर्नास्तीत्युक्तमधुना सर्व जीवानां येषु यथा शक्तिर्नास्ति तानि तथा आह ॥ कृहीत्यादि ॥ षट्सु स्थानेषु सर्वजीवानां संसारिमुक्तस्वरूपाणां नास्ति ऋद्धिर्विभूतिरिति एवंप्रकारा यथा जीवादि रजीवादिः क्रियते वा विकल्पे एव द्युतिः प्रेमा माहात्म्यमित्यर्थः यावत्करणात् जसेद्रवा वलेद्रवा वीरिएवा पुरिसकारपरकमेद्रवत्ति इदंच व्याख्यातमनेकशद्विति न व्याख्यायते तद्यथा ॥ जीववेत्यादि ॥ जीवस्याजीवस्य करणतायां जीव मजीवं कर्तुं मित्यर्थः १ ॥ अजीवस्यवा जीवस्य करणतायां २ ॥ एगसमएणंवत्ति ॥ युगपद्वा द्वेभाषे सत्यासत्यादिके भाषितुमिति ३ स्वयत्कृतत्वा कर्म वेदयामिवा मा वा वेदयामीत्यनेच्छावशे वेदने ज्वेदने वा नास्ति बलमिति प्रक्रमो ऽयमभिप्रायो नही च्छावशतः प्राणिनां कर्मणः क्षपणाक्षपणी स्तो बाहुबलिनद्रवा पित्व नाभोगनिवर्तिते ते भवतो ऽन्यत्र

क्रियं परमाणुपोग्गलं सहं । एयाणिचेव उप्पस्सणाणदंसणधरे अरहाजिणे जाव सव्वज्ञावेणं जाणइ पासइ तंजहा धम्मत्थिगायं जाव सहं । ढहिंठाणेहि सव्वजीवाण णत्थि इहीतिवा जाव परक्कमेतिवा तं० जीवंवा अजीवंकरणयाए अजीवंवाजीवंकरणयाए एगसएणंवादोज्ञासानुज्ञासित्तए सयकळंवाकम्मंवेएमिवामावावे

ल ५ । शब्द ६ ॥ तस्थानक उपनां छे ज्ञान दर्शन जेहने अरिहंत जिनकेवली यावत् सर्वज्ञावे जाणे देखे तेकहैछे धर्मास्तिकाय यावत् शब्द ॥ छ थानके सर्व जीवने नथी एहवी रिद्धिनाधणी दुमति तेज यावत् पराक्रम नथी तेकहैछे जीवने अजीव करवानुं १ । अथवा अजीवने जीवकरवानुं बलनथी २ । एक समये वे भाषा बोलवाने समर्थ थाय ३ । पोताना कीधा कर्म वेदुं अथवा नथी वेदु ४ । परमाणुपुद्गलप्रति छेदवा समर्थ नही

केवलिसमुद्घातादिति ४ परमाणुपुङ्गलंवा च्छेत्तु खड्गादिना द्विधीकृत्य भेत्तुवा सूच्यादिना विद्धा च्छेदादौ परमाणुत्वहाने रग्निकायेनवा समवदग्धम  
 तिसूक्ष्मत्वेना दाह्यत्वा तस्येति ५ बहिस्तादा लोकाद्गमनताया ६ अलोकस्यापि लोकतापत्तेरिति जीव मजोव कर्तुं मित्युक्त मतो जीवपदार्थस्यैव बहु  
 धा प्ररूपणाय ॥ छजीवनिकायेत्यादि ॥ सूत्रप्रपञ्चमाह सुगम श्वाय नवर जीवानानिकायो राशयो जीवनिकाया इद्वच जीवनिकाया नभिधाय यत्  
 पृथिवीकायिकादिशब्दैर्निकायवन्त उक्ता स्त तेषा मभेदोपदर्शनार्थं नह्ये कान्तेन समुदायात् समुदायिनो व्यतिरिच्यते व्यतिरेकेणा प्रतीयमानत्वादिति  
 तारकाकाराः ग्रहा स्तारकग्रहा लोकेहि नवग्रहा. प्रसिद्धा स्तत्रच चन्द्रादित्यराहूणा मतारकाकारत्वा दन्ये षट् तथोक्ता इति ॥ सुक्तेति ॥ शुक्रः ॥ बृहस्पतिः  
 इति ॥ बृहस्पतिः अगारको मंगलः ॥ सनिच्चरेति ॥ शनैश्चरइति संसारसमापन्नजीवसूत्रे पृथिवीकायिकादयो जीवतयो क्ताः पूर्वसूत्रे तु निकायत्वेने

एमि परमाणुपोग्गलंवाठिदित्तएवाज्जिदित्तएवा अगणिकाएणवासमोदहित्तए वहियावालीगंतागमणयाए ।  
 छजीवनिकाया पन्नत्ता तजहा पुढविकाइया जाव तसकाइया । छ तारगहा प० तं० सुक्ते बुधे बृहस्पति  
 अगारए सणिच्चरे केऊ । छविहाससारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता तंजहा पुढविकाइया जाव तसकाइया ।

भेदवा समर्थ नहीं अग्निकाये करी वालवा समर्थ नहीं ५ ॥ बाहिर लोकना अंतयी अलोकमां जावा समर्थ नहीं ६ ॥ छ जीवना निकाय ते जेह  
 मा घणां जीवछे तेकहैछे पृथिवीकाय यावत् त्रसकाय ॥ छ तारारूप ग्रहछे तेकहैछे शुक्र १ । बुध २ । बृहस्पति ३ । मंगल ४ । शनैश्चर ५ । केतु ६ ॥  
 छ प्रकारे संसार समापन्न जीव कस्या तेकहैछे पृथिवीकाय यावत् त्रसकाय ॥ पृथिवी कायना जीवने छगति छ आगति कही तेकहैछे । पृथिवीका

ति विशेषा नपुनरुक्ततेति ज्ञानिसूत्रे अज्ञानिन स्त्रिविधा मिथ्यात्वोपहतज्ञाना इन्द्रियसूत्रे अनिन्द्रिया अपर्याप्ताः केवलिनः सिद्धाश्चेति शरीरसूत्रे यद्यप्य  
तरगतौ कार्मणशरीरसंभव स्तद्व्यतिरिक्तस्य तैजसशरीरिणो ऽसंभव स्तथाप्ये कतराविवक्षया भेदो व्याख्यातव्य स्तथा अशरीरी सिद्धइति त्त्वणवनस्पति

पुढविकाइया त्त्वगइया त्त्वआगइया पन्तत्ता तंजहा पुढविकाइए पुढविकाइएसु पुढविकाइएहिंतोवा जाव  
तसकाइएहिंतोवा गच्छेज्जा । सोचेवणंसेपुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताएवा जाव  
तसकाइयत्ताएवा गच्छेज्जा । आउकाइया त्त्वगइया त्त्वआगइया एवंचेव । जाव तसकाइया । त्त्वहिहा सत्त्व  
जीवा पन्तत्ता तंजहा आनिणिवोहियणाणी जाव केवलनाणी अन्नाणी । अहवा त्त्वहिहा सत्त्वजीवा प०  
तंजहा एगिंदिया जाव पंचिंदिया अणिंदिया । अहवा त्त्वहिहा सत्त्वजीवा पन्तत्ता तंजहा उरालियसरीरी  
वेउवियसरीरी आहारगसरीरी तेयगसरीरी कम्मगसरीरी असरीरी । त्त्वहिहा तणवणस्सइकाइया प० त०

यनो जीव पृथिवीकायमां उपजतो पृथिवीकायमांथी ऊपजे । यावत् त्रसकायमांथी आवी ऊपजे ॥ तेज ते पृथिवीकायियो पृथिवीकायपणूं छांडतो  
वीजी पृथिवीकायमा जाय यावत् त्रसकायमा जाय ॥ अप्कायना जीव त्त्वगति छ आगतीना कह्या तेकहेछे । समज यावत् त्रसकाय पणो ॥ छ प्रकारे  
सर्वजीव कह्या तेकहेछे । मति ज्ञानी यावत् केवल ज्ञानी अज्ञानी ॥ अथवा छ प्रकारे सर्वजीव कह्या ते कहेछे । एकेंद्री यावत् पंचेंद्री अनिंद्री सि  
द्ध ॥ अथवा छ प्रकारे सर्व जीव कह्या तेकहेछे । औदारिक शरीरी १ वैक्रिय शरीरी २ आहारक शरीरी ३ तैजस शरीरी ४ कार्मण शरीरी ५ अ

कायिका बादरा द्रव्यार्थी मूलवीजा उत्पलकन्दादय इत्यादिस्थास्यातमेव भवरं संमूर्च्छिमा दग्धभूमौवीजासत्वेपि ये तृणादय उत्पद्यन्ते यथाधिक्यताध्यय  
 नावतारं प्ररूपिता जीवा अथतेषामेव (येपर्यायविशेषा दुर्लभा स्तां स्तथेवाह ॥ छठाणांइत्यादि ॥ पटस्थानानि पट्टस्तूनि सर्वजीवानां नेव सुलभानि  
 सुप्रापाणि भवन्ति ऊच्छलभ्यानोत्पत्त्यः न पुन रलभ्यानि केपांचित् जीवानां तन्नाभो पलभ्यादिति तद्यथा मानुषको मनुष्यसबधोभवो जन्म नोसुलभमिति  
 प्रकृम आहच नतुपुनरिदमतिदुर्लभ मगाधसंसारजलधिविभ्रष्टं मानुष्यं पद्योतक तडिगताविलसितप्रमितमिति ॥ १ ॥ एव मार्यं क्षेत्रे अर्पणद्विज  
 तिजनपदरूपे जन्मोत्पत्ति रिहा प्युक्तं सत्यपिचमानुषत्वे दुर्लभतरमार्यभूमिसभयन यस्मिन्धर्माचरण प्रवणत्वप्राप्नुयात्प्राणीति ॥ १ ॥ तथासुकुले द्रव्या  
 तादिके प्रत्याजाति जन्म नो सुलभमिति अनाभिहितम् आर्यक्षेत्रोत्पत्ती सत्यामपिसत्कुलनसुलभंस्यात् सशरणगुणमणीनां पात्रप्राणीभवतियत्रेति ॥ १ ॥  
 तथा क्षेत्रलिप्राप्तस्य धर्मस्य अवणता दुर्लभा यतोऽवाचि सुलहासरलोयसिरी रयणायरमेहलामहीसुलहा निब्लुइसुहजणियरुई जिणवयणसुईजएदुल  
 हति ॥ १ ॥ अतस्सना अज्ञानता दुर्लभा उक्तञ्च आहशसवणलहुं सजापरमदुलहा सोपानेयाउयमगं यत्तवेपरिभस्सइत्ति ॥ १ ॥ तथाअहितस्यवा सामा

अग्गवीया मूलवीया पोरवीया खंधवीया वीयरुहा समुच्छिमा । छठाणां सव्वजीवाणं णसुलजाइं जवन्ति  
 माणुरसएजवे आयरिएखेत्तेजम्मं सुकुलेपच्चायाती केवलीपन्नत्तस्सधम्मस्ससवणया सुयस्स वासद्दहणया सद्द

शरीरी ते सिद्ध ६ ॥ छ प्रकारे तृण यनस्पतिकाय कट्या ते कहेछे । अग्रवीजा १ मूलवीजा २ पर्ववीजा ३ स्कंधवीजा ४ बीजरुहा ५ संमूर्च्छिम ६ ॥  
 छ थानक सर्व जीवने सुलभ नथी ते कहेछे । मनुष्यनो जय १ आर्यक्षेत्रने विपे जन्म २ उद्यम कुलमा उपजयो ३ केवली प्रणीत धर्मनो सांजलवो ४

न्येनप्रतीतस्यो पपत्तिभि रथवा प्रीतिकस्य स्वविषय उत्पादितप्रीते रोचितस्य वा चिकीर्षितस्य सम्य ग्यथावत्कायेन शरीरेण न मनोरथमात्रेणा विरत  
वत् स्पर्शनता स्पर्शनमिति यदाह धम्मपिहुसद्वहता दुक्कहयाकाएणफासया इहकामगुणसु मुच्छिया समयगोयममापसायएत्ति ॥ १ ॥ मानुष्यभवादी  
नाच दुर्लभत्व प्रमादादिप्रसक्तप्राणिनामेव न सर्वेषामिति यतो मनुष्यभव माश्रित्याभिहित एयपुणएवंखलु अन्नाणपमायदोसओनेयं जंदीहाकायठिई भ  
णियाएगिदियार्द्धेण ॥ १ ॥ एसोयअसइदोसा सेवणओधम्मवज्जभचित्ताण ताधम्मोजइयव्व सम्मसइधीरपुरिसेहिति ॥ १ ॥ मानुषत्वादीनिच सुलभानि दु  
र्लभानिचभवतीतीं द्वियार्थाना सवरे असवरेच सति तयोच्च सतोः सातासाते स्त स्तत्तयच्च प्रायश्चित्ता इवती न्दियार्थानिद्वियसवरासवरौ सातासा  
ते प्रायश्चित्तच प्ररूपयन् सूत्र षट्कमाह सुगम चेद नवर ॥ छइदियत्यत्ति ॥ मनस आतरकरणत्वेन करणत्वा त्करणस्यचें द्वियत्वा तत्रा तरबूत्यावा मनस  
इद्वियत्वा तद्विषयस्यें द्वियार्थत्वेन षडिन्द्रियार्था इत्युक्तं तत्र ओत्रें द्वियादौना मर्या विषयाः शब्दादयो ॥ नोइंदियत्यत्ति ॥ औदारिकादि त्वार्थपरिच्छेदक  
त्वलक्षणधर्मद्वयोपेत मिन्द्रिय तस्यौदारिकादित्व धर्मलक्षणदेशनिषेधा न्नोइन्द्रिय मनः सादृश्या र्थत्वाद्वा नोशब्दस्या र्थपरिच्छेदकत्वेन द्वियाणां सदृशमि

हियस्सवापत्तियस्सवारोइयस्सवासम्मंकाएणफासणया । छइंदियत्या पस्सत्ता तजहा सोइंदियत्ये जाव फासिं  
दियत्ये नोइंदियत्ये । छहिहे सवरे पन्नत्ते तंजहा सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे णोइंदियसंवरे । छहिहे

साजली सूत्रनी सदेहना ५ सदेहीने विश्वास ऊपजावीने रुचावीने जली रीते कायाथी फरसवो करवो ॥ छ इंद्रियना विषय कह्या तेकहेछे । ओत्रें  
द्रीनो विषय यावत् फरसेद्रीनो विषय ५ नोइद्रिय मननो विषय ६ ॥ छ संवर कह्या तेकहेछे । ओत्रेद्रीनो सवर यावत् फरसेद्रीनो सवर ५ । नो

॥ तित लक्षचरमिति वा नोद्दिश्यं मनस्तस्यार्थी विषयी जीवादि नोद्दिष्टार्थ इति श्रोत्रेन्द्रियद्वारेण मनोज्ञशब्दप्रवणतो यत्नातं सुखं तत् श्रोत्रेन्द्रियसातमेव शेषाण्यपि तथा यद्विचिंतनतस्तन्नोद्दिष्टसात इति प्रालोचनाहं यद्गुणनिवेदनया श्रुतिप्रतिक्रमणार्हं यन्मिथ्यादुष्कृतेन तदुभयार्हं यदा लोचनामिथ्यादुष्कृताभ्यां विवेकार्हं यत्परिष्ठापित आधाकर्मादौ श्रुतिव्युत्सर्गाहं यत्कायचेशानिरोधतस्तपोऽहं यन्निर्विकृतिकादिना तपसेति प्रायश्चित्तस्य च मनुष्या एव बोद्धार इति मनुष्याधिकारवत् ॥ छविहामणस्सेत्यादि ॥ सूत्रादारभ्या लोकस्थितिसूत्रात् प्रकरणमाह गतार्थं चेतनवरं ॥ अहवा छवि

असंवरे पन्नत्ते तंजहा सोइदिय असंवरे जाव फासिंदिय असंवरे नोइंदिय असंवरे । छविहे साए प० त० सोइदिय साए जाव नोइंदिय साए । छविहे असाए प० त० सोइंदिय असाए जाव नोइंदिय असाए । छविहे पायच्छित्ते प० तंजहा आलोयणारिहे पक्खिमणारिहे तदुजयारिहे विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे तवारिहे । छविहा मणुस्सा प० तं० जंबूद्वीवगा धायइखरुदीवपुरच्छिमग्गगा धायइखरुदीवपच्छच्छिमग्गगा पोस्करवर

इंद्री मननी संवर ६ ॥ छ प्रकारे असंवर कट्ठा तेकहेछे । श्रोत्रेद्रीनो असंवर यावत् फरसेंद्रीनो असंवर ५ । नोइंद्री मननी असंवर ॥ छ प्रकारे साता कही तेकहेछे । श्रोत्रेद्रीनी साता यावत् फरसेंद्रीनी साता ५ । नोइंद्री मननी साता ६ ॥ छ प्रकारे असाता कही ते कहेछे । श्रोत्रेद्रीनी असाता यावत् फरसेंद्रीनी असाता ५ । नोइंद्री मननी असाता ६ ॥ छ प्रकारे प्रायश्चित्त ते कहैछे आलोयणा योग्य १ । प्रतिक्रमण योग्य २ । आलोयण प्रतिक्रमण बेने योग्य ३ । विवेकने योग्य आधाकरमी आहार परठवे ४ । कायोत्सर्ग योग्य ५ । तपयोग्य ६ ॥ छ प्रकारे मनुष्य कट्ठा ते कहैछे जंबू

हे ॥ इत्यत्र समूर्च्छनजमनुष्या स्त्रिविधाः कर्मभूमिजादिभेदेन तथा गर्भव्युत्क्रांतिका स्त्रिधा तथैवेति षोढा ॥ चारणति ॥ जघाचारणा विद्याचारणाश्च

दीवहृपुरच्छिमरुगा पुष्करवरदीवहृपञ्चच्छिमरुगा अंतरदीवगा । अथवा षड्विहा मणुस्सा पन्नत्ता तंजहा  
संमुच्छिममणुस्सा कम्मजूमिगा अकम्मजूमिगा २ अंतरदीवगा ३ गप्पवक्कातियमणुस्साकम्मजूमिगा ४ अक  
म्मजूमिगा ५ अंतरदीवगा ६ । षड्विहा इहिमंता मणुस्सा प० तं० अरहंता चक्रवर्ती बलदेवा वासुदेवा  
चारणा विज्जाधरा । षड्विहा अणिहिमंता मणुस्सा पन्नत्ता तंजहा हेमवंतगा हेरसवंतगा हरिवसगा  
रम्मगवंसगा कुरुवासिणो अंतरदीवगा । षड्विहा उत्सर्पिणी प० तं० सुसमसुसमा जाव दुसमदुसमा । ष

द्वीपना १ । घातकी खंठद्वीपना पूर्वार्द्धेना मनुष्य २ । घातकीखंठ पश्चिमार्द्धेना मनुष्य ३ । पुष्करवरद्वीपार्द्धेना मनुष्य ४ । पुष्करवरद्वीप पश्चिमार्द्धे  
ना मनुष्य ५ । अंतरद्वीपना मनुष्य ६ ॥ अथवा ष प्रकारे मनुष्य कहिया ते कहैछे समूर्च्छिम कर्म जूमिनां मनुष्य १ । समूर्च्छिम अकर्म भूमिना म  
नुष्य २ । अंतरद्वीपना ३ । गर्भव्युत्क्रांतिक कर्म भूमिना मनुष्य ४ । अकर्म जूमिना गर्जज मनुष्य ५ । अंतरद्वीपना ६ ॥ ष प्रकारे रिद्धिवंत मनुष्य  
कह्या ते कहैछे अरिहंत १ । चक्रवर्ति २ । बलदेव ३ । वासुदेव ४ । जघाचारणा ५ । विद्याधर ६ ॥ ष प्रकारे रिद्धिरहित मनुष्य कहिया ते कहैछे  
हेमवंत क्षेत्रना १ । ऐरण्यवत क्षेत्रना २ । हरिवर्ष क्षेत्रना ३ । रम्यक क्षेत्रना ४ । देवकुरु उत्तरकुरुना ५ । अंतरद्वीपना ६ एहसर्व युगलियाछे ॥ ष  
प्रकारे अवसर्पिणी ते कहैछे सुसम सुसमा १ । यावत् दुसमदुसमा छठो आरो ६ ॥ ष प्रकारे उत्सर्पिणी कही ते कहैछे दुखम दुखमा १ । यावत्



विद्याधरा वैताव्यादिनिवासिनः ॥ कृधणसहस्राइंति ॥ त्रीन् कोशानित्यर्थः ॥ कृधणपलिओवमाइति ॥ त्रीणिपल्योपमानीत्यर्थः संहनन मस्थिसंचयो

हिहा उंसप्पिणी प० तं० दुसमदुसमा जाव सुसमसुसमा । जंबूद्वीवेदीवे जरहेरवएसुवासेसु तीताए उरस  
प्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया ढधणुसहस्साइं उहमुच्चत्तेण होत्या ढच्चअरुपलिउवमाइं परमाउं पा  
लइत्ता जंबूद्वीवेदीवे जरहेरवएसुवासेसु इमीसे उंसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए एवंचेव । जंबूजरहेरवए  
आगमिस्साए उंसप्पिणीए सुसमसुसमाए एवंचेव जाव ढच्चअरुपलिउ वमाइंपरमाउपालइस्संति । जंबूद्वीवे  
दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया ढधणुसहस्साइ उह मुच्चत्तेण पन्नत्ता ढच्च अरुपलिउवमाइं परमाउं पाल  
यति । एव धायइखरुदीवपुरच्छिमं चत्तारि आलावगा जाव पुक्करवरदीवहपच्चत्तिमं चत्तारि आला

सुखम सुखमा ६ ॥ जंबूद्वीपमां जरत ऐरवत क्षेत्रने विषे गई उरसप्पिणीमां सुखम सुखमा समय तेविषे मनुष्य ७ हजार धनुष उचा उंचपणै थ  
या । ७ अर्द्ध पल्योपमनो आऊखो पालीने जंबूद्वीपने विषे भरत ऐरवत क्षेत्रे आ अवसप्पिणी काले सुसमसुखमा । इमज जंबूना जरत ऐरवते आ  
वती उत्सप्पिणीये सुखमसुखमा समयने विषे । इमज यावत् ७ अर्द्धपल्योपमनो आऊखो पालसे । जंबूद्वीपे देवकुरु उत्तर कुरुने विषे मनुष्य ७ ह  
जार धनुष उचा उचपणै कह्या । ७ अर्द्धपल्योपमनो आऊखो पालसे । इम धातकी सड द्वीपना पूर्वार्द्धे चार आलावा कहवा यावत् पुक्कर वर  
द्वीप पश्चिमार्द्धे पणि चार आलावा कहवा ॥ ७ प्रकारे सघयण कह्या तेकहैले वज्जरिपन्नाराच १ । रिपन्नाराच सघयण २ । नाराचसघयण ३ ।

वक्ष्यमाणोपमानोपमेयः शक्तिविशेषइत्यग्रे तत्र वज्र कीलिका ऋषभः परिवेष्टनपट्टः नाराच उभयतो मर्कटबन्धः यत्र द्वयोरस्थौ रुभयतो मर्कटबंधे  
न वदयोः पट्टाकृतिना तृतीयेनास्थापरिवेष्टितयो रूपरि तदस्थित्वितयभेदिकीलिकाकार वचनामक मस्थि भवति तद्वज्रऋषभनाराच प्रथमं यत्रतु की  
लिका नास्ति त दृषभनाराच द्वितीयं यत्रतू भयो मर्कटबन्धएव तन्नाराच तृतीय यन्त्रे कतो मर्कटबन्धो द्वितीयपार्श्वकीलिका तदर्धनाराच चतुर्थ  
कीलिकाविद्वास्थिद्वयसंचितं कीलिकाख्यपंचम अस्थिद्वयपर्यंतस्पर्शनलक्षण सेवामार्त्त सेवा मागतमिति सेवार्त्तषष्ठं शक्तिविशेषपक्षे त्वेवविधदार्वादे  
रिवदृढत्व संहननमिति इहगाये वज्ररिसभनाराय पटमवौचरिसहनारायं नारायमदनारा यकीलियातहयच्छेवठं ॥ १ ॥ रिसहोयहोइपट्टो वज्रपुण  
कीलियवियाणाहि उभयोमक्कडबधे नारायंतवियाणाहिति ॥ २ ॥ संस्थान शरीराकृति रवयवरचनात्मिका तत्र समाः शरीरलक्षणीकृतप्रमाणा विसवा  
दिन्य अतस्तो सयो यस्य त त्तमचतुरस्रं अस्त्रिस्त्रिह चतुर्दिग्विभागोपलजिताः शरीरावयवा स्ततश्च सर्वेप्यवयवाः शरीरलक्षणीकृतप्रमाणा व्यभिचारिणो  
यस्य नतु न्यूनाधिकप्रमाणा स्तत्तल्व समचतुरस्र तथा न्यग्रोधवत्परिमंडलं यथा न्यग्रोध उपरि सपूर्णावयवो ऽधस्तनभागे पुन न तथा तथेद मपि नाभे  
रुपरि विस्तरबहुल शरीरलक्षणीकृतप्रमाणभा गधस्तु हीनाधिकप्रमाणमिति तथा ॥ सादीति ॥ आदि रिहोत्सेधास्थो नाभे रधस्तनो देहभागी गृह्यते ते

वगा । तद्विहे संघयणे पन्नत्ते तंजहा वइरोसज्जणारायसंघयणे उसज्जनारायसंघयणे नारायसंघयणे अण्  
णारायसंघयणे कीलियासंघयणे च्छेवठसंघयणे । तद्विहे संठाणे प० तं० समचउरसे णिग्गोहपरिमंळले साई

अर्द्धनाराच संघयण ४ । कीलिका संघयण ५ । छेवठोसंघयण ६ ॥ छ प्रकारे संस्थान कट्या तेकहैछे समचतुरस्र १ । न्यग्रोधपरिमंडल २ । सादि ३ ।

ना दिना शरीरलक्षणोक्तप्रमाणभाजा सह वर्तते यत्त त्वादिसर्वमेव हि शरीरविशिष्टेना दिना सह वर्तत इति विशेषणा न्यथानुपपत्ते रिह विशिष्टता लभ्यते अतः सादिउत्सेधबहुल परिपूर्णोत्सेधमित्यर्थः ॥ खुजेति ॥ अधस्तनकायं मडह इहा धस्तनकायशब्देन पादपाणिशिरोग्रीवमुच्यते तेष्वत्र शरीरलक्षणोक्तप्रमाणव्यभिचारि यत्पुनः शेष तद्यथोक्तप्रमाण तत्कुञ्जमिति ॥ वामणेति ॥ मडहकोष्ठं यत्रहि पाणिपादगिरोग्रीव यथोक्तप्रमाणोपेत यत्पुनः शेष कोष्ठं तन्मडह ग्यूनाधिकप्रमाण तद्वामन ॥ हुडेति ॥ सर्वत्रा सस्थित यस्यहि प्रायेणै कोप्यवयवः शरीरलक्षणोक्तप्रमाणेन न संवदति सर्वत्रासस्थित हुडमित्युक्तं च तुल्यवित्तरबहुल २ उरसेहबहुच ३ मडहकोष्ठं ४ हिडिगकायमडह सव्वत्यासठियहुडंति ॥ १ ॥ इहगाथायां सूत्रोक्तप्रमाणेक्षया चतुर्थपंचमयो व्यत्ययो दृश्यत इति ॥ अणत्तवओत्ति ॥ अकपायो ह्यात्मा भवति स्वस्वरूपावस्थितत्वा त्वा न्नभवति यः सो ऽनात्मवान् सकषाय इत्यर्थः तस्य अहिताय अपथाय अशुभाय पापाय असुखायवा दुःखाया क्षमाया सगतत्वाय अक्षान्त्यैवा अनिःश्रेयसाय अकल्याणाय अननुगामिकत्वाय अशुभानुबन्धाय भवंति मानकारणतयै हिकासुषिकापायजनकत्वादिति पर्यायो जन्मकालः प्रव्रज्याकालोवा सच महानेव मानकारण भवतीति महानिति विशेषणं द्रष्टव्यं मथवा गृहस्थापेक्षया ऽप्योपि प्रव्रज्यापर्यायो मानहेतुरेवेति तत्र जन्मपर्यायो महानहिताय यथा बाहुबलिन एवमन्येपि यथासभवंवाच्या नवर ॥ परिया लेत्ति ॥ परिवारः शिष्यादिः श्रुत पूर्वगतादि उक्तं च जहजहबहुसुग्रीस मओयसोसगणसपरिबुडीय अवणिच्छिओयसमये तहतहसिद्धतपडणीओत्ति

खुजे वामणे कुञ्जे । ठठाणा अणत्तवतो अहियाए असुजाए जाव अणाणुगामियत्ताए जवति तजहा परि

कुञ्ज ४ । वामन ५ । हुंड ६ ॥ ४ स्थानक अनात्मवतने आत्मस्वजाव रहितने एतले कषाय सहितने अहितकारी अशुजकारी अक्षमाकारी अनिश्रे

॥ १ ॥ तपो नशनादि लोभो द्वादीनां पूजा स्तवादिरूपा तत्पूर्वकः सत्कारो वस्त्राभ्यर्चनं पूजायांवा आदरः पूजासत्कारइति जाति मर्तकः पक्ष स्तया  
 आर्या अपापा निर्दोषा जात्यायां विशुद्धमात्काइत्यर्थः अवष्टेत्वाद्यनुष्टुप्प्रतिकृतिः षडप्येता इभ्यजातय इति इभमर्हंतीतीभ्या यद्द्रव्यस्तूपांतरित उच्छ्रित  
 कदलिकादडो हस्ती नदृश्यते ते इभ्याइतिश्रुति स्तेषा जातय इभ्यजातय स्ता एताइति कुल पैटकः पक्ष उग्रा आदिराजेना रचकत्वेन येव्यवस्थापिता  
 स्तद्वश्याश्च येतु गुरुत्वेन व्यवस्थापिता स्ते भोगा स्तद्वश्या येतुवयस्यतयाचरिता स्तेराजन्यास्तद्वश्याश्च इच्छाकवः प्रथम प्रजापतिवशजाः ज्ञाताः कुरवश्च  
 महावीरशान्तिजिनपूर्वजा अथवै ते लोकरूढितो ज्ञेया इयच जातिकुलार्यादिका लोकस्थिति रिति लोकस्थितिप्रत्यासत्त्या तामेवाह ॥ कृत्विहेत्यादि ॥

याए परियाले सुए तवे लाजे पूयासक्कारे । ठठाणा अत्तवतो हियाए जाव अण्णाणुगामियत्ताए ज्वंति  
 तंजहा परियाए परियाले जाव पूयासक्कारे । ठठ्ठिहा जाइअरिया मणुस्सा पन्नत्ता तंजहा अंवठायकलदाय  
 वेदेहावेदिगाइया हरियाचुंचुणाचेव ठप्पेयाइप्पजाइउ ॥ १ ॥ ठठ्ठिहा कुलारिया मणुस्सा पन्नत्ता तंजहा

यशकारी संसारना पारने आपनार न होय मानना करवाथी ते कहैछे पर्यायते दीक्षा तथा जन्मनो १ । परिवारनो अहंकार करै २ । सूत्र जग्या  
 नो २ । तपनो ३ । लाजनुं ४ । पूजासत्कारनो ६ । कस्थानक आत्मस्वभाववतने अकर्षाईने यावत् संसारना पार पामिवाने मानना अणकरवाथी  
 तेकहैछे पर्याय उत्तमकुल जन्म दीक्षा १ । परिवारनो अभिमान २ । यावत् पूजा सत्कारनो मान नकरे ६ ॥ ठ प्रकारे जातिआर्य मनुष्य कह्या  
 तेकहैछे अबष्ट १ । कलिंद २ । विदेह ३ । विदेहगा ४ । हरिता ५ । चुंचुणा ६ ॥ एह छ इज्य जातिनी स्त्रीना पुत्र १ ॥ छ प्रकारे कुल जे पितानो

॥ टीका ॥  
 इदं पूर्वमेव व्याख्यातं नवर मजीवा गोदारिकादिपुद्गला स्ते जीवेषु प्रतिष्ठिता आश्रिता इदं च नवधारण वीक्ष्यं जीवविरहेणापि बहुतराणा मजीवा  
 नामाख्यानात् पृथिवीरहितोपि असंस्थावरवदिति तथा जीवाः कर्मसु ज्ञानावरणादियु प्रतिष्ठिताः प्रायः स्थावरहिताना तेषामभावादिति अनंतरं  
 ज्ञानप्रतिष्ठिता जीवा उक्ता स्तेषां च दिक्ष्वेव गत्यादयो भवन्तीति दिग् स्थासु गत्यादींश्च प्ररूपयन्नाह ॥ अहिंसा ओदहादि ॥ सूक्तद्वयक इदं च भिन्नानकएव  
 व्याख्यातं तथापि निश्चि द्द्यते प्राचीना पूर्वा प्रतीचीना पश्चिमा दक्षिणा प्रतीता उदीचीना उत्तरा ऊर्ध्वमधस्तेति प्रतीते विदिशो नदिशो विदितादे  
 वेति पठेतां नवधा एभिरेव जीवानां वक्ष्यमाणा गतिप्रभृतयः पदार्थाः प्रायः प्रवर्तन्ते पटस्थानकानुरोधेन वा विदिशो नविवदिता इति पठेय दिग् उक्ता  
 इति षड्भि दिग्भि जीवानां गति कल्पति स्थान गमन प्रवर्तते अनुश्रेणिगमना चेपा मिल्येव मेतानि चतुर्दशसूत्राणि नेयानि नवर गति रागतिश्च प्रज्ञा

उग्गा जोगा राइन्ना इस्कागा णाया कौरवा ॥ बहिहा लोगठिई प० तजहा आगासपइठिएवाए वाय  
 पइठिएउदही उदहिपइठियापुढवी पुढविपइठियातसाथावरापाणा अजीवाजीवपइठिया जीवाकम्म  
 पइठिया । बहिसानं पन्नत्तानं तंजहा पाईणा पफोणा दाहिणा उईणा उह्वा अहा । बहिंदिसाहि जीवाणं

पन्न तेह्यी आर्य मनुष्य कक्षा ते कहैछे उग्रकुलना १ । जोगकुलना २ । राजाना कुलना ३ । इदवाकुलना ४ । ज्ञातकुलना ५ । कौरव कुलना ६ ॥  
 छ प्रकारे लोकस्थिति कही ते कहैछे आकाशे वायु रक्षोछे घनवात १ । वायुने आधारे घनोदधिछे २ । घनोदधीने आधारे पृथिवीछे ३ । पृथ्वीने  
 आधारे नस अने थावर प्राणीछे ४ । जीवने आधारे अजीवछे ५ । जीव कर्म प्रतिष्ठितछे ६ ॥ अहिसि कही ते कहैछे पूर्व १ । पश्चिम २ । दक्षिण ३ ।

पक्षस्थानापेक्षिणी प्रसिद्धे एव व्युत्क्रांति रत्यत्तिस्थानप्राप्तस्यो त्यादः सोपि ऋजुगतौ षट्स्त्रेव दिक्षु तथा आहारः प्रतीतः सोपि षट्स्त्रेव दिक्षु एतद्वावस्थि  
तप्रदेशावगाढपुद्गलानामेव जीवेन स्पर्शनात् स्पृष्टानामेवा हरणा दित्येवं षट्दिकता यथासंभव वृद्धादि ष्वप्यूह्येति तथा वृद्धिः शरीरस्या निर्बुद्धि हानि  
स्तस्यैव विकुर्वणा वैक्रियकरण गतिपर्यायो गमनमात्र नपरलोकगमनरूप स्तस्य गत्यागतिग्रहणेन गृहीतत्वादिति समुद्घातो वेदनादिकः सप्तविधः काल  
संयोगः समयक्षेत्रमध्ये आदित्यादिप्रकाशसवधलक्षणः दर्शनं सामान्यग्राही बोध स्तच्चेह गुणप्रत्ययावध्यादि प्रत्ययरूप तेना भिगमो वस्तुनः परिच्छेद  
स्त व्याप्तिर्वा दर्शनाभिगम एवं ज्ञानाभिगमोपि जीवाभिगमः सत्त्वाभिगमो गुणप्रत्ययावध्यादिप्रत्ययचतो ऽजीवाभिगमः पुद्गलास्तिकायाद्यभिगमः सोपि  
तथैवेति एवमिति तथा ॥ क्वहिदिसाहिजौवाणगईपवत्तईत्यादि ॥ सूत्रा ण्युक्तानि एव चतुर्विंशतिदडकचिताया ॥ पचिंदियतिरिक्खजोणियाणं क्वहिंदि

गई पवत्तई तंजहा पाईणाए जाव अहाए । एव भागई वक्कंती अहारे बुहो निबुहो विगुह्वाणा गइपरियाए  
समुग्घाए कालसंजोगे दसणाज्जिगमे जीवाज्जिगमे अजीवाज्जिगमे एवंपचेंदियतिरिक्खजोणियाणवि मणुस्सा

उत्तर ४ । ऊर्ध्व ५ । अधो ६ ॥ क्व दिशिमां जीवने गति प्रवर्त्त ते कहैळे पूर्वदिशिमा यावत् अधोदिशिमां ६ ॥ एम आववो १ । उपजवानो स्थानक  
२ । आहार ३ । वृद्धि शरीरनी ४ । हानि शरीरनी ५ । विकुर्वणा वैक्रियशरीर करवो ६ । गतिपर्याय चालवो ७ । समुद्घात वेदनादि ८ । कालदिव  
सादिकनो संयोग ९ । दर्शन सामान्यथी देखवो १० । ज्ञाननुं अज्जिगम जाणवो ११ । जीवनो अभिगम १२ । अजीव पुद्गलादिकनो अभिगम जाणवो  
१३ । एम पंचेद्री तिर्यंच योनियाने । तथा मनुष्य पणि क्व दिशिथी कहवो ॥ क्व स्थानके अमणा निग्रंथ आहार करतो अतिक्रमे नथी आज्ञा प्रते

साहिगईत्यादी ॥ न्यपि वाच्यानि तथा मनुष्यसूत्राण्यपि शेषेषु नारकादिपदेषु षट्सु दिक्षु गत्यादीनां सामर्थ्येना संभव स्तथाहि नारकादीना द्वाविंशते जीवविशेषाणां नारकदेवेषू त्यादाभावा दूर्धाधोदिशो विवक्षया गत्यागत्यो रभाव स्तथा दर्शनज्ञानजीवाजीवाभिगमा गुणप्रत्ययावधिलक्षणप्रत्यक्षसतान रूपान सत्येव तेषा भवप्रत्ययावधिपक्षे तु नारकज्योतिष्का स्तिर्यगवधयो भवनपतिव्यतरा जर्धावधयो वैमानिका स्त्वधोवधयः शेषा निरवधय एवेति भावना विवक्षाप्रधानानिच प्रायो ऽन्यत्रापि सूत्राणीति अनंतरसूत्रे मनुष्याणामजीवाभिगम उक्तइति मनुष्यप्रत्यासत्या संयतमनुष्याणा माहारग्रहणाग्रहणकारणा नि सूत्रद्वयेनाह ॥ छहीत्यादि ॥ कण्ठ्य सवर माहार मशनादिक माहारय क्रम्यवहरन् नातिक्रामत्याघ्रां पुष्टकारणत्वा दग्न्यथा त्वतिक्रामत्येव रागादिभावा त्तद्यथा ॥ वेदनेत्यादिगाथा ॥ वेदनाच क्षुद्देना वैयावृत्यं च चार्यादिकृत्यकरण वेदनावैयावृत्य तत्रविषयेभुंजीत वेदनोपशमनार्थं वैयावृत्यकरणार्थचेतिभावः ईर्यागमनं तस्याः विशुद्धि र्युगमात्रनिहितदृष्टित्व मोर्याविशुद्धि स्तस्यैद्रद मोर्याविशुद्ध्यर्थे द्रव्य विशुद्धिशब्दलोपा दीर्यार्थं मित्युक्त बुभुक्षितो हीर्याशुद्धा वशक्तः स्यादिति तदर्थमिति चसमुच्चये सयमः प्रेक्षोक्षेक्षाप्रमाजनादिलक्षण स्तदर्थं तथेति कारणान्तरसमुच्चये प्राणा उच्छ्वासादयो बल वा प्राण स्तेषा तस्यवा वृत्तिः

णवि । छहिंठाणेहिं समणेनिगंथे आहारमाहारेमाणे णाइक्कमइ तंजहा वेयणवेयावच्चे इरियठाएयसं जमठाए तहपाणवत्तियाए छठपुणधम्मचिंताए ॥ १ ॥ छहिंठाणेहिं समणेनिगंथे आहारं वोच्छिंदमाणे

तेकहैछे क्षुधा वेदनी समाववा १ । वेयावच करवा २ । ईर्यासुमति पालवाने ३ । सयमने अर्थ ४ । तिमज प्राणराखवाने ५ । छठो वली धर्मचिंत नाने अर्थ ६ ॥ १ ॥ छ स्थानके श्रमण निग्रंथ आहार प्रते छांडतो अतिक्रमे नथी ते कहैछे रोग आव्यांथी १ । उपसर्ग आव्यांथी २ । क्षुधा समाव

पालनं तदर्थं प्राणसंधारणार्थमित्यर्थः षष्ठं पुनः कारणं धर्मचित्त्याये गुणनानुपेक्षार्थमित्यर्थः इत्येतानि षट्कारणानीति अत्रभाष्यगार्थे नल्लिकुहाएसरिसा  
वियणाभुंजेज्जतप्पसमण्ठा काओ [ वुभुक्षितः ] वेयावच्चं नतरइकाओअओभुजे ॥ १ ॥ इरियनविसोहेइ पेहाईयंचसंजमकाओ थामोवापरिहायइ गुणणुपे  
हासुयअसत्तोत्ति ॥ २ ॥ वोळ्ळिदमाणेत्ति ॥ परित्यजन् आतके ज्वरादा वुपसर्गो राजस्वजनादिजनिते प्रतिकूलानुकूलस्वभावे तित्तिचणे अधिसहने कस्या  
ब्रह्मचर्यगुप्तेः मैथुनव्रतसंरक्षणस्या हारत्यागिनोहि ब्रह्मचर्यं सुरत्तं स्यादिति प्राणिदयाच सपातिमन्नसादिसरक्षण तप श्रुतार्थादिषण्मासांत प्राणिदयातप  
स्तच्च तद्धेतुश्च प्राणिदयातपोहेतु स्तस्मात् प्राणिदयातपोहेतो दयादिनिमित्त मित्यर्थं स्तथा शरीरव्यवच्छेदार्थं देहत्यागाय आहार व्यवच्छिद नातिक्रा  
म त्याज्जामिति प्रक्रम इहगाथे आयकोरजमाई रायासन्नाइगाइउवसग्गे बभवयपालण्ठा पाणिदयावासमहियाई ॥ १ ॥ तवहेउचउत्थाइ जावयछ  
म्मासिओतवोहोइ छुंशरीरवोच्छे यण्ठयाहोअणाहारोत्ति ॥ २ ॥ अनंतर अमणस्या हारग्रहणकारणा न्यभिहितानीति अमणादे जीवस्या नुचितका  
रिण उन्मादस्थानान्याह ॥ छहीत्यादि ॥ इदंच सूत्रं पचस्थानकएव व्याख्यातप्राय नवरं षड्भिः स्थानै राक्का जीव उन्माद मुग्गत्ततां प्राप्पुया दुन्मादश्च

णाइक्कमइ तंजहा आतंके उवसग्गे तित्तिस्कणे बंजचेरगुत्तीए पाणदयातवहेउं सरीरवोच्छेयण्ठाए । ठहिं  
ठाणेहिं आया उम्मायंपाउणेज्जा तजहा अरहंताणमवसंवदमाणे अरहंतपन्तत्तस्सधम्मस्सअवन्तंवदमाणे

वाने ३ । ब्रह्मचर्यं राखवाने ४ । जीवदया पालवाने तपने अर्थ ५ । शरीर छांटवाने अणसणने ६ ॥ छ स्थानके आत्मा उन्माद प्रते पामै उन्माद  
ते महा मिथ्यात्व लक्षण तेकहैछे अरिहंतना अवर्णवाद बोलतो १ । अरहंत प्ररूपित धर्मनो अवर्णवाद बोलतो २ । आचार्य उपाध्यायनो अवर्ण



महामिष्यात्वलक्षण स्तीर्यकरादीना मवर्णवदतो भवत्येव तीर्थकराद्यवर्णवदनकुपितप्रवचनदेवतातोवा सी ग्रहणरूपो भवेदिति पाठांतरेण ॥ उन्मायप  
मायति ॥ उन्मादः सङ्ग्रहत्वं सएव प्रमादः प्रमत्तत्वं माभोगशून्यतोन्मादप्रमाद प्रथमो न्मादश्च प्रमादश्च हितप्रवृत्तिहिताप्रवृत्तौ उन्मादप्रमादं प्राप्नुया  
दिति ॥ यवस्यति ॥ यवर्णं प्रस्तावा मवज्जांवा वदन् व्रजन्वा कुर्वन्नित्यर्थः ॥ धम्मस्सत्ति ॥ श्रुतस्य चारित्र्यस्यवा आचार्योपाशायानाञ्च चतुर्वर्णस्य णम  
पादिभेदेन चतुःप्रकारस्य यच्चावेशेन चैव निमित्तान्तरकुपितदेवाधिष्ठितत्वे मोहनीयस्य मिष्यात्ववेदशीकोदयेनेति उन्मादसहचरः प्रमादप्रति तमाह  
॥ छचिहेत्यादि ॥ षड्विधः षट्प्रकारः प्रमदनं प्रमादः प्रमत्तता सदुपयोगाभावइत्यर्थः प्रजप्त स्वादया मयं सुरादि स्वादेव प्रमादकारणत्वात् प्रमादो  
मयप्रमादो यतआह चित्तभ्रातिर्जायतेमवपाना चित्तभ्रांतेःपापचर्यामुपैति पापं कृत्वा दुर्गतिं यांति मूढा स्वस्मान्नायं नैव पेयं न देयमिति ॥ १ ॥ एव सर्वत्र  
नवर निद्रा प्रतीता तद्दोषस्याय निद्राशौलीनश्रुतनापिवित्त लब्धुं शक्नोहीयतेवैषताभ्यां ज्ञानद्रव्याभावतोदुःखभागी लोकक्षेतेस्यादतीनिद्रया लमिति ॥ १ ॥  
विषयाः शब्दादय स्तेषां चैव प्रमादता विषयव्याकुलचित्तो हितमहितवानवेत्तिजतुरयं तस्मादनुचितचारी चरतिचिरंदुःखकांतारि ॥ १ ॥ कृपायाः क्रोधा

आयरियउवज्जायाणमवन्तंवदमाणे चाउबन्नस्ससंघस्सयअवन्तंवदमाणे जरुकावेसेणचेवमोहणिज्जस्सकम्म  
स्सउदएणं । छविहेपमाए पस्सते तंजहा मज्जपमाए णिद्दापमाए विसयपमाए कसायपमाए जूयपमाए पफि

वाद बोलतो ३ । चतुर्विधसंघनो अवर्णवाद बोलतो ४ । यक्षादिकना आवेशथी ५ । मोहनीकर्मना उदयथी ६ ॥ छ प्रमाद कट्या तेकहैले मदिरा  
प्रमाद १ । निद्राप्रमाद २ । विषयप्रमाद ३ । कृपायप्रमाद ४ । जूवानोप्रमाद ५ । प्रत्युपेक्षणाप्रमाद वरत्र पात्र आहारादि गवेषणा नकरे ६ ॥ छ

दयः तेषां मध्येवं प्रमादता चित्तरत्नमसंक्लिष्ट मान्तरंधनमुच्यते तस्यतन्मुषितंदोषै स्तस्यशिष्टाविपत्तयइति ॥ १ ॥ द्यूतं प्रतीतं तदपिप्रमादएव द्यूतासक्तस्य  
 सच्चित्तं धनकामाःसुचेष्टितं नश्यत्येवपरंशीर्षं नामापिचविनश्यति ॥ १ ॥ तथा प्रत्युपेक्षणं प्रत्युपेक्षणा साच द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदा चतुर्धा तत्र द्रव्यप्रत्युपेक्षणा  
 वस्त्रपात्राद्युपकरणानां मशनपानाद्याहाराणांच चक्षुर्निरीक्षणरूपा क्षेत्रप्रत्युपेक्षणा कायोत्सर्गनिषेदनशयनस्थानस्य स्थंडिलानां मार्गस्य विहारक्षेत्र  
 स्यच निरूपणा कालप्रत्युपेक्षणा उचितानुष्ठानकरणार्थं कालविशेषस्य पर्यालोचना भावप्रत्युपेक्षणा धर्मजागरिकादिरूपा यथा किंकयकिवासेस किं  
 करणिज्जतवचनकरेमि पुष्पावरत्नकाले जागरओभावपडिलेहति ॥ १ ॥ तत्र प्रत्युपेक्षणायां प्रमादः शैथिल्यं आज्ञातिक्रमीवा प्रत्युपेक्षणाप्रमाद अनेनच  
 प्रमार्जना भिक्षाचर्यादिषु इच्छाकारमिथ्याकारादिषुच दशविधसमाचारौरूपव्यापारेषु यः प्रमादो सा बुंपलचितः तस्यापि सामाचारौगतत्वेन षष्ठप्रमाद  
 लक्षणाव्यभिचारित्वादिति ॥ अनंतर प्रत्युपेक्षाप्रमाद उक्तो ऽथ तामेव तद्विशिष्टामाह ॥ छव्विहति ॥ षड्विधा षट्भेदा प्रमादे नोक्तलक्षणेन प्रत्युपेक्षा  
 प्रमादप्रत्युपेक्षा प्रज्ञप्ता तद्यथा ॥ आरभडागाहा ॥ आरभटा वितथकरणरूपा अथवा त्वरित सर्व मारभमाणस्या थवा प्रत्युपेक्षिता एवैकत्र य दन्याग्य  
 वस्त्रगृहण सा आरभटा साच वर्जनीया सदोषत्वादिति सर्वत्र संबन्धनीयमिति सम्मर्दा यत्र वस्त्रस्य मध्यप्रदेशे सवलिता कोणाभवति यत्रवा प्रत्युपेक्षणीयो  
 पधिवेटिकाया मेवो पविश्य प्रत्युपेक्षते सा संमर्देति मोसली प्रत्युपेक्षमाणवस्त्रभागेन तिर्यगूर्ध्वमधोवा घट्टनरूपा ॥ तद्व्यति ॥ तृतीया प्रमादप्रत्युपेक्षणेति

लेहणापमाण । छव्विहा पमायपफिलेहा पस्यत्ता तंजहा आरज्जकासम्मदा वज्जेयव्वायमोसलीतइया पप्फोऊ

प्रकारे प्रमाद पफिलेहणा कही ते कहैके आरज्जट उतावला थई वस्त्रपफिलेहै १ । संमर्दना माहोमाहि वस्त्र लगाडे २ । वर्जवी तीजी मोसली ति

कचित् ॥ अष्टाण्ठवर्णायति ॥ दृश्यते तत्र गुर्ववगृहादिके अस्थाने प्रत्युपेक्षितोपधेः स्थापनं निक्षेपो ऽस्थानस्थापना प्रस्फोटना प्रकर्षेण धूननं रेणुगुडित  
 स्ये व वस्त्रस्येति इयच चतुर्थी ॥ विस्त्रित्तति ॥ वस्त्र प्रत्युपेक्ष्य ततो न्यत्र यमनिकादौ प्रक्षिपति य दधवा वस्त्राञ्चलादीना यदूर्ध्वक्षेपण सा विक्षिप्तोच्यते  
 ॥ चेद्व्यति ॥ वेदिका पंचप्रकारा तत्र ऊर्ध्ववेदिका यत्र जानुनो रुपरि हस्तौ कृत्वा प्रत्युपेक्षते १ अधोवेदिका जानुनो रधो हस्तौ निवेश्य २ एव तिर्य  
 ग्वेदिका जानुनोः पार्श्वतो हस्तौ नीत्वा ३ द्विधावेदिका बाह्यो रंतरे द्वे अपि जानुनौ कृत्वा ४ एकतोवेदिका एकं जानु बाह्यो रंतरे कृत्वेति ५ षष्ठी प्र  
 मादप्रत्युपेक्षणेति प्रक्रमः इहगाथे विवहकरणमितुरिय अणअणचगेणहआरभडा अतोध्वहोज्जकोणा निसियणतल्लेवसग्गहा ॥ १ ॥ गुरुउग्गहादडाण प  
 प्फोडणरेणुगुंडिएचेव विक्खेवतुक्खेवो चेद्व्यपणगंचक्खोसत्ति ॥ २ ॥ उक्तविपरीता प्रत्युपेक्षणा मेवाह ॥ क्विविहेत्यादि ॥ षड्विधा अप्रमादेन प्रमादविप  
 र्ययेण प्रत्युपेक्षणा अप्रमाद प्रत्युपेक्षणा प्रज्ञप्ता तद्यथा ॥ अणञ्जागाहा ॥ वस्त्रमात्मावा न नर्त्तित न नृत्यदिवकृत यत्र तदनर्त्तित प्रत्युपेक्षणा १ वस्त्र न  
 र्तय त्यात्मानचे त्येय मिह चत्वारो भगाः तथा वस्त्र शरीरंवा न चलित कृत यत्र त दचलित मिहापि तथैव चतुर्भङ्गी २ तथा न विद्यते अनुबन्धः

णीचउत्थी विस्त्रित्तावेइयाढठा ॥ १ ॥ षड्विहा अण्पमाय पफिलेहा पणत्ता तंजहा अणञ्जावियं अचलितं  
 अण्णानुबंधीममोसल्लिंचेव षप्पुरिमाणवखोळा पाणीपाणविसोहणी ॥ १ ॥ ष लेसानु पणत्ता तजहा करह

रक्खो गूढवस्त्र राखे २ । षीथी प्रस्फोटनी वस्त्रने भाटके ४ । व्याक्षिप्त अन्यत्र ऊंचो नींचो नांखे ५ । वेदिका ढींचण ऊपर हाथ राखे ६ ॥ १ ॥ ष  
 प्रकारे अप्रमाद पफिलेहणा कही ते कहैक्खे पडिलेहतो वस्त्र नचावे नथी १ । वस्त्र शरीर नचावे नथी २ । अत्यंत भाटकवानो अनुबधनथी ३ । ति

सातत्य प्रस्फोटकादीनां यत्र त दनुवंधि इन्समासांतोत्र दृश्यः नानुवंधि अननुवंधीतिवा ३ तथा न विद्यते मोसली उक्तलक्षणा यत्र त दमोसलि ४ ॥  
 कृप्पुरिमानवखोडति ॥ तत्र वस्त्रे प्रसारिते सति चक्षुषा निरूप्य तदूर्वाभाग परावर्त्य निरूप्यच त्रयः पुरिमाः कर्त्तव्याः प्रस्फोटकादित्यर्थः तथा तत्परावर्त्य  
 चक्षुषा निरूप्यच पुन रपरे त्रयः पुरिमा एवमेते षट् तथा नवखोटका स्तेच त्रय स्तयः प्रमार्जनानां त्रयेणत्रयेणां तरिताः कार्याइति पदद्वयेनापि पचमी  
 अप्रमादप्रत्युपेक्षणीक्ता पुरिमखोटकानां सदृशत्वादिति तथा पाणे हस्तस्यो परि प्राणानां प्राणिनां कुंष्वादीनामित्यर्थः ॥ विसोहणति ॥ विशोधना प्रमार्ज  
 ना प्रत्युपेक्षमाणवस्त्रेणैव कार्या नवैववारा उक्तन्यायेन खोटकान्तरितेति षष्ठी प्रमादप्रत्युपेक्षणेति इहगाथे वत्येअप्पाणमिय चउहअणच्चावियअचलियच  
 अणुवधिनिरतरया तिरिउट्टहवट्टणामुसली ॥ १ ॥ कृप्पुरिमातिरियकए नवखोडातिण्णितिस्मिअंतरिया तेपुणवियाणियत्वा हत्यमिपमज्जणत्तिपण ॥ २ ॥  
 इयच प्रमादाप्रमादप्रत्युपेक्षा लेश्या विशेषतो भवतीति लेश्यासूत्र लेश्याधिकारादेव पंचेन्द्रियतिर्यग्मनुष्यदेवलेश्यासूत्राणि देवप्रत्यासत्त्या ॥ सक्केत्यादिकानि ॥  
 अग्रमहिष्यादिसूत्राणिवा वगृह्णमतिसूत्रा द्वा ग्वर्त्तौनि कण्ठ्यानिच नवर देवाना जात्यपेक्षया अवस्थितरूपाः षड्लेश्या अवगतव्याइति अनन्तरदे

लेसा जाव सुक्कलेसा । पंचेन्द्रियतिरिक्कजोणियाणं ठ लेसानं पस्सत्तानं तंजहा करहलेस्सा जाव सुक्कलेसा ।  
 एवं मणुस्सदेवाणवि । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्तो सोमस्स महारस्सो ठ अग्रमहिसीनं पस्सत्तानं सक्क

रत्तो गूढ अण ओळ्ळो खेत्यो वस्त्र नराखै ४ । कृप्पुरिमनवखोडा ३ वार हाथ ऊपर वली २ वस्त्र पिहुलोकरी पूंजवो इम बीजीवार एवं क्वार न  
 व खोटका इमज ५ । कुंथु प्रमुख पांखी हाथमां लेई सोधवा जोवा ६ ॥ ४ लेश्या कही तेकहैछे कृष्णलेश्या यावत् शुक्ल लेश्या ६ ॥ पंचेद्री तिर्यंचने

० ॥ रसणं देविंदस्स देवरन्तो जमस्स महारन्तो ढ अग्गमहिसीन पणत्तानं । ईसाणस्सणं देविंदस्स मज्झिम  
 ७ ॥ परिसाए देवाणं ढ पलित्तवमाइं ठिई प० । ढ द्विसाकुमारि महत्तरियाणं पणत्तानं तंजहा रूवा रूवसा  
 सुरूवा रूववई रूवकंता रूयप्पजा । ढ विज्जुकुमारि महत्तरियाणं पणत्तानं तंजहा अला सक्का सतेरा सो  
 यामणा इंदा घणविज्जुया । धरणस्सण णागकुमारिंदस्स णागकुमाररस्सो ढ अग्गमहिसीन पणत्तानं तं०  
 अला सक्का सतेरा सोदामणा इदा घणविज्जुया । नूयाणंदस्सणं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्तो ढ अग्ग  
 महिसीन पणत्तानं तंजहा रूवा रूवसा सुरूवा रूववई रूवकंता रूयप्पजा । जहाधरणस्स । तहा सव्वेसि

७ लेश्या कही तेकहैछे कणलेश्या यावत् शुक्लेश्या ६ ॥ इम मनुष्य देवताने पणि कहवी ॥ शक्र देवेन्द्र देवतानो राजा तेहनो सोमनामा महा  
 राजाने छ अग्रमहिषी कही । शक्रदेवेन्द्र देवताना राजानो यम महाराजा तेहने ढ अग्रमहिषी कही । ईशानेन्द्र देवेन्द्र देवताना राजानी मध्यमपर्व  
 दाना देवतानी छ पत्न्योपमनी स्थिति कही ॥ छदिशाकुमारी कही ते कहैछे रूपा १ । रूपासा २ । सुरूपा ३ । रूपवती ४ । रूपकांता ५ । रूपप्र  
 जा ६ ॥ छ विदुत्कुमारी महत्तरिका कही ते कहैछे आला १ । शक्रा २ । सतेरा ३ । सोदामिनी ४ । इद्रा ५ । घनविदुयता ६ ॥ धरणेन्द्र नागेन्द्र ना  
 गकुमारना राजाने छ अग्रमहिषी कही आला १ । शक्रा २ । सतेरा ३ । सोदामिनी ४ । इंद्रा ५ । घनविदुयता ६ ॥ भूतानेन्द्र नागकुमारना राजाने  
 छ अग्रमहिषी कही तेकहैछे रूपा १ । रूपासा २ । सुरूपा ३ । रूपवती ४ । रूपकाता ५ । रूपप्रजा ६ ॥ एम जिम धरणेन्द्रने तिम सघलाई दत्ति

व वक्तव्यतोक्ता देवाश्च भवप्रत्यया देवविशिष्टमतिमंतो भवंतीति मतिभेदान् सूचयितुं येनाह ॥ क्विहाउगहेत्यादि ॥ मतिराभिनिबोधिकं सा चतुर्विधा  
 अवग्रहेहापायधारणाभिदा तत्रा वग्रहः प्रथमं सामान्यार्थग्रहणं तद्रूपा मति रवग्रहमति रियंच द्विविधा व्यञ्जनावग्रहमति रर्यावग्रहमतिश्च तत्रा र्यावग्र  
 हमति र्द्विधा निश्चयतो व्यवहारतश्च तत्र व्यजनावग्रहोत्तरकाल मेकसामयिकौ प्रथमा द्वितीया त्वन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणा अवायरूपा अपि सा ईहापाययो रु  
 त्तरयोः कारणत्वा दवग्रहमति रित्युपचरितेति यत आह सामण्यमेतग्रहणनिच्छद्वाओसमयमोग्रहोपढमो तत्तोणतरमौहिय वत्युविसेसस्सजोवाओ ॥१॥  
 सोपुणईहावाया वेक्खाओअवग्नहोत्तिउवयरिओ ॥ एसविसेसावेक्ख सामणगिगहएजेण ॥ २ ॥ तत्तोणतरमौहा तत्तोवाओयतव्विसेसस्स द्वयसामणविसेसा  
 वेक्खाजावतिमोभेओ ॥३॥ सव्वत्येहावायो निच्छयओमोत्तुमाइसामण सव्वहारत्यपुण सव्वत्यावग्नहोवाओ ॥ ४ ॥ तरतमजोगाभावे वाओव्वियधारणा

दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स । जहान्नूयाणंदस्स । तथा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स । धरणस्सणं  
 णागकुमारिदस्स णागकुमाररन्नो ढ सामाणियसाहस्सीणं पस्सत्ताणं एव न्नूयाणंदस्सवि जाव महाघोसस्स  
 ढव्विहा जंग्गहमई प० तं० खिप्पमोगिरहई वज्जनोगिरहइ वज्जविधमोगिरहइ धुवमोगिरहइ अणिसि

ण दिशाना इंद्रने यावत् घोपने जिम नूतानेंद्रने तिम सर्व उत्तर दिशाना इंद्रने यावत् महाघोपने ॥ धरण नागकुमारना राजाने छहजार सामा  
 निकदेवता कह्या ॥ एम भूतानेंद्रने पणि यावत् घोपने ॥ छ प्रकारे अवग्रहमती कही प्रथम सामान्यार्थ ग्रहणरूपा मती तेकहैछे शीघ्र अर्थने ग्र  
 हण करे जाणे १ । घणी वेलाये ग्रहण करे २ । घणे प्रकारे ग्रहण करे ३ । अत्यंत पणे सर्वदा ग्रहण करे ४ । लिगचिह्न अनुमाने करी ग्रहण करे ५

१० ॥

५ ॥

तदंतमि सव्यत्यवासणापुण भणियाकालंतरसइयत्ति ॥ ५ ॥ तत्र व्यवहारावग्रहमति माश्रित्य प्रायः षड्विधत्वं व्याख्येयमिति तद्यथा क्षिप्र मेव गृह्णाति  
तूल्यादिस्पर्शं चोपशमपटुत्वा दचिरेणैववेत्ति मति स्तद्विशिष्टः पुरुषोवेति ॥ बहुति ॥ शय्यायां ह्युपविश ग्नुमां स्तत्रस्थयोषित्पुष्पचदनवस्तादिस्पर्शं बहु  
भिन्नजातीयं सत मेकैकं भेदेना बहुध्यते अय योषित्स्पर्शइत्यादि ॥ बहुबिहंति ॥ वद्मो विधा भेदा यस्य स बहुविध स्त योषिदादिस्पर्शं मेकैकं शीतस्नि  
ग्धसृदुकठिनादिरूप मवगृह्णातीति ॥ ध्रुवंति ॥ ध्रुव मत्यंतं सर्वदेत्यर्थः यदा यदा अस्य तेन स्पर्शेन योषिदादिना योगो भवति तदा तदा त मवच्छिन्नत्ती  
त्यर्थ एतदुक्तं भवति सतींद्रिये सति चोपयोगे यदा सौ विषयः सृष्टो भवति तदा त मवगृह्णात्येवेति ॥ अणिस्सियंति ॥ निश्चितो लिगप्रमितो भिधीय  
ते यथा यूथिकाकुसुमाना मत्यन्त शीतसृदुस्निग्धादिरूपः प्राक्स्पर्शो ऽनुभूत स्तेना नुमानेन लिप्तेन त विषय मपरिच्छिंद यदा ज्ञान प्रवर्तते तदा अ  
निश्चित मलिग मवगृह्णाती त्यभिधीयते ॥ असंदिहंति ॥ असदिग्धं निश्चित सकलससयादिदोषरहितमिति यथा तमेव योषिदादिस्पर्शं मवगृह्णत् योषि  
त एवाय चंदनस्यैवाय मित्येव मवगृह्णातीति एव मीहावायधारणामतीनां षड्विधत्वं नवर धारणायां क्षिप्रध्रुवपदे परित्यज्य पुराणदुर्बलपदाभ्या सह  
षड्विधत्वं मुक्त तत्रच पुराण बहुकालीन दुर्बल गहनं चिदादोति क्षिप्रबहुबहुविधादिपदषट्कविपर्ययेणापि षड्विधा अवग्रहादिमति भवतीति मतिभे  
दाना मष्टाविशते द्वादशभि गुणना क्षीणिशतानि षट्त्रिंश दधिकानि भवंति अभाणिव भाष्यकारेण जबहु १ बहुविह २ खिप्पा ३ णिस्सिय ४ निच्छि

यमोगिरहइ असंदिहमोगिरहइ । ठट्टिहा ईहामई पन्तत्ता तंजहा खिप्पमाहइ बज्जमीहइ जाव असंदि

संदेहरहित ग्रहण करे ६ ॥ छ प्रकारे ईहामति कही विचारणारूप ते कहैके शीघ्र विचारणा करे १ । घणी वार ईहाकरे २ । यावत् पूर्वनी परे सं

य ५ ध्रुवे ६ यर १२ विभिन्ना पुणरोगहादओसो तंछत्तीसत्तिसयभेदंति ॥ १ ॥ नाणासहसमूहं बहुपिहंमुणइभिखजाइयं १ बहुविहमणेगभेयं एकेकंनि  
 समहुरादि २ ॥ २ ॥ खिप्पमचिरेण ३ तचिय सरूवओजअणिस्सियमलिग ४ निच्छयमससयजं ५ ध्रुवमच्चतनउकयाइ ६ ॥ ३ ॥ एत्तोच्चियपडिक्खं साहे  
 जानिस्सिएविसेसोवा परधम्मोहिविनिस्सं निस्सियमविनिस्सियइयरति ॥ ४ ॥ इह भावना अत्तिप्रं चिरेण निश्चितं लिंगात् अनिश्चितं सदिग्ध मध्रुवं क  
 दाचि दथवा निश्चितानिश्चितयो रय मपरो विशेषः निश्चितं गृह्णाति गवादिक मर्थं सारगादिधर्मविशिष्ट मवगृह्णाति अनिश्चितं गा द्धोर्धर्मा रवविशि  
 ष्टं गृह्णाति यदिह नसृष्टं तत् स्पष्टमेवेति अनतर मतिरुक्ता तद्विशेषवतश्च तपस्यन्तीति तपोभिधानाय सूत्रद्वय ॥ छविहेत्यादि ॥ गतार्थं एत त्थापि कि  
 च्चि दुच्यते ॥ बाहिरएतवेत्ति ॥ बाह्य मित्यासेव्यमानस्य लौकिकै रपि तपस्तया ज्ञायमानत्वात् प्रायो बहिः शरीरस्य तापकत्वाद्वा तपति दुनोति शरीर

छमीहइ । छविहा अवायमई पन्नत्ता तंजहा खिप्पमवेइ जाव असंदिद्धं अवेइ । छविहा धारणा पस्यत्ता  
 तंजहा बज्जधारेइ बज्जविहंधारेइ पोराणं धारेइ दुद्धरंधारेइ अणिसियंधारेइ असदिद्धंधारेइ । छविहे  
 वाहिरएतवे पस्यत्ते तंजहा अणसणं उमोयरिया निरकायरिया रसपरिच्चाए कायकिलेसो पप्फिसंलीणया ।

देहरहित ईहा करे ६ ॥ छ प्रकारे अवायमति कही निश्चयरूप तेकहैछे शीघ्र निश्चय करे १ । यावत् संदेहरहित निश्चयकरे ६ ॥ छ प्रकारे धारणा  
 कही तेकहैछे घणुंधारण करे १ । घणे प्रकारे धारे २ । जूनीवात धारे ३ । दुद्धर धारे ४ । अनिश्चित धारे ५ । संदेहरहित धारे ६ ॥ छ प्रकारे बा  
 ह्य तप कह्यो तेकहैछे उपवास १ ॥ ऊनोदरी २ ॥ विगयसंक्षेप ३ ॥ रसपरित्याग ४ ॥ कायक्लेश ५ ॥ प्रतिसंलीनता ६ ॥ छ प्रकारे अन्यंतर तप क



४० ॥  
१० ॥

कर्माणि यं तत्तप इति तत्रानशन मभोजन माहारत्याग इत्यर्थं स्त द्विधा इत्वरं याय त्थिकंच तत्रैत्वरं चतुर्थादिषण्मासांत मिदं तीर्थमाश्रित्येति  
याव त्थिक त्वाजन्मभावि त्रिधा पादपोपगमनेंगितमरणभक्तपरिज्ञाभेदा देतच्च प्राय व्याख्यातमिति ॥ ओमोयरियत्ति ॥ अवम मून मुदरं जठर भव  
मोदरं तस्य करण मत्रमोदरिकेति साच द्रव्यत उपकरणभक्तपानधिषया प्रतीता भावतस्तु क्रोधादित्याग इति तथा भिच्चार्यं चर्या चरण भटन भिच्चा  
चर्यासेय तपो निर्जरंगत्वा दनशनव दथवा सामान्योपादानेपि विशिष्टा विचिन्नाभिग्रहयुक्तत्वेन वृत्तिसन्नेपरूपा सा ग्राह्या द्रहैव वक्ष्यति ॥ गोयरचरियत्ति ॥  
नचेय ततोत्यत भिन्नेति भिच्चाचर्यायां चाभिग्रहा द्रव्यादिविषयतया चतुर्विधा स्तच्च द्रव्यतो लेपकार्याद्येव द्रव्यं ग्रहीथे क्षेत्रतः परगामगृहपचकादिलब्धं  
कालतः पूर्वाज्ञादौ भावतो गानादिप्रवृत्ता लब्धमिति रसाः क्षीरादय स्तत्परित्यागो रसपरित्यागः कायक्लेश शरीरक्लेशन सच वीरासनादि रनेकधा  
प्रतिसलो नता गुप्तता साचेन्द्रियकषाययोगविषया विविक्तशयनासनता वेति ॥ अभिंतरएत्ति ॥ लौकिके रनभिलक्ष्यत्वा तत्रा न्तरौयैश्च परमार्थतो अना  
सेव्यमानत्वा न्नोत्तप्राप्त्यत्तरंगत्वाच्चा भ्यतरमिति प्रायश्चित्त मुक्तं निर्वचन मालोचनादिदशविधमिति विनीयते कर्म येनेति स विनय उक्तश्च जम्हाविण  
यद्रकम् अष्टविहंचाउरंतमोक्त्वाए तम्हाउवयतिविज विणयतिविलीणसंसारत्ति ॥ १ ॥ सच ज्ञानादिभेदात् सप्तधा वक्ष्यते तथा व्यावृत्तभावो वैयावृत्त्य  
धर्मसाधनार्थ मन्नादिदानमित्यर्थ आहच , वैयावस्त्रंबाबड भावोद्ग्रहधम्मसाहणनिमित्तं अन्नाश्याणविहिणा सपायणमेसभावत्योत्ति ॥ १ ॥ तच्च दशधा

छविहे अण्णतरिए तवे पन्नत्ते तंजहा पायच्छित्तं विणन वेयावव्वं सज्जान ऊणं विउरुसग्गो । छविहे विवादे

ह्यो तेकहैले प्रायश्चित्त लेवो १ ॥ विनय करवो २ ॥ वेयावच करवो ३ ॥ तिम सिज्जाय करवो ४ ॥ ध्यान करवो ५ ॥ कायोत्सर्ग करवो ६ ॥ त्थम

आयरियउवज्जाए थेरतवस्सीगिलाणसेहाणं साहम्मियकुलगणसं घसंगयंतमिहकायव्वंति ॥ १ ॥ सुष्ठु आ मर्यादया अध्यायो ऽध्ययनं स्वाध्यायः सच पंचध  
 वाचना प्रच्छेना परिवर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथाचेति ध्याति ध्यानं मेकाग्रचित्तनिरोध स्तच्चतुर्धा प्राग्व्याख्यातं तत्र धर्मशुक्ले एव तपसी निर्जरार्थत्वा नेतरे  
 बंधहेतुत्वादिति व्युत्सर्गः परित्यागः सच द्विधा द्रव्यतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो गणशरीरोपध्याहारविषयो भावतस्तु क्रोधादिविषयइति एतेच तपसूत्रे द्रव्य  
 कालिका विशेषतो अवसेयाइति अनन्तरोदितार्थेषु विवदते कश्चिदिति वादस्वरूपमाह ॥ छव्विहेत्यादि ॥ षड्विधः षड्भेदो विप्रतिपन्नयोः क्वचि द्रव्य  
 वादो जल्यो विवादः पन्नम स्तयथा ॥ ओसक्कइत्तत्ति ॥ अवषक्कय अपसृत्या वसरलाभाय कालहरणं कत्वा यो विधीयते स तथो चत एव सर्वत्र क्वचिच्च  
 ॥ उस्सक्कावइत्तत्ति ॥ पाठ स्तत्र प्रतिपथिन केनापि व्याजेना पसर्प्यापसृतं कत्वा पुनरवसर मवाप्प विवदते ॥ उस्सक्कइत्तत्ति ॥ उषक्कय उत्सृत्य लब्धावसर  
 तयो त्सुकीभूय ॥ उरसक्कावइत्तत्ति ॥ पाठान्तरे पर सुत्सुकीकृत्य लब्धावसरो जयार्थी विवदते तथा ॥ अणुलोमइत्तत्ति ॥ विवादाध्यक्षान् सामनीत्या नु  
 लोमान् कत्वा प्रतिपथिनमेववा पूर्वं तत्पचाभ्युपगमेना नुलोम कत्वा ॥ पडिलोमइत्ता ॥ प्रतिलोमान् कृत्वा अध्यक्षान् प्रतिपथिनवा सर्वथा सामर्थ्यसतीति  
 ॥ तथाभइत्तत्ति ॥ अध्यक्षान् भंत्का ससेव्य तथा ॥ भेलइत्तत्ति ॥ स्वपक्षपातिभि मित्रा न्कारणिकान् कृत्वेति भावः क्वचित् ॥ भेयइत्तत्ति ॥ पाठ स्तत्र  
 भेदयित्वा केनाप्युपायेन प्रतिपथिनप्रति कारणिकान् द्वेषिणो विधाय स्वपक्षग्राहिणोवेतिभावः विवादच कत्वा ततो प्रतिक्राता केचित् क्षुद्रसत्त्वेषू त्पद्यं

पणत्ते तंजहा उंसक्काइत्ता उरसक्काइत्ता अणुलोमइत्ता पडिलोमइत्ता नइत्ता भेलइत्ता । छव्विहा खुद्दापाणा

कारे विवाद कह्यो तेकहैछे अवसर जाण्णी एकवार ओसरी विवाद करे १ ॥ उत्सकथई वादकरे २ ॥ सामनीते तेहनोज वचन पकळी विवादकरे ३ ॥

तद्वति तान्निरूपय साह ॥ छविहेत्यादि ॥ सुगमं पर मिह क्षुद्रा अधमा यदाह प्रत्यमधमं पणस्त्रीं क्रूरं सरषां नटीक्षुद्रान् ब्रुवत इति अधमत्वं च वि  
 कलेन्द्रियतेजोवायूना मनतरभवे सिद्धिगमनाभावा द्यत उक्त भूदगपकण्यभवा श्रीरोहरिया उवञ्चसिज्ज्ज्जा विगलालभेज्जविरइं नउकिचलभेज्जसुदुमतसा  
 सूक्ष्मत्रसा स्तेजोवायवइति तथा एतेषु देवानुपपत्तेश्च यत उक्त पुढवीआउवणस्सइ गक्केपज्जत्तसखजीवीसु सग्गुत्तयाणवासो सेसापडिसेहियाठाणत्ति ॥१॥  
 समूर्च्छिमपचेन्द्रियतिरसां चा धमत्व तेषु देवानु त्यक्ते स्तथा पचेन्द्रियत्वे प्यमनस्कतया विवेकाभावेन निर्गुणत्वादिति वाचनांतरेतु सिंहा व्याघ्रा वृका  
 दीपिका ऋक्षा इति क्षुद्रा उक्ताः क्रूरा इत्यर्थः अनतरं सत्वविशेषा उक्ताः सत्वानां चानपायतः साधुना भिक्षाचर्याकार्येति साच षोढेति दर्शयन्नाह ॥ छवि  
 हेत्यादि ॥ गोयरचरियत्ति ॥ गो बलौवर्दस्य चरण चरो गोचर स्तद्वद्या सा चर्या चरण सा गोचरचर्या इदमुक्तं भवति यथा गो रुक्मनीचटणे श्वविशेषत  
 यरण प्रवर्त्तते तथा य क्षाधो ररक्ता द्विष्टस्यो शनीचमध्यमकुलेषु धर्मसाधनदेहपरिपालनाय भिक्षार्थं चरणं सा गोचरचर्येति इय चैकस्वरूपा प्यभिग्रहविशे  
 षात् षोढा तत्र प्रथमा पेढा वंशदलमय वस्त्रादिस्थान जनप्रतीत साच चतुरस्त्रा भवति स्थापना ॥ ततश्च साधु रभिग्रहविशेषा द्यस्यां चर्यायां आमादिचे

पन्नत्ता तंजहा बेंदिया तेंदिया चउरिंदिया समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्कजोणिया तेउकाइया वाउकाइया ।  
 छविहा गोयरचरिया पस्सत्ता तंजहा पेढा अण्णपेढा गोमुत्तिया पतंगवीहिया संबुक्कवहा गंतुपच्चागया ।

प्रतिकूल वचने विवाद करे ४ ॥ एकवार जोगवी पळे विवाद करे ५ ॥ मांहि जली जई पळे विवाद करे ६ ॥ छ प्रकारे क्षुद्र अधम प्राणी कत्या ते  
 कहेंछे बेइंद्री तेइंद्री चोइंद्री समूर्च्छिम एकेंद्रीतियेंच योनिया तेउकाय वायुकाय ६ ॥ छ प्रकारे गोचरी कही तेकहेंछे पेढा वासनं स्थानक १ ॥ अ

त्रं पेटाव चतुरस्रं विभजं निहरति सा पेटेत्युच्यते एव मर्दपेटापि एतदनुसारेण वाच्या गो मूत्रणं गोमूत्रिका तद्वद्वा सा तथा इयं हि परस्परामिसुख  
 गृहपत्न्यो रेकस्यां गत्वा पुन रितरस्यां पुन स्तस्या मेवे त्वेवं क्रमेण भावनीया पतंगः सलभः स्तस्य वीथिका मार्गः स्तद्वद्वा सा तथा पतंगगतिर्हि अनिय  
 तक्रमा भवति एवं या नाश्रितक्रमा तथा ॥ संवुक्कवट्ति ॥ संवुक्कः शंखः तद्वच्छुश्रुमिव दित्यर्थो या वृत्ता सा संवुक्कवृत्तेति इयंच द्वेधा तत्र यस्यां चैत्र  
 बहिर्भागा च्छंखवृत्तत्वगत्या अटन् चैत्रमध्यभाग मायाति सा भ्यंतरसंवुक्का यस्यां तु मध्यभागा द्दहिर्याति सा बहिः संवुक्केति ॥ गतुपञ्चागयत्ति ॥ उपाश्रया  
 निर्गतः स त्रेकस्यां गृहपंक्तौ भिन्नमाणः चैत्रपर्यंतं गत्वा प्रत्यागच्छन् पुन द्वितीयायां गृहपंक्तौ यस्यां भिन्नते सागतप्रत्यागता गत्वा प्रत्यागतं यस्या मि  
 ति च विग्रह इति अनंतरं साधुचर्यां कृतेति चर्या प्रस्तावा दसाधुचर्याफलभोक्तृस्थानविशेषाभिधानाय सूत्रषडयं ॥ जंबूदीवेत्यादि ॥ सुगमं नवर ॥ अवकतत्ति ॥  
 अपक्रांताः सर्वशुभभावेभ्यो ऽपगता भ्रष्टा स्तदन्येभ्यो तिनिकृष्टा इत्यर्थः आपक्रांतावा अपक्रमणीयाः सर्वे प्येवमेव नरका विशेषतश्चैतदिति दर्शनार्थं विशेष  
 णमिति संभाव्यते ते च ते महानरकाश्चेति विग्रह एतेषां चैव प्ररूपणा तेरिक्कारसनवस त्त पचतिन्नेवहीति एकोय पत्यडसंखा एसा सत्तसुविकमेण पुढवीसु  
 ॥ १ ॥ एव मेकोनपचाशत्प्रस्तटा एतेषु क्रमेणै तावत् एव सीमंतकादयो वृत्ताकारा नरकेंद्रका स्तत्र सीमतकस्य पूर्वादिदिक्षु एकोनपचाशत् प्रमाणा नर  
 कावली विदिक्षुचाष्टचत्वारिंशत्प्रमाणेति प्रतिप्रस्तटमुभयत्रैकैकहान्या समम्पादिद्वेकएव विदिक्षुनसत्येवेति उक्तञ्च एगूणवन्ननिरयां सेढीसीमतगस्सपुल्ले

जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पद्मयस्स दाहिणेण मिमीसे रयणप्पज्ञाए पुढवीए लब्धवक्कान्तमहानिरया पस्सत्ता तंजहा

द्वैपेढा २ ॥ गोमूत्रिका ३ ॥ पतंगना मार्गनीपरे ४ ॥ शंखना आवर्तनी परे ५ ॥ उपासराथी मांडी भिन्ना करतो छेहडे जाय पाळी बले ६ ॥ जंबू

॥ १ ॥ उत्तरप्रोप्रवरणाय दाहिणप्रोचेवबोधयवा ॥ १ ॥ अष्टयासीसंनिरया सेटीसीमंतगस्त्यबोधयवा पुष्पुत्तरेणनियमा एवंसेसासुविदिसासु ॥ २ ॥ एकेकोयदिसासु  
मज्जेनिरप्रोभवेपद्रुणाणो विदिसानिरयविरहिया तपयरंपचमजाण ॥ २ ॥ सीमंतकस्त्यच पूर्वापुदिच्छु सीमंतकप्रभादयो नरका भवति तदुक्तं सीमंतग  
प्पभोखलु निरप्रोसीमतगस्त्यपुव्वेणं सीमंतगमज्जिमप्रो उत्तरपासेमुण्येव्वो ॥ १ ॥ सीमंतावत्तोपुण निरप्रोसीमंतगस्त्यप्रवरण सीमतगावसिष्ठो दाहिणपा  
सेमुण्येव्वोत्ति ॥ २ ॥ ततः पूर्वादिपु चतस्रषु दिक्षु सीमतकापेक्षया तृतीयादयः प्रत्येक मावलिकासु विलयादयो नरकाभयतीति एवचैते लोलादयः पड  
प्यावलिकागतानां मध्ये धीता विमाननरकेंद्रकाख्ये ग्रन्थे यत स्तुप्रोक्त लोलेतहलीलुएचेवत्ति ॥ एतो चावलिकायाः पर्यंतिमौ तथा ॥ उद्दहेचेवनिद्दहे  
त्ति ॥ एतो सीमतकप्रभा विंशतितमेकविंशविंशति तथा ॥ जरएतहचेवपज्जरएत्ति ॥ पंचनिंशत्तमौ केवले लोले लोलुए इत्येवं शुद्धपदैः सर्वनरकाणां पूर्वा  
वलिकाया मेवाभिलाप उत्तरदिगावावलिकासु पुनरेभिरेव सविशेषे नामभि नरका अभिलप्पन्ते तवथा उत्तरायां लोलमध्ये लोलुपमध्य इत्यादि एवं  
पश्चिमायां लोलावर्ती दक्षिणायां लोलावशिष्ट इत्यादि उक्ताच मज्जाउत्तरपासे आवत्ताप्रवरप्रोमुण्येववा सिद्धादादिणपासे पुविज्जाप्रोविभइयव्वत्ति  
॥ १ ॥ इत्तत्त दक्षिणाना मेपां विवचितत्वेन लोलान्निष्टइत्यादि यत्ताव्येपि सामान्याभिधानमेव निर्विशेषं विवचितमिति सभाव्यते ॥ चउत्थीएत्ति ॥ पक  
प्रभायां अपक्कातावेत्यादि तथैव इत्तत्त सप्त प्रस्तुटाः समैव नरकेंद्रका यथोक्ता आरेमारणारे तत्थेयमएयहोइवोधव्वे क्खोडखुडियखुडखुडे इंदयनिरयाच

लोले लोलुए उद्दहे निद्दहे जरए पज्जरए । चउत्थीएणं पकप्पजाए पुढवीए त इवक्कंतमहानिरया प० तं०

द्वीपमा मेरुपर्वतने दक्षिणदिशि आ रत्नप्रभा पृथ्वीने विषे क अकमनीय माठा मोठा नरक कक्षा ते कहैले लोल १ ॥ लोलुक २ ॥ उदिष्ट ३ ॥

उत्थीएत्ति ॥ १ ॥ तदेवं आरा मारा खाडखडा नरकेंद्रका अन्येतु वाररोररोरुकाख्या स्तयः प्रकीर्णका अथवा इन्द्रका एव नामान्तरै रक्ताइति संभाव्य  
तइति अनतर मसाधुचर्याफलभोक्तृत्वस्थाना ग्युक्तानी तथ साधुचर्याफलभोक्तृत्वस्थानविशेषमाह ॥ बभेत्यादि ॥ बंभलोएत्ति ॥ पचमदेवलोके षडेव विमान  
प्रस्तटाः प्रज्ञप्ता आहच तेरसवारस ३ रूप चचेवचत्तारि चउसुकप्पेसु गेविज्जिसुयतियतिय एगोयअणुत्तरेसुभवेत्ति ॥ १ ॥ सर्वेपि ६२ तयथा ॥ अर  
जाइत्यादि ॥ सुगममेवेति अनतर विमानवक्तव्यतोक्तेति तत्प्रस्तावा न्नचत्रविमानवक्तव्यता सूत्रत्रयेणाह ॥ चदस्सेत्यादि ॥ व्यक्त न्नवर ॥ पुव्वभागत्ति ॥ पू  
र्वभागेना ग्रेणेत्यर्थः ४ भज्यंते अप्राप्तेनैव चंद्रेण सेव्यते भुज्यते युज्यत इतियावदिति पूर्वभागानि अनुस्वारश्च प्राक्ततत्वादिति चंद्रस्याग्नयोगीनि चंद्र ए  
ता न्यप्राप्ता भुक्तइति लोकश्रीप्रोक्ता भावनेति उक्तञ्चतत्रैव पुव्वातिस्थियमूलो महकित्तियअग्निमाजोगत्ति ॥ सम स्थूलन्याय माश्रित्य त्रिशन्मुहूर्तभो

अरे वारे मारे रोरे रोरुए खाडखडे । बंभलोएणं कप्पे छविमाणपत्त्यफ्ता प० तं० अरए विरए नीरए निम्मले  
वितिमिरे विसुद्धे । चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणस्कत्ता पुव्वंजागा समस्केत्ता तीसइसुज्जत्ता प०  
तंजहा पुव्वाजद्वयया कत्तिया महा पुव्वाफग्गुणी मूलो पुव्वासाढा । चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो

निर्दिष्ट ४ ॥ जरक ५ ॥ प्रजरक ६ ॥ चउथी पकप्रज्ञा पृथ्वीने विषे छ अवक्रांत घणा मांठा नरक कहिया तेकहैछे आर १ ॥ वार २ ॥ मार ३ ॥ रोर ४  
रोरुय ५ ॥ खाडखड ६ ॥ पांचमा ब्रह्मदेवलोकमां छविमानना पाथडा कहिया ते कहैछे अरत १ ॥ विरत २ ॥ नीरत ३ ॥ निर्मल ४ ॥ विति  
मिर ५ ॥ विशुद्ध ६ ॥ चद्रमा ज्योतिषीनुं इंद्र ज्योतिषीना राजाने छनत्तत्र पूर्वने भागे समत्तेत्रछे त्रीसमुहूर्तना कह्या ते कहैछे पूर्वजाद्रपद १ ॥ छ

यं क्षेत्र माकाशदेशलक्षणं येषां तानि समक्षेत्राणि अतएवाह त्रिंशन्मुहूर्तानि त्रिंशतं मुहूर्तं चंद्रभोगो येषांतानि तथा ॥ एतन्भागति ॥ नक्त भागा  
नि चन्द्रस्य समयोगौनीत्यर्थं उक्तञ्च अद्वासेसासाइ सयभिसमभिर्द्वयजेठसमजोगा ॥ केवल भरणीस्थाने लोकश्रीसूत्रे अभिजि दुक्तेति मतविशेषो दृश्यत  
इति अपार्द्धं समक्षेत्रापेक्षया अर्धमेव क्षेत्रं येषांतानि तथा अर्धक्षेत्रत्वमेवाह पचदशमुहूर्तानीति ॥ उभयभागति ॥ चद्रेणो भयत उभयभागाभ्या पूर्वत'  
पश्चाच्चे त्वर्थो भज्यते भुज्यते यानि ता न्युभयभागानि चद्रस्य पूर्वतः पृष्ठतश्च भोग मुपगच्छतीत्यर्थं इति भावना लोकश्रीभणितेति उक्तञ्च उत्तरतिथि  
विसाहा पुणवसूरोहिणीउभयजोगति ॥ द्वितीय मपार्द्धं यत्र त द्वापार्द्धं सार्द्धमित्यर्थं, क्षेत्र येषां तानि तथा यत' पचचत्वारिंशन्मुहूर्तानीति अन्यानि दश  
पश्चिमयोगीनि पूर्वभागादिनक्षत्राणा गुणोय उक्तक्रमेण नक्षत्रै र्युज्यमानस्तु चद्रमाः सुभिचक्र द्विपरीत युज्यमानो न्यथा भवेदिति अनंतर चद्रव्यतिकर उक्त

ढणस्कत्ता णत्तंजागा अणवहस्केत्ता पन्नरसमुज्जत्ता पन्नत्ता तंजहा सयजिसया जरणी अद्वा अस्सेसा साइ  
जेठा । चद्रसण जोइसिंदस्स जोइसरन्तो ढणस्कत्ता उज्जयजागा दिवहस्केत्ता पणयालीसमुज्जत्ता पणत्ता  
तजहा रोहिणी पुणवसू उत्तराफग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा उत्तराजद्वयया । अजिचदेणं कुलकरे ढधणुस

तिका २ ॥ मघा ३ ॥ पूर्वाफाल्गुनी ४ ॥ मूल ५ ॥ पूर्वाषाढा ६ ॥ चद्रमा ज्योतिषीना इद्र ज्योतिषीना राजाने छनत्तत्र नक्तजागे समयोगना अर्द्ध  
क्षेत्रना पनर मुहूर्तना कह्या ते कहैछे शतजिषा १ ॥ जरणी २ ॥ आर्द्रा ३ ॥ अश्लेषा ४ ॥ स्वाति ५ ॥ ज्येष्ठा ६ ॥ चद्रमा ज्योतिषना राजा ज्योति  
षीना इद्रने छनत्तत्र उज्जयभागे हेठे क्षेत्रे आगल पावल भोग प्रते पामैछे पैतालीस मुहूर्तना कह्या ते कहैछे रोहिणी १ ॥ पुनर्वसु २ ॥ उत्तराफाल्गु

इति किञ्चिच्छब्दसाधर्म्या तद्वर्णसाधर्म्याद्वा ऽभिचंद्रकुलकरसूत्रं तद्वर्णजन्यसंबन्धा ङ्गरतसूत्रं पार्श्वनाथसूत्रं च जिनसाधर्म्या वासुपूज्यसूत्रं चंद्रप्रभसूत्रं चाह सु  
 गमानि चैतानि नवर अभिचंद्रो मुग्धा मवसर्पिण्यां चतुर्थः कुलकरः ॥ चाउरतत्ति ॥ चत्वारो ता. समुद्रत्रयहिमवत्तल्लक्षणा यस्याः सा चतुरता पृथ्वी त  
 स्या अयं स्वामौति चातुरतः सचासौ चक्रवर्त्ती चेति चातुरतचक्रवर्त्ती षट्पूर्वगतसहस्राणि तल्लक्षणानि पूर्वन्तु चतुरशीति वर्षलक्षणां तद्गुणेति ॥ आदा  
 णीयस्तेति ॥ आदीयत उपादीयत इत्यादानीय उपादेयइत्यर्थः पुरुषाणा मध्ये आदानीयः पुरुष आ सा वादानीयश्चेति वा पुरुषादानीय स्तस्य चंद्रप्रभस्य  
 षण्मासा निहृद्व्यस्थपर्यायो दृश्यत आवश्यकेतु पद्मप्रभस्यासौ पठ्यते चंद्रप्रभस्यतुत्रौनिति मतांतरमिदमिति हृद्व्यस्थ श्रेद्रियोपयोगवान् भवती तीन्द्रियप्र  
 त्यासत्या त्रीन्द्रियाश्रित सयम मसंयमश्च प्रतिपादयन् सूत्रद्वयमाह ॥ तेइदिएत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर ॥ असमारभमाणस्तस्ति ॥ अव्यापादयतः ॥ घाणामा

याइं उहंउच्चत्तेणं होत्या ङ्गरहेणं राया चाउरंतचक्रवर्ती लपुवसयसहस्साइं महाराया होत्या । पासस्सणं  
 अरहनं पुरिसादानीयस्स लस्सया वाईणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं संपया होत्या । वासु  
 पुज्जेणं अरहा लहि पुरिससएहि सद्धि मुंठे जाव पवइए । चंदप्पजेणं अरहा लम्मासा लउमत्ये होत्या ।

नी ३ ॥ विषाखा ४ ॥ उत्तराषाढा ५ ॥ उत्तराज्ञाद्रपद ६ ॥ अजिचंद्र नामा कुलकर ऋसे धनुष ऊंचो ऊंचपणे थयो ॥ ङ्गरतराजा चातुरंत चक्रवर्त्ति  
 ६ लाख पूर्वलगे महाराजा थया चक्रीपद भोगवियो ॥ पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादाणीने ६०० ऋसेवादी थया ॥ देवता सहित मनुष्य असुरनी पर्ष  
 दामा अपराजित अजेय ॥ वासुपूज्य अरिहत ६०० ऋसे पुरुष संघाते दीक्षा लीधी मुंडथया ॥ चंद्रप्रज अरिहंत ६ महीना ऋदमस्य रह्या ॥ तेइंद्री



श्रुति ॥ घ्राणमया स्त्रीख्यात् गन्धोपादानरूपात् अव्यपरोपयिता अभ्रंशकता घ्राणमयेन गन्धोपलभाभावरूपेण दुःखेना संयोजयिता भवति इहचा व्यप  
रोपण मसंयोजनञ्च संयमो ऽनाश्ववरूपत्वा दितर दसयमइति इयंच सयमासयमप्ररूपणा मनुष्यक्षेत्रएवेति मनुष्यक्षेत्रगत षट्स्थानकावतारि वसुप्ररूप

तेइंदियाणं जीवा असमारंजमाणस्स ढव्हिहे संजमे कज्जइ तंजहा घाणामानं सोस्काणं अववरोवेत्ता नवइ  
घाणामएणं दुस्केणं असंयोगेत्ता नवइ जिप्पामयानं सोस्काणं अववरोवेत्ता नवइ एवंचेव फासामयानंवि  
तेइंदियाणं जीवा समारंजमाणस्स ढव्हिहे असंयमे कज्जइ तंजहा घाणामानं सोस्काणं ववरोवेत्ता नवइ  
घाणामएणं दुस्केणं संजोयेत्ता नवइ जाव फासमएणं दुस्केणं संजोयेत्ता नवइ । जंबूद्वीवेदीवे ढ अकम्म  
जूमोणं पस्सत्ताणं तजहा हेमवए हेरन्नवए हरिवासे रम्मगवासे देवकुरा उत्तरकुरा । जंबूद्वीवेदीवे ढवासा  
पस्सत्ता तजहा नरहे एरवए हेमवए हेरन्नवए हरिवासे रम्मगवासे । जंबूद्वीवे ढ वासहरपट्ठया पस्सत्ता

जीवना आरंभ अणकरवाने छ प्रकारे संयम कह्यो ते कहैछे घ्राण नासिकाना सुखथी हणो नथी जुदोनकरे १ ॥ नासिकाना दुखथी जोडे नथी २ ॥  
जीभना सुखथी अलगो नकरे ३ ॥ इमज स्पर्शनेद्रीनापणि ॥ ते इद्री जीवना आरंभ करताने छ प्रकारे असंयम कह्यो ते कहैछे नासिकाना सुखथी  
अलगो करे नासिकाना दुखथी जोडे यावत् फरसनेद्रीना सुखथी अलगो करे फरसनेद्रीना दुखथी जोडे ॥ जंबूद्वीपमा ढ अकर्म जूमि कही  
ते कहैछे हेमवत १ ॥ हेरन्नवत २ ॥ हरिवर्ष ३ ॥ रम्यकवर्ष ४ ॥ देवकुरु ५ ॥ उत्तरकुरु ६ ॥ जंबूद्वीपमा छवर्ष क्षेत्र कहा ते कहैछे भरत १ ॥

शाप्रकरण ॥ जंबूद्वीवेत्यादिकं ॥ पंचपंचाशत्सूत्रमात्रमाह ॥ सुबोधं चैत श्रवरं कूटसूत्रे हिमवदादिषु वर्षधरपर्वतेषु द्विस्थानकोक्तक्रमेण द्वे द्वे कूटे समवसेये ॥ ८

तंजहा चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवते रूप्यी सिहरी । जंबूमंदरदाहिणेणं ळ कूडा पसत्ता तंजहा  
चुल्लहिमवंतकूटे वेसमणकूटे महाहिमवतकूटे वेसलियकूटे निसहकूटे रुयगकूटे । जंबूमंदरउत्तरेणं ळकूडा  
पसत्ता तंजहा नीलवंतकूटे उवदसणकूटे रूप्यिकूटे मणिकंचणकूटे सिहरिकूटे तिगिच्छिकूटे । जंबूद्वीवे  
दीवे ळ महादहा पसत्ता तंजहा पउमद्दहे महापउमद्दहे तिगिच्छिदहे केसरिदहे पुंढरीयदहे महापुंढरीय  
दहे । तत्थण ळदेवयानं महिद्वियानं जाव पलिनुवमडिईया परिवसंति तंजहा सिरि हिरि धिइ कित्ति बुद्धि

ऐरवत २ ॥ हिमवंत ३ ॥ हैरण्यवत ४ ॥ हरिवर्ष ५ ॥ रम्यकवर्ष ६ ॥ जंबूद्वीपमां ळ वर्षधर पर्वत कह्या तेकहैछे चुल्लहिमवंत १ ॥ महाहिमवंत २ ॥  
निषध ३ ॥ नीलवत ४ ॥ रूपी ५ ॥ शिखरी ६ ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी दक्षिणदिशि ळकूट कह्या ते कहैछे चुल्लहिमवतकूट १ ॥ वैश्रमणकूट २ ॥ महा  
हिमवंतकूट ३ ॥ वेसलियकूट ४ ॥ निषधकूट ५ ॥ रुचककूट ६ ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी उत्तरदिशि ळकूट कह्या ते कहैछे नीलवंतकूट १ ॥ उपदर्शनकूट  
२ ॥ रूप्यिकूट ३ ॥ मणिकांचनकूट ४ ॥ शिखरीकूट ५ ॥ तिगिच्छिकूट ६ ॥ जंबूद्वीपमां ळमोटा द्रह कह्या ते कहैछे पट्टद्रह १ ॥ महापट्टद्रह २ ॥  
तिगिच्छिद्रह ३ ॥ केसरीद्रह ४ ॥ महापुंढरीकद्रह ५ ॥ पुंडरीकद्रह ६ ॥ तिहा ळ देवी मोटी रिद्धिनी यावत् १ पत्थोपम आऊखानी धणी वसेछे  
तेकहैछे श्री १ ॥ ह्री २ ॥ घृति ३ ॥ कीर्ति ४ ॥ बुद्धि ५ ॥ लक्ष्मी ६ ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी दक्षिणदिशि ळ महानदी कही ते कहैछे गंगा १ ॥ सिधू

॥ भ

इति अनन्तरोपवर्णितरूपेच क्षेत्रे कालो भवतीति कालविशेषनिरूपणाय ॥ उक्त्यादि ॥ सूत्रत्रयं सुगमचेद नवर ॥ उद्धृति ॥ द्विमासप्रमाणः कालविशेष

लच्छी । जंबूमंदरदाहिणेणं कमहानईनं पस्यत्तानं तंजहा गंगा सिधू रोहिया रोहियंसा हरी हरिकंता ।  
जंबूमंदरउत्तरेणं कमहाणदीनं पस्यत्तानं तंजहा णरकंता णारिकंता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तवई जंबू  
मंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणदीए उज्जयकूले अंतरनईनं प० तंजहा गाहावई दहवई पंकवई तत्तजला  
मत्तजला उम्मत्तजला । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीन्याए महाणईए उज्जयकूले अंतरणईनं प० त० खीरोदा  
सीहसीया अतोवाहिणी उम्मिमालिणी फेनमालिणी गज्जीरमालिणी । धायइखट्ठदीवपुरच्छिमधेणं अक्कम्म  
जूमिणं पस्यत्तानं तंजहा हेमवए जहाजंबुदीवे तहा जाव अंतरणइनं जाव पुक्करवरदीवहूपच्चत्थिमधे णाणि

२ ॥ रोहिता ३ ॥ रोहितांसा ४ ॥ हरी ५ ॥ हरिकाता ६ ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी उत्तरदिशि ७ मोटी नदी कही ते कहैछे नरकांता १ ॥ नारिकाता  
२ ॥ सुवर्णकूला ३ ॥ रूप्यकूला ४ ॥ रक्ता ५ ॥ रक्तवती ६ ॥ जंबूद्वीपमा मेरुथी पूर्वदिशि शीतामहानदीना बेतटे ७ अंतरनदी कही ते कहैछे ग्राह  
वती १ ॥ द्रहवती २ ॥ पंकवती ३ ॥ तप्तजला ४ ॥ मत्तजला ५ ॥ उन्मत्तजला ६ ॥ जंबूद्वीपमां मेरुथी पश्चिमदिशि शीतोदा महानदीना उज्जयतटे  
७ अंतर नदी कही ते कहैछे खीरोदा १ ॥ सिंहश्रोता २ ॥ अंतर्वाहिनी ३ ॥ ऊर्मिमालिनी ४ ॥ फेनमालिनी ५ ॥ गज्जीर मालिनी ६ ॥ धातकी खड  
ना पूर्वार्द्धमा ७ अकर्मजूमि कही ते कहैछे हेमवंत एम जिम जंबूद्वीपे तिम यावत् अंतर नदी यावत् पुक्करवरद्वीपार्द्ध पश्चिमार्द्धमा पणि कहवी ॥

ऋतु स्तत्रा षाढश्रावणलक्षणा प्रावृट् एवं शेषाः क्रमेण लौकिकव्यवहारतः श्रावणाद्या वर्षाशरद्धेमन्तशिशिरवसंतग्रीष्माख्या ऋतवद्भवति ॥ ओमरत्तन्ति ॥  
 अवमा हीना रात्रि रवमरात्रो दिनक्षयः ॥ पव्वन्ति ॥ अमावास्या पौर्णमासीवा तदुपलक्षितः पक्षोपि पर्व तत्र लौकिकग्रीष्मर्तौ यत् तृतीय पर्व आषाढक  
 णपक्ष स्तत्र सप्तम पर्व भाद्रपदकृष्णपक्ष एव मेकान्तरितमासाना कृष्णपक्षाः सर्वत्र पर्वानीति उक्तञ्च आषाढबहुलपक्षे भद्रवएकत्तिण्यपोसेय फगु  
 णवइसाहेसुयबोध्वाओमरत्ताओ ॥ १ ॥ अइरत्तन्ति ॥ अतिरात्रो ऽधिकदिन दिनवृद्धिरिति यावत् चतुर्थ पर्व आषाढशुक्लपक्ष एव मिहैकातरितमासा

यव्वं । ठउदू प० तं० पाउसे वरिसारत्ते सरए हेमंते सिसिररत्ते वसते गिम्हे । ठ उमरत्ता प० तं० तइए  
 पव्वे सत्तमेपव्वे एक्कारसमेपव्वे पन्नरसमेपव्वे एगूणवीसइमेपव्वे तेवीसइमेपव्वे । ठअइरत्ता पस्यत्ता तंजहा  
 चउत्थेपव्वे अठमेपव्वे दुवालसमेपव्वे सोलसमेपव्वे वीसइमेपव्वे चउवीसइमेपव्वे । अण्णिणिबोहियणाणस्सणं

छ रितु कही ते कहैछे पावसवर्षा १ ॥ शरद २ ॥ हेमंत ३ ॥ शिशिर ४ ॥ वसंत ५ ॥ ग्रीष्म ६ ॥ छ अवमरात्रि एतले तिथिद्वय कक्ष्या तेकहैछे अ  
 मावस पूनिमे उपलक्षित ते पक्ष अंधारो अजुआलो पक्ष तिहां लौकिक ग्रीष्मरितुनी अपेक्षाथी त्रीजो पक्ष ते अषाढ कृष्णपक्ष तेहमा १ तिथिद्व  
 य । सातमो ज्ञाद्रपद कृष्णपक्ष तेहमा तिथिद्वय २ । इग्यारमोपक्ष कार्तिकवदी तेहमां तिथिद्वय ३ । पनरमो पोषमां तिथिद्वय ४ । उगणीसमां  
 फाल्गुनकृष्णपक्षमा तिथिद्वय ५ । तेवीसमां वैशाख कृष्णपक्षमा तिथिद्वय ६ ॥ छ अतिरात्र एतले तिथिवृद्धि कही ते कहैछे चौथो पक्ष आषाढशुक्ल  
 पक्षमा १ । आठमो पक्ष भाद्रपद शुक्लमा २ । बारमोपक्ष कार्तिकसुदीमा तिथिवदै ३ । सोलमो पोषशुक्लपक्षमां तिथि वदै ४ । वीसमो पक्ष फागु

नां शुक्लपक्षाः सर्वत्र पर्वणीति अयं वा तिरात्रादिकीर्त्तयि ज्ञानेना वसीयते इत्यधिकृताध्ययनावतारिणी ज्ञानस्या भिधानाय सूत्रद्वयमाह ॥ आभीत्यादि ॥  
 सुगम नवर अर्थस्य सामान्यस्य श्रोत्रेन्द्रियादिभिः प्रथममविकल्प शब्दोय मित्यादि विकल्परूप चोत्तरविशेषापेक्षया सामान्यावग्रहण अर्थावग्रहः सच  
 नैसर्गिक एकसामयिको व्यवहारिक स्वान्तर्मौहर्त्तिको ऽथविशेषितत्वा द्वाञ्जनावग्रहव्युदासः सहि चतुर्वि ॥ आणुगामिएत्ति ॥ अनुगमनशील मानु  
 गामि तदेवा नुगामिक देशान्तरगमपि ज्ञानिनं यदनुगच्छति लोचनयदिति यत्तु तद्देशस्थस्यैव भवति तद्देशनिबन्धनचक्षोपशमजत्वात् स्थानस्थ दीपव  
 देशान्तरगतस्य त्वपेति तदनुगामिकमिति उक्तञ्च आणुगामिआणुगच्छद् गच्छतलोयण जहापुरिसं द्रयरोयनाणुगच्छद् तियप्पईवोब्बगच्छतंति ॥ १ ॥  
 यत्तु क्षेत्रतो ज्जुलासंख्येयभागविषय कालत आवलिकासंख्येयभागादिविषय द्रव्यत स्तेजोभाषाद्रव्यातरालवर्त्तिविषय भावत स्तद्वतसंख्येयपर्यायविषयश्च  
 जघन्यतः समुत्पद्य पुन र्विविविषयविस्तरणात्मिका गच्छ दुत्कर्षेणा लोके लोकप्रमाणान्यसंख्येयानि खडा न्यसंख्येया उत्तर्पिण्यवसर्पिणीसर्वरूपिद्रव्या

बह्विहे अत्योग्गहे पस्सत्ते तजहा सोइंदियत्योग्गहे जाव नोइंदियत्योग्गहे । बह्विहे उहिणाणे पस्सत्ते तंजहा  
 अणुगामिएअणुगामिए वहुमाणए हीयमाणए पफिवाइ अपफिवाइ । नोकप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथो

णसुक्कमा तिथि वढे ५ । चौवीसमो पक्ष वैशाखसुक्कमां तिथिवढे ६ ॥ मतिज्ञाननुं छ प्रकारे अर्थावग्रह कह्यो ते कहैछे श्रोत्रेद्री अर्थावग्रह १ ।  
 यावत् नोइद्री अर्थावग्रह ६ ॥ छ प्रकारे अवधि ज्ञान कह्यो ते कहैछे आनुगामी जवातरे साथे आवे अथवा जिहाजाय तिहा साथे आवे १ । अना  
 नुगामी उपनो तेहज क्षेत्रे रहै बीजे नावे २ । वर्द्धमान बधतो जाय ३ । हीयमान ऊपना पळी हीन थातो जाय ४ । प्रतिपाती आवी जाय ५ । अ

णि प्रतिद्रव्य मसंख्येयपर्यायांश्च विप्रयीकरोति तद्वर्द्धमानमिति उक्ताच्च पदसमयमसंख्येज्जद्व भागह्रियंकोइसंखभागह्रियं अस्मीसखिज्जगुणं खेत्तमसंखेज्ज गुणमन्नो ॥ १ ॥ पेच्छइविवहुमाणं हायतवातहेवकालपौत्यादि ॥ २ ॥ तथा य ज्जघन्येनां गुलासंख्येयभागविषय सुत्कर्षेण सर्वलोकविषय सुत्पद्य पुन. सं क्लेशवशात् क्रमेण हानि सङ्कोचात्मिका याति यावद्गुलासंख्येयभाग तद्धीयमानमिति तथा प्रतिपतनशील प्रतिपाति उत्कर्षेण लोकविषय भूत्वा प्रति पतति तथा त द्विपरीत मप्रतिपाति येना लोकस्थ प्रदेशेषि दृष्ट स्तदप्रतिपात्येवेत्याह ॥ चउकोसलोगमत्तोपडिवायपरअपडिवाइत्ति ॥ एवंविधज्ञानवतां च यानि वचनानि वक्तुं नकल्पन्ते ताग्याह ॥ नोकप्पतीत्यादि ॥ कण्ठ्यं नवर ॥ अवयणाइ ति ॥ नजः कुत्सार्थत्वात् कुत्सितानि वचनानि अवचनानि तत्रा लौक प्रचलायसेकिदिवेत्यादि प्रश्नेन प्रचलायामी त्यादि हीलिन सासूय गणिन् वाचक ज्येष्ठा र्येत्यादि खिसित जन्मकर्म्मव्युद्दमनतः परुष दुष्टशैलेत्यादि ॥ अगारति ॥ अगारगेह तद्वत्तयो ऽगारस्थिता गृहिण स्तेषा यत्तदागारस्थितवचन पुत्रमामकभागिनेयेत्यादि उक्तञ्च अरिरेमाहणपुत्ता अवोवप्पोत्तिभाय माणेत्ति भट्टीसामोयगोमियत्ति ॥ व्यवशमित चोपशमित वा पुनरुदौरवितुं नकल्पतइति प्रक्रमो ऽवचनत्वादस्येति अनेनच व्यवशितस्य पुन रुदौरवचन न नाम षष्ठ मवचन मुक्त मत्रचगाथा खामियवोसमियाइ अहिगरणाइतुजेउदौरति तेपावानायव्वा तेसिचारोवणाइणमोत्ति ॥ १ ॥ अवचनेषु प्राय

णवा इमाइं लव्यवयणाइं वइत्तए तंजहा णलियवयणे हीलियवयणे खिसियवयणे फरुसवयणे गारस्थि

प्रतिपाती आख्यां पळी जाय नथी केवलीनी केवलज्ञान ६ ॥ नकल्पे साधुसाध्वीने अवक्तव्य वचन बोलवा ते कहँछे खोटो वचन १ । हीलणावचन ई र्थानुं वचन २ । खिसानुं वचन जन्म उघाडवो ३ । कठिन वचन ४ । गृहस्थनुं वचन मा पुत्र इत्यादि वचन ५ । गयो कलेस तेफिरी उदेरवानुं व

॥ शित्तप्रस्तारो भवतीति तानाह ॥ कप्पेत्यादि ॥ कल्पः साध्याचारः स्वस्य संबंधिनः स्वहिण्डवार्थत्वात् प्रस्ताराः प्रायश्चित्तरचनाविशेषा रता प्राणातिपा-  
तस्य नाद वार्त्ता वाचना वदति साधोप्रायश्चित्तप्रस्तारो भवतीत्येकः यथा अन्यजनपिनाशितदुर्दुर्यस्तपादं भिक्षु सुपलभ्य क्षुत्तकं प्राह साधो दुर्दुरो भव-  
तामारितः भिक्षु रात्रि नैवं क्षुत्तकं आह द्वितीयमपि व्रतं ते नास्ति ततः क्षुत्तको भिक्षाचर्यातो निवृत्त्या चार्यसमीपं मागच्छतीत्येकं प्रायश्चित्तस्थानं ततः  
साधयति यथा तेन दुर्दुरो मारित इति प्रायश्चित्तान्तरं ततो भ्याख्यातसाधु राचार्येणोक्तो यथा दुर्दुरो भवता मारितो सावाह नैव भिक्षु क्षुत्तकस्य प्राय-  
श्चित्तान्तरं पुनः क्षुत्तकं आह पुनः रण्यपन्नपस्यति भिक्षु रात्रि गृहस्थाः पण्यन्तां वृषभा गत्वा पृच्छन्तीति प्रायश्चित्तान्तरं भित्तिर्वं यो भ्याख्याति तस्य कृषावा-  
ददोष एव यस्तु सत्यं मारितं निहतं तस्य दोषत्रयमिति अनोक्तं ओमोचोद्भजंती दुपेक्षितार्थमुसंप्रसारिद् [ पर्यालोचयति ] अत्रमविश्वं चोयस्स नयलभए  
तारिसंक्षिप्तं ॥ १ ॥ अणेणघाट्टणं दुरंमिदं वचलणकयं ओमोचि प्रोहाण सतुमेनवत्तिवीर्यपितेणत्थि ॥ १ ॥ इत्यादि तथा कृषावादस्य सत्त्वात् स्वादं पिक्तत्वं  
नं वार्त्ता वा वदति साधो प्रायश्चित्तप्रस्तारो भवतीति तथाहि काचि वाह्यं मकालत्वा अतिपिड्यो साधू अन्यत्र गतो ततो मुहूर्त्तान्तरे रताधिकेनोक्तं स्मृ-  
जामः सप्तधा मिदानीं भोजनकालो यत स्तनेति लघुभक्षणं प्रतिषिद्धं नपुनं ग्रंजामि ततो सौ निवृत्त्या चार्यायेदं मालोचयति यथा अयं दीनकरुणवच-

यवयणे विउसमियंवापुणोउदीरेत्तए । ७ कप्पस्स पत्थारा पण्यत्ता तंजहा पाणाइवायस्सवायं वयमाणे मुसावा

चन ६ ॥ ७ साधुना आचारनां प्रस्तारं ते प्रायश्चित्तं आवे ते कहैच्छे प्राणातिपातनी वाचा वोलतां प्रायश्चित्तं आवे प्राणातिपातनं वचनं वोलवी १ ।  
सूपावादनी वार्तां करती २ । अदत्तादाननी वार्तां योसता ३ । अविरति स्त्रीनी वार्तां वोलतां ४ । एहं नपुंसकच्छे ए वार्तां करती ५ । दोष उघाह

नै र्याचते प्रतिषिद्धोपिच प्रविशति एषणां प्रेरयतीत्यादि ततो रत्नाधिकमाचार्योभणति साधो भवानेवं करोति स आह नैवमित्यादि पूर्ववत्प्रस्तार इहाप्युक्त  
 म् मोसंमिसंखडोए मोयगगहर्णमिश्रदत्तदानम् आरोपणपत्वारो तंचेवइमंतुनाणत्तं ॥ १ ॥ दीणकलुणेहिंजायइ पडिसिजोविसइएसणंहणइ जंपइमुहप्पि  
 याणिय जोगतिगिच्छानिमित्ताइति ॥ २ ॥ इत्यादि एवमदत्तादानस्य वादं वदति अत्र भावना एकत्र गेहे भित्ता लब्धा सा अवसेन गृहीता याव दसौ भा  
 जनं समाष्टि ताव इत्नाधिकेन संखड्या मोदका लब्धा स्ता नवमो दृष्टा निवृत्त्या चार्यस्या लोचयति यथा नेना दत्ता मोदका गृहीता इत्यादिप्रस्तार. प्रा  
 ग्वदिति एव मविरति रत्रह्य तद्वादं वार्त्ता वा अथवा नविद्यते विरति र्यस्याः सा अविरतिका स्ती तद्वादं वार्त्ता वा तदासेवाभगनरूपा वदति तथा ह्यव  
 मो भावय त्येष रत्नाधिकतया मां स्वलितादिषु प्रेरयति ततो रोपा दभ्याख्याति जेठुज्जेणअकज्ज सज्जंअज्जाघरेकयंअज्ज उवजोविओयभंते मएविसंसठ्ठक  
 प्पोत्य ॥ १ ॥ अहमपि तत् भुक्तां भुक्तवानित्यर्थः प्रस्तारभावना प्राग्वत् ४ तथा अपुरुषो नपुसको य इत्येवं वाद वार्त्ता वाचंवा वदती तीह समासः  
 प्रतीतएव भावना च आचार्यं प्रत्याहा यं साधु नपुसक आचार्य आह कथं जानासि स आह एतन्निजकौ रह मुक्तः किं भवतां कल्पते प्रवाजयितु नपुं  
 सक्तमिति समापि किञ्चि त्तस्मिन्दर्शना छद्मास्तीति प्रस्तारः प्राग्व दत्राप्युक्तं तद्विओत्तिकहंजाणसि दिठ्ठाणायासितेहिंसेवुत्तं वट्टइतद्विओतुभं पब्बा  
 वेओममविसंका ॥ १ ॥ दोसइयपाडिरूवं ठियवंकम्मियसरौरभासादौ बहुसोअपुरिसवयणे वित्थारारोपणंकुज्जत्ति ५ ॥ २ ॥ तथा दासवादंवदति भावना क  
 च्चिदाह दासीय माचार्य आह कथ देहाकारा कथयति दासत्वमस्येति प्रस्तारः प्राग्वदिति अत्राप्युक्तं खरओत्तिकहंजाणसि देहागाराकहंतिसेहंदि  
 छिक्कोवण [ शीघ्रकोपः ] उअडो नीयासौदारुणसहावो ॥ १ ॥ देहेणवीविरूवो क्वज्जोवडभोयवाहिरप्पाओ फुडमेवंआगारा कहिंतिजहएसखरओत्ति  
 ॥ २ ॥ आचार्यआह केइसुरूवविरूवा खुज्जामडहायवाहिरप्पाय नहुतेपरिभवियब्बा वयणचअणारियंवोत्तु मित्यादीति एवंप्रकारा नेता ननन्तरोदिता



॥ न पट्कल्पस्य साध्याचारस्य प्रस्तारान् प्रायश्चित्तरचनाविशेषान् मासगुर्वादिपारंचिकावसानान् प्रस्तौर्य अभ्युपगमतः आत्मनि प्रसुता न्विधाय प्रस्तार  
 ॥ यितावा अभ्याख्यानदायकसाधुः सम्यग्प्रतिपूरयन् अभ्याख्येयार्थस्या सङ्गततया अभ्याख्यानसमर्थनं कर्तुं मशक्नुवन् प्रत्यगिरं कुर्वन् सन् तस्यैव प्राणाति  
 पातादि कर्तुं रेव स्थान प्राप्तो गत स्तत् स्थानप्राप्तः स्यात् प्राणातिपातादिकारीच दंडनीयः स्यादिति भावः अथवा प्रस्तारा ग्रस्तार्थं विरचय्या चार्येणा भ्या  
 ख्यानदाता अप्रतिपूरय अपरापरप्रत्ययवचनै स्तमर्थं मसत्य मकुर्वन् तत् स्थानप्राप्तः कार्यं इति शेषः यत्र प्रायश्चित्तपदे विवदमानो वतिष्ठते न पदान्तर मा  
 रभते तत्पदं प्रापणीय इति भावः शेषं सुगममिति कल्पाधिकारे सूत्रद्वयं ॥ कण्पेत्यादि ॥ पट्कल्पस्य कल्पोक्तसाध्याचारस्य परिमथ्यन्तीति परिमथ्यव उणादि  
 त्वा त्याठान्तरेण परिमथ्यावा व्याघातकालइत्यर्थः इह च मन्योद्धिधा इव्यतो भावतश्च यत आह दक्वंमिमंथवोखलु तेषामथिज्जएजहादहियं दहितुल्लोख  
 लुकप्पो मथिज्जइकुक्कयाईहिति ॥ १ ॥ तत्र ॥ कुक्कुइएत्ति ॥ कुच अवस्यंदनइति वचना कुत्तित मप्रत्युपेक्षितत्वादिना त्कुचित मवस्यन्दितं यस्य स कुक्कुचि  
 तः स एव कौक्कुचितः कुक्कुचावा अवस्यन्दन मयोजन मस्येति कौक्कुचिकः स च त्रिधा स्थानशरीरभाषाभि रुक्लं च वाणेशरीरभाषा तिविहापुणकुक्कुईसमा

यस्सवायंवयमाणे शुदिन्नादाणस्सवायंवयमाणे शुविरइवायंवयमाणे शुपुरिसवायंवयमाणे दासवायंवय  
 माणे । इच्चेए ष कप्पस्स पत्यारे पत्यरेत्ता सम्ममपप्पिपूरेमाणे तठाणपत्ते । षक्कप्पस्स पलिमंथू प० तं० कुक्कु

वानी वात करतां एह ष आचारमां प्रायश्चित्त आवाना प्रस्तार करीने सम्यक् गुरुदत्तं प्रायश्चित्त अणकरतो प्राणातिपातादिकनुं करणहार जाण  
 यो ॥ ष आचारना पलिमंथू कहिया ते कहैंछे कुत्तिसतमदनो धणी पाषाणादि नाखे एहवी चेष्टा करतो सयमनो पलिमंथू १ । मुखयी अविमासी

सेणं ॥ तत्र स्थानतो यो यंत्रकत्र नर्त्तिकीवदा भ्राम्यतीति शरीरतो यः करादिभिः पाषाणादीन् क्षिपति उक्तंच करगोफणधणुपाया इण्हिउच्छुहद्र  
 पच्छराइए भमुहादाडियथणपुय विकपणंनट्टवाइत्तत्ति ॥ १ ॥ भाषातो यः सेटितमुखवादित्रादि करोति तथाच जल्पति यथा परे हसंतीति उक्तच के  
 लियमुहवाइत्ते जपइयतहाजहापरोहसइ कुणइयरूवेवहुविहे वग्घारियदेसभासाओत्ति ॥ १ ॥ अयंच त्रिविधोपि संयमस्य पृथिव्यादिसरक्षणादेः कायगु  
 त्तिपर्यन्तस्य यथा संभव परिमथु भवत्येवेति १ ॥ मोहरिएत्ति ॥ मुख मतिभाषणातिशयेन वदतीति मुखरः सएव मौखरिको बहुभाषी अथवा मुखे ना  
 रि मावहतीति निपाता मौखरिकः उक्तंच मुहरिस्सगोणनामं आवहइमुहेणभासतोत्ति ॥ सच सत्यवचनस्य मृषावादविरतेः परिमथु मौखर्ये सति  
 मृषावादसंभवादिति २ ॥ चक्खुलोलएत्ति ॥ चक्षुषा लोल खंचल खच्चुर्वा लोल यस्य स तथा स्तूपादी नालोकयन् व्रजति य इत्यर्थं इदंच धर्मकथादीना मुप  
 लक्षणं आहच आलोयंतोवच्चइ थूभाइणकहेइवाधम्मं परियट्टणाणुपेहण णपेहपथअणुचउत्तोत्ति ॥ १ ॥ इरियावहियत्ति ॥ ईर्या गमन तस्याः पंथा मा  
 र्गं ईर्यापथ स्तत्र भवा या समितिः ईर्यासमितिलक्षणा या सा ऐर्यापथिकी तस्याः परिमथुरिति आहच छकायाणविराहण संजमेआयाणकंटकाई  
 या आवडणभाणभेश्रो खड्डेउड्डाहपरिहाणित्ति ३ ॥ तित्तिणिएत्ति ॥ तित्तिणिको ज्ञाप्तेसति खेदा द्यत्किंचना भिधार्य सच खेदप्रधानत्वा देषणा उन्नमा  
 दिदोषविमुक्तपानादिगवेषणग्रहणलक्षणा तत्प्रधानो यो गोचरो गोरिव मध्यस्थतया भिचार्यचरण स एषणागोचर स्तस्य परिमथु. सखेदोहि अनेषणीय

इए संजमस्सपल्लिमंथू मोहरिएसच्चवयणस्सपल्लिमंथू चक्खुलोलए इरियावहियापल्लिमंथू तित्तिणिए एसणागो

वोलतो सत्य वचननो पल्लिमथू २ । चक्षुलोलुपी ईर्यासमितीनुं पल्लिमंथू ३ । तित्तिणीक ते अलाप्ते खेद पाम्यो जिमत्तिम वोले ते एषणा समित्तिनुं

मपि गृह्णातीतिभावः ॥ इच्छालोभयति ॥ इच्छा अभिलाष. स चासौ लोभश्च इच्छालोभो महालोभइत्यर्थः शुक्लशुक्लो ऽतिशुक्लो यथा स यस्यास्ति स इच्छालोभिको महेच्छा ऽधिकोपधिरित्यर्थः इच्छालोभोउउवहिमइरेगोत्ति स मुक्तिमार्गस्येति मुक्ति निर्णयरियहत्व मलोभत्वमित्यर्थः सैव मार्गइव मार्गो निर्वृत्तिपुरस्येति ॥ भिज्जति ॥ लोभ स्तेन य निदानकरण चक्रवर्तीन्द्रादिऋद्धिप्रार्थन त न्मोक्षमार्गस्य सम्यग्दर्शनादिरूपस्य परिमथु रार्त्तध्यान रूपत्वात् भिज्जाग्रहणा य त्पुन रलोभस्य भवनिर्वेदमार्गानुसारितादिप्रार्थन त न्न मोक्षमास्यर्ग परिमथुरिति दर्शितमिति ननु तीर्थंकरत्वादप्रार्थन न राज्यादिप्रार्थनव दुष्ट मत स्तद्विषय निदान मोक्षस्या परिमथुरिति नैव यत आह ॥ सव्वत्थेत्यादि ॥ सर्वत्र तीर्थंकरत्वचरमदेहत्वादिविषयेपि आस्ता राज्यादौ भगवता जिनेना निदानता अप्रार्थनमेव ॥ पसत्यति ॥ प्रशसिता ज्ञाघितेति तथाच इहपरलोगनिमित्त अवितित्यगरत्तचरमदेहत्तं सव्वत्थे सुभगवया अणियाणत्तपसत्यतु ॥ १ ॥ एवमेवहि सामायिक शुद्धि स्यादिति उक्तञ्च पडिसिद्धेसुयदेसे विहिण्णसुयइरागभावेवि सामइययविसुद्धं सुजंसमयाएदोण्हपित्ति ॥ १ ॥ अयचा न्तिमपरिमथयो विशेषः आहारोवहिदेहेसु इच्छालोभोउसज्जई नियाणकारीसगतु कुरुतेउद्धदेहिक ॥ १ ॥

यरस्सपलिमंथू इच्छालोभेमोत्तिमग्गस्सपलिमंथू जिज्जाणिदाणकरणेमोक्कमग्गस्सपलिमंथू । सव्वत्थजगवया ण्णिदानतापसत्था । वव्विहा कप्पठिई पसत्ता तजहा सामाइयकप्पठिई वेनवठावणियकप्पठिई निव्वि

पलिमथू ४ । इच्छा लोभियो ते मुक्तिमार्गनुं पलिमंथू ५ । नियाणानो करणहार मोक्षमार्गनुं पलिमंथू ६ ॥ सघले नियाणानो अणकरवोज जगवं ते प्रशस्त कह्यो ॥ छ प्रकारनी कल्पस्थिति कही तेकहैछे सामायिक कल्पस्थिति १ । छेदोपस्थापनीय चारित्रनी स्थिति मर्यादा २ । परिहार वि

पारलौकिकमित्यर्थः ॥ कप्पठिइत्यादि ॥ कल्पस्य कल्पाद्युक्तसाध्वाचारस्य सामायिकच्छेदोपस्थापनीयादेः स्थिति र्मर्यादा कल्पस्थिति स्तत्र सामायिक  
 कल्पस्थितिः सिज्जायरपिंडेया १ चाउज्जामेय २ पुरिमजेठेय ३ किइकम्मस्यकरणे ४ चत्तारिअवट्ठियाकप्पा ॥ १ ॥ सामायिकसाधूना अवश्यभाविन  
 इत्यर्थः आचेलकु १ हेसिय २ सपडिकमणेय ३ रायपिंडेय ४ । मास ५ पज्जोसवणा ६ छप्पेअणवट्ठियाकप्पा ॥ १ ॥ नावज्यभाविनइत्यर्थः छेदोपस्थापनी  
 यकल्पस्थितिः आचेल १ कहेसिय २ सेज्जायर ३ रायपिंड ४ किइकम्मे ५ । वय ६ जेठ ७ पडिकमणे ८ मासपज्जोसवणकप्पे १० ॥ १ ॥ एतानिच तृती  
 याध्ययनवत् ज्ञेयानि ॥ निव्विसमाणकप्पठिइनिव्विठुकप्पठिइत्ति ॥ परिहारविशुद्धिकल्प वहमाना निर्विसमानका ये रसो व्यूढ स्ते निर्विष्टा स्तेषा या  
 स्थिति र्मर्यादा सा तथा तत्र परिहारियक्कम्मासे तहअणपरिहागियाविच्छन्नामे कप्पठियोक्कम्माए तेअट्ठारमविमामत्ति ॥ १ ॥ तथा जिनकल्पस्थितिः  
 गच्छन्निउनिम्माया धोराजाहेयगहियपरमत्या अण्हजोगअभिगहे उर्वित्तिजिणकप्पियचरित्ति ॥ १ ॥ एवमादिका अण्हजोगअभिगहेत्ति कासा  
 चित् पिण्डेपणाना मग्रहे योग्याना चाभिगहे अनयैव ग्राह्य मित्येवरूपे गृहीतपरमार्थाइत्यर्थः स्थविरकल्पस्थितिः सयमकरणुज्जोया उज्जोनिप्पायग १  
 नाणदसणचरित्ते दौहाउ १ बुड्डवामे वसहीदोसेहियविमुक्का ॥ १ ॥ इत्यादिका इयच कल्पस्थिति र्महावीरेण देशितेति सवधान्महावीरवक्तव्यता सूत्रत्रय  
 तथा अनेने य मपरापि कल्पस्थिति देशितेति कल्पसूत्रत्रय मुपन्यस्य सुगमं चैत त्यचकमपि नवर पटेन भक्तो नो पवासइयलक्षणेन अपानकोन पानीयपा

समाणकप्पठिई निव्विठकप्पठिई जिणकप्पकप्पठिई थेरकप्पठिई । समणेज्जगवंमहावीरे लुठेणंजत्तेणं अणा

शुद्धि वहमान चारित्रनी स्थिति मर्यादा ३ । जेणे परिहार वहियोखे तेहनी स्थिति मर्यादा ४ । जिनकल्पनी स्थिति मर्यादा ५ । स्थविर कल्पनी

॥ नपरिहारवता यावत्करणा विग्राहाण निरावरणे कसिणे पट्टिपुणे केवलवरनाणदंसणधरेत्ति दृश्यं सिद्धे जायत्ति कारणात् बुद्धेमुत्ते अंतकटे परिनिवृत्तेति  
 ॥ दृश्य उतासरूपेण देवशरीरे आहारपरिणामी स्त्रीत्याहारपरिणामनिरूपणायाह ॥ क्वविहिभोयणेइत्यादि ॥ भोजनस्येत्याहारविशेषस्य परिणामः पर्यायः  
 ॥ स्वभावी धर्मरतियावत्तत्र ॥ मणुयोत्ति ॥ मनोज्ञं ममिल्लवणीयं भोजनं मिलेकं स्त परिणामः परिणामचता सहा भेदोपचारात् तथा रसिक माधुर्याद्युपेतं  
 तथा प्रीणनीयं रसादिभातुसमताकारि वृंहणीयं धातूपचयकारि दीपनीयं अग्निबलजनकं पाठान्तरेत्तु मदनीयं मदमोदयकारि दर्पणीयं बलकरं मु

णएणं मुंठे जाव पव्वइए । समणस्स जगवत्तमहावीरस्स वठ्ठेणंजत्तेण अपाणएणं अप्पणंतेअणुत्तरे जाव समु  
 प्पन्ते । समणेजगवमहावीरे वठ्ठेणंजत्तेण अपाणएणं सिद्धे जाव सव्वदुक्कप्पहीणे । सणंकुमारमाहिंदेसुण  
 कप्पेसु विमाणा वजोयणसयाइं उहं उच्चत्तेणं पणत्ता । सणंकुमारमाहिंदेसुणं कप्पेसु देवाणं जवधारणि  
 ज्जागा सरीरगा उक्कोसेण वरयणीत्त उहं उच्चत्तेण पणत्ता । वव्विहे ज्ञोयणपरिणामे पणत्ते तंजहा मणुन्ने

स्थिति मर्यादा ६ ॥ अमणं जगवत्तं महावीरं षष्ठं जत्तं एतले चोविहारं वे उपवासं कीयायका मुंठं यावत् दीक्षांलीली १ ॥ अमणं जगवत्तं महावीरने  
 षष्ठंभक्ते चोविहारे अनंतं उत्कृष्टं केवलज्ञानं उपनुं ॥ अमणं भगवत्तं महावीरं षष्ठंजत्तं चोविहारनी तपस्याधी सीधा यावत् सर्वदुस्वरहितं थया ॥ सनत्कु  
 मारं देवलोकमा विमानं लसे योजनं ऊंचा ऊचपणे कट्टिया ॥ सनत्कुमारं माहेन्द्रदेवलोके विमानमा देवताने जवधारणीयं शरीरं उत्कृष्टो ल हाथ  
 नी ऊचो ऊचपणे कट्टो ॥ ल प्रकारे योजननी परिणामं कट्टो तेकहैळे मनोज्ञरमणुं योजनं अनिलसणीयं १ । रसितं ते मीठा रसादियुक्तं २ । प्री

त्साहवृद्धिकर मित्यन्यइति अथवा भोजनस्य परिणामो विपाकः सच मनोज्ञः शुभत्वा न्मनोज्ञभोजनसंधित्वा हेत्येव मन्त्रेपि परिणामाधिकारा दायार्तं  
विषपरिणामसूत्र मध्येव नवर ॥ डक्केति ॥ दष्टस्य प्राणिनो दष्टाविषादिना यत्पीडाकारि तदष्ट जंगमविष यच्च भुक्त सत् पीडयति तद् भुक्त मित्युच्यते तच्च  
स्थावर यत्पुनर्निपतित उपरिपतित सत् पीडयति तन्निपतित त्वग्विष दृष्टिविषं चेति त्रिविधं स्वरूपतः तथा किंचि न्मासानुसारि मांसांतधातुव्यापक  
किंचि च्छोणितानुसारि तथैव किंचिच्चा स्थिमिंजानुसारि तथैवेति त्रिविधं कार्यत एवच सति पङ्क्तिविधं तत्तत स्तत्परिणामोऽपि षोडशेति एवभूतार्था  
नाच निर्णयो निरातिशयस्या मप्रश्नतो भवतीति प्रश्नविभागमाह ॥ छद्विहेत्यादि ॥ प्रच्छन्नं प्रश्न स्तत्र सशय प्रश्नः क्वचिदर्थे सशये सति यो विधीयते यथा  
जइतवसाओदाण सजमओगोसवोत्तितेकहण देवत्तजतिजई गुरुराहसरागसजमओत्ति ॥ १ ॥ व्युद्गहेण मिथ्याभिनिवेशेन विप्रतिपत्त्येत्यर्थः परपक्षदूषणा

रसिए पीणणिज्जे विंहणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे । छद्विहे विसपरिणामे पस्सते तंजहा ऋक्के जुत्ते निव्वइए  
मंसाणुसारी सोणियाणुसारी अण्ठिमिंजाणुसारी । छद्विहे पठे पस्सते तजहा संसयपठे वुग्गहपठे अणुजोगी

गानीय ते रसादिधातुनी समतानो करणहार ३ । वृंहणीय धातुको बढानेवाला ४ । दीपनीय अग्नि और बलको बढाने वाला ५ । दर्पणीय बलकर  
उत्साहवृद्धि को करनेवाला ६ ॥ छ प्रकारे विषनो परिणाम कह्यो तेकहैछे डक्क ते दाढमां जहर साप प्रमुखने १ । जुक्त अफीम सोमल प्रमुख २ ।  
ऊपरि पड्यो पीडाकरे ते निर्वर्तित ३ । केतलो मासानुसारी ४ । लोहीने अनुसारे कोईक विष ५ । केतलोक विष हाऊमा जई जई लागे ६ ॥ छ  
प्रकारे प्रश्न कह्यो ते कहैछे शसय ऊपनाथी गुरूने पूछे मिथ्याभिनिवेशथी पूछे १ । परपक्षने दोष देवाने पूछे २ । अनुयोग व्याख्यान करतीवेला

॥ यं य' क्रियते प्रश्न. सव्युद्गृहप्रश्नो यथा सामन्त्रप्रोविसेसो अन्वोणन्वोव्वहोज्जुइअन्वो सोनत्थिखुपुप्फंपिव णन्वोसामणमेवतयति ॥ १ ॥ अनुयोगीति अ  
 नुयोगो व्याख्यान प्ररूपणेति यावत् स यत्रास्ति तदर्थं य' क्रियत इतिभावी यथा चउहिसमएहिलोगो इत्यादि प्ररूपणाय कइहिसमएहोत्यादि गम्य  
 कारएव प्रश्नयति अनुलोमे ऽनुलोमनार्थं मनुकूलकरणाय परस्य यो विधीयते यथाचेमं भवतामित्यादि ॥ तहणाणेति ॥ यथा प्रच्छनीयार्थं प्रष्टव्यस्य ज्ञानं  
 तथैव प्रच्छक्तस्यापि ज्ञानं यत्र प्रश्ने स तथाज्ञानो जानन्नप्रश्नइत्यर्थः सच गौतमादेर्यथा केवइकालेणभन्ते चमरचचारायहाणी विरहिया उववाएण मित्या  
 दि रिति एतद्विपरीतं स्वतथाज्ञानो अजानन्नप्रश्न इत्यर्थं कचिच्छब्दिहेप्रष्टेइतिपाठं स्तत्र संशयादिभिरर्थोविशेषणीय इति इहानन्तरसूत्रे तथा ज्ञानप्रश्नो द  
 र्शितं स्तत्र चोत्तरवस्तुना भाष्यमिति तदर्थंयति ॥ चमरचचेत्यादि ॥ चमरस्य दाक्षिणात्यस्यासुरनिकायनायकस्य चंचा चंचाख्या नगरी चमरचंचा याहि  
 जंबूद्वीपे मंदरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन तिर्यगसंख्येयान् द्वीपसमुद्रान् व्यतिव्रज्या रुणवरद्वीपस्य बाह्याद्धेदिकांता दक्षिणोद समुद्रं द्विचत्वारिंश योजनसहस्रा  
 ण्य वगाह्य चमरस्या सुरराजस्य त्रिगिच्छिकूटोनाम य उत्पातपर्वतो स्ति सप्तदशैकविंशलुत्तराणि योजनशता न्युच्च स्तस्य दक्षिणेन षट्पञ्चयोजनकोटिश्च

अणुलोमे तहणाणे अतहणाणे । चमरचंचाणं रायहाणी उक्खोसेणं तम्मासाविरहिया उववाएणं । एगमेगेणं  
 इदंठाणे उक्खोसेणं तम्मासे विरहिणु उववाएणं । अहे सत्तमाणं पुढवी उक्खोसेण तम्मासा विरहिया उव

पूछे ३ । अणुलोम माहोमाहि अनुकूल करवाने पूछे जेतुमने कुशलछे ४ । तथा ज्ञानप्रश्न ३६ हजार गौतमे प्रश्नपूछ्या ५ । असत्य ज्ञाननुं अज्ञान  
 प्रश्न ६ ॥ चमरचचा राजधानीमा उत्कृष्टो छ महीनानो विरह होय उपजवानो देवतानुं ॥ एक एक इंद्रना स्थानके उत्कृष्टो छमहीनानुं विरहहो

तानि साधिकान्यरुणोदे समुद्रे तिर्यग्व्यतिव्रज्या धोरत्नप्रभायाः पृथिव्या श्रुत्वारिंशद्योजनसहस्रा ख्यवगाह्य व्यवस्थिता जंबूद्वीपप्रमाणा च सा चमरचं  
 चाराजधानी उत्कृष्टेन षड्मासान्विरहिता वियुक्ता उपपातेन इहो त्यद्यमानदेवाना षड्मासान् यावत् विरही भवतीति भावः विरहाधिकारा दिदं  
 सूत्रत्रय ॥ एगेत्यादि ॥ एकैक मिन्द्रस्थान चमरादिसबध्याश्रयो भवननगरविमानरूप स्तदुत्कर्षेण षण्मासान् याव विरहित सुपपातेन द्रापेक्षयेति अधः  
 सप्तमी त्यत्र सप्तमीहि रत्नप्रभापि कथंचि द्भवति तद्वचस्केदार्थं मधोग्रहण मत स्तमस्तमेत्यर्थः सा षण्मासान्विरहितो पपातेन यदाह चउवीसइमुहु  
 त्ता १ सत्तअहोरत्त २ तहयपन्नरस ३ मासोय ४ दोय ५ चउरो ६ छम्मासाविरहकालोउत्ति ७ ॥ १ ॥ सिद्धिगतानुपपातो गमनमात्र सुच्यते न जन्म  
 तडेतूना सिद्धस्या भावादिति इहोक्तं एगसमओजहन्नं उक्कोसेणहवंतिछम्मासा विरहोसिद्धिगईए उव्वट्टणवज्जियानियमत्ति ॥ १ ॥ शेष सुगममिति अ  
 नतर सुपपातस्य विरह उक्त उपपातश्चा युर्वन्धे सति भवती त्यायुर्वन्धसूत्रप्रपच ॥ छव्विहेत्यादिक ॥ माह सुगम श्रायं नवरं आयुषो बंध आयुर्वन्ध स्तत्र  
 जाति रेकेन्द्रियजात्यादिः पंचधा सैव नाम नाम्नः कर्मण उत्तरप्रकृति विशेषो जीवपरिणामोवा तेन सह निधत्त त्रिषिक्तं यदायु स्तज्जातिनामनिधत्तायु

वाएणं । सिद्धिगईणं उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववाएणं । छव्विहे श्राउयबंधे पस्सत्ते तंजहा जाइणाम

य उपजवानो ॥ अथ सातमी पृथ्वीये उत्कृष्टो छ महीनानुं विरह उपजवानो होय ॥ मोक्ष गतिमा उत्कृष्टो छ महीनानुं उपजवानुं विरह होय ॥  
 छ प्रकारे आऊखानुं वध कइयो ते कहैछे एकेद्रियादि जातिनामनुं तेसाथे वाध्यो कर्म ते समय समय जोगवो १ । नारकादि गति च्यारनु निवट्ठ  
 कर्म २ । स्थिति नाम निवट्ठ कर्म जेतलो वाध्यो तेतलोज जोगवो ३ । अवगाहना औदारिकादि शरीरथी बांध्यो आयुकर्म ४ । आयुकर्मना प्रदेश



निषेक्त्य कर्मपुद्गलानां प्रतिसमयानुभवनरचनेति उक्तं च मोक्षसूत्रसंगमवाचं पटमा एठिर्द्वैतवद्वत्तं सेसेविसेसहीणं जायुक्तीरसंतिसव्वासिंति ॥ १ ॥  
सव्वासिंति स्थापनाचैवं तथा गति नारकादिका चतुर्धा शेष तथैवेति गतिनामनिधत्तायुरिति तथा स्थितिरिति यत् स्थातव्य केनचि द्विवचितेन भावेन  
जीवेना युःकर्मणा वा सैव नामपरिणामो कर्मस्थितिनाम तेन विशिष्ट निधत्त यदायुर्दलिकरूपं तत् स्थितिनामनिधत्तायुः अथचेह नामसने जाति  
नामगतिनामावगाहनानामग्रहणा ज्जातिगत्यग्रहणानां प्रकृतिमात्रं मुक्तं स्थितिप्रदेशानुभागनामग्रहणात् तासामेव स्थित्यादय उक्ता स्तेच जात्या  
दिनामसर्वधित्वा नामकर्मरूपा एवेति नामशब्दः सर्वत्र कर्मार्थो घटत इति स्थितिरूपं नामकर्म स्थितिनाम तेन सह निधत्तं यदायु स्तत् स्थितिनामनिध  
त्तायुरिति तथा प्रवगाहते यस्यां जीवः सा प्रवगाहना शरीरमौदारिकादि स्तस्या नाम औदारिकादिशरीरनामे त्ववगाहनानाम तेन सह यन्नि  
धत्त मायु स्त दवगाहनानामनिधत्तायुरिति तथा प्रदेशाना मायुःकर्मद्रव्याणां नाम तथाविधा परिणतिः प्रदेशनाम प्रदेशरूपवा नाम कर्मविशेषप्रत्य  
र्थः प्रदेशनाम तेन सह य निधत्त मायु स्तप्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अनुभाग आयुर्द्रव्याणामेव विपाक स्तस्रक्षणएव नाम परिणामो ऽनुभागरूपं  
या नामकर्मो अनुभागनाम तेन सह निधत्तं यदायु स्तदनुभागनामनिधत्तायुरिति अथ किमर्थं जात्यादिनामकर्मणा आयुर्विशेष्यते उच्यते आयुष्पस्य प्रा  
धान्योपदर्शनार्थं यस्मा नारकावायु रुदये सति जात्यादिनामकर्मणा सुदयोभवति नारकादिभयोपगाहक चायुरेव यस्मा दुक्तं प्रज्ञत्यां नेरक्षणं भंते

निहत्ताउए ठिङ्गनामनिहत्ताउए उंगाहणाणामनिहत्ताउए पएसणामनिहत्ताउए अणुजावणामनिहत्ताउए ।

थी बांध्यो ते प्रदेश निधत्त ५ । आयुर्कर्मना रसणी बांध्यो ते अनुजाग नाम निबद्ध अनुजागो रसो ज्ञेय इति वचनात् ॥ नारकीने के प्रकारे आ

नेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ गोयमा नेरइए नेरइएसु उववज्जइ एतदुक्तं भवति नारकायुः सवेदनप्रथमसमयएव नारक इत्युच्यते ॥  
तत्सहचारिणां पचेन्द्रियजात्यादिनामकर्मणा मप्युदयइति इह चायुर्वन्धस्य षड्विधत्वे उपक्षिप्ते यदायुषः षड्विधत्वमुक्तं न्तदायुषो बन्धाव्यतिरेका इदस्यैव  
चायुर्व्यपदेशविषयत्वादिति ॥ नियमति ॥ अवश्य आवादित्यर्थः ॥ कृष्णासावसेसाउयत्ति ॥ षण्मासा अवशेषा अवशिष्टा यस्य त तथा त दायुर्व्येषांते ष  
ण्मासावशेषायुष्काः परभवो विद्यते यस्मिंस्तत्परभविकं तच्च तदायुश्चेति परभविकायुः प्रकुर्वन्ति बध्नन्ति असंख्येयानि वर्षाण्ययुर्व्येषांते तथा तेचते स  
ज्जिनश्च समनस्काः पचेन्द्रियतिर्यग्योनिका स्ये त्वसंख्येयवर्षायुष्कसज्जिपचेन्द्रियतिर्यग्योनिका इहच सज्जिग्रहण मसंख्येयवर्षायुष्कासज्जिनएवभवन्तीति नियम  
दर्शनार्थं न त्वसंख्येयवर्षायुषा मसज्जिनां व्यवच्छेदार्थं तेषां मसभवादिति इहच गाथे निरइसुरअसखाऊ तिरिमणुयासेसएउकृष्णासे इगविगलानिर  
वक्कम तिरिमणुयाआउयतिभागे ॥ १ ॥ अवसेसासोवक्कम तिभागनवभागसत्तवौसइमे वधतिपरभवाओ निययभवेसव्वजीवाओत्ति ॥ २ ॥ इदमेवा न्ये  
रित्यमुक्तमिह तिर्यग्मनुष्या आत्मोयायुषस्त्वतीयत्रिभागे परभवायुषो वधयोग्या भवन्ति देवनारकाः पुनः षण्मासे शेषे तत्र तिर्यग्मनुष्ये र्यद्विद्वतीयत्रिभा

णेरइयाणं षड्विहे आउयवंधे पस्सत्ते तंजहा जाइणामणिहत्ताउए जाव अणुजावनामणिहत्ताउए । एवं जाव  
वेमाणियाण । णेरइया कृष्णासावसेसाउया परज्जवियाउयं पगरेत्ति । एव मसुरकुमारावि जाव थणियकुमा

ऊखानो वध कह्यो ते कहैछे जातिनाम निधत्त आयु एम यावत् वैमानिक लगे ॥ नारकी निश्चे छ महीनानु आयु थाकतां शेष रहतां परभवन्तो  
आऊखो बाधे ॥ एम असुरकुमार पणि यावत् स्तनितकुमार ॥ असंख्याता वरसना आऊखाना सन्ती पचेद्री तिर्यंच योनिया निश्चे छ महीनानुं शो

॥ गे आयुर्न बद्ध ततः पुनः स्तृतीयत्रिभागस्य तृतीयत्रिभागे शेषे बध्नन्ति एवं तावत् संचिपं त्यायु र्याव त्त्सर्वजघन्य आयुर्वन्धकाल उत्तरकालश्च शेषे स्तिष्ठ  
 ति इह तिर्यग्मनुष्या आयुर्बध्नत्ययवा संचेपकाल उच्यते तथा देवनैरयिकैरपि यदिषण्मासे शेषे आयुर्न बद्ध ततः आत्मीयस्या युषः षण्मासशेषं तावत्संचि  
 यति यावत् सर्वजघन्य आयुर्वन्धकाल उत्तरकालश्च वशेषो वतिष्ठत इह परमवायुर्देवनैरयिका बध्नतीत्यय मसंचेपकालः अनन्तरमायुर्कर्मबध उक्तः आ  
 युः पुनरौदयिकभावहेतु रित्यौदयिकभाव भाजसाधर्म्यां च्छेषभावांश्च प्रतिपादयन्नाह ॥ छब्धिहेभावेइत्यादि ॥ भवनभावः पर्याय इत्यर्थः स्तत्रौदयिको  
 द्विविध उदय उदयनिष्पन्नश्च तत्रौदयोऽष्टानां कर्मप्रकृतौना मुदयः श्रुतावस्थापरित्यागे नोदौरणावलिका मतिक्रम्य उदयावलिकाया आत्मीयरूपेण वि  
 पाकइत्यर्थः अत्रचैव व्युत्पत्तिः उदयएव औदयिक उदयनिष्पन्नस्तु कर्मोदयजनितो जोवस्य मानुपत्वादिपर्यायः स्तत्रच उदयेन निर्वृत्तः स्तत्र भव इत्यौ दयिक  
 इत्येव व्युत्पत्तिरिति तथा औपशमिकोपि द्विविध उपशम उपशमनिष्पन्नश्च तत्रोपशमो मोहनीयकर्मणो नन्तानुबन्ध्यादिभेदभिन्नस्योपशमश्रेणिप्रतिपन्नस्य  
 मोहनीयभेदाननन्तानुबन्धादौ नुपशमयत उदयाभावइत्यर्थः उपशम एवौपशमिक उपशमनिष्पन्नस्तु उपशान्तक्रोधइत्यादि उदयाभावफलरूप आत्मपरि  
 णामइति भावना तत्रच व्युत्पत्तिः उपशमेन निर्वृत्त औपशमिकइति तथा जायिको द्विविधः जयः जयनिष्पन्नश्च तत्रजयोऽष्टानां कर्मप्रकृतौना ज्ञानावर  
 णादिभेदानां जयः कर्माभाव एवेत्यर्थः स्तत्र जयएव जायिकः जयनिष्पन्नस्तु तत्फलरूपो विचित्र आत्मपरिणामः केवलज्ञानदर्शनचारित्रादि तत्रजयेण नि  
 र्वृत्त जायिकइति व्युत्पत्तिः स्तथा जायोपशमिको द्विविधः जयोपशमः जयोपशमनिष्पन्नश्च तत्र जयोपशमः शतगुणीं घातिकर्मणा केवलज्ञानप्रतिबन्धकानां  
 ज्ञानावरणदर्शनावरणमोहनीयांतरायाणां जयोपशम इह तू दीर्घस्य जयोऽनुदीर्घस्यच विपाक मधिकृत्योपशमइति गृह्यते आ औपशमिकोऽप्येव भूत  
 एव नैव तत्रोपशान्तस्य प्रदेशानुभवतो मवेदना हस्मिंश्च वेदनादिति अथच जयोपशमक्रियारूपएवेति जयोपशमएव जायोपशमिकः जयोपशमनिष्प

न स्वाभिनिबोधिकज्ञानादिलब्धिपरिणाम आत्मनएव क्षयोपशमेन निर्वृत्तः क्षायोपशमिकइति च व्युत्पत्तिरिति तथा परिणमनं परिणामः अपरित्यक्तपूर्वावस्थस्यैव तद्भावगमनमित्यर्थः उक्तंच परिणामोह्यर्थान्तर गमनत्रचसर्वथाव्यवस्थान नचसर्वथाविनाशः परिणामस्तद्विदामिष्टः ॥ १ ॥ सएव परिणामिकइत्युच्यते सच सायनादिभेदेन द्विविध स्तत्र सादि जीर्णघृतादीनां तद्भावस्य सादित्वादिति अनादिपरिणामिकस्तु धर्मास्तिकायादीनां तद्भावस्य तेष्वा मनादित्वादिति तथा सन्निपातो मेलक स्तन्निवृत्तः सान्निपातिकः अयं चैषां पञ्चाना मीदयिकादिभावाना द्वादिसंयोगतः सभवासभवानपेक्षया षड्विंशतिभङ्गरूपः तत्र द्विकसंयोगेद्दश त्रिकसंयोगेपि दशैव चतुष्कसंयोगेपच पचसंयोगेतु एकएवेति सर्वेपिषड्विंशतिरिति इहचा विरुद्धाः पचदश सान्निपातिकभेदा इष्यते तेचैव भवति उदयखगोलसमिष्ट परिणामिकेकोऽगच्छउक्तेवि खययोगेणविचरतो तयभावेउवसमेणपि ॥ १ ॥ उवसमसेढीएको केवलिणोवियतहेवसिडस्त अविरुद्धसन्निवाइय भेयाएमेवपञ्चरसन्ति ॥ २ ॥ औदयिकक्षायोपशमिकपारिणामिकनिष्पन्नः सान्निपातिक एकैको गतिचतु

रा । असंखेज्जवासाउया सन्तिपंचेदियतिरिक्कजोणिया णियमं त्थम्मासावसेसाउया परञ्जवियाउयं पगरेति  
असंखेज्जवासाउया सन्तिमणुस्सा णियमं जाव पगरेति । वाणमंतरजोइसिया वेमाणिया जहा णेरइया ।

य थाकते आज्ञखो परञ्जवनुं आज्ञखो बांधे ॥ असंख्याता वरसना आज्ञखाना सन्ती मनुष्य निश्चे यावत् बांधे ॥ व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक जिम नारकी तिम ॥ छ प्रकारे कर्मनो भाव कह्यो ते कहैछे औदयिक ज्ञाव ८ कर्म उदय प्राप्त जोगवे ते १ । उपशमज्ञाव ते ज्ञाव २ । क्षायिक ज्ञाव ८ कर्मनो समावे ते ३ । क्षयोपशमिक ते काईक शमावे ४ । पारिणामिक ज्ञाव ते कर्मस्वज्ञाव ५ । सन्निपातिक ज्ञाव ते सह १५ ज्ञावनुं एकठो मेलवो



॥ भावा उक्ता स्तेषु चा प्रशस्तेषु यद्वत्तं यच्च प्रशस्तेषु न वृत्तं विपरीतश्रद्धानप्ररूपणेवा ये कृते तत्र प्रतिक्रामितव्यं भवतीति प्रतिक्रमणमाह ॥ कृत्विहेपडि  
क्रमणेत्यादि ॥ प्रतिक्रमण द्वितीयप्रायश्चित्तभेदलक्षण मिथ्यादुष्कृतकरणमितिभावः तत्रोच्चारोत्सर्गं विधाय यदीर्यापधिकाप्रतिक्रमण तदुच्चारप्रतिक्रमण  
मेव प्रश्रवणविषयमपीति उक्तञ्च उच्चारंपासवण भूमीएवोसिरित्तुउवउत्तो ओसरिऊणंतत्तो इरियावहियंपडिक्रमइ ॥ १ ॥ वोसिरइमत्तगेज्जइ नपडि  
क्रमइयमत्तगंजोउ साहपरिठ्वेई नियमेणपडिक्रमेसोउत्ति २ ॥ इत्तरियत्ति ॥ इत्वरं स्वकल्पकालिक दैवसिकरात्रिकादि ॥ आवकहियत्ति ॥ यावत्कथि  
कं यावज्जीविकं महाव्रतभक्तपरिज्ञानादिरूप प्रतिक्रमणत्वं चास्य निवृत्तिलक्षणान्वर्थयोगादिति ॥ जंकिविमिच्छत्ति ॥ खेलसिंघाणाविधिनिस्सर्गा  
भोगानाभोगसहसाकाराद्यसयमस्वरूपं यत्किंचि न्मिथ्या असम्यक् तद्विषयं मिथ्ये दमित्येवं प्रतिपत्ति पूर्वक मिथ्यादुष्कृतकरणं यत् किंचिन्मिथ्याप्रति  
क्रमणमिति उक्तञ्च सजमयोगेअभु द्वियस्सजंकिंचितहमायरियं मिच्छाएयंतिविया णिऊणमिच्छत्तिकायव्वंति ॥ १ ॥ तथा खेलसिंघाणंवाअप्पडिलेहा  
पमज्जिओतहय वोसरियपडिक्रमइ तपियमिच्छुकडदेई त्यादि ॥ १ ॥ तथा ॥ सोमणतिएत्ति ॥ स्वापनातिकं स्वपनस्य सुप्तिक्रियाया अंते ऽवसाने भव  
स्वापनान्तिक सुप्तोत्थिताहि ईर्यां प्रतिक्रामति साधवइति अथवा स्वप्नो निद्रावशेविकल्प स्तस्यान्तोविभागः स्वप्नान्त स्तत्र भवं स्वाप्नान्तिक स्वप्नविशेषे  
हि प्रतिक्रमण कुर्वन्ति साधवो यदाह गमणागमणविहारे सुत्तेवासुमिणदंसणेराओ नावानइसतारे इरियावहियापडिक्रमण ॥ १ ॥ यत आउलमा

मणे पस्सत्ते तंजहा उच्चारपडिक्रमणे पासवणपडिक्रमणे इत्तरिए आवकहिए जकिंचिमिच्छा सोमणंइए ।

मे १ । लघुनीत परठवीने इरियावही पडिक्रमे २ । इत्वर थोळाकालनुं पडिक्रमवो देवसी राई पडिक्रमे ३ । यावत्कथिक महाव्रत ऊचरवारूप ४ ।

॥ उलयाए सोवणवत्तियाएइत्यादि प्रतिक्रमणसूत्रं तथा स्वप्रकृतपाणातिपातादि पर्थगत्या प्रतिक्रमणरूपया कायोत्सर्गलक्षणप्रतिक्रमणमेव सुक्तं पाणि  
 ॥ वडससावाए अदत्तमेएणपरिणहेचेव सयमेगंतुअणूण जसासाणभवेज्जाहि ॥ १ ॥ अनतरं प्रतिक्रमण मुक्ता न्तञ्चा वश्यकम प्युच्यते आवश्यकच नदत्तोदया  
 दापसरे कुर्व्वतोति नचत्रसूत्रे शेषसूत्राणि चाध्ययनपरिसमाप्तेः पूर्वाध्ययनव दवसेयानीति ॥ इतिशौमदभयदेवाचार्यविरचिते स्थानाख्यतृतीयाङ्कविवरणे  
 षट्स्थानकाख्ये षष्ठमध्ययन समाप्त मिति ॥ श्लोकाः ७६५ ॥ ६ ॥ ५ ॥ ४ ॥ ३ ॥ २ ॥ १ ॥

कत्तियाणखत्ते ठतारे प० । असिलेसाणखत्ते ठतारे पन्नत्ते । ठठाणनिवृत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिं  
 सुवा ३ त० पुढविकाइयनिवृत्तिए जाव तसकाइयनिवृत्तिए एव चिणउवचिणवधउदी रवेयतहनिज्जराचेव ।  
 ठप्पएसियाण खधा अणता पन्नत्ता । ठप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता । ठसमयठिईयापोग्गला अणता ।  
 ठगुणकालगापोग्गला जाव ठगुणलुस्का पोग्गला अणंता पणत्ता ॥ इइठठाणं समत्त ॥ ६ ॥

संयमने विषे दूषण लाग्यां मिच्छामिदुक्कडं कहैं ५ । सूतो ऊठी इरियावही पक्कमे ६ ॥ कत्तिका नत्तवना ठ तारा कत्था ॥ जालेपा नत्तवना ठ  
 तारा कत्था ॥ जीवने ठ थानके नीपना पुद्गल पापकर्म पणे चिण्या चिणेळे चिणस्ये तेकहैंळे पृथ्वीकाय निर्वर्तित यावत् त्रसकाय निर्वर्तित ॥ इम  
 चिण्या उपचिण्या बांध्या उदीस्या वेदवा निर्जराव्या जाणवा ॥ ठ प्रदेशिया सध अनताळे ॥ ठप्रदेशे रहिया पुद्गल अनताळे ॥ ठ समयनी स्थि  
 तिना पुद्गल अनताळे ॥ ठगुणा काला पुद्गल अनताळे यावत् ठ गुणा लूसा पुद्गल अनताळे ॥ इति ठ स्थानकरूप ठाणी अध्ययन ठाणी पूरोथयो ॥

व्याख्यातं षष्ठ मध्ययन मधुना सप्तम मारभ्यते अस्य चाय मभिसंबंधः इहानन्तराध्ययने षट्संख्यो पेताः पदार्थाः प्ररूपिता इहतु तएव सप्तसंख्ययोपेताः प्ररूप्यन्त इत्येव सबधस्या स्य चतुरनुयोगद्वारस्ये दमादिसूत्र ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहा य मभिसबधो ऽनन्तरसूत्रे पुद्गलाः पर्यायत उक्ता इह तु पुद्गलविशेषानामेव क्षयोपशमती यो नुष्ठानविशेषो जीवस्य भवति तस्य सप्तविधत्व मुच्यते एव सबधस्या स्य व्याख्या सहितादिस्तु तत्क्रमः प्रतीतएव नवर सप्तविध सप्तप्रकार प्रयोजनभेदेन भेदा द्रव्या द्रव्या दपक्रमण निर्गमो गणोपक्रमणं प्रज्ञप्त न्तीर्थकरादिभि स्तद्यथा सर्वान् धर्मान् निर्जराहेतून् शु तभेदान् सूत्रार्थोभयविषयान् अपूर्वग्रहणविस्मृतसधौन पूर्वाधीतपरावर्त्तनरूपान् चारित्रभेदा च क्षणवैयावृत्त्यरूपान् रोचयामि रुचिविषयीकरोमि चि कौर्षामि तेचा मुत्र परगणे सपद्यते नेह स्वगणे बहुश्रुतादिसामग्राभावा दत स्तदर्थं स्वगणा दपक्रमामि भदंत इत्येवं गुरुपृच्छाद्वारेणै क गणापक्रमण सु क्तं अथ सर्वधर्मान् रोचयामौ त्युक्ते कथं पृच्छार्थो वगम्यत इत्युच्यते ॥ इच्छामिणभंते एकलविहारपडिममित्यादि ॥ पृच्छा वचनसाधर्म्यादिति रुचेस्तुकरणे च्छार्थता पत्तियामि रोएमौ त्यत्र व्याख्यातैवेति क्वचित्तु ॥ सव्वधम्मंजाणामि एवमेगेअवक्कमे ॥ इत्येवं पाठ स्तत्र ज्ञानी अहमिति किंगणेनेति मदा दप

**सत्तविहे गणावक्कमणे पस्सत्ते तजहा सव्वधम्मारोएमि एगइयारोएमि एगइयानोरोएमि सव्वधम्मावितिगि**

सात प्रकारे कारण विशेषे गच्छमांथी नीकलवो कह्यो तेकहैछे गुरुने पूछी सर्वधर्म चारित्रादि रुचावाने बीजागच्छमां जाय १ । काईक श्रुत चारि त्रादि रुचावुछु काईक नथी चारित्रसेवी सकतो तिवारे गुरुने पूछी बीजागच्छमां सामग्री जाणी जाय २ । सर्वधर्म अनुकूललक्षणछे तेहनो शंसय मु जने ते टालवा बीजागच्छमा जाय गुरुने पूछीने ३ । एक कोईक जावनु संदेह मुजने छे केतलाईक जावनी संदेह नथी आवतो तेमाटे बीजा गच्छ



कामति तथा ॥ एगइयत्ति ॥ एककान् कांश्चन शुतधर्मां चारित्रधर्मान्वा रोचयामि चिकीर्षामि एककाश्च शुतधर्मां चारित्रधर्मान्वा नोरोचयामि नचि  
कोर्षामो त्यत श्विकोर्षितधर्माणां स्वगणे करणसामग्रभावा दपक्रमामि भदंतइति द्वितीयं २ तथा सर्वधर्मां नुक्कलक्षणान्विचिकित्सामि संशयविषयीकरोमी  
त्यत संशयापनोदार्थं स्वगणा दपक्रमामोति तृतीय ३ एव मेकका न्विचिकित्साम्येकका न्नोविचिकित्सामोति चतुर्थं ४ तथा ॥ जुहुणामिति ॥ जुहोमि अ  
न्येभ्यो ददामि नच स्वगणे पात्रमस्थितो पक्रमामोति पचम ५ एव षष्ठमपि ६ तथा ॥ इच्छामिणभदत ॥ धर्माचार्य एकाकिनो गच्छनिर्गतत्वा ज्जिनकल्पि  
कादितया यो विहारा विचरण तस्य या प्रतिमा प्रतिपत्ति प्रतिज्ञा सा एकाक्किविहारप्रतिमा ता सुपसपद्या ज्जीकत्थ विहर्तुमिति सप्तममिति ७ अ  
थवा सर्वधर्मान् रोचयामि अद्घे ऽहमिति तेषां स्थिरीकरणार्थं मपक्रमामि तथा एककान् रोचयामि अद्घे एककाश्च नोरोचयामी त्यअद्वितानां अडा  
नार्थं मपक्रमामो त्यनेन पदद्वयेन सर्वविषयाय देशविषयायच सम्यग्दर्शनाय गणापक्रमण मुक्तां एवं सर्वदेशविषयसंशयविनोदसूचकेन ॥ सव्वधम्मावि  
चिकिच्छामोत्यादि ॥ पदद्वयेन ज्ञानार्थं मपक्रमण मुक्तां तथा सर्वधर्मान् जुहोमीति जुहोते रदनार्थत्वा ज्जक्षणार्थस्यचा सेवावृत्तिदर्शना दाचराभ्यासेवा  
भ्यनुतिष्ठामोति याव त्तथा एककान्वा सेवामोति सर्वपामासेव्यमानाना विशेषाथे मनासेवितानाच क्षणवैयावृत्त्यादौना चारित्रधर्माणा मासेवार्थं  
मपक्रमामो त्यनेन पदद्वयेन तथैव चारित्रार्थं मपक्रमण मुक्तामिति उक्तञ्च नाणठ्ठदसण्ठा चरणठ्ठाण्वमाइसंकमण संभोगठ्ठावपुणो आयरियठ्ठावणायव्वंति

च्छामि एगइयावितिगिच्छामि एगइयानोवितिगिच्छामि सव्वधम्माजुज्जणामि एगइयाजुज्जणामि एगइया

मा ज्ञानी जाणी जाय पूखीने ४ । सर्व धर्म ज्ञानादिरूप अन्यने आपु इम जाणी पोताना गच्छमां पात्र तेहवो नथी तेमाटे वीजा गच्छमा जाय ५ ।

॥ १ ॥ तत्र ज्ञानार्थं सुत्तस्त्वअत्यस्त्व उभयस्त्वकारणाउसकमण वीसज्जियस्सगमण भौओयनियत्तएकीएत्ति ॥ १ ॥ दर्शनप्रभावकशास्त्रार्थं दर्शनाय चारित्र्यार्थं यथा चरिनष्ठदेसिदुविहा [ देशेद्विविधादोषादित्यर्थः ] एसणटोसायइत्थिदोसाय [ ततो गणापक्रमणं भवति ] गच्छंमियसीयते आयसमुत्थेहि दोसेहिति ॥ १ ॥ संभोगार्थं नाम यत्रो पसपन्न स्ततोपि विसभोगकारणे सदनलक्षणे स त्यपक्रामतीति आचार्यार्थं नामाचार्यस्य महाकल्पश्रुतादिश्रुत नास्त्यत स्तदध्यापनाय शिष्यस्य गणान्तरसक्रमो भवतीति इहच स्वगुरु पृष्ठेव विसर्जिते नापक्रमितव्यमिति सर्वत्र पृच्छार्थी व्याख्येय उक्तकारणवशात्तुपक्षा दिकाला त्परतो ऽविसर्जितोपि गच्छेदिति निष्कारण गणापक्रमणं त्वविधेयं यत आयरियाईणसया पच्छित्तभयानसेवइअक्किञ्च वेयावच्चज्झयणे सुस ज्जएतदुवओगेण ॥ १ ॥ सूत्रार्थोपयोगेनेत्यर्थं स्तथा एगोइच्छोगंमो तेणाटिभयायअत्तिययगारे [ गृहस्थान् ] कोहादौचउदिणे परिनिव्वावंतिसेअण्णेत्ति ॥ १ ॥ एव अज्ञानस्थैर्यायर्थं मन्यथावा गणा एपक्रान्तस्य कस्यापि विभगज्ञान स्यादिति विभगज्ञानभेदानाह ॥ सत्तविहेत्थादि ॥ सप्तविधं सप्तप्रकारं विरुद्धो वितथोवा अयथावस्तुभगो वस्तुविकल्पो यस्मिंस्त द्विभग तच्च तज्ज्ञानच साकारत्वादिति विभगज्ञानं मिथ्यात्वसहितावधिरित्यर्थः ॥ एग दिसिं ॥ एक स्या दिशि एकया दिशा पूर्वादिकयेत्यर्थः लोकाभिगमो लोकावबोध इत्येवं विभगज्ञान विभगता चास्य शेषदिक्षु लोकस्या नभिगमेन तत्प्रतिषेधनादिति

नोजुज्जणामि इच्छामिणंजंतेएगल्लविहारपप्पिमंउवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए । सत्तविहे विज्जंगणाणे पप्पत्ते

एक कांईक ज्ञान आपुं एहवो पात्रळे एकज्ञान आपिवा जेहवो पात्र नथी एतले पूर्णपात्र नथी इम जाणी वीजा गच्छमां जाय ई । हे जगवन हुं वाळा करुखु एकलो विहार करवानो जाव अगीकार करी गुरु आज्ञा आपे तिवारे विहार करे ७ ॥ सात प्रकारे विभगज्ञान कह्यो तेकहैळे मि

१ तथा पचसु दिक्षु लोकाभिगमो नैकस्यां कस्यांचि दिशीति इहापि विभंगता एकदिशि लोकानिषेधादिति २ क्रियामात्रस्यैव प्राणातिपातादे जीवैः क्रियमाणस्य दर्शनात्तडेतुकर्मण सादर्शनात् क्रियैवा चरणं कर्म यस्य स क्रियाचरणं कोसौ जीव इत्यवष्टभ परं यद्विभंगं तत्तृतीय विभंगता चास्य कर्मणो ऽदर्शनेनानभ्युपगमा देव मुत्तरत्रापि विभंगता वसेयेति ३ ॥ मुयगोत्ति ॥ बाह्याभ्यतर पुद्गलरचितशरीरो जीव इत्यवष्टभवत् भवनपत्यादि देवानां बाह्याभ्यतर पुद्गलपर्यादानतो वैक्रियकरणदर्शनादिति चतुर्थं ४ ॥ अमुदगोजोवेत्ति ॥ देवानां बाह्याभ्यन्तरपुद्गलादानविरहेण वैक्रियवता दर्शना बाह्याभ्यन्तरपुद्गलरचितावयवशरीरो जीव इत्यवसायवत् पचमः ५ तथा ॥ रूविजोवेत्ति ॥ देवानां वैक्रियशरीरयतां दर्शना द्रूप्येवजीव इत्येव भवष्टम्भव त्पष्ठमिति ६ तथा ॥ सञ्चमिणजीवत्ति ॥ वायुना चलतः पुद्गलकायस्य दर्शना त्सर्वं मेवेद वस्तु जीवा एव चलनधर्मोपेतत्वा दित्येवं निश्चयव त्सप्तममिति सग्रहवचनमेतत् ॥ तत्थेत्यादि ॥ त्वेतस्यैव विवरणवचन मुत्तानार्थमेव नवर ॥ तत्थत्ति ॥ तेषु सप्तसु मध्ये ॥ जयाणति ॥ यस्मि न्काले ॥ सेणंति ॥ इह तदेति गम्यते स

तंजहा एगदिसिलोगाजिगमे पंचदिसिलोगाजिगमे किरियाचरणेजीवे मुदगोजीवे अमुदगोजीवे रूबीजीवे सञ्चमिण जीवा । तत्थ खलु इमे पठमे विजंगणाणे जयाणं तहारूवरस समणस्सवा माहणस्सवा विजंग

श्यात्वसहित अवधि ते विभग ज्ञान । एक दिशि लोकनें जाणे देखें १ । पाचदिशि लोकने जाणे एक दिशि नजाणे २ । कर्म तेज जीवळे कोण अन्य जीवळे इम जाणे ३ । बाह्य अन्यतर पुद्गले नीपनुं शरीर तेज जीव ४ । बाह्य अन्यतर पुद्गले रहित जीवळे ५ । रूपी जीवळे ६ । सर्व पुद्गला दि वस्तु चलेळे तेमाटे सर्वजीवळे ७ ॥ तिहा निश्चै यह पहिलो विजगज्ञान कहैळे जिवारे तथा रूपनो मिथ्यात्वीने अमणमाहन शाक्यादि दर्शनी

विभगी ॥ पासइत्ति ॥ उपलक्षणत्वा ज्ञानातीति चान्यथा ज्ञानत्वं विभंगस्य नस्यादिति ॥ पाईणवेत्यादौ ॥ वा विकल्पार्थः ॥ उडुंजावसोहम्मोकप्पोइत्यनेन ॥ सौधर्मात्परतः प्रायः किल वालतपस्विनो न पश्यन्तीति दर्शितं तथावधिमतो प्यधोलोको दुरधिगमो विभंग ज्ञानिनस्तु सुतरा मित्यधोदिग्दर्शनं मिह नाभिहितं दुरधिगम्यता चाधोलोकस्य विस्थानके ऽभिहितेति ॥ एवंभवइत्ति ॥ एवंविधो विकल्पो भवति यदुत अस्ति मे अतिशेष शेषा ण्यतिक्रात सा तिश्यमित्यर्थो ज्ञानच दर्शनच ज्ञानेनवा दर्शनं ज्ञानदर्शनं ततश्चैकदिशो दर्शनेन तत्रैव लोकस्यो पलम्भादाह एकदिशि लोकाभिगमइति एकदिग्मात्र एव लोकस्तथो पलम्भादिति भावः सति विद्यते एकके अमणावा ब्राह्मणावा तेचैवमाहुः अन्यास्वपिचपसुदिक्षु लोकाभिगमो भवति तास्वपि तस्य विद्यमानत्वात् येते एवमाहुः यदुत पंचस्वपि दिक्षु लोकाभिगमो मिथ्या तेएव माहुरिति प्रथमं विभंगज्ञानमिति १ अथा परं द्वितीयं तत्र ॥ पाईणवेत्यादौ ॥

णाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणंविज्जंगणाणेणं समुप्पन्तेण पासइ । पाईणवा दाहिणंवा उदीणंवा उडुंवा जाव सोहम्मोकप्पो तस्सण मेव जवइ अत्थिणमम अइसेसे णाणदसणे समुप्पन्ते एगदिसिंलोगाज्जिगमे सतेग इया समणावा माहणावा एवमाहंसु पंचदिसिंलोगाज्जिगमे जेते एवमाहसु मिच्छंते एवमाहंसु पढमेविज्जग

ने अज्ञानं तप करे ते विज्जगज्ञानं उपजै ते दर्शनी ते विज्जगज्ञानं उपनाथी देखै पूर्वं अथवा पश्चिमे अथवा दक्षिणे अथवा उत्तरे अथवा ऊंचो या वत् सौधर्मं देवलोकं लगे तेहने एहवो होय छै मुझने उत्कृष्टो ज्ञानदर्शनं ऊपनुछे एकदिशि लोकने जाणुछुं केतलाईक अमणमहन इम कहैछे पाच दिशि लोकनुं अज्जिगमछे जे एहवु कहैछे तेखोटो कहैछे एपहिलो विज्जगज्ञान १ । हिवे वीजो विज्जगज्ञान कहैछे जिवारे तथारूप

वाशब्द शकारार्थोद्भूतः विकल्पार्थत्वेन पदानां दिशां पश्यता न गम्यते एकस्याऽप्येव गम्यते तथा च प्रथमद्वितीययो विभगयो भेदो न स्यादिति कचिद्वा  
शब्दा न दृश्यतएवेति २ प्राणानतिपातयमानानित्यादिषु जीवा निति गम्यते ॥ नोकिरियाचरणेति ॥ अपितुकर्मावरणइति ३ ॥ देवामेवति ॥ देवानेव  
भजनवास्यादोनेव ॥ बाहिरभूतरेति ॥ बाह्यान् शरीरावगाह्येवा दम्भतरान् अवगाह्येवस्थान् पुद्गलान् वैक्रियवर्गणारूपान् पर्यादायपरिसमतात् वै

णाणे । अहावरे दोच्चेविजगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विजगणाणे समुप्पज्जइ सेणं  
तेण विजगणाणेण समुप्पन्तेणं पासइ पाईणवा पणीणवा दाहिणवा उदीणवा उहु जाव सोहम्मोकप्पो तस्स  
णमेव जवइ अत्थिण मम अइसेसे णाणदसणे समुप्पन्ते पचदिसिं लोगाज्जिगमे संतेगइया समणावा माह  
णावा एवमाहसु एगदिसिं लोगाज्जिगमे जेते एवमाहसु मिच्छते एवमाहसु दोच्चेविजगणाणे । अहावरेतच्चे  
विजगणाणे जयाणतहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विजगणाणे समुप्पज्जइ सेण तेण विजगणाणेणं

मिथ्यात्वी श्रमण माहणने विजगज्ञान उपजे ते ते ज्ञान उपमे देखे पूर्वे पश्चिमे दक्षिणे उत्तरे ऊंचो यावत् सौधर्म देवलोक विजगज्ञानी अधोलोक  
नदेखे ते दुरधिगमछे तेहने एहवो होय छे मुजने उतरुटो ज्ञानदर्शन उपनोछे पाचदिशि लोकने जाणुछु केतलाईक श्रमण माहन इमकहैछे एकदि  
शेज लोकनु अजिगमछे जेइम कहैछे ते खोटो कहैछे इम कहै ते बीजो विजगज्ञान २ । हिवे त्रीजो विभगज्ञान कहैछे जिवारे तथारूप श्रमण  
माहनने विभगज्ञान उपजे ते तेविजग ज्ञाने करी उपने देखै प्राणातिपात करतो मृपावाद बोलतो अदत्तादान लेतो मैथुन स्त्री सेवा करतो परि

क्रियसमुद्घातेनादाय गृहीत्वा ॥ पुढे गतंति ॥ पृथक्कालदेशभेदेन कदाचित् कचिदित्यर्थः एकत्वं एकरूपत्वं नानात्वं नानारूपत्वं विक्त्य उत्तरवैक्रियतया ॥ चिद्धे  
त्तएत्ति ॥ स्थातुमासितु प्रवृत्तानिति वाक्यशेषइति संबंधः कथविकृत्ये त्याह ॥ फुसित्ता ॥ तानेव पुद्गलान् सृष्ट्वा तथा त्वना स्फुरित्वा वीर्यं मुक्तास्यपुद्गलान्वा

समुप्यन्तेणं पासइ पाणञ्चइवाएभाणे मुसंवयभाणे अदिन्नमादित्तभाणे मेज्जणंपप्पिसेवभाणे परिग्गहंपरिगे  
रहमाणेवा राइज्जोयणज्जुंजमाणेवा पावचणं कम्मं कीरमाण णोपासइ तस्सणमेवं जवइ अत्थिणं मम अइसेसे  
णाणदंसणे समुप्यन्ते किरियाचरणेजीवे संतेगइथा समणावा माहणावा एवमाहंसु नोकिरियाचरणेजीवे  
जेते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु तच्चेविजंगणाणे । अहावरे चउत्थे विजंगणाणे जयाणं तहारूवस्स सम  
णस्सवा जाव समुप्यज्जइ सेणं तेणं विजंगणाणेणं समुप्यन्तेणं देवामेव पासइ वाहिरप्पंतरए पोग्गले परि  
याइत्ता पुढेगत्तं णाणत्त फुसित्ता फुरित्ता फुत्तित्ता विगुत्तित्ताणं चिठित्तए तस्सणमेवं जवइ अत्थिणं मम

ग्रह प्रते ग्रहतो रात्रिजोजन करतो एहवा जीवने देखे तेहने एहवो होय छै मुजने अतिशायी ज्ञानदर्शन ऊपनुं जे क्रियाचरण जीवछे केतलाईक  
अमण माहन इम कहैछे क्रियाचरण जीव नथी जे ते इमकहैछे ते खोटो कहैछे ते त्रीजो विभंगज्ञान ३ । हिवे चौथो विजंगज्ञान कहैछे जिवारे त  
थारूप अमण माहनने यावत् उपजे ते पुरुष तेविजंगज्ञाने एक देवतानेज देखै बाह्य अन्यंतर पुद्गल वैक्रियसमुद्घाते ग्रहीने पृथक् जुदो पोताथी  
एक घणा प्रकारना रूप विकुर्वीने ते पुद्गल फरसीने बीर्यउलसीने प्रगट करीने विकुर्वणा करीने रहै ते देखी तेहने एहवो होय छै मांहरे अतिशा

॥ स्फोरयित्वा तथा स्फुटित्वा प्रकाशीभूय पुद्गलान्वा स्फोटयित्वा वाचनांतरेत् पदद्वय मपर मुपलभ्यते तत्र संवर्त्य सारानेकीकृत्य निवर्त्या ऽसारान् पृथक्कृत्येति अथवा पर्याप्तपुद्गले उत्तरवैक्रियशरीरस्यैकत्व नानात्वच कर्मतापन्न सृष्ट्वा प्रारभ्य तथा स्फुरत् कृत्वा स्फुटकृत्वा समेकीभावेन वर्तितं सामान्यनिष्पन्नं कृत्वा सर्वथा परिसमाप्य किमुक्तं भवति विकुर्व्य वैक्रिय कृत्वा नत्वीदारिकतयेति तस्येति विभगज्ञानिनो बाह्याभ्यंतरपुद्गलपर्यादानप्रवृत्तदेवान् पश्यत एव भवति इतिविकल्पो जायते ॥ मुदगोत्ति ॥ बाह्याभ्यन्तरपुद्गलरचितशरीरो जीवइति ४ अथा परपचम तत्र बाह्याभ्यंतरान् पुद्गलान् पर्यादायेत्यन निषेधस्य वैक्रियसमुदात्तापेक्षितत्वा दुत्पत्तिचेष्टस्था स्तूपत्तिकानि गृह्यत्वा भवधारणीयशरीरस्यै कत्व मेकदेवापेक्षयाकांठाद्यवयवापेक्षयावा नानात्वं त्वनेकदेवापेक्षया हस्ताङ्गुल्याद्यवयवापेक्षयाया विकुर्व्य स्थातुं प्रवृत्ता नित्यादि शेषप्राग्भवत् बाह्यपुद्गलपर्यादानं हि विनो उत्तरवैक्रियैकत्वनानात्वे किल नभवत इति भवधारणी

अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने मुदगोजीवे संतेगइया राभणावा माहणावा एवमाहंसु अमुदगोजीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहसु चउत्येविजंगणाणे । अहावरेपंचमेविजंगणाणे जयाणं तहारूवरुस समणरस जाव समुप्पज्जइ सेणं तेणं विजंगणाणेणं समुप्पन्नेण देवामेव पासइ बाहिरप्पंतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता

यो ज्ञानदर्शन उपनु ले मृतक जीव बाह्याभ्यन्तर पुद्गलरचित शरीरे जावै ते मृतक केतलार्हक श्रमण माहन इम कहैछे अमृतक जीवछे पुद्गलरहित जीवछे जे ते इम कहैछे ते खोटुं कहैछे एह चौथो विभगज्ञान ४ । हिवे पाचमु विजंगज्ज्ञान कहैछे जिवारे तथारूप श्रमण माहनने यावत् उपजे ते विभगज्ञान देवतानेज देखे बाह्याभ्यन्तर पुद्गल अगलीधे भवधारणीय उपजवा काले वैक्रिय समुदघातविना वैक्रिय पुद्गल ग्रहीने एक शरीर कं

॥ य मिहा धिकृतं तदेव मवाह्याभ्यन्तरपुद्गलरचितशरीरदेवदर्शना तस्यैवं विकल्पो भवति ॥ अमुदगोत्ति ॥ अवाह्याभ्यन्तरपुद्गलरचितावयवशरीरो जीवइति ॥ रूवीजीवेत्ति ॥ पुद्गलाना पर्यादाने अपर्यादाने च वैक्यिरूपस्यै कानेकरूपस्य देवेषु दर्शना द्रूपवानेव जीवइत्यवसायो जायते तस्या रूपस्य कदाचना

पुढेगत्तं णाणत्तं जाव विउच्चित्ता चिठित्तए तस्सणमेवं जवइ अत्थि जाव समुप्पन्ते अमुदगोजीवे संतेगइ या समणावा माहणावा एवमाहंसु मुदगोजीवे जेते एवमाहंसु मिच्छते एवमाहंसु पंचमे विजंगणाणे । अहावरे छठे विजंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा जाव समुप्पज्जइ सेण तेणं विजंगणाणेणं समुप्पन्तेणं देवामेव पासइ बाहिरप्पतरए पोग्गले परियाइत्तावा अपरियाइत्तावा पुढेगत्तं णाणत्तं फुसित्ता जाव विउच्चित्ताणं चिठित्तए तस्सण मेवंजवइ अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ते रूवीजीवे संते गइया समणावा माहणावा एवमाहंसु अरूवीजीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छते एवमाहंसु छठे विजंग

ठा अवयव लेखै अथवा घणा देवना आपै ते देखीने एहवो होय छै मुजने यावत् ऊपनुंछे केतलाईक अमण माहन इम कहैछे समुदगो जीवछे जे इम कहैछे तेखोटो कहैछे ए पाचमु विजंगज्ञान ५ । हिवे छठो विभंगज्ञान कहैछे जिवारे तथारूप अमण माहनने यावत् ऊपजै तेषुरूप ते विजंग ज्ञान ऊपनाथी देखै देवतानेज वाह्याभ्यन्तर पुद्गल ग्रहीने अथवा अणग्रहीने जुदो एकरूप घणारूप फरसीने यावत् विकुर्वणा करीने रहैछे तिवारे एहवो जाणै मुजने अतिशायी ज्ञानदर्शन ऊपनोछे रूपी जीवछे अरूपीजीवछे जे इम कहैछे ते खोटो कहैछे एह छठो विभंगज्ञान ६ । हिवे सातमो



यदर्शनादिति ६ ॥ सुहुमेत्यादि ॥ सूक्ष्मेण मन्देन नतु सूक्ष्मनामकर्मादयवर्तिना तस्य वस्तुचलना समर्थत्वात् ॥ फुंडंति ॥ सृष्टं पुद्गलकायं पुद्गलराशिं ॥  
 एयतंति ॥ एजमानं कपमानं वैजमान विशेषेण कपमानं चलंत स्वस्थाना दन्यत्र गच्छन्तं क्षुभ्यंतं अधोनिमज्जंतं स्यन्दन्तमीषश्चलंत घट्टयंतं वस्त्वन्तरं सृशत  
 सुदौरयतं वस्त्वन्तरं प्रेरयंतं मनास्थेय मनेकविधं भाव पर्याय परिणमंतं गच्छत ॥ सञ्चमिणति ॥ सर्वमिदं चलत्पुद्गलजातं जीवाः स्यन्दनलक्षणजीवधर्मोपेतत्वा  
 द्यच्च चलदपि अमणादयो जीवाः स्याज्जीवाश्चेति ग्राहु स्तन्मिथ्येति तदध्यवसायइति ॥ तस्मिणति ॥ तस्य विभगज्ञानवतः ॥ इमेति ॥ वक्ष्यमाणान् सम्यगुपगता

णाणे । अहावरेसत्तमे विज्जगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विज्जंगणाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं विज्जगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ सुज्जमेणं वाउकाएणं फुळं पोग्गलकायं पयंतं वेयतचलंतं खुप्पंतं फंदंतं घहंतं उदीरेंतं तज्जाव परिणमंतं तस्सणमेव जवइ अत्थिण मम अइसेसे णाणदसणे समुप्पन्ने सव्वमिणं जीवा संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहिंसु जीवाचेव अजीवाचेव जेते एवमाहिंसु मिच्छाते एवमाहिंसु

विभंगज्ञान कहैछे जिवारे तथारूप श्रमणने विभंगज्ञान उपजै ते विभंगज्ञान ऊपनाथी देखै सूक्ष्म मद वायुकाये फरसी पुद्गल काय पुद्गल निरासी ते कपाती विशेषे कपती स्वस्थानथी अन्यस्थाने जाती क्षोभती थोड़ीकचलती बीजी वस्तुने सघटती बीजी वस्तुने प्रेरती तेने अनेक जावप्रते परिणमती जाती पुद्गल देखी तेहने एहवो होय छे मुजने अतिशायी ज्ञानदर्शन ऊपनुं सर्व एह चलती पुद्गलनी जाति ते जीवछे केतलाईक श्रमण माइन इम कहैछे जीव पणिछे अजीव पणिछे इम कहै ते खोटो कहैछे तेहने ए चार जीवनी निकाय थावरनथी जाण्या अणचलवानी अवस्थाये जी

अचलनावस्थायां जीवत्वेन नबोधविषयीभूता स्तब्धया पृथिव्यमेजीवायव चलनदोहदादिधर्मवतां असाना मेव दोहदादित्रसधर्मवतां वनस्पतीनामेवच जीव  
तया प्रज्ञातात् पृथिव्यादीनांतु वायुचलनेन स्वत चलनेनच त्रसत्वेनैव प्रज्ञातात् स्थावरजीवतया तु तेषा मनभ्युपगमाच्चेति ॥ इच्चेएहि ॥ इति हेतो रेतिसु  
चतुर्षु जीवनिकायेषु मिथ्यात्वपूर्वोदडो हिंसा मिथ्यादड स्तम्भवर्त्तयति तद्रूपानभिन्नः सस्तान् हिनस्ति निन्दुतेचेतिभावइति सप्तमं विभगज्ञानमिति मिथ्या  
दंड प्रवर्त्तयतीत्युक्त दंडश्च जीवेषु भवतीति योनिसग्रहतो जीवानाह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ योनिभि रत्यन्तिस्थानविशेषैर्जीवानां संग्रहो योनिसग्रहः सच सप्त  
धा योनिभेदा त्सप्तधा जीवाइत्यर्थः अंडजाः पक्षिमत्ससर्पादयः पोतं वस्त्र न्तद्वज्जाताः पोतादिववा वाहित्या ज्जाताअजरायुवेष्टिताइत्यर्थः पोतजा हस्तिव  
ल्गुलीप्रभृतयो जरायौ गर्भवेष्टने जाता तद्वेष्टिता इत्यर्थो जरायुजा मनुष्या गवाद्यश्च रसे तीमनकच्चिकादौ जातारसजाः सस्वेदाज्जाताः सस्वेदजाः यूका

तस्सणमिमे चत्तारि जीवनिकाया णोसंममुवगया जवति तंजहा पुढविकाइया जाव वाउकाइया । इच्चेएहिं  
चउहिं जीवनिकाएहि मिच्छादंरुपवत्तेइ सत्तमेविज्जगणाणे । सत्तविहे जोणिसंगहे पस्सत्ते तजहा अंरुजा  
पोतजा जराउजा रसया संसेयया संमुच्छिमा उप्पिया । अंरुगा सत्तगइया सत्तागइया पस्सत्ता तंजहा अंरुगे

वकरी नथी जाण्यां ते कहैळे पृथ्वीकाय अपकाय तेउकाय वाउकाय इमकरी च्यार जीवनिकायेकरी हिंसादंड प्रते करे यहसातमो विज्जंगज्जान ७ ॥  
सात प्रकारे योनिसग्रह जीवना उत्पत्तिस्थान कह्या तेकहैळे अंडज पक्षी मत्स्य सर्पादि १ । वस्त्रवेष्टित पोतज हस्ती प्रमुख २ । जरायुज जरथी वीं  
दया माणस गाय प्रमुख ३ । रसज कांजीमां उपजे ते ४ । परसेवाथी जूं प्रमुख ५ । समूर्च्छिम कृमि प्रमुख ६ । भूफोळ नीसरे खंजनादि ७ ॥ अंरुज

दयः संमूर्च्छेन निर्द्वेताः संमूर्च्छिमाः कृम्यादय उद्भिदी भूमिभेदा ज्ञाता उद्भिज्जा खञ्जनकादय अथा खड्जादीनामेव गत्यागतिप्रतिपादनाय ॥ अडयेत्या  
 दि ॥ सप्तसूत्रक तत्र मृतानां सप्तगतयोऽडजादियोनिलक्षणा येषां ते सप्तगतयः सप्तम्य एवाडजादियोनिभ्यः आगति रूपाति र्येषां ते सप्तागतयः ॥ एवचेव  
 त्ति ॥ यथाऽडजानां सप्तविधे गत्यागती भणिते तथा पोतजादिभिः सह सप्तानां मध्यंडजादिजीवभेदानां गतिरागतिश्च भणितव्या ॥ जावउभियत्ति ॥ स  
 त्तमसूत्रं यावदिति शेषं सुगमं पूर्वं योनिसंग्रह उक्तइति संग्रहप्रस्तावा त्संग्रहस्थानसूत्रं ॥ आयरियेत्यादि ॥ आचार्योपाध्यायस्येति समाहारद्वन्द्वः कर्मधारयोवा  
 गणे गच्छे संग्रहो ज्ञानादीनां शिष्याणां वा तस्य स्थानानि हेतवः संग्रहस्थानानि आचार्योपाध्यायगणेशाज्जावा विधिविषय मादेश धारणावानिषेधविषय  
 मादेशमेव सम्यक्प्रयोक्ता भवति एवहि ज्ञानादिसंग्रहः शिष्यसंग्रहोवा स्या दन्वया तद्गणएवेति प्रतीतं यतः जहिनत्तिसारणावा रणायपडिचोयणायग

अंरुगेसुउववज्जमाणे अंरुएहिंतोवा पोयएहिंवा जाव उअ्णिएहिंतोवा उववज्जेज्जा सेचेवणं से अंरुए अंरुगहं  
 विप्पजहमाणे अंरुयत्ताएवा पोययत्ताएवा जाव उअ्णियत्ताएवा गच्छेज्जा । पोयया सत्तगइया सत्तागइया  
 एवचेव सत्तरहविगइरागईजाणियत्ता जावउअ्णियत्ति आयरियउवज्जायस्सणं गणसि सत्त संग्रहठाणा पस्सत्ता

जीवने सात गति सात आगति कही ते कहैछे अंरुज अंरुजमा उपजतो अडजमाहिथी अथवा पोतजमाहिथी यावत् उदजेदज मांहिथी उपजे तेज  
 ते अंरुज अंरुजपणु मूकतो अंरुजपणे अथवा पोतजपणे यावत् उद जेदजपणे जाय । पोतजनी सातगति सात आगति कही इमज सातगति सात  
 आगति कही यावत् उद्भिज लगे जाणवी ॥ आचार्य उपाध्यायना गच्छमा सात संग्रहस्थान कह्या ज्ञानशिष्यनाहेतु तेकहैछे आचार्य उपाध्यायना

॥ च्छमि सोऽग्रगच्छोगच्छो मोत्तव्वोसंजमत्थोहिंति ॥ १ ॥ एवंजहापंचठाणेत्ति ॥ तच्चेदं आयरियउवज्जाएणं गणंसि आहाराइणियाए किइकमंपजजुत्ता भवइ २ आयरियउवज्जाएणं गणंसि जे सुयपज्जवजाएधारेइ तेकालेकालेसम्मअणुप्पवाइत्ताभवइ ३ आयरियउवज्जाएण गणंसि गिलाणसेहवेयावच्च सम्मं अ भुट्ठिता भवइ ४ आयरियउवज्जाएणगणंसि आपुच्छियचारीयाविभवइ नोअणापुच्छियचारी ५ स्थानद्वय त्विहेवेति व्याख्यातु सुकरमेव नवर माप्रच्छनं ग च्छस्य यतउत्तं सोसेजइआमते पडिच्छगातेणवाहिरभाव अहइयरेतोसोसा नेवसमत्तम्मिगच्छम्मि ॥ १ ॥ तरुणावाहिरभावं नयपडिलेहोवहीणकीकम्मं मूलगपत्तसरिसगा परिभूयावच्चिमोथेरत्ति ॥ २ ॥ तथा ॥ अणुप्पन्नाइति ॥ अनुत्पन्ना न्यलब्धानि उपकरणानि वस्त्रपात्रादीनि सम्यगेषणादिशुद्ध्या उत्पा दयिता सपादनशीलो भवति सरत्तयितो पायेन चौरादिभ्यः सगोपयिता अल्पसागारिककरणेन मलिनता रचणेनवेति एव सग्रहस्थानविपर्ययभूत मसग्र

तं० आयरियउवज्जाएगणंसि आणंवा धारणंवा सम्मंपउजिह्वा नवइ एवं जहा पंचठाणे जाव आयरियउव ज्जाएगणंसि आपुच्छिय चारीयाविन्नवइ नो अपुच्छियचारीयाविन्नवइ । आयरियउवज्जाएणंगणंसि अणु प्पन्नाइं उवकरणाइ सम्म उप्पाइत्ता नवइ आयरियउवज्जाएणंगणंसि पुत्तुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मसार

गच्छमा आज्ञाप्रते सूत्रार्थनुं धारवो सम्यक् प्रकारे ते साधुसग्रहरूप एम जिम पांचमां ठाणामां कह्यो तिम यावत् आचार्य उपाध्यायनां गच्छमां पूछीने गुरुने चाले ते अणपूछी नचाले किहांइं नजाय । आचार्य उपाध्यायना गच्छमां नथी उपना जे उपकरण वस्त्रपात्रादि उपजावा मेलवा स मर्थ होय । आचार्य उपाध्यायना गच्छमां उपना जे उपकरण वस्त्रपात्रादि ते सम्यक् प्रकारे चौरादिकथी राखै गोपवे मलिन थावानदे असम्यक्

हसूत्रमपि भावनीयमिति अनन्तर मात्रां न प्रयोक्ताभवतीति उक्त मात्राच्च पिण्डैषणादिविषयेति पिण्डैषणादिसूत्रषट्कं ॥ सत्तपिण्डैषणाश्रोत्ति ॥ पिण्डं समय  
भाषया भक्त तस्यैषणा गृहणप्रकाराः पिण्डैषणा स्तायैताः संसृष्टमससृष्टा उड्डतहृत्पलेवियाचेव ४ उगह्रिया ५ पगह्रिया ६ उज्जिभयधम्मायसत्तमिया  
॥ १ ॥ तत्रा ससृष्टा हस्तमात्राभ्या चिन्तनीया ॥ अससृष्टे मत्ते खरडियत्ति ॥ वुत्तभवद् ॥ एव गृहृतः प्रथमा भवति गाथार्या तु सुखमुखोच्चारणार्थी न्यथा  
पाठः ससृष्टाताभ्या मेव चिन्त्या ॥ ससृष्टे हृत्पलेसंसृष्टे मत्ते खरडिएत्ति वुत्तभवद् ॥ एव गृहृतो द्वितीया उड्डताना मस्थान्यादौ स्वयोगेन भोजनजात मुचृतं ततो  
॥ असंसृष्टे हृत्पले अससृष्टे मत्ते ससृष्टे मत्ते ससृष्टे वा हृत्पले ॥ एव गृहृतः तृतीया अल्पलेपाना मत्पशब्दी ऽभाववाचकः निर्लेप पृथुकादिगृहृत चतुर्थी अवगृहीता  
ना सभोजनकाले शरावादिषू पकृत मेव भोजनजात यत्नतो गृहृतः पचमी प्रगृहीताना मभोजनवेलायां दातु मभ्युद्यते न करादिना प्रगृहीतं यद्भोज  
नजातं भोक्तुवा स्वहस्तादिना तद्गृहृत इति षष्ठी उज्जितधर्मानाम यत्परित्यागाहं भोजनजात मन्येव विपदादयो ना वकांचति तदर्धत्यक्तं वा गृहृत

खित्ता संगोविक्ता नवद् । श्यायरियउवज्जायस्सणं गणंसि सत्त श्यसंगहृष्टाणा पस्सत्ता तंजहा श्यायरियउ  
वज्जाएणंगणंसि श्याणंवा धारणंवा नोसम्मं पउजित्ता नवद् एवं जाव उवगरणाण नोसम्मं सारस्सित्ता  
सगोवेत्ता नवद् । सत्त पिण्डैषणाणं पस्सत्ताणं । सत्त पाणैषणाणं पस्सत्ताणं । सत्त उगाहपप्पिमाणं पस्सत्ताणं

पणो नराखे नगोपवे ७ ॥ आचार्य उपाध्यायना गच्छमा सात असग्रहस्थान कत्था तेकहैछे आचार्य उपाध्यायना गच्छमा आज्ञाप्रते सूनार्थनी धार  
णाप्रते सम्यक् प्रयुजे नही एम यावत् ऊपना उपकरण प्रते सम्यक् प्रकारे राखे नही गोपवे नही ॥ सात पिण्डैषणा कही ॥ सात पांशीनी एषणा

इति हृदयं सप्तमीति पानकैषणा एता एव नवरं चतुर्थीं नानात्वं तत्र ह्यायामसौबीरकादिनिर्लेप विज्ञेयमिति ॥ उगग्रहपडिमिति ॥ अयगृह्यत इत्यवग्रहो वसति स्तूपतिमा अभिग्रहा अवग्रहप्रतिमा तत्र पूर्वमेव विचिथ्यै वंभूतः प्रतिश्रयो मया ग्राह्यो नान्यथाभूतइति तमेव याचित्वा गृह्यतः प्रथमा तथा यस्य भिन्नो रेवभूतो भिग्रहो भवति तद्यथा अहच खल्वेषां साधूनां कृते अवग्रहं गृहीष्यामि अन्वेषां वा वग्रहे गृहीते सति वत्स्यामीति तस्य द्वितीया प्रथमा सामान्येन इयतु गच्छात्तर्गताना सभोगिकाना मसभोगिकाना बोध्युक्तविहारिणा यत स्ते न्योन्यार्थं याचतइति तृतीयात्वियं अन्यार्थं मवग्रह याचिथ्ये अन्यावग्रहीतायातु न स्यास्यामीति एषा त्वहालंदिकानां यत स्ते सूत्रावशेष माचार्या दभिकाक्षत आचार्यार्थतां याचंतइति चतुर्थीपुन रहमन्ये पां कृते अवग्रहं न याचिथ्ये अन्यावग्रहीतेतु वत्स्यामीतौ यंतु गच्छ एव अभ्युद्यतविहारिणां जिनकल्पाद्यर्थं परिकुर्वता पचमीतु अह मात्मकृते अवग्रह मवग्रहीष्यामि नचा परेषा द्वित्रिचतुःपचानामिति इयतु जिनकल्पिकस्येति षष्ठी पुनर्यदीयमवग्रह गृहीष्यामि तदीयमेवच कटादिक सस्तारक संग्रहीष्या मि इतरथो क्कटुकोवा निषण्ण उपविष्टोवा रजनीं गमयिष्यामी त्येषामपि जिनकल्पाकादे रिति सप्तमी एपैव पूर्वोक्ता नवर यथास्तमेव शिलादिक गृहीष्यामी नेतरदिति अयच सूत्रत्रयार्थः क्वचित् सूत्रपुस्तक एव दृश्यतइति ॥ सत्तसत्तिकयत्ति ॥ अनुद्देशकतयैव सस्तेन एकका अध्ययनविशेषा आचारां गस्य द्वितीयश्रुतस्तन्ये द्वितीयचूडारूपा स्तेच समुदायतः सप्तैतिकृत्वा सप्तैकका अभिधीयते तेषा मेकोपि सप्तैककइति व्यपदिश्यते तथैव नामत्वात्

सत्त सत्तिकया प० । सत्तमहज्जयणा पस्सत्ता सत्त सत्तमियाणं त्तिस्कुपडिमा एगूणपन्तयाए राइंदिएहिं एगे

कही ॥ सात अवग्रह उपासरो तेहनी प्रतिमा ते अवग्रहप्रतिमा कही सात सप्तैकक कह्या तिहां पहिला स्थान सप्तैकक दुहरा नेपेधिकी सप्तैक

एवंच ते सप्तैति तत्र प्रथमः स्थानसप्तैकको द्वितीयो नेषेधिको सप्तैककः तृतीय उच्चारप्रत्ययणविधिसप्तैककः शतुर्थः शब्दसप्तैककः पचमो रूपसप्तैककः षष्ठः परक्रियासप्तैककः सप्तमो न्योन्यक्रियासप्तैककः इति ॥ सत्तमहङ्गयणत्ति ॥ सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे महान्ति प्रथमश्रुतस्कन्धाध्ययनेभ्यः शकाशा द्वयतो ब्रूहति अध्ययमानि महाध्ययनानि तानिच पुण्डरीक १ क्रियास्थान २ आहारपरिज्ञा ३ प्रत्याख्यानक्रिया ४ अनाचारश्रुत ५ प्रार्द्रैककुमारौयं ६ नालदीयचेति ७ ॥ सत्तसत्तमियत्ति ॥ सप्तसप्तमानिदिनानि यस्या सा सप्तसप्तमिका साहि सप्तसप्तभिर्दिनसप्तकैर्यथोत्तरवर्धमानदत्तिभिर्भवति तत्र प्रथमे सप्तके प्रतिदिनमेका भक्तस्य पानकस्य चैका दत्तिर्यावत्सप्तमे सप्तदत्तयः भिक्षुप्रतिमा साध्वभिग्रहविशेषः सा चैकोनपचाशतरात्रिदिवै रहोरात्रैर्भयति यतः सप्तसप्तका न्येकोनपचाशदेवस्यादिति तथा एकोनचपणत्रयधिकेन भिक्षाशतेन यतः प्रथमे सप्तके सप्तैव द्वितीयादिषु तद्विगुणा व्यायावत्सप्तमे एकोनपचाशदिति सर्वाः सकलिता यतः पणत्रयधिक भवति भक्तभिक्षा शैताः पानकभिक्षा अप्येतावत्यो नचेन्न गणितादिति एतत् स्वरूपमेव पडिमासु सत्तगा सत्तपटमेतत्सत्तएएकेक गिगहएभिह्व वौइएएदोणिदोणिऊएवमिक्किक्कियभिक्षुवुभेज्जेक्केकसत्ताएगिगहईअंतिमेजावसत्तसत्तटिणेदिणेअहवाइक्किक्कियदत्ति जाव सत्तिकिक्कसत्तएआएसोअत्थि एसोविसिहविक्रमसणिहो इत्यादि ॥ अहासुत्तति ॥ यथासूत्र सूत्रानतिक्रमेण यावत्करणात् ॥ अहाअत्थं ॥ यथायं निर्युक्त्यादिव्याख्याना नतिक्रमेणेत्यर्थः ॥ अहातच्च ॥ यथातत्वं सप्तसप्तमिके त्यभिधानार्थाऽनतिक्रमेण अन्वर्थसत्यापनेने

णयत्तस्सउएण निस्कासएण अहासुत्तं जाव अराहियावि जवइ । अहोलोणेण सत्त पुढवीजं पस्सत्तात्त । सत्त

क तीसरा उच्चारप्रत्ययणसप्तैकक चौथा शब्दसप्तैकक पाचमां रूपसप्तैकक छठा परक्रियासप्तैकक सातमा अन्योन्यक्रियासप्तैकक ॥ सात महाध्य

त्यर्थः ॥ अहामगं ॥ मार्गः चायोपशमिको भावस्तदनतिक्रमेण औदयिकभावापगमेनेत्यर्थः ॥ अहाकप्प ॥ यथाकलं कल्पनीयानतिक्रमेण प्रतिमा समा चारानतिक्रमेणवा ॥ समंकायेण ॥ कायप्रवृत्त्या न मनोमात्रेणेत्यर्थः ॥ फासिया ॥ सृष्टा प्रतिपत्तिकाले विधिना प्राप्ता ॥ पालियत्ति ॥ पुनः पुन रूपयो गप्रतिजागरणेन रक्षिता ॥ सोहियत्ति ॥ शोभिता तत्समाप्तौ गुर्वादिप्रदानशेषभोजनासेवनेन शोधितावा अतिचारवर्जनेन तदालोचनेन वा ॥ तिरियत्ति ॥ तीरं पार नीता पूर्णैपि कालावधौ किञ्चित्कालावस्थानेन ॥ किट्टियत्ति ॥ कौर्त्तिता पारणकदिने अयं मय चाभिग्रहकविशेषः कृत आसी दस्या अतिमायां सचाराधित एवा धुना मुक्तलोहमिति गुरुसमच्चं कौर्त्तनादिति ॥ आराहियत्ति ॥ एभिरेव प्रकारैः संपूर्णैर्निष्ठा नीता भवतीति प्रत्याख्या नापेक्षया अन्यत्र व्याख्यान मेषामेव उचिष्णकालेविहिणा पत्तजफासियंतयंभणियं तद्वपालियतुअसद् सम्मउवओगपडिपरिय ॥ १ ॥ गुरुदाणसेसभोय णा सेवणयाएउसोहियंजाण पुसेवियेवकाला वच्छाणातौरियहोई ॥ २ ॥ भोयणकालेअसुयं पच्चक्खायतिभुजकिट्टियय आराहियपयारेहिं सममेएहिंनि इवियति ॥ ३ ॥ सप्तसप्तमिकादिप्रतिमाश्च पृथिव्यामेव विधोयन्तइति पृथिवीप्रतिपादनायाह ॥ अहोलोएइत्यादि ॥ अधोलोकगृहणा दूर्ध्वलोके पृथिवी

घणोदहीनं पस्सत्तानं । सत्त घणवायानं प० । सत्त तणुवाया प० । सत्त उवासतरा प० । एएसुणं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवायापइठिया एएसुणं सत्तसु तणुवाएसु सत्त घणवाया पइठिया सत्तसु घणवाएसु सत्त

यन कहा सूय गडांग के दुसरे श्रुतस्कंधमां महान प्रथमश्रुतस्कंधाध्ययननी अपेक्षाथी पुंरुरीकाध्ययनादि ॥ सात सप्तसप्तमिका साधु प्रतिमा अजिग्रहरूप तेहना उगण पंचास रात्रि सर्वमिली एकसो छन्नु जित्तानी दोते करी पांणीनी पणि एतली जिम सूत्रसांछे तिम यावतू आराधि



सत्ता वगम्यते तत्र चेका ईषत्पागाभाराग्या इति व्यस्योति इहच यद्यपि गणमपुमिज्ञा उपरितनानि नवयोजनशतानि तिर्यग्गोके भवन्ति तथापि देशीना  
 पि पुमिगोतिश्रुत्वा नदोपायेति एतावत्कुमेण यावत्ततो योजनलवमसीत्यादिसप्तस्राधिकं भवति उक्तं च पटमात्रसोदसप्तस्रा १ बत्तीसा २ प्रथमीस ३ बी  
 साय ४ अष्टार ५ सोन ६ अष्टय ७ सहस्रसप्तगोयस्त्रिंशज्जति ॥ १ ॥ अधोलोकाधिकारात्तत्तजस्तसूपाग्यवाद्सूपाणिसुगमानिचैतानि नवरं घनोदधीनां  
 बाह्वर्गं विंशति योजनसप्तस्राणि घनतनुवाताकाशांतराणा मसंख्यातानि तान्याह च सञ्ज्येवीससप्तस्रा बाह्वर्गेघर्णोदधीनेना सीसाण तुप्रसंख्या प्रहो  
 प्रहोजागसत्तमियति ॥१॥ तथा छत्रमतिश्रम्य छत्रं छत्रातिश्रमं तथा सम्मानमाकारो ऽधस्तमंछत्रं मङ्गद्वपरिवनं लघ्विति तेन संस्थिता छत्रातिश्रमसंस्थान  
 संस्थिता इदमुक्तंभवति सप्तमी सप्तरज्जुयिस्तृता पञ्चादयस्त्रैकैकरज्जुधीना इतिक्वचित्पाठः ॥ पिंडलगपिण्डलसंठाणसंठिया ॥ तत्र पिण्डलगं पटलकं पटलपु  
 षभाजनतत्तत् पुणुलं सम्मानतेन संस्थिता इति पटलकपुणुलसंस्थानसंस्थिताइति पुणुल २ सम्मान संस्थिता इति क्वचित्पाठः सच व्यक्तं एव ॥ नामधेज्जति ॥ ना

घणोदही पट्टिठिया एएसुणं सत्तसु घणोदहीसु पिंडलगपिण्डलसंठाणसंठियानु सत्तपुठवीनु पणत्तानु तंजहा  
 पटमा जाव सत्तमा । एयौसिणं सत्तरहंपुठवीणं सत्त णामधेज्जा पणत्ता तंजहा घम्मा वसा सेला झुजणा

त थाय ॥ अधोलोकमां सात पृथ्वी कही तेकहैले ॥ सात घनवात कप्पा ॥ सात तनवात कप्पा ॥ सात पृथ्वीना अंतर कप्पा ॥ यत्त सात उवासं  
 तरने विषे सात तनवात रहियाले । यत्त सात तनवातने विषे सात घनवात रहियाले । सात घनवातने विषे सात घनोदधि रहियाले । सात  
 घनोदधिने विषे सात तनोदधि रहियाले । सात तनोदधिमां विरुग पुणुलसंस्थाने स्थित सात पृथ्वी कही ते कहेले पत्तली यावत् सातमी ॥ य

मान्येव नामधेयानि ॥ गीत्तत्ति ॥ गोत्राणि तान्यपि मामान्येव केवल मन्वर्थयुक्तानि गोत्राणि इतराणि अन्यर्थं सुखोन्नेयः सप्तावकायां तराणि प्राक्प्ररूपिता  
नि तेषुच वादरावायव. सतीति तत् प्ररूपणायाह ॥ सत्तविहावायरेत्यादि ॥ सूक्ष्माणां नभेदोस्ति ततो वादरग्रहण भेदश्च विविदिग्भेदा अतीतएवेति  
वायवो ह्यदृश्या स्तथापि संस्थानवन्तो भयवन्तश्चेति संस्थानभयसूत्रे संस्थानानिच प्रतीतानि तद्विशेषा. प्रतरघनादयो ऽन्यतो ज्ञेया ॥ सत्तभयठाणेत्यादि ॥ भयं  
मोहनौयप्रकृतिसमुत्पन्नात्मपरिणाम स्तस्यस्थाना न्याय्या भयस्थानानि तत्र मनुष्यादिकस्य सजातोया दन्वन्मा न्मनुष्यादेरेव सकाशा द्यद्भयं भवति तदि

रिष्ठा मघा माघवई । एयासिणं सत्तरहं पुढवीणं सत्त गोत्ता पस्सत्ता तंजहा रयणप्पज्जा सक्करप्पज्जा वालुय  
प्पज्जा पकप्पज्जा धूमप्पज्जा तमा तमतमा । सत्तविहा वायरवाउकाइया पस्सत्ता तंजहा पाईणवाए पणीण  
वाए दाहिणवाए उदीणवाए उहेवाए अहेवाए विदिसिवाए । सत्त संठाणा पस्सत्ता तंजहा दीहे रहस्से  
वहे तंसे चउरसे पिऊले परिमंऊले । सत्त जयठाणा पस्सत्ता तंजहा इहलोगज्जए परलोगज्जए आदाणज्जए

ह सात नरक पृथ्वीनां सात नाम कह्या ते कहैछे घम्मा १ । वशा २ । सेला ३ । अंजना ४ । रिष्ठा ५ । मघा ६ । माघवती ७ ॥ सात पृथ्वीना सा  
त गोत्र कह्या ते कहैछे रत्तप्रज्जा १ । शर्करप्रज्जा २ । वालुकप्रज्जा ३ । पकप्रज्जा ४ । धूमप्रज्जा ५ । तमा ६ । तमतमप्रज्जा ७ ॥ सात प्रकारना वादर  
वायुकाय कह्या ते कहैछे पूर्ववायु १ । पश्चिमवायु २ । दक्षिणवायु ३ । उत्तरवायु ४ । ऊर्ध्ववायु ५ । अधोवायु ६ । विदिशिवायु ७ ॥ सात संस्थान  
कह्या ते कहैछे दीर्घ १ । लघु २ । वाटलोगोल ३ । त्रिखूण ४ । चौखूण ५ । पिहुलो ६ । परिमडल ७ ॥ सात जयना स्थान कह्या ते कहैछे इहलोक

हृन्लोकभय इहाधिकतभीतिमतो जातो लोक इहलोक स्ततो भयमिति व्युत्पत्ति स्तथा विजातीयादन्यस्मात् तिर्यग्देवादेः सकाशा न्मनुष्यादीना यज्ञयं  
तत् परलोकभय २ आदीयत इत्यादानं धन तदर्थं चौरादिभ्यो यज्ञय तदा दानभय अकस्मादेव बाह्यनिमित्तानपेक्ष गृहादिष्वेवस्थितस्य रात्र्यादौ भयम  
कस्माद्भय वेदना पीडा तद्भयं वेदनाभय मरणभय प्रतीत मल्लोकभय मकीर्त्तिभय एव हि क्रियमाणे महदयशोभवतीति तद्भयानुप्रवर्त्ततइति भयच  
छद्मस्थैवभवति सच यैः स्थानैर्ज्ञायतेतान्याह ॥ सप्तहिंठाणेहीत्यादि ॥ सप्तभिः स्थानैर्हेतुभूतैः छद्मस्थं जानीयात् तद्यथा प्राणानतिपातयिता तेषा  
कदाचित् व्यापादनशीलोभवति इहच प्राणातिपादनमिति वक्तव्येपि धर्मधर्मिणो रभेदा दतिपातयितेति धर्मो निदिष्टः प्राणातिपातनात् छद्मस्थो  
य मित्यवसोयते केवली हि जोगचारिवावरणत्वा निरतिचारसंयमत्वा न कदाचिदपि प्राणाना मतिपातयिता भवतीत्येव सवेवभावना कार्या तथा

अकम्हान्ने वेयणान्ने मरणान्ने असिलोगन्ने । सप्तहिंठाणेहिं ठउमत्थं जाणेज्जा तंजहा पाणेअइवाएत्ता  
जवइ मुसंविदिताजवइ अदिन्नमाइताजवइ सहफरिसरसरूवगंधेअसदेत्ताजवइ पूयासक्कारमएउवूहेत्ता  
जवइ इमंसावज्जातिपस्सवेत्तापप्पिसेवेत्ताजवइ । णोजहावादीतहाकारीयाविजवइ । सप्तहिंठाणेहिं केवली

जय पोतानी जातिनु १ । परलोक भय सिहादिकथी २ । आदान लेवाथी जय ३ । अकस्मात् जय रात्रिमा सूतां कारिमो जय सर्प प्रमुखनो ४ ।  
वेदनाभय ५ । मरणजय ६ । अपयज्ञनो जय ७ ॥ सात थानके छदमस्थ जाणिये ते कहैछे प्राणातिपात करी १ । मृपावादथी २ । अदत्तना लेवा  
थी ३ । शब्द स्पर्श रसरूप गंधना स्वादलेवाथी ४ । जोगवाथी । पूजा सत्कारने वाछै ५ । एह सावदय व्यापारछे एहवो प्ररूपी पोते सेवे जेहवो

॥ ऋषावादिता भवति अदत्त मादाता गृहीता भवति श्रद्धादीना स्वादयिता भवति पूजासत्कारं पुष्पार्चनवस्त्रार्चने अनुवृंहयिता परेण स्वस्य क्रियमा  
णस्य तस्या नुमोदयिता तद्भावे हर्षकारौत्तर्यः तथे द माधाकर्मादि सावद्य सपापमित्येवं प्रज्ञाप्य तदेव प्रतिषेधिता भवति तथा सामान्यतो नो यथा  
वादौ तथाकारो अन्यथा अभिधाया न्यथा कर्त्ता भवति वापीति समुच्चये एतान्येव विपर्यस्तानि केवलिंगमकानि भवतीत्येतत्प्रतिपादनपरं केवलिसूत्रं  
सुगममेव केवलिनश्च प्रायो गोत्रविशेषवंत एव भवन्ति प्रब्रज्यायोग्यत्वाद्वाभेयादिवदिति ॥ सत्तमूलगोत्तेत्यादिना ॥ ग्रन्थेन गोत्रविभागमाह सुगमं श्राय नवरं  
गोत्राणि तथाविधैकैकपुरुषप्रभवा मनुष्यसताना उत्तरगोत्रापेक्षया मूलभूता न्यादिभूतानि गोत्राणि मूलगोत्रा काशेभवः काश्यो रस स्तं पीतवानिति का  
श्यप स्तदपत्यानि काश्यपा मुनिसुव्रतनेमिवर्जा जिना शक्रवर्त्यादयश्च क्षत्रियाः सप्तमगणधरादयो द्विजाः जम्बूस्वाम्यादयो गृहपतयश्चेति इहव गोत्रस्य  
गोत्रवद्भ्यो भेदा देवं निर्देशो ऽन्यथा काश्यपमिति वाच्यं स्या देवं सर्वत्र तथा गौतमस्या पत्यानि गौतमाः क्षत्रियादयो यथा सुव्रतनेमौ जिनौ नारायण  
पद्मवर्जवासुदेवबलदेवा इन्द्रभूत्यादिगणनाथत्रय वैरस्वामी च तथा वत्सस्या पत्यानि वत्साः शत्र्यंभवादय एव कुत्साः शिवभूत्यादयः कोच्छसिवभूदमपियदिति

जाणेज्जा तंजहा गोपाणेञ्चइवाएत्ताज्जवइ जाव जहा वाई तहाकारीयाविज्जवइ सत्तमूलगोत्ता पस्सत्ता  
तंजहा कासवा गोयमा वत्था कोत्था कोसिया मंऊवा वसिष्ठा । जेकासवा तेसत्तविहा पस्सत्ता तजहा

कहै तेहवो नकरे एह सात प्रकारथी छदमस्थ जाणिये ७ ॥ सात थानके केवली जाणिये तेकहैछे प्राणाति पातनो करनार नहोय १ । यावत् जे  
हवो कहै तेहवोकरे ॥ ७ ॥ सात मूल-गोत्र कहिया ते कहैछे काश्यप १ । गौतम २ । वत्स ३ । कुत्स ४ । कौशिक ५ । मडप ६ । वासिष्ठ ७ ॥ जे

वचनात् एव कौसिका' य डुलूकादयः मंडोरपत्न्यानिमडवा वसिष्ठस्या पत्न्यानि वासिष्ठाः षष्ठगणधरार्यमुहस्तादयः तथा ये ते काश्यपा स्ते सप्तविधाः ॥  
 एके काश्यपश्चद्व्यपदेश्यत्वेन काश्यपा एवान्येतु काश्यपगोत्रविशेषभूतशंडिल्यादिपुरुषापत्यरूपा' शांडिल्यादयो ऽवगन्तव्या अयंच मूलगोत्रप्रतिगोत्रविभागो  
 नयविशेषमता इवतौति नयविभाग माह ॥ सत्तमूलेत्यादि ॥ मूलभूता जयाः मूलनया स्तेच सप्त उत्तरनयाहि सप्तशतानि यदाह एकेकोयसयविही

तेकासवा तेसंक्रिह्वा तेगोला तेवाला तेमुंजतिणो तेपवृतिणो तेवरिसकरहा । जेगोयमा ते सप्तविहा  
 पस्यत्ता तजहा ते गोयमा तेगग्गा तेज्जारहा तेअगिरसा तेसक्कराजा तेजस्कराजा तेउदत्ताजा । जेवत्या ते  
 सप्तविहा पस्यत्ता तंजहा तेवत्या तेअगिगिया तेमिहिए सामलिणो तेसेलयया तेअष्ठसेणा तेवायकरहा ।  
 जेकोत्या ते सत्तविहा पस्यत्ता तजहा तेकोत्या तेपोग्गलायणा तेपिगायणा तेकोलीणा तेमंळलिणोतेहा  
 रिया तेसोमया । जेकोसिया ते सप्तविहा पस्यत्ता तजहा तेकोसिया तेकञ्जायणा तेसालंकायणा तेगोलि

काश्यप ते सात प्रकारे ते कहैछे ते काश्यप १ । ते सांडिल्य २ । तेगोल ३ । तेवाल ४ । तेमुज ५ । ते पर्वत ६ । तेवरिसकरहा ७ ॥ जे गौतम ते सा  
 तप्रकारे ते कहैछे ते गौतम १ । ते गर्ग २ । ते भारद्वाज ३ । ते अगिरस ४ । ते शर्कराज ५ । ते भास्कराज ६ । ते उदत्ताज ७ ॥ जे वत्स ते सात  
 प्रकारे ते कहैछे ते वत्स १ । ते अंगिय २ । ते मित्तिय ३ । ते सामलीण ४ । ते सेलयय ५ । ते अस्थिसेन ६ । ते वायुकाज ७ ॥ जे कुत्स ते सात प्र  
 कारे कह्यो ते कहैछे तेकुत्स १ । ते मींद्रलायन २ । ते पिगतण ३ । ते कोडिन ४ । ते मंडलीक ५ । तेहारित गोत्र ६ । ते सामजेजी ७ ॥ कोसित ते

सत्तनयसयाहवन्ति एवन्तु अस्मिन्विययाएसी पंचेवसयानयाणु ॥ १ ॥ तथा जावइयावयणपहा तावइयाचेवहीतिनयवाया जावइयानयवाया तावइयाचे  
वपरसमयत्ति ॥ २ ॥ तत्रा नन्तधर्माध्यासिते वस्तु न्येकधर्मासमर्थनप्रवणो बोधिविशेषो नयइति तत्र ॥ णेगमत्ति ॥ नैकैर्मानै र्महासत्तासामान्यविशेषज्ञानै  
र्मिमौते भिनोतिवा नैकमः आहच णेगाइंमाण्णाइ सामखोभयविसेसनाणाइं जंतिहिंमिणइतोणे गमोणओणेगमाणोत्ति ॥ १ ॥ निगमेषुवा र्थबोधेषु  
कुशलो भवोवा नैगमः अथवा नैकेगमाः पथानो यस्य सनैकगम आहच नेगयनिवोहोवा निगमोतेसुकुसलोभवोवाय अहवाजंणेगगमो णेगपहाणेगमोते  
णति ॥ १ ॥ तत्रायं सर्वत्र सदित्येव मनुगताकारावबोधहेतुभूतां महासत्ता मिच्छति अनुवृत्तव्यावृत्तावबोधहेतुभूतं च सामान्यविशेषं द्रव्यत्वादिव्यावृत्ता

कायणा ते पारिककायणा तेअगिच्चा तेलोहिच्चा । जेमंठवा ते सत्तविहा पस्सत्ता तंजहा तेमंठवा तेअरि  
ठा तेसंमुता तेहेरा तेएलावच्चा तेकफिन्ना तेस्कारायणा । जे वासिठा ते सत्तविहा पस्सत्ता तंजहा तेवा  
सिठा तेउंजायणा तेजारुकरहा तेवग्घावच्चा तेकोफिन्ना तेसत्ती तेपारासरा । सत्त मूलणया पस्सत्ता तंजहा

सात प्रकारे कह्यो ते कहैछे ते कौसिक १ । ते काट्यायन २ । ते शालकायन ३ । ते गोलिंकायन ४ । ते परिककायन ५ । ते अगिच्चा ६ । ते लोहि  
त्य ७ ॥ जे मंडप ते सात प्रकारे कह्यो ते कहैछे ते मंडप १ । ते आरिष्ट २ । तेसमुत ३ । ते जेला ४ । ते एलापत्य ५ । ते कतेल्ल ६ । ते खायण ७ ॥  
जे वासिष्ट ते सात प्रकारे ते वासिष्ट १ । ते उंजायण २ । ते जारुवक्का ३ । ते वग्घावच्चस ४ । ते कोडिन् ५ । ते सत्ति ६ । ते पारासर ७ ॥ सह  
सर्व उत्तर गोत्र कह्या ॥ सात मूलनय कह्या ते कहैछे नैगमनय १ । संग्रहनय २ । व्यवहारनय ३ । रिजुसूत्रनय ४ । शब्दनय ५ । समजिरूढ ६ ।

वबोधहेतुभूतं च नित्यद्रव्यवृत्तिमंत्यविशेषमिति आह तथंतर्ह्यय नैगमः सम्यग्दृष्टिरेवास्तु सामान्यविशेषाभ्युपगमपरत्वा त्साधुवदिति नैतदेवं सामान्यविशेष  
वस्तूना मत्वतभेदाभ्युपगमपरत्वा तस्ये त्याह च भाष्यकारः जसामणविसेसे परोपरवत्युग्रोयसोभिणो मण्डइअञ्जतमओ मिच्छादिष्ठिकणादोव ॥ १ ॥  
दोहिंविनएहिंनाय सत्यमुलूणतहविमिच्छत्तं जसविसयप्पहाण त्तणेणअन्नोन्ननिरवेक्खत्ति ॥ १ ॥ तथा सगहण भेदाना सगृह्णातिवा भेदा न्संगृह्यन्ते  
वा भेदा येन स सगहः उक्तं च सगहणसगिण्हइ संगिज्झतेवतेणजभेया तोसगहोत्ति ॥ एतदुक्तंभवति सामान्यप्रतिपादनपरः खल्वयं सदित्युक्ते सामा  
न्यमेव प्रतिपद्यते न विशेषं तथाच मन्यते विशेषाः सामान्यतो ऽर्थान्तरभूता स्युरनर्थान्तरभूतावा यद्यर्थान्तरभूता न सति ते सामान्या दर्थान्तरत्वा त्ख  
पुप्पवत् अथा नर्थान्तरभूताः सामान्यमात्र तेतदव्यतिरिक्तत्वा तत्तत्स्वरूपवदिति आह च सदितिभणियमिजम्हा सब्बत्याणप्पवत्तएवुओ तोसव्वंतम्मत्त न  
यितदत्थतरकिञ्चि ॥ १ ॥ कुंभोवावाणणो जइतोभावोअहणहाभावो एवंपडादओविहु भावानन्नत्तितंमत्तंति ॥ २ ॥ तथा व्यवहरण व्यवहरतीतिवा व्यव  
ह्रियतेवा अपलप्यते सामान्य मनेन विशेषान्वा श्रित्य व्यवहारपरो व्यवहार आह च ववहरणंववहरण सतेणववहारएवसामण ववहारपरोयजओ  
विसेसओतेणववहारोत्ति ॥ १ ॥ अयं हि विशेषप्रतिपादनपरः सदित्युक्ते विशेषानेव घटादीन् प्रतिपद्यते तेषामेव व्यवहारहेतुत्वा न तदतिरिक्तं सा  
मान्यं तस्य व्यवहारापेतत्वा त्तथाच सामान्य विशेषेभ्यो भिन्न मभिन्नवा स्या द्यदि भिन्नं विशेषव्यतिरेकेणो पलभ्येत नचो पलभ्यते अथाभिन्नं विशेषमात्रं  
त तदव्यतिरिक्तत्वा तत्तत्स्वरूपवदिति आह च उवलभव्वहारा भावाओतव्विसेसभावाओ तन्नत्तिखपुप्फपिव संतिविसेसासपञ्चक्खंति ॥ १ ॥ तथा लोकसं  
व्यवहारपरो व्यवहार स्तथा ह्यसौ पचवर्णेपि भ्रमरादिवस्तुनि बहुनिबहुतरत्वात् कणत्वमेव मन्यते आह च बहुतरउव्वियतचिय गमेइसतेविसेसएणु  
यइ सववहारपरतया ववहारंलोगमिच्छंति ॥ १ ॥ तथा ऋजु वक्रविपर्यया दभिसुख शुतं ज्ञानं यस्या सौ ऋजुशुतः ऋजुवा वर्त्तमान मतीतानागत

वक्रपरित्यागात् वस्तु सूत्रयति गमयतीति ऋजुसूत्र उक्तञ्च उज्जुरिउसुयनाणं उज्जुसुयमस्ससोयमुज्जुसुओ सुत्तयइवाजमुज्जुं वल्युतेणुज्जुसुत्तोत्ति ॥ १ ॥  
 अयहि वर्त्तमान निजकं लिङ्गवचननामादिभिन्न मप्येक वस्तु प्रतिपद्यते शेष मवस्त्विति तथा ह्यतीत मेथदा न भावो विनष्टा नुत्पन्नत्वा दृश्यत्वा  
 त्वपुष्पव तथा परकीय मप्यवस्तु निष्फलत्वात् खकुसुमवत् तस्मा वर्त्तमान खंवस्तु तच्च न लिङ्गादि वस्तुभिन्नमपि स्वरूपमुज्झति लिङ्गभिन्नं तटस्तटीत  
 टमिति वचनभिन्न आपोजल नामादिभिन्नं नामस्थापनाद्रव्यभावभिन्न आह च तन्महानिजगंसंपय कालीर्यलिङ्गवयणभिन्नपि नामादिभेदविहितं पडिवज्ज  
 इवत्युमुज्जुसुओत्ति ॥ १ ॥ तथा शपन शपतिवा सौ शप्यतेवा तेन वस्त्विति शब्द स्तस्या र्थपरिग्रहा दभेदोपचारा न्नयोपि शब्द एव यथा कृतत्वादिलक्षणहेत्वर्थ  
 प्रतिपादकपद हेतुरेवोच्यत इति आह च सवणसवइसतेण वसण्णएवत्युजंतओसदो तस्सत्यपरिणहओ नओविसदोत्तिहेउव्वत्ति ॥ १ ॥ अयचनामस्थापनाद्रव्य  
 कुम्भा न संत्येवेति मन्यते तत्कार्याकरणात् खपुष्पवत् नचभिन्नलिङ्गवचन मेकलिङ्गवचनभेदादेव स्त्रीपुरुषवत् कुटावच इत्यादिवत् अतो घटः कुटः कुम्भ  
 इति स्वपर्यायध्वनिवाच्य मेकमेवेति आह च तच्चियरिउसुत्तमय पच्चुण्णविसेसियतरसो इच्छइभावघडविय जतउनामादओत्ति ॥ १ ॥ तथा नानार्थेषु  
 नानासंज्ञासमभिरोहणा त्समभिरूढ उक्तञ्च जजसण्णभासइ ततवियसमभिरोहएजम्हा सण्णतरल्यविमुहो तओकओसमभिरूढोत्ति ॥ १ ॥ अयहि मन्य  
 ते घटकुटादयः शब्दा भिन्नप्रवृत्तिनिमित्तत्वात् भिन्नार्थगोचरा घटपटादिशब्दवत् तथाच घटनात् घटो विशिष्टचेष्टावा नर्थो घटइति तथा कुट कौटि  
 ल्ये कुटनात् कुटः कौटिल्ययोगात् कुटइति घटो ऽन्यः कुटो प्यन्यएवेति ६ तथा यथा शब्दार्थ एव पदार्थोभूतः स न्नित्यर्थो ऽन्यथाभूतो ऽसन्निति प्र  
 तिपत्तिपर एवंभूतो नय आह च एवजहसइत्यो सतोभूओतहणहाभूओ तेणैवंभूयनओ सदइत्यपरोविसेसेणंति ॥ १ ॥ अयहि योषिन्मस्तकव्यवस्थितं चेष्टा  
 वत मेवार्थं घटशब्दवाच्य मन्यते न स्थानभरणादिक्रियान्तरापन्नमिति भवतिचात्रश्लोकाः शुद्धद्रव्यसमाश्रित्य सगृहस्तदशुद्धितः नैगमव्यवहारौस्तः शेषाः



पर्यायमाश्रिताः ॥ १ ॥ अग्न्यदेवहिसामाग्न्य मभिवज्ज्ञानकारण विशेषोपगम्येति मग्न्यतेनैगमोनयः ॥ २ ॥ सद्रूपतानतिक्रान्त स्वस्वभावमिदंजगत् स  
 च्चारूपतयासर्वं संगृह्णन्सग्रहीमतः ॥ ३ ॥ व्यवहारस्तुतामेव प्रतिवस्तुव्यवस्थितं तथैवदृश्यमानत्वा व्यवहारयतिदेहिनिः ॥ ४ ॥ तत्रर्जुसूत्रनीतिःस्यात् शब्दप  
 र्यायसंस्थिता नश्वरस्येयभावस्य भावात्स्थितिवियोगतः ॥ ५ ॥ अतीतानागताकार कालसस्पर्शवर्जित वर्तमानतयासर्वं मृजुसूत्रेणसूत्र्यते ॥ ६ ॥ विरोधिलिङ्गसं  
 ख्यादि भेदाद्भिवस्तभावतां तस्यैवमग्न्यमानोर्यं शब्दःप्रत्ययशिष्टते ॥ ७ ॥ तथाविधस्यतस्यापि वस्तुनःक्षणवृत्तिनः ब्रूतेसमभिरूढस्तु सज्जाभेदेनभिन्नता ॥ ८ ॥ एक  
 स्यापिध्वनेर्वाच्यं सदातत्रोपपद्यते क्रियाभेदेनभिन्नत्वा देवभूतोऽभिमग्न्यत इति ॥ ९ ॥ अथ कथं सप्तनयशतान्यसख्याता वा नयाः सप्तसु नयेष्वतर्भवन्ती लुच्यते  
 यथा वक्त्रविशेषादसंख्येया अपिस्वराः सप्तसु स्वरेष्विति स्वराणामेकस्वरूपप्रतिपादनाय ॥ सत्तसरेत्यादि ॥ स्वरप्रकरणमाह सुगमं चेदं नवरंस्वराणां निस्वराः  
 शब्दविशेषाः ॥ सज्जेत्यादि ॥ श्लोकः षड्भ्यो जातः षड्जः उक्तहि नासाकठमुरस्तालु जिह्वादताशसश्रितः षड्भिःसजायतेयस्मा तस्मात्षड्जप्रतिरमृतः ॥ १ ॥  
 तथा ऋषभो वृषभ स्तद्वद्यो वर्तते स ऋषभ इति आह च वायुःसमुत्थितोनाभेः कंठग्रीर्षसमाहतः नर्नृवृषभपदास्मा तस्माद्वृषभउच्यते ॥ २ ॥ तथा गन्धो विद्यते  
 यत्र सगन्धारः सएव गान्धारो गन्धवाहविशेष इत्यर्थः अभाणौह वायुःसमुत्थितोनाभेः कण्ठग्रीर्षसमाहतः नानागन्धावहःपुण्यो गान्धारस्तेनहेतुना ॥ ३ ॥

नेगमे संगहे व्यवहारे उज्जुसुए सहे समज्जिरूढे एवंभूते । सत्त सरा पणत्ता तंजहा सज्जेरिसज्जेगंधारे मज्जि  
 मेपंचमेसरे । धेवतेचेवणेसादे सरासत्तवियाहिया ॥ १ ॥ एणुसिणं सत्तरह सराण सत्त सरठाणा प० तंजहा

एवं भूत ७ ॥ सात स्वर कल्या ते कहैछे सड्ज १ । रिषज २ । गांधार ३ । मध्यम ४ । पचम ५ । धैवत ६ । निषध ७ ॥ १ ॥ ए सात स्वरना

तथा मध्ये कायस्य भवो मध्यमः यदवाचि वायुःसमुत्थितोनाभे रुरोहृदिसमाहतः नाभिप्राप्तोमहानादो मध्यमत्वंसमश्नुते ॥ ४ ॥ तथा पंचानां षड्जादिस्वराणां निर्देशक्रममाश्रित्य प्रणः पंचमः अथवा पचसु नाभ्यादिस्थानेषु मातीति पचमः स्वरौ यदभ्यधायि वायुःसमुत्थितोनाभे रुरोहृत्कण्ठशिरोहतः पचस्थानोत्थितस्यास्य पचमत्वविधीयते ॥ ५ ॥ तथा अतिसंघयते अनुसंघयति शेषस्वरानिति निसृक्तिवशाच्चैवतः यदुक्तं अतिसंघयतेयस्मा देतान्पूर्वोत्थितान् स्वरान् तस्मादस्यस्वरस्यापि धैवतत्वंविधीयते ॥ १ ॥ पाठातरेण रैवतश्चैवेति तथा निषादति स्वरः यस्मात्स निषादः यतोभिहित निषीदतिस्वरायस्मा त्रिषादस्तेनहेतुना सर्वांश्चातिभवत्येष यदादित्योऽस्यदैवतमिति ॥ २ ॥ तदेवं स्वरः सप्त ॥ वियाहियत्ति ॥ व्याख्याताः नतुकार्यं हि कारणायत्तं जिह्वा च स्वरस्य कारणं सा चा सख्येयरूपा ततः कथं स्वराणां संख्यातत्वमिति उच्यते असंख्याता अपि विशेषतः स्वरः सामान्यतः सर्वेपि सप्तस्वतर्भवं त्यथवा स्थूरस्वरान् गीतं चाश्रित्य सप्त उक्ताः आह च कञ्जकरणायत्तं जीहायसरस्सताअसंखेज्जा सरसखमसखेज्जा करणस्सासंखयत्ताओ ॥ १ ॥ सत्तयसुत्तनिवडा कहनविरोहोतओगुरुआहसत्तणुवाईसत्वे वायरगहणचगेयव्वंति ॥ २ ॥ स्वरः नामतो भिधाय कारणतस्तन्निरूपणायो पक्रम्यते ॥ एणसिणमित्यादि ॥ तत्र नाभिसमुत्थस्वरौऽधिकारौ आभोगेन अनाभोगेन वा यप्रदेशं प्राप्य विशेषमासादयति तत् स्वरस्योपकारकमिति स्वरस्थानमुच्यते ॥ सज्जमित्यादि ॥

सज्जंतुष्पगजिप्पाए उरेणरिसज्जंसरं कंठुग्गएणगंधारं मज्जजिप्पाएमज्जिमं ॥ १ ॥ णासाएपंचमंवूया दंतोठे

स्थानं कथ्याते कर्हैके सङ्जनोस्थानं जीभनो अग्रजाग १ । रिषज्जनो हृदय २ । गंधारनो स्थानं कंठाग्र ३ । मध्यमनो जीभनो मध्य ४ । नासिकाये पचमस्वरं वोलाय ५ । दात ओठथी धैवतस्वरं वोलाय ६ । कपाले निषदस्वरं वोलाय ७ ॥ एह स्वरनां स्थानं जाणवा ॥ सात स्वर

० ॥  
५ ॥

श्लोकद्वयं ब्रूयादिति सर्वत्रक्रिया षड्जंतु प्रथमस्वरमेव अग्रभूता जिह्वा अग्रजिह्वा जिह्वाग्रमित्यर्थः तथा ब्रूय यद्यपि षड्जभरणे स्थानातराण्यपि व्याप्रियते अग्रजिह्वावा स्वरान्तरेषु व्याप्रियते तथापि सा तत्र बहुतरव्यापारवतीति कृत्वा तथा तमेव ब्रूयादित्यभिहितं उरो वक्ष स्तेन ऋषभस्वरं ॥ कठुगणं ति ॥ कठश्चा सा वुयकश्चोक्तः कण्ठोयक स्तेन कण्ठस्यचो ग्रत्व य तेन कण्ठोयत्वेन कण्ठाद्वा य दुद्गतिमुद्गतिः स्वरोद्गमलक्षणा क्रिया तेन कण्ठोद्गतेन गान्धार जिह्वाया मध्योभागे मध्यजिह्वा तथा मध्यम तथा दन्ताश्च ओष्ठौच दन्तोष्ठ तेन धैवतं रैवत वेति ॥ जीवनिस्त्रियत्ति ॥ जीवाश्रिता जीवेभ्योवा निःसृता निर्गताः ॥ सज्जमित्यादिश्लोक ॥ नदति रौति ॥ गवेलगत्ति ॥ गावश्च एलका श्वीरणिका गवेलका ऊरुणिकाएवेति ॥ अहकुसुमद्वयादि ॥ रूपक गाथाभिधान विषमाक्षरपादवा पादैरसमदशधर्मवत् तन्नेस्मिन्पदसिद्ध गाथेतितत्पण्डितैर्ज्ञेयं ॥ १ ॥ इतिवचनात् अथेति विशेषार्थो विशेषार्थ ताचैव यथा गवेलका अविशेषेण मध्यमस्वर नदन्ति तथा कौकिला पञ्चम मपितु कुसुमसम्भवेकालइति कुसुमानां बाहुल्यतो वनस्पतिषु सम्भवो यस्मिन् स तथा तत्र मधावित्यर्थः अजीवनिश्रिताइति तथैव नवर जीवप्रयोगा देतेइति ॥ सज्जमित्यादि ॥ श्लोकः ऋदङ्गो मईलः गोमुखी काहना यत स्तस्या

णयधेवयं मुष्ठाणेणयणेसायं सरठाणावियाहिया ॥ २ ॥ सत्त सरा जीवनिस्त्रियया पस्सत्ता तजहा सज्जंरव  
इमयूरो कुक्कुठोरिसन्नसर । हसोणदङ्गधार मज्जिमंतुगवेलगा ॥ १ ॥ अह कुसुमसंज्ञवेकाले कोइलापंचमंसरं ।

जीवनिश्रित कह्या ते कहैछे षड्जस्वर मोर बोले । कूकडो रिषभस्वर बोले । हस गंधारस्वर बोले । मध्यमस्वर वोकडो बोले ॥ ४ ॥ अथ वसत काले कोइल पंचमस्वर बोले । धैवतस्वर सारस कौच बोले । निषदस्वर हाथी बोले ॥ ५ ॥ सात स्वर अजीवनिश्रित कह्या ते कहैछे षड्जस्वरे माद

मुखे गोशृङ्ग मग्न्यद्वा क्रियतइति ॥ चउइत्यादि ॥ श्लोकः चतुर्भिः स्वरणैः प्रतिष्ठान भुवि यस्या सा तथा गोधा चर्मणा अवनडेति गोधिका वाद्यविशेषो द  
 र्दरिकेति यत्पर्यायः आडम्बरः पटहः सप्तममिति निषाद ॥ एएसिणमित्यादि ॥ सत्तत्ति ॥ स्वरभेदान् सप्तस्वरलक्षणानि यथास्व फलप्रति प्रापणाव्य  
 भिचारीणि स्वरस्वरूपाणि भवंति तान्येव फलतआह ॥ सज्जेणेत्यादि ॥ श्लोकाः सप्त षड्जेन लभते वृत्ति अयमर्थः षड्जस्येद लक्षण स्वरूपमस्ति येन वृत्ति  
 लभते षड्जस्वरयुक्तः प्राणी एतच्च मनूष्यापेक्षया लक्ष्यते मनुष्यलक्षणत्वा दस्येति कृतञ्च नविनश्यति तस्येतिशेषः निष्कलारम्भो न भवतीत्यर्थः गावो मित्रा  
 णिच पुत्राश्च भवतीति शेषः ॥ एसज्जंति ॥ ऐश्वर्यं गन्धारे गौतियुक्तिज्ञाः वर्य्यवृत्तयः प्रधानजौविका कलाभि रधिकाः कवयः काव्यकारिणः प्राज्ञाः स

ढठं चसारसाकोंचा णेसायंसत्तमंगल ॥ २ ॥ सत्त सरा अजीवनिस्सिया पस्सत्ता तंजहा सज्जंरवडमुत्तिंगो  
 गोमुहीरिसज्जसरं । संखोणदइगंधारं मज्झिमपुणऊल्लरी ॥ १ ॥ चउचलणपइठाणा गोहियापंचमंसरं । अ  
 ऋवरोयधेवययं महान्नेरीयसत्तमं ॥ २ ॥ एएसिण सत्तरह सराण सत्त सरलस्कणा पस्सत्ता तंजहा सज्जेणलज्जइ  
 वित्ति कयचनविणस्सइ गावोमित्तायपुत्ताय णारीणचेववल्लहो ॥ १ ॥ रिसज्जेणउएसज्ज सेणावच्चंधणाणिय

ल बोले । गोमुही रिपज्जस्वरे बोले । सख गधारस्वरे बोले । मध्यमस्वरे झालर बोले ॥ ६ ॥ च्यार पगथी प्रतिष्ठित रही गोहिआ पचमस्वरेदुर्दुरी  
 बोले । ढोल धैवतस्वरे । महाभेरी सप्तमस्वरे बोले ॥ ७ ॥ सात स्वरना सात स्वर लक्षण कह्या तेकहेछै पड्जस्वरे लदमी पामे काई विणसे नथी  
 गाय मित्र पुत्र पामे स्त्रीने वल्लज होय ॥ ८ ॥ रिपज्जस्वर नो धणी राज्य सेनापति थाय धनपामे वस्त्र गध अलकार स्त्रीशय्या आसन पामे ॥ ९ ॥

दोषा येच उक्तेभ्यो गीतियुक्तिज्ञादिभ्यो अग्रे शास्त्रपारगा धनर्वेदादिपारगामिन स्ते भवंतीति शकुनेन श्येनलक्षणेन चरति पापपिं कुर्वन्ति शकुनान्वा  
घ्नन्तीति शाकुनिकाः वागुराः मृगबन्धनतया चरन्तीति वागुरिकाः शूकरेण शूकरवधार्थं चरन्ति शूकरान्वा घ्नन्तीति सौकरिकाः मौष्टिका मृषा इति  
एतेषां मित्वादि तत्र व्याख्यानगाथा सज्जा इति हागामो ससमूहो मुच्छणाण विणेशीं तासत्त एकमिक्के तीसत्त सराण इगवीसा ॥ १ ॥ अण्णसरविसेसे उ

वत्यगंधमलकारं इत्योनेसयणाणिय ॥ २ ॥ गधारेगीयज्जुत्तिष्ठा वज्जवित्तिकलाहिया । ज्वंतिकविणोपन्ना  
जेअन्नेसत्यपारगा ॥ ३ ॥ मज्जिमसरसंपन्ना ज्वतिसुहजीविणो खोयतीपियतीदेती मज्जिमसरमस्सिनु ॥ ४ ॥  
पचमसरसंपन्ना ज्वतिपुढवीवई सूरासंगहकत्तारो अणेगगणणायगा ॥ ५ ॥ धेवयसरसंपन्ना ज्वंतिकलह  
प्पिया साउणित्तावगुरिया सोयरियामच्छ्वंधाय ॥ ६ ॥ चळालामुष्ठियासेया जेअन्नेपावकम्मिणो गोधाय

गधारे गधनीयुक्ति वर्पा जली वृत्तिकला हवन्ति कहिये होय कविप्रज्ञा बीजाये धनुर्विद्यादि सास्त्रनो पारगामी थाय ॥ १० ॥ मध्यमस्वर संपन्न  
थयाथी सुखथी आजीविका होय खाय पीवे देवे मध्यमस्वरे आश्रित ॥ ११ ॥ पंचमस्वर सपन्न पुरुष पृथ्वीपति होय सूरसग्रहनो करनहार होय  
अनेक समुदायनो नायक होय ॥ १२ ॥ धैवत स्वर सपन्न पुरुष कलहप्रिय होय जीवहिंसा करनहार होय आहेडी होय सूअरनो मारणहार  
होय ॥ १३ ॥ चाडाल मौष्टिकमल्ल अन्य बीजा जे पापकर्म कारी घातनो करणहार चौर निषधस्वर आश्रित ॥ १४ ॥ ए सात स्वरना त्रण ग्राम क  
हिया तेऊहैछे ग्राम ते ठाम विशेष षड्जस्वर ग्राम १ । मध्यमस्वर ग्राम २ । गाधार ग्राम ३ । षड्ज ग्रामनी सात मूर्च्छना कही मूर्च्छना ते अ

॥ पायंतस्समुच्छ्वाभणिया कस्तावमुच्छिओइव कुणइमुच्छंवसोवत्ति ॥ २ ॥ कर्त्तावा मूर्च्छितइव करोति मूर्च्छन्निववा स कर्त्तव्यं. इहच मङ्गीप्रभृतीना ॥  
मेकविंशते मूर्च्छेनाना स्वरविशेषाः पूर्वगते स्वरप्राभृते भणिता अधुना तु तद्विनिर्गतेभ्यो भरतयैगाखिलादिशास्त्रेभ्यो विज्ञेया इति ॥ सत्तसराकओगा

गायेजेचोरा णेसायंसरमस्सिता ॥ ७ ॥ एएसिणं सत्तरह सराण तयो गामा पस्सत्ता तंजहा सज्जगामे मज्झिम  
गामे गंधारगामे । सज्जगामस्सणं सत्त मुच्छणानु पस्सत्तानु तंजहा मंगीकोरखीया हरीयरयणीयसीरकंताय  
ढ्ठीयसारसीणाम सुद्धसज्जायसत्तमा ॥ १ ॥ मज्झिमगामस्सण सत्त मुच्छणानु प० तंजहा उत्तरमंदारय  
णी उत्तराउत्तरासमाअस्सो कंतायसोवीराअ नीरूहवइसत्तमा ॥ २ ॥ गंधारगामस्सणं सत्तमुच्छणानु प०  
तंजहा णंदीयखुद्धिमापू रिमाचउत्थीयसुद्धगधारा उत्तरगधाराविय पचमियाहवइमुच्छानु ॥ ३ ॥ सुद्धुत्तरमा  
यामा साढ्ठीणियमसाउनायद्वा अहउत्तरायकोळी मायसासत्तमीमुच्छा ॥ ४ ॥ सत्तसराकनुसं नवतिगेय

न्यस्वरनी नीपजाविवो ते कहैछे मगी १ । कौरवी २ । हरीत ३ । रजनी ४ । सारकांता ५ । सारणासी ६ । श्रुतसज्जा ७ ॥ १५ ॥ मध्यम ग्रामनी  
सात मूर्च्छेना कही ते कहैछे उत्तरमदा १ । रजनी २ । उत्तरा ३ । उत्तरसमा ४ । अश्वकाता ५ । सौवीरा ६ । अजिरूपवती ७ ॥ १६ ॥ गाधार ग्रा  
मनी सात मूर्च्छेना कही ते कहैछे नदिता १ । खुद्धिमा २ । पूरिमाय ३ । शुद्धगंधारा ४ । उत्तरगधारा ५ ॥ १७ ॥ सुद्धुत्तरआयमा ६ । ढ्ठी निश्चयथी  
जाणथी अथ उत्तराकोळी ७ ॥ मूर्च्छेना स्वर विशेष ॥ १८ ॥ सात स्वर किहाथी ऊपजैछे । गावानी कौण जोनिछे । केतला समयना सासोस्वासा

हा ॥ इह चत्वारः प्रश्नाः तेन कुत इति स्थाना क्वायोनि रिति काजातिः तथा कतिसमया येषु ते कतिसमया उच्छासाः किम्परिमाणकाला इत्यर्थं स्त  
थाकारा आकृतयः स्वरूपाण्येत्यर्थं ॥ सत्तसरागाहा ॥ प्रश्ननिर्वचनार्थां स्पष्टा नवर रुदितं योनि र्जातिः समानरूपतया यस्य तत् रुदितयोनि क पादसमा  
उच्छासा यावद्भिः समयैः पादौ वृत्तस्य गीयते तावत्समया उच्छासा गीते भवतौ त्वर्थं आकारानाह ॥ आइगाह ॥ आदौ प्राथम्ये मृदुकोमल सादि  
मृदुगीत मितिगम्यते आरभमाणा इह समुदितत्रयापेक्षं बहुवचन मन्यथा एकएव आकारो द्वय मन्यद्व्यमाणलक्षण मिति तथा समुदितश्च महत्ता  
गीतध्वने रितिगम्यते मध्यकारे मध्यभागे तथा अवसाने च क्षपयंतो गीतध्वनिं मदीकुर्वन् त्रयो गीतस्या कारा भवति आदिमध्यावसानेषु गानध्वनि मृदु

स्सकान्नवइजोणी कइसमयाउस्सासा कइवागेयस्सञ्जागारा ॥ १ ॥ सत्तसराणाञ्जील नवतिगीतंचरुत्तजोणी  
यं पादसमाउस्सासा तिनियगीयस्सञ्जागारा ॥ २ ॥ ञ्जाइमिउञ्जारजंता समुव्वहंतायमज्जगारमि ञ्जवसा  
णेतज्जिवितो तिनियगेयस्सञ्जागारा ॥ ३ ॥ ल्होसेञ्जुगुणे तिनियविह्वाइदोयज्जणियानं जोणाहिइसोगा

एतले केतलोकाल ॥ केतला गीतना आगार ते आकार रूप ॥ १८ ॥ सात स्वर नाजिमंडलथी ऊपजे गीत रोदन रोवानी योनि रोवो गावो एक  
जातिखे श्लोकनो पद ऊचरी तेतला समय उच्छास त्रण गीतना आगार ॥ १९ ॥ प्रथम मृदु कोमल आरभते मध्यमज्ञागे मोटी गीतध्वनि ऊचरे ता  
रस्वरे छेहडे क्षय पामती हलकी गीतध्वनि त्रण गीतना आगार ॥ २० ॥ गीतना छ दोषखे आठ गुणखे त्रण वृत्त पदना प्रकार जेजाणे ते गावे ज  
लो सीख्यो रग मध्यने विषे ॥ २१ ॥ वीहतो ऋततो गावे १ । उतावलो गावे २ । लघुतया गावे ३ । गातोगातो प्रवलपणे गावे ताल साचवे नथी

तारमंद्रस्वभावः क्रमेण भवतीतिभावः किंचान्यत् ॥ ऋहोसेदारगाहा ॥ षड्दोषा वर्जनीया स्तानाह ॥ भीयंगाहा ॥ भीत मुत्तस्तमानस द्रुतं त्वरित ॥ रह  
 स्संति ॥ ऋस्वस्वरं लघुशब्दमित्यर्थः पाठातरेण ॥ उष्पित्थं ॥ श्वासयुक्तं त्वरितचेति ॥ ३ ॥ उत्ताल उग्रावल्यार्थे इत्यतिताल मस्थानतालवा तानसु कंसिकादि  
 शब्दविशेषइति ॥ ४ ॥ काकस्वर श्लक्ष्णा श्रव्यस्वरं ॥ ५ ॥ अनुनासच सानुनासिक नासिकाकृतस्वरमित्यर्थः ॥ ६ ॥ किमित्याह गायन् गानप्रवृत्त स्व हे  
 गायन मागासीः किमिति यतः एते गेयस्य षड्दोषा इति अष्टौ गुणानाह ॥ पुन्रंगाहा ॥ पूर्णं स्वरकलाभिः ॥ १ ॥ रक्त गेयरागेणा नुरक्तस्य अलङ्कृत  
 मन्यान्यस्वरविशेषाणां स्फुटशुभानां करणात् व्यक्तमजरस्वरस्फुटकरणत्वात् ॥ ४ ॥ अविघुटं ॥ विक्रोशनमिव यत्रविस्वर ॥ ५ ॥ मधुरं मधुरस्वर कोकिला  
 रतवत् ॥ ६ ॥ सम तालवंशस्वरादिसमनुगत ॥ ७ ॥ सुकुमार ललित ललतौयवत् स्वरघोलनाप्रकारेण शब्दस्पर्शनेन श्रोत्रेन्द्रियस्य सुखोत्पादनादेति ए  
 भि रष्टाभि गुणै र्युक्तं गेय भवति अन्यथा विडंबना किञ्चान्यत् ॥ उरगाहा ॥ उरःकण्ठशिरःसुप्रशस्त विशुद्धं अयमयीं यद्युरसि स्वरो विशाल स्तत उ  
 रोविशुद्ध कठे यदिस्वरो वर्तितो अस्फुटितश्च ततः कठविशुद्ध शिरसि प्राप्नो यदि सानुनासिक स्ततः शिरोविशुद्ध अथवा उरःकण्ठशिरःसुश्लेषणा अ  
 व्याकुलेषु विशुद्धेषु प्रशस्तेषु य त्त तथेति चकारो गेयगुणातरसमुच्चये गीयते उच्चार्यते गेयमिति सवध्यते किंविशिष्ट मित्याह मृदुक मधुरस्वरं रिभितं

हिइ सुसिरिकुत्तरंगमज्जमि ॥ ४ ॥ जीतंदुतरहस्सं गायंतोमायगाहिउत्तालं काकस्सरमणुणासं चहोंतिगेयस्स  
 ळहोसा ॥ ५ ॥ पुन्ररत्तचञ्चलं कियववत्तहायञ्चविघुठ मधुरंसमसुकुमालं अठगुणाहोंतिगेयस्स ॥ ६ ॥ उरकंठसि

४ । काकस्वरे आकरो गावे ५ । नाकमा गावे ६ ॥ यह गीतना दोषछे ॥ २२ ॥ पूर्ण कला सहित गावे १ । रागमां रक्तथई अलंकृत २ । अन्य स्वर



यत्राक्षरेषु धोलनया संचरन् स्वरौ रंगतीव धोलनाबहुल मित्यर्थः पदवत्तं गेयपदैर् निर्बद्धमिति पदत्रयस्य कर्मधारयः ॥ समतालपडुक्खेवंति ॥ समशब्दः प्रत्येकं संबध्यते तेन समा स्ताला हस्तताला उपचारा तद्रवो यस्मिन् स्त त्समतालं तथा समः प्रत्युत्क्षेपः प्रतिक्षेपोवा मुरजकसिकाद्यातोद्यानां यो ध्वनि स्तल्लक्षणी नृत्यत्यादक्षेपलक्षणीवा यस्मिन् स्तात् समप्रत्युत्क्षेप समप्रतिक्षेपचेति तथा ॥ सत्तसरसीहरति ॥ समस्वराः ॥ सीहरति ॥ अक्षरादिभिः समा यत्र तत्सप्तस्वरसीहरं तेषामो अक्षरसम १ पदसमं २ तालसम ३ लयसम ४ गतसमच ५ नीससिञ्जससियसम ६ संचारसमं ७ ॥ सरासत्तत्ति ॥ १ ॥ इयंच गाथा स्वरप्रकरणोपाते ॥ तंतिसममित्यादि ॥ रधीतापि ब्रह्म अक्षरसम मित्यादिक्त्वा व्याख्यायते अनुयोगद्वारटीकाया मेव मेव दर्शनादिति यत्र अक्षरे दीर्घे दीर्घस्वरः क्रियते क्लृप्ते क्लृप्तः पुते पुतः सानुनासिके सानुनासिक स्तदक्षरसम १ तथा यद्नेयपद नासिकादिक मन्यतरबन्धनेन बद्धं यत्र स्वरे अनुयाति भवति त तत्रैव यत्र गीते गीयते त त्वदसममिति यत्पदस्वराहतहस्ततालस्वरानुवर्त्तिर्भवति त तालसम शृङ्गदार्वाद्यन्यतरमये नागुलिकोशकेनाहताया स्तत्र्याः स्वरप्रकारो लय स्त मनुसारतो गातु र्यद्नेयं त लयसम प्रथमतो बंशतत्र्यादिभि र्यः स्वरौ गृहीत स्तत्सम गीयमानं ग्रहसमं त्रिःश्वसितोच्छसितमान मनतिक्रामतो य द्नेय त त्रिःश्वसितोच्छसितसम तैरेव बंशतत्र्यादिभि र्य दगुले सचारसम गीयते त त्सचारसम गेयच सप्तस्वरा स्तदात्मकमित्यर्थः योगीये

रपसत्यं चगिज्जणमउञ्चारिन्नियपदंवद्दं समतालपदुरक्खेवं सत्तसरसीहरगेय ॥ ७ ॥ निद्दोसंसारवंतंच हेतुजुत्त

विशेष ३ । स्पष्टता ४ । तिम वे स्वर मथी माठो स्वर नथी ५ । मीठो कोकिलवत् ६ । उर कंठ शिरथी शुद्ध ७ । सुकुमाल गावे ८ ॥ यह आठ गावाना गुणछे ॥ २३ ॥ उर कठ मस्तकथी प्रशस्त शुद्ध गावे मधुर धोलनासहित पदबद्ध गेयपदसहित ताल समान पदनो ऊचरवो सात स्वर अ

सूत्रवधः सएव मष्टगुण एव कार्य इत्याह ॥ निद्दीप्तसिलोगो ॥ तत्र निद्दीप्त अलियमुवघायजणियमित्यादि द्वात्रिंशत्सूत्रदोषरहितंसारव दर्थेन युक्तं २ हेतु युक्त २ मर्थगमककारणयुक्त ३ अलङ्कृतं काव्यालङ्कारयुक्तं ४ उपनीत मुपसंहारयुक्तं ५ सोपचार मनिष्ठुराविरुद्दालञ्जनीयाभिधान सोप्रासंवा ६ मितं पदपदाक्षरैर्नापरिमितमित्यर्थः ७ मधुर त्रिधा शब्दार्थाभिधानतो ऽ गेय भवतीतिशेषः ॥ तिष्ठियवित्ताइति ॥ यदुक्तं तद्व्याख्यासम ॥ सिलोगो ॥ तत्रसम पादैरक्षरैश्च तत्र पादैश्चतुर्भि रक्षरैस्तु गुरुलघुभि रङ्समन्वेकतरसम विषमस्तु सर्वत्र पादाक्षरापेक्षयेत्यर्थः अन्येतु व्याचक्षते सम यत्र चतुर्ष्वपि पादेषु समा न्यक्षराणि अङ्सम यत्र प्रथमतस्तृतीययो र्द्वितीयचतुर्थयोश्च समत्वं तथा सर्वत्र सर्वपादेषु विषमञ्च मिषमाक्षर यद्यस्मात् वृत्तमभवति ततस्त्रीणि वृत्तप्रजातानि पद्यप्रकारा अतएव चतुर्थं नोपलभ्यतइति ॥ दोषियभणिईओत्ति ॥ अस्य व्याख्या ॥ सकयासिलोगो ॥ भणिति भाषा आहिया आख्याता स्वरमण्डले षड्जादिस्वरसमूहे शेषं कण्ठ्य कौटुशी स्त्री कौटुशं गायतीति प्रश्नमाह ॥ केसौगाहा ॥ केसित्ति ॥ कौटुशी खरन्ति खरस्थान रुचं प्रसिद्धं चतुरं दचं विलवं परिमन्यर

मलंकिय उवणीयसोवयारंच मितंमञ्जरमेवय ॥ ८ ॥ सममष्टसमंचेव सवृत्यविसमंचजं तिन्निवित्तपयायाइं

क्षरं सम ते गीत कहिये ॥ २४ ॥ दोषरहित अर्थयुक्त हेतुयुक्त काव्यना अलकारयुक्त उपसंहार युक्त उपचार सहित अनिष्ठुर पद पदाक्षरे प्रमाण सहित मधुर शब्दार्थसहित गीत होय ॥ २५ ॥ सरखा अक्षर ते समवृत्त पहिलो तीजो पद सम बीजोपद चौथोपद ते सम ते अर्द्ध समवृत्त च्यार पदे अक्षर सरखा नथी ते विषमपद वृत्त ए त्रण वृत्तपद गीतना चौथुं वृत्तछे नथी ॥ २६ ॥ संस्कृतना अथवा प्राकृतना श्लोक मणो एह वे प्रकारे ज णावो कह्यो स्वरमण्डलने विषे प्रज्ञस्त कहिया ॥ २७ ॥ केहवी स्त्री मधुरो गावे केहवी स्त्री खर अने लूखो गावे केहवी स्त्री चतुर अने ञाहो गावे

द्रुत शीघ्रमिति ॥ विस्तरपुण्णकेरिसिति ॥ गाथाधिकमिति उत्तरमाह ॥ सामागाहा ॥ कण्ठा ॥ पिंगलति ॥ कपिला ॥ ततिगाहा ॥ तत्री सम वीणादि तंत्री  
 शब्देन तुल्य मिलितच शेष प्राग्व अवर पादो वृत्तपाद स्तंत्रीसमं इत्यादिषु गेयं सम्बन्धनीय तथा गेयस्य स्वरानर्थान्तरत्वा दुक्तम् ॥ सचारसमासरासत्तति ॥  
 अन्यथा सचारसममिति वाच्यं स्यात् ॥ ततिसमालयसमेत्यादिचेति ॥ अथच स्वरमंडलसन्नेपार्थ ॥ सत्तसरासिलोगो ॥ ततो तंत्रीतानो भण्यते तत्र षड्जादि  
 स्वरः प्रत्येक सप्तभिः स्थानैर्गीयतइत्येव मेकोनपचाशत्तानाः सप्ततंत्रीकाया वीणाया भवन्तीति एव मेकतंत्रीकाया त्रितंत्रीकायाच कठेनापि गीयमाना

॥ टी

चउत्थंनोवलप्लर्ई ॥ ९ ॥ सक्कयापागयाचेव दुविहाज्जणिउष्णाहिया सरमंफलमिगिज्जते पसत्थाइसिन्नासिया  
 ॥ १० ॥ केसीगायइमज्जर केसीगायइस्वरचरुक्कच केसीगायइचउर केसिविलबंदुतकेसी ॥ ११ ॥ विस्सरंपुण  
 केरिसी ॥ सामागायइमज्जरं कालीगायइस्वरचरुक्कच गोरीगायइचउरं काणविलबंदुतंअंधा ॥ १२ ॥ विस्सरं  
 पुणपिंगला ॥ ततिसमंतालसमं पादसमंलयसमंगहसमंच नीससिज्जससियसमं संचारसमासरासत्त ॥ १३ ॥

॥ म

केहवी स्त्री विलंबथी गावे केहवी स्त्री उतावलो गावे ॥ २८ ॥ केहवी स्त्री वेस्वर माठा स्वरथी गावे ॥ श्यामा स्त्री सोलह वरसनी ते मीठी गावे का  
 ली स्त्री स्वरथी लूखो गावे गोरीस्त्री चतुर गावे काणी स्त्री विलंबथी गावे आधी स्त्री उतावलो गावे पिंगला कपिला स्त्री वेस्वरे गावे ॥ २९ ॥ वी  
 णना शब्द सरिखो गावे तालसमान पादसमान लयसमान गाथासमान निःस्वास उत्स्वास समान सचार समान स्वरातर तुल्य ॥ ३० ॥ सात स्व  
 रछे त्रणग्रामछे एकवीस मूर्च्छनाछे उगुणपचास तानछे ॥ एतले स्वरमफल पूरो थयो ॥ ३१ ॥ सात प्रकारे काय कलेश कह्यो ते कहैछे एक स्थानके

॥ भ

एकोनपचाशदेवेति अनन्तरं गानतो लौकिकः कायक्लेश उक्तो ऽधुना लोकोत्तरं तमेवाह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ प्रायः प्रागेव व्याख्यातमिदं तथापि किञ्चि  
 क्षिप्यते कायस्य शरीरस्य क्लेशः खेदः पीडा कायक्लेशो वाद्यतपोविशेषः स्थानायतिकः स्थानातिगः स्थानातिदोषा कायोत्सर्गकारी द्रव्यं धर्मधर्मिणो रमे  
 दा देवमुपग्यासो ऽन्यथा कायक्लेशस्य प्रकान्तत्वा त्स्त्वयाच्यः स्या न तद्वानिहतु तद्वानिर्दिष्टइति एव सर्वत्र उक्तट्कासनिकः प्रतीत स्तथा प्रतिमास्था  
 योति भिक्षुप्रतिमाकारी वीरासनिको यः सिंहासने निविष्टइवा स्ते नैपथिकः समपटपुतादिनिषयोपव देशो डायनिकः प्रसारितदेहो लगडसायी  
 भूम्यलग्नपृष्ठ इदं च कायक्लेशरूपं तपो मनुष्यलोक एवा स्तीति तत्प्रतिपादनपरं ॥ जंबूद्वीवेत्यादि ॥ प्रकरणंगतार्थं चैतत् मनुष्यचेत्राधिकारा तत्रतकुलकरक

सत्तसरातजंगामा मुच्छूणाएगविंसती ताणाएकूणपखासा संमत्तंसरमंजुलं ॥ १४ ॥ सत्तविहे कायकिलेसे  
 पखत्ते तजहा ठाणाइए उकुळुआसणिए पफिमठाई वीरासणिए णेसज्जिए दळायइए लगंऊसाई । जंबुद्वीवेदीवे  
 सत्त वासा पखत्ता तंजहा जरहे एरवए हेमवए हेरन्धवए हरिवासे रम्मगवासे महाविदेहे । जंबुद्वीवेदीवे

कायोत्सर्ग करे १ । उक्तडु आसन वैसे २ । जित्तु प्रतिमानो करणहार ३ । वीरासने वैसे ४ । निविष्टे सीहनी परे वैसे ५ । दडनी परे देहपसारे ६ ।  
 लाकळानी परे सोई भूये वासो नलागे ७ ॥ जंबूद्वीपमा सात वर्ष कहिया ते कहैछे जरत १ । ऐरवत २ । हिमवंत ३ । हेरखवत ४ । हरिवर्ष ५ ।  
 रम्यकवर्ष ६ । महाविदेह ७ ॥ जंबूद्वीपमा सात वर्षधर पर्वत कहिया ते कहैछे चुल्लहिमवत १ । महाहिमवंत २ । निपध ३ । नीलवत ४ । रूपी ५ ।  
 शिखरी ६ । मेरुपर्वत ७ ॥ जंबूद्वीपमा सात महानदी पूर्वदिशि साहमी लवणसमुद्रमा भलेछे ते कहैछे गंगा १ । रोहिता २ । हरी ३ । सीता ४ ।

सप्त वासहरपद्म्या पश्चात्ता तंजहा चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसहे नीलवंते रूप्यी सिहरी मंदरे । जंबुद्वीवे  
दीवे सप्त महानदीनं पुरत्याज्जिमुहीनं लवणसमुद्रं समप्पेति तजहा गंगा रोहिया हरी सीता णरकंता सुव  
न्नकूला रक्ता । जंबुद्वीवेदीवे सप्त महानदीनं पञ्चत्याज्जिमुहीनं लवणसमुद्रं समप्पेति सिंधू रोहियंसा हरि  
कता सीतोदा णारिकता रूप्यकूला रक्तवर्द्ध । धायइखण्डीवपुरच्छिमं सप्त वासा पश्चात्ता तजहा जरहे  
जाव महाविदेहे । धायइखण्डीवपुरच्छिमेण सप्त वासहरपद्म्या पश्चात्ता तंजहा चुल्लहिमवंते जाव मंदरे ।  
धायइखण्डीवपुरत्थिमं सप्त महानदीनं पुरत्याज्जिमुहीनं कालोदसमुद्रं समप्पेति तजहा गंगा जाव रक्ता  
धायइखण्डीवपुरत्थिमं सप्त महानदीनं पञ्चत्याज्जिमुहीनं लवणसमुद्रं समप्पेति तंजहा सिंधू जाव रत्त

नरकाता ५ । सुवर्णकूला ६ । रक्ता ७ ॥ जंबूद्वीपमा सात मोटी नदी पश्चिमदिशि साहमी लवण समुद्रमा जलछे तेकहैछे सिंधु १ । रोहितांसा २ ।  
हरिकाता ३ । सीतोदा ४ । नारिकाता ५ । रूप्यकूला ६ । रक्तवती ७ ॥ धातकी खण्डीप पूर्वार्द्धमा सात वर्ष ते कहैछे जरत यावत् महाविदेह ॥  
धातकी खण्डीपार्द्ध सात वर्षधर कह्या ते कहैछे चुल्लहिमवंत यावत् मेरु ॥ धातकी खण्डीप पूर्वार्द्ध सातमोटी नदी कही पूर्वदिशि साहमी कालोद  
समुद्रप्रते आवेछे ते कहैछे गंगा यावत् रक्ता ॥ धातकी खण्डीपे सात मोटीनदी कही पश्चिम साहमी लवणसमुद्रप्रते भलेछे सिंधु यावत् रक्ताव  
ती ॥ धातकी खण्डीप पश्चिमार्द्धमा सात वर्ष क्षेत्रछे इमज एतलो विशेष पूर्वदिशि साहमी लवणसमुद्र प्रति आवेछे ॥ पश्चिम साहमी कालोदधि

० ॥ लघ्वचनीतिरत्नदुःखमादिलिङ्गसूत्राणि पाठसिद्धानि चैतानि नवरं ॥ आगमिस्तेणहोक्खइत्ति ॥ आगमिथता कालेन हेतुना भविष्यतीत्यर्थः तथा विमल

वई । धायइखरुदीवपच्चत्थिमध्देणं सत्त वासा एवंचेव णवरं पुरत्थाज्जिमुहीनं लवणसमुद्दं समं पच्चत्थाज्जिमु  
हीनं कालोदं सेसंतंचेव । पुष्करवरदीवहूपुरत्थिमध्देणं सत्त वासा तहेव णवरं पुरत्थाज्जिमुहीनं पुष्करोदं  
समुद्दं समप्पेति पच्चत्थाज्जिमुहीनं कालोदं समुद्दं समं सेसंतंचेव । एव पच्चत्थिमध्देवि णवरं पुरत्थाज्जिमुहीनं  
कालोदसमुद्दं समं पच्चत्थाज्जिमुहीनं पुष्करोदं समुद्दं समप्पेति सत्तत्थवासा वासहरपट्ठया णईत्तंय जाणिवा  
णि । जंबूद्वीवेदीवे जारहेवासे तीयाए उरुसप्पिणीए सत्त कुलकरा होत्था तजहा मित्तदामेसुदामेय सुपा  
सेयसयपत्ते विमलघोसेसुघोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥ जंबूद्वीवेदीवे जारहेवासे इमासेत्तसप्पिणीए सत्त

समुद्रप्रति आवेळे शेष तिमज ॥ पुष्करवर द्वीप पूर्वार्द्धमां सात वर्षं क्षेत्र कहिया शेष तिमज ॥ पूर्व साहमी पुष्करोदधि समुद्रमा आवेळे पश्चिमा  
ज्जिमुखी पुष्करोदधि समुद्र प्रति आवेळे ॥ पश्चिम साहमी पुष्करोदधि समुद्र प्रति आवेळे शेष तिमज इम पश्चिमार्द्धमा पणि कहवो पूर्व साहमी  
कालोद समुद्रप्रति आवेळे पुष्करोदधि समुद्रप्रति आवेळे सघले वर्षधर पर्वत नदी जाणवी ॥ जंबूद्वीपना भरत क्षेत्रमां गई उत्सर्पिणीय सात कु  
लकर थया ते कहैळे मित्रदाम १ । सुपास २ । सुदाम ३ । स्वयंप्रभु ४ । विमलघोष ५ । सुघोस ६ । महाघोस ७ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आवर्तमा  
न अवसर्पिणीये सात कुलकर थया ते कहैळे पहलो विमलवाहन १ । चक्षुष्मा २ । जसम ३ । चौथो अजिचंद्र ४ । प्रसेनवई ५ । मरुदेव ६ । ना

वाहने णमकुलकरे संति सप्तविधाइति पूर्वदशविधा अभूवन् ॥ रुक्लत्ति ॥ कल्पवृक्षा ॥ उवभोगत्ताएत्ति ॥ उपभोग्यतया ॥ हज्जं ॥ शीघ्र मागतवंतोभोज  
नादिसपादने नीपभोगं तत्कालीनमनुष्णाणा मागताइत्यर्थः ॥ मत्तंगयायगाहा ॥ मत्तंगयाइति मत्तं मद स्तस्य कारणत्वान् मद्य मिह मत्तशब्दे नोच्य  
ते तस्याङ्गभूताः कारणभूता स्तदेव वाङ्मयवयो येषां ते मत्तांगकाः सुखपेयमद्यदायिनइत्यर्थः चकारः पूरणे ॥ भिगत्ति ॥ सज्जा शब्दत्वात् भृङ्गारादि  
पिविवभाजनसपाटका भृङ्गाः ॥ चित्तगत्ति ॥ चित्तस्यानेकविधस्य माणस्य कारणत्वा चित्तांगाः ॥ चित्तरसत्ति ॥ चित्ता विचित्रा रसा मधुरादयो म  
नोहारिणो गेभ्यः सकाशा त्सपद्यन्ते तेचित्तरसाः ॥ मणियगत्ति ॥ मणीना माभरणभूताना मगभूताः कारणभूता मणयोवां गा न्यवयवा येषां ते

कुलगरा होत्या तंजहा पढमित्यविमलवाहण चरकुमजसमंचउत्थमन्निचंदे तत्तोपसेणईपुण मरुदेवेचेवनान्नी  
य ॥ १ ॥ एएसिणं सत्तरह कुलकराणं सत्त जारियाहोत्या तं० चदजसचंदकंता सुरूवपफिरूवचरुकुक्ताय सिरि  
कतामरुदेवी कुलकरइत्थीणणामाई ॥ १ ॥ जबुद्धीवेदीवे जारहेवासे ज्ञागमिरसाए उरसप्पिणीए सत्त कुल  
करा जविरसंति तंजहा मित्तवाहणसुज्जोमेय सुप्पजेयसयंपजे दत्तेसुज्जमेसुबंधूय ज्ञागमिरसेणहोस्कई ॥ १ ॥

जि ७ ॥ सात कुलकरनी सात स्त्री यई तेकहैछे चद्रयज्ञा १ । चंद्रकाता २ । सुरूपा ३ । प्रतिरूपा ४ । चतुकाता ५ । श्रीकाता ६ । मरुदेवा ७ ॥  
यह सात कुलकरनी स्त्रीना नाम कह्या ॥ २ ॥ जबूद्धीपे जरतक्षेत्रे आवती उत्सर्पिणी काले सात कुलकर थास्ये ते कहैछे मित्रवाहन १ । सुज्जूम २ ।  
सुप्रज ३ । स्वयंप्रज ४ । दत्त ५ । सुहुम ६ । सुबधु ७ ॥ यह आवती उत्सर्पिणीये थास्ये ॥ १ ॥ विमलवाहन कुलकरने सात प्रकारना कल्पवृक्ष जो

॥ मण्यंगा भूषणसंपादका इत्यर्थः ॥ अणियणत्ति ॥ अनग्नकारकत्वा दनग्ना विशिष्टवस्त्रदायिनः संज्ञाशब्दोवाचमिति ॥ कप्परुक्खत्ति ॥ उक्तव्यतिरिक्तसामान्यकल्पितफलदायित्वेन कल्पना कल्पस्तत्प्रधाना वृत्ताः कल्पवृत्ताइति ॥ दडनीइत्ति ॥ दडन दंडो परिधिनामनुशासनं तत्र तस्यवा सएववा नीति नयी दडनीति. ॥ हक्कारेत्ति ॥ ह इत्यधिचेपार्थस्तस्य करण हक्कारो य मर्थप्रथमद्वितीयकुलकरकाले अपराधिनी दडो हक्कारमात्रं तेनैवासौ हृतसर्वस्वमिवात्मानमन्यमानः पुनरपराधस्थाने न प्रवर्त्ततइति तस्य दडनीतिता एव मा इत्यस्य निषेधार्थस्य करण मभिधानं माकार. तृतीयचतुर्थकुलकरकाले महत्पराधे माकारो दड इतरत्रतु पूर्वएवेति तथाधिगधिचेपार्थएव तस्य करण मुच्चारणं धिक्कारः पञ्चमषष्ठसप्तमकुलकरकाले महापराधे धिक्कारो दण्डी जघन्यमध्यमापराधयोस्तु क्रमेणहक्कारमाकाराविति आहच पठमवीयाणपठमा तद्वयचउत्थाणअभिनवावीया पंचमच्छुस्सयस त्तमस्सतइयाअभिणवाओत्ति ॥ तथा परिभाषण परिभाषा ऽपराधिनप्रति कोपाविष्कारेण मायासौ रित्यभिधानं तथा मडलबन्धो मडल मिगित चेत्तत्र बन्धो ना स्मात्प्रदेशा

विमलवाहणेणं कुलकरे सत्तविहा रुक्का उवत्तंगत्ताए हव्वमागच्छिंसु तंजहा मत्तंगयायत्तिंगा चित्तंगाचेव होंतिचित्तरसा मणियंगायत्तिणिष्णा सत्तमगाकप्परुक्काय ॥ १ ॥ सत्तविहा दंरुणीई पस्सत्ता तंजहा हक्कारे मक्कारे धिक्कारे परिज्ञासे मळलिवंधे चारए त्वविच्छेदे । एगमेगरुस्सणं रत्तो चाउरंतचक्खवट्ठिस्स सत्त एगंदि

गने अर्थ आवता हुआ तेकहैछे मत्तंग १ । त्रुटिताग २ । जृगांग ३ । चित्रांग ४ । चित्ररस ५ । मणियांग ६ । अनीयक ७ ॥ यह सात कल्पवृत्त क हिया ॥ १ ॥ सात प्रकारे दडनीति कही ते कहैछे हकार १ । मकार २ । धिक्कार ३ । परिज्ञासा ४ । नरबंध ५ । हाडमां घात ६ । अंगच्छेद ७ ॥



दन्तव्य मित्येवंवचनलक्षणः पुरुषमण्डलपरिचारणलक्षणोवा चारक गुप्तिगृहं छविच्छेदो हस्तपादनासिकादिच्छेदः इय मनन्तरा चतुर्विधा भरतकाले व  
 भूव चतसृणा मन्थाना माद्यादय मृषभकाले अन्येतु भरतकाल इत्यन्ये आहच परिभाषणाउपदमा मडलिबधमिहोदवीयाओ चारगछविच्छेदाई भरह  
 स्सचउव्विहानीइत्ति ॥ १ ॥ चक्ररयणेत्यादि ॥ रत्ननिगद्यतेतत् जातोजातीयदुत्कृष्टमिति वचनात् चक्रादिजातिषु यानि वीर्यत उत्कृष्टानि तानि चक्रर  
 त्नादीनि मन्तव्यानि तत्र चक्रादीनि सप्तै केन्द्रियाणि पृथिवीरूपाणि तेषाञ्च प्रमाणं चक्रकृत्तंदडो तिष्ठिविण्याइंवामतुल्लाइ चम्पंदुहत्तदीह वतीसग्रं  
 लाइअसी ॥ १ ॥ चउरगुलोमणोपुण तस्सइचेवहोइविच्छिणो चउरगुलपमाणा सुवणवरकागणोनेया ॥ २ ॥ सेनापतिः सैन्यनायको गृहपतिः कोष्टा  
 गारनियुक्तः वर्द्धकिः सूत्रधारः पुरोहितः शान्तिकर्मकारीति चतुर्दशा प्येतानि प्रत्येक यत्तसहस्राधिष्ठितानीति ॥ ओगाढति ॥ अवतीर्णा मवगाढावा

यरयणा पस्सत्ता तंजहा चक्करयणे छत्तरयणे चम्परयणे दळरयणे अस्सिरयणे मणिरयणे काकणिरयणे । एग  
 मेगस्सण रत्तो चाउरतचक्कवहिस्स सत्त पचेंदिय रयणा पस्सत्ता तजहा सेणावइरयणे गाहावइरयणे वह  
 इरयणे पुरोहियरयणे इत्थिरयणे आसरयणे हत्थिरयणे । सत्तहिठाणेहि उंगाढं दुस्समं जाणेज्जा तंजहा

एकेक राजा चातुरत चक्रवर्तीने सात एकेंद्री रत्न कहिया ते कहैछे चक्ररत्न १ । छत्ररत्न २ । चमर रत्न ३ । दळरत्न ४ । खड्गरत्न ५ । मणिरत्न ६ ।  
 काकिणी रत्न ७ ॥ एकेक राजा चातुरत चक्रवर्त्तने सात पचेंद्रीरत्न कत्था ते कहैछे सेनापतिरत्न १ । गाथापतिरत्न २ । वार्द्धकिरत्न ३ । पुरोहितरत्न  
 ४ । स्त्रीरत्न ५ । अश्वरत्न ६ । हस्तीरत्न ७ ॥ सात थानके ओगाढ आकरो दुखमाकाल जाणवो ते कहैछे अकाले मेघ वरसे १ । काले न वरसे २ ।

॥ प्रकर्षप्राप्तामिति अकालो ऽवर्षा असाधवो ऽसंयतागुरुषु मातापितृधर्माचार्येषु ॥ मिच्छ ॥ मिथ्याभाव विनयभ्रममित्यर्थः प्रतिपन्न आश्रितः ॥ मणोदुहयन्ति ॥ मनसो मनसावा दुःखिता दुःखितस्व दुःखकारित्वंवा द्रोहकत्ववा एव वयदुहयेत्यपि व्याख्येयमिति ॥ सम्मति ॥ सम्यग्भावं विनयमित्यर्थः एतेच दुःख मासुखमे संसारिणां दुखाय सुखायचेति संसारिप्ररूपणायाह ॥ सत्तेत्यादि ॥ कण्ठ्य ससारिणाञ्च संसरण मायुर्भेदेसति भवतीति तद्दर्शनायाह ॥ सत्तेत्यादि ॥ तत्र ॥ आउयभेदेति ॥ आयुषो जोवितव्यस्य भेदः उपक्रमः आयुर्भेदः सच सप्तविधनिमित्तप्रापितत्वा त्सप्तविधएवेति ॥ अङ्गवसाणगाहा ॥

अकालेवरिसइ कालेणवरिसइ असाधूपुज्जांति साधूणपुज्जांति गुरुहिंजणोमिच्छं पणिवन्तो मणोदुहया वइ दुहया । सत्तहि ठाणेहि मोगाढं सुसम जाणेज्जा तंजहा अकालेणवरिसइ कालेवरिसइ असाधूपुज्जांति साधूपुज्जांति गुरुहिंजणोसंमपणिवन्तो मणोसुहया वइसुहया । सत्तविहा संसारसमावन्नगा जीवा पसत्ता तंजहा नेरइया तिरिस्कजोणिया तिरिस्कजोणीन मणुस्सा मणुस्सीन देवा देवीन । सत्तविहे अउत्तेदे प०

असाधुनी पूजा थाय ३ । साधुनी पूजा नथाय ४ । गुरु साथे लोक मिथ्यात्व प्रतिपन्नछे खोटा चालेछे ५ । मनसा दुखघणां ६ । वचनना दुख घ णा ७ ॥ सात थानके अवगाढ सुखमाकाल जाणवो तेकहैछे अकाले मेघ नवरसे १ । काले मेघवरसे २ । असाधुनी पूजा नथाय ३ । साधुनी पूजा थाय ४ । गुरुसाथे लोक सम्यक् सेवा प्रतिपन्नहोय ५ । मननुं सुखहोय ६ । वचननो सुख होय ७ ॥ सात प्रकारे संसार समापन्न जीव कह्या ते कहैछे नारकी १ । तिर्यच २ । तिर्यचणी ३ । मनुष्य ४ । मनुष्यणी ५ । देव ६ । देवी ७ ॥ सात प्रकारे आज्ञायाना भेद कहिया एतले आयु बांधै

अध्वसान रागस्नेहभयात्मको ध्वसायो निमित्तं दंडकशाशस्त्रादीति समाहारद्वंद्वं स्तत्र सति आयुर्भियतइति समंधः तथा आहारे भोजने धिकेसति  
 तथा वेदना नयनादिपोडा पराघातो गर्त्तपातादिसमुत्थ इहापि समाहारद्वंद्वं तत्र सति तथा स्पर्शं तथाविधभुजङ्गादिसबधिनि सति तथा ॥ आ  
 णापाणुत्ति ॥ उच्छ्वासनिश्वासी निरुद्धा वाश्रित्येति एवच सप्तविध यथा भवति तथा भिद्यते आयुरिति अथवा अध्वसान मायु रूपक्रमकारणमि  
 ति शेषः एव निमित्तमित्यादि यावदाणापाणुत्तिव्याख्येय प्रथमैकवचनान्तत्वा दध्वसानादि पदाना मेव सप्तविधत्वा दायुर्भेदहेतूना सप्तविध यथा भव  
 ति तथा भिद्यते आयुरिति अथचा युर्भेदः सोपक्रमायुषामेव नेतरेषामिति आह यद्येवं भिद्यते आयु स्तत्र कृतनासो कृताभ्यागमश्च स्या त्कथ सब  
 क्षरशत मुपनिवड मायु स्तस्या पान्तराल एव व्यपगमात् कृतनाशो येनच कर्मणा तद्भिद्यते तस्या कृतस्यै वा भ्यागम एवंच मोक्षानाश्वास' तत आ  
 रित्र प्रवज्यादयो दोषाइति आह च कर्मोक्तामिज्जइ अपत्तकालपिजइतओपत्ता अकयागमकयनासो मोक्खानासासओदोसा ॥ १ ॥ अत्रोच्यते यथा  
 वर्षगतभोग्यभक्त मप्यग्निकव्याधितस्या ल्पेनापि कालेनो पभुञ्जानस्य न कृतनाशो नाप्यकृताभ्यागम स्तइ दिहापीत्याह च णहिदीहकालियस्सवि णा  
 सोतस्साणभूइओखिप्पं बहुकालाहारस्सव दुअमग्गियरोगिणोभोगो ॥ सब्बचपएसतया भुज्जइकम्ममणुभागओभइयं तेणावस्साणुभवे केकइनासादओत  
 स्स ॥ २ ॥ किंचिदकालेविफल पाइज्जइपव्वएयकालेण तहकम्मपाइज्जइ कालेणविपच्चएअणं ॥ ३ ॥ जहवादीहारज्जू डज्जइकालेणपुजियाखिप्पं वित  
 ओपडोउसुस्सइ पिंडोभूओउकालेणेत्यादि ॥ ४ ॥ अयस्सा युर्भेदः कथञ्चि क्षर्वजोवाना मस्तौति तानाह ॥ सत्तेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं कण्ठं नवरं सर्वेच ते  
 जीवाश्चेति सर्वजोवाः संसारिमुक्ताइत्यर्थः तथा ॥ अकाइयत्ति ॥ सिद्धाः षड्विधकायाव्यपदेश्यत्वादिति अलेख्याः सिद्धा अयोगिनोवेति अनन्तरं कृष्ण  
 लेख्यादयो जीवभेदा उक्ता स्तत्रच कृष्णलेखः स चारकोप्युत्पद्यते ब्रह्मदत्तवदिति ब्रह्मदत्तस्वरूपाभिधानायाह ॥ बभदत्तेत्यादि ॥ सुगम ब्रह्मदत्त उत्तमपुरुष

इति तदधिकारा दुत्तमपुरुषविशेषस्था नोत्पन्नमन्निवक्तव्यतामाह ॥ मल्लोणमित्यादि मल्लि रर्हन् ॥ अप्सत्तमेत्ति ॥ आत्मना सप्तमं सप्तानां पूरण आ

तंजहा अज्जवसाणनिमित्ते आहारेवेयणापराघाए फासेआणापाणू सत्तविधंनिज्जाएआणं ॥ १ ॥ सत्तविहा  
सत्तजीवा पस्सत्ता तंजहा पुढविकाइया आउतेउवाउवणस्सइतसकाइया अकाइया । अहवा सत्तविहा सत्त  
जीवा पस्सत्ता तंजहा करहलेसा जाव सुक्कलेसा अलेसा । वंनदत्तेणं राया चाउरतचक्कवट्ठी सत्तधणूइं उहं  
उच्चत्तेणं । सत्तयवाससयाइ परमाउ पालइत्ता कालमासेकाल किञ्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइठ्ठाणे नरे  
नेरइयत्ताए उववन्ते । मल्लोणअरहा अप्पसत्तमे मुंहेनवित्ता अगारानं अणगारिय पव्वइए तजहा मल्लोवि

छे तेकहैछे सरागस्त्रेह जयात्मक अध्यवसाय १ । दंड शस्त्रादि निमित्ते २ । घणो आहार करवाथी ३ । शूलादि वेदनाथी ४ । पराघात देखीने  
घात पामे ५ । सर्पादिना स्पर्शथी ६ । सासोस्वासथी स्वासना रोगथी ७ ॥ १ ॥ सात प्रकारे सर्वजीव कह्या ते कहैछे पृथ्वीकाय १ । अकाय २ ।  
तेउकाय ३ । वायुकाय ४ । वनस्पतिकाय ५ । त्रसकाय ६ । अकाय कायारहित सिद्धना जीव ७ ॥ अथवा सात प्रकारे सर्वजीव कहिवा तेकहैछे क  
मलेश्याना यावत् शुक्लेश्याना ७ अलेश्य लेश्यारहित तेसिद्धना जीव ७ ॥ बृहदत्त राजा चातुरंत चक्रवर्त्त सात धनुष ऊचा ऊचपणो थया ॥  
सातसे ७०० वरसनु मोटो आजखो पालीने कालमासे कालकरीने हेठे सातमी नरक पृथ्वीये अप्पइठ्ठाण नामें नरकावासे नारकी पणो ऊपनो ॥ म  
ल्लिनाथ अरिहत पोते सातमा मुडथई गृहस्यपणो मूकी साधुपणो प्रवृज्या लीधी तेकहैछे मल्लो विदेह राजवर कन्या १ । प्रतिबुद्ध इन्द्राकुराजा २ ।

आया सप्तमी यस्या सा वात्मसप्तमी मल्लिशब्दस्य स्त्रीलिङ्गत्वेऽपि अर्हच्छब्दापेक्षया पुनिर्देशः विदेहजनपदराजस्य वरकन्या विदेहराजवरकन्या तथा प्र-  
 तिवृद्धिर्नाम्ना इत्थाकुराजः साकेतनिवासौ २ चन्द्रच्छायोनाम अंगजनपदराजः अम्पानिवासौ ३ रुक्मोनाम कुणालजनपदाधिपतिः आवस्तीवास्त्यः ४  
 यज्ञानाम काशीजनपदराजो वाराणसीनिवासौ ५ अदीनशत्रुर्नाम्ना कुरुदेशनाथो हस्तिनागपुरवास्त्यः ६ जितशत्रुर्नाम पंचालजनपदराजः कांपि-  
 त्यनगरनायक इति आत्मसप्तमत्वज्ञ भगवतः प्रव्रज्याया मभिहितप्रधानपुरुषप्रव्रज्याग्रहणाभ्युपगमापेक्षया वगन्तव्यं यतः प्रव्रजितेन तेप्रव्राजिताः तथा  
 त्रिभिः पुरुषशतैर्बाह्यपर्वदा त्रिभिश्च स्तोत्रशतैरभ्यतरपर्वटासौ परिहृतः प्रव्रजित इति ज्ञातेषु श्रूयत इति उक्तञ्च पासोमल्लोयतिहितिहिंसएहिंति एव  
 मन्येष्वपि विरोधाभासेषु विषयविभागाः सम्भवन्तीति निपुणैर्गवेषणीया शेषं सुगममिति इत्यचेत चरित्त मल्लिजाताध्ययने श्रूयते जम्बूद्वीपे अपरवि-  
 देहे सनिनावतोविजये वीतशोकाया राजधान्या महाबलभिधानो राजा पट्टभिर्त्रालवयस्यै सह प्रव्रज्या प्रतिपेदे तत्र महाबल स्तेर्वयस्यानगरै रूचे  
 यज्ञया स्तप स्तपस्यति तद्यय मपीत्येव प्रतिपन्नेषु तेषु यदा ते तमनुसरन्त शतुर्थादि विदधुः तदा सा वष्टमाद्रिव्यधासो देवच स्त्रीनामगोत्रकर्मा शौचव-  
 धार्हददिवात्मन्यादिभिश्च हेतुभिः स्तोत्रतरनामेति ततस्ते जोगितचया ज्ञाताभिधान विमाने प्रवृत्तरसुरत्वेनोत्पेदिरे ततश्च ज्ञा महाबलो विदेहेषु  
 जनपदेषु मिथिलाया राजधान्या कुम्भकराजस्य प्रभागाद्या देशा स्तोत्रतरत्वेन समजनि मल्लिरितिनामच पितरौ चक्रतु तदन्येतु यथोक्तसाकेतादिषु

देहरायवरकन्नगा पट्टिवृद्धीइस्कागराया चन्द्रच्छाएङ्गाराया रूप्यीकुणालाहिवई संखेकासीराया अदीणसत्तु

चन्द्रच्छाय अंगदेशनो राजा ३ । रूप्यी कुणालानो राजा ४ । अस कासी देशनो राजा ५ । अदीनशत्रु कुरुदेशनो राजा ६ । जितशत्रु पांचालदेशनं

संजज्ञिरे ततोमहोद्देशोनवर्षशतजाता अवधिना तानाभोगयांचकार तत्प्रतियोधनार्थंच गृहोपवने पद्मभृगोपेत भवन तन्मध्यभागेच कनकमयीं सुपिरां  
मस्तकच्छिद्रा पद्मपिधाना स्वप्रतिमा हारयामास तस्यांचा नुदिवस स्वकीयभोजनकवल प्रक्षेपयामास इतद्य साकेते प्रतिबुद्धराजः पद्मावत्यादेव्याका  
रिते नागयज्ञेजलजाटिभास्वरपंचवर्णकुसुमनिर्मित श्रोतामगण्डक दृष्ट्वा अहो अपूर्वभक्तिक मिष्ट मिति विन्मया दमात्य मुवाच दृष्ट क्वापीद् मीदृश मि  
ति सोवोचत् मल्लिविदेहवरराजकन्यासत्कयीदामगण्डापेक्षये दं लक्षाग्रेपि गोभया नवर्त्तते ततो राज्ञावाचि सापुनः कौटुम्भी मन्त्रीजगाद् अन्या ना  
स्ति तादृशी त्युपश्रुत्य सज्जातागुरागोसौ मन्त्रिवरणार्थं दूतं विससर्ज ॥ १ ॥ तथा चम्पाया चन्द्रच्छायराजः कदाचि दर्शनकाभिधानेन श्रावकेन पोतयणि  
जा चम्पावास्तव्येन यात्राप्रतिनिवृत्तेन दिव्यकुण्डलयुग्मे कौगलिकतयो पनीते सति पप्रच्छ यदुत यूय बहुश' समुद्रं लंघयथ तनच किञ्चिदाचर्य्य मपश्य  
ता ऽसा ववांचत् स्वामि तस्या यात्राया समुद्रमध्ये ऽस्माक धर्मचालनार्थं देव' कथि दुपसर्गचकारा ऽविचलने चास्माकं तुष्टेन तेन कुण्डलयुगलद्वितय  
मदायि तदेकं कुम्भकस्या स्माभि रुपनित्ये तेनापि मन्त्रिकन्यायाः कर्णयोः स्वकरेण विन्यासि साच कन्या त्रिमुवनाचर्य्यभूता दृष्टेति श्रुत्वा तथैव दूतं  
प्रेषयामास ॥ तथा श्रावस्त्या रुक्मिराजः सुवाप्तभिधानायाः स्वदुहितु यातुर्मानिकमज्जनमहोत्सवे नगरीचतुष्पथनिवेशितमहामण्डपे विभूत्या मञ्जिता  
तां तत्रैवोपविष्टस्य पितुःपादवन्दनार्थं मागता मकेनियेय तन्नावल्ल मवनोक्तयन् व्याजहार यदुत भोवर्षधर दृष्ट इदृशयोग्यास्याः कस्याच्चिदपि कन्या  
याः मज्जनकमहोत्सवः सोवोचत् देव विदेहवरराजकन्यासत्कमज्जनोत्सवापेक्षया लक्षाग्रेपि रमणीयतया नवर्त्तत इत्युपश्रुत्य तथैव दूतं प्रेषयतिस्मे  
ति ॥ ३ ॥ तथा अन्यदा मल्लिसत्ककुण्डलयुग्मसधि विजघटे तत्सङ्घटनार्थं कुम्भकेन सुवर्णकाराः समादिष्टा स्तथैव कर्तुं तमगक्रुवतच नगर्यां निष्कासिता  
वाराणस्या शंखराज मायिता भणिताश्च ते तेन केनकारणेन कुम्भेन निष्कासिताः यूयते ऽभिद्धु मल्लिकन्यासत्कविघटितकर्णकुण्डलसंधानागकनेनेति

ततः कीदृशी सेतिष्ठेभ्य स्तेभ्यो मल्लिरूप मुपश्रुत्य तथैव दूतं ग्राहिणीत् ॥ ४ ॥ तथा कदाचि न्मल्लया मल्लदित्राभिधानीनुजो भ्राता सभा चित्रकरै शि  
वयामास तत्रैकेन चित्रकरयूना लब्धिविशेषवता यमनिकान्तरितायाः मल्लिकन्यायाः पादांगुष्ठ मुपलभ्य तदनुसारेण मल्लिसदृशमिव तद्रूप निर्वर्तित त  
तय मल्लदित्रकुमारः सांतःपुर शिष्यसभायां प्रविवेश विचित्राणि च चित्ररूपा खल्वलोकयन् मल्लिरूप ददर्श साचा न्मल्लीयमिति मन्यमानो ज्येष्ठायाः भ  
गिन्या गुरुदेवभूताया अह मग्नतो ऽविनयेना यातइति भावयन् परमव्रीडां जगाम तत स्तब्धाचोचित्र मिति न्यवेदय ततो सा वस्थाने तेनेदं लिखि  
तमिति कुपित स्तं वध्यमाज्ञापितवान् चित्रकरश्चेणीतुतं ततो मोचयामास तथापि कुमारः सदृशक छेदयित्वा त निर्विषयमादिदेश सच हस्तिनागपुरे  
ऽदीनश्वराज सुपाश्रितः ततो राजा तन्निर्गमकारण अप्रकृ तेनच तथैव कथिते दूत ग्रहिणीतिस्मेति ॥ ५ ॥ तथा कदाचि चोचाभिधाना परिव्राजिकासल्लि  
भवनं प्रविवेश ताव दान धर्मं शौचधर्मं चोद्गाहयन्तीं मल्लिस्वामिनो निर्जंगा यनिर्जिताचसती सा कुपिता कापिल्यपुरे जितशत्रु सुपाश्रिता भणितच नरप  
तिना चोत्ते बहुत्र त्व सचरिष्यतो ऽद्राचोः काचित् क्वचि दस्म दंतःपुरपुरधिसदृशी सा व्याजहार विदेहवरराजकन्यापेक्षया युष्मत्पुरंध्रयो लक्षांशेपिरूप  
सौभाग्यादिभि गुणै न वर्त्तन्तइतिश्रुत्वा तथैव दूतं विसर्जितवानिति ६ एव मेते पडपि दूताः कुम्भककन्या याचितवंतः सच ता नपहारेण निष्काषितवा  
न् दूतवचनाकर्णना ज्ञातकोपाः पड प्यविक्षेपेण मिथिलां प्रति प्रतस्थुः आगच्छतथता नुपश्रुत्य कुम्भकः सवलवाहनोदेशसीमांगत्वा रणरंगरसिकतया  
तान् प्रतीक्षमाण स्तस्थौ आयातेषु तेषु लग्न मायोधनं बहुत्वा त्परवलस्य निहतकतिपयप्रधानपुरुष मतिनिश्चितसरणतजर्जरितजयकुञ्जरमतिखरचु  
रप्रहारोत्प्लुतवाजिविसरविजिसाखवार मुत्तुगमत्तमतंगजचूर्णितचक्रिचक्र मुलूनकृत्र पतत्यताक कादिशीककातर कुम्भकसैन्य भग मगम ततो सी  
निवृत्त्य रोधक सज्ज. स न्नासामासे तत स्तज्जयोपाय मलभमान माकुलमानस जनक मवलोक्य मल्लो समाश्वासयती समादिदेश यदुत भवते दीयते क

न्यै वं प्रतिपादनपरस्परप्रच्छन्नपुरुषप्रत्येकप्रेक्षणोपायेन पुरिपार्थिवाः पडपि प्रवेश्यन्ता न्त्यैव कृतं प्रवेगितास्ते पूर्वरचितगर्भगृहेषु मल्लिप्रतिमा मवलो  
 क्यच तेसेय मल्लौति मन्यमाना स्तद्रूपयौवनलावण्येषु मूर्च्छिता निर्निमेषदृष्ट्या तामेवा वलोकयन्त स्तिष्ठतिस्र ततो मल्लौ तत्रा जगाम प्रतिमायाः पिधानंचा  
 पससार तत स्तस्याः गंधं सर्पादि मृतकगन्धातिरिक्त उद्भावं तत स्ते नासिकां पिदधुः पराङ्मुखान् तस्यु मल्लौच तानेव मवादीत् किन्तु भोयूय मेवं  
 पिहितनासिकाः पराङ्मुखीभूता स्त ऊचुः गन्धेनाभिभूतत्वात् पुनः सा वोचत् यदि भोदेवानाम्भियाःप्र तिदिनमनोज्ञाहारकवलक्षेपेणै वरूपः पुद्गल  
 परिणामः प्रवर्तते कीदृशः पुनरस्यौ दारिकस्य शरीरस्य खेलवांतपित्तशुक्रशोणितपूयाश्रवस्य दुरन्तोच्छासनिःश्वासस्य पूतिपूरीषपूर्णस्य चयापचयिकस्य  
 शटनपतनविध्वंसनधर्मकस्य परिणामो भविष्यतीति ततो मायूयं मानुष्यककामेषु सजत किंच किंचतयपमृहं जंचतयाभोजयंतपवरंमि बुच्छासमयनिवड  
 देवातसभरहजाइति ॥ १ ॥ भणिते सर्वेषा मुत्पन्नं जातिसारणं अथ मल्लि रवादीत् अहं भो ससारभया ऋत्रजिष्यामि यूय किं करिष्यथ तऊचु वयं म  
 येव ततो मल्लि रवोचत् यद्येवं ततो गच्छत स्वनगरेषु स्थापयतः पुत्रान् राज्येषु ततः प्रादुर्भवतममातिक मिति तेपि तत्तथैव प्रतिपेदिरे तत स्तान्म  
 ल्लौगृहीत्वा कुम्भकराजांतिक माजगाम तस्यतान् पादयोः पातयामास कुम्भकराजोपि तान् महता प्रमोदेना पूजत् स्वस्थानेषुच विससर्जति मल्लौ  
 च सावत्सरिकमहादानानन्तरं पौषशुद्धैकादश्या मष्टमभक्तेना श्विनीनक्षत्रे षभिर्नंदनंदिमित्रादिभिर्नागवंशकुमारै स्तथा बाह्यपर्वदा पुरुषाणां त्रिभिः  
 शतै रभ्यंतरपर्वदाच स्त्रीणा त्रिभिः शतैः सह प्रवव्राज उत्पन्नकोवलश्च तान् प्रव्राजितवानिति एतेच सम्यग्दर्शने सति प्रव्रजिताइति सामान्यतो दर्शनं  
 निरूपणायाह ॥ दंसणेत्यादि ॥ सुगमं नवरं सम्यग्दर्शनं सम्यक्त्वं मिथ्यादर्शनं मिथ्यात्वं सम्यग्मिथ्यादर्शनं मिथ्यमिति एतच्च त्रिविधमपि दर्शनमोहनीयभेदा  
 नां क्षयक्षयोपशमोदयेभ्यो जायते तथाविधरुचिस्वभावचेति चक्षुदर्शनादितु दर्शनावरणीयभेदचतुष्टयस्य यथासम्भवं क्षयोपशमक्षयाभ्या जायते सामा



न्यग्रहणस्वभावंचेति तदेवं अज्ञानसामान्यग्रहणयो दर्शनशब्दवाच्यत्वा दर्शनं सप्तधो ज्ञामिति अनन्तरं केवलदर्शनं मुक्तं तच्च कृद्गत्यावस्थाया अनन्तरं भवतीति कृद्गस्थप्रनिबन्धं सूत्रद्वयं विपर्ययसूत्रच ॥ कृत्तमत्येत्यादि ॥ सुगमं नवरं कृद्गनि आवरणद्वयरूपे अन्तरायेच कर्मणि तिष्ठतीति कृद्गस्थो नुत्पन्नकेवलज्ञानदर्शनः सचासौ वीतरागस्य उपशान्तमोहत्वात् क्षीणमोहत्वाद्वा विगतरागोदयद्वयार्थः ॥ सत्तेति ॥ मोहस्य चया दुपशमाद्वा नाष्टावित्यर्थः अतएवाह ॥ मोहणिज्जवज्जाओत्ति ॥ एतान्येवच जिनो जानातीत्युक्तं सच वर्तमानतीर्थं महावीरइति तत्स्वरूपं तत्प्रतिबद्धविकथाभेदांश्चाह ॥ समणेइत्यादि ॥ सूत्र

कुरुराया जियसत्तूपचालराया । सत्तविहे दंसणे पसत्ते तजहा सम्मदंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छादंसणे चरकुदसणे अचरकुदसणे उहिदंसणे केवलदसणे । तउमत्यवीयरगेणं मोहणिज्जवज्जालं सत्तकम्मपयणीं वेएइ तंजहा नाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं वेयणियं आउय नामं गोय मंतराइय । सत्तछाणाइं तउमत्ये सत्तज्ञावेणं नजाणइ नपासइ तंजहा धम्मस्तिकाय अहमत्थि० आगास० जीवंअसरीरं परमाणुपुग्गलं सद्दं

राजा ७ ॥ सात प्रकारे दर्शनं कह्यो ते कहैछे समकितदर्शन १ । मिथ्यात्वदर्शन २ । सम्यक्तमिथ्यात्व एतले मिश्रदर्शन ३ । चक्षुदर्शन ४ । अचक्षुदर्शन ५ । अवधिदर्शन ६ । केवलदर्शन ७ ॥ कृद्गस्थ वीतराग मोहनी वर्जने सात कर्मनी प्रकृति वेदे ज्ञानावरणी कर्म १ । दर्शनावरणी कर्म २ । वेदनी कर्म ३ । आयुर्कर्म ४ । नाम ५ । गोत्रकर्म ६ । अतराय कर्म ७ ॥ सात ध्यानके कृद्गस्थ सर्व भावेकरी न जाणो नदेखे ते कहैछे धर्मास्तिकाय १ । अधर्मास्तिकाय २ ॥ आकाशास्तिकाय ३ ॥ जीव शरीर रहित ४ ॥ परमाणु पुद्गल ५ ॥ शब्द ६ ॥ गंध ७ ॥ ए सात उपनुखे केवलज्ञान जे

हयं सुगम नवरं ॥ विकहाश्रोति ॥ चतस्रः प्रसिद्धा व्याख्यातास्तेति ॥ मिउकालुणियत्ति ॥ श्रोतृहृदयमार्दवजननान् मृद्वी साचासी कारुणिकीच कारु  
ण्यवती मृदुकारुणिकी पुत्रादिवियोगदुःखदुःखितमात्रादिकृतकारुण्यरसगर्भप्रलापप्रधानेत्यर्थः तद्यथा हापुत्तपुत्तहावत्थ मुक्कामिकहमणाहाह एवंकलु  
णविलावा जलतजलणिज्जपडियत्ति ॥ दर्शनभेदिनी ज्ञानाद्यतिशयतः कुतूथिंकप्रशंसादिरूपा तद्यथा सूक्ष्मयुक्तिशतोपेत सूक्ष्मबुद्धिकरंपर सूक्ष्मार्थदर्शि  
भिर्दृष्ट श्रोतव्यं मोक्षशासन इत्यादि ॥ १ ॥ एवहि श्रोतृणां तदनुरागात् सम्यग्दर्शनभेदः स्यादिति चारित्रभेदिनी न सम्भवती दानींमहाव्रतानि साधूनां  
प्रमादबहुलत्वा दतिचारप्रचुरत्वा दतिचारशोधकाचार्यतत्कारकसाधुशुद्धीना मभावादिति ज्ञानदर्शनाभ्या तीर्थं प्रवर्त्ततइति ज्ञानदर्शनकर्त्तव्येष्वेव यत्नोवि  
धेयइति भणितच सांहीयनत्थिनविदि तकरेंतानवियकेइदोसति तित्थचणाणदंसण निज्जवगाचेववोच्छिन्नत्ति ॥ १ ॥ इत्यादि अनयाहि प्रतिपन्नचारित्रस्या

गधं । एयाणिचेव उप्पन्ननाणे जाव जाणइ पासइ तंजहा धम्मत्थिकायं जाव गधं समणेज्जगवंमहावीरे वइ  
रोसज्जनारायसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिए सत्तरयणीने उहुउच्चत्तेणहोत्था । सत्तविकहानं पसत्तानं तंजहा  
इत्थिकहा जत्तकहा देसकहा रायकहा मिउकालुणिया दंसणजेयणी चरित्तजेयणी । आयरियउवज्जायस्सणं

हने यावत् ते जाणे देखे ते कहैछे धर्मास्तिकाय यावत् गंध ॥ श्रमण जगवंत महावीरस्वामी वज्रच्छषज्जनारच संघयणी समचतुरस्त्र संस्थान स  
हित सात हात ऊचा ऊचपणे थया ॥ सात विकथा कही ते कहैछे स्त्री कथा १ ॥ जत्तकथा २ ॥ देशकथा ३ ॥ राजकथा ४ ॥ मृदु कारुणी स्त्री पु  
त्रादि वियोगे हा पुत्र हा वत्स ५ ॥ समकितनी जेदनहारी ६ ॥ चारित्रना जेदनी करणहारी ७ ॥ आचार्य उपाध्यायना गच्छने विषे सात अति

पितृहेमस्य मृपजायते किंपुन स्तदभिसुखस्येति चारिभेदिनौति विकथासुच वर्त्तमाना न्साधू नाचार्या निषेधयंति सातिशयत्वा त्तेषामिति तदतिशय  
 प्रतिपादनायाह ॥ आयरिएत्यादि ॥ पचस्थानके व्याख्यातप्रायं तथापि किञ्चिदुच्यते आचार्योपाध्यायस्य निगृह्य निगृह्या तर्भूतकारितार्थत्वेनपादधूत्याः  
 प्रसरत्या निगृहं कारयित्वा प्रस्फोटयन् पादप्रोक्तनेन वैयाहत्या करादिना प्रस्फोटनं कारयन् प्रमार्जयन् प्रमार्जनं कारयन् आज्ञाभतिक्रामतीति शेषसाधय  
 उपायया एहि रिदं कर्त्तव्यं त्वाचार्यादे रतिशय एवमित्यादिने दंसूचितं आयरियउवज्ज्ञाए अंतोउवस्सयस्स पासवणं विगिंचेमाणेवा विसोहेमाणेवा  
 णाद्रक्कमइ १ । आयरियउवज्ज्ञाए पभू इच्छावेयावडियं करेज्जा इच्छा नोकरेज्जा ३ आयरियउवज्ज्ञाए अंतोउवस्सयस्स एगरायवा दुरायवा सवसमाणेनाइ  
 क्कमइ ४ । आयरियउवज्ज्ञाए वाहिउवस्सयस्स एगरायवा दुरायवा सवसमाणे नाइक्कमइ ५ । एत द्वाख्यातमेवेति इदं अधिकं उपकरणातिशेषः शेषसाधुभ्यः  
 सकाशात् प्रधानोज्ज्वलवस्ताद्युपकरणतः उक्तं च आयरियगिलाणाण मइला २ पुणोविधोयंति माहुगुरूणअवणी लोगंमिअजीरणंदयरेत्ति ॥ १ ॥ ग्लानेइत्यर्थः  
 भक्तपानातिशेषः पूज्यतरभक्तपानतेति उक्तं च कलमोयणाउपयसा परिहाणीजायकोइवज्झज्जी तत्थउमिउप्पतर जत्थयजंअच्चियंदोसु ॥ १ ॥ कोइवइज्झ

गणंसि सत्त इइसेसा पस्सत्ता तंजहा आयरियउवज्ज्ञाए अंतोउवस्सगस्स पाए निगज्जिय २ पप्फोहेमाणे  
 वा पमज्जेमाणेवा नाइक्कमइ एवंजहा पंचठाणे जाव वाहिउवस्सगस्स एगरायवा दुरायवा वसमाणे नाइ

शेष कत्या तेकहैछे आचार्य उपाध्यायना गच्छमा उपासरा माहि गुरुना पग ग्रहीने ग्रहीने पखोहे पुंजे ते आज्ञा अतिक्रमे नही एम जिम पांच  
 मे ठाणे यावत् बाहिर उपासराथी एकरात्रि अथवा बेरात्रि बसतो अतिक्रमे नथी ॥ गुरुना उपकरण धोतो अतिशेष घणी साचवतो ज्ञात पाणी

जित्ति कोइवजाउलयदोसुत्ति ॥ क्षेत्रकालयोरिति गुणाश्चैते सुत्तत्थयिरीकरणं विणओ गुरुपूयसेयवहुमाणो दाणवद्रसइवुद्धी बुद्धीवलवडणंचेवत्ति ॥ १ ॥  
 एतेवा चार्यातिशयाः सयमोपकारायैव विधीयन्ते न रागादिनेति सयम तद्विपक्षभूत मसयमंचा संयमभेदभूतारभादिवसच सविपक्षं प्रतिपादयन् सूत्रा  
 एक सातिदेशमाह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ सुगम नवरं सयमः पृथिव्यादिविषयेभ्यः संवट्टपरितापोपद्रवणेभ्य उपरमः ॥ अजीवकायसयमेत्ति ॥ अजीवकाया  
 ना पुस्तकादौना ग्रहणपरिभोगोपरमो सयमस्तु अनुपरमआरभादयो ऽसयमभेदा स्तल्लक्षणमिदं प्रागभिहित आरंभोउद्भवओ परितावकरोभवेस  
 मारभो सरभोसकण्यो सुडनयाणंतुसब्बेसिंति ॥ १ ॥ नत्वारश्चादयो ऽपद्रावनपरितापादिरूपा उक्ता स्तेचा जीवकायाना मचेतनतया न युक्ता स्तदयो

कामइ उवगरणाइसेसे जत्तपाणाइसेसे । सत्तविहे संयमे पस्सत्ते तजहा पुढविकाइयसंयमे जाव तसकाइय  
 संयमे अजीवकायसयमे । सत्तविहे असंयमे पस्सत्ते तंजहा पुढविकाइयअसंयमे जाव तसकाइयअसंयमे  
 अजीवकायअसंयमे । सत्तविहे आरजे पस्सत्ते तंजहा पुढविकाइयआरजे जाव अजीवकायआरजे । एवमणा  
 रजेवि । एवसारजेवि । एवमसारजेवि । एवसमारजेवि । एवअसमारजेवि । जाव अजीवकायअसमारजेवि

अतिशेष घणा आणी देतो ॥ सात प्रकारे सयम कह्यो ते कहैछे पृथ्वीकायनो संयम यावत् त्रसकायनो संयम अजीव कायनो संयम ॥ सात प्र  
 कारे असयम कह्यो ते कहैछे पृथ्वीकायनो असंयम यावत् त्रसकायनो असयम अजीवकायनो असंयम ॥ सात प्रकारे आरंज कह्यो ते कहैछे पृथ्वी  
 कायनो आरज यावत् अजीवकायनो आरंज ॥ इम आणारंज । एम समारभ । एम असमारंज । यावत् अजीवकाय असमारंज ॥ अथ जगवंत अत

गा दजीवकायानारम्भादयो पौ त्यत्रोच्यते अजीवेषु पुस्तकादिषु ये समाश्रिताः जीवा स्तदपेक्षया अजीवकायप्राधान्या दजीवकायारम्भादयो न विरु-  
 द्धान्तइति अनन्तर संयमादय उक्ता स्तेच जीवविषयाइति जीवविशेषान् स्थितितः प्रतिपादयन् सूत्रचतुष्टयमाह ॥ अहेत्यादि ॥ सूत्रसिद्ध नवर अथेति प-  
 रप्रत्यर्थं भदतेति गुर्वामत्रणं ॥ अयसौति ॥ प्रतसौकुसुभोलहारालकः कगूविशेषः सनस्वक्पधानो धान्यविशेषः सर्षपः सिद्धार्थका मूलक शाकविशेष-  
 स्तस्य बीजानि ककारलोपसंधिभ्या ॥ मूलावीयन्ति ॥ प्रतिपादितमिति शेषाणा पर्याया लोकरूढितो ज्ञेयाइति यावद्गृहणात् ॥ सचाउत्ताण मत्साउ-  
 त्ताण उल्लिख्य लठियाणं मुद्दियाणति ॥ द्रष्टव्य व्याख्या ऽस्य प्रागिवेति पुन र्यावत्कारणात् पविड सइविड सप्रसेवीए अवीए भवइ तेण परंति दृश्य ॥ वा-  
 दरआउकाइयाणति ॥ सूक्ष्माणां त्वतर्मुहूर्त्तमेवेति एवमुत्तरत्रापि विशेषणफल यथासभव स्वधिया योजनीयं अनन्तर नारका उक्ताः इति स्थितिशरीरादि

अहजते अयसिकुसुभकोद्वकगुरालगवराकोद्वसग्गासणसरिसवमूलगवीयाणं एणसिणं धन्नाणं कोठाउत्ताणं  
 जाव पिहियाणं केवइयकाल जोणी संचिठइ जहन्नेण मंतोमुज्जत्त मुक्कोसेणं सत्तसंवच्छराइं तेणपर जोणी  
 पमिलायइ जाव जोणीवुच्छेए पन्नत्ते । वायरआउकाइयाण सत्तवाससहस्साइ ठिई पस्सत्ता तच्चाएण वालु

सी धान कुसुभ कोद्वक कांग राल सण सरिसव मूलक शाकविशेष तेहना बीज एह धान्यने कोठारमा उतास्या पालामांघात्या यावत् ढांक्या के-  
 तला काल लगे योनि रह जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट सात वरस तिवारपद्धी योनि स्नान थाय यावत् योनि विच्छेद थाय ॥ वादर अप्कायने उत्कृ-  
 ष्ठी सातहजार वरसनी स्थिति कह्यी ॥ त्रीजी वालुकप्रभा पृथ्वीने धिषे उत्कृष्टो नारकीनो सात सागरोपमनो आऊसो कह्यो ॥ चौथी पंकप्रभा

भि स्तत्ताधर्म्या देवानां वक्तव्यता मभिधित्सुः सूत्रपंचमाह ॥ सक्कस्सेत्यादि ॥ सुगमश्चायं नवरं ॥ वरुणस्समहारस्सोत्ति ॥ लोकपालस्य पश्चिमदिग्वात्तिनः ॥  
सोमस्य पूर्वदिग्लोकपालस्य यमस्य दक्षिणदिग्लोकपालस्य अनन्तरदेवानां अधिकार उक्तो देवावासाश्च द्वीपसमुद्रादिति तदर्थं ॥ नंदीसरेत्यादि ॥ सूत्र द्वयं

यप्पन्नाएपुठवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । चउत्थीएणं पंकप्पन्नाए पुठवीए जहन्तेणं  
नेरइयाणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । सक्कस्सण देविदस्स देवरन्तो वरुणस्स महारन्तो सत्तग्गमहिंसीणं  
पस्सत्ताणं । ईसाणस्सण देविदस्स देवरस्सो सोमस्स महारस्सोसत्तग्गमहिंसीणं प० । ईसाणस्सणं देविंदस्स  
देवरस्सो जमस्स महारस्सो सत्तग्गमहिंसीणं पस्सत्ताणं । ईसाणस्सणं देविदस्स देवरस्सो अण्णितरपरिसाए दे  
वाणं सत्त पल्लिवमाइं ठिई प० सक्कस्सणं देविदस्स देवरस्सो अण्णमहिंसीणं देवीणं सत्तपल्लिवमाइं ठिई  
प० । सोहम्मेकप्पे परिग्गहियाणं देवीणं उक्कोसेणं सत्तपल्लिवमाइं ठिई पस्सत्ता । सारस्सयमाइच्चाणं सत्त

पृथ्वीने विपे जघन्य नारकीनुं सात सागरोपमनुं आऊखो कह्यो ॥ शक्रदेवेद्र देवतानो राजा वरुण महाराजाने सात अग्रमहिषी कही ॥ ईशाने  
द्र देवतानो राजा तेहना सोम महाराजाने सात अग्रमहिषी कही ॥ ईशानेद्र देवेद्र देवताना राजा यम महाराजाने सात अग्रमहिषी कही ॥  
ईशानेद्र देवेद्र देवताना राजानी अन्यंतर पर्वदाना देवताने सात पल्योपमनी स्थिति कही ॥ शक्र देवेद्र देवतानो राजानी अग्रमहिषी देवीनी  
सात पल्योपमनी स्थिति कही ॥ सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीनी उत्कृष्टी सात पल्योपमनी स्थिति कही ॥ सारस्वत आदित्य देवने सात दे

देवा देवसया पस्यता । गद्गतीयतुसियाणंदेवाणं सत्तदेवा सत्तदेवसहस्सा पस्यता । सणंकुमारेकप्पे उक्को  
 सेण देवाणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । माहिदेकप्पे उक्कोसेणं देवाणं साडरेगाइं सत्तसागरोवमाइं ठिई प०  
 वंजलोएकप्पे जहन्तेणं देवाणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । वंजलोयलंतएसुणकप्पेसु विमाणा सत्तजोयण  
 सयाइं उहंउच्चत्तेणं प० । जवणवासीणदेवाणं जवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं सत्तरयणीत्तं उहंउच्चत्तेण ।  
 एवंवाणमंतराणं । एवजोइसियाणं । सोहम्मीसाणेसुणंकप्पेसु देवाणं जवधारणिज्जगा सरीरा सत्तरयणीत्तं  
 उहंउच्चत्तेण पस्यता । नदीसरवरदीवरसणं दीवरस अतोसत्तदीवा पस्यता तंजहा जवुद्दीवे धायइस्वळे पुरक

वता सातसे देवता कह्या ॥ गर्दतीय तुपित देवताने सातदेवता सातहजार देवतानु परिवार कह्यो ॥ सनत्कुमार देवलोके उत्कृष्टो देवतानुं सात  
 सागरोपमनुं आऊखो कह्यो ॥ माहेन्द्र चौथे देवलोके उत्कृष्टी भाक्केरो सात सागरोपमनी स्थिति कही ॥ ब्रह्म पाचमे देवलोके जघन्य देवतानी  
 सात सागरोपमनी स्थिति कही ॥ ब्रह्म लातक देवलोके विमान सातसे योजन उचा उंचपणे कह्या ॥ जवनपती देवतानी भवधारणीय शरीरउ  
 त्कृष्टो सातहात ऊचा ऊंचपणे कह्या ॥ तेमजवाणव्यंतरना । ज्योतिपीना ॥ सौधर्धईशानदेवलोके जवधारणीयशरीर सातहात उचो उचपणे कह्यो ॥  
 नंदीश्वर वर नामा द्वीपने माहि सात द्वीप कह्या ते कहैछे जवूद्वीप १ । घातकीरारु २ । पुष्करवर द्वीप ३ । वरुणवर द्वीप ४ । क्षीरवरद्वीप ५ ।  
 घृतवरद्वीप ६ । क्षोदवरद्वीप ७ ॥ नंदीश्वर द्वीपमाहि उरा सात समुद्र कहिया ते कहैछे लवणसमुद्र १ । कालोदधि २ । पुष्करोदधि ३ । वरुणो

कण्ठं एतेच प्रदेशश्रेणिसमूहात्मकचेत्राधाराः श्रेण्याच स्थिताइति श्रेणिप्ररूपणायाह ॥ सत्तसेढीत्यादि ॥ श्रेणयः प्रदेशपंतयः ऋज्वी सरला सा चासा वाय  
ताच दीर्घा ऋज्वायता स्थापना ॥—॥ एगओ वंका ॥ एकस्या दिशि वक्रा स्थापना ॥ ॥ दुहओवंका ॥ उभयतोवक्रा स्थापना ॥—॥ एगओखहा एकस्यां  
दिश्यकुशाकारा ॥ दुहओखहा ॥ उभयतीं कुशाकारा ॥ ८ ॥ चक्रवाला वलयाकृति ॥ ० ॥ अर्द्धचक्रवाला अर्द्धवलयाकारेति एताश्चै कतो वक्राद्या लोकपर्यन्त  
प्रदेशापेक्षाः सभाव्यन्ते चक्रवालार्द्धचक्रवालादिना गतिविशेषेण भ्रमणयुक्तानि दर्पितत्वात् देवसैन्यानि भवतीति तद्व्यतिपादनाय ॥ चमरेत्यादि ॥ प्रकरण  
सुगमन्नवरपौठानीक मश्वसैन्य नाट्यानीकनक्तकसमूहो गन्धर्वानीकं गायनसमूहः ॥ एवजहापचठाणएत्ति ॥ अतिदेशात् सोमे आसराया पीठाणियाहि

रवरे वारुणिवरे खीरवरे घयवरे रकोयवरे । नंदीसरवरस्सणदीवरस्स अतो सत्तसमुद्दा पस्सत्ता तंजहा लवणे  
कालोए पुस्करोदे वरुणोदे खीरोदे घनंदे खोए । सत्तसेढीनं प० तं० उज्जुअयायया एगनं वक्रा दुहनं वक्रा  
एगनं खहा दुहनं खहा चक्रवाला अर्द्धचक्रवाला । चमरस्सणं असुरिदस्स असुरकुमाररन्तो सत्त अणिया  
सत्त अणियाहिवई पस्सत्ता तजहा पायत्ताणिए पीठाणिए कुंजराणिए महिसाणिए रहाणिए नहाणिए गंध

दधि ४ । क्षीरोदधि ५ । घृतोदधि ६ । इक्षोदधि ७ ॥ सात श्रेणि कही ते कहैछे आकाशनी श्रेणि ऋजु सरलालावी श्रेणि १ । एक पासे वांकी श्रे  
णि २ । वेपासे वांकी श्रेणि ३ । एकपासे अकुशने आकारे ४ । वेपासे अंकुशने अकारे ५ । चक्रवाल ते वलयने आकारे ६ । अर्द्ध वलयाकार श्रेणि ७ ॥  
चमर असुरेंद्र असुरकुमारना राजाने सात अनीक कटक सात अनीकना स्वामी कह्या ते कहैछे पदात्यनीक १ । पीठानीक २ । कुंजरानीक ३ ।



१० ॥ वई २ वेकुंथूहथिरोया कुजराणियाहिवई ३ लोहियक्खे महिसाणियाहिवई ४ इतिद्रष्टव्यं एव सुत्तरसूत्रेष्वपि तथा धरणस्यैव सकलदाक्षिणात्यानां भव

४ ॥ छाणिए । दुमेपायत्ताणियाहिवई एवं जहा पंचछाणे जाव किन्नरे रहाणियाहिवई रिठे नहाणियाहिवई  
गीयरई गंधवाणियाहिवई । वलिस्सण वइरोयणिदस्स वइरोयणरस्सो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई  
पस्सत्ता तजहा पायत्ताणिय जाव गधवाणिय । महदुमे पायत्ताणियाहिवई जाव किपुरिसे रहाणियाहि  
वई महारिठे णहाणियाहिवई गीयजसे गधवाणियाहिवई । धरणस्सण नागकुमारिदस्स नागकुमाररस्सो  
सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई पस्सत्ता तजहा पायत्ताणिए जाव गधवाणिए । रुद्धसेणे पायत्ताणियाहि  
वई जाव आणदे रहाणियाहिवई गहणे नहाणियाहिवई तेतले गधवाणियाहिवई । जूयाणदस्स सत्त अ

महिषानीक ४ । रथानीक ५ । नाटकनो अनीक ६ । गंधर्वानीक ७ ॥ द्रुम पदात्यनीकाधिपती १ । एम जिम पाचमा ठाणामा कट्थो तिम यावत्  
किन्नर रथानीकनो स्वामी ॥ रिष्ट नाट्यानीकनो स्वामी ॥ गीतरति गधर्वानीकनो स्वामी ॥ वलि वैरोचनेद्र ने सात अनीक कहिया ते कहैछे  
पादात्यनीक यावत् गधर्वानीक ७ ॥ महाद्रुम पदात्यनीकनो स्वामी यावत् किपुरिस रथानीकनो स्वामी ॥ महारिष्ट नाट्यानीकनो स्वामी ॥ गी  
तयश गधर्वानीकनो स्वामी ७ ॥ धरण नागकुमारनो इद्र तेहनेसात अनीक सात अनीकना स्वामी कट्था ते कहैछे पदात्यनीक यावत् गधर्वानीक ॥  
रुद्र पदात्यनीकनो स्वामी यावत् आनद रथानीकनो स्वामी ॥ नंद नाट्यानीकनो स्वामी ६ ॥ तेतलि गधर्वानीकनो स्वामीछे ७ ॥ जूतानंदने सात

णिया सत्त अणियाहिवई पसत्ता तंजहा पायत्ताणिए जाव गंधब्बाणिए । दस्के पायत्ताणियाहिवई जाव  
 णदुत्तरे रहाणियाहिवई रई नहाणियाहिवई माणसे गंधब्बाणियाहिवई । एवं जाव घोस महाघोसाणं नेयहं  
 सक्कस्सण देविदस्स देवरस्सो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए जाव गंधब्बाणिए ।  
 हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई जाव माठरे रहाणियाहिवई सेए नहाणियाहिवई तुंबरु गंधब्बाणियाहिवई  
 डंसाणस्सण देविदस्स देवरस्सो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई पसत्ता तजहा पायत्ताणिए जाव गंधब्बा  
 णिए । लज्जपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई जाव महासेए नहाणियाहिवई णारए गंधब्बाणियाहिवई । सेसंजहा

अनीक सात अनीकना राजा कह्या तेकहैछे पदात्यनीक यावत् गंधर्वानीक ॥ दत्त पदात्यनीकनो स्वामी १ । यावत् दुस्तर रथानीकनो स्वामी ५ ।  
 रती नाट्यानीकनो स्वामी ६ । मानस गंधर्वानीकनो स्वामी ७ ॥ एम यावत् घोष महाघोषने जाणवो ॥ शक्र देवेंद्र देवताना राजाने सात अनीक  
 सात अनीकना स्वामी कहिया तेकहैछे पदात्यनीक यावत् गंधर्वानीक ७ ॥ हरिणेगमेसी पदात्यनीकनो स्वामी १ । यावत् माठर रथानीकनो स्वा  
 मी ५ । खेत नाट्यानीकनो स्वामी ६ । तुंबरु गंधर्वानीकनो स्वामी ७ ॥ ईशानेंद्र देवेंद्र देवताना राजाने सात अनीक सात अनीकना अधिपती  
 कह्या तेकहैछे पदात्यनीक १ । यावत् गंधर्वानीक गायन समूह ७ ॥ लघुपराक्रम पदात्यनीकाधिपती १ । यावत् महासेन नाट्यानीक स्वामी ६ ।  
 रत गंधर्वानीकनो स्वामी ७ ॥ शेष जिम पांचमें ठाणे कह्यो तिमज एम जिम अच्युतेद्रने ॥ चमर असुरेंद्र असुर राजाने दुम पदात्यनीकाधिपती

॥ नपतींद्राणां सेनासेनाधिपतयः श्रीदीयानान्तु भूतानन्दस्येवेति ॥ कच्छति ॥ समूहो यथा धरणस्य तथा सर्वेषां भवनपती न्द्राणां महाघोषान्तानां केव

पचठाणे एवं जाव अञ्जुअस्सेति नेयव्वं । चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकुमाररस्सो दुमस्स पायत्ताणियाहि  
वइस्स सत्त कच्छानं पस्सत्तानं तजहा पढमाकच्छा जाव सत्तमाकच्छा । चमरस्सण असुरिंदस्स असुरकु  
माररस्सो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स पढमाए कच्छाए चउसठिदेवसहरस्सा पस्सत्ता । जावइया पढमाकच्छा  
तद्विगुणा दुच्चा कच्छा तद्विगुणा तच्चाकच्छा एव जाव जावइया ठठाकच्छा तद्विगुणा सत्तमाकच्छा । एवं  
वल्लिस्सवि नवर महद्दुमे सठिदेवसाहस्सिनं सेसं तचेव । धरणस्सएवंचेव नवर मठावीसं देवसहरसा सेस  
तचेव । जहाधरणस्स एवं जाव महाघोसस्स नवरं पायत्ताणियाहिवइ अन्तेते पुव्वज्जणिया । सक्कस्सणदेवि

तेहने सात कच्छ कटकना जुदाजुदा समुदाय टोला तेकहैछे प्रथम कच्छ १ । यावत्सातसी कच्छ ॥ चमर असुरेंद्र असुरकुमारना राजाने दुम नामा  
पदात्यनीकनो स्वामी तेहने पहिली कच्छने विषे चौसठहजार देवता कट्टा जेवनी पहली कच्छछे तेहथी द्विगुणा बीजी कच्छछे । जेवनी बीजी क  
च्छछे तेहथी त्रिगुणी त्रीजीकच्छ । इम जेवनी छठी कच्छछे तेहथी बेगुणी सातमी कच्छछे ॥ एम वलिने पिण विंशेप महादुमने साठहजार देवता  
शेप तिमज धरणने इमज एतलो विंशेप अष्टावीस हजार देवता शेप तिमज । जिम धरणने तिम यावत् घोस महाघोसने एतलो विंशेप पदा  
त्यनीक स्वामी अन्यते पूर्वं कह्यो तिमज ॥ शक्र देवेंद्र देवताना राजाने हरिगोगमसी पदात्यनीक तेहने सात कच्छछे ते कहैछे प्रथम कच्छ यावत्

लं पादातानीकाधिपतयो ये ज्ञेया स्तेच पूर्वं मनंतरसूत्रे भणिता ॥ नाणत्तंति ॥ शक्रादीना मानतप्राणतेंद्रांताना मेकांतरितानां हरिणैगमेपी पादाता  
नीकाधिपति रीशानादीना मारणा च्युतेन्द्रान्ताना मेकांतरितानां लघुपराक्रमदति ॥ देवेत्यादि ॥ देवाः प्रथमकच्छासवधिनो ऽनया गायया ऽवगत  
व्या ॥ चउरासीगाहा ॥ चतुरसौत्यादीनि पदानि सौधर्मादिषु क्रमेण योजनीयानि नवरं विंशतिपद मानतप्राणतयो र्योजनीयं तयोर्हि प्राणताभिधा  
नस्यै द्रस्यैकत्वात् ॥ दसेति ॥ पद त्वारणाच्युतयो र्योजनीय अच्युताभिधानस्यै द्रस्यै कत्वादिति सकलमिदं मनन्तरोदित वचनप्रतिपाद्य मिति वचनभेदा

दस्स देवरसो हरिणैगमेसिस्स सत्तकच्छान पस्सत्तानं तंजहा पढमाकच्छा एवं जहा चमरस्स तहा जाव अच्यु  
यस्स नाणत्त पायत्ताणियाहिउईण तेपुव्वज्जणिया । देवपरिमाण मिमं सक्कस्स चउरासीइदेवसहस्सा । ईसाणस्स  
असीइदेवसहस्साइ देवा इमाए गाहाए अणुगतत्वा । चउरासीइअसीई वावत्तरिसत्तरीयसठ्ठीय पन्नाचत्ता  
लीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ १ ॥ जाव अच्युयस्स लज्जपरक्कमस्स दस देवसहस्सा जावइया वठ्ठाकच्छा

सातमी कच्छ ॥ एम यावत् चमरने तिम यावत् अच्युतने ॥ विशेष पदात्यनीकनो स्वामी तेहने पूर्वे कह्यो तिम । देवतानो प्रमाण शक्रने चौरा  
सी हजार देवता । ईशानेंद्रने अस्सी हजार देवता । एम सर्वने एह गाथायी कहवो शक्रेद्रने चौरासी हजार । ईशानेद्रने अस्सीहजार । सनत्कु  
मारने बहत्तरहजार । माहेद्रने सत्तरहजार । ब्रह्मेद्रने साठहजार । लातकेद्रने पचासहजार । शुक्रेद्रने चालीसहजार । सहस्रारेद्रने तीसहजार देव  
ता । आनतप्राणत ये लोकनो एक इंद्र तेहने बीसहजार देवता । आरणा अच्युतनो एक इद्र तेहने दसहजार देवता ॥ १ ॥ यावत् अच्युतेद्र लगे

नाह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ सप्तविधो वचनस्य भाषणस्य विकल्पो भेदो वचनविकल्पः प्रज्ञप्तस्तद्यथा आच्छेदार्थत्वा दीपलपन मालापौ नजः कुत्सार्थत्वा दशौलेत्यादिवत् कुत्सितआलापो ऽनालापइति उल्लापः काक्कावर्णन मुल्लापइतिवचनात् सएव कुत्सितो ऽनुल्लापः कचिवत् पुनरनुल्लापइति पाठस्तत्रा नुल्लापः पौन पुन्यभाषण अनुल्लापामुहुर्भाषेतिवचनात् संल्लापः परस्परभाषण सल्लापोभाषणमिथइतिवचनात् प्रल्लापो निरर्थकवचन प्रल्लापोऽनर्थकवचइति वचनात् सएव विविधो विप्रल्लापइति एतेषां वचनविकल्पानां मध्ये केचि द्विकल्पा विनयार्था अपि स्यु रिति विनयभेदप्रतिपादनाय आह ॥ सत्तविहेत्यादि ॥ सप्तविधां विनोयते अष्टप्रकारकर्मानेनेति विनयः प्रज्ञप्तस्तद्यथा ज्ञान आभिनिवोधिकादिपचधा तदेवविनयो ज्ञानविनयो ज्ञानस्यवा विनयो भक्त्यादि करणं ज्ञानविनयः उक्तां च भक्ती १ तद्वद्वहमाणी २ तद्विद्वत्याणसम्भवावणया ३ विहिगद्वण ४ भासोविद्य ५ एसोविण्मोजिणाभिहिओ

तद्विगुणा सप्तमाकच्छा । सत्तविहे वयणविकल्पे पस्यते तंजहा शालावे शणालावे उल्लावे शणुल्लावे संलावे पलावे विप्पलावे । सत्तविहे विणए प० त० नाणविणए दसणविणए चरित्तविणए मणविणए वड्ढविणए

कह्वो ॥ लघुपराक्रमने दशहजार देवता ॥ यावत् जेतली छठी कच्छा तेहथी बेगुणी सातमी कच्छा ॥ सात प्रकारे वचननो विकल्प कह्यो तेकह्वे छे थोळो वोलवो ते आलाप १ । कुत्सित वोलवो ते अनालाप २ । काकुवचन ते उल्लाप ३ । तेज माठी उल्लाप ते अनुल्लाप ४ । माहोमाहि वो लवो ते सल्लाप ५ । प्रल्लाप जे निरर्थक वचन ६ । विरुद्ध वोलवो ते विप्रल्लाप ७ ॥ सात प्रकारे विनय कह्यो तेकह्वे छे ज्ञाननो विनय १ । दर्शन नो विनय २ । चारित्रनो विनय ३ । मनविनय जलोमन ४ । वचननो विनय जलोवचन ५ । कायविनय ६ । लोकोपचार विनय ते राजा ब्राह्मणा

॥ १ ॥ दर्शनं सम्यक्तं तदेव विनयो दर्शनविनयो दर्शनस्यवा तद्व्यतिरेका ददर्शनं गुणाधिकानां शुश्रूषणा अनाशातनारूपो विनयो दर्शनविनय उ  
क्तच सूस्सूषणाअणासा यणायविणओउदंसणेदुविहो दसणगुणाहिणसु कज्जइसुस्सूषणाविणओ ॥ १ ॥ सकार १ भुङ्गाणे २ समाणा ३ सणअभिगा  
होतहय ४ आसणमणुप्पयाणं ५ कोकम्म ६ अंजलिगहोय ७ ॥ २ इतस्सणुगच्छणया ८ ठियस्सतहपज्जुवासणाभणिया ९ गच्छताणव्वयण १० एसोसूस्स  
सणाविणओ ॥ ३ ॥ इहच सत्कारः स्तवनवन्दनादि, अभ्युत्थानं विनयार्हस्य दर्शना देवा सनत्यजनं सन्मानो वस्त्रपात्रादिपूजन आसनाभिग्रहः पुनस्तिष्ठ  
त आदरेण आसनानयनपूर्वकं मुपविशता त्रेति भणन आसनानुप्रदानतु आसनस्य स्थानात् स्थानान्तरसचारण कृतिकर्म द्वादशावर्त्तवदनक शेष प्रक  
टमिति उचितक्रियाकरणरूपो य दर्शने शुश्रूषाविनयो ऽनाशातनाविनय स्वनुचितक्रियाविनिवृत्तिरूपो यं पचदशविधः आहच तित्यगर १ धम्म २  
आयरिय ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ सवे ८ संभोगिय ९ किरियाए १० मइनाणाइणयतहेव १५ ॥ १ ॥ संभोगिका एकसमाचारीका, क्रिया आ  
स्तिकता अत्रभावना तोयंकराणा मनायातनाया तौर्धंकरप्रज्ञप्तधर्मस्या नाशातनाया वत्तितथ मित्येव सवत्र द्रष्टव्यमिति कायव्वापुणभत्तो बहुमाणो  
तहयवस्सवाओय अरहंतमाइयाण केवलनाणावसाणाण ॥ १ ॥ उक्तो दर्शनविनयः साम्प्रतं चारित्रविनय उच्यते तत्र चारित्रमेव विनय चारित्रस्यवा  
अधानादिरूपो विनय चारित्रविनयः आहच सामाइयादिचरण स्ससहहणयातहेवकायेण सफासण १ परूवण महपरओभव्वसत्ताणति ॥ १ ॥ मनोवा  
कायविनयसु मनः प्रभृतीनां विनयार्हेषु कुशलप्रवृत्त्यादि रक्तंच मणवइकाइयविणओ आयरियाइणसव्वकालंपि अकुसलाणनिरोहो कुसलाणमुदीरणं  
तहय ॥ १ ॥ लोकानां मुपचारो व्यवहार स्तेन सएववा विनयो लोकोपचारविनयो मनोवाकायविनयान् प्रशस्ताप्रशस्तभेदान् प्रत्येक सप्तप्रकारान् लो  
कोपचारविनयच सप्तधैवाह ॥ पसत्यमणेत्यादि ॥ सूत्रसप्तकं सुगमं नवरं प्रशस्तः शुभो मनसो विनयन विनयः प्रवर्त्तनमित्यर्थः प्रशस्तमनोविनय स्तत्र

अपापकः शुभचिन्तारूप असावद्य सौर्यादिगर्हितकर्मानालवनो ऽक्रियः कायिकाधिकरणिकादिक्रियावर्जितो निरुपक्लेशः शोकादिवाधावर्जितस्तु प्रश्व  
वणइतिवचनात् आश्रवः कर्मोपादान तत्करणशील आश्रवकर स्तन्निषेधा दनाश्रवकरः प्राणातिपाताद्याश्रववर्जितइत्यर्थः अक्षपिकरः प्राणिनां नचपे  
र्यथाविशेषस्य कारकः अभूताभिर्शक्तो न भूता न्यभिर्शक्ते विभ्यति यस्मात् त्व तथा अभयंकरइत्यर्थ एतेषाच प्रायः सदृशार्थत्वेपि शब्दनयाभिप्रायेण

कायविणए लोगोवयारविणए । पसत्यमणविणए सत्तविहे पसत्ते तजहा अपावए असावज्जे अकिरिए  
निरुवक्कोसे अणरहकरे अच्छविकरे अनूयान्निसंकमणे । अपसत्यमणविणए सत्तविहे पसत्ते तंजहा पावए  
सावज्जे सकिरिए सउवक्कोसे अणरहकरे च्छविकरे नूयान्निसकमणे । पसत्यवइविणए सत्तविहे पसत्ते त०  
अपावए असावज्जे जाव अनूयान्निसंकमणे । अपसत्यवइविणए सत्तविहे पसत्ते तजहा पावए जाव नू

दिकनेनमस्कार करवी ७ ॥ प्रशस्त मननो विनय सात प्रकारे पापरहित मननी चिंतना १ । सावद्य न चिंतवे घात चोरी प्रमुख निदितकर्म न  
चिंतवे २ । क्रियारहित ३ । शोकादि क्लेश रहित ४ । प्राणाति पातादि आश्रवरहित ५ । कोई जीवने पीडा नथी चितवे ६ । कोई नूत प्राणीने  
शंका नथी उपजावे ७ ॥ अप्रशस्त मननो विननो विनय सात प्रकारे कह्यो तेकहैछे अशुभ चितना १ । सावद्य चोरी प्रमुखनी चितवना २ । क्रि  
याकायिकी प्रमुख ३ । शोकादिवत् ४ । आश्रवसहित ५ । प्राणीने पीडाकरे ६ । प्राणीने ज्ञय उपजावे ७ ॥ प्रशस्त वचननो विनय सात प्रकारे ते  
कहैछे । शुभवचन १ । असावद्य वचन २ । एम यावत् नूत प्राणीने शंका उपजावे एहवो वचन नबोलै ७ ॥ अप्रशस्त वचननो विनय सात प्रकारे

भेदो वगंतव्यो ऽन्यथावेत्येवं शेषमपि आयुक्तं गमनं आयुक्तस्य पयुक्तस्य सलीनयोगस्य यदिति एव सर्वत्र नवरं स्थान मूर्धस्थान कायोत्सर्गादि ॥ निसीयण  
ति ॥ निषीदन मुपवेशन ॥ तुयट्टण ॥ शयनं उल्लङ्घन उत्प्लवनं देहत्यादेः प्रलघन मर्गलादेः सर्वेषा मिन्द्रियाणा योगा व्यापाराः सर्वेवाय इन्द्रिययोगा स्ते  
षां योजनता करण सर्वेन्द्रिययोगयोजनता ॥ अभ्यासवर्त्तयन्ति ॥ प्रत्यासत्तिवर्त्तित्वं श्रुताद्यर्थिनाहि आचार्यादेः समीपे आसितव्यमित्यर्थः ॥ परच्छंदा  
णुवर्त्तयति ॥ पराभिप्रायानुवर्त्तित्व ॥ कज्जहेओत्ति ॥ कार्यहेतो रयमर्थः कार्यं श्रुतप्रापणादिकहेतुहृत्वा श्रुत प्रापितो ह मनेने तिहेतोरित्यर्थो विशेषे

यान्निसंकमणे । पसत्यकायविणए सत्तविहे पस्सत्ते तंजहा आउत्तंगमणं आउत्तंठाणं आउत्तंनिसीयणं आउत्तं  
तुयट्टणं आउत्तंउल्लघणं आउत्तपलंघणं सत्तिंदियजोगजुंजणया । अपसत्यकायविणए सत्तविहे पस्सत्ते त०  
अणाउत्तंगमणं जाव अणाउत्तंसत्तिंदियजोगजुंजणया । लोगोवयारविणए सत्तविहे पस्सत्ते तंजहा अज्जा  
सवत्तियं परच्छंदाणुवत्तिय कज्जहेउ कयपफिकइया अत्तगवेसणया देसकालणया सत्तयेसुयपफिलोमया ।

तेकहैछे अशुभ यावत् भूतान्निशंकी ७ ॥ प्रशस्त कायानो विनय सात प्रकारे ते कहैछे जयणाथी चालवो १ । जयणाथे स्थित रहवो २ जयणाथी  
वैसवो ३ जयणाथी सूतवो ४ । जयणाथी उबरा प्रमुखनो उलघवो ५ जयणाथी घणुं उलंघवो ६ । जयणाथी सर्व इन्द्रियना योगनो प्रयुंजवो ७ ॥  
अप्रशस्तकाय विनय सात प्रकारे तेकहैछे अजयणाथे चालवो यावत् अजयणाथी सर्व इन्द्रियना योगनो प्रयुजवो ७ ॥ आचार्यादिकने समीपे वेस  
वो १ । परने मने प्रवर्त्तवो २ । कार्यने अर्थ विनय करवो ३ । उपकारना करणहारने पाछो उपकार करवो ४ । दुखियानो उपकार करवो ५ । दे



० ॥  
॥

ण विनये तस्य वर्त्तितव्यं तदनुष्ठानं च कर्त्तव्यमिति तथा कृतप्रतिकृतिता कृते भक्तादिनोपचारे प्रसन्ना गुरवः प्रतिकृतिं प्रत्युपकारं सूत्रादिदानतः क  
रिष्यतीति भक्तादिदानमिति यतितव्यमिति आर्त्तस्य दुःखार्त्तस्य गवेषण मीषधादे रित्यार्त्तगवेषण तदेवार्त्तगवेषणतेति पीडितस्यो पकारइत्यर्थः अथवा  
आत्मना आग्नेनवा भूत्वा गवेषण सुखदुःखतयो रन्वेषणं कार्यमिति देशकालज्ञता अवसरज्ञता सर्वार्थेष्वप्रतिलोमता आनुकूल्यमिति विनया कर्मघातो  
भवति सच समुद्घाते विशिष्टतरइति समुद्घातप्ररूपणायाह ॥ सत्तसमुग्धाएत्यादि ॥ हन्हिषागत्यो हनन घात. समित्येकीभावे उत्प्रावल्ये तत एकीभा  
वेन प्रावल्येनच घातो निर्जेरा समुद्घातः कस्य केन सहै कोभावगमन मुच्यते आत्मनो वेदनाकषायाद्यनुभवपरिणामेन यदा ह्यात्मा वेदनाद्यनुभवज्ञानप  
रिणतीभवति तदा नान्यज्ञानपरिणतइति उत्प्रावल्येन घात. कथं यस्मा हेदनादिसमुद्घातपरिणतो बल्ल न्वेदनौयादि कर्मप्रदेशान् कालान्तरानुभवयोग्या  
नुदीरणाकरणेना कृथा नुभूय निर्जरयति आत्मप्रदेशैः सह सक्लिष्टान् शातयतीत्यर्थः उक्तच पुव्वकथकभ्रसङ्गणंतुनिर्जेराइति ॥ सच वेदनादिभेदेन स  
प्तधा भवतीत्याह सप्त समुद्घाताः प्रज्ञप्ता सद्यथा वेदनासमुद्घात इत्यादि तत्र वेदनासमुद्घातो ऽसद्देयकर्माश्रयः कषायसमुद्घातः कषायाख्यचारित्र  
मोहनौयकर्माश्रयो मारणातिकसमुद्घातो तर्मुहूर्त्तशेषायुष्ककर्माश्रयः वैकुर्विकतेजसाहारकसमुद्घाताः शरीरनामकर्माश्रयाः केवलिसमुद्घातस्तु सदसद्देय  
शभाशुभनामोच्चनौचैर्गोत्रकर्माश्रयइति तत्र वेदनासमुद्घातसमुद्घत आत्मा वेदनौयकर्मपुद्गलशात करोति कषायसमुद्घातसमुद्घतः कषायपुद्गलशातं मारणां

सत्त समुग्धाया पण्डिता तजहा वेयणासमुग्धाए कसायसमुग्धाए मारणातियसमुग्धाए वेउह्वियसमुग्धाए तेजस

शकालनो जाणवो ६ । मय्य अर्थने विषे अनुकूलपणु राखवो ७ ॥ सात समुद्घात कहिया ते कहैछे वेदनासमुद्घात १ । कषायसमुद्घात २ । मारणां

तिकसमुद्घातसमुद्घात आयुष्कर्मपुद्गलघातं वैकुण्ठिकसमुद्घातसमुद्घातस्तु जीवप्रदेशान्शरीरावहिर्निष्काश्य शरीरविष्कम्भवाहृत्यमात्र मायामतस संस्थेया  
नियोजनानि दडं निस्तृजति निस्तृज्यच यथा स्थूला न्वैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान् शातयति यथोक्तं वेडवियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता सखि  
ज्जाइ जोयणाइ दंडनिस्सरइ निस्सरित्ता अहावायरे पोगले परिसाडेइत्ति ॥ एवतैजसाहारकसमुद्घातावपि व्याख्येयौ केवलिसमुद्घातेन समुद्घातः केवली  
वेदनीयादिकर्मपुद्गलान् शातयतीति इहांत्यो ऽष्टसामयिकः शेषा स्वसख्यातसामयिकाइति चतुर्विंशतिदडकचिन्तायां सप्तापि समुद्घाता मनुष्याणामेव  
भवतीत्याह ॥ मणुस्साणसत्तेत्यादि ॥ एवचेवत्ति ॥ सामान्यसूत्रइव सप्तापि समुच्चारणीया एतच्च समुद्घातादिकं जिनाभिहितं वस्त्व न्यथा प्ररूपयन् प्रवच  
नवाह्यो भवति यथा निक्कवाइति तद्वक्तव्यतां सूत्रत्रयेणाह ॥ समणेत्यादि ॥ कण्ठ्य ऋवर प्रवचन मागम निग्हुवते ऽपलप त्यन्यथा प्ररूपयतीति प्रवचननिक्क  
वाः प्रज्ञप्ताः जिनै स्तत्र ॥ बहुरयत्ति ॥ एकेन समयेन क्रियाध्यासितरूपेण वस्तुनो ऽनुत्पत्तेः प्रभूतसमये चोत्पत्ते बह्व्यु समयेषु रताः शक्ता बहुरता दीर्घ  
कालद्रव्यप्रसूतिप्ररूपिणइत्यर्थः तथा जीवः प्रदेशएव येषाते जीवप्रदेशा स्तएव जीवप्रादेगिका अथवा जीवप्रदेशोजीवाभ्युपगमतो विद्यते येषाते तथा

समुग्घाए अहारकसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए । मणुस्साणं सत्त समुग्घाया पप्पत्ता एवंचेव । समणस्सणं  
जगवत्त महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवयणनिरहगा पप्पत्ता तंजहा वज्जरया जीवपणसिया अणुत्तिया सा

तिकसमुद्घात ३ । वैक्रियसमुद्घात ४ । तैजससमुद्घात ५ । अहारक समुद्घात ६ । केवलिसमुद्घात ७ ॥ मनुष्येने सात समुद्घात कह्या ते कहैछे ते एम  
पूर्वोक्त प्रकारे जाणवा ७ ॥ अमण भगवत महावीरना तीर्थने विषे सात प्रवचनना निक्कव थया तेकहैछे बहुर जमालीनो मत १ । जीवनो छेहलो

चरमप्रदेशजीवारूपिण इति हृदय ३ तथा अव्यक्त मस्फुट वस्तु अभ्युपगमतो विद्यते येषांते अव्यक्तिकाः संयताद्यवगमे सदिग्धबुद्धय इति भावना ३ तथा म  
मुच्छेदः प्रसूत्यनन्तरं सामस्त्येन प्रकर्षेण च च्छेदः समुच्छेदो विनाशः समुच्छेदं भुवत इति सामुच्छेदिकाः क्षणक्षयिकभावप्ररूपका इत्यर्थः ४ तथा क्रिये  
समुद्रिते द्वितीयं तदधीयते तद्देदिनोषा द्वैक्रियाः कालाभेदेन क्रियाद्वयानुभयप्ररूपिण इत्यर्थः ५ तथा जीवाजीवनो जीवभेदा स्वयो राशयः समाहृताः  
चिराशि स्तत्रयोजनं येषांते त्रैराशिकाः राशित्रयाख्यापका इत्यर्थः ६ तथा सृष्ट जीवेन कर्म नस्त्वन्धबन्धवद्बहुमवत् तदेषा मस्ती त्यवधिका सृष्टकर्म  
विपाकरूपका इति हृदय ७ ॥ धम्मार्थरियत्ति ॥ धर्म उक्तप्ररूपणादिलक्षणः श्रुतधर्म स्तत्रधानाः प्रणायकत्वेना चार्या धर्माचार्या स्तत्रतोपदेशार इत्यर्थ  
स्तत्र जमाली क्षत्रियकुमारो हि अमणस्य भगवतो महावीरस्य भागिनेयो ऽभवत् दुहितुः सुदर्शनाभिधानाया भर्ता पचपुरुषशतीपरिवारो भगवत्पत्रा  
जित आचार्यत्व प्राप्तः आवस्थां नगर्या न्तेन्दुके चैत्ये विहर ननुचिताहारा दुत्यनरोगो वेदनाभिभूततया शयनार्थं समादिष्टसंस्तारकसंस्तरणः कृतः  
संस्तारक इति विहितपरिप्रश्नः संस्तारककारिसाधुना सस्ति यमाणत्वेपि सस्यत इति दत्तप्रतिवचनो गत्वा च दृष्टक्रियमाणसंस्तारकः कर्मादया द्विपर्यस्त

मुच्छेदया दोकिरिया तेणुसिया अ्वधिया । एणुसिण सत्तरहं पवयणनिरहगाण सत्त धम्मार्थरिया होत्या

प्रदेशहीज जीवच्छे तिष्यगुप्तनो मतच्छे २ । अव्यक्त सर्व वस्तुच्छे ए आसाढाचार्यनो मतच्छे ३ । क्षणक्षयीभावनो प्ररूपक ४ । एक समयमा वेक्रिया वे  
दियेच्छे ५ । त्रैरासिकमत जीव १ अजीव २ नोजीव ३ एवं ३ राशिमानेच्छे ६ । जीव कर्मस्पर्शने वेदेच्छे जीवने कर्मनो बधनथी एह गोष्ठामाहिलनो  
मतच्छे ७ ॥ ए सात प्रवचन निस्तवना सात धर्माचार्ये ते कहैच्छे ॥

बुद्धिः प्ररूपयामास यत् क्रियमाणं कृतमिति भगवान् दिदेश तदसंख्यविरोधत्वाद्दश्रावणशब्दवत् प्रत्यक्षविरोधताचास्या ईसस्तुतसस्तारकासस्तुतत्व दर्शनात्ततश्च क्रियमाणत्वेन प्रत्यक्षसिद्धेन कृतत्वधर्मोपनीयतइति भावना आहच संखवियसथारो नकज्जमाणोकडेत्तिमेजम्हा वेइजमालीसच्च नकज्ज माणकयंतम्हत्ति ॥ १ ॥ यच्चैव प्ररूपयन् स्थविरै रेवमुक्तो हेआचार्य क्रियमाण कृतमिति नाध्यक्षविरोधं यदिहि क्रियमाण क्रियाविष्टं कृत नेष्यते ततः क्रियानारम्भसमयइव पश्चादपि क्रियाभावे कथं तदिष्यतइति सदाप्रसंगा क्रियाऽभावस्या विशिष्टत्वात् यदप्युक्तं ईसस्तुतसंस्तारकासस्तुतत्वदर्शनात्तदप्य युक्तं यतो यद्यदा यत्राकाशदेशे वस्त्वमास्तोर्यते तत्तदा तत्रा स्तीर्णमेव एव पाश्चात्यवस्तास्तरणसमये खल्वसा वास्तीर्णएवेति आहच जजत्यनभोदेसे अ त्यच्चइजत्यजत्यममयमि तंतत्यतत्यमत्युय मत्युव्वतंपितंचेवत्ति ॥ १ ॥ तदेवं विशिष्टसमयापेक्षोणि भगवद्वचनानीति एवमपि प्रत्यक्तो यो नतत्प्रतिपन्नवान् सोय बहुरधर्माचार्य स्तथा तिथ्यगुप्तो वसुनामधेयाचार्यस्य चतुर्दशपूर्वधरस्य शिष्यो योहि राजगृहे विहर न्नात्मप्रवादाभिधानपूर्वस्य एगे भते जीवप्पदेसे जीवेत्ति वत्तव्वसिया नो इण्ठे समठ्ठे एव दो तिस्सि सखेज्जा असखेज्जावा जाव एक्केणवि पएसेण ऊणो नो जीवेत्ति वत्तव्वसिया जम्हा कसिणे पडिपुस्से लोगागासप्पएसतुल्लप्पएसो जीवेत्ति वत्तव्वसिये त्येवमादिकमालापक मर्थीयानः कर्मोदया व्युत्थितः सन्नित्य मभिहितवान् यद्येकादयो जीवप्रदेशाः खल्वे कप्रदेशहीना अपि न जीवाख्यां लभते कितु चरमप्रदेशयुक्ताएव लभतइति ततः सएवैकः प्रदेशो जीवइति तद्भावभावित्वा जीवत्वस्येति आहच एगा

## जमाली तीसगुत्ते

जमाली १ । तिथ्यगुप्त २ ।

दशोपपत्ता नयजीरोनयपणसहीणोवि जंतोसजेणपुणो सएवजीवोपएसोत्ति ॥ १ ॥ यस्यैव मभिदधानो गुरुणो क्तो नतदेवं जीवाभावप्रसङ्गात् कथं  
 भवदभिमती लपदेशो प्यजोव आद्यप्रदेशतुल्यपरिणामत्वात् प्रथमादिप्रदेशवत् प्रथमादिप्रदेशोवा जीवः शेषप्रदेशतुल्यपरिणामत्वा दंत्यप्रदेशव नच  
 पूरणइति क्त्वा तस्य जीवत्व युज्यते एकैकस्य पूरणत्वाविशेषा देकमपि विना तस्या संपूर्णत्वमिति आहच गुरुणाभिहितोजइते पढमपदेशोनसम  
 ओजीवो तोतपरिणामोच्चिय जीवोक्कहमंतिसपणसो ॥ १ ॥ इत्यादि एवमुक्तोपि न प्रतिपन्नया स्वतः संघादहिः कृतः पश्चा दामलकल्पाया मित्रश्रीनाम्ना  
 यमणोपासनेन सखणा भक्तादिग्रहणार्थं गृहमानीया अतश्च विविधानि खाद्यजादिद्रव्या ऋपनिधाय ततएकैक मवयव दत्वा पादेषु निपत्य अहोधन्यो  
 ह मया साधय प्रतिलभिता इत्यभिदधानेन अहो अह भवता धर्षित इतिपटन् भवत्तिष्ठातेन भवान् प्रतिलभितो मया यदि पर वर्णमानस्वामिसिद्धा  
 तेन ने ति प्रतिभणता प्रतिबोधितः सोय जीवप्रादेशिकाना धर्माचार्यइति तथा आपाढो येनहि खेताव्या नगर्थापोलासउद्याने स्वशिथ्याणां प्रतिपन्नागा  
 ढयोगाना रात्रौ हृदयशूलेन मरण मासाद्य देवेन भूत्वा तदनुकपया सकोय मेव कलेवरमधिष्टाय सर्वा समाचारौ मनुप्रवर्त्तयता योगसमाप्तिं शीघ्रं क्त्वा  
 वा वंदित्वा तानभिहितच जमणोय भदता यन् मया यूय वदन कारिताः यस्यच शिथ्या इय सिरमसंवतां वदितो ऽस्माभिरिति विचित्रा व्यक्तमत मा  
 श्रिता स्तथाहि कोजाणइकिसाधू देवांवातो नवदणिज्जोत्ति होज्जासजयनमण होज्जमुसवाअयअमुगोत्ति ॥ १ ॥ [यच्छिथ्यांश्च प्रति] धेरवयणंजइपरे

आसाढे

आसाढाचार्य ३ ।

संदेहोक्तिमुरोत्तिसाहुति देवैकहंसका किसीदेवोअदेवोत्ति ॥ २ ॥ तेणकहियतिवमई देवोहंदैवदरिसणाओय साहुतिअहंकहिए समाणरूवमिक्किं सका ॥ २ ॥ देवस्सवक्खिवयण सच्चंतिनसाहुवधारिस्स नपरोप्परपिवंदह जंजाणताविजयओत्ति ॥ ३ ॥ एवंचो च्यमाना अप्यप्रतिपद्यमाना यद्धिनेयाः संवा हहिष्कृता विहरतस्व राजगृहे बलभद्राभिधानराजेन कटकमर्देन मारण मादिश्य कथ मस्मान्यतीन् आवक त्व मारयसोति ब्रुवाणा नवय जानी मः केयूय चौरावा चारिकावेति प्रत्युत्तरदानतः प्रतिबोधिताः सोयमशक्तमतधर्माचार्यो नचाय तन्मतप्ररूपकत्वेन किन्तु प्रागवस्थायामिति ३ तथा अश्वमित्रो योहि महागिरिशिष्यस्य कोडिन्याभिधानस्य शिष्यो मिथिलाया नगर्या लक्ष्मोगृहे चैत्ये अनुप्रवादाभिधाने पूर्वं नैपुणिके वस्तुनि च्छिन्नच्छेदन यवक्तव्यतायां ॥ पडुप्पणसमया नेरइया बोच्छिज्जिस्सति एव जाव वेमाणियत्ति एवं वित्तियाइसमएस्स वत्तव्वमित्येव ॥ रूप मालापक मधीयानो मिथ्या त्व मुपगतो बभाणव यदि सर्वएव वर्त्तमानसमयसजाता व्यवच्छेस्यन्ति तदा कुतः कर्मणा वेदन मित्याहच एवंचकओकस्मा णवेयणंसुकयदुक्कयाणति उप्पायाणतरओ सव्वत्सविणाससग्भाओ ॥ १ ॥ यच्चैवं प्ररूपयन् गुरुणा भणित एगनयमण्णमिद् सत्तवच्चाहिमाहमिच्छत्त निरवेक्खोसेसाणवि णयाणहि ययवियारेहि ॥ १ ॥ नहिसव्वहाविणासो अडापज्जायमित्तनासामि [ अडापर्यायाः कालकृतधर्माः ] सपरणज्जायाण तधम्मिणोवत्थुणोजुत्तो ॥ २ ॥ अह सुत्ताओत्तिमई नणुसुत्तेसासयंपिनिहिठ्ठ वत्थद्वव्वाए प्रसासयपज्जयग्गाए ॥ ३ ॥ तत्थविनसग्गनासो समयादिविसेसणजओभिहियं इहरानसव्वनासे स

आसमित्ते

आसमित्र ४ ।

मयादिविसेसणजुत्तंति ॥ ४ ॥ इदंवा प्रतिपद्यमान उद्घाटितो यथ कांपित्ये शुक्लपालश्यावकै मार्यमाणो ऽस्माभि र्युयं श्यावकाः श्रुता स्तत्कथं साधू  
 न्मारयथेति वदन् युष्मत्सिद्धातेन प्रव्रजिता श्यावकांश्च येते व्यवच्छिन्ना यूय वय चान्य इति दत्तप्रत्युत्तरः सम्यक्त प्रतिपन्नः सोय सामुच्छेदिकाना धर्माचा  
 र्यइति ४ तथा गगइति योहि श्रार्यमहागिरिशिष्यस्य धनगुप्तस्य उल्लुकाभिधाननगरात् शरदि आचार्यवन्दनार्थं प्रस्थित उल्लुका नदी मुत्तरन् खलतिना शि  
 रसा टिनकरनिकरसपातसजात मुश्र पादाभ्याश्च शीतलजलजनितनितान्तशीतं वेदय श्रितयामास सूत्रेऽभिहितं एकाक्रियै कदा वेद्यते शीताचो णा  
 वा अहच हेक्रियेवेद्या म्यतो हेक्रिये समये नैकेन वेद्यतइति गत्वाच गर्वन्तिकेवदित्वा भिदधा वभिप्राय मात्मीय माचार्याय तेनचा वाचि मैवमवोचा  
 यतो नास्त्ये कदा क्रियाहयवेदन केवलं समयमनसो रतिसूक्ष्मतया भेदो नलक्ष्यते उत्पलपत्रशतश्रुतिभेदवत् एवच प्रतिपादितं स न्न प्रतिपद्यमानो वहि.  
 कृतो ऽन्यदा राजगृहे महातपस्तौरप्रभाभिधाने नदविशेषे मणिनागनाम्नो नागस्य चैत्यपरिषन्मध्ये स्वमत मावेदयन् मणिनागेन विसर्पदृर्पगर्भया  
 भारत्या भिहतो ररेदुष्ट शैच कस्मा दस्मासु सत्स्वेव मप्रज्ञापनोय प्रज्ञापयसि यत इहैव स्थानेस्थितेन भगवता वर्द्धमानस्वामिना प्रणिन्ये यथै कदै कौव  
 क्रिया वेद्यत इति तत स्वन्ततोपि लटतरोजातः छर्द्दयैन वाद माते दोषा न्नाशयिष्यामीति भयमापन्नं प्रतिबुद्धः सोय हैक्रियाणा धर्माचार्यइति ॥ ५ ॥  
 तथा ॥ छल्लुएति ॥ द्रव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायलक्षणपट्पदार्थप्ररूपकत्वात् गोत्रेणच कौशिकत्वात् षडुल्लुको योहि नामातरेण रोहगुप्तो यश्चा

गगे

गग ५ ।

तरज्यां पुण्यां भूतगुहाभिधानव्यंतरायतने व्यवस्थितानां श्रीगुप्ताभिधानानां माचार्याणां वन्दनार्थं गामान्तरा दागच्छन् प्रवादप्रदापितपटहकध्वनि  
 माकर्ण्य सदर्प्य च तन्निषेध्याचार्यस्य तन्निवेद्य ततो मायूर्यादिविद्या मुपादाय राजकुलमतिगत्य वलथोनाम्नो नरनायकस्याग्रतः पोष्टशालाभिधानं  
 परित्राजकप्रवादिन माह्वय तेन च जीवाजीवलक्षणे राशिद्वये स्थापिते तत्प्रतिभाप्रतिघाताय नोजीवलक्षण तृतीयराशि व्यवस्थाप्य तद्विद्यानां सविद्या  
 भिः प्रतिघातकरणेन तन्निगृह्य गुरुसमोप मागत्य तन्निवेदितवान् यद्य गृह्णामिहितो यथा गच्छ राजसभा मनुप्रविश्य ब्रूहि राशित्रयप्ररूपण मप  
 सिद्धान्तरूपं वादिपरिभवाय मयाकतमिति ततो यो भिमाना दाचार्यं प्रत्यवादीत् यथा राशित्रयमेवास्ति तथाहि जीवा. मसारस्यादय. अजीवा. घ  
 टादयो नोजीवास्तु दृष्टान्तसिद्धा यथाहि दण्डस्यादिमध्याग्राणि भवन्तीत्येव सर्वभावानां त्रैविध्यमिति यद्य राजसमक्ष माचार्येण कुत्रिकापणे जीवयाच  
 ने पृथिव्यादिजीवलाभात् अजीवयाचने अचेतनलेखादिलाभात् नोजीवयाचने ऽचेतनलेखादिलाभाच्च निगृह्यतः सोऽयं त्रैराशिकधर्माचार्य इति तथा  
 गोष्ठामाहिल इति योहि दशपुरनगरे आर्यरजितस्वामिनि दिवगते आचार्यश्रीदुर्वलिकापुथ्यमित्रे गण परिपालयति विध्याभिधानसाधो रष्टमकर्मप्रवादा  
 भिधान पूर्व माचार्या दुपश्रुत्य प्रत्युच्चारयतः कर्मवन्धाधिकारे किञ्चि त्कर्म जीवप्रदेशे. सृष्टमात्र कालान्तरे स्थिति मप्राप्य विघटते शुष्ककुष्ठपतितचूर्णसु  
 शिवत् किञ्चि त्पुनः सृष्ट वड्ढं च कालान्तरेण विघटते आर्द्रलेपकुष्ठे सस्नेहचूर्णवत् किञ्चित्पुनः सृष्ट वड्ढं निकाचित जीवेन सहै कलमापन्न कालान्तरे

बहु ए गोष्ठामाहिले ।

षष्ठलूक ६ ।



ण वेद्यत इत्येव माकर्ण्योक्तवान् नत्वेवं मोक्षाभावः प्रसजति कथं जीवात्कर्म न वियुज्यते अन्योन्याविभागवद्वत्त्वात् स्वप्रदेशवदुक्तं च सोऽभिमन्यसदो  
 सं वक्ताणमिणंतिपावइजओसे मोक्षाभावोजीव णएसकम्माविभागाओ ॥ १ ॥ नहिकम्मंजीवाओ अवेइअविभागओपएसव्व तदनवगमादमोक्खो जुत्त  
 मिणंतेणवक्खाणति ॥ १ ॥ तथा जीवः कर्मणा स्पृष्टो नत् बध्यते वियुज्यमानत्वात् कचुकेनेव तद्धानिति ततो विन्ध्यसाधुना एतस्मिन्नाचार्यार्थे निवे  
 दिते यस्तेनाभिहितो मद्रयदुक्तत्वया जीवात्कर्म न वियुज्यतइति तत्र प्रत्यक्षवाधिता प्रतिज्ञा युष्कर्मवियोगात्मकस्य मरणस्य प्रत्यक्षत्वात् हेतुरप्यनैका  
 तिकोऽन्योन्याविभागसंबन्धानामपि चौरोदकादीनामुपायतो वियोगदर्शनात् दृष्टातोपि न साधनधर्मानुगतः स्वप्रदेशस्य वियुक्तत्वासिद्धे स्तद्रूपेणा ना  
 दिरूपत्वाद्भिन्नं च जीवात्कर्म इति यस्तेनाभिहितो जीवः कर्मणा स्पृष्टो नवध्यतइत्यादि तत्र किं प्रतिप्रदेश स्पृष्टो नभसे वोत त्वन्मात्रे कचुकेनेव यद्याद्यः पञ्चस्तदा  
 दृष्टातदार्ष्टान्तिकयो वैषम्यं कचुकेन प्रतिप्रदेश मस्पृष्टत्वा दध्यधितोयः ततो नापान्तरालगत्यनुयायि कर्म पर्यंतवर्तित्वा द्वाद्याङ्गमलवदेवं सर्वो मोक्षभाक्  
 कर्मानुगमरहितत्वान्मुक्तवदित्यादि प्रतिपद्यमानो नेतः प्रतिपन्नवान् उद्घाटितसेति सोय मवद्विक्रधर्माचार्यइति उत्पत्तिनगराणि सप्तानां क्रमेण सप्तैव  
 ॥ होयति ॥ सामान्येन वर्तमानत्वेपि नगराणां तद्विशेषगुणातीतत्वेना तोतनिर्देशः ॥ सावत्योगाहा ॥ ऋषभपुर राजगृह उल्लूकानदी तत्तोरवर्त्ति  
 नगरमुल्लूकातीर पुरीति नगरी अतरं जातितन्नाम इह च मकारो लाक्षणिकः ॥ दशपुरति ॥ अनुस्वारलोपादिति एते च निष्कवाः सप्तारे पर्यटंतः सातासा

एणसिणं सत्तरह पवयणनिरहगाणं सत्त उपपत्तिनगरे होत्या तंजहा सावत्यीउसन्नपुर सेयावियामिहलउल्लू

गोष्ठामाहिल ७ ॥ ए सात प्रवचननिष्कवना उपजवाना सात नगर कट्या ते कहैळे सावत्यी नगरी १ । रिपन्नपुर २ । स्वेतांबिका ३ । मिथिलानग

तभोगिनो भविष्यंतीति तत्स्वरूपं सूत्रद्वयेनाह ॥ साएत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं ॥ अणुभावेति ॥ विपाकउदयो रसइत्यर्थः मनोज्ञाः शब्दादयः सातोदयकार  
णत्वा दनुभावा एवोच्यन्ते तथा मनसः शुभता मनःशुभता सापि सातानुभावकारणत्वा त्सातानुभाव उच्यते एवं वचःशुभतापि मनसःसुखतावा साता  
नुभाव स्तत्स्वरूपत्वा तस्या एव वाक्सुखतापौति एव मसातानुभावोपि सातासाताधिकारा तद्वता देवविशेषाणा प्ररूपणाय सूत्रपचकमाह ॥ महेत्यादि ॥  
सुाम नवरं पूर्व द्वारं येषा मस्ति तानि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वस्थांदिशि गम्यतेयेष्वित्यर्थः एव शेषाण्यपि सप्त सप्तैति इहचार्थे पच मतानि संति यत आ  
ह चन्द्रप्रज्ञस्या तत्खलु इमाओ पंचपडिवत्तीओ पञ्चत्ताओ तथ्येगे एवमार्हंसु कत्तियाइया सत्तनक्खत्ता पुण्वटारिया पञ्चत्ता ॥ एव मन्ये मघादौ  
न्यपरे धनिष्ठादौनि इतरे अश्विन्यादौनि अपरे भरण्यादौनि दक्षिणापरोत्तरद्वाराणिच सप्त सप्त यथामतं क्रमेणैव समवसेयानीति वय पुण एव वया

गातीर पुरिमंततंजिदसपुर निरहगउप्पत्तिनगराइं ॥ १ ॥ सायावेयणिज्जस्सणं कम्मस्स सत्तविहे अणुजावे  
पण्णत्ते तजहा मणुन्नासद्दा मणुन्नारूवा जाव मणुन्नाफासा मणोसुहया वइसुहया । असायावेयणिज्जस्स  
कम्मस्स सत्तविहे अणुजावे पन्नत्ते तजहा अमणुन्नासद्दा जाव वइदुहया । महानरक्कत्ते सत्ततारे पन्नत्ते ।

री ४ । उल्लुकातीर ५ । पुरिमताल ६ । दशपुर ७ ॥ ए निक्खव उपजवाना नगर कह्या ॥ १ ॥ साता वेदिनी कर्मनो सात प्रकारे अनुभाव कह्यो ते  
कहैछे मनोग्यरूप पामे १ । यावत् मनोज्ञस्पर्श पावे ५ । मननु सुख ६ । वचननो सुख पावे ७ ॥ अशाता वेदनी कर्मनो सात प्रकारे अनुभावछे  
तेकहैछे अमनोज्ञ शब्द यावत् वचननु सुख ॥ मघा नक्षत्रना सात तारा कह्या ॥ अग्निजिन्नक्षत्र आदिदेई सात नक्षत्र पूर्वद्वारिक कह्या ते कहैछे अ

मो अनियामो अभियाइयाण सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पन्नत्ता ॥ एवं दक्षिणद्वारिकादी न्यपि कमेणैवेति तदिह षष्ठं मत माश्रित्य सूत्राणि प्रवृत्तानि लौकिकेतु प्रथम मत माश्रित्ये तदभिधीयते यदुत दहनाद्यमृत्तसप्तक मैद्रान्तु मघादिकच याम्याया अपरस्या मैत्र्यादिक मथसौम्यादिशि धनिष्ठादि ॥ १ ॥ भवतिगमनेनराणा मभिमृखमपसर्पताशुभप्राप्तिः अथपूर्वमृत्तसप्तक सुदिष्टमध्यममुदीच्या ॥ २ ॥ पूर्वायामीदीच्या प्रातीच्यादक्षिणाभिधानाया याम्यान्तुभवतिमध्यम मपरस्यायातराशाया ॥ ३ ॥ येतौल्ययान्तिमूढाः परिधाख्यामनिलदहनदिग्देखा निपततितेचिरादपि दुर्ध्यसनेनिष्फलारभाडति ॥ ४ ॥ देवाधिकारा देवनिवासकूटसूत्रद्वय ॥ जंबूद्व्यादि ॥ कण्ठ्यं केवल ॥ ४ ॥ सोमणसेत्ति ॥ सोमनसे गजदतके देवकुरुणा प्राचीने कूटानि शिखराणि

अग्निर्इयाइया सत्तनस्कत्ता पुव्वदारिया पन्नत्ता तजहा अग्निर्इ सवणो धनिष्ठा सयजिसया पुव्वान्नद्वया उत्तरान्नद्वया रेवर्ड । अस्सिणियाइया सत्तनस्कत्ता दाहिणदारिया पन्नत्ता तजहा अस्सिणी जरिणी कत्ति या रोहिणी मिगसिर अद्दा पुणव्वसू । पुरसाइयाणं सत्तनस्कत्ता अवरदारिया पन्नत्ता तजहा पुरसो अस्सि लेसा मघा पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी हत्थो चित्ता । साइयाण सत्तनस्कत्ता उत्तरदारिया पन्नत्ता तजहा

भिजित् १ ॥ अवण २ ॥ धनिष्ठा ३ ॥ शतभिषा ४ ॥ पूर्वज्ञाद्रपद ५ ॥ उत्तराज्ञाद्रपद ६ ॥ रेवती ७ ॥ अश्विनी आदिदेई सात नक्षत्र दक्षिण द्वारिया कह्या ते कहैछे अश्विनी १ । जरणी २ । कत्तिका ३ । रोहिणी ४ । मृगशिर ५ । आर्द्रा ६ । पुमर्वसु ७ ॥ पुष्य आदिदेई सात नक्षत्र पश्चिम द्वारिया कहिया ते कहैछे पुष्य १ । अश्लेषा २ । मघा ३ । पूर्वाफाल्गुनी ४ । उत्तराफाल्गुनी ५ । हस्त ६ । चित्रा ७ ॥ स्वाति नक्षत्र आदिदेई सात नक्षत्र उ

॥ सिङ्गेगाहा ॥ सिङ्गायननोपलक्षितं कूटं मेरुप्रत्याप्तं मेवं सर्वगजदंतकेषु सिङ्गायतनानि शेषाणि ततःपरंपरयेति ॥ सोमनसेति ॥ सोमणसकूटं तत्समाननामकतदधिष्ठातृदेवभवनोपलक्षितं मगलावतीविजयसमनामदेवस्य मगलावतीकूटं एवं देवकुरुदेवनिवासो देवकुरुकूटमिति विमलकांचनकूटे यथार्थं क्रमेणच वत्सवत्समित्राभिधानाधोलोकनिवासिदिक्कुमारीद्वयनिवासभूते विशिष्टकूटं तन्नामदेवनिवास एवमुत्तरत्रापि गन्धमादनो गजदन्तकएवं उत्तरकुरुणा प्रतीचौनसूत्र ॥ सिङ्गेगाहा ॥ कण्ठ्या नवर स्फटिककूटलोहिताख्यकूटे अधोलोकनिवासिभोगकराभोगवत्यभिधानदिक्कुमारीद्वयनिवासभूते इति कूटेष्वपि पुष्करिणीजले द्वौन्द्रियाः सतीति द्वौन्द्रियसूत्र ॥ वेद्मिन्द्रियाणमित्यादि ॥ जाती द्वौन्द्रियजाती याः कुलकोटयस्ता स्तथा ताश्च ता योनिप्रमुखाश्च द्विलक्षसख्यद्वौन्द्रियोत्पत्तिस्थानद्वारिका स्ता जातिकुलकोटियोनिप्रमुखा इहच विशेषणपरं पदप्राकृतत्वात्तासां शतसहस्राणि लक्षाणीति इ

साङ्ग विसाहा अणुराहा जिष्ठा मूलो पुष्याश्रयासाढा उत्तराश्रयासाढा । जंबूद्वीवेदीवे सोमणसे वरुकारपद्मए सप्तकूटा प० त० सिद्धेसोमणसेया बोधह्वेमंगलावर्द्धकूटे देवकुरुविमलकचण विसिष्ठकूटेयबोधह्वे ॥ १ ॥ जंबूद्वीवेदीवे गन्धमायणे वरुकारपद्मए सप्तकूटा पश्चत्ता तंजहा सिद्धेयगन्धमायणे बोधह्वेगंधिलावर्द्धकूटे उत्त

तर द्वारिया कह्या ते कहैछे स्वाति १ । विसाखा २ । अनुराधा ३ । ज्येष्ठा ४ । मूल ५ । पूर्वाषाढा ६ । उत्तराषाढा ७ ॥ जंबूद्वीपे सोमनस वरुस्कार पर्वतने ऊपर सात कूट कहिया ते कहैछे सिद्ध १ । सोमनस २ । मगलावती कूट ३ । देवकुरु ४ । विमल ५ । कांचन ६ । विशिष्ट ७ ॥ जंबूद्वीपे गन्धमादन वरुस्कार पर्वते सात कूट कह्या ते कहैछे सिद्ध १ । गन्धमादन २ । गंधिलावती ३ । उत्तरकुरु ४ । स्फटिक ५ । लोहित ६ । नंदकूट ७ ॥

॥ दमुक्त भवति द्वीन्द्रियजातौ या योनय स्तव्यभवायाः कुलकोटय स्तासा लघ्वाणि सप्त प्रज्ञमानौति तत्र योनि र्यथा गोमय स्तत्र चैकस्यामपि कुलानि  
विचित्राकारा. कस्यादयइति शेषा ध्रुवगंडिका सप्तवधा पूर्ववद्वाख्येति ॥ इति श्रीमदभयदेवाचार्यविरचिते स्थानाख्यद्वितीयागविवरणे सप्तस्थानकाभि  
॥ धान सप्तममध्ययन परिसमाप्त मिति ॥ ७ ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥ \* ॥  
व्याख्यात सप्तम मध्ययन मधुना संख्याक्रमसप्तदमेवा दृष्टानकाख्य मष्टम मध्ययन मारभ्यते तस्य चेद मादिसूत्रं ॥ अष्टहीत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण स

रकुरुफलहेलो हियस्कञ्चाणंदणेचेव ॥ २ ॥ वेदियाणं सत्त जाइकुलकोफ़िजोणीपमुहसत्तसहस्सा पस्यत्ता  
जीवाण सत्तठाणनिवृत्तिए पुग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणतिवा चिणिस्संतिवा तजहा नेरइयनि  
वृत्तिए जाव देवनिवृत्तिए एवचिण जाव निज्जराचेव । सत्तपएसियाखधाञ्णता पस्यत्ता । सत्तपएसोगा  
ढापुग्गला जाव सत्तगुणलुस्का पुग्गला ण्णंता पन्नत्ता ॥ सत्तमठाण सम्मत्त ॥ ७ ॥

वेइंद्रीनी सात जाति कुलकोफ़ि योनि प्रमुख सातहजार कही ॥ जीवने सात स्थानके निर्वर्त्तित पुद्गल पापकर्मपणे चिण्या एकठा कस्या करेछे क  
रस्ये तेकहैछे नारकी निर्वर्त्तित यावत् देव निर्वर्त्तित ॥ इम चिण्या यावत् निर्जराव्या ॥ सात प्रदेशना खध अनताछे ॥ सात प्रदेशावगाढ पुद्गल  
यावत् सात गुणलूखा पुद्गल अनंता कह्या ॥ इति सातमो ठाणो पूरो थयो ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥  
आठ थानके सहित अनगार योग्य होय एकलविहारनी प्रतिमा अगीकारकरी विचरवाने ते कहैछे श्रद्धावत पुरुष १ । सत्यवादी २ । बुद्धिवत ३ ।

हायं सबधो ऽनन्तरं पुद्गला उक्ता स्तेच कार्मणाः प्रतिमाविशेषप्रतिपत्तिमन्तो विशेषेण निर्णीयन्त इत्येकाकिविहारप्रतिमायोग्यः पुरुषो निरूप्यत इत्येवं  
सम्बन्धस्यास्य व्याख्या संहितादिचर्चसु प्रसिद्धएव नवर अष्टाभिः स्थानैर्गुणविशेषैः सम्पन्ना गुक्तो ऽनगारः साधु रर्हति योग्यो भवति ॥ एगस्तति ॥  
एकाकिनो विहारो ग्रामादिचर्या सएव प्रतिमा ऽभिग्रहः एकाकिविहारप्रतिमा जिनकल्पप्रतिमा मासिक्यादिकावा भिक्षुप्रतिमा ता मुपसपद्या श्रि  
त्य णमित्यलंकारे विहृतुं ग्रामादिषु चरितुं तद्यथा ॥ सङ्घित्ति ॥ यजानत्वेपु यजान मास्तिक्य मित्यर्थो ऽनुष्ठानेषुवा निजो भिलाप स्तद्वत्सकलनाकिनायकै  
रप्यवलनोयसम्यक्तचारित्रमित्यर्थः पुरुषजात पुरुषप्रकारः १ तथा सत्य सत्यवादी प्रतिज्ञाशूरत्वा तद्गोहितत्वादा सत्यं २ तथा मेधा श्रुतग्रहणशक्ति स्तद्व  
मेधावि अथवा ॥ मेहावद्वत्ति ॥ मेधाविमर्यादावृत्ति ३ तथा मेधावित्वा बहुप्रचुर श्रुत मागमः सूत्रतो ऽर्थतश्च यस्य तद्वहुश्रुतं तद्यो तत्कष्टतो ऽसंपूर्णदश  
पूर्वधर जघन्यतो नवमस्य तृतीयवस्तुवेदोति ४ तथा शक्तिम त्समर्थं पचविधकृततुलनमित्यर्थः तथाहि ॥ तवेण सत्तेण सुत्तेण एगत्तेण वलेणय तुलणा  
पचहा वुत्ता जिणकप्प पडिवज्जओत्ति ५ अल्पाधिकरणं निक्कलह ६ धृतिमत् चित्तस्सारथ्ययुक्त मरतिरत्यनुलोमप्रतिलोमोपसर्गसहमित्यर्थः ७ वीर्यं मु  
त्ताहातिरेक स्तेन सम्पन्नमिति इहा ध्यानामेव चतुर्णापदानां प्रत्येक मन्ते पुरुषजातशब्दो दृश्यते ततो न्याना सम्यय सम्बन्धनीयइति अय चैवंविधो

अष्टहिंठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ एगल्लविहारपद्मिं उवसंपज्जिहाणं विहरित्तए तं० सहीपुरिसजाए  
सच्चेपुरिसजाए मेहावीपुरिसजाए वज्जस्सुएपुरिसजाए सत्तिमं अप्पाहिगरणे धिइमं वीरियसंपन्ने । अष्टविहे

बहुश्रुत ४ । शक्तिवत् ५ । अल्पाधिकरणी क्रोधादिरहित ६ । संतोषवंत ७ । वीर्यवंत ८ ॥ आठप्रकारे मोनिसग्रह कह्यो ते कहैछे अंडज १ । पोतज २ । यावत्

० ॥

५ ॥

ऽनगारः सर्वपाणिनां रक्षणक्षमी भवतीति तेषामेव योद्याः संगतं गत्यागतीचाह ॥ अङ्गिहेत्यादि ॥ सूत्रचतुष्टयं सुगमं नगर मीपपातिका देवनारका-  
 ॥ सेसाणति ॥ अङ्गजपोतजजरायुजयर्जितानां रसजादीनां गति रागतिश्च नास्तौ त्यष्टप्रकारेति शेषः यतो रसजादयो नौपपातिकेप सर्वपूतपत्यते पचेद्दि-  
 याणामेव ततो त्यक्तेः ना प्योपपातिका रसजादिषु सर्वेषु प्यपपत्यते पचेद्द्वियेकेद्वियेपे । तेषा म्पपत्येति अङ्गजपोतजजरायुजसूत्राणि नीक्ष्येव भवन्ती-  
 ति अङ्गजादयश्च जोया अष्टविधकर्मचयादे भवतीति चयादोन् पट्टागिाविशेषान् सामान्यतो नारकादिपदेषुच प्रतिपादयन्नाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥  
 प्रागिव व्याख्येयं नगर चयनं व्याख्यानान्तरेणा कलनं उगचयनं परिपोषण जपन निर्मापण उद्दोरणं करणेना कृष्य दलिकस्यो दगे दानं वेदन मनुभव

जोणिसंगहे पस्यते तंजहा अङ्गया पोयया जाव उल्लिया उववाइया । अङ्गया अङ्गगइया अङ्गागइया प०  
 तंजहा अङ्गए अङ्गएसु उववज्जमाणे अङ्गएहितोवा पोयएहितोवा जाव उववाइएहितोवा उववज्जिज्जा सेचे  
 वणमंङ्गए अङ्गगत्तं विप्पजहमाणे अङ्गगत्ताएवा पोयगत्ताएवा जाव उववाइयत्ताएवा गच्छज्जा । एव पोय  
 यावि । जराउयावि । सेसाणं गइरागई नल्लि । जीवाण मठकम्मपयणीत्तं चिणसुवा चिणतिवा विणिरुसं

उद्भिद उपपातिक देवता नारकी ॥ अङ्गजनी आठगति आठग्रागति कही तेरुहैले अङ्गज अङ्गजमाथी उपजतो अङ्गजमाथी पोतजमाथी यावत् उपपात  
 माथीउपजे तेजते अङ्गज अङ्गजपणो मूकतो अङ्गजपणो पोतजपणो यावत् उपपातपणो जाय ॥ इम पोतज जरायुज पणिवीजानीगति प्रागति नथी ॥ जीवने  
 आठकर्मनी प्रकृति चिणीलेपूर्वे चिणेले चिणस्ये तेकहैले ज्ञानावरणी १ । दर्शनावरणी २ । वेदनी ३ । मोहनी ४ । आयु ५ । नाम ६ । गोत्र ७ । अतराय ८ ॥

उदयइत्यर्थः निर्जरा प्रदेशेभ्यः शटनमिति लाघवार्थमितिदिशन्नाह ॥ एवंचेवत्ति ॥ यथा चयनार्थः कालत्रयविशेषितः सामान्येन नारकादिषु चो  
क्त एव मुपचयार्थोपीतिभावः ॥ एवचिणेत्यादि ॥ गाथोत्तरार्द्धं प्राग्वत् ॥ एण्छेयादि ॥ यत श्वयनादिपदानि पठतः सामान्यसूत्रपूर्वकाः पठेवदडकादिति  
अष्टविधं कर्मणः पुनश्चयादिहेतु मासेव्य तद्विपाकं जानन्नपि कर्मगुरुत्वा त्वयिन्नालोचयतीति दर्शयन्नाह ॥ अठ्ठहीत्यादि ॥ मायीति ॥ मायावान् ॥  
मायति ॥ गुप्तत्वेन मायाप्रधानो ऽतिचारो मायैवताङ्गत्वा विधाय नो आलोचयेत् गुरवे न निवेदयेन् नो प्रतिक्रामे नमिथ्यादुष्कृत दद्यात् यावत्करणात्

तिवा तंजहा नाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं वेयणिज्जं मोहणिज्जं आउयं नामं गोय अंतराइयं । नेर  
इयाणं अठ्ठकम्मपयणीउं चिणसुवा चिणंतिवा चिणिस्संतिवा तजहा नाणावरणिज्जं दरिसणावरणिज्जं वेय  
णिज्जं मोहणिज्जं आउयं नामं गोयं अंतराइयं । एव निरतर जाव वेमाणियाणं जीवाणं अठ्ठकम्मपयणीउं  
उवचिणिंसुवा एवं चिणउवचिणवधउदी रवेयतहनिज्जराचेव । एए त्व चउवीसादंरुगा जाणियत्ता । अठ्ठहिं  
ठाणेहिं माई मायकट्टु नोआलोइज्जा नोपफिक्कमेज्जा जाव नोपफिवज्जेज्जा तजहा करिसुवाहं करेमिवाहं

नारकी आठकर्मनी प्रकृति चिणी चिणेछे चिणस्ये इमज इम निरंतर यावत् वैमानिक २४ दण्डके । जीवने आठकर्मप्रकृति उपचिणी उपचिणेछे उपचि  
णस्ये इमज चिणी उपचिणी वध उदीरणा वेदवा निर्जरा जाणवी एणेप्रकारे २४ दण्डकजाणवा ॥ आठथानके मायी माया करीने आलोवे नही पफिकमे  
नही यावत् तप पफिवजे नही तेकहैछे हुकरतो हवो हुंकरीस एहवूंबोले अपराध करीने स्यु आलोवु पापकरुजहुंतो निवर्त्याविना स्यु अलोवुं आगलि



१० ॥  
६ ॥

नोनिंदेज्जा ॥ ससमचं ॥ नो गरहेज्जा ॥ गुरुसमचं ॥ मोपिउहेज्जा ॥ नव्यावत्तता तिचारान् ॥ नोयिसोहेज्जा ॥ नयिशोधये दतिचारकलंकं शुभभाज  
लेन नो प्रकरणतया अपुनः करणेना भ्युत्तिष्ठे दभ्युत्थानं कुर्यान् नो यथार्हं तपःकर्म प्रायश्चित्तं प्रतिपद्येतेति तद्वथा ॥ करिंसुवाचति ॥ कृतवाया  
१ मपराध कृतत्वात् कथं तस्य निन्दादि युज्यते १ तथा ॥ करेभिवाहंति ॥ सागतमपि तमह मतिचारं करोमौति कोदृशनिवृत्तस्या लोचनादिति  
या २ तथा ॥ करिस्सामिवाहमिति ॥ न युक्त मालोचनादीति १ शेषं स्पष्टं नवर भकीर्त्ति रेकदिग्गामिनी प्रसिद्धि रवर्णी ऽयशः सर्वदिग्गामिनी प्रसि  
द्धिरे एतत्तय मपिदमानं मेमणिषतीति अपनयोवा पूजासत्कारादे रपनयन मेसादिति तथा कीर्त्ति रंशोवा विदमानं मेपरिहास्यतीति उक्तार्थ  
विपर्ययमाह ॥ अहहोत्यादि ॥ सुगमं नवरं मायो त्यासेयायसरण्य मालोचनात्तवसरे पि मागिन आलोचनात्तवसरे सीया मपराधलक्षणां कृत्वा आलोच  
दित्यादि मायिनो छानालोचनादा यय मनर्थो यदत ॥ अस्मिंति ॥ अयं लोको जग गर्हितो भवति सातिचारतया निदितत्वा दितुतांच भीउयि  
गनिलु हो पायडएच्छनदोससयकारो अपपसयंजणंतो जडसधौजोवियंजियद्वत्ति ॥ १ ॥ इत्येकं तथा उपपातो जग गर्हितः किस्विमिकादित्वेने त्युतांच

करिस्सामिवाहं अकितीवामेसिया अ्वन्नेवामेसिया अ्वणएवामेसिया कितीवामेपरिहायइस्सइ जसेवामे  
परिहाइस्सइ । अठहिंठाणेहिं माई मायकहु अलोएज्जा जाव पफिवज्जेज्जा तंजहा माइस्सणं अस्सिलोणे

करीस तो स्युआलोयुं आलोवे नही माहरी अकीर्त्तिथास्ये अवर्णवाद् माहरोथास्ये अजस माहरी पूजा सत्कारनो नासथाय माहरी कीर्त्तिळे तेहाण पाम  
स्ये माहरो जश देशपरदेशमा तेहीन पामस्ये ॥ आठ थानके मायी अनाचारी आलोवे यावत् तप पक्रियजे तेकहेळे माया सहितने इहलोके गह्वानिदा

तवतेणेवयतेणे रूवतेणेयजोनरे आयारभावतेणेय कुट्त्वईदेवकिंविंसंति ॥ १ ॥ द्वितीयं आजति स्तत श्युतस्य मनुष्यजन्मगर्हितजात्यैश्वर्यरूपादिरहित  
तयेति उक्तं च तत्तोविसेवइत्ताणं लभ्मतीएलमूयमं मरगंतिरिक्खजोणिवा वोहोजत्यसुदुल्लहत्ति ॥ १ ॥ तृतीय तथा एकामपि मायी माया भतिचाररूपाङ्ग  
त्वा यो नालोचये दित्वादि नास्ति तस्या राधना ज्ञानादिमोक्षमार्गस्ये त्यनर्थइति उक्तं च लज्जाएगोरवेयण बहुस्सुयमएणवाविदुच्चरिय जेणकहिंतिगु  
रूण नहुतेभाराहगाहीति ॥ १ ॥ तथा नवितंसच्छविस वदुप्पउत्तोयकुणइवेयालो जतंचदुप्पउत्त सप्पोव्वपमाइओकुडो ॥ १ ॥ जकुणइभावसत्तं अ  
णडियउत्तमइकालंमि दुल्लहवोहोयत्त अणंतसंसारियत्तवेत्ति ॥ २ ॥ चतुर्थं तथा एकामपीत्यादिना अर्थप्राप्तिरुक्तेति यदाह उद्धरियसव्वसत्तो भत्तप  
रिन्नाएधणियमाउत्तो मरणाराहणजुत्तो चदगवेज्झंसमाणेइत्ति ॥ १ ॥ पचममिति एव बहुत्वेनापि अनालोचनादा वालोचनादीवा नर्थो ऽर्थश्च षष्ठसप्तमेत

गरहिणु नवइ उववाएगरहिणुनवइ आयाईगरहियाजवइ एगामवि । माई मायंकहु नोआलोइज्जा जाव  
नोपफिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा एगामवि । माईमायकहु आलोएज्जा जाव पफिवज्जेज्जा । अत्थि तस्स  
आराहणा वज्जुनवि । माईमायंकहु नोआलोएज्जा जाव नोपफिवज्जेज्जा नत्थितस्स आराहणावज्जुनवि माई

होय इम जाणी आलोवे यावत् तप पफिवजे नही तिहाथी पणि त्रीजेनवे नर तिर्यचमां जाय तिहा गहाँ पामे एके । मायी माया अतीचाररूप करीने  
आलोवे नही यावत् तप पफिवजे नथी तेहने आराधना एके पणि । मायी मायावी अतीचाररूप माया करीने आलोवे तप पफिवजे तेहने आराधना  
छे तेआराधक घणो । मायी माया करीने आलोवे नही यावत् तप पफिवजे नही तेहने आराधना घणी पणि मायाकरीने आलोवे यावत् तेहने आराध

॥ या चार्थोपाध्यायस्या मे प्रतिशेष ज्ञानदर्शनं समुत्पद्येत सच सामानोक्तयेत् ॥ मार्द्वेण ॥ मेघद्रव्युल्लेखेने त्वेव भया दासीचयतीति अष्टमं ८ शेषं सूत्रं प्रथं लो  
क उपपात आज्ञातिथ गृहीतेत्यस्य पदस्य विवरणतया प्रव्रगतव्य तत्र मायो मायातुल्येतीह कौटुशी भवे द्रव्यते इति वाक्यशेषो दृश्यः ॥ सैदिति ॥ यो  
भवतोपि प्रसिद्धः ॥ यथेति ॥ दृष्टातोपन्यासे ॥ नामएत्ति ॥ सभावनाया मलकारेवा अथ आकरो लोहाकरो यत्र लोह धातयतइति रूपप्रदर्शने वा विकल्पे  
तिला धान्यविशेषा स्तेषामवयवाप्रपितिला स्तेषा मग्नि स्तद्वहनप्रवृत्तो वह्नि स्थित्वाग्नि रेव शेषा अग्निविशेषा नवर तृपाः कोद्रवादीना ॥ वसं ॥  
यमादीनां कडगरो नलः शुपिरशराकारः दलानि पत्राणि शुण्डिता पिटिकाकाराणि सुरापिण्डस्तेदनभाजनानि कंवयोपा सभाभ्यंते तासां ॥ लिं

मायकटु शालोएज्जा जाव अत्यि तरुस शाराहणा । शायरियउवज्जायरुस वामेअइसेरो नाणदसणेसमुप्पज्जि  
ज्जा सेय ममं शालोएज्जा । मार्द्वेणएसे मार्द्वेण मायंकटु सेजहानामए श्यागरेइवा तवागरेइवा तउअगरे  
इवा सीसागरेइवा रुप्पागरेइवा सुवस्सागरेइवा तिलागणीइवा तुसागणीइवा वुसागणीइवा नलागणीइवा  
दलागणीइवा सुफ्रियालिंठाणिवा नफ्रियालिंठाणिवा गोलियालिंठाणिवा कुंनारावाएइवा कवेल्लुयावाएइवा

नाळे आचार्य उपाध्यायने मुक्कयी अतिशेष ज्ञान दर्शन उपने थके तेमुक्कने देखसे जे एमायीळे एम जाणी आलोवे ॥ ८ ॥ मायाकरीने तिहा जिम  
दृष्टात लोहार लोह धमे तात्रोगाले सोनार तरुग्रानो धमनार सीसानो धमनार रूपानो धमनार सुवर्णानो धमनार जेहवी तिलनी अगनि जेहवी  
होय तुस शालिना फीतरानी अगनि बूस बूस तेहनी अगनि नल पोलासराकार तेहनी अगनि पानकानी अगनि मदिराने लोट स्वेदकरे तेहना

रक्षाणि ॥ चुन्नोष्ठानानि सभायन्ते उक्तञ्च दृढैः गोलियसीडियभंडियलिंक्षाणि ॥ अग्ने रायया अन्यैस्तु देशभेदरूढ्या एते पिष्टपाचकान्यादिभेदाइति  
 उक्तं मया प्येतदुपजीव्यैव सभावितमिति तथा भडिकाः स्थाव्य ताएव महंत्यो गोलिकाः प्रतीत चैतच्छब्दद्वय ॥ लिंक्षाणि ॥ तान्येवेति कुम्भका  
 रस्यापाको भांडपचनस्थान कवेज्जकानि प्रतीतानि तेषां मापाकः प्रतीतएव ॥ जतवाडचुल्ली ॥ इक्षुयत्रवाटकचुल्ली ॥ लोहारवसाणवत्ति ॥ लोहकार  
 स्या बरौषा भ्राष्ट्रा ॥ आकरणीति ॥ लोहकारांवरौषाइति तप्ता न्युष्णानि समानि तुल्यानि जाज्वल्यमानत्वात् ज्योतिषा वज्जिना भूतानि जाता  
 नि यानि तानि समज्योतिर्भूतानि किशुकफुल्लं पलासकुसुमं तक्षमानानि रक्ततया उल्का अग्निपिडा स्तम्बहस्ताणीति प्राचुर्यव्यापकं विनिर्मुचंतीति  
 भृगार्थे दिवचनं। अंगारा लघुतरा अग्निकणा स्तम्बहस्ताणि प्रविकिरंति २ ॥ अतोअतोक्तियायतित्ति ॥ अतरतः क्रियया धायंति इंधनैर्दीप्यतइति दृष्टा

इहावाएइवा जंतवाडचुल्लइवा लोहारं वरीसाणिवा तत्ताणिसमजोइजूयाणि किंसुयफुल्लसमाणाणि उक्तास  
 हस्साइं विणिंमुयमाणाइ २ जालासहस्साइ पमुंचमाणाइं २ इंगालसहस्साइं पविकिरमाणाइं २ अतो २  
 क्रियायंति एवामेव मायी मायंकटु अतो २ क्रियाइ । जइवियणं अन्ते केइवदंति तपियण माई जाणइ

जाजन ते लोटनी अग्नि मोटी हांझीलीमदिराकरनी अग्नि तेहनी कुन्नारना जाळानी अग्नि कुवेलूफा चून्नानी तानी जाठीनी अग्नि ईटवानी  
 अग्नि सेलझीना वाळनी चूळि गोलकरनी अग्नि लोहारना चरीखा जाठी तेहनी अग्नि ए सर्व तप्या जाज्वल्यमान ज्योति अग्नि रूपथया के  
 सूळानी फूलसमान राता थया अग्निना पिळयी हजारेंगमें उल्का मोटा अग्निकण मूकता २ ज्वालासहस्त्रने मूकता २ अंगारा लघुतर अग्निकण

न्तो दाष्टातिकस्त्वेव मेवेत्यादि पथा तापाग्निना धावति जाज्व गते ॥ अहमेवेति ॥ अह मेवो ऽभिशंके ऽहमेवो भिशंकेइति एभि रहं दीषका  
रितया आशके सभाध्येइति उक्तहि निश्चसकियभीप्रो गमोसव्यस्सखलियचारितो साहुजणस्सप्रवमप्रो मप्रोविपुणदोगइजाइ ॥ २ ॥ अनेना नालो  
चकस्या य लोको गर्हितो भवतीति निदर्शित ॥ सेणततस्सेत्यादिना ॥ पाठातरेण ॥ मार्डेणमायकदुइत्यादिनावा ॥ उपपातो गर्हितो भवतीति द  
र्श्यते ॥ कालमासेति ॥ मरणमासे उपलक्षणत्वा अरणदिवसे मरणमुल्लंघते ॥ कालकिष्ठा ॥ मरणकृत्वा अन्यतरेषु व्यन्तरादीना लोकेषु देवजनेषु मध्ये  
॥ उववत्तारोत्ति ॥ वचनव्यत्यया दुपपत्ताभवतीति नो महत्किेषु परिवारादिच्छेदा नो महाद्युतिषु शरीराभरणादिदोह्या नो महानुभागेषु विक्तिया  
दिशक्तितः नो महाबलेषु प्राणवत्सु नो महासौख्येषु नो महेशोखेषु नो दूरगतिकेषु न सोधर्मादिगतिकेषु नो चिरस्थितिके श्वेकवादिसागरोपम  
स्थितिकेषु गापिच ॥ से ॥ तत्र देवल्लोकेषु वाह्या अपत्यासन्ना दासादिवत् अभ्यन्तरा प्रत्यासन्ना पुत्रकलत्रादिवत् परिण त्परिवारो भवति सोपि नो आद्रि

अहमेसे अजिसंकिज्जामि २ मार्डेणं मायकहु अणालोइयपफिक्कते कालमासे कालकिच्चा अस्सतरेसु देवल्लोगेसु  
देवत्ताए उववत्तारो जवति तं० नोमहद्विएसु जाव नोदूरगइएसु नोचिरठिईएसु सेण तत्थ देवे जवइ नोमहद्वि

ते हजारने विखेरता विखेरता २ मांहि इंधनें दीपती अगनि होय ए दृष्टाते मायी मायाकरी पथात्तापनी अग्निमाहिं बलें बली चिंतवे जेवली  
कोई बीजाकहे परकहे तेमते पणि मायी जाणेतु ए माणसें पापनो करनार सजवीये नित्यसतोपरहे ॥ मायी मायाकरीनें आलोयांविना पफिकम्या  
विना कालमासे कालकरीने अन्यतर व्यन्तरादिदेवल्लोकनें विषे देवतापणे ऊपजे तेकहे छे । महर्षिकमाहि नहीं यावत् दूर सुधर्मादिदेवल्लोकमा

यते नादर करोति स्वामितया, नाभिमन्यते नो नैव महच्च तदर्हं च योग्य महार्हं तेना सनेनो पनिमंत्रयते ॥ किंवहुना दौर्भाग्यातिशयात् ॥ से ॥ तस्य या  
वत् चतु पच देवाभाषणनिषेधाया भ्युत्तिष्ठति प्रयतते कथ ॥ माबहुमित्यादि ॥ अनेनो पपातगर्हीता आज्ञातिगर्हितत्वंतु ॥ सेणमित्यादिना ॥ च  
हे ॥ सेत्ति ॥ सो नालोचक स्ततो व्यन्तरादिरूपा देवलोका दवधे रायुःक्षयेणा युःकर्मपुद्गलनिर्जरणेन भवक्षयेणा यु कर्मादिनिबधना देय पर्यायनाशेन  
स्थितिक्षयेण आयुषः स्थितिवधनयेण देवभवनिबधनयेण कर्मेणावा अनन्तरमायुः क्षयादेः समनन्तरमेव चव यवन क्षुत्वा इहैव प्रत्यक्षे मानुष्यके भवे

ए जाव नोचिरठिईए जावियसे तत्य बाहिरप्लंतरिया परिसाजवति सावियणं नोआठाइ नोपरियाणइ  
नोमहरिहेण आसणेण उवनिमतेइ ज्ञारांपियसे ज्ञासमाणस्स जाव चत्तारि पच देवा अणुन्नाचेव अण्णुठि  
ति मावज्जदेवेज्ञासनु सेणतनु देवलोगानु आउरुक्कएणं जवरुक्कएण ठिइरुक्कएण अणतरं चयचइत्ताण इहेव  
माणुस्सएजवे जाइ इमाइ कुलाइ जवन्ति तजहा अतकुलाणिवा पतकु० तुच्छकुलाणिवा दरिद्रकुलाणिवा

नहीं घणा आज्ञाखानी थिति नही ते तिहां देवथाय केहवो मोटी ऋद्धिनो धणी नहीं यावत् चिरस्थितिनो धणी नहीं जेवली तिहा बाह्य अनें अ  
न्यतर देवतानी परषदाळे ते पणि तेहनें आदर नकरे आव्यो जाणे पणि नहीं मोटानें योग्य आसने करी निमंत्रणा करे जे आवो आसने वेसो  
वचनपणि तेहने नबोलतो यावत् चार पाच देवता अणकहेज उठे अरे देवता घणु बोलमा छानोरहे इमकहें ॥ २ ॥ ते देवलोकथी आयुक्षय पामें  
जवनो क्षयथयो थितिनो क्षयथयो अतररहित चवे चवीने आहीज मनुष्यजवने विषे जे एहवा कुलहोय ते कहैछे अतकुल चरट क्षीयाना प्रातकुल

पुंस्तया प्रत्याजायतइतिमंजुधः केषु कुलेषु कुंटुबकेषु अन्येषु वा किविधेषु यानी मानि वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षाणि भवंति तद्यथा अंतकुलानि वरुण-  
 छिमकादीनां प्रान्तकुलानि चण्डालादीनां तुच्छकुलानि अल्पमानुषाणि अगम्योराशयानि वा दरिद्रकुलानि अनीश्वराणि कृपणकुलानि तर्कणवृत्ती-  
 नि नटनगाचार्यादीनां भिक्षाककुलानि भिक्षणवृत्तीनि तथाविधलिङ्गिकानाञ्च तथाप्रकारेषु न्तकुलादिष्वित्यर्थः प्रत्यायाति प्रत्याजायतेवा ॥ पुमेत्ति ॥  
 पुमान् ॥ अणिष्ठेत्यादि ॥ इत्यते स्म प्रयोजनवशा द्दितीष्टः कान्तः कान्तियोगात् प्रियः प्रेमविषयो मनोज्ञः शुभस्वभावः मनसा ऽस्यते गम्यते सौभाग्यतो  
 तुस्मर्यतइति मनोम एतन्निषेधा लज्जतविशेषणानि तथा हीनस्वरः क्लृप्तस्वर स्तथा दीनो दैन्यवान् पुरुष स्वात्मज्वन्धित्वात् स्वरोपिदीनः सस्वरो यस्यसतथा

किविणकु० जिस्कागकु० तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पञ्चायाइसेण तत्थ पुमेज्जवइ । दुरूवे दुवन्ते दुगंधे  
 दुरसे दुफासे अणिष्ठे अकंते अप्पिए अमणुन्ते अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिष्ठस्सरे अकंतस्सरे अप्पि  
 यस्सरे अमणोन्तस्सरे अमणामस्सरे अणाएज्जवयणपञ्चायाए जावियसे तत्थ बाहिरप्पतरिया परिसा जवइ

चाण्डालादिकनां तुच्छकुल अल्पमनुष्यना दरिद्रनाकुल जिखारीना कुल भिक्षाकुल जिज्ञावृत्तिना कृपणना कुल तथाप्रकारना एहवा माटा कुलनेवि  
 ये पुरुषपणे ऊपजे ते तिहा पुरुष होय दुष्टरूपनो दुष्ट मांठोवर्ण मांठो गंध मांठो रस मांठो फरस अनिष्ट अकांत अप्रिय अमनोज्ञ मनमां नगमे  
 हीनस्वर दीनस्वर अनिष्टस्वर अकांतस्वर अप्रीतिकारी स्वर अमनोज्ञस्वर अननामस्वर हीनस्वर दीनस्वर अनिष्टस्वर अनादेयवचननो धणी ऊपजे ॥  
 जे वली ते तिहा बाह्य अन्यतरपर्षदा होय ते पणि तेहने आदर नकरे आव्यो पणि नजाणे मोटानें योग्य एहवे आसणेकरी निमन्त्रे नहीं जापा

अनादेयवचनश्चासौ प्रत्याजातश्चेति अथवा प्रथमैकवचनलोपा दनादेयवचनो भवति प्रत्याजातः सन्निति शेषं कण्ठं यावत् ॥ भासञ्चोत्ति ॥ अनेन प्रत्याजाति  
गर्हितत्वमुक्तमिति मायोल्यादिना आलोचकस्य हलोकादिस्थानत्रयागर्हितत्वमुक्तविपर्ययस्वरूपमाह चारेण विराजितं वक्ष उरो यस्य स तथा कट  
कानि प्रतीतानि त्रुटितानि बाह्याभरणविशेषा स्तैः स्तम्भितौ स्तब्धौ कृतौ भुजौ बाह्व यस्य स तथा ॥ अगदेत्यादि ॥ कर्णविव पीठे आसने कुण्डलाधार  
त्वा कर्णपीठे मृष्टे घृष्टे गण्डतले च कपोलतटे कर्णपीठे च यन्माभ्यां ते मृष्टगण्डतलकर्णपीठे ते च ते कुण्डले चेति विशेषणोत्तरपदः प्राक्तनत्वात्कर्मधारयः  
अगदे च केयूरे बाह्याभरणविशेषावित्यर्थः कुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठे च धारयति यः स तथा अथवा अगदे च कुण्डले च मृष्टगण्डतले कर्णपीठे च कर्णाभर  
णविशेषभूते धारयति यः स तथा तथा विचित्राणि विविधानि हस्ताभरणा न्यगुलीयकादीनि यस्य स तथा तथा विचित्राणि वस्त्राणि वा भरणानि च

सावियणं णोऽप्याहाइ नोपरियाणाइ नोमहरिहेणं आसणेणं उवनिमंतेइ आसंपियसे आसमाणस्स जाव चत्ता  
रि पंचजणा अणुत्ताचेव अणुत्ति मावज्जं अज्जाउत्तो आसत्तं माईणं मायंकहु आलोइयपक्किक्कते काले  
किच्चा अस्सतराणुसु देवलोणुसु देवत्ताए उववत्तारो जवति तंजहा महिहिणुसु जाव चिरिठिईणुसु सेणं तत्थ  
देवे जवइ महिहिणु जाव चिरिठिईणु हारविराइयवत्थे कक्कतुक्कियथंनियज्जुए अंगयकुंळलमठगळयलकस्स

पणि तेहनें वोलता यावत् चार पांचजणा अणकहे ऊठे हेमांठापुन्यनाथणी घणुं मबोल २ मायी मायाकरीनें आलोई पक्किमीने कालमासें का  
लकरीने अन्यतर सुधर्मादिदेवलोके देवतापणे उपजे ते मोटी ऋद्धिना धणीमाहिं चिरस्थितीनो हारे विराजमान छे वक्ष हृदय कटकत्रुटिते शय्या



यस्य वस्त्राण्येववा भरणानि भूषणानि अवस्थाभरणानि अवस्थोचितानीत्यर्थो यस्य स तथा विचित्रामालाश्च पुष्पमाला मौलिश्च शेखरो यस्य विचित्र  
मालानावा मौलि र्यस्य स तथा कल्याणकानि मङ्गल्यानि प्रचुराणि मूल्यादिना वस्त्राणि परिहितानि निवसितानि येन तान्येववा परिहितो निवसि  
तो य स तथा कल्याणकंच प्रवरच पाठान्तरेण प्रवरगन्धच्च माल्य मालाया साधुपुष्पमित्यर्थः अनुलेपनञ्च श्रीखण्डादिविलेपनयो धारयति स तथा  
भास्वरा दीप्रा वीदीशरीर यस्य स तथा प्रलवा या वनमाला आभरणविशेष स्ता न्धारयति य' स तथा दिव्येन स्वर्गसवन्धिना प्रधानेनेत्यर्थो वर्णादिना  
युक्तइति गम्यते सघातेन सहननेन वज्रर्षभनाराचलक्षणेन सस्थानेन समचतुरस्रलक्षणेन ऋद्ध्या विमानादिरूपया युक्त्या अन्यान्यभक्तिभि स्तथाविधद्र  
व्यप्रयोजनेन प्रभया प्रभावेन माहात्म्येनेत्यर्थ ऋद्ध्या प्रतिबिम्बरूपया अर्चिषा शरीरनिर्गततेजोज्ज्वलाया तेजसा शरीरस्य काम्या लेश्यया न्तःपरिणा

पीठधारी विचित्रहत्याञ्जरणे विचित्रवत्याञ्जरणे विचित्रमालामउलीकल्लाणगपवरगंधमल्लाणुलेवणधरे ज्ञा  
सुरवोदीपलववस्त्रमालधरे दिव्येणवन्तेणं दिव्येणंगधेणं दिव्येणरसेण दिव्येणफासेणं दिव्येणसघाएणं दिव्येणसं  
ठाणेणं दिव्याएइद्वीए दिव्याएजुत्तीए दिव्याएपज्ञाए दिव्याएढायाए दिव्याएञ्च्यञ्चीए दिव्येणंतएणं दिव्याएलेसाए

छे भुज जेहनी बहिरखा कुल्ले घसाता गल्लस्थल कानपीठे धस्या विचित्र हस्तना आभरण विचित्र वस्त्रना आञ्जरण विचित्र माला सुगटछे कल्याण  
कारी प्रधान वस्त्रपहिस्स्याछे कल्याणकारी प्रवर गध माला फूल विलेपननो धरनार देदीप्यमान शरीरप्रमाण लाबी वनमाला भूमणु धस्योछे दि  
व्यवर्णेकरी दिव्यगधेकरी दिव्यरसेकरी दिव्यफरसेकरी दिव्यसघयणेकरी दिव्यसस्थानेकरी दिव्यरिद्धिकरी दिव्यद्युतिकरी दिव्यप्रज्ञाकरी दिव्यल्लाया

मरूपया 'शुक्लादिकया उद्योतयमानः स्थूलवस्तूपदर्शनतः प्रभासयमानः सु सूक्ष्मवस्तूपदर्शनत इति एकार्थिकत्वेऽपि चैतेषां त्रयोषः उक्कर्षप्रतिपादकत्वेना  
 भिहितत्वादिति महता प्रदानेन बृहतावा रवेणेतिसंबन्धः आहतो नुबडो रवस्यै तद्विशेषणं नाट्यं नृत्यं तेन युक्तं गीतं नाट्यगीतं नृत्तं वादितानि च तानि  
 शब्दवन्ति कृतानि तत्रौच वीणा तलौच हस्तौ तालाद्यः कसिकाः ॥ तुडियन्ति ॥ तूर्याणि च पटहादौ निवादित्रतश्चोतलतालतूर्याणि तानि च तथा घनोमेघ  
 स्तदाकारो यो मृदङ्गो ध्वनिगान्धोर्यसाधर्म्यात्सचासौ पटुना दजेण प्रवादितश्च यः स घनमृदङ्गपटुपवादितः सचेति हं ब स्तेषां रवः शब्द स्तेन करणभूतेन  
 अथवा ॥ आह्वयन्ति ॥ आख्यानकप्रतिबद्धं यं नाट्यं तेन युक्तं यद्गीतं शेषं तथैव इह च मृदङ्गग्रहणं तूर्येषु मध्ये तस्य प्रधानत्वात् व्यतुच्यते ॥ महलसाराइतूरा  
 इति ॥ भोगार्हा भोगाः शब्दादयो भोगभोगाः स्तान् भुञ्जानो ऽनुभवन् विहरति क्रीडति निष्ठतिवेति भाषा मपि च ॥ से ॥ तस्य भाषमाणस्याः स्ता मेको द्वौ वा  
 सौभाग्यातिशयत्वात् याव चत्वारः पचवा देवाः अनुक्ता एव केनाप्यप्रेरिता एव भाषणप्रवर्त्तनाय बहोरपि भाषितस्य स्वबहुमतत्वख्यापनाय वा भुक्तिष्ठन्ति

दसदिसान् उज्जोएमाणे पन्नासेमाणे महयाहयणहृगीयवाइयततीतलतालतुक्रियघणमुङ्गपटुपवाइयरवेणं  
 दिह्वाइंजोगाइं जुंजमाणे विहरइ । जावियसे तस्य बाहिरिपुतरिया परिसा जवइ सावियणं आढाइ परिया  
 णइ महारिहेणं आसणेणं उवनिमंतेइ ज्ञासपियसे ज्ञासमाणस्स जाव चत्तारि पच देवा अपुत्ताचेव अपु

कातेकरी दिव्यअर्चियेकरी दिव्यकातिविशेष तेजेकरी दिव्यलेइयायेकरी दशेदिशं उद्योतकरतो मोटो आहत नाटक गीत वादित्र तंत्री वीणा तल  
 ताल त्रुटित घन मादल पटवको पटहो इत्यादि रवः शब्देकरी दिव्य जोग जोगवतो विचरे वली जे तिहा बाहिरनी अन्यंतरनी पर्वदाळे तेपणि

ब्रुवते च ॥ बहुमित्यादि ॥ अभिमत मिदं भवदीयभाषणमिति हृदय मनेना लोचकस्यो पपातागर्हितत्व सुक्ता मेतद्गणना दिहलोकागर्हितत्वमपि सद्युता ॥ ट ॥  
 द्वादाश लोचनागुणसद्भावेनवाच्य आलोचनागुणा यैते लहुयाद्वाइयजण्ण अप्परनियच्छिअज्जवसोही दुक्करकरणआढा निस्सत्तत्तचसोहिगुणा ॥ १ ॥  
 इदानीं तस्यैव प्रत्याजात्यगर्हितत्व माह ॥ सेणमित्यादि ॥ अड्डाइति ॥ धनवंति यावत्करणात् दित्ताइ दीप्तानि प्रसिद्धानि दृप्तानिवा दर्प्यवति विच्छि  
 त्रविडलाभवणसयणासणजाणवाहणाइ तत्र विस्तोर्णानि विस्तारवति विपुलानि बह्वनि भवनानि गृहाणि शयनानि पर्यकादीनि आसनानि  
 सिंहासनादीनि यानानि रथादीनि वाहनानिच वेगसरादीनि येषु कुलेषु तानि तथा क्वचिद्वाहणाइत्राइ तिपाठ स्तत्र विस्तोर्णविपुलै भवनानि  
 राकीर्णानि संकीर्णानि युक्तानीत्यर्थ इतिव्याख्येय तथा बहुधनबहुजायरूवरययाइ बहुधनं गणिमधरिमादि येषु तानि तथा बहुजातरूपच  
 सुवर्णरजतस्य रूप येषु तानि तथा पद्या कर्मधारयः आओगपओगसपउत्ताइ आयोगेन द्विगुणादिलाभेन द्रव्यस्य प्रयोगो ऽधमर्णानां दान तत्र स  
 प्रयुक्तानि व्याप्तानि तेनवा सप्रयुक्तानि सगतानि यानितानि तथा विच्छडियपउरभत्तपाणाइ विच्छर्दिते त्यक्ते बहुजनभोजनावशेषतया विच्छर्दिवती वा  
 विभूतिमाती विविधभक्ष्यभोज्यचूष्यलेह्यपेयाद्याहारभेदयुक्ततया प्रचुरे भक्तपाने येषु तानि तथा बहुदासीदासमहिसगवेलगम्भूयाइ बहवो दासीदासा  
 येषु तागि तथा गावो महिष्यश्च प्रतीता गवेलका उरभ्राः स्तेप्रभूताः प्रचुरा येषु तानि तथा पद्याकर्मधारयः अथवा बहवो दास्यादयः प्रभूता जाता

ठैति बज्रदेवे ज्ञासउ २ सेणं तउ देवलोयाउ आउस्कएणं ३ जाव चइत्ता इहेव माणुरसए जवे जाइं इमा

तेहने आःइरदे आव्यो जाणे सोटानेयोग्य आसने करी निमंत्रे ज्ञापापणि भाषे यावत् चारपांचदेवता अणकहेज ऊठे घणु २ देव बीलो २ जेते

येषु तानि तथा बहुजनस्या परिभूतानि अपरिभवनीयानीत्यर्थं स्वतीयार्थेवा षष्ठी ततो बहुजनेना परिभूतानि अतिरस्ततानि ॥ अज्जउत्तेत्ति ॥ आ  
 र्ययोः अपापकर्मवतोः पित्रोः पुत्रो यः स तथा अनेना लोचकस्या नालोचकप्रत्याजातिविपर्यय उक्तः कृतालोचनाद्यनुष्ठानाश्च सवरवन्तो भवतीति संवर  
 तद्विपर्ययस्त मसवरंचाह ॥ अठविहेत्यादि ॥ सूत्रद्वय कण्ठ्य अनंतर कायासवर उक्तः कायश्चा ष्टस्पर्शी भवतीति स्पर्शसूत्रं कण्ठ्यञ्चेति स्पर्शाश्चाष्टावेवेति

इं कुलाइं जवन्ति आढाइ जाव बज्जजणस्स अपरिञ्चूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पञ्चायाइ सेणं तत्थ  
 पुमेज्जवइ सुखवे सुवन्ते सुगंधे सुरसे सुफासे इठे कत्ते जाव मणामे अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे आदेज्ज  
 वयणपञ्चायाए जावियसे तत्थ वाहिरप्पतरिया परिसा जवइ साविय आढाइ जाव बज्जअज्जउत्ते जास  
 न २ । अठविहे संवरे पस्सत्ते तंजहा सोइदियसंवरे जाव फासिदियसंवरे मणसंवरे वयसवरे कायसंवरे ।  
 अठविहे असंवरे पन्तत्ते तंजहा सोइदियअसंवरे जाव कायअसंवरे । अठफासा पस्सत्ता तंजहा कस्सकळे मा

देवलोकयो आज्ञाने ज्ञये ३ यावत् चवीने इहाज मनुष्यनेजवे जे एहवा कुल होय आढ्य यावत् घणा लोकने अपरिञ्चूत तथाप्रकारना कुलनेवि  
 पे पुरुषपणे उपजे ते तिहा पुरुष होय सुखप सुवर्ण सुगंध सुस्पर्श इष्ट कात यावत् मनमान्यो अदीनस्वरनो यावत् मनोहरस्वर आदेयवचननो धर्मी  
 उपजे जे वली तिहा वाहिर अन्यतरनी पर्यदा होय तिहां तपणि ते आदरकरे यावत् घणु २ उत्तमसाहिब बोले ॥ आठप्रकारे सवर कह्यो तेकहे  
 छे ओत्रेद्रीनो सवर यावत् फरसनेद्रीनो सवर मननोसवर वचननोसवर कायानोसवर ॥ आठप्रकारे असवर कह्यो ते० ओत्रेद्रीनो असंवर यावत् ५

लोकस्थिति रिय मतो लोकस्थितिविशेषमाह ॥ अष्टविहेत्यादि ॥ कण्ठा एव ॥ जहाळ्ठ्याणेत्यादि ॥ तत्र चैव ॥ उदधिपइठियापुढवी ॥ घनोदधावि  
 त्यर्थ ३ ॥ पुढधिपइठियातसाथावरापाणा ॥ मनुष्यादयइत्यर्थ ४ ॥ अजोवाजीवपइठिया ॥ शरीरादिपुढलाइत्यर्थ ५ ॥ जीवाकम्मपइठिया कर्मवशवर्त्ति  
 त्वादिति ६ ॥ अजोवाः पुढलाकायादयो जीवैः संगृहीताः स्वीकृता अजीवान्विना जीवानां सर्वव्यवहाराभावात् ७ ॥ जीवाः कर्मभिर्ज्ञानावरणादिभिः  
 संगृहीता बद्धाः ऽ षष्ठपदे जोधोपग्राहकत्वेन कर्मण आधारताविवक्षिते हतु तस्यैव जीवबन्धनतेतिपिशेष इदं च लोकस्थित्यादि स्वसम्पदुपेतगणिवचनाद्  
 ज्ञायतइति गणिसपदमाह ॥ अष्टविहागणिसपयेत्यादि ॥ गणः समुदायो भूया नतिशयवान् वा गणाना साधूनावायस्यास्ति स गणौ आचार्य स्तस्य  
 सम्पत् समृद्धिर्भावरूपा गणिसम्पत् तत्रा चरण माचारो गृहान सएव सप हिभूति स्तस्यवा सम्पत् सम्पत्तिः प्राप्तिः राचारसम्पत् साच चतुर्धा सयमधुव  
 योगयुक्तता चरणे नित्यं समाध्युपयुक्ततेत्यर्थः असम्पग्रह आत्मनो जात्याद्युत्सेकरूपग्राहवर्जनमितिभावः २ अनियतवृत्ति रनियतविहारइत्यर्थ ३ वृद्धशीलता

उए गुरुए लज्जाए सीए उसिणे निम्हे लुक्के । अष्टविहा लोगठिई पस्सत्ता तजहा आगासपइठिएवाए वाय  
 पइठिए उदही एवं जहा ठठाणे जाव जीवाकम्मपइठिया अजीवाजीवसंगहिया जीवाकम्मसंगहिया । अ  
 ठविहा गणिसंपया पस्सत्ता तंजहा आगारसंपया सुयसंपया सरीरसंपया वयणसंपया वायणासपया मइ

कायानो असवर ॥ आठ फरण कइया ते० कर्कश मूदु गुरू लघु शीत उष्ण स्निग्ध लूखो ॥ आठप्रकारे लोकास्थिति कही ते० आकाशप्रतिष्ठित वायूछे  
 वायूप्रतिष्ठित उदधि समुद्र जिम ठठाणे कइयोछे यावत् जीव कर्मप्रतिष्ठित अजीव जीवसंग्रहीतछे जीव कर्मग्रहियाछे ॥ आठप्रकारे आचार्यनी सपदा

वपुर्मनसो निर्विकारतेतियावत् ४ एवं श्रुतसम्पत् सापि चतुर्धा तद्यथा बहुश्रुतता युगप्रधानागमतेत्यर्थः १ परिचितसूत्रता २ विचित्रसूत्रता स्वसमया  
दिभेदात् ३ घोषविशुद्धिकरता च उदात्तादिविज्ञानादिति शरीरसपचतुर्धा आरोहपरिणाहयुक्तता उचितदैर्घ्यविस्तरताइत्यर्थः १ अनववप्यता अलज्ज  
नीयागतेत्यर्थः २ परिपूणेन्द्रियता ३ स्थिरसहनमताचेति ४ वचन सम्पच्चतुर्धा तद्यथा आदेयवचनता १ मधुरवचनता २ अनिश्रितवचनता मध्यस्थवच  
नतेत्यर्थः ३ असदिग्धवचनताचेति वाचनासंप चतुर्धा तद्यथा विदित्वोद्देगन विदित्वासमुद्देगन परिणामिकादिक गिष्यज्ञात्वित्यर्थः २ परिनिर्वाप्यवा  
चना पूर्वदत्तालापका नधिगमय्य गिष्य पुनः सूत्रदानमित्यर्थः अर्थनिर्वापणा अर्थस्य पूर्वापरसांगत्येन गमनिकेत्यर्थः ४ मतिसंप चतुर्धा अवग्रहेहापा  
यधारणाभेदादिति ४ प्रयोगसम्प चतुर्धा इह च प्रयोगो वादविषयस्त्वामपरिज्ञान वादादिसामर्थ्यविषये पुरुषपरिज्ञानं किंनयोयं वाद्यादि २ क्षेत्रपरि  
ज्ञान ३ वस्तुपरिज्ञानं वस्त्वह वादकाले राजामात्यादि ४ संग्रहः स्लोकरणं तत्र परिज्ञाज्ञान नामाभिधानं मष्टमीसम्पत् साच चतुर्विधा तद्यथा बाला  
दियोग्यक्षेत्रविषया १ पीठफलकादिविषया २ यथासमं स्वाध्यायभिवादिभिप्रा ३ यथोचितप्रतिप्रतिपद्याचेति ४ आचार्याहि गुणरत्ननिधानमिति  
निधानप्रस्तावा त्रिधिव्यतिकरमाह ॥ एकेत्यादि ॥ एकेको महानिधि चतुर्वर्त्तिसवधी अष्टचक्रवालप्रतिष्ठानो ऽष्टचक्रप्रतिष्ठितो मज्जूपाव तत्स्वरूपं चेदं

संपया पयोगसंपया संग्रहपरिस्त्राणामष्टमा । एगमेगेणं महानिही अष्टचक्रवालपइठाणे अष्टअष्टजोय

कही ते कहैछे आचारनी संपदा १ श्रुतसंपदा २ शरीरनी संपदा ३ वचनसंपदा ४ वाचनानी संपदा ५ मतिसंपदा ६ प्रयोग वादकरवानी संपदा ७  
संग्रहप्रतिज्ञा अगीकारकरवो वस्त्र पात्र क्षेत्र पीठ विनयादिकनो संग्रहकरे ॥ एकेको महानिधान आठ २ चक्रप्रतिष्ठ तेणे प्रतिष्ठित पेटीछे ते आठ

नवजोयणविच्छिन्ना वारसदीक्षासमूहियाअड्ड जक्कसहसपरिवुडा चकडपश्रियानववी ॥ १ ॥ द्रव्यनिधानयत्तयतोत्ता अण भावनिधानभूतसमितिसरु  
पमाह ॥ अइसमिईत्यादि ॥ सम्यगितिः प्रवृत्तिः समितिः ईर्याया गमने समिति श्चुर्व्यापारपूर्वतयेतो र्यासमितिः १ एवभाषायां निरुज्जभाषणत एष  
णायासुद्धमादिदोषवर्जनत आदाने गरुणे भांडमानाया उपकरणमानाया भांडस्य वा वस्तुपकरणस्य मृन्मयादिपानस्यवा साधुभाजनविशेषस्य निचे  
पणायास समितिः सुप्रत्यपेक्षितसुप्रमार्जितकमेणेति उचारणयणखेलसिघाणजलाना अपरिष्ठापनिकायां समितिः स्थण्डिलविश्रुतादिप्रमेण खेलो नि  
ष्टीवनं सिघाणोनासिकाक्षेप्तेति मनसः कणलतायां समितिः वाचो ऽकणलत्वनिरोधेसमितिः कायस्य स्थानादिषु समितिरिति समिति पतिवारा दा  
वा लोचना देये त्यालोचनाचार्यस्य लोचकसाधोः प्रायश्चित्तस्यव स्वरूपाभिधानाय सूत्रवयमाह ॥ प्रवृत्तौत्यादि ॥ सुगम नवरं ॥ आचारवति ॥ आनादि

णाइं उह् उच्चत्तेणं प० । अठ समिईनु पणत्तानु तंजहा ईरियासमिई जासासमिई एसणासमिई आयाण  
जक्रमत्तनिस्केवणासमिई उच्चारपासवणखेलजलसिघाणपारिष्ठावणियासमिई वयसमिई कायसमिई । अठ  
हिंठाणेहि संपन्ने अणगारेअरहइ आलोयणापमिच्छित्तए तजहा आचारव आहारव ववहारव उव्वीलए

२ योजन पेटीउंची उंचपणें कही नवयोजन पोहली १२ योजन लाबीळें ॥ आठ समति कही ते कहैळे ईर्यासमिति १ जापासमिति २ एषणासमिति ३  
आदाननित्तेपणासमिति ४ वल्लीनीति लघुनीतिपरठव्यानी समिति ५ मनसमिति ६ वचनसमिति ७ कायसमिति ८ ॥ जयणाये काया रासे ॥ आठ  
बोले संपन्न अणगार योग्यळे आलोयणदेवाने योग्य ते० आचारवत १ । अवधारें अतीचारकहे तेधारे २ । आगमश्रुतादिव्यवहारवत ३ आलोयण

पंचप्रकाराचारवान् ज्ञानासेवनाभ्या माहारवति अवधारणावान् आलोचकेना लोचमानाना मतौचाराणामिति आह च आचारवमाचार पंचवि  
 मुण्डजोयआयरइ आहारवमवहारे आलोइंतस्सतसञ्चंति ॥ ववहारवंति आगमश्रुताज्ञाधारणाजीतलक्षणानां पचाना मुक्तरूपाणा व्यवहाराणां ज्ञाते  
 ति ॥ उव्वीलएत्ति ॥ अपव्वीडयति ॥ विलज्जीकरोति यो लज्जया सम्यगनालोचयन्त सर्वं यथा सम्यगलोचयति तथा करोतीत्यपव्वीडिकः अभिहितं च वव  
 हारववहर आगममाइउसुणइपचविह ओवौलुवगूहंत जहआलोएइतंसञ्चंति ॥ १ ॥ पकुव्वएत्ति ॥ आलोचिते सति यः शुद्धि प्रकर्षेण कारयति स प्रका  
 रीति भणितं च आलोइयमिसोहि जोकारावेइसोपकुव्वीओत्ति ॥ अपरिस्साइत्ति ॥ न परिश्रयति ना लोचकदोषा नुपश्रुत्या न्यस्मै प्रतिपादयति य एवं  
 शीलः सोऽपरिआवीति यदाह जांअन्नस्सउदोसे नकहेइअपरिसाइसोहोइत्ति ॥ निज्जवएत्ति ॥ निर्यापयति तथा करोति यथा गुर्वपि प्रायश्चित्त शिष्यो  
 निर्वाहयतीति निर्यापकइति न्यगादिच निज्जवओतहकणइ निव्वहइजेणपच्छित्तति ॥ अवायदसित्ति ॥ अपाया ननर्थान् चित्तभगानिर्वाहादीन् दुर्भि  
 च्चदीर्वल्पादिक्कतान् पश्यतीत्येवशीलः सम्यगनालोचनायाच दुर्लभवोधिकत्वादी नपायान् शिष्यस्य दर्शयतीत्यपायदर्शीति भणितं च दुर्भिक्षदुव्वलाइ इ  
 हलोएजाणएअवाएओ दसेइयपरलोए दुल्लहवोहित्तसंसारेत्ति ॥ १ ॥ अत्तदोसंति ॥ आत्मापराधमिति जातिकुले मातापितृपत्नी तत्सम्पन्नः प्रायो ऽक्कत्यन्न  
 करोति क्कत्वापि पञ्चात्तापा दालोचयतीति तद्गृहण यदाह जाइंकुलसपन्नो पायमक्किच्चंनसेवइक्किचि आसेविउंचपच्छा तग्गुणओसम्ममालोएत्ति ॥ १ ॥

पकुव्वए अपरिस्सावी णिज्जवए अवायदंसो । अठहिंठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरहइ अत्तदोसं आलोएत्तए

ना लेनारने लज्जारहितकरे ४ । प्रकर्षेसुद्धिकरावे ५ । आलोचना दोष बीजाने नकहे ६ । शिष्य मोटापापनो निर्वाह करेतिम ७ । शिष्यने अणआ



॥ विनयसंपन्नः सुखेनैवा लोचयति तथा ज्ञानसंपन्नो दोषविपाकं प्रायश्चित्तं वा वगच्छति यतोवाचि नाण्येणसंपन्नो दोषविवागं वियाणिश्रीघोरं आलो  
॥ एदसुहृन्वि पायच्छित्तचप्रवगच्छेति ॥ १ ॥ दर्शनसंपन्नः शुद्धोह मित्येव णदत्ते चरित्तसंपन्नो भूय स्त मपराध नकरोति सम्य गालोचयति प्रायश्चित्तं च  
निर्वाहयतीति उक्तं च सुद्धोतहत्तिसम्य सहृद्दं सण्येणसंपन्नो चरणेणसंपन्नो नकुण्डभुज्जोतमवराहति ॥ १ ॥ ज्ञातः परुष भणितो प्याचार्यैर्न रुष्यती  
ति आह च खतोआयरिणहि फरुसभणिश्रीविनविरुसेत्ति ॥ दान्तः प्रायश्चित्त दत्तं पोढु समर्थो भवतीति आह च दंतोसमत्योवोढुं पच्छित्तंजमिह  
दिज्जएतस्सत्ति ॥ आलोयणेत्यादि ॥ व्याख्यात प्रायः जात्यादिमदेषु सत्त्वा लोचनायां न प्रवर्ततइति मदस्थानसूत्रं गतार्थं नवर मदस्थानानि मदभेदा

तजहा जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने विणयसंपन्ने नाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने खते दते । अथविहे पाय  
च्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे पफिकमणारिहे तदुज्जयारिहे विवेगारिहे । विउस्सग्गारिहे तवारिहे च्छेया  
रिहे मूलारिहे । अथ मयठाणे पस्सत्ते तंजहा जाइमदे कुलमदे बलमदे रूपमदे तवमदे सुयमदे लाभमदे

लोव्याना फल देखाणे ८ ॥ आठथानके संपन्नअणगार ते योग्यथाय पोतानो दोष आलोवाने ते० जाते पूरा होयते कुले पूरो विनये संपन्न ज्ञाने  
संपन्न दर्शने संपन्न चारित्रे संपन्न ६ । क्षमा ७ । दमसहित ८ ॥ आठप्रकारे प्रायश्चित्त कहेते ते० आलोअण योग्य १ । पफिकमणायोग्य २ । आलो  
अणपफिकमणा बे योग्य ३ । विवेकयोग्य ४ । काउसग्गयोग्य ५ । तपयोग्य ६ । पर्यायछेदवायोग्य ७ । मूलछेदयोग्य ८ ॥ आठ मदना थानक कहेते  
तेकहेछे जातिमद १ । कुलमद २ । बलमद ३ । रूप ४ । तव ५ । श्रुत ६ । लाभ ७ । ईश्वरमद ८ ॥ आठ क्रियावादी कहेते एक आत्माछे घट २

इहच दोषा जात्यादिमदीनाः पिशाचव इवति दुःखित खेह जात्यादिहीनतापरिभवेच निःसंशयं लभतइति वादिनां हि प्रायः श्रुतमदीभवतीति वादिविशेषान् दर्शयन्नाह ॥ अठ्किरिणत्यादि ॥ क्रियाऽस्तोतिरूपा सकलपदार्थसार्थव्यापिनी सैवा यथावस्तुविषयतया कुक्षिता अक्रिया नञः कुत्सार्थत्वात् ता मक्रिया वदती त्येवंशीला अक्रियावादिनो यथा वस्थितहि वस्त्वनेकान्तात्मक त त्रास्त्येकातात्मकमेव वास्तीति प्रतिपत्तिमतइत्यर्थो नास्तिकादितिभावः एव वादित्वा चैते परलोकसाधकक्रियामपि परमार्थतो न वदन्ति तन्मतवस्तुसत्वेहि परलोकसाधकक्रियाया अयोगादित्यक्रियावादिनएव तइति तत्रैकएवा त्मादिरर्थ इत्येव वदती त्येकवादी दोषत्वच प्राकृतत्वादिति उक्त चैत न्नतानुसारिभिः एकएवहिभूतात्मा भूतेभूतेव्यवस्थितः एकधाबहुधाचैव दृश्यतेजलचन्द्रवदिति ॥ १ ॥ अपर स्वात्मैवास्ति नान्यदिति प्रतिपन्न स्तदुक्तं पुरुषएवेदंसर्वयज्ञूतयच्चभव्य उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥ १ ॥ य देजति य नेजति य ददूरे य दंतिके य दतरस्य सर्वस्या स्य बाह्यनइति तथा नित्यज्ञानविवर्त्तीय चितितेजोजलादिकः आत्मातदात्मकश्चेति सगिरतेपरेपुनरिति ॥ १ ॥ शब्दाद्वैतवादीतु सर्वशब्दात्मकमिदं मित्येकत्वं प्रतिपन्न उक्तञ्च अनादिनिधन ब्रह्म शब्दतत्त्वयदक्षर विवर्त्ततेर्यभावेन प्रक्रियाजगतीयतइति ॥ १ ॥ अथवा सामान्यवादी सर्वमेवैकं प्रतिपद्यते सामान्यस्यै कत्वादित्येव मनेकधैकवादी अक्रियावादिता चास्य सङ्गूतस्यापि तदन्यस्य नास्तीति प्रतिपादनात् आत्माद्वैतपुरुषाद्वैतशब्दाद्वैतादीना युक्तिभि रघटमानाना मस्तित्वाभ्युपगमा चैवमुत्तरवापीति तथा सत्यपि कथचि देकत्वे भावाना सर्वथा ऽनेक

ईसरियामदे । अठ् अक्रियवादी पक्षज्ञा तजहा एकावादी अणिक्कावाई

ध्याप्योक्ते १ । अनेकावादी घणाआत्माभ्यां २ ।

त्व वदती त्वनेकवादी परस्परविलक्षणाएव भावा स्तथैव प्रतीयमाणत्वात् यथारूप रूपतयेति अभेदेतु भावानां जीवाजीवबद्धसुक्तसुखितदुःखिता ॥ त  
 दौना मेकत्वप्रसगात् दीक्षादिवैयर्थ्यमिति किंच सामान्य भगौकृत्यै कत्व विवक्षित परैः सामान्यच भेदेभ्यो भिन्नाभिन्नतया चिन्त्यमान न युज्यते एव म  
 वयवेभ्यो वयवी धर्मभ्यश्चधर्मीत्येव मनेकवादी अस्या प्यक्रियावादित्व सामान्यादिरूपतयै कत्वे सत्यपि भावाना सामान्यादिनिषेधेन तन्निषेधनादिति न  
 च सामान्यं सर्वथा नास्ति अभिन्नज्ञानाभिधानाभावप्रसगा त्वर्वथा वैलक्षण्ये चैकपरमाणु मन्तरेण सर्वेषा मपरमाणुत्वप्रसंगा तथा अवयविन धर्मि  
 णच जिना न प्रतिनियतावयवधर्मव्यवस्था स्या ज्ञेदाभेदविकल्पद्रूपणच कथचि द्वादाभ्युपगमेन निरवकाशमिति २ तथा नन्तानन्तत्वेपि जीवाना मि  
 तान् परिमितान् वदति उत्सन्नभव्यक भविष्यतीति भुवन मित्यभ्युपगमात् मितचा जीव मंगुष्टपर्वमात्रं श्यामाकतदुलमात्रंवा वदति न त्वपरिमितसख्ये  
 यप्रदेशात्मकतया अगुलासख्येयभागा दारभ्य यावन्नोक मापूरयतीत्येव मनियतप्रमाणतयावा अथवा मितसप्तद्वीपसमुद्रात्मकतया लोक वद त्वन्यथाभू  
 तमपोति मितवादीति तस्या प्यक्रियावादित्वं पसुतत्त्वनिषेधना देवेति ३ तथानिर्मित मौग्वरवह्म पुरुषादिना कृत लोक वदतोति निमित्तवादी तथा  
 चाह आसोदिदतमोभूवमत्रज्ञातमलक्षण अप्रतर्क्यमविज्ञेय प्रसामिवसर्वतः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेकार्णवोभूते नष्टेस्यावरजंगमे नष्टामरनरेचैव प्रणष्टोरगराक्षसे  
 ॥ २ ॥ केवलगह्वरीभूते महाभूतविर्वर्जिते अचिन्त्यात्माविभुस्तत्र शयानस्तप्यतेतपः ॥ ३ ॥ तत्रतस्थशयानस्य नाभेःपद्मन्विनिर्गत तरुणरविमण्डलनिभ

## मितवादी निमित्तवादी

मितवादी कहे जीव अगुष्टपर्वसमानछे ३ । निमित्तवादी एजगत ईश्वरे कीधोछे ४ ।

हृद्यंकाञ्चनकर्णिकं ॥ ४ ॥ तस्मिन्पद्मेतुभगवान् दंडोयज्ञोपवीतसयुक्तः ब्रह्मातचीत्पन्न स्तेनजगन्मातरःसृष्टाः ॥ ५ ॥ अदितिःसुरसंज्ञानान्दितिरसुराणामनु  
 र्मनुष्याणां विनताविहंगमानां माताविश्वप्रकाराणां ॥ ६ ॥ कद्रुःसरोस्रपाणां सुलसामातातुनागजातीनां सुरभिक्षतृप्यदानां इलापुनःसर्वजीवानामि  
 ति ॥ ७ ॥ प्रमाणयति चासौ बुद्धिमत्कारणकृतभुवनं सस्यानवत्वात् घटवदित्यादि अक्रियवादिता चास्य न कदाचिदनीदृशजगदितिवचना दक्षत्रिमभुव  
 नस्या कृत्रिमतानिषेधा अचेष्टरादिकर्तृकत्वं जगतो स्ति कुलालादिकारकवैयर्थ्यप्रसगात् कुलालादिव चेष्टराटे बुद्धिमत्कारणस्यानीश्वरताप्रसगात् किञ्चे  
 श्वरस्या शरीरतया कावणाभावात् क्रियास्वप्रवृत्तिः स्यात् सशरीरत्वे च तच्छरीरस्यापि कर्तृन्तरेण भाव्यमेवचानवस्थाप्रसगइति ॥ ४ ॥ तथा शातं सुखम  
 भ्यसनोयमिति वदतीति शातवादी तथाहि भवत्येवंवादी कश्चित् सुखं मेवानुगूलनीयं सुवाधिना नत्वगातरूपतपोनियमव्यग्रचर्यादि कारणानुरूपत्वा  
 कार्यस्य नहि शृङ्गे स्तन्तुभि रारब्ध पटो रक्तो भवत्यपि तु शुक्ल एव एव मृत्तासेवनात् सुखमेवेति उक्तं च सृष्टौ यथाप्राप्तकृत्यायपेया मध्येभक्तंपानकचाप  
 राहे द्राक्षाखड्गकर्कराचार्हरात्रे मोक्षद्यान्ते शाक्यपुत्रेणदृष्टः ॥ १ ॥ अक्रियावादिता चास्य समयमतपसां परमार्थिकप्रशमसुखरूपयो र्दुःखत्वेनाभ्युपगमात्  
 कारणानुरूपकार्याभ्युपगमस्य च विषयसुखादनुरूपस्य निर्वाणसुखस्याभ्युपगमेन बाधितत्वादिति ॥ ५ ॥ तथा समुच्छेदं प्रतिक्षणं निरन्तर्यनाशवदति  
 यः स समुच्छेदवादी तथाहि वस्तुनः सत्त्वं कार्यकारित्वं कार्याकारिण्यपि वस्तुत्वे खरविपाणस्यापि सत्त्वप्रसगात् कार्यञ्च नित्यं वस्तु क्रमेण न करोति नि

## सायवादी समुच्छेदवादी

सातावादी सुखज्ञोगवतां सुसपासिये ५ । क्षणे २ स्वप्नाव सर्ववस्तुना उच्छेद नवा २ ऊपने ६ ।

० ॥

६ ॥

त्यस्यैतत्स्वभावतया कालान्तरभाविसकलकार्याभावप्रसंगा नचेदेवमतिचणं स्वभावान्तरोत्पत्त्या नित्यत्वहानिरिति यौगपद्येनापि न करोति अथ्यचसिद्ध  
 त्वाद्यौगपद्या कारणस्य तस्मात् क्षणिकमेव वस्तु कार्यं करोतीत्येव चा र्थक्रियाकारित्वात्क्षणिक वस्त्विति अक्रियावादी वायमित्यमवसेयो निरन्वयना  
 शाभ्युपगमे हि परलोकाभावः प्रसजति फलानां च क्रियास्वप्रवृत्तिरिति तथा सकलक्रियसु प्रवर्त्तकस्या सख्येयसमयसमाख्यनेकवर्णालेखयतोविकल्पस्य  
 प्रतिसमयक्षयित्वेणैकाभिसविप्रत्ययाभावात् सकलचवहारोच्छेदः स्यादतएवै कांतक्षणिकात् कुलालादेः सकाशादर्थक्रिया न घटत इति तस्मात्पर्यायतो व  
 स्तुसमुच्छेदवत् द्रव्यतस्तु न तथेति ६ तथा नियत नित्य वस्तु वदति यः स तथाहि नित्यो लोकः आविर्भावतिरोभावमात्रत्वात् उत्पादविनाशयो स्तथा ऽसतो  
 ऽनुत्पादा च्छादविशेषस्ये व सत साविनाशात् घटव न्हि सर्वथाघटोविनष्टः कपालाद्यवस्थाभिः तस्य परिणतत्वा तासां चापारमार्थिकत्वात् मृत्सामान्य  
 स्यैव पारमार्थिकत्वात् तस्य चाविनष्टत्वादिति अक्रियावादी चाय मेकांतनित्यस्य स्थिरैकरूपतया सकलक्रियाविलोपाभ्युपगमादिति ॥ ७ ॥ तथा ॥ न सति  
 परलोगवा इति ॥ नेति न विद्यते शांतिश्च मोक्षः परलोकश्च जन्मान्तरमित्येव यो वदति स तथा तथाहि नास्त्यात्मा प्रत्यक्षादिप्रमाणाविषयत्वात् खरविषा  
 ण्यत् तदभावान्नपुण्यपापलक्षणं कर्म तदभावान्नपरलोको नापि मोक्ष इति यच्चेत चेन्नयं तद्भूतधर्म इति प्रत्याक्रियावादिता स्फुटैव न चेतस्य मतंसगच्छते  
 प्रत्यक्षाद्यप्रवृत्त्या आत्मादीनां निराकर्त्तृमशक्यत्वात् सत्यपि वस्तु प्रमाणाप्रवृत्तिदर्शना दागमनिशेषसिद्धत्वाच्च भूतधर्मतापि नचैतन्यस्य विवक्षितभूताभावे

णियावादी णसतिपरलोगवादी ।

नियतवादी एकांते नित्यलोकं ७ । नथी परलोक मोक्षादि पुण्यपाप नथी ८ ॥

पि जातिस्मरणादिदर्शनादिति एषां चेह वादिनामटाना मपि दिस्सात्रमुपदर्शितं विशेष स्वन्यतो ज्ञेय ऊह्यो वेति एते च वादिनः शास्त्राभिसंस्कृतबुद्धयो  
 भवतौल्यष्टस्थानकावतारौणि शास्त्राण्याह ॥ अठमहानिमित्तेत्यादि ॥ प्रतीतानागतवर्त्तमानानामतीन्द्रियभावाना मधिगमेनिमित्त हेतुर्यद्वस्तुजातं तन्निमित्तं  
 तदभिधायकशास्त्राण्यपि निमित्तानोत्पद्यते तानि च प्रत्येकं सूत्रवृत्तिवार्त्तिकतः क्रमेण सहस्रलक्षकोटीप्रमाणानो लिखत्वा महांतिचतानि निमित्तानिचेति  
 महानिमित्तानि तत्रभूमिविकारो भौम भूकम्पादि तदर्थं शास्त्रमपि भौम एव मन्यान्यपिवाच्यानि नवर सुदाहरण मिह शब्देनमहताभूमिर्यदारसतिक  
 म्पते सेनापतिरमात्यश्च राजाराज्यचपोद्भूत इत्यादि ॥ १ ॥ उत्पातः सहज रुधिरवृष्ट्यादिः ॥ २ ॥ स्वप्नोयथा सूत्रं वाकुरुते स्वप्ने परीषवातिबोहितं प्रतिबुद्धेत्त  
 दाकश्चि लभतेसार्थनाशनमिति ॥ ३ ॥ अंतरिक्ष माकाश तत्र भव मातरिक्षक गन्धर्व्वनगरादिः कपिलसस्यघाताय माजिष्टहरणगवा अव्यक्तवर्णंकुसुते  
 वल्लोभनसंशयः ॥ १ ॥ गन्धर्व्वनगरस्त्रिंश सप्राकारंसतीरणं सौम्यादिशसमाश्रित्य राज्ञस्तद्विजयकरमित्यादि ॥ २ ॥ अंगशरीरावयव स्तद्विकारआंग शिरस्फु  
 रणादियथा दक्षिणपार्श्वेस्यंदन मभिधास्येतत्फलस्त्रियावामे पृथिवीलाभं शिरसि स्थानविहृद्विललाटे स्यादित्यादि ॥ ५ ॥ स्वरः शब्दः षड्जादिः सच नि  
 मित्तं यथा सज्जेणलहइवित्ति कयचभविणस्सइ गावोमिन्तायपुत्ताय नारोणचैववत्तहोइत्यादि ॥ १ ॥ शकुनरुतं यथा विविचिविसहोपुन्नो सामाएसूलि

अष्टविहे महानिमित्ते पस्सते तंजहा जोमे उप्पाए सुविणए अतलिस्के अंगे सरे लरकणे वंजणे । अष्टविहा

आठप्रकारें महानिमित्त कह्यो ते भूमिकंपादिफलशास्त्र १ । उत्पात सहजें रुधिरवृष्ट्यादि २ । स्वप्नशुजाशुजशास्त्र ३ । आकाशनगरादिशास्त्र ४ ।  
 अगफरकवानां ५ । स्वरदेवाना ६ । लक्षणशरीरना सामु द्रादिकना ७ । व्यंजनमसतिलकादि ८ ॥ आठप्रकारे वचननी विज्ञप्ति कही ते निर्देशकता

॥ सूनिधनोउ चेरीचेरीदित्तो विकृत्तिनाभहेग्रीत्तिइत्यादि ॥ ६ ॥ लक्षणस्तीपुरुपादीना यथा ॥ अस्थिष्वर्या सुखंमांसे त्वचिभोगा स्त्रियोक्षिषु गतीयानखरे  
 चाज्ञा सर्वसत्वेप्रतिष्ठित इत्यादि ॥ १ ॥ व्यञ्जन मषादि यथाललाटकेश प्रभुत्वायेत्यादि एतानि च शास्त्राणि वचनविभक्तियोगेना भिधेयप्रतिपादका  
 नीतिवचनविभक्तिरूपमाह ॥ अट्टविहावयणविभक्तौत्यादि ॥ उच्यते एकत्वद्वित्वबहुत्वलक्षणोऽर्थोयेस्तानि वचनानि विभज्यन्ते कर्तृत्वकर्मत्वादिलक्षणोऽर्थो  
 यथा सा विभक्तिर्वचनात्मिका विभक्तिर्वचनविभक्ति ॥ सुश्रोजमित्यादि ॥ निर्देशेसिलोगो निर्देशन निर्देश' कर्मादिकारकशक्तिभिरनधिकस्य लिगार्थमा  
 त्रस्य प्रतिपादन तत्र प्रथमाविभक्ति भवेति यथा सवा अय वा आस्ते अहंवा आसे ॥ १ ॥ तथा उपदिश्यतइत्युपदेशनमुपदेशनक्रियाया यद्वाप्य सुपलक्ष  
 णत्वादस्याः क्रियाया यद्वाप्यं तत्कर्मै त्यर्थ स्तत्र द्वितीया यथा भण इम श्लोक कुरुवा त ददाति त याति ग्राम ॥ २ ॥ तथा क्रियते येन तत्करण क्रियास्य  
 ति सावकतम करोतीति वा करण कर्त्ता कथ्यलुगोबहुलमिति वचनादिति तत्रकरणेष्टतीया कृताग्रहिता यथा नीत शस्य तेन शकटेन कृत कुडमये  
 ति ॥ ३ ॥ तथासपदावणेति ॥ सत्कृत्य प्रदाप्यते यस्मै उपनक्षणत्वा त्सप्रदौयते वा यस्मै तत्सम्पदापन सम्प्रदानं वा तत्र चतुर्थी यथा भिक्षवे भिक्षा दा  
 पयति ददातिष्वेति सम्प्रदानस्योपलक्षणत्वादेव नमः स्वस्तिस्वाहास्ववाऽलंबपट्युक्ताच्च चतुर्थी भवति नमः शाखायैवैरादिकायै नमः प्रभृतियोगेपि कौटि

वयणविज्ञप्ती पस्यता तजहा निद्देसेपढमाहोइ विइयाउवदेसणे तइयाकरणमिक्रया चउत्थीसपयावणे ॥ १ ॥

मात्रनुं बोलवुं तिहां प्रथमाविभक्ति १ । द्वितीया उपदेशे इद कुरुग्रामं याति घट ददाति २ । तृतीयाकरणे नेअर्थे निन्न शरेणरामेण रावण ३ । च  
 तुर्थी सप्रदाने साधुने काजे दान आपेळे श्रीजिनायनमः ४ । अपादाने पचमी मूलकारणे पचमी बोलाय आमात् आगता ५ । स्वामीनो अर्थबोले

त्सम्पदान मभ्युपगम्यतइति चतुर्थी ॥ ४ ॥ पंचमीति श्लोक' अपादीयते अपायतो विज्ञेयत आमर्षादया दीयते दोअवसुडनइतिवचनात् खण्डयते भियते  
 आदीयतेवा गृह्यते यस्मात्तदपादानमवधिमात्रमित्यर्थः तत्र पंचमी भवति यथा अपनयगृहाडान्यमितो वा कुशूलात्गृहाणेति ॥ ५ ॥ छठ्ठीसस्सामिवा  
 यणेति ॥ स्वस्व स्वामीच स्वस्वामिनो तयोर्वचनं प्रतिपादन तत्र स्वस्वामिसंबंधेइत्यर्थः षष्ठी भवति यथा तस्यास्यवा गतस्य चाय भृत्य. ॥ वायणेतीह  
 प्राक्ततत्वाद्दीर्घत्वं ॥ ६ ॥ सन्निधीयते क्रिया अस्मिन्निति सन्निधान माधारस्तदेवार्थ. सन्निधानार्थं सूत्र सप्तमी विषयोपलक्षणत्वाच्चास्य काले भावेच क्रिया  
 विशेषणे तत्र सन्निधाने तद्भक्तमिह पात्रे तत्सप्तच्छदवनमिह शरदि पुष्यति पुष्यनक्रिया शरदा विगेषिता तत् कुटुम्बकमिह गवि दुह्यमानाया गतमिह  
 गमनक्रिया गोदोहनभावेन विशेषितेति ॥ ७ ॥ अष्टम्यामन्त्रणोभवेदिति ॥ सुभ्राजमिति ॥ प्रथमापौय विभक्तिरामन्त्रणलक्षणस्यार्थस्य कर्मकरणादिवत्  
 लिंगार्थमात्रातिरिक्तस्य प्रतिपादकत्वेनाष्टम्युक्ता यथा हेयुषन्निति श्लोकद्वयार्थ उदाहरणगाथास्तु आख्यातानुसारेण भावनीयाः ॥ तत्प्रमाहा तइयागाहा ॥

पंचमीयञ्वायाणे छठ्ठीसस्सामिवायणे सप्तमीसन्निहाणत्ये अष्टमीञ्चामन्त्रणेनवे ॥ २ ॥ तत्प्रपठमाविज्ञही  
 निद्देसेसोऽमोऽहवती विइयाउणउवएसे जणकुणवइमंवतंवती ॥ ३ ॥ तइयाकरणमिकया णीयंचक्रयचते

ते षष्ठी राजानो पुत्र पुरुष सर्वंधे षष्ठी ६ । सप्तमीसन्निधाननेविपे बोलै पात्रने विपे देवुं इम ७ । अष्टमी आमन्त्रणे कोईनेयादकरे ते हेगौतम तु  
 सांजल वीरवाक्य २ । तिहांप्रथमा विभक्ती निर्देशे ते एहुळु १ । द्वितीया उपदेशे ते शास्त्रप्रते भणे कामप्रते करें एहवूं वचन बोलवो २ । तृतीया  
 करणे ते कीधो तेणे नमः स्वाहा स्वधा इतिवचने ३ । चतुर्थी आ थकी ग्रहे ४ । इहांथी लेपचमी अपादाने षष्ठीतेहने एहने अथवा स्वामिसंबंधे



इह हदीति उपप्रदर्शने पयाणमिति संप्रदाने ॥ अवशोगाहा ॥ अवशेत्ति ॥ अपनयेत्यर्थः इदं चानुयोगद्वारानुसारेण व्याख्यात मादर्शेषुत आमंतणेत्तिदृश्यते  
तत्र च स्त्यामंत्रणतया गमनीयं हेमनस्तेइत्यर्थः अथ वचनविभक्तियुक्तशास्त्रसंस्कारान्किञ्चनस्थासाक्षाददृश्यार्थाविदति उच्यते नेत्याह ॥ अष्टाष्टाणेत्यादि ॥  
व्याख्यात प्राक् नवरं यावत्करणात् अधम्मत्तिकाय जीवमसरीरपडिवद्ध परमाणुपगल सदमिति ॥ ६ ॥ द्रष्टव्यमिति एतान्येव जिनोजानातीत्या  
हच ॥ एयाणीत्यादि ॥ सगम यथा धर्मास्तिकायादीन् जिनोजानाति तथा युर्वेदमपि जानाति सचाय ॥ अष्टविहेश्राओब्बेत्यादि ॥ आयुर्जीवितं  
तद्विदंति रक्षितु मनुभवन्ति चोपक्रमरक्षणेन विदग्धि वा लभन्ते यथाकाल तेन तस्मात्तस्मिन्वेत्यायुर्वेद चिकित्साशास्त्र तदष्टविध तद्यथा कुमारानां

णवमएवा हंदिणमोसाहाए हवइचउत्थीपयाणंमि ॥ ४ ॥ अण्वणेगेरहसुततो इनेत्तिवापंचमीअवादाणे ठ  
ठीतरस्सइमस्सव गयस्सवासासामिसवंधे ॥ ५ ॥ हवइपुणसत्तमीय इमंमिअधारकालजावेय अमंतणेजवेअ  
ठमीयजहहेजुवाणत्ति ॥ ६ ॥ अठठाणाइं ठउमत्थे सत्तजावेणं नजाणइ नपासइ तजहा धम्मत्तिकाय  
जाव गध वाय । एयाणिचेव उप्पस्सनाणदसणधरे अरहा जिणे केवली जाणइ पासइ जाव गंध वायं ।

होय ६ । वली सप्तमी तेहनेविपे एहनेविपे आधारे काले भावे एतलेठामे ७ । आमत्रणे होय अष्टमी जिम हेयुवान ८ ॥ आठथानके छदमस्थ सर्व  
जावेकरी नजाणे नदेखे ते कहैछे धर्मास्तिकाय यावत् गध वायरो ॥ एनिश्चे ऊपनाछे ज्ञानदर्शनना धणी जाणे देखे यावत् गध ॥ आठप्रकारे आयुर्वेद  
कह्यो ते कहैछे बालकने स्तन्य दूधनोरोग संहनाओपध १ । ज्वरादिरोगग्रस्त कायानी चिकित्सा २ । शालाक्यशास्त्र ते कान नाक मुख आखना

बालकानां भृतौ पोषणे साधुः कुमारभृत्यं तद्धि तत्रं कुमारभरणक्षीरदोषसशोधनार्थं दुष्टशूलनिमित्तानां व्याधीनामुपशमनार्थं चेति ॥ १ ॥ कायस्य ज्वरा  
 दिरोगग्रस्तस्य चिकित्साप्रतिपादकं तत्र कायचिकित्सातत्र तद्धि मध्यागसमाश्रितानां ज्वरातौसाररक्तशोषोन्मादप्रमेहकुष्ठादीनां शमनार्थमिति ॥ २ ॥  
 शलाकायाः कर्म शालाक्य तत्प्रतिपादकं तत्र शालाक्य तद्धि ऊर्ध्वतुगतानारोगाणां श्वणबदननयनघ्राणादिसश्रितानामुपशमनार्थमिति ॥ ३ ॥ शल्यस्य  
 हत्या हननमुद्धारः शल्यहत्या तत्प्रतिपादकं तत्रमपि शल्यहत्येत्युच्यते तद्धि तृणकाष्ठपाषाणपाशुलोहलोष्टास्थिनखप्रायोगान्तर्गतशल्योद्धरणार्थमिति ॥ ४ ॥  
 जागौलोति विषप्रिघाततंत्रमगदतत्रमित्यर्थं तद्धि सप्तेजौल्लादष्टविषविनाशार्थविविधविषसप्रयोगोपशमनार्थं वेति ॥ ५ ॥ भूतादीनां निग्रहार्थं विद्यातत्रं  
 भूतविद्या साहि देवासुरगन्धर्वयक्षराक्षसपितृपिशाचनागग्रहाद्युपसृष्टचेतसा शक्तिकर्म बलिकरणादिग्रहोपशमनार्थमिति ॥ ६ ॥ चारतत्रमिति चर  
 णं चारः शुक्रस्य तद्विषयं तत्र यत् तत्तथा इदं हि सुश्रुतादिषु वाजीकरणतत्रमुच्यते अवाजिनोवाजीकरणे रेतोवृद्धा अश्वस्येव करणमित्यनयोः शब्दार्थः  
 समएवेति तत्र हि अल्पक्षीणविशुष्करेतसा आप्यायनप्रशादोपजनननिमित्तं प्रहर्षजननार्थमिति ॥ ७ ॥ रसोमृतरसस्तस्यायनं प्राप्तीरसायनं तद्विधाय

अष्टविहे आउव्वेए पस्सत्ते तजहा कुमारजिञ्जे कायतिगिच्छा सालाइ सल्लहत्ता जगोली जूयविज्जा खारतंते  
 रसायणे । सक्खरसणंदेविदस्सदेवरसो अष्टअग्गमहिंसील पस्सत्तल तजहा उवमा सिवा सूई अजू अमला

कीलाना ३ । शल्यकाढवा अंतर्गतशल्यउधरवो ४ । विष टालवानांनुपधशास्त्र ५ । भूतविद्या बलिप्रमुखदेवे भूतकाढवा ६ । चारसास्त्र ते लिंगवृद्धादि  
 वाजीकरण ७ । सोनु रूपु पारो मारवो रसायनकरवो ८ ॥ शक्र देवेद्र देवताना राजाने आठ अग्रमहिषी कही ते कहैछे पदमा १ । शिवा २ । सू

स्थापनमायुर्मधाकरण रोगापहरणसमर्थे च तत्प्रतिपादकं शास्त्र रसायनं तत्रमिति कृतरसायन स देववन्निरुपक्रमायुर्भवतीति देवप्रस्तावाद्देवानामष्टका  
न्याह तत्र ॥ सकस्तेत्यादि ॥ सूत्रपचक सुगम नवर महाराहा महार्थानर्थसाधकत्वादिति महाराहाश्च मनुष्यतिरिच्चासुपघातानुग्रहकारिणो बादरवनस्य  
त्युपघातादिकारत्वेनेति बादरवनस्यतीनाह ॥ अठविहेत्यादि ॥ सुगम नवर ॥ तणवणस्सइत्ति ॥ बादरवनस्यति कद. स्वस्थस्या ध स्थुडमिति प्रतीतम्

अच्छरा णवमिया रोहिणी । ईसाणस्सणंदेविदस्स देवरस्सो अठ अग्गमहिसीन पस्सत्तान तजहा कणहा  
कणहराई रामा रामरक्खिया वसू वसुगुप्ता वसुमित्रा वसुधरा । सकस्सणंदेविदस्स देवरस्सो सोमस्स म  
हारस्सो अठ अग्गमहिसीन पस्सत्तान । ईसाणस्सण देविदस्स देवरस्सो वेसमणस्स महारस्सो अठ अग्ग  
महिसीन पस्सत्तान । अठ महग्गहा पस्सत्ता चदे सूरु सुक्केबुहे वहस्सई अगारणु सणिंचरे केऊ । अठवि  
हा तणवणस्सइकाइया पस्सत्ता तजहा मूले कदे खधे तथा साले पवाले पत्ते पुप्फे । चउरिदियाणजीवा

चि ३ । अजू ४ । अप्सरा ६ । नवमिका ७ । रोहिणी ८ ॥ ईशान देवेद्र । देवताना राजाने आठ अग्रमहिषी कही तेकहैछे कृष्णा १ । कृष्णाराती २ ।  
रामा ३ । रामरक्षिता ४ । वसु ५ । वसुगुप्ता ६ । वसुमित्रा ७ । वसुधरा ८ ॥ शक्रदेवेद्र देवतानो राजा तेहना सोम महाराजाने आठ अग्रमहिषी  
कही तेकहैछे ईशान देवेद्र देवराजाना वैश्रमण महाराजाने आठ अग्रमहिषी कही । आठ मोटा ग्रहकह्या ते कहैछे चद्र १ । सूर २ । शुक्र ३ ।  
बुध ४ । वृहस्पती ५ । मंगल ६ । शनैश्वर ७ । केतु ८ ॥ आठ प्रकारे तणवनस्पतिकाय कही तेकहैछे मूल १ । कद २ । खध ३ । छाल ४ । शाखा ५ ।

त्वक् कृत्वा शाला शाखा प्रवाल मंजरः पत्रपुष्पे प्रतीते एतदाश्रया चतुरिन्द्रियादयो जीवा भवन्तीति चतुरिन्द्रिया नाश्रित्य संयमासंयमसूत्रे ते च प्रागिवे  
ति सूत्रा यद्यप्याश्रित्य संयमासंयमौ स्तइति तान्याह ॥ अङ्गुलमेत्यादि ॥ सूक्ष्माणि श्लक्ष्णवा दृष्ट्याधारतयाच तत्र प्राणसूक्ष्म मनुहारिः कुष्ठु सहि चल  
त्रैविभाव्यते नस्थितः सूक्ष्मवादिति ॥ १ ॥ पनकसूक्ष्म पनकउत्तो सच प्रायः प्रावृट्काले भूमिकाष्ठादिषु पचवर्षं स्तद्द्रव्यलीनो भवति सएव सूक्ष्ममि  
ति एव सर्वत्र ॥ २ ॥ तथा बोजसूक्ष्म शाल्यादिबोजस्य सुखमूले कर्णिकालोकेयातुषमुखमित्युच्यते ॥ ३ ॥ हरितसूक्ष्म मत्स्यन्ताभिनवोद्भिन्नं पृथिवीसमानवर्षं  
हरितमेवेति ॥ ४ ॥ पुष्पसूक्ष्म च वटोदुम्बराणां पुष्पाणि तानि तद्वर्णानि सूक्ष्माणीति नलक्ष्यते ॥ ५ ॥ अङ्गसूक्ष्म मञ्जिकाकीटिकागृहकोकिलावाह्यणीकक

असमारम्भमाणस्स अष्टविहे संजमे कज्जइ तजहा चरकुमानुसोरकानु अवरोवेत्ता नवइ चरकुमएणंदुरकेणं  
असंजोएत्ता नवइ एव जाव फासामानुसोरकानु अवरोवेत्ता नवइ फासामएणंदुरकेणं असंजोएत्ता नवइ  
चउरिदियाणंजीवा समारम्भमाणस्स अष्टविहे असंजमे कज्जइ तजहा चरकुमानुसोरकानु ववरोवेत्ता नवइ  
चरकुमएणं दुरकेण संजोएत्ता नवइ एव जाव फासामानुसोरकानु ॥ अष्ट सुज्जमा पन्नत्ता तजहा पाणसुज्जमे

प्रवाल ६ । पत्र ७ । फूल ८ ॥ चउरिद्री जीव समारंभ नकरे तेहने आठप्रकारें संजम करे तेकहैछे आंखना सुखथी अलगी नकरे ते संजम १ । आं  
खना दुखसाथे नक्कजु नकरे २ । इम यावत् फरसना सुखथी मूकावे नही चत्तुइन्द्रिनादुखे जोळे नही । चउरिद्रीना जीवना समारंभ करे ते आ  
ठप्रकारें असंजम करे आसना सुखथी मूकावे तहा आखना दुखसाथे युक्त करे इम यावत् फरसनेदीना सुखथी ॥ आठ सूक्ष्म कह्या ते कहैछे प्रा

लाशावडकमिति ॥६॥ लयनसूक्ष्मं लयन माश्रय. सत्वाना तच्च कीटिकानगरकादि तत्र कीटिकाशान्ये च सूक्ष्माः सत्वा भवतीति ॥ ७ ॥ स्नेहसूक्ष्ममव  
 श्यायहिममिहिकाकरकहरतनुरूपमिति ॥८॥ अनन्तरोक्तसूक्ष्मविषयसयममासेत्य येऽष्टकतया सिद्धा स्तानाह ॥ भरहस्तेत्यादि ॥ कण्ठ किन्तु ॥ पुरिसजु  
 गाइति ॥ पुरुषायुगानौव कालविशेषाश्च कमवृत्तित्वात् पुरुषयुगानि अनुवर्तं सतत यावत्करणान् बुडाइमुकाइपरिनिम्बुडाइति एतेषा चादित्ययश्च प्र  
 भृतीनाभिर्होतृक्रमस्या न्यथात्व मध्यपनभ्यते तथानि रायाप्रायश्चजसे महाजसेप्रबलेयबलभटे बलविरियकतविरिये जलविरियेदडविरियेयत्ति ॥ १ ॥  
 इह चान्यथात्व मेकस्यापि नामान्तरभावा द्वाथानुलोम्याच्च सभाव्यतइतिसयमवटधिकारात्सयमवतामेवाष्टकान्तरमाह ॥ पासेत्यादि ॥ व्यक्ता किन्तु ॥ पुरि  
 सादाणीयस्सत्ति ॥ पुरुषाणा मध्ये आदीयतइत्यादानोय उपादेयइत्यर्थं गणा एकक्रियावाचनाना साधूना समुदायाः गणधरा स्तत्रायका आचार्या. भ

पणगसुज्जमे वीयसुज्जमे हरियसुज्जमे पुष्पसुज्जमे अरुगसुज्जमे लेणसुज्जमे सिणेहसुज्जमे । जरहस्सणं रस्सो  
 चाउरतचक्कावहिरस अठपुरिसजुगाइ अणुवस्स सिद्धाइंजाव सच्चदुस्सप्पहीणाइ तजहा आइच्चजसे महाजसे  
 अइवले महाबले तेयवीरिए कित्तवीरिए दहवीरिए ॥ पासस्सण अरहन्त पुरिसादाणीयस्स अठगणा अठ

णसूक्ष्म १ । पनक नीलफूलि सूक्ष्म २ । बीजसूक्ष्म ३ । हरितकाय सूक्ष्म ४ । फूलसूक्ष्म उबरना ५ । अरुसूक्ष्म ६ । कीलीनगरा तेहमा कीलीसूक्ष्म ७ ।  
 स्नेह सूक्ष्म हिम धूअर हिमप्रमुख ८ ॥ जरतराजा चातुरतचक्रवर्तिने आठ पुरुष पाटे सतान पुन सिद्ध थया यावत् सर्वदुखथी सूकाणा ते कहैव्हे  
 आदित्ययस १ । महायस २ । अतिबल ३ । महाबल ४ । तजोवीर्य ५ । कीर्त्तिवीर्य ६ । दहवीर्य ७ । जलवीर्य ८ ॥ पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादाणीने आठ

गवतः सातिशयानन्तरग्रिथाः आवश्यकेतूभयेपि दशश्रूयंते दसनवगगणाणामांजिणिंदाणमिति वचनात् जावइयाजसगणा तावइयागणहरातस्सेत्ति ॥  
वचनाच्च तदिहा ल्यायुष्कत्वादिक कारणमपेक्ष्य द्वयो रविवक्षणमिति सभाच्यते नचाष्टस्थानकानुरोवइहसमाधानं वक्तु शक्यते पर्युषणाकल्पेष्टानामेवा  
भिधानादिति गणधराद्यदर्शनवतइति दर्शननिरूपयन्नाह ॥ अट्टविहेदंसणेत्यादि ॥ कण्ठ्य केवल स्वप्नदर्शनस्याचक्षुर्दर्शनातर्भावेपि सुप्तावस्थोपाधितोभेदो  
विवक्षितइति सम्यग्दर्शनादेश स्थितिप्रमाण मौपम्याहवाभवतीति तांप्ररूपयन्नाह ॥ अट्टविहेअट्टोवमिएत्यादि ॥ सुगम नवर औपम्यमुपमा पल्यसागररूपा  
तत्प्रधाना अद्वा काल अट्टोपम्यं राजदतादिदर्शनात् पल्येनोपमायनकाले परिमाणतः सपल्योपम रूढितोनपुसकलिंगता एवं सागरोपममवसर्पि  
ण्यादीनातु सागरोपमनिष्पन्नत्वादुपमाकालत्वं भावनीय समयादिशोर्ध्वप्रहेलिकात कालो ऽनुपमाकालइति कालाधिकारादिदमपरमाह ॥ अरहओइत्या

गणहरा होत्या तंजहा सुजे अज्जघोसे वसिष्ठे बंजचारी सोमै सिरिधरे वीरिए जइजसे । अट्टविहे दंसणे  
पन्नत्ते तजहा सम्मदसणे मिच्छदसणे सम्मामिच्छदसणे चक्कुदसणे जाव केवलदंसणे सुविणदसणे । अट्ट  
विहे अट्टोवमिए पन्नत्ते तंजहा पलिलवमे सागरोवमे उरुसप्पिणीए उरुसप्पिणी पोग्गलपरियहे तद्धा अणा

गण तेगच्छ आठ गणधर थया तेकहैछे शुज १ । आर्यघोष २ । वशिष्ठ ३ । ब्रह्मचारी ४ । सोम ५ । श्रीधर ६ । वीर्य ७ । जद्रयस ८ ॥ आठप्रकारे दर्शन  
कह्यो तेकहैछे समकितदर्शन १ । मिथ्यादर्शन २ । सम्मामिथ्यादर्शन ३ । चक्षुदर्शन ४ । यावत् केवलदर्शन ५ । स्वप्नदर्शन ६ ॥ आठप्रकारे कालनी उप  
मितलपमा पल्योपम १ । सागरोपम २ । उत्सर्पिणी ३ । अवसर्पिणी ४ । पुद्गलपरावर्त ५ । अतीतकाल ६ । अनागतकाल ७ । सर्वकाल ८ ॥ अरिहत

दि ॥ जावअडमाओत्ति ॥ अष्टमं पुरुषयुगं अष्टमपुरुषकालं यावत् युगान्तकरभूमि' पुरुषलक्षणयुगापेक्षया ऽन्तकराणां भवक्षयकारिणां भूमि' काल' सा  
 आसीदिति इदमुक्तं भवति नेमिनाथस्य शिष्यप्रतिशिष्यक्रमेणा ह्यै पुरुषान् यावन्निर्वाणं गतवन्तो नपरत इति तथा पर्यायापेक्षयाप्यन्तकरभूमिप्रसंगा दु  
 च्यते ॥ दुवासेत्ति ॥ द्विवर्षमात्रे केवलिपर्याये नेमिनाथस्य जाते सति साधवो भवान्तं अकार्युरिति तीर्थकरवक्तव्यताधिकारा दिदमाह ॥ समणेणमित्या  
 दि ॥ सुगम नयर ॥ भवित्तत्ति ॥ अंतर्भूतकारितार्थत्वात् मुडान्भावयित्वेति दृश्य ॥ वीरंगणत्वादि ॥ तहसंखेकासिवङ्गण ॥ इदेव चतुर्थपादे सति गाथा  
 भवति नचैव दृश्यते पुस्तकेष्विति एते च यथा प्रव्राजिता स्तुथोच्यन्ते तत्र वीरागको वीरयथा' संजयइत्येते प्रतीता एण्येको गोवतः सच केतव्यहज्जनपट  
 खेतवीनगरौराजस्य प्रदेशिनाम्नः अमणोपासकस्य निजकः कश्चिद्राजर्षिं स्तुथा सोय मामलकत्वा नगर्याः स्वामी यस्यांहि सूर्यकाभो देव सौधम्नादिवलो

॥ ट

गयछा सव्वछा । अरहलण अरिठनेमिस्स जाव अण्ठमानं पुरिसजुगालं जुगतगरजूमो दुवासपरियाए अत  
 मकासो । समणेण जगवया महावीरेण अण्ठरायाणो मुक्कालवित्ता अण्ठगारालं अण्ठगारिय पव्वाविया तजहा  
 वीरगयवीरजसे संजयएणिज्जाएयरायरिसी सेयसिवेउदायणे तहसंखेकासिवङ्गणए ॥ १ ॥ अण्ठविहे आहारे

॥ ३

अरिष्टनेभिने यावत् आठ पुरुष प्रधानलगे जुगतगरजूमि यई मोक्षपोहता नेमनाथ केवली यथा पद्धी १२ वरसे साधुमोक्षजातायथा । अमणजगवत  
 माहावीरे आठराजा मुक्करी गृहस्थावास मूक्तावी दीक्षा दीधी ते कहैछे वीरगक १ । वीरजस २ । सज्जत ३ । प्रदेशीराजानो गोत्रियो नेयक राज  
 ऋषि ४ । खेत ५ । शिव ६ । उदायन ७ । शख कासीदेशनो ८ ॥ आठप्रकारनो आहार कह्यो ते कहैछे मनोज्ञ अशन १ । पान २ । खादिम ३ ।

॥ भा

का जगवतो महावीरस्य वदनार्थं भवततार नायविधिञ्च उपदर्शयामास यत्रच प्रदेशिराजचरितं भगवता प्रत्यपादौति तथा शिवो हस्तिनागपुरराजो  
 योज्जेकदा चितयामास अहं मनुदिन हिरण्यादिना वृद्धिसुपगच्छामि यतः स्ततः पुराकृतकर्माणां फलमतो ऽधुनापि तदर्थमुद्यच्छामीति ततो व्यवस्थाप्य  
 राज्ये पुत्रं कृत्वा उचितमखिलकत्तेभ्यं दिक्प्रोक्षकतापसतया प्रवव्राज ततः षष्ठं षष्ठेन तपस्यत स्तथोचितमातापयतः परिश्रुतितपत्रादिना पारयतोविभग  
 ज्ञानमुत्पेदे तेनच विलोकयाचकार सप्त द्वीपा न्सप्तसमुद्रानिति उत्पन्नं च मे दिव्यज्ञानमित्यवहंभा दागत्य नगरे बहुजनस्य यथोपलब्धं तत्त्वमुपदिदेश तदा  
 च तत्र भगवान् विजहार गौतमश्च भिक्षा भ्राम्यन् जनाच्छिवप्ररूपणां शुश्राव गत्वाच भगवन्तं पप्रच्छ भगवा स्वसख्येयान् द्वीपसमुद्रान् प्रज्ञापयामास  
 भगवद्वचनच जनां च्छुत्वा शिवः शक्तिं स्ततः स्तस्य विभंगः प्रतिपपात ततो सौ भगवति जातभक्तिं भगवत्समीपं जगाम भगवता प्रकटितात्ततो जातसर्व  
 ज्ञप्रत्ययः प्रवव्राज एकादश चांगानि पपाठ सिद्धयेति तथो दायनः सिंधुसौवीरादीनां षोडशानां जनपदानां वीतभयप्रमुखाणां त्रयाणां त्रिषष्ट्यधिकानां  
 नगरशतानां दशानां च मुकुटबद्धानां राज्ञा स्वामी अमणोपासकः येन चण्डप्रद्योतमहाराज उज्जयिनीं गत्वा भयबलसमच्चरणगणे रणकर्मकुशलेन करि  
 वरगिरे निर्मात्य बद्धो मयूरपिच्छेन ललाटपट्टे ऽकितश्च तथा ऽभिजिन्नामानं स्नेहानुगतानुकपया राज्यगृह्योयं मादुर्गतिं यासीदिति भावयता स्वपुत्र  
 राज्ये अव्यवस्थाप्य केशिनामानच भागिनेयं राजानं विधाय महावीरसमीपे प्रवव्राज यश्चैकदा तत्रैव नगरे विजहार उत्पन्नरोगश्च वैद्योपदेशाद्दधि बुभुजे  
 राज्यापहारमपि किनाच केशिराजेन विषमिश्रदधिदापनेन पचत्व गमितः यत् गुणपक्षपातिन्याच कुपितदेवतया पाषाणवर्षेण कुभकारशय्यातरवर्जं सर्वं  
 तन्नगरं न्यधानौति तथा शङ्खः काशीवर्द्धनो वाराणसीनगरोसंबंधिजनपदवृद्धिकर इत्यर्थः अथच नप्रतीतः केवलं मलकाभिधानो राजा वाराणस्यां भगवता  
 प्रव्राजितो ऽतस्तद्दृशां सुश्रूयते स यदि परं नामातरेणायं भवतीति एतेचा हारादीमनोज्ञामनोज्ञे समवृत्तय इतिप्रस्तावा दाहारस्वरूपमाह ॥ अठ्विहे



॥ त्यादि ॥ सुगमं आहारद्रव्याणि रसपरिणामविशेषं त्यमनोज्ञा न्यमंतर मुक्ता न्यथ क्षेत्रविशेषान् पुद्गलगतवर्णपरिणामविशेषवत्वेना मनोज्ञान् कृष्णरा  
 ॥ ज्यभिधानान् प्रतिपादयन् सूत्रपचकमाह ॥ उष्णिंद्रत्यादि ॥ सुगम नवर ॥ उष्णिंति ॥ उपरि ॥ हविति ॥ अधस्ता द्ब्रह्मलीकस्य रिष्टाख्यो यो विमानप्रस्तुट  
 स्तस्येतिभावः आखाटकव त्सम तुग्यं सर्वासु दिक्षु चतुरस्र चतुष्कोणं यत्सस्याग माकारस्तेन सस्थिता आखाटकसमचतुरस्रसस्थानसस्थिता कृष्णराजयः  
 कालतपद्मलपताय स्तद्युक्तक्षेत्रविशेषा अपि तथोच्यन्तइति यथाच ता व्यवस्थितास्तथा दृश्यंते ॥ पुरच्छिमेणंति ॥ पुरस्ता त्पूर्वस्यांदिशीत्यर्थः द्वेकृष्णराजी एव  
 मत्यास्वपि द्वे द्वे तत्र प्राक्तनीयका अभ्यंतराकृष्णराजी सा दक्षिणात्या बाह्यां ता स्पृष्टा स्पृष्टवती एव सर्वा अपि वाच्या स्तथा पीरस्यपाश्चात्ये द्वे बाह्ये क

पश्चते तंजहा मणुखे असणे पाणे खाडमे साडमे अमणुखे असणे पाणे खाडमे साडमे । उष्णिं सणंकुमार  
 माहिदाण कप्पाण हेठि बंजलोएकप्पे रिठेविमाणपत्यं एत्यण अस्काळगसमचउरससठाणसंठियानं अठ  
 करहराईनं पस्सत्तानं तजहा पुरच्छिमेण दोकरहराईनं दाहिणेण दोकरहराईनं पच्चत्थिमेणदोकरहराईनं

स्वादिम ४ । अमनोज्ञग्रशन पान खादिम स्वादिम । उचु सनत्कुमार माहेद्र देवलोकें हेठो ब्रह्मदेवलोकने रिष्टविमानने पाथं प्रेक्षणा आसाळक  
 समचतुरस्रसस्थानसस्थितथी आठ कृष्णराजी कही ते कहैळे पूर्वदिशे वेकृष्णराजीळे दक्षिणादिशेवे पश्चिमदिशे वे उत्तरदिशे वे कृष्णराजी पूर्वदिशि  
 नी अन्यतर कृष्णराजी दक्षिणानी बाहिरली कृष्णराजी प्रतिफरसीळे दक्षिणानी अन्यतरनी कृष्णराजी पश्चिमनी बाहिरली कृष्णराजीप्रते फरसीळे प  
 श्चिमनी अन्यतरनी कृष्णराजी उत्तरनी बाहिरली कृष्णराजी प्रतेफरसीळे उत्तरनी अन्यतरकृष्णराजी पूर्वनीबाहिरलीकृष्णराजी फरसीळे पूर्वपश्चिमनी बा

श्वराजी षडस्त्रे षट्कोटिके उत्तरादाक्षिणात्ये हे वाह्ये कृष्णराज्यो ऽस्ते सर्वा यतस्तोषोलयीं ऽभ्यंतरा यतरस्ता नामान्येव नामधेयानि कृष्णराजी कृष्णपुत्र  
लपत्तिरूपत्वादिति रूपप्रदर्शने वा विकल्पो मेघराजीवया सा मेघराजीति वा भिधीयते कृष्णत्वात् तथा मघा षट्पृथिवी तद्वदिति कृष्णतया सा मेघेति मा  
घवती सप्तमपृथिवी तद्वत् या सा माघवतीति वा वातपरिघादौनितु तमस्कायसूत्रात् व्याख्येयानोति एतासा मष्टाना कृष्णराजीना मष्टस्वभावातरेषु

उत्तरेणंदोकरहराईनु पुरच्छिमाश्चप्लंतराकरहराईदाहिणंवाहिरंकरहराइंपुठा । दाहिणाश्चप्लंतराकरहराईपञ्च  
त्यिमंवाहिरकरहराइंपुठा । पञ्चच्छिमाश्चप्लंतराकरहराइउत्तरांवाहिरकरहराइंपुठा । उत्तराश्चप्लंतराकरह  
राई पुरच्छिमंवाहिरकरहराइंपुठा पुरच्छिमिल्लानंवाहिरानंदोकरहरातीनुलसानु उत्तरदाहिणानुवाहिरा  
नुंदोकरहराईनुतसानु सन्नानुविणं चप्लंतरकरहराईनुचउरसानु । एयासिणश्चठरहं करहराईणं च्छ नाम  
धेज्जा पस्सत्ता तंजहा करहराईतिवा मेहराईतिवा मघातिवा माघवईतिवा वातफलिहेतिवा वातफलि  
खोज्जेतिवा देवफलिहेतिवा देवफलिखोज्जेतिवा । एयासिण च्छठरह करहराईणंश्चठसु उवासतरेसु च्छ

हिरली वे रुमराजी छ अंजानी छे उत्तरदक्षिणनी वाहिरली वेरुमराजी अशळे सघलीयी माहिली रुमराजी चोरंसळे ॥ एआठु रुमराजीनां आठ  
नामळे तेकहैळे रुमराजीकहीये १ । मेघराजीकहीये २ । मघा कहिये ३ । माघवती कहिये ४ । वातफलिहा कहिये ५ । वातफलिदोज्जा कहिये ६ ।  
देवफलिहा कहिये ७ । देवफलिदोज्जा कहिये ८ ॥ एआठु रुमराजीने आठ आतरे आठ लोकातिके आठ लोकांतिक विमान कहा ते कहैळे

राजीवमध्यलक्षणे षष्ठी लोकांतिकविमानानि भवन्ति एतानि चैव प्रज्ञाया सुच्यन्ते अभ्यन्तरपूर्वाया अग्ने ऽर्चिर्विमानं तन्न सारस्वता देवाः पूर्वयोः कृष्णराज्यो मध्ये अर्चिर्मानोविमाने आदित्या देवा अभ्यन्तरदक्षिणाया अग्ने वैरीचने विमाने पृथ्वी दक्षिणयो मध्ये शुभङ्गरे वरुणा अभ्यन्तरपश्चिमाया अग्ने चंद्राभे गर्दतोया अपरयो मध्ये सुराभे तपिता अभ्यन्तरोत्तरा अग्ने ऽङ्गभे अव्यावाधा उत्तरयो मध्ये सुप्रतिष्ठाभे आग्नेया. बहुमध्यभागे रिष्टाभे विमाने रिष्टादेवा इतिस्थापना चैव ॥ अजहन्नमणुक्कोसेणति ॥ जघन्यत्वोत्तर्पाभावेनेत्यर्थं ब्रह्मलोके हि जघन्यतः सप्तसागरोपमाणि उत्कर्षतस्तु दशेति लोकातिकानां त्वष्टाविति कृष्णराजयो ह्यूर्लोकस्य मध्यभागवृत्तिकस्याष्टकचतुष्टयस्याविष्करणाय सूचतुष्टय ॥ अष्टध

लोगंतियविमाणा पण्णत्ता तंजहा अञ्ची अञ्चिमाली वइरोयणे पज्जंकरे चदाज्जे सुराज्जे सुपइठान्ने अग्निञ्चाज्जे । एएसिणं अठसु लोगतियविमाणेसु अठविहा लोगतिया देवा पण्णत्ता तजहा सारस्सयमाइञ्चा वरहीवरुणायगदतोयाय तुसियाअञ्जावाहा अग्निञ्चाचेववोधञ्चा ॥ १ ॥ एएसिण अठविहाण लोगतियाणदेवाण अजहसमणुक्कोसेणं अठसागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता । अठ धम्मस्तिकायमज्जप्पएसा पण्णत्ता

अर्चि १ । अर्चिमाली २ । वैरीचन ३ । प्रज्ञकर ४ । चंद्राभ ५ । सुराज ६ । सुप्रतिष्ठा ७ । अग्निहोत्र ८ ॥ ए आठ लोकातिकविमाने विषे आठ प्रकारना लोकातिक देव कस्या तेकहैछे सारस्वत १ । आदित्य २ । वज्रि ३ । वरुण ४ । गर्दतोय ५ । तुषित ६ । अव्यावाध ७ । अग्निहोत्र ८ । अजहवा ॥ १ ॥ ए आठ लोकातिकदेवताने जघन्य उत्कृष्टो सरस्वोज आठ सागरोपमनो आऊखो कस्यो ॥ आठ धर्मास्तिकायना मध्यप्रदेश कस्या

श्लोकादि ॥ स्फुटं नवरं धर्माधर्माकाशानां मध्यप्रदेशास्ते अष्ट येच रुचकरूपा इति जीवस्यापि केवलिसमुद्भाते रुचकस्याएव ते अन्यथा त्वष्टावधिच ताये  
 ते मध्यप्रदेशाः शेषा स्त्वावर्त्तमानजलमिवा नवरतमुद्वर्त्तनपरिवर्त्तनपरा स्तत्स्वभावत्वात् ये ते ऽमध्यमप्रदेशा इति जीवमध्यप्रदेशादिपदार्थप्रतिपादका  
 स्तौर्धकरा भवतीति प्रकृताध्ययनावतारिणीं तौर्धकरवक्तव्यता सूत्रद्वयेनाह ॥ अरहाणमित्यादि ॥ सुगम नवर ॥ महापउमेति ॥ महापद्मो भविष्यदुत्सः  
 र्पिण्या प्रथमतौर्धकरः श्रेणिकराजजीवइति इहैव नवस्थानके वक्ष्यमाणव्यतिकरइति ॥ मुंडाभवित्तत्ति ॥ मुंडान् भावयित्वेति कृष्णाग्रमहिषीवक्तव्यता  
 त्वतकृद्गयाङ्गा देवसेया साचेय किल द्वारकावत्या कृष्णो वासुदेवो बभूव पद्मावत्यादिका स्तस्य भार्या अभूवन् अरिष्टनेमि स्तत्र विहरतिस्म कृष्णः सपरिवार

अष्ट अहम्नास्तिकायमज्जप्पएसा पस्सत्ता । अष्ट अगासत्तिकायमज्जप्पएसा एवंचेव । अष्ट जीवमज्जप्प  
 एसा पस्सत्ता । अरहाणमहापउमे अठरायाणो मुंडान्नविता अगारानु अणगारिय पद्मावेइति तजहा पउ  
 मं पउमगुम्भ नलिन नलिनगुम्भ पउमरथ धणुरथ कणगरह जरह । करहरस्सणवासुदेवरस्स अष्ट अणमहि  
 सीनु अरहणुण अरिठनेमिरस्स अंतियमुंडान्नविता अगारानु अणगारियं पद्मइत्ता सिट्ठानु जाव सत्तदुक्क

आठ अधर्मास्तिकायना इमज ॥ आठ आकाशास्तिकायना इमज ॥ आठ जीवना मध्यप्रदेश कट्ठा ॥ अरिहत महापट्ट आठ राजाने मुंडकरी गृ  
 हस्थावास मूकावी अणगारपणे दीक्षादेशे तेकहेळे पट्ट १ । पट्टगुल्म २ । नलिन ३ । नलिनगुल्म ४ । पट्टरथ ५ । धनुरथ ६ । कनकरथ ७ । शरत  
 रथ ८ ॥ कृष्णवासुदेवनी आठ अग्रमहिषी अरिहत अरिष्टनेमने पासे मुळथई गृहस्थावासथी अणगारपणु लीधो लेईने सिद्धुगई यावत् सर्वदुखथी

पद्मावतीप्रमृष्टाथ देशो भगवन्तं पर्युपासामासिरे भगवास्तु तेषां धर्मं माचख्यौ ततः कृष्णो यदित्था ऽभ्यधात् प्रस्था भदंत हारिकावत्या द्वादशनवयोजना  
यामविस्तराया धनपतिमतिनिर्गिताया प्रत्यक्षदेवलोकभूतायाः किमूलानां विनाशो भविष्यति भगवान् त्रिभुवनगुरु जैगाद सुराग्निद्वीपायनमुनिमूलको  
विनाशो भविष्यतीति निश्चय मधुमथनो मनस्वेवं विभावितवान् धन्यास्तौ प्रद्युम्नादयो येनिष्कारता अहं मधुग्यो भोगमूर्च्छितो न शक्नोमि प्रव्रजितुमिति  
ततस्तमर्हन्नवादीत् भोग्यं न भवत्ययमर्थो यद्वासुदेवाः प्रव्रजति कृतनिदानत्वात्तेषां मयाहं भदत कोत्पत्स्य भुवनविभु राह दग्धायां पुरि पांडुमथुरायां  
प्रतिचलितः कौशाजकानने न्यग्रोधस्था धःसुतो जराकुमाराभिधानम्नाना काण्डेन पादेविलः कार्त्तं कृत्वा वालुकाप्रभायासुतपत्स्यसे एव निश्चय यदुनंदनो  
दीनमनोवृत्ति रभवत्ततो जगद्गुरु रगादौ वादैर्य व्रज यतस्ततस्त्व मधृत्वा गामिन्या सुत्तार्पिण्या भारते वर्षे अममाभिधानो द्वादशो हंन् भविष्यसी  
ति श्रुत्वा जहर्ष सिंहनादादिक चकार ततो जनाहंनो नगरी गत्वा घोषणा कारवाचकार यदुताहंता नेमिनाथेना स्या नगर्या विनाशः समादिष्ट स्त  
तो यः कोपि तत्कामोपे प्रव्रजति तस्याहं निष्क्रमणमहिमानयितनोमोति निश्चय पद्मावती प्रभृतिका देशो ऽवादिपु र्यं युष्माभि रनुज्ञाताः प्रव्रजाम स्त  
त स्ता महात्तं निष्क्रमणमहिमान क्त्वा नेमिजिननायकस्य गिषिकात्वेन दत्तवान् भगवां स्त ताः प्रव्रजितवान् ता अतुर्विंशतिवर्षाणि प्रव्रज्यापर्याय  
परिपाण्य मासिक्वासलेखनया चरमोच्छासनिष्वासाभ्या सिद्धा इति एताश् सिद्धा वीर्यादिति वीर्याभिधायिनः पूर्वस्य स्वरूप माह ॥ वीरियपुष्पेत्यादि ॥

प्यहीणानं तंजहा पद्मावती १ गधारीलक्षणासुसीमाय जन्वूवईसच्चपत्ता रूपिणीष्पृग्गमहिसीन ॥ १ ॥

सूकांशी तेरुहैछे पद्मावती १ । गोरी २ । गधारी ३ । लक्षणा ४ । सुसीमा ५ । जन्वूवती ६ । सत्यनामा ७ । रूपिणी ८ । कृष्णनी आठ अग्रमहि

वीर्यावादाख्यस्य तृतीयपूर्वस्य वस्तूनि मूलवस्तूनि अध्ययनविशेषा आचारव्रत्तचर्याध्ययनवत् चूलावस्तूनि त्वाचारायवदिति वस्तुवीर्यादेव गतयोपि भवती  
ति तान् दर्शयन्नाह ॥ अष्टगईओइत्यादि ॥ सुगमं नवर ॥ गुरुगइत्ति ॥ भावप्रधानत्वा त्रिर्द्वेगस्य गौरवेण जर्जाधस्तिर्यग्गमनस्वभावेन या परमागवादीनां  
स्वभावतो गतिः सा गुरुगतिरिति यातु परप्रेरणा त्वा प्रणोदनगति र्वाणादोनामिव यातु द्रव्यातराक्रान्तस्य सा प्राग्भारगति र्यथा नावादेरधोगति  
रिति अनन्तर गति रूक्तेति गतिमतोना गगादिनद्वोना अधिष्टातृदेवोद्दीपस्वरूपमाह ॥ गगेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवर गगाद्या भरतेरवतनय सुदधिष्ठातृ  
देवोनां निवासद्वीपा गगादिप्रपातकुण्डमध्यवर्त्तिनो द्वीपाविकारा दन्तरद्वीपसूत्र ततएव द्वीपपतः कालोदसमुद्रस्य प्रमाणसूत्रं तदनन्तरभाविनः पुष्करा  
भ्यन्तरार्धस्य वाघ्राडस्यच सूत्रे सुगमानि चैतानि नवर मुक्तामुखमेवमुखविद्युन्मुखविद्युदन्तगच्छेषु प्रत्येकं द्वीपग्रन्थः सवध्यते तत श्रोल्लामुखद्वीपाद

वीरियपुष्टस्सणं अष्ट वत्सू अष्ट चूलियावत्सू पस्सत्ता । अष्ट गईउ पस्सत्ताउ तंजहा निरियगई तिरियगई  
जाव सिद्धिगई गुरुगई पणोल्लणगई पस्सारगई । गगासिधुरत्तारत्तवईदेवीण दीवा अष्टजोयणाइं अया  
मविरक्कजेण पस्सत्ता उल्लामुह मेहमुह विज्जुमुह विज्जुदंतदीवाणदीवा अष्टअष्टजोयणरायाइं अयामवि

पी ॥ वीर्यपूर्वनी आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कही ॥ आठ गति कही तेकहैछे नरकगति यावत् सिद्धनी गति गुरुगति परमाणुनी प्रणोदनगति प्रे  
रणायी चाले प्राग्भारगति द्रव्यने जारोनावनी अधोगति ॥ गगा १ । सिधु २ । रक्ता ३ । रक्तवती ४ । देवीना द्वीप आठ आठ योजन लावा पोहला  
कहिआ ॥ उल्लामुख मेघमुख विद्युन्मुख विद्युदंत द्वीपना द्वीप आठ आठ से योजन लावा पोहला कह्या कालोदधिसमुद्र आठलास योजन चक्र

यो णमित्यलङ्कारे द्वीपा हिमवतः शिखरिणश्च वर्षधरपर्वतस्य पूर्वयो दंष्ट्रयो रपरयोश्च समानां समाना मंतरद्वीपाना मध्ये षष्ठोऽतरद्वीपो ऽष्टाव  
 ष्ठी योजनगतानि आयामविष्कम्भेण प्रज्ञप्तः ॥ पुष्करार्द्धे च चक्रिणो भवतीति तत्सत्कारत्नविशेषस्या षटस्थानके वतारं कुर्वन्नाह ॥ एगमेगेत्यादि ॥ एकैकस्य  
 राज्ञ चतुरतचक्रवर्त्तिन इत्यत्रान्यान्यकालोत्पन्नाना मपि तुल्यकाकिणीरत्नप्रतिपादनार्थं मेकैकगह्वरं निरुपचरितराजशब्दविषयज्ञापनार्थं राजग्रहणं  
 पट्खडभरतादिभोक्तृत्वप्रतिपादनार्थं चतुरंतचक्रवर्त्तियहणमिति अष्टसौवर्णिक काकिणिरत्नं सुवर्णमानं तु चत्वारि मधुरत्नफला न्येकः श्वेतसर्पप' पौड  
 श श्वेतसर्पपा एक धान्यमाषफल द्वेधान्यमापफले एकागुञ्जा पचगुञ्जा एक कर्ममाषक. पौडश कर्ममाषका एकःसुवर्ण एतानिच मधुरत्नफलादीनि  
 भरतकालभावौनीति गृह्यंते यतः सर्वचक्रवर्त्तिना तुल्य मेव काकिणिरत्नमिति षट्तल द्वादशास्त्रि अष्टकर्णिक अधिकरणीसंस्थित प्रज्ञप्तमिति तत्र  
 तलानि मध्यखडानि अस्त्रयः कोटयः कर्णिकाः कोणविभागा अधिकरणिः सुवर्णकारीपकरणं प्रतीतमेवेति इदं च चतुरगुलप्रमाणं चउरगुलपमा

स्कन्नेणं पश्यता । कालोदेणं समुद्दे अष्टजोयणसयसहस्साइं चक्कावालविस्कन्नेणं पन्तत्ते । अष्टजोयणसयसहस्साइ चक्कावालविस्कन्नेण पश्यते । एववाहिरपुस्करद्वेवि । एगमेगस्सणं रन्तो चाउरंतचक्का  
 वहिस्स अष्ट सोवन्निए काकिणिरयणे बत्तले दुवालससिए अष्टकसिए अधिकरणिससिए पश्यते । माग

वालपिहोलपणे कह्यो ॥ माहिलो पुष्करार्द्धे द्वीप आठलाखयोजन चक्रवालपिहुलपणे कह्यो ॥ इम बाहिरलो पुष्करार्द्धेपणि ॥ एकएकराजा चातुरत  
 चक्रवर्त्तिने आठ सुवर्णनी जातिनु काकिणीरत्न छतल मध्यखड अरकोटि पाखणीरूप आठकर्णिका खूणा अधिकरण ते सोनारनी निहाई होयळे तेहने

णासुवर्णवरकागिणीनेयति ॥ वचना दित्यंगुलप्रमाणनिष्पन्नं योजनमान माह ॥ मागहेत्यादि ॥ मगधेषु भवं मागधं मगधदेशव्यवहृत तस्य योजनस्या  
ध्वमानविशेषस्याष्टधनुःसहस्राणि निहारो निर्गमः प्रमाणमिति यावत् ॥ निहत्तेति ॥ क्वचित्पाठः तत्र निधत्तं निकाचित निश्चित प्रमाणमितिगम्यत  
इदं प्रमाण परमाण्वादिना क्रमेणावसेय तथाहि परमाणूतसरेणू रहरेणूअग्नयचवालस्स लिक्खाजूयायजवो अष्टगुणविवह्रियाकमसो ॥ १ ॥ तत्र पर  
माण रनन्तानानिश्चयपरमाणूनां समुदयरूप ऊर्ध्वरेखादिभेदा अनुयोगद्वाराभिहिता अनेनैव संगृहीता दृश्या स्तथा पौरस्थादिवायुप्रेरित स्वस्यति गच्छ  
तीति त्रसरेणू रथगमनो त्वातोरथरेणूरिति एवं चाष्टौ यवमध्या न्यगुलञ्चतुर्विंशति रगुलानिहस्त श्वत्वारो हस्ता धनु ईमहस्ते धनुषां गव्यूत चत्वारि ग  
व्यूतानि योजनमिति मागधग्रहणात् क्वचि दन्यदपियोजनस्यादिति प्रतिपादितं तत्र यस्मिन् देशे षोडशभि ईनुःशतै र्गव्यूतस्या तत्र षड्भिःसहस्ते शत  
भिः शतै र्धनुषां योजन भवतीति योजनप्रमाण मभिधाया षट्योजनतो जम्बादीना प्रमाणप्रतिपादनाय सूत्रचतुष्टयमाह ॥ जंबूणमित्यादि ॥ जंबूर्ध्व  
विशेष स्तदाकारा सर्व्वरत्नमयी यासा जम्बू र्यया य जंबूद्वौपो भिधीयते सुदर्शनेति तस्या नाम साचोत्तरकुर्णा पूर्वा ई शीताया महानद्याः पूर्वेण जा  
बूनदमयस्य योजनशतपचकायामविष्कम्भस्य द्वादशयोजनमध्यभागपिण्डस्य क्रमपरिहाणितो द्विगव्यूतोच्छ्रितपचधनुःशतविस्तीर्णपद्मवरवेदिकयापरि

धस्सणं जोयणस्स अष्टधनुसहस्साइं निधत्ते पस्सत्ते । जंबूणं सुदंसणा अष्टजोयणाइं उहं उच्चत्तेणं बज्जमज्ज  
देसजागे अष्टजोयणाइं विस्संजेणं साइरेगाइं अष्टजोयणाइं सद्दग्गेणं पस्सत्ता । कूळसामलीणं अष्टजोयणाइं

संस्थाने कह्यो ॥ मगधदेशानुं ते मागधनुं योजन तेहना आठहजार धनुषप्रमाण कह्यो ॥ जंबूसुदर्शन वृक्ष आठयोजन ऊंचो ऊचपणें घणुं मध्यदेश जागे



॥ ठा० ॥

४९६ ॥

चित्तस्य द्विगव्यूतोच्छ्रितसच्छ्रिततीरणचतुर्द्वारस्य पीठस्य मध्यभागव्यवस्थितायां चतुर्थीजनोच्छ्रितायां अष्टयोजनायामविष्कम्भायां सगिषीठिकायां प्रति  
ठिताऽष्टादशवेदिका गुप्ता ॥ अष्टजोयणाइमित्यादि ॥ अष्टयोजनान्मूर्तीस्त्वेन बहुमध्यदेशभागे शाखाविस्तारदेशे अष्टयोजनानि विष्कम्भेण सातिरेका  
ण तिरेकयुता न्यूर्गेगव्यूतद्वयेनातिकानोति भावः सर्वांगेण सर्वपरिमाणेनेति तस्या यतसः पूर्वादिदिक्षु शाखा स्तन पूर्वशाखाया भवणंकोसपमाणं  
सयगिज्जतलगाडिगसुरस्स तिसृपासायासाले सुतेसुसीहासणारम्भा ॥ १ ॥ तेपासायाकोस समूसियाकोसमद्विच्छिन्ना विडिमोवरिजिणभवणं कोसस  
होइविच्छिन्नं ॥ २ ॥ देसूणकोसमुच्च जवूपठसएणजवूण परिवारिआविरायइ तत्तोअउप्पमाणाहि ॥ ३ ॥ तथा त्रिभिर्योजनप्रतप्रमाणै र्वनैः सम्परिविहा  
जवूओपनास दिसिविदिसिगतुपठमवणखड चउरोदिसासुभवणा विदिसासुयतीतिपासाया ॥ १ ॥ कोसपमाणाभवणा चउवावीपरिगयायपासाया कोस  
द्विच्छिन्नाको समूसियाणाडियसुरस्स ॥ २ ॥ पचेवधणसयाइ उव्वेहेणभवतिवावीओ कोसद्विच्छिन्नाओ कोसायामाउसव्वाओत्ति ॥ ३ ॥ पासायाणचउ  
गह भवणाणयअतरेकूडा ॥ तानिचाष्टी यदाह अठसभकूडतुक्का सव्वेजवूणयामयाभणिया तेसुवरिजिणभवणा कोसपमाणापरमरम्भन्ति ॥ १ ॥ कूडशाल्म  
लौजवूतुययत्तव्यता यदाह देवकुरुपच्छिमसे गकलावासस्ससामलिदुमस्स एसेयगमीनवर पेठकूडायरणयमयति ॥ १ ॥ अतएव एवचेवेत्युक्ता गुहासूत्रे  
व्यक्ते जम्वादीनिच वस्तूनि जवूदोपे भवतीति जवूद्वीपाधिकारा तत्तवस्तुप्ररूपणाय चेनासाधर्म्या दातकीखंडपुष्करार्णगतवस्तुप्ररूपणाय च ॥ जवूइत्यादि

एवंचेव । त्रिभिसगुहाण अष्टजोयणाइं उहं उच्चत्तेणं । खरुप्पवायगुहाणं अष्टजोयणाइं उहं उच्चत्तेणं एवंचेव ।

आठयोजन पिहोलपणे आठयोजन सर्वांगे कह्यो ॥ कूटसाएमलीवृक्ष आठयोजन इमज ॥ तिससगुफा आठयोजन ऊवी ऊचपणे कह्यो । खरु

क ॥ सूत्रपंचकमाह सूत्रसिद्ध्यर्थं नवरं सूत्राणां मयविभागो द्वे आद्येवचक्षारणां चत्वारिचप्रत्येक विजयनगरीतीर्थकरादिदीर्घवैताल्यादीनां १६ मेकं  
चूलिकाया १८ एव धातकोखडादौ धातव्यादिपूर्वसूत्राण्येताभ्येव द्विर्भवन्तीति तथा मालवच्छेल मेरोः पूर्वोत्तरविदिग्व्यवस्थित लक्षणीकृत्य प्रदक्षिण्या  
वचाराविजया च व्यवस्थाप्यन्तइति तत्रचक्रवर्त्तिनो विजयन्ते येषुयान्ता ते चक्रवर्त्तिविजयाः क्षेत्रविभागा इति ॥ जावपुष्पलावइति ॥ भणनात् मगलाव

जंबूमंदरस्स पद्मयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानईए उज्जयतटे अठ वरकारपद्मया पद्मता तजहा चित्रकूठे  
पद्मकूठे नलिणकूठे एगसेले तिकूठे वेसमणकूठे अज्जणे मायंजणे । जंबूमंदरपद्मयस्सिमेणं सीनयाए महाणई  
ए उज्जयकूले अठवरकारपद्मया पद्मता तंजहा अकावई पद्मावई आसीविसे सुहावहे चंद्रपर्वतए सूरपर्वतए  
नागपर्वतए देवपर्वतए । जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीयाएमहाणईए उत्तरेण अठचक्रवर्त्तिविजया पद्मता तंजहा कच्छे  
सुकच्छे महाकच्छे कच्छगावई आवत्ते जाव पुष्पलावई । जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीयाएमहाणईए दाहिणेण

प्रपातगुफा आठयोजन इमज ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वतयो पूर्वदिशे सीता मोटीनदीने उज्जयतटे आठ वरक्षार पर्वत कक्षा तेकहैछे चित्रकट १ । पद्मकू  
ट २ । नलिनकूट ३ । एकशैल ४ । त्रिकूट ५ । वैश्रमणकूट ६ । अजन ७ । मातजन ८ ॥ जंबूद्वीपे पश्चिमदिशे सीतोदा महानदीने बेतटे आठ वरक्षा  
र पर्वत कक्षा तेकहैछे अकावती पद्मावती आशीर्विष सुखावह चंद्रपर्वत सूरपर्वत नागपर्वत देवपर्वत ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पूर्व सीतामोटीनदीने  
उत्तरदिशे आठ चक्रवर्त्तिना विजय कक्षा तेकहैछे कच्छ १ । सुकच्छ २ । महाकच्छ ३ । कच्छगावती ४ । आवर्त्त ५ ॥ यावत् पुष्पलावती ॥ जंबूद्वी

सोपगनेति द्रष्टव्य ॥ जायमंगलावदिति ॥ करणात् महागच्छेयत्तावद्वरभोरगापरमणिज्जो प्रतिदृश्य ॥ जाय सलिलावदिति करणात् सुपक्षेयतापक्षेयता  
यईसखेनलिणीकुम्पतिदृश्य ॥ जायगंधिलावदिति ॥ करणात् महागच्छेयत्तावद्वरभोरगापरमणिज्जो प्रतिदृश्य ॥ खेमपुराचेव ॥ जायतिकरणात् अग्निहारिवावई  
खगोमंजूताउसहपुरीतिदृश्य ॥ सुसीमाकुंडलाचेव जायति ॥ करणात् गतराजियापभकराणवावईपक्षेयतासुभतिदृश्य ॥ आसपुरा ॥ जायति ॥ करणात्

अथ चक्रवहिविजया पणता तंजहा वच्छे सुवच्छे जाय मंगलावई । जंबूमंदरपञ्चत्यमेण सीनयाएमहाण  
ईए दाहिणेणं अथ चक्रवहिविजया पणता तंजहा पम्हे जाय सलिलावई । जंबूमंदरपञ्चत्यमेणं सीनया  
महानईए उत्तरेणं अथ चक्रवहिविजया पणता तजहा वप्पे सुवप्पे जाय गंधिलावई । जंबूमंदरपुरच्छि  
मेणं सीयाएमहानईए उत्तरेण अथरायहाणीउ पणताउ तजहा खंमा खंमपुराचेव जाय पुंऊरीकिणी ८ ।  
जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीयाएमहाणईए दाहिणेण अथरायहाणी पणता तजहा सुसीमा कुंडलाचेव जाय

पें मेरुथी सीतामहानदीनें दक्षिणदिसे आठ चक्रवर्तिना विजय कप्पा ते कहैछे वच्छ यावत् मंगलावती ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पश्चिमें सीतोदा महान  
दीनें दक्षिणे आठ चक्रवर्तिना विजय कप्पा ते कहैछे पट्ट १ यावत् सलिलावती ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पश्चिमें सीतोदा महानदीनें उत्तरें आठ च  
क्रवर्तिना विजय कप्पा ते कहैछे वप्प १ सुवप्प २ यावत् गंधिलावती ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पूर्वे सीता महानदीणी उत्तरें आठ राजधानी कही ते  
कहैछे खेमा १ खेमकरा यावत् पुंऊरीकिणी ॥ जंबूद्वीपे मेरुथीपूर्वे सीतामहानदीनें दक्षिणे आठ राजधानी कही ते कहैछे सुसीमा कुंडला यावत्

सीहपुरामहापुराविजयपुराअवराजियाअवराजसोगत्तिट्टश्यं ॥ वेजयंती जावत्ति ॥ करणात् ॥ जयतीअवराजियाचक्रपुरासगपुराअवज्जत्तिट्टश्य एता  
 थ चेमादिराजवान्य' कच्छादिविजयाना शीतादिनदीसमासन्नखडवयमध्यमखंडे भवति नवयोजनविस्तारा द्वादशयोजनायामा आसुचतीर्थकरादयो  
 भवतोति ॥ अट्टअरहतत्ति ॥ उत्कृष्टतो ऽष्टा वर्हतो भवति प्रत्येक विजयेषु भावात् एवचक्रवर्त्त्यादयोपि एवचतुर्ध्वपि महानदीकूलेषु द्वात्रिंशत्तीर्थकरा भवति  
 चक्रवर्त्तिनसु यद्यपि शीताशीतोदानयो रेकैकस्मिन् कूले अष्टा वष्टा वुत्पद्यत इत्युच्यते तथापि सर्वविजयापेक्षया नैकदा ते द्वात्रिंश इवति जघन्यतोपि  
 वामुदेवचतुष्टयाविरहितत्वा न्महाविदेहस्य यत्रच वासुदेव स्तत्र चक्रवर्त्तिनभवतीति तस्मा दुत्कृष्टतोपि अष्टाविंशति रेव चक्रवर्त्तिनी भवति एवं

रयणसंचया । जबूमंदरपञ्चच्छिमेण सीनुंयाए महाणईए दाहिणेणं अठरायहाणीनुं प० तंजहा आसपुरा  
 जाव वीयसोगा । जबूमंदरपञ्चच्छिमेण सीनुंयाएमहाणईए उत्तरेण अठरायहाणीनुं पश्यता तजहा विज  
 या वेजयती जाव अउज्जा । जबूमंदरपुरच्छिमेण सीनुंयाए महाणईए उत्तरेण उक्कोसपदे अठ अरिहता  
 अठ चक्रवर्ती अठ बलदेवा अठ वासुदेवा उपपज्जिसुवा उपपज्जातिवा उपपज्जिस्संतिवा । जबूमांदरपुरच्छि

रत्नसंचया ॥ जबूद्वीपे मेरुथी पश्चिमे सीतोदा मोटीनदीथी दक्षिणे आठ राजधानी कही तेकहेछे आसपुरा यावत् विगतसोका ॥ जंबू द्वीपे मेरुथी  
 पश्चिमे सीतोदा महानदीथी उत्तरे आठ राजधानी कही तेकहेछे विजया वेजयती यावत् अयोध्या ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पूर्वे सीतामोटीनदीथीउत्तरे उ  
 त्कृष्ट आठ अरिहत आठ चक्रवर्त्ति आठ बलदेव आठ वासुदेव उपना ऊपजेछे उपजस्ये ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी पूर्वे सीताथी दक्षिणे उत्कृष्टपदे इमज

जघन्यतोपि चक्रार्तिवतुष्टयसभवा हासदेवा अप्यष्टाविंशति रेव वानुदेवसहचरत्वा हलदेवा अप्येवमिति ॥ दीर्घवेयटुत्ति ॥ दीर्घग्रहणं वत्तुलवैतावा  
व्यवच्छेदार्थं गुहाष्टकयो र्यथाक्रमं देवाष्टके इति गगाकुडानि नोनयर्षधरपर्वतदक्षिणनितबस्थितानि षष्टियोजनायामविष्कम्भाणि मध्यवर्त्तिगगादेवी  
सभवनक्षीपानि त्रिटिक्मतोरणद्वाराणि येभ्यः प्रत्येक दक्षिणतोरणेन गगा धिनिर्गत्य विजयानि विभजत्यो भरतगंगावच्छोता मनुप्रविशतीति एवं सिधु  
कुंडान्यपि ॥ अठउसभकूडत्ति ॥ अष्टो ऋषभकूटपर्वता अष्टास्वपि विजयेषु तज्ञावात् तेच वर्षधरपर्वतप्रत्यासन्ना स्नेच्छखडत्रयमध्यखडवर्त्तिनः सर्वविज  
यभरतैरयतेषु भवति तत्प्रमाणचेदं सखेविउसन्नकूडा उब्बिडाप्रठजोयणाहीति बारराप्रठगचउरो मूलैराज्जावरिविच्छिन्नत्ति ॥ १ ॥ देवा स्तनिवासिन ए

मेणं रीञ्चाए महाणईए दाहिणेण उक्कोसपए एवचेव । जबूमंदरपञ्चच्छिमेण रीञ्चाए महाणईए दाहिणेण  
उक्कोसपए एवचेव । एव उत्तरेणवि । जबूमंदरपुरच्छिमेण सीञ्चाए महाणईए उत्तरेणं अठदीहवेयहा अठ  
तिमिसगुहानं अठ खरुगप्पवायगुहानं अठ कयमालगादेवा अठ नहमालगादेवा अठ गगानं अठ सि  
धूनं अठ गगाकुंठा अठ सिधुकुंठा अठ उसन्नकूठा पस्सत्ता । अठ उसन्नकूठादेवा पस्सत्ता । जबूमंदरपुर

॥ जबू द्वीपे मेरुथी पश्चिमे सीता मोटीनदीने दक्षिणे उत्कटपदे इमज्ज ॥ उत्तरेणपि ॥ जबू द्वीपे मेरुथी पूर्वे सीताथी उत्तरे आठ दीर्घवैताव्य आठ  
तिमिस्रागुफा आठ खरुप्रपातगुफा आठ कतमालदेवता आठ नहमालदेवता आठ गगाकूट आठ सिधुकूट आठ गगा आठ सिधू आठ ऋषभकूट  
पर्वत आठ ऋषभकूट देवता कस्या १७ ॥ जबू द्वीपे मेरुथी पूर्वे सीता महानदीयो दक्षिणे आठ दीर्घवैताव्य इमज्ज जावत् ऋषभकूट देवता कस्या

वेति ॥ नवर मेथरत्तारत्तावईओतासिचेवकुंडत्ति ॥ शीताया दक्षिणतोपि अष्टौ दीर्घवैताद्या इत्यादि सर्वे समानं केवलं गंगासिन्धुस्थाने रत्तारत्तवती वाच्ये  
गंगादिकुंडस्थानेपि रत्ताटिकुडानि वाच्यानीति तथाहि अठ्ठरत्ताकुडापणत्ता अठ्ठरत्तवईकुडापणत्ता अठ्ठरत्ताओअठ्ठरत्तवईओ तथा निपधवर्षधरपर्वतोत्तर  
नितववर्त्तीनि षष्ठियोजनप्रमाणानि रत्तारत्तवतीकुडानि येभ्यः उत्तरतोरणेन विनिर्गत्य ताः शीता मनुपतति तथा धातकीमहाधातकीपद्ममहापद्महवाः

च्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं अथ दीहवेयहा एवचेव जाव अथ उसजकूटादेवा प० । नवरमेथ  
रत्तारत्तवईउ तासिंचेव कूटा । जंबूमंदरपञ्चच्छिमेण सीनयाए महाणईए दाहिणेणं अथ दीहवेयहा जाव अथ  
नहमालगादेवा अथ गंगाकुंटा अथ सिधुकुंटा अथ गगानं अथ सिधूनु अथ उसजकूटपत्न्या अथ उसजकूटा  
देवा प० । जंबूमंदरपुरच्छिमेण सीनयाए महाणईए उत्तरेण अथ दीहवेयहा जाव अथ नहमालगादेवा अथ  
रत्तकुंटा अथ रत्तावइकुंटा अथ रत्तानं जाव अथ उसजकूटदेवा प० । मंदरचूलियाण वज्रमज्जदेसनाए अथ

॥ इहा ए विशेष रत्ता रत्तवती तेहनां कूट ॥ जंबूद्वीपे मेरुस्थी पश्चिमे सीतोदा महानदीस्थी दक्षिणे आठ दीर्घवैताद्वय यावत् आठ नहमालदेवता  
आठ गंगाकूट आठ सिधुकूट आठ गंगा आठ सिधू आठ ऋषजकूट पर्वत आठ ऋषजकूटदेव कह्या ॥ जंबूद्वीपे मेरुस्थी पश्चिमे सीतोदा महान  
दीस्थी उत्तरे आठ दीर्घवैताद्वय ४ ॥ इम यावत् आठ नहमालदेवता आठ रत्तवतीकूट ऋषजकूटदेवता कह्या ॥ मेरुनी चूलिकानो घणु मध्य  
देशभाग आठ योजन विस्तारपणे कह्यो ॥ धातकीखरुद्वीपपूर्वार्द्धे धातकीवृत्त आठयोजने ऊचो ऊचपणे बहुमध्यभागे आठ योजन विस्तारपणे म्हा

जम्बूनसमानरताया' यदाह जाभणिओजंबूर बिहीसीचेवहोइणसिं देवकुरासुसामलि रुक्माजहजंबुदीवंमिति ॥ जेवाभिकारात् ॥ जंबूदीवेत्यादि ॥  
सूचतुष्टय सुगम नयर ॥ भद्रसालवणेत्ति ॥ मेरुपरिच्छेपतीभृम्यां भद्रशालवन मस्ति तत्रा ष्टौ शीताशीतोद्बो रुभयकूलवर्त्तीनि पूर्वादिषु दिक्षु हस्त्याका

जोयणाइ विस्कन्नेणं प० । धायइखरुदीवपुरच्छिमधेण धायइरुस्के अठ जोयणाइ उहं उच्चतेण प० । वज्र  
मज्जदेसजाए अठ जोयणाइ विस्कन्नेण साइरेगाइं अठ जोयणाइ सङ्गणेण प० । धायइखरुदीवपुरच्छिमधे  
ण धायइरुस्के अठ जोयणाइं उहमुच्चतेणं पस्सत्ते । वज्रमज्जदेसजाए अठ जोयणाइं विस्कन्नेण साइरेगा  
इं अठ जोयणाइ सङ्गणेण पस्सत्ते । एव धायइरुस्कान् आढविता सङ्गेव जंबूदीववत्तहया जाणियह्या ॥  
जाव मंदरचूलियत्ति । एव पञ्चच्छिमद्धेवि । महाधायइरुस्कान् आढविता जाव मंदरचूलियत्ति । एव पु  
रुकरवरदीवहपुरच्छिमद्धेवि पउमरुस्कान् आढवेता जाव मंदरचूलियत्ति । एव पुरकरवरदीवपञ्चच्छिम  
महापउमरुस्कान् जाव मंदरचूलियत्ति । जंबूदीवेदीवे मंदरेपह्णु भद्रसालवणे अठ दिसाहत्तिकूळा पस्सता

भेरो आठ योजन सर्वाग्रं कच्छो ॥ इम धातकीवृक्षथी माळीनें सघली जंबूदीपनी वक्तव्यता जाणवी यावत् मेरुचूलिकालगे ॥ इम पश्चिमाहुं प  
णि ॥ महाधातकीवृक्षथी माळीने यावत् मेरुचूलिकालगे ॥ पुरकरवरदीपाहुं पूर्वाहुं पणि पट्टवृक्षथी माळीने यावत् मेरुचूलिकालगे एणे प्रकारे पु  
रकरवरदीपाहुं पश्चिमे महापट्टवृक्षथी यावत् मेरुनी चूलिकालगे ॥ जंबूदीपे मेरुपर्वते भद्रसालवने आठ दिसाहस्ती कूट कह्या ते कहेंछे पट्टोत्तर १ ।

राणि कूटानि दिशाहस्तिकूटानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा ॥ पउमेसिलोगो । कण्ठं नवर मस्यसपसगो विभागोयं मेरुओपत्रासं दिगिविदिसिगंतुभट्टसालवण  
चउरोसिडाययणा दिसासुविदिसासुपासाया ॥ १ ॥ कृत्तौसुच्चापणवी सविच्छडादुगुणमायताययणा चउबावौपरिखित्ता पामायापचसयउच्चा ॥ २ ॥ ईसा  
णस्सोत्तरिमा पासायादाहिणायसकस्स अठ्ठयद्वतिकूडा सीतासीतोदुभयकूले ॥ ३ ॥ दोदोचउद्दिसीम दरस्सहिमवतकूडसमकप्पा पउमोत्तरोच्चपठमो  
पच्चिमसीउत्तरेकूले ॥ ४ ॥ तत्तोयनीलवंते सुहत्थितहज्जणगिरीकुमुदे तहयपलासवडेसे अठ्ठमयेरोहणगिरीयत्ति ॥ ५ ॥ जगतीवेदिकाधारभूता पाली ॥ सिद्ध  
गाहा ॥ सिद्धायतनीपल्लितं कूट सिद्धकूट तच्च प्राच्या ततः क्रमेण परतः शेषाणि महाहिमवत्कूट तद्गिरिनायकदेवभवनाधिष्ठित हैमवत्कूटं हैमवद्वर्ष  
नायकदेववासभूत रोहितकूट रोहिताख्यनदीदेवतासत्कं क्रीकूटं महापद्माख्यतत्तद्गदनिवासिक्रीनामकदेवतासत्कं हरिकात्तकूट तन्नामनदीदेवतासत्कं

तंजहा पउमुत्तरेनीलवते सुहत्थीअजणगिरी कुमुदेयपलासेय वल्लिसेरोहणगिरी ॥ १ ॥ जंबूद्वीपस्सणं द्वीव  
स्स जगई अठ्ठ जोयणाइं उहं उच्चत्तेण वज्जमज्जदेसन्नाए अठ्ठ जोयणाइं विस्सन्नेणं पस्सत्ते । जंबूद्वीवेद्वीवे  
मदरस्सपल्लयस्स दाहिणेणं महाहिमवते वासहरपल्लए अठ्ठकूटा प० त० सिद्धमहाहिमवंते हिमवतेरोहिया

नीलवंत २ । सुहस्ति ३ । अजनगिरी ४ । कुमुद ५ । पलास ६ । वतंस ७ । रोहिणगिरी पर्वत ८ ॥ जंबूद्वीप नामा द्वीपनी जगती कोट आठ यो  
जन ऊची उंचपणे घणु मध्यदेशजाग आठ योजन पिहुलपणे ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वते दक्षिणे महाहिमवत वर्षधरपर्वते आठकूट कह्या तेकहैछे सिद्ध म  
हाहिमवत हैमवंत रोहित हरिकूट हरिकांत हरिवर्ष वेरुलिक कूट ८ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरे रूप्पिनामे वर्षधरपर्वते आठ कूट कह्या तेकहैछे



हरिवर्षकूटं हरिवर्षनायकदेवसत्कं वैडूर्यकूटं तद्रत्नमयत्वादिति अनेनैव क्रमेण रुक्मिकूटा न्यप्युत्थानि तद्वाथा ॥ सिद्धेरूपीत्यादि ॥ कण्ठ्याम् ॥ जंबूद्वीपे  
त्यादि ॥ चेत्राधिकारात् रुचकाग्निनसूत्राष्टकं कण्ठ्य भवरं जंबूद्वीपेऽयोमंदर स्तदपेक्षया प्राच्यांदिशि रुचकागरे रुचकाद्वीपवर्तिनि प्राग्गर्णितस्वरूपे चक्रवा  
लाकारे अष्टौ कूटानि तत्र ॥ रिष्ट्यादि ॥ गाथा स्पष्टा तेषुच नदीत्तराद्याः दिक्षुमार्यो वसति भगवतो ऽर्हतो या जन्म न्यादर्शहस्ता गायत्य स्त पर्युपास

यहिरिकूठे हरिकंताहरिवासे वेरुलिण्चेवकूठान् ॥ १ ॥ जंबूमंदरउत्तरेणं रूपिष्मिवासहरपल्लु ए अठ कूठा  
पस्यता तजहा सिद्धेरूपीरम्मग नरकंताबुद्धिरूपकूठेय हेरणवण्मणिक चणेयरूपिष्मिकूठाय ॥ २ ॥ जंबू  
मंदरपुरच्छिमेणं रुयगवरेपल्लु ए अठ कूठा प० त० रिठतवणिज्जकचण रययदिसासोवच्छिण्णपल्लवेय अंजणे  
अंजणपुल्लु ए रुयगस्सपुरच्छिमेकूठा ॥ १ ॥ तत्थणं अठ दिसाकुमारिमहत्तरियाणं महिद्धियाणं जाव पलि  
जवमठिईयाणं परिवसंति तजहा णंदुत्तरायणंदाय अणंदाणंदिवद्धणा विजयावेजयंतीय जयंतीअपराजिया

सिद्ध १ । रूपि २ । रम्मग ३ । नरकांत ४ । बुद्धि ५ । रूपकूट ६ । हेरणवंत ७ । मणिकाचन ८ । रूपीपर्वतं कूट ॥ जंबूद्वीपे मेरुपी पूर्वं रुचक  
पर्वते आठ कूट कस्या तेकहैछे रिष्ट १ । तपनीय २ । काचन ३ । रजत ४ । दिसास्वस्तिक ५ । प्रलव ६ । अंजन ७ । अंजनपुलक ८ ॥ रुचकपर्वतं पू  
र्वं कूट कस्या तिहा आठदिशाकुमारी महत्तरिका मोटी ऋद्धिनी धणीग्राणी यावत् पत्न्योपमनीस्थितिनी वसेछे तेकहैछे नदीत्तरा १ । नदा २ । आ  
नदा ३ । नदिवर्द्धणा ४ । विजया ५ । वैजयती ६ । जयती ७ । अपराजिता ८ ॥ जंबूद्वीपे मरुथोदक्षिणं रुचकपर्वते आठ कूट कस्या ते कहैछे कन

१ ॥ जबूमंदरदाहिणेणं रुयगवरेपल्लए अठ कूडा पसत्ता तंजहा कणएकंचणपउमे नलिणेससिदिवाकरेचेव  
वेसमणेवेरुलिण रुयगस्सयदाहिणेकूडा ॥ १ ॥ तत्यणं अठ दिसाकुमारिमहत्तरियाणं महिद्धियाणं जाव  
पलिणवमठिईयाणं परिवसंति तंजहा समाहारासुप्पइत्ता सुप्पचुद्धाजसोहरा लच्छिवईसेसवई चित्तगुत्ताव  
सुधरा ॥ १ ॥ जबूमंदरपञ्चच्छिमेण रुयगवरेपल्लए अठ कूडा प० त० सोच्छिएयअमोहेय हिमवंमंदरेतहा  
रुयगेरुयगुत्तमेचदे अठमेअसुदसणे ॥ १ ॥ तत्यण अठ दिसाकुमारिमहत्तरियाणं महिद्धियाणं जाव पलिण  
वमठिईयाणं परिवसंति तजहा इलादेवीसुरादेवी पुढवीपउमावई एगनासाणवमिया सीयान्हायअठमा ॥  
१ ॥ जबूमंदरउत्तररुयगवरे पल्लए अठ कूडा प० तजहा रयणेरयणुअएसव रयणेरयणसंचेए विजएवेजयं

क १ । कंचन २ । पट्ट ३ । नलिन ४ । शशि ५ । दिवाकर ६ । वैश्रमण ७ । वेरुलिय ८ ॥ रुचकने दक्षिणे कूट तिहा आठ दिशाकुमारी मोटी मो  
टीऋद्धिनी यावत् पल्योपमनी स्थितिनी वसेळे तेकहेंळे समाहारा १ । सुप्रतिज्ञा २ । सुपवई ३ । यसोधरा ४ । लक्ष्मीवती ५ । शोपवती ६ । चित्र  
गुप्ता ७ । वसुंधरा ८ ॥ जबूद्वीपे मेरुपर्वतथी पश्चिमें रुचकवरपर्वते आठ कूट कल्या तेकहेंळे स्वस्तिक १ । अमोघ २ । हिमवत ३ । मंदर ४ । रुचक ५ ।  
रुचकोत्तम ६ । चंद ७ । आठमोसुदर्शन ८ ॥ १ ॥ तिहा आठ दिशाकुमारी मोटी मोटीऋद्धिनीधनी यावत् पल्योपमनी स्थितिनी वसेळे ते कहेंळे  
इलादेवी १ । सुरादेवी २ । पृथिवी ३ । चट्पावती ४ । एरुनाज्ञा ५ । नवमिका ६ । सीता ७ । मद्रा आठमी ८ ॥ १ ॥ जबूद्वीपे मेरुथी उत्तरे रुचक

ते एव टात्तिणात्या भृङ्गारहस्ता गायति एवं प्रातीच्या स्तालहंतहस्ता एव मीदीच्या खामरहस्ता देवाधिकारादेव ॥ अठ्ठअहेत्यादि ॥ पंचसूत्री कण्ठ्या नवर ॥ अहेलोगवच्छवाओत्ति ॥ सोमणसगधमायणविज्जुपभमालवतवासीओ अठ्ठदिमिदेवयाओ वच्छवाओअहेलोएत्ति ॥ भोगकराद्या अण्टौ या

तेय जयतेअपराजिए ॥ १ ॥ तत्थण अठ्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाणं महिह्वियाणं जाव पलिनवमठिईयाणं परिवसंति तजहा अलंबुसामित्तकेसी पुंठरीगीयवारुणी आसायसव्वगाचेव उत्तराणंसिरीहरी ॥ १ ॥ अठ्ठ अहोलोगवच्छवाणं दिसाकुमारिमहत्तरियाणं प० तजहा जोगकराजोगवती सुजोगाजोगमालिणी सुवच्छा वच्छमित्ताय वारिसेणावलाहगा ॥ १ ॥ अठ्ठ उह्लोगवच्छवाणं दिसाकुमारिमहत्तरियाणं पसत्ताणं तजहा मेहकरामेहवई सुमेघामेघमालिनी तोयधाराविचित्राय पुष्पमालाअणिदिया ॥ १ ॥ अठ्ठकप्पा तिरियमि

वरपर्वते आठ कूट कह्या तेकहैछे रत्न १ । रत्नोच्चय २ । सर्वरत्न ३ । रत्नसचय ४ । विजय ५ । वैजयत ६ । जयत ७ । अपराजित ८ ॥ तिहां आठ दि शाकुमारी मोटी मोटीऋद्धिनी यायत् पल्योपमनीधितिनी वसेछें तेकहैछे अलंबुसा १ । मित्रकेसी २ । पुंठरीकिणी ३ । वारुणी ४ । आसा ५ । सव्वगा ६ । श्री ७ । ह्री ८ ॥ उत्तरे ॥ १ ॥ आठ अहोलोकीनी वसनारी दिशाकुमारी मोटी कही तेकहैछे जोगकरा १ । जोगवती २ । सुजोगा ३ । जोगमालिनी ४ । सुवच्छा ५ । वत्समित्रा ६ । वारिसेणा ७ । बलाहका ८ ॥ १ ॥ आठ उह्लोकीनी वसनारी दिसाकुमारी मोटी कही ते कहैछे मेघकरा १ । मेघवती २ । सुमेघा ३ । मेघमालिनी ४ । तोयधारा ५ । विचित्रा ६ । पुष्पमाला ७ । अनिदिता ८ ॥ १ ॥ आठमा देवलोकलगे तीर्थव उपजे ॥

अर्हतो जन्मभवनसार्त्तकपवनाटिविदधतीति ऊर्ध्वलोकवास्तव्या स्तथाच नटणवणकूडेषु एयाओउडुल्लोयवच्छवाओत्ति या अभवर्दलिकाटिकुर्त्ततीति ॥ तिरियिस्सीववण्णगत्ति ॥ अष्टसुतिर्यंचो प्युत्पद्यतइति भूतभावापेक्षया तिर्यग्निर्मिश्रा स्तिर्यङ्मिश्रा स्तेमनुष्या उपपन्ना देवतया जाता येषु ते तिर्यग्निमिश्रापपन्नकाइति परियायते गम्यते यै स्तानि परियानानि तान्येव परियानिकानि परियामवा गमन प्रयोजनयेपातानि परियानिकानि यानकारकाभियोगिकपालकादिदेवकृतानि पालकाटी न्यष्टौक्रमेण शक्रादीना मिद्राणा मिति देवत्वच तपश्चरणा दिति तद्विशेषमाह ॥ अष्टमिएत्यादि ॥ अष्टावष्टमानि दिनानि यस्यासा तथा याह्यष्टाभिर्दिनाना मटकैः पूर्यते तस्या मष्टा वष्टमदिनानि भवत्येव तत्र चाष्टा वष्टकानि चतुःषष्टिर्भवत्येव तथा प्रथमाष्टके एका दत्ति भोजनस्य पानकस्य चैव द्वितीये द्वे एवमष्टमे अष्टौ ततो त्रैशते ष्टासौत्यधिके भिक्षाणा सर्वाग्रतो भवतइति अहासुत्ता अ

स्सोववन्नगा पस्सत्ता तंजहा सोहम्मे जाव सहस्सारे । एणसुणं अठसु कप्पेसु अठ इंदा प० तं० सक्खे जाव सहस्सारे । एणसिं अठरह इंदाण अठ परियाणिया विमाणा पस्सत्ता तंजहा पालए पुप्फए सोमणसे सि रिवच्छे णदियावत्ते कामक्रमे पीडमणे विमले । अठठमियाणं त्रिस्कुपहिमाणं चउसठ्ठीएहिं राइदिएहिं दोहियअठासीएहि त्रिस्कासएहि अहासुत्ता जाव अणुपालिया विज्जवइ । अठविहा ससारसमावन्नगा

आठ देवलोकै आठ इड् कह्या तेरुहैछे शक्र यावत् सहस्वार ॥ ए आठे इड्ने आठ पारियान विमान कह्या तेरुहैछे पालक १ । पुप्फ २ । सोमन स ३ । श्रीवत्स ४ । नदियावर्त्त ५ । कामकम ६ । प्रीतिमन ७ । विमल ८ ॥ आठ आठमिश्रा त्रिनुप्रतिमा चोसठिरात्रे वेसे अद्व्यासी त्रिज्ञाये श्रुत

हाकष्या अहामया अहातया संम काएण फासिया पालिया तीरिया किट्टिया आराहिया इति यावत्करणात् दृश्यं ॥ अनुपालयन्ति ॥ आत्मसंयमानु  
कूलतया पालिताइति तपस्य न सर्वेषामपि ससारिणामिति संबंधा त्संसारिणो जीवाधिकारा त्सर्वजीवाश्च प्रतिपादयन् ॥ अष्टविहेत्यादि ॥ सूत्रत्रय  
माह कण्ठ्यम् चेदं नवर प्रथमसमयनैरयिका नरकायुःप्रथमसमयोदये इतरेत्वितरस्मि नैव सर्वेपि अनन्तर ज्ञानिन उक्ता स्तेच संयमिनोपि भवन्तीति स  
बवा त्सयमसूत्र तत्र ॥ सयमेति ॥ चाग्निं सचेह तावत् द्विधा सरागवौतरागभेदा तत्र सरागोद्विधा सूक्ष्मवादरकषायभेदात् पुनस्तौ प्रथमाप्रथमसमय

जीवा पश्यन्ता तजहा पठमसमयनेरइया एव जाव अपठमसमयदेवा । अष्टविहा सत्त्वजीवा पश्यन्ता तजहा  
नेरइया तिरिस्कजोणिया तिरिस्कजोणीत्त मणुस्सा मणुस्सीत्तय देवा देवीत्तय सिद्धा । अहवा अष्टविहा  
सत्त्वजीवा पश्यन्ता तजहा आग्निविबोहियनाणी जाव केवलनाणी मइअन्ताणी सुयअन्ताणी विजगनाणी  
अष्टविहे संजमे पश्यन्ते तजहा पठमसमयसुज्जमसंपरायसंजमे अपठमसमयसुज्जमसंपरायसंजमे पठमसमय

भा कही तिम यावत् अनुपाली कही ॥ आठप्रकारे ससारसमापन्न जीव कह्या तेकहैछे प्रथमसमयना नारकी इम यावत् अप्रथमसमयदेवता ॥ आठ  
प्रकारे सर्वजीव कह्या तेकहैछे नारकी १ । तिर्यच योनिया १ । तीर्यचनी स्त्री २ । मनुष्य मनुष्यनी स्त्री ४ । देवता देवी ७ । सिद्ध ८ ॥ अथवा आठ  
प्रकारे सर्वजीव कह्या तेकहैछे मतिज्ञानी १ । यावत केवलज्ञानी मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी विजगज्ञानी ८ ॥ आठ सिद्धिना नाम कह्या ते कहैछे ईष  
त् १ । इषत् प्राग्जारा २ । तनु ३ । तनुतनु ४ । सिद्धि ५ । सिद्धालय ६ । मुक्ति ७ । मुक्तालय ८ ॥ आठप्रकारे सज्जम कह्यो तेकहैछे प्रथमसमयनु

भेदाद्विधा एवं चतुर्धा सरागसंयमश्च तत्रप्रथमसमयः प्राप्नो यस्यस तथा सूक्ष्मकिट्टीकतः संपरायः कषायः सञ्ज्वलनलोभलक्षणी वेद्यमानो यस्मिन्स त  
या सहसरागेणा भिष्वगलक्षणेन यः स सरागः सएव संयमः सरागस्यवा साधोः सयमो यः स तथा कर्मधारय इत्येकः द्वितीयोयमेवा ऽप्रथमसमयवि  
शेषितश्चि अयच द्विविधोपि श्रेणिद्वयापेक्षया पुनर्द्विविध्यं लभमानोपि नविवञ्जितश्चि चतुर्धा नोक्त स्तथा बादरा अकिट्टीकता. संपरायाः संज्वलनको  
धादयो यस्मिन्स तथा बीतरागसयमस्तु श्रेणिद्वयाश्रयणा द्विविधः पुनः प्रथमाप्रथमसमयभेदेनैकैको द्विविधश्चि चतुर्धा सामर्थ्येन चाष्टधेति सयमि

वादरसंपरायसंजमे अप्ठमसमयवादरसंपरायरांजमे पठमसमयउवसंतकसायवीयरगसंजमे अप्ठमसमय  
उवसंतकसायवीयरगसंजमे पठमसमयस्कीणकसायवीयरगसंजमे अप्ठमसमयस्कीणकसायवीयरगसजमे  
अप्ठ पुठवीनं प० त० रयणप्पजा जाव अहेसत्तमा ईसिप्पल्लारा । ईसिप्पल्लाराएण पुठवीए वज्जमज्जदेसजाए  
अप्ठजोयणेस्सिक्खे अप्ठ जोयणाइं वाहल्लेण पस्सत्ते । ईसिप्पल्लाराएणं पुठवीए अप्ठ नामधेज्जा पस्सत्ता तंजहा

सूक्ष्मसंपराय सरागसंजम १ । बीजासमयनुं सूक्ष्मसंपराय सरागसंयम २ । प्रथमसमयनुं वादरसंपराय सरागसंयम ३ । अप्रथमसमयनुं वादरसंपराय  
सरागसंयम ४ । प्रथमसमयनु उपसातकषाय बीतरागसंयम ५ । अप्रथमसमय उपसातकषाय बीतरागसंजम ६ । प्रथमसमय क्षीणकषाय बीतरागसंयम ७  
अप्रथमसमयक्षीणकषायबीतरागसंयम ८ ॥ आठ पृथ्वीकही तेकहैके रत्तप्रभा यावत् अधोसातमी ईषत्प्राग्भारा ८ ॥ ईषत्प्राग्भारापृथ्वीनेविषे बहुमध्यजाग  
आठजोजननु क्षेत्र आठ योजन जाऊपणे कह्यो । \* इसनिसाणके बीचमे सिद्धिके आठनामका टब्बा पहले छपगयाहै पोथीकी अशुद्धतासे सो इहां जानना \*

नस्तु पृथिव्या भवंतीति पृथिवीमूत्रत्रयं कण्य नवर मष्टयोजनिक चैव मायामविष्कभाभ्या मिति गम्यते ईषद्याग्भारायाः ईषदिति या नाम रत्नप्रभाद्यपे  
 जया क्लृप्त्वा तस्या १ एवं प्राग्भारस्य क्लृप्त्वा तस्या ईषद्याग्भारेति वा २ अतएव तनुरिति वा तन्वीत्यर्थः ३ अतितनुत्वा तनुतनुरिति वा ४ सिद्धान्ति त  
 स्यामिति सिद्धिरिति वा ५ सिद्धानामाश्रयत्वा त्तिङालय इति वा ६ मुच्यते सकलकर्मभि स्तस्यामिति मुक्तिरिति वा ७ मुक्ताना माश्रयत्वान्मुक्तालय इति वे  
 ति ८ सिद्धिश्च शुभानुष्ठाने प्रमादतया भवतीति तद्विषयतया आह ॥ अद्वहौत्यादि ॥ कण्य नवर मष्टासु स्थानेषु वस्तुषु सम्यग्घटितस्य अप्राप्तेषु यो  
 गः कार्यः यतितव्य प्राप्तेषु तदवियोगार्थं यन्नः कार्यः पराक्रमितस्य शक्तिचयेपि तत्पालने पराक्रमउत्साहातिरेको विधेयः किञ्चिद्वैतस्मि नष्टस्थानकल  
 क्षणे वक्ष्यमाणेयं नप्रमादनौय नप्रमाद कार्यो भवति अश्रुताना मनाकर्णिताना धर्माणा श्रुतभेदाना सम्यक्श्रवणतायैवा भ्युत्थातस्य मभ्युपगतव्यं भवति  
 १ एवं श्रुतानां श्रोत्रेन्द्रियविषयीकृताना मवग्रहणताये मनोविषयीकरणायो पधारणताये अविच्युतिस्मृतिवासनाविषयीकरणायेत्यर्थः २ ॥ विकिचणया  
 एत्ति ॥ विवेचना निर्जनेत्यर्थः तस्यै ३ अतएव आत्मनो विशुद्धि विवशोधना अकलङ्कत्व तस्येति ४ असंश्रुतस्य नाश्रितस्य परिजनस्य शिष्यवर्गस्येति

ईसीइवा ईसिप्पजाराइवा तणुइवा तणुतणुइवा रिद्धीइवा सिद्धालएइवा मुत्तीइवा मुत्तालएइवा अठहि  
 ठाणेहि सम्मं सघफियह्वं जइयह्वं परक्कामियह्वं अस्सिचणं अठेनोवमा एव नवइ असुयाणधम्माण सम्म

आठथानके सम्यक्प्रकारे घटवो उद्यमकरवोप राक्रमवु ए अर्थनेविधे प्रमाद नकरवो नथीसाभल्यो जे धर्म ते सम्यक् साजलवाने उद्यमकरवो १ । साजल्या  
 जे धर्म ते ग्रहवाने अर्थ धार वाने अर्थ उजमालथावु नवाजे कर्म ते सजमे करी अणकरवाने उजमालथावू जूनाजे कर्म ते तपेकरी विगचवा ढालवाने

५ ॥ सेहंति ॥ विभक्तिपरिणामा च्छैक्षकस्या भिनवप्रवर्जितस्य ॥ आचारगोचरति ॥ आचार. साधुसमाचार स्तस्य गोचरो विषयो व्रतषट्कादि राचार गोचरो ऽथवा आचारश्च ज्ञानादिविषयः पञ्चधा गोचरश्च भिक्षाचर्यं त्याचारगोचर मिह विभक्तिपरिणामा दाचारगोचरस्य ग्रहणताया शिञ्जणे शैक्षमा चारगोचर ग्राहयितु मित्यर्थः ६ ॥ अगिन्नाएत्ति ॥ अग्नान्या अखेदेने त्यर्थं वेयावृत्त्य प्रतीतिशेषः ७ ॥ अधिगरणसिन्ति ॥ विरोधे तत्र साधर्मिकेषु निश्चित राग उपाश्रितं द्वेषो ऽथवा निश्चितमाहारादिलिप्सा उपाश्रित शिष्यकुलादापेक्षा तद्वर्जितो य. सो ऽनिश्चितोपाश्रित. नपन्नं शास्त्रबाधित गृह्णातीत्य पक्षग्राही अतएव मध्यस्थभावं भूतः प्राप्तो यः स तथा सभवे दितिशेष स्तौनच तथाभूतेन कथन्तु केनप्रकारेण साधर्मिका. साधवः अल्पशब्दा विगत

सुणण्याए अण्णुठेयव सुयाणं धम्माणं संगिरहयाए उवहारण्याए अण्णुठेयव जवइ तवाणंकम्माणंसंजमेणं  
अकरणयाए अण्णुठेयव जवइ पोरणाणं कम्माण तवसा विगिंचण्याए विसोहणत्ताए अण्णुठेयव जवइ  
असगिहीयपरिजणस्स संगिरहयाए अण्णुठेयव जवइ सेहंआचारगोचरं ग्रहण्याए अण्णुठेयव जवइ गि  
लाणस्सअगिलाए वेयावच्च करण्याए अण्णुठेयव जवइ साहम्मियाणअहिगरणंसि उप्पन्नसि तस्य अणि  
स्सिउवस्सिए अपरकग्गाही मज्जत्यजावन्नूए कहसुसाहम्मिया अप्पसद्दा अप्पऊळा अप्पतुमत्तुमा उवसा

शुद्धकरवाने उजमाल थावू अनाश्रितजे शिष्यादिपरिवार तेहना ग्रहवाने उजमालथावो ॥ नवदीक्षितशिष्यने आचारगोचर ग्रहवाने उजमालथावो ॥  
ग्लाननु अग्लानपणे वेयावचकरवाने उजमालथावु ॥ साधर्मीने विषे अधिकरण रागद्वेषउपने तिहा आहारना लालचे शिष्यादिकनी अपेक्षारहितपक्ष



राटीमहाध्वनयः अल्पभक्त्या विगततथाविधविप्रकीर्णवचनाः अल्पसुमतुमा विगतक्रोधमनोविकारविशेषाः भविष्यंतीति भावयतोपशमनाया धितरण  
 स्या भूत्यातय भवतीति ८ प्रपमादिनां देवल्लोकोपि भवतीति देवल्लोकपतिवशा एकमाह ॥ महासुक्तेत्यादि ॥ कण्ठ्य अनन्तरोक्तविमाननिवासिदेवै र  
 पि वस्तुविचारे नजोयंते केचिद्वादिनइति तदष्टक मात ॥ अरहप्रोइत्यादि ॥ सुगम एतेषां च नेमिनाथ विनेयानामध्ये कश्चित् केपलो भूत्वा वेदनीयादिक  
 र्मक्षितीना मायुक्तस्थित्या समोकरणार्थं केवलिसमुपातं कृतवान् इति समुपातमाह ॥ अष्टेत्यादि ॥ तत्र समुपात प्रारम्भमाणः प्रथममेवा वर्जीकरण अ  
 भ्येति आंतर्मोहर्त्तिकं उद्दीरणावलिकायां कर्म प्रक्षेपव्यापाररूप मित्यर्थ स्तः समुपात गच्छति तत्रच प्रथमसमये सदेहविष्णुश्च मूर्धमधश्चायत सुभ

मणयाए अष्टुठेयव्वं जवइ ॥ महासुक्कसहस्सारेसुणं कप्पेसु विमाणा अष्टजोयणसयाइ उह्वउच्चत्तेणं प० ।  
 अरहजण अरिठनेमिस्स अष्टसयावार्इणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वाएअपराजियाण उक्कोसिया वाइ  
 संपयाहोत्या । अष्टसामइए केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते तजहा पढमेसमए दळ करेइ वीएसमए कवाळं करेइ

कोईनो ता शेनही मध्यस्थभावे रक्ष्यो थको किम साधरमी राक्षरहित थाय धधरहित थाय क्रोधरहित थाय तिम समाववानें उजमालथावो ८ ॥ महा  
 सुक्क सहस्वारदेवल्लोकेनेविषे विमान आठ योजन ऊचा ऊचपणे कथा ॥ अरिहंत अरिष्टनेमने आठसे वादी देवता मनुष्य असुरनी पर्वदामाहिं अपरा  
 जित जीतीनसके उत्कृष्टी वादीनी सपदा थई ॥ आठ समय केवलि समुद्घात कथ्यो तेरुहेछे पहिले समये दळकरे जीवप्रदेशनो १४ राज प्रमाणे १ । बीजे  
 समयें कपाटकरे २ । त्रीजेंसमये मथान करे ३ । चौथे समये लोकना आतरा पूरे १४ राज इम जरते ॥ ४ । पाचमे समये लोकातरा सहरे ५ । छठे सम

यतोपि लोकान्तगामिन जीवप्रदेशसंघातं दंडमिव दंडं केवली आनाभोगतः करोति द्वितीयेतु तमेव दंडं पूर्वापरदिग्द्वयप्रसारणा त्पार्श्वतो लोकान्तगामि कपाटमिव कपाटं करोति तृतीयेतु तदेव दक्षिणोत्तरदिग्द्वयप्रसारणान्मन्यान करोति लोकांतप्रापिणमेवेति एवच लोकस्य प्रायो बहुपूरितं भवति मन्यान्तरा ख्यपूरितानि भवत्यनुश्रेणिगमना जीवप्रदेशानामिति चतुर्थेसमये मन्यातराण्यपि सकललोकनिष्कुटैः सह पूरयति ततश्च सकलो लोकः पूरितो भवतीति तदनन्तरमेव पचमे समये यथोक्तप्रतिलोम मन्यातराणि सहरति जीवप्रदेशान् सकर्मकान् सकोचयति षष्ठे मन्यान मुपसहरति घनतरसकोचा त्सप्तमे कपाट मुपसहरति दंडात्मनि सकोचात् अष्टमे दंड मुपसहृत्य शरीरस्थएव भवति तत्रच औदारिकप्रयोक्ता प्रथमाष्टमसमययो रसा विष्टः मिश्री दारिकयोक्ता सप्तमषष्ठद्वितीयेषु १ कर्मणशरीरयोगौ चतुर्थके पचमे तृतीयेच समयत्रयेपिच तस्मिन् भव त्याहारको नियमादिति २ वाङ्मनसो स्वप्र योक्तैव प्रयोजनाभावादिति अतो भिहितं अष्टौ समया यस्मिन् सो ष्टसमयः सएवा ष्टसामयिकः केवलिनः समुद्घातः केवलिसमुद्घातो नशेषइति अनन्तर केवलिनां समुद्घातवक्तव्यतो क्ता अथा केवलिना गुणवतां देवत्व भवतीति देवाधिकारवत् ॥ समणस्सेत्यादि ॥ सूत्रपचक सुगम नवर अनुत्तरेषु विज

तइएसमए मंथं करेइ चउत्येसमए लोगं पूरेइ पचमेसमए लोगं पळिसाहरइ ठठेसमए मंथं पळिसाहरइ सप्तमेसमए कवाळ पळिसाहरइ अठमेसमए दंडं पळिसाहरइ । समणस्सणं जगवले महावीरस्स अठसया

ये मंथानक संहरे ६ । सातमें समयें कपाटसंहरे ७ । आठमे समयें दंडसहरे यथावस्थित थाय ८ ॥ अमणजगवंत महावीरने आठसे अनुत्तरोववा ई कल्याणगतिना जानार यावत् आगमनेविषे भद्रक उत्कृष्टीसंपदा थई ॥ आठ प्रकारे वाणव्यतर देवता कह्या ते कहैछे पिशाच १ । जूत २ । य

यादिभिमानेषु पपातो येषां मस्ति ते अनुत्तरोपपातिका स्तेषां साधूनामिति गम्यते तथा गतिर्देवगतिलक्षणा कन्याणां येषां एव स्थितिरपि तथा  
 प्रागमिष्यत् भद्रं निर्वाणलक्षणं येषां ते तथा तेषां चैत्यवृत्ताः मणिपीठिकानां सुपरिवर्त्तिनः सर्वरत्नमया उपरिच्छन्नध्वजादिभिरलङ्घिताः सुधर्मादिसभाना  
 मगता येषूयंते ते एतद्वृत्ति संभाव्यन्ते येतु विंशतिफलं भूय सुलसवतेतद्वृत्तिरुत्तरे असीयचपण्या नागेतद्वृत्तिरुत्तरे चैवति ॥ १ ॥ तेचिह्नभूता एतेभ्यो ऽन्य  
 एवेति ॥ कलत्रोत्पत्त्यादि ॥ श्लोकार्थं कण्ठ्यं नवर ॥ भुयगाणति ॥ महोरगाणमिति ॥ चारचरद्वि ॥ चारकरोति चरतीत्यर्थः ॥ प्रमदति ॥ प्रमदं शब्देण स्य

अनुत्तरोववाड्याण गङ्कल्लाणाणं जाव अगमेसिज्झाणं उल्लोसिया अनुत्तरोववाड्संपया होत्या । अथ  
 विहा बाणमंतरा देवा पणत्ता तंजहा पिसाया जूया जस्का रस्का किस्सरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा  
 एएसिणं अथरह बाणमंतराणं देवाण अथ चेइयरुस्का पणत्ता तजहा कालवोउपिसायाण वज्जो जस्काणचे  
 इयं तुलसीजूयाणजवे रस्काणचकळु ॥ १ ॥ असो गोकिस्सराणं च किंपुरिसाणचचंपने नागरुस्को तुयगाणं  
 गंधव्वाणंतुतिदुने ॥ २ ॥ इमीसेरयणप्पजाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जाने जूमिजागाने अथ जोयणसए उह

क्ष ३ । राक्षस ४ । किन्नर ५ । किंपुरुष ६ । महोरग ७ । गधर्व ८ ॥ एतत्तं प्राठप्रकारे व्यतरदेवताने प्राठ चैत्यवृत्त कत्या ते कहेहे कलंबवृत्त पिशा  
 चने १ । वक्रवृत्त यक्षने २ । तुलसी जूतने ३ । राक्षसने कळक ४ । असो कवृत्त किन्नरने ५ । किंपुरुषने चपकवृत्त ६ । नागवृत्त जूतने ७ । गधर्वने  
 तिदुकवृत्त ८ ॥ प्रा रत्नप्रज्ञा पृथ्वीनेविषे घणुसम रमणीक जे जूमिजाग तेथकी प्राठसें योजन ऊची सूर्यनु विमान चारचरेहे ॥ प्राठ नक्षत्र चद्रमा

श्रमानता तन्नचण योग योजयति आत्मन चन्द्रेण सार्धं कदाचि व्रतु तमेव सदैवेति उक्तं च पुणवसुरोहिणिचित्ता महजेष्ठगुराहकत्तियविसाहा चद्र  
 स्रउभयजोगत्ति ॥ यानिच दक्षिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्हयोगी न्यपि कटाचि द्ववन्ति यतो लोकश्रीटोकाकृतोक्तं एतानि नत्तमा ग्युभययोगीनि चद्रस्य  
 दक्षिणे नोत्तरेणच युज्यते कथचिच्चद्रेण भेद मध्यपयोत्तौति एतत्फल चेद एतेषामुत्तरगा ग्रहाःसुभिचायचद्रमानितरामिति देवनिवासाधिकारा देवनि  
 वासभूतजवूहीपादिहारसूत्रद्वयं देवाधिकारा देवत्वभाविकर्मविशेषसूत्रत्रयं कर्माधिकारा तन्निबन्धनकुलकोटिसूत्र त्रीन्द्रियादिवेचि-यहेतुकर्मपुद्गलसूत्राणिच

मवाहाए सूरविमाणं चारं चरइ । अठ नरकत्ताणं चंदेणसद्धिं पमहं जोगंजोएइ तंजहा कत्तिया रोहिणी  
 पुणवसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा जिठा । जंवूहीवरसणं होवरस दारा अठजोयणाडं उहं उच्चत्तेणं  
 पसत्ता । पुरिसवेयणिज्जरसणं कम्मरस जहम्मेणं अठ संवच्छराइ वंधठिई पसत्ता । जसोकित्तिनामएणं  
 कम्मरस जहन्तेण अठमुज्जत्ताइ वंधठिई पसत्ता । उच्चागोयरसण कम्मरस एवचेव । तेइंदियाणं अठजाइ

सघाते फरसीने योग जुठेछे तेकहैछे कत्तिका १ । रोहिणी २ । पुनर्वसू ३ । मघा ४ । चित्रा ५ । विशाखा ६ । अनुराधा ७ । ज्येष्ठा ८ ॥ जंवूहीप  
 ना वारणा आठ योजन ऊचा ऊचपणे कह्या ॥ सघला द्वीप समुद्रना वारणा आठ योजन ऊचा ऊचपणे कह्या जगवतें ॥ पुरुषवेदनी कर्मनी ज  
 घन्य आठ वरसनी बधस्थिति कही ॥ जसकीर्ति नामकर्मनी जघन्य आठ मुहूर्त बधस्थिति कही ॥ उच्चगोत्रकर्मनी इमज ॥ तेरिद्वीने आठ जाति  
 कुलकोटि जोनि प्रमुख लाख कही । जीवने आठ थानके निवर्तित पुद्गल पापकर्मपणे चिण्या चिणेछे चिणस्ये जीव तेकहैछे प्रथमसमयनिवर्तित ना

ठा० ॥

५०६ ॥

सुगमानि नवरं ॥ जातीत्यादि ॥ जाती त्रीन्द्रियजाती कुलकोटीनां योनिप्रमुखाणां योनिहारिकाणां यानि शतसहस्राणि तानि तथेति ॥ इति श्रीम दभ  
यदेवसूरिविरचिते स्थानाख्यतृतीयागविवरणे ऽष्टस्थानकाख्य मष्टममध्ययन समाप्त मिति ॥ श्लोक ७२० ॥      ८      ॥      \*      ५  
व्याख्यात मष्टम मध्ययन मधुना सख्याक्रमसबडमेव नवमस्थानकाख्यं नवममध्ययन मारभ्यते अस्यच पूर्वैण सह संबंधः सख्याक्रमकृतएवै कः सम्बन्धान्तर  
न्तु पूर्वस्मिन् जीवादिधर्मा उक्ता इहापि तएवे त्येव सम्बन्धस्या स्यादिसूत्र ॥ नवहिठाणेहिसमणइत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहाय्यं संबधः पूर्वसूत्रे

कुलकोटिजोणिपमुहसयसहस्सा पस्सत्ता । जीवाणमठठाणनिहत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चि  
णतिवा चिणिस्संतिवा । पढमसमए नेरइयनिहत्तिए जाव अपढमसमयदेवनिहत्तिए एव चिणउवचिणजाव  
णिज्जराचेव । अठपएसिया खधा अणता पस्सत्ता । अठप्पएसोगाढा पोग्गला अणता पस्सत्ता । जाव  
अठगुणलुस्का पोग्गला अणता पस्सत्ता ॥ इड अठमं ठाणं सम्मत्तं ॥      ८      ॥      ॥      ॥  
नवहिठाणेहि समणेनिग्गथे संजोइयविसंजोइयं करेमाणे नाइक्कमइ तंजहा आयरियपफिणीय उवज्जाय

रकी यावत् अपढमसमयदेवनिवर्तित इम क्षिया उपक्षिया यावत् निर्जस्या निश्चे ॥ आठ प्रदेशना खंध अनंता कट्ठा ॥ आठ प्रदेशोगाढ पुद्गल  
अनता कट्ठा ॥ यावत् आठ गुणलूखा पुद्गल अनता कट्ठा ॥ एणोप्रकारे आठमु ठाणू कट्ठो ट्ठार्ये ॥      ८      ॥      ॥      ॥      ॥  
नवथानके अमणनियथ एक माळलीनाने माळलबाहिरकरतो आज्ञा अतिक्रमे नही तेकहैछे आचार्यना प्रत्यनीकने १ ॥ उपाध्यायना प्रत्यनीकने २ ॥

पुद्गला वर्णिता स्तद्विशेषोदयाच्च कश्चित् श्रमणभाव मृगगतीपि धर्माचार्यादीनां प्रत्यनीकतां करोति तच्च विसम्भोगिकं कुर्वन्नपरः सुश्रमणे नाज्जामतिक्रामतीतीहा भिधीयत इत्येव सबधस्यास्य व्याख्या साच सबधतएवो केति स्वयं ब्रह्मचर्यव्यवस्थितएव चैवकरोतीति तदभिधायकाध्ययनानि दर्शयन्नाह ॥ नवबंभचेरेत्यादि ॥ ब्रह्मच कुशलानुष्टानं तच्च तच्चैर्यं चासेयमिति ब्रह्मचर्यं सयमइत्यर्थं स्वातिपादका न्यध्ययना न्याचारप्रथमश्रुतस्त्वन्यप्रतिबद्धानि ब्रह्मचर्याणि तत्र शस्त्रद्रव्यभावभेदादनेकविधं तस्यजीवशसनहेतोः परिज्ञाज्ञानपूर्वकं प्रत्याख्यानयत्रोच्यते सा शस्त्रपरिज्ञा १ ॥ लोकविजयओत्ति ॥ भावलोकस्य रागद्वेषलक्षणस्य विजयो निराकरणयत्राभिधीयते सलोकविजयः २ ॥ सोओसिणिज्जंति ॥ श्रोता अनुकूला परीषहा उष्णाः प्रतिकूलास्ता नाश्रित्य यत्र कृतं तच्छ्रोतोणीयं ३ ॥ सन्नत्तति ॥ सम्यक्त्वं मचलं विधेयं न तापसादीनां कष्टतपःसेविना मष्टगुणैश्वर्यं मुद्वीच्य दृष्टिमोहः कार्यइति प्रतिपादनपरसम्यक्त्वं ४ ॥ आवतीति ॥ आद्यपदेन नामातरेण तु लोकसारं स्तब्धा ज्ञानाद्यसारत्यागेन लोकसाररत्नत्रयोद्युक्तेन भाव्यमित्येतमर्थं लोकसारः ५ ॥ धूयति ॥ धूतं सगानां त्यजनं तत्प्रतिपादकं धूतमिति ॥ विमोहति ॥ मोहसमुत्थेषु परीषद्दीपसर्गेषु प्रादुर्भूतेषु विमोहो भवेत्तान्

पङ्क्तिणीयं थैरपङ्क्तिणीयं कुलगणसंघनाणदसणचरित्तपङ्क्तिणीयं । नवबज्जचेरा प० तं० सत्यपरिन्ना लोगविजुंय जाव उवहाणसुयं महापरिन्ना । नव बंजचेरगुत्तीनु प० तं० विविक्ताइ सयणासणाइं सेविक्ता नवइ नो

यविरना प्रत्यनीकने ३ ॥ कुल ४ ॥ गच्छ ५ ॥ सव ६ ॥ ज्ञान ७ ॥ दर्शन ८ ॥ चारित्रना प्रत्यनीकने ९ ॥ नवब्रह्मचर्यना अध्ययन कल्या तेकहैछे शस्त्रपरिज्ञा आचारागता १ ॥ लोकविजय २ ॥ यावत् उपधानश्रुत ८ ॥ महापरिज्ञा ९ ॥ नवब्रह्मचर्यनी गुप्ति कही ते कहैछे नपुसक पशू स्त्रीसहित वस

सम्यक् कहेतेति यत्राभिधीयते सविमोक्तः ७ महावीरासेवितस्योपधानस्य तपसः प्रतिपादकं श्रुतं यत् उपधानश्रुतमिति ८ महती परिज्ञा अन्तर्क्रिया लवणा सम्यग्विधेयेति प्रतिपादनपरमहापरिज्ञेति ९ ब्रह्मचर्यशब्देन मैथुनविरतिरप्यभिधीयतइति ब्रह्मचर्यगुप्तीः प्रतिपादयन्नाह ॥ नवेत्यादि ॥ ब्रह्मचर्यस्य मैथुनव्रतस्य गुप्तगो रक्षाप्रकाराः ब्रह्मचर्यगुप्तयः विविक्तानि स्त्रीपशुपण्डकेभ्यः पृथग्वर्त्तानि शयनासनानि संस्कारकपीठकादीनि उपलक्षणतया स्थानादीनिच सेविता तेषां सेवको भवति ब्रह्मचारी अन्यथा तदाधासम्भवात् एतदेव सुखार्थं व्यतिरेकेणाह नोस्त्रीसंसक्तानि नो देवीनारीति रक्षीभिः समाकीर्णानि सेविता भवतीति संबध्यते एवं पशुभिर्गवादिभिस्तत्संसक्तौहि तत्कृतविकारदर्शनान् मनोविकारः संभाव्यतइति पण्डकानपुंसकानि तत्संसक्तौ स्त्रीसमानो दोषः प्रतीतएवेत्येकः १ नोस्त्रीणां केयलाना मितिगम्यते कथां धर्मदेशनादिलक्षणवाक्यप्रतिबंधरूपां यदिवा कर्णाटी सुरतीपचारकुशलालाटीविदग्धप्रियाइत्यादिकां प्रागुक्तावाजात्यादिव क्षयरूपा ज्ञययिता तत्कथको ब्रह्मचारीति द्वितीय २ ॥ नोइत्यिगणाइति ॥ इह सूत्रं दृश्यते केवल ॥ नोइत्यिठाणाइति ॥ संभाव्यते उत्तराध्ययनेषु तथा धीतत्वात् प्रक्रमानुसारित्वा चास्थेती दमेव व्याख्यायते नोस्त्रीणां तिष्ठन्तिषु स्थानानि निषद्याः स्त्रीस्थानानि तानि सेविता भवति ब्रह्मचारी कोर्यः स्त्रीभिः सहैकासने नोपविशे दुष्यिता स्वपिठितासु मुहूर्त्तनोपविशेदिति दृश्यमानपाठाभ्युपगमे त्वेव व्याख्या नोस्त्रीगणानां पर्युपासको भवेदिति ३ नोस्त्रीणां मिद्रियाणि नयननासिकादीनि मनो हरति दृष्टमात्राया चिपत

इत्यीसंसत्ताइं नोपसुसंसत्ताइं नोपङ्गसंसत्ताइं १ नोइत्योणंकहकहेत्ता २ नोइत्यिठाणाइं सेविता नवइ ३ नो

तिमा नरहे १ ॥ स्त्रीनी कथा नकहें २ ॥ स्त्रीबेठाना स्थानके नबसे ३ ॥ स्त्रीनी इंद्री मनोहर मनोरम दृष्टिमाक्रिये नही ४ ॥ प्रणीत स्त्रिग्धरस न

ति मनोहराणि तथा मनोरमयन्ति दर्शनानन्तर मनुचिन्त्यमाना न्याह्लादयतीति मनोरमा ख्यालोक्यालोक्य निद्वयाता दर्शनानन्तर मतिशयेन चिन्तयि  
ता यथा हो सलवणत्व लोचनयो ऋजुत्व नासावंशस्थे त्यादि ब्रह्मचारीति ४ नो प्रणीतरसभोगी नो गलत्स्नेहविन्दुभोक्ता भवति ५ नो पानभोजनस्य  
रूक्षस्या प्यतिमात्रं अइमसणस्ससर्वं जणस्सकुज्जादवस्सदोभाए वाजपवियारुद्धा व्वम्भाएजणयंकुज्जन्ति ॥ १ ॥ एवविधप्रमाणातिक्रमेणा हारको ऽभ्यवह  
र्त्ता सदा सर्वदा भवति खाद्यस्वाद्ययो रुत्सर्गतो यतीना मयोग्यत्वा त्यानभोजनयो ग्रहणमिति ६ नो पूर्वैरत गृहस्थावस्थाया स्त्रीसंभोगानुभवन तथा पूर्व  
क्रीडित तथैव द्यूतादिरमणलक्षण स्मर्त्ता चिन्तयिता भवति ७ नो शब्दानुपातौति शब्द मन्त्रनभाषितादिक मभिष्वगहेतु मनुपत त्यनुसरती त्येवशील. श

इत्थीणंइंदियाइंमणोहराइंमणोरमाइंखालोइत्तानिज्जाइत्ताज्जवइ ४ नोपणीयरसज्जोई ५ नोपाणज्जोयणस्सज्ज  
इमायमाहारएसयाज्जवइ ६ नोपुह्वरयपुह्वकीलियसरित्ताज्जवइ ७ नोसहाणुवाई नोरूवाणुवाई नोसिलोगाणुवा  
ई ८ नोसायासुक्कपफिवट्ठेत्थाविज्जवइ ९ ॥ नव बंजचेरत्थगुत्तीज प० त० नोविवित्ताइसयणासणाइसेवित्ताज्ज  
वइ नोइत्थीसंसत्ताइ पसुसंसत्ताइ पळगसंसत्ताइ इत्थीणंकहकहेत्ताज्जवइ नोइत्थिष्ठाणाइ सेवित्ताज्जवइ इत्थी

जीमे ५ ॥ पाणी जोजन अतिमात्रायेआहारनकरे ब्रह्मचारी ६ ॥ पूर्वनाजोग पूर्वनाविषयसुखसंजारे नही ७ ॥ सुमणास्त्रीना शब्दनें अनुसरेनही। ति  
मरूपानुपातीनहोय यसख्यातिनें अनुसरेनहीं ८ ॥ सातासुखने विषे तत्परनथायब्रह्मचारी ९ ॥ नवब्रह्मचर्यनी अगुप्तिकही तेकहैछे विविक्तशय्या आ  
सन सेवे स्त्रीसयुक्त पसुसंसक्त नपुसकससक्त एहवा १ ॥ स्त्रीनी कथाकहे सरागपणे २ ॥ स्त्री बेठीहोय ते थानके बेसे स्त्रीनां इंद्दीजोवे सरागपणे



द्धानपाती एवं रूपानुपाती श्लोकं ख्याति मनुपततीति श्लोकानुपातीति पदत्रयेणा प्येकमेव स्थानकमिति न नो साता सौख्यप्रतिवदइति साता त्पुण्यप्र  
 कृते सत्ताया द्य सौख्य सुख गन्धरसस्पर्शलक्षणविषयसंपाद्य तत्र प्रतिवद स्तत्परो ब्रह्मचारी सातग्रहणा दुपशससौख्यप्रतिवदताया न निषेधः वापीति  
 समुच्चये भवतीति उक्तपिपरीता प्रगुप्तयो प्येवमेवेति उक्तरूप नवगुप्तिसनाथ ब्रह्मचर्यं जिनै रभिहितं इति जिनविशेषौ, प्रकृताध्ययनावतारेणाह ॥ अभि  
 नदणेत्यादि ॥ कस्य अभिनदनसुमतिजिनाभ्याश्च सङ्गताः पदार्थाः प्ररूपिता स्तेच नवेति तान् दर्शयन्नाह ॥ नवसम्भावेत्यादि ॥ तद्भावेन परमार्थेना नृपचा  
 रेणे त्यर्थः पदार्थाः वस्तूनि सङ्गावपदार्थां स्तद्यथा जीवाः सुखदुःखज्ञानोपयोगलक्षणा अजीवा स्तद्विपरीताः पुण्य शुभप्रकृतिरूपं कर्म पाप तद्विपरीत

णंइदियाइंमणोरमाइ जाव निज्जाइत्ताजवइ पणीयरसज्जोई पाणज्जोयणस्सञ्चइमायमाहारएसयाज्जवइ पुव्वरयं  
 पुव्वकीलियसरित्ताज्जवइ सद्धानुवाइ सिलोगाणुवाइ जाव सायासुखकपप्पिवध्देयाविज्जवइ । अज्जिनंदणानुणञ्चर  
 हानं सुमईञ्चरहा नवहिसागरोवमकोप्पिसयसहस्सेहि वीइक्कतेहि समुप्पन्ते । नव सप्पावपयत्या पप्पत्ता त०  
 जीवा अजीवा पुन्र पाव अासवो संवरो निज्जरा बंधो मोक्को १ । नवविहा संसारसमावन्तगा जीवा प० तं

३ ॥ प्रणीतरस भोजनकरे ५ ॥ आहार अतिमानायेले प्रमाणथी अधिकले ६ ॥ शब्दानुपाती रूपानुपाती श्लोकानुपाती ॥ साता सुखने विषे तत्प  
 रहोय ८ ॥ अज्जिनदन अरिहतथी सुमतिनाथ अरिहत नवसागरोपम कोप्पाकोडि हज्जार गयापक्खी ऊपना ॥ नव छताभाव पदार्थ कस्या तेकहैछे  
 जीव १ ॥ अजीव २ ॥ पुन्य ३ ॥ पाप ४ ॥ आश्रव ५ ॥ सबर ६ ॥ निर्जरा ७ ॥ बध ८ ॥ मोक्ष ९ ॥ नवप्रकारना संसारसमापन्न जीव कस्या तेकहै

कर्मैव आश्रयते गृह्यते नेने त्याश्रय' शुभाशुभकर्मादानहेतुरितिभावः सवर आश्रयनिरोधो गुह्यादिभि निर्जराविपाका तपसोवा कर्मणां देशतः क्षपणा  
 ह्यधश्चाश्रयै रात्तस्य कर्मण आत्मना सयोगो मोक्ष. कृत्स्नकर्मक्षया दात्मन' स्वात्म न्यवस्थानमिति ननु जीवाजीवव्यतिरिक्ताः पुण्यादयो न सति तथा  
 युज्यमानत्वा त्थाहि पुण्यपापे कर्मणो बन्धोपि तदात्मकएव कर्मैव पुद्गलपरिणामः पुद्गलाश्चा जीवाइति आश्रयस्तु मिथ्यादर्शनादिरूप परिणामोजी  
 वस्य सचा त्मान पुद्गलाश्च विरहय्य कीन्य सवरो प्याश्रयनिरोधलक्षणो देशसर्वभेद आत्मनः परिणामो निवृत्तिरूपो निर्जरातु कर्मपरिशाटोजीवः कर्मणां  
 यत्पार्थक्य मापादयति स्वशक्त्या मोक्षो प्यात्मा समस्तकर्मविरहितइति तस्मा जीवाजीवौ सद्भावपदार्थाविति वक्तव्य मतएवोक्त मिहैव जदत्यिचणं  
 लोए त सव्व दुष्पडयार तजहा जीवश्चैव अजीवश्चैवति अत्रोच्यते सत्यमेतत् कितु यावेव जीवाजीवपदार्थौ सामान्येनोक्तौ तावेवेह विशेषतो नवधोक्तौ  
 सामान्यविशेषात्मकत्वा इस्तुन स्तथेह मोक्षमार्गं गिथ्य प्रवर्त्तनीयो न सग्रहाभिधानमात्रमेव कर्त्तव्य सच यदैव माख्यायते यदुता श्रवो बन्धो बन्धद्वारा  
 यातेच पुण्यपापे मुख्यानि तत्वानि ससारकारणानि सवरनिर्जरेच मोक्षस्य तदा ससारकारणत्यागे नेतरत्र प्रवर्त्तते नान्यथे त्यतः षट्कोपन्यासः मुख्यसा  
 ध्यख्यापनार्थञ्च मोक्षस्येति अत्रच पदार्थनवके प्रथमो जीवपदार्थो ऽत स्तद्भेदगत्यागव्यवगाहनाससारनिर्वर्त्तनरोगोत्पत्तिकारणप्रतिपादनाय ॥ नवविहे

पुढविकाइया जाव वणस्सडुकाइया बेंदिया जाव पचेंदिया । पुढविकाइया नवगइया नवअणगइया प०

हे पृथिवीकाय यावत् वनस्पतीकाय बेद्री यावत् पंचेद्री ॥ पृथिवीकायना जीवनी नवगति नव आगति कही तेरुहेंछे पृथिवीकाय पृथ्वीकायमां उप  
 जतो पृथ्वीकायमाथी यावत् पंचेद्रीमाहिथी आवी उपजेछे तेहज पृथ्वीकाय पृथ्वीकायपणु क्हांऊतो पृथ्वीकायपणें यावत् पंचेद्रीपणें उपजे इस अ

॥ त्यादि ॥ सूत्रपंचदशकमाह सुगम चेदं नवरं अवगाहते यस्यां सा अवगाहना शरीरमिति ॥ वत्तिसुवत्ति ॥ ससरण निर्वर्त्तितवन्तो ऽनुभूतपंत एव मन्यद

तंजहा पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहितो जाव पचिंदिएहिंतोवा उववज्जेजा सेचे वणसे पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहयमाणे पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताएवा एव अणउकाइ यावि जाव पंचिंदियत्ति । नवविहा सव्वजीवा पस्सत्ता तंजहा एगिंदिया वेंदिया तेइदिया चउरिदिया ने रइया पंचिंदियतिरिस्कजोणिया मणुया देवा सिद्धा । अहवानवविहा सव्वजीवा पस्सत्ता तजहा पढमसम यनेरइया अपढमसमयनेरइया जाव अपढमसमयदेवा सिद्धा । नव विहा जीवोवगाहणा पस्सत्ता तजहा पुढविकायनंगाहणा अणउ० जाव वणस्सइकाइयनंगाहणा वेंदियोगाहणा तेइंदियोगाहणा चउरिदियोगाह णा पचेंदियोगाहणा । जीवाण नवहिं ठाणेहि संसार वत्तिसुवा ३ तजहा पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियका

प्कायपणे यावत् पंचेद्रीय ॥ ८ ॥ नवप्रकारे सर्वजीव कत्था तेकहैले एकेद्री १ ॥ बेद्री २ ॥ तेरिंद्री ३ ॥ चौरिंद्री ४ ॥ नारकी ५ ॥ पचेद्री तीर्यचयो निआ ६ ॥ मनुष्य ७ ॥ देवता ८ ॥ सिद्ध ९ ॥ अथवा नवप्रकारे सर्वजीव ते कहेले प्रथमसमयनारकी अप्रथमसमयनारकी यावत् अप्रथमसमयनादेव ता सिद्ध ९ ॥ नवप्रकारे सर्वजीवनी अवगाहना कही ते कहेले पृथ्वीकायनी अवगाहना शरीर अप्कायनी अवगाहना यावत् वनस्पतिकायनी अवगाहना बेद्रीनीअवगाहना तेद्रीनी अवगाहना चउरिंद्री अवगाहना पचेद्रीनी अवगाहना ॥ जीव नवथानके संसारप्रते वर्त्त्या भम्पा वर्त्तेले वत्तस्ये तेक

पि ॥ अच्चासण्याएत्ति ॥ अत्यन्तमतत मासन मुपवेशन यस्य सोत्यासन स्तङ्गाव स्तत्ता तथा अर्शोविकारादयोहि रोगा एतया उत्पद्यंतइति अथवा अति  
मात्र मशन मत्यशन तदेवा ऽत्यशनता दीर्घत्वच प्राकृतत्वा तया साचा जीर्णकारणत्वा द्रोगोत्पत्तयइति ॥ अहितासण्याएत्ति ॥ अहित मननुकूल टोल  
पाषाणाद्यासन यस्य स तथा शेषतथैव तथा अहिताशनतया वा अथवा साजीर्णेभुज्यतेयत्तु तदध्यशनमुच्यत इतिवचनात् अध्यसन मजीर्णेभोजनं तदे  
व तत्ता तयेति भोजनप्रतिकूलता प्रकृत्यनुचितभोजनता तथा इन्द्रियार्थानां शब्दादिविषयानां विकोपन विपाक इन्द्रियार्थविकोपन कामविकारइत्यर्थ  
स्ततो हि स्त्यादिष्वभिलाषादुन्मादादिरोगोत्पत्ति र्यंतउक्त आदावभिलाषः १ स्या च्छितातदनन्तर २ ततःस्मरण ३ तदनुगुणानांकीर्त्तन ४ मुद्देगो ५ ऽद्यप्रला  
पश्च ६ ॥ १ ॥ उन्मादस्तदनु ७ ततो व्याधि ८ जडता ९ ततस्ततोमरणमिति विषया प्राप्नो रोगोत्पत्ति रत्यासक्तावपि राजयक्षादिरोगोत्पत्ति. स्या  
दिति शारौररोगोत्पत्तिकारणा न्युक्ता न्यथान्तररोगोत्पत्तिकारणभूतकर्मविशेषभेदाभिधानायाह ॥ नवेत्यादि ॥ सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि सामान्यग्रह

इयत्ताए । नवहिंठाणेहि रोगुप्यप्तीसिया त० अच्चासण्याए अहियासण्याए अइनिदाए अडजागरिएणं उच्चा  
रनिरोहेणं पासवणनिरोहेण अष्ठाणगमणेणं ज्ञोयणपक्किकूलयाए इदियत्यकोवणयाए । नवविहे दसणावरणे

हैछे पृथ्वीकायपणे यावत् पचेद्रिय ॥ नवथानके जीवनें रोग ऊपजे तेकहैछे अतिघणु अशन आहारकस्यार्थी १ ॥ अहितइद्रीने प्रतिकूलभोजनार्थी  
अजीर्णमा स्वाय २ ॥ घणो उचकरवार्थी ३ ॥ घणु रात्रि जागवार्थी ४ ॥ वळीनीति रोकवार्थी ५ ॥ लघुनीत रोकवार्थी ६ ॥ मार्गे घणुं चालता ७ ॥  
प्रतिकूलभोजनकरवार्थी नसदे तेखाय जीभस्वादे ८ ॥ इद्रीनाअर्थ विषयविपाकथी कामविकारथी ९ ॥ नवप्रकारें दर्शनावरणीकर्म कह्यो तेकहैछे

॥ टी ॥  
 ० ॥  
 गात्मको बोधो दर्शन तस्या वरणस्वभाव कर्म दर्शनावरणं तन्नविध तत्र निद्रापंचकं तावत् द्राक्कुत्सायागतो नियत द्राति कुक्षितत्वं मविषष्टत्वं गच्छति  
 चैतन्य मनयेति निद्रा सुखप्रबोधा स्वापावस्था नखच्छोटिकामात्रेणापि यत्र प्रबोधो भवति तद्विपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरपि निद्रेति कार्येण व्यपदिश्यते त  
 या निद्रातिशायिनो निद्रा निद्रानिद्रा शाकपार्थिवादित्वा मध्यपदलोपो समासः सा पुनर्द्वि. खप्रबोधा स्वापावस्था तस्याहि अत्यर्थं मस्फुटतरौभूतचैतन्य  
 त्वा दुःखेन यद्भि घोलनादिभिः प्रबोधो भवत्यतः सुखप्रबोधनिद्रापेक्षया अस्या अतिशायिनीत्वं तद्विपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरपि कार्यद्वारेण निद्रानिद्रे  
 त्युच्यते उपविष्ट जडस्थितो वा प्रचला तस्या स्वापावस्थायामिति प्रचला सा ह्युपविष्टस्यो जडस्थितस्य वा घूर्णमानस्य स्वप्न भवति तथाविधविपाकवेद्या क  
 र्मप्रकृतिरपि प्रचलेत्युच्यते तथैव प्रचलातिशायिनी प्रचलाप्रचला साहि चं तमणादि कुर्वतः स्वप्न भवति अतः स्थानस्थितस्वप्नभवा प्रचला मपेक्षया तिशायि  
 नो तद्विपाका कर्मप्रकृतिरपि प्रचलाप्रचला स्थानाबहुत्वेन सघात मापना गृहि रभिकाचा जागृदवस्थाध्यवसितार्थसाधनविषया यस्या स्वापावस्थायां  
 सा स्थानगृहि स्तस्याहि सत्यां जागृदवस्थाध्यवसित मर्थं मुत्थाय साधयति स्थानावा पिण्डीभूता ऋद्धि रात्मशक्तिरूपा यस्यामिति स्थानर्द्धि रित्युच्य  
 ते तद्भावेहि स्वप्नः केशवाक्षवल्सदृशी शक्ति भवति अथवा स्थाना जडोभूता चैतन्यदि रस्या मिति स्थानर्द्धिरिति तादृशविपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरपि  
 स्थानर्द्धिः स्थानगृद्धिरिति वा तदेव निद्रापंचक दर्शनावरणक्षयोपशमा त्वव्यात्मलाभाना दर्शनलब्धीना मावारकमुक्त मधुना यद्दर्शनलब्धीना मूलतएव

कम्मे पश्यते तं० निद्रा निद्रानिद्रा पयला पयलापयला थीणगिद्धी चरकुदरिसणावरणे अचरकुदंसणावरणे

निद्रा १ । निद्रानिद्रा २ । प्रचला ३ । प्रचलाप्रचला ४ । थीणगिद्धी ५ । चक्षुदर्शनावरणी ६ । अचक्षुदर्शनावरणी ७ । अवधिदर्शनावरणी ८ । केवलद

लाभ मावृणोति तद्विदं दर्शनावरणचतुष्क मुच्यते चक्षुषा दर्शनं सामान्यग्राही बोधश्चक्षुर्दर्शनं तस्यावरणं चक्षुर्दर्शनावरणं मचक्षुषा चक्षुर्वर्जंन्द्रियचतुष्टयेन मनसावा दर्शनंयत् तदचक्षुर्दर्शनं तस्या वरणं मचक्षुर्दर्शनावरणं अवधिना रूपिमर्यादया ऽवधिरेववा करणनिरपेक्षो बोधरूपोदर्शनं सामान्यार्थगृहणं मवधि दर्शनं तस्या वरणं मवधिदर्शनावरणं तथा कोनल मुक्तस्वरूपं तच्च तद्दर्शनञ्च तस्या वरणं कोनलदर्शनावरणं मित्युक्तं नवविधं दर्शनावरणं जीवानां कर्मणः सकाशा न्नचत्रादिदेवत्व तिर्यक्त मानुषत्वञ्च भवतीति नचत्रादिवक्तव्यताप्रतिबद्धसूत्रवृन्दं ॥ अभीत्यादिर्हमौहतीसचक्रेहि ॥ इत्येतदत माह सुगमञ्च नवरं ॥ सादरेगेति ॥ सातिरेका न्नवमुहूर्तान् याव चतुर्विंशत्या मुहूर्तस्य द्विषष्टिभागैः षट्षष्ट्याच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्टिभागानामिति ॥ उत्तरेणजोगंति ॥ उत्तर स्या दिशि स्थितानि दक्षिणाशस्थितचद्रेण सह योगं मनुभवतीतिभावः ॥ बहुसमरमणिज्जाओति ॥ अत्यन्तसमो बहुसमो ऽतएव रमणीयो रम्य स्तस्मा झूमिभागान्नपर्वतापेक्षया नापि श्वभ्रापेक्षयेतिभावः ॥ अवाधाएति ॥ अतरे कृत्वेति वाक्यशेषः ॥ उवरिल्लेति ॥ उपरितन तारारूपं तारकजातीय चार भ्रम

उहिदसणावरणे केवलदंसणावरणे ॥ अजिर्दणनस्कत्तेसादरेगे नवमुहूर्ते चदेण सद्धि जोगं जोएइ ॥ अजिर्दण्णा इयाण नन्न नस्कत्ता चदस्सउत्तरेणं जोगं जोएइ त० अजिर्दं सवणो धणिष्ठा जाव जरणो । इमीसेणं रयणप्प जाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जाउ झूमिजागाउ नवजोयणसए उह्व अवाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारंचरति ।

र्शनावरणी ६ ॥ अभीचिनक्षत्र भाभेरा नवमुहूर्तं चद्रमासंघाते जोग जुफेहें अजीचिआदिदेई नवनक्षत्र चंद्रनें उत्तरे जोग जुफेहें तेकहैछे अभिजित् अवण धनिष्ठा यावत् भरणी ॥ आ रत्नप्रज्ञा पृथ्वीनें विपे घणुसमो रमणीक जे झूमिजाग तेथकी नवसे ६०० योजन उचो अवाधाये आतरे उपरलूं

गं चरति आचरति ॥ नवजोयगियति ॥ नवजोयगियामा एव प्रविशति लवणसमुद्रे नवपि पचगतयोजनायामा मत्स्या भवन्तीति तथापि नदीमुखेषु  
 जगतीरधोचिले नेतावता मेव प्रवेगइति लोक्कानुभावोऽयमिति पयावईत्याद्यर्थं श्लोकस्यो चरन्तु गाथापशार्द्धमिति सद्येपाया तिदिशन्तार ॥ एतौति ॥  
 इत सूचा दारब्धं ॥ जहासमवाएत्ति ॥ समवाये चतुर्थाङ्गे यथा तथा निरवशेषं ज्ञेय तथार्थत इदं नववासुदेवबलदेवाना मातापितर स्तेषामेव नामानि  
 पूर्णभवनामानि धर्माचार्या निदानभूमयो निदानकारणानि प्रतिशब्दव गतयश्चेति किमत्र भेतदित्याह ॥ जावण्णाइत्यादि ॥ गाथापशार्द्धं पूर्वाङ्गं त्विदं मत्स्या  
 अस्तं तडारामाणोपुणवभलोककप्पमिति ॥ सिज्जिस्सइआगमिस्सण्णति ॥ आगमिष्यति काले सेत्स्यति गमिति वाक्वाल्गुणारे तृतीया वेद्यमिति तथा  
 जंबूद्वीवेत्यादा वागाम्यत्सर्पिणीसूत्रे एव जहासमवाएइत्याद्यतिदेशवचनमेव भावनीय याव गतिवासुदेवसूत्र महाभीमसेन सुग्रीवशापश्चिमद्रुतदंत तथा

जंबूद्वीवेणंदीवे नवजोयगिया मच्छा पविसिंसुवा पविसंतिवा पविसिंसंतिवा जंबूद्वीवेदीवे नरहेवारो इमरीरो  
 उस्सप्पिणीए नवबलदेववासुदेवपियरोहोत्या पयावईयवंजेय रुद्धेरोमेसिंवइय महासीहेअग्गसीहे दसरहन  
 वमेयवसुदेवे ॥ १ ॥ इतोअ्याढत्तं जहा समवाए निरत्ररोसं जाव एगासे गप्पवसही सिज्जिस्सइ आगमिस्सो

ताराख्य चारचरेळें भमेळें ॥ जंबूद्वीपनेंविषे नवयोजनना मावला पैसेळे पइसस्ये ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आ उत्सर्पिणीये नव बलदेव वासुदेवना पि  
 ता थया तेकहैळे प्रजापती १ । व्रत्त २ । रुद्र ३ । सोम ४ । शिव ५ । महसिंह ६ । अग्निसिंह ७ ॥ दशरथ ८ ॥ नवमो वसुदेव ९ ॥ इहाथी माझी  
 जिम समवायागमाळे तिम सर्व जाण्यू यावत् एगासेगप्पजसहीए गाथाये मोठे जास्ये ॥ गावतीचोवीसीये जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आवती उत्सर्पि

एते गाथा ॥ एते अनन्तरोदिता नवप्रतिशवव' ॥ किन्तीपुरिसाणंति ॥ कीर्त्तिप्रधानाः पुरुषाः कीर्त्तिपुरुषा स्तेषां ॥ चक्रजोहित्ति ॥ चक्रेणयोडु शील येषाते  
चक्रयोधिनः ॥ हम्मीहंतित्ति ॥ हनिष्यति स्वचक्रैरिति इह महापुरुषाधिकारे महापुरुषाणा चक्रवर्त्तिनां सबधि निधिप्रकरणमाह ॥ एगमेगेत्यादि ॥ सुगम  
नवरं नेसप १ पंडुए २ पिं गलेय ३ सव्वरणेय ४ महापउमे ५ कालेय ६ महाकाले ७ माणवगमहानिही ८ सखे ९ ॥ १ ॥ नेसपमिगाहा ॥ इह निधान तनाय  
कदेवयो रभेदविवक्षया नैसर्पोदेव स्तस्मि न्सति तत इत्यर्थः निवेशाः स्थापनानि अभिनवग्रामादीनामिति अथवा चक्रवर्त्तिराज्योपयोगिद्रव्याणि सर्वा

णं । जंबुद्वीवेदीवे नरहेवासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए नवबलदेववासुदेवपियरो नविस्सति नवबलदेव  
मायरोनविस्सति एवं जहा समवाए निरवसेसं जाव महाभीमसेणे सुग्गीवेयअपच्छिमे । एएखलुपफिसत्तू  
किन्तीपुरिसाणवासुदेवाणं सव्वेचिचक्रजोही हम्मीहंतीसचक्कोहि ॥ १ ॥ एगमेगेणं महानिही नवनवजोयणाइं  
विस्संजेणं पस्सत्ते । एगमेगस्सणं रस्सो चाउरतचक्रवह्तिस्स नव महानिहीनं पस्सत्तानं तंजहा नेसपपंडुएपिं  
गलेयसव्वरणेयमहापउमे कालेयमहाकाले माणवगमहानिहीसंखे ॥ १ ॥ नेसपम्मिनिवेसा गामागरनगरपह

णीये नव बलदेवना वासुदेवना पिताथास्ये एम जिम समवायागमां निर्विशेष जाणवु यावत् महाभीमसेन सुग्रीव केहल्यो ए सर्वनें निथ्ये प्रतिशत्रु  
कीर्त्तिवत पुरुष वासुदेवने सधला ए चक्रयोधी हणाये पोताने चक्रे प्रतिवासुदेव १ ॥ एकेको महानिधान नव २ योजन पिहुलपणे कहिआ ॥ ए  
कएकराजा चातुरंत चक्रवर्त्तिने नव मोटानिधान कहा ते कहैछे नैसर्प १ ॥ पंडुक २ ॥ पिगल ३ ॥ सर्वरत्न ४ ॥ महापद्म ५ ॥ काल ६ ॥ महाकाल



एषपि नवसु निधिष्ववतरन्ति नवनिधानतया व्यवहृत्यत इत्यर्थः तत्र ग्रामादीनां मभिनवानां पुरातनानां च ये सन्निवेशा निवेशनानि ते नैसर्गनिधौ वर्तन्ते नैसर्गनिधितया व्यवहृत्यन्त इति भावः तत्र ग्रामोजनपदप्रायलोकाधिष्ठितः आकरो यः सन्निवेशे लवणाद्युत्पद्यते नकरो यच्चास्ति तन्नकर पत्तन देशी स्थानं द्रोणमुख जलपथस्थलपथयुक्त मडवं मविद्यमानप्रत्यासन्नवसिमं स्तम्भावारः कटकनिवेशो गृह भवनमिति १ ॥ गणितगाहा ॥ गणितस्य दोनारादि पूगफलादिलक्षणस्य चकारस्य व्यवहितसंबन्धः सच दर्शयिष्यते तथा बीजानां तन्निबन्धनभूतानां तथा मान ॥ सेटिकादि तद्विषय यत्तदपि मानमेव धान्यादि मयामिति भावः तथो न्मानं तुलाकर्षादि तद्विषय यत्तदप्युक्तान् खड्गुडादि धरिममित्यर्थः ततो ह्यन्वसमाहारः कार्यं स्तत स्तस्यच किमित्याह यत्प्रमाण चकारो व्यवहितसंबन्ध एव तथैव दर्शयिष्यते तत्पाण्डुते भणितमिति निष्पत्तिपरिणामेन संबन्धः तथा धान्यस्य व्रीणादेर्वीजानाञ्च तद्विशेषाणां मुत्पत्तिश्च या सा पाण्डुके पाण्डुकनिधिविषया तद्व्यापारोयमिति भावो भणितोक्ता जिनादिभिरिति २ ॥ सव्वागाहा ॥ कण्ठा ३ ॥ रयणगाहा ॥ अक्षरघटनैवरत्नान्येकेन्द्रिया

पाणच द्रोणमुहमरुवाणं स्वधाराणगिहाणं च ॥ २ ॥ गणियस्सयवीयाणं माणुस्साणस्सजपमाणं च धस्सस्सय वीयाणं उप्पत्तोपप्पुएज्जणिया ॥ ३ ॥ सद्वाञ्जाजरणविही पुरिसाणजायहोइमहिलाण ञ्जासाणयहत्यीणय पिं

७ ॥ माणवक ८ ॥ महानिधान शल ८ ॥ नैसर्गनिधौ येन थापना ग्राम प्रागर पाटणा द्रोणमुरा मटव कटकनिवेश घरनानिवेश एतला वानाळे ॥ ग णितनुं मान उन्मान बीजनु जे प्रमाण धान २४ बीजनी उत्पत्ति पक्रु निधानमा ले ३ ॥ सर्वप्राजरणीविध पुरुपनी वली जे स्त्रीयानी घोळा हा थीना लक्षणादि पिगल निधानमा कल्या ॥ ४ ॥ रतन सर्वरतनमा चउदे वर प्रधान चक्रवर्तिने ऊपजे एकेद्वीरतन ॥ ५ ॥ वर सर्वनी उत्पत्ति निष्पत्ति

णि चक्रादीनि सप्त पचेन्द्रियाणि सेनापत्यादीनि सप्त उत्पद्यन्ते भवंति यानि चक्रवर्तिन स्तानि सर्वाणि सर्वरत्नेसर्वरत्ननामनिनिधौ द्रष्टव्यानीतिभावः ॥ वत्या  
 णगाहा ॥ वस्त्राणा वाससा योत्पत्तिः सामान्यतो याच विशेषतो निष्पत्तिः सिद्धिः सर्वभक्तोना सर्ववस्तुप्रकाराणा सर्वावाभक्तयः प्रकारा येषां तानि तथा  
 तेषा किंभूताना वस्त्राणा मित्याह रंगाणां रगवता रक्ताना मित्यर्थः धीतानां शुद्धस्वरूपाणा सर्वेषा महापद्मे महापद्मनिधिविषया ॥ कालेगाहा ॥ काले  
 कालनाम्नि निधौ कालज्ञान कालस्य शुभाशुभरूपस्य ज्ञान वर्तते ततो ज्ञायतइत्यर्थः किंभूतमित्याह भाविवस्तुविषयं भव्य पुरातनवस्तुविषय पुराण चशब्दा  
 वर्तमानवस्तुविषयवर्तमान ॥ तौसुवासेसुत्ति ॥ अनागतवर्षत्रयविषयमतौतवर्षत्रयविषयचेति तथा शिल्पगतं कालनिधौ वर्तते शिल्पशतच घट १ लोह २  
 चित्र ३ वस्त्र ४ नापित ५ शिल्पाना प्रत्येक विंशतिभेदत्वादिति तथा कर्माणिच कृषिवाणिज्यादीनि कालनिधा वितिप्रक्रम. एतानिच त्रीणि कालज्ञा  
 नशिल्पकर्माणि प्रजाया लोकस्य हितकराणि निर्वाहाभ्युदयहेतुत्वेनेति ६ ॥ लोहगाहा ॥ लोहस्य चोत्पत्ति महाकाले निधौ भवति वर्तते तथा आकराण

गलणिहिम्मिसाज्ञणिया ॥ ४ ॥ रयणाइंसहुरयणे चउदसपवराइंचक्कवटिस्स उपपज्जांतियएणिं दियाइंपंचिं  
 दियाइंच ॥ ५ ॥ वत्याणयउप्पत्ती निष्पत्तीचेवसहज्जत्तीण रगाणयधोवाणय सहाएसामहापउमे ॥ ६ ॥ का  
 लेकालस्साण नहूपुराणंचतीसुवासेसु सिप्पसयकज्झाण तिन्निपयाहिययकराइं ॥ ७ ॥ लोहस्सयउप्पत्ती होइ

सर्वज्ञात अन्ननी रगवा धोवानीविधि एमहापट्टनेविषे ॥ ६ ॥ कालनिधानमा कालनु शुभाशुजज्ञानके भावीवस्तु पुरातनवस्तु वर्तमान त्रणिकाल  
 विषय शिल्पविज्ञान शतकर्म कृषिवाणिज्यादि ए सर्व प्रजालोकेने हितना करनारखे लोहनी उत्पत्तिहोय महाकालनेविषे आगरना रूपुं सोनुं मी

च सोद्यादिसक्तानां मुपत्ति राक्षसीकरणलक्षणा एवं रूपादीनां मुपत्तिः सज्जननीया जेवन् मणय शङ्कान्तादयो मुक्ता मुक्ताफलानि शिलाः स्फटिकादि  
 काः प्रवालानि पिद्रुमाणीति ७ ॥ जोहागाद्या ॥ योधानां शूरपुरुषाणां यो त्यति रावरणाणां संनाराणां प्रहरणाणां खण्णादीनां सा युवनीतिश्च व्यूहर  
 चनादिलक्षणा माणवके निधी निधिनयकेवा भवति ततः प्रवर्त्तय प्रतिभाजः दंष्ट्रनीपलक्षिता नीति दंष्ट्रनीतिश्च सामादि शतुर्थिधा इत्येवोक्तं भावश्च  
 के सेसाउद्धनीर्द्र माणवगमिनीप्रोक्षोद् ॥ भरतस्यति ॥ ८ ॥ नहुगाद्या ॥ नाट्यं नृत्यं तद्विधि स्तलकरणप्रकारो नाटकं चरितानुसारि नाटकलक्षणोपेतं तत्ति  
 धिय इह पदद्वये तं स्तथा कायस्य चतुर्विधस्य धर्मार्थकाममोदलक्षणपुरुषार्थमतिजडगुणस्य या सस्त्वप्राप्ततापभंशसकोर्णभापानिबन्धस्य २ पथ  
 वा समधिपमार्जसमष्टतयइतया गद्यतयाचेति २ अथवा गद्यपद्यगेयचोपदेभेदगद्यस्येति उत्पत्तिः प्रभवः ग्रन्थे महानिधी भवति तथा तूर्याङ्गाणांच  
 गदंगादीनां सर्वेषामिति ॥ चक्रगाद्या ॥ चक्रं पृष्ठटासु प्रतिष्ठानं प्रतिष्ठा भवत्त्वान येषां ते तथा प्रष्टी योजना श्रुतसेधउपप्रायो येषां ते तथा नच यो

महाकालव्यागराणंच रूप्यरससुवस्मरस्य मणिमुत्तिसिलप्पवालाणं ॥ ८ ॥ जोहाणयउप्पत्ती आवरणाणचप  
 हरणाणंच सहायजुद्धणीई माणवएदरुनीईय ॥ ९ ॥ गहविहिणाऊयविही कल्लरसचउल्लिहरसउप्पत्ती संखे  
 महानिहिमि तुप्पियगाणंचसत्तेसिं ॥ १० ॥ चक्कठपइठाणा अट्टरसेहायनवयविरक्कने वारसदीहामंजू सस

ती प्रवालानी उत्पत्ति ॥ ८ ॥ जोसुभटनी उत्पत्ति आवरण सन्नाह वगतर प्रहरणाशरा सर्वजुद्धनी नीति माणवकने दंष्ट्रनीनीति कलीले ॥ ९ ॥ नाटकनी  
 विधि नाचवानीचरित्र नाटिकनी सर्व चारप्रकारनी उत्पत्ति धर्म अर्थ काम शरामहानिधानने विपे नुदितवाजित्र सर्वनी ॥ १० ॥ आठ चक्रनेविषे २

जनानीति गम्यते विष्कम्भे विस्तरे निधयइतिशेषः द्वादशयोजनानि दीर्घा मजूषा प्रतीता तत्संस्थिता स्तत्संस्थाना जाङ्गया गंगाया मुखे भवन्तीति ॥  
 वेरुलियगाहा ॥ वैडूर्यमणिमयानि कपाटानि येषां ते तथा मयशब्दस्य वृत्त्या उत्कर्षतेति कनकमयाः सौवर्णाः विविधरत्नप्रतिपूष्णाः प्रतीता शशिसूरच  
 क्राकाराणि लक्षणानि चिह्नानि येषां ते तथा अनुरूपा अविषमाः ॥ जुगति ॥ यूप स्तम्भाकारा वृत्तत्वाद्दीर्घत्वाच्च बाहवो द्वारशाखा वदनेषु मुखेषु येषां  
 ते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधारये शशिसूरचकलक्षणानुसमयुगबाहुवदनाइति चः समुच्चये १२ ॥ पलिगाहा ॥ निहिसरिनामत्ति ॥ निधिभिः सटक् सट  
 च्च नामयेषां देवानां ते तथा येषां देवानां ते निधयः आवासाः आश्रयाः किभूता अक्रेया अक्रयणीया सर्वदेव तत्संबधित्वात् आधिपत्यं च स्वामिता च ते  
 षु येषां देवनाइति प्रक्रमः ॥ एणतेगाहा ॥ कण्ठ्या अनन्तरं चित्तविकृतिविर्गतिहेतवो निधयउक्ता अधुना तथाविधाएव विकृतीः प्रतिपादयन्नाह ॥ नववि

धियाजाराहवीडमुहे ॥ ११ ॥ वेरुलियमणिकवाळा कणगमयाविविहरयणपङ्क्तिपुष्पा ससिसूरचकलरक्षण अ  
 णुसमजुगबाहुवयणाय ॥ १२ ॥ पलिउवमठिईया निहिसरिणामायतेसुखलुदेवा जेसितेष्णावासा अक्रेया  
 णाहिवच्च ॥ १२ ॥ एणतेनवनिहिउ पञ्चयधणरयणसचयसमिद्धा जेवसमुवगच्छंती सहेसिंचकवहोणं १४

हिआळे आठयोजनउंचा नवयोजनपिहुला बारीयोजनदीर्घ मजूसमा रहिआ गंगानामुषे रह्याळें ॥ ११ ॥ वैडूर्य रतननां कपाटळे सुवर्णरत्नमय विविध  
 रतने परिपूर्ण चद्रसूर्य चक्राकार लक्षणे चिह्ने अनुसम अविषम समा युगधोसरा जेहवा आकारेवारसाखळे मुषे ॥ १२ ॥ पत्थोपमनीस्थितिना निधिने  
 नामे नाम तेहने विषे देवतारहेळे तेहना तिहा निवासळे अक्रेय क्रेयनथी अधिपतिपणु करेळे सर्वदातिहा रहेळे ॥ १३ ॥ ए नवेनिधान घणां घ

गर्भोद्व्यादि ॥ गत्यर्थं तथा पृथक्ते किंचित् ॥ विगडं प्रोक्ति ॥ विक्षतयो विकारकारित्वात्पक्वान्तु कदाचिद्विक्षतिरपि तेने ता नव प्रत्यधातु दशा  
पि भवति तथाहि एकेणचेयतनप्रो पूरिञ्जद्रूपणजोताप्रो योप्रोप्रिसपुणत्पद्म निविगडश्रयलेखडोनवरमिति ॥ १ ॥ द्वितीयोपि विक्षति नभवतीति  
भाग ता भोरं पचवा प्रजेडकागोमहिष्यदोभेदा इधिनानौतष्टतानि चतुर्दशोदोणा तदभावात् तेल चतुर्दश तिलातसोकुसुमसर्पपभेदात् गुडो द्विधा द्रव  
पिण्डभेदात् मधुविवा माक्षिककोतिकभामरकभेदात् मयंतिभा काष्ठपिष्टभेदात् मासविधा जलस्थलाकाशचरभेदादिति विक्षतय शोषचयहेतवः शरीर  
स्येति तस्यो स्वरूपमाह ॥ नवेत्यादि ॥ नाभिः श्रोतोभि म्छिद्रे, परिश्रयति मल चरतीति नवश्रोतः परिश्रवा बौद्धीशरीर मौदारिक मेवैव विधं ज्योत्स्ने  
कर्णौ नेने नयने घ्राणे नासिके मण मास्य ॥ पोसएति ॥ उपस्थापायुग्पानमिति एव विधे नापि शरीरेणपुण्य मुपादीयतइति पुण्यभेदानाह ॥ पुनेत्या  
दि ॥ पाताया नदानाद्य स्तोथेत्तन्नामादिपुण्यप्रकृतिबध, तदत्रपुण्य मेवं सर्वत्र नार ॥ लेणंति ॥ लयन गृह शयन सस्तारको मनसागुणिषु तोपात् वा

नव विगर्डं पणत्तानं तंजहा र्कीरं दहि णवणीय सप्पि तिल्ल गुलो मज्झ मज्झं मसं । नवसोयपरिस्सवा  
वौदी पणत्ता तजहा दोसोया दोणित्ता दोघाणा मुह पोसए वायू । नवविहे पुस्से प० तजहा अस्सपुन्ने

नरतननो संचय पणे सहितळे जस्याळें जे निधान सम्यक् प्रावेळे सर्वचक्रवर्तिने ॥ १४ ॥ नव विगयकही तेकहैळे दूध १ । दही २ । मांखण ३ । घृत ४ ।  
तेल ५ । गोल ६ । मधु ७ । मद्य ८ । मास ९ ॥ नव छिद्रश्रवता शरीरमा तर्कहैळे बेकान २ । बेनेत्र ३ । बेनाक ६ । मुख ७ । उपस्थापायु २ । वडीनी  
ति लघुनीति धानक ॥ नवप्रकारे पुन्य कस्यो तेकहैळे प्रन्नपुन्य १ । पाणीनु पुन्य २ । वस्त्रपुन्य ३ । शय्या प्रासन पाटीप्रमुखनुदेवो ४ । संधारो

चा प्रशसनात् कायेन पथुपासनात् नमस्काराच्च यत्पुण्यं न्तर्गमनःपुण्यादीति उक्तं च अन्नपानचवस्त्रच श्रौलयःशयनासनं शूयूपावंन्दनतृष्टिःपुण्यनवविधं  
 स्मृतमिति ॥ १ ॥ पुण्यविपर्यासरूपस्य पापस्य कारणान्याह ॥ नवपावस्सैत्यादि ॥ कण्ठ्यं नवर पापस्या शुभप्रकृतिरूपस्या यतनानि वधहेतव इति पापहे  
 त्वविकारा रूपापश्रुतसूत्रं कण्ठ्यं नवर पापीपादानहेतुः श्रुतं शास्त्रं म्पापश्रुतं तत्र प्रसंगं स्तथासेवारूपो विस्तरोवा सूत्रवृत्तिकरूपः पापश्रुतप्रसंगः ॥ उष्पा  
 एसिलोगो ॥ तत्रोत्पातः प्रकृतिविकाररूपः सहजरुधिरवृष्ट्यादि तत्प्रतिपादनपरं शास्त्रमपि तथा राश्ट्रोत्पातादि तथा निमित्तं मतीतादिपरिज्ञानोपाय  
 शास्त्रं कूटपर्वतादि मंत्रो मन्त्रशास्त्रं जोत्रोद्धारणगान्डादि ॥ आइक्खिएत्ति ॥ मातंगविद्या यदुपदेशा दतीतादि कथयति डोयो वधिरा इति लोकाप्रतीता  
 ४ चैकित्सक मायुर्वेदः कला लेखाद्या गणितप्रधानाः शकुनरुतपर्यवसाना हासयति स्तच्छास्त्राण्यपि तथा आत्रियते आकाश मनेने त्यावरणं भवनप्राप्ता

पाणपुन्ने लेणपुन्ने सयणपुन्ने मणपुन्ने वयपुन्ने कायपुन्ने नमोक्कारपुन्ने । नव पावस्सा ययणा प० तं०  
 पाणाइवाए जाय परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे । नवविहे पावस्सुयपसंगे पस्सत्ते तंजहा उप्पाए नेमि  
 त्तिए मंतेष्साइस्कएतिगिच्छिए कलाववरणञ्जन्ताणे मिच्छापावयणेतिथ ॥ १ ॥ नवनिउणियावत्थू पस्सत्ता

कंठ्यादिप्रमुखं मनपुन्यं गुणवन्तनेविषे संतोषं ववनेप्रसंसा ते वचनपुन्यं कायाइसेवा ते कायपुन्यं नमस्कारकरवो ते नमस्कारपुन्यं ८ ॥ नव पापना  
 आयतनं थानं कह्या तेकहैछे प्राणातिपात १ । मृषावाद २ । यावत् परिग्रह ५ । क्रोध ६ । मान ७ । माया ८ । लोभ ९ ॥ नवप्रकारे पापश्रुतनो  
 प्रसंगं सेवारूपं कह्यो तेकहैछे उत्पातं रुधिरवृष्टिप्रमुख १ । निमित्तशास्त्र २ । मन्त्रशास्त्र ३ । आइस्क मातंगविद्याधर्दं वातकहे तेहना विवारशा

दनगरादि तन्नाजणशास्त्रमपि तथा वास्तुविश्वेत्यर्थः अज्ञानं लौकिकश्रुतं भारतकाव्यनाटकादि ८ मिथ्याप्रवचनं शाक्यादितीर्थिकशासनमिति एतच्च सर्वम  
पि पापश्रुतं सद्यतेन पुष्टालंघनेना सेयमानं मपापश्रुतमेवेति इति रेवंप्रकारे चः समुद्यमे उत्पातादिश्रुतवत्तस्य निपुणा भवतीति निपुणपुरुषाभिधानायाह ॥  
तत्रोनिउणेत्यादि ॥ निपुणं सूक्ष्मं ज्ञानं तेन चरंतीति नेपुणिका निपुणाएव नैपुणिकाः ॥ वक्ष्यति ॥ आचार्यादिपुरुषवस्तूनि पुरुषादित्यर्थः ॥ संख्येसिलोगो ॥  
संख्यानगणितं तद्योगात् पुरुषोऽपि तथा सस्यानेषां विषये निपुण इति एवमन्यथापि नवर निमित्तं चूडामणिप्रभृतिः कायिकं शारीरिकं इडापिङ्गलादिप्राण  
तत्त्वमित्यर्थः पुराणो वृक्षः सच चिरजीवित्वात् दृष्टमनुविध्वयतिकरत्वा नेपुणिक इति पुराणं वा शास्त्रविशेषं स्तब्धो निपुणप्रायो भवति ४ ॥ पारिहस्त्येति ॥  
प्रकृत्येवदक्षः सर्वप्रयोजनानां मकामलौनतया कर्त्तृतिच ५ तथा परं प्रकृष्टः पण्डितः प्रपण्डितः परपण्डितो बहुशास्त्रज्ञः परोवा मित्रादिः पण्डितो यस्य स तथा  
सोऽपि निपुणससर्गां त्रिपुणो भवति वैद्यकृष्णकवदिति वादो वादलघिसपत्नोयः परेण न जोयते मनवादी धातुवादीवेति ज्वरादिरत्नानिमित्तभूतिदानभ  
तिकर्म तच्च निपुणं स्तथा चिक्षिस्तते निपुणो ऽथवा ऽनुपवादाभिधानस्य नयमपूर्वस्य नेपुणिकानि वस्तूनि अध्ययनविशेषाएवेति एतेच नैपुणिकाः साधो

तंजहा संख्येनिमित्तेकाईए पौराणेपारिहस्त्ये परिपक्रियेवाईय जूइकमेतिगिच्छिए ॥ २ ॥ समणस्सजग

सू ४ । वैदकशास्त्र ५ । ७२ कलाशास्त्र ६ । आवरणं ते वास्तुकशास्त्र ७ । प्रज्ञानं शास्त्रं ज्ञरतादि ८ । मिथ्याप्रवचनं शाक्यादि दर्शनशास्त्र ९ ॥ नव नि  
पुणवस्तु ते आचार्यादिपुरुषवस्तु कथ्या ते ऋहैळे गणितजाणे ते गणक नैमित्तिक ३ । कायानीं नास्तीजाणे वैद्य पौराणिक पुराणाजाणे स्वज्ञावेदज्ञं अव  
सरसर्वजाणे पारिहस्तिकं प्रथमपण्डितं बहुश्रुतवादीं मनवादीं धातुवादीं जूतिकर्मनें विप्रें ज्ञाहो ते जूतकर्म चिकित्साथी निपुणं गाधीप्रमुखा ६ ॥

गणांतर्भाविनी भवन्तीति गणसूत्रं ॥ समणस्सेत्यादि ॥ कण्ठा नवरं गणा एकक्रियावाचनानां साधूनां समुदाया गोदासादीनिच तन्नामानोति उक्तगुणवत्ति  
 नाच साधूनां य जगवता प्रज्ञप्त तदाह ॥ समणेणमित्यादि ॥ नवभिः कोटिभिः विभागैः परिशुद्ध निर्दीपं नवकोटिपरिशुद्धभिचाणा समूहो भैच प्रज्ञप्त न्त  
 द्यथा न हति साधुः स्वयमेव गोधूमादिदलनेन न घातयति परेण गृहस्थादिना घ्नंत नानुजानाति अनुमोदनेन तस्यवा दीयमानस्या प्रतिषेधनेना प्रतिपिद्ध  
 मनुमतमितिवचनादननप्रसगजननाच्चेति आहच कामतयनकुव्वइ जाणतोपुणतत्तावितगाहो वट्टेइतप्पसगअगिण्हमाणोउवारेइत्ति ॥ १ ॥ तथाहतपिष्ठं  
 सत् गोधूमादि सुहादिवा अहतमपि सन्नपचति स्वय शेष प्राग्वत् सुगमञ्च इहवाद्याः पट्कोटयो ऽविशोधिकोव्या भवतरन्ति आधाकर्मादिरूपत्वादित्यास्तु  
 तिस्रोविशोधिकोव्यामिति उक्तच सानवहादुहकौरइ उगमकोडोविसोहिकोडीय कसपढमाओवरइ कीयतियंमीविसोहीओत्ति ॥ १ ॥ नवकोटौशुद्धाहा

वर्तमहावीरस्स नवगणाहोत्या तंजहा गोदासगणे उत्तरवलियस्सयगणे उद्देहगणे चारणगणे उहुवाइयगणे  
 विस्सवाइगणे कामिहियगणे माणवगणे कोटियगणे । समणेणजगवयामहावीरेणं समणाणंनिग्गंथाणं नव  
 कोटिपरिसुद्धे त्तिस्से पत्तत्ते तंजहा णहणई णहणावेई हणंतनानुजाणई नपयइ नपयावेई पयतंनानुजाणई

अमण जगवत महावीरनें नव गच्छयथा ते कहैछे गोदासगणा १ । उत्तरवलियगणा २ । उद्देहगणा ३ । चारणगणा ४ । ऊर्द्धवातिकगणा ५ । विश्ववादीग  
 णा ६ । कामर्द्धिकगणा ७ । मानवगणा ८ । कोटिकगणा ९ ॥ अमणजगवतमहावीरे अमणनिग्रंथने नवकोटिशुद्ध जित्ताकही तेकहैछे हणेनही दलवे  
 खाळवे हणावेनही हणताने अनुमोदे नहीं ॥ ईशान देवेन्द्र देवनोराजा वरुण महाराजाने नव अग्रमहिषी कही ॥ ईशान देवेद्वनी अग्रमहिषीनुं न



॥ ठा० ॥

॥ ५१६ ॥

रयाक्षिणां कथञ्चि त्रिवर्णाभावे देवगति भवत्येवेति देवगतिगतवस्तुस्तोम मभिधित्सुः ॥ ईसाणस्सेत्यादि ॥ सूत्रनवकमात्रं सुगम चेदं नवरं ॥ नवपलित्रोव  
माइति ॥ नवैव तासा सपरिग्रहत्वा दुक्तच सपरिग्रहेयराण सोह्यमीसाणपक्षिय १ साह्यीय २ उक्लोससत्तयणा नवपणपणायदेवीगंति ॥ १ ॥ सारस्व  
गाक्षा ॥ सारस्वता १ आदित्या २ यज्ञयो ३ वरुणा ४ गर्दतोया ५ सुपिता ६ अव्यावाधा ७ आग्नेया ८ एते कृष्णराज्यंतरे प्वष्टासु परिवसंति रिष्टस्तु  
कृष्णराजिमध्यभागवर्त्तिरिति रिष्टाभे विमानपस्तटे परिवसतीति अनन्तरं गैवेयकविमानानि उक्तानि तदासिनशा शुषन्तो भवन्ती त्यायुः परिणामभेदाना  
ह ॥ नवविहेइत्यादि ॥ आउयपरिणामेति ॥ आयुषः कर्मप्रकृतिविशेषस्य परिणामः स्वभावः शक्ति ईर्म्म इत्यायुः परिणाम स्तत्रगति देवादिका ता नि  
यता येन स्वभावेना यु जीव प्रापयति स आयुषा गतिपरिणाम स्तथा येना यु स्वभावेन प्रतिनियतगतिकर्मवन्धो भवति यथा नारकायुः स्वभावेन मनु

नकिणइ नकिणावेइ किणंतंनाणुजाणइ ॥ ईसाणस्सणं देविदस्स देवरस्सो वरुणस्स महारत्तो नवअण्णमहि  
सीत्त पन्तत्तान् । ईसाणस्सण देविदस्स देवरत्तो अण्णमहिसीण नवपलिनुवमाइ ठिई पणत्ता । ईसाणेकप्पे  
उक्लोसेणं देवीणंणवपलिनुवमाइ ठिई प० । नव देवनिक्काया पणत्ता तजहा सारस्सयमाइच्चा वरहीवरुणा  
यगदतोयाय तुसिताअवावाहा अग्निच्चाचेवरिठाय ॥ १ ॥ अवावाहाण देवाण नवदेवा नवदेवसया पणत्ता

वपल्योपमनु आयु कल्यो ॥ ईशानदेवलोके उत्कृष्टो देवीनु नवपल्योपमनु आयु कल्यो ॥ नवदेवनिक्काय कहीया तेरुहेळे सारस्वत १ । आदि  
त्य २ । वक्ति ३ । वरुण ४ । गर्दतोय ५ । तुपित ६ । अव्यावाध ७ । आग्नेय ८ । रिष्ट ९ ॥ १ ॥ अव्यावाधदेवताने नवसे देवळे ॥ इम आग्ने

एवं अग्निञ्चावि एवंरिष्ठावि । नव गेविज्जविमाणपत्थका पस्सत्ता तंजहा हिठिमगेविज्जविमाणपत्थके हिठि  
 ममज्जिमगेविज्जविमाणपत्थके हिठिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थके मज्जिमहिठिमगेविज्जविमाणप० मज्जि  
 ममज्जिमगेविज्जविमाणप० मज्जिमउवरिमगेविज्जविमाणप० उवरिमहिठिमगेवि० उवरिममज्जिमगे० उव  
 रिम२ गेविज्जविमाणपत्थके । एएसिणं नवरहं गेविज्जगाण विमाणपत्थकाणं नव नामधेज्जा पस्सत्ता तजहा  
 ज्जेसुज्जेसुजाए सोमणसेपियदसणे सुदसणेअमोहेय सुप्पबुद्धेजसोहेरे ॥ १ ॥ नवविहे आनुपरिणामे प०  
 तजहा गइपरिणामे गइब्रधणपरिणामे ठिइपरिणामे ठिइब्रधणपरिणामे उहुगौरवपरिणामे अहेगौरवपरि

यने इम रिष्टने ॥ नव ग्रैवेयकता विमान पाथका क्ख्या तेकहैछे हेठिम हेठिम गेविज्जविमानपाथको १ । हेठिममध्यमग्रैवेयक विमान पाथको २ ।  
 हेठिमउवरिमग्रैवेयक विमानपाथको ३ । मध्यमहेठिमगेविज्जविमान पाथको ४ । मध्यममध्यमग्रैवेयक विमानपाथको ५ । मध्यमउवरिमग्रैवेयकवि  
 मानपाथको ६ । उवरिमहेठिमग्रैवेयकविमानपाथको ७ । उवरिममध्यमविमानपाथको ८ । उवरिमउवरिमग्रैवेयकविमानपाथको ९ ॥ ए नव विमान  
 पाथकाना नव नाम क्ख्या तेकहैछे जद्र १ । सुजद्र २ । सुजात ३ । सोमनम ४ । प्रियदर्शन ५ । सुदर्शन ६ । अमोच ७ । सुप्रबुद्ध ८ । यशोधर ९ ॥  
 नव प्रकारे आऊखाना परिणाम क्ख्या तेकहैछे गतिस्वभाव १ । गतिब्रधन स्वजाव २ । स्थितिस्वभाव ३ । स्थितिब्रधनस्वजाव ४ । ऊर्द्धगमनस्वजा  
 व ५ । अधोगमनस्वजाव ६ । तिरछा जावानु स्वभाव ७ । दीर्घगमनस्वजाव लोकातथी लोकातलगेजाय ८ । ह्रस्वगमनस्वजाव ९ ॥ नव नवमिकाय

त्यतिर्यगतिनाम कर्म बध्नाति तदेव नारकगतिनामकर्मैति सगतिबंधनपरिणाम स्तथा आयुषो या ऽतर्मुहूर्त्तादित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमान्ता स्थिति भवति स स्थितिपरिणाम स्तथा येन पूर्वभवायुः परिणामेन परभवायुषो नियतां स्थिति बध्नाति सस्थितिबंधनपरिणामो यथा तिर्यगायुःपरिणामेन देवायुष उत्कृष्टतो ष्यष्टादशसागरोपमानौति तथा येन आयुःस्वभावेन जीवस्यो र्धदिशि गमनशक्तिलक्षणपरिणामो भवति स ऊर्ध्वगौरवपरिणाम इह गौरवशब्दो गमनपर्याय एव मितरौ जाविति तथा यत आयुः स्वभावात् जीवस्य दोर्ध्वं दौर्ध्वगमनतया लोकान्तात् लोकांत यावद्गमनशक्ति भवति स दीर्घगौरवपरिणाम एवच यस्मात् कृत्स्न गमन स कृत्स्नगौरवपरिणामः सर्वत्र प्राकृतत्वा दनुस्तर इत्य न्यथा म्यूहमेतदिति अनन्तर मायुः परिणाम उक्त स्तत्रैव चायुः परिणामविशेषे सति तपःशक्ति भवतीति तपोविशेषाभिधानायाह ॥ नवनवमिएत्यादि ॥ कण्ठ नवरं नवनवमानि दिनानि यस्या सा नवनवमिका नवनवमानिच भवति नवसु नवकोष्विति तत्परिमाणे यमिति नवचनवका न्येकाशौति रितिकृत्वै काशौत्या रात्रिन्दिवै रहोरानै भवति तथा प्रथमनवको प्रतिदिन मेकादत्तिः पानकस्य भोजनस्य चेत्येव मेकोत्तरया वृद्धा नवमे नवको नव दत्तय स्ततश्च सर्वसंकलनया चतुर्भिश्च पचोत्तरैर्भिश्चान्नतै र्यथासूत्रं यथाकल्पं यथामार्गं यथातत्त्व सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्त्तिता आराधिताचापि भवतीति इत्यत्र जन्मान्तरकृत

णामे तिरियगौरवपरिणामे दीहंगौरवपरिणामे रहस्संगौरवपरिणामे । नवनवमियाणं त्रिस्कुपफ्रिमा एका सीएहिराइदिएहि चउहियपंचुत्तरेहिं त्रिस्कासएहि त्रिहासुत्ता जाव त्रिआहियायाविन्नवइ । नवविहे पाय

तिप्रतिमा एकाशी रात्रियेकरी च्यारसेपांच भिदाये करी यथासूत्रे कही तिम आराधी होय ॥ नव प्रकारे प्रायश्चित्त कह्यो तेकहेछे आलायणयो

पापकर्मप्रायश्चित्तमिति प्रायश्चित्तनिरूपणसूत्रं तच्च गतार्थमिति प्रायश्चित्तच भरतादिचेत्तेष्वेति तद्गतवस्तुविशेषप्रतिपादनाय ॥ जंबूद्वीवेत्यादि ॥ एरव  
 एकुडनामाद्रुतेतदंतं ॥ सूत्रप्रपचमाह सुगमश्चायं नवर भरतग्रहण विजयादिव्यवच्छेदार्थं दीर्घग्रहण वर्तुलवैताढ्यव्यवच्छेदार्थमिति ॥ सिद्धेगाहा ॥ तत्र  
 सिद्धायतनयुक्त सिद्धकूट सक्रोशयोजनषट्कोच्छ्रय मेतावदेव मूले विस्तोर्ष एतदर्धोपरिविस्तार क्रोशायामेनार्द्धक्रोशविष्कभेन देशोनक्रोशोच्चेना परदिग्द्वार  
 वर्गपचधनुःशतोच्छ्रय तदर्धविष्कभद्वारत्रयोपेतेन जिनप्रतिमाष्टोत्तरशतान्वितेन सिद्धायतनेन विभूषितोपरितनभागइति तच्च वैताढ्ये पूर्वस्यां दिशि शेषा  
 गितु क्रमेण परत स्तस्मादेवेति भरतदेवप्रासादावतस्रकोपलजितं भरतकूट ॥ खडगति ॥ खण्डप्रपातानामवैताढ्यगुहा यया चक्रवर्त्ती अनार्यचेत्रा त्स्र  
 चेत्र मागच्छति तदधिष्ठायकदेवसबधित्वा त्स्रखण्डप्रपातकूट सुच्यते ॥ माणौति ॥ मणिभद्राभिधानदेवावासत्वा न्माणिभद्रकूटं ॥ वेयडुत्ति ॥ वैताढ्यगिरिना  
 यदेवनिवामा द्वैताढ्यकूटमिति ॥ पृषत्ति ॥ पूर्णभद्राभिधानदेवनिवासात् पूर्णभद्रकूटं तिमिस्रगुहा यया स्वचेत्रा चक्रवर्त्ती चिलातचेत्र याति तदधिष्ठा

च्छित्ते पश्यते तंजहा शालोयणारिहे जाव मूलारिहे शृणवठप्यारिहे । जंबूमंदरदाहिणेणं जरहे दीहवेयहे नव  
 कूटा पश्यता तजहा सिद्धेजरहेखण्ड माणीवेयडुपुषत्तिमिसगुहा जरहेवेसमणेय जरहेकूटाणनामाइ ॥ १ ॥  
 जंबूमंदरदाहिणेणं निसद्ववासहरे पद्ये नवकूटा पश्यता तजहा सिद्धेनिसहेहरिव रसविदेहेहिरिधिर्इयसीजया

अथ १ । यावत् मूनयोग्य अनवस्थ पाराविक ८ ॥ जंबूद्वीपना दक्षिण भरते दीर्घवैताढ्ये नव कूट कस्या तेकहैखे सिद्ध १ । भरत २ । खण्ड ३ । मा  
 णिभद्र ४ । वैताढ्य ५ । पूर्णभद्र ६ । तिमिस्रकूट ७ । जरत ८ । वैश्रमण ८ ॥ कूटनाम ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे मेरुस्थी दक्षिणे निषधपर्वते नवकूट कस्या

॥ ठा० ॥

॥ ५१८ ॥

यकटेशासा तिमिसगुत्ताकूटमिति ॥ भरहेत्ति ॥ तथैव वैष्णवगणलोकपालासात्वा वैष्णवगणकूटमिति ॥ सिद्धेगाहा ॥ सिद्धेत्ति ॥ सिद्धायतनकूट तथा  
निषधपर्वताधिष्ठातृदेवनिवासोपेत निषधकूटं हरिवर्षस्य क्षेत्रविशेषस्या विष्ठातृदेवेन स्वीकृतं हरिवर्षकूटं एवविदेहकूटमपि ह्रीदेवीनिवासो ह्रीकूट एव  
धृतिकूट शीतोदानदो तद्देवोनिवासः शीतोदाकूटं अपरविदेहकूटवदिति रुचकशृङ्गालपर्वतः तदधिष्ठातृदेवनिवासो रुचककूटमिति ॥ नदणेत्ति ॥ नद  
नवन मेरोः प्रथममेखलाया तत्र कूटानि ॥ नदणगाहा ॥ तत्र नदनवने पूर्वादिदिक्षु चत्वारि सिद्धायतनानि विदिक्षु चतुश्चतुष्करिणौपरिवृता सत्वारः  
पासादायतंसजा स्तत्र पूर्वस्या तिस्रस्रायतना दत्तरत उत्तरपूर्वस्यापासादा इत्तिणतो नदनकूटं तत्र देवो मेघाकरा तथा पूर्वसिद्धायतनादेव दक्षिणतोदक्षि  
णपूर्वपासादा दुत्तरतो मन्दरकूटं तत्र मेघातीदेवी प्रनेनक्रमेण शेषाण्यपि याव दष्टमं देव्यस्तु निषधकूटे सुमेधा हेमवतकूटे मेघमालिनी रजतकूटे सुव  
च्छा रुचककूटे वच्छमित्रा सागरचित्रकूटे वैरसेना वैरकूटे बलाहकेति बलकूटं मेरो रुत्तरपूर्वस्या नन्दनवने तत्र बलोदेव इति मालवतेइत्यादि ॥ सि

अवरविदेहेरुयगे निसहेकूटानामाहं ॥ १ ॥ जबूमंदरपद्मं पण्डणवणे नवकूटा पण्डता तजहा नदणेमंदरे  
चेव निसहेहेमवयरयतरुयएय सागरचित्तेवइरे बलकूटेचेववोधवे ॥ १ ॥ जबूद्दीवेदीवे मालवतेवरकारपद्मं

तेरुहेळे सिद्ध १ । निषध २ । हरिवर्ष ३ । विदेह ४ । ह्री ५ । धृति ६ । शीतोदा ७ । अपर विदेह ८ । रुचक ९ ॥ यह निषधपर्वते कूटना नाम १ ॥  
जबूद्दीवे मेरुपर्वते नदन वने नवकूट कहिया तेरुहेळे नदन १ । मंदरकूट २ । निषध ३ । हेमवत ४ । रजत ५ । रुयग ६ । सागर चित्र ७ । वज्र ८ ।  
बलकूट ९ ॥ १ ॥ जबूद्दीवे माल्यवान पर्वते नवकूट कह्या तेरुहेळे सिद्ध १ । माल्यवत २ । उत्तरकुरु ३ । कच्छ ४ । सागर ५ । रजत ६ । शीतोदा ७ ।

हेगाहा ॥ मान्यवान् पूर्वोत्तरो गजदन्तपर्वत स्तत्र सिद्धायतनकूट मेरुत्तरपर्वत एवं शेषाण्यपि नवरं मिद्वकूटे भोगादेवी रजतकूटे भोगमालिनीदेवी शेषेषु स्वसमाननामानोदेवाः हरिसहकूट नीलवत्पर्वतस्य नीलवल्कूटा दक्षिणतः सहस्रप्रमाण विद्युत्प्रभवर्त्तिहरिकूटं नन्दनवनवर्त्तिवलकूटं च शेषाणितु प्रायः पचयोजनशक्तिकानोति एव कच्छादिविजये वैताढ्यकूटान्यपि व्याख्यातानुसारेण ज्ञेयानि नवर एव जाव पुक्खलावदमीत्यादि यावत्करणान् महाकच्छाकच्छावतौ भ्रावर्त्तमगलावर्तपुष्कलेषु सुकच्छवद्वैताढ्येषु सिद्धकूटादीनि नव नव कूटानि वाच्यानि नवरं द्वितीयाष्टमस्थाने ऽधिकृतविजयनामवाच्यमिति एव ॥ वच्छेत्ति ॥ श्रौतायादक्षिणे ससुद्रासन्ने एव जाव ॥ मगलावदमीत्यत्र ॥ यावत्करणात् सुवच्छमहावच्छवच्छावतौरभ्यरभ्यकरमणौयेषु प्रागिवकूटनवक

नवकूटा पश्चत्ता तजहा सिद्धेयमालवंते उत्तरकुरुकच्छसागरेरयए सीयायपुन्ननामे हरिस्सकूठेयवोधवे ॥ १ ॥ जंबू कच्छे दीहवेयहे नवकूटा पन्नत्ता तंजहा सिद्धेकच्छेखरुग माणीवेयह्वपुन्नतिमिसगुहा कच्छेवेसमणेय कच्छेकूटाणनामाइ ॥ १ ॥ जंबूसुकच्छे दीहेवेयहेण नवकूटा पश्चत्ता तंजहा सिद्धेसुकच्छेखरुग माणीवेयह्वपुन्नतिमिसगुहा सुकच्छेवेसमणेय सुकच्छकूटाणनामाइ ॥ १ ॥ एवं जाव पुक्खलावदमि दीहवेयहे ॥ एव वच्छे

पूर्ण ८ । हरिकूट ८ ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे कच्छ विजये दीर्घ वैताढ्यना नवकूट कह्या तेकहैछे । सिद्ध १ । कच्छ २ । खंरुग ३ । माणिजद्र ४ । वैताढ्य ५ । पूर्णजद्र ६ । तिमिसगुहा ७ । कच्छ ८ । वैश्रमण ८ ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे सुकच्छविजये दीर्घवैताढ्ये नवकूट कह्या तेकहैछे सिद्ध सुकच्छ खरुग माणिजद्र वैताढ्य पूर्णजद्र तिमिसगुहाकूट सुकच्छ वैश्रमण एम सुकच्छमा नवकूट कह्या ॥ १ ॥ एम यावत् पुक्खलावतीमां दीर्घवैताढ्ये इम वच्छविजये दी

॥ दृश्यमिति ॥ जंबूद्वीवेत्यादि ॥ विद्युत्प्रभी देवकुरुपश्चिमगजदंतक स्तत्र नवकूटानि पूर्वतः नवरं दिक्कुमार्यौ वारिसेनावलाहकाभिधा नेक्रमेण कनककूटस्वस्ति  
ककूटयोरिति ॥ पम्हेत्ति ॥ शीतोदाया दक्षिणेन विद्युत्प्रभाभिधानगजदंतकप्रत्यासन्नविजये जावसलिलावद्भीत्यत्र यावत्करणात् सुपक्ष्ममहापक्ष्मपक्ष्मावती  
शंखनलिनकुमुदेषु प्रागिव नवनवकूटानि वाच्यानि एवमित्युक्ताभिलापेन ॥ वप्पेत्ति ॥ शीतोदाया उत्तरेण समुद्रप्रत्यासन्नविजये जावगधिलावद्भीत्यत्र याव  
त्करणात् सुवप्रमहावप्रवप्रावतीवल्लुगुसुवल्लुगंधिलेषु नवनवकूटानि प्रागिव दृश्यानीति पुनः पम्हादिविजयेषु षोडश स्वतिदिशति एव ॥ सव्वेसुइत्यादिना ॥

दीहवेयहे एवं जाव मंगलावद्भीमिदीहवेयहे जंबूविज्जुप्पजे वरकारपण्णए नवकूटा प० तं० सिद्धेयविज्जुनामे  
देवकुरापम्हकणगसोवत्थी सीतदाएसजले हरिकूटचेववोधब्बे ॥ १ ॥ जंबूपम्हे दीहवेयहे नवकूटा प० तं० सि  
द्धेपम्हेखण्णग माणीवेयहए । एवचेव जाव सलिलावद्भीमि दीहवेयहे एव वप्पेदीहवेयहे एव जाव गधिलाव  
द्भीमिदीहवेयहे नवकूटा प० तंजहा सिद्धेगधिलखण्णग माणीवेयहपुत्ततिमिसगुहा गंधिलावद्भवेसभणे कूटाणं

र्धवैताढ्ये इम यावत् मंगलावतीमा दीर्घवैताढ्ये ॥ जंबूद्वीपे विद्युत्प्रज वत्तस्कार पर्वते नवकूट कट्या ते कहैब्बे सिद्ध १ । विद्युत्प्रज २ । देवकुरु ३ ।  
पट्ट ४ । कनक ५ । सोवत्थी ६ । सीतोदा ७ । सतंजल ८ । हरिकूट ९ ॥ एम नव कूट जाणवा ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे पट्टदीर्घ वैताढ्ये नवकूट कट्या तेक  
हैब्बे सिद्ध पट्ट खण्णग माणिजद्र वैताढ्य एम ५ ॥ यावत् सलिलावती विजये दीर्घवैताढ्ये ॥ इमज वप्रविजये दीर्घवैताढ्ये एम यावत् गधिलावतीमा  
दीर्घवैताढ्ये नवकूट कट्या तेकहैब्बे सिद्ध १ गधिल २ खण्णग ३ माणिजद्र ४ वैताढ्य ५ पूर्णजद्र ६ तिमिस्रगुफाकूट ७ गधिलावती ८ वैश्रमण ९ ॥ १ ॥

कूटानां सामान्यलक्षणमुक्तमिति विशेषार्थिनातु जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिं निरूपणीया एवं नीलवत् कूटानि ऐरवतकूटानिच व्याख्यानोति इय कूटवक्तव्यता तीर्थ  
करैरुक्तेति प्रकृतावतारिणीं जिनवक्तव्यतामाह ॥ पासेत्यादि ॥ सूत्रद्वय कण्य नवरं ॥ तित्यकरणामेति ॥ तीर्थकरत्वनिबन्धननाम तीर्थकरनाम तच्च गोत्रश्च  
कमेविशेष एवेत्येकवद्भावात् तीर्थकरनामगोत्रमिति अथवा तीर्थकरनामेति गोत्र मभिधान यस्य तत्तीर्थकरनामगोत्रमिति श्रेणिकी राजा प्रसिद्ध स्तेन एव

होतिनामाङ्गं ॥ १ ॥ एवं सङ्घेसु दीहवेयहेसु दोकूफासरिसनामगा सेसातेचेव । जंबूमंदरउत्तरेणं नीलवते वासहर  
पञ्चए नवकूफा प० त० सिद्धेनीलवएविदेहे सीयाकितीयनारिकंताय अवरविदेहेरम्मग कूफेउवदसणेचेव ।  
जंबूमंदरउत्तरेणं एरवए दीहवेयहे नवकूफा प० त० सिद्धेरवएखंरुग माणीवेयहपुसतिमिसगुहा एरवएवेसमणे  
एरवएकूफनामाङ्गं ॥ १ ॥ पासेण अरहा पुरिसादाणीए वज्जरिसहनारायसघयणे समचउरंससंठाणसंठिए नवर  
यणीउं उहं उच्चतेण होत्या । समणस्सजगवन्नं महावीरस्स तित्यसि नवहि जीवेहि तित्यकरनामगोयकम्म

इम सर्व दीर्घ वैताढ्यने विषे वीजो आठमो कूट सरिखा नामनो शोप तिमज ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरे नीलवत वत्तस्कार पर्वते नवकूट कह्या तेकहै  
छे सिद्ध १ नीलवंत २ विदेह ३ सीता ४ कीर्ति ५ नारिकाता ६ अपरविदेह ७ रम्यक ८ उपदर्शन ९ ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरे ऐरवते दीर्घवै  
ताढ्ये नवकूट कह्या तेकहैछे सिद्ध १ रत्न २ खरुग ३ माणिज्जद ४ वैताढ्य ५ पूर्णज्जद ६ तिमिस्स ७ ऐरवत ८ वैश्रमण ९ ऐरवते कूटनाम कह्या ॥ १ ॥  
पार्श्वनाथ अरिहत पुरुषादाणी वज्जरिषन्नाराच सघयणी समचतुरस्ससस्यानसस्थित नवहाथ ऊचा ऊचपणे थया ॥ श्रमण भगवान महावीर स्वा



॥ ठा० ॥

॥ ५२० ॥

सुपाश्वी भगवतो बर्धमानस्य पितृव्य उदायी कोणिकपुत्री यः कोणिके अपक्रान्ते पाडलिपुत्रं नगरं न्यवीविशत् यय स्वभवनस्य विविक्तदेशे पर्यदिने प्वाह्य  
संविग्नगीतार्थसद्गुरु तत्पर्युपासनापरायणः परमसवेगरसप्रकर्षं मनुस्मरन् सामायिकपौषधादिक सुश्रमणोपासकप्रायोग्य मनुष्ठान मन्वतिष्ठत् एकदाच  
निशि देशनिर्झाटितरिपुराजपुत्रेण द्वादशवार्षिकद्रव्यसाधुना कृतपौषधोपवासः सुखप्रसूतः कङ्कायः कर्त्तिकाकंठकर्त्तनेनविनाशितइति पोटिलोऽनगा  
रोऽनुत्तरोपपातिकागेऽधीतो हस्तिनागपुरवासी भद्राभिधानसार्थवाहौतनयो द्वात्रिंशद्गार्यात्यागी महावीरशिष्यो मासिक्या सलेखनया सर्वार्थसिद्धोप  
पन्नो महाविदेहा क्षिप्रिगामो अयत्विहभरतक्षेत्राक्षिप्रिगामोति गदित स्ततो य मन्यः सभाश्रयतइति दृढायुरप्रतीतः शखशतकी श्रावस्तीश्रावकी ययो  
रीदृशो वक्तव्यता किलश्रावस्या कोष्ठके चैत्ये भगवा नेकदा विहरतिस्र शखादिश्रमणोपासकाआगत भगवन्त विज्ञाय वंदितु मागता स्ततो निवर्त्तमा  
ना स्तान् शखः खल्वात्यातिस्र भोदेवानांप्रिया यथा विपुलमश्रनाद्युपस्कारयत ततस्तत्परिभुजानाः पान्क्तिकपर्व कुर्वाणा विहरिष्याम स्तत स्तेतप्रति  
पेदिरे पुनः शखोऽचिन्तयत् न श्रेयां मेऽश्रनादि भुञ्जानस्य पान्क्तिकपौषध प्रति जायतो विहर्त्तुंश्रेयसुमे पौषधशालाया पौषधिकस्य मुक्ताभरणशस्त्रादेः  
शान्तवेषस्यविहर्त्तुं मथ स्वगृहे गत्वा उत्पलाभिधानस्वभार्यायैवार्त्ता निवेद्य पौषधशालाया पौषध मकार्षी दितश्चते अश्रना द्युपस्कारयाचक्रु रेकत्रच

निवृत्तिं तंजहा सेणिएणं सुपासेणं उदाइणा पुट्टलेण अणगारेणं दढाउणा संखेणं सयएणं

मीने तीर्थे नवजीव तीर्थकरनामकर्म गोत्रकर्म निवर्त्यो नीपजाव्यो तेकहैछे श्रेणिकराजा १ सुपार्थ महावीरनो काको २ उदाई ३ कूणिकनो वेढो श्रेणि  
कनोपोतो ॥ पोटिल अणगार ४ दृढायु ५ शख ६ शतक ७

समवेयुः शंखं प्रतीक्षमाणा स्तस्युः सो नमस्कृति शंखेपुष्कलीनाम अमणोपासकः शतक इत्यपरनामा शङ्खस्या कारणार्थतद्गृहं जगाम आगतस्य चीत्पला  
 आवकोचितप्रतिप्रति चकार ततः पौषधशालायांसविवेशे र्यापथिकीं प्रतिचक्राम शंख मभ्युवाच यदतो पस्कृत त दशनादि तद्रच्छामः आवकसमवाय  
 भुंजामहे तदशनादि प्रतिजागृतमः पात्रिकपौषधं तत उवाच शखो ऽहहि पौषधिको नागमिथ्यामौति तत.पुष्कली गत्वा आवकाणां तन्निविवेद तेतु  
 बुभुजिरे शखस्तु प्रातः पौषध मपारयित्वैव पारगतपाटपद्मप्रणिपतनार्थं प्रतस्थौ प्रणिपचच त मुचितदेश मुपविवेशे तरेपि भगवंत वन्दित्वा धर्मश्च श्रुत्वा  
 शंखान्तिकं गत्वा एवमूचुः सुष्टुत्व देवानांप्रिया स्नान् हीलयसि तत स्नान् भगवान् जगाद मामा यूयं शंखंहीलयत शङ्खोह्यहीलनीयो यतीयंप्रियधर्मादृढ  
 धर्माच तथा सुदृष्टिजागरिकां जागरितइत्यादि सुलसाराजगृहे प्रसेनजितोराज्ञः सबधिनो नागाभिधानस्य रधिकस्य भार्यावभूव यस्या चरितमेव मनु  
 श्रूयते किल या पुत्रार्थीस्वपति रिद्रादौन्नमस्य न्नभिहितो ऽन्या परिणयेति सच य स्तव पुत्र स्तेन मे प्रयोजनमिति भणित्वा नतप्रतिपन्नवान् इतच तस्याः  
 शक्रालये सम्पन्नप्रशसा श्रुत्वा तत्परीचार्यं कोपि देवः साधू रूपेणागत स्त च वदित्वा वभाण किमागमन प्रयोजनं देवो ऽवादी त्तवगृहेलक्षपाक न्तेल  
 मस्ति तच्चमे वैद्येनोपदिष्टमिति तद्दीयता ददामौत्यभिगता गृहमध्ये ऽवतारयत्याश्च भिन्न देवेन तद्भाजन मेवंदितोयत्ततीय चेत्येष मखेदा दृष्ट्वा तुष्टो देवो  
 द्वात्रिंशतच गुटिका ददा वैकैका खादे द्वात्रिय तेसुता भविष्यति प्रयोजनातरेचाह स्तत्तथ इत्यभिधाय गतोसौ चिंतित ज्ञानया सर्वाभिरपि एकएव मे

सुलसाए सावियाए

सुलसा श्राविका ८

पुत्रोभ्यादिति सर्वाः पीता आहता दात्रिगत्पुत्रावर्गस्तेषां जठर मरतिश्च ततः कायोत्सर्गं मकरो दागतो निवेदितो व्यतिकरो विहितो महोपकारो जातो लक्षणवत्पुत्रगणश्चैत्यादि तथा रेवतो भगवत श्रीपद्माक्षो कथं किले कदा भगवतो मेदिन्यामनगरे विहरतः पित्तज्वरी दाहबह्वली बभूव लीहितवर्चश्च प्रावर्त्तत चातुर्वर्ण्यं च व्याकरोतिस्म यदुत गोशालकस्य तपस्तेजसा दग्धशरीरो तः पद्मासस्य कालकरिष्यतीति तत्र च सिंहनामामुनि रातापनावसान एव समन्यत मम धर्माचार्यस्य भगवतो महावीरस्य ज्वररोगो रुजति ततो ह्यवदिष्यन्ति अन्यतीर्थिका यथा छद्मस्थ एव महावीरो गोशालकतेजोपहत कालंगत इति एवभूतभावमाजनितमानसमहाद् खुखेदितशरीरो मालकतच्छाभिधानं विजय वनं मनुप्रविश्य कुहकुहेत्येव महाध्वनिना प्रारोदीत् भगवांश्च स्थविरैस्त माकायीं क्षयान् हेसिह यत्त्वया व्यकल्प्य न तं ज्ञावि यत् इतो ह देशानानि षोडशवर्षाणि केवलिपर्यायं पूरयिष्यामि ततो गच्छत्व नगर मध्ये तत्र रेवत्यभिधानया गृहपतिपत्न्या मदर्थं हे कूषाण्डफलशरीरे उपस्थिते न च ताभ्यां प्रयोजनं तथा न्यदस्ति तद्गृहे परिवासित मार्जाराभिधानस्य वायो निवृत्तिकारकं कुक्कुटमासकं बीजपूरककटाहमित्यर्थं स्तदाहर ते नन प्रयोजनं मिल्येव मुक्तोऽसौ तथैव कृतवान् रेवतीं च सर्वहुमानं कृतार्थं मात्मानं मन्यमाना यथायाचितं तत्पात्रे प्रनिमवतो तेनाप्यानीय तद्भगवतो हस्ते निमृष्टं भगवतापि वीतरागतयै बोद्धरकोष्ठे निक्षिप्तं ततस्तत्चणमेव क्षीणो रोगो जातो जातानदो यतिवर्गा मुदितो निखिलो देवादिनांक इति अनतरोत्सर्पिण्या ये तीर्थंकरा भविष्यन्ति ते प्रकृताध्ययनानुपातेनोक्ता

## रेवर्द्धे

रेवती ८ ॥ हिंवे जेजीव आवती चोवीसीये तीर्थंकर थई तथा केवली

अधुना तु ये जीवाः सेव्यन्ति तथैव तानाह ॥ एसणमित्यादि ॥ तत्र एष इति वासुदेवानां मध्येऽपश्चिमोऽन्तरकालातिक्रान्त इति ॥ अज्जोत्ति ॥ आम  
 वणवचनं भगवा न्महावीर किल साधूना मंत्रयति हेआर्या ॥ उदएपेढालपुत्तेत्ति ॥ सूत्रकृतद्वितीयश्रुतस्कन्धे नालदीयाध्ययनाभिहित स्तव्यथा उदक  
 नामा नगरः पेढालपुत्रः पार्श्वजिनशिष्यो यो सौ राजगृहनगरबाहिरिकाया नालन्दाभिधानया उत्तरपूर्वस्या दिशि हस्तिद्वीपवनखण्डे व्यवस्थित स्तदेक  
 देशस्य गौतम संशयविशेष मापृच्छ विच्छिन्नसंशयः सन् चातुर्याम धर्मे विहाय पञ्चयामन्धर्मं अतिपेदेइति पोहिलशतका वनतरोक्ता केव दारुको नगा  
 रो वासुदेवस्य पुत्रो भगवतो ऽरिष्टनेमिनाथस्य शिष्योऽनुत्तरोपपातिकोक्तचरित इति तथा सत्यकि निर्ग्रन्थिपुत्रो यस्ये दृशी वक्तव्यता किल चेटकम  
 हाराजदुहिता सुज्येष्ठाभिधाना वैराग्येण प्रव्रजिता उपाश्रयस्या न्तरा तापयतिस्म इतश्च पेढालोनाम परिव्राजको विद्यासिद्धो विद्यां दातुकामो योग्य  
 पुरुष गवेषयति यदि ब्रह्मचारिण्याः पुत्रो भवेत्ततः सुन्यस्ता विद्या भवेयुरिति भावय स्तां च तापयन्तो दृष्ट्वा धूमिकाव्यामोहकृत्वा वीर्जनिक्षिप्तवान्  
 गर्भं संभूतो दारुको जातो निर्ग्रन्थिकासमेतो भगवत्समवसरणं गत स्तत्रच कालसदौपनामा विद्याधरो वदित्वा भगवत पप्रच्छ कुतो मे भयं स्वामी  
 व्याकाशोऽत एतस्मा त्सत्यकिन स्ततो सौ तत्समीपं सुपागत्या वज्रया तं प्रति बभाण रे मा त्वं मारयिष्यसीति भणित्वा पादयोः पातितः ततोऽन्यदा

एसणंअज्जो कणहेवासुदेवे रामेबलदेवे उदयेपेढालपुत्ते पुहिले सययेगाहावई दारुएनियंठे सच्चईयणियटीपुत्ते

यई मोक्षजास्ये तेकहैछे आर्य कण वासुदेव रामबलदेव उदय पेढालविद्याधरनो पुत्र पोहिल शतक गाथापती दारुक श्रीनेमिशिष्य नियंथ वासु  
 देव पुत्र अणुत्तरोववाईमां कस्यो ते सत्यकी सुज्येष्ठा साध्वीनो पुत्र पेढाले धूमकरी जोगवी तेहनोपुत्र

साध्वोभ्यः सकाशा दपहृत्य पितृविद्याधरेण विद्या ग्राहितो अथरोहिण्या विद्यया पंचसु पूर्वभवेषु मारितः षष्ठभवे षण्मासावशेषायुषा तेना सौ नेष्टा  
 इहतु सप्तमे भवे सिद्धा तल्ललाटे विषर विधाय तच्छरीर मभिगता ललाटच्छिद्रं च देवतया तृतीय मचिकृत तेन च स्वपिता स च कालसदीपो मारितः  
 विद्याधरचक्रवर्त्तित्वं प्रापि ततो ऽसौ सर्वास्तौर्थाकरा न्वदित्वा नाट्यचो पदार्था ऽभिरमतिस्मेति तथा आविका अमणोपासिका सुलसाभिधाना बुद्धः  
 सर्वज्ञधर्मेभावितेय मित्यवगतवान् आविकावा बुद्धा ज्ञाता येन स आविकाबुद्धो अमणो ऽम्भडाभिधानः परिव्राजकविद्याधरअमणोपासको ऽयं चार्थः कथा  
 नकादवसेग स्तुत्तेदं चंपाया नगर्या अमणो विद्याधरआवको महावीरसमीपे धर्ममुपश्रुत्य राजगृहं प्रस्थितः स च गच्छन् भगवता बहुसत्वोपकाराय भणितो  
 यथा सुलसा आविकायाः कुशलवार्ता कथये. स च चिन्तयामास पुण्यवती यस्या स्त्रिलोकनाथ स्वकीयकुशलवार्ता प्रेषयति कः पुन स्तस्या गुण इति तावत्स  
 म्यक्त परीक्षे ततः परिव्राजकवेषधारिणा गत्वा तेन भणिता सा वायुपति धर्म्मो भवत्या भविष्यतीत्यस्मभ्य भक्त्या भोजन देहि तथा भणित येभ्यो दत्ते  
 भवत्य सौ ते विदिता एव ततो सा वाकाशविरचिततामरसासनासीनो जन विस्मापयति स्म तत स्त जनो भोजनेन निमंत्रयामास स तु नैच्छत् लोक स्त  
 पप्रच्छ कस्य भगवन् भोजनेन भागधेयवत्ता मासन्नपणकपर्यंतं सर्वदयिष्यसि स प्रतिभणति स्म सुलसाया स्तुती लोक स्तस्या वर्द्धनक न्यवेदयत् यथा  
 तव गेहे भिक्षु रय बुभुत्तु स्तया भ्यधायि किपाखंडिभि रस्माकमिति लोक स्तस्मै न्यवेदयत् तेनापि व्यज्ञापि परमसम्यक्दृष्टि रेषा या महातिशयदर्शन

सावियबुद्धे अम्मणे परिच्छाए

आविकाबुद्ध सुलसाये प्रतिबोध्यो अयं तापस

हीति ॥ प्रत्याजनिष्यते ॥ बहुपडिपुष्पाणति ॥ अतिपरिपूर्णाना मर्द्धमष्टम येषु तान्यर्द्धाष्टमानि तेषु रात्रिंदिवे ष्वहोरात्रेषु व्यतिक्रान्ते विह पष्ठी सप्त  
 म्यर्थे सुकुमारौकोमली पाणीच पादौच यस्यस सुकुमारपाणिपाद स्त परिपूर्णानि स्वकीयस्वकीयप्रमाणतः प्रतिपुष्पानिवा पवित्राणि पञ्चेन्द्रियाणि क  
 रणानि यस्मि स्तत्तथा अहीनमङ्गोपाङ्गप्रमाणतः परिपूर्णपचेन्द्रिय प्रतिपुष्पपचेन्द्रियवा शरीर यस्यसो ऽहीनपरिपूर्णपचेन्द्रियशरीरो ऽहीनप्रतिपुष्पप  
 चेन्द्रियशरीरोवा त तथा लक्षण पुरुषलक्षण शास्त्राभिहितमस्थिष्वर्थाः सुखमासइत्यादि मानोन्मानादिकं व्यञ्जनं मषतिलकादिगुणाः सौभाग्यादयो ऽथवा  
 लक्षणव्यञ्जनयो र्ये गुणा स्तै रुपेतो लक्षणव्यञ्जनगुणोपेतः ॥ उववेउत्तितु ॥ प्राकृतत्वा हर्णागमः अथवा उप अपेत इति स्थिते शकम्बादिदर्शना दकारलोप  
 इति उपपेतइति लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेत स्तं लक्षणव्यञ्जनस्वरूपमिदमुक्त माणुष्माणपमाणा दिलक्खणवंजणतुमसमाई सहजचलक्खणवं जणतुपच्छासमुप्प  
 सति ॥ १ ॥ लक्षणमेवाधिकृत्य विशेषणान्तरमाह ॥ माणुष्माणेत्यादि ॥ तत्र मान जलद्रोणप्रमाणा साह्येव जलभृते कुंडे प्रमातव्यपुरुषउपवेश्यते ततो  
 यज्जल कुण्डा त्रिर्गच्छति तद्यदि द्रोणप्रमाण भवति तदा सपुरुष. मानोपपन्न इत्युच्यते उन्मान तुलारोपितस्या हंभारप्रमाणमात्माङ्गुलेना ष्टोत्तरशतांगुलो  
 ह्यता उक्तंच जलद्रोण १ अद्भारं समुहाओसमुस्सिओवजोनवउ माणुष्माणपमाण तिविहखलुलक्खणएयति ॥ १ ॥ ततश्च मानोन्मानप्रमाणैः

रहं मासाणं बहुपडिपुष्पाणं अष्टममाणयराइंदियाणं विड्ढंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुष्पपंचिंदि  
 यशरीरं लक्षणवंजण जाव सूरुवंदारगं पयाहिति जंरयणिंचणं से दारए पयाहिंति तंरयणिंचणं सयदुवारे  
 णस्ये तेरात्रिनेविषे शतद्वारनगरनेविषे माहिने बाहिर भारप्रमाण वीससे २० शतपलं भार १ । कुंजेप्रमाण साठिआठेकुंज पदमनो वरसातवरससे

प्रतिपूर्णानि सुसुजातानि सर्वाण्यं गानि शिरःप्रभृतीनि यस्मिं स्त तथापिधं सुन्दर मंगं शरीरं यस्य स तथा तं मानोन्मानप्रमाणप्रतिपूर्णसुजातसर्वाङ्ग  
सुन्दरांगं तथा शशिव स्त्रीम्याकार कान्त कमनीय गियं प्रेमावहं दर्शनं यस्य स शशिस्रीम्याकारिकान्तरयदर्शनं स्त अतएव सूरूपमिति दारकं प्रजनिष्यते  
भद्रेति संयंघः ॥ जंरगणिंचत्ति ॥ यस्यांच रजन्यां ॥ तंरगणिंचत्ति ॥ तस्यां रजन्यां पुनरिति अर्शराएवच तीर्थकरोत्पत्तिरिति रजनीग्रहणं ॥ सेदारए  
पयाजिएत्ति ॥ सदारकः प्रजनिष्यते उत्पत्स्यतइति ॥ सभिंतरवाहिरएत्ति ॥ सत्ता भ्यन्तरेणवाण्येनघ नगरभागेन य नगरं तन सर्वेन नगरइत्यर्थः विंशत्या  
पलगतै भारी भवति अथवा पुरुषोत्तमेपणोयो भारी भारकइति यः प्रसिद्धो ऽयं परिमाणं ततो भारएवा गं भाराग न्तेन भाराग्रेण भाराग्रयोभारपरिमा  
णत एव कुम्भाग्रयो नवर ज्ञाया आढकः षष्ट्यादिप्रमाणः पञ्चवर्षश रत्नवर्षश यपिष्यति भविष्यतीत्यर्थः जावत्तिकारणात् निव्वतेप्रसुद्रजायकग्नकारणेसप  
येत्तिदृश्यं तन निर्द्यत्ते निर्वर्त्तितइत्यर्थः पाठात्तरतो निवसेया गिद्यत्ते उपरते अशुचीना ममेध्यानां जातकर्मणां प्रसवयापाराणां करणे विधाने संप्राप्ते  
प्रागते ॥ बारसात्तदिवसेत्ति ॥ षादशानां पूरणो षादशः सएवा ख्या यस्य सषादगाख्याः सचासी द्विसस्येति विग्रहः अथवा षादशं च तदहस षादशा  
च स्तद्वामजो द्विससी षादशात्तदिवसइति ॥ अयंति ॥ इदं च वक्ष्यमाणतया प्रत्ययासन्न ॥ एयारूपति ॥ एतदेव रूपं स्वभावो यस्य न मात्रयापि प्रका

नगरे सल्लिंतरवाहिरए न्जारगसोयकुंजगसोय पउमवासेय रयणवासेय वासिहितिति । तएणं तरस्स दारय  
स्स अम्मापियरो इक्कारसमेदिवसे विइक्कंते जाववारिसाहदिवसे अयमेयारूवं गोणं गुणनिष्फन्तं नामधि  
रतननोवर्षा वरसस्ये तिवारपल्ली तेबालत्तनें माता पिता इय्यारेदिन गया पल्ली यावत् बारमे दिवसे एहवा स्वरूपनुं गुणवंतं गुणेनीपनुं नामदे

तन्तरापन्नमित्यर्थः किन्तु ग्रामधेयं प्रशस्तं नाम किविधं गौणं न पारिभाषिकं गौणमिदं त्वमुख्यमपि स्यादित्याह ॥ गुणनिष्कर्षांति ॥ गुणा नाश्रित्य पद्मवर्षादि  
 तत्पन्नं गुणनिष्पन्नमित्युच्यते ॥ महापद्ममेव महापद्ममेति ॥ तत्पित्रोः पर्यालोचनाभिलाषानुकरणं ॥ तएणांति ॥ पर्यालोचनानन्तरं ॥ महापद्ममिति ॥  
 हापद्मइत्येव रूपं ॥ साइरेगठवासजायगति ॥ सातिरेकाणि साधिका न्यष्टौवर्षाणि जातानि यस्य स तथा त ॥ रायवर्णश्रीति ॥ राजवर्णको वक्तव्यः स

ज्जं काहिति । जम्हाणं अम्हं इमसि दारगंसि जायसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सप्पिंतरवाहिरिण्ण नारग  
 सोय कुंजगसोयपद्मवासेय रयणवासेय वुठे तं होऊणं अम्ह इमस्स दारगस्स नामधिज्जं महापद्मे । त  
 एण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं काहिति महापद्मे २ त्ति तएणं महापद्मंदारग अम्मापियरो  
 साइरेगठवासजायग जाणिहा रायाज्जिसेएणं अज्जिसिचिहिति । सेणं तस्य राया ज्जविस्सइ । महयाहिम  
 वतमलयमदररायवन्ननु जाव रज्ज पसासेमाणे विहरिस्सइ । तएण तस्स महापद्मस्स रन्तो अन्नयाकया

ये जेमाटे अमारे एवालक जणे थके शतद्वारनगरनेविषे माहि बाहिर भारप्रमाण कुभप्रमाण पद्मनोवरसात रतननोवरसात वूठो तेमाटे हो अ  
 मारे एवालकनु नाम महापद्म तिवारपल्ली ते बालकना मातापिता नामकरस्ये महापद्म एहवू २ ॥ तिवारपल्ली महापद्म बालक प्रते मावाप  
 लाकेरा आठवरसनी थयो जासीने मोटा २ । राज्याभिषेकेकरी अज्जिषेककरस्ये तेतिहा राजाथारस्ये मोटो हिमवंत मलय मेरुसरखा राजानु वर्ण  
 न यावत् राज्यपालतो विवरस्ये तिवारे ते महापद्म राजाने एकदा समये वेदेवता मोटीऋद्धिना यावत् मोटासुखना सेवानुं कर्म काम करस्ये ते



चायं ॥ महताहिमवंतमहतमलयमंदरमहिदसारे ॥ महता गुणसमूहेनां तर्भूतभावप्रत्ययत्वा द्वा महत्तया हिमवाथ वर्षधरपर्वतविशेषो मह्यं शासी म  
लयश्च विन्ध्यइति चूर्णिकार महामलयः सच मन्दरश्च मेरु महेन्द्रश्च शक्रादि स्तेष्व सारः प्रधानो यः स तथा ॥ अचंतविसुडदीहरायकुलवसप्पसूए ॥ अ  
त्यतविशुद्धं सर्वथा निर्दोषो दीर्घश्च पुरुषपरम्परापेक्षया यो राज्ञा भूपालानां कुललक्षणो वशः सतान स्तत्र प्रसूतो जातो यः स तथा ॥ निरतररायल  
क्षणविराड्रयगुवगो ॥ नैरन्तर्येण राजलक्षणे यत्कस्वस्तिकादिभिर्विराजिता न्यगानि शिरःप्रभृती न्युपागानि चागुल्यादीनि यस्य स तथा ॥ बहुजणबहुमा  
णपूइए सत्त्वगुणसमिधे खत्तिए समुदिएत्ति ॥ प्रतीतं ॥ सुद्धाभिसित्ते ॥ पितृपितामहादिभिर्मूर्धन्यभिषिक्तो यः स तथा ॥ माउपिउसुजाए ॥ सुपुत्री  
विनीतत्वादिनेत्यर्थः ॥ दयप्पत्ते ॥ दयाप्राप्तो दयाकारीत्यर्थः ॥ सीमकरे ॥ मर्यादाकारी ॥ सीमधरे ॥ मर्यादा पूर्वपुरुषकृता धारयति नात्मनापि लोपयति  
यः स तथा ॥ खेमकरे ॥ नोपद्रवकारो ॥ खेमधरे ॥ क्षेम धारय त्वन्यजतमिति यः स तथा ॥ माणुरिसिंदे जणवयपिया ॥ लोकपिता वतसलत्वात् ॥ ज  
णवयपुरोहिण ॥ जनपदस्य पुरोधा, पुरोहितः शान्तिकारीत्यर्थः ॥ सेउकरे ॥ सेतुंमार्गं नापन्नताना निस्तरणीपायं करोति यः स तथा ॥ केउकरे ॥  
चिह्नकरो अङ्गतकारित्वादिति ॥ नरपधरे ॥ नरैः प्रवरो नराणां प्रवरा यस्य स तथा ॥ पुरिसवरैत्ति ॥ पुरुष, प्रधानः ॥ पुरिससीहे ॥ शौर्याद्यधिकतया ॥  
पुरिसआसौविसे ॥ शापसमर्थत्वात् ॥ पुरिसपुडरिए ॥ पूज्यत्वा त्सेव्यत्वाच्च ॥ पुरिसवरगधहत्थी ॥ श्रेष्ठराजगजविजयित्वात् ॥ अड्डे ॥ धनेश्वरत्वात् ॥ दित्ते ॥  
दर्यवत्वात् ॥ वित्ते ॥ प्रसिद्धत्वात् ॥ विच्छिणविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइणे ॥ पूर्ववत् ॥ बहुधणबहुजायकवरयए आओगपओगसपउत्ते ॥ आयो  
गप्रयोगा द्रव्योपार्जनीपायविशेषाः सप्रयुक्ता, प्रवर्तिता येन स तथा ॥ विच्छड्डियपउरभत्तपाणे ॥ बहुदासौदासगोमहिसगवेलगप्पभूए ॥ पडिपुणजंत  
कोसकोठागारायुहागारे ॥ यत्राणि जलयत्रादीनि कोशः श्लोष्टह कोष्ठागारं धान्यागारं आयुधागारं प्रहरणकोशः बलवहस्यादिसैन्ययुक्तः ॥ दुवल्लपच्चाभि

नापि न दृष्टिव्यामोह मगमदिति ततो लोकेन सहा सौ तद्देहेनैपेधिकीं कुर्वन् च नमस्कार मुच्चारयन् प्रविवेश सा प्यभ्युत्थानादिकां प्रतिपत्ति मकरोत्तेना  
 प्यसा वुपवृहते ति यद्यो पपातिकोपागे महाविदेहे सेत्स्यती त्यभिधीयते सो ऽन्यइति सभाच्यतइति तथा आर्यापि आर्यिकापि सुपार्श्वा पार्श्वापत्यौया  
 पार्श्वनाथग्रिथग्रिथा चत्वारो यामा महाव्रतानि यत्र स चतुर्वाम स्तं प्रज्ञाप्य सेत्स्यति एतेषु च मध्ये मध्यमतीर्थकरत्वेनो त्यत्यन्ते केचि त्केचित्तु केव  
 लित्वेन भवसिद्धिओभयव सिज्जिस्सइकण्हतित्थमो तिवचनादितिभावः ॥ शेष स्पष्ट अनन्तरसूत्रोक्तस्य श्रेणिकस्य तीर्थकरत्वाभिधानायाह ॥ एसणमि  
 त्यादि ॥ जस्सोलसमाचारोइत्यादि ॥ गाथापर्यंत सूत्र सुगमं चैत न्नवरं एषो नन्तरोक्तआर्याइति श्रमणामंत्रण ॥ भिंभित्ति ॥ ढक्का सा सारो यस्य स तथा  
 किल तेन कुमारत्वे प्रदोषनके जयढक्का गेहा त्रिष्काशिता ततः पित्रा भिंभिसारउक्त इति सीमतके नरकेंद्रके प्रथमप्रस्तटवर्त्तिनि चतुरगौतिवर्षसह

अज्जाविणंसुपासा पासावच्चेज्जा आगमेस्साए उसप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पन्तवित्ता सिज्जिहिंति जाव  
 अतकाहिति । एसणं अज्जोसेणिएराया जिजिसारे कालमासे कालकिञ्चा डमीसे रयणप्पज्जाए पुढवीए सी  
 मतए नरए चउरासीइवाससहस्सेविइयंसि नरगसि नेरइत्ताए उववज्जेहिति सेण तस्य नेरइए तविस्सुंति

आर्या सुपार्श्वा पार्श्वनाथनी चेली ए आवती उत्सर्पिणीये चार धर्मकही सिद्ध यास्ये यावत् अतकरस्ये मध्यतीर्थकर यास्ये २ । ए हेआर्यो  
 साधो श्रेणिकराजा जमसार वीजोनाम कालमासे कालकरीने आ रत्तप्रज्ञा पृथ्वीने विषे सीमतनरकावासे चोरासीहज्जार वरसनी थिते नरक  
 नेविषे नारकीपणे ऊपजस्ये तिहां ते नारकीयास्ये कालो काली प्रज्ञा काति यावत् घणुं कल्ल वर्सकरी ते तिहां वेदना वेदस्ये उजली आकरी या

सग्नितिपु नारकोपु मध्ये नारकत्वेनो त्पटस्यते कानः स्वरूपेण कानागभासः कानागभासते पश्यतां गायकारणात् भंगीरो मङ्गान्नीमज्जपीं भगति ता  
 रंगस्यम तथा भोमो विकरानः ॥ उताससाण ॥ उद्देगजनक ॥ परमकण्ठेवगेणंति ॥ प्रतीत सध तथ नरयो वेदनां वेदगिनति उज्ज्वलां विपयस्य नेगेना  
 प्य कनद्रिता यायन्तरणात् शीणि मनोयाकायचलानि उपरि मध्यमाधस्तनकायविभागत्वा क्षुन्नगति जयतीति पितुनातां तापि पिपुला मितिपाठ स्तप  
 पिपुला शरीरभापिनो तां तथा प्रगाढां प्रकर्षवतीं कटु ॥ कटुकसोत्पादितां कर्कशां कर्कशस्पर्गसपादितां प्रथवा कटुकद्रव्यमित्यकटुका मनिष्ठां एव  
 कर्कशामपि चण्डां येगयती भटिलेन सूक्ष्मेत्पादिकां वेदनापि विधा सुखा दुःखाचेति सुखाज्यच्छेदार्थं दुःखा मित्वा ५ दुर्गा स्पर्शतादिदुर्गमित्य जण  
 मपि नद्वगित मथ ता दिजां देनिमित्ता किञ्चना दूरभिसङ्गां सोढमथत्तामिति श्रव्य जग्मूतोपे नासंख्येतमे ॥ समत्ताण्ति ॥ पुंस्तथा ॥ पञ्चाया

काले कालोच्नासे जाव परमकिरहेवन्नेणं सेणं तस्य वेयणं वेएहिंति उज्जलं जाव दुरहियासं रोणं तत्त नर  
 गानं उव्वहिता आगमिस्साए उरुसप्पिणीए इहेवज्जंवूदीवेरं जरहेवासे वेयह्वगिरिपायमूले पुंठेसु सयदुवारे  
 नयरे संमुइयस्स कुलगरस्स जहाए जारियाए कुच्छिसि पुमत्ताए पच्चायाहिए तएणंसा जहा जारिया नव

वत् दुगे अङ्ग्रासीदं ते तेनरगणी नीकलीने आवती उत्सर्पिणीकाले जहा जवूदीपे जरतक्षेत्रे वेताह्वगीरीपर्वतनेमूलं पुंठेसुनेविपे ज्ञातद्वारनगरं सं  
 मुङ्कुलगरं तत्तनी जहाजायांनी कूत्तिनेविपे पुनपणं कपजसं तिवारपत्ती ते जहाभायां नवमत्तीनां घणूं परिपूर्णाथया उपरि साढेसातरात्रि अतिक्र  
 म सुकुमाल ताथ पगळें जेहना हीगा नथी परिपूर्णा पांचदंद्दी शरीरळें १०००८ लक्षण व्यंजन मस तिलक यावत् सुरूप पुनजगास्ये जेरात्रे ते पुनज

ते ॥ अबलप्रातिवेशिकराजः ॥ ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकटयं उडियकंटयं अकंटयं ॥ एवं ॥ ओहयसत्तुं ॥ उपहता राज्यापहारा त्रिहता मारणा म्  
 लिता मानभंजना दुहृता देशनिष्काशना क्कण्टका दायादा यत्र राज्ये तत्तथा अतएव अकटकं एव शत्रवोपि नवरं शत्रव स्तेभ्यो ऽन्ये ॥ पराद्रयसत्तुं ॥ विज  
 यवत्वादिति ॥ ववगयदुभिक्षमारिभयविष्णुमुक्क खेम सिव सुभिक्षं पसतडिंबडमर ॥ डिम्बानि विघ्ना डमराणि कुमाराद्युत्थानादीनि ॥ रज्जपसासेमाणेति  
 ॥ पालयन् ॥ बिहरिस्सइत्ति ॥ दोदेवामहिड्डियाइत्यत्र ॥ यावत्करणात् महज्जुइया महानुभागा महायसा महाबलेत्ति दृश्यं ॥ सेणाकम्मत्ति ॥ सेनायाः  
 सैन्यस्य कर्म व्यापार' शत्रुसाधनलक्षणः सेनाविषयं वा कर्म' इति कर्तव्यतालक्षण सेनाकर्म पूर्णभद्रश्च दक्षिणयत्तनिकायेन्द्रो माणिभद्रश्चोत्तरयत्तनिकायेन्द्रो  
 बहवेराईसरेत्यादि ॥ राजा महामांडलिकईश्वरो युवराजो माडलिको ऽमात्योवा अन्येतु व्याचक्षते अणिमाद्यष्टविधैश्वर्ययुक्त ईश्वरइति तलवरः परितु  
 ष्टनरपतिप्रदत्त पट्टबधभूषितो माडबिक श्छिन्नमडंवाधिप' कौटुम्बिकः कतिपयकुटुम्बप्रभु रिभ्यो ऽर्थवान् सच किल यदीयपुञ्जीकृतद्रव्यराश्यातरितो ह  
 स्यपि नो पलभ्यत इत्ये तावतार्थेनेतिभावः श्रेष्ठो श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टभूषितोत्तमागः पुरज्येष्ठा वणिक् सेनापति नृपतिनिरूपितो हस्त्यश्वरथपदा

इ दोदेवा महिड्डिया जाव महेसस्का सेणाकम्मं काहिति तंजहा पुत्तजद्देय माणिजद्देय तएणं सयदुवारे  
 वहवे राईसरतलवरमाळवियकोडुंबियइप्पसेठिसेणावइसत्यवाहप्पज्जिईत्त अन्नमन्न सद्दावेहि'ति । एवं वइस्सं

कहैके पूर्णभद्र १ । माणिभद्र २ । तिवारे ते शतद्वारनगरें घणा राजेश्वर तलार माडवीआ कोटुंबिक व्यवहारी सेठ सेनापती सार्थवाह प्रमुख मां  
 होमाहि शब्दकरे एहवू कहस्ये जेमांटे देवानुप्रिया अमारो महापद्मराजाये बे देवता मोटीऋद्धिना यावत् मोटासुखना सेवानु काम करेके तेक

तिसमुदायलक्षणायाः सेनायाः प्रभुरित्यर्थः सार्धवाक् सार्धनायक एतेषां द्वे स्ततश्च राजादयः प्रभृति रादि यैषाते तथा ॥ देवसेणेति ॥ देवादेव सेना यस्य देवाधिष्ठितावा सेना यस्य स देवसेन इति ॥ देवसेनातीति ॥ देवसेन इत्येव रूप सेते त्यादि श्रयानतिप्रशस्य श्वतोवा कीदृगित्याह शखतलेन कंबुरु पेण विमलेन पद्मादिरहितेन सन्निकाशः सकाशः सदृशो यः स शखतलविमलसन्निकाशः ॥ दुरुढेति ॥ आरूढः ॥ समाणेति ॥ सन् अतियास्यति प्रवे

ति । ज्ञम्हाणं देवाणुप्पिया अम्हं महापउमस्सरन्तो दोदेवा महिह्विया जाव महेसस्का सेणाकमं कारिति त० पुत्तज्जदेय माणिज्जदेय । त० होऊण अम्ह देवाणुप्पिया महापउमस्स रन्तो दुच्चेवि नामधिज्जे देवसेणे तएणं तस्स महापउमस्स रन्तो दुच्चेवि नामधिज्जे जविस्सइ देवसेणेति । तएण तस्स देवसेणस्स रन्तोअन्त या कयाइ सेयसखतलविमल संनिकासे चउद्वते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिति । तएणं सेदेवसेणे राया त से यसखतलविमलसन्निकास चउद्वत हत्थिरयण दुरूढेसमाणे सयदुवार नगर मज्जमज्जेण अज्जिरकण २ अइ

हैछे पूर्णजद्र १ । माणिजद्र २ । तिवारपळी शतद्वारनगरने विषे घणा राजेश्वर तलवर तेकहैछे पूर्णजद्र १ । माणिभद्र २ । तेमाटें हो अम्हारा देवानुप्पिया महापट्टराजानु बीजूपणि नाम देवसेन एहवो तिवारपळी महापट्ट राजानु बीजु नामयास्ये देवसेन एवो २ । तिवारपळी ते देवसेन राजाने एकदासमये स्वेतशखतलनी परे निर्मल तेसरिखो चारदतनो हस्तिरतउपजस्ये तिवारे ते देवसेन राजा ते स्वेत शखतलनिर्मल सरखो चारदतनो हस्तिरत ऊपरि चढेथके शतद्वार नगरमध्ये वारवार २ । आवे ने जाय तिवारे शतद्वारनगरनेविषे घणा राजेश्वर तलार यावत् मा

त्यति निर्यास्यति निर्गमिष्यतीति क्वचिद्वर्त्तमाननिर्देशो दृश्यते सच तत्कालापेक्षइति एव सर्वत्र ॥ गुरुमहत्तरं एहिति ॥ गुरोर्मातापित्रो महत्तरा पू  
ज्या अथवा गौरवार्हत्वेन गुरवो महत्तराश्च वयसा वृद्धत्वा द्येते गुरुमहत्तरा ॥ पुनरविति ॥ महत्तराभ्यन्जानान्तर लोकाते लोकाग्रलक्षणे सिद्धस्या  
ने भवा लोकातिका भाविनि भूतवदुपचारन्यायेन चैव व्यपदेशो ऽन्यथा ते कृष्णराजौमध्यवासिनो लोकात्तभाषित्वेन तेषा मनन्तरभवएव सिद्धिगमना

जाहि । पणिजाहि य । तएणं सयदुवारे नगरे वहवे ईसरतलवरजाव अन्नमन्नं सद्दाविहिंति ५ एवं वइस्सति ।  
जम्हाण देवाणुप्पिया अम्ह देवसेणरस रसो सेतसखतलविमलसन्निकसे चउदुते हत्थिरयणे समुप्पन्नेय  
होऊणं अम्ह देवाणुप्पिया देवसेणस्सरसो तच्चेवि नामधिज्जे विमलवाहणे तएण तस्स देवसेणस्सरन्तो तच्चे  
नामधिज्जे जविस्सइ विमलवाहणे । तएणं सेविमलवाहणेराया तीसंवासाइ अगारवासमज्जे वसित्ता अम्मा  
पीईहि देवत्तगएहि गुरुमहत्तरेहि अणुन्नाए सनाणे उदुमि सरए संवुद्धे अणुत्तरे मोक्कमग्गे पुनरवि लोगं  
तिए जीयकप्पिएहि देवहि ताहि इछाहि कताहि पियाहि मणुन्नाहि मणामाहि लुरालाहि कल्लाणाहि धन्नाहि

होमाहि शब्दकरस्ये करीने एहवू कहस्ये जेमाटे देवानुप्रिया अम्हारे देवसेनराजाने स्येनसखतलनिर्मल तेसरखो च्यारदंतनोहस्तिरत्त जपनो ते  
माटे हो अम्हारे देवानुप्रिय देवसेनराजानु त्रीजो पणि नाम विमलवाहन ३ । तिवारे ते देवसेन राजानुं त्रीजो यणि नाम यास्ये विमलवाहन  
एहवो ३ । तिवारे ते विमलवाहन राजा त्रीसवरस गृहस्थावास मा वसीने मातापिता देवलोक्कयापक्खी गुरुवरं तेणे आज्ञादीधेयके ससमये

दिति जीतकल्प आचरितकल्पो जिनप्रतिबोधनलक्षणो पिदाते येषांते जीतकल्पिका आचरित मेय तेषां मिदं नतृते स्वीर्णतर' प्रतिबोध्यते स्वयंबुद्धत्वा  
 जगवतइति ॥ ताहिति ॥ ताभिर्वियक्षिताभिः ॥ वग्गूह्णति ॥ वाग्भि र्मकाभि रानन्द उत्पाद्यतइतिभावः इष्टाभि रियते स्म याः कान्ताभिः कमनीया  
 भिः प्रियाभिः प्रेमोत्पादिकाभि र्विरूपा अपि कारणवशा प्रिया भवतीत्यत उच्यते मनोज्ञाभिः शुभस्वरूपाभि र्मनोज्ञाप्रपि शब्दतो ऽर्थतो न हृदयग  
 मा भवतीत्यतः ॥ मणामाह्णति ॥ मनोऽमतिगच्छति या स्ता स्तथा ताभि रुदारेणो दात्तेन स्वरेण प्रयुक्तत्वा दर्शयन्वा युक्तत्वा दुदाराभिः कान्य मा  
 रोग्य मणंति शब्दयतीति कच्याणा स्ताभिः शिवास्त्यो पद्माभावस्य सूचकत्वात् शिवाभि र्धनं लभते धनेवा साध्यो धन्या स्ताभि र्मंगले दुरितक्षये साध्यो  
 मङ्गल्या स्ताभिः सत्ताश्रया वचनार्थशोभया या स्ताः सश्रीका स्ताभि र्वागिरिति सज्जननीयं प्रभिनन्व्यमानः समुक्तास्यमान ॥ बहियत्ति ॥ नगरा ए  
 हिस्ता दिशि इतो वाचनातर मनमृत्य लिख्यते ॥ साइरेगाइंति ॥ अर्हसप्तमै र्मासै र्हादशवर्षाणि यावत् व्युत्सृष्टे काये परिकर्म पर्वजनत स्वर्गते देहे परीस

सिवाहि मगल्लाहिं सस्सिसरीय्याहि वग्गूहिं अज्जिणंदिज्जमाणे अज्जिथुवमाणेय वहियासुज्जुमिज्जाणे उज्जाणे एणं  
 देवदूसमादाय मुंठेजविहा अणगारान् अणगारियं पव्हिहिति । तस्सण जगवतस्स साइरेगाइं दुवालसवासाइं

संबुद्धयया उत्कृष्टा मोक्षमार्गने विषे वली लोकातिरुदेव जीतमर्यादाखे जेहनी एहवा देव ते इष्ट कांत प्रीतकारी मनोज्ञ मनोहर उदार कल्याणका  
 री निरुपद्रव धन्यकारी मगलकारी सश्रीक एहवे वचनें अजिनदता प्रशंसता अभिस्तवता सबोधनेकरी प्रतिबोधे सुज्जुमिज्जाग उद्याने एक देवदूष्य  
 वस्त्रलेईं मुठ्ठयईं लोचकरी गृहस्थावासमूकी दीक्षालीधी तेजगवत जेदिवसे मुंठयया प्रव्रज्यालीधी तेजदिवस सेपथाकते एहवारूपनी अजिग्रह प्र

हादि सहनत स्तथा सहिष्यति उत्पत्स्यमानेषू पसर्गेषु तथा भावत. क्षमिष्य त्युत्पन्नेषु क्रोधाभाक्तः तितित्तिष्ठति दैन्याभावतो ऽध्यासिष्यते अविच  
 क्षतयेति ॥ जावगुत्तेत्ति ॥ करणा दिदं दृश्य ॥ एसणासमिए आयाणभडमत्तनिकखेवणासमिए ॥ भांडमात्राया आदाने निक्षेपेच समितइत्यर्थः ॥ उच्चार  
 पासवणखेलसिघाणजल्लपारिठावणासमिए ॥ खेजो निठोवन सिघाणोनासिकास्सेसा जल्लो मलः ॥ मणगुत्ते वडगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते ॥ त्रिगुप्तत्वात् गुप्तात्मे  
 त्यर्थः ॥ गुत्तिंदिए ॥ स्वविषयेषु रागादिनें द्वियाणा मप्रवृत्ते. ॥ गुत्तबभचारी ॥ गुप्त नवभि ब्रह्मचर्यगुप्तिभौ रक्षित ब्रह्म मैथुनविरमण चरतीति विग्र  
 ह स्तया ॥ अममे ॥ अविद्यमानममेत्यभिलापो निरभिष्वगत्वात् ॥ अकिचणे ॥ नास्ति किचन द्रव्यं यस्य स तथा ॥ च्छिन्नगथे ॥ छिन्नो ग्रन्थो धनधान्या  
 दि स्तथातिबन्धोवा येन यथा कचित् किन्नगथे इतिपाठ स्तव कौर्ष. विमः ॥ निरुवलेवे ॥ द्रव्यतो निमलदेहत्वा ज्ञावतो बन्धहेत्वभावा निर्गंत उपलेपो  
 यस्मादिति निरुपलेप एतदेवो पमाने रभिज्ञोयते ॥ कसपातीवमुक्कतोये ॥ कांस्यपात्रीव कांस्यभाजनविशेष इव मुक्त त्यक्त नलग्न मित्यर्थः स्तोयमिव बध

निच्च वोसठकाए वियत्तदेहे जेकेइउवसग्गा उप्पज्जांति ते उप्पन्ते संमं सहिस्सइ रक्कमिस्सइ तित्तिरिक्कस्सइ  
 अहियासिस्सइ तएणं से जगव इरियासमिए ज्ञासासमिए जाव गुत्तबन्नयारी अममे अकिचणे च्छिन्नगथे  
 निरुवलेवे कसपाईवमुक्कतोए जहा ज्ञावणाए जाव सुज्जयज्जयासणेतिवातेयसाजलते ॥ कसेसंखेजीवे गगणे

ते ग्रहे जेकोई उपसर्ग उपर्जे तेकहैछे देवताना मनुष्यना तिर्यंचनां ते सचला ए सम्यक् प्रकारें सहवा समवा तितित्तिवा अहिआसवा तिवारपळी  
 ते जगवत अणगारयास्ये ईयांसमितिवत् ज्ञासासमितिवत् इम जिम श्रीवद्भूमान तिमज सर्वे जाणवूं जेव अव्यापारपणें काउसगना योगयुक्त ते भग



हेतुत्वा त्तोयं सेहो येन स सुक्ततोयो यथा भावनाया माचारांग द्वितीयश्रुतस्तन्मपंचदशाध्ययने तथा ऽयं वर्णको वाच्यइतिभाव' कियदूरं यावदित्याह  
 ॥ जावसुहुएइत्यादि ॥ सुहु हुतं चित्तं घृतादौति गम्यते यस्मिन् स सुहुत सचासौ हुताशनश्च वह्निरिति सुहुतहुताशन स्तद्धत्तेजसा ज्ञानरूपेण तपोरू  
 पेणवा ज्वलन् दीप्यमानः अतिदिष्टपदाना सग्रहं गाथाभ्या माह ॥ कसेगाहा ॥ कुजरगाहा ॥ कसेत्ति कंसपाईवमुक्ततोये ॥ संखेत्ति ॥ सखोइव निरज  
 ण ॥ रागाद्युपरजन तस्मा निर्गतइत्यर्थः ॥ जीवत्ति ॥ जीवइव ॥ अप्पडिहयगई ॥ सयमेगति' प्रवृत्ति न हन्यते ऽस्य कथंचिदितिभाव' ॥ गगणेत्ति ॥ ग  
 यणमिव निरालवणे ॥ गगनमिव निरालवनो न क्लयामा व्यालवनइतिभाव ॥ वायेयत्ति ॥ वायुस्मि ॥ अप्पडिबडो ॥ ग्रामादि श्वेकरात्रादिवासात्  
 ॥ सायरसलिलत्ति ॥ सायरसलिलव्वसुडडिहिये ॥ अकलुषमनस्वात् ॥ पुखरपत्तेत्ति ॥ पुक्खरपत्तपिवनिरुवलेवे ॥ प्रतीत ॥ कुम्भोइवगुत्तिदिण ॥ कच्छपोहि  
 कदाचि दवयवपचकेन गुप्तो भवत्येव मसावपोन्द्रियपचकेनेति ॥ विहगेत्ति ॥ विहगइव विष्णुमुक्ते ॥ सुक्तपरिच्छट्त्वा दनियतवासाञ्चेति ॥ खण्णोयत्ति ॥  
 खण्णविसाणवएगजाए ॥ खण्ण आटव्योजीवविशेष स्तस्य विषाण शृग तदेकमेव भवति तद्वदेकजात एकभूतो रागादिसहाय वैकल्यादिनि ॥ भारडेत्ति ॥  
 भारडपचीवअप्पमत्ते ॥ भारडपक्षिणो किल एक शरीरपृथग्रथीव त्रिपादच भवति तीचा त्यन्त मप्रमत्ततयेव निर्वाह लभेतेइति तेनोपमेति १ ॥ कुजरे  
 त्ति ॥ कुजरोइव सोडैरे ॥ हस्तौव शूरः कपायादिरिप्पन्प्रति ॥ वसहेत्ति ॥ वसभोइव जाययामे ॥ गौरिवो त्यन्नवल प्रतिज्ञातवसुभरनिर्वाहकइत्यर्थः ॥ सी  
 वावेयसारएसलिले पुरकरपत्तेकुंमे विहगेखग्गेयजारडे ॥ १ ॥ कुंजरवसहेसीहे नगरायाचेवसागरमखोजे चंदे  
 सूरैकणगे वसुधराचेवसुज्जयहुयए ॥ २ ॥ नल्यिण तरस्स जगवतरस्स कल्यइ पण्णिवधे जवइ सेयपण्णिवधे चउ

हेति ॥ सीहोइव दुहरिसे ॥ परीसहादिभि रनभिभवनीयइत्यर्थः ॥ नगरायाचेवत्ति ॥ मद्रोइव अण्कंपे ॥ मेरुरिवा नुकूलाद्युपसर्गै रविचलितसत्त्व' ॥ सागरमखोहिति ॥ मकारोलाक्षणिकः सागरवदक्षोभः सागराक्षोभइति सूत्रसूचा सूत्रव सागरो इव गंभीरे हर्षशोकादिभि रक्षोभितत्वादिति ॥ चदे ति ॥ चदेइव सोमलेसे ॥ अनुपतापकारिपरिणामः ॥ सूरैत्ति ॥ सूरैइव दित्ततेए ॥ दीप्ततेजा द्रव्यत शरीरदीप्त्या भावतो ज्ञानेन ॥ कणगेत्ति ॥ जच्चकण गपिव जायन्ते ॥ जातं रूप लब्ध रूप स्वरूप रागादिकुद्वयविरहाद्येन स तथा ॥ वसुवराचेवत्ति ॥ वसुवराइव सव्वपासविसहे ॥ स्पर्शाः शीतोष्णादयो ऽनुकूलेतराः ॥ सुहृद्वह्यत्ति ॥ व्याख्यातमेवेति ॥ नत्थीत्यादि ॥ नास्ति तस्यभगवतो महापद्मस्याय पक्षो यदुत कुत्रापि प्रतिबधः स्रेहो भविष्यतीति ॥ अं डएइवत्ति ॥ अडजो हसादि र्ममाय भित्युल्लेखेनवा प्रतिबधोभवति अथवा अंडक मयूर्यादीना मिद रमणक मयूरादेः कारणमिति प्रतिबध' स्यादित्यथ वा डज पट्टसूत्रजमिति वा पोतजो हस्यादि रयमितिवा प्रतिबंध स्यात् अथवा पोतको बालकइतिवा अथवा पोतक वस्त्रमितिवा प्रतिबधः स्यात् आ हारेपिच विशुद्धे सरागसयमवत प्रतिबध स्यादिति दर्शयति ॥ उग्गहिएवत्ति ॥ अवगृहीत परिवेषणार्थं सुत्पाटित प्रगृहीत भोजनार्थं सुत्पाटित मि ति अथवा अवग्रहिक मित्यवग्रही स्यः स्तोति वसतिपोठफलकादि औग्रहिक वा दंडकादिक सुपविजात तथा प्रकर्षेण गृहोस्येति प्रग्रहिक मौघिक मुपकरण पात्रादौति अथवा अडजेवा पोतजेवेत्यादि व्याख्येय भिकारस्वागमिकइति ॥ जजति ॥ या या दिश णमिति वाक्यालकारे तुशब्दो वा यं

हिहे पं० त० अंरुएइवा पोयएइवा उग्गहेइवा पग्गहिएइवा जणजंणदिसं इच्छइ तंणं तंण दिसं अपाणिबध्ते

वतने एहवे विहारे करीने विचरतें बारेवरस गयापक्षी अव्यापारपणे काउसगना योगयुक्त तेरमूं वरस वर्ततं उत्कृष्टं ज्ञाने करी तेयथाभावे केवल

४१० ॥ तदर्थ एव दृश्यते तदा विहर्तुमिति शेषः ता ता दिश विहरिष्यतीति संबंधः सप्तम्यर्थे चेत्यं द्वितीया तस्यां तस्या मित्यर्थः शुचिभूतो भावशक्तितो लघुभू- ॥ टीका ॥  
 २९ ॥ तो नृपधित्वेन गौरवत्यागेन च ॥ अणुपगग्येति ॥ अनुरूपतया चित्त्वेन विरते न लघुपुण्योदया दणुरपिवा सूक्ष्मोऽप्य ल्योपि प्रगतो अथो धनादिर्यस्य यस्मा-  
 षामावमुपग्रन्थो पेश्यंतर्भूतत्वा दणुप्रग्रन्थोवा अथवा ॥ अणुपगग्येति ॥ अनुरूपं नर्थाणीयोऽदौकनीयः परेषा माध्यात्मिकत्वात् गंधवत् द्रव्यवत् ग्रन्थोज्ञानादि-  
 र्यस्य सोऽनर्थाग्रन्थ इति ॥ भावेमाणेति ॥ वासयन्नित्यर्थः ॥ अणुत्तरेणिति ॥ नास्त्युत्तर प्रधान मस्मादिति अनुत्तर स्तेन एव मिति ॥ अणुत्तरेणिति ॥ वि-  
 शेषण मुत्तरत्वापि सवधनोयमित्यर्थः आलयेन वसत्या विहारेणे कारावादिना आर्जनादयः क्रमेण मायामानगौरवक्रोधलोभनिगृह्णा गुप्ति मनःप्रभृतीनां  
 तथा सत्यं च द्वितीय महाव्रतं समयमत्र प्रथम तपोगुणाद्या नशनादयः सुचरित सुज्ञा सेवित ॥ सोयवियति ॥ प्राकृतत्वात् शौचच तृतीय महाव्रत अथवा  
 ॥ विवर्ति ॥ पित्र विज्ञानमिति द्वयः तत शैतान्ये वेताणव वा ॥ फलति ॥ फलप्रधान परिनिर्वाण मार्गो निर्वाणनगरीपथः सत्यादिपरिनिर्वाणमार्ग-  
 सुचिभूए लज्जन्नुए अणुपगग्ये संजज्ञेणं अणुपगग्ये जावेमाणे विहरिस्सइ तरस्सणं जगवंतस्स अणुत्तरेण नाणेण अ-  
 णुत्तरेण दसणेण अणुपचरिणं एव आलएण विहारेण अज्जावे महवे लाघवे खती मुत्ती गुत्ती सच्चसंजमत-  
 वगुणसुचरियसोऽणवियफलपरिनिष्ठाणमग्गेणं अणुपगग्ये जावेमाणस्स ज्जाणतरियाए वहमाणस्स अणुते अणु-  
 तरेनिष्ठायाए जाव केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जिहिति तएणं से जगव अरहा जिणे जविस्सइ केवली सच्च-  
 वरज्ञान दर्शन उपजस्ये जितथास्ये केवलीसर्वज्ञ सर्वदर्शी ते यावत् पचमहाव्रत जावनासहित ब्रह्मजीवनी सहवा धर्मप्रतें देखाफता विचरेछे ते ॥ मूला ॥

स्तेन ध्यानयोः शुक्लध्यानद्वितीयतृतीयभेदलक्षणयो रतर मध्यं ध्यानान्तरं तदेव ध्यानान्तरिका तस्यां वर्त्तमानस्य शुक्लस्य द्वितीया ज्ञेयादुत्तीर्णस्य तृतीय म  
 प्राप्तयेत्यर्थः अनन्तमनन्तविषयत्वा दनुत्तर सर्वोत्तमत्वा त्रिव्याघात धरणीधरादिभि रप्रतिहतत्वात् निरावरण सर्वावरणापगमात् कृत्स्न सर्वार्थविषयत्वात्  
 प्रतिपूषं स्वरूपतः पौर्णमासीचद्रवत् केवल महसायमतएव वरज्ञानदर्शन प्रतीत केवलवरज्ञानदर्शनमिति ॥ अरहति ॥ अहन् अष्टविधमहाप्रातिहा  
 र्यरूपप्रजायोगात् जिनो रागादिजेतृत्वात् केवलौ परिपूर्णज्ञानादित्रययोगात् सर्वज्ञः सर्वविशेषार्थबोधात् सर्वदर्शी सकलसामान्यार्थावबोधात्ततश्च सहदे  
 वैश्च वैमानिकच्योतिष्कलक्षणै र्मर्त्यैश्च मनुजै रसुरैश्च भवनपतिव्यतरलक्षणै र्यः स सदेवमर्त्यासुर स्तस्य लोकः पचास्तिकायात्मक स्तस्य ॥ परियागंति ॥  
 जाता वेकवचनमिति पर्यायान् विचित्रपरिणामान् ॥ जाणइ पासइति ॥ ज्ञास्यति ईच्छतिचेत्यर्थः एतच्च देवादिग्रहण प्रधानापेक्ष्य मन्यथा सर्वजीवानां  
 सर्वपर्यायान् ज्ञास्यति अतएवाह ॥ सव्वलोएइत्यादि ॥ वयणति ॥ वैमानिकच्योतिष्कमरण उपपात नारकदेवाना जन्म तर्क विमर्शं मन श्रित्त मनसि  
 भव मानसिक चिन्तितं वस्तु भुक्त मोदनादिकृत घटादि प्रतिषेवित मासेवित प्राणिवधादि आविष्कर्म प्रकटक्रियां रह'कर्म विजनव्यापार ज्ञास्यती त्य  
 नुवर्त्तते तथा अरहा न विद्यते रहो विजन यस्य सर्वज्ञत्वा दसा वरहा अतएव रहस्यस्य प्रच्छन्नस्या भावोऽ रहस्य तद्भजत इत्यरहस्यभागी त त काल

नू सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइगतिठियच  
 यण उववायं तक्क मणोमाणसियं जुत्तकळं परिसेविय आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सजागी त त कालं  
 मणसवयसकाइए जोगे वहमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाण सव्वजावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ । तएणं से

माश्रित्येतिशेषः सप्तमीमेव मतं स्तस्मिस्तस्मिन् काले इत्यर्थः ॥ भगवत्सर्वसत्कादिति ॥ मानसश्च वाचसश्च कायिकश्च मानसवाचसकायिकं तत्र योगे व्यापारे क्लृप्तत्वं प्राकृतत्वादिति वर्तमानानां व्यवस्थितानां सर्वभावान् सर्वपरिणामान् जानन् पश्य विहरिष्यति ॥ अभिसमेच्चति ॥ अभिसमेत्य अत्र गम्य ॥ सभावणाइति । सह भावनाभिः प्रतिपद्यते पञ्चभि रोर्यासमित्यादिभि र्गानि तानि सभावनानि तासां च स्वरूपं भावश्चक्षा न्तश्च पटु च जीव निकायान् रज्जुनीयतया ॥ धन्यति ॥ एव रूपं चारित्र्यात्मकं सुगतौ जीवस्य वरणां च देशयेत् यत्कल्पयन्निति अथ महापद्मस्या त्वनश्च सर्वज्ञत्वात् सर्वज्ञोऽस्य मताभेदात् भेदे चेत्तस्या गत्या जसुदर्शनेनाऽसत्त्वज्ञता प्रसगादि लुभयो र्भगवान् समा जसुप्ररूपणा दर्शयन्नाह ॥ सेजहेत्यादि ॥ स इत्यर्थार्थोऽथयद्वयं वाच्योपन्यासार्थो यथे त्युपमार्थः ॥ नामपत्ति ॥ वाकालकारे ॥ अर्जोत्ति ॥ शिष्टामत्रण ॥ एगेश्वरमहाणेति ॥ आरम्भ एव स्थानं वस्तु आरम्भ स्थानं मे तमेव तत्तत् प्रसक्तयोगलक्षणत्वात् तस्य यदाह सव्योपमत्तजोगो समणस्स उहोइति आरभोत्ति ॥ इत शेषं भावश्यकं प्रायः प्रसिद्धमिति न लिखितं

जगत्तेण अणुत्तरेण केवलवरणादसणेण सदेव मणुयासुरलोकं अजिसमिद्धा समणाण निग्गथाण पंचमहं ह्इयाइ सज्जावणाइ लच्छजीवनिकाए धम्मं देसमाणे विहरिसइ । सेजहानामए अज्जीमए समणाण निग्गंथाण एगेश्वरज्जहाणे प० एवामेव महापउमेवि अरहा समणाण निग्गथाण एगेश्वरज्जहाण पन्तवेहिति । सेजहा

जिसं दृष्टाते हेतुपर्यो मे श्रमणनिग्रथने ए आरज्जनु थानकं कत्थो इमज महापट्टपणि अरिहत श्रमणा निग्रथने एक आरज्जनु थानकं कत्थे ते जि स दृष्टाते आर्यो मे श्रमणनिग्रथने वेप्रकारे वधनं कत्थो तस्मैहैवे प्रेमवधनं १ । द्वेपवधनं २ । इमज महापट्ट पणि अरिहत श्रमणनिग्रथने वेप्रका

॥ हानामए अज्जोमए समणाणंनिग्गंथाणं दुविहे वंधणे प० तंजहा पेज्जबंधणेय दोसबंधणेय एवामेव महापउ मेवि अरहा समणाणंनिग्गंथाणं दुविहं वधणपन्नवेहिति तजहा पेज्जवधणं च दोसवधणं च । सेजहानामए अज्जोमए समणाणं निग्गंथाणं तउ दहा प० त० मणदहं३ एवामेव महापउमेवि समणाणंनिग्गंथाणं तउ दहं पस्सवेहिति तजहा मणोदहं३ । सेजहानामए एएण अज्जिलावेण चत्तारि कसाया प० तं० कोहकसाए ४ । पचकामगुणा प० त० सहा ५ । छ जीवनि काया प० तजहा पुढविकाइया जाव तसकाइया एवामेव जाव तसकाइया सेजहाणामए एएण अज्जिलावेण सत्त जयठाणा पस्सत्ता एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं सत्तजयठाणे पन्नवेहिति ॥ एव मछमयठाणे णव वंजचेरगुत्तीउ दसविहे समणधम्मो एव जाव तेत्तीस

रे बंधनप्रते प्ररूपस्य प्रेमबधन १ । द्वेषबधन २ । ते मे आर्यो अमणनिग्रथने त्रिणि दहकह्या ते कहैछे मनोदह ३ । इमज महापट्ट पणि अमणनिग्रथने त्रिणि दह कहस्ये ते कहैछे मनोदह ३ ॥ ते जिम दृष्टाते इम एहज दृष्टाते च्यार कषाय कह्या ते कहैछे क्रोधकषाय ४ ॥ पाच कामना गुण कह्या ते कहैछे शब्द रूप ५ ॥ छ जीवनि काय कहिया ते कहैछे पृथ्वीकाय यावत् त्रसकाय इमज ते जिम दृष्टाते ते यथार्थ सात भयना थान कहिआ ते कहैछे इमज महापट्ट पणि अमण निग्रथने सातभयना थानक प्ररूपस्ये इम आठमदना थानक ॥ नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति ॥ दशप्रकारे यतीधर्म कहस्ये इम यावत् तेत्तीस आशातना ते जिम दृष्टाते आर्यो मे श्रीवीरकहेछे अमणनिग्रथने नग्नजाव वस्त्ररहितपणु मुडजाव स्नाननही दातणनकर

तथा फलक प्रतल मायत काष्ठं स्थूल मायतमेव लब्धानिच सन्मानादिना पलब्धानिच न्यत्कारपूर्वकतया यानि भक्तादीनि तैर्हृत्तयो निर्वाहा लब्धाप  
लब्धवृत्तयः ॥ आहाकस्मि एत्ति ॥ आधाया श्रित्य साधून् कर्म सचेतनस्या चेतनीकरणलक्षणा अचेतनस्य वा पाकलक्षणा क्रिया यत्र भक्तादौ तदा धाकर्म  
तदेवा धाकर्मिक उक्तञ्च सच्चित्तजमचित्त साङ्गण्डाएकौरणजच अचित्तमेव पञ्चइ आहाकस्मतयभणियति ॥ १ ॥ इहच इकारः सर्वनागमिक इति शब्दो  
वा यमुपप्रदर्शनार्थपरो वा विकल्पार्थः ॥ उद्देसियति ॥ अर्थिनः पाखण्डिनः श्रमणा त्रिगुणान्वोद्दिश्य दुर्भिजात्ययादौ यज्ञं वितीर्यते तदौ द्वेषिकमि

मासातणानुत्ति सेजहानामए अज्जोमए समणाणं निग्गंथाणं नग्गजावे मुंढजावे अरहाणए अदतवणे अच्च  
त्तए अणुवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कठसेज्जा केसलोए वंजचेरवासे परघरप्पवेसे लद्धावलद्धविहीनं  
जाव पस्सत्तानु एवामेव महापउमेविअरहा समणाण निग्गथाण नग्गजावे जाव लद्धावलद्धविहीनं जाव  
पन्नवेहिहि । सेजहाणामए अज्जो मए समणाण निग्गथाण आहाकस्मि एइवा उद्देसिएइवा मीसजाएइवा

वु छत्ररहितपणु पगरखीरहितपणु धरतीइसोवो पाटेसूवू काएशय्या केसनोलोच ब्रह्मचर्यपालवो परघरे पेसवु जित्ताने अर्थे लाधे आहारनी वृ  
त्ति कही इमज महापट्टपणि श्रमण निग्रयने नग्नभाव प्रते यावत् लब्धालब्धवृत्तिप्ररूपस्ये अलब्धेतपसोवृद्धि लब्धेदेहस्यधारणा ॥ ते जिम नाम  
आर्यो मे श्रमणने आधाकरमी उद्देसिकपिड मिश्रजातिनो यतीगृहस्थने अर्थे नीपनोसाधुने अर्थे माह अधिकेरु घाती राधे शुद्धे पणि अपवित्रचो  
यायु आणु साधुने अर्थउद्धीनु लीधु जेचाटुप्रमुखे लागु आच्छेटाआपे घणानु साधारण एकेने पणि अपूछाआपे साहमू आणी आपे अटवीनु ज

ति उद्देशे भव मौद्देशिकमिति शब्दार्थः यदा तथैव यदुद्धरित स हृद्वादिभिर्विर्मित्रा दीयते तापयित्वावा तदपि तथैवेति इहा भिहित उद्दिष्टियसा  
हुमाई ओमच्चयभिक्षवियरणजच उव्वरिअमीसेउ ततियउद्देशियतंतुत्ति ॥ १ ॥ मोसजावएवत्ति ॥ गृहिसयतार्थं मुपस्कृततया मित्र जात मुत्पन्न मित्र  
जात यदाह पढमच्चियगिहिसजय मौसउवखडइमौसगततुत्ति ॥ अज्झोयरएत्ति ॥ स्वार्थंमूलाद्गृहणे साध्वाद्यर्थे करणप्रक्षेपण मध्यवपूरकआहच सडा  
मूलद्वहणे अज्झोयरहोइपक्खेवोत्ति ॥ पूइएत्ति ॥ शुद्धमपि कर्माद्यवयवै रपविचौकृत पूतिक उक्तंच कम्मावयवसमेय संभाविज्जइजयतुतपूइ ॥ १ ॥ की  
यत्ति ॥ द्रव्येण भावेनवा क्रीत स्वीकृतं य त्तत् क्रीतमिति यतोभ्यधायि द्वाइएहिकिण्ण साह्णकाएकीयतुत्ति ॥ पामिच्चं ॥ प्रामित्यक साध्वर्थे मुद्धा  
रगृहीत यतोभिहित पामिच्चसाह्ण अडाओच्छिदिउवियावेइत्ति ॥ आच्छिद्य स्वलात् भृत्यादिसत्क माच्छिद्य यत् स्वामी साधवे ददाति भणितच  
अच्छिज्जवाच्छिदिय जसामोभिच्चमाईएत्ति ॥ अनिसृष्ट साधारण वह्णामेकादिना अनुज्जात दीयमान माहच अणिसिद्धसामन्नं गोष्ठियमाईणदयउ  
एगस्सत्ति ॥ अभ्याहृत खगूमादिभ्य आहृत्य य इदाति यतो ऽवाचि सग्गामपरग्गामा जमाणियअभिहडतयहोइत्ति ॥ एषा शब्दार्थः प्रायः प्रकटए

अज्झोयरएइवा पूइए कीए पामिच्चे अच्छिज्जे अणिरस्से अग्निहोइवा कतारन्नत्तेइवा दुप्पिस्करत्तेइवा गि  
लाणन्नत्तेइवा वहारियन्नत्तेइवा पाज्जणगन्नत्तेइवा मूलन्नोयणेइवा कदन्नोयणेइवा फलन्नोयणेइवा वीयन्नोय

क्तजे अटवीमा आपे दान दुकालनुज्जक्त राक्खेनिमित्ते कीधो रोगीआनेअर्थे नीपनुं ते वादल भक्त मेहमां दानदीये ते परोहणाने अर्थे नीपनुं ते  
ज्जक्त मूलनुज्जोजन सूरणादि कदन्नोयन फलनु भोजन दाफिमादि बीज भोजन हरितन्नोयन मधुरवृणादि एतला वानां निपेध्याद्धे इमज महाप



ठा० ॥

३२ ॥

वेति कान्तारभक्तादय आधाकर्मादिभेदाएव तत्र कान्तार मटवी तत्र भक्तं भोजनं यत् साध्याद्यर्थं त त्तथा एवं शेषाण्यपि नवरं ग्लानो रोगीपशान्तये य  
इदाति ग्लानेभ्योवा यद्दीयते तथा वर्द्धलिका मेघाडंबरं तत्रहि वृष्ट्याभिजाभ्रमणाजनो भिक्षुकलोको भवतीति गृहीत मर्थं विशेषतो भक्त दानाय निरु  
पयतीति प्राघूर्णका आगन्तुका भिक्षुकाएव तदर्थं यज्ञक्त तत्तथा प्राघूर्णकोवा गृही स यदापयति तदर्थं 'संस्तुत्य त त्तथा तथामूल पुनर्नवादीनां तस्य  
भोजन तदेववा भोजन भुज्यतइति भोजनमिति कृत्वा कदः सूरणादि' फल त्रपुण्यादि बीजं दाडिमादीना हरितं मधुरवृक्षादिविशेषः जीववधनिमित्त  
त्वा जैपा प्रतिषेधइति ॥ पचमहव्वइएइत्यादि ॥ प्रथमपश्चिमतीर्थकराणाहि पचमहाव्रतानि शेषाणा महाविदेहजानाच चत्वारौति पचमहाव्रतिक  
एव सहप्रतिक्रमणेनो भयसध्य मावश्यकेनय स तथा अन्येषान्तु कारणजातप्रतिक्रमणमिति उक्तांच सपडिक्कमणीधम्मो पुरिमस्सयपच्छिमस्सयजिणस्स

णेइवा हरियन्नोयणेइवा पफ़िसिद्धे एवामेव महापउमेविअरहासमणाण आहाकम्मियंवा जाव हरियन्नोय  
णंवा पफ़िसेहिस्सइ । सेजहानामए अज्जो मए समणाण पचमहव्वइए सपडिक्कमणे अचेलएधम्मे पस्सत्ते  
एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं निग्गथाण पचमहव्वइय जाव अचेलगधम्म पत्तवेहिति । सेजहा

यत्र पणि श्रमणने आधाकरमी यावत् हरितकायनोभोजन निषेधकरस्ये ते जिम दृष्टाते आर्यो मे श्रमणने पाचमहाव्रत पडिक्कमणासहित अचेलकध  
र्म कहस्यो इमज महापट्ट पणि श्रमणनिग्रथने पाचमहाव्रत यावत् यत्तेलकधर्मप्रते कहस्ये ते जिम दृष्टाते में पाच अणुव्रत सात शिद्धाव्रत वारेजेदे  
आवकनो धर्म प्ररूप्यो इमज महापट्टपणि ॥ पाच अणुव्रत यावत् आवकनो धर्म कहस्ये ॥ ते जिम नामे आर्यो मे श्रमणने सध्यातरपिड राजपिं

॥ टी

॥ म

॥ भ

मज्झिमगाणजिणाण कारणजाएपडिक्कमण ॥ १ ॥ तथा अविद्यमानानि जिनकल्पिकविशेषापेक्षया असत्त्वा देव स्थविरकल्पिकापेक्षयातु जीर्णमलिनख  
 ण्डितखेताल्पत्वादिना चेलानि वस्त्राणि यस्मिन् स तथा धर्मं चारिण नच सति चेले अचेलता न लोकेप्रतीता यत उक्तं जहजलमवगाहतो बहुचेलोवि  
 सिरवेष्ठिपकडिक्को भन्नइनरोअचेलो तहमुणओसतचेलोवि ॥ १ ॥ अतः परिमुदजुवकृतिय थोवानिययसभोगभोगेहि मुणसोमुच्छारहिया सतेहिअचे  
 लयाहोति ॥ २ ॥ अनियतै रन्यभोगेच सति भोग्यै रित्यर्थं नच वस्त्र ससक्तिरागादिनिमित्ततया चारित्रविघाताया ध्यात्मशुद्धे शरीराहारादिवदिति नहि  
 शरीरात् यूकादि संसक्तिर्भवति रागोवा नो त्यज्यते उक्तञ्च अहकुणसियुज्जवत्या इएस्समुच्छधुवसरौरेवि अक्केज्जदुलभतरे काहिसिमुच्छविसेसेणति ॥ १ ॥  
 अक्रयणीयेत्यर्थं अध्यात्मशुद्धाभावे चेलकत्वमपि न चारित्राय यथोक्त अपरिगृहाविपरम तिएसुमुच्छाकसायदोसेहिं अविणिग्गहियप्पाणो कम्ममलम  
 णतमेज्जति ॥ १ ॥ अथ जिनोटाहरणा टचेलकत्वमेव श्रेयइति न वक्तव्यमेतत् यतो ऽभ्यधायि नपरोवएसविसया नयच्छउमत्थापरोवणसंपि देतिनयसोस  
 वग दिक्खतिजहाजिणासव्वे ॥ १ ॥ तहसेसेहियसव्व कज्जजइतेहिसव्वसाहम्म एवचकओतित्य नचेटचेलत्तिकोमाहोति ॥ १ ॥ अपिच उचितचेलसद्भावे  
 चारित्रधर्मो भवत्येव तदुपकारित्वा च्छरीराहारादिवदिति अथ कथं चेलस्य चारित्रोपकारितेतिचे दुच्यते शीतादित्राणतो जीवससक्तिनिमित्तदणपरि  
 हारादिहेतुत्वा दुक्तञ्च तणगहणानलसेवा निवारणाधम्मसुक्कज्जाणक्का दिठ्ठकप्पगहण गिन्नाणमरणद्वयाचेवत्ति ॥ १ ॥ तथा ॥ सेज्जायरेति ॥ शेरते यस्यां

नामए णज्जो मए पचाणुवइए सत्त सिरकावइए दुवालसविहे सावगधस्से पस्सत्ते एवामेव महापउमेवि ण

ड प्रतिषेध्यो इमज महापट्टपणि श्रमणने शय्यातरपिठ राजपिंड निषेधस्ये ॥ तेजिम नामे आर्यो माहरे नवगच्छ इग्यारे गणधर इमज महापट्ट

॥

॥

साधनः सा शय्या तथा तरति भवसागरमिति शय्यातरो वसतिदाता तस्य पिंडो भक्तादि शय्यातरपिण्डः सच असनादि वंस्तादि सूच्यादिष्वेति तत्र हणे दोषा स्वमी तित्थकरपडिकुष्ठो अनायउगमोवियनमुज्जे अविमुत्तिअलाघवया दुत्तहसेजाविउच्छेउत्ति ॥ १ ॥ राज्ञ शक्रवर्त्तिवासुदेवादेः पिण्डो

॥ टीका

॥ सूत्र

रहा पचाणुवृद्धय जाव सावगधम्म पन्नविस्सति । सेजहानामए अज्जो मए समणाणं सिज्जायरपिण्डेइवा रायपिण्डेइवा पणिसिद्धे एवामेव महापउमेविअरहा समणाण सिज्जायरपिण्डेइवा रायपिण्डेइवा पणिसिंहंति । सेजहानामए अज्जो मए नवगणा इक्कारसगणहरा एवामेव महापउमस्सवि अरहत्तं नवगणा इक्कारसग णहरा नविस्सति । सेजहानामए अज्जो अह तीसंवासाइ अगारवासमज्जेवसित्ता मुंठेनवित्ता जाव पव्वइए दुवालससंवच्छराइं तेरसपस्का वउमत्थपरियाग पाउणित्ता तेरसहि पस्केहिं ऊणगाइ तीसंवासाइ केवल्लि परियागं पाउणित्ता वायालीसं सवच्छराइ सामन्तपरियाग पाउणित्ता वावत्तरिवासाइ सव्वाउयं पालइत्ता सिज्जिस्स जाव सव्वदुस्काणं अंत करेस्सं एवामेव महापउमेवि अरहा तीसंवासाइं अगारवासमज्जेवसित्ता

ने पणि अरिहतने नवगच्छ इग्यारेगणधर थास्ये ॥ तेजिम दृष्टाते आर्यो हु त्रीसवरस गृहस्थावासमा वसीने मुण्ययो यावत् दीक्षालीधी वारेवरस तेरेपखवाजा वट्ठस्थनो पर्याय पालीने तेरेपखवाजा उणा त्रीसवरस केवलीनो पर्याय पालीने वेतालीस वरसताई चारित्रनो पर्याय पालीने बहो त्रिवरसनु सर्वायु पालीने सीऊस्यु यावत् सर्वदुखनो अतकरस्यु इमज महापट्ठपणि परिहंत त्रीसवरसताईं घरेरही यावत् दीक्षालेस्ये वारेवरस

॥ भाषा

राजपिण्ड इदानीं मुभयोरपि जिनयोः समानतानिगमनार्थमाह ॥ जस्सीलगाहा ॥ यौ शीलसमाचारौ स्वभावानुष्ठाने यस्य स यच्छीलसमाचार स्ता  
वेव शीलसमाचारौ यस्य स तथेति महापद्मजिनोहि महावीरव दुत्तरफाल्गुनीनक्षत्रजन्मादिव्यतिकरइति नक्षत्रसववा नक्षत्रसूत्र कण्ठ नवर ॥ पच्छ  
भागति ॥ पश्चाद्भाग चन्द्रेण भागो येषां तानि पश्चाद्भागानि चन्द्रो विक्रम्य यानिभुक्ते पृष्ठं दत्वेत्यर्थः ॥ अभिर्इगाहा ॥ अस्सोइत्ति ॥ अश्विनी मतान्तर पु  
नरेव अस्सिणिभरणीसवणी अणुराहधणिठरेवइपूसो मिगसिरहत्थोचित्ता पच्छिमजोगामुण्येववत्ति ॥ १ ॥ नक्षत्रविमानव्यतिकरउत्तइति विमानविशेष

जाव पद्महिंति दुवालससंवच्छराइ चावत्तरिवासाइं सव्वाउय पालइत्ता सिज्जिहिंति । जाव सव्वादुस्काणमंतं  
काहिंति । जस्सीलसमायारो अरहातित्यकरोमहावीरो तस्सीलसमायारो होइउअरहामहापउमे ॥ १ ॥  
नवनरकत्ता चदस्स पच्छिमागा पस्सत्ता तजहा अज्जिईसमणधणिठा यरेवईअस्सिणीमिगसिरपूसो हत्थोचि  
त्तायतहा पच्छिमागानवन्नवत्ति ॥ १ ॥ अणयपाणयअरण्यच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नवजोयणसयाइ उहं

यावत् बहोत्तरिवरसताईं सर्व आउखुं पालीने सीमस्ये यावत् सर्वदुखनो अंतं करस्ये ॥ जे शील आचार अरिहत तीर्थकर श्रीमहावीरनो ते शी  
ल आचार होस्ये अरिहत महापट्टनो १ ॥ नव नक्षत्र पश्चिमजागे कहिआ ते कहैछे अजीचि १ । अवण २ । धनिष्ठा ३ । रेवती ४ । अश्विनी ५ । मृ  
गसिर ६ । पुष्य ७ । हस्त ८ । चित्रा ९ ॥ पश्चिमजागे नव चद्रमाथी ॥ १ ॥ आनत १ । प्राणत १० । आरण ११ । अच्युत १२ । सु ए देवलोके वि  
मान नवसे जोजन ऊचा ऊचपणे कहिआ ॥ विमलवाहन कुलगर नवसे धनुष ऊचा ऊचपणे थया ॥ ऋषजदेव अरिहत कौसलिक आ उत्सर्पिणी

अतिहरसूत्रं कण्ठां प्रनंतरं पिमानानां मुखं मुक्तमिति कालहरविशेषस्यो शलसूत्रं कुलकरसंबंधादपभक्तुलकरसूत्रं सप्तभीमनुष्यप्रत्यन्तरहीपजमनुष्यचो  
विशेषप्रमाणसूत्रं सुगमानि चेतानि नवर घनदत्तादयः सप्तमा प्रन्तरहीपा नवयोजनशतानी लुक्तमिति समधरणौतला दुपरिष्ठा नवयोजनशताभ्यतर  
चारिणो गृहविशेषस्य अतिहरमात्र ॥ सुक्तस्योत्थादि ॥ शुक्तस्य मन्त्रागृहस्य नववीथयः क्षेत्रभागा प्राग स्तिभि र्नक्षत्रे भवन्ति ता एगसजावीथी हयवी  
थी त्येव सर्वत्र सजाच व्यापारविशेषार्थं याचेत् एयवीथी सा न्यत्र नागवीथीति रूढा नागवीथीचे राजणपद मिलेतासांच लक्षणं भद्रवात्प्रसिद्धाभि  
रार्याभिः क्रमेण लिख्यते भरणोत्थात्याग्नेयं नागाख्यावीथिरुत्तरेमार्गे रोहिण्यादिभिर्भाख्या चाटिलाद्यासुरगजाख्या ॥ १ ॥ प्राग्नेय कृत्तिका प्रा  
दित्य पुनर्वसुरिति हयभाख्यापैशादिः अतणादिर्मध्यमेजरद्वाराख्याः शीष्टपटादिचतुष्के गौवीथि स्तासमध्यफलपैशा ॥ २ ॥ अथा मध्यमेऽतिमार्गं शीष्ट

उच्चत्तेण पणत्ता । विमलवाहणेणं कुलगरे नवधनुसयाइ उह्व उच्चत्तेण होत्या । उसन्नेणं चुरहा कोसलिणुं  
इमीसेउरसप्पिणीए नवहि सागरोवमकोफाकोफ्फाहि वीड्ढताहि तित्थेपव्वत्तिए । घणदतलठदंतगूढदंत  
सुद्धदंतदीवाणदीवा णव जोयणसयाइ आद्यामत्रिस्सज्जेण प० सुक्कस्सणंमहग्गहस्स नववीहीन पणत्तान

नं विषे नवकोफाकोफि सागरोपम व्यतिक्रमे तीर्थप्रवर्त्ताव्यो ॥ घनदंत लघुदंत गूढदंत शुद्धदंत प्रन्तरहीपना द्वीप नवसेयोजन लावा पितुला कहि  
प्रा ॥ शुक्त मोटाग्रहर्ने नव वीथिकली २ । नक्षत्रनीवीथि चारविशेषे अश्वनीवीथीने चारविशेषे शुक्राशुक्रफल ते कहेंत्वे अश्ववीथी १ । गजवीथी २ ।  
नागवीथी ३ । वृषजवीथी ४ । गौवीथी ५ । उरगवीथी ६ । यजवीथी ७ । मृगवीथी ८ । वैश्वानरवीथी ९ ॥ नवप्रकारे नोत्तपायमोहनी कर्म कल्पो ते

पटा पूर्वभद्रपटा अजवौथीहस्तादि स्नेहवौथी चंद्रदेवतादिस्थात् दक्षिण मार्गे वैष्णव नर्यावाढइयत्राह्वां ॥ ३ ॥ इन्द्रदेवता ज्येष्ठा ब्राह्मणमभिजिदिति एतासु  
 अगुर्विचरति नागगजैरावतीषुवौथीषु चेद्वह्वर्षे दर्ज न्यसुलभौपधयोरवृद्धिश्च ॥ ४ ॥ पशुसन्नासुचमध्यम सस्यफलादियेदाचरेद्भृगुज. अजमृगवैखानरवी धिष्व  
 र्यभयादिं तोलोकइति ॥ ५ ॥ वौथिविशेषचारेण शुक्रादयोमहाग्रहा मनुजादीना मनुग्रहोपघातकारिणो भवति द्रव्यादिसामग्र्या कर्मणा मुद्यादिसद्भावा  
 दिति सवधात् प्रसुताध्ययनावताकिर्मस्वरूपमाह ॥ नवविहेत्यादि ॥ इह नो शब्दः साहचर्यार्थ. कषायैः क्रोधादिभि. सहचरानो कषायाः केवलाना नैषा  
 प्राधान्यं किन्तु यै रनस्तानुबध्यादिभि सहो दग यास्ति तद्विपाक सट्टग्रमेव विपाक मादर्शयन्तीति बुधग्रहव दन्त्यससर्ग मनुवर्त्तन्ते एवंच नोकषायतया  
 वेद्यते य त्कर्मत त्रौकषायवेदनोपमिति तत्र य दुदयेन स्त्रियाः पुन्य निलाष पित्तोदयेन मधुराभिलाषव त्स्त्र फुंकान्निसमान. स्त्रीवेदो यदुदये पुंसः स्त्रिया

हयवीही गयवीही नागवीही वसजवीही गोवीही उरगवीही अयवीही मियवीही वेसाणवीही । नवविहे  
 नोकसायवेयणिजो कम्मे पस्सत्ते तजहा इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसगवेए हासे रइ अरई जए सोगे दुगळा । चउ  
 रिदियाण नव जाइकुलकोणिजोणिपमुहसयसहस्सा पस्सत्ता । जुयगपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणि  
 याण नवजाइकुलकोणिजोणिपमुहसयसहस्सा पस्सत्ता । जीवाण नवठाणनिवृत्तिए पोग्गले पांवकम्मत्ताए

कहेहे स्त्रीवेद १ । पुरुषवेद २ । नपुंसकवेद ३ । हास्य ४ । रती ५ । अरति ६ । जय ७ । सोक ८ । दुगळा ८ ॥ चोरिद्रीने नवजाति कुलकोडि यो  
 निप्रमुख लाख कहिआ ॥ जुजपरिसर्प थलचर पचेद्री तीर्थच योनियानी नवजातिकुलकोडि योनिप्रमुख लाख कहिआ ॥ जीवने नवथानकनिवर्त्ति

॥ ठा० ॥

॥ ५३५ ॥

मभिलाषः शोफोदया दस्त भिलाषः तदावाग्निज्वालासमान एवेत्यो यदुदये नपुंसकस्य स्त्रीपुंसयो रभयो रभिलाषः पित्तश्लेष्मणोरुदये मज्जिताभिलाषवत्  
समहानगरदाहाग्निममानो नपुंस त्वेदइति यदुदयेन सनिमित्त मनिमित्तवा हसति तत्कर्महास्य यदुदयेन सचित्ताचित्तेषु बाह्यद्रव्येषु जीवस्य रति रूप  
यते तद्रतिकर्म यदुदयेन तेष्वेवा रति रूपयने तद्रतिकर्म यदुदयेन भयवर्जितस्यापि जीवस्य हलोकादिसप्तप्रकारं भय मुत्पद्यते त इयकर्म यदुदयेन शोक  
रहितस्यापि जीवस्या कन्दनादि शोको जायते त च्छोककर्मति यदुदयेनच विष्टादिवीभक्तपदार्थेभ्यो जुगुप्सते त जुगुप्साकर्मति अनन्तरं कर्मोक्त तद्वशव  
र्त्तिनय नानाकुलकोटीभाजो भवतीति कुलकोटिसूत्रे तद्वताथ कर्मचिन्वतीति चयादिसूत्रषट्कं कर्मपुद्गलप्रस्तावात् पुद्गलसूत्राणि सुगमानि चैतानि नवर ॥  
नवजाइत्यादि ॥ चतुरिन्द्रियाणां जातौ यानि कुलकोटीनां योनि प्रमुखानां योनिद्वाराणां शतसहस्राणि तानि तथा भुजै र्गच्छन्तीति भुजगा गोधादय  
इति ॥ इति श्रीमदभयदेवाचार्यविरचिते स्थानाख्यतृतीयांगविवरणी नवस्थानकाख्य नवममध्ययनं समाप्तमिति ॥ श्लोका ७०७ ॥ ८ ॥

चिणिसुत्रा चिणतिवा चिणिस्संतिवा ३ ॥ पुढविकाइयनिवृत्तिए जाव पच्चिदियनिवृत्तिए एवं चिण उवचिण  
जाव निज्जराचेव । नवपणसिया खधा झणता पसत्ता । नवपदेसोगाढा पुग्गला झणता पसत्ता । नवगुण  
लुस्का पुग्गला झणता पसत्ता ॥ इइ नवमठाण सम्मत्त ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

त पुद्गल पापकर्मपणे चिण्या चिणेहे चिणस्ये पृथिवीकायनिवर्त्तित यावत् पचेद्रीनिर्वर्त्तित ॥ इम चिण्या उपचिण्या यावत् निर्जराव्या ॥ नवप्रदेजि  
यास्कध अनता कह्या यावत् नवगुणा लूखापुद्गल अनन्ता कह्या ॥ इति श्रीनयमु ठाणु द्द्वयार्थे सपूर्णं थयो ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥

अथ सख्याविशेषसंबन्धमेव दशस्थानकाध्ययन मारभ्यते अस्यच पूर्वेण सहाय मभिसंबन्धो ऽन्तराध्ययने जीवाजीवानवत्वेन निरूपिता इहतु तएव दशत्वे  
न निरूप्यन्तइत्येवसम्बन्धस्य चतुरनुयोगद्वारस्या स्येद मादिसूत्रं ॥ दसविहालोगेत्यादि ॥ अस्यच पूर्वसूत्रेण सहाय सवन्धः पूर्वं नवगुणरूपा पुद्गला अनन्ता  
इत्युक्तं तेचा संख्येयप्रदेशे लोके समान्तीति लोकस्थिति रत' सैवे होचत इत्येव सवन्धस्या स्य व्याख्या इहापि संहितादिचर्चः प्रथमाध्ययनव त्वेवलं लो  
कस्य पचास्तिकायात्मकस्य स्थिति स्वभावोलोकस्थितिर्यदि त्युद्देशे णमिति वाक्यालङ्कारे ॥ उदाइत्तत्ति ॥ अपद्राय मृत्वेत्यर्थ ॥ तत्थेवत्ति ॥ लोकदेशे ग  
तौ योनौ कुलेवा सातर निरन्तर वौचित्येन भूयो भूयः पुनःपुनः प्रत्याजायते प्रत्युत्पद्यन्त इत्येव मध्येकालोकस्थितिरिति अपिशब्द उत्तरवाक्यापेक्षया

दसविहा लोगठिई पस्यत्ता तंजहा जसं जीवा उद्धारइत्ता २ तत्येव २ जुज्जो २ पञ्चायंति एवं एगा लोगठि  
ई पस्यत्ता १ जसं जीवाणं सयासमिते पावेकम्मे कज्जति एवंएगा लोगठिई पस्यत्ता २ जसं जीवाणं सया  
समिय मोहिणिज्जो पावेकम्मे कज्जइ एवपेगालोगठिई पस्यत्ता ३ । णयएय नूयंवा न्हंवा नविस्सइवा ज  
जीवा ण्जीवा नविस्सति ण्जीवा जीवा नविस्संति एव पेगालोगठिई पस्यत्ता । नएयंनूयंवा ज तसा

दशप्रकारे लोकस्थिति कही तेकहैछे जेजीव उदवाई २ मरी २ तिहाज २ तिहां फरी २ ऊपजेछें इम एक लोकस्थिति कही १ । जेजीवने सदा सर्वदा  
पापकर्म करेछें इम एक लोकस्थिति कही २ । जेजीवने सदा सर्वदा मोहनी पापकर्म करेछे इम एक लोकस्थिति कही ३ । ए थयुनथी थातुनथी  
थास्येनही जेजीव अजीव थास्ये अजीव जीवथास्ये इम एक लोकस्थिति कही ४ । ए थयूनथी ३ । जे त्रसप्राण विच्छेदजास्ये थावरप्राणज हणस्ये



॥ ठा० ॥

॥ ५३६ ॥

अपिः कचि न दृश्यते अथ द्वितीया ॥ अक्षमित्यादि ॥ सदा प्रवाहतो ऽनाद्यपर्यवसितं कालं ॥ समियंति ॥ निरन्तरं पापं कर्म ज्ञानावरणादिकं सवमपि मोक्षविवक्षकत्वेन सर्वस्यापि पापत्वादिति क्रियते वध्यत इत्येव मध्येका ऽन्येत्यर्थः सतत कर्म बधनमिति द्वितीया ॥ मोहणिज्जिति ॥ मोहनीयं प्रधानं तथा भेदेन निर्दिष्टमिति सतत मोहनीयवन्धन तृतीया जीवाजीवानां मजीवजीवत्वाभाव सतुर्थी चसाना स्थावराणां च व्यवच्छेदः पंचमी लोकालोकयो रलोकलोकत्वेन भवन षष्ठी तयोरेवा न्योन्याप्रवेशः सप्तमी ॥ जावतावलोएतावतावजीवति ॥ याव ल्लोक स्थाव जीवा यावति जेने लोकव्यपदेश स्तावति जीवाइत्यर्थः ॥ जावजावजीवातावलोएति ॥ इह यावयाव जीवा स्तावताव ल्लोको यावतिर जेने जीवा स्तावतावत् जेने लोकइतिभावार्थः ॥ जावता

पाणा बुच्छिज्जिस्सति थावरापाणा जविस्संति थावरापाणा बुच्छिज्जिस्संति तसापाणा जविस्संति एवंपेगा लोगठिई पसत्ता ५ । नयएयंनूयं ३ ज लोए अलोगे जविस्सइ अलोए लोए जविस्सइ एवपेगालोगठिई पसत्ता ६ । नएयनूयवा ३ ज लोए अलोए पविस्सइ अलोएवा लोएपविस्सइ एवं पेगालोगठिई ७ । जावताव लोए तावताव जीवा जावजावजीवा ताव लोए एवपेगालोगठिई ८ । जावताव जीवाणय पुग्ग

थावरप्राण विच्छेदजास्ये अने त्रसप्राण हणस्ये इम पणि एक लोकस्थिति कही ५ । एहवू नथीययु ३ । जे लोकते अलोक थास्ये इम पणि एक लोकस्थिति कही ६ । एहवू थयूनथी ३ । जे लोक अलोकमा पेसस्ये अलोक लोकमा पेसे इम एक लोकस्थिति ७ । जिहां ताइ लोकछे तिहा ताई जीवछे जिहा लगे जीवछे तिहाताई लोकछे एम एक लोकस्थिति कही ८ । जिहाताई जीवनी पुद्गलनी गति गतिपर्यायछे तिहाताई लोक

वेत्यादि वाक्यरचनातु भाषामात्र मित्यटमी याव जीवादीनां गतिपर्याय स्ताव लोकादिति नवमी सर्वेषु लोकान्तेषु ॥ अवद्वपासपुष्टि ॥ वडा गाढसे  
 षाः पार्श्वसृष्टा वुममात्रा येन तथा ते अवद्वपार्श्वसृष्टा रूक्षा द्रव्यान्तरेणेति गम्यते तत्सम्पर्का दजातरूक्षपरिणामाः सतइतिभावः लोकान्तस्वभावान् पुद्ग  
 लान् रूक्षतया क्रियते रूक्षतया परिणमति अथवा लोकान्तस्वभावा व्यारूक्षता भवति तथा ते पुद्गला अवद्वपार्श्वसृष्टा. परस्पर मसवडाः क्रियते कि सर्व  
 था नैवमपि तु तेनेत्यस्य गम्यमानत्वात् तेन रूपेण क्रियते येन जीवा सकर्मपुद्गला पुद्गलाश्च परमाणा दयो ॥ नोसंचायतित्ति ॥ नशक्नुवन्ति वहिस्ता  
 लोकाता इमनतायै गन्तुमिति छान्दसत्वेन नुमर्थे युट्पत्यविधानादिति एव मध्य न्यालोकस्थिति दर्शनी शेष कण्ठ्यमिति लोकस्थितिरेव विशिष्टव  
 कृतिस्तथापि शब्द पुद्गलालोकान्तएवगच्छतीति प्रस्तावा च्छेत्तेदनाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ निर्हारौसिलोगो ॥ निर्हारौ घोषवान् शब्दोयं घण्टा

लाणय गडपरियाए ताव ताव लोए जावताव लोए ताव ताव जीवाणयपुग्गलाणय गडपरियाए एव पेगा  
 लोगठिई १ । सहेसुविणलोगतेसु अवद्वपासपुठा पुग्गला लुक्कत्ताए कज्जाति जेण जीवाय पुग्गलाय नोसं  
 चायति वहिया लांगतागमणताए एव पेगालोगठिई पस्सत्ता १० । दसविहे सहे पस्सत्ते तजहा नीहारि

हे जिहालगे लोकहे तिहाताई जीवनी पुद्गलनी गतिपर्यायहे इम एक लोकस्थितिकही ८ । सघलाई लोकातनेविषे अवद्वपार्श्वसृष्ट परस्परे परस्या  
 पुद्गल लूषापणु करस्ये जेणे जीव अने पुद्गल नथीसमर्थ थाता बाहिर लोकातने विषे जावाने इम एक लोकस्थिति कही १० ॥ दशप्रकारे शब्द  
 कह्या ते कहैहे नीहारिन घटाशब्द १ । पिठनोशब्द २ । ढक्कानेरीनो लूखोशब्द ३ । भिन्नशब्द ४ । ऊर्ध्वरितशब्द आलरिवीणादि ५ । दीर्घशब्द मे

गङ्गादिति पिण्डेन निर्वृत्तः पिण्डो घोषवर्जितः टाकादिशब्दवत् भिन्नः कुष्टाद्युपहतशब्दवत् भर्भरितो जर्जरितो वा सतं  
 चोक्तकरटिकादिवाद्यशब्दवत् दीर्घो दीर्घवर्णाश्रितो दूरशब्दो वा मेघादिशब्दवत् क्लृप्तो क्लृप्तवर्णाश्रितो विवक्षया लघुर्वा वीणादिशब्दवत् ॥ पुहन्तेवन्ति ॥  
 पृथक्तेनैकत्वे कोऽर्थो नानातूर्यादिद्रव्ययोगे यः खरो यमलशब्दादिशब्दवत् स पृथक्ता इति काकलीति सूक्ष्मकण्ठ्यगीतध्वनिः काकलीति यो रूढः ॥ खिखि  
 णीति ॥ किकिणी लुद्रघटिका तस्याः खरोध्वनिः किकिणीस्वरः अनन्तर शब्दोक्त सचेन्द्रियार्थ इति कालभेदेन न्द्रियार्थान् प्ररूपयन् सूत्रत्रयमाह  
 ॥ दस इदित्यादि ॥ कण्ठा न्नवरं ॥ देसेणविति ॥ विवक्षितशब्दसमूहापेक्षया देशेन देशतः काश्चिदित्यर्थः एकः कश्चित् श्रुतवानिति ॥ सव्वेणविति ॥

पिण्डमेलुस्के जित्तेजज्जरिएइय दीहेरहस्रोपुहन्तेय काकणीखिखणिरसरे ॥ १ ॥ दस इदित्या तीता पस्यता  
 तजहा देसेणवि एगे सद्दाइ सुणिसु सव्वेणवि एगे सद्दाइ सुणिंसु देसेणवि एगे रूवाइ पासिंसु सव्वे णवि  
 एगे रूवाइ पासिंसु एव गधाइं रसाइ फासाइ जाव सव्वेणवि एगे फासाइ पणिसंवेदिइसु । दस इदि  
 यत्या पणुप्पन्ना पस्यता तजहा देसेणवि एगे सद्दाइ सुणेति सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणेति एवं जाव फासाइं ।

घनो ६ । लघुस्वर जलूको ७ । पृथक्ताशब्द घणाएकठा ८ । मीणोशब्द स्वर कोकिलादिकनो ९ । घूघरीनोस्वर १० ॥ दश इद्रीना अर्थ विषय कस्या  
 तेकहैछे देशयकी एक शब्द साजले घणामार्थी सर्वथी एक शब्द प्रते सामले देशयकी एकरूपप्रते देखे सर्वथकी एकरूपप्रते देखे इम गध रस स्पर्श  
 यावत् सर्वथकी एक फरशप्रते सबेदतो हवो इहा सघले अतीतकाललेवो ॥ दश इद्रीयना अर्थ वर्तमान कहिया तेकहैछे देशयकी एक शब्दप्रति

सर्वतया सर्वानित्यर्थ इन्द्रियापेक्षयावा श्रोत्रेन्द्रियेण देशनः संभिन्नश्रोतोऽलक्ष्ययुक्तावस्थायां सर्वेन्द्रियैः सर्वतोऽथैव कवर्णेन देशत उभाभ्यां सर्वत एव सर्वव ॥ पङ्कयणति ॥ प्रत्युपना वर्तमाना इन्द्रियार्थाश्च पुद्गलधर्मा इति पुद्गलस्वरूपमाह ॥ दसहोत्यादि ॥ स्पष्टं नवर ॥ अच्छिणेति ॥ अच्छिन्नोऽप्ययम्भूतः शरीरे विवक्षितस्तन्मेवाऽसवद्वैव चलेत् स्थानांतर गच्छेत् ॥ आहारिज्जमाणेति ॥ आह्रियमाणः खाद्यमानः पुद्गल आहारेवाऽभ्यवह्रियमाणेति पुद्गल चलेत् परिणम्यमानः पुद्गल एवोदराग्निना खलरसभावेन परिणम्यमानेवा भोजने उच्छास्यमानः उच्छासवायुपुद्गल उच्छास्यमानेवा उच्छसिते क्रियमाणेऽप्येव निश्चम्यमानो निश्चम्यमानेवा वेद्यमानो निर्जीर्यमाणश्च कर्मपुद्गलोऽथवावेद्यमाने निर्जीर्यमाणेच कर्मणि वैक्रियमाणा वैक्रियशरीरतया परिणम्यमानो वैक्रियमाणेवा शरीरे परिचार्यमाणो मैथुनसञ्ज्ञाया विषयौक्रियमाणः शुक्रपुद्गलादि परिचार्यमाणेवा भुज्यमाने स्त्रीशरीरादौ शुक्रादिरेव

दस इन्द्रियतया षण्णागया पञ्चत्ता तंजहा देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्सइ सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्सइ एव जाव सव्वेणवि एगे फासाइ पफ़िसंवेदिस्सइ । दसहि ठाणेहि अच्छिन्नेपुग्गले चलेज्जा आहारिज्जमाणेवा चलेज्जा परिणामिज्जमाणेवा चलेज्जा उस्सस्सेज्जमाणेवा चलेज्जा परियाएज्जमाणेवा चलेज्जा निस

साजलस्ये सर्वथकी एकशप्पति साजलस्ये इम यावत् स्पर्श ॥ दश इन्द्रिणा अर्थ अनागत कथ्या ते कहैछे देशथी एकशप्पते सांभलस्ये सर्वथकी एकशप्पते साजलमे इम यावत् शरवथी एकफरसप्पते सवदसे ॥ दशथानके अच्छिन्न शरीरे तथा स्फुधथी सवद्वज चले ते कहैछे आहारतोखाईतो पुद्गलचले उदयेपरिणमावतो चले उस्वासलेता पुद्गल चले मैथुनसञ्ज्ञाये परिणमावता चले स्त्रीना शरीरमा वीर्यनापुद्गल निश्वासेलेता पुद्गलचले वे

यत्ताविष्टो भूतादाधिष्ठितो यत्ताविष्टेया सति पुरुषे यत्तावेष्टेया सति तच्छरीरलक्षणः पुद्गलो वातपरिगतो देहगतवायुपेरितो वातपरिगतेवा देहे स  
ति पात्रधातेन चोत्तिष्ठति इति पुद्गलाविकारादेव पुद्गलधर्मा निम्नियार्या नाश्रित्य यज्जवति तदाह ॥ दसहीत्यादि ॥ गतार्थं नवरं स्थानविभागीयं तत्रम  
नोज्ञान् शब्दादीन् मे अपहृतवा नित्येव भाषयत क्रोधात्पत्तिं या दित्येकमेव ममनोज्ञानुपहृतवा नृपनीतया निहचै कवचनबहुवचनयो न विशेष  
प्राप्तात्वादिति त्रितोय एव वर्तमाननिर्देशेनापि ह्य भविष्यतापि ह्यमित्येव पट् तथा मनोज्ञाना मपहारतः कालत्रयनिर्देशेन सप्तम एव ममनोज्ञा

सिज्जमाणेवा चलेज्जा वेदिज्जमाणेवाचलेज्जा निज्जारिज्जमाणेवा चलेज्जा विनोद्विज्जमाणेवा चलेज्जा जरका  
इठेवा चलेज्जा वातपरिगएवा चलेज्जा । दसहि ठाणेहिकोऊप्पत्ती सिया तजहा मणुन्नाइ मे सह जाव गं  
धाइ अवहरिसु ॥ १ ॥ अमणुन्नाइ मे सदाइ जाव उवहरिसु ॥ २ ॥ मणुन्नाइ मे सहफरिसरसरूवगधाइं  
अवहरइ ॥ ३ ॥ अमणुन्नाइ मे सहफरिसरसरूवगधाइ उवहरइ ॥ ४ ॥ मणुन्नाइ मे सहफरिसरसरूवगधाइं  
अवहरिसइ ॥ ५ ॥ अमणुन्नाइ मे सदाइ जाव उवहरिसइ ॥ ६ ॥ मणुन्नाइ मे सह जाव गधाइ अवहरिसु  
अवहरइ अवहरिसइ ॥ ७ ॥ अमणुन्नाइ मे सह जाव उवहरिसु उवहरइ उवहरिसइ ॥ ८ ॥ मणुन्नामणुन्नाइ

दत्ता पुद्गल चले निर्जराता पुद्गलचले वैक्रियशरीरपणे परिणमाता चले यत्ताधिष्ठितके तेहना शरीरमा पुद्गलचले वायुना परिगमवाथी चले ॥  
दशयानक क्रोधनी उत्पत्ति कही तेकहैछे मगोज्ञ मनोहर शृष्ट स्पर्श रूप तेप्रते ए अपहरतो हवो इम चितवे अमनोज्ञ माहरे शृष्ट स्पर्श रस रू

नामुपहारतो ऽष्टम मनोज्ञामनोज्ञाना मपहारोपहारतः कालत्रयनिर्देशेन नवम ॥ अहंचेत्यादि ॥ दशम ॥ मिच्छंति ॥ वैपरीत्यं विशेषेण प्रतिपन्नो विप्रतिपन्नाविति क्रीधोत्पत्तिः सयमिना नास्तोति सयमसूत्र सयमविपक्षश्चा सयम इत्यसयमसूत्र असयमविपक्षः सवरद्विति सवरसूत्रं सवरविपरीतो ऽसंवर इत्यसवरसूत्र सुगमानि चैतानि नवर मुपकरणसवरो ऽप्रतिनियताकल्पनीयवस्त्राद्यग्रहणरूपो ऽथवा विप्रकीर्णस्य वस्त्राद्युपकरणस्य सवरण मुप

मे सदाङ् जाव अ्वहरिसु अ्वहरइ अ्वहरिस्सइ ॥ ९ ॥ उवहरिंसुउवहरइ उवहरिस्सइ ॥ १० ॥ अ्वहंचणं अ्वारियउवज्जायाण सम्म बहामि ममचणं अ्वारियउवज्जाया मिच्छं विपक्खिवन्ता । दसविहे संजमे पस्सत्ते तंजहा पुढविकायसंजमे अ्व्हाउतंतउवाउवणस्सइवेइदियसंजमे तेइदियचउरिदियसजमे पचेंदियसंजमे अ्व्जीवकायसजमे । दसविहे अ्वसंजमे पस्सत्ते तजहा पुढविकाइयअ्वसजमे जाव अ्व्जीवकाइयअ्वसंजमे । दसविहे

प गधप्रते देतोहवो २ । मनोज्ञशष्ट फर्श रस रूप गध प्रते परिहरे छे ३ । अमनोज्ञ मुक्कने शष्ट फर्श यावत् गध प्रते दीये छे ४ । मनोज्ञ माहरा शष्ट अपहरतो हवो अपहरेछे अपहरसे ५ । अमनोज्ञ मुक्कप्रते शष्ट यावत् देतोहवो देछे देसे ८ । मनोज्ञ अमनोज्ञ मुक्कने शष्ट यावत् अपहस्या अपहरेछे अपहरसे देदेयेछे देसे ८ । हु आचार्य उपाध्यायने सम्यक् वत्तुं विनयकरुं पणि मुक्कने आचार्य उपाध्याय विपरीतपणे पक्खिवज्जाछे ॥ १० ॥ दशप्रकारे संयमकह्यु तेकहैछे पृथ्वीकाय सजम १ । अप २ । तेउ ३ । वाउ ४ । वनस्पती ५ । वेइदियसंजम ६ । तेद्रीसंयम ७ । चउरिदियसंजम ८ । पंचेद्रीसजम ८ । अजीवकायसजम १० ॥ दसप्रकारे असंयम कह्यो तेकहैछे पृथ्वीकाय असयम यावत् अजीवकायअसयम ॥ दशप्रकारे सवर

॥ पञ्चमः ॥

संवरे पणते तंजहा सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियरांवरे । मणवइकायउवगरणसंवरे सूर्इकुसग्गरांवरे । दस  
विहे अणसंवरे पणते तंजहा सोइंदियअणरांवरे जाव सूर्इकुरागणअणसंवरे । दसहिं ठाणेहि अणहमंतीति थंजेज्जा  
तंजहा जाइमएणवा कुलमएणवा जाव इरसरियमएणवा नागसुवन्नावा मे अंतिअं हल्लमागच्छंति पुरिस

कण्ठो ते सङ्गैः श्रीनेत्रीसंवर गायत् फरसनेंद्री संवर मन वचन काया उपकरण संवर सोडकुशाग्रनो संवर शरीर घातमाटे दशप्रकारे असंतर कण्ठो  
तेकहैः श्रीनेत्री असंवर १ । गायत् सूचीकुशाग्रनो असंवर १० ॥ दशथानके हूँ अथिक्तुं ह्रम मद करे ते कहैः जातिमदे करी कुलमदे करी गाय  
त् ऐव्यने मदेकरी ८ । नागदेवता सुवर्णदेवता सागरे पासे आवे पुरुषनो धर्म जे ज्ञान तेथकी मुक्तने उत्कृष्ट अवधिज्ञान दर्शन जपनुके ॥ द

ति तत्सूत्र मेतद्विपक्षो ऽसमाधिरिति तत्सूत्र समाधीतरयो रात्रयः प्रव्रज्येति तत्सूत्र प्रव्रज्यावतश्च अमणधर्मं स्तद्विशेषश्च वैयावृत्त्यमिति तत्सूत्रे जीवधर्मा  
 च तद्विति जीवपरिणामसूत्र मेतद्विलक्षणत्वाच्चा जीवपरिणामसूत्र सुगमानि चैतानि नवरं ॥ समाहित्ति ॥ समाधानं समाधिः समता सामान्यतो रा  
 गाद्यभावइत्यर्थः सचो पाधिभेदा दृश्येति ॥ कदागाहा ॥ कदत्ति ॥ कंदात् स्वकीया दधिप्रायविशेषा ज्ञोविन्दवाचकस्येव सुन्दरीनन्दस्येव वा परकीया  
 वा भ्रातृवशभवदत्तस्येव यासा ॥ कदरोसायत्ति ॥ रोषात् शिवभूतेरिव या सा रोषा ॥ परिजुणत्ति ॥ परिद्यूना दारिद्र्यात्काष्टाहारकस्येव या सा प

धम्मानुवा मे उत्तरिए अहोवहिए नाणदंसणे समुप्पन्ते । दसविहा समाही पसुत्ता तंजहा पाणाइवायवेर  
 मणे मुसाअदिन्नामेज्जणपरिग्गहवेरमणे ईरियासमिईए ज्ञासासमिईए एसणासमिए आयाणउच्चारपासवण  
 खेलसिघाणगपारिठावणियासमिए । दसविहा असमाही पसुत्ता पाणाइवाए जाव परिग्गहे रियाअसमिई  
 जाव उच्चारपासवणखेलसिघाणगपारिठावणियाअसमिई । दसविहा पव्वज्जा पसुत्ता तंजहा वंदारोसापरिजु

शप्रकारे समाधि कही तेकहैछे प्राणातिपातवेरमण १ । सृषा २ । अदत्तादान ३ । मैथुन ४ । परिग्रहविरमण ५ । ईर्यासमिति ६ । ज्ञासासमिति ७ ।  
 एसणासमिति ८ । आदाननिक्षेपणा समिति ९ । वल्लीनीति लघुनीति श्लेष्मा नाकनो मल ते परठववानी समिति १० ॥ दशप्रकारे असमाधि कही ते  
 कहैछे प्राणातिपात यावत् परिग्रह ईर्यासमिति १ । यावत् उच्चारपासवण खेलसिघाण परठववानी समिति एहवा १० ॥ दशप्रकारे प्रव्रज्या कही  
 तेकहैछे लाजे दीक्षा नवदत्त रोषथी शिवभूतिवत् दरिद्रथकी स्वप्नथकी पुष्पचूलावत् प्रतिज्ञाथीलेईस इमकल्याथी संज्ञास्याथी प्राकल्पोजव मल्ली



रिद्यूना ॥ सुविण्येति ॥ स्वप्नात् पुष्पचूलायाश्च या स्वप्नेवा या प्रतिपद्यते सा स्वप्ना ॥ पडिसुयाचेवत्ति ॥ प्रतिश्रुतात् प्रतिज्ञाता व्यासा प्रतिश्रुता शालिभ  
द्रभगिनीपतिधन्यकस्येव ॥ सारिण्यति ॥ सारणा व्या सा सारणिका मल्लिनाथस्मारितजन्मान्तराणा प्रतिवृद्धादिराजानामिव ॥ रोगिण्यति ॥ रोग  
आलवनतया विद्यते यस्या सा रोगिणी सैवरोगिणिका सनत्कुमारस्येव ॥ अणाडियत्ति ॥ अनादृता दनादरा व्या सा अनादृता नन्दिषेणस्येव अनादृत  
स्यवा शिथिलस्य या सा तथा ॥ देवसन्नइति ॥ देवसन्नमे देवप्रतिबोधना व्या सा तथा मेतार्यादेरिवेति ॥ वत्याणुबधीयत्ति गाथातिरिक्तं वत्स पुत्र स्तद  
नुबन्धो यस्या मस्ति सा वत्सानुबन्धिका वैरस्वामिमातुरिवेति अमणधर्मो व्याख्यातएव नवर ॥ वियाएत्ति ॥ त्यागो दानधर्मइति व्यावृत्तो व्यापृत्तोवा  
व्यापार स्तत्कर्म वैयावृत्तंवा भक्तपानादिभि रूपष्टम्भइत्यर्थः ॥ साहमियत्ति ॥ समानोधर्म सधर्मस्तेन चरतीति साधर्मिकाः साधवइति ॥ परिणामेत्यादि ॥

॥ टीका

न्नासुविणापडिस्सुयाचेव सारणियारोगिणिया अणाडियादेवसन्नत्ती ॥१॥ वच्छानुबन्धिया ॥ दसविहे समण  
धम्मे पस्सत्ते तंजहा खती मुत्ती अज्जवे महवे लाघवे सच्चे सजमे तवे वियाए बंजचेरवासे । दसविहे वेयावच्चे  
पस्सत्ते तजहा आयरियवेयावच्चे उवज्जायवेयावच्चे थेरवेयावच्चे तवस्सिवेयावच्चे गिलाणवेयावच्चे सेहवेयावच्चे

॥ मूल

नाथे जन्मातरसंज्ञास्याथी ६ । राजा दीक्षालीधी रोगथी सनत्कुमारवत् अनादरथी नन्दिषेणवसुदेवजीव देवताना प्रतिबोधथी मेतार्यवत् वत्सपुत्रा  
दिसबधथी वैरस्वामीनीमाता । दशप्रकारे साधून्तो धर्म कह्यो तेकहैछे क्षमा १ । निर्लोभता २ । आर्जव जद्रक ३ । मार्दव मानरहित ४ । लाघव हलकाई ५ ।  
सत्य ६ । सजम ७ । तप ८ । द्रव्यरहित ९ । ब्रह्मचर्य १० ॥ दशप्रकारे वेयावच कह्यो तेकहैछे आचार्यनु वेयावच १ । उपाध्यायनु वेयावच २ । थ

॥ भाषा

परिणमन परिणाम स्तत्तद्भावगमनमित्यर्थः यदाह परिणामो ह्यर्थान्तर गमनं न च सर्वथा व्यवस्थानं न च सर्वथा विनाशः परिणामस्तद्विदामिष्टः ॥ १ ॥ द्रव्यार्थनयस्येति सत्पर्ययेण नाशः प्रादुर्भावो ऽसत्ताच पर्ययतो द्रव्याणां परिणामः प्रोक्तः खलु पर्ययनयस्येति जीवस्य परिणाम इति विग्रहः सच प्रायोगिक स्तत्र गतिरेव परिणामो गतिपरिणाम एव सर्वत्र गतिश्चेह गतिनामकर्मोदया द्वारकादिव्यपदेशहेतु स्तत्परिणामश्च भवच्चयादिति सच नरकगत्यादि चतुर्विधो गतिपरिणामे च सत्ये वेन्द्रियपरिणामो भवति तमाह ॥ इन्द्रियपरिणामेति ॥ सच श्रोत्रादिभेदा त्वचधेति इन्द्रियपरिणतो चेष्टानिष्ठविषयसवधाद्रागद्वेषपरिणतिरिति तदनन्तर कषायपरिणाम उक्तः सच क्रोधादिभेदा चतुर्विधः कषायपरिणामेच सति लेख्यापरिणति नंतुलेख्यापरिणतो कषायपरिणति येनचौणकषायस्यापि शुक्ललेख्यापरिणति देशानपूर्वकोटी यावद्भवति यत उक्तः मुहुत्तवंतुजहसा उक्कोसाहोद्वेषकोडीश्रो नवहिवरिसेहिजणा णायत्वासुक्कलेसाएत्ति ॥ १ ॥ अतोलेख्यापरिणाम उक्तः सच कृष्णादिभेदात् षोढेति अथच योगपरिणामेसति भवति यस्मा त्रिरुद्धयोगस्य लेख्यापरिणामो पैति यत समुच्छिन्नक्रिय ध्यान मलेयस्य भवतीति लेख्यापरिणामानन्तर योगपरिणाम उक्तः सच मनोवाक्कायभेदा त्तिधेति ससारिणांच योगप

कुलवेयावच्चे गणवेयावच्चे सधवेयावच्चे साहस्रियवेयावच्चे । दसविहे जीवपरिणामे प० तंजहा गइपरिणामे इन्द्रियपरिणामे कसायपरिणामे लेस्सापरिणामे जोगपरिणामे उवनुगपरिणामे नाणपरिणामे दंसणपरिणामे

विरनु वेयावच ३ । तपस्वीनु वेयावच ४ । ग्लाननुं वेयावच ५ । शिष्यनुं वेयावच ६ । कुलनु वेयावच ७ । गच्छनुं वेयावच ८ । संघनुं वेयावच ९ । साधमीनु वेयावच १० ॥ दशप्रकारे जीवनो परिणाम कह्यो तेकहैछे जीवपरिणाम १ । गतिपरिणाम चाले २ । इन्द्रियपरिणाम ३ । लेख्या ४ । योग ५ । उप

० ॥

१ ॥

रिणतो उपयोगपरिणति भवतीति तदनन्तरं उपयोगपरिणाम उक्तः सच साकारानाकारभेदात् द्विधा सतिचो पयोगपरिणामे ज्ञानपरिणामो ऽत स्तदन  
 न्तर मसा युक्तः सचा भिनिर्वाधिकादिभेदा त्वत्तथा तथा मिथ्यादृष्टे ज्ञान मध्यज्ञानपरिणामो मत्वज्ञानश्रुताज्ञानविभगज्ञानलक्षण स्तिविधोपि विशेष  
 यत्तत्साधर्म्यात् ज्ञानपरिणामगत्तणेन गृहीतो द्रव्यष्टइति ज्ञानाज्ञानपरिणामेच सति सम्यक्तादिपरिणतिरिति ततो दर्शनपरिणामउक्तः सच त्रिधा स  
 म्यक्तामिथ्यात्वमिभेदात् सम्यक्तो सतिचारित्रमिति तत स्तत्परिणाम उक्तः सच सामायिकादिभेदा त्वत्तधेति स्त्यादिवेदपरिणामे चारित्रपरिणामो न  
 तत्परिणामे वेदपरिणति र्यस्माद्वेदकस्यापि यथाख्यातचारित्रपरिणति दृष्टेति चारित्रपरिणामानन्तरं वेदपरिणाम उक्तः सच स्त्यादिभेदात् त्रिधेति  
 ॥ अजोवेत्यादि ॥ अजोवाना पुद्गलानां परिणामो जीवपरिणामस्तन्बन्धन पुद्गलाना परस्परं सम्बन्धः संक्षेपइत्यर्थः सएव परिणामो बन्धनपरिणामएवं  
 सर्वत्र बन्धनपरिणामलक्षणं चैतत् समगुणद्वयाण्वधो नहोद्वसमलुक्खगायपिनहोद्व वेमागनिहलुक्ख त्तणेणवधोउत्तुधान ॥ १ ॥ एतदुक्तभवति ॥ समगुण  
 निग्धस्य समगुणस्त्रिभ्येन परमाण्वादिना वधो नभवति समगुणरूचस्यापि समगुणरूत्तेणेति यदा विषमामाता तदा भवति बन्धो विषममापानिरूपणा  
 र्थं मुच्यते निहस्सनिउेणदुयात्तियेण लुक्खस्सलुक्खेणदुयात्तियेण निहस्सलुक्खेणउवेइवंधो जत्तणवज्जोविसमोसमोयेत्ति ॥ १ ॥ गतिपरिणामो द्विविधः स्पृश  
 द्रतिपरिणाम इतरश तनाद्या येन प्रयत्नविशेषात् क्षेपप्रदेशान् स्पृशन् गच्छति द्वितीयस्तु येना स्पृशसैव तान् गच्छति नचाय न सभाव्यते गतिमद्रव्याणां

चरित्तपरिणामे वेदपरिणामे । दसविहे अजीवपरिणामे पणत्ते तजहा बंधणपरिणामे गइयपरिणामे ठाण

योग ६ । ज्ञान ७ । दर्शन ८ । चारित्र ९ । वेदपरिणाम १० ॥ दशप्रकारे अजीवपरिणाम कस्यो तेकहैछे बधनपरिणाम १ । गति २ । सस्थान ३ । जेद ४ ।

पयत्रभेदोपलब्धे स्तथा ह्यभ्रकषहर्म्यतलगतविमुक्ताश्मपातकालभेद उपलभ्यते अनवरतगतिप्रवृत्तानाञ्च देशान्तरप्राप्तिः कालभेदश्चेत्यतः सभाव्यते  
 अष्टशब्दति परिणामइति अथवा दीर्घं ऋस्वभेदात् द्विविधोयमिति सस्थानपरिणामः परिमण्डलवृत्तन्यस्त्रचतुरस्त्रायतभेदा त्यचविधो भेदपरिणामः पचधा  
 तत्रखडभेदः क्षिप्तमृत्पिण्डस्येव १ प्रतरभेदो ऽभ्रपटलस्येव २ अनुतटभेदो वशस्येव ३ चूर्णभेदः शूर्णन ४ उत्करिकाभेदः समुत्कीर्यमाणप्रस्थकस्येवेति वर्णपरि  
 णाम पंचधा गन्धपरिणामो द्विधा रसपरिणामः पचधा स्पर्श परिणामो ऽष्टधा न गुरुक मधोगमनस्वभावं न लघुक मूर्द्धगमनस्वभाव यत् द्रव्य तद्गुरुक  
 लघुकमत्यंतसूक्ष्म भाषा मनः कर्मद्रव्यादि तदेव परिणामः परिणामतद्वतो रभेदा दगुरुकलघुकपरिणाम एतद्ब्रह्मणेन तद्विपक्षोपि गृहीतो द्रष्टव्य स्तत्र गुरु  
 कञ्च विवक्षया लघुकञ्च विवक्षयैव यद्ब्रव्य तद्गुरुकलघुक मौढारिकादिस्थूलतरमित्यर्थः इदं मुक्तस्वरूप द्विविध वस्तु निश्चयनयमतेन व्यवहारतस्तु चतुर्धा  
 तत्र गुरुक मधोगमनस्वभाव वज्रादि लघुक मूर्द्धगमनस्वभाव धूमादि गुरुलघुक तिर्यग्गामि वायुज्योतिष्कविमानादि अगुरुलघुक आकाशादीनि आहच  
 भाष्यकारः निच्छयओसञ्चगुरु सञ्चलह्वानविज्जईदव्य वायरमिहगुरुलह्वय अगुरुलह्वसेसयदव्य ॥ १ ॥ गुरुयलह्वयउभय नोभयमितिवावहारियनयस्त  
 दव्य लेङ् १ दीवो २ वायू ३ वोम ४ जहासखति ॥ २ ॥ शब्दपरिणाम शुभाशुभभेदा द्विधेति अजीवपरिणामाधिकारात् पुद्गललक्षणाजीवपरिणाम मन्त  
 रिचलक्षणा जीवपरिणामोपाधिक मस्त्राध्यायिकव्यपदेश्य ॥ दसविहेत्यादिना ॥ सूत्रेणाह तत्र ॥ अतल्लिखएत्ति ॥ अतरिच आकाश तत्रभव मांतरिच

परिणामे जेदवन्नरसपरिणामे गंधएफासपरिणामे अगुरुयलङ्गयसहपरिणामे । दसविहे अंतलिखिए असज्जा

वर्ण ५ । गंध ६ । रस ७ । फरस ८ । अगुरुलघू ९ । शब्दपरिणाम १० ॥ दशप्रकारे आकाशनी असिज्जाई कही ते कहैछे उल्कापात १ । दिशिनादा

कं स्वाध्यागो वाचनादि पंचविधो यथा सभव यस्मि अस्ति तत् स्वाध्यायिकं तदभायो ऽस्वाध्यायिकं ततो ल्काकाशजा तस्याः पात उल्कापात स्तथा दि  
 गो दिगिगा दाहो दिग्दाह इदमुक्त भव त्येकतरदिग्विभागे महानगरप्रदोपनकमिव यद्योतो भूमा वप्रतिष्ठितो गगनतलवर्त्ती स दिग्दाह इति गर्जि  
 त जोमूतध्वनि र्वियु न्निर्घात. साधे निरभेगा गगने व्यन्तरकृतो महानर्जिध्वनिः ॥ जूयएत्ति ॥ सध्याप्रभा चन्द्रप्रभा च यत् युगपत् भवत स्तत्  
 ॥ जूयगोत्ति ॥ भणित सध्याप्रभाचन्द्रप्रभयो मिश्रत्वमितिभावः तत्र चन्द्रप्रभावृता सध्या अपगच्छन्ती न ज्ञायते शक्तपञ्चम तिपदादिषु दिनेषु संध्याच्छेदे  
 वा ज्ञायमाने कालेना गजान त्यत स्तोणि दिनानि प्रादोपिक कालं न गृह्णन्ति ततः कालितस्या स्वाध्यायः स्यादिति उल्कादीना चेदं स्वरूप दिसि  
 दाहोच्छ्रियम्नो उल्लसरेहापयासजुत्तावा सज्जाह्वयावरणो उज्जुअओमुक्तदिगितिगिति ॥ १ ॥ जक्खालित्ति ॥ यच्चादौत माकाशे भवति एतेषु स्वाध्या  
 य त्वर्था चन्द्रदेवताछलनाद्वराति धूमिका मिहिकाभेदो वर्णतो धूमिका धून्नाकारा धूमेत्यर्थ. मिहिका प्रतीता एतच्च द्यमपि कार्तिकादिषु गर्भमासे  
 षु भवति तच्च पतनानन्तरमेव सूच्यात्वा स्तर्वमपकायभावित करोतीति ॥ रयउग्घाएत्ति ॥ विनसापरिणामतः समता द्रेणपतन रजउघातो भण्यते अस्वा  
 ध्यायाधितारा देवेदमाह ॥ दसविहेप्रोरानिएद्वत्यादि ॥ औदारिकस्य मनुष्यतिर्यग्गुरौरस्ये दमौदारिक मस्वाध्यायिकं तत्रा स्थिमासगोणितानि प्रतीता

इए पणत्ते तंजहा उक्कावाए दिसिदाहे गज्जिए विज्जुए निग्घाए जूयए जक्खालित्तए धूमिए महिया रज्जुग्घा  
 ए । दसविहे उरालिए असज्जाइए पणत्ते तजहा अठि मसे सोणिए असुइसामतं मसाणसामत चंदोवराए

ह २ । गाज ३ । वीज ४ । निर्घात ५ । सध्याकाल ६ । यत्कालित आकाशदेवता आकाशे ७ । धून्नाकोदीसे ८ । धून्नादि ९ । रजोवृष्टि याते १० ॥ दशम

नि तत्रच पचेन्द्रियतिरिक्त्वा मस्त्राध्यायिकं द्रव्यतो ऽस्थिमांसशोणितानि यथाग्तरे चर्माप्यधीयते यदाह सोणियमसंचर्मं अक्षीवियहीति चत्तारिति ॥  
 चेत्रतः षटि हस्ताभ्यन्तरे कालतः सभ्रवकालाद्यावत् तृतीयापौरुषी मार्जारादिभिर्मूषकाटिष्यापादने अहोरात्रचेति भावतः सूत्र नन्द्यादिक ना ध्येतव्य  
 मिति मनुष्यसबध्यमेवमेव नवरं चेत्रतो हस्तशतमध्ये कालतो ऽहोरात्र यावत् आर्त्तव दिनत्रयं स्त्रीजन्मनि दिनाष्टकं पुरुषजन्मनि दिनसप्तकं मस्थीनि तु  
 जीवविमोक्षदिना दारभ्य हस्तशताभ्यन्तरस्थितानि द्वादशवर्षाणि यावद्स्वाध्यायिकं भवति चिताग्निना दग्धा न्युदकवाहेन वा व्यूढा न्यस्वाध्यायिकं न भ  
 वति भूमिनिखाता न्यस्वाध्यायिकमिति तथा अशुची न्यमेध्यानि मूत्रपुरीषादीनि तेषां सामन्तं समीप अशुचिसामन्तं मस्त्राध्यायिकं भवति उक्तञ्च काल  
 ग्रहणमाश्रित्य सोणियमुत्तपुरीसे घाणालीयपरिहरज्जति ॥ स्मशानं सामन्तं शवस्थानं समीपं चन्द्रस्य चन्द्रविमानस्यो परागो राहुविमानतेजसोपरं  
 जन चन्द्रोपरागो ग्रहणमित्यर्थः एव सूर्योपरागोऽपि इह चेदं ज्ञातमानं यदि चन्द्रः सूर्योवा ग्रहणे सति स ग्रहो ऽन्यथावा निमज्जति तदा ग्रहणकालं तद्रा  
 भिशेष तदहोरात्रशेषञ्च ततः परं महोरात्रञ्च वर्जयन्ति आह च चदिमसूखरागे निग्घाएगुजिएअहोरत्तंति ॥ आचरितन्तु यदि तत्रैव रात्रौ दिनेवा  
 मुक्तं स्तदा चन्द्रग्रहणे तस्याएव रात्रेः शेषं परिहरन्ति सूर्यग्रहणे तु तद्दिनशेषं परिहृत्या नन्तरं रात्रिमपि परिहरन्तीति आह च आइर्नदिणमुक्को सोधि  
 यदिवसोवरादेवति ॥ चन्द्रसूर्योपरागयो औदारिकत्वं तद्विमानपृथिवीकायिकापेक्षया वसेय मातरि चकत्वतु सदापि न विवक्षित मातरि चकत्वेनोक्तं

सूर्योपरागं पुरुषे रायवुग्गहे उवस्सयस्सत्ततो नुरालिए सरारे पचिंदियाणं जीवाणं अस्समारज्जमाणस्स दस

कारे औदारिकशरीरनी असिज्जाई कही तेसहैछे हाऊ १ । मास २ । लोही ३ । मलमूत्रनो समीप स्मशाननो समीप चंद्रग्रहण सूर्यनु ग्रहण राजा

आकस्मिकेभ्य उल्कादिभ्य शम्भ्रादिविमानानां शाश्वतत्वेन विलक्षणत्वादिति ॥ पण्डणेति ॥ पतनं मरणं राजामत्यसेनापतिग्रामभोगिकादीनां तत्र यदा दण्डिकः कालगतो भवति राजावा न्यो याव न भवति तदा सभये निर्भयेवा स्वाध्यायं वर्जयन्ति निर्भयश्रवणानन्तरं मय्य होरात्र वर्जयन्तीति ग्राममहत्तरधिकारनियुक्ते बहुस्रजनेवा श्रयातरेवा पुनष्पांतरेवा सप्तगृहाभ्यंतरे मृते अहोरात्र स्वाध्यायं वर्जयन्तीति शनैर्वापठन्ति निर्दुःखाएवइति गर्हा लोको माकाशीदिति आह च मयहरणगएवहप क्लिष्टवसत्तवरअंतरमयमि निर्दुक्त्वत्तियगरहा नपठान्तसणीयगवाविति ॥ १ ॥ तथा ॥ रायवुगहेति ॥ राज्ञा संग्राम उपलक्षणत्वात्सेनापतिग्रामभोगिकमहत्तरपुरुषस्त्रीमज्जयुष्टान्यस्वाध्यायिकं एव पांशुपिष्टादिभण्डनान्यपि यत एते प्रायो व्यन्तरबहुला स्तेषु प्रमत्तदेवता क्लृप्तये त्रिदुःखा एत इत्युद्धाहोषा ऽप्रीतिकवाभवे दित्यतो य हिग्रहादिक य क्षिरकाल यस्मिन् क्षेत्रे भवति तत्र विग्रहादिके ताव क्कालं तत्र क्षेत्रे स्वाध्याय परिहरन्तीति उक्तञ्च सेनाहिवभोइयमय हरेयपुसिच्छिमज्जयेय लोष्टाइभण्डणेवा गुज्जमागउद्धाहप्रवियत्तति ॥ १ ॥ तथा पाश्वयस्य वसते रन्त मध्ये वत्तमान मीदारिक मन्थादिसत्क शरीरक य द्वाजिनं भवति तदा हस्तशताभ्यन्तरे स्वाध्यायिक भवति अथा नुज्ञिष्य तथापि कुत्सितत्वा द्वा चरित्वाच्च हस्तगत वर्ज्यते परिष्ठापितेतु तत्र तत्स्थान शुद्ध भवतीति पञ्चेन्द्रियशरीर मस्वाध्यायिक मित्यनन्तर सुक्तमिति पञ्चेन्द्रियाधिकारा तदा श्रितसयमासयमसूत्रे गतार्थं सयमाधिकारा तद्विषयभूतानि सूक्ष्माणि प्ररूपयन्नाह ॥ दससुहुमेत्यादि ॥ प्राणसूक्ष्ममनुद्धरिकुशुः पनकसूक्ष्मसुक्ष्मी यावत्क

विहे संजमे कज्जइ तजहा सोयामयानुगुस्कानु अणवरोवित्ता नवइ सोयामएणं दुरकेण असंजोइत्ता नवइ

दिमरणे राजानो संग्राम उपाश्रयमाप्ति औदारिकशरीर जीवरहित ॥ पचेद्रीजीवनो समारंज नकरे ते दशप्रकारे सयम करे तेकहैछे काननासुखयी

॥ रणा दिदं द्रष्टव्यं वीजसूक्ष्म व्रीक्षादीनां नखिका हरितसूक्ष्म भूमिसमवर्षाट्ण पुष्पसूक्ष्म वटादिपुष्पाणि श्रृङ्गसूक्ष्म कीटिकायडका निलयनसूक्ष्म कीटिका नगरादि स्नेहसूक्ष्म अवश्यायादी त्यष्टस्थानकभणित मेवेद मपर गणितसूक्ष्म गणितंकीटिकासङ्कलनादि तदेवसूक्ष्म सूक्ष्मबुद्धिगम्यत्वात् श्रूयतेच वज्रांत गणितमिति भगसूक्ष्म भङ्गा भङ्गका वस्तुविकल्पा स्तेचद्विधा स्थानभङ्गकाः क्रमभङ्गकाश्च तत्रा द्या यथा द्रव्यतो नामैका हिसा न भावतः १ अन्याभावतो न द्रव्यतश्च अन्यानभावतो नापि द्रव्यतइति ४ इतरेतु द्रव्यतो हिसाभावतश्च १ द्रव्यतो ऽन्यानभावतः २ न द्रव्यतो न्याभावतः १ अन्या न द्रव्यतो न भावतइति तल्लक्षण सूक्ष्म भङ्गसूक्ष्म सूक्ष्मता चास्य भजनौयपदबहुत्वे गहनभावेन सूक्ष्मबुद्धिगम्यत्वादिति पूर्वगणितसूक्ष्ममुक्तमिति तद्विषयविशेषभूतं प्रकृता ध्ययनावतारितया ॥ जंबूद्वीवेत्यादि ॥ गङ्गासूत्रादिक कुडलसूत्रावसाने चेत्रप्रकरणमाह कण्ठ्य चेद नवर गगां समुपयाति दशानामाद्याः पच इतरा. सि

एवं जाव फासामएणं दुस्केणं असंजोएत्ता जवइ । एवं असंजमोवि ज्ञाणियव्वो दससुज्जमा पससत्ता तंजहा पाणसुज्जमे पणगसुज्जमे जाव सिणेहसुज्जमे गणियसुज्जमे जगसुज्जमे । जंबूमंदरदाहिणेणं गगासिंधूने महा णईने दसमहाणईने समप्पिति तजहा जउणा सरऊ आदी कोसी मही सयदू विवच्छा विजासा एरावई

अलगो नकरे श्रोत्रेद्रीना दुखथी जोळें नही इम यावत् फरसनेद्रीना दुखथी जोडे नही ॥ इम असंयम पणि जाणवो ॥ दश सूक्ष्म कह्या तेकहैछे प्राण सूक्ष्म १ । पनकसूक्ष्म २ । यावत् स्नेहसूक्ष्म ३ । गणितसूक्ष्म वज्रातलगे गणितछे जंगसूक्ष्म जंगजालसूक्ष्मछे ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी दक्षिणे गगासिंधु मो टी-नदी प्रते दश मोटीनदी भलेछे तेकहैछे जतु १ । सरजू २ । आदी ३ । कोशी ४ । मही ५ । सतदू ६ । वितस्ता ७ । विवासा ८ । ऐरावती ९ ।



शुभिति एवं रक्तासूत्रमपि नवरं यावत्करणात् ॥ इंदुसैनांवारिसैनेति ॥ द्रष्टव्यमिति ॥ रायहाणीति ॥ राजा धीयते विधीयते ऽभिषिच्यते यासु ता राजधान्यो जनपदानां मध्ये प्रधाननगर्यः ॥ चंपागाहा ॥ चपानगरी अंगजनपदेषु मथुरा सूरसेनदेशे वाराणसी काश्यां श्रावस्ती कुणालायां साकेत मयो ध्येत्यर्थः कोशलेषु जनपदेषु ॥ हस्तिनपुरंति ॥ नागपुरं कुरुजनपदे काम्बिल्य पंचालेषु मिथिला विदेहेषु कोशांबी वत्सेषु राजगृहं मगधेष्विति एतासु किल साधव उत्सर्गतो न प्रविशन्ति तरुणरमणीयपगयरमगयादिदर्शनेन मनःतोभादिसम्भवा ग्मासस्यात हिंस्तिर्वा प्रविशतां त्वाज्ञादयो दोषा इति एताश्च दश दशस्थानकानुसारेणा भिहिता न नदृशैवैता अर्षण्डविशता वार्यजनपदेषु षड्विंशते नगरीणा मुक्तत्वादिति अथ न्यायो ऽत्रयथेतेषु प्रायश्चित्तादिविचारेषु प्रसिद्धएवेति व्याख्यातश्च दशराजधानीग्रहणे शेषाणामपि ग्रहणं निशीथभाष्ये यदाह दसरायहाणिग्रहणा सेसाणंसूयणाकया

चंद्रजागा । जंबूमंदरउत्तरेणं रत्नारत्तवईउ महाणईउ दसमहाणईउ समप्पेति तजहा किरहा महाकिरहा नीला महानीला तारा महातारा इंदो जाव महाजागा । जंबूद्वीवेदीवे जरहेवासे दस रायहाणीउ पम्पत्तानु तंजहा चपामञ्जरावाणा रसीयसावत्यितहयसाएयं हस्तिनपुरकपिल महिलाकोसंविरायगिह ॥ १ ॥ एयासुण दससु

चंद्रजागा १० ॥ जंबूद्वीपे मेरुथी उत्तरे रक्ता रक्तवती मोटीनदीप्रतें दश मोटीनदी जलेछे ते कहैछे कृष्णा १ । महाकृष्णा २ । नीला ३ । महानी ला ४ । नीरा ५ । महानीरा ६ । इन्द्रा ७ । यावत् जोगा १० ॥ जंबूद्वीपे जरतक्षेत्रे दश राजधानी कह्यो ते कहैछे चपा १ । मथुरा २ । वाराणसी ३ । सावत्यी ४ । तिम साकेता ५ । हस्तिनागपुर ६ । कपिलपुर ७ । मिथिला ८ । कोशांबी ९ । राजगृह १० ॥ ए दश राजधानीने विषे दश राजा सुं

होइ मासस्संतोदुगतिग ताओअइतस्मिआणाई ॥ १ ॥ दीषाखेह तरुणावेसित्थिविवा हरायमाइंसुहोइसइकरणं आउज्जगीयसइ इत्थीसइयसवियारेत्ति ॥  
 एतास्विति अनन्तरोदितासु दश स्वार्यनगरीषु मध्ये ऽन्यतरासु कासुचि दशराजान् अक्रवर्त्तिनं प्रव्रजिता इत्येव दशस्थानके ऽवतार स्तेषा कृतः द्वौच  
 सुभूमव्रज्जदत्ताभिधानौ न प्रव्रजितौ नरकंच गताविति तत्र भरतसगरौ प्रथमद्वितीयौ चक्रवर्त्तिराजौ साकेते नगरे विनीता योध्यापर्याये जातौ प्रव्रजि  
 तौच मघवान् आवस्थ्या सनत्कुमारादयश्चत्वारो हस्तिनागपुरे महापद्मो वाराणस्या हरिषेणं कापिल्ये जयनामा राजगृहइति नचैतासु नगरीषु  
 क्रमेणै ते राजानो व्याख्येया ग्रन्थविरोधा दुक्तच जन्मणविणीअउज्जा सावत्थीपंचहत्थिणपुरमि वाणारसिकंपिल्ले रायगिहेचेवकपिल्लेत्ति ॥ १ ॥ अप्रव्र  
 जितचक्रवर्त्तिनौतु हस्तिनागपुरकांपिल्ययो रुत्पन्नाविति येचयन्नो त्यन्ना स्तेतचैव प्रव्रजिताइति इदं मावश्यकप्रायेण व्याख्यात निशीथभाष्याभिप्रायेण  
 तुदय स्तेतासु नगरीषु द्वादशचक्रिणो जाता स्तत्र नव स्वेकैकं एकस्यातुचयइति आहच चपामहुवावाणा रसीयसावत्थिमेवसाकेयं हत्थिणपुरकपिल्लं  
 मिहिलाकोसविरायगिह ॥ १ ॥ संतीकुथूयअरो तिसिखिविजिणचक्किएक्कण्हिजाया तेणदसहोतिजत्यव केसवजायाजणाइन्नत्ति ॥ २ ॥ मदरो मेरुः ॥ उव्वे

रायहाणीसु दस रायाणो मुंझानवित्ता जाव पव्वइया तंजहा जरहे सगरे मघवंसणंकुमारे संती कुंथू अरे  
 महापउमे हरिसेणे जयनामे । जबूद्धीवेदीवे मंदरेपव्वए दसजोयणसयाइ उव्वेहेणं धरणीतले दसजोयणसहस्साइं

अथई यावत् प्रव्रज्या दीक्षा लीधी ते कहैछे जरत १ । सगर २ । मघवा ३ ॥ सनत्कुमार ४ ॥ शातिनाथ ५ ॥ कुथुनाथ ६ ॥ अर ७ ॥ महापद्म ८ ॥  
 हरिषेण ९ ॥ जयनाम १० ॥ जबूद्धीपे मेरुपर्वत दशसेयोजन ऊँओ धरतीनेविषे दशहजारयोजन पिहुलो उपरे दश दश गुणा योजन हजार एत

हेणांति ॥ भूमा ववगाहती विष्कभेन पृथुत्येन उपरि पण्डकवनप्रदेशे दशशतानि सहस्रमित्यर्थः दशदशकानि शतमित्यर्थः केषां योजनसहस्राणां लक्ष  
मित्यर्थः दृष्टयोच भणिति दर्शस्थानकानुरोधात् सर्वांगेण सर्वपरिमाणतइति ॥ उपरिमहेष्ठिल्लेसुत्ति ॥ उपरितनाधस्तनयोः सुल्लकप्रतरयोः सर्वपामध्ये त  
यो रेव लघुत्वात्तयो २४ कपरिच प्रदेशोत्तरवृद्धा वर्धमानतरत्वात्लोकस्येति ॥ अट्टपएसिएत्ति ॥ अट्टी प्रदेशा यस्मि त्रित्यष्टप्रदेशिक स्वाधिकप्रत्ययविधा  
नादिति तत्र चोपरितने प्रतरे चत्वार प्रदेशा गोस्तनव दितरत्वापिच त्वार स्तथैवेति ॥ इमाओत्ति ॥ वक्ष्यमाणा ॥ दसत्ति ॥ चतस्रो द्विप्रदेशादयो द्युत्त  
राः शकटो दिस स्थाना महादिश स्यतस्त्वण्वै कप्रदेशादयो ऽनुत्तरा मुक्तावलोकत्वाः प्रदेशा विदिश स्तथा द्वे चतुः प्रदेशादिके अनुत्तरे ऊर्ध्वोदिशावि  
ति ॥ पवहतित्ति ॥ प्रवहति प्रभवन्तीत्यर्थः ॥ इटागाहा ॥ इन्द्रो देवता यस्याः सा ऐंद्रौ एव माग्नेयी याम्येत्यादि विमला वितिमिरत्वा दूर्ध्वदिशो नामधेय

विस्कन्नेण उवरिं दसजोयणसयाइ विस्कन्नेण दसदसाइ जोयणसहरसाइ सव्वग्गेणं पससत्ता । जवूहीवेदीवे  
मदरस्स पव्वयस्स वज्जमज्जदेसत्ताए इमीसे रयणप्पत्ताए पुठवीए उवरिमहेठिल्लेसु खुम्भगपयरेसु एत्थण च्छ  
ठपएसिए रुयगे प० जनुणं इमानं दसदिसानं पवहति तं० पुरच्छिमा पुरच्छिमदाहिणा दाहिणा दाहिणाप  
च्चत्थिमा पच्चत्थिमा पच्चत्थिमुत्तरा उत्तरा उत्तरपुरच्छिमा उट्ठा च्छहो । एएसिणं दस नामधिज्जा प० त० इदा

ले लाख सर्वांगे ऊचो कह्यो ॥ जवूहीपे मेरुपर्वते बहुमध्यदेशजागे आ रत्नप्रज्ञा पृथ्वीने विषे उपरि हेठले नाहना प्रतरनेविषे इहा आठ प्रदेश  
नो रुचक कह्यो तंकहैले जिहाथी आ दशदिशा नीकलीले तंकहैले पूर्व १ ॥ पूर्वदक्षिणे अगनि २ ॥ दक्षिण ३ ॥ दक्षिणपश्चिमे नैऋति ४ ॥ पश्चि

तमा अधकारयुक्त्वेन रात्रितु चत्वा दधोदिग्येति ॥ लवणेत्यादि ॥ गवां तीर्थं तडागादा ववतारमार्गो गोतीर्थं ततो गोतीर्थमिव गोतीर्थं मवतारवती  
भूमि स्तद्विरहित सममित्यर्थ एतच्च पचनवतियोजनसहस्राण्य वामभागत परभागतश्च गोतीर्थरूपां भूमि विहाय मध्ये भवतीति उदकमाला उदकशिखा  
वैलेत्यर्थ दशयोजनसहस्राणि विष्कम्भत उच्चैस्त्वेनतु षोडशसहस्राणीति समुद्रमध्यभागा देवोत्थितेति ॥ सर्व्वेवौत्यादि ॥ सर्व्वेपोति पूर्वादिदिक्षुतद्भावा चत्वार  
वोपि महापाताला पातालकलशा बलयामुखकेगूरूपकेखरनामान चतु स्थानकाभिहिता. क्षुल्लकपातालकलशव्यवच्छेदाद्यैर्महाग्रहण दशदशकानि शतं

अग्नीइजमा णेरड्वारुणीयवायव्या सोमाईसाणानं विमलायतमायवोधव्या । १ । लवणस्सण समुद्रस्स दस  
जोयणसहस्साइ गोतित्यविरहिणु खित्ते पस्सत्ते लवणस्सण समुद्रस्स दस जोयणसहस्साइ उदगमाले पस्सत्ते  
सव्वेविण महापायाला दसदसाइ जोयणसहस्साइ उच्चैहेण पन्नत्ता । मूले दसजोयणसहस्साइ विरक्कजेणं  
पस्सत्ता । बज्जमज्जदेसत्ताए एगपएसियाए सेठ्ठीए दसदिसाइ जोयणसहस्साइ विरक्कजेण पस्सत्ता उवरिमुहमूले

म ५ ॥ पश्चिमउत्तरे वायु ६ ॥ उत्तर ७ ॥ उत्तरपूर्वे ईशान ८ ॥ ऊर्ध्व ९ ॥ अधो १० ॥ ए दशदिशना दशनाम कह्या ते कहैछे इंद्रा १ ॥ अगनि २ ॥  
यमा ३ ॥ नैऋति ४ ॥ वारुणी ५ ॥ वायव्या ६ ॥ सोमा ७ ॥ ईशान ८ ॥ विमला ९ ॥ तमा १० ॥ जाणवी ११ ॥ लवणसमुद्रने दशहज्जार योजन गो  
तीर्थं विरहित क्षेत्र कह्यो सरखो ऊर्ध्वो तेकहैछे लवणसमुद्रने दशहजार योजन दगमाला कह्यो ॥ सघला इमही पातालकलस दशदशगुणा योजन  
हज्जार ऊर्ध्वणे कह्यो मूले दशहज्जार योजन पिहलपणे कह्यो बहुमध्यदेशभागे एकप्रदेशनी श्रेणिथी एक २ प्रदेश वधतो पोहलपणे दशदशगुणा

योजनसहस्राणा लक्षमित्यर्थः उद्देशेना गाधेनेत्यर्थः मूले बुधे दशसहस्राणि मध्ये लक्षं कथं मूलविष्कम्भा दुभयत एकैकप्रदेशादृशा विस्तरं गच्छतां वा एक  
प्रदेशिका श्रेणी भवतितया अनेन प्रदेशवृद्धि रूपदर्शिता प्रथया एकाप्रदेशिकायां श्रेण्या मूलतमध्ये ततोऽध उपरि च प्रदेशोन लक्षमित्यर्थः तथा ॥ उवरि ॥  
तिसुतश्रवति अत आह सुखप्रदेशे ॥ कुण्डति ॥ कुण्डानि भित्तयइत्यर्थः सर्वाणि च तानि यजमानानि चेति यावत् सर्वेष्वपि सप्तसहस्रा गवष्टयतानि चत  
रगोत्वानि तानो लोचसख्याः क्षुण्णका मत्तदपेक्षया उद्देशेन मध्यविष्कम्भेण च सप्तस्र मूले मुखे च विष्कम्भेण अत कुण्डावाहत्वेन च दश ॥ धावईत्यादि ॥ मद्दर

दसजोयणसहस्राड विस्कन्नेणं प० तैसिणं महापायालाण कुम्भा सव्वययरामया सव्वत्यसमा दसजोयणसयाइं  
वाहत्तेण प० सव्वेविण खुम्भा पायाला दसजोयणसयाइ उव्वहेण प० मूलेदराइसाइ जोयणाइ विस्कन्नेणं प०  
वज्जमज्जदेसनागे एगएसियाए सेढीए दसजोयणसयाइं विस्कन्नेण प० उवरि मुहमूले दसदसाइ जोयणाइं  
विस्कन्नेण प० तैसिणं खुम्भा पायालाण कुम्भा सव्ववडरामया सव्वत्यसमा दसजोयणाइ वाहत्तेणं प० धाइय

योजन पौल्लपणें कट्था एतले विचे लाखयोजन पौल्लला पेढाले उपरिमुखमूले दशहजार योजन पितुलपणें कट्था ते महापातालकलस कुम्भा ते  
ठीकरी सर्व वजरतमय सघली सरखी दशसेयोजन जाऊपणें कट्ठी सघलाई नाहना पातालकलश दशदशसे योजन ऊडपणें कट्था मूलें दशसेयोजन  
एक हजार योजन पितुलपणे कट्था ॥ बहुगध्यनागे एकप्रदेशनी श्रेणिथी पितुलपणे वधतां २ दशहजार योजन पितुलपणे ऊपर मुखमूलें दशसे  
योजन पितुलपणे कट्था ॥ तेह ज्ञा पातालकलशनी जीते सर्व वज्रमय सघलाई समा दशयोजन जाऊपणें कट्था दशयोजन जाऊलें । धातकीखर

ति ॥ पूर्वापरी मेरु तत्स्वरूप सूत्रतः सिद्ध विशेष उच्यते धाग्रखण्डेमेरु चुलसीइसहस्रजसियादोवि ओगाढायसहरसं हीतिवसिहरमिविच्छिन्ना ॥ १ ॥  
 मूलपणनउडमया चउणवइसयायहुतिधरणियनेत्ति ॥ सर्वेपि वृत्तवैताढ्यपर्वता विंशति प्रत्येक पचसु हैमवतैरण्वतहरिवर्षरम्यके श्वेपा शब्दावती विक  
 टावती गन्धावती मान्यवत्पर्यायाख्याना भावादिति वृत्तग्रहण दीर्घवैताढ्यश्वच्छेदार्थमिति मानुषोत्तर शक्रवालपर्वत प्रतीतोऽञ्जनका श्वत्वारो नन्दी

खरुगाण मदरा दसजोयणसयाइ उह्वेहेण धरणितले देसूणाइ दसजोयणसहस्साडं विस्कन्नेण उवरिं दस  
 जोयणसयाइ विस्कन्नेण पस्सत्ता पुक्करवरदीवहुगाण मंदरा दसजोयणा एवचेव । सव्वेविण बह्वेयह पव्वया  
 दसजोयणसयाइ उह्व उच्चत्तेण दसगाउयसयाइ उह्वेहेण सव्वत्थसमा पत्तगसंठाणसठिया दसजोयणसयाइ  
 विस्कन्नेण प० । जबूहीवे दीवे दसस्केत्ता पस्सत्ता तजहा जरहे एरवए हेमवए हेरस्सवए हरिवस्से रम्मगवस्से  
 पुव्वविदेहं अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा । मानुसुत्तरेण पव्वए मूल दसवावीसे जोयणसए विस्कन्नेण

द्वीपे मेरुपर्वत दशसे योजन उरुपणे धरतीमा देसेऊगा दशहजार योजन पिहुलपणे ऊपरि दशसे योजन पिहुलपणे कह्या चोरासीहजार योजन  
 ऊचा ॥ पुक्करवरद्वीपे मेरुपर्वत दशसेयोजन इमज सघलाइ वृत्तवैताढ्य पर्वत दशसे योजन उचपणे दससे गाऊ ऊरुपणे सघले समा पालाने आ  
 कारे दशसे योजन विष्कम्भपणे कह्या ॥ जबूद्वीपे २ दशजत्र कह्या तेकहैके जरत १ ऐरवत २ हेमवत ३ हिरण्यवत ४ हरिवर्ष ५ रम्यकवर्ष ६ पूर्व  
 विदेह ७ अवरविदेह ८ देवकुरु ९ उत्तरकुरु १० ॥ मानुषोत्तरपर्वत मूले दशवावीससेयोजन पोहलपणे कह्यो एतले बत्तीससे योजन सघलाई अज

शरहीपवर्त्तिनी दधिमुखाः प्रत्येक मंजमकानां दिक्चतुष्टयव्यवस्थितपुष्करिणीमध्यवर्त्तिनः पाड्येति रतिकरानन्दोत्तरभीपे विटिगव्यवस्थिता शत्वार  
 सतुःस्थानकाभिहितस्वरूपा रुचकोरुचकाभिधान स्तयोदशहीपवर्त्ती चक्रवालपर्वतः कुंडलः कुण्डलाभिधान एकादशहीपवर्त्ती चक्रवालपर्वत एव ॥ एव  
 कुंडलवरेवि ॥ इत्यनेन कण्डवत्तवर उद्देधमूलविष्कम्भोपरि विष्कम्भे रुचकवरपर्वतसमानचक्रो हीपसागरप्रज्ञप्त्यात्येवमुक्तो दसचेवजोयणसप्त बाधोसेवित्य  
 उडमूलमि चत्तारिजोयणसप्त चउधोसेवित्यडंसिहरेति ॥ १ ॥ रुचकस्यापि तत्राय विशेष उक्तो मूलविष्कम्भो दशसहस्राणि षाविशत्यधिकानि शिपरित

पस्यते । सद्येविणं शृंजणगपद्यया दसजोयणसयाइं उद्येहेणं मूले दसजोयणसहस्साइं विस्कन्नेणं उवरिं दस  
 जोयणसयाइं विस्कन्नेणं पस्यता । सद्येविण दधिमुहपद्यया दसजोयणसयाइं उद्येहेण सद्यत्यसमा पल्लग संठा  
 णसंठिया दसजोयणसहस्साइं विस्कन्नेण पस्यता । सद्येविणं रइकरपद्यया दसजोयणसयाइं उह उच्चत्तेणं  
 दसगाउयसयाइ उद्येहेणं सद्यत्यसमा ऊल्लरिसठिया दस जोयणसहस्साइ विस्कन्नेण प० । रुयगवरेण पद्यए  
 दसजोयणसयाइ उद्येहेणं मूले दस जोयणसहस्साइं विस्कन्नेण उवरि दस जोयणसयाइं विस्कन्नेण पस्यता ।

नगिरीपर्वत दशसेयोजन उंरुपणे मूलं दशहजार योजन पितुलपणे उपरि दशसेयोजन पोत्तलपणे कट्या ॥ सघलाई दधिमुखपर्वत दससे योजन  
 ऊला सघले समा पालानेंसंस्थाने दशहजारयोजन पोत्तलपणे सघलाई रतिकरपर्वत दशसेयोजन ऊंचा ऊचपणे दशसेगाऊ ऊरुपणे सघले समा म्हा  
 लरनेंसंस्थाने दशहजार योजन पोत्तलपणे कट्या ॥ इम कुण्डलवरपणि ॥ दशप्रकारे द्रव्यानुयोग सूत्रनु अर्थसाथे संबधन ते अनुयोग कट्यो तेकरैछे

चत्वारि सहस्राणि चतुर्विंशत्यधिकानीति अनन्तर गणितानुयोग उक्तो ऽथ द्रव्यानुयोगस्वरूप भेदत आह ॥ दसविहेदविएत्यादि ॥ अनुयोजनं सूत्रस्यार्थेन  
संबधन अनुरूपो ऽनुकूलोवा योगः सूत्रस्या भिधेयार्थं प्रति व्यापारो ऽनुयोगः व्याख्यानमितिभावः सच चतुर्धा व्याख्येयभेदा तद्यथा चरणकरणानुयोगो  
धर्मकथानुयोगो गणितानुयोगो द्रव्यानुयोगश्च तत्र द्रव्यस्य जीवादे रनुयोगो विचारो द्रव्यानुयोगः सच दशधा तत्र ॥ दवियाणुओगेत्ति ॥ यज्जीवादे द्रं  
व्यत्व विचार्यते सद्रव्यानुयोगो यथा द्रवतिगच्छतिता स्ता न्पर्यायान् द्रूयतेवा तै स्तैः पर्यायैरिति द्रव्यं गुणपर्यायवानर्थं स्तत्र सतिजीवे ज्ञानादयः सह  
भावित्वलक्षणा गुणा नहि तद्वियुक्तो जीवः कदाचनापि संभवति जीवत्वहाने स्तथा पर्याया अपि मानुषत्व बाल्यादयः कालकृतावस्थालक्षणा स्तत्र स  
त्ये वेत्यतो भव त्यसौ गुणपर्यायवत्वा द्रव्यमित्यादि द्रव्यानुयोगः १ तथा ॥ माउयाणुओगेत्ति ॥ इह मातृकेव मातृका प्रवचनपुरुषस्यो त्यादव्ययध्रौव्यल  
क्षणा पदत्रयो तस्या अनुयोगो यथा उत्पादव ज्जीवद्रव्यं बाल्यादिपर्यायाणामनुक्षण मुत्पत्तिदर्शना दनुत्पादेच वृद्धाद्यवस्थाना मप्राप्तिप्रसंगा दसमंजसा  
पत्तेः तथा व्ययवज्जीवद्रव्य प्रतिक्षण बाल्याद्यवस्थाना व्ययदर्शना दव्ययवत्वेच सर्वदा बाल्यादिप्राप्ते रसमंजसमेव तथा यदि सर्वथा प्युत्पादव्ययवदेव त  
त्रकेनापि प्रकारेण ध्रुव स्या तदा अकृताभ्यागमकृतविप्रणाशप्राप्त्या पूर्वदृष्टानुस्मरणाभिलापादि भावाना मभावप्रसंगेनच सकलेहलोकपरलोकालवना  
नुष्ठानाना मभावतो ऽसमंजसमेव ततो द्रव्यतया ऽस्यध्रौव्यमिति उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्त मात्मद्रव्य मित्यादि मातृकापदानुयोगः २ तथा ॥ एकद्वियाणुओगे

एवं कुंलवरेवि । दसविहे दवियाणुजोगे पसुत्ते तंजहा दवियाणुजोगे माउयाणुजोगे एगठियाणुजोगे

गुणपर्यायवत जीवादिद्रव्यनो अनुयोग ॥ मातृकानुयोग ते जलेना ५२ अक्षरनो अनुयोग एकार्थनो अनुयोग ते जीवप्राणी जूतसत्व एकार्थत्वे कर



ति ॥ एक शसा वर्धसा भिधयो जीवादिः स येदा मस्ति त एकार्थिकाः शब्दा स्तै रनुयोग स्तत्कथनमित्यर्थः एकार्थिकानुयोगो यथा जीवद्रव्यप्रतिजी-  
वः प्राणी भूतः सत्त्व एकार्थिकानावा नुयोगो यथा जीवना आणधारणा ज्जोवः प्राणाना सुच्छासादीना मस्तित्वात् प्राणी सर्वदा भवना जूतः सदासत्त्वा-  
स्तत्त्वश्रुत्यादि तथा ॥ करणाणजोगेति-॥ कियत एभिरिति करणानि तेषा मनुयोगः करणानुयोग स्थायाप्ति जीवद्रव्यस्य कर्तुं विविचक्रियासु साधक-  
तमानि कालस्वभावनियतिपूर्वकृतानि ने काको जीव, कियन कर्तुं मलमिति मृद्ध्यच कुलालचक्रचौवरदण्डादिक करणकलाप मतरेण न घटलक्षण का-  
ये प्रतिघटतइति तस्यतानि करणानीति द्रव्यस्य करणानुयोगइति ४ तथा ॥ अप्रियमाणपिपि ॥ द्रव्य हार्पित विशेषितं यथा जीवद्रव्य किविध-  
ससारीति ससार्यपि नसरूपं नसरूपमपि पंचेन्द्रिय तदापि नररूपमित्यादि अनर्पिते मप्रियेपितमेव यथा जीवद्रव्यमिति ततशा र्पितच तदनर्पि-  
तचे त्वर्पितानर्पित द्रव्य भवतीति द्रव्यानुयोगः ५ तथा ॥ भावियाभाविपि ॥ भावित वासितद्रव्यान्तरससर्गती ऽभावित मन्यथैव यद्यथा जीवद्रव्य-  
भावित किञ्चि त्तच्च प्रशस्तभावित मितरभावितञ्च तच्च प्रशस्तभावित मविग्नभावित मप्रशस्तभावितचे तरभावितं तद्विविध मपि वामनीय मवामनीय-  
च तच्च वामनीयं गतससर्गज गुणं दोषवा ससर्गान्तरेण वमति अवामनीय त्वन्यथा अभावितं त्वससर्गप्राप्त आप्तससर्गवा वज्रतंदुलकल्पन वासयितु श-  
क्यमिति एव घटादिद्रव्यमपि ततश्च भावित चा भावितं च भाविताभावित एवंभूती विचारो द्रव्यानुयोग इति ६ तथा ॥ बाहिराबाहिरेति ॥ बाह्यावा

करणानुजोगे अप्रियमाणपिपि जात्रियाजात्रिए बाहिराबाहिरे सासयासासए तहनाणे अतहनाणे । चमरस्सणं

णानुयोग काल स्वभाव नियति पूर्वकृतनो उपयोग जीव एपाच कारणनो योगविना कांइ करी नसके ४ अप्रितानर्पितानुयोग जिम जीवद्रव्य सं

ह्य तत्र जीवद्रव्यं बाह्य चैतन्यधर्मेणा काशास्तिकायादिभ्यो विलक्षणत्वा तदेवा बाह्य ममूर्तत्वादिना धर्मेणामूर्तत्वा दुभयेषा मपि चैतन्येनवा स्वाह्यं जी  
 वास्तिकाया चैतन्यलक्षणत्वं दुभयो रप्यथवा घटादिद्रव्य बाह्य कर्म चैतन्यादित्व स्वाह्य माध्यात्मिकमिति यावदित्येव मन्यो द्रव्यानुयोगइति ७ तथा  
 ॥ सासयासासएत्ति ॥ शाखताशाखतं तत्र जीवद्रव्य मनादिनिधनत्वात् शाखत तदेवा परापरपर्यायप्राप्तितो शाखतमित्येव मन्योद्रव्यानुयोगइति ८ त  
 था ॥ तद्वहणाणेत्ति ॥ यथा वस्तु तथा ज्ञान यस्य त त्तथाज्ञान सम्यग्दृष्टिजीवद्रव्य न्तस्यैवा वितथज्ञानत्वात् अथवा यथैव य वस्तु तथैव ज्ञान मवबोध प्र  
 तीति र्यस्मि स्त त्तथा ज्ञान घटादिद्रव्यं घटादितयेव प्रतिभासमान जैनाभ्युपगतवा परिणामि परिणामितयैव प्रतिभासमान मित्येव मन्यो द्रव्यानुयोग  
 इति ९ ॥ अतद्वहणाणेत्ति ॥ अतथाज्ञान मिथ्यादृष्टिजीवद्रव्य मलातद्रव्य वा वक्रतया वभास मेकान्तवाद्यभ्युपगतवा वस्तु तथा ह्यिकान्ते न नित्य मनि  
 त्यया वस्तु तै रभ्युपगत प्रतिभातिच तत् परिणामितयेति तदतथाज्ञान मित्येव मन्यो द्रव्यानुयोगइति १० पुन र्गणितानुयोग मेवाधिकृत्यो त्पातपर्वता  
 विकार मच्युतसूत्र यावदाह ॥ चमरस्त्रेत्यादि ॥ सुगम नवर ॥ तिगिच्छिकूडेति ॥ तिगिच्छि किजल्क स्तत्रधानकूटत्वा तिगिच्छिकूट स्तत्रधानत्वच क

असुरिदस्स असुरकुमाररत्नो तिगिच्छिकूटे उप्पायपट्टए मूले दसवावीसे जोयणसए विस्कजेणं पसत्ता ।

सारी मानवी पचेद्रीपणि एकजळं सर्वससारने भावे जावित जीवद्रव्यळे अने अजावितपणळे ते जाविताजावितानुयोग बाह्याबाह्यानुयोग जीवद्र  
 व्य चैतन्यवतमाटे आकाशास्तिकाय बाह्य अमूर्तमाटे जीव साखतो अने अशाखतो अपर्यायपामवाथी ॥ तथा ज्ञानानुयोग साचु जाणवु ॥ अतथ्य  
 ज्ञानानुयोग खोटुमिथ्याज्ञान ॥ चमर असुरेद्र असुरकुमारना राजानो तिगिच्छिकूट उत्पातपर्वतमूले दश अने बावीससे योजन पिहुलपणे कह्यु ॥ च

मलबहुलत्वात् सन्नाचेयं ॥ उप्पायपव्वएत्ति ॥ उत्पतन मूर्धगमन मुत्पात स्तेनो पलजित. पर्वत उत्पातपर्वतः सच रुचकवराभिधानात् त्रयोदशा त्समुद्रात् दक्षिणतो ऽसंख्येयान् होपसमुद्रा नतिलब्ध याव दरणवरहोपारुणवरसमुद्रौ तयो ररुणवरं समुद्र दक्षिणतो द्विचत्वारिंशतं योजनसहस्राण्य वगाह्य भवति तत्प्रमाणं च सत्तरसएकवीसाइं जोयणसयाइसोइसोसमुब्बिद्धो दसचेवजोयणसए बायीसेवित्थडोहेइहा ॥ १ ॥ चत्तारिजोयणसए चउवीसे वित्थडोउमज्झम्भि सत्तेवयतेवीसे सिहरतलेवित्थडाहोइत्ति ॥ २ ॥ सच रत्नमयः पद्मवरवेदिकया वनखण्डेनच परिजित स्तस्यच मध्ये ऽशोकावतंसको देवप्रासादइति ॥ चमरस्सेत्यादि ॥ महारणोत्ति ॥ लोकपालस्य सोमप्रभ उत्पातपर्वतो ऽरुणोदसमुद्रएव भवति एव यमवरुणवैश्रमणसूत्राणि नेयानोति ॥ बलिस्सेत्यादि ॥ रुचकेन्द्र उत्पातपर्वतो ऽरुणोदसमुद्र एव भवति यथोक्त अरुणस्सउत्तरेण बायालीसभवेसहस्राइं ओगा हिजणउदहि

चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्तो सोमस्स महारणो सोमप्पन्ने उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइं उहं उच्च त्तेणं दस गाउयसयाइ उव्वेहेण मूले दसजोयणसयाइ विस्कन्नेण पप्पत्ता । चमरस्सण असुरिंदस्स जमस्स महारणो जमप्पन्ने उप्पायपव्वए एवंचेव । एववरुणस्सवि एवंवेसमणस्सवि । बलिस्सण वइरोयणिंदस्स वइ रोयणरन्तो रुयगिदेउप्पायपव्वए मूले दसवावीसे जोयणसए विस्कन्नेण पप्पत्ते । बलिस्सण वइरोयणरन्तो

मरेद्र असुरेद्र असुरकुमारनो राजा सोममहाराजाने सोमप्रभ उत्पातपर्वत दससेयोजन ऊचोऊचपणे दशसे गाऊ ऊरुपणे मूले दशसे योजन पोमें हलपणे कट्थो ॥ चमरेद्र असुरेद्र असुरकुमारनो जममहाराजाने यमप्रभ उत्पातपर्वत इमज ॥ इम वरुणनें पणि ॥ इम वैश्रमणने पणि ॥ बलिना

सिलणिचयोरायहाणीओत्ति ॥ १ ॥ बलिस्सेत्यादि ॥ वड्ढेत्यादि ॥ सूत्रसूचा एव च दृश्यं ॥ वड्ढेरोयणिंदस्स वड्ढेरोयणरस्सो सोमस्स महारस्सोएवचेवत्ति ॥ अतिदेश एतद्भावना ॥ जहेत्यादि ॥ यथा यत्तकार चमरस्स लोकपालाना सुत्पातपर्वतप्रमाणं प्रत्येक चतुर्भिः सूत्रै रुत्तं ॥ तचेवत्ति ॥ तत्तकारमेव चतुर्भिः सूत्रै वलिनोपि वैरोचनेन्द्रस्यापि वल्लत्थं समानत्वादिति ॥ वरुणस्सेत्यादि ॥ वरुणस्सो त्पातपर्वतो ऽरुणोद एव समुद्रे भवति वरुणस्सेत्यादि प्रथमलोकपालसूत्रे ॥ एवंचेवत्ति ॥ करणात् ॥ उच्चत्तेणदसगाउयसयाइ उव्वेहेणमित्यादि ॥ सूत्र मतिदिष्ट एव ॥ जावसंखवालस्सत्ति ॥ करणाच्छेषाणा त्रयाणां लोकपालानां कोलवालसेलवालसखवालाभिधानाना सुत्पातपर्वताभिधायीनि त्रीण्यन्यानि सूत्राणि दर्शयति ॥ एवंभूयाणदस्सवित्ति ॥ भूतानन्द

सोमस्स एवचेव जहा चमरस्स लोगपालाणं तचेव बलिस्सवि । धरणस्सणं नागकुमारिदस्स नागकुमाररन्तो धरणप्पन्ने उप्पायपव्वए दसजोयणसयाइ उहं उच्चत्तेणं दसगाउयसयाइ उव्वेहेणं मूले दसजोयणसयाइ विस्सक ज्ञेण । धरणस्सण जाव नागकुमाररन्तो कालवालस्स महारन्तो कालप्पन्ने उप्पायपव्वए दसजोयणसयाइ उहं उच्चत्तेणं एवचेव । एव जाव संस्कवालस्स एवं भूयाणदस्सवि एव लोगपालाणपि सेजहा धरणस्स एवं जाव

वैरोयणेन्द्रने वड्ढेरोयणराजाने रुचकेन्द्र उत्पातपर्वत मूले दश बावीससे योजन विक्कभपणे कट्थो ॥ बलि वड्ढेरोयणेन्द्रनो सोममहाराजाने इमज जिम चमरने लोकपालने ॥ तिमज वलेन्द्रनेपणि ॥ धरणनागकुमारनो इन्द्र नागकुमारनाराजानो धरणप्रज्ञ उत्पातपर्वत दससेयोजन ऊचा ऊचपणे ए द शगाऊशत दशसे उरुपणे मूले दशसे योजन पोहलपणे कट्थु ॥ वरुणनागकुमार कालवालीने महाकालप्रज्ञ उत्पातपर्वत दससे योजन ऊचो इमज ए

स्थापि औदीच्यनागराजस्यापि उत्पातपर्वतस्तस्य नामप्रमाणं च वाच्यं यथा धरणस्येत्यर्थः भूतानन्दप्रभश्चोत्पातपर्वतो रुणोदएव भवति केवलं सुत्तरत एव ॥ लोमपालाणामिति ॥ से ॥ तस्य भूतानन्दस्य लोकपालानामपि एव सुत्पातपर्वतप्रमाणं यथा धरणलोकपालानां मितिभावः नवरत्नत्रेमानि चतुस्थानकान्सारेण ज्ञातव्यानीति ॥ जहावरणस्तस्मिन् ॥ यथाधरणस्य एवमिति तथा सुपणविज्जुकुमारादीनां ये इन्द्रास्तेषां सुत्पातपर्वतप्रमाणं भणितव्यं किंपर्यंतानां तेषां मित्यत आह ॥ जायथणियकुमाराणिति ॥ प्रकटं किं इन्द्राणामेव नेत्याह ॥ सलोकपालाणिति ॥ तल्लोकपालानपीत्यर्थः ॥ सव्वेसिमि त्यादि ॥ सर्वेषां मिद्राणां तल्लोकपालानां चोत्पातपर्वतां सदृशानामां भणितव्या यथा धरणस्य धरणप्रभं प्रथमतस्तल्लोकपालस्य कालवालस्य कालवालप्रभ इत्येव सर्वत्र तेव पर्वता स्थानं मणिकल्पे वञ्चयन्ति असुराणां नागाणां उदहिकुमाराणां हीति आवासा अरुणोदणसमुद्रे तथैव यते सि उपपाया ॥ १ ॥ दीवदि सा अमौण धणियकुमाराणां हीति आवासा अरुणवरेद्वीपे तथैव यते सि उपपायति ॥ २ ॥ सकस्मेत्यादि ॥ कुडलवरेद्वीपे कुडलपर्वतस्याभ्यन्तरे दक्षिणतः पांडुराजगान्ध्या मन्ति तासां चतसृणामर्थे सोमप्रभयमप्रभवरुणप्रभवैश्वर्यप्रभाख्या उत्पातपर्वता सोमादीनां शक्रलोकपालानां सन्ति उत्तरपार्श्वे तु

थणियकुमाराणां सलोकपालाणां ज्ञाणियद्वा । सव्वेसि उपपायपद्वा ज्ञाणियद्वा सरिसनामगा । सकस्सणं देवि दस्स देवरसोसक्कप्पजे उपपायपद्वा दसजीयणसहस्साइ उह उच्चत्तेण दस गाउयसहस्साइ उव्वेहेण मूले दस

णे प्रकारे यावत् ससपालने इमं भूतानन्दने पणि इमं लोकपालने पणि तिमज्जिमं धरणने इमं यावत् स्तनितं कुमारने पणि लोकपालसहितं जाणवू ॥ सर्वने उत्पातपर्वतं जाणवा सरसे नामे ॥ शक्रदेवेन्द्र देवराजाने शक्रप्रजं उत्पातपर्वतं दशहज्जारयोजनं ऊचो ऊचपणे दशहज्जार गाऊ

एवमेवेशानलोकपालानामिति यथा शक्रस्य तथा च्युतान्तानां मिन्द्राणां लोकपालानां चीत्पातपर्वता वाच्या यतः सर्वेषां मेकं प्रमाणं नवरं स्थानविशेषो विशेषमूत्रा द्रवगन्तव्यं योजनसहस्राधिकारा देव योजनसाहस्रिकावगाहनासूत्रत्रय ॥ वायरेत्यादि ॥ कण्ठ्य नवरं ॥ वायरति ॥ वाटराणामेव न सूक्ष्माणां तेषां मगुनासंख्येयभागमात्रावगाहनत्वात् एव जघन्यतोपि माभूदतः ॥ उक्लोसेणति ॥ अभिहितं दशयोजनशतानि उत्सेधयोजनेन नतु प्रमाणयोजनेन उत्सेधप्रमाणमिति देहति ॥ यचनात् शरीरस्यावगाहना येषु प्रदेशेषु शरीरे मयगाढ सा शरीरावगाहना साच तथाविधनद्यापि पद्मनालविषया द्रष्टव्येति ॥ जलयरेत्यादि ॥ इह जलचरा मत्स्या गभेजा इतरेव दृश्या मच्छजुयलसहस्र ॥ इतिवचनात् एतेच किल स्वयभूरमणएव भवतीति ॥ उरगेत्यादि ॥ उरःपरिसर्प्या इह गभेजा महीरगा दृश्या उरगेमुद्यगभजाडंसुति ॥ यचनात् एते किल बाह्यदोषेषु जलनिश्चिता भवति ॥ एवचैवति ॥ दस

जोयणसहस्राड् विस्कन्नेणं पस्सत्ते । सक्कस्सणं देविदस्स देवरस्सो जहा सक्कस्स तहा सव्वेसि लोगपालाण सव्वेसिच इदाग जाव अञ्जुयत्ति ॥ सव्वेसिपमाणं डक्कवायरवणस्सडकाइयाण उक्लोसेणं दसजोयणसया इं सरीरोगाहणा पस्सत्ता । जलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण उक्लोसेण दसजोयणसयाइं सरीरोगाहणा पस्सत्ता । उरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाणं उक्लोसेण एवंचेप । संजपत्तणं अरहानु अज्जिणंद

ऊढो मूले दशहजार योजन पोहलपणे कह्यो ॥ शक्र देवेद्र देवराजानो सोममहाराजाने जिम शक्रने तिम सर्वलोकपालने सर्वइद्वर्ने यावत् अच्युतेद्वर्ने सर्वनु प्रमाण एकज ॥ वाटरवनस्पतीकायने उत्कृष्टी दशसे योजननी शरीरअवगाहना कही ॥ उरपरसर्प्य थलचर पंचेद्वीतिर्यच योनिनानु श

जीय गसनाइ सरोरोगाहणापणात्ति ॥ सूत्र पाच्यमित्यर्थः एवं विधाया र्था जिने दर्शिताइति प्रकृताध्ययनावतारिजिनांतरसूत्रां ॥ समवेत्यादि ॥ सुगम  
पमिहितपमाणाशा वगाहनादयो न्येपि पदार्था जिने रनन्ता दृष्टा इत्यनन्तक भेदत आह ॥ दसविहेत्यादि ॥ नामानन्तक मनन्तक मिलेपा नामभूता  
पणानुपूर्वी यस्यवा सचेतनादेर्वस्तुनो नन्तकमिति नाम तद्वामानन्तक स्थापनानन्तकं यद्वादा वनन्तकमिति स्थाप्यते द्रव्यानन्तक जीवद्रव्याणा पुद्ग  
लद्रव्याणां यदनन्तक गणमानन्तक य देको धौ पय इत्येव मख्याता असंख्याता अनन्ताइति संख्यामानापेक्ष संख्यामाधतया संख्यातमात्र व्यपदिश्यत  
इति प्रदेशानन्तक प्राक्ताशपदेयानां यदानन्त्यमिति णकताऽनन्तक मतोतायाऽनागतताया वा विधा नन्तक सर्वाया देशविस्तारानन्तक एक आकाशप्र  
तरः सर्वाविस्तारानन्तक सर्वाकाशास्तिकायइति शाश्वतानन्तक मच्चय जीवादिद्रव्यमिति एवंविधार्थाभिधायकमूवेगतश्रुतमिति पूर्वश्रुतिगोचर मिहा  
पतारयन् सूत्रयमाह ॥ उप्पाणइत्यादि ॥ उत्पातपूर्वं प्रथमं तस्य दशवस्तू न्यत्रायविशेषा अस्तिनास्तिप्रजादपूर्वं चतुर्थं तस्य मूलवस्तूना सुपरि चू

णे अरहा दसहि सागरोवमकोहिसयसहस्सेहि वीइक्कंतेहि समुप्पसो ॥ दसविहे अणतए पणत्ते तंजहा  
णामाणंतए ठवणाणतए दव्वाणंतए गणणाणतए पएसाणतए एगयोगाणतए दुहनंणंतए देसवित्थाराणंतए

रीर उत्कृष्टो इमज ॥ संजवनाथ अरिहतथी अजिनंदन अरिहत दशलाखकोहि सागरोपम गयापल्ली ऊपना ॥ दशप्रकारे अनतो कक्षो तेकहैबे व  
स्तुना अनता नाम ते नामानतो १ थापनाअनतो जे कोईक वस्तुविषे अनतानी स्थापना २ जीवपुद्गल नु ते द्रव्यानतो ३ गणनानतो एक द्वि सख्या  
तो असख्यातो ते गणनानतो ४ प्रदेशानतो अतीतकाल प्रदेशानुअनतो ५ एकथी अनतो अतीतकाल अनतो गयो इम सर्वकालनु ते द्विधानतो ६ एक

लारूपाणि वस्तूनि चूलावस्तूनि पूर्वगतादिश्रुतनिषिद्धवस्तूनां साधो र्विधा प्रतिषेवा भवति तद्विधांतां दर्शयन्नाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ प्रतिषेवणा प्राणा  
 तिपाताद्या सेवना ॥ दप्पसिलोगो ॥ दर्प्यो वल्लनादिः दप्पोपुण्होद्वगणाद्विओत्ति ॥ वचना तस्मादागमप्रतिषिद्धप्राणातिपाता द्या सेवा सा दर्प्यप्रतिषे  
 वणे त्वेव मुत्तरपदान्यपि नेयानि नवर प्रमाद परिहासविकल्पादि कटप्पाइपमाओत्ति ॥ वचना द्विधेये प्वप्रयत्नोवा अनाभोगो विस्मृति रेधा समाहार  
 इदं स्तत्र तथा आतुरे ग्लाने सति तत्प्रतिजागरणार्थमितिभावो ऽथवा आत्मन एवा तुरत्वे सति लुप्तभावप्रत्ययत्वा दयमर्थं, क्षुत्पिपासाव्याधिभि रभि  
 भूतः सन् या झरोति उक्तच पढमवोहदुहवा हिओवजसेजआउराणसत्ति ॥ तथा आपत्सु द्रव्यादिभेदेन चतुर्विधासु तत्र द्रव्यतः प्रासुकद्रव्य दुर्लभ ज्ञेय  
 तो ऽध्वप्रतिपन्नता कालतो दुर्भिन्न भावतो ग्लानत्वमिति उक्तच दव्वाद्वअलभेपुण चउव्विहाआवयाहोइत्ति ॥ तथा शकिते एषणीयेष्य नेषणीयतया ज  
 संकेत समावज्जे ॥ इतिवचनात् सहसाकारे ऽकस्मात्करणे सति सहसाकारलक्षण चेद् पुव्वमपासिऊण पाएवूढमिजपुणोपामे नचयइमियत्तेउ पायसह

सन्नवित्याराणंतए सासयाणंतए । उप्पायपुव्वस्सण दस वत्थू प० अल्पिणत्थिप्पवायपुव्वस्सणं दस चूलावत्थू प०  
 दसविहा पप्पिसेवणा प० । दप्पपमायाणाजोगे आउरेआवईसुय संकिएसहसागारे जयप्पयोसवीमसा ॥१॥

आकाशप्रदेश ते देशविस्तारानतो सर्वविस्तारानते ते सर्वाकाशास्तिकाय सास्वतानतो ते जीवादिषट्द्रव्य सास्वताछे उत्पादपूर्वना दशवस्तु क  
 ह्या वस्तुते अध्ययन ॥ अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्वनी दशचूलिकावस्तु कही ॥ दशप्रकारे प्रतिषिद्धसेवना प्राणातिपातादि असेवा ना वारीछे तेकहैछे  
 दर्प्यप्रतिषेवणा १ । प्रमादसेवादि वारीछे २ । अनाजोगविस्मृत ३ । आतुर ग्लानयको सेवे ४ । आपदाआव्यां सेवे ५ । सुद्वमांनछे पणि असुदुनी



साकरणमेवति ॥ १ ॥ भयं च भीति नृपचौरादिभ्यः प्रहेषम मात्सर्यं भयप्रहेषं तस्माच्च प्रतिषेधा भवति यथा राजाश्रमयोगा आर्गादिदृश्यति सिंहा  
दिभयाद्या वृत्तमारोहति उत्तमं च भयमभिभोगेणसीहमाईश्रोति ॥ इह प्रहेषग्रहणेन कपोयादिविवक्षिता आहव कोहाईउपश्रोति ॥ तथा विम  
र्श, शिघ्रकादिपरीक्षा आहव योमसासेहमाईश्रोति ॥ ततोपि प्रतिषेधा पृथिव्यादिसघट्टादिरूपा भवति प्रतिषेधायाचा लोचनाविधेया तत्रच ये दोषा  
स्ते परिहार्या इतिदर्शनायाह ॥ दसेत्यादि ॥ आकपगाह्वा ॥ आकप्य आयर्ज्येत्यर्थं यदुक्तं वेयावच्चाईहि पृथ्व्यागंपइत्तुआयरिण आलोएइकहमे थोव  
गियरेजपच्छित्तंति ॥ १ ॥ प्रणुमाणइत्ता ॥ अनुमान कृत्वा किमय सृददड उतो गदडइति ज्ञात्वेत्यर्थो ऽयमभिप्रायोस्य यद्यय सृदुदड स्ततो दास्याम्यालो  
चना मग्यथा नेति उक्तञ्च क्रिएसउगदडो मिउदडोवत्तिएयमणुमाणो अण्येयलितियोव पच्छित्तमज्जादेज्जाहिस्ति ॥ १ ॥ जटिष्ठति ॥ यदेव दृष्ट माचार्यादिना  
दोषजात तदेवा लोचयति नाग्यहोप साय माचार्य रञ्जनमात्रपरत्वेना सविग्नत्वा दस्येति उक्तञ्च दिष्टावजेपरेण दोसापियडेयतेस्त्रियणअणे सोहिभया  
जाणतुय एसोण्यावदोमोउत्ति ॥ १ ॥ वायरवत्ति ॥ यादरमेवा तिचारजात मालोचयति नसूक्ष्ममिति ॥ सुहुमवत्ति ॥ सूक्ष्ममेव वा तिचार मालोचयति  
यः किल सूक्ष्म मालोचयति स कथं वादरं सतं नालोचय त्येवरूपभावसपादनाया चार्यस्येति आहव वायरवहुवराहे जोआलोएइसुहुमनालोए अह

दस श्रालोयणादोसा पणत्ता । श्राकंपइत्तुश्रणुमा णइत्तुजदिठवायरंचसुज्जमंवा च्छन्तसद्दाउलगं वज्जजण

परे सकाये ६ । सहसात्कारे करें ७ । जययी नृपादि ८ । प्रहेष मत्सर थकी ९ । विमर्श शिष्यादि १० ॥ परिहृता ॥ १ ॥ ए सर्वनी आलोअणआवे  
दशप्रकारे आलोयण कही तेरुहेछे प्रथमवेपावचादिके आ यजीने आलोवे अनुमानकरीने जे ए पापनो दण थोडोहोसे ते ज आलोवे जे दोष आ

वासुहमालो ए वरमणतोऽएवतु ॥ १ ॥ जोसुहुमेआलो ए सोकिहनालोयवायरेदोसेत्ति ॥ छवत्ति ॥ प्रछन्न मालोचयति यथात्मनैव शृणोति ना चार्यमणितं  
छणनहआलो ए जहनवरअपणासुणइत्ति ॥ सहाउलयति ॥ शब्देना कुल शब्दाकुल वृहच्छब्देना लोचयति यथा न्येप्यगीतार्था स्तच्छृण्वन्ती त्यभाणिच सहा  
उलवट्टेणं सहेणालोयजहअग्नियाविवोहेइत्ति ॥ बहुजणति ॥ बह्वोजना आलोचनाचार्या यस्मि आलोचने त बहुजनं अयमभिप्राय. एगस्सालोइत्ता जी  
आलोपणोविअणस्स तेचेवयअवराहे तहोइवहुजणनामेत्ति ॥ १ ॥ अववत्ति ॥ अव्यक्तस्या गीतार्थस्य गुरो सकाशे यदालोचन तत्तत्संबधा दव्यक्त सु  
चने उक्तञ्च जोयअगीयत्तस्स आलोएततुहोइप्रवत्तमिति ॥ तस्सेवित्ति ॥ ये दोषा आलोचयितव्या स्तत्सेवौ यो गुरु स्तस्य पुरतो यदालोचन स तत्से  
विलक्षण आलोचनादोष स्तत्र वायमभिप्राय आलोचयितु जहएसांमत्तुलो नोटाहो गुरुगमेवपच्छित्त इयजोकिलिठुचित्तो दिसाआलोयणातेणति ॥ १ ॥  
एतदोषपरिहाणिपि गुणवतैवा लोचना देयेति तद्गुणानाह ॥ दसहिठाणेहीत्यादि ॥ एवति ॥ अनेन क्रमेण यथा अष्टस्थानके तथेद सूत्र पठनीयमित्य  
थे. कियदूर यावत् ॥ खोदतेत्ति ॥ पदे तथाहि ॥ विणयसपखे नाणसपखे दसणसपखे चारणसंपखेत्ति ॥ अमाईअपच्छाणतावीति ॥ पढइय मिहाधिक

अवत्ततस्सेवी ॥ १ ॥ दसहि ठाणेहि सपन्ने अणगारे अरिहड अत्तदोसं आलोइत्तए तंजहा जाइसंपन्ने  
कुलसंपन्ने एव जहा अठठाणे खते दते अमाई अपच्छाणतावी । दसहि ठाणेहि सपन्ने अणगारे अरि

चार्यनो टीठो होय ते आलोवे ॥ मोटा २ । आलोइं न सूत्तम सूत्तमआलोवे सूत्तमआलोवेछे ते वादर छानु आलोवे पोतेज साजले गुरु नसाजले मो  
टेशब्दे आलोवे घणा ज नसाथे २ आलोअण अव्यक्त अगतार्थपासे आलोवे तेज आलोवे जे गुरुइसेव्योहोय ॥ १ ॥ दशस्थानके सहित अणगार यो

प्रकटस नवरं गत्यातरोक्त तत्स्वरूपमिदं नोपलिङ्ग्येमांश्च अपहृत्वावीनपरितपेति ॥ एवभूतगुणवतापि दीयमाना लोचना गुणवतैव प्रलीष्टव्येतिता  
 गुणानात् ॥ दसहोलादि ॥ आचारवति ॥ ज्ञानाद्याचारवान् ॥ प्रवहारवति ॥ प्रवधारणावान् यावत्कारणात् ॥ ववहारव ॥ आगमनादिपत्रप्रकारव्यवह  
 रवान् ॥ उल्लेख ॥ अपव्रीडकः लज्जापनोदको यथा परः सुखं मालोचयतीति ॥ पञ्चवी ॥ प्रालोचिते शुद्धिकरणसमर्थः ॥ निज्जपण ॥ य स्तथा प्रायश्चित्त  
 दत्ते यथा परो निर्वोद मलं भवतीति ॥ अपरिस्त्राजो ॥ प्रालोचकदोषा नृपशुल्य यो नोद्गिरति ॥ प्रवायदंसी ॥ सातिचारस्य पारलौकिकापायदर्शीति  
 पूर्णोक्तमेव ॥ पियधम्मेट्ठधम्मत्ति ॥ अधिकं मिह पियधर्माधर्मप्रियां दृढधर्माय आपद्यपि धर्मा न चलतीति प्रालोचितदोषाय प्रायश्चित्तं देयं मतं स्तथा  
 रूपणसूत्र ॥ दसविहेलादि ॥ प्रालोचनागुरुनिवेदनं तथैव पञ्चज्ञाति प्रतिचारजातं तत्रतदर्हत्वा दालोचनाहं तच्छुषार्थं य प्रायश्चित्तं तद् प्रालोचनार्हं  
 तत्रा लोचनैवेत्येवं सर्वत्र जावकरणात् ॥ पडिक्कमणारिहे ॥ प्रतिकमणं मिथ्यादप्पृतन्तदर्हं ॥ तदभयारिहे ॥ प्रालोचना प्रतिकमणार्हमित्यर्थः ॥ विवेगारिहे ॥  
 परित्यागशोध्य ॥ विउसणारिहे ॥ कायोत्तर्गार्हं ॥ तवारिहे ॥ निविक्कतिकादितपःशोध्य ॥ केदारिहे ॥ पर्यायच्छेदयोग्य ॥ मूलारिहे ॥ व्रतोपस्थापनार्हं ॥

हइ आलोयणं पडिच्छित्तए तंजहा आचारव आहारव जाव आवायदसी पियधम्मेट्ठधम्मेट्ठ ॥ दसविहे  
 पायच्छित्ते प० त० आलोयणारिहे जाव अणवठप्पारिहे पारंचियारिहे ॥ दसविहे मिच्छित्ते प० त० अथ

ग्यहोय आत्मदोष आलोवाने तेकहैळे जातेंपूरी कुलेंपूरी इम जिम आठमे ठाणे यावत् क्षमावत दमवंत मायारहित पल्लें परितपे नही ॥ दशथा  
 नके सहित अणगार योग्यहोय आलोअवाने आलोअणातप अंगीकार करवाने ते कहेळे आचारवंत १ । धारणावत २ । यावत् परलोके कष्टनी देरा

अ गवद्वप. रिहे ॥ यस्मिन्नामेविते कचन काल व्रते ष्वनवस्थाप्य कृत्वा पश्चाच्चोर्गतया तद्दोषोपरतो व्रतेषु स्थाप्यते तदनवस्थाप्याहं ॥ पारचियारिहे ॥ एतदधिकमिह तत्र यस्मिन् प्रतिषेधिते लिङ्गजेन कालतपोभिः पारचिको बहिर्भूतः क्रियते तत्पाराञ्चिकं तदर्हमिति पाराञ्चिको मिथ्यात्वमप्यनुभवे दतो मिथ्यात्व निरूपणाय सूत्रं तत्रा धर्मे श्रुतलक्षणविहीनत्वा दनागमे ऽपौरुषेयादौ धर्मसंज्ञा आगमबुद्धिर्मिथ्यात्व विपर्यस्तत्वादिति धर्मे कषच्छेदादिशुद्धे सम्यग्श्रुते आप्तवचनलक्षणे ऽधर्मसंज्ञा सर्वेष्वप्यपुरुषा रागादिप्रन्तो ऽसर्वज्ञाश्च पुरुषत्वा दहमिवेत्यादि प्रमाणतो नाप्ता स्तदभावा न्न तदुपदिष्टं शास्त्र धर्मइत्यादि कुविरूपवशा दनागमबुद्धिरिति २ तथा उन्मार्गो निर्हतिपुरो ऽस्मति अपथा वस्तुनत्वापेक्षया विपरीतश्च ज्ञानज्ञानानुष्ठानरूप स्तत्र मार्गसंज्ञाकुवासनातो मार्गबुद्धिः ३ तथा मार्गो उन्मार्गसंज्ञेति प्रतीत ४ तथा अजावे ष्व काशपरमाण्वादिषु जीवसंज्ञा पुरुषवेदमित्यादि अभ्युपगमादिति तथा नितितजल पवनहुताशन यजमानाकाशचद्रसूर्याख्या इतिमूर्तयोमहेवर सबधिन्योभवत्यष्टाविति ५ ॥ १ ॥ तथा जीवेषु पृथिव्यादि ष्वजीवसंज्ञा यथा न भवन्ति पृथिव्यादयो जीवा उच्छ्वासादीना प्राणिधर्माणा मनुपलभ्यात् घटवाटिति ६ तथा असाधुषु षड्जीवनिकायवधानिवृत्ते ष्वौद्देशिकादिभोजि ष्वब्रह्मचारि

**धर्मधर्मसन्ता धर्मेऽधर्मसन्ता उन्मार्गमार्गसन्ता मार्गेऽन्मार्गसन्ता अजीवेसु जीवसन्ता जीवेसुऽजीवसन्ता**

नार धर्मने विषे प्रीतिरहे दृढधर्मी धर्मधी नचूके ॥ दशप्रकारे प्रायश्चित्त कृत्यो ते कर्हैछे आलोअणयोग्य गुरुनिवेदन यावत् अनवस्थाप्ययोग्य केतलो काल व्रतथी अलगोकरी दोषटाली पळे व्रतमा थापवो पारचितथी अलगोकरे ॥ दशप्रकारे मिथ्यात्व कृत्यो ते कर्हैछे अधर्मनेविषे धर्मनीसंज्ञा धर्मने विषे अधर्मनीबुद्धि मार्गनेविषे उन्मार्गनीबुद्धि ३ । उन्मार्गनेविषे मार्गनी बुद्धि अजीवने जीवकरी जाणे आकाशनापरमाणुप्रमुखने जीव पृथिव्यादि

पु साधुसंज्ञा यथा साधव एते सर्वपापप्रहृता अपि ब्रह्ममुद्राधारित्वा दित्यादिविकल्परूपेति ७ तथा साधुषु ब्रह्मचर्यादिगुणान्विते ष्वसाधुसंज्ञा एतेहि कुमारप्रवजिता नास्त्ये षा गति रपुत्रत्वात् स्नानादिविरहितत्वाद्दे त्यादिविकल्पात्मिकेति ८ तथा अमुक्तेषु सकर्मसुनोकव्यापारप्रवृत्तेषु मुक्तसंज्ञा यथा अणिमाद्यष्टविधं प्राप्यैश्वर्यं कृतिनः सदा मोदन्ते निर्वृतात्मानं स्तीर्णाः परमदुस्तरमित्यादि विकल्पात्मिकेति ९ तथा मुक्तेषु सकलकर्मकृतविकारविरहिते ष्वनन्तज्ञानदर्शनमुखवीर्ययुक्तेषु अमुक्तसंज्ञा न सत्येवे दृशा मुक्ता अनादिकर्मयोगस्य निवर्त्तयितुं मशक्यत्वा दनादित्वा देव आकाशात्मयोगस्थेवेति न सन्तिवा मुक्ता मुक्तस्य विध्यातदौपकल्पत्वा दात्मनएव वा नास्तित्वादित्यादि विकल्परूपेति १० अनन्तर मिथ्यात्वविषयतया मुक्ता उक्ता इदानीं तदधिकारा त्तोर्थकरत्रयस्य दशस्थानकानुपातेन मुक्तत्व मभिधीयते ॥ चटप्यहेणइत्यादि ॥ सूत्रत्रयमपि कण्ठ्यं नवर ॥ सिद्धे जावन्ति ॥ यावत्करणत् ॥ सिद्धेबुद्धे मुक्तेष्वनकडेसच्चदुक्खप्पहीनेति ॥ सूत्रं न्द्रष्टव्यमिति उक्ततौर्थकराच्च महापुरुषादिति तत्सम्बन्धि ॥ पुरिससीहेत्यादि ॥ सूत्रत्रयं कण्ठ्यं नैरयिकतयेति प्रागुक्त

असाहसुसाकसन्ता साहसुअसाकसन्ता अमुत्तेसुमुत्तसन्ता मुत्तेअमुत्तसन्ता । चदप्पन्नेण अरहा दसपुव्वस तसहस्साइ सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे । धम्मेण अरहा दसवाससयसहस्साइ सव्वाउयपालइत्ता

कने विधे अजीवनी बुद्धि साधुनेविधे असाधुनीबुद्धि असाधुने साधुनीबुद्धि साधुकरीजाणे कर्मथीनथीमुकाणा तेह ने मुक्तकरी जाणे हरिहरादिक ने सकलकर्मथी मुकाणा अनतज्ञानी तेहने अमुक्तजाणे ॥ चद्रप्रज्ञ अरिहत दशलाखपूर्वं सर्वआउखू पालीने सिद्धथया यावत् प्रहीणसर्वदुखथी ॥ धर्मनाथ अरिहत दशलाखवरस यावत् प्रहीणथया नमिनाथ अरिहत दशहज्जार सवआउषु पालीने सिद्धा यावत् प्रहीणथया पुरुषसीह पाचमो

नारकासनाञ्च क्षेत्रतो भवनवासिनइति तद्वतसूत्रद्वयं कण्ठञ्च नवरं असुरानागसुवणा विज्जूअग्गीयदीवउदहीय दिसिपवणथणियनामा दसहाएभवण  
वासीति ॥ १ ॥ अनेन क्रमेणा श्रुत्यादय श्रुत्यवृत्ताः ये सिद्धायतनादिदारेषु श्रूयन्तइति प्राग्भवनवासिनो देवा उक्ता स्तेषाच किल सुख भवतीति सुख

सिद्धे जाव प्पहीणे । नमीणं अरहा दसवाससहस्साइ सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे । पुरिससी  
हेण वासुदेवे दसवाससयसहस्साइ सव्वाउयं पालइत्ता छठीए तमाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववन्ते । नेमीण  
अरहा दसधणूइं उहु उच्चत्तेण दसवाससयाइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे जाव प्पहीणे । कणहेणं वासुदेवे दस  
धणूइ उहु उच्चत्तेण दसवाससयाइं सव्वाउय पालइत्ता तच्चाए वालुयप्पजाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववन्ते ।  
दसविहा जवणवासी देवा पस्सत्ता तजहा असुरकुमारा जाव थणियकुमारा एएसिणं दसविहाणं जवणवा  
सीणं देवाण दस चेइयरुक्का पस्सत्ता तजहा असुसोठसत्तिवन्ते सामलिउवरसिरीसदहिवन्ते वजुलपलास

वासुदेव दशहज्जार वरस सर्व आउखो पालीने छठी तमापृथ्वीने विपे नारकीपणें ऊपनो ॥ नमिनाथ अरिहत दशधनुष ऊचा ऊंचपणो दशसेवर  
सनु सर्व आउखो पालीने सीधा यावत् प्रहीण ॥ रुद्रवासुदेव दसधनुष उचा उंचपणें दशसेवरसनु सर्व आयू पालीने त्रीजीवालुकप्रजा पृथ्वीने नार  
कीपणें ऊपना ॥ दशप्रकारे जवनवासी देव कह्या तेकहैछे असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार ॥ ए दशप्रकारना जवनवासी देवताने दश चैत्यवृत्त  
कह्या तेकहैछे अश्वत्थ १ । सत्तिवन्त २ । सामली ३ । उवर ४ । सरसडो ५ । दधिपर्ण ६ । वजुल ७ । पलास ८ । वड ९ । कणयर १० ॥ १ ॥ दशप्र

सामान्यत आह ॥ दसविहेइत्यादि ॥ आरोगगाहा ॥ आरोग्यं नीरोगता दीर्घमायु चिरंजीवित शुभमितीह विशेषणं दृश्यमिति ॥ अद्वेज्जति ॥ आत्यन्तं धन  
पतित्व सुखकारणत्वात् सुखं अथवा आत्यन्तं क्रियमाणा ईज्या पूजा आत्येज्या प्राकृतत्वाद्द्वेज्जति ३ ॥ कामेति ॥ कामी शब्दरूपे सुखकारणत्वात् सुखं ४ ।  
॥ एवभोगति ॥ भोगा गन्धरसस्पर्शाः ५ तथा सन्तोषो ऽत्येच्छा तत्सुखमेवा नन्दरूपत्वात् सन्तोषस्य उक्तञ्च आरोग्यसारिर्यमा णसत्तणसव्वसारिओधम्मो  
भिज्जानिच्छियसारा सुहाइसतोससाराइति ॥ १ ॥ ६ ॥ अथिति ॥ येन येन यदा यदा प्रयोजनं तत्तदा तदा स्ति भवति जायतइति सुखं मानन्दहे  
तत्वादिति ७ ॥ सुहभोगति ॥ शुभो ऽनिन्दितो भोगो विषयेषु भोगक्रियेति स सुखमेव सातोदयसपायत्वात् तस्येति ८ तथा ॥ निष्कममेवेति ॥ निष्क्रमणं  
निष्क्रमो ऽविरतिजवालादिति गम्यते प्रव्रज्येत्यर्थं इह च हिर्भावो न पुंसकता च प्राकृतत्वात् एवकारो ऽवधारणे ऽयमर्थं निष्क्रमणमेव भवस्थाना सुखं नि  
राबाधं स्वायत्तानन्दरूपत्वात् अतएवोच्यते ॥ दुर्बालसमासपरियाये समणे निगमे अणुत्तराण देवाण तेउलेस विइवइति ॥ तथा नैवास्ति राजराज  
स्य तत्सुखं नैव देवराजस्य यत्सुखमिहैव साधो लोकत्रयवहाररहितस्येति ॥ १ ॥ शेषसुखानि हि दुःखप्रतीकारमात्रत्वात् तसुखाभिमानमात्रजनकत्वाच्च तत्त्वतो  
न सुखं भवतीति ९ ॥ ततो अणावाहेति ॥ ततो निष्क्रमणसुखानन्तरं मनाबाधं न विद्यते आबाधा जन्मजरामरणक्षुत्विपासादिका यत्र तदनाबाधं मो

वप्पा यएयकस्सियाररुक्केय ॥ १ ॥ दसविहे सुक्के प० तं० आरोग्यदीहमाउ अद्वेज्जं कामजोगसंतोसो अथि

कारणा सुखं कथ्या तेरुहैहे नीरोगपणुं १ । मोदुआयु २ । धनाढ्यपणुं ३ । कामजोग स्त्रीआदिकनो सुखं ४ । सन्तोष ५ । अस्ति सुखं सुखकारी जोग  
गजिवारे जेजोईये तिवारे ते मले ६ । ७ निष्क्रम ते दीक्षासर्वसुखत्वं कारणं ८ । अनाबाधं ते मोक्षसुखं १० ॥ १ ॥ दशप्रकारे उपघातं कथ्या चारि

क्षुखमित्यर्थं पतदेवच सर्वोत्तम यतउक्तं नविअच्छिमाणसाण तंसोक्खंनवियंसव्वदेवाण जसिङ्गाणसोक्ख अवावाहउवगयाणति ॥ १ ॥ १० निष्क्रमणसु  
 ख चारित्रसुख मुक्त तच्चा नुपहत मनावंधसुखाये त्यत चारित्रस्यै तत् साधनस्य भक्तादेर्ज्ञानादेशो पघातनिरूपणाय सूत्रं तत्र यदुद्गमेना धाकर्मादिना  
 घोडशविधेनो पहनन विराधन चारित्रस्या कल्प्यतावा भक्तादेः स उद्गमोपघात एवमुत्पादनाया धात्यादिदोषलक्षणाया यः स उत्पादनोपघातः ॥ जहाप  
 चट्टाणेति ॥ भणना तत्सूत्र मिह दृश्यं कियदत आह जावपरौल्यादि तच्चेद ॥ एसणोवघाए ॥ एषणया शङ्कितादिभेदया यः स एषणोपघातः ॥ परिकम्भो  
 वघाए ॥ परिकर्म वस्त्रपात्रादिसमारचन तेनो पघातः स्वाध्यायस्यग्रमादिना शरीरस्य संयमस्य वो पघातः परिकर्मोपघातः ॥ परिहरणोवघाए ॥ परि  
 हरणा अलाक्षणिकस्या कल्प्यस्य वोपकरणस्य सेवा तथा ज्ञानोपघातः श्रुतज्ञानापेक्षया प्रमादतो दर्शनीपघातः शङ्का  
 दिभि चारित्रोपघातः समितिभङ्गादिभिः ॥ अवियत्तोवघाएति ॥ अवियत्त मप्रौतिक तेनो पघातो विनयादेः ॥ सारक्खणोवघाएति ॥ संरक्षणेन शरी  
 रादिविषये मूर्च्छयो पघातः परिग्रहविरतेरिति संरक्षणोपघातइति उपघातविपक्षीभूतविशुद्धे निरूपणाय सूत्रं तत्रोद्गमादिविशुद्धिर्भक्तादेर्निरवयव

सुहजोगनिस्कं समेवतत्तीष्णवाहे ॥ १ ॥ दसविहे उवघाए पणत्ते तंजहा उग्गमोवघाए उप्पायणोवघाए  
 जहापंचठाणे जाव परिहरणोवघाए णाणोवघाए दंसणोवघाए चरित्तोवघाए अवियत्तोवघाए सारक्खणोव

अविराधना तेरुहैळे उद्गमदोष ते आधाकर्मादि उत्पादना धातुदोष जिम पांचमेंठाणें यावत् अकल्प उपगणानी सेवा ज्ञाननी आशातना दर्श  
 नोपघात शंकाआणे चारित्रोपघात सुमतिज्ञांजे विनयादिक नकरे ते अवियत्तोपघात शरीरादिकविषं मूर्च्छा ॥ दशप्रकारे विशुद्धि कही ते कहैळे



ता ॥ जावत्ति ॥ करणात् ॥ एसणेत्यादि ॥ वाच्यमित्यर्थं स्तत्र परिकर्मणा वसत्यादि सारवर्णलक्षणेन क्रियमाणेन विशुद्धि र्या सा संयमस्य सा परिकर्मा  
 विशुद्धिः परित्तरणया वस्तादः शास्त्रीयया सेवनया विशुद्धिः परित्तरणाविशुद्धिः ज्ञानादित्यविशुद्धय स्तदाचारपरिपालनतः प्रविशत्तस्या प्रीतिकस्य  
 विशोधि स्तन्निवर्त्तना दणियत्तिविशोधिः सरत्तण संयमार्थं मुपध्यादे स्तेन विशुद्धि शारित्रस्येति सरत्तणविशुद्धि रणवो इमाद्युपाधिका दशप्रकारापीयं  
 चेतसो विशुद्धि विशुद्धमानता भणितेति द्रवानीं चित्तस्येव विशुद्धिविपक्षभूत मुपध्याद्युपाधिका संक्लेश मभिधातु मुपक्रमते तत्र सूत्र ॥ दसेत्यादि ॥  
 संक्लेशो ऽसमाधि रूपधीयत उपपद्यते सयमः सगमिशरीरगा येन स उपधि र्यस्तादि स्तत्तिपय. संक्लेश उपधिसंक्लेश एव मग्यनापि नवरं ॥ उवस्सयत्ति ॥  
 उपाश्रयो वसति स्तथा कषाया एव कषायेर्मा संक्लेशः कषायसंक्लेश स्तथा भक्तपानागितः संक्लेशो भक्तपानसंक्लेश स्तथा मनसो मनसिवा संक्लेशो  
 वाचा संक्लेशः काय माश्रित्य संक्लेशइति विगतर स्तथा ज्ञानस्य संक्लेशो ऽविशुद्धमानता स ज्ञानसंक्लेश एव दर्शनचारित्र्योरपीति एतत्तिपक्षो ऽस  
 क्लेश स्तमधुनाह ॥ दसेत्यादि ॥ कण्ठ मसंक्लेशस्य जिहिष्ठे जीवस्य वीर्यबले सति भयतीति सामान्यतो बलनिरूपणायाह ॥ दसेत्यादि ॥ ओषेन्द्रिया

घाए । दसविहा विसोही पन्नत्ता तंजहा उग्गमविसोही उप्पायणविसोही जाव सारक्कणविसोही । दसवि  
 हेसंकिलेसे प० तं० उवहिसंकिलेसे उवस्सयसंकिलेसे कसायसंकिलेसे जत्तपाणसंकिलेसे मणसंकिलेसे वय

उद्गमविशोधि उत्पादनाविशोधि यावत् सारवर्णविशोधि ॥ दशप्रकारेण संकिलेसकत्तो ते असमाधि ते कहैले उपगणसंकिलेस उपाश्रयसंकिलेस  
 कषाय संकिलेस भक्तपानसंकिलेस मनसो संकिलेस वचनसो संकिलेस कायानो संकिलेस ज्ञानसो संकिलेस दर्शनसो संकिलेस चारित्रसंकिलेस ॥

दीना पचानां बलं स्वार्थग्रहणसामर्थ्यं ॥ जावत्ति ॥ चक्षुरिन्द्रियबलादिवाच्यमित्यर्थः ज्ञानबल मतीतादिवस्तुपरिच्छेदसामर्थ्यं चारित्रसाधनतया मोक्षसाधनसामर्थ्या दर्शनबलं सर्ववेदिवचनप्रामाण्या दतीन्द्रियादियुक्तिगम्यपदार्थरोचनलक्षण चारित्रबलं यदुष्करमपि सकलसंगवियोग करो त्यात्मा यज्ञान त मबाध मेकांतिक मात्यंतिक मा मायत्त मानन्द माप्नोति तपोबलं यदनेकभवार्जित मनेकदुःखकारण निकाचितकर्मग्रथि क्षपयति वीर्य मेव बलं वीर्यबल गमनागमनादिकासु विचित्रासु क्रियासु वर्तते यद्यापनौयमकलकलुषपटल मनवरतानन्दभाजन भवतीति चारित्रबलयुक्त सत्यमेव भाषत इति तन्निरूपणायाह ॥ दसविहेयादि ॥ संत प्राणिनः पदार्था मुनयोऽपि तेभ्यो हित सत्त्वं दशविध तत्प्रज्ञप्त तद्यथा ॥ जणवयगाहा ॥ जणवयत्ति ॥ सत्यशब्दः प्रत्येक मभिसंबन्धनीय स्ततश्च जनपदेषु देशेषु यद्यदर्थवाचकतया कृढ देशातरेपि तत्तदर्थवाचकतया प्रयुज्यमान सत्य मवितथमिति जनपदसत्य यथा कौक

संकिलेसे कायसंकिलेसे नाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चरित्तसंकिलेसे । दसविहे ण्संकिलेसे प० तं० उव हिण्संकिलेस जाव चरित्तण्संकिलेसे । दसविहेवले प० तं० सोइदियवले जाव फासिंदियवले नाणवले दसणवले चरित्तवले तववले वीरियवले दसविहे सच्चे प० तं० जणवयसम्मयठवणा नामेरुवेपमुच्चसच्चेय

दशप्रकारे असंकिलेस कह्या तेकहैछे उपधिअसंकिलेस यावत् चारित्रअसंकिलेस ॥ दश प्रकारे बल कह्या ते कहैछे ओतेंद्रीनुं बल यावत् फरसेंद्रीनुं बल ५ । ज्ञानबल ६ । दर्शनबल ७ । चारित्रनुं बल ८ । तपबल ९ । वीर्यबल १० ॥ दशप्रकारे सत्य कह्यो ते कहैछे जनपद कुलमा पाणीनेपिच्चकहे स म्मत अरविद तेज पकज थापना प्रतिमादि नामकुलवर्द्धन देवदत्तादि रूपवेपमांटे यती प्रत्यप्रसत्य घणोगलेछे व्यवहार रुगरवलेछे जावसत्य जो

णादिषु पयःपित्तनोरमुदकमित्यादि सत्यत्वया स्यादष्टं विवक्षाहेतुत्वा त्रानाजनपदे विष्टार्थप्रतिपत्तिजनकत्वा श्रावहार प्रवृत्ते र्वेयं श्रेष्ठेणपि भावना  
 कार्येति ॥ समद्विष्टि ॥ संमतसत्य तत्तात्वेति संमतसत्य तथाहि कुमुदकयन्त्रयोत्पन्नतामरसाना समाने पकसभवे गोपालादीनामपि समत मरविन्दमेष पं  
 कजमिति अतः स्तम्भारतया पंक्तजम्बु. ससः कृत्तगादा यस्योऽसंमतत्वादिति ॥ उच्यते ॥ स्थाप्यतद्वति स्थापना यत्नेष्यादिकर्माहंदादिगिकान्तेन  
 स्थाप्यते तद्विषये सत्य स्थापनासत्यं यथा अजिनोपि जिनोप मनाचार्यो व्याचार्योयमिति ॥ नामेति ॥ नामाभिधानं तत्तात्वं नामसत्यं यथाकुल मयसंग्रह  
 पि कुलवर्धन उच्यते एव धनवर्धन इति ॥ क्वेति ॥ रूपापेक्षया सत्यं रूपसत्यं यथा प्रपंचयति प्रवर्जितरूपं धारयन् प्रवर्जित उच्यते नचा सत्यतास्येति ॥  
 पञ्चमसंशयः ॥ प्रतीत्या गित्य यस्त्वस्तर सत्यं प्रतीत्य सत्यं यथा अनामिकाया हस्त्वत्वं दीर्घत्वचेति तथाहि तस्या नन्तपरिणामस्य द्रव्यस्य तत्तात्त्विकत्वादि  
 कारणसन्निधाने तत्तद्रूप मभिव्यज्यतद्वति सत्यता ॥ व्यवहारति ॥ व्यवहारेण सत्यं व्यवहारसत्यं यथा दहते गिरि र्गलतिभाजन मयंच गिरिगतदृष्टादि  
 दाहे व्यवहारः प्रवर्तते उदकेषु गलतिसतीति ॥ भावति ॥ भावं भूयिष्ठश्रुक्तादिपर्याय माश्रित्य सत्य भावसत्यं यथा श्रुक्तागलाकेति सत्येपिहि पंचवर्गसं  
 भवे श्रुक्तागोष्ठीकृत्वा षण्णोति ॥ जांति ॥ योगतः संगन्धतः सत्य योगसत्यं यथा दृढयोगा इण्डु षण्णयोगा षण्णएव उच्यतेति दृढम मीपम्यसत्यमिति  
 उपमै मीपम्य स्तेन सत्य मीपम्यसत्यं यथा समुद्रवत्तडाग देवाऽयं सिद्ध स्त्वमिति सर्वत्रेकारः प्रथमैकवचनार्थो द्रष्टव्य इहेति सत्यविषय मृषा ॥ दसेत्यादि ॥  
 मोसेति ॥ प्राकृतत्वात् मृषा अनृतमित्यर्थः ॥ क्रीडेगाहा ॥ क्रीडेति ॥ क्रीडेनिमित्तमिति संगन्धा त्कीधानितं मृषेत्यर्थः तथा यथा क्रीधाभिभूतोऽदासमपि  
 दास मभिधत्तद्वति माने निमित्तं यथा मानभातः कश्चि त्थोनपि दम्पधनोपि पृष्टः सयाह महाधनोहमिति ॥ मायति ॥ मायायां निमित्तं यथा माया  
 कारणभूतय याऽऽ नष्टो गोलक इति ॥ लोहेति ॥ लोभनिमित्तं यणिकप्रभृतीना मन्यथा क्रीतमेवे तथ क्रीतमित्यादि ॥ पिञ्जति ॥ प्रेमणिनिमित्तं अति

रक्तानां दासोह तवेत्यादि ॥ तहेवदोसेयति ॥ द्वेषे निःश्रितं मत्सरिणां गुणवत्यपि निर्गुणोय मित्यादि ॥ हासेति ॥ हासे निश्रित यथा कदर्यिकाणां कस्मि  
 धि कस्यचि त्सम्बन्धिनि गृहीते पृष्ठाना दृष्ट मित्यादि ॥ भयेति ॥ भयनिश्रितं तस्करादिगृहीताना तथा तथा असमंजसाभिधान ॥ अक्वाइयति ॥  
 आख्यायिकानिश्रित तत्प्रतिबद्धो ऽसन्ननाप ॥ उववायनिस्त्रियति ॥ उपघ ते प्राणिवधे निश्रित माश्रित दशम मृषा अचौरे चौरोयमित्यभ्याख्यानवचन  
 मृषागद् स्वय्ययो ऽलिङ्गश्चेति सत्यासत्ययोगे मिश्र वचन भवतीति तदाह ॥ दसेत्यादि ॥ सत्यं च तन्मृषाचेति प्राकृतत्वा त्सञ्चामीसति ॥ उपपन्नमीसएति ॥  
 उत्पन्नविषय मिश्र सत्यमृषा उत्पन्नमिश्र तदेवो त्पन्नमिश्रक यथैक नगर अधिकृत्या स्मि न्नय दशदारका उत्पन्ना इत्यभिदधतस्तन्मृषाधिकभावे व्यव  
 हारतो स्य सत्यमृषात्वात् श्व स्ते शत दास्यामी त्यभिधाय पचाश त्यतिदत्ताया लोके मृषात्वादर्थना दनुत्पन्नेष्वेवा दत्तेष्वेववा मृषात्वसिद्धे' सर्वथा

व्यवहारज्ञावजोगे दसमेतुवम्प्रसञ्ज्ञेय ॥ १ ॥ दसविहे मोसे प० तजहा कोहेमाणेमाया लोनेपिज्जेतहेवदोसेय  
 हासन्नयेष्णकाइय उवघाएनिस्सिएदसमे ॥ १ ॥ दसविहे सञ्चामीसे प० तंजहा उपपन्नमीसए विगयमीसए

गसत्य दस दसमी उपमासत्य समुद्रसरखुंतलावद्धे । एउपमासत्य ॥ १ ॥ दशप्रकारे मृषासत्य कल्या ते कहैछे क्रोधाश्रित १ । मानाश्रित २ । जिम  
 अनामिका आश्रीने दीर्घ अने नाहनीआगुली मायाश्रित ३ । लोनाश्रित ४ । प्रेमथी ५ । तिमद्वेषथी ६ । हास्याश्रित ७ । जयाश्रित ८ । आख्यायि  
 विकथाश्रित ९ । उपघात ते प्राणीबधने आश्री ते खोटु आलदेई हणवो अचौरचौरोयं ॥ १ ॥ दशप्रकारें सत्यामृषा कह्युं ते कहैछे उपन्नमिश्रित ।  
 यथा आ नगरमा सोबालक उपना अधिकाओछा माटे ते सत्यामृषा विगतमिश्रित आ नगरमा दश वृद्धमूआ आनगरमा दश बालक उपना दशवृद्ध

नित्याभावेन सर्वथा व्यत्यया देव विगतादिष्वपि भावनीयमिति १ ॥ विगतमीसएत्ति ॥ विगतविषयं मिश्रकं विगतमिश्रकं ग्राम मधिकृत्या स्मि न्नद्य दश  
 वृद्धाविगता इत्यभिदधतो न्यूनाधिकभावे मिश्रमिति २ ॥ उत्पन्नविगयमीसएत्ति ॥ उत्पन्नश्च विगतं चे त्युत्पन्नविगते तद्विषय मिश्रक मुत्पन्नविगतमिश्रक  
 यथै क पत्तम मधिकृत्या स्मि न्नद्य दश दारका जाता दशच वृद्धा विगता इत्यभिदधत स्तान्यूनाधिकभावइति ३ ॥ जीवमीसएत्ति ॥ जीवविषय मिश्रं सत्या  
 सत्यं जीवमिश्र यथा जीवन्मृतकमिराशौ जीवराशिरिति ४ ॥ अजीवमीसएत्ति ॥ अजीवाना श्रित्य मिश्र मजीवमिश्र यथा तस्मिन्नेव प्रभूतकमिराशा  
 वजीवराशिरिति ५ ॥ जीवाजीवमीसएत्ति ॥ जीवाजीवविषय मिश्रकं जीवाजीवमिश्रक यथा तस्मिन्नेव जीवन्मृतकमिराशौ प्रमाणनियमे नेतावतो जी  
 वये तावन्तश्च मृताइत्यभिदधत स्तान्यूनाधिकत्वे ६ ॥ अणतमीसएत्ति ॥ अनन्तविषयं मिश्रक मनन्तमिश्रकं यथा मूलकदादौ परीत्तपत्रादिम त्यनन्तकायोय  
 मित्यभिदधतः ७ ॥ परित्तमीसएत्ति ॥ परीत्तविषयमिश्रक परीत्तमिश्रकं यथा अनन्तकायलेशवति परीत्ते परीत्तोय मित्यभिदधतः ८ ॥ अष्टामीसएत्ति ॥  
 कालविषय सत्यासत्यं यथा कश्चित् कस्मिंश्चि प्रयोजने सहाया स्वरय न्परिणतप्राये वासर एव रजनोवर्त्ततइति ब्रवीतीति ९ ॥ अउष्टामीसएत्ति ॥ अ  
 ष्टादिवसो रजनीया तदेकदेशः ग्रहरादिः अष्टाष्टा तद्विषय मिश्रक सत्यासत्यं अष्टाष्टामिश्रक यथा कश्चि त्कस्मिंश्चित् प्रयोजने ग्रहरमात्रेण मध्याह्न  
 इत्याह १० भाषाधिकारा त्सकलभाषणीयार्थव्यापक सत्यभाषारूप दृष्टिवाद पर्यायतो दशधाह ॥ दिङ्दिश्यादि ॥ दृष्टयो दर्शनानि वदन् वादो दृष्टीना वा

जीवमीसए अजीवमीसए जीवाजीवमीसए अणतमीसए परित्तमीसए अष्टामीसए अउष्टामीसए । दिङ्दि

मूत्रा जीवमिश्रित जीवतामूत्रा कृमिदेखीजीवराशिकहे ॥ घणाकृमि मृतदेखीअजीवराशिकहे जीवता मूत्रा कृमिदेखी प्रमाणकहीये आतलामूत्रा आ

दो दृष्टिवादो दृष्टीनां वा पातो यस्मि नसौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय इहा ख्यायंतइत्यर्थं स्तस्य दशनामधेयानि नामानौत्यर्थं स्तद्यथा दृष्टिवादइति प्रति  
पादितमेव इतिशब्द उपदर्शने वाशब्दो विकल्पे तथा हिनोति गमयति जिज्ञासित मर्थमिति हेतु रनुमानोत्थापकं लिप्त मुपचारा दनुमानमेववा  
तद्वाटो हेतुवाद स्तथा भूताः सद्भूताः पदार्था स्तेषा वाटो भूतवाद स्तथा तत्त्वानि वस्तूना मैदपर्याणि तेषा वाद स्तत्ववाद स्तथ्योवा सत्योवाद स्तथ्य  
वाद स्तथा सम्यग्विपरौतीवादः सम्यग्वाद स्तथा धर्माणा वस्तुपर्यायाणा धर्मस्य वा चारित्रस्य वादो धर्मवाद स्तथा भाषासत्यादिका तस्याः विचयो नि  
र्णयो भाषाविचय भाषायावा वाचो विजय' समृद्धि र्यस्मिन् सभाषाविजय स्तथा सर्वश्रुता त्पूर्वं क्रियन्तइति पूर्वाणि उत्पादपूर्वादीनि चतुर्दश तेषु गतो  
ऽभ्यतरोभूत स्तत्स्वभावइत्यर्थं इति पूर्वगत स्तथानुयोगः प्रथमानुयोग स्तीथकरादिपूर्वभवादिव्याख्यानग्रन्थो गण्डिकानुयोगश्च भरतनरपतिवंशजातानां  
निर्वाणगमनानुत्तरविमानगमनवक्तव्यताव्याख्यानग्रन्थइति द्विरूपे ऽनुयोगे गतो ऽनुयोगत एतौच पूर्वगतानुयोगगतौ दृष्टिवादाश्चावपि दृष्टिवादतयो  
क्ता वचयवे समुदायोपचारादिति तथा सर्वे विश्वे तेच ते प्राणाश्च द्वौन्द्रियादयो भूताश्च तरवा जीवाश्च पञ्चेन्द्रियाः सत्वाश्च पृथिव्यादयइति इन्द्रे सति

वायस्सणं दस नामधिज्ञा प० तजहा दिष्टिवाएइवा हेतुवाएइवा ज्ञूयवाएइवा तज्ज्ञावाएइवा सज्ज्ञावाएइवा  
धज्ज्ञावाएइवा ज्ञासाविजयेइवा पुष्टगएइवा अणुलुगएइवा सल्लपाणज्ञूयजीवसत्तसुहावहेइवा । दसविहे सत्ये

तला जीवेषु कंदादिकनेविषे प्रत्येक पत्रादिछत्ते अनंतकाय कहे थोफे अनतकायछते प्रत्येककहे वादलनुं अंधारुं देखीदिवसछत्ते रातिपझी कहे को  
ईकप्रयोजने प्रहर १ थये मध्यान्हथयो कहे ॥ दृष्टिवादना दश नाम काहेआ ते कहैछे दृष्टिवाद १ । हेतुवाद २ । ज्ञूतवाद ३ । तथ्यवाद ४ । स

कर्मकारयस्ततस्तेषां सुखं शुभं वा वाच्यतेति सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहः सुखावहत्वञ्च संयमप्रतिपादकत्वात् सत्त्वानां निर्वाणहेतुत्वाच्चेति प्राणादीनां सुखावहो दृष्टिवादो ऽशस्वरूपत्वात् अस्तमेव हि दुःखावहमिति शस्तरूपणायाह ॥ दसेत्यादि ॥ शस्यते तिस्यते ऽनेनेति शस्त ॥ सत्यसिखीगो ॥ शस्य तिस्रक वस्तु तत्र विधा द्रव्यतो भावतश्च तत्र द्रव्यतः स्थावदुण्णते अग्नि रत्नस्यः सच विसह्यशाननापेक्षया स्थावराशस्तं भवति पृथिव्याऽपेक्षया तु परकाय शस्त विपंस्थावरजगमभेद २ लक्षणं प्रतीत २ स्त्री स्त्रीलघुत्वादिः ४ चारो भस्मादिः ५ अष्टं काष्ठीक ६ ॥ भावायति ॥ इह द्रष्टव्यं तेना भावो भावरूपं शस्तं तित्त दित्वाह दुःप्रयुक्ता मकुशल मनो मानस ७ वाच्यचन दुःप्रयुक्तः ८ कायश्च शरीरं दुःप्रयुक्तएव ९ प्रत्यक्ष कायस्य हिंसाप्रयुक्ती राप्तादे रूपकारणत्वात् कायगतणेनैव तद्गुणं द्रष्टव्यमिति अविरतिश्च प्रत्याख्यान मयवा अपिरतिरूपो भावः शस्तमिति १० अविरत्वाद्यो दोषाः शस्तमित्युक्तमिति दीपप्र स्तात्ता ह्यपिशेषनिरूपणायाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ तज्जाएत्यादि वृत्तं ॥ एतेहि गुरुशिष्ययो र्वादिप्रतिवादिनोर्वा वादागत्या एव संप्रत्यते तत्र तस्य गुर्वादे र्जात जातिः प्रकाशोवा जगमर्मकर्मदिनक्षणं तज्जातं तदेवद्रूपण मितिज्ञत्वा दोष स्तज्जातदोष स्थाविधक्तत्वादिना दूषणमित्यर्थो ऽथवा तस्मात् प्रति

पण्यते तंजहा सत्यमग्नीविसंलोणं सिगंहोखारमं विलं दुप्पउत्तोमणोवाया कान्तेजावोयश्चविरई ॥ १ ॥ दसविहे

स्यक्तवाद ५ । धर्मवाद ६ । भाषाविजय ७ । पूर्वगत ८ । अनुजोगगत ९ । सर्वप्राण भूत जीव सत्त्व सुखावह १० ॥ दशप्रकारे शरा कक्षा ते कहैछे अग्निशस्त्र १ । विष २ । लूण ३ । स्त्री तैल घृत ४ । चार भस्मादि ५ । काजी प्रमुख खाटु ६ । माठाराते प्रवर्तार्या मन ७ । वचन ८ । काया ९ । एता शस्त्र अविरति १० ॥ १ ॥ दशप्रकारे दीप कक्षो तेकहैछे तज्जातदोष जातिकुलनुं दूषण देवूं १ । सतिजंग बुद्धिनो नाशविस्मृतलक्षण २ । प्र

वाद्यादेः सकाशाज्जातः क्षीमा म्बुलस्तम्भादिलक्षणो दोषः स्तज्जातदोषः १ स्तथा स्वस्यैव मते बुद्धे भङ्गो विनाशो मतिभङ्गो विस्मृत्यादिलक्षणो दोषो मति  
भगदोषः २ स्तथा प्रशास्ता ऽनुशासको मर्यादाकारी सभानायकः सभ्योवा तस्मा द्विष्टा दुपेक्षका वा दीपः प्रतिवादिनो जयदानलक्षणो विस्मृतप्रमेय  
प्रतिवादिनः प्रमेयस्मारणादिलक्षणोवा प्रशास्तृदोषः ३ इह याशब्दो लघुश्रुतिरिति तथा परिहरण मनासेवा स्वदर्शनस्थित्या लोकरूढ्यावा ऽनासेव्यस्य  
तदेवदोषः परिहरणदोषो ऽथवा परिहरण मनासेवन समारूढ्या सेव्यस्य वस्तुन स्तदेव तस्मा वा दोषः परिहरणदोषो ऽथ वादिनोपन्यस्तस्य दूषणस्या स  
म्यग्परिहारो जात्युत्तरपरिहरणदोषइति यथा बौद्धेनोक्तं मनित्यः शब्दः कृतकत्वात् घटवदिति अत्रमीमांसकः परिहारमाह ननु घटगत कृतकत्वं शब्दस्या  
नित्यत्वसाधनायो पन्यस्यते शब्दगतवा यदि घटगत तदा तच्छब्दे नास्तीत्यसिद्धताहेतो रथ शब्दगत तत्रा नित्यत्वेन व्याप्त सुपलब्ध मित्यसाधारणा नैकान्ति  
कोहेतु रित्ययं न सम्यक्परिहार एवहि सर्वानुमानोच्छेदप्रसङ्गः अनुमानहि साधनधर्ममात्रा साध्यधर्ममात्रनिर्णयात्मक मन्यथा धूमा दनलानुमानमपि न  
सिध्येत् तथाह्यग्नि रत्र धूमा यथा महानसे अत्र विकल्पति किमत्रेति शब्दनिर्दिष्टपर्वतैकप्रदेशादिगतधूमो ऽग्निसाधनायो पात्त उत ॥ महानसगतो यदि पर्व  
तादिगतः सो ऽग्निना न व्याप्तः सिद्ध इत्यसाधारणानैकान्तिकोहेतु रथ महानसगत स्तदा नासौपर्वतैकदेशे वर्तत इत्यसिद्धोहेतुरिति अथ परिहरणदोष  
इति ४ तथा लक्ष्यते तदन्यव्यपेक्षेना वधार्यते वस्त्व नेनेति लक्षण स्वञ्चतल्लक्षणञ्च स्वलक्षणं यथा जीवस्योपयोगो यथावा प्रमाणस्य स्वपरावभासकज्ञानत्व  
तथा करोतीति कारण परोक्षार्थनिर्णयनिमित्त सुपपत्तिमात्रं यथा निरुपमसुखः सिद्धो ज्ञानानावाधप्रकर्षात् नात्र किल सकललोकप्रतीतः साध्यसाधन  
धर्मानुगतो दृष्टान्तो स्तीत्युपपत्तिमात्रता दृष्टान्तसद्भावे ऽस्यैव हेतुव्यपदेशः स्यात् तथा हिनोति गमयतीति हेतुः साध्यसद्भावभावतदभावाभावलक्षण स्ततः  
स्वलक्षणादौना इह स्तेषां दोषः स्वलक्षणकारणदोष इह काशब्दो कन्दोर्य दिवङ्गो ध्येयो ऽथवा सहलक्षणेन यो कारणहेतू तयो र्दोषइति विग्रह स्तत्र लक्षण



॥ दोषो ऽव्याप्तिरतिव्याप्तिर्वा तत्रा व्याप्तिर्यथायस्यार्थस्यसन्निधानासन्निधानाभ्यां ज्ञानप्रतिभासभेदस्तत् स्वलक्षणमितीदं स्वलक्षणलक्षणमिदं द्वयप्रत्यक्षमेवाश्रित्य स्यान्न योगिज्ञानं योगिज्ञानेहि न सन्निधानासन्निधानाभ्यां प्रतिभासभेदोऽस्तीत्यतस्तदपेक्षया निकृष्टं स्वलक्षणस्यादिति अतिव्याप्तिर्यथा अर्थोपलब्धिहेतुः प्रमाणमितिप्रमाणलक्षणमिह चार्थोपलब्धिहेतूनां चक्षुर्दध्योदनभोजनादीनामानत्येन प्रमाणेयत्ता न स्यादथवा दार्ष्टान्तिकोऽर्थो लक्ष्यते ऽनेनेति लक्षणदृष्टान्तस्तद्दोषः साध्यविकलत्वादिस्तत्र साध्यविकलता यथा नित्यशब्दो मूर्त्तत्वात् घटवदिह घटे नित्यत्वं नास्तीति कारणदोषः साध्यम्प्रति तद्व्यभिचारो यथा अपौरुषेयो वेदो वेदकारणस्याश्रूयमाणत्वादित्यश्रूयमाणत्वं हि कारणान्तरादपि सम्भवतीति हेतुदोषो सिद्धविरुद्धानैकान्तिकत्वलक्षणस्तत्रा सिद्धो यथा ऽनित्यशब्दश्चाक्षुषत्वात् घटवदित्यत्र चिच्छाक्षुषत्वशब्देन सिद्धं विरुद्धे यथा नित्यशब्दकृतकत्वात् घटवदिह घटे कृतकत्वं नित्यत्वविरुद्धमनित्यत्वमेव साधयतीति अनैकान्तिको यथा नित्यशब्दप्रमेयत्वादिविह प्रमेयत्वमनित्येष्वपि वर्त्तते ततः सशय एवेति तथा सत्तामणप्रस्तुतप्रमेये प्रस्तुतप्रमेयस्य प्रवेशनप्रमेयान्तरगमनमित्यर्थः अथवा प्रतिवादिमते आत्मनः सत्तामणपरमताभ्यनुज्ञानमित्यर्थस्तदेव दोष इति तथा निग्रहस्थलादिना पराजयस्थानसएव दोषो निग्रहदोष इति तथा वसतसाध्यधर्मसाधनधर्मा यत्रेति वस्तुप्रकरणात् पक्षस्तस्य दोषः प्रत्यक्षनिराकृतत्वादि र्यथा ऽव्यावणः शब्दः शब्दे ह्यव्यावणत्वप्रत्यक्षनिराकृतमिति एतेषामेव तज्जातादिदोषाणां सामान्यतो भिहितानां तदन्येषां

दोषे पणत्वे तंजहा तज्जायदोसेमङ्गलगदोसे पसथारदोसेपरिहरणदोसे सलखणक्कारणहेउदोसे संकामणं शास्ता मर्यादाकारी सज्जानायकनो दोष ३ । परिहरणदोषवादिप्रतिवादिनो मुखस्तभादिअनासेव्यवस्तुनं सेववु ४ । स्वलक्षणदोष उपयोगलक्षण



१० ॥

११ ॥

इति इहै कार्थिकविशेषग्रहणेना नेकार्थिकोपि गृहीत स्तद्विपरीतत्वा नचेद्वासी गण्यते दशस्थानकानुरोधा दधवा कथंचि देकार्थिके शब्दग्रामे यः कथ  
 चिद्भेदः स विशेषः स्यादिति प्रक्रमः ॥ इत्युत्तिपूरणे ॥ यथा शक्रः पुरन्दर इत्यत्रै कार्थे शब्दद्वये शकनकालएव शक्रः पूर्दारणकालएव पुरन्दर एवभूतनया  
 देशादिति अथवा दोषशब्द इहापि सम्बध्यते ततश्च न्यायोद्ग्रहणे शब्दान्तरापेक्षयै कार्थिकः शब्दो नाम यो दोषइति अयमपिच दोषसामान्यापेक्षया वि  
 शेषइति ४ तथा कार्यकारणात्मके वस्तुसमूहे कारणमिति विशेषः कार्यमपि विशेषो भवति नचे होक्तो दशस्थानकानुवृत्ते स्तथा कारणे कारणविषये वि  
 शेषो भेदो यथा परिणामि कारण मृत्पिण्डो ऽपेक्षाकारण दिग्देशकालाकाशपुरुषचक्रादि अथवा पादानकारण मृदादिनिमित्तकारण कुलालादि स  
 हकारिकारण चक्रचीवरादौ त्यनेकधा कारण मथवा दोषशब्दसबन्धात् पूर्वव्याख्यातः कारणदोषो दोषसामान्यापेक्षया विशेषइति च' समुच्चये ५ त  
 था प्रत्युत्पन्नो वार्त्तमानिको ऽभूतपूर्व इत्यर्थो दोषो गुणेतर सचा तीतादिदोषसामान्यापेक्षया विशेषो ऽथवा प्रत्युत्पन्ने सर्वथा वस्तु न्यभ्युपगते विशेषो  
 यो दोषे ऽकृताभ्यागमकृतविप्रणाशादिः स दोषसामान्यापेक्षया विशेषइति ६ तथा नित्यो यो दोषो ऽभव्याना मिथ्यात्वादि रनाद्यपर्यवसितत्वात् स दो  
 पसामान्यापेक्षया विशेषो ऽथवा सर्वथा नित्ये वस्तुनि अभ्युपगते यो दोषो बालकुमाराद्यवस्थाभावापत्तिलक्षणः स दोषसामान्यापेक्षया दोषविशेषइति

### दोसेणुगठिएइय । कारणेयपद्रुप्पन्ते ।

ते अतीतादिकालनी अपेक्षाधीविशेष अथवा सर्वथा अगीकृतवस्तुमा विशेष दोष अकृताभ्यागमकृतविप्रणाशादि ते प्रत्युत्पन्नदोष ६ । नित्यदोष जे  
 ज्ञातदोष १ । दोषपूर्वोक्त मतिजगादिक आठ ग्रहण करवा दोष सामान्यकी अपेक्षाधी विशेषथाय २ । अथवा शेषदोषमा विशेष जेद अनेक प्र

७ तथा ॥ ह्यिहमेति ॥ अकारपक्षेपा दधिकं वादकाले यत् परप्रत्यायन प्रत्यातिगितं दृष्टान्तनिगमनादि स्तदोप स्तदन्तरेणैव प्रतिपाद्य प्रतीते स्तदभिधानस्या नर्थकत्वादिति आह च जिणवयणसिद्धचे वभणएकत्वेउदाहरणं आसज्जउसोयारं हेजविकहिचिभणेज्जा ॥ १ ॥ तथा कत्यइपचावयव दस हावासव्वहानपडिकुठुमिति ॥ ततश्चा धिको दोषो दोषविशेषत्वा द्विशेषइति अथवा धिके दृष्टान्तादौ सति यो दोषो दूषण वादिनः सोपि दोषविशेष एवाय चाष्टम आदितो गण्यमानइति ८ ॥ अतएव ॥ आत्मना कृतमिति शेष स्तयो पनोत प्रापितं परेणेति शेषो वस्तुसामान्यापेक्षया तत्कृतच विशेष, परोपनोतश्चा परोविशेष इतिभाव सकारयो विशेषशब्दस्यच प्रयोगो भावनावाक्येन दर्शितो ऽथवा दोषशब्दानुवृत्ते रात्मना कृतो दोषः परोपनोतश्च दोषइति दोषसामान्यापेक्षया विशेषा वेता मिति एव न्ते विशेषा दृश्यभवन्तीति इहा दर्शपुस्तकेषु ॥ निच्चेह्यिहमेति ॥ दृष्ट न च तथा द्रौप्यन्तइति निच्चेइति व्याख्यात इहो क्तरूपाविशेषादयो भावा अनुयोगगम्या अनुयोगश्च र्थतो वचनतश्च तत्रा र्थतोयथा अहिंसासंजमीतवां ॥ इत्यत्रा हिंसादोना स्व रूपभेदप्रतिपादन वचनानुयोग स्वयमेव शब्दाश्रितोविचारइति तदिहवचनानुयोग भेदतआह ॥ दसेत्यादि ॥ शुद्धा अनपेक्षितवाक्यार्था यावाक् वचनं सूत्रमित्यर्थं स्तस्या अनुयोगो विचार शुद्धवागनुयोग सूत्रेचा ऽपुंवद्भाव प्राकृतत्वा तत्र चकारादिकाया, शुद्धवाचो यो नुयोगः स चकारादिरेव व्यपदेश्य स्तत्र ॥ चकारेति ॥ अत्रा नुस्वारो लाक्षणिको यथा ॥ सुक्केसणिचरेइत्यादौ ॥ तत चकारइत्यर्थं स्तस्यचा नुयोगो यथा चशब्दः समाहारेतरैतरयोगसमु

दोसेनिच्चेह्यिहमे ॥ १ ॥ अतएवावणीएय विसेसेनीयतेदस ।

अजव्य पुरुषोने किथ्यात्व अनाद्यपर्यवसितपणा माटे नित्यत्वे ७ । वादकालमां परप्रत्यायनार्थं जे दृष्टान्त निगमनादि कहवा तेनोदोष ८ । आत्म

ययान्वाचयाधारणपादपूर्णाधिकवचनादिष्विति तत्र ॥ इत्थीप्रोसयणाणियत्ति ॥ इहसूत्रे चकारः समुच्चयार्थः स्त्रीणां शयनानां चापरिभीग्यतातुल्य  
 त्वप्रतिपादनार्थः ॥ मकारेति ॥ मकारानुयोगी यथा ॥ समणवामाहणवत्ति ॥ सूत्रे मा शब्दो निषेधे अथवा ॥ जेणामेव समणे भगव महावीरे तेणामेवे  
 ति ॥ पन सूत्रे आगमिक एव येनैवे त्यनेनेव विवक्षितप्रतीतेरिति २ ॥ पिकारेति ॥ पकारलोपदर्शनेना नुस्वारगमेनचा पि शब्द उक्त स्तदनुयोगी य  
 ना अपि सभावनानिग्रत्यपेक्षासमुच्चगगर्ताशिचामर्षणभूषणप्रश्लेष्विति तत्र ॥ एवपिएगेप्रासारे ॥ इत्यन सूत्रे एवमपि अन्यथापीति प्रकारान्तरसमुच्चया  
 र्थी ऽपिशब्दइति ३ ॥ सेयकारेति ॥ इहा प्यकारो ऽलाक्षणिक स्तेन सेकारइति तदनुयोगी यथा ॥ सेभिक्लवे ॥ त्यत्र से शब्दो ऽपार्थी ऽथशब्दश्च प्रकि  
 यापन्नानन्तर्यमगलोपस्यासप्रतिवचनसमुच्चयेन त्यानन्तर्यार्थं से शब्दइति क्वचि दसातित्यर्थः क्वचित् तस्येत्यर्थी ॥ ऽथवा सेयंकारइति ॥ अथ इत्येतस्य  
 कारण सेयस्कारः अथस उच्चारणमित्यर्थं स्तदनुयोगी यथा ॥ सेयमेप्रहिज्जिओप्रज्जायण ॥ मित्वन सूत्रे अयोऽतिशयेन प्रशस्यं कल्याणमित्यर्थी ऽथवा ॥ सेयका  
 ले अ त्स्यानाभिभवइ ॥ इत्यत्र सेयशब्दो भविष्यर्थः ४ ॥ सायकारेति ॥ सायमिति निपातः सत्याये स्तस्मा द्वर्णात्कारइत्यनेन छान्दसत्वा त्वाप्रत्ययः कर  
 णना कार स्ततः सायकार इति तदनुयोगी यथा सत्य तथा वचनसङ्गावग्रश्लेष्विति एतेच चकारादयो निपाता स्तेषा मनुयोगभरणं शेषनिपातादिशब्दा  
 नुयोगोपलक्षणार्थमिति ॥ एगत्तेति ॥ एकत्वमेकवचन तदनुयोगी यथा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि ओक्षमार्गं इत्यत्रैकवचन सम्यग्दर्शनादीना समुदि

दसविहे सुद्धावायाणुजोगे पस्सत्ते तजहा ।

कृतदोष ८ । परोपनीत जे परप्रापितदोष १० ॥ दशप्रकारे शुद्धवचनानुयोग कल्पो ते कहैखे संयूथ समास ८ । सक्रामित ८ । भिन्नतेक्रमकालजेदा

तानामेवै कमीक्षमार्गत्वख्यापनार्थं मसमुदितत्वेत्वमीक्षमार्गतेति प्रतिपादनार्थमिति ६ ॥ पुहस्येति ॥ पृथक् भेदो द्विवचनबहुवचनेत्यर्थं स्तदनुयोगो यथा ॥  
 धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायदेसे धम्मत्थिकायप्पदेसा ॥ इह सूत्रे धर्मास्तिकायप्रदेशा इत्येत बहुवचन तेषा मसख्यातत्वख्यापनार्थमिति ७ ॥ संजुहेति ॥ संगतं  
 युक्तार्थं यूथ पदानां पदयो र्वा समूहः संयूथ समास इत्यर्थं स्तदनुयोगो यथा सम्यग्दर्शनशुभ्र सम्यग्दर्शनेन सम्यग्दर्शनाय सम्यग्दर्शनाद्वा शुभ्रसम्यग्दर्शनशुभ्र  
 मित्यादि रनेकधेति ८ ॥ सकामियत्ति ॥ सकामित विभक्तिवचनाद्यन्तरतयापरिणामित तदनुयोगो यथा साङ्गणवन्दणेणं नासइपावअसकियाभावा ॥  
 इहसाधूना मित्येतस्या' षड्याः साधुभ्यः सकाशादित्येव लक्षण पञ्चमौत्वन विपरिणामं कृत्वाअशकिताभावा भवतीत्येतत्पद सम्बन्धनीयं तथा अच्छदाजे  
 नभुजति नसेच्चाइत्तिबुद्ध ॥ इत्यत्र सूत्रे न सत्यागौ त्युच्यत इत्येकवचनस्य बहुवचनतया परिणामं कृत्वा नते त्यागिन उच्यत इत्येवं पदवटना कार्येति ९  
 भिन्न मिति क्रमकालभेदादिभिर्भिन्नं विसदृशं तदनुयोगो यथा तिविहतिविहेणमिति ॥ सग्रह मुक्ता पुन मणेण मित्यादिना तिविहेणति विवृतमिति  
 क्रमभिन्न क्रमेणहि तिविहमित्येत न करोमो त्यादिना विवृत्य तत स्त्रिविधेनेति विवरणीय भवतीति अस्यच क्रमभिन्नस्या नुयोगीय यथा क्रमविवरणेहि  
 यथासख्यदोषः स्यादिति तत्परिहारार्थं क्रमो भेद स्तथाहि नकरोमि मनसा नकारयामि वाचा कुर्व्वतं नानुजानामि कायेनेति प्रसज्यते अनिष्टञ्चै तत्प्रत्येक  
 पञ्चस्यै वेश्त्वा तथाहि मन'प्रभृतिभिर्न करोमि तैरेव न कारयामि तैरेव ना नुजानामीति तथा कालतो भेदो तीतादिनिर्देशे प्राप्ते वर्त्तमानादिनिर्देशो

चकारे मंकारे पिकारे सेयंकारे सायंकारे एगत्ते पुज्जते संजुहे संकामिए जित्ते । दसविहे दाणे प० तंजहा

चकार १ । मकार २ । अपिकार ३ । श्रेयस्कार ४ । सायंकार ५ । एकत्व ६ । पृथक् ७ । संयूथ समास ८ । सकामित ९ । जित्ते क्रमकालभेदादि १० ॥

यथा जम्बूद्वीपजलयादिषु ऋषभस्तामिन माणित्य ॥ सकेदेविदेदेवराथायदहनमसृजति ॥ सूते तदनुयोगशायं वर्त्तमाननिर्देशं स्तिकांलभाविष्यपि तीर्थकरे  
 श्वेतयात्रादर्शनार्थ इति श्रुत्वा दीपादिसूत्रं च मन्यतापि धिमर्शनीयं गभीरत्वा दस्येति वागनुयोगतः स्वर्थानुयोगः प्रार्त्तत इति दानलक्षणस्यार्थस्य भेदाना  
 मनुयोगमाह ॥ दसेत्यादि ॥ अणुत्तपेयादि श्लोकः सार्द्धः ॥ गणुत्तपेति ॥ दानशब्दसंबन्धा दनुकपया कृपया दानं दीनानाथविषय मनुकम्पादान मथवा  
 ऽनुकपातो यद्दानं तदनुकपे वीपचारा दत्ताच्च वाचकमुख्ये रुमास्वातिपूज्यपादेः कृपणेऽनाथदरिद्रे व्यसनप्राप्ते चरोगशोकहृते यद्दीयते कृपायां दनुकपा  
 तज्ञवेदान ॥ १ ॥ संग्रहणं संग्रहो व्यसनादौ सत्तागकरणं तदर्थं दानं संग्रहदानं मथवा भेदा दानमपिसंग्रह उच्यते आह च अभ्युदये व्यसने वा यत्किंचिद्दी  
 यते सहायार्थं तत्संग्रहो भिमत मुनिभिर्दानममोक्षायेति ॥ २ ॥ तथा भया यद्दानं तदज्ञदानं भयनिमित्तत्वात् दानमपि भय उपचारादिति  
 उक्तं च राजारनपुरोहित मधुसूक्तमावत्तदुपाधिषु च यद्दीयते भयार्थां तदज्ञदानं च विज्ञेयमिति ॥ ३ ॥ कालुणिपदयति ॥ कारुण्यं शोक स्तेन पुनवि  
 योगादिजनितेन तदौगस्यैव तत्पादेः स जन्मान्तरे मुक्तिर्लोभवत्त्विति वासनातो ऽन्यस्य वा यद्दानं तत्कारुण्यदानं कारुण्यजन्यत्वात् दानमपि कारुण्यं सुक्त  
 उपचारादिति ॥ ४ ॥ तथा लज्जया क्रिया दानं यत्तत्तज्जादानं मुच्यते उक्तं च अभ्यर्थितपरिणतं यद्दानं जनसमूहमध्यगतः परचित्तरक्षणार्थं लज्जाया  
 स्तज्ञवेदानमिति ॥ ५ ॥ गारवेण चिति ॥ गौरवेण गर्वेण यद्दीयते तद्दीरवदानमिति उक्तं च नटनर्त्तमुष्टिकेभ्यो दानसंबन्धिवन्मुनिभ्यः यद्दीयते यशोर्थं

अणुकपासंगहेचेव जयाकालुणिपुतिय लज्जाएगारवेणंच अधम्मेपुणसत्तमे ॥ १ ॥ धम्मेयअठमे बुत्ते काहि

दशप्रकारे दानं कस्यो ते कहेच्छे अनुकंपादान १ । संग्रहदानं कष्टभावे सखाईकरे ते दीये भयं दीजे राजादिने शोकपीदीजे ते पुत्रमरणादिके शय्या

गर्वेणतुतद्भवेदानं ॥ ६ ॥ अधर्मपोषक दान मधर्मदान मधर्मकारणत्वा द्वा धर्मएवेति उक्तञ्च हिंसानृतचौर्योद्यत परदारपरिग्रहप्रसक्तेभ्यः यद्दीयतेहिते  
 षा तज्जानौयादधर्मायेति ॥ ७ ॥ धर्मकारण यद्धर्मदान धर्मएववा उक्तञ्च समष्टणमणिमुक्तेभ्यो यद्दानदीयतेसुपात्रेभ्यः अक्षयमतुलमनन्तं तद्दानभवतिधर्मा  
 येति ॥ ८ ॥ काहीइयत्ति ॥ करिष्यति कचनो पकारं ममायमिति बुद्ध्या यद्दान तत्करिष्यतीति दान मुच्यते ॥ ९ ॥ तथा कृत ममानेन तत्प्रयोजनमिति  
 प्रत्युपकारार्थं यद्दान तत् कृतमिति दानमुच्यते उक्तञ्च शतशःकृतोपकारो दत्तंचसहस्रशोममानेन अहमपिददामिकिञ्चि अत्युपकारायतद्दानमिति ॥ १० ॥  
 उल्लङ्घना दानाच्छुभाशुभागति भवतीति सामान्यतो गतिनिरूपणायाह ॥ दसेत्यादि ॥ निरयगतिति ॥ निर्गता अयाच्छुभादिति निरया नारकास्तेषा  
 गति र्गम्यमानत्वान्नरक स्त द्रतिनामकर्मोदयसपाद्यो नारकत्वलक्षणः पर्यायविशेषो वेति निरयगति स्तथा निरयाणा नारकाणा विग्रहात् चैत्रवि  
 भागानतिक्रम्य गति र्गमन निरयविग्रहगतिः स्थितिनिवृत्तिलक्षणा ऋजुवक्ररूपा विहायोगतिकर्मापाद्यावेति एव तिर्यग्गनरनाकिनामपीति ॥ सिद्धिग  
 इति ॥ सिद्धान्ति निष्ठितार्था भवति यस्यां सा सिद्धिः सा चासौ गम्यमानत्वा द्रतिश्चेति सिद्धिगति लोकागूलक्षणा तथा ॥ सिद्धविग्रहगइति ॥ सिद्धस्य  
 मुक्तस्य विग्रहस्या काशविभागस्या तिक्रमेण गतिर्लोकान्तप्राप्तिः सिद्धविग्रहगतिरिति विग्रहगति वक्रगति रप्युच्यते परं सिद्धस्य सा नास्तीति तत्सा

ईयक्रयतिय । दसविहा गई प० त० निरयगई निरयविग्रहगई तिरियगई तिरियविग्रहगई एवं जावसि

दिदान लाजे माणसमां दीजे गर्वे अहंकारे दीजे अधर्मदान पापीने देवूं ॥ १ ॥ धर्मदान आठमूं कहुं ते सुपात्रे देवूं ८ । क्रोधेदीइं ९ । उपगारकस्यो  
 तेहनें दीये १० ॥ दशप्रकारे गति कही तेकहैछे नरकगति १ । नरकविग्रहगति तीर्यचगति इम यावत् सिद्धगति सिद्धविग्रहगति ॥ दश मुक्तकह्या ते



हचर्या नारकादीना मयसी न व्याख्यातेति मथवा द्वितीयपदै नारकादीनां वक्रगति रक्ताप्रथमैस्तु निर्विशेषणतया पारिशेष्या दृजुर्गतिः ॥ सिद्धिग  
इति ॥ सिद्धौ गमन निर्विशेषणत्वाच्चा नेन सामान्या सिद्धिगति रक्ता ॥ सिद्धविग्नहगइति ॥ सिद्धा वधिग्रहेणा वक्रेण गमनं सिद्धविग्नहगति रनेनच  
विशेषापेक्षायां विगिष्टा सिद्धिगति रक्ता सामान्यविशेषविवक्षया वा नयो भेद इति सिद्धिगति मुंडानामेव भवतीति मुडनिरूपणायाह ॥ दसेत्यादि ॥  
मुण्डय त्यपनयतीति मुण्डः श्रोत्रेन्द्रियादिभेदा दृशधेति शेष सुगमं मुण्डा दशेति सख्यान मत स्तद्धिधय उच्यते ॥ दसेत्यादि ॥ परिक्रमगाहा ॥ परिकर्म सक  
लिताद्यनेकविध गणितज्ञप्रसिद्ध तेन य तसख्येयस्य सख्यान परिगणन तदपि परिकर्मं त्युच्यते १ एव सर्वत्रेति व्यवहारः श्रेणीव्यवहारादिः पाटीगणि  
तप्रसिद्धो ऽनेकधा २ ॥ रज्जुत्ति ॥ रज्जा यत्सख्यान तद्रज्जुरभिधीयते तच्च क्षेत्रगणित ३ ॥ रासिति ॥ धान्यादे रक्तर स्तद्धिधयसख्यान राशि सच पाथ्य  
राशि व्यवहार इति प्रशिष्टः ४ ॥ कलासवर्णयति ॥ कलाना मगाना सवर्णन सवर्णसदृशौकरणं यस्मिन् सख्याने तत्कलासवर्ण ॥ जावतावइति ॥ जावताव  
त्तिवा ॥ गुणकारोत्तिवा ॥ एगडमिति वचनात् गुणकार स्तेन यत्सख्यान तत्तथै वोच्यते तच्च प्रत्युत्पन्नमिति लोकरूढ मथवा यावत कुतोपि तावतए

द्वगई सिद्धविग्नहगई । दस मुंठा प० तजहा सोइंदियमुंठे जाव फासिदियमुंठे कोहे जाव लोजमुंठे सिरमुंठे  
दसविहे सखाणे प० त० परिकर्मववहारे रज्जुरासीकलासवन्नेय जावतावतिवग्गो घणोयतहवग्गवग्गोवि

कहैछे श्रोत्रेन्द्रीमुठ यावत् फरसनेद्री मुठ क्रोधमुठ यावत् लोजमुठ मस्तकमुठ ॥ दशप्रकारे सख्या कही ते कहैछे संकलनादिअनेक गणित तेपरिकर्म  
व्यवहार पाटीगणित राजनुगणित रासीगणित धाननोद्विगनु कला सवर्ण गणित अज्ञानुं एकठु करवू जावताव गणित जेतलु गणितके वर्ग बेनी ।

व गुणकारा यादृच्छिकादित्यर्थे' यत्र विवक्षित संकलनादिक मानीयते तस्यावत्तावत्संख्यानमिति तत्रो दाहरण गच्छोवाञ्छाभ्यस्तो वाञ्छयुतो गच्छमगुं.काये द्विगुणो कृतवांश्च हते वदंतिसकलितमाचार्याः ॥ १ ॥ अत्र किल गच्छोदश १० तेच वाञ्छया यादृच्छिकगुणकारेणा षट्केना भ्यस्ता जाता ऽशौति ८० ततो वाञ्छायुता स्ते अष्टाशौति ८८ पुनर्गच्छेन दशभिः संगुणिता अष्टौ शता न्यशौत्यधिकानि जातानि ततो द्विगुणीकृतेन यादृच्छिकगुणकारेण षोडशभिर्भागे हते य संभवते त दशाना सकलितमिति ५५ इदं च पाटीगणित श्रूयते इति ६ तथा वगः संख्यानं यथा द्वयोर्वर्गं चत्वारः सदृश द्विराशिघात इति वचनात् ७ ॥ घणोयति ॥ घनं संख्यानं यथा द्वयोर्घनो ऽष्टौ समत्रिराशि हतिरिति वचनात् ८ ॥ वगावमोति ॥ वर्गस्य वर्गो वर्गवर्गः सच संख्यानं यथा द्वयोर्वर्गं चत्वारः चतुर्णां वर्गं षोडशेति अपिशब्दः समुच्चये ९ ॥ कप्पोयति ॥ गायत्रिकं तत्र कल्पश्चेद्. क्रकचेन काष्ठस्य तद्विषयं संख्या न कल्पयन् यत् पाठ्या क्रकचव्यवहार इति प्रसिद्धमिति इह च परिकर्मादौनां केपाचि दुदाहरणानि मन्दबुद्धौना दुरवगमानि भविष्य त्यतो न प्रदर्शितानीति १० दशमुख्या उक्ता स्तेच प्रत्याख्यानतो भवतीति प्रत्याख्याननिरूपणायाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ प्रतिकूलतया आमर्यादया ख्यान प्रकथनं प्रत्याख्यान निवृत्तिरित्यर्थः ॥ अणागयगाहा ॥ सार्हा ॥ अणागयति ॥ अनागतकरणा दनागत पर्युषणादा वाचार्यादि वैयाहत्यकरणान्तरायसद्भावा हारत एव त तप करणमित्यर्थः उक्तं च होहीपज्जोसवणा ममयतया अनराइयहांजा गुत्तवेयावच्चेण तवस्सिगेलसुयाएव ॥ १ ॥ सोदाइतवोकम्प पडिवज्जइत

॥१॥ कप्पोय ॥ दसविहे पञ्चरकाणे पस्सत्ते तजहा अणागयमइक्कंतं कोप्पीसहियनियंठियंचेव सागारमणागारं

घनसंख्या वर्ग चार तदुणोवर्गं तिम नोवर्गं नोवर्गं वेवेनो कल्पसंख्या पदकरवा ॥ १ ॥ दशप्रकारे पचखाणा कट्ठा ते कहैछे अनागतजे आगतथीतप

प्रणागएकाने एयपशक्लाणं प्रणागयहोइनायव्यंति ॥ २ ॥ अद्रक्तति ॥ एव मेवातीति पर्युषणादौ करणा दतिकांतं आहव पज्जोसवणाएतय जोखलु  
नकरेइकारणज्जाण गुसवेयापचेणं तयस्सिगेनगयाएवं ॥ १ ॥ सोदाइतयोक्कम पडिअणइतअइच्छिइकाले एवंपशक्लाण अद्रक्तंतोइनायव्यंति ॥ २ ॥  
कोडोसहियति ॥ कोटोभ्या मेकस्य चतुर्थादे रन्तविभागी ऽपरस्य चतुर्थादे रेवा रभविभागइत्येवं लक्षणाभ्यां संहितं मिलित युतां कीटोसहितं मिलितो  
भयप्रत्याख्यान कोटे चतुर्थादेः करणमित्यर्थं प्रभाणिच पडुणप्रोउद्विसो पशक्लाणस्सनिहुणओय जहितंसमेतिदांगिउ तंभणइकोडिसहियतुति ॥ १ ॥  
॥ नियट्टियति ॥ नितरा यनितं प्रतिज्ञातदिनादौ ज्ञानत्वात्तरायभावेपि निगमा लार्त्तव्यमिति हृदय एतस्य प्रथमसहननानामेवे त्यभिधायित मा  
सेमासेयतवो असुगोप्रमुगद्विसोएयइओ हृत्तेणगिलाणेणच कायव्योजावउस्सासो ॥ १ ॥ एयपशक्लाण नियठिगधीरपुरिसपणत्तं जगिणहंतिणगारा  
गणिस्सियप्पाअपडिवडा ॥ २ ॥ चउटमपव्योजिणक पिणसुपढमभिचेवसघयणे एगवोच्छिणंखलु थेरावितयाकरेसीयत्ति ॥ ३ ॥ सागारति ॥ आगियत  
इत्याकाराः प्रत्याख्यानापवादयेतवो नाभोगाद्या स्ते राकारेः सहेति साकार ॥ अणागारंति ॥ अविद्यमाना आकारा महतराकारादयो निच्छिन्न  
प्रयोजनत्वा त्प्रतिपत्तु र्यस्मिं स्तदनाकार ताप्यनाभोगसहसाकारावाकारौ स्याता मुखे ऽङ्गुल्यादिप्रक्षेपसभवादिति ॥ परिमाणकडति ॥ परिमाणं  
सव्यानं दत्तितयलण्टइभिचाटीना ज्जतं यस्मिं स्तात्परिमाणकृतमिति यदाह दत्तौहिकवलेहिं घरेहिंभिवणात्तिअहवद्वेहिं जोभत्तपरिणाय करेइ  
परिमाणकडमेयति ॥ १ ॥ निरवसेसति ॥ निर्गत माशेष मपि अल्पाण म प्यशनाद्याहारजात यस्मा त्तन्निरवशेषवा सर्वमशनादि तत्तिपयत्वा निर  
वशेषमिति अभिहितच सव्यंअसणसव्व चपाणगसव्वखज्जापेज्जाविहि परिहरइसव्वभावे येयभणियंनिरवसेसंति ॥ १ ॥ सकोसचिवत्ति ॥ केतनं केतशिक्क  
मगुष्टमुट्टिगुन्धिगुदादिक सएव केतकः सहकेतकेन सकेतक यथादिसहित मित्यर्थो भणितच अगुष्टिमुष्टिगठी घरसेउस्सासथियुगजोइक्खे भणियंसको

यमेयं धीरेहिंअणंतनाणीहिति ॥ १ ॥ अडाएत्ति ॥ अडायाः कालस्य पौरुषादिकालमान माश्रित्येत्यर्थो न्यगादिव अडापच्चखाण जंतंकालप्पमाणहे  
एण पुरिमहुपोरिसीहिं मुहुत्तमासइमासेहिति ॥ १ ॥ पच्चखाणदशविहंतुत्ति ॥ प्रत्याख्यानशब्दः सर्वत्रा नागतादौ सम्बध्यते तुशब्द एवकारार्थं स्ततो  
दशविधमेवेति इहो पाधिभेदा तस्यष्टएव भेदइति न पौनरुक्त्य माशकनीयमिति प्रत्याख्यानहि साधुसमाचारीति तदधिकारा दन्यामपि सामाचारीं  
निरूपयन्नाह ॥ दसेत्यादि ॥ समाचरण समाचार स्तद्धाव समाचार्य तदेव सामाचारौ सव्यवहारइत्यर्थः ॥ इच्छेत्यादि ॥ सार्द्धश्लोकः ॥ इच्छति ॥ एषण मिच्छा  
करण कार स्तत्रकारशब्दः प्रत्येक मभिसवन्धनौय इच्छया बलाभियोगमन्तरेण कार इच्छाकारः इच्छाक्रियेत्यर्थं स्तथा चेच्छाकारेण ममेद कुव  
इच्छाप्रधानया क्रियया नबलाभियोगपूर्विकयेति भावार्थो ऽस्यच प्रयोगः स्वार्थं परार्थंवा चिकीर्षं न्यदापर मभ्यर्थयते उक्तच जइअभच्छेज्जपर कार  
णजाएकरेज्जसोकोइ तत्थउइच्छाकारो नकप्परवलाभिओगोत्ति ॥ १ ॥ नथा मिथ्या वितथ मनृत मिति पर्याया मिथ्याकरण मिथ्याकारः मिथ्याक्रियेत्य  
र्थं स्तथाच सयमयोगवितथाचरणे विदितजिनवचनसारा साधव स्तत्क्रिया वैतथ्या प्रदर्शनाय मिथ्याकारं कुर्वते मिथ्याक्रियेयमिति हृदय भणितच स  
जमजोगेअभु णियस्सजकिचिवितहमायरियं मिच्छाएयतिविद्या णिऊणमिच्छतिकायव्वति ॥ १ ॥ तथाकरण तथाकारः सच सूत्र प्रश्नादिगोचरो यथा

परिमाणकळ निरवसेस ॥ १ ॥ सकेयंचेवण्णए पच्चखाणंदसविहंतु ॥ दसविहा सामायारी प० तं० इच्छामि

करवो अतिक्रात पजूसणययापळी कोटिसहिततप नियमित जे निश्चयकरवुं । आगारसहित अणत्थणाजोगादि आगाररहित जे एकपचखाण पूरुं  
थये वीजूं सधाळवू चोथप्रमुख निरतरकरवो परिणामकृत दातिनू पचखाण निर्विशेष पचखाण ते चोविहार ॥ १ ॥ संकेत पचखाणमुंठसीप्रमुख ॥

भवद्भिरुक्त तथैव चेद मित्येवं स्वरूपं गदितच चायणपडिगुणणा उअसेसुतअथकहणाए अत्रिनहमेयतितहा पडिसुणणाएतहकारोत्ति ॥ १ ॥ अयस  
 पुरुषविशेषविषयएव प्रयोक्तव्य इत्यगादिच कप्पाकप्पेपरिणि ढिगस्सठाणेसुपचसुठियस्स सजमतववट्ठगस्सउ अविकप्पेणतहकारोत्ति ॥ १ ॥ ३ आवस्सि  
 यायत्ति ॥ अवस्य इतेर्ये योगे निष्पत्ता वस्यितो चः समुद्यये एतत्प्रयोग आश्रया निर्गच्छन् आवश्यकयोगयुक्तस्य साधो भवति आहहि कज्जेगच्छतस्स  
 गुरुनिद्वेसे गसुत्तनोईए आनस्सियत्तिनेया सुद्धाअणत्थजोगाओ ॥ १ ॥ अन्वर्थयोगादित्यर्थ ४ तथा निषेधेन निर्हुत्ता नैषेधिकौ व्यापारान्तरनिषेधरूपा प्र  
 योगास्या आश्रये प्रविशतइति यतआह एवोगहप्पवेसे निसीहियातहनिसिद्धजोगस्स इयरस्सेसाउचिया इयरस्सऽनिसिद्धजोगस्स ॥ १ ॥ नचेवनत्थि  
 त्ति ॥ अन्वर्थोनास्तौतिकृत्वेत्यर्थं स्तथा आपुच्छन् मापुच्छा सा विहारभूमिगमनादिषु प्रयोजनेषु गुराः कार्या च शब्दः पूर्ववत् इहोक्त आपुच्छणाउक  
 ज्जे गुरुणोतस्सभयस्सवानियमा एवखुनयसेय जायईसइनिज्जराहेउत्ति ॥ १ ॥ तथा प्रतिप्रच्छा प्रतिप्रश्नः साच प्राप्तिगुणेनापि करणकाले कार्या पूर्व  
 निषेधेनवा प्रयोजनत स्तदेव कर्तुंकामेनेति यदाह पडिपुच्छणाउकज्जे पुव्वनिउत्तस्सकरणकालमि कज्जंतराटिहेउ निदिट्ठासमयकेज्जहि ॥ १ ॥ ता  
 था छट्ठनाच प्रागृहोतेना शनादिना कार्या इहावाचि पुव्वगहिण्णकट्ठण गुरुआणाएजहारिहोइ असणादिणाउएसा ऐएहविसेसविसयत्ति ॥ १ ॥

च्छातहकारो आवस्सियानिसीहिया आपुच्छणायपडिपुच्छा तदणायनिमंतणा ॥ १ ॥ उवसंपयायकाले

अद्वा कालपचखाण पोरसीप्रमुखनु एदशप्रकारे ॥ दशप्रकारे सामाचारी कही तेकहेछे इच्छासामाचारी १ । गुरुना वेयावच्चादि कारणे मिच्छादुक्क  
 पापनु २ । तथाकार तहत्ति कहवो ३ । जाता आवस्सही तहवी ४ । पेसता निस्सहीरुहै आपुच्छणा गुरुनेपूछी करवू जण्यु ते फरी फरी पूछवू आ

तथा निमज्जणा अगृहीतेनेवा अनादिना भवदर्थं मह मग्गनादिक मानया म्येवंभूता इहार्थं भ्यधायि सज्जायाउच्चाग्री [आंत.] गुरुकिञ्चैसेसगेअसंतमि  
 तपुच्छिजगकज्जे सेसाणणिमंतणकुज्जत्ति ॥ १ ॥ तथा ॥ उवसपयत्ति ॥ उपसपत् इतोभवदौयोह मित्यभ्युपगमः साच ज्ञानदर्शनचारिवार्थत्वात् त्रिधा तत्र  
 ज्ञानोपसपत् सूचार्थयोः पूर्वगृहीतयो. स्थिरीकरणार्थं तथा विकुटितसधानार्थं तथा प्रथमतो ग्रहणार्थं मुपसपद्यते दर्शनीपसपद्येव नवर दर्शनप्रभावकस  
 म्मत्यादिशास्त्रविषया चारित्रीपसपच्च वैशाख्यत्तरणार्थं चपणार्थो पसपद्यमानस्येति भणितहि उवसपयायतिविहा नाणेतहदसणेचरित्तेय दंसणना  
 येतिविहा दुमिहायचरित्तअट्टाए ॥ १ ॥ वत्तणसवणगहणे सुत्तत्थोभयगयाउएसत्ति वेयावच्चेखमणे कालेपुणभावकहियायत्ति ॥ २ ॥ कालेत्ति ॥ उपक्रम  
 णकाले आवश्यकोपोद्घातनिर्युत्त्यभिहिते सामाचारो दयविधा भवति इयत्र सामाचारो महाधौरेणेह प्रज्ञापिता इतो भगवंत मेवोररोक्त्य दशस्थानक  
 माह ॥ समणेत्यादि ॥ सुग्गम नवरं ॥ छउमत्यकालियाएत्ति ॥ प्राज्ञतत्वा च्छग्गस्यकाले यदा किल स भगवान् निकचतुष्कचत्वरचतुर्मुखमहापथादिषु पटु  
 पटहप्रतिरवोद्घोषणापूर्वं यथा काम मपहतसकलजनदारिद्रा मनवच्छिन्न मच्च याव आहादान दत्वा सदेवमनुजासुरपरिषदा परिवृतः कुडपुरा  
 त्रिगत्थ ज्ञातखडवने मार्गशोषकृण्णदशम्या जेत्तक प्रवज्ज्य सन पर्यायज्ञान सुत्पाद्या छौ मासान् मिह्थय मगूरकाभिधानसन्निवेशवत्तिःस्थानां दूयमाना  
 मिधानाना पाखण्डिना सबधि न्येक्कस्मिन् उटजे तदनुज्जया वर्षावास मारभ्य अविधौयमानरचतया पशुभि रुपदूयमाणे उटजे अप्रीतिक कुर्वाण माक

सामायारीजवेदसहा । समणेजगवमहावीरे छउमत्यकालियाए अतिमराइयसि इमे दस महासुमिणे पासित्ताणं

हारत्यावी कहे जे आलोकनिस्तारो हु तमारे अर्थ ल्यावीस आहार ॥ १ ॥ हुतुमारो छु इमकहवूं ए दशप्रकारे सामाचारी कही ॥ अमण जगवंतमहा

लय कृटीरकनाथक मुनिकुमारकं ततो वर्षाणा मर्द्धमासे णते अकालएव निर्गत्या स्थिग्रामाभिधान सन्निवेशा हहिः शूलपाणिनामकयचायतने शेष  
 वर्षावास मारेभे तत्रच यदारात्री शूलपाणि भगवतः चोभणाय भट्टिनिटालिताट्टालक मट्टट्टहासं मुञ्चन् लोकमुत्तासयामास तथा विनाश्यते स भगवान्  
 देवेनेति भगवदालवना जनस्या धृतिञ्जनितवान् पुनरिहा स्ति पिशाचनागरूपै भगवत चोभ कर्तुं मशक्नुवन् शिरःकर्षणासादन्तनखाक्षिपृष्टिवेदना  
 प्राकृतपुरुषस्य प्रत्येक प्राणापहारप्रवणा. सपदि सपादितवान् तथापि प्रचण्डपवनप्रहतसुरगिरिशिखरमिवा विचलद्भाव वर्द्धमानस्वामिन मवलोक्य  
 आन्त' स नऽसौ जिनपतिपादपद्मवन्दनपुरस्सरमाचचचे जमस्व जमाश्रमणेति तथा सिद्धार्थाभिधानो व्यन्तरदेव स्तन्निग्रहार्थमुद्धार बभाणच अरेरे  
 शूलपाणे अप्रार्थितप्रार्थक हीनपुण्य चतुर्दशोक श्रीहोष्टिकीर्त्तिपजित दुरन्त प्रान्तलक्षण न जानासि सिद्धार्थराजपुत्र पुत्रीयितनिखिलजगज्जीवं  
 जीवितसम मशेषसुरासुरनरनिकायनायकाना मेतच्च भवदपराध यदिजानाति विदग्धपति स्तुत स्वा निर्विषय करोतीति श्रुत्वा चासौ भीतो द्विगुण  
 तर जमयतिस्म तथा सिद्ध्यर्थे तस्य धर्म मचकयत् सचो पशान्तो भगवंत भक्तिभरनिर्भरमानसो गीतनृत्योपदर्शनपूर्वक मप्रपूजत् लोकश्च चिन्तयाञ्चकार  
 देवार्थक विनाश्ये दानौन्देव. कौडतीति स्वामीच देशोना श्वतुरीयामा नतौव तेन परितापित. प्रभातसमये सुहृत्तमात्र निद्राप्रमाद सुपगतवास्तवावसर  
 इत्यर्थो ऽथवा कृद्गस्थकाले भवा अवस्था ष्ठाद्गस्थकालिकी तस्या ॥ अन्तिमराश्यसिद्धि ॥ अतिमा ऽन्तिमभागरूपा ऽवयवे समुदायोपचारात् सा चासौ  
 रात्रिका चान्तिमरात्रिका तस्या रात्रे रवसान इत्यर्थो महान्त प्रशस्ता स्वप्ना निद्राविकृतविज्ञानप्रतिभासार्थविशेषा स्तेच तेचेति महास्वप्ना स्तान् स्वप्ने  
 स्वापक्रियाया ॥ एगचन्ति ॥ चकार उत्तरस्वप्नापेक्षया समुच्चयार्थ ॥ महाघोर ॥ अतिगौद्ररूप माकार दीप्त ज्वलित दृप्त वा दर्प्यव डारयतीति महाघोररूप  
 दीप्तधर स्तत् दृप्तवरीवा प्राकृतत्वा दुत्तरत्र विशेषणन्यास स्तालोहचविशेष स्तदाकारो दीर्घत्वादिसाधर्म्या त्पिशाचो राक्षस स्तासपिशाच स्त पराजित

निराकृत मात्मना १ ॥ एगंचत्ति ॥ अन्यच्च ॥ पुमकोइलगति ॥ पुमां आसौ कोकिलश्च परपुष्टः पुंस्कोकिलः सच किलकृष्णोभवतीति शुकपक्षइति विशेषि-  
तः २ ॥ चित्तविचित्तपक्खति ॥ चित्रेणैव चित्रकर्मणा विचित्रौ विविधवर्णविशेषवती पक्षौ यस्य स तथा ३ ॥ दामदुगति ॥ मालाद्वयं ४ ॥ गोवग्गति ॥ गोरू-  
पाणि ५ ॥ पउमसरति ॥ पद्मानि यत्रो त्पद्यन्ते सरसि तत्पद्मसरः सर्वासु दिक्षु समंता द्विदिक्षुच कुसुमानि पद्मलक्षणानि जातानि यत्र तत् कुसुमित इ-  
॥ उम्मीवीईसहस्सकलियति ॥ ऊर्मयः कल्लोला स्तल्लज्जणा या वोचय स्ता ऊर्मिवीचयो वीचिशब्दोहि लोकेत्तरार्थोपि रूढो ऽथवो मिवीच्यो विशेषो गुरुत्व

पण्णिवुद्धे तं० एगंचणं महाघोररूपं दित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराइय पासित्ताणं पण्णिवुद्धे ॥ १ ॥ एगचणं  
महं सुक्खित्तपक्कगं पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ताणं पण्णिवुद्धे ॥ २ ॥ एगंचणं महं चित्तविचित्तपक्कगं पुंस-  
कोइलगं सुविणे पासित्ताणं पण्णिवुद्धे ॥ ३ ॥ एगंचणं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ताणं पण्णि-  
वुद्धे ॥ ४ ॥ एगचणं महं सेयं गोवग्गं पासित्ताणं पण्णिवुद्धे ॥ ५ ॥ एगंचणं महं पउमसरं सव्वज्जसमंता कुसुमि-  
य सुमिणे पासित्ताणं पण्णिवुद्धे ॥ ६ ॥ एगंचणं महसागर उम्मीवीईसहस्सकलियं नुयाहि तिन्नं सुमिणेपा

वीरे छदमस्थावस्थायै पाखलीरातनेविषे ए दश मोटा सुपन देखीने जाग्या काउसगमांज तेकहैछे एक मोटो घोररूप दीप्तिवन्तनो धरनार तालपि-  
शाच ताळसमान सुपनमा जीत्यो देखीने जाग्या १ । एक वली मोटो उजलीपाखनो पुंस्कोकिल पुरुष कोईलो सुपनमा देखीने जाग्या २ । एक वली  
मोटो विविधप्रकारना वर्णनीपाखछे एहवो पुरुषकोकिल सुपनमा देखीने जाग्या ३ । एक वली ब्रेमोटीफूलनी माला सर्वरत्नमय सुपनमा देखीने



लघुत्वलक्षणः कचि हीचिशब्दो न पठ्यत एवेति कर्मिषोधीनां सहस्रेः कलितो युक्तो यः स तथा तं भुजाभ्यां बाहुभ्यामिति ७ तथा दिनकरं ८ एकेनच  
णमित्यलकारे ॥ महंति ॥ महता हान्दसत्वात् ॥ एगंचणमहति ॥ पाठे मानुषोत्तरस्यैते विशेषणे ॥ हरिवेरुलियवणाभेणति ॥ हरिः पिंगो वर्णी वेडूर्य  
मणिविशेष स्तस्य वर्णी नीलो वेडूर्यवर्ण स्ततो हं हं दाभाति यत्त हरिवैडूर्यवर्णाभ तेना यवा हरि ओल तच्च त वैडूर्यचेति शेष तथेष निजकेना  
ओयेना वेणोदरमध्यावयवविशेषेण ॥ आवेडियति ॥ सक्त दावेष्टित ॥ परिवेडियति ॥ असक्तदिति ९ ॥ एगंचणमहति ॥ प्रात्मनो विशेषणं ॥ सीहा  
सणवरगयंति ॥ सिंहासनाना मध्ये य हर तत्सिंहासनवर तागतो व्यवस्थितो य स्तमिति १० एतेषामेव दशाना महास्रपाना म्फलप्रतिपादनायाह

सित्ताणं पफ़िबुद्धे ॥ ७ ॥ एगचण महदिणकरं तेयसाजलंतं सुमिणे पासित्ताणं पफ़िबुद्धे ॥ ८ ॥ एगंचण महं  
हरिवेरुलियवणाभेणं निययेण अतेण माणुसुत्तर पद्य सवुत्तंसमंता आवेडियपरिवेडियं सुमिणे पासित्ता  
ण पफ़िबुद्धे ॥ ९ ॥ एगचण महं मंदरेपद्य मंदरचूलियाए उवरि सीहासणवरगय अत्ताणं सुमिणे पासित्ता  
ण पफ़िबुद्धे ॥ १० ॥ जन्तं समणेन्नगव महावीरे एगं मह घोररूव दित्तधर तालपिसाय सुविणे पराजियं

जाग्या ४। एक वली मोटो उजली गायनीवर्ग सुपनमा देखीने जाग्या ५। एक वली मोटु पट्टमरोवर च्यारे दिसे कुसुमित फूल्यो सुपनमा देखीने  
जाग्या ६। एक वली मोटो समुद्र हजारेगमे लहरेसहित जुजाये तस्यो सुपनमा देखी जाग्या ७। एक तेजैकरी जाज्वल्यमान सूर्य सुपनमा देखीने जाग्या ८।  
एक वली मोटो पीला वेरुलियरत्नना वर्णसरियो पोताने आंतरफे करीने मानुषोत्तरपर्वत च्यारेदिशे वीट्यो सुपनमा देखीने जाग्या ९। एक मो

॥ जलमित्यादि ॥ सुगम नवरं ॥ मूलश्रुति ॥ आदितः सर्वथैवेत्यर्थः ॥ उग्घाइए ॥ उद्घातित विनाशविध्यमाणत्वेनो पचारात् सूत्रकारापेक्षया त्वयम  
तीतनिर्देशएवेत्येव मन्यत्रापि ॥ ससमयपरसमइयति ॥ स्वसिद्धान्तपरसिद्धान्तौ यत्र स्त इत्यर्थो गणिन आचार्यस्य पिटकमिव पिटक वणिजद्रव सर्वस्व  
स्थान गणिपिटक ॥ आघवेइति ॥ आख्यापयति ॥ सामान्यविशेषरूपतः प्रज्ञापयति सामान्यतः प्ररूपयति प्रतिसूत्र मर्थकथनेन दर्शयति तदभिप्राय  
प्रत्युपेक्षणादिक्रियादर्शनेन इय क्रियै भिरक्षरै रूपात्ता इत्थ क्रियतइतिभावना ॥ निदसेइति ॥ कथञ्चि दृष्टतः परानुकम्पया निश्चयेन पुनः पुनर्दर्शय

पासित्वाण पद्मिबुद्धे तस्मिं समणेण जगवया महावीरेण मोहणिज्जे कम्मे मूलं उग्घाइए ॥ १ ॥ जन्तं समणे  
जगवमहावीरे एगं महं सुक्खिलपक्खं जाव पद्मिबुद्धे तस्मिं समणे जगवमहावीरे सुक्खज्जाणोवगए विहरइ  
॥ २ ॥ जस्स समणेजगव महावीरे एगंमहं चित्तविचित्तपक्खं जाव पद्मिबुद्धे तस्मिं समणेजगव महावीरे  
ससमयपरसमयं चित्तविचित्तं दुवालसंगं गणिपिण्णं आघवेइ पन्नवेइ परूवेइ दसेइ निदसेइ उवदसेइ त०

टो मेरुपर्वते मेरुपर्वतनीचूलिका ऊपरें सिंहासनने विषे बैठो सुपनमा देखीने जाग्या १० ॥ जे अमण जगवत महावीर एक मोटो घोररूप दीप  
तो धरतो तालपिशाच सुपनमा दीठो ते देखीने जाग्या तेमाटे अमणजगवत श्रीमहावीरे मोहनीकर्म मूलथी घातकख्यो १ । जे अमण जगवत म  
हावीर एक मोटो उजलीपाखनो पुरुष कोईलो देखीने जाग्या तेमाटे अमणजगवत महावीर सुक्खध्यानसहित विचख्या २ । जेमाटे अमण भगवत म  
हावीर विचित्रपाखनो यावत् जाग्या तेमाटे अमण भगवत महावीर पोतानो समय सिद्धात परना समयनो विविधप्रकारनो अर्थछेजेहमा एहवी

ति निदर्शयति ॥ उवदसेइत्ति ॥ सकलनययुक्तिभिरिति ॥ चाउवणाइत्ति ॥ चत्वारोवर्णाः श्रमणादयः समाहृतादति चतुर्वर्णं तदेव चातुर्वर्ण्यं तेना  
कीर्णं आकुलं सातुर्वर्ण्यकीर्णं ऽथवा चत्वारोवर्णाः प्रकाराः यस्मिन् स तथा दीर्घत्व प्राकृतत्वा चतुर्वर्णं शासा वाकीर्णं श्रानादिभिर्महागुणैरिति चतु  
र्वर्णकीर्णः ॥ चउब्बिहेदेवेषणवेइत्ति ॥ यन्दनकुतूहलादिप्रयोजनेना गतान् प्रज्ञापयति जीवाजीवादी न्यदार्थान् बोधयति सम्यक्तं ग्राहयति शिष्यीक

आचारं जाव दिठ्ठिवाय ॥ ३ ॥ जन्त समणेज्जगवमहावीरे एगं महं दामदुग सव्वरयणामय जाव पफ़ि  
बुद्धे तस्स समणेज्जगवमहावीरे दुविह धम्म पणवेइ तं० आगारधम्म अणगारधम्मंच ॥ ४ ॥ जन्त समणे  
ज्जगवमहावीरे एगमह सेय गोवग्ग सुमिणे जावपफ़िबुद्धे तस्स समणस्सज्जगवन्तमहावीरस्स चाउवन्ताइन्ते  
सघे तं० समणा समणीन्तं सावगा सावियान्तं ॥ ५ ॥ जस्स समणेज्जगवमहावीरे एगमहापउमसर जाव पफ़ि  
बुद्धे तस्स समणेण ज्जगवयामहावीरेणं चउब्बिहे देवे पन्तवेइ तं० जवणवासी वाणमंतरे जोइसिए वेमाणिए

द्वादशांगी रूप गणिपिटक सामान्यविशेषकहे प्रज्ञापयति सामान्यथी प्ररूपे सूत्रार्थकहवेकरी देखाफ़ें क्रिया इमकरीये निशे फरी २। देखाफ़े सर्वनय  
नी युक्तेकरीदेखाफ़े तेकहैछे आचाराग यावत् हट्टिवाद ३। जे श्रमणजगवत एक मोटी फूलमाला ये सर्वरतनी यावत् देखीने जाग्या ते एक मोटी  
स्वेत वेप्रकारे धर्म कहस्ये ते केम आवकधर्म यतीनोधर्म ४। जे श्रमण जगवत महावीर एक मोटी स्वेत गायत्री वर्ग सुपनमा देखीने जाग्या ते  
माटे श्रमण जगवत महावीरने चतुर्विधसघथयो तेकहैछे साधु १। साधवी २। आवक ३। आविका ४। ५॥ जे श्रमण जगवत महावीर एक मोटु प

रोतीति यावत् लोकेभ्यो वा ता अक। शयति अणते इत्यादौ सूत्रे यावत्करणात् ॥ निष्ठाघाए निरावरणे कसिणे पण्डिपुष्टे केवलवरनायदंसणेति ॥ दृश्यमिति ॥ सदेवेत्यादि ॥ सह देवे वैमानि ज्योतिष्कैर्मनुजैर्नरैरसुरैर्भवनपतिव्यन्तरैश्च वर्त्तत इति सदेवमनुजासुरस्तत्र लोके त्रिलोक रूपे ॥ ओरालेति ॥ प्रधनाकीर्त्तिः सर्वदिग्ब्यापी साधुवादो वर्ण एकदिग्ब्यापी शब्दो ऽर्द्धदिग्ब्यापी श्लोकस्तत्र स्थान एव श्लाघा एषां द्वंद्वस्तत एते ॥ परिगुवति ॥ परिगुप्यन्ति व्याकुनौभवति सतत भ्रमन्तोत्यर्थो ऽथवा परिगूयति गुड् धातोः शब्दार्थत्वात् सशब्दान्तर्गत्यर्थः पाठान्तरतः परिभ्राम्यन्ति ॥ कथमित्याह ॥ इदं खल्वि

६ ॥ जस्मं समणेज्जगवमहावीरे महं उम्मीवीर्द्धसहस्सकलिय जाव पण्डिबुद्धे तन्न समणेज्जगवमहावीरे ण्णा ऽर्द्धणवयग्गे दीहमध्दे चाउरतसंसारकतारे तस्स जस्मं समणेज्जगवमहावीरे एगं महं दिणकर जाव पण्डिबुद्धे तस्स समणस्स ज्जगवन्महावीरस्स ण्णते ण्णुत्तरे जाव समुप्पस्से जस्मं समणेज्जगवमहावीरे एगेणं महं हरिवेरुल्लिए जाव पण्डिबुद्धे तस्स समणस्स ज्जगवन्महावीरस्स सदेवमणुयासुरलोए उरालकित्तिवन्नसहसिलोगा परिगुवति इदं खलु समणेज्जगवमहावीरे इति ॥ ९ ॥ जस्मं समणेज्जगवमहावीरे मंदरेपण्णु मंदरचूलियाए उ

असरोवर देखीजाग्या ते अमण भगवत महावीर चारप्रकारना देवता कह्या ते कहैछे भवनपती १ । व्यतर २ । ज्योतिषी ३ । वैमानिक ४ । ६ जे अमण जगवत महावीर एक मोटो कल्लोलसहित समुद्रतस्या ते देखीने जाग्या तेमाटे अमण भगवत महावीरें अनादि अनंत दीर्घकालनो चारगतिरूप संसारतस्यो ७ । जेमाटे अमण जगवत महावीर एक मोटो सूर्य देखीयावत् जाग्या तेमाटे अमण जगवत महावीरने अनंतो उत्कृष्ट यावत्

१० ॥  
१० ॥

त्यादि ॥ इति एव प्रकारार्थः खलुर्गालंकारे ततश्चेकप्रकारो भगवान् सर्वज्ञानी सर्वदर्शी सर्वसंगव्यवच्छेदी सर्वबोधकभाषी सर्वजगज्जीववत्सलः सर्वगुणिगणचक्रवर्ती सर्वनरनातिनायकनिकायसेवितचरणयुगद्वयार्थः महावीरइतिनाम एतदेवा वर्त्येने श्लाघाकारिणामादरस्थापनार्थं मनेकत्वस्थापनार्थेवेति ॥ आघवेत्यादि ॥ पूर्वगत स्वपददर्शनकाले भगवान् सरागसम्यग्दर्शनं गौति सरागसम्यग्दर्शनं निरूपयन्नाह ॥ दसविहेत्यादि ॥ सरागस्या नुपशां तत्तौणमोहस्य ग त्सम्यग्दर्शनं तत्त्वार्णमज्ञानं न्ततथा अथवा सरागत् तत्त्वम्यग्दर्शनचेति गिह. सराग सम्यग्दर्शनचेति ॥ निस्सगगाहा ॥ रुचिशब्दः प्रत्येक सवध्यते गोज्यते ततो निसर्गे स्त गान स्तेन रुचि स्तत्वाभिलाषरूपा स्येति निसर्गरुचि निसर्गभावा रुचिरिति निसर्गरुचि योहि जातिस्मरणप्रतिभादि रूपया स्वमत्या वगतान् सज्जतान् जीगादोन् पटार्थान् अहभाति स निसर्गरुचिरितिभावः यदाह जीजिणदिउभावे चउत्विहे [ द्रव्यादिभि. ] सदहा

वरिं जाव पफ़िवुद्धे तणा समणेजगवमहावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवलपिपन्नत्तं धम्म ञ्णा  
घवेइ पन्नवेइ जाव उवदसेइ ॥ १० ॥ दसविहे सरागसंमद्वंसणे प० तजहा निस्सग्गुवएसरुई ञ्णाणारुइसु

केवलज्ञान ऊपनु ८ । जे अमणा जगवत एक मोटी पीला वैधूर्यरतनी यावत् मानुषोत्तर देरीनें जाग्या तेमाटे अमणा जगवत महावीरने देवलोक्ने विपे मनुष्य असुरलोक्नेविपे उदार मोटी कीर्ति वर्ण शब्द श्लोक यज्ञ सघले व्याप्योळे गृह्वा निशे अमणा जगवत महावीरळे ८ । जे अमणा भगवत महावीर मेरुपर्वते मेरूनीचूलिका ऊपरे चढ्या यावत् देखी जाग्या तेमाटे अमणा जगवत महावीर देवता मनुष्य असुरकुमारनी पर्यदाभाहे वेसी केवली प्रणीत धर्म आघवे परूपे यावत् देराफ़ेळे १० ॥ दशप्रकारे सरागसम्यक्त दर्शन कसो ते कहेळे निसर्गरुचि १ । उपदेशरुचि २ । आज्ञारुचि

इत्यमेव एमेवणसहत्तिय निस्सग्गसइत्तिनायब्बोत्ति ॥ १ ॥ तथो पदेशो गुर्वादिकथनं तेन रुचि र्यस्य त्पुपदेशरुचि स्तत्पुरुषंपक्षः स्वयमूह्यः सर्वत्रैति  
 योहि जिनोक्तानेव जीवादौनर्थान् तीर्थकरतच्छिष्यादिनोपदिष्टान् अदत्ते स उपदेशरुचिरितिभाव यतआह एएचेवउभावे उवइठेजोपरेणसइहइ  
 क्खउमत्थेणजिणेणव उवएसरुईमुणेयब्बोत्ति ॥ १ ॥ तथा आज्ञा सर्वज्ञवचनात्मिका तथा रुचि र्यस्य स तथा योहि प्रतनुरागहेषमिष्याज्ञानतथा चार्यादी  
 ना माज्ञैः कुग्रहाभावा जीवादि तथेति रोचते मानुपादिवत् स आज्ञारुचिरितिभाव, भणितच रागोदीषोमोहो अन्नसजसअवगयहोइ आणाएरो  
 यतो सोखलुआणारुइहोइत्ति ॥ सुत्तवीयरुईमेवत्ति ॥ इहापिरुचिशब्दस्य प्रत्येक मनिसंबधात् सूत्रेणा गमेन रुचि र्यस्य स सूत्ररुचि योहि सूत्रागममधीया  
 न स्तेनैवा गप्रविष्टादिना सम्यक्त लभते गोविन्दवाचकवत् स सूत्ररुचि रितिभाव अभिहितच जोसुत्तमहिज्जतो सुएणओगाहईउसमत्तं अगेणबाहिरे  
 णव सोसुत्तरुइत्तिनायब्बोत्ति ॥ १ ॥ तथा बीजमिव बीज यदेक मप्यनेकार्थप्रतिबोधोत्पादक वच स्तेन रुचि र्यस्य ह्येकेनापि जीवादिनापदेनावगतेना  
 नेकेषु पदार्थेषु रुचि रूपैति सबीजरुचि रितिभाव उक्तंच एगपएणेगाइ पयाइजोपसरईउसमत्ते उटएव्वतेल्लविंदू सोवीयरुयत्तिनायब्बोत्ति ॥ १ ॥ ए  
 वेति समुच्चये तथा ॥ अभिगमवित्याररुइत्ति ॥ इहापि प्रत्येक रुचिशब्दः सबधनीय स्तत्रा भिगमो ज्ञान ततो रुचि र्यस्य सो भिगमरुचि र्येन आचारा  
 दिक श्रुत मर्थतो ऽभिगत भवति सोभिगमरुचि रभिगमपूर्वकत्वा द्रुचेरितिभाव गाथाव सोहोइअभिगमरुई सुअनाणजसअत्यओदिइ एकारसअंगा  
 इ पइणयादिठिवाओयत्ति ॥ १ ॥ तथा विस्तारो व्यास स्ततो रुचि र्यस्य सतथेति येन हि धर्मास्तिक्कायादिद्रव्याणा सर्वपर्याया सर्वे नयैः प्रमाणैर्ज्ञाता  
 भवति स विस्ताररुचि ज्ञानानुसारिरुचित्वादिति न्यगादिच दब्बाणसव्वभावा सव्वपमाणेहि जसउवलडा सव्वाहिनयविहीहि वित्याररुईमुणेयब्बोत्ति  
 ॥ १ ॥ तथा क्रिया नुष्ठान रुचिशब्दयोगा तत्र रुचि र्यस्य स क्रियारुचि रिदमुक्तपवति दर्शना आचारानुष्ठाने यस्य भावतो रुचि रस्ति स क्रियारुचिरिति

उक्तञ्च भाष्ये ॥ दंसणेणय तवेपरित्तेयसमिद्रुग्नीसु जोकिरियाभावर्द्ध सोखलुकिरियारुद्धोद्धेति ॥ १ ॥ तथा सक्षेपः संयत्त स्तान् रुचि रस्येति सक्षेप-  
 परुचि र्यो एतत्तिपत्रकपिलादिदर्शनो जिनप्रवचनानभिज्ञस्य सक्षेपेणैव चिन्तातीपुत्रव दुपशमादिपदत्रयेण तत्त्वुरुचि मवाप्नोति स सक्षेपरुचिरितिभाव-  
 आहञ्च अणभिगगद्वियकुदिष्टो सखेरुद्धतिहोप्रनायन्तो अविसारप्रोपवयणे अणभिगगद्विप्रोयसेसेसुत्ति ॥ १ ॥ तथा धर्मं श्रुतादौ रुचि र्यस्य स तथा यो  
 दि धर्मास्तिकाय श्रुतधर्मं चारित्रधर्मंच जिनोक्तं यत्ते स धर्मरुचि रितिज्ञेयः यदगादि जोप्रत्यिकायधर्म सुयधर्मखलुचरित्तधर्मंच सहस्रजिणाभिहितं  
 सोधर्मरुद्धतिनायन्तोत्ति ॥ १ ॥ अथ सस्यगृह्णति दर्शनानामपि सज्जानां कमेण व्ययच्छेदं करोतीति ता आह ॥ दसेत्यादि ॥ सज्जान संज्ञा आभोगइत्यभूरी  
 मनोविज्ञानमित्यन्ये सज्जायतेवा आहारादर्थी जीवो नयेति संज्ञा वेदनीयमोहनीयोदयागया ज्ञानदर्शनावरणक्षयोपशमानयाच विचिन्नाहारादिप्राप्तये  
 तियेवेत्यर्थः सा चो पाधिभेदा द्विदमाना दशप्रकारा भवतीति तत्र क्षुब्धेदनौयो दयात् कवलादाहाराद्यं पुत्रलोपादानक्रियैव सज्जायते नयेत्याहारसज्जा  
 तथा भयवेदनौयोदया अयोद्गात्स्य दृष्टिवदनविकाररोमांचोद्भेदादिक्रियैव सज्जायते नयेति भयसंज्ञा तथा पुंवेदोदया मेषुनाय स्यज्जालोकनप्रसन्नवदन  
 संस्तम्भितोत्प्रेषणप्रभृतिलक्षणयाच क्रियैव सज्जायते नयेति मेषुनसज्जा तथा लोभोदया लोभानभवकारणाभिष्वङ्गपूर्विका संचित्तेतरद्रव्योपादानक्रियैव सं-  
 ज्ञायते नयेति परिग्रहसज्जा तथा क्रोधोदया तदावेशगर्भाप्ररूपमुखनयनदन्तच्छदचेष्टैव संज्ञायते नयेति क्रोधसज्जा तथा मानोदया दहङ्कारात्मिकोत्से

तवीयरुद्धमेव अजिगमवित्यारुद्धं किरियासंखेवधम्मरुद्धं ॥ १ ॥ दस सन्नानं प० तंजहा आहारसन्ना जाव

३ । सूत्ररुचि ४ । बीजरुचि ५ । अजिगमरुचि ६ । विस्ताररुचि ७ । क्रियारुचि ८ । संक्षेपरुचि ९ । धर्मनीरुचि १० ॥ १ ॥ जगयते दश संज्ञा कही

कादि परिणतिरेव संज्ञायते नयेति मानसज्ञा तथा मागोदयेना शुभसत्त्वेशा दन्तसभासणादिक्रियैव संज्ञायते ऽनयेति मायासंज्ञा तथा लोभोदया लोभसत्त्वान्विता सच्चित्तेतरद्रव्यप्रार्थनैव संज्ञायते नयेति लोभसंज्ञा तथा मतिज्ञानाद्यावरणक्षयोपशमा च्छब्दाद्यर्थगोचरा सामान्याववक्रियैषधो संज्ञायते नये त्योघसंज्ञा तथा तद्विशेषावबोधक्रियैव संज्ञायते नयेति लोकसंज्ञा १० तत सौघसंज्ञा दर्शनोपयोगो लोकसंज्ञा ज्ञानोपयोग इतिव्यत्यय मन्ये पुन रित्य मभिदधति सामान्यप्रवृत्तिरोघसंज्ञा लोकदृष्टि लोकेसंज्ञा एताश्च सुखप्रतिपत्तये स्पष्टरूपाः पञ्चेन्द्रिया नधिकृत्योक्ता एकेन्द्रियादीनान्तु प्रायोयथोक्तक्रिया निबन्धनकर्मादयादिपरिणामरूपा एवा वगन्तव्या यावच्छब्दो व्याख्यातार्थो एता एव सर्वजीवेषु चतुर्विंशतिदण्डकेन निरूपयति ॥ नेरइयेत्यादि ॥ एव चेवन्ति ॥ यथा सामान्यसूत्रे एवमेव नारकसूत्रेपीत्यर्थ एव निरंतरमिति यथा नारकसूत्रे संज्ञा स्तथा शेषेष्वपि वैमानिकान्तेष्वित्यर्थो ऽनन्तरसूत्रे वैमानिका उक्ता स्तेच सुखवेदना अनुभवतीति तद्विपर्यस्तास्तु नारका या वेदना अनुभवती तादर्शयति ॥ नेरइयाइत्यादि ॥ कण्ठं नवर वेदना म्पीडा न्त च श्रोतस्पर्शजनिता शीता तां साच चतुर्थ्यादिनरकपृथिवीष्विति एव मुष्णा म्रथमादिषु क्षुध बुभुक्षा म्पिपासां तृषं कडुं खर्जूं ॥ परम्भन्ति ॥ परतंत्र

परिग्रहसन्ना कोहसन्ना जाव लोजसन्ना उंहसन्ना लोयसन्ना ॥१०॥ नेरइयाणं दस सन्ना एवचेव । एवंनिरं तरं जाव वैमाणियाण । नेरइयाणं दसविहं वेयणं पञ्चणुजवमाणा विहरन्ति तंजहा सीयं उसिण खुह पिवासं

तेकहैछे आहारसंज्ञा १ । यावत् परिग्रहसंज्ञा जय मैथुन ५ । क्रोधसंज्ञा यावत् लोजसंज्ञा ८ । लोकसंज्ञा ८ । उघसंज्ञा १० ॥ नारकीने दससंज्ञा होय इमज इम निरंतर यावत् वैमानिकने २४ दण्डके ॥ नारकीदशप्रकारनी वेदना प्रते जोगवता विचरें रहेछे ते कहैछे ठांठि १ । उप्प २ । जूस ३



ता अय भीति' शोकं दैन्यं जरां वृद्धत्वं व्याधिं ज्वरकुष्ठादिकमिति अमुञ्च वेदनादिकं ममूर्त्तं मर्थं जिनएव जानाति नरुद्ध्यस्यो यतआह ॥ दसेत्यादि ॥  
 गतार्थं नवरं छद्मस्य इह निरतिशयएव द्रष्टव्यो ऽन्यथा वधिज्ञानी परमाण्वादि जानात्येव ॥ सव्यभावेणिति ॥ सर्व्वप्रकारेण स्पर्शरसगन्धरूपज्ञानेन घट  
 मिवेत्यर्थो धर्मास्तिकाय यावत्करणा दधर्मास्तिकाय माकाशास्तिकाय जीव मशरीरप्रतिबद्धं परमाणुपुद्गल शब्दगन्धमिति ॥ अयमित्यादि ॥ इयमधिक  
 मिह तत्रायमिति प्रत्यक्षज्ञानसाक्षात्कृतो जिनः केवलोभविष्यति नयामविष्यतीति नयम तथायं ॥ सव्येत्यादि ॥ प्रकट दशममिति एताग्येव छद्मस्या  
 नवबोधानि सातिशयज्ञानादित्वा जिनो जानातीति आहच ॥ एयाइइत्यादि ॥ यावत्करणात् जिणे अरहा केवली सव्वणू सव्वभावेण जाणइ पा  
 सइ तजहा धम्मत्थिकायमित्यादि याव दशम स्थानं तच्चोक्त मेवेति सर्व्वज्ञत्वा देव या जिनो ऽतीन्द्रियाद्येप्रदर्शकान् श्रुतविशेषान् प्रणीतवा स्तान् दश

करुं परल्लं जयं सोगं जर वाहि । दस ठाणाइं वउमत्थे सव्वज्ञावेण नयाणइ नपासइ तजहा धम्मत्थिकायं  
 जाव वाय । अयंजिणेजविस्सइ वानजविस्सइ अयं सव्वदुस्काणमंत करिस्सइवा णवाकरिस्सइ एयाणिचेव  
 उप्पन्तनाणदंसणधरे जाणइ जावू अयं सव्वदुस्काणमंत करिस्सइवा नकरिस्सइ । दसदसानं पणत्तानं तंजहा

तृपा ४ । खाज ५ । परवसपणं ६ । जय ७ । शोक ८ । उवर ९ । व्याधि १० ॥ दश ध्यानरू छद्मस्य सर्व्वज्ञावेकरू नजाणे नपासे नदेखे ते कहैछे ध  
 र्मास्तिकाय यावत् वायु आ जीव जिन यास्ये के अथवा नही थाय आ जीव सर्व्व दुखनो अत करस्ये अथवा नही करे ए उपना ए दश वाना उ  
 पना ज्ञानदर्शनना धरनार अरिहत जाणे यावत् सर्व्वदुखनो अत करस्ये अथवा नहीकरे ॥ दश दशा कहौ अधिकारविशेष ते कहैछे कर्मविपाकद

स्थानकानुपातिनो दर्शयन्नाह ॥ दसदसेति ॥ दशसूत्राणि तत्र ॥ दसति ॥ दशसंख्याः ॥ दशाओत्ति ॥ दशाधिकाराभिधायकत्वा दशादिति बहुवचना  
 न्तं स्त्रीलिङ्गं शास्त्रस्याभिधानइति कर्मणो शुभस्य विपाकः फलकर्मविपाकस्तत्प्रतिपादिका दशाध्ययनात्मकत्वा दशा कर्मविपाकदशाः विपाकश्रुता  
 ख्यस्यैकादशाङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धो द्वितीयश्रुतस्कन्धो प्यस्य दशाध्ययनात्मकएव नचा सा विहाभिमत उत्तरत्र विवरिष्यमाणत्वादिति तथा साधूनुपा  
 सते सेवत इत्युपासकाः आवका स्तद्वतक्रियाकलापप्रतिबद्धा दशा दशाध्ययनोपलक्षिता उपासकदशा. सप्तम मङ्गमिति तथा अंतो विनाश. सच कर्म  
 ण स्तत्फलभूतस्यवा समारभ्य कृतो यै स्ते ऽतकृत स्तेच तीर्थकरादय स्तेषा न्दशा अन्तकृद्दशा इह चाष्टमाङ्गस्य प्रथमवर्गे दशाध्ययनानौति तत्सख्य  
 योपलक्षितत्वा दन्तकृतदशा इत्यभिधानेनाष्टममङ्गमभिहितं तथोत्तर. प्रधानो नास्योत्तरो विद्यत इत्यनुत्तर उपपत्तनमुपपातो जन्मेत्यर्थो ऽनुत्तर  
 आसा वपपातश्चेयन्तरोपपातः सोस्ति येषाते ऽनुत्तरोपपातिकाः सर्वार्थसिद्धादिविमानपञ्चकोपपातिनइत्यर्थं स्तद्वक्तव्यताप्रतिबद्धा दशा दशाध्यय  
 नोपलक्षिता अनुत्तरोपपातिकदशा नवम मङ्गमिति तथा चरणमाचारो ज्ञानादिविषयः पचधा आचारप्रतिपादनपरा दशा दशाध्ययनात्मिका  
 आचारदशा दशाश्रुतस्कन्धइति या रूढा स्तथा प्रश्नश्च पृच्छा व्याकरणानिच निर्वचनानि प्रश्नयाकरणानि तत्प्रतिपादिका दशा दशाध्ययनात्मिकाः  
 प्रश्नयाकरणदशा दशम मङ्गमिति तथा बन्धदशा द्विद्विदशा दीर्घदशा संक्षेपिकदशा आस्माक मप्रतीताइति कर्मविपाकदशाना मध्ययनविभागमाह

कर्मविवागदसानु उपासकदसानु अंतगडदसानु अनुत्तरोववाडयदसानु आचारदसानु परहावागरणदसानु

शा उपासकदशा अंतगडदशा अनुत्तरोववाडयदशा प्रश्नव्याकरणदशा आचारागदशा बधदशा दोगिद्विदशा दीर्घदशा संक्षेपदशा ए सर्व सूत्र १० ॥

कम्पेत्यादि ॥ मिगेत्यादि ॥ श्लोकः सार्धः मृगा मृगयामाभिधाननगरराजस्य विजयनाम्नो भार्या तस्याः पुत्रो मृगापुत्र स्तत्र किल नगरे मघावीरो गीतमे  
न समयसरणागतंजात्यन्तं नर मवलोख्य पृष्टो भद्रता न्योपीष्टास्ति जात्यंधो भगवा स्तं मृगापुत्रं जात्यन्त मनाकृति मुपदिदेश गीतमसु कुतूहलेन राह  
र्थनार्थतद्गृह जगाम मृगादेवोच वन्दित्वा गमनकारण पप्रच्छ गीतमसु त्वत्पुत्रदर्शनार्थं मित्युवाच ततः सा भूमिगृहस्थ गतदुःखाटनत स्तं गीतमस्य दर्शितं  
तततो गीतमसु त मतिष्ठणास्पद दृष्ट्वा गत्यथ भगवत पप्रच्छ कोयं जगामन्तरेऽभवत् भगवा न्वाच अयस्मि विजययर्षमानकाभिधाने खेटे मकायित्यभिधा  
नो नलोपचारादिभिर्नीलोपतापकारी राक्षकूटो बभूव ततः पौण्डरीकातङ्गाभिभूतो मृतो नरकङ्गत स्ततः पापकर्मविपाकेन मृगापुत्रो लोष्टाकारोऽव्यक्ते  
न्द्रियो दर्गन्तो जात स्ततो मृत्वा नरकंगत इत्यादि तद्व्यव्यताप्रतिपादक प्रथम मध्ययनं मृगापुत्र मुक्तमिति ॥ गोत्रास्येति ॥ गोत्रासितवानिति गो  
त्रासो यद्वि द्दस्तिनागपुरे भोमाभिधानकूटग्राहस्यो त्वन्माभिधानाया भार्यायाः पूतोऽभूत् प्रसवकाले चानेन मन्त्रापापसत्त्वेना राज्यागाव स्तासितः गो  
त्रने चाय गोमांसा न्यनेतथा भक्षितवान् ततो नारको जात स्ततो याणिजगामनगरे विजयसार्धवाहभद्राभार्ययो रुजितकाभिधानः पुत्रो जातः सच का  
मध्वजगणिकार्थे रात्रा तिलशो मांसच्छेदनेन तत्त्वाद्नेनच चतुष्पथे विष्टं व्यापादितो नरकं जगामेति गोत्रासव्यव्यताप्रतिबद्ध द्वितीय मध्ययन

बधदसानुं दोगिद्धिदसानुं दीहदसानुं संखेवियदसानुं । कम्मविवागदसाणं  
दसञ्ज्जयणा पसुत्ता तजहा । मियापुत्तेय गुत्तासे अण्णेसगळेइयावरे

कर्मविपाकदशाना दश अध्ययनकस्या ते कहैल्ले मृगापुत्रनुं १ । गोत्रासनुं २ । अक्रनुं ३ ।

गोवासमुच्यते इदमेव चोष्णतिकनाम्ना विपाकश्रुते उष्णिक मुच्यतइति २ ॥ अडेत्ति ॥ पुरिमतालनगरवास्तव्यस्य कुकुटाद्यनेकविधाण्डजभाण्डव्यवहा-  
 रिणो वाणिजकस्य निन्नकाभिधानस्य पापविपाकप्रतिपादकमण्डमिति सच निन्नको नरकङ्गत स्तत उडुत्तो ऽभग्नसेननामा पल्लीपतिर्जातः सच पु-  
 रिमतालनगरवास्तव्येन निरन्तरं देशलूषणातिकोपितेन विश्वास्या नौय प्रत्येकं नगरचत्वरेषु तदग्रतः पितृश्वपितृव्यानीप्रभृतिक स्वजनवर्गं विनाश्य  
 तिलशो मासच्छेदनरुधिरमांसभोजनादिना कदर्थयित्वा निपातितइति विपाकश्रुतेवा भग्नसेन इतीदं मध्ययन मुच्यते ३ ॥ सगडित्तियावरे ॥ शकट-  
 मिति चापर मध्ययन तत्र शाखाञ्जव्या न्रगयां सुभद्राख्यसार्थवाहभद्राभिधानतज्ञार्ययोः पुत्र. शकट. सच सुसेनाभिधाना मात्येन सुदर्शनाभिधानगणि-  
 काव्यतिकरे सगणिको मांसच्छेदादिना ऽत्यत कदर्थयित्वा विनाशितः सच जन्मान्तरे कृगलपुरे नगरे कृत्रिकाभिधानच्छागलिको मासप्रिय आसीदित्ये-  
 तदर्थप्रतिबद्धं चतुर्थमिति ४ ॥ माहणेत्ति ॥ कौशाव्या हृहस्पतिदत्तनामा ब्राह्मणः सचान्त. पुरव्यतिकरे उदायनेन राज्ञा तथैव कदर्थयित्वा मारितो  
 जमान्तरे चासा वासौन् महेश्वरदत्तनामा पुरोहित. सच जितशत्रो राज्ञः शत्रुजयार्थं ब्राह्मणादिभिर्होमं चकार तत्र प्रतिदिनं मेकेकं चातुर्वर्ष्यं दारक-  
 मष्टम्यादिषु द्वौ चतुर्मास्यां चतुरथतुरः षण्मास्यां मष्टा वष्टौ सम्बसरे षोडश २ परचक्रागमे ऽष्टशत २ परचक्रं चजोयते तदेव मृत्वा ऽसौ नरकं जगा-  
 मेत्येव ब्राह्मणवक्तव्यतानिबद्धं पञ्चममिति ५ ॥ नदिसेणयत्ति ॥ मथुराया श्रीरामराजसुतो दन्दिषेणो युवराजो विपाकश्रुते च नन्दिर्वहन. श्रूयते स

माहणेनंदिसेणेय सूरिएयउदुंबरे ॥ १ ॥

शकटनुं ४ । ब्राह्मणानु ५ । नदिषेणानु ६ । सौरिकनुं ७ । उदुंबरदत्तनुं ८ ।

च राजश्रोहश्रुति तरे राजा नगरचत्वरे ततस्यलोहस्यद्रवेण सान गतिधसिद्धासनोपवेशन चारतेलभृतकलशै राज्याभिषेकस कारयित्वा कष्टमारेण परा  
 सु ॥ श्रीतो नरक मगम त्वच जगान्तरे सिंहपुरनगरराजस्य सिंहस्थाभिधानस्य दुर्योधननामा गुप्तिपालो बभूवा नेकविधयातनाभि र्जन क्लृप्तयित्वा  
 मृतो नरक गतवा नित्येव मर्ष पठमिति ६ सौरियति ॥ सौरिकदत्तो नाम मत्स्यबन्धुपुत्रः सच मत्स्यमासप्रियो गलविलग्नमत्स्यकाण्टको महाकष्ट मनुभू  
 य मृत्वा नरक गतः सच जगान्तरे नन्दिपुरनगरराजस्य सिन्हाभिधानस्य शोकोनाम महानसिक्तो भूज्जोवघातरति मासप्रियश्च मृत्वा चासी नरकगतवा  
 निति सप्तम ७ ॥ इदं चाध्ययनविषाकश्रुतेष्टम मवीत ॥ उद्वरेति ॥ पाटलोखण्डेनगरे सागरदत्तसार्थवाहस्य उदम्बरदत्तो नाम्ना ऽभूत् सच पौडशभीरो  
 गै रेकदा ऽभिभूतो महाकष्ट मनुभूय मृतः सच जगान्तरे पिजयपुरराजस्य कनकरथनाम्ना धन्वन्तरिनामा यैदाप्रासीन् मासप्रियो मासोपदेष्टाचेति  
 कुत्वा नरकप्लवगा नि त्यष्टम ८ ॥ सहसुदाहेति ॥ सह ॥ ऽकस्मा द्गातः प्रकृष्टोदाहः सहस्रोदाहः सत्साणा वा लोकस्त्रोदाहः सहस्त्रोदाहः ॥ अमल  
 एति ॥ रघुतेर्लघुतिरित्यामरक. सामरुलेन मारिरेय मर्थयतिबध नयम तत्र किल सुपतिष्ठे नगरे सिंहासेना राजा श्यामाभिधानदेव्या मनुरक्त स्तद्वच  
 ना देवे कोनानि पञ्चशतानि देशोना ता मिमारगिषूणि ज्ञात्वा कुपितः सन् तन्मातृणा मेकोनपञ्चशता न्युपनिमंत्रय सह त्यगारे आवास दत्वा भक्तादि  
 मिः सम्पूज्य विश्रयानि सदेवोक्तानि सपरिवाराणि सर्वतो हागबन्धनपूर्वक मग्निप्रदानेन दग्धवा स्तातो सी राजा मृत्वा षष्ठ्याश्च गत्वा रोहीतके नग

सहसुदाहेत्यामलए कुमारेलेच्छुर्दतिय ।

सहस्त्रोदाह आमलकनू ८ । कुमारलच्छीनू १० ॥

रे दत्तसार्थवाहस्य दुहिता देवदत्ताभिधाना ऽभवत् साच पुष्पनन्दिना राज्ञा परिणीता सच मातु भक्तिपरतया तत्कल्याणि कुर्वन्नासामास तथाच भोगविघ्नकारिणौति तस्मात् ज्वलन्तोहदण्डस्या पानप्रक्षेपा क्लहसा दाहनबधो व्यधायि राज्ञा चासौ विविधविडवनाभिर्विडय विनाशितेति विपाकश्रुते देवदत्ताभिधान नवममिति ६ तथा ॥ कुमारलेच्छेद्दयति ॥ कुमाराः राज्यार्हा अथवा कुमाराः प्रथमवयस्या स्तान् ॥ लेच्छेद्दयति ॥ लिप्सुश्च वणिजश्चाश्रित्य दशम मध्ययनमिति शब्दश्च परिसमाप्तो भिन्नक्रमश्चेति अय मत्रभावार्थो यदुत इन्द्रपुरे नगरे पृथिवी श्रीनामगणिका ऽभूत्साच बहन् राजकुमारवणिकपुत्रादोन् मत्रचूषादिभिर्वंशीकृत्यो दारान् भोगान् भुक्तवतो पृथ्वाञ्च गत्वा वर्धमाननगरे धनदेवसार्थवाहदुहिता अजू रित्यभिधाना जातेति साच विजयराजपरिणीता योनिशूलेन कृच्छ्रं जीवित्वा नरक गतेति अतएव विपाकश्रुते अजूइति दशम मध्ययन सुच्यतइति उपासकदशाविवरणं ब्राह्म ॥ दसेत्यादि ॥ आनन्दे सार्द्धं श्लोकः ॥ आणदेति ॥ आनन्दो बाणिजग्रामाभिधाननगरवासौ महर्षिको गृहपतिर्माहावीरेण बोधित एकादशीपाशकप्रतिमाङ्गुल्योत्पन्नावधिज्ञानो मासिक्यासलेखनया सौधर्ममगम दितिवक्तव्यताप्रतिबद्ध प्रथममध्ययन मानंदएवोच्यतइति १ ॥ कामदेवेति ॥ कामदेवश्च म्मानगरोवास्तस्य स्तथैव प्रतिबुद्धः परौक्षाकारिदेवकृतोपसर्गविचलितप्रतिज्ञ स्तथैव द्विवमगम दित्येव मर्थ द्वितौर्य कामदेव इति २ ॥ गाहावइचुलणी पियति ॥ चुलनीपिटनामा गृहपतिर्वाराणसीनिवासी तथैव प्रतिबुद्धः प्रतिपन्नप्रतिमो विमर्शकदेवेन मातरं त्रिखंडा क्रियमाणा दृष्ट्वा चुभितश्चलित

उवासगदसाणं दस अज्जयणा पस्सत्ता तजहा अणंदेकामदेवेय गाहावइचुलणीपिया सुरादेवे

उपासकदशागना दश अध्ययन कक्षा ते कहैछे आणदन् १ । कामदेव

० ॥  
५ ॥

प्रतिज्ञो देवनिगहार्थं मुहपाव पुनः कृतालोचन स्तथैव दिवंगतः इति वक्तव्यताप्रतिबन्धं चुलनीपिते लुप्यते २ ॥ सुरादेवेति ॥ सुरादेवो गृहपति वाराण  
सोनिवामी परोक्षकदेवस्य षोडशरोगात् कानुभवतः शरीरे शमत्त मुपनयामि यदि धर्मं न त्यजसीति वचनं मुपश्रुत्य चलितप्रतिज्ञः पुनरालोचितप्रतिक्रा  
न्त स्तथैव दिवंगत इति वक्तव्यताभिधायक सुरादेश इति ४ ॥ चुल्लमय एति ॥ महाशतकापेक्षया लघु शतकं शुल्लशतकं सचालम्बिकाभिधाननगरनिवासी  
देवेनोपसर्गकारिणा द्रव्यमुपक्षिप्तमाणा मूलभ्य चलितप्रतिज्ञः पुनर्निरतिचारः सन् दिव्य भगवत् वशा तथा यथा भिधीयते तच्छुल्लशतक इति ५ ॥ गाहा  
वडकुडकोलिगति ॥ कुंडकोलिको गृहपतिः कापित्यवासी धर्मध्यानस्थो गथादेवस्य गोशालमत मुद्राहृत उत्तरं ददौ दिवं च ययौ यथा यथाभिधीय  
ते तत्तथेति ६ ॥ सद्दालपुत्तेति ॥ सद्दालपुत्रं पोलसपुरासो कृष्णकारजातीयो गोशालको भगवता बोधितः पुनः स्वमतग्राहणोद्यतेन गोशालकोना क्षीभि  
तान्तःकरणः प्रतिपन्नप्रतिमस्य परोक्षकदेवेन भार्यामरणदर्शनतो भग्नप्रतिज्ञः पुनरपि कृतालोचन स्तथैव दिवंगत इति वक्तव्यताप्रतिबन्धं सद्दालपुत्र इति  
७ ॥ महासग एति ॥ महाशतकनाम्नो गृहपते राजगृहजनगरवसते स्तयोदशभार्यापते रुपामकप्रतिमाकृतमते रुपय्यावधि संजाताधिगते रेवत्यभि  
धानस्वभार्याकृतान् कुलीपसर्गावलमतेः सलेखनाजातद्विगते वैतव्यतानिब्रष्ट महाशतक इति ८ ॥ नदिणीपियति ॥ नन्दिनीपितृनामकस्य आपस्ती  
पादाव्यस्य भगवता बोधितस्य सलेखनादिगतस्य वक्तव्यतानिब्रधना नन्दिनीपितृनामक इति ९ ॥ सालेश्यापियति ॥ सालेशिकापितृनामकः आपस्तीनि

चुल्लमए गाहावडकुंडकोलिए ॥ १ ॥ सद्दालपुत्तेमहासयए नदिणीपियसालेश्यापिया । अंतगद्दसाणं दस  
नू २ । गाथापती चुल्लनीपितानूं ३ । सुरादेवीनूं ४ । चुल्लशतकनूं ५ । गाथापती कुंडकोलिकनूं ६ । सद्दालपुत्रनूं ७ । महाशतकनूं ८ । नन्दिनीपिता





० ॥  
६ ॥

नक्षत्रकथानक एवं काक्यां नगर्याभद्रासार्थनाहीसुतो धन्यकोनाम महावीरसमीपे धर्म मनुश्रुत्य महाविभूत्याप्रव्रजितः षष्ठीपवासी उक्तामानलब्धा वा  
 स्तपारणीविशिष्टतपसा क्षीणमांसशोणितो राजगृहे श्रेणिकमहाराजस्य चतुर्दशाना श्रमणसहस्राणामध्ये अतिदुष्करकारक इति महावीरेण व्याहृत स्ते  
 नच राज्ञा सभक्तिकं वर्द्धित उपवृद्धितश्च कालचक्रत्वा सर्वार्थसिद्धिविमाने उत्पन्न इति एवमुनक्षत्रोपीति कार्तिक इति हस्तिनागपुरे श्रेष्ठी इभ्यसहस्रप्रथ  
 मासनिक' श्रमणीपासको जितशत्रुराजस्या भियोगात् परिव्राजकस्य मासक्षपणपारणके भोजन परिवेषितवान् तमेव निर्वेद कृत्वा मुनिसुव्रतस्वामिसमी  
 पे प्रव्रज्या प्रतिपन्नवान् द्वादशाङ्गधरा भूत्वा शकत्वेनो त्पन्न इत्येव यो भगवत्या श्रूयते सो न्यएवाग पुन रन्यो ऽनुत्तरसुरेषू पपन्न इति शालिभद्र इति यः पू  
 र्वभवे सगमनामावत्सपालो ऽभवत् स बहुमानश्च सायवे पायसमदात् राजगृहे गोभद्रः श्रेष्ठिनः पुत्रत्वेनो त्पन्नो देवोभूतगोभद्रश्रेष्ठिसमुपनीतदिव्यभोजन  
 वसनकुसुमविलेपनभूषणादिभिर्भोग्याङ्गै रङ्गनाना द्वाविंशता सह सप्तभूमिकरम्यहर्म्यतलगतो ललतिस्र वाणिजकोपनीतलजमूल्यबहुरत्नकवला गृहीता  
 भद्रया शालिभद्रमात्रा वधूनापादप्रोच्छनीकृता शेति श्रवणा ज्ञातकुत्सले दर्शनार्थं गृहमागते श्रेणिकमहाराजे जनन्याभिहितो यथा त्वा स्वामी  
 द्रष्टुं मिच्छतो त्यक्तर प्रासादशृंगा तस्वामिन पश्येति वचनश्रवणा दस्त्राक मप्यन्य' स्वामीति भावयन् वैराग्यं सुपजगाम वर्द्धमानस्वामिसमीपेच प्रवव्राज  
 विक्लष्टतपसा क्षीणदेहः शिलातले पादपोषगमनविधिना नुत्तरसुरेपू त्पन्नवानिति साय मिह सभाच्यते केवलम नुत्तरोपपातिकाङ्गे नाधीत इति ॥ तेतली

सुनरकत्तेयकित्तिये सछाणेसालिजद्देय श्याणदेतेयलीइय ॥ १ ॥ दसन्तजद्देयइमुते एमेतेदसश्याहिया । श्याया

जगवते तेकहैछे इशिदासनु १ । धनानु २ । सुनक्षत्रनो ३ । कार्तिकनो ४ । सस्थाननो ५ । शालिजद्रनो ६ । आणदनो ७ । तेतलीनो ८ ॥ १ ॥ दशार्ण

इयत्ति ॥ तेतलिसुतइति यो ज्ञाताध्ययनेषु श्रूयते सनाय तस्य सिद्धिगमनश्रवणात् तथा दशार्शभद्रो दशार्शपुरनगरनिवासी विश्वभराविभु र्यो भगवत  
 महावीर दशार्शकूटनगरनिकटसमवस्यत सुद्यानपालवचना दुपलभ्य यथा न केनापि वंदितो भगवां स्तथा मया वंदनीयइति राज्यसपदवलेपा इ  
 त्तितश्च चिन्तयामास ततः प्रातः सविशेषकृतस्नानविलेपनाभरणादिविभूषः प्रकल्पितप्रधानद्विपपतिपृष्ठाकूटो वल्लनादिविविधक्रियाकारिसदर्पसर्प  
 चतुरगसैन्यसमन्विन पुष्पमाणवकसमुद्भूयमाणगणितगुणगण सामन्तामात्यमन्त्रिराजदौवारिकदूतादिपरिवृतः सातःपुरपौरजनपरिवृत आनन्दमयमि  
 व सपाद्यन्महौमडल माखडलइवा मरावत्या नगरा त्रिर्जगाम निर्गल्यच समयसरण मभिगम्य यथाविधि भगवतं भव्यजननलिनवनविवोधनाभिनवभा  
 नुमंत महावीर वदित्वो पविवेश अवगतदशार्शभद्रभूपाभिप्रायच तन्मानविनोदनोद्यत कृताष्टमुखे प्रतिमुख विहिताष्टदंते प्रतिदंत कृताष्टपुष्करणीके  
 प्रतिपुष्करणिनिरूपिताष्टपुष्करे प्रतिपुष्कर विरचिताष्टदले प्रतिदल विरचितद्वाविशहृदनाटके वारणेन्द्रे सारूढ स्वश्रिया निखिल गगनमण्डल मापूरय  
 न्त ममरपतिमवलोक्य कुतो ऽस्मादृशा मौदृशौ विभूतिः कृतो ऽनेन निरवद्या धर्म इति ततो हमपि त करोमीति विभाज्य प्रवव्राज जितोह मधुना  
 त्वयेति भणित्वा यमिन्द्र प्रणिपपातेति सोय दशार्शभद्र सभाश्रयते पर मनुत्तरोपपातिकाङ्गे ना धीतः क्वचित्तिदृश्य श्रूयतइति तथा अतिमुक्तक एवश्र  
 यते अतकृदृशागे पोलासपुरे नगरे विजयस्य राज्ञः शोनाम्न्या देव्या अतिमुक्तको नाम पुत्र षड्वार्षिको गौतम गोचरगत दृष्ट्वा एव मवादीत्के यूयं किंप  
 र्यटत ततो गौतमो ऽवादीत् अमणा वय भिक्षार्थञ्च पर्यटाम स्तहि भदता आगच्छत तभ्य भिक्षा न्दापयामौ तिभणित्वा झुल्ल्या भगवन्त गृहीत्वा स्व  
 गृह मानैषौ ततः श्रोदेवौ हृष्टा भगवत प्रतिलभयामास अतिमुक्तक पुन रवोचत् यूय क्व वसथ भगवा नुवाच भद्र मम धर्माचार्याः श्रोवर्द्धमानस्वामिन  
 उद्याने वसति तत्र वय परिवसामो भदता गच्छाम्यह भवद्भिः सार्द्धं भगवतो महावीरस्य पादान् वदितु गौतमो ऽवादीत् यथा सुख देवाना म्रिय त

तो गोतमेत सहागत्या तिमुक्तकः कुमारो भगवतं वदतेस्म धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धो गृहमागत्य पितरा वव्रवीत्यथास सारान्निर्विण्णोह प्रव्रजामीत्यनुजानी  
त युवा ता वूचतु बाल त्व कि ज्ञानासि ततो ति मुक्तको ऽवादीत् अब तात यदेवाह जानामि तदेव न जानामि तदेव जानामीति तत स्तौ तमवादि  
ष्टा कथमेतत् सोऽब्रवीत् अब तात जानाम्यह यदुत जातेना वश्य मर्त्तय्य न जानामि तु कदावा कस्मिन्वा कथवा किय चिरा द्वा तथा न जानामि  
कै कर्मेभि निर्रयादिषु जीवा उच्यते एत त्पुन जानामि यथा स्वय कृतै कर्मभिरिति तदेव आतापितरौ प्रतिबोध्य प्रवव्राज तप कृत्वाच सिद्धइति  
ब्रह्मत्वय मनुत्तरोपपातिकेषु दशमाध्ययनतयोक्त स्त दपर एवाय भविष्यतीति ॥ दसआहियन्ति ॥ दशाध्ययना न्याख्यातानौत्यर्थ आचारदशाना मध्यय  
नविभागमाह ॥ आयारित्यादि । असमाधि ज्ञानादिभावप्रतिषेधो ऽप्रशस्तो भावइत्यर्थ स्तस्य स्थानानि पदानि असमाधिस्थानानि यै रासेवितै रात्म  
परोभयाना मिह परत्रो भयत्रवा असमाधि रुप्ययते तानौतिभाव स्तानिच विशति द्रुतचारित्वादीनि तत एवा वगम्यानीति तत्प्रतिपादक मध्ययन म  
समाधिस्थानानीति प्रथम तथा एकविशति शबला शबल कर्बुर द्रव्यत पटादि भावत सातिचार चारित्र मिह च शबल चारित्रयोगात् शबला सा  
धव स्तेच करकर्मप्रकारान्तरमैशुनादी न्येकविशतिपदानि तत्रै वोक्तरूपाणि सेवमाना उपाधित एकविंशति भवति तदर्थ मध्ययन मेकविशतिशबला  
इत्यभिधीयते २ ॥ तेत्तोसमासायणाश्रित्ति ॥ ज्ञानादिगुणा आसामस्येन शाल्यन्ते अपध्वस्यन्ते यकाभि स्ता आशतना रत्नाधिकविषया अविनयरूपाः

रदसाणं दस अज्जयणा पसत्ता तंजहा वीसं असमाहिठाणा इक्कवीस सबला तिहीसअसायणानं अठ

जट्टनो ६ । अयमतानो १० ॥ ए दश कह्या १० ॥ आचारागदशाना दश अध्ययन कह्या ते कहैछे वीसअसमाधि स्थानकअध्ययन १ । एकवीस

पुरतो गमनादिका स्तवसिद्धा स्तवस्तिगद्देशा यत्रा भिधीयन्ते तदध्ययनमपि तथैवोच्यतइति ३ ॥ अठ्ठ्यादि ॥ अष्टविधा गणिसंपत् आचारश्रुतशरीर  
 वचनादिका आचार्यगुणर्द्धि रश्चस्थानकोक्तरूपा यत्रा भिधीयते तदध्ययनमपि तथैवोच्यतइति ४ ॥ दसेत्यादि ॥ दशचित्तसमाधिस्थानानि येषु सत्सु चि  
 त्तस्य प्रशस्तपरिणतिर्जायते तानि तथा अससुत्पन्नपूर्वकधर्मचित्तोत्पादादौनि तत्रैव प्रसिद्धा न्यभिधीयन्ते यत्र त तथैवोच्यत इति ५ ॥ एकारित्यादि ॥  
 एकादशोपासकानां आवकाणां प्रतिमा, प्रतिपतिविशेषाः दर्शनव्रतसामायिकादिविषयाः प्रतिपाद्यन्ते यत्र त तथैवोच्यतइति ६ ॥ वारसेत्यादि ॥ द्वाद  
 शभिजूणां प्रतिमा अभिग्रहा मासिकौडिनामिकीप्रभृतयो यत्रा भिधीयन्ते त तथोच्यतइति ७ ॥ पञ्जाइत्यादि ॥ पर्याया ऋतुबुद्धिका द्रव्यक्षेत्रकालभा  
 वसम्बन्धिन उत्सृज्यन्ते उभयान्ते यस्या सा निरुक्तविधिना पर्योसवना अथवा परीति सर्वतः क्रोधादिभावेभ्य उपशम्यते यस्या सापर्युपशमना अथवा प  
 रि, सर्वथा एकक्षेत्रे जघन्यत, सप्ततिदिनानि उत्कृष्टत षण्मासान् वसन निरुक्तादेव पर्युषणा तस्याः कल्प आचारां मर्यादेत्यर्थः पर्योसवनाकल्पः पर्युपश  
 मनाकल्प पर्युषणाकल्पोवेति सच सक्कोसजोयणविगर्हनवयमित्यादिक स्तत्रैव प्रसिद्ध स्तदर्थं मध्ययन सएवोच्यत इति ८ ॥ तीसमित्यादि ॥ त्रिंशन्नोहनी  
 यकर्मणो बन्धस्थानानि बन्धनकारणानि वारिमज्जेवगाहित्तात सेपाणेविहिंसईत्यादिकानि तत्रैव प्रसिद्धानि मोहनोयस्थानानि तत्प्रतिपादक मध्ययन  
 तथैवोच्यतइति ९ ॥ आयाइष्टाणमिति ॥ आजनन माजातिः सम्मूर्च्छनगर्भीपपाततो जन्म तस्याः स्थानं ससार स्तत्तन्निदानस्य भवतौत्येव मर्थप्रतिपाद

विहागणिसंपया दसचित्तसमाहिष्ठाणा इक्कारसउवासगपद्भिमानु वारसज्जिकुपद्भिमानु पज्जोसवणाकप्पे  
 सत्तलानो २ ॥ तेत्तीस आशातनानो ३ ॥ आठ आचार्यनी संपदानो ४ ॥ दश चित्रना समाधिना थानक कह्या ५ । इग्यारे आवकनी प्रतिमानो ६ ॥

१० ॥

१५ ॥

नपर माजातिस्थान मुच्यतइति १० ॥ प्रश्नव्याकरणदशा इतीतिरूपा न दृश्यमानास्तु पञ्चाश्वपञ्चसवरात्मिका इती होक्ताना तूपमादीना मध्ययनाना मत्तरार्थं प्रतीयमानएवेति नवर ॥ पसिणाइति ॥ प्रश्नविद्या यकाभिः क्षौमकादिषु देवतावतारः क्रियतइति तत्र क्षौमक वस्त्र ॥ अद्वागी ॥ आदर्शी इष्टुष्टी ऋस्तावयवो बाहवो भुजाइति बन्धदशानामपि बन्धादाध्ययनानि श्रौतेनार्थेन व्याख्यातव्यानि द्विष्टद्विदशाश्च स्वरूपतोष्यनवसिता दीर्घदशा स्वरूपतोऽनवगताएव तदध्ययनानितु कानिचि न्नरकावलिकाश्रुतस्तन्मे उपलभ्यते तत्र चन्द्रवक्तव्यताप्रतिबद्ध चन्द्र मध्ययन तथाहि राजगृहे महावीरस्य

तीसमोहणिज्जाठाणा । परहावागरणदसाण दसञ्ज्जयणा प० तजहा उवमा संखा इसिजासियाइ आयरि यजासियाइ महावीरजासियाइ खोमगपसिणाइ कोमलपसिणाइ अद्वागपसिणाइ अंगुठपसिणाइ बाहुपसिणाइ । वधदसाण दस अञ्ज्जयणा प० त० वंधेमुक्केयेदेवही दसारेमफलेइय आयरियविप्पफिवत्ती उवज्जाय विप्पफिवत्ती जावणा विमुत्ती सातोकम्मे ॥ दौगिद्विदसाण दस अञ्ज्जयणा प० त० वाए विद्याए उववाए

वारेसाधुनी प्रतिमानो ७ ॥ पजूसणकल्पनो ८ ॥ त्रीश मोहनीकर्मनो ९ ॥ समूर्च्छिम गर्जजना जन्मना थानकनो ॥ १० ॥ प्रश्नव्याकरणदशाना दश अध्ययन कट्ठा तेकहैछे उपमाअध्ययन १ ॥ सख्याअध्ययन २ ॥ ऋषिजापितअध्ययन ३ ॥ आचार्यजापित ४ ॥ महावीरजापित ५ ॥ क्षौमक वस्त्र ते हना प्रश्न ६ ॥ कोमलप्रश्नो ७ ॥ अद्वाग ते आदेश तेहना प्रश्न ८ ॥ अगूठाना प्रश्नो ९ ॥ भुजानाप्रश्न १० ॥ वधदशाना दश अध्ययन कट्ठा तेक हैछे वध १ ॥ मोक्ष २ ॥ देवर्षि ३ ॥ दसारमरुत ४ ॥ आचार्यविप्रतिपत्ती ५ ॥ उपाध्यायविप्रतिपत्ती ६ ॥ भावना ७ ॥ विमुक्ती ८ ॥ सास्वत ९ ॥

चन्द्रो ज्योतिष्कराजो वन्दनं कृत्वा नायविधि चोपदर्थं प्रतिगतो गौतमश्च भगवन्तं तद्वक्तव्यतां पप्रच्छ भगवां द्योवाच आवस्था मङ्गजिन्नामाय गृहपति  
रभू त्पार्श्वनाथसमीपे न प्रव्रजितो विराध्यच मनाक् आमण्यं चन्द्रतयो त्यन्त्रो महाविदेहेव सेतस्यतीति तथा सूरवक्तव्यताप्रतिबद्ध सूर सूरवक्तव्यता चन्द्रव  
न्नवर सुप्रतिष्ठो नाम्नागभूवेति ण्को गृह. स्तद्वक्तव्यता चैव राजगृहेभगवन्त वन्दित्वा शुक्रे प्रतिगते गौतमस्य तथैव भगवानुवाच वाराणस्या सोमिलना  
मा ब्राह्मणो यमभवत् पार्श्वनाथश्चा पृच्छत् त भतेजवणिज्जं तथा सरिसवयामासा जुलत्यायते भोज्जा तथा एगेभवन्दुवेभवमित्यादि भगवता चैतेषु विभक्ते  
ष्वानिष्टः आवकोभूत्वा पुन विपर्यासा दारामादिलौकिकधर्मस्थानानि कारित्वा दिक्पोचकतापसत्वेन प्रवृज्य प्रतिषष्ठपारणक क्रमेण पूर्वादिदिग्भ्य आ  
नौय कन्दादिक मभ्यवजहारा न्यदा सौ यत्र कचन गत्तादौ पतिष्यामि तत्रैव प्राणा स्त्यक्ष्यामो त्यभिग्रह मभिगृह्य काष्ठमुद्रया सुखबध्वा उत्तराभिमुखः  
प्रतस्थौ तत्र प्रथमदिवसे पराहसमये ऽशोकतरो रधो होमादिकर्मकृत्वा वास तत्र देवेन केनाप्युतो ऽहो सोमिलब्राह्मण महर्षे दुःप्रव्रजित ते पुन द्वितीये  
ऽहनि तथैव सप्तपर्णस्याध उषित उक्ततृतीयादिषु दिनेषु अश्वत्थवटोदुम्बराणा मध उषितो भणितो देवेन ततः पञ्चमदिने वादौ दसौ कथन्नुनाम मे  
दु प्रव्रजित देवो ऽवोचत् त्व पार्श्वनाथस्य भगवतः समीपे अणुव्रतादिक आवकधर्म प्रतिपद्या धुना ऽन्यथा वर्त्तमइति दुःप्रव्रजित तव ततो द्यापि तमेवा  
णुव्रतादिक धर्म प्रतिपद्यस्व येन सुप्रव्रजितं तव भवतीत्येव मुक्त स्तयेव चकार ततः आवकत्वं प्रतिपात्वा नालोचितप्रतिक्रात. कालङ्कृत्वा शुक्रावतसके

सुखित्ते कसिणे वायालीसंसुविणा तीसंमहासुविणा बावत्तरिसव्सुमिणा हारे रामगुप्ते एमेएदसञ्चाहिया ।

कर्म १० ॥ दोगिद्वि दशाना दश अध्ययन कक्षा ते कहैछे वात १ ॥ विवात २ ॥ उपपात ३ । सुत्तेत्र । कृष्ण । वेतालीससुपन ॥ त्रीसमहास्वप्न ॥

॥ विमाने शुक्लत्वेनोत्पन्नइति तथा श्रीदेवीसमाश्रय मध्ययन श्रीदेवीति तथाहि सा राजगृहे महावीरवन्दनाय सौधर्मादाजगाम नायं दर्शयित्वा  
 ॥ प्रतिजगाम च गोतमस्तत्पूर्वभवपप्रच्छ भगवांस्तज्ज्ञगाद राजगृहे सुदर्शनश्रेष्ठो बभूव प्रियाभिधानाच तद्भार्या तयो सुता भूतानाम वृहत्कुमारिका  
 पार्श्वनाथसमीपे प्रवृजिता शरीरवकुला जाता सातिचाराच मृत्वा दिवङ्गता महाविदेहे च सेत्स्यतीति तथा प्रभावती चेटकदुहिता वीतभयनगरना  
 यकोदायनमहाराजभार्या यया जिनविजयपूजार्थं सानानन्तर चेष्टा सितवसनार्पणेपि विभ्रमा द्रक्तवसनमुपनौत मनवसर मनयेति मन्यमानया म  
 न्युना दर्पणेन चेटिका हता मृता च सा ततो वैराग्या दनशन प्रतिपद्य देवतया ययाचो जयनो राजानं प्रति विक्षेपेण प्रस्थितस्य ग्रीमे मासि पिपा  
 साभिभूतसमस्तसैन्यस्योदायनमहाराजस्य स्वच्छशीतलजलपरिपूर्णात्रिपुंकरकरणेनोपकारोऽकारीत्येव लक्षणप्रभावतीचरितयुक्त मध्ययन प्रभाव  
 तीति सम्भाव्यते नचैव निरयावलिकान्शुतस्तुधे दृश्यतइति पचम तथा बहुपुत्रिका देवी प्रतिबद्ध सैवाध्ययनमुच्यते तथाहि राजगृहे महावीरवन्दना  
 र्थं सौधर्मा बहुपुत्रिकाभिधाना देवी समवततार वन्दित्वा च प्रतिजगाम कीयमिति पृष्टे गोतमेन भगवा नवादीत् वाराणस्यां नगर्या भद्राभिधानस्य  
 सार्थवाहस्य सुभद्राभिधाना भार्येय बभूव सा च वन्ध्या पुत्रार्थिनौ भित्तार्थं मागत भार्यासघाटक पुत्रलाभपप्रच्छ सचधर्ममचौकथत् प्राव्राजीञ्च सा बहु

दीहदसाणं दस अज्जयणा प० तजहा च देसूरेयसुक्कोय सिरिदेवीपहावई दीवसमुद्दोववती बज्जपुत्तीमदरेडय ।

विहीतरि सर्वं स्वप्न ॥ हार ८ ॥ रामगुप्त १० ॥ इम ए दश कक्ष्या प्राये ए अध्ययननां स्वरूपं नथीजाण्या इम टीकामा कक्ष्योक्ते ॥ दीर्घदशाना दश  
 अध्ययन कक्ष्या ते कहेक्के चद्राध्ययन १ ॥ सूर्याध्ययन २ ॥ शुक्लाध्ययन ३ ॥ श्रीदेवी ४ ॥ प्रभावतीनो ५ ॥ द्वीपसमुद्रविजक्ति ६ ॥ बहुपुत्रिकानो ७ ॥ मे

जनापत्येषु प्रीत्या भ्यङ्गोदत्तनापरायणा सातिचारा मृत्वा सौधर्ममगमत् तत श्युत्वा च विभेलसनिवेशे व्राक्षणीत्वे नीत्पत्स्यते ततः पितृभगिनेयभार्या  
भविष्यति युगलप्रसवाच्च सा षोडशभिर्वर्षैर्द्वाविंशदपत्यानि जनयिष्यति ततो सौ तन्निर्वंदा दार्याः प्रच्यति तासु धर्मं कथयिष्यन्ति आवकत्वञ्च सा प्रतिप  
त्स्यते कालान्तरे प्रवृजिष्यति सौधर्मेचन्द्रसामानिकतयो त्यद्य महाविदेहे सेत्स्यतीति तथा स्थविरः सभूतविजयो भद्रबाहुस्वामिनो गुरुभ्राता स्थूलभद्रस्य  
सगडालपुत्रस्य दीक्षा दाता तद्वक्तव्यता प्रतिबद्ध मध्ययन सएवोच्यतइति नवम शेषाणि त्रीण्यप्रतीतानि संज्ञेपिकादशा अप्यनवगतस्वरूपाएव तदध्ययना  
ना पुन रय मर्थ ॥ खुड्डिरत्यादि ॥ इहावलिकाप्रविष्टेतरविमानप्रविभजन यत्राध्ययने तद्विमानप्रविभक्ति स्तच्चैक मल्पग्रन्थार्थं तथा न्यन्महाग्रन्थार्थं  
मतः क्षुल्लिकाविमानप्रविभक्ति महतीविमानप्रविभक्तिरिति अंगस्या चारादेः क्षूलिका ऽगक्षूलिका यथा चारस्या नेकविधा इहोक्तानुक्तार्थसंयाहिका  
क्षूलिका ॥ वगक्षूलियति ॥ इह वर्गो ऽध्ययनादिसमूहो यथा न्तकृद्ग्रा स्रष्टी वर्गा स्तस्यक्षूलिका वर्गक्षूलिका ॥ विवाहक्षूलियति ॥ व्याख्या भगवतीतस्या  
क्षूलिका व्याख्याक्षूलिका अरुणोपपातइति इहारुणोनाम देव स्तत्समयनिबद्धो ग्रन्थ स्तदुपपातहेतु ररुणोपपातो यदा तदध्ययनं सुपयुक्तं सन् अमणः

थेरेसंज्ञूयविजए पम्हउरुसासनिरुससे ॥ संखेवियदसाणं दस अज्जयणा प० तजहा खुद्वियाविमाणपविज्जती  
महल्लियाविमाणपविज्जती अगक्षूलिया वगक्षूलिया विवाहक्षूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए

रुनो ८ ॥ १ ॥ थविर संज्ञूतविजय स्थूलभद्रना गुरुनो अध्ययन ८ ॥ थविरपट्ठउत्त्वासनो १० ॥ संज्ञेपिका दशानां दश अध्ययन कक्ष्या तेकहैच्छे क्षुद्रि  
काविमानप्रविभक्ति १ ॥ महल्लिकाविमानप्रविभक्ति २ ॥ अगक्षूलिका ३ ॥ वर्गक्षूलिका ४ ॥ विवाहक्षूलिका ५ ॥ अरुणोपपात ६ ॥ वरुणोपपात ७ ॥



परिवर्त्तयति तदा सा वरुणोदेवः स्वसमयनिबद्धत्वा क्षलितासनः सम्भ्रमोज्झान्तलोचनः प्रयुक्तावधि स्त द्विजाय हृष्टप्रहृष्ट खलचपलकुण्डलधरो दिव्यया व्यु-  
 त्या दिव्यया विभूत्या दिव्यया गत्या यत्रै वासौ भगवान् अमण स्तत्रै वोपागच्छति उपागत्यच भक्तिभरावनतवदनो विमुक्तवरकुसुमवृष्टि रवपतति प्रव-  
 पतत्यच तदा तस्य अमणस्य पुरतः स्थित्वा ऽतर्हितः कृताञ्जलिक उपयुक्तः सवेगविश्रद्धामानाध्यवसान' शृण्व स्तिष्ठति समाप्तेच भणति सुस्वाध्यायित सु-  
 स्वाध्यायितमिति वर वृण्विति ततो सा विहल्लोकनिष्पिपास समतृणमणिमुक्तालोष्ठकाक्षन सिद्धिवधूनिर्भरानुगतचित्तः अमणः प्रतिभणति नमे वरेणा-  
 र्थइति ततोसा वरुणो देवो धिकतरजातसवेग, प्रदक्षिणा कृत्वा वन्दित्वा नमसित्वा प्रतिगच्छति एव वरुणोपपाताद्विष्वपि भणितव्यमिति एवभूतच श्रुतं  
 कालविशेषएव भवतीति दशस्थानकावतारि तत्स्वरूपमाह ॥ दसेत्यादि ॥ सूत्रद्वयं सुगम यथोपाधिवशा क्कालद्रव्य भेदव तथा नारकादिजीवद्रव्याण्यपी-  
 त्याह ॥ दसविहेत्यादि ॥ सूत्राणि चतुर्विंशति न विद्वान् ऽन्तर व्यवधान मस्येत्यनन्तरो वर्त्तमान, समय स्तत्रो पपन्नका अनन्तरोपपन्नका येषा मुत्पन्ना-  
 ना मेकोपि समयो नातिक्कात स्तण्तइति येषा तू पपन्नाना द्यादय समया जाता स्ते परम्परोपपन्नका परम्परसमयेषू पपन्नत्वा तेषा मिल्येवं कालवि-

वेलधरोववाए वेसमणोववाए ॥ दससागरोवमकोळाकोळीनु कालोउरुसप्पिणीए ॥ दससागरोवमकोळाको-  
 ळीनुकालोनुसप्पिणीए ॥ दसविहा नेरइया प० तजहा ञ्णतरोववन्ता परपरोववन्ता ञ्णतरोवगाढा पर

गमलोपपात ८ ॥ वैश्रमणोपपात ९ ॥ वेलधरोपपात १० ॥ दशकोळाकोळि सागरोपमनो काल उत्सर्पिणी ॥ दशकोळाकोळि सागरोपमनो का-  
 ल अवसर्पिणी ॥ दशप्रकारना नारकी कल्या तेकरेडे अतरारहितउपमा १ ॥ परपरानाउपमा २ ॥ अनतरक्षेत्रे रक्ष्या ३ ॥ परपराये क्षेत्रे रक्ष्या ४ ॥

शेषोपाधिकृतो भेदः स्तथा विवक्षितप्रदेशापेक्षया ऽनन्तरप्रदेशे ष्ववगाढा अवस्थिता अनन्तरावगाढा अथवा प्रथमसमयावगाढा अनन्तरावगाढा एतद्वि-  
लक्षणाः परम्परावगाढा अयं क्षेत्रतो भेदः स्तथा अनन्तराव्यवहिता ज्जीवप्रदेशे राक्तान्ततया सृष्टतयावा पुद्गलानाहारयती त्यनन्तराहारकाः येतु पूर्व व्य-  
वहितान् सतः पुद्गलान् स्वक्षेत्रे मागतानाहारयति ते परम्पराहारका अथवा प्रथमसमयाहारका अनन्तराहारका इतरे त्वितरे अयन्तु द्रव्यकृतो भेदः  
इति नविद्यते पर्याप्तत्वे ऽतर येषां ते ऽनन्तरा स्तेचते पर्याप्तका चे त्यनन्तरपर्याप्तकाः प्रथमसमयपर्याप्तका इत्यर्थः इतरेतु परम्परपर्याप्तका अयं भावक-  
तो भेदः पर्याप्ते र्भावनत्वादिति चरमनारकभवयुक्तत्वा चरमा नपुन नारकाभविष्यति यद्वतिभावः स्तद्विपरीता अचरमा अयमपि भावकृतएव भेदः चरमा  
चरमत्वयो र्जीवपर्याप्तत्वादिति एवमित्यादि नारकव दशगकारत्व मिदं नैरन्तर्येण चतुर्विंशतिदण्डकोक्तानां वैमानिकान्तानामपि योजनीयमिति द-  
ण्डकस्या द्वौ दशधा नारका उक्ता अथ तद्वारा नारकादिस्थितिच दशस्थानकानुपाततो निरूपयन् ॥ चउत्थीएइत्यादि ॥ सूत्राष्टादशकमाह सुगम चैतदि-  
ति अनन्तर लान्तकदेवा उक्ता स्तेच लब्धभद्रा इति भद्रकारिकर्मकारणान्याह ॥ दसहौत्यादि ॥ आगमिष्य दागामि भवान्तरभावि भद्र कल्याण सुदेवत्व

परोवगाढा अणतराहारगा परंपराहारगा अणंतरपञ्जज्ञा परपरपञ्जज्ञा चरिमा अचरिमा । एवं निरंतरं  
जाव वैमाणिया ॥ चउत्थीएण पकप्पज्ञाए पुढवीए दस नरयावाससयसहस्सा प० । रयणप्पज्ञाए पुढवीए

अनन्तरा रहिआ पुद्गलना आहारी ६ ॥ परंपरा आहारी ६ ॥ अनन्तरपर्याप्ता ७ ॥ परपरा पर्याप्ता ८ ॥ चरिमजे फरी नारकी नही थाय ९ ॥ अच-  
रिम १० ॥ इम निरतर यावन् वैमानिक २४ ॥ चोथी पकप्रज्ञा पृथिवीने विषे दशलाख नरकावाशा कह्या ॥ रतनप्रज्ञा पृथिवीने विषे जघन्य आ

लक्षण मनन्तर सुमानुत्वप्राप्त्या मोक्षप्राप्तिलक्षणं च येषांति आगमिष्यद्भद्रा स्तेषां भाव आगमिष्यद्भद्रता तस्यै आगमिष्यद्भद्रतायै तदर्थमित्यर्थः । आगमिष्य

जहन्तेणं नेरइयाण दसवाससहस्साइं ठिई प० । चउत्थीएणं पंकप्पजाए पुढवीए उक्कोसेण नेरइयाणं दस  
सागरोवमाइं ठिई प० । पंचमीए धूमप्पजाए पुढवीए जहन्तेण नेरइयाणं दससागरोवमाइं ठिई प० ॥  
असुरकुमाराणं जहन्तेण दसवाससहस्साइं ठिई पन्तत्ता । एव जाव थणियकुमाराण ॥ वायरवणरसइकाइ  
याणं उक्कोसेण दसवाससहरसाइं ठिई प० । वाणमंतराण देवाण जहन्तेण दसवाससहस्साइं ठिई प० । वंज  
लोएकप्पे उक्कोसेण देवाण दससागरोवमाइं ठिई प० । लतएकप्पे देवाण जहन्तेण दससागरोवमाइं ठिई प०  
दसहिठाणेहि जीवा अगमेसिज्जदत्ताए कम्मं पगरेति त० अज्जिदाणयाए दिठिसंपन्तयाए जोगवाहिययाए

ऊखु नारकीनु दशहज्जार वरसनु कथ्यो ॥ रत्नप्रज्ञा पृथ्वीनेविषे जघन्य नारकीनी दशहज्जारवरसनी यिति कही ॥ चौथी पकप्रज्ञा पृथ्वीने विषे  
उत्कृष्टी नारकीने दश सागरोपमनी यिति कही जगवते । पाचमी धूमप्रज्ञा पृथ्वीनेविषे जघन्य नारकीनी दशसागरोपमनी यिति कही । असुरकुमा  
रनें जघन्य दशहज्जारवरसनी यिति कही ॥ इम यावत् स्तनितकुमारने । वादरवनस्पतिकायनी उत्कृष्टी दशहज्जारवरसनी आऊखानी यिति कही ॥  
वाणव्यतरदेवतानी जघन्य दशहज्जार वरसनी यिति कही जगवते । ब्रह्मदेवलोके उत्कृष्टी देवतानी दशसागरोपमनी यिति कही ॥ लातक ६ । देव  
लोके देवतानी जघन्य दशसागरोपमनी यिति कही ॥ दश ध्यानके जीव आगमोक्त धर्मने विषे भद्रकपणानु कर्म याधे ते कहैछे नीआणुनकरे १ ।

इद्रतयावा कर्म शुभप्रकृतिरूप प्रकुर्वन्ति बध्नन्ति तद्यथा निदायते लूयते ज्ञानाद्याराधनालता आनन्दरसोपेतमोज्ज्वला येन परशुनेव देवेन्द्रादिगुणार्द्रि  
 प्रार्थनाध्यवसानेन तन्निदान मविद्यमानं तद्यस्य सो ऽनिदान स्तद्धाव स्तत्ता तथा हेतुभूतया निरुत्सुकतवेत्यर्थः १ दृष्टिसम्पन्नतया सम्यग्दृष्टितया २  
 योगवाहितया श्रुतोपधानकारितया योगेनवा समाधिना सर्वत्रानुत्सुकत्वलक्षणेन वहती त्येवशीलो योगवाही तद्धाव स्तत्ता तथा ३ चान्त्या क्षमत  
 इति चान्तिक्षमणः चातिग्रहण मसमर्थताव्यवच्छेदार्थं यतो ऽसमर्थोपि क्षमतइति चान्तिक्षमणस्य भाव स्तत्ता तथा ४ जितेन्द्रियतया करणनिगृहे  
 ण ५ ॥ अमाइल्लयाएत्ति ॥ माइल्लो मायावा स्तत्प्रतिषेधेना मायावा स्तद्धाव स्तत्ता तथा ६ तथा पार्श्वे बहिर्ज्ञानादीना न्देशतः सर्वतोवा तिष्ठतीति पा  
 र्श्वस्य उक्तव सोपासत्योदुविहो देसेसञ्चयेहोइनायत्त्वा सव्वमिनाणदसणचरणणजोउपासत्यो ॥ १ ॥ देसंमिउपासत्यो सिज्जायरभिहडनियतापडव । नी  
 यचअणपिड भुजइनिक्कारणेचेवत्ति ॥ २ ॥ नियतपिण्डो यथामयैताव हातव्यं भवतातु नित्यमेव ग्राह्यमित्येव नियततया यो गृह्यते नीयमिति नित्य सदा  
 यपिण्डो ऽप्रवृत्ते परिवेषणे आदावेव यो गृह्यत इति पार्श्वस्थस्य भावः पार्श्वस्थता तथा ७ तथा शोभनः पार्श्वस्थादिदोषवर्जिततया मूलोत्तरगुण  
 सम्पन्नतयाच सचासौ अमणश्च साधुअमण स्तद्धाव स्तत्ता तथा ८ तथा प्रकष्ट प्रशस्त प्रगतवा वचन मागमः प्रवचन द्वादशांगं तदाधारोवा सध स्तस्य  
 वत्सलता हितकारिता प्रत्यनीकत्वादिनिरासेनेति प्रवचनवत्सलता तथा ९ तथा प्रवचनस्य द्वादशाङ्गस्यो ज्ञावन प्रभावनं प्रावचनिकत्वधर्मकथावादादि

खंतिखमणयाए जीइंदियाए अमाइल्लयाए अपासत्ययाए सुसामन्नयाए पवयणवच्छल्लयाए पवयणउज्जावणया

समकितसहित २ । योग उपधान वहती ३ । क्षमा आणी खमते पाचइंद्रीनें जीतवे माया कपटरहित पणे पासत्यापणूं मूंकते सुसाधुपणे जिन सा

लक्षिभिर्वर्णवादजनन प्रवचनोद्भावन तदेव प्रवचनोद्भावनता तयेति १० एतानि चाग्नियद्गताकारणानि कुर्वता आशसाप्रयोगो न विधेय इति तत्स्वरूप  
माह ॥ दसेत्यादि ॥ आशसन माशसा इच्छा तस्याः प्रयोगो व्यापारण करण माशसैव प्रयोगो व्यापारः आशसाप्रयोग सूत्रेच प्राकृतत्वात् ॥ आससप्पयोगे  
त्ति ॥ भणितं तच्च इहास्मिन् प्रज्ञापक मन्थापेक्षया मानुषत्वपर्याये यो वर्तते लोक प्राणिवर्ग स इह लोक स्तदातिरिक्तस्तु परलोक स्तत्रे हलोक प्रति  
प्राशसाप्रयोगो यथा भवेय मह मित स्तपशरणा चक्रवर्त्यादिरिती हलोकाशसाप्रयोग एव मन्यत्रापि विग्रहः कार्यः परलोकाशसाप्रयोगो यथा भवेय मह  
मितस्तपशरणा दिन्द्र इन्द्रसामानिकोवा २ इति लोकाशसाप्रयोगो यथा भवेय मिन्द्र स्तत सप्तवर्त्ती ३ अथवा इहलोके इहजन्मनि किञ्चि दाशस्त एव  
परजन्म न्युभयनवेति एतत्तय सामान्य मतो न्ये तद्विशेषा एवा स्तिच सामान्यविशेषयो विवक्षापेक्षो भेद इत्या शसाप्रयोगाणा दशधात्वं न विरुध्यते त  
था जोषित प्रत्याशसा चिरम्भेजोषित भवत्विति जोषिताशसाप्रयोग ४ तथा मरण प्रत्याशमा शोष मेमरण मस्त्विति मरणाशसाप्रयोगः ५ तथा का  
मौग्वरूपे तौ मनोज्ञौ मे भूयास्तामिति कामाशसाप्रयोगः ६ तथा भोगा गन्धरसम्पशो स्ते मनोज्ञामे भूयासुरिति भोगाशसाप्रयोगः ७ तथा कौर्त्तिः श्रुता

ए। दसविहे आसंसप्पनुगे प० तजहा इहलोगासंसप्पनुगे परलोगाससप्पनुगे दुहल्ललोगासंसप्पनुगे जीवियासं  
सप्पनुगे मरणासंसप्पनुगे कामासंसप्पनुगे जोगाससप्पनुगे लाज्जाससप्पनुगे पूयासंसप्पनुगे सक्कारासंसप्पनुगे

धु सर्वनु हितकरते प्रवचन प्रज्ञावनाये धर्मकथादिक करते ॥ दशप्रकारे इच्छा वाद्धानो प्रयोग कथ्यो ते कहैके इहलोगासप्रयोग १ । परलोकास  
प्रयोग २ । इहलोकपरलोकसप्रयोग ३ । जीवितसप्रयोग ४ । दुसप्रावे सर्वानीवाद्धा कामनीवाद्धा जोगनी वाद्धानो प्रयोग लाज्जनी वाद्धानो प्रयो

दिलापो भूषादिति लाभार्थसाप्रयोगः यतश्चा पूजा पुष्पादिपूजन मे स्यादिति पूजार्थसाप्रयोगः ८ सत्कारः प्रवरवस्तादिभिः पूजनं तन्मे स्यादिति सत्कारा  
 शमाप्रयोगइति १० उक्तलक्षणा दप्याशसाप्रयोगा त्केचि धर्मं माचरन्तीति धर्मं सामान्येन निरूपयन्नाह ॥ दसेत्यादि ॥ ग्रामा जनपदाश्रयास्तेषा तेषुवा  
 धर्मं समाचारो व्यवस्थेति ग्रामधर्मः सच प्रतिग्राम भिन्नइति अथवा ग्राम इन्द्रियग्रामो रूढे स्तद्धर्मो विषयाभिलाषः १ नगरधर्मो नगराचारः सोपि प्रति  
 नगर प्रायोभिन्नएव २ राष्ट्रधर्मो देशाचारः ३ पाखण्डधर्मं पाखण्डिना माचारः ४ कुलधर्मं उग्रादिकुलाचारो ऽथवा कुल चान्द्रादिक माहृतानागच्छसमू  
 हात्मकं तस्य धर्मं सामाचारो ५ गणधर्मो मल्लादिगणव्यवस्था जैतानावा कुलसमुदायोगणः कोटिकादि स्तद्धर्मं स्तत्सामाचारो ६ संघधर्मो गोष्ठीसमाचार  
 आहृतानावा गुणसमुदायरूप सत्तुर्वर्षोवा सच स्तद्धर्मं स्तत्सामाचारः ७ श्रुतमेवा चारादिक दुर्गतिप्रपतज्जीवधारणा धर्मः श्रुतधर्मः ८ चरित्रकीकरणा  
 चरित्र तदेव धर्मं चरित्रधर्मः ९ अस्तयः प्रदेशा स्तेषा कायो राशि रस्तिकायः सएव धर्मो गतिपर्याये जीवपुद्गलयो धारणा दित्यस्तिकायधर्मः १० अयञ्च  
 ग्रामधर्मादिधर्मं स्थविरै कृतो भवतीति स्थविरा त्रिरूपयति ॥ दसेत्यादि ॥ स्थापयति दुर्यवस्थितं जनं सन्मार्गे स्थिरो कुर्वतीति स्थविरा स्तत्र ये ग्राम  
 नगरराष्ट्रेषु व्यवस्थाकारिणो बृद्धिमत्ता आदेयाः प्रभविष्णव स्ते तत्तत्स्थविराइति ३ प्रशासति शिक्षयन्ति येते प्रशास्तारो धर्मोपदेशका स्तेचते स्थिरीक  
 रणा तस्थविराश्चेति प्रशास्तस्थविराः ४ ये कुलस्य गणस्य सघस्यच लौकिकस्य लोकोत्तरस्यच व्यवस्थाकारिण स्तद्धक्तुश्च निग्राहका स्ते तथोचते ७ जाति

दसविहे धम्मे प० तंजहा ग्रामधम्मे नगरधम्मे रथधम्मे पाखण्डधम्मे कुलधम्मे गणधम्मे संघधम्मे सुयधम्मे

ग पूजानी वाङ्मानी प्रयोग सत्कारनी वाङ्मानी प्रयोग ॥ दशप्रकारे धर्मं कर्ह्यो तेकहेळे ग्रामधर्म विषयाभिलाष १ । नगरधर्म नगराचार २ । राष्ट्र

१० ॥

५३ ॥

स्थविराः पश्चिद्वर्षमाणजन्मपर्यायाः ८ श्रुतस्थविराः समवासाद्यङ्गधारिणः ९ पर्यायस्थविरा विशतिवर्षप्रमाणपञ्चापर्यायवन्त इति १० स्थविराश्च  
पुत्रवदाश्रितान् परिपालयतीति पुत्रनिरूपणायाह ॥ दसपुत्तेत्यादि ॥ पुनाति पितरं पातिवा पितृमर्यादामिति पुत्रः सूनुः सौत्रः आत्मनः पितृशरीरा  
ज्जातः आत्मजो यथा भरतस्या दित्ययशाः १ चेन्न भार्या तस्या जातः चेन्नजो यथा पंडोः पाण्डवा लोककन्या तन्नार्यायाः कुन्याएव तेषां पुत्रत्वा ननु पण्डो  
रदित्यादिभिर्जनितत्वादिति २ ॥ दिग्गएत्ति ॥ दत्तकः पुनतया धितीर्णो यथा बाहुबलिना ऽनिलवेगः श्रूयते सच पुत्रवत् पुत्र एव सर्वत्र ३ ॥ विष्णएत्ति ॥  
विनयितः गिचां ग्राहितः ४ ॥ उरसेत्ति ॥ उपगतो जातो रसः पुत्रसेहलक्षणो यस्मिन् पितृसेहलक्षणो वा यस्या सा वुपरस उरसिवा हृदये स्नेहा वर्तते  
यः सश्रौरसः ५ मुखरएव मौखरो मुखरतया चाटुकरणतो य आत्मानं पुनतया ऽभ्युपगमयति स मौखर इति भावः ६ श्रौडोरोयः शौर्यवता शूरएव

चरित्तधम्मे अल्पिकायधम्मे । दसथेरा प० तजहा गामथेरा नगरथेरा रथेरा पसत्यारथेरा कुलथेरा गणथेरा  
सघथेरा जाइथेरा सुयथेरा परिघायथेरा । दसपुत्ता प० तजहा अत्तए खित्तए दिन्तए विन्तए उरसे मोहरे

धर्म देशाचार ३ । पाखण्डधर्म पाखण्डीनी आचार ४ । कुलधर्म कुलाचार गच्छधर्म गच्छाचार संधधर्म चतुर्विध संध अथवा गोष्ठीपांचनी श्रुतधर्म  
द्वादशांगी चारित्रधर्म पाचमहाव्रत अस्तिकायधर्म धर्मास्तिकायादि १० ॥ दश थविर कहिआ सन्मार्गेस्थिराकुर्वन्ति ते स्थविरा ते कहैछे ग्राममाथ  
विर बुद्धिवत् १ । नगरमा थविर राष्ट्रमा थविर देशमाथविर प्रशास्तारथविर धर्मोपदेशक कुलमाथविर गच्छमाथविर संधमाथविर जातिथवि  
र मोटीजाति श्रुतथविर पर्यायथविर २० वरसनीदीक्षानो १० ॥ दशप्रकारे पुत्र कल्या ते कहैछे आत्मज जे पिताना शरीरणी उपजे ते आत्मज

रणकरणेन वशीकृतः पुत्रतया प्रतिपद्यते यथा कुवलयमालाकथाया महेन्द्रसिंहाभिधानी राजसुतः श्रूयते ७ अथवा तमजएव गुणभेदा द्विद्यते तत्र विष्णु  
 एत्ति विज्ञकः पडितो ऽभयकुमारवत् उरसेत्ति उरसा वर्त्ततइति ऊरसो बलवान् बाहुबली वशीण्डीरः शूरो वासुदेववत् गर्वितीवा शौण्डीरः शौण्डगर्वइति  
 वचनात् ॥ सवड्ढेत्ति ॥ संबद्धितो भोजनदानादिना ऽनाथपुत्रकः ८ ॥ उववाइयत्ति ॥ उपयाचिते देवताराधने भवः औपयाचितको ऽथवा ऽवपातः सेवा  
 सा प्रयोजन मस्येति आवपातिक.सेवकइति हृदय तथा अते समीपे वस्तु शील मस्ये त्यन्तेवासी धर्मार्थ मन्तेवासी धर्मान्तेवासी शिष्यइत्यर्थो धर्मान्तेवा  
 सित्वच्च छद्मस्थस्यैव नकेवलिनी ऽनुत्तरज्ञानादित्वात् कानि कियन्तिच तस्या नुत्तराणौ त्याह ॥ दसेत्यादि ॥ नास्त्युत्तरं प्रधानतर येभ्यस्ता न्यनुत्तराणि

जेम ज़रतने आदित्ययश १ । क्षेत्रज स्त्रीथी थाय तेक्षेत्रज जेम लौकिक दृष्टांत जारतमां लख्योछे जे पांछुराजाये कोइ ऋषीनुं शापहतो जे तू मै  
 थुन करसे तोमरसे तेथी पांछुराजा अपुत्र पुत्रवान् थावानेअर्थे मंत्रथी धर्म १ । वायु २ । इंद्र ३ । अश्विनीकुमार ५ । एनो आराधन कुती तथा  
 माद्रीथी कराव्यो तेहोना वीर्यथी युधिष्ठिर , जीम , अर्जुन , नकुल सहदेव , एपांच पांछुराजाया पणि तेमा पांछुराजानो अंशनथी पांछुराजाना  
 क्षेत्र स्त्रीथी थया तेमाटे क्षेत्रजपुत्र कहाया २ । दत्तक अपुत्र माणसने पुत्रवान होवाने अर्थे दीधो ते दत्तक ते लौकिक मनुस्मृत्यादिकमां पणि प्रसि  
 द्ढछे जेम बाहुबलीय अनिल बेगदीधोहतो ३ । विनयित जेहने शिक्षादीये ते लौकिकमे येप्रसिद्ध नथी ४ । उपरस , अथवा , औरस , पुत्रसमान  
 स्नेह जेहने ऊपरे होय ते उपरस । जेहने स्नेहथी पुत्रसमान हृदयमा राखिये ते औरस लौकिक मन्वादिकोये आत्मज अने औरस एकहीज मा  
 न्योछे ५ । मौखर जे मीठा वचनथी पोतेज आवी पुत्रसमान आचरे जेहुं तुमारोपुत्रजळु ते मौखर एहने लौकिकमां स्वयमुपागत कहैछे ६ । शौ  
 ण्डीर शूरवीर शूरवीरने जीतीने पुत्र वणावे पोताने वशकरीने जेम कुवलयमालानी कथामां महेन्द्रसिंह राजपुत्र शौण्डीर पुत्र प्रसिद्ध छे ७ । संबद्धित  
 जे अन्न वस्त्रादि देईने अनाथपुत्रने वफो करिये अने पुत्रवत् राखीये ते संबद्धितपुत्र एतले पोष्यपुत्र ८ । उपयाचित देवताना आराधवाथी मल्यो अ



तत्र ज्ञानावरणक्षयात् ज्ञानमनुत्तरमेवं दर्शनावरणक्षया दर्शनमोहनीयक्षयाहा दर्शनं चारित्रमोहनीयक्षया चारित्र चारित्रमोहक्षया दनन्तवीर्यं मनन्त  
वीर्यत्वाच्च तपः शुक्लध्यानादिरूप वीर्यान्तरायक्षया ह्योर्यं मिहच तपः क्षान्तिमुक्त्यार्जवमार्दवलाघवानि चारित्र भेदाएवेति चारित्रमोहनीय क्षया देव भव  
ति सामान्यविशेषयोश्च कथंचिद्भेदा भेदेनोपात्तानीति केवलीच मनुष्यक्षेत्रेणैव भवतीति दशस्थानकानुपातिपदार्थं ॥ समयेत्यादिपुक्खरवरदीवडुपञ्चच्छिमेण  
हेवीत्येतदत ॥ समयक्षेत्रप्रकरणमाह कण्ठ्यं चैतन्नवर ॥ मत्तंगेत्यादि ॥ गाथा मत्तं मदस्तस्या ग कारण मदिरा तद्दृष्टीति मत्ताङ्गदाश्चः समुच्चये ॥ भिग  
ति ॥ भृतभरण पूरणं तत्राङ्गानि कारणानि भृताङ्गानि भाजनानि नहि भरणक्रिया भरणीय भाजनं विना भवतीति तत्सम्पादकत्वात् वृक्षा अपि भृ

सौंरीरे संबहे उववाइए धम्मतेवासी । केवलिरुसणं दस अणुत्तरा प० तजहा अणुत्तरेनाणे अणुत्तरेदंसणे अ  
णुत्तरेचरित्ते अणुत्तरेतवे अणुत्तरेवीरिए अणुत्तराखती अणुत्तरामुत्ती अणुत्तरेअज्जवे अणुत्तरेमद्ववे अणुत्तरेला  
घवे । समयखित्तेण दस कुरानं प० तजहा पचदेवकुरानं पंचउत्तरकुरानं । तत्थणं दसमहइमहालया महादु

यथा अवपातरु सेवकने पुत्रकरी राखे ते उपपाचित अथवा अवपात पुत्र ८ । धर्मातेवासी जेने प्रव्रज्या दीक्षादीये ते धर्मातेवासी १० ॥ एह द  
स प्रकारना पुत्र कह्या ॥ केवलीने दश उत्कृष्टा कह्या ते कहैछे उत्कृष्टज्ञान १ । उत्कृष्टदर्शन २ । उत्कृष्टचारित्र ३ । उत्कृष्टतप ४ । उत्कृष्टवीर्य ५ ।  
उत्कृष्ट ज्ञाती ६ । उत्कृष्ट मुक्ति निर्लोभता ७ । उत्कृष्टग्राजव ८ । उत्कृष्ट मार्दव कोमलता ९ । उत्कृष्ट लाघव लघुता १० ॥ समय मनुष्यक्षेत्रने वि  
षे दश कुरु कह्या ते कहैछे पाचदेवकुरु पाच उत्तरकुरु ॥ तिहा दश मोटामोटा आलय मोटावृक्ष कहिआ ते कहैछे जसू सुदर्शन १ । धातकीवृक्ष २ ।

ताङ्गाः प्राकृतत्वाच्च भिंगाउच्यंते त्रुटितानि तूर्याणि तत्कारणत्वाच्चुटिताङ्गाः सूर्यदायिन उक्तंच मत्तगेसुयमज्ज सुहपेज्जं १ भायणाणिभिगेसु २ तुडियंगे

मा प० तजहा । जबूसुदंसणे धायइरुखे महाधायइरुखे पउमरुखे महापउमरुखे पंचकूटसामलीन । त  
त्यण दसदेवा महिद्धिया जाव परिवसति तं० अण्णाढिए जबूहीवाहिवई सुदसणे पियदंसणे पौंठरीए महा  
पौंठरीए पचगरुला वेणुदेवा । दसहिं ठाणेहि नुगाढं दुस्सम जाणिज्जा तजहा अकालेवरिसइ कालेनवरिस  
इ असाधुपूइज्जाति साधुनपूइज्जाति गुरुसुजणोमिच्छपण्णिवन्नो अमणुन्नासदा जाव फासा । दसहिं ठाणेहि  
नुगाढ सुसमं जाणिज्जा तजहा अकालेनवरिसइ तचेव विवरीय जाव मणुन्ना फासा । सुसमसुसमाएणं स  
माए दसविहा रुखा उवजोगत्ताए हवमागच्छति तंजहा महंगयायज्जिगा तुण्णियगादीवजोइचित्तंगा चित्त

महाधातकी वृत्त ३ । पञ्चवृत्त ४ । महापञ्चवृत्त ५ । पाच कूटसामलीवृत्त १० ॥ तिहा दश देवता महर्द्धिक रहेछे वसेछे ते कहैछे अनाढीय जबू  
हीपनो अधिपती १ । सुदर्शन २ । प्रियदर्शन ३ । पौंडरीक ४ । महापौंडरीक ५ ॥ पाच गरुल वेणुदेवता १० ॥ दशथानके आकरो दुखमाकाल जा  
णवो तेकहैछे अकालेवरसे काले नवरसे असाधुपूजाये साधुनपूजाये गुरुने मिथ्याज्ञावे पण्णिवज्या अविनयी अमनोज्ञशष्ट यावत् फर्ष १० ॥ दशथा  
नके आकरो सुसमाकाल जाणवो तेकहैछे अकाले नवरसे तेहज बोल विपरीत यावत् मनोज्ञशष्ट ॥ सुखमसुखमा समयनेविषे दशप्रकारना वृत्त  
उपजोगपणे आवेछे तेकहैछे मातगमदिरादिआपे १ । जृग भाजनआपे २ । त्रुटिताग वाजित्रआपे ३ । दीपाग दीवा ४ । ज्योति ५ । चित्राग मा

मयसंगत तद्विनाशं दृष्ट्वा गारादृष्ट ॥ १ ॥ दीवजो रचित्तगति ॥ इहा गगनः प्रत्येक मभिसंमंध्यते ततो दीपः प्रकाशकं यस्तु तत्कारणत्वादीपाङ्गाः ज्योति रग्नि  
 स्तत्र च सुखमसुखमाया भग्ने रभावात् ज्योति रवयवस्तु सोम्यप्रकाशमिति भावस्तत्कारणत्वा ज्योतिरंगा स्तथा चित्रस्था नेकविधस्य चित्राणाधान्या  
 आश्रयस्य कारणत्वादिनाङ्गा स्तथा चित्रा विविधा मनोज्ञा रसा मधुरादयो येभ्य स्ते चित्तरसा भोजनाप्रा प्रतिभाव उक्तच दीवसिद्धा ४ जोडसमा म  
 याय ५ एएकरिति उज्जीयं चित्तगोसुयमस्य चित्तरसा ७ भोग्यगुण ॥ १ ॥ मणोनां मणिमयाभरणाना कारणत्वा आश्रया आभरणहेतयो गेहं गृहं तददा  
 कारो येषां ते गेहाकाराः ॥ अणिययति ॥ यस्तदायिन उक्तच मणिगोसुय ८ भूमण वराडभयणां भयणरुक्तेषु प्राप्नोसुय १० धनियं यत्प्राप्नोसुय  
 रादति ॥ १ ॥ काष्ठाधिकारादेव कालविशेषभावि कुलकरवत्ताव्यतामाह ॥ जंबूद्वीवेत्यादि ॥ सूतय कण्ठ सवर ॥ तीयाएति ॥ अतीतायां ॥ उस्सपि  
 णीएति ॥ उस्सपिण्णा कुलकरणशोनाः कुलकरा विशिष्टमुद्यो लोकथपस्थाकारिणः पुरुषविशेषाः ॥ आगामिस्साएति ॥ आगमिष्यत्यां वर्तमानातु  
 भवसर्पिणी साच नोक्ता तत्रहि ससेव कुलकराः ताचि त्यसदशापि दृश्यन्तइति पुष्करार्चने च स्वरूपमभिरुचिं प्रागतः क्षिप्राधिकारादेव कला नाशित्य

रसामणियंगा गेहागाराश्चणियणाय ॥ १ ॥ जंबूद्वीवेदीवे नारहेवासे तीताए उस्सपिणीए दसकुलगरा हो  
 त्या तजहा सयजलेसयाऊय णंतसेणेयश्चजियसेणेय कक्कसेणेजीमसेणेय महाजीमसेणेयसत्तमे दठरहे दस

ल्यग्रापे ६ । चित्ररस जलारस ग्रापे ७ । मयग आभरणादिग्रापे ८ । गृहनेआकारेहोय अनिग्राग वस्त्रदाता १० ॥ १ ॥ जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत  
 गर्हउत्सर्पिणीने विषे दश कुलगरा यथा तेकहैछे ज्ञातजल १ । ज्ञातायु २ । अनतसेन ३ । अजितसेन ४ । कर्कशेन ५ । भीमसेन ६ । महाजीमसेन ७ ।

दशकमाह ॥ दसेत्यादि ॥ सौवर्मादीना मिन्द्राधिष्ठितत्वं मेते बिन्द्राणा निवासा दानतारणयोस्तु तदनधिष्ठितत्वं तन्निवासाभावात् स्वामितयात्  
तावप्यधिष्ठितावेवेति मन्तव्यं यावत्करणात् ईसाणे २ सणकुमारे ३ माहिदे ४ बंभलोए ५ लतगे ६ म्केत्ति ७ दृश्यमिति यत एवैते इन्द्राधिष्ठिता अतएव  
तेषु दमेन्द्राभवन्तोति दर्शयितु माह ॥ एणसुइत्यादि ॥ शक्र सौवर्मेन्द्रः शेषा देवलोकसमाननामान, शेष सुगममिति इन्द्राधिकारादेव तद्विमानान्याह ॥

रहे सत्तरहे । जंबूद्वीवे दीवे नारहेवासे आगमिस्साए उसप्पिणीए दस कुलगरा नविस्संति तंजहा सीमंकरे  
सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे विमलवाहणे समुत्ती पणिसुए दढधणू सयधणू दसधणू । जंबूद्वीवे दीवे मंदरस्स  
पण्यस्स पुरच्छिमेण सीयाए महानडंए उज्जयोकूले दसवस्कारपण्यया प० तंजहा मालवते चित्रकूटे विचित्र  
कूटे जाव सोमणसे । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीनयाए महानडंए उज्जयोकूले दसवस्कारपण्यया प० तजहा विज्जु  
प्पजे जाव गंधमायणे । एव धायइखडदीवपुरच्छिमधेवि वस्कारा नाणियहा जाव पुस्करवरदीवहपच्चत्थिम

सातमो ॥ १ ॥ इदंरथ ८ । दशरथ ९ । शतरथ १० ॥ जंबूद्वीपे नरतक्षेत्रे आवती उत्सर्पिणीये दशकुलगरा यास्ये ते कहैछे सीमंकर १ । सीमंधर २ ।  
खेमंधर ३ । खेमंकर ४ । विमलवाहन ५ । समुत्ति ६ । प्रतिश्रुत ७ । दृढधनू ८ । शतधनू ९ । दशधनू १० ॥ जंबूद्वीपे मेरुपर्वते पूर्वदिसे सीतादामो  
टीनदीने वेतटे दश वत्सस्कारपर्वत कह्या मालवत १ । चित्रकूट २ । ब्रह्मकूट ३ । यावत् सोमनस ॥ जंबूद्वीपमा पश्चिमे सीतामोटीनदीने तटे वे  
तटे दश वत्सस्कार पर्वत कह्या तेरुहैछे विद्युत्प्रज १ । यावत् गंधमादन १० ॥ एम धातकीखरुपूर्वार्द्धे पणि वत्सस्कारपर्वत जाणवा ॥ यावत् पुष्कर

एतेत्यादि ॥ परिगान न्देशान्तरगमन तत्प्रयोजनं येषां तानि पारियानिकानि गमनप्रयोजनानीत्यर्थोयानं शिविकादि तदाकाराणि विमानानि देवा  
 अथा यानविमानानि नतुशाश्वतानि नगराकाराणीत्यर्थः पुस्तकान्तरे यानशब्दो न दृश्यते पालकइत्यादौनि शक्तादौना क्रमेणा वगन्तव्यानि यावत्करणात्  
 सोमणसे ३ सिरिवच्छे ४ नदियावत्ते ५ कामकमे ६ पौद्गमे ७ मणोरमे ८ इतिद्रष्टव्यमिति आभियोगिका स्येते देवा विमानीभवतीति एवविधविमान  
 यायिन शेन्द्रा प्रविमादिका तपसो भवन्तीति दशकानुपातिनो प्रतिमा स्वरूपतआह ॥ दसेत्यादि ॥ दशदशमानि दिनानि यस्यां सा दशदशमिका  
 दशदशकनिष्पन्नेयर्गो भित्तूणा प्रतिमा प्रतिज्ञा भित्तुप्रतिमा ॥ एकेनेत्यादि ॥ दशदशकानि दिनाना शत भवन्तीति प्रथमे दशदशभिच्चा द्वितीये विंशतिरेवं  
 दशमेशत सर्वमोलने पचशानि पचाशदिकानि भवन्तीति ॥ अहासुत्तेत्यादि ॥ अहासुत्त सूत्रानतिक्रमेण यावत्करणात् ॥ अहाअत्थं ॥ अर्थस्य

शेवि । दस कप्पा इदाहिष्ठिया प० तजहा सोहम्मे जावसहस्सारे पाणए अञ्जुए । एएसुण दसकप्पेसु दसइं  
 दा प० तजहा सक्के ईसाणे जाव अञ्जुए । एएसिण दसरह इदाण दस परियाणिया विमाणा प० तंजहा  
 पालए पुप्फए जाव विमलवरे सव्वज्जहे । दसदसमियाण जिस्कुपफिमाण राइदियसएण अण्णवठेहियजि

द्वीपपश्चिमाद्धैपणि ॥ दशदेवलोक इद्रसहित कत्या ते कहैछे सौधर्म १ । यावत् सहस्त्रार प्राणत अच्युत १० ॥ ए दश देवलोकनेविषे दश इंद्र कत्या  
 ते कहैछे शक्र १ । ईशान यावत् अव्युत १० ॥ एदशइदने दश परियानविमान ते जावाआववाना कत्या ते कहैछे पालक १ । पुष्पक २ । यावत् वि  
 मलवर २ । सर्वतोन्नद्र ३ ॥ दशदशमिआ भित्तुप्रतिमा शतरात्रि साढापाचसे जिज्ञाये करी जिम सूत्रमा कहैछे तिम आराधवी होय ॥ दशप्रका

देव शरीरक मुपसर्गकारि नवधि यत स्तन्निर्गत त मनुदहन् निसर्गानन्तर मुपतापयन् किभूत शरीरकं सहतेजसा वर्त्तमानं तेजोलब्धिमत् भस्म कु  
र्यादिति अय मकोपस्यापि वीतरागस्य प्रभावा यत्परतेजां न प्रभवति अत्रार्थे दृष्टान्तमाह ॥ जहावा ॥ यथैव गोशालकस्य भगवतः शिष्याभासस्य म

समुच्छति ते फोफा निज्जाति तस्य पुलासमुच्छति ते पुलानिज्जाति ते पुलानिन्वासमाणा तामेव सहतेयसा  
नासकुजा एएतिन्नि आलावगा जाणियद्वा १ केड तहारूवं समणवा २ अच्चासाएमाणे तेयंसिसिरिजा सैयं  
तस्य नोकमड नोपक्कमड अचिअचिकरेड करित्ता आयाहिणपयाहिणं करेड करित्ता २ उह्व वेहासं उप्प  
यड २ सेणं तत्तं पफिहए पफिणियत्ते २ तामेव सरीरग अणदहमाणे २ सहतेयसा नासकुजा १० जहेव गो

धु माहनने अत्याशातनाकरे अत्याशातनाकीधे परिकोपे तेउपरि तेज कोपे मूके तेउपरि तेज तिहा उपसर्गना करनारने क्लीले अग्निदग्धवत् फो  
टक थाय ते फोफा जेदाये फूटे तिहा नाहनी २ । फोफली थाय ते फोफली जेदाय फूटे ते फोडली जेदाणीयकी ते अनार्य तेजूलेश्यासहितने पणि  
तेजे भस्मकरे साधुनुं तेज बलवतळे ए त्रिण आलावा इमज जाणावा ८ । कोई तथारूप अमणमाहनने अत्याशातना करवाने तेजोलेश्या अनार्य  
मूके ते तज ते साधुने आक्रमे तथाहीपरिभवनकरे विशेष पराजव करी नसके उचुउत्पती नीचुआव इम करीने प्रदक्षिणाकरे प्रदक्षिणाकरीने २ ।  
उचु वली आकाशं उत्पते उत्पतीने ते तेज साधुना शरीरने हणाणूथको पाळु निवर्त्ते ते साधु ना महातमथी निवर्त्तिने ते अनार्यनाज शरीरमां  
पेसे शरीरने तेहज तेज तेहने जस्मसात् करे १० ॥ जिम गोसालाने मखलीपुत्रने ते तज बाल्यो ॥ दश अच्छेरा थया ते कहैछे उपसर्ग १ ।

निर्युक्त्यादे रनतिक्रमेण ॥ अहातश्च ॥ शब्दार्थानतिक्रमेण ॥ अहामग ॥ चायोपशमिकाभावानतिक्रमेण ॥ अहाकर्षे ॥ तदाचारानतिक्रमेण सम्यक्कायेम  
न मनोरथमात्रेण ॥ कामिया ॥ विशुद्धपरिणामप्रतिपत्त्या ॥ पालिया ॥ सौमा याव तत्परिणामाहान्या शोधिता निरतिचारतया शोभितावा तत्समाप्ता  
वृष्टितानुष्ठानकरणतः ॥ तोरिता ॥ तोरनोता प्रतिज्ञातकालोपर्यप्यनुष्ठानात् कोर्त्तिता नामत इद चेदच कर्त्तव्य मस्या तत्कृत मवेत्येवमिति आराधिता  
सर्वपदमोलनात् भवति जायतइति प्रतिमाभ्यासः ससारजगदर्थं ससारिभिः कियतइति ससारिणी जीवा ज्जीवाधिकारात् सर्वजीवाश्च ॥ दसेत्यादिना ॥  
सूत्रत्रयेणाह ॥ तच्च सुगमं नवर प्रथमः समयो येषा मेकेन्द्रियत्वस्य ते प्रथमसमया स्ते च ते एकेन्द्रियाश्चेतिविग्रहा विपरोता त्वितर एव द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रि  
या वाच्या आहच ॥ एवजावेत्यादि ॥ अणिदियत्ति ॥ अनिन्द्रियाः सिद्धा अपर्याप्तका उपयोगतः केवलिनश्चेति ससारिपर्यागविशेषप्रतिपादनायैवाह  
वासेत्यादि ॥ वर्षशत मायु र्यत्र काले मनुष्याणां स वर्षशतायुष्कः काल स्तत्र यः पुरुषः सोप्युपचारात् वर्षशतायुष्को मुख्यवृत्त्याच वर्षशतायुषि पुरु

स्कासएहि अहासुता जाव आराहिया जवइ । दसविहा संसारसमावन्तगा जीवा प० तंजहा पढमसमयए  
गिदिया अपढमसमयएगिदिया एवजाव अपढमसमयपचिंदिया । दसविहा सव्वजीवा प० तंजहा पुढविका  
इया जाव वणस्सइकाइया वेइदिया जाव पचिदिया अणिदिया । अहवा दसविहा सव्वजीवा प० तंजहा

रें ससारना जीव कह्या तेकहैके प्रथमसमयनाउपना एकेदी अप्रथम बीजा त्रीजा समयना उपना एकेदी २ । इमं यावत् अप्रथमसमयना पचेद्री ॥  
दशप्रकारे सर्वजीव कह्या तेकहैके पृथवी काइया १ । यावत् धनस्पतिकायना बेद्री यावत् पचेद्री अनिद्री ॥ अथवा दशप्रकारे सर्वजीव कह्या तेक

खल्वभिधानमखपुत्रस्य मंखश्चित्रफलप्रधानो भिक्षुकविषेः ॥ तवतेरुति ॥ तपोजनितत्वा तपः क्तिन तेज स्तेजोलैश्येति तत्र किलै कदा भगवा न्म  
 हावोरः श्रावस्था विहरतिस्म गोशालकश्च तत्रच गौतमो गोचरगतो बहुजनशब्द मश्रौषी यथा इहश्रावस्था द्वीजिनो सर्वज्ञो महावीरो गोशालकश्चेति  
 श्रुत्वा भगवदतिक मागम्य गोशालकोत्थानं पृष्टवान् भगवाञ्चोवाच यथाय शरवणग्रामे गोबहुलब्राह्मणगोशालाया जातो मङ्गलिनान्नो मङ्गस्य सुभद्राभि  
 धानतज्ञार्यायाश्च पुत्रः षड्वर्षाणि यावत् छद्मस्थेन मया सार्धं विहृतो स्मत्तएव बहुश्रुतौभूतइति नाय जिनो नच सर्वज्ञ इदं भगवद्वचन मनुश्रुत्य बहुजनो  
 नगर्यास्त्रिकचतुष्कादिषु परस्पर कथयामास गोशालको मङ्गलिपुत्रा न जिनो न सर्वज्ञ इदं लोकवचन मनुश्रुत्य गोशालक कुपित आनन्दाभिधानच  
 भगवद्वेवासिन गोचरगत मपश्य तामवादीच्च भोआनन्द एहि तावदेकमौपम्य निशामय यथा केचन वणिजो ऽर्थार्थिनो विविधपण्यभृतश्चकटा देशातरं  
 गच्छन्तो महाटवीरविष्टाः पिपासिता स्तत्र जल गवेषयत श्रुत्वारि वल्मीकशिखराणि श्राद्धलवचकजस्यातरमद्राक्षुः क्षिप्रं चैक विचिक्षिपु स्ततो ऽतिवि  
 पुल ममलजल मवापु स्तत्पयो यावत्पिपास मापौतवतः पय पात्राणिच पयसा परिपूरयामासु रपायसभाविना वृद्धेन निवार्यमाणा अप्यतिलोभाद्वितीय  
 तृतीयशिखरे विनिदु स्तयो क्रमेण सुवर्णञ्च रत्नानिच समासादयामासु पुनस्तथैव चतुर्थं श्लिन्दाना वोरविष मतिकाय मञ्जनपुञ्जतेजस मतिचचलजि  
 हायुगल मनाकलितकोपप्रसर महौखर सघटितवत स्ततो सौ कोपा दल्लोकशिखर मारुह्य मार्त्तण्डमण्डल मवलोक्य निर्निमेषया दृष्ट्या समता दवलो  
 कय स्तान् भस्मसा चकार तन्निवारकवृद्धवाणिजकान् न्यायदर्शी त्वनुकम्पया वनदेवता स्तस्थान सजहारेति एवमद्वैतधर्माचार्य मात्मीयसम्पदपरितुष्ट  
 मस्मद्वर्णवादविधायिन मह स्वकोयेन तपस्तेजसा द्येव भस्मसा क्करिथामौ ल्पेप्रचलितो ह त्वतु तस्येम मये मावेदय भवतच वृद्धवणिजमिव न्यायवादि  
 त्वा द्रक्षिष्यामीति श्रुत्वा सावानन्दमुनि भीतो भगवदग्निक मुपागत्य तत्सर्वं मावेदयत् भगवता श्रुत्वावभिहित एष आगच्छति गोशालक स्ततः साधवः



गोत्र मितो ऽपसरन्तु प्रेरणाश्च तस्मै कश्चिदपि मादादिति गोत्रमादीना निवेद्येति तथैव कृते गोशालक आगत्य भगवंत मभिसमभिदधे सुष्टु आयुष  
 न् काश्यप साधु प्रायश्चान् काश्यप मामेव वदसि गोशालको मन्त्रलिपुषो यमित्यादि योसौ गोशालक स्तवाग्नेवासो सदेवभूयगतः अह त्वन्यएव तच्छरी  
 रक परीषहसहनसमर्थमास्थाय वर्त्तइत्यादिक कल्पित वस्तू द्वाहयत् तत्प्रेरणाप्रवृत्तयो द्वयोः साध्वोः सर्वानुभूतिसुनक्षत्रनाम्नो स्तेजसा तेन दग्धयो  
 भगवता भिहितो गोशालक, कश्चि क्षीरो ग्रामेयकैः प्रारभ्यमाण स्वथाविध दुर्ग मलभमानो ऽङ्गुया तृष्णेन शूकेनवा त्मान सावृण्व आहतः किम्भवति  
 अनाहतपया सौ त्वमप्येव मन्यथा जल्पनेना त्मान माच्छादयन् किमाच्छादितो भवसि सएव त्व गोशालको यो मया बहुश्रुतीकृत स्तदेव मावोच एव  
 भगवतः समभावतया यथावद् बुवाणस्य तप स्तेजो सौ कोपा त्रिससर्जे उच्चावचाक्रोशे साक्रोशयामास तत्तेजश्च भगव त्यप्रभव त्त प्रदक्षिणीकृत्य गोशाल  
 कशरीरमेव परितापय दनुप्रविवेश तेनचा दग्धशरीरो सौ दर्शितानेकविधविक्रियः सप्तमराची कालमकार्षीदिति महावीरस्य भगवतो नम त्रिखिलन  
 रनाकिनिकायनायकस्यापि जघन्यतोपि कीटोसत्यभक्तिभरनिर्भरामरषट्पटपटलजुष्टपटपद्मस्यापि विविधर्षिलब्धिमद्वरविनेयसहस्रपरिवृतस्यापि स्वप्र  
 भावप्रशमितयोजनशतमध्यगतयैरमारिविह्वरदुर्भिक्षाद्युपद्रवस्या प्यनन्तरपुण्यसम्भारस्यापि यद्गोशालकेन मनुष्यमात्रेणापि चिरपरिचितेनापि शिष्यक  
 ल्पेना प्युपसर्ग, गियते तदाश्चर्य मित्याश्चर्याधिकारादिदमाह ॥ दसेत्यादि ॥ आ विस्मयत चर्यन्ते अवगम्यन्त इत्याश्चर्या ण्यङ्गुतानि इहच सकारः कार

सालस्स मन्त्रलिपुत्तस्स तवे तेए । दस अच्चेरगा पण्णात्ता तजहा उवसग्गगप्पहरणं इत्थीतित्यञ्जावियाप

श्रीवीरने गर्जापहार २ । स्त्रीतीर्थकरमल्ली ३ । अज्ञावितपर्वदा पञ्चखाणकोर्दये नकीधु ४ । कृष्ण अमरकृपाये गया ५ । चद्रमासू र्य पोताने विमाने

स्करादित्वादिति ॥ उवसमेत्यादि ॥ गाथाद्वयं उपसृज्यते क्षिप्यते चाव्यते प्राणी धर्मादेरित्युपसर्गा देवादिकृतीपद्रवा स्तेच भगवतो महावीरस्य छद्मस्य  
 काले केवलिकालेच नरामरतिर्यकृता अभूवन् इदं किल न कदाचिद्भूतपूर्वं तीर्थकराहि अनुत्तरपुण्यसभारतया नोपसर्गभाजन मपितु सकलनरामर  
 तिरश्चां सत्कारादिस्थान मेवे त्यनन्तकालभाष्यय मर्थो लोके ऽद्भुतभूतइति १ तथा गर्भस्य उदरसत्वस्य हरण मुदरान्तरमक्रामण गर्भहरण मेतदपि तीर्थक  
 रापेक्षया ऽभूतपूर्वं स जगवतो महावीरस्य जात पुरन्दरादिष्टेन हरिनैगमेषिदेवेन देवानन्दाभिधानब्राह्मण्युदरात् त्रिशलाभिधानाया राजपत्न्या उद  
 र संक्रामणा देतद् प्यनन्तकालभावित्वा दाक्ष्यमेवेति २ तथा स्त्री योषि तस्या स्तीर्थकरत्वेनो त्यन्नाया स्तीर्थं द्वादशाङ्ग सघोवा स्त्रीतीर्थं हि पुरुषसिंहाः  
 पुरुषवरगन्धहस्तिन स्त्रिभुवने प्यव्याहतप्रभुभावाः प्रवर्त्तयति इह त्ववसर्पिण्यां मिथिलानगरीपतेः कुम्भकमहाराजस्य दुहिता मल्ल्यभिधाना एकोन  
 विशतितमतीर्थकरस्थानोत्पन्ना तीर्थं प्रवर्त्तितवती त्यनन्तकालजातत्वा दस्य भावस्या श्र्यतेति ३ तथा अभव्या अयोग्या चारित्रधर्मस्य पर्षत्तीर्थङ्करसम  
 वसरणश्रोतृलोकः श्रूयतेहि भगवतो वर्द्धमानस्य जृम्भिकग्रामनगरा इहिरुत्पन्नकेवलस्य तदनन्तरमिलितचतुर्विधदेवनिकायविरचितसमवसरणस्य भक्ति  
 कुतूहलाकृष्टसमायातानेकनरामरविशिष्टतिरश्चा स्वस्वभाषानुसारिणा ऽतिमनोहारिणा महाध्वनिना कल्पपरिपालनयैव धर्मकथा बभूव यतो नकेनापि  
 तत्रविरतिः प्रतिपन्ना नचैतत्तीर्थकृतः कस्यापि भूतपूर्वं मितिद् माक्ष्यमिति ४ तथा कृष्णस्य नवमवासुदेवस्य अपरकङ्काराजधानी गतिविषया जाते  
 त्यप्यजातपूर्वत्वा दाक्ष्यं श्रूयतेहि पाण्डवभार्या द्रौपदी धातकौखण्डभरतक्षेत्रापरकङ्काराजधानीनिवासिना पद्मराजेन देवसामर्थ्येना पद्मता द्वारकावती  
 वास्तव्यश्च कृष्णो वासुदेवो नारदा दुपलब्धतद्वातिकरः समाराधितसुस्थिताभिधानलवणसमुद्राधिपतिदेवः पचभिः पाण्डवैः सह द्वियोजनलक्षप्रमाणं ज  
 लधि मतिक्रम्य पद्मराजरणविमर्देन विजित्य द्रौपदी मानीतवान् तत्रच कपिलवासुदेवो मुनिसुव्रतजिनात् कृष्णवासुदेवागमनवार्त्ता सुपलभ्य सबहुमा

नं कृष्णदर्शनार्थं मागतः कृष्णश्च तदा समुद्रं गतश्चयतिस्त्रा ततस्तेन पांचजन्यं पूरितः कृष्णेनापि तथैव ततः परस्परं शङ्खशब्दश्रवणं मजायतेति ५ त  
 ना भगवतो महावीरस्य वन्दनार्थं मयतरणं भाकाशा त्समसरणभूम्या चन्द्रसूर्ययोः शाश्वतविमानोपेतयो बभूवेद् मध्याश्रयमेवेति ६ ६ तथा हरेः पु  
 रुषविशेषस्य वशः पुनर्पौनाटिपरंपरा हरिवशं स्तनक्षणं यत् कुलं तस्यात्पत्तिं कुलं हनेन तदा ततो हरिवंशेन निशेष्यते एतद् व्याश्रयमेवेति श्रूयतेहि भरत  
 नीतापेतना यत्तृतीयं हरिवर्षाख्यं मिथुनकलेन ततः केनापि पूर्वविरोधिना व्यतरसुरेण मिथुनक मेकं भरतक्षेत्रे चित्तं तत्रपुण्यानुभावा द्राज्यं प्राप्तं त  
 तो हरिवर्षजातहरिनाम्नः पुरुषा व्यां वशः सतथेति ७ तथा चमरस्या सुकुमारराजस्यो त्पतनं मूर्ध्निगमनञ्च चमरोत्पातं सोप्याकस्मिकत्वा दाश्रयमि  
 ति श्रूयतेहि चमरचक्षराजधानीनिवासौ चमरेन्द्री भिनवोत्पन्नः सत् पूर्वमवधिना लोकयामास ततः सगौर्षीपरि सौधर्माव्यवस्थितशक्तं नन्ददर्शं ततो  
 मत्सराधातः शक्तिरस्काराहितमति रिज्ञागत्य भगवतं महावीरं कृष्णस्यावस्थ मेकरानि तीं प्रतिमां स्मृतिपत्रं सुसुमारनगरोद्यानवर्त्तिनं सबहुमानं  
 प्रणम्य भगवत्स्वपादपकजयनं मे शरणं मरिपराजितस्येति विकल्पनिरचितधोरूपो लक्ष्ययोजनमानशरीरः परिधरत्नप्रहरणं परितो भ्रमयन् गज  
 आस्ताडयन् देवा स्नासयन् सुत्पपात सौभर्मागतसकामानवेदिवाया पादलासं कृत्वा गतं माकोशयामास शकोपि कोपा ज्जाज्वल्यमानस्फारस्फुलिङ्गशत  
 समाकुलं कुलिशं तं प्रतिमुमोच सच भयागतनिवृत्त्य भगवत्पादौ शरणं प्रपेदे शकोऽप्यधिजानावगततत्प्रातिकारं स्तोत्रं कराराशतनाभया च्छोघं मागत्य

रिसा करहस्सञ्चवरकका उत्तरणचंदसूराण ॥ १ ॥ हरिवसकुलुप्पत्ती चमरुप्पानयञ्चसयसिद्धा च्चस्सजएसु

उत्तरणा ६ । हरिवशकुलं ऊपनुं युगलिणा नरके गया ७ । चमरोत्पात ८ । एकशोप्राठ १०८ एकसमये सिद्धा ऋषभदेव ९ । असजतीनी पूजाय ॥

वज्र मुपसजहार बभाणच सुक्ती स्यहो भगवत' प्रसादा आन्ति मत्त स्ते भयमिति ८ तथा द्वाभि रधिक शत मष्टयत अष्टयतच ते सिद्धाय निर्वृता अष्टयतसिद्धा इदम प्यनन्तकालजात मित्याश्चर्यमिति ९ तथा असयता असयमवत आरभपरिग्रहप्रसक्ता अवल्लचारिण स्तेषु पूजासत्कारो सयतपूजा सर्वदाहि किल सयताएव पूजार्हा मस्यान्ववसर्पिण्या विपरीत जातमित्याद्य १० मतएवाह दशायेतानि अनन्तेन कालेना नन्तकाला त्सवत्ता न्य स्या मवसर्पिण्यामिति अनन्तरसूत्रे चमरोत्पात उक्त सच रत्नप्रभाया सजातइति रत्नप्रभावक्तयतामाह ॥ इमीसेणमित्यादि ॥ येय रज्जुरायामविष्क भाभ्या मयीतिसहस्राधिक याजनलक्ष बाहल्यत उपरि मध्ये ऽधस्ताच्च यस्या खरकाण्डपङ्कवहुलकाण्डजलवहुलकाण्डाभिधानाः क्रमेण षोडशचतुर शोत्ययीति योजनसहस्रबाहल्या विभागा सति ॥ इमीसेत्ति ॥ एतस्याः प्रत्यक्षासन्नाया, रत्नाना अभा यस्या रत्नैर्वा प्रभाति शोभते वा सा रत्नप्रभा त स्या पृथिव्या भूमेर्य तत्र खरकाण्ड तत्षोडशविधरत्नात्मकत्वा त्षोडशविध तत्र यः प्रथमो भागो रत्नकाण्ड नाम तद्वश्योजनशतानि बाहल्येन सहस्र मेक स्थूनायेत्यथ एवमन्याऽनि पञ्चदशापि सूत्राणि वाच्यानि नवर प्रथम सामान्यरत्नात्मक शेषाणि तद्विशेषमयानि चतुर्दशाना मतिदेशमाह ॥ एवमि

पूया दसविञ्चणतेणकालेणं ॥ २ ॥ इमीसेणं रयणप्पजाए पुढवीए रयणेकळे दसजोयणसयाइं बाहल्लेणं पस्सत्ते  
इमीसेण रयणप्पजाए पुढवीए वड्ढेकळे दसजोयणसयाइ बाहल्लेण पस्सत्ते । एवं वेरुल्लिए लोहियस्के मसा

ई १० ॥ ए दश अनन्तेकाले ऊपजे १० ॥ आ रतनप्रभा पृथिवीने विपे रतनोनाकाळ दशत्येयोजन जाळपणे कहियो ॥ आ रतनप्रजा पृथिवीनेविपे वज्रकाळ दससे योजन जाडपणे कहियो ॥ इम वेरुल्लियकाळ १ । लोहिताक्ष रतननोकाळ २ । मसारगल्ल ३ । हसगर्ज ४ । पुलक ५ । सौगंधिक ६ ।

त्यादि ॥ एवमिति पूर्वाभिनापेनसर्वाणि वाच्यानि ॥ वेरुलिपत्ति ॥ वेदूर्ध्वकाण्ड एवं लोहिताक्षकाण्ड मसारगर्भकाण्डं हसगर्भकाण्ड मेव सर्वाणि नवरं  
रजत रूप्य जातरूप सुवर्णं मेते अपि रत्नेष्वेति रत्नप्रभाप्रस्तावा तदाधेयद्वीपादिवत्ताव्यता सूत्रचतुष्टयेनाह ॥ सव्येत्यादि ॥ सुगम नवर मुद्गेध ॥ श्रीं  
उत्ततिभणियहोई ॥ द्वीपानां ॥ श्रींउत्तणाभावेवि ॥ अधोदिशि सहस्र यावत् द्वीपअपदेशो जम्बूद्वीपेतु पश्चिमविदेहे जगतीप्रत्यासत्ती ॥ श्रींउत्तमति ॥  
अन्विष्टि ॥ महाक्रदा हिमवदादिषु पद्मादयः ॥ सलिलकुंडति ॥ सलिलानां गङ्गादिनदीनां कुण्डानि प्रपातकुण्डानि प्रभवकुण्डानिच सलिलकुण्डा  
नोति ॥ मुहमूलेति ॥ समुद्रपदेशे द्वीपसमुद्राधिकारा तद्वर्त्तिनक्षत्रसूत्रनयमाह ॥ कत्तिण्येत्यादि ॥ इह किल सूर्यस्य चतुरशीत्यधिक मण्डलशत भवति

रगत्वे हसगप्ते पुलए सोगधिए जोइरसे अजणे अजगपुलए रयए जायरूवे अफे फलिहे रिठे जहा सोल  
सविधा जाणियवा । सव्वेविण दीवसमुद्रा दसजोयणसयाइ उव्वेहेणं पणत्ता । सव्वेविणं महद्दहा दसजोय  
णाइ उव्वेहेण पणत्ता । सव्वेविणं सलिलकूटा दसजोयणाइ उव्वेहेण पणत्ता । सीयासीतयाण महानदीउं मुह  
मूले दसजोयणाइ उव्वेहेण पणत्ता । कत्तियानस्कत्ते सव्ववाहिरानं मंळलानं दसमे मंळले चारचरइ । अणु

ज्योतिरस ७ । अजन ८ । अजनपुलक ९ । रजत १० । जातरूप ११ । अरु १२ । स्फटिक १३ । रिष्ट १४ । जिम रतनकाठ तिम सोलप्र कार ना  
जाणवा ॥ सर्व द्वीपसमुद्र दशसे योजन उरुपणे कहिया ॥ सघलाई महाद्रह दशसेयोजन उरुपणे कत्त्या ॥ सघलाई सलिलकूट दशसेयोजन उरु  
पणे कत्तिया ॥ सीतासीतोदा मोटीनदी मुखमूले दशयोजन उरुपणे कही ॥ कत्तिकानक्षत्र सर्वमाळलाथी बाहिरले दशमेमाळले आवी चार चरे

चन्द्रस्य पचटश नक्षत्राणां न्वष्टौ मण्डलञ्च मार्ग उच्यते तच्च यथास्व सूर्यादिविमानतुल्यविष्कम्भ तत्र जवूद्वीपस्या शीत्यधिके योजनशते पंचपष्टिः सूर्यस्य मण्डलानि भवन्ति चन्द्रस्य पञ्च नक्षत्राणां हे तथा लवणसमुद्र त्रीणि त्रिशदधिकानि योजनशता न्यवगाह्य एकोनविंशत्यधिक सूर्यस्य मण्डलशत भवति चन्द्रस्य दश नक्षत्राणाञ्च षट् एतेषाञ्च सर्वबाह्य सुमेरोः पचचत्वारिंशतियोजनानां सहस्रेषुच त्रिशदधिकेषुच त्रिषुशतेषु भवति सर्वाभ्यन्तरञ्च चतुश्चत्वारिंशतिसहस्रेषु अष्टासुच विंशत्यधिकेषु शतेषु भवतीति एवञ्च कृत्तिकानक्षत्र सर्वबाह्यात् ॥ मण्डलाश्रोत्ति ॥ चन्द्रमण्डला द्दशमे चन्द्रस्य मण्डले सर्वाभ्यन्तरा त्पष्ठइत्यर्थ ॥ चारचरइति ॥ भ्रमण माचरति अनुराधानक्षत्र सर्वाभ्यन्तरा चन्द्रस्य मण्डला द्दशमे चन्द्रस्य मण्डले सर्वबाह्यात्पष्ठइत्यर्थ आरंचरतीति व्याख्यातमेवेति ॥ विधिकराइति ॥ एतन्नक्षत्रयुक्ते चन्द्रमसि सति ज्ञानस्य श्रुतज्ञानस्यो देशादि र्यदाक्रियते तदाज्ञान सन्दृष्टिमुपयाति अविघ्नेना धीयते श्रयते व्याख्यायते धार्यतेचेति भवतिच कालविशेष स्तथाविधकार्येषु कारण क्षयोपशमादिहेतुत्वा तस्य यदाह उदयक्वयखश्रावसमो वसमार्जचकमुणी भणिया दब्धखेत्तकाल भवचभावचसंपप्पत्ति ॥ १ ॥ तद्यथा ॥ मिगसिरगाहा ॥ कण्ठ्या द्वीपसमुद्राधिकारा देव द्वीपचारिजीववक्तव्यता सूत्रद्वयेनाह

राहा नरकत्वे सवृष्णंतरानु मंरुलानु दसमे मंरुले चारचरइ । दस नरकत्वा णाणस्स विधिकरा पस्सत्ता तंजहा मिगसिरण्ण्हापूसो तिनियपुव्वाइमूलमस्सेसा हत्योचिन्तायतहा दसविधिकराइंणाणस्स ॥ १ ॥ चउप्पयथल

छे ॥ अनुराधानक्षत्र सर्वमाहिला मंरुलथी दशमे मंरुले चार चरेछे ॥ दशनक्षत्र ज्ञाननी वृद्धिना करनार कहिआ ते कहैछे मृगशिर १ । आर्द्रा २ । पुष्य ३ । त्रिपूर्वा ६ । मूल ७ । अश्लेषा ८ । हस्त ९ । चित्रा १० । तिम ए दश नक्षत्र ज्ञाननी वृद्धिकरे १ । चतुष्पद थलचर पचेद्री तीर्थच योनि

॥ चतुष्पदशलाटि ॥ चत्वारि पदानि पादा मेवां ते चतुष्पदा स्तेच ते स्थले चरतीति स्थलचरायेति चतुष्पदस्थलचरा स्तेच ते पंचेन्द्रिया येति पिराहः पुन  
 स्तिर्गन्धानिकायेति कर्मधारय स्तेषा दशति दशैव जातो पचेन्द्रियजाती गानिकुलकोटोनाजातिविशेषनचणाना योनिप्रमुखानि उत्पत्तिस्थाना  
 काणि गतसहस्राणि लक्षाणि तानि तथा प्रज्ञप्तानि सर्वविदा तत्र योनि र्गन्धा गोमया क्षौद्रद्रवाणा सुत्पत्तिस्थान कुलानि तत्र कनापि क्षीन्द्रियाणां क  
 म्यायने ताकाराणि प्रतीतानीति तथा उरसा जभसा परिसर्पन्ति मचरन्ती त्परपरिमर्पा स्तेचते स्थलचर शैलादि तथैव जीवविषय दशस्थानक म  
 निभाया भुना जायस्य रूप पुद्गलविषय तदाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ अथवा जातियोनिकुलादि विशेषा जीवानां कर्मण शयोपचयादिभ्यो भवन्तीति नि  
 कालभाषिना दशस्थानकानुपातेन कर्मण स्यादोनाह ॥ जीवाणमित्यादि ॥ जीवा जी। नधर्माणो न सिद्धातिभावी गमितिकाक्याल्लारे दशभिः स्था  
 नैः प्रथमसमयैकैन्द्रियत्वादिभिः पर्याये र्हेतुभि र्गै निर्वर्त्तिता नभयोग्यतया निष्पादिता स्ते तथा दशभिः स्थाने निर्वर्त्ति र्गै शेषांते तथा तान् पुद्गलान्  
 कर्म। गणारूपान् पाप घातिकर्मे सवेमेवया कर्म तत्र तत्कृत्वमाणत्वात् कर्मच पापकर्म तज्ज्ञात स्तता तथा पापकर्मतया ॥ चिणिसुत्ति ॥ चित्तवती गृ

थरपचिद्विद्यतिरिस्कजोणियाणं दसजाडकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा प० । उरपरिसप्पथलयरपचिद्विद्य  
 तिरिस्कजोणियाणं दसजाडकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्सा प० जीवाण दसठाणनिवृत्तिए पोग्गले पावक

आनी दश जातिकुलकोडि योनिप्रमुख लाख कह्नी । उरपरिमर्प थलचर पंचेन्द्री तीर्थेच योनियाने दश जाति कुलकोडि योनिप्रमुख लाखकह्नी ज  
 गवते ॥ जीव दशस्थानकं व्याध्या पुद्गल पापकर्मपणे चिण्या जेलाकस्या करेछे करसे ३ । प्रथमसमय एकेन्द्री निवर्त्तित पाप यावत् फरसनेद्री पणें

हौतवंतं चिन्वन्ति गृह्णन्ति चेष्यति गृहीष्यं त्यजेना क्कनां त्रिकालाखयित्वमाह सर्वथा अनन्वयित्वे अकृतागमकृतविप्रणाशप्रसगादिति वाशब्दा विक  
 लार्था स्तयथा प्रथमः समयो येषा मेकेंद्रियत्वस्य ते तथा तेच ते एकेंद्रियाश्चेति प्रथमसमयैकेंद्रिया स्तैः सद्भि र्ये निर्वर्त्तिताः कर्मतया पादिता अविशे  
 षतो गृहीता स्ते तथा तान् एव तद्विपरीतै रप्रथमसमयैकेंद्रियै निर्वर्त्तिता ये ते तथा तान् एव द्विभेदता द्वित्रिचतुःपचेंद्रियाणां प्रत्येकं वाच्ये त्येतदेवाति  
 देशेनाह ॥ जावेत्यादि ॥ यथ ाचितवन्त इत्यादिकालत्रयभिर्देशेन सूत्र मुक्त मेव मुपचितवन्तइत्यादौन्यपि पंच वक्तव्यानी त्येतदेवाह ॥ एवचिणेत्यादि ॥  
 इहचैव मक्षरघटना ॥ चिण्ति ॥ यथा चयनं कालत्रयविशेषित मुक्त मेव मुपचयो बध उदौरणा वेदना निर्जरा चवाच्याः ॥ चैवत्ति ॥ समुच्चये नवरं चय  
 नादौना मय विशेष चयननाम कषायादिपरिणतस्य कर्मपुद्गलोपादानमात्र उपचयन गृहीताना ज्ञानावरणादिभावेन निषेचनबन्धन निकाचनं उदौर  
 णाकरणेन उदयेप्रवेशन वेदन मनुभवन निर्जराजीवप्रदेशेभ्यः परिश्रटनमिति पुद्गलाधिकारएवेदमाह ॥ दसेत्यादि ॥ सूत्रहृन्द सुगमच नवर दशप्रदेशा  
 येषाते तथा तएव दशप्रदेशिका दशाणुकाः स्तम्भाः समुच्चयाइति द्रव्यतः पुद्गलचिन्ता तथा दशप्रदेशे ष्वाकाशस्या वगाढा आश्रिता दशप्रदेशावगाढा

ममत्ताए चिणिसुवा चिणिंतिवा चिणिरसंतिवा तं० पढमसमयएगिदियनिवृत्तिए जाव फासिंदियनिवृत्तिए  
 एवं चिणउवचिणबंधउदी रवेयतहणिज्जराचेव । दसपदेसिया खधा ञ्णंता पसुत्ता । दसपएसोगाढापोग्ग

निवर्त्तित इम चिण्या उपचिण्या आंध्या उदीस्या वेद्या निर्जराव्या निश्चे ॥ दश प्रदेशना खध अनंता कहिआ ॥ दश प्रदेशोवगाढ पुद्गल अनंता  
 कह्या ॥ दश समयनीस्थितिना पुद्गल अनता कह्या ॥ दशगुणा काला पुद्गल अनंता कहिआ ॥ इम वर्णथी गंधे रसे फरसे ॥ दशगुणा लूखा पुद्गल



॥ ठा० ॥

॥ ५५५ ॥

इति जेतत स्तथा दशसमयान् स्थिति र्येषां ते तथेति कालत स्तथा दशगुण एकगुणकालापेक्षया दशाभ्यस्त. कालो वर्णविशेषो येषां ते दशगुणकालका  
एव मन्ये सतुर्भिर्वर्णैर्द्विधा गन्धाभ्या पचभी रसै रष्टाभिः स्पर्शैर्विशेषिताः पुद्गला अनता वाच्या अतएवाह ॥ एवमित्यादि ॥ जावदसगुणलुक्कापोग्ग  
लाप्रणतापणत्ता ॥ इत्यनेनभावतः पुद्गलचिन्ताया विंशतितम प्राप्तापको दर्शित इहचा नंतशब्दो पादानेन वृद्धादिशब्देन चांतमङ्गल मभिहित मयचा  
नतशब्द इहसर्वाध्ययनाना मंते पठितइति सर्वेष प्यतमङ्गलतया ओपव्यइति तदेव निगमित मनुगमद्वाराशभूत सूत्रस्पर्शकनिर्युक्तिद्वाराणितु सर्वाध्ययनेषु  
प्रथमाध्ययना दनुगमनौयानि ॥ इतिश्रीमदभयदेवसूरिविरचिते स्थानाख्यतृतीयाङ्गपिवरणे दशस्थानकाख्य न्दशममध्ययनं समाप्तमिति ॥ १० ॥  
तत्समाप्तौच सामाप्त स्थानाङ्गपिवरणं तथाच यदादायभिहित स्थानाङ्गस्य महानिधानस्ये योगमुद्रणमिवा नुयोगः प्रारभ्यतइति तच्चन्द्रकुलीनप्रवचनप्रणी  
ताप्रतिबलविहारहारिचरितशौचमानाभिधानमुनिपतिपादोपसेविनः प्रमाणादियत्वादनप्रवणप्रकरणप्रबन्धप्रणायिनः प्रबुद्धप्रतिबन्धकप्रवक्तृप्रवीणाप्रति  
हतप्रवचनार्थप्रधानवाक्प्रसरस्य सुपिहितमुनिजनमुखस्य श्रीजिनेश्वराचार्यस्य तदनुजस्यच व्याकरणादिशास्त्रकर्तुः श्रीबुधिसागराचार्यस्य चरणकमलचं

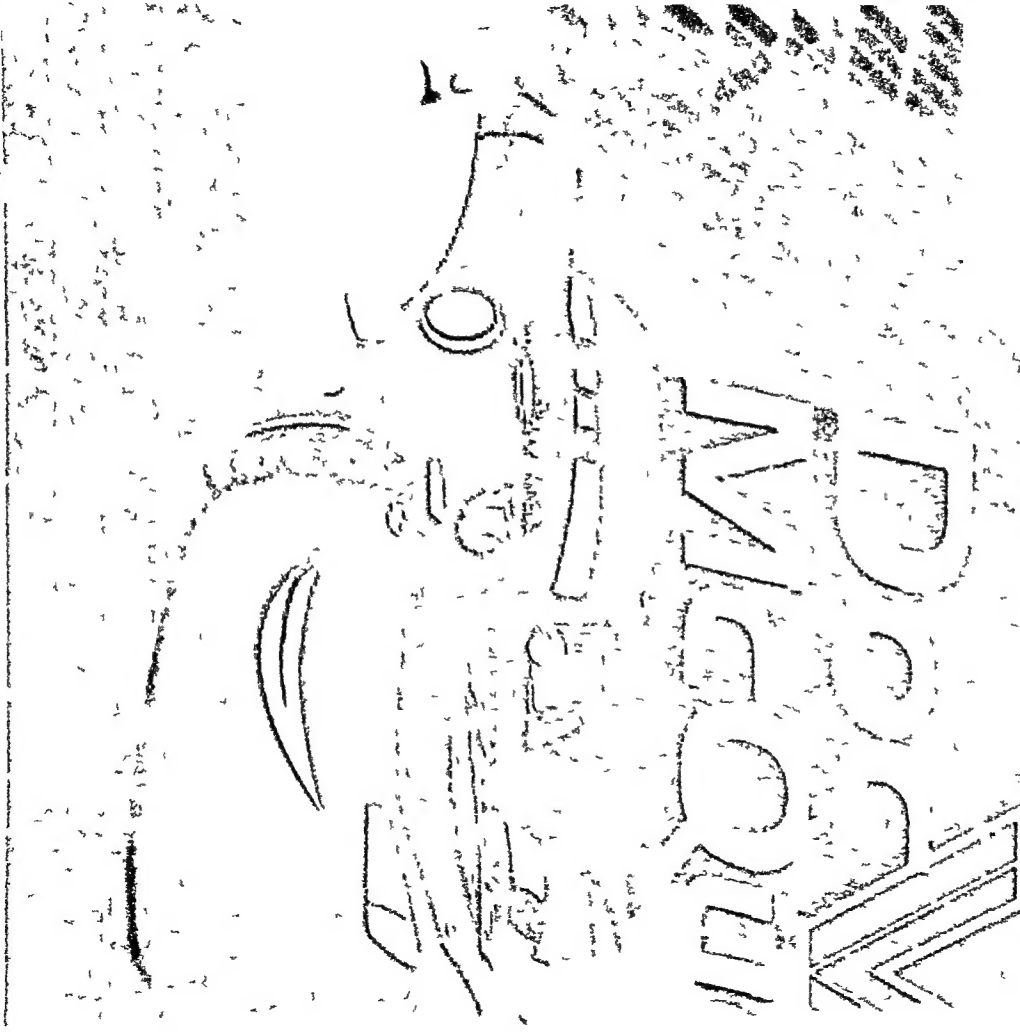
ला अणंता पणत्ता । दससमयठिईया पोग्गला अणंता पणत्ता । दसगुणकालगापोग्गला अणंता पणत्ता ।  
एवं वसोहि गधेहि रसेहिं फासेहि जाव दसगुणलुस्का पोग्गला अणता पणत्ता ॥ इइ दसमछाण सम्मत्तं ॥  
॥ दसस्थानकसमाप्तौ स्थानांगारख्य तृतीयांगस्य सूत्र समाप्तम् ॥

अनता कहिआ ॥ इति दशमू ठाणु समाप्त ॥ दशम अध्ययनं संपूर्णं ॥ १० ॥ इति श्री ठाणागसूत्रटवार्थथी संपूर्णं ॥

चरीककल्पेन श्रीमदभयदेवसूरिनाम्ना मया महावीरजिनराजसंतानवर्त्तिना महाराजवंशजन्मनेव सविम्नेमुनिवर्गप्रवरश्रीमज्जिनचन्द्राचार्यान्तैवासिथ  
 शोदेवगणिनामधेयसाधो सत्तरसाधकस्येव विद्याक्रियाप्रधानस्य साहाय्येन समर्थित तदेव सिद्धमहानिधानस्येव समापिताधिकृतानुयोगस्य मममङ्गला  
 र्थं पूज्यपूजा नमो भवते वर्त्तमानतौर्थनाथाय श्रीमन्महावीराय नमःप्रतिपत्तिसार्थप्रमथनाय श्रीपार्श्वनाथाय नमःप्रवचनप्रबोधिकायै श्रीप्रवचनदेवता  
 यै नमःप्रस्तुतानुयोगशोधिकायै श्रीद्रोणाचार्यप्रमुखपण्डितपर्वदे नमश्चतुर्वर्णाय श्रीश्रमणसंभवभट्टारकायैति एवंच निजवश्यवत्सलराजसतानिकस्येव समा  
 समान भिममायासमतिसफलतां नयन्तो राजवंशादिव वर्द्धमानजिनसतानवर्त्तिनः स्वीकुर्वन्तु यथोचित मितोर्थजात भनुतिष्ठन्तु सुष्ठूचितपुरुषार्थसिद्धि  
 मुपयुजतांच योग्येभ्य इति किंच सत्संप्रदायहीनत्वा ऋदूहस्यवियोगतः सर्वस्वपरशास्त्राणां मट्टे रस्मृतेष्वमे ॥ १ ॥ वाचनानां मनेकत्वा त्पुस्तकानामशुद्धित-  
 सूत्राणामतिगाभोर्यां क्षतिभेदाच्चकुत्रचित् ॥ २ ॥ क्षुण्णानिसंभवतौह केवलंसुविवेकिभिः सिद्धान्तानुगतोयोर्थः सोस्माद्वाद्योनचेतरः ॥ ३ ॥ शोध्यचैतज्जिनेभक्तै  
 र्मांभवद्भिर्दयापरैः ससारकारणात्घोरा दपसिद्धातदेशनात् ॥ ४ ॥ कार्यान्वाक्षमास्मासु यतोस्माभिरनाग्रहैः ॥ एतन्नमनिकामात्र मुपकारीतिचर्चित ॥ ५ ॥  
 तथासमाव्यसिद्धान्ता बोध्यमध्यस्थयाविव्य द्रोणाचार्यादिभिः प्राज्ञैरनेकैरादृतं यतः ॥ ६ ॥ जैनग्रंथविशालदुर्गमवनाकुच्चित्यगाढश्रम सद्ग्रास्थानफलान्यमू  
 निमयकास्यानाङ्गवद्भाजने सस्याप्योपहितानिदुर्गंतनरप्रायेण ललव्यार्थिना श्रीमत्सधविभोरतःपरमसावेवप्रमाणह्वतो ॥ ७ ॥ श्रीविक्रमादित्यनरेन्द्रका  
 च्छतेनविंशत्यधिकेनयुक्ते समासहस्रेतिगतेविदृष्टा स्थानाङ्गटोकाऽल्पधियोपिगम्या ॥ ८ ॥ अत्रदशमाध्ययने श्लोकाः १७१४ ॥ प्रत्यक्षरनिरूप्यास्याग्रथ  
 मानविनिश्चित अनुष्ठुभासपादानि सहस्राणिचतुर्दश ॥ १ ॥ सर्वाध्ययनेषु ग्रन्थाद्धतो १४२५० ॥ सूत्रग्रथाग्रतः ३०५० ॥ टीका १४२५० ॥ उभय  
 मीलने १८००० ॥

मुद्रासहस्रकिरणैर्ग्रन्थानुपलब्धतिमिरसंहारी पुस्त  
ककमलविकाशीद्युनिश्चजैनप्रज्ञाकरोजयतु ॥ ३ ॥

**VidflyAR** Regd No 117



**THE CHALLENGE IS**